ॐ ॐ

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

असचरज रूपं रहंत जनमं ॥ नेत नेत कथंति बेदा ।

असचरज वस्तु

लेखक :

संत निरभिंदर सिंह (सरपंच)

निर्मल आश्रम ऋषिकेश

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

ॐ

असचरज रूपं रहंत जनमं ॥ नेत नेत कथंति बेदा।

असचरज वस्तु

लेखक :

संत निरभिंदर सिंह (सरपंच)

जीवन लीला :

- महंत बुड्ढा सिंह जी महाराज
- महंत आत्मा सिंह जी महाराज
- महंत नारायण सिंह जी महाराज
- संत निक्का सिंह जी महाराज
- महंत राम सिंह जी महाराज

निर्मल आश्रम ऋषिकेश

प्रकाशक:

महंत राम सिंह

निर्मल आश्रम

ऋषिकेश।

पहली बार (हिन्दी) - वैशाख १, २००२

मुद्रक :

विजेता फाईन आर्ट प्रिन्टर्ज़

दरिया गंज, नई दिल्ली।

१ ओंकार श्री वाहिगुरु जी की फतहि॥

भूमिका

'अकाल पुरखु' वाहिगुरु अपनी निष्क्रिय, निर्विकार और निराकार महिमा में सदैव-सदैव स्थित रहता है। अपनी नित्य और सदा रहने वाली इस स्थिति में किंचित् मात्र भी विचलित नहीं होता अर्थात् कभी भी किसी क्रिया का करने वाला और परिवर्तनशील नहीं होता, परन्तु फिर भी 'जीवों को भिन्न-भिन्न क्रिया करता जैसा'—अनेक रूपों में भासता है। मूढ़ जीव प्रत्येक क्रिया अपने द्वारा होती समझते हैं और साधक-जन प्रत्येक क्रिया हरि द्वारा होती मानते हैं। लेकिन मानना दोनों का ही अर्थहीन है अर्थात् दोनों हरि के निष्क्रिय स्वभाव से अनभिज्ञ हैं क्योंकि हरि ने स्वयं ही श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी के पावन हृदय में स्थित होकर उच्चारण किया है—

नानक एको रवि रहिआ दूसर होआ न होगु।।

अर्थात् एक वाहिगुरु ही सदैव रमण कर रहा है दूसरा आज तक न कभी हुआ है और न भविष्य में होगा। फिर प्रश्न उठता है कि वाहिगुरु यदि किसी भी क्रिया का कर्ता नहीं तो यह प्रतीत दे रहा संसार किस ने उत्पन्न किया, कौन इसको आजीविका दे रहा है और कौन लय करता है? उत्तर-जिस को अज्ञानी जीव संसार मानते हैं वास्तव में यह संसार नहीं और न ही इसको किसी ने उत्पन्न किया है। यह तो हरि का स्वभाव है। उदाहरणत: अग्नि तीन कर्म करती है अर्थात् तीन प्रकार की क्रिया करती प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होती है। जैसे प्रकाश करना, दाह शक्ति- अपने से भिन्न वस्तु को जला देना और उष्णता अर्थात् दूसरे की ठण्ड दूर करना। यह क्रिया प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रही है लेकिन फिर भी उपरोक्त क्रिया करती हुई भी अग्नि अपनी निष्क्रम महिमा में सदैव स्थित है अर्थात् उपरोक्त क्रिया जो अग्नि में प्रतीति दे रही है वह अग्नि की क्रिया अथवा कर्म नहीं है अपितु वह तो अग्नि का नित्य स्वभाव है। बस इसी प्रकार 'अकाल पुरखु' वाहिगुरु अपनी निष्क्रिय महिमा में सदैव-सदैव स्थित रहता है, अज्ञानी जीवों को यह जो संसार रचना सत्य प्रतीत दे रही है और इस में जन्म-मृत्यु आदि अनंत क्रिया में दृष्टिगोचर हो रही है, ये सब भ्रम मात्र हैं क्योंकि हरि ने स्वयं ही फरमान किया है-

नह किछु जनमै न किछु मरै।। आपन चलितु आप ही करै।।

ऐसी निर्विकल्प, निर्विकार, निष्क्रिय, अचल और अभेद वस्तु में कोई क्रिया मान बैठना बस यह ही भूल अथवा जीवपना है अर्थात् भूल एवं जीवन एक ही चीज़ के दो नाम हैं। जन्म-मृत्यु आदि अनंत दु:खों का मुख्य कारण भी यह ही है - अन्य कोई कारण नहीं। 'अकाल पुरखु' वाहिगुरु में जहां निष्क्रियता, निर्विकारता अनेक स्वभाव हैं वहाँ उस में दयालु, कृपालु स्वभाव भी हमेशा स्थित रहता है। हरि अपने इस स्वभाव में स्थित रहता हुआ भी जीवों को, जो भ्रम के कारण अनंत दु:खों का शिकार हो रहे हैं को मुक्त कराने के लिये समय-समय पर प्रकट होता रहता है। सम्भवत: भटों ने भी 'अकाल पुरखु' की इस अचल महिमा में स्थित होकर ही उच्चारण किया है-

सतजुगि तै माणिओ छलिओ बलि बावन भाइओ।
त्रेतै तै माणिओ रामु रघुवंसु कहाइओ।।
दुआपुरि क्रिसन मुरारि कंसु किरतारथु कीओ।
उग्रसैण कउ राजु अभै भगतह जन दीओ।
कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगदु अमर कहाइओ।
श्री गुरु राजु अबिचलु अटलु आदि पुरखि फुरमाइओ। (पं-१३९०/८)

हे हरि! सतयुग में तुम्हें बावन रूप कहलाना उचित लगा, त्रेता में तुमने राम कहलाया, द्वापर में तुम ने ही श्रीकृष्ण मुरारि कहलाया और कलियुग में गुरु नानक, गुरु अंगद और गुरु अमरदास आदि दस शरीर धारण किए। तुम्हारा राज्य हमेशा स्थिर है, तुम अपनी महिमा में सदैव स्थित हो। ऐसे अनंत गुणों वाले निराकार 'अकाल पुरखु' वाहिगुरु की महिमा के सम्बन्ध में एक अक्षर भी कहना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव है अर्थात् महिमा शब्दातीत है, भाव अक्षरों का विषय ही नहीं। इसी लिए गुरु साहिब जी ने फरमान किया है—

महिमा न जानहि बेद॥ ब्रहमे नही जानहि भेद॥
अवतार न जानहि अंतु॥ परमेसर पारब्रहम बेअंतु॥
अपनी गति आपि जानै॥ सुणि-सुणि अवर वखानै॥ रहाउ॥
संकरा नहीं जानहि भेव॥ खोजत हारे देव॥
देवीआ नहीं जाने मरम॥ सभ ऊपरि अलख पारब्रहम॥ (पं-८९४/४)

निराकार 'अकाल पुरखु' वाहिगुरु अंतरंग और पूर्ण महिमा एक स्वयं ही जानता है कोई दूसरा नहीं। हाँ-उसकी कुछ परसंवेद्य महिमा है जो समय-समय पर सगुण रूप में करता रहता है—वह चाहे विशेष तौर पर अवतार धारण करके करे चाहे अपने से अभेद करके महापुरुषों के शरीर द्वारा करे। सगुण रूप में की अलौकिक लीलाओं का संक्षेप सा वर्णन वाणी द्वारा भी किया जाता है और लेखिनी-मसि द्वारा कागज़ पर लिखा भी जाता है। बुद्धिमान व्यक्ति अपना जीवन सफल करने हेतु—आरम्भ से ऐसी लीलाओं का वर्णन वाणी द्वारा करते भी आए हैं और लेखिनी द्वारा लिखते भी आए हैं और भविष्य में ऐसा करते भी रहेंगे क्योंकि ऐसा करना हरि को सबसे प्रिय लगता है। यथा गुरु वाक्—

जो हरि दासन की उसतति है सा हरि की वडिआई॥
हरि आपणी वडिआई भावदी जन का जैकारु कराई॥ (पं-६५२/७)

स्पष्ट है कि हरिजन की स्तुति ही हरि का गुणगान है और यही हरि को अच्छी लगती है।

इस हस्तगत पुस्तक 'असचरज वस्तु' में भी हरि की ओर से सगुण रूप में की कुछ अलौकिक लीलाओं का ही संक्षेप सा वर्णन है। इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा भी प्रभु प्रीतम ने स्वयं ही की समझें क्योंकि जीवों की प्रेरक शक्ति भी हरि का स्वभाव ही है जिस द्वारा समस्त जड़-चेतन सृष्टि गति में आती है। उसके बिना समस्त जीव काष्ठ की निष्प्राण पुतलियाँ ही हैं। यह बात अलग है कि प्रेरणा निर्गुण रूप में हुई अथवा सगुण रूप में हुई लेकिन हुई वाहिगुरु की ओर से ही, अपितु प्रेरणा ही नहीं की बल्कि यह शरीर, मन, बुद्धि, लेखनी पकड़ने वाले हाथ रूपी गाड़ी का 'सटेरिंग' हरि ने अपने कर्तापन के स्वभाव द्वारा आप ही नियंत्रित किया। स्थूल, मन, बुद्धि एवं नेत्रों को यह बात चाहे कृत्रिम सी लगे लेकिन है वास्तव में सत्य।

इस पुस्तक के छः अध्याय हैं। प्रथम में मनुष्य जन्म का उद्देश्य, उद्देश्य पर पहुँचने के लिए माया की बाधा और माया का स्वरूप समझकर उसको पार कर जाना आदि विचार और निर्मल सम्प्रदाय का संक्षेप सा इतिहास दर्ज है।

निर्मल सम्प्रदाय के इतिहास में किसी सम्प्रदाय धर्म की खींचतान नहीं की गई और न ही यह हरि और हरि के स्वरूप गुरुओं पीरों को अच्छी लगती है। दशम् पातशाह श्री गुरु गोबिन्द सिंह महाराज जी स्वयं ही वर्णन कर रहे हैं—

इह बिध करत तपस्या भयो। द्वै ते एक रूप होए गयो॥

इस अवस्था में स्थित होकर अर्थात् पूर्ण तौर पर हरि में अभेद होकर वंश अहंकारियों को आदेश कर रहे हैं—

सुआंगन मै परमेसर नाही। खोज फिरै सभ ही को काही॥

यथा— किसू न भेख भीज हो॥ अलेख बीज बीज हो॥
पखाण पूज हो नही॥ न भेख भीज हो कहीं॥
अनंत नाम गाए है॥ परम सुख पाए है॥

दशमेश पिता को प्रश्न किया गया कि सम्प्रदाय के दंभ का आप ज़ोरदार खंडन कर रहे हो फिर आपने जो खालसा पंथ की सर्जना की है उसकी परिभाषा क्या है? शंकावादी की शंका को सुनकर कलगीधर पिता ने उच्चारण किया—

खालस खास कहावै सोई। जाकै हिरदै भरम न होई॥
यथा— भरम भेख ते रहै निआरा॥ सो खालसा सतिगुरु हमारा॥

गुरु घर के वेद व्यास भाई साहिब भाई गुरदास जी भी अनुमोदन करते हैं—

भेखी प्रभू ना पाइये आप गवाए रूप न रेखै॥
गुरमुख वरन अवरन होए निव चलणा गुरसिख विसेखै॥
तां कछ घालि पवै दरि लेखै॥

यथा गुरुवाणी — बाहरि भेख अन्तरि मलु माइआ॥ छपसि नाहि कछु करै छपाइआ॥

यथा — बाहरि भेख बहुतु चतुराई मनूआ दह दिसिधावै॥
हउमैं बिआपिआ सबदु न चीनै फिरि फिरि जूनी आवै॥ (७३२/९)

यथा — जाननहार प्रभू परबीन॥ बाहरि भेख न काहू भीन॥

यथा — भेखी हाथ न लभई तीरथि नहीं दाने॥
पूछउ बेद पड़ंतिआ मूठी विणु माने॥

यदि विचार किया जाए तो सम्प्रदाय बुरी वस्तु नहीं लेकिन सम्प्रदायों का दंभ बुरा है क्योंकि शरीर पर पवित्र वस्त्र, शरीर की प्रालब्ध अनुसार ही रहते हैं न कि इच्छानुसार पहने जाते हैं। इस विचार का अनुमोदन भक्त त्रिलोचन जी ठोस शब्दों में देते हैं जो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में इस प्रकार है—

दाधीले लंका गड उपाड़ीले रावणु बणु सलि बिसलि आण तोखीले हरी॥
करम करि कछउटी मफीटसि री॥ (६९५/६)
पूरबलो क्रित करमु न मिटै री घर गेहणि तां चे मोहि जापीअले राम चे नामें॥
बदति त्रिलोचन राज जी॥ (६९५/७)

हनुमान जी ने लंका रूपी किले को भस्म किया, रावण के अशोक वन को उखाड़ कर नष्ट कर दिया और संजीवनी बूटी हरि के भाव राम जी के चरणों पर लाकर रख दी। इतना कुछ करने के बावजूद भी शरीर ढकने के लिए केवल लंगोट ही मिली। लंगोट के अतिरिक्त कोई अन्य वस्त्र तन ढकने के लिए पूरा जीवन प्राप्त नहीं हुआ क्योंकि पूर्व जन्मों के कर्म कोई ऐसे ही रहे होंगे जो भगवान का भक्त होने के बावजूद भी अमिट रहा। फिर बाह्य वेश का अभिमान क्या, जब मिलना ही शरीर को प्रारब्धानुसार है? इसलिए निर्मल सम्प्रदाय के संक्षेप इतिहास में किसी बंधन बनावट का वर्णन नहीं किया गया। संसार में हरि-लोक में पहुँचने के लिए सहस्रों मार्ग हैं जो अपने-अपने स्थान पर ठीक होंगे। परन्तु गुरु नानक देव जी के घर प्रेमाभक्ति मार्ग जो पूर्व संयोग और 'अकाल पुरखु' की कृपा द्वारा प्राप्त हुआ—का संक्षेप में वर्णन है जो प्रथम अध्याय में अंकित है। इसकी अधिक जानकारी 'निर्मल पंथ प्रदीपिका' आदि ज्ञानी ज्ञान सिंह रचित ग्रन्थों में से लेकर परमेश्वर की प्रेरक शक्ति की प्रेरणा अनुसार वर्णन किया गया है जिसका प्रमुख संकेत प्रेमाभक्ति द्वारा केवल प्रभु मिलाप ही है। बस इससे अधिक अन्य कुछ किंचित् मात्र भी दूसरा मनोरथ नहीं।

अगले पाँचों अध्यायों में हरि ने समय-समय पर पाँच हृदयों में स्थित होकर जो मानव-लीला की उनका संक्षेप-सा वर्णन है, क्योंकि हरि के अनुरागियों की महिमा का पूरा-पूरा वर्णन तो कोई कर ही नहीं सकता जिसका वर्णन हरि ने स्वयं ही किया है।

संतन की महिमा कवन बखानउ॥ अगाधि बोधि किछु मिति नहीं जानउ॥

अभेद अवस्था में स्थित होकर महापुरुषों की अलौकिक लीला मन बुद्धि का विषय ही नहीं क्योंकि वे विदेह अवस्था में स्थित होने के कारण अन्तर्ध्यान हुए अनेकों ऐसे अंतरंग कौतुक करते रहते हैं जिनका आभास तक ही श्रद्धालुओं को नहीं होता। परन्तु फिर भी प्रेरक प्रभु समय-समय किसी के हृदय में बैठकर अपने अनुरागियों की कुछ क्रीड़ा साकार करता रहता है ताकि उनको पढ़ सुन कर संसार रूपी अरण्य में भटके कुछ हृदय द्रवित होकर उत्साहित हों और फिर वास्तविकता को समझ कर सदा के लिए सुखी हो जाएँ। जैसे बुद्धिमान हलवाई चावलों के कड़ाहे में से एक-दो चावल देखकर ही कच्चे पक्के होने का अंदाजा लगा लेता है। कड़ाहे के समस्त चावलों को नहीं देखता और न ही ऐसा करना संभव है, इसी प्रकार इस पुस्तक में वर्णित महापुरुषों के संक्षिप्त जीवन पढ़ सुनकर श्रद्धावान् हृदय कल्पना कर सकेंगे कि ज्ञानाग्नि में लाल होकर सहज स्वभाव ही महापुरुषों से पर-उपकार एवं लोक मंगल के कितने कार्य हुए। उनकी ईश्वरीय सुगंध से कितने भौरों ने सुगंधि प्राप्त की और उनकी प्रदीप्त लौ के साथ कितने अन्य दीपक जगमगा उठे। ग्रन्थ के आकार के बढ़ जाने के भय से अब लीला संकुचित करना ही उचित है क्योंकि भाई साहिब भाई गुरदास जी के वचन हैं—

लख उपमा उपमा करै, उपमा ना वखाणै।
लख महिमा महिमा करै महिमा हैराणै।
लख महातम महातमा न महातम जाणै।
लख उस्तत उस्तत करै उस्तत न सिंझाणै।
आदि पुरख आदेश है मैं माण निमाणै।

—लेखक

हिन्दी अनुवाद

'असचरज वस्तु' निर्मल सम्प्रदाय की ठाकुर शाखा का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस शाखा में समय-समय पर जो महान् विभूतियाँ अवतरित हुईं, उन सब की लीलाओं एवं कष्टसाध्य साधनाओं का इसमें वर्णन हुआ है। बाह्य रूप से अवलोकन करने पर यद्यपि 'असचरज वस्तु' ग्रंथ निर्मले संतों के चरित्र-पुष्पों का एक गुलदस्ता प्रतीत होता है, लेकिन वस्तुत: यह अध्यात्म का एक अनूठा ग्रंथ है जिसके द्वारा जिज्ञासुओं के लिए परमार्थ का मार्ग प्रशस्त किया गया है। परमार्थ की इस यात्रा में कहीं भक्ति के दर्शन होते हैं, कहीं तत्त्व-विवेचन के, कहीं पौराणिक आख्यान इसे रुचिकर बनाते हैं तो कहीं प्राकृतिक सुषमा मन को मोह लेती है और गुरुवाणी की छटा तो सर्वत्र व्याप्त है। सरपंच महाराज जी की सरल, सहज, मधुर एवं प्रवाहयुक्त शैली ने इसे और भी मनोहारी बना दिया है। ग्रंथ पढ़ने पर ऐसा आभास होता है कि मानों हम किसी पर्वत से निसृत झरने के किनारे बैठें हों जो कल-कल नाद करता हुआ आगे बढ़ता जा रहा हो।

भाषा एवं भाव दोनों का साथ-साथ निर्वाह करते हुए मूल पंजाबी भाषा से हिन्दी में अनुवाद करना सरल नहीं था विशेषत: जहाँ लेखक प्रेमवश भावावेग में बह जाता है। फिर भी प्रयत्न किया गया है कि भाषा एवं भाव का उचित निर्वाह हो सके। अनुवाद में सिक्ख पंथ में प्रचलित कतिपय शब्दों का प्रयोग ज्यों का त्यों ही किया गया है। हिन्दी जगत् सम्भवत: इन शब्दों से अनभिज्ञ हों अथवा हिन्दी भाषा के प्रयोग की दृष्टि से उनके अर्थ या वर्तिनी में कुछ भेद हो तथापि गुरुवाणी की भावात्मक सरसता बनाए रखने के लिए ऐसा किया जाना सार्थक प्रतीत हुआ। इससे गुरुमत की मर्यादा का आदर बना रह सका है। जैसे वाहिगुरु, सतिनाम, गुरुमुख, मनमुख, लंगर, छकना, प्रसाद, अकाल पुरखु, हुक्म, भाणा, सतिगुरु आदि शब्दों का प्रयोग। यद्यपि बीच-बीच में हमने इन शब्दों की हिन्दी भाषागत स्पष्टता दे दी है ताकि पाठकों को कोई कठिनाई न हो फिर भी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उसके लिए विद्वान् पाठकों से आग्रह है कि वे ऐसे स्थलों का संकेत हमें लिख भेजें ताकि पुनर्मुद्रण में उसे सुधारा जा सके।

अंत में हम कामना करते हैं कि 'असचरज वस्तु' की इस ज्ञान-गंगा के शीतल एवं निर्मल जल में अवगाहन करने का अवसर हम सब को प्राप्त हो। ईश्वर करे-निर्मले संतों के इस ज्ञान-चरित्रों के अध्ययन से हमें अपने हृदय को शुद्ध करने एवं अपनी त्रुटियों को दूर करने में सहायता मिले। संतों का आत्मवत् प्रेम-संदेश हमारे हृदय में बस जाए। इसी कामना और आशा के साथ हिन्दी-अनुवाद को हिन्दी भाषा के अध्येताओं को सौंपते हुए हमें अपार आनंद का अनुभव हो रहा है। क्योंकि-

''चंद कोयले ही अगर जल उठें तो बाकी गीले कोयले भी आग पकड़ लेते हैं''।

विनीत—

डॉ० मदन गुलाटी
पूर्व वरिष्ठ प्राध्यापक
स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
दयाल सिंह कॉलेज
करनाल (हरियाणा)

क्या कहाँ ?

प्रथम अध्याय
मनुष्य जीवन की सफलता

1.1	मनुष्य देह की महानता	1
1.2	वियोग का कारण	4
1.3	माया और उसका स्वरूप	5
1.4	गुरुमुखता की सूझ	13
1.5	निर्मल सम्प्रदाय	22
1.6	देव ऋषि नारद जी का कलगीधर जी के दर्शनार्थ आना	23
1.7	खालसा पंथ की सर्जना	26
1.8	शिष्यों का काशी से विद्याध्ययन के पश्चात् वापिस लौटना	27
1.9	हजूर का भगवा वेश धारण कर लंगर-व्यवस्था का निरीक्षण करना	28
1.10	साधुओं की शंका का उत्तर	29
1.11	भाई गण्डा सिंह को सम्प्रदाय सौंपना	31
1.12	निर्मल सम्प्रदाय का उत्स	32

द्वितीय अध्याय
महंत बुड्ढा सिंह जी महाराज

2.1	जीवन चरित्र श्रीमान् १०८ महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज	33
2.2	सैणा सिंह जी	34
2.3	प्रताप सिंह हल्लोवाल	36
2.4	जन्म	37
2.5	संत धर्म सिंह जी समाधि वाले	38
2.6	बाबा बुड्ढा सिंह जी	39
2.7	महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी द्वारा कटासराज तीर्थ की यात्रा करना	43
2.8	श्री पंजा साहिब की यात्रा करनी	49
2.9	होती मरदान की यात्रा	52
2.10	'कपूरे की गृही' गाँव जाना	52
2.11	एक मुसलमान लड़के का दर्द बंद होना	56
2.12	दोबारा होती मरदान जाना	57
2.13	अमरनाथ की यात्रा	58
2.14	मिस्टर मैकालिफ़ को गुरुवाणी के अर्थों में सहायता करने के लिए सियालकोट जाना	64
2.15	संवत् 1947 का हरिद्वार का कुंभ	73
2.16	कुंभ उत्सव पर दूसरे दिन की कथा	75
2.17	1894 ई० में प्रयागराज के अर्धकुंभ पर जाना	87
2.18	पूर्व के अन्य स्थानों की यात्रा	90
2.19	पहली बार सिंध जाना	95
2.20	दल का प्रमुख नियुक्त	96
2.21	गोदावरी के कुंभ पर जाना	97
2.22	उज्जैन का कुंभ	97
2.23	गंगा और साधु	101
2.24	निर्मल आश्रम का आरम्भ	104

2.25	1904 की सिंध फेरी	104
2.26	1908 की अर्धकुंभ और महंत आत्मा सिंह जी का शरण में आना	105
2.27	1910 में पुन: आगमन	106
2.28	निर्मल बाग कनखल की स्थापना	106
2.29	1911 में सिंध प्रस्थान	106
2.30	मूली बाई	108
2.31	जेठ मल मघ्घर मल चैनानी	109
2.32	श्री हीरानंद मीर चंदानी	110
2.33	श्री लंका प्रस्थान	111
2.34	फौजी अफ़सर कर्नल	112
2.35	मसूरी में	115
2.36	हैदराबाद गुरुसंगत दरबार का शिलान्यास	151
2.37	बाबा जी को नमूनिया होना	116
2.38	महंत नारायण सिंह जी	118
2.39	गोवर्धन	118
2.40	काशी वाला आश्रम	119
2.41	दोबारा फिर नमूनिया	119
2.42	संत देवा सिंह ने वचन न मानना	120
2.43	सेठ वाधूमल धर्मदास	121
2.44	मिस्टर मेघराज मूलजानी	121
2.45	महाराज निक्का सिंह जी का शरण में आना	122
2.46	गुरु घर की सेवा का फल	122
2.47	जेठ मॅल चैनानी	123
2.48	मास्टर प्रताप राय टीकम दास वाधवानी	125
2.49	सरदार सेवा सिंह और मि. दसूजा	126
2.50	श्री नवल राय	127
2.51	भाई टोपन दास	128
2.52	संत आत्मा सिंह जी को महंत बनाना	128
2.53	मसूरी वाला आश्रम और राधाबाई	128
2.54	1934 से 1935 की सिंध यात्रा	129
2.55	हेमन दास मूलचन्द शिवलानी	129
2.56	श्री चूहड़ मॅल सिपाहीमिलानी	129
2.57	1936 की सिंध यात्रा	131
2.58	हैदराबाद-आश्रम का शिलान्यास	131
2.59	सच्च-खण्ड की तैयारी	131
2.60	महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी की स्मृति में सिंधी प्रेमियों की ओर से कुछ श्रद्धा के पुष्प	135
2.61	महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी की संक्षिप्त जीवन झलकियाँ	136
2.62	विशेष	137

तृतीय अध्याय
महंत आत्मा सिंह जी महाराज

3.1	जीवन चरित्र महंत आत्मा सिंह जी	141
3.2	संत आत्मा सिंह जी को महंत बनाना	145
3.3	महंत बनने के उपरांत पहली बार सिंध जाना	146

3.4	सेठ सतरामदास की पुत्रियों का विवाह	147
3.5	महंत आत्मा सिंह जी की उदारता	147
3.6	श्री लंका की यात्रा	148
3.7	संत मान सिंह जी का परलोक गमन	149
3.8	लखनऊ एवं मुम्बई की यात्रा	149
3.9	1962 ई० का कुंभ उत्सव	150
3.10	अंतिम शय्या	150
3.11	उत्तराधिकारी	151
3.12	क्षेत्र आरम्भ करना	151
3.13	अखाड़े प्रति श्रद्धा और प्रभु का निरंतर स्मरण	151
3.14	मिट गए गवन	152
3.15	अंतिम क्रिया	153
3.16	कुछ विशेष झलकियाँ	154

चतुर्थ अध्याय
महंत नारायण सिंह जी महाराज

4.1	जीवन चरित्र महंत नारायण सिंह जी महाराज	155

पंचम अध्याय
संत निक्का सिंह जी महाराज

5.1	जीवन लीला परम पूजनीय श्रीमान् १०८ महाराज निक्का सिंह जी 'विरक्त' 'जंगल से मालवा'	161
5.2	मातृलोक स्वर्गलोक से उत्तम है	161
5.3	मातृलोक में भारत-खण्ड की विशेषता	168
5.4	भारत-खण्ड में पंजाब की विशेषता	168
5.5	पंजाब में मालवा देश की विशेषता	169
5.6	मालवे का कुछ प्राचीन इतिहास	169
5.7	चहल वंश	170
5.8	सीहाँ दौद	171
5.9	जन्म	173
5.10	1923 ई० की कार सेवा में बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी के प्रथम दर्शन	175
5.11	शाह व्यापारी	177
5.12	गुरु-शरण	178
5.13	साधना	181
5.14	काशी अध्ययनार्थ गमन	182
5.15	सपना	184
5.16	कठिन साधना और रस-देश की यात्रा	188
5.17	महाराजा पटियाला	194
5.18	पूर्व के संयोगी	196
5.19	बाबा बेअंत सिंह जी	196
5.20	महाराज भगत सिंह जी	197
5.21	संत दर्शन सिंह जी विरक्त	199
5.22	गाँव असरपुर	199
5.23	पहली बार दौद जाना	201
5.24	भगत मिलाप कि भरत मिलाप?	203
5.25	पाकपटन की यात्रा	205
5.26	पुन: असरपुर	207

5.27	कश्मीर यात्रा	208
5.28	पँजा साहिब एवं पठान देश की यात्रा	210
5.29	खोख गाँव की प्रथम यात्रा	212
5.30	पश्चिमी पंजाब की यात्रा	216
5.31	हरखोवाल	218
5.32	गाँव लोह सिम्बली	221
5.33	गाँव सईआ-खेड़ा बनाम सऊआ कलाणा	225
5.34	प्रथम बार करनाल जाना	226
5.35	संत गोपाल सिंह जी	228
5.36	गाँव बाबरपुर	230
5.37	दूसरी बार करनाल गमन	232
5.38	गाँव थूहा	234
5.39	लॅभा मल जी और कुछ अन्य प्रेमियों का शरण में आना	236
5.40	पूर्व की यात्रा	238
5.41	लॅभा मल	242
5.42	नगर शेरपुर ग्रिंड और संत ज्वाला सिंह जी का गुरुपुरी प्रयाण	243
5.43	गाँव बख़्तगढ़ और भोतने	245
5.44	दोराहा और आस-पास के गाँवों में आगमन	247
5.45	बाबा बेअंत सिंह जी का गुरुपुरी प्रयाण	250
5.46	दक्षिण की यात्रा	252
5.47	बड़ी कुटिया का निर्माण	255
5.48	संत भगत सिंह जी का सचखण्ड प्रयाण	259
5.49	खोख गाँव को गुरुवाणी की देन	262
5.50	गुरुद्वारा साहिब बिशनपुर (लोपे)	263
5.51	विरह की पीड़ा और अरदास की शक्ति	265
5.52	गाँव धनौला	267
5.53	उच्ची दौद और आस-पास के गाँव में आगमन	269
5.54	गोराया नगर	273
5.55	गोराया कुटिया	274
5.56	उजागर सिंह सूरी को महाराज विरक्त जी का प्रथम मिलन	274
5.57	विरक्त महाराज जी का गोराया आगमन	275
5.58	पर-उपकारी	276
5.59	गाँव डबरी	277
5.60	होशियारपुर	278
5.61	गाँव तुरमरी	279
5.62	माता बिमला	281
5.63	गोराया कुटिया का निर्माण	282
5.64	दीन प्रवणता	284
5.65	संत कृष्ण जी	290
5.66	खालसा हाई स्कूल नाभा	291
5.67	हरि दाता है, भिखारी नहीं	294
5.68	संत गोपाल सिंह जी का सच्च-खण्ड प्रयाण	298
5.69	रिवालसर मनीकरन की यात्रा	299
5.70	यमुना तट पर गुरुद्वारा साहिब	301
5.71	गुरुद्वारा साहिब दधाल	302
5.72	गुरुद्वारा साहिब अगौल	303

5.73	गुरुद्वारा साहिब सिद्धसर अलौहरां	305
5.74	गुरुद्वारा साहिब बिरड़वाल	306
5.75	गाँव कुराली	306
5.76	संत दर्शन सिंह जी का गुरुपुरी प्रयाण	307
5.77	केस दान और गुरुमुख जीवन	308
5.78	संत हरबंस सिंह जी	311
5.79	अचिंत कम करहि प्रभ तिनके	311
5.80	नया भवन गुरुद्वारा साहिब बिशनपुरा (लोपे)	312
5.81	रूहानी वैद्य	313
5.82	श्री कृष्ण जी को पत्थरी रोग	315
5.83	यात्रा	316
5.84	रामपुरा फूल	317
5.85	श्रद्धा एवं शरण	319
5.86	बाबा जगत सिंह	320
5.87	बुद्धि सीमा से परे की क्रीड़ा	321
5.88	सेवक की शंका	331
5.89	अलौकिक विवाह	333
5.90	महंती का ताज	338
5.91	गोराया में पुनर् आगमन	339
5.92	बीमारी, कि लीला?	341
5.93	नानक दरबार का निर्माण	342
5.94	दरगाही पीठ	342
5.95	करनाल में आखिरी बार प्रयाण	344
5.96	विरक्त महाराज जी के जीवन की कुछ विशेष झलकियाँ	350
5.97	'माया' सम्बन्धी विचार	350
5.98	गुरु-प्रेम	351
5.99	गुरु-स्थान से प्रेम	351
5.100	सिक्ख पंथ से प्रेम	351
5.101	गुरुवाणी और गुरु नानक के घर से प्रेम	350
5.102	गुरुद्वारों की सेवा	352

छठा अध्याय

महंत राम सिंह जी महाराज

6.1	जीवन चरित्र पूज्य महंत राम सिंह जी महाराज, निर्मल आश्रम ऋषिकेश	353
6.2	गुरु बख्शी कुल उप्पल	355
6.3	अवतरण	363
6.4	नामकरण, बाल्यकाल एवं साधना	365
6.5	यह तो घर है प्रेम का!	367
6.6	आदेश का कार्य	375
6.7	ऋषिकेश डेरा और सच्चा आनन्द	376
6.8	कनखल-बाहरी भवन	377
6.9	नाम की दात से उपकृत और बाहर संगत में जाने का आदेश	378
6.10	संत जोध सिंह जी	380
6.11	संत गुरिंदर सिंह (छोटू बाबा) जी	382
6.12	विरक्त महाराज जी की स्मृति में समागम	383

6.13	प्रथम बार मुम्बई यात्रा	384
6.14	सन् 1984	386
6.15	सन् 1985	388
6.16	मनीकरन की यात्रा	389
6.17	1986 का कुंभ मेला और अस्पताल का शिलान्यास	391
6.18	गाँव कुतबनपुर में गुरुवाणी का बीज	393
6.19	भाग्यशाली बेरियाँ	394
6.20	1987 का पुण्य तिथि समागम	396
6.21	धर्म प्रचार और तीर्थ यात्रा	399
6.22	रमज़	401
6.23	बेपरवाही	403
6.24	संत करतार सिंह जी	404
6.25	संत प्रीतम सिंह जी (मोनी)	405
6.26	आश्रम में अन्य कमरों का निर्माण	411
6.27	बिशनपुरा (लोपे) कुटिया का शिलान्यास	412
6.28	हरिमंदिर साहिब प्रस्थान	413
6.29	दुबई तथा श्रीलंका की यात्रा	414
6.30	अस्पताल का उद्घाटन समारोह	416
6.31	संत चमन लाल जी	430
6.32	कनखल के नव भवन की नींव	431
6.33	बिशनपुरा (लोपे) कुटिया का उद्घाटन	433
6.34	जिन प्रेम कीउ	442
6.35	कुटिया गाँव असरपुर	443
6.36	कुटिया गाँव थूहा	444
6.37	आखणि जोरु चुपै नह जोरु	447
6.38	उइ मुइआ न जाही छोड़ि	453
6.39	जो मागहि ठाकुरु अपुने ते	455
6.40	निरभउ निरवैरु	456
6.41	गुरुद्वारा साहिब घणीवाल	460
6.42	लालची रूह की मुक्ति	461
6.43	श्री लंका की दूसरी यात्रा	461
6.44	दीपावली ! कि गुरुवाणी का बीज?	461
6.45	अस्पताल के नए अनुभाग की नींव	474
6.46	विदेश यात्रा	475
6.47	कार सेवा	477
6.48	कनखल : नए भवन का उद्घाटन	478
6.49	सहज कथा की रचना	479
6.50	अलौकिक दीपावली	480
6.51	नगर कीर्तन के संक्षेप दर्शन 10 नवम्बर 1993	482
6.52	11 नवम्बर 1993	485
6.53	12 नवम्बर 1993	492
6.54	13 नवम्बर 1993, दीपावली का दिन	495
6.55	दीपावली के इस महान् समागम में भाग्यवान् पुरुषों के द्वारा की गई सेवा का विवरण	497
6.56	इस समागम में पहुँचने वाले मुख्य रागी जत्थे	502
6.57	इस समागम में दर्शन देने वाले प्रसिद्ध संत महात्मा	502
6.58	पूर्व की यात्रा	505
6.59	मुम्बई आश्रम का निर्माण	506

6.60 निर्मल आश्रम दीपमाला पगरानी पब्लिक स्कूल का जन्म 513
6.61 संत धर्म सिंह जी 513
6.62 आदर्श विवाह 514
6.63 करनाल कुटिया दो इकोतरियाँ 515
6.64 पित्तरों का उद्धार 518
6.65 गोराया की दीपावली 520
6.66 लैला 521
6.67 गुरुवाणी का प्रवाह 525
6.68 आदर्श संयोग और मुम्बई में नाम प्रदान 527
6.69 1996 का पुण्यतिथि समागम और भगत लॅभा मल जी का सच्चखण्ड प्रयाण 529
6.70 स्कूल का उद्घाटन समारोह 531
6.71 1997 की मुम्बई यात्रा 532
6.72 संत भरत सिंह जी 533
6.73 संत महेश चन्द्र (पंडित जी) 534
6.74 संत गुरभगत सिंह जी 535
6.75 संत कर्म सिंह 536
6.76 आश्रम में स्थाई रूप से रहकर सेवा कर रहे प्रेमी 536
6.77 करनाल कुटिया के मुख्य सेवक 538
6.78 कुछ विशेष 539
6.79 निर्मल आश्रम दीपमाला पगरानी पब्लिक स्कूल 539
6.80 निर्मल आश्रम अस्पताल 539
6.81 निर्मल आश्रम 540
6.82 निर्मल बाग कनखल 541
6.83 निर्मल कुटिया संत निक्का सिंह जी महाराज, करनाल 541
6.84 निर्मल संत निवास-मुम्बई 541

चित्र सूची

1. आदिगुरु श्री गुरु नानक देव जी महाराज 16
2. श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज (निर्मल सम्प्रदाय वेश में) 20
3. पाँच निर्मल संतों को कलगीधर पिता संस्कृत अध्ययनार्थ काशी भेज रहे हैं 20
4. श्रीमान् महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज 32
5. निर्मल आश्रम, ऋषिकेश 104
6. पूज्य महंत बुड्ढा सिंह जी कुछ आदरणीय विभूतियों के साथ 136
7. महंत बाबा आत्मा सिंह जी महाराज 140
8. 1950 के कुंभ उत्सव पर शाही जलूस के समय महंत आत्मा सिंह जी महाराज 152
9. स्वर्ण जड़ित सुंदर पालकी जो निर्मल पंचायती अखाड़ा कनखल को भेंट की गई 152
10. संत मान सिंह जी 152
11. 1962 के कुंभ मेले पर शाही जलूस के समय महंत आत्मा सिंह जी महाराज 152A
12. महंत नारायण सिंह जी महाराज 152B
13. महंत नारायण सिंह जी महाराज के गद्दी नशीन समय का दृश्य 160
14. 1974 के कुंभ मेले पर शाही जलूस के समय महंत नारायण सिंह जी महाराज 160
15. सन् 1965 ई. के युद्ध समय महंत नारायण सिंह जी महाराज प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी को एक लाख रुपये का चैक देते हुए 160A
16. महंत आत्मा सिंह महाराज जी की पुण्य तिथि पर स. गुरचरण सिंह जी टौहड़ा श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए। संत हरचंद सिंह जी लौंगोवाल और महंत नारायण सिंह जी महाराज सुशोभित हैं 160A

17.	निर्मल आश्रम ऋषिकेश में ज्ञानी जैल सिंह जी, भूतपूर्व राष्ट्रपति क्षेत्र (गुरु का लंगर) वितरित करते हुए। महंत नारायण सिंह जी महाराज भी सुशोभित हैं	160B
18.	निर्मल आश्रम ऋषिकेश में संत हरचंद सिंह जी लौंगोवाल क्षेत्र (गुरु का लंगर) वितरित करते हुए महंत नारायण सिंह जी भी सुशोभित हैं	160B
19.	निर्मल आश्रम ऋषिकेश में संत हरचंद सिंह जी लौंगोवाल और अन्य महान् विभूतियां	160C
20.	श्रीमान् महंत नारायण सिंह जी के देहावसान के पश्चात् महंत राम सिंह जी महाराज चँवर करते हुए	160C
21.	विरक्त शिरोमणि संत निक्का जी महाराज	160D
22.	पूज्य संत निक्का सिंह जी महाराज एवं पूज्य संत भगत सिंह जी महाराज	200
23.	संत दर्शन सिंह जी महाराज एवं संत गोपाल सिंह जी महाराज	200A
24.	श्रीमान् महंत राम सिंह महाराज जी के गद्दी नशीन समय पूज्य विरक्त महाराज संत निक्का सिंह जी और निर्मल पंचायती अखाड़ा के श्री महंत साहिब, श्रीमान् महंत सुच्चा सिंह जी सुशोभित हैं	328
25.	श्रीमान् महंत राम सिंह जी के गद्दी नशीन समय-सुशोभित विभूतियां : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान जत्थेदार गुरचरण सिंह जी टोहरा और महंत श्रीमान् गुरबचन सिंह जी बरनाला वाले	328
26.	वृद्धावस्था समय सन् 1982 के किसी समय पूज्य विरक्त शिरोमणि श्रीमान् १०८ संत निक्का सिंह जी महाराज	352
27.	श्रीमान् १०८ महंत राम सिंह जी महाराज अपने पूज्य गुरुदेव विरक्त शिरोमणि श्रीमान् १०८ संत निक्का सिंह जी की पावन अस्थियों को गंगा में प्रवाहित होते हुए।	352A
28.	पूज्य विरक्त शिरोमणि श्रीमान् १०८ संत निक्का सिंह महाराज जी के पवित्र चरणों में दर्शन	352A
29.	श्रीमान् १०८ महंत राम सिंह जी महाराज	352B
30.	श्रीमान् संत जोध सिंह जी महाराज (दाईं ओर) और श्रीमान् संत गुरिंदर सिंह (छोटू बाबा) जी के संन्यास धारण करते समय का दृश्य	376
31.	श्रीमान् संत जोध सिंह जी महाराज, श्रीमान् संत गुरिंदर सिंह (छोटू बाबा) जी महाराज	376A
32.	सन् 1986 के कुंभ उत्सव के समय महंत बाबा राम सिंह जी महाराज जी अपनी संत मण्डली सहित शाही जलूस में सुशोभित	392
33.	संत प्रीतम सिंह जी मौनी, संत चमन लाल जी	408
34.	संत बाबा करतार सिंह जी, संत धर्म सिंह जी	408A
35.	आश्रम ज्ञान गुफ़ा काशी, निर्मल कुटिया गाँव खोख (पंजाब)	448
36.	निर्मल कुटिया, करनाल	448A
37.	गुरुद्वारा साहिब, बिशनपुरा (लोपे) पंजाब, निर्मल कुटिया बिशनपुरा (लोपे) पंजाब	448B
38.	निर्मल कुटिया, गाँव गोराया (पंजाब), निर्मल कुटिया गाँव लोह सिंबली (पंजाब)	448C
39.	निर्मल कुटिया, गाँव असरपुर (पंजाब), निर्मल कुटिया गाँव थूहा (पंजाब)	448D
40.	निर्मल कुटिया गाँव कुतबनपुर (पंजाब), निर्मल कुटिया गाँव अखलासपुर, होशियारपुर (पंजाब)	448E
41.	जन्म स्थान बाबा निक्का सिंह जी महाराज सीहाँ दौद (पंजाब), निर्मल कुटिया गाँव उच्ची दौद (पंजाब)	448F
42.	गुरुद्वारा साहिब एवं सरोवर, (पातशाही नौंवी) गाँव अगोल (पंजाब) जिसकी सेवा विरक्त शिरोमणि संत बाबा निक्का सिंह महाराज जी ने करवाई	448G
43.	निर्मल संत निवास, मुम्बई	448H
44.	निर्मल आश्रम अस्पताल, ऋषिकेश	480
45.	निर्मल बाग, कनखल	480A
46.	पूज्य संत बाबा राम सिंह महाराज जी की विदेश यात्रा के दौरान का दृश्य	480B
47.	कारसेवा	480C
48.	सन् 1993 ई. की दीपावली के महान् समागम समय नगर कीर्तन के दृश्य	496
49.	निर्मल आश्रम दीपमाला पगरानी पब्लिक स्कूल, ऋषिकेश	512
50.	ईश्वरीय नूर अलौकिक मौज में मग्न हुआ अनेकों रूपों में	528

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि॥

मंगलाचरण

दोहा — नमो नमो नम है प्रभु, करता पुरख सुजान।
मैं बारिक हूँ निपट मत, अपणा बिरद पछान॥ १ ॥

दोहा — विद्या बिन धन हीन हूँ, नहि सुकृित कुछ काज।
पापों के संग खचत मत, क्रिपा करहु महाराज ॥ २ ॥

दोहा — असुरन को संघारै, लछमी पत महाराज।
दोइ कर जोड़ मम बंदना, भगतन के सिरताज ॥ ३ ॥

दोहा — सत् चित्त आनंद राम को, मुनि जन धरते धिआन।
बहि हमरी रखिया करे, बुधि बल देवै दान ॥ ४ ॥

(दसों सतगुरुओं का मंगल)

कुण्डली — गुरु नानक अंगद अमर, रामदास गुर जान।
अरजन हरगोबिंद जी, हरी राइ सुख खान।
हरी राइ सुख खान, वुही हर क्रिशन सरूपा।
तेग बहादर धीर, बीर गुर दसवें भूपा।
एक जोत दस मूरती, जा मैं नहीं आनक।
सोई सुध सरूप, वसे मम रि गुर नानक॥ ५ ॥

दोहा — बंदन दुइ कर जोरि, श्री गुरु ग्रंथ सु पंथ बरि।
बुधि गयान उरि मोर, दाइक लोक प्रलोक सद ॥ ६ ॥

दोहा — श्री सतिगुर क्रिपा करहु, मैं अनाथ के नाथ।
मम बुद्धि सुधि कीजिए, निज कर धरीए माथ ॥ ७ ॥

दोहा — बिराट् रूप प्रभ आप हो, कहते वेद पुरान।
सभ सरीर हैं आपके, निसचे कीआ जान ॥ ८ ॥

दोहा — काम जो करे सरीर इह, वुह तेरे ही होइ।
आपन जान पूरा करो, विघन ना लागै कोइ ॥ ९ ॥

दोहा — ग्रंथ अरंभन यह कीआ, तेरी आगिआ मान।
तेरे ही अरपन करूँ, तू दाता भगवान॥ १० ॥

दोहा — सुभ विद्या दाता सदा बंदो पग सिर नाय।
सासत बोध स बोध कर, अनायास समझाए ॥ ११ ॥

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि॥

1 अध्याय

मनुष्य जीवन की सफलता

मनुष्य-देह की महानता

बहुत लम्बे समय तक भटकने के पश्चात् इस जीव को मूल्यवान् मनुष्य देह प्राप्त हुई जैसा कि गुरुवाक्—

फिरत फिरत बहुते जग हारिओ मानस देह लही॥
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही॥

(सोरठ महला-९, पृष्ठ ६३१)

यथा— फफा फिरत फिरत तू आइआ॥
दुर्लभ देह कलिजुग महि पाइआ॥

(गउड़ी बावन अखरी, पृष्ठ २५८)

यथा— अनिक जनम बीतीअन भरमाई॥
घरि वासु न देवै दुतर माई॥

(सू०म०५, पृष्ठ ७४५)

यथा— मिलु जगदीस मिलन की बरीआ॥
चिरंकाल इह देह संजरीआ॥

(ग०गु०म०५, पृष्ठ १७६)

यथा— लख चउरासीह जोनि सबाई॥
माणस कउ प्रभि दीई वडिआई॥
इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा।

(मारु सोलहे महला ५, पृष्ठ १०७५)

यथा— कबीर मानस जनमु दुलंभु है होइ न बारै बार॥
जिउ बन फल पाके भुइ गिरहि बहुरि न लागहि डार॥

(सलोक कबीर जी, पृष्ठ १३६६)

यथा— मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे॥

(गउड़ी महला ९, पृष्ठ २२०)

यथा— चउरासीह लख जोनि विच, उतम जनम सु मानसि देही॥

(भाई गुरदास)

यथा— इस देही कउ सिमरहि देव॥ सो देही भजु हरि की सेव॥

(गउड़ी भैरउ कबीर जी, पृष्ठ ११५९)

यथा— लख चउरासीह जोनि भ्रमि आइओ॥ अब के छुटके ठउर न ठाइओ॥

(गउड़ी कबीर जी, पृष्ठ ३३७)

यथा— कई जनम भए कीट पतंगा॥ कई जनम गज मीन कुरंगा॥
कई जनम पंखी सरप होइओ॥ कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ॥
मिलु जगदीस मिलन की बरीआ॥ चिरंकाल इह देह संजरीआ॥ रहाउ॥
कई जनम सैल गिरि करिआ॥ कई जनम गरभ हिरि खरिआ॥
कई जनम साख करि उपाइआ॥ लख चउरासीह जोनि भ्रमाइआ॥

(ग०ग० महला ५, पृष्ठ १७६)

यथा— लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ॥
नानक नामु समालि तूं सो दिनु नेड़ा आइओइ॥

(सिरीरागु महला ५, पृष्ठ ५०)

आदि गुरु-प्रमाणों से स्पष्ट हो जाता है कि यह जीव अनंत काल से भटकता हुआ अनेकों निकृष्ट योगियों के कष्ट सह कर, उत्तम मनुष्य-देही को प्राप्त हुआ, जोकि अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान करके सदा के लिए सभी दु:खों से छुटकारा पाने का मुक्त द्वार है। परन्तु यह जीव अज्ञान से आच्छन्न होने के कारण, अविद्या रूपी निद्रा के दोष के कारण, संसार रूपी स्वप्न में इस प्रकार लीन हुआ कि जो शरीर परमेश्वर-प्राप्ति के लिए मिला था जैसा कि गुरुवाक् है—

भइ परापति मानुख देहुरीआ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ॥

(आसा महला ५, पृष्ठ १२)

यथा— देह घोड़ी जी जितु हरि पाइआ राम॥

(वडहंस महला ४, घोड़ीआ पृष्ठ ५७६)

अज्ञान के वशीभूत होकर जीव इस शरीर को अपना समझकर हर्ष, शोक, भूख, प्यास, जन्म-मरण, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकार; शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध आदि विषय; आधि, व्याधि, उपाधि, आदि तीन ताप; आसा, तृष्णा, चिंता आदि निशाचरियों; पदार्थों की भूख-प्यास जैसे अनंत दु:खों का शिकार हो गया। शास्त्रों में आया है कि—सर्व दु:खों का कारण और समस्त दु:ख का आश्रय देह है। देह का कारण धर्म-अधर्म है अर्थात् शुभ-अशुभ कर्म हैं। शुभ-अशुभ कर्मों का कारण राग-द्वेष है। राग-द्वेष का कारण अनुकूल-प्रतिकूल ज्ञान है। अनुकूल-प्रतिकूल ज्ञान का कारण मंद-बुद्धि है, मंद-बुद्धि का कारण आत्म-अज्ञानता है। अत: जब तक हृदय में अज्ञान की निवृत्ति नहीं हो जाती, यह जीव पूर्ण रूप से सुख प्राप्त नहीं कर सकता। मनुष्य शरीर धारण करने का एकमात्र प्रयोजन अज्ञान की निवृत्ति है और सुख-स्वरूप आत्मा की पहचान है। अपने आत्म-स्वरूप को पहचाने बिना जीवन व्यर्थ है। जैसा कि गुरुवाक् है—

यथा— मानुखु बिनु बूझे बिरथा आइआ॥ अनिक साज सीगार बहु करता जिउ मिरतकु ओढाइआ॥

(टोडी महला ५, पृष्ठ ७१२)

यथा— नाम दानु इसनानु न कीओ इक निमख न कीरति गाइओ॥
नाना झूठि लाइ मनु तोखिओ नह बूझिओ अपनाइओ॥

(टोडी महला ५, पृष्ठ ७१२)

यथा— करि किरपा राखहु रखवाले॥ बिनु बूझे पसू भए बेताले॥

(ग०म० १, पृष्ठ २२४)

यथा— बिनु बूझे वडा फेरु पइआ फिरि आवै जाई॥
सतिगुर की सेवा न कीतीआ अंति गइआ पछुताई॥

(गूजरी वार, पृष्ठ ५११)

यथा— आवन आए सृसटि महि बिनु बूझे पसु ढोर॥
नानक गुरमुखि सो बुझै जा कै भाग मथोर॥

(गउड़ी बावन अखरी, पृष्ठ २५१)

यथा— पड़हि गुणहि तूं बहुतु पुकारहि विणु बूझे तूं डूबि मुआ॥

(रागु आसा महला ३, पृष्ठ ४३५)

यथा— कउडी बदलै जनमु गवाइआ चीनसि नाही आपै॥
गुरमुखि होवै ता एको जाणै हउमै दुखु न संतापै॥

(रागु सूही महला ३, पृष्ठ ७५३)

यथा— एक वसतु बूझहि ता होवहि पाक॥
बिनु बूझे तूं सदा नापाक॥

(आसा महला ५, पृष्ठ ३७४)

यथा— आपु पछाणहि ता सचु जाणहि साचे सोझी होई॥

(सूही महला ३, पृष्ठ ७६९)

यथा— जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई॥

(धनासरी महला ९, पृष्ठ ६८४)

यथा— सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ॥
गुरमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ॥

(सिरीरागु महला १, पृष्ठ ६०)

यथा— समझि सूझि सहज घरि होवहि॥ बिनु बूझे सगली पति खोवहि॥

(आसा महला १, पृष्ठ ४१३)

यथा— पढ़ि पढ़ि पंडित करहि बीचार॥ बिनु बूझे सभ होइ खुआर॥

(सूही वार महला १, पृष्ठ ७९१)

यथा— बिनु बूझे सभु दुखु दुखु कमावणा॥
हउमै आवै जाइ भरमि भुलावणा॥

(सूही महला १, पृष्ठ ७५२)

यथा— दस अठ लीखे होवहि पासि॥ चारे बेद मुखागर पाठि॥
पुरबी नावै वरनां की दाति॥ वरत नेम करे दिन राति॥
काजी मुलां होवहि सेख॥ जोगी जंगम भगवे भेख॥
को गिरही करमा की संधि॥ बिनु बूझे सभ खड़ीअसि बंधि॥

(बसंत महला १, पृष्ठ ११६९)

यथा— धरति आकासु पातालु है चंदु सूरु बिनासी॥
बादिसाह साह उमराव खान ढाहि डेरे जासी॥
रंग तुंग गरीब मसत सभु लोकु सिधासी॥
काजी सेख मसाइका सभे उठि जासी॥
पीर पैकाबर अउलीए को थिरु न रहासी॥
रोजा बाग निवाज कतेब विणु बुझे सभ जासी॥

(मारु महला ५, पृष्ठ ११००)

यथा— सरै सरीअति करहि बीचार॥ बिनु बूझे कैसे पावहि पारु॥

(वार सिरीरागु, पृष्ठ ८४)

यथा— बिनु बूझे कहा मनु ठहराना॥ नाम बिना सभु जगु बउराना॥

(भैरउ महला ५, पृष्ठ ११४०)

यथा— निहफलं तस्य जनमस्य जावद ब्रहम न बिंदते॥

(सलोक सहसक्रिती महला १, पृष्ठ १३५३)

यथा— चिरंकाल पाई दुर्लभ देह॥ नाम बिहूणी होई खेह॥
पसू परेत मुगध ते बुरी॥ तिसहि न बूझै जिनि एह सिरी॥

(रामकली महला ५, पृष्ठ ८९०)

आदि गुरु-वचनों से स्पष्ट है कि मनुष्य जन्म का प्रयोजन है—यथार्थ ज्ञान अर्थात् जिस परमेश्वर से विलग होकर अनंत कष्ट सहन किये, अनंत योनियों में भटकता फिरा, उस आनंद-सागर परमेश्वर की पहचान कर सदा के लिए उसमें एक हो जाना अथवा जन्म-मरण आदि समस्त कल्पित दु:खों से सदा के लिए मुक्त हो जाना।

वियोग का कारण

परमेश्वर को भूलकर सांसारिक भोगों में उलझना बुद्धिमान मनुष्य का कार्य नहीं, अपितु मूर्खतावश दु:खों का आह्वान करना है जिस प्रकार गुरु साहिब ने फरमाया है—

नामु बिसारि करे रस भोग॥ सुखु सुपनै नही तन महि रोग॥

(ग०म० ५, पृष्ठ २४०)

यथा— मूरखु भोगे भोगु दुख सबाइआ। सुबहु उठे रोग पाप कमाइआ॥
हरखहु सोगु विजोगु उपाइ खपाइआ॥

(वार माझ की, पृष्ठ १३९)

यथा— भोगहि भोग अनेक विणु नावै सुंञिआ॥
हरि की भगति बिना मरि मरि रुंनिआ॥
कपड़ भोग सुगंध तनि मरदन मालणा॥
बिनु सिमरन तनु छारू सरपर चालणा॥

(आसा महला ५, पृष्ठ ३९८)

यथा— बहु सादहु दूखु परापति होवै॥
भोगहु रोग सु अंति विगोवै॥
हरखहु सोगु न मिटई कबहू विणु भाणे भरमाइदा॥

(मारू महला १, पृष्ठ १०३४)

यथा— भोगी कउ दुखु रोग विआपै। घटि घटि रवि रहिआ प्रभु जापै।

(बसंतु महला १, पृष्ठ ११८९)

यथा— मिठा करि कै खाइआ पिआरे तिनि तनि कीता रोगु॥
कउड़ा होइ पतिसटिआ पिआरे तिस ते उपजिआ सोगु॥
भोग भुंचाइ भुलाइअनु पिआरे उतरै नही विजोगु॥

(सोरठि महला ५, पृष्ठ ६४१)

यथा— **मिठा करि कै कउड़ा खाइआ॥ तिनि कउड़ै तनि रोगु जमाइआ॥**

(सारंग की वार, पृष्ठ १२४३)

यथा— **रूपी भुख न उतरै जां देखां तां भुख॥**
जेते रस सरीर के तेते लगहि दु:ख॥

(वार मलार की, पृष्ठ १२८७)

इस प्रकार भोगों में आसक्त जीव अनेक प्रकार के दु:ख-सुख भोगता हुआ उसी में प्राण त्याग देता है जिस प्रकार मक्खी मधु के लालचवश मधु में ही फँसकर प्राण त्याग देती है, उससे बाहर नहीं निकल सकती। जैसे गुरुवाक्—

यथा— **नानक दुनीआ चारि दिहाड़े सुखि कीतै दुखु होई॥**
गला वाले हैनि घणेरे छडि न सकै कोई॥
मखी मिठै मरणा॥ जिन तू रखहि तिन नेड़ि न आवै तिन भउ सागरु तरणा॥

(वार मलार की, पृष्ठ १२८६)

संसार के पदार्थ बाहर से तो मीठे-मीठे सुखदाई प्रतीत होते हैं, लेकिन भीतर से देखने पर विष समान हैं। जैसा कि शेख़ फ़रीद जी ने फरमाया है—

फरीदा ए विसु गंदला धरीआं खंडु लिवाड़ि॥
इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाड़ि॥

(सलोक फ़रीद, पृष्ठ १३७९)

सांसारिक पदार्थों में आसक्त जीव इस प्रकार पीड़ित होता है जिस प्रकार मछली माँस के टुकड़े के वशीभूत होकर काँटे में फँसकर प्राण त्याग देती है। इस प्रकार माया द्वारा भ्रमित जीव जड़ पदार्थों में मोहित हुआ अज्ञान के वशीभूत दु:खों को ही सुख मान लेता है, वह कभी भूलकर भी सच्चे सुख की कल्पना नहीं करता। कल्पना भी कैसे करे? परमेश्वर की माया इतनी प्रबल है कि इस जीव को भ्रमित कर देती है जैसा कि कबीर जी ने फरमाया है—

ऐसा तैं जगु भरमि लाइआ॥
कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ॥
ऐसी बलशाली माया का स्वरूप क्या है?

(सिरीरागु, पृष्ठ ९२)

माया और उसका स्वरूप

इस प्रकार माया द्वारा मोहित जीव परमेश्वर को भूलकर प्रत्येक कर्म में अपने को कर्त्ता मान लेता है। बस यही संसार है। 'अहं' से बाहर कहीं भी संसार नहीं है। संसार नाम है 'माया' का। माया कहते ही उसे हैं जिस का अस्तित्व तो है नहीं, लेकिन प्रतीत होकर जीव को कल्पित दु:ख-सुख में आसक्त कर दे। उसे कहते हैं माया, जिस प्रकार गुरुवाक्—

यथा— **माइआ किस नो आखीऐ किआ माइआ करम कमाइ॥**
दुखि सुखि एहु जीउ बधु है हउमै करम कमाइ॥

(सिरीरागु, पृष्ठ ६७)

यथा— **इनि् माइआ जगदीस गुसाई तुम्हरे चरन बिसारे॥**
किंचत प्रीति न उपजै जन कउ जन कहा करहि बेचारे॥ रहाउ॥
ध्रिगु तनु ध्रिगु धनु ध्रिगु इह माइआ ध्रिगु ध्रिगु मति बुधि फंनी॥
इस माइआ कउ द्रिड़ु करि राखहु बाँधे आप बचंनी॥

यथा— किआ खेती किआ लेवा देई परपंच झूठु गुमाना॥
कहि कबीर ते अंति बिगूते आइआ कालु निदाना॥

(बिलावलु कबीर जी, पृष्ठ ८५७)

यथा— माइआ ऐसी मोहनी भाई॥ जेते जीअ तेते डहकाई॥ रहाउ॥
पंखी म्रिग माइआ महि राते॥ साकर माखी अधिक संतापे॥
तुरे उसट माइआ महि भेला॥ सिध चउरासीह माइआ महि खेला॥
छिअ जती माइआ के बंदा॥ नवै नाथ सूरज अरु चंदा॥
तपे रखीसर माइआ महि सूता॥ माइआ महि कालु अरु पंच दूता॥
सुआन सिआल माइआ महि राता॥ बंतर चीते अरु सिंघाता॥
मांजार गाडर अरु लूबरा॥ बिरख मूल माइआ महि परा॥
माइआ अंतरि भीने देव॥ सागर इंद्रा अरु धरतेव॥
कहि कबीर जिसु उदरु तिसु माइआ॥ तब छूटे जब साधू पाइआ॥

(भैरउ कबीर जी, पृष्ठ ११६०)

यथा— माइआ मोहु गुबारु है तिस दा न दिसै उरवारु न पारु॥
मनमुख अगिआनी महा दुखु पाइदे डुबे हरि नामु विसारि॥

(सिरीरागु की वार, पृष्ठ ८९)

यथा— माइआ मोहु गुबारु है दूजै भरमाई॥
मनमुख ठउर न पाइनी फिरि आवै जाई॥

(वार सूही, पृष्ठ ७८६)

यथा— कैसे मन तरहिगा रे संसारु सागरु बिखै को बना॥
झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना॥

(पृष्ठ ४८६)

यथा— साधो इहु जगु भरम भुलाना॥
राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना॥ रहाउ॥
मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना॥
जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना॥
दीन दइआल सदा दुःख भंजन ता सिउ मनु न लगाना॥
जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुखि होइ पछाना॥

(धनासरी महला ९, पृष्ठ ६८४)

यथा— कहतु कबीर सुनहु रे प्रानी परे काल ग्रस कूआ॥
झूठी माइआ आपु बंधाइआ जिउ नलनी भ्रमि सूआ॥

(रागु सोरठि, बाणी कबीर जी, पृष्ठ ६५४)

यथा— एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ॥
माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ॥

(गउड़ी महला ३, पृष्ठ ९१८)

माया का अर्थ है मोह जाल में फंसा लेना। मोह नाम है अंधकार का, अंधकार अर्थात् अंधेरे में चल रहे जीव को न तो कुछ आगे नज़र आता है न पीछे, न ऊपर, न नीचे, यहाँ तक कि वह अपने आपको भी भूल जाता है।

ऐसी हालत में जीव का दु:खी होना ज़रूरी है। ऐसी परिस्थितियों में भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को भी सचेत किया है—

यथा— **दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया॥**
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तुरन्ति ते॥

(श्रीमद्भगवद्गीता ७/१४)

हे अर्जुन! मेरी त्रिगुणमयी माया अति अद्भुत, अलौकिक एवं जीवों को मोहित करने वाली है, लेकिन जो मेरी अथवा गुरु की शरण में आ जाता है वे इस माया को पार कर जाता है अन्य कोई दूसरा उपाय नहीं। भगवान् के पवित्र मुख से इस प्रकार श्रवण करके अर्जुन ने हठ किया कि मुझे आपकी माया भ्रमित नहीं कर सकती। भगवान् कहने लगे कि मेरी माया को पार करना अति कठिन है। हे अर्जुन! मेरी माया में मोहित होकर तू मुझे तो विस्मृत करेगा ही, अपितु स्वयं अपने को भी विस्मृत कर देगा। अर्जुन ने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। आप अपनी माया प्रकट करो। यह सुनकर भगवान् मौन हो गए। अर्जुन ने फिर कहा कि विस्मृत कर देने वाली माया अवश्य प्रकट करो। भगवान् श्री ने पुन: मना किया कि मेरी माया का अवलोकन करके तुम्हें अत्यन्त दु:ख होगा, लेकिन अर्जुन ने हठ का त्याग नहीं किया। अर्जुन का हठ देखकर भगवान् कहने लगे कि अच्छा कल दिखायेंगे। दूसरे दिन अर्जुन को रथ में बिठाकर एक सरोवर पर ले गए, लेकिन स्वयं दातून करने लगे। अर्जुन को कहने लगे कि तुम मेरी माया का अवलोकन करो, मैं यहीं बैठा रहूँगा, लेकिन तुम्हें दृष्टिगोचर नहीं आऊँगा। तुम चाहे जितना प्रयत्न करो। प्रयत्न करने के बावजूद भी तुम मुझे यहाँ बैठा देख नहीं पाओगे, जाओ इस सरोवर में स्नान कर लो।

अर्जुन कहने लगा कि आप यहाँ से कहीं मत जाना। भगवान् ने कहा कि यह मेरी प्रतिज्ञा रहेगी कि मैं यहाँ से कहीं नहीं जाऊँगा, लेकिन तुम मुझे यहाँ बैठे को देख नहीं पाओगे। क्योंकि

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः॥
मूढोऽयंनाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्॥

(श्रीमद्भगवद्गीता ७/२५)

अर्थात् अपनी योगमाया से छिपा हुआ मैं सबके प्रत्यक्ष नहीं होता हूँ इसलिए यह अज्ञानी मनुष्य मुझ जन्म रहित अविनाशी परमात्मा को तत्त्व से नहीं जानता है।

अर्जुन को ऐसे वचन कहकर अपनी धारणा को और भी दृढ़कर दिया कि देखना भूलना नहीं। अर्जुन सरोवर से स्नान करके बाहर आया। क्या देखता है कि—न वहाँ भगवान् हैं, न रथ, पहले वाली जगह भी नहीं है, कोई नया ही विश्व है, घना जंगल है। अर्जुन ने इधर-उधर देखा, भगवान् कहीं दिखाई नहीं दिये। ज़ोर-ज़ोर से रोने और पुकारने लगा। कोई सुन नहीं रहा। भगवान् पास ही बैठे हैं, लेकिन नज़र नहीं आ रहे जैसा कि गुरुवाक्—

माइआ मोहु गुबारु है दूजै भरमाई॥
मनमुख ठउर न पाइनी फिरि आवै जाई॥

(वार सूही, पृष्ठ ७८६)

जिस प्रकार घने अंधकार में अपने पाँव अथवा आगे-पीछे कोई चीज़ नज़र नहीं आ रही होती उसी प्रकार यह माया का अंधकार है। अर्जुन सारा दिन व्याकुल रहा, कोई पता न लगा। हे केशव! हे कृष्ण! हे गोविन्द! दर्शन दो, इस प्रकार पुकारता रहा पर कुछ ज्ञात न हुआ। तीन दिन विचरण करता रहा, भूख-प्यास का मारा, व्याकुल हुआ इधर-उधर देख रहा है, कोई गाँव, कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दे रहा, आखिर चौथे दिन घूमते-फिरते एक व्यक्ति को देखा।

पास जाकर कहने लगा कि मैं भटक गया हूँ, हस्तिनापुर किधर है? क्या भगवान् कृष्ण को कहीं देखा है? उस व्यक्ति ने कहा कि मैंने भगवान् कृष्ण और हस्तिनापुर के सम्बन्ध में सुना तो है, लेकिन वे तो द्वापर युग में हुए हैं, अब तो कलियुग चल रहा है। मेरे गाँव की धर्मशाला में प्रतिदिन महाभारत की कथा होती है उसमें प्रकरण आया था कि व्यास जी राजा जनमेजय को कह रहे हैं कि तेरे पितामह अर्जुन ने महाभारत के युद्ध में कौरवों को मारकर विजय प्राप्त की और बाद में शोक-ग्रस्त युधिष्ठिर को, बाणों की शय्या पर पड़े भीष्म पितामह ने समझाकर राज-सिंहासन पर बैठाया और अनेक वर्षों तक राज्य करने के पश्चात् अर्जुन के पौत्र परीक्षित को राज्य-भोग सौंप कर द्रौपदी को साथ लेकर पाँचों पाण्डवों ने हिमालय की ओर प्रस्थान किया।

बाद में परीक्षित ने भी अनेक वर्षों तक राज्य करके जनमेजय को राज्य सौंप दिया। महाराजा परीक्षित को एक ऋषि के शाप के कारण तक्षक नाग ने डँस लिया था। फलस्वरूप गंगा-किनारे स्वामी शुकदेव जी से श्रीमद्भागवत श्रवण करने के पश्चात् जीवन मुक्त अवस्था में स्थित होकर, शरीर त्याग दिया। इस प्रकार की मैंने कथा तो श्रवण की है जो द्वापर युग में घटित हुई, लेकिन अब तो कलियुग चल रहा है। इस पर अर्जुन ने कहा कि अभी तो द्वापर है, अभी-अभी तो भगवान् कृष्ण मेरे साथ थे, मैं ही तो अर्जुन हूँ। उस व्यक्ति ने कहा कि आप जागते हो या सोये हुए हो? चल तुम्हें कथा में ले चलता हूँ और अर्जुन को गाँव ले आया। धर्मशाला में पहुँचे, अर्जुन ने भी वहीं कथा सुनी। अर्जुन बहुत हैरान हुआ। सोचने लगा कि मैं जागृत अवस्था में हूँ या सोई हुई अवस्था में। कुछ पता न लगा। लोगों ने परदेसी जानकर पूछा कि तुम कौन हो? कहाँ से आए हो? कहने लगा कि मैं अर्जुन पाण्डव हूँ, हस्तिनापुर का रहने वाला हूँ, भगवान् कृष्ण मेरे साथ थे। लोगों ने उसे पागल समझा। अर्जुन को कहने लगे कि यदि तुमने फिर ऐसा ही कहा तो तुझे पागलखाने भेज देंगे। अपने आपको अर्जुन कह कर तुम वीर अर्जुन का निरादर करते हो। अर्जुन बहुत डर गया। कहने लगा कि अच्छा मैं अपने आपको अर्जुन नहीं कहूँगा, परदेसी कहूँगा। अर्जुन वहाँ परदेसी बनकर रहने लगा। कुछ दिनों के बाद राज दरबार में नौकरी मिल गई। बादशाह ने उसकी शूरवीरता को देखते हुए उसे सेनापति बना दिया और उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया। विवाह करने के पश्चात् अब अर्जुन सुखपूर्वक रहने लगा।

स्त्री-सुख ने उसको ऐसा मोहित कर लिया कि वह जो भगवान् की प्रतिदिन पूजा अर्चना करता था नित्य नियम, कर्म, धर्म सब भूल गया और पक्का नास्तिक हो गया। यदि कभी कोई भगवान् की बात भी कहता तो उसको अच्छी न लगती। इस प्रकार गृहस्थ में कई वर्ष व्यतीत हो गए। तीन पुत्रों का जन्म भी हुआ, लेकिन नारी-प्रेम में कोई कमी नहीं आई। एक दिन उसकी स्त्री बीमार हो गई। मरते समय अर्जुन को कहने लगी—मेरे मरणोपरान्त यदि तू दूसरा विवाह करेगा तो मेरे पुत्रों की दुर्दशा हो जाएगी इसलिए मैं विनय करती हूँ कि तुम दूसरा विवाह न करना। यह सुनकर अर्जुन के मन में मोह जाग गया और कहने लगा कि यदि तुम स्वर्ग सिधार गई तो मैं भी जिन्दा नहीं रहूँगा। तेरे साथ ही चिता में जल मरूँगा—हम दोनों इकट्ठे स्वर्ग चलेंगे। ऐसा वचन दे दिया। अन्ततः स्त्री स्वर्ग सिधार गई। अर्जुन भी शोकग्रस्त होकर रोने लगा।

अब भगवान् कृष्ण ने उद्धव भक्त को भेजा कि अर्जुन को मेरे पास ले आओ। उद्धव ने समीप आकर अर्जुन को बाजू से पकड़ कर कहा कि चलो तुम्हें भगवान् कृष्ण बुला रहे हैं। अर्जुन बहुत क्रोधित होकर बोला कि मेरी पत्नी की मृत्यु के साथ मैं घर से बेघर हो गया—तुम हँसी-ठठोली करते हो। भगवान् कृष्ण तो द्वापर युग में हुए हैं—अब वे कहाँ? उद्धव ने कहा कि क्या तुम मुझे पहचानते नहीं हो? मैं भगवान् का भक्त हूँ और तुझे लेने के लिए आया हूँ। इस प्रकार बहुत समझाया, लेकिन अर्जुन ने न तो पहचाना और न ही उसकी आज्ञा को माना, बल्कि इसके विपरीत उसका निरादर कर उसे वहाँ से हटा दिया ओर ज़ोर-ज़ोर से विलाप करने लगा। अन्ततः स्त्री के मृत शरीर को स्नान आदि करवाकर लोग उसे श्मशान घाट ले गए। अब अर्जुन हठ करने लगा कि मैं इसके साथ ही भस्म हो जाऊँगा। लोगों ने बहुत

समझाया, लेकिन अर्जुन न माना। अन्ततः ब्राह्मण ने कहा कि अच्छा आप ऐसा करो कि पहले स्नान कर लो फिर चिता में प्रवेश करना। समीप ही सरोवर था। स्नान करके जब बाहर निकला तो क्या देखता है कि भगवान् कृष्ण खड़े दातून कर रहे हैं। भगवान् को देखकर भी उस स्त्री को याद करके श्मशान की ओर दौड़ने लगा।

भगवान् ने उसे बाजू से पकड़ लिया। कहने लगे कि—कहाँ चला है? अर्जुन बाजू छुड़ाता हुआ बोला कि मेरी स्त्री की मृत्यु हो गई है उसके साथ चिता में जलूँगा। श्री कृष्ण ने अर्जुन के मुँह पर एक चपत मारी। अर्जुन के मन से सारी माया विलुप्त हो गई। माया के विलुप्त होने की देरी थी कि अर्जुन क्या देखता है कि न वहाँ स्त्री है, न श्मशान घाट है, न लोग हैं? न कोई अन्य देश है, केवल मात्र भगवान् श्री खड़े हैं? मन में सोच-विचार रहा है कि क्या यह सब माया का खेल था? क्या यह माया का ही छल था? क्या ये दु:ख-सुख जिनका अस्तित्व ही नहीं है मुझे माया ने ही दिखाये? आश्चर्यचकित होकर भगवान् श्री के चरणों में गिर पड़ा। भगवान् कहने लगे कि हे अर्जुन! इतना प्रेम होते हुए भी कि मुझे और स्वयं अपने को भूल गया कि नहीं? यह है मेरी माया जिसने तुम्हें भ्रमित कर कल्पित दु:ख-सुख जिनका अस्तित्व नहीं है उसमें फैंक दिया। अन्य माया का स्वरूप है ही नहीं। जीव को कल्पित पदार्थों का भ्रम डालकर उनमें मैं और मेरी पैदा कर देना ही माया का स्वरूप है।

यथा— **माइआ किस नो आखीऐ किआ माइआ करम कमाइ॥**
दुखि सुखि एहु जीउ बधु है हउमै करम कमाइ॥

(सिरीरागु महला ३, पृष्ठ ६७)

यथा— **ऐसी इसत्री इक रामि उपाई॥**
उनि सभु जगु खाइआ हम गुरि राखे मेरे भाई॥ रहाउ॥
पाइ ठगउली सभु जगु जोहिआ॥
ब्रह्मा बिसनु महादेउ मोहिआ॥

(आसा महला ५, पृष्ठ ३९४)

यथा— **जिनि लाई प्रीति सोई फिरि खाइआ।**
जिनि सुखि बैठाली तिसु भउ बहुतु दिखाइआ॥
भाई मीत कुटंब देखि बिबादे।
हम आई वसगति गुर परसादे॥
ऐसा देखि बिमोहित होए॥
साधिक सिध सुरदेव मनुखा बिनु साधू सभि ध्रोहनि ध्रोहे।

(आसा महला ५, पृष्ठ ३७०)

यथा— **माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ॥**
मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइआ॥

(वार सोरठि की, पृष्ठ ६४३)

ईश्वर की माया का तो कहना ही क्या है। माया जीव को तो क्या बड़े-बड़े बुद्धिमानों को भ्रमित कर हर्ष-शोक में विमग्न कर देती है। यथा—

एक चक्रवर्ती राजा था। वह अत्यन्त धर्मात्मा, प्रजापालक और संत-सेवी था। उसने एक बगीचा लगाया और उसमें एक सुन्दर कुटिया का निर्माण किया जिसमें यात्री साधु महात्मा ठहरते थे। राजा बहुत प्रेम के साथ सेवा-सत्संग करने का बड़ा अभ्यासी हो गया। प्रतिदिन सत्संग करने के कारण राजा का विवेक जागृत हुआ। वह चिंतन करने लगा कि

संसार में दु:खों का मूल कारण माया ही है, लेकिन यह माया है क्या वस्तु? इस भ्रम की निवृत्ति के लिए उसने कुटिया में आए प्रत्येक साधु को पूछना आरम्भ किया। जो भी साधु कुटिया में पधारे—राजा बड़े प्रेम के साथ सेवा करे, विदा के समय अपने संशय की निवृत्ति के लिए प्रश्न किया करे कि माया क्या वस्तु है? महात्मा अपने अनुभव द्वारा उसे समझाने का प्रयत्न करते कि माया कोई वस्तु नहीं केवल भ्रममात्र है, उसका अस्तित्व तो है नहीं, लेकिन दिखाई देती रहे—वह है माया, लेकिन राजा का संशय दूर न हुआ। दैवयोग से एक दिन एक अनुभवी महापुरुष का बगीचे में आगमन हुआ। राजा ने अपने संत-सेवी स्वभाव के कारण प्रेम से सेवा की और फिर अपना संशय व्यक्त किया कि माया क्या वस्तु है? इसका वास्तविक स्वरूप क्या है? महापुरुष ने अपने अनुभव द्वारा देखकर सोचा कि राजा को मात्र शास्त्रीय शब्दों द्वारा समझाया नहीं जा सकता। अर्थात् प्रयोग के बिना इसका संशय दूर नहीं हो सकता। महापुरुष कहने लगे कि कल तीसरे पहर तुम्हारी सभा के बीच ही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दिया जाएगा। दूसरे दिन राजा ने खुला दरबार लगाया। इस बात का पता लगने पर कि कोई महापुरुष राजा के प्रश्न का उत्तर देंगे, दरबार में अनेकों लोग एकत्रित हुए। राजा ने अपने सिंहासन के समीप महापुरुषों के लिए भी एक सुन्दर कुर्सी का आयोजन किया। जब राजा एवं संत सिंहासन पर बैठ गए उसी समय एक मदारी ने राजा को एक विनय की कि महाराज! मैं अनेकानेक जादू जानता हूँ—आप जैसा चाहो मैं वैसा जादू दिखा सकता हूँ। राजा ने कहा कि आज तो महापुरुष मेरे संशय की निवृत्ति करेंगे—तुम कल आ जाना। संत कहने लगे कि राजन! दोनों कार्य आज ही सम्पन्न हो जायेंगे, पहले जादू देख लो, यह निर्धन बेचारा आशा लेकर आया है—बाद में तुम्हारा संशय भी दूर हो जाएगा। इस पर राजा ने कहा कि हे मदारी! कोई ऐसा जादू दिखा जो वास्तव में तो न हो, लेकिन वास्तविक दिखाई दे, दूसरी बात यह है कि मुझे इन्द्र, अग्नि आदि देवताओं के दर्शन करने की भी प्रबल इच्छा है—यदि तुम दर्शन करवा सकते हो तो करवाओ। फिर मैं तुम्हें मुँह माँगा ईनाम भी दूँगा। इस पर मदारी कहने लगा कि यदि आप मुझे आज्ञा दें तो मैं स्वर्ग में जाकर इन्द्र आदि के अंग काटकर नीचे गिरा सकता हूँ, क्योंकि मैं मात्र मदारी ही नहीं हूँ—मैं एक शूरवीर भी हूँ। मेरे में यह सामर्थ्य है कि मैं युद्ध करके इन्द्र आदि सब देवताओं को आपके पास भेज सकता हूँ—इतनी मुझ में सामर्थ्य है। राजा कहने लगा कि इससे बढ़कर और अच्छा क्या होगा—मेरी आज्ञा है तुम स्वर्ग में जाकर युद्ध करो। मदारी कहने लगा कि महाराज! मेरे साथ पतिव्रता मेरी स्त्री है, वह मेरे बिना जी नहीं सकती, लेकिन क्योंकि मैं युद्ध करने चला हूँ उसको साथ किस प्रकार लेकर जाऊँ? ऐसा कठिन जादू एक शर्त पर सम्भव है, वह यह कि यदि आप और आपकी समस्त सभा मेरी स्त्री को अपनी कन्या-समान समझे, कोई कुदृष्टि न डाले, तो वह मेरे आने तक आपके पास रह सकती है। राजा कहने लगा कि पूरी सभा में यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हारे वापिस आने तक मैं उसको अपनी पुत्री समान रखूँगा। प्रत्येक दृष्टि से मैं अपनी पुत्री के समान उसकी संभाल करूँगा—आप बेशक बुला हो। मदारी ने वहाँ खड़े-खड़े आवाज़ दी कि ऐ माया रानी! बाहर से आवाज़ आई-जी महाराज! क्या आज्ञा है? मदारी ने कहा कि अन्दर आ जाओ। श्रीमती भीतर आ गई। मदारी कहने लगा कि मैं राजा की आज्ञा से स्वर्ग में इन्द्र के साथ युद्ध करने के लिए जा रहा हूँ। शीघ्र ही इन्द्र को जीतकर वापिस आ जाऊँगा। मेरे आने तक तुम यहीं ठहरना। राजा तुम्हें अपनी पुत्रीवत् रखेगा—ऐसा राजा ने मुझे वचन दिया है?

यह सुनकर श्रीमती ने कहा कि मुझे आपकी आज्ञा तो शिरोधार्य है, लेकिन इन राजसी लोगों का विश्वास नहीं होता। राजा कहने लगा कि हे पुत्री! चिंता न कर मैं सभा के बीच यह प्रतिज्ञा लेता हूँ कि जब तक मुझमें प्राण विद्यामान हैं मैं तुम्हारी रक्षा पुत्री-भाव से करूँगा। यह सुनकर श्रीमती ने अनुमति दे दी और मदारी के चरणों में नमस्कार की। राजा ने उसको अपनी पुत्री के पास राजमहल में भेज दिया। मदारी ने अब एक सूत का गोला निकाला। उसके सहारे स्वर्ग में सीढ़ी लगा ली और राजा को नमस्कार करके धागे के सोपान द्वारा ऊपर चढ़ गया। ऊपर जाकर गोलों की वर्षा की, बड़ी भारी गड़गड़ाहट हुई, गोले चलने की आवाज़ें आने लगीं। सभा में बैठे राजा और सब लोग डर गए।

ऐसे प्रतीत होने लगा कि बहुत घमासान युद्ध हो रहा है। थोड़े समय बाद अग्नि देवता का कटा हुआ सिर नीचे गिरा। उसके मुँह से अग्नि की लपटें निकल रही थीं। यह देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ कि वाह! मदारी अत्यन्त शूरवीर है।

थोड़े समय के पश्चात् मुकुट सहित इन्द्र का सिर नीचे आ गिरा। उसके कटे सिर के भीतर से हवा निकली मानों आँधी आ गई हो। सब लोग भय से काँपने लगे। थोड़े समय बाद कोई अन्य देवता नीचे आ गिरा जो देखने में अति सुन्दर और सुन्दर सुवेश से सुशोभित था। देवताओं का साक्षात् दर्शन करके राजा बहुत प्रसन्न हुआ। वह मदारी की स्तुति करने लगा कि यह तो बड़ा शूरवीर है। इसने देवराज इन्द्र जैसों को पराजित कर दिया है। वापिस आने पर इसे मुँह माँगा इनाम दूँगा, लेकिन थोड़े समय पश्चात् मदारी के अपने ही कटे हुए अंग नीचे आ गिरे, फिर पूरा धड़ भी गिरा। यह देखकर राजा सहित सब लोग शोक में डूब गए। मदारी की पत्नी अपने पति को मरा हुआ देखकर रोने और विलाप करने लगी। कहने लगी कि मैं पति के साथ ही सती हो जाऊँगी। लोगों ने बहुत समझाया, लेकिन वह न मानी। उसने चिता का निर्माण किया और पति के समस्त अंगों को एकत्रित करके चिता में रखकर आप भी साथ ही सती हो गई। राजा और समस्त सभा जो यह जादू देख रहे थे, बहुत दुःखी हुए। सब कहने लगे—बेचारा मदारी तमाशा दिखाते-दिखाते पत्नी सहित आप भी मर गया, कोई पुरस्कार भी न ले सका। सब लोग शोक कर ही रहे थे कि इतने में मदारी उस कच्चे धागे की सीढ़ी द्वारा नीचे उतर आया। आकर राजा एवं प्रजा को नमस्कार की। कहने लगा कि हे राजन? आप जैसा खेल देखना चाहते थे मैंने वैसा ही किया है। अब मुझे इनाम दो और मेरी स्त्री को मिला दो—मुझे अब आगे जाना है।

मदारी को देखकर सब लोग बड़े हैरान हुए कि यह तो मर गया था और स्त्री भी साथ सती हो गई थी—चलो इनाम तो देंगे, लेकिन पत्नी कहाँ से लाकर देंगे? राजा और सभासद कहने लगे कि तुम तो मर गए थे और तुम्हारी स्त्री भी तुम्हारे साथ सती हो गई थी। ख़ैर! इनाम तो तुझे मुँह माँगा मिल जाएगा, लेकिन स्त्री कहाँ से देंगे? सुनकर मदारी ज़ोर-ज़ोर से विलाप करने लगा कि मैं कब मरा? तुम्हारे सामने खड़ा हूँ, फिर मेरी पत्नी किसके साथ सती हो गई? कृपा करके मुझ गरीब की पत्नी वापिस दे दो—अपने वचनों पर दृढ़ रहो। आपने वचन दिया था कि मैं उसे अपनी पुत्रीवत् रखूँगा, अब आपका मन बदल गया है। आपने उसको महलों के भीतर छिपा ताला लगा दिया है। राजा को धर्मात्मा होना चाहिए। अमानत में ख़यानत (बेईमानी) ठीक नहीं। कोई इनाम दो चाहे न दो, लेकिन मुझ निर्धन की स्त्री अवश्य वापिस कर दो।

राजा और सब लोग चिंता में डूब गए। कहने लगे कि हम सौगंध खाकर कहते हैं कि हमारे सम्मुख तुम्हारी स्त्री चिता में जलकर सती हो गई है। यदि तुझे विश्वास नहीं तो तुम स्वयं महल की तलाशी ले लो। मदारी कहने लगा कि यदि वह महलों में मिल गई तो फिर? राजा ने कहा कि फिर मैं तुम्हारा अपराधी हूँगा। मदारी ने ऊँची आवाज़ से पुकारा, ऐ माया रानी! महल के भीतर से आवाज़ आई, जी महाराज! मदारी ने कहा कि कहाँ हो ? भीतर से आवाज़ आई कि मैं महल की सातवीं कोठरी में बंद हूँ। दुष्ट राजा ने प्रजा सहित धर्म का परित्याग करके मुझे अपनी स्त्री बनाने के लिए बंद कर रखा है। यह आवाज़ जब राजा एवं प्रजा के कानों में पड़ी तो सब बड़े लज्जित हुए। लज्जा के साथ सबके सिर झुक गए। मदारी कहने लगा कि तुम कितना झूठ बोल रहे हो। विश्वासघात करना राजा का कार्य नहीं है अर्थात् किसी को विश्वास देकर पराई चीज़ पर बेईमान हो जाना। अब कृपा करो और ताले खोलो, मेरी पत्नी मुझे वापिस करो। राजा लज्जा से अपना सिर नीचे किये खड़ा है। बोला भाई, मैंने कोई ताला नहीं लगाया, यदि तुम्हें कोई शंका है तो ताले खोलकर स्त्री को बाहर निकाल लो। मदारी राजा और लोगों को साथ लेकर महल में गया। आगे एक बड़ा ताला लगा हुआ था। चाबी लेकर खोला, तो अन्दर एक और कोठरी है। उसमें भी ताला लगा हुआ है। इस प्रकार सातवीं कोठरी में भी तालों को खोल-खोलकर माया रानी को बाहर निकाला। राजा और प्रजा बहुत लज्जित हुए। राजा की तो ऐसी हालत हो गई कि सोचने

लगा कि यदि पृथ्वी स्थान दे तो उसी में समा जाऊँ। राजा को इतना चिंतातुर देखकर मदारी कहने लगा कि महाराज! यह सब मेरी माया है, मैं अल्पज्ञ जीव हूँ, ईश्वर नहीं हूँ। मेरी माया ने आप सबको ऐसा भ्रमित कर दिया जो आप जादू को ही सत्य समझकर कितने दु:खी हुए हो। सर्वप्रथम—देवताओं के दर्शन करके इतने प्रसन्न हो रहे थे, यह मेरी माया थी जिसने तुम्हें भ्रमित करके, मिथ्या पदार्थों को सत्य दिखाकर हर्ष-शोक में डुबो दिया। अब आप पश्चाताप छोड़िए, मेरी ओर देखो, मैं अकेला ही हूँ। अभी तक मैं अविवाहित हूँ। इस स्त्री का निर्माण मैंने अपनी माया से ही किया था और जो तुम इन्द्र आदि देवताओं को देखकर प्रसन्न हुए थे, वे भी सब मेरी माया-रचित ही थे। मैं कहीं गया भी नहीं, यहीं का यहीं खड़ा हूँ, लेकिन तुम सबको मैंने यह विश्वास दिला दिया कि मैं सीढ़ी द्वारा स्वर्ग गया, गोले चले, युद्ध किया, देवताओं को नीचे गिराया, फिर स्वयं गिरा, चिता प्रज्वलित की, स्त्री सती हुई, मैं स्वर्ग से वापिस आया, स्त्री को महलों में छिपाया, तालों को खोला, महलों में से उसे बाहर निकाला—यह सब माया का कृत्रिम खेल था, जिसको तुम सत्य मानकर दु:खी सुखी हुए। मैं न कहीं गया हूँ, न आया हूँ, न मेरे पास कोई वस्तु है, अकेला का अकेला ही यहाँ खड़ा हूँ। आपने आज्ञा दी थी कि कोई जादू दिखाओ कि बनावटी होते हुए भी यथार्थ प्रतीत हो। देवताओं के दर्शनों के लिए आपने कहा था अत: मैंने आपकी आज्ञा को शिरोधार्य करके जादू दिखाया। अब मुझ निर्धन को पुरस्कार प्रदान करो। महात्मा जी ने राजा से पूछा कि हे राजन! तेरी शंका निवृत्त हुई अथवा तुम और कुछ पूछना चाहते हो? राजा महात्मा के चरणों में गिर पड़ा। प्रार्थना की कि महाराज! क्या यह समस्त जादू मेरे भ्रम निवारणार्थ था, जिस प्रकार मदारी की माया ने राजा को भ्रम में डालकर काल्पनिक सुख-दु:ख का अनुभव करवा दिया—तो परमेश्वर की माया क्या नहीं कर सकती? जीव की तो गति ही क्या है, बल्कि परमेश्वर की माया तो बड़े-बड़े देवताओं की बुद्धि भ्रमित कर देती है। जैसे गुरुवाक्—

यथा— **भभा भरमु मिटावहु अपना॥ इआ संसारु सगल है सुपना॥**
भरमे सुरि नर देवी देवा॥ भरमे सिध साधिक ब्रहमेवा॥
भरमि भरमि मानुख डहकाए॥ दुतर महा बिखम इह माए॥
गुरमुखि भ्रम भै मोह मिटाइआ॥ नानक तेह परम सुख पाइआ॥

(गउड़ी बावन अखरी महला ५, पृष्ठ २५८)

'भ' अक्षर के द्वारा गुरु अर्जुन देव जी उपदेश करते हैं कि हे भाई! यह संसार स्वप्न मात्र है, लेकिन माया के भ्रम के कारण यह यथार्थ प्रतीत होता है। माया के भ्रम में देवता, मनुष्य अन्य सभी भ्रमित हो गए। बड़े-बड़े सिद्ध महापुरुष साधना, करने वाले साधक, विद्वान आदि मनुष्यों को इस माया ने भ्रमित किया है। इस माया का संतरण न केवल दुष्कर है अपितु—

सरपरनी ते ऊपरि नही बलीआ॥
जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ॥

(आसा कबीर, पृष्ठ ४८०)

यथा— **ब्रहमा बिसनु महेसर बेधे॥**
बडे भूपति राजे है छेधे॥

(गौंड कबीर, पृष्ठ ८७२)

माया इतनी प्रबल है कि जीव, सिद्ध, साधक, मुनि-जन, विद्वान आदि तो क्या, त्रिदेव-ब्रह्म, विष्णु, महेश आदि भी इसके छल से नहीं बच सके। हाँ गुरु की शरण प्राप्त करके मनुष्य सहज ही तर सकता है। जैसे गुरुवाक्—

यथा— **माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ॥**
इसकी सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ॥

गुरमुखि कोई गारड़ू तिनि मलि दलि लाई पाइ॥
नानक सेई उबरे जि सचि रहे लिव लाइ॥

(गूजरी वार ३, पृष्ठ ५१०)

यथा— माइआ ममता मोहणी जिनि कीती सो जाणु॥
बिखिआ अंम्रितु एकु है बूझै पुरखु सुजाणु॥

(दखणी ओअंकारु, पृष्ठ ९३७)

यथा— माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ॥
मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइआ॥
बिनु नावै जगु कमला फिरै गुरमुखि नदरी आइआ॥

(वार सोरठि, पृष्ठ ६४३)

इस प्रकार समस्त जगत माया द्वारा भ्रमित है, लेकिन गुरमुख लोग गुरु की शरण प्राप्त करके इस माया रूपी गहन सागर को तर जाते हैं। बिना गुरमुखता के अर्थात् गुरु परमेश्वर की शरणागति के इस माया की कष्टदायक लहरों से मुक्त होना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव भी है, क्योंकि माया अपने स्वामी के बिना वश में नहीं आती।

एक समय की बात है कि तीसरे पातशाह साहिब श्री गुरु अमरदास जी के चरणों में एक ब्राह्मण ने विनय की कि महाराज मैं चार वेद, छः शास्त्र, अठारह पुराण, सत्ताईस स्मृतियाँ आदि सभी ग्रन्थों का अध्ययन कर चुका हूँ, लेकिन इस माया का प्रभाव मेरे मन से दूर नहीं हुआ। कृपा करके कोई उपदेश दो जिससे मेरा मन इस माया रूपी अंधकार से निकलकर, सदा के लिए सुखी हो जाये और मनुष्य शरीर धारण करना सफल हो। गुरु बाबा जी ने उस ब्राह्मण की विनयशील प्रार्थना पर हर्षित होकर यह शब्द उच्चारण किया—

पंडित इसु मन का करहु बीचारु॥
अवरु कि बहुता पड़हि उठावहि भारु॥ रहाउ॥
माइआ ममता करतै लाई॥
एहु हुकमु करि स्रिसटि उपाई॥

(मलार महला ३, पृष्ठ १२६१)

हे ब्राह्मण! परमेश्वर (करता-पुरखु) ने इस संसार रूपी खेल की रचना माया द्वारा ही निर्मित की है। गुरमुख इसको परमेश्वर का खेल जानकर सदा सुखी रहते हैं, लेकिन मनमुख परमेश्वर को भूलकर अपने मन के पीछे लगकर इस खेल को सत्य समझकर सदैव दुःखी-सुखी, जन्म-मृत्यु के भ्रम में पड़े रहते हैं। अतः परमेश्वर की शरण ग्रहण किये बिना, इस माया के फँदे से निकलना असम्भव है। इस खेल की वास्तविकता को जानने के लिए 'गुरुकृपा' एवं 'गुरु-शरण' दोनों अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। जैसे गुरुवाक्—

गुर परसादी बूझहु भाई। सदा रहहु हरि की सरणाई।

(मलार मः ३, पृष्ठ १२६१)

अतः इस प्रकार गुरु की शरणागति के द्वारा गुरमुखता को प्राप्त करके संसार रूपी दुष्कर माया को सहज ही तर सकते हैं।

गुरु-उन्मुखता का जन्म

यह तो स्पष्ट हो ही गया है कि गुरमुखता प्राप्त किये बिना माया की दुष्कर लहरों से मुक्ति असंभव है।

गुरु-उन्मुखता का जन्म धर्म से पैदा होता है। धर्म की उत्पत्ति के चार साधन माने जाते हैं—

1. राजा लोक
2. तीर्थ-स्थान
3. विद्वज्जन
4. संत-स्थान

1. राजा लोक—विद्वानों का कथन है कि जैसा राजा वैसी प्रजा अर्थात् राजा धार्मिक, न्यायप्रिय, विवेकवान् होगा तो प्रजा स्वयमेव धार्मिक एवं विवेकशील हो जाती है। यदि राजा ही आचरणहीन होगा, अन्यायप्रिय और लोभी होगा तो प्रजा पर उसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है।

2. तीर्थ स्थान—जहाँ से लोगों की धर्म वृत्ति उपजती है किन्तु वहाँ भी

तीरथि जाउ त हउ हउ करते॥

(आसा महला ५, पृष्ठ ३८५)

वहाँ भी अहंकारवश धर्म लुप्त हो गया और माया का बोल-बाला हो गया है।

3. विद्वज्जन—जो धर्म की शिक्षा देने वाले माने जाते हैं वे भी लोभवश अक्षर-ज्ञान तक ही सीमित रह गए। माया के प्रभाव स्वरूप अपने मुख्य कार्य को भूल गए जैसे गुरुवाक्—

पंडित पूछउ त माइआ राते॥

माया के प्रभाव स्वरूप ये लोग स्वयं तो दु:खी हो ही रहे थे, लेकिन जीवन को भी गुमराह कर रहे थे।

4. संत-स्थान—जहाँ से लोगों का विवेक जागृत होना था—वहाँ भी यदि बाह्यमुखी वृत्ति वाले लोग गुरु बनकर बैठ जायें तो वहाँ भी संसार रूपी ताप में जल रहे जीवों को क्या शान्ति मिलेगी? वहाँ के मुखिया तो स्वयं लोभ-लालच, मान-आदर में फँस गए। ऐसी हालत के सम्बन्ध में भाई साहिब गुरदास जी ने फरमाया है—

कलि आई कुते मुहीं खाज होआ मुरदार गुसाई॥
राजे पापु कमावदे उलटी वाड़ खेत को खाई॥
परजा अंधी गिआन बिनु कूड़ कुसत मुखहु अलाई॥
चेले साज वजाईदें नचनि गुरु बहुत बिध भाई॥
चेले बैठनि घरां विचि गुरि उठि घरीं तिनाड़े जाई॥
काजी होए रिसवती वडी लै के हकु गवाई॥
इसतरी पुरखै दामु हितु भावै आइ किथाउ जाई॥
वरतिआ पापु सबसि जग माही॥

प्रजा की ऐसी दशा हो गई, अंधकार छा गया। सतयुग में सब लोग सत्य भाषण करते थे, धर्म के चारों पाँव स्थिर थे। त्रेता युग आया, धर्म का एक पाँव टूट गया, पाखंड का बोल-बाला हो गया। द्वापर युग आया, द्वैत बढ़ गई। एक परमेश्वर की पूजा छोड़कर साधारण जन द्वैत के भ्रम में भ्रमित हो गए। इस प्रकार धर्म का दूसरा पाँव भी टूट गया। कलियुग आया धर्म का तीसरा पैर भी टूट गया। केवल एक पाँव धर्म का रह गया, पृथ्वी काँपने लगी, पग-पग पर माया-मोह के अंधकार में जीव ठोकरें खाने लगे। जैसे गुरुवाक्—

सतजुगि सचु कहै सभु कोई। घरि घरि भगति गुरमुखि होई॥
सतजुगि धरमु पैर है चारि॥ गुरमुखि बूझै को बीचारि॥

जुग चारे नामि वडिआई होई॥ जि नामि लागे सो मुकति होवे गुर बिनु नामु न पावै कोई॥ रहाउ॥
त्रेतै इक कल कीनी दूरि। पाखंडु वरतिआ हरि जाणनि दूरि॥
गुरमुखि बूझै सोझी होई॥ अंतरि नामु वसै सुखु होई॥
दुआपुरि दूजै दुबिधा होइ॥ भरमि भुलाने जाणहि दोइ॥
दुआपुरि धरमि दुइ पैर रखाए॥ गुरमुखि होवै त नामु द्रिड़ाए।
कलजुगि धरम कला इक रहाए॥ इक पैरि चलै माइआ मोहु वधाए॥
माइआ मोहु अति गुबारु। सतगुरु भेटै नामि उधारु॥
सभ जुग महि साचा एको सोई। सभ महि सचु दूजा नही कोई॥
साची कीरति सचु सुखु होई॥ गुरुमुखि नामु वखाणै कोई॥
सभी जुग महि नामु ऊतमु होई॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई॥

(रामकली महला ३ घर १, पृष्ठ ८८०)

इस प्रकार यदि चार पहियों पर चलने वाली गाड़ी के किसी कारणवश तीन पहिये टूट जायें तो क्या वह गाड़ी यात्रा कर रहे यात्रियों को निश्चित स्थान पर पहुँचा देगी? कलियुग में जीवों की ऐसी हालत हो गई। अमावस्या की रात्रि के समान अंधेरा छा गया। पितृ-तुल्य रक्षा करने वाले शासक उल्टा प्रजा को पीड़ित करने लगे। अदालतों में जहाँ से लोगों को न्याय की आशा थी, वहाँ भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया, बलवान् निर्बलों को सताने लगे, अधर्म एवं अंधेरगर्दी व्याप्त हो गई। गाय एवं गरीब का वध होने लगा। भाई गुरदास जी फरमाते हैं—

ठाकुर दुआरे ढाहि कै तिहि ठाउड़े मासीत उसारा॥
मारनि गऊ गरीब नूं धरती उपरि पाप बिथारा॥
पापे दा वरतिआ वरतारा॥

यथा— बाझ गुरु अंधेर है खहि-खहि मरदे बहु बिधि लोआ।
वरतिआ पाप जगत्रि ते धोउलु उडीणा निसिदिनि रोआ॥
बाझु दइआ बलहीन होउ निघर चलौ रसातलि टोआ॥
खड़ा इक तै पैरि ते पाप संगि बहु भारा होआ॥
थंमे कोई न साधु बिनु साध न दिसै जग विच कोआ॥
धरम धरलु पुकारै तलै खड़ोआ॥

ऐसी हालत जीवों की हो गई, माया का घटाटोप छा गया। लोग अपने आपको अनाथ समझने लगे। कोई पुकार सुनने वाला नज़र नहीं आ रहा था। संसार में से सत्य इस प्रकार लुप्त हो गया जैसे अमावस्या की रात्रि में चन्द्रमा। झूठ का बोल-बाला हो गया। जैसे गुरुवाक्—

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ॥
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ॥
हउ भालि विकुंनी होई॥ आधेरै राहु न कोई॥
विचि हउमै करि दुखु रोई॥ कहु नानक किनि बिधि गति होई॥

(वार माझ, पृष्ठ १४५)

धर्म रूपी वृषभ, जिसके सहारे पृथ्वी खड़ी है, दया रूपी माँ के बिना अनाथ हो गया। चारों में से तीन पाँव टूट चुके हैं। पृथ्वी पर पाप रूपी भार और बढ़ गया, अब भार वहन करना कठिन हो गया। रो-रोकर पुकार करने लगा—

हे परमेश्वर! हे दयालु! हे अन्तर्यामी! मुझमें धरती को वहन करने की सामर्थ्य नहीं रही। कृपा करो, मेरी सहायता करो, मैं अत्यन्त दु:खी होकर आपकी शरण में आया हूँ, शरण में आए की लाज रखो। पृथ्वी काँपने लगी, जीवों में हाहाकार मच गया, कोई आश्रय दृष्टिगोचर नहीं हो रहा, सब जीव त्राहि-त्राहि कर उठे। दु:खी जीवों के हृदय में से निसृत करुण-पुकार धुर दरगाह में पहुँची। बस! फिर क्या देरी थी? वह जो देशकाल से परे है—उस कालातीत, निराकार में कल्पना किये गए यह दो शब्द 'देर और दूरी' को भी कहाँ स्थान है? दूरी को तो इतनी देर है जब तक पाँव दो नावों पर हैं। जब परमेश्वर के बिना नावें निर्जीव अर्थात् काठ की पुतलियाँ नज़र आएंगी फिर तो द्वारिका से हस्तिनापुर-हज़ारों कोसों की यात्रा पलक झपकने से भी पूर्व तय हो जाती है। उस समय वह कालातीत पुरुष वाहिगुरु निर्गुण से सगुण रूप धारण करके क्षण भर से पूर्व प्रकट हो जाता है जैसे गुरुवाक्—

यथा— **जब जब होत अनिष्ट अपारा॥ तब तब देह धरत अवतारा॥**

(चौबीस अवतार गुरु गोबिन्द सिंह जी)

यथा— **यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत॥**
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

(श्रीमद्‌भगवद्‌गीता अध्याय चौथा, श्लोक ७)

इस प्रकार पृथ्वी और दु:खी जीवों की हालत देखकर उनके दु:ख निवारण हेतु परमेश्वर ने स्वयं को श्री गुरु नानक देव जी महाराज के रूप में प्रकट किया। उस समय का दृश्य भाई साहिब भाई गुरदास जी ने कुछ इस प्रकार वर्णन किया है—

सुणी पुकार दातार प्रभ गुरु नानक जग माहि पठाइआ॥
चरन धोइ रहरासि करि चरनामृित सिखां पीलाइआ॥
पारब्रहम पूरन ब्रहम कलियुगि अंदरि इक दिखाइआ॥
चारे पैर धरम दे चारि वरनि इकु वरनि कराइआ॥
राणा रंकु बराबरी पैरी पवणा यगि वरताइआ॥
उलटा खेलु प्रिंम दा पैरां उपरि सीसु निवाइआ॥
कलियुगु बाबे तारिआ सतिनाम पड़ि मंत्र सुणाइआ॥
कलि तारणि गुरु नानक आइआ॥

माया मोह के अंधकार द्वारा प्रताड़ित जीवों की पुकार सुनकर, द्रवित होकर, जीवों को अविद्या रूपी रात्रि के अंधकार से बाहर निकालने के लिए, ज्ञान का सूर्य लेकर, निर्गुण से सगुण रूप धारण कर **आप नराइणु कलाधारि जग महि परवरिउ** अपनी माया को आश्रित करके स्वयं कालातीत पुरुष (अकाल पुरखु) वाहिगुरु गुरु नानक के रूप में प्रकट हुआ।

शंका—संसार में परमेश्वर के ज्ञान से सम्बन्धित हज़ारों ग्रन्थ हैं—वेद, शास्त्र, स्मृतियाँ, पुराण, कुरान, तुरेत, इंजील, बाइबल आदि और विवेक, वैराग्य, ज्ञान-विज्ञान, वेदांत-शास्त्र जिनका आत्म-ज्ञान के साथ सीधा सम्बन्ध है, क्योंकि ये ज्ञानी पुरुषों द्वारा रचित हैं। उनके मनन द्वारा अविद्या रूपी अंधकार को नष्ट कर आत्म-ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है तो परमात्मा को सगुण रूप धारण करके प्रकट होने की आवश्यकता क्या थी? यदि शास्त्र, ज्ञान करवाने के लिए समर्थ ही नहीं हैं तो इनके सृजन की क्या आवश्यकता थी? ज्ञानवान् परमेश्वर का स्वरूप ही होता है जैसे गुरुवाक्—

जिन्हा न विसरै नामु से किनेहिआ॥
भेदु न जाणहु मूलि सांई जेहिआ॥

(आसा महला ५, पृष्ठ ३९७)

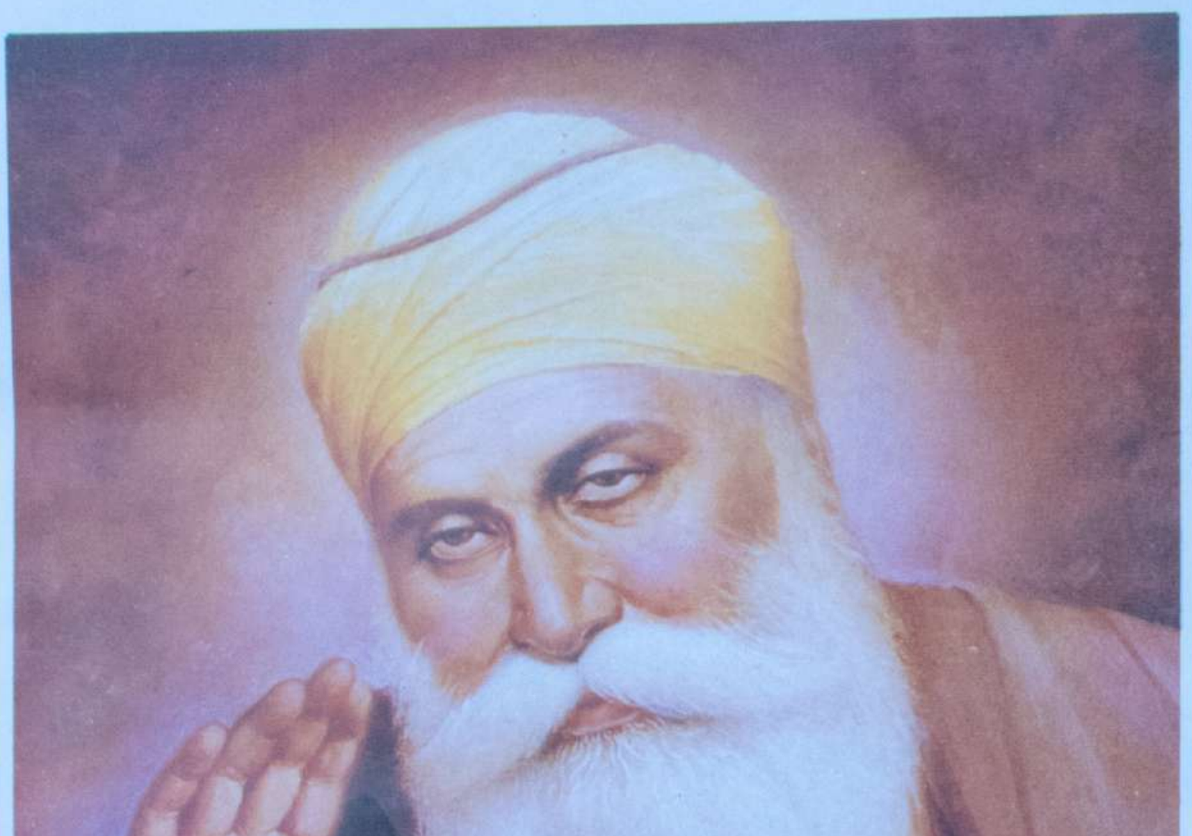

आदि गुरू श्री गुरू नानक देव जी महाराज

यथा— **हरि का सेवकु सो हरि जेहा॥ भेदु न जाणहु माणस देहा॥**
जिउ जल तरंग उठहि बहुभाती फिरि सललै सलल समाइदा॥

(मारू सोलहे, पृष्ठ १०७६)

यथा— **हरि हरि जनु दोइ एक है**
बिब बिचार कछ नाहि॥
जल ते उपज तरंग जिउं जल ही बिखै समाहि॥

(गुरु गोबिन्द सिंह जी)

इस प्रकार परमेश्वर की ओर से सगुण रूप में प्रकट होकर ही षट् शास्त्रों की रचना की गई है। फिर शास्त्र ग्रन्थों के रूप में ईश्वरीय-वचन होने के बावजूद उसे स्वयं क्यों अवतरित होना पड़ा?

उत्तर—ठीक है षट् शास्त्रों की रचना उस कालातीत पुरुष परमेश्वर (अकाल पुरुखु वाहिगुरु) ने सगुण रूप धारण करके पर उपकार के लिए अर्थात् माया के अंधकार में भटकते जीवों के नयनों में ज्ञानांजन डालने हेतु की है और सृजन करते समय प्रत्येक विषय को भली भाँति स्पष्ट किया है।

विवेक, वैराग्य की अनेक युक्तियों द्वारा द्वैत के काल्पनिक बादलों को छिन्न-भिन्न करने का पूरा प्रयत्न किया है, लेकिन माया द्वारा भ्रमित जीव शास्त्र में किये संकेतों को समझने में समर्थ नहीं। जैसे औषधि विक्रेता की दुकान औषधियों से भरी होती है वहाँ प्रत्येक प्रकार के मरीज़ों और प्रत्येक प्रकार के रोगों के लिए औषधि दुकान में विद्यमान होती है। अब मरीज़ यदि स्वयं औषधि उठाकर उसका भक्षण कर ले और यदि मरीज़ शूगर का हो और औषधि रक्तचाप की भक्षण कर ले तो क्या रोग का निदान होगा? अपितु उसके बढ़ने की संभावना है। अब वही रोगी यदि किसी डॉक्टर के पास जाये और उसकी आज्ञानुसार औषधि खाये, प्रत्येक दृष्टि से परहेज़ की ओर पूरा ध्यान दे तो रोग अवश्य दूर हो जाएगा। इसी प्रकार ग्रन्थों, शास्त्रों में मनुष्य जन्म की सफलता अर्थात् समस्त दु:खों से छुटकारा पाने के लिए, प्रत्येक प्रकार की औषधि और परहेज़ बताये गए हैं, लेकिन माया में भ्रमित जीव उन संकेतों को भली भाँति समझने में समर्थ नहीं जब तक परमेश्वर सगुण रूप धारण करके आप स्वयं न समझाये। भाई साहिब भाई गुरदास जी संकेत कर रहे हैं—

वेद ग्रंथ गुर हटि है जिसु लगि भवजल पारि उतारा॥
सतगुर बाझु न बूझीऐ जिचर धरे न प्रभु अवतारा॥
गुर परमेश्वर इक है सच्चा साहु जगत वणजारा॥
चड़े सूर, मिट जाए अन्धारा॥

इस प्रकार मोह-माया के गहन सागर में गोते खा रहे जीवों को गुरुमुखता की सूझ देकर जन्म-मरण के समस्त दु:खों से मुक्त करने हेतु कालातीत पुरुष परमेश्वर (अकाल पुरखु वाहिगुरु) गुरु नानक का रूप धारण करके संसार में प्रकट हुआ। घूम फिरकर सारे संसार का भ्रमण किया और धर्म की स्थापना के चारों स्रोत—राजा लोक, विद्वज्जन, तीर्थ स्थान, संत-आश्रमों में पहुँचे। चारों को कर्त्तव्यों का ज्ञान कराकर अपने-अपने धर्म में परिपक्व किया। राजा लोग जो प्रजा के रक्षक होते हैं, उनको अपने धर्म में परिपक्व करने हेतु उपदेश किया—

राजे चुली निआव की पड़िआ सचु धिआनु॥

(सारंग वार, पृष्ठ १२४०)

यथा— **साचि सीलि चालहु सुलितान॥**

(भैरउ नामदेउ पृष्ठ ११६६)

यथा— राजा निआउ करे हथि होए॥ कहै खुदाइ न मानै कोइ॥

(आसा म० १, पृष्ठ ३५०)

राजाओं को ऐसा उपदेश किया कि राजा ऐसा होना चाहिए जिससे प्रजा को हर प्रकार से सुख की प्राप्ति हो—इस प्रकार धर्म के एक पाँव को जीवित किया।

धर्म का दूसरा पग विद्वज्जन होते हैं, जिनके पास धर्म-ज्ञान होता है। उनको भी अपने धर्म की पहचान करवाई। उपदेश दिया—

सो पंडितु जो मनु परबोधै॥ राम नामु आतम महि सोधै॥
राम नाम सारु रसु पीवै॥ उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै॥
हरि की कथा हिरदै बसावै॥ सो पंडितु फिरि जोनि न आवै॥
बेद पुरान सिमृति बूझै मूल॥ सूखम महि जानै असथूलु॥
चहु वरना कउ दे उपदेसु॥ नानक उसु पण्डित कउ सदा अदेसु॥

(गउड़ी सुखमनी, पृष्ठ २७४)

विद्वज्जन जो अपना कर्त्तव्य भूलकर, बिना अक्षरों के संकेतों को समझे, केवल अक्षरों में फंसे बैठे थे, उनको भी उपदेश किया कि अक्षर विनाशी हैं, मानो किसी वस्तु की ओर इशारा करते हैं। जिस प्रकार बादाम का छिलका उतने समय तक ही अच्छा लगता है जब तक बादाम रोगन की इच्छा जागृत नहीं हुई। जब गिरी अथवा बादाम रोगन सेवन करने की करने की इच्छा मन में पैदा हो जाये, फिर ऊपरी आवरण अर्थात् छिलके का कोई मूल्य नहीं रह जाता। इस प्रकार विद्वज्जन को अक्षरों में छिपे **'शाश्वत'** (अ-क्षर) का रहस्य समझाया। इस प्रकार उनको अपने धर्म में परिपक्व करके धर्म का दूसरा पग जीवित किया।

धर्म का तृतीय पग तीर्थ-स्थान होते हैं। समय के प्रभाव से वे भी अपनी मर्यादा छोड़ बैठे थे। सूर्य आदि देवताओं को जल चढ़ाना ही मंगल का साधन मान बैठे थे। वहाँ जाकर उपदेश किया—

तीरथ धरम वीचार नावण पुरबाणिया॥
तुधु सरि अवरु न कोइ कि आखि वखाणिया॥
सचै तखति निवासु होर आवण जाणिया॥

(राग मलार महला १, पृष्ठ १२७९)

यथा— तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है॥
तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है॥

(धनासरी महला १, पृष्ठ ६८७)

यथा— सूचे इहि ना आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ॥
सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ॥

(आसा दी वार, पृष्ठ ४०२)

इस प्रकार तीर्थों पर जाकर भूले-भटके लोगों को नाम का उपदेश देकर सीधे मार्ग पर डाला। इस प्रकार धर्म के तीसरे पग को भी परिपक्व किया।

धर्म का चौथा पग संत-जन होते हैं। वे भी अपने वास्तविक मार्ग से भटक गए थे। गृह-त्याग करके केवल वेशमात्र से ही धन्य हो रहे थे। गुरु बाबा जी चलकर उनके पास गए, उपदेश किया कि जो तुम गृह-त्याग को ही सर्वस्व समझ रहे हो, यह तुम्हारा भ्रम है, अपितु इससे तो अहं उत्पन्न हो गया कि हम त्यागी हैं, हम वैरागी हैं, हमने सांसारिक सुखों को त्याग दिया है, इस बाहरी त्याग ने सूक्ष्म अहंकार को और गहरा कर दिया। यथा—

यथा— बिनु बैराग कहा बैरागी॥
बिनु हउ तिआगि कहा कोऊ तिआगी॥
बिनु बसि पंच कहा मन चूरे॥
नाम बिना सद सद ही झूरे॥
बिनु गुर दीखिआ कैसे गिआनु॥
बिनु पेखे कहु कैसो धिआनु॥
बिनु भै कथनी सरब बिकार॥
कहु नानक दर का बीचार॥

(भैरउ महला ५, पृष्ठ ११४०)

यथा— भेखी अगनि न बुझई चिंता है मन माहि॥
वरमी मारी सापु ना मरै तिउ निगुरे करम कमाहि॥

(वडहंस की वार, पृष्ठ ५८८)

यथा— सो साधू बैरागी सोई हिरदै नामु वसाए॥
अंतरि लागि न तामसु मूले विचहु आपु गवाए॥

(सिरीरागु महला ३, पृष्ठ २९)

हे संत जनो! नाम के बिना गृह-त्याग कर केवल वेशमात्र को ही मांगलिक मान लेना, यह आपकी बड़ी भारी भूल है। फिर जिस गृहस्थ का तुमने त्याग किया है, उनके घर का दिया खाते हो। ऊपर से परोसे थाल क्यों नहीं उतरते? इस त्याग, वैराग्य का अहंकार छोड़कर, नाम का आश्रय पकड़ो! अहं के नाश के बिना कोई कल्याण सम्भव नहीं। अहंकार ही संसार की उत्पत्ति का मुख्य कारण है। जैसे गुरुवाक्—

कितु कितु बिधि जगु उपजै पुरखा कितु कितु दुखि बिनसि जाई॥
हउमै विचि जगु उपजै पुरखा नामि विसरिऐ दुखु पाई॥
गुरमुख होवै सु गिआनु ततु बीचारै हउमै सबदि जलाए॥
तनु मनु निरमलु निरमल बाणी साचै रहै समाए॥
नामे नामि रहै बैरागी साचु रखिआ उरि धारे॥
नानक बिनु नावै जोगु कदे न होवै देखहु रिदै बीचारे॥

(सिध गोसटि, पृष्ठ ९४६)

सुख-स्वरूप परमेश्वर की प्राप्ति, गुरु शरण द्वारा नाम के साथ होगी, वेश त्याग मात्र से नहीं। जब गुरु कृपा द्वारा साधक के भीतर, निरन्तर नाम सिमरन होने लगता है, उसी क्षण अहंकार गिर जाता है। जैसे गुरुवाक्—

अनहद बाणी पाईऐ तह हउमै होइ बिनासु॥
सतगुरु सेवे आपणा हउ सद कुरबाणै तासु॥

(सिरी रागु महला १, पृष्ठ २१)

यथा— भागठु सच्चा सोइ है जिसु हरि धनु अंतरि॥
सो छूटै महा जाल ते जिसु गुर सबदु निरंतरि॥

(आसा महला ५, पृष्ठ ३९६)

इस प्रकार नाम की निरंतरता के साथ, 'अहंकार' जो जन्म-मरण का मूल कारण है, वह समाप्त हो जाएगा। फिर वेश, त्याग, वैराग्य आदि सब सफल हो जायेंगे।

शंका—अनहद बाणी अर्थात् नाम की निरंतरता कैसे प्राप्त हो?

उत्तर—जैसे काष्ठ में अग्नि तो पहले से ही मौजूद है, लेकिन उसको प्रकट करने के लिए जल रही लकड़ी के साथ स्पर्श करना पड़ता है। फिर उसमें सहज ही अग्नि प्रकट हो जाती है। इसी प्रकार पृथ्वी में हर स्थान पर पानी तो पहले से ही मौजूद है, लेकिन प्रकट न होने के कारण किसी प्यासे की प्यास बुझाने के लिए समर्थ नहीं जब तक पुरुषार्थ करके पानी को प्रकट न कर लिया जाये। इसी प्रकार नाम प्रत्येक व्यक्ति में नख से शिख तक पहले से ही विद्यमान है, लेकिन गुप्त है। जिस समय उस पुरुष को किसी नामी पुरुष का संग प्राप्त हो जाता है उसके भीतर भी नाम की निरंतर गति चल पड़ती है बशर्ते कि किसी ब्रह्मनिष्ठ पुरुष के चरण-स्पर्श प्राप्त हो जायें, परमेश्वर ने ऐसी रीति रखी है, जैसे गुरुवाक्—

अनहद बाणी पूंजी॥ संतन हथि राखी कूंजी॥

(रामकली महला ५, पृष्ठ ८९३)

यथा— **गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति॥**
नानक गुरु बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि॥

(सारंग की वार, पृष्ठ १२३७)

यथा— **जिसका ग्रिहु तिनि दीआ ताला कुंजी गुर सउपाई॥**
अनिक उपाव करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई॥

(गउड़ी महला ५, पृष्ठ २०५)

इस प्रकार साधु ने जनमानस को गुरु शरणागति एवं नाम का उपदेश करके, भूले भटकों को सुमार्ग में डालकर धर्म का चतुर्थ पाँव कायम किया। इस प्रकार धर्म को चारों पगों पर स्थिर करके भूले भटके लोगों को प्रेमाभक्ति का सीधा और सरल मार्ग बताकर कल्याण मार्ग पर चलाया जिसके सम्बन्ध में भाई गुरदास जी संकेत कर रहे हैं—

मारिआ सिका जगति विचि नानक निरमल पंथु चलाइआ॥
थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्र फिराइआ॥
जोती जोति मिलाइ कै सतिगुर नानकि रूपु वटाइआ॥
लखि न कोई सकई आचरजे आचरजु दिखाइआ॥
काइया पलटि सरूपु बणाइआ॥

(वार १ पउड़ी ४५ भाई गुरदास)

इस प्रकार मोह-माया की ममता और अहंकार रूपी मल से रहित निर्मल पंथ की सर्जना की। कलियुगी जीवों के उद्धार हेतु प्रकट किये निर्मल पंथ की जड़ों को गहन करने के लिए, **जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ** के महावाक् अनुसार उस ईश्वरीय ज्योति को भाई लहणे के हृदय में स्थिर कर दिया और अंग से अंग मिलाकर अपना साक्षात् स्वरूप अंगद देव बना दिया। ज्योति वही और युक्ति भी प्रेमाभक्ति गुरु नानक वाली ही रही, केवल शरीर में ही परिवर्तन हुआ। जैसे—

सो टिका सो छत्र सिरि सोई सचा तखतु टिकाई॥
गुर नानक हँदी मुहरि हथि गुर अंगद दी दोही फिराई॥

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ

ਸ੍ਰੀ ਅਨੰਦਪੁਰ ਸਾਹਿਬ ਵਿਖੇ ਲੰਗਰਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਕਰਨ ਸਮੇਂ ਨਿਰਮਲ ਭੇਖ ਦੇ ਵੇਸ਼ ਵਿਚ

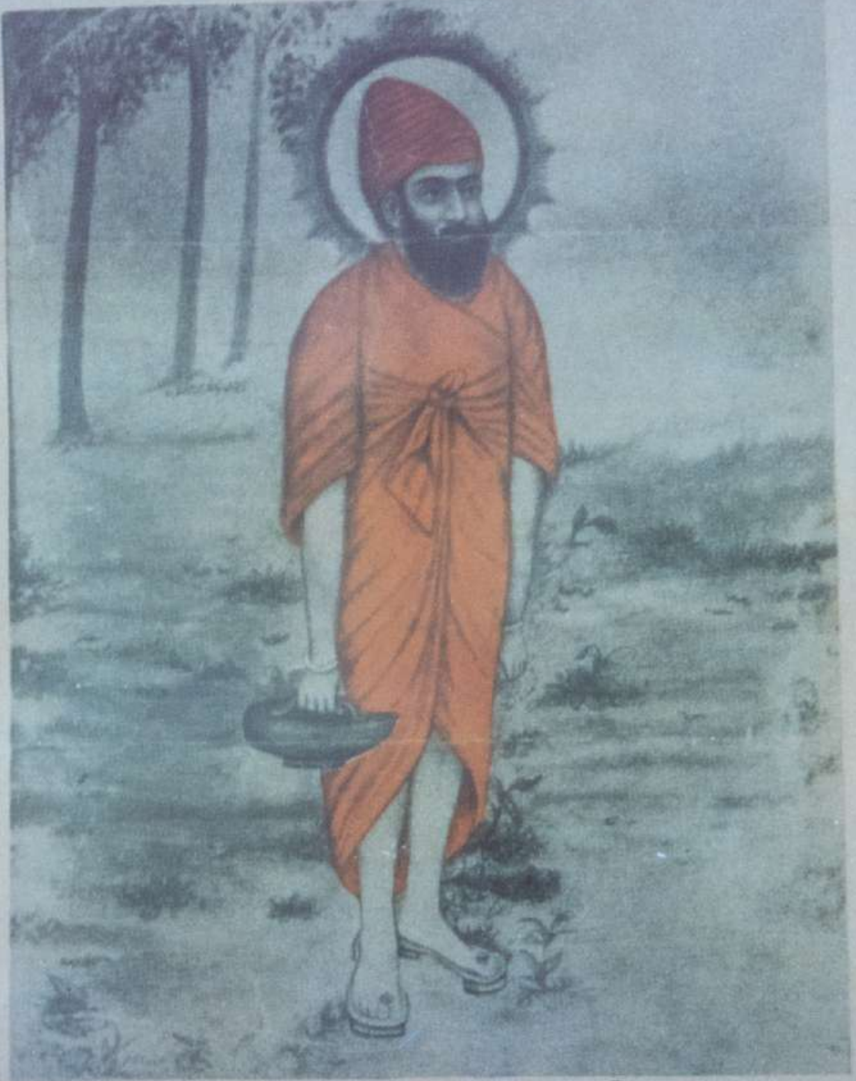

श्री गुरू गोविन्द सिंघ जी महाराज

श्री आनन्द पुर में अपने शिष्यों के लंगरों (अन्नदान क्षेत्रों) की एक रात्रि को परीक्षा करते समय निर्मल भेख के वेश

ਫਿਰ ਸਿਖਨ ਕੇ ਲੰਗਰ ਕੀ, ਪਰੀਖਯਾ ਕਰਨੇ ਹੇਤ।
ਸਾਧੂ ਵੇਸ ਧਰਿ ਨਿਸਾ ਕੋ, ਗਏ ਗੁਰੂ ਜਬ ਚੇਤ।......
ਪੰਥ ਨਿਰਮਲਾ ਗੁਰੂ ਕਾ, ਹੈ ਨਿਸਚੈ ਲਿਹੁ ਧਾਰ।
ਲਿਖਜੋ ਪਹਿਲੀ ਵਾਰ ਮੈ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਾਸ ਨਿਹਾਰ।

—ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਪੰਥ ਪ੍ਰਕਾਸ਼, ਗਿਆਨੀ ਗਿਆਨ ਸਿੰਘ

~~...छौर की सेवा श्री मान १०८ महन्त~~ अवतार सिंह जो निर्मल आश्रम, नदी रोड, लखीमपुर खी

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज
(निर्मल सम्प्रदाय वेश में)

लहणे पाई नानको देणी अमरदासि घरि आई॥
गुरु बैठा अमरु सरूप होइ गुरमुखि पाई दादि इलाही॥
दाति जोति खसमै वडिआई॥

(वार १ पउड़ी ४६, भाई गुरदास)

इस प्रकार अकाल पुरखु वाहिगुरु ने कलियुगी जीवों पर द्रवित होकर अपने आपको दस स्वरूपों में प्रकट किया। ज्योति एक ही रही जिसका न कोई आदि है, न अंत है, केवल शरीर परिवर्तित होते रहे। जैसे—

श्री नानक अंगदि करि माना॥
अमरदास अंगद पहिचाना॥
अमरदास रामदास कहायो॥
साधनि लखा मूढ़ नहि पायो॥

(विचित्र नाटक ५,६)

श्री गुरु नानक देव जी ही, अंगद जी के रूप में माने गए हैं। गुरु अंगद जी का रूप, अमरदास जी को जाना। अमरदास जी ही, रामदास कहलाने लगे। इस भेद को साधुओं ने समझ लिया, लेकिन मनुष्यों को इसकी समझ नहीं लगी। जैसे—

भिंन भिंन सबहूँ कर जाना॥ एक रूप किनहू पहिचाना॥
जिन जाना तिन ही सिध पाई॥ बिन समझे सिध हाथ न आई॥

(विचित्र नाटक ५, १०)

माया के भ्रमित किये लोगों ने समस्त गुरुओं को भिन्न-भिन्न रूप समझा, किसी गुरमुख को ही एक रूप समझने की बुद्धि आई। जिन-जिन को इस बात की समझ आ गई, कि ये सारे गुरु एक ही रूप हैं, उनको मुक्ति की प्राप्ति हुई। इस प्रकार उस ईश्वरीय ज्योति ने कलियुगी जीवों के उद्धार हेतु समय-समय पर दस शरीर धारण किये। गुरु नानक देव जी महाराज की ओर से लगाये उस प्रेमाभक्ति के निर्मल वृक्ष को जल से सींच कर और विकसित किया। दसवें स्वरूप गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने आदि शरीर में आरम्भ किये प्रेमाभक्ति के निर्मल-पंथ को और अधिक प्रफुल्लित करने के लिए कुछ कदम उठाये—

देस चाल हम ते पुनि भई॥ सहर पाँवटा की सुधि लई॥
कालिंद्री तटि करे बिलासा॥ अनिक भाँति के पेख तमासा॥

(विचित्र नाटक ८, २)

अर्थ—देश की परम्परागत रीति के अनुसार परिस्थितियाँ कुछ इस प्रकार बन गईं कि हम पाँवटा साहिब आ गए। यहाँ यमुना के तट पर ठहरकर, कई प्रकार की क्रीड़ायें और कौतुक किये और तमाशे देखे।

तह के सिंघ घने चुनि मारे॥ रोझ रीछ बहु भाँति बिदारे॥
फतेह साह कोपा तबि राजा॥ लोह परा हम सो बिनु काजा॥

(विचित्र नाटक ८,३)

अर्थ—वहाँ हमने कई शेर चुन चुन कर मारे और लोगों को अन्य कई दु:ख देने वाले जानवर, रोझ, रीछ आदि का शिकार किया। वहीं श्रीनगर का राजा फतहशाह क्रोधित हो गया जो कि बिना किसी कारण से, हमारे साथ युद्ध ठान बैठा।

कलगीधर पातशाह ने यहीं भंगाणी का युद्ध किया। बहुत से पहाड़ी राजाओं को मौत के घाट उतारकर विजय

प्राप्त की। जीत के पश्चात् बधाई देने आए लोगों को महाराज ने ऐसा उच्चारण किया—

भई जीत मेरी॥ क्रिपा काल केरी॥

उस कालातीत पुरुष (अकाल पुरखु) ने कृपा की तो मुझे जीत प्राप्त हुई। यह है अहंकार के मल से रहित निर्मल मार्ग जिसको आदि समय में आरम्भ किया था। युद्ध के मैदान में और युद्ध जीत जाने के पश्चात् भी जिसको हाथ से जाने नहीं दिया, अपितु युद्ध भी इसकी प्राप्ति के लिए ही करना पड़ा। यहीं ही पीर बुद्धूशाह सढ़ौरे वाले शरण में आए। उसको आत्मज्ञान की ईश्वरीय देन देकर प्रसन्न किया।

निर्मल सम्प्रदाय

पाँच शिष्यों को अध्ययनार्थ काशी भेजना

निर्मल पंथ जो गुरु का सुणहु कथा मन लाए॥
भूल जो चूक परे मम ते चाहहुँ छमा सिर नयाय॥

थोड़ा-थोड़ा पहाड़ी क्षेत्र है, एक ओर सरिता प्रवाहित है, दूसरी ओर छोटी-छोटी पहाड़ियों का मनमोहक दृश्य है, ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही है। सूर्य अभी उदय नहीं हुआ, लेकिन उसका प्रकाश हल्के रंग का सुन्दर वितान तान रहा है। कोई अलौकिक ज्योति अपने ईश्वरीय नूर में निमग्न सरिता की ओर पवित्र मुख करके कुर्सी पर इस प्रकार सुशोभित है जैसे पूर्णिमा का चन्द्रमा! यमुना का जल ऐसी मंद गति से बह रहा है कि मानो जल की एक एक बूँद उस ईश्वरीय शक्ति को सजदा करके प्रवाहमान है।

हजूर के नेत्र बंद हैं, सेवक धीरे धीरे चँवर कर रहा है। कुछ सेवक श्री चरणों में बैठे हजूर के ईश्वरीय शक्ति से सराबोर उनकी ओर इस प्रकार देख रहे हैं कि जैसे चक्रवाक सूर्य की ओर देख रहा हो।

इस स्थिति में कुछ समय गुज़र गया, कोई नहीं कह सकता कि इसका क्या कारण है? एकाएक हजूर ने कमल-नयन खोले। उन पवित्र नेत्रों में से अमृतरस से परिपूर्ण शांत और सुखदाई किरणें सन्मुख बैठे सेवकों पर इस प्रकार पड़ रही थीं जैसे पूर्णिमा की रात्रि में चन्द्रमा की पूर्णता से निकलती शीतल किरणें वनस्पति में मधुरता भर रही हों। पवित्र-चेहरा शान्त-रस से परिपूर्ण है, लेकिन गम्भीर मानों किसी गहन-विचार में निमग्न है। एकाएक पवित्र अधर हिले, आदेश हुआ कि गण्डा सिंह! जाओ पंडित रघुनाथ को बुलाओ। आज्ञा का पालन कर गण्डा सिंह चल पड़े और कुछ क्षण पश्चात् पंडित रघुनाथ को साथ लेकर हजूर के श्री चरणों में नमस्कार करके बैठ गए। हजूर ने आज्ञा दी, पण्डित जी! हम अपने शिष्यों को संस्कृत-ज्ञान देने की कामना रखते हैं। आप संस्कृत के विद्वान हो, अतः हमारे शिष्यों को संस्कृत-ज्ञान प्रदान करो। वेतन जो लेना हो तो सो बताओ। पंडित रघुनाथ जी बोले—सत्वचन महाराज! आप जी की आज्ञानुसार कल से अध्यापन आरम्भ कर देंगे। हजूर ने शिष्यों को आज्ञा दे दी कल से इनके पास अध्ययनार्थ जाना है। आज्ञानुसार दूसरे दिन कुछ शिष्य पंडित जी के पास अध्ययनार्थ गए, तब पंडित जी ने शास्त्र-विधि अनुसार सब को अपनी-अपनी जाति बताने के सम्बन्ध में कहा तो किसी ने अपनी जाति बढ़ई बताई, किसी ने नाई, किसी ने छींबा और किसी ने कलाल बताई। सुनकर पंडित जी ने कहा, तुम्हें मैं नहीं पढ़ा सकता क्योंकि आप सब नीच जाति से सम्बन्धित हो अर्थात् शूद्र हो, आपको पढ़ाना शास्त्र-मर्यादा का उल्लंघन है। शिष्यों ने वापिस आकर सारी बात सुनाई। हजूर के पवित्र चेहरे पर कोटि सूर्य के समान दिव्य आभा झलमला उठी।

पवित्र मुख से उच्चारण किया—

बोले गुरु सुनु द्विज अभिआमानी॥ सूदर कहत जिनै तू बानी॥
इनही मेरे सिखन ते लख॥ विदिआ बेद पढ़ेंगे द्विजदख॥

निगम आगम लौ चोदश विदया॥ मैं बख्शी सिखहि पर सिधिया॥
जिस कउ तूँ शूदर बतराइ हैं॥ इह विदया गुर तुमरे दै हैं॥

(ज्ञानी ज्ञान सिंह जी)

पंडित जी जिनको तुम शूद्र कहते हो, मैं इनको चौदह विद्या का ज्ञाता बनाऊँगा। ब्राह्मण लोग इनसे विद्या ग्रहण करने हेतु आया करेंगे। मोक्ष के इच्छुक इनकी शरण पड़कर आत्मज्ञान प्राप्त किया करेंगे।

शिष्यों को आदेश दिया—काशी जाकर संस्कृत पढ़ो। यदि संस्कृत की विद्या न प्राप्त की तो आने वाले समय में लोग गुरबाणी के छिपे रहस्यों को न समझकर पूरा-पूरा लाभ नहीं उठा सकेंगे। इस प्रकार कलगीधर पातशाह ने पाँच शिष्यों को भगवा सन्यासी-वेश धारण कर काशी प्रस्थान की आज्ञा दी। आज्ञा मानकर, भाई गण्डा सिंह जी, भाई करम सिंह जी, भाई वीर सिंह जी, भाई राम सिंह जी और भाई सैणा सिंह जी आदि पाँच शिष्यों ने नमस्कार करके काशी प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर चेतन-मठ स्थान पर निवास किया। कुछ दिन विश्राम करके वहाँ के वातावरण से परिचित हो लेने के पश्चात् पंडित सदानंद से विद्या-अध्ययन आरम्भ किया। इस प्रकार गुरु-कृपा द्वारा उनके आदेशानुसार काशी में निवास करते हुए सात वर्ष विद्या प्राप्त करते रहे। इतने समय में संस्कृत-अध्ययन और वेदांत के ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त करके काशी के दिग्गज विद्वानों में आदर के पात्र बनें। दूसरी ओर दशमेश पिता पाँवटा साहिब में अनेक कौतुक दिखाते हुए और अनंत जीवों का उद्धार करते हुए श्री आनंदपुर साहिब आ गए।

देव ऋषि नारद जी का कलगीधर जी के दर्शनार्थ आगमन

थोड़ा-थोड़ा पर्वतीय प्रदेश है। न अधिक गर्मी न अधिक सर्दी अर्थात् कड़कती शरद् ऋतु व्यतीत हो चुकी है और गर्मी का अभी आगमन नहीं हुआ। बसंत रानी अपने यौवन एवं सौन्दर्य को प्रकट कर रही है। वनस्पति ने मानो नव-नव पल्लवों की रंग-बिरंगी पोशाक पहन रखी है। फूलों की सुगन्ध समस्त वातावरण को अपनी महक के साथ मनमोहक बना रही है। मातृलोक में ऐसी सुन्दर और मनमोहक पृथ्वी आनंदपुर अर्थात् जो आनंद से परिपूर्ण है—जिसमें दु:ख का अस्तित्व नहीं है—ऐसी पवित्र धरती में दो से एक रूप होकर स्वर्ग से पृथ्वी तक के स्वामी श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज तीसरे पहर के दीवान (सभा) समय अपने शिष्यों सेवकों के मध्य स्वर्णिम सिंहासन पर इस प्रकार विराजमान हैं जैसे पूर्णिमा की रात्रि में तारामण्डल में चन्द्रमा सुशोभित होता है।

हजूर की ईश्वरीय सभा में प्रत्येक अवस्था के सिंह, सेवक अर्थात् गुरवाणी का पाठ करने वाले, विचार करने वाले, निरन्तर जप करने वाले और शस्त्रधारी शूरवीर योद्धा भी बैठे हैं जो सदैव हजूर के पवित्र चरणों में अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए तत्पर हैं। कुछ शिष्यों ने आकर प्रार्थना की कि हे गरीब निवाज़! आपके आदेशानुसार गुरवाणी का पठन-पाठन तो चलता रहता है, लेकिन कुछ समझ में नहीं आता और न ही कोई आनंद आता है, इस प्रकार गुरवाणी पढ़ने का क्या कोई फल होगा? हजूर ने कहा कि प्रेमियों आपकी शंका का उत्तर कल तीसरे पहर दीवान (सभा) में देंगे।

इतने में एक महापुरुष जिसने शरीर पर विचित्र प्रकार का वेश धारण किया हुआ था, हाथ में एक विचित्र प्रकार की भेंट लेकर हजूर के श्री चरणों में आया। आपने भी उठकर इस महात्मा को बड़े आदर के साथ अपने आसन पर बैठाया। वचन किया कि हे महापुरुष! आप जैसे महापुरुषों के तो दर्शन ही दुर्लभ हैं, आपने यह भेंट लेकर आने का

कष्ट क्यों किया। महापुरुष बोले, महाराज! जब-जब भी आप सांसारिक जीवों का दु:ख दूर करने के लिए अवतार धारण करते हो, मैं आपके दर्शनार्थ आता ही हूँ। यह शास्त्र मर्यादा है, कि गुरु-पीरों के दर्शन करने के लिए रिक्त हाथ जाने से पाप लगता है। हजूर बोले आप तो पाप-पुण्य से ऊपर विचरण करने वाले जीवन-मुक्त महापुरुष हो। आप जैसे महापुरुषों के दर्शन मात्र से ही पापों की निवृत्ति हो जाती है।

इस प्रकार प्रेम पूर्ण वार्तालाप के पश्चात् महापुरुषों ने प्रार्थना की कि महाराज! इस सगुण रूप में अभी और कितनी लीला करनी है? हजूर ने फरमाया कि महाराज जी, परमपुरुष परमात्मा की ओर से जो कार्य निश्चित किये गए थे, उसमें से अभी आधा काम अधूरा पड़ा है। महाराज जी बोले! इसका अभिप्राय क्या है? हजूर ने उच्चारण किया—

हम इह काज जगत मो आए॥ धरम हेत गुरदेव पठाए॥
जहाँ तहाँ तुम धरम बिथारो॥ दुसट दोखीअनि पकरि पछारो॥
याही काज धरा हम जनमं॥ समझ लेहु साधू सभ मनमं॥
धरम चलावन संत उबारन॥ दुसट सभन को मूल उपारन॥

जैसे—हे संत महाराज जी! उस कालातीत पुरुष वाहिगुरु ने हमें धर्म की रक्षा करने के लिए संसार में भेजा है। 'धर्म' के सम्बन्ध में तो आज जानते ही हो? 'धर्म' से भाव है 'आदेश' अर्थात् कालातीत पुरुष (अकाल पुरखु) वाहिगरु ने सृष्टि की रचना अपने 'आदेश' में की जिसमें चौरासी लाख योनियाँ उत्पन्न करके मनुष्य को बुद्धिरूपी नेतृत्त्व प्रदान किया ताकि यह विवेक द्वारा कठोर साधना द्वारा ईश्वर की पहचान कर ले। विगत समय में आयु अधिक हुआ करती थी और शारीरिक बल अधिक होने के कारण प्राणायाम जैसी साधनायें साधकर उद्देश्य पर पहुँचा जाता था, लेकिन वर्तमान समय में आयु कम और बुद्धिबल का अभाव है अर्थात् शरीर एवं बुद्धि कठोर साधनायें नहीं कर सकते इसलिए कालातीत पुरुष वाहिगुरु ने जीवों पर द्रवित होकर अपने आप को गुरु नानक के रूप में प्रकट करके, समयानुकूल प्रेमाभक्ति का सीधा एवं सरल उपाय बताया जो कि समस्त धर्मों का सार-रूप है। जैसे—

सरब धरम महि स्रेसट धरमु॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु॥

(गउड़ी सुखमनी पृष्ठ २६६)

वर्तमान समय परमेश्वर प्राप्ति के लिए सबसे श्रेष्ठ धर्म है। परमेश्वर का नाम सिमरन और निष्काम कर्म का सम्पादन। निष्काम से अभिप्राय है—बिना किसी इच्छा के दूसरों पर उपकार करना। ऐसे धर्म की तुलना में विश्व की कोई वस्तु नहीं पहुँच सकती। यथा गुरुवाक्—

सचा धरमु पुंनु भला कराए॥ दीन कै तोसै दुनी न जाए॥ *(पृष्ठ ७४३)*

यथा— **तजि सभि भरम भजिउ पारब्रहमु।**
कहु नानक अटल इहु धरमु॥

(पृष्ठ १९६)

ऐसे धर्म के मार्ग पर चलने वालों को बाह्य और आन्तरिक दो प्रकार के शत्रुओं से रक्षा के लिए—दो प्रकार के अस्त्रों की आवश्यकता पड़ती है—शास्त्र एवं शस्त्र। शास्त्र-काम, क्रोध आदि आन्तरिक शत्रुओं से रक्षा करने का अस्त्र है। शास्त्र का सिद्धांत, सार-रूप में जिसके हृदय में निवासित हो गया है, वास्तव में वही सच्चा शूरवीर है। जैसे गुरुवाक्—

जिनि मिलि मारे पंच सूरबीर ऐसो कउनु बली रे॥
जिनि पंच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे॥

(आसा महला ५, पृष्ठ ४०४)

यथा— **जा कउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरा॥**
आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का सतिगुरु पूरा॥

(धनासरी महला ५, पृष्ठ ६७९)

हे महाराज! हमारे शिष्यों के हृदय इस शास्त्र-सिद्धांत रूपी शस्त्र से पूरित हो चुके हैं अर्थात् काम-क्रोध आदि आन्तरिक शत्रुओं का मुकाबला करने के लिए पूर्ण रूप से शूरवीरता प्राप्त कर ली है। ऐसे शूरवीरों की बाह्य इस्लामी शत्रुओं से रक्षा करने के लिए शस्त्रधारी खालसा पंथ की सर्जना करनी है। हे महाराज! आप देख ही रहे हो, सम्प्रति क्रूर शासकों ने ऐसे धर्म के मार्ग पर आरूढ़ शान्ति पुँज गुरुपिता श्री गुरु तेग़ बहादुर जी को शहीद कर दिया और शरीअत के अंधानुकरण में अध्यात्म-ज्ञान के एक ज्ञाता, परमेश्वरवादी 'सरमद' जैसे सच्चे फकीर आदि हज़ारों कत्ल करवा दिये जो कि उनके अपने ही धर्मानुयायी थे। इसलिए हमको 'धरम चलावन, संत उबारन, दुसट सभन को मूल उपारन' के महान् कार्य हेतु उस कालातीत पुरुष वाहिगुरु ने भेजा था जिसमें से आधा कार्य वाहिगुरु जी की कृपा से सम्पूर्ण हो गया है अर्थात् धर्म के आन्तरिक शत्रुओं—काम, क्रोध आदि का मुकाबला करने हेतु शास्त्र रूपी शस्त्र से हमारे शिष्य सुसज्जित हो चुके हैं, अर्थात् महान् विद्वता प्राप्त कर ली है। अब ऐसे धर्मी जो आप परमेश्वर की आज्ञा में चलते हैं और दूसरों को भी हरि के हुकुम रूपी धर्म में चलने की शिक्षा देते हैं जो कि मनुष्य जन्म का मुख्य उद्देश्य है आदि की बाह्य शरीअत शत्रुओं से रक्षा करने के लिए शस्त्रधारी खालसा पंथ की सर्जना करनी है। बस-हमारे आगमन का यही प्रयोजन था। जीवों को परमेश्वर के आदेश में रहने का उपाय बताना और जो स्वयं उसकी रज़ा में चलते हैं और अन्यों को उसकी रज़ा में चलने की शिक्षा देते हैं ऐसे महापुरुषों को कष्ट देने वाले दुष्टों का समूल नाश करना है, क्योंकि परमेश्वर अपने सेवकों का दु:ख नहीं देख सकता। जैसे—

निंदक मारे ततकालि खिनु टिकण न दिते॥
प्रभ दास का दुखु न खवि सकहि फड़ि जोनी जुते॥
मथे वालि पछाड़िअनु जम मारगि मुते॥
दुखि लगै बिललाणिआ नरकि घोरि सुते॥
कंठि लाइ दास रखिअनु नानक हरि सते॥

(गूजरी वार, पृष्ठ ५२३/५२४)

कुछ इस प्रकार के संवाद के पश्चात् महापुरुषों ने गमन किया, लेकिन जो भेंट वे लेकर आए थे उसको देखने से ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे किसी पक्षी के पंख हों। हजूर ने शस्त्र निर्माण करने वाले कारीगरों को आदेश किया कि यह ले जाओ। इनको एक-एक बाण के साथ लगाकर कल तीसरे पहर की सभा में ले आना। आज्ञानुसार कारीगरों ने ऐसा ही किया। दूसरे दिन सभा के समय हजूर के श्री चरणों में भेंट कर दिये। सतगुरु ने शिष्यों को आज्ञा दी कि समस्त शिष्य नगर के चारों ओर से वन में चले जाओ। हम इन बाणों को आकाश की ओर चलायेंगे, आप इन समस्त बाणों को, ये जहाँ भी गिरें, उठाकर हमारे पास ले आना। आज्ञानुसार शिष्य चारों ओर फैल गए। हजूर ने एक-एक करके समस्त बाण ऊपर की ओर चला दिये। बाणों को जाते हुए सब ने देखा, लेकिन किसी ने उनमें से एक को भी पृथ्वी पर गिरते नहीं देखा। समस्त शिष्य खाली हाथ वापिस आ गए। हजूर ने पूछा कि आप बाणों को लेकर क्यों नहीं आए? उन्होंने प्रार्थना की कि ग़रीब निवाज़! बाण जाते तो दृष्टिगोचर होते थे, लेकिन नीचे गिरते कोई नज़र नहीं आया। महाराज मुस्कराकर बोले—वास्तव में यह आपके बीते कल में किये गए प्रश्न का उत्तर है। तुमने शंका की थी, तो

गुरवाणी पठन-पाठन का क्या लाभ? यह भेंट लेकर विचित्र प्रकार के वेश में कल जो संत महाराज आए थे वे देवऋषि नारद जी थे। वे प्रत्येक युग में सदैव अमर हैं और वे रहस्यों को जानने में समर्थ हैं। वे जो भेंट लेकर आए थे, 'हूमायऊँ' नामक पक्षी के पंख थे जो आकाश में रहता है और आकाश में बच्चों को जन्म देता है। इस पृथ्वी की कोई वस्तु उसको बाँध नहीं सकती, बल्कि जो वस्तु उसको स्पर्श करेगी उसको भी वह आकाश में साथ ही ले जाता है। तुमने देख ही लिया है कि उसके पंख, बाणों को भी साथ ही ले गए, एक भी नीचे नहीं गिरा। इस प्रकार गुरवाणी निरंकार के देश से अवतरित हुई है। जिस व्यक्ति का मन इस पवित्र गुरवाणी के साथ स्पर्श करेगा उसको अपने अर्थात् निरंकार के देश ले जायेगी, जहाँ न जन्म है, न मृत्यु है; न हर्ष है, न शोक है, बस एक आनंद इसका सागर उद्वेलित है।

खालसा पंथ की सर्जना

आनंदपुर साहिब में खूब चहल-पहल है, कहीं कोई बैठा गुरुवाणी का पाठ कर रहा है, कोई विचार मग्न है, प्रात: सायं कीर्तन चलता है और कई बार विशेष कीर्तन दरबारों का आयोजन भी होता है। कलगीधर पातशाह का यश दूर-दूर तक फैल रहा है। देश के कोने-कोने से संगत तीव्र गति से आ रही है, लेकिन दशमेश पिता किसी गहन विचार में निमग्न हैं। आज प्रात: 'आसा दी वार' का कीर्तन हो रहा है, रागी-सिंहों की ओर से किया गया रसमय गुरुवाणी कीर्तन मन को मुग्ध कर रहा है। दशमेश पिता आत्म-रस में समाधिस्थ हुए, नेत्र बंद किये दरबार में इस प्रकार सुशोभित हैं जैसे स्वर्ग से गंगा उतर आई हो। 'आसा दी वार' के भोग उपरान्त अरदास हुई, लेकिन हजूर नेत्र नहीं खोल रहे, सारी संगत पवित्र चेहरे की ओर टकटकी लगाकर देख रही है। एकाएक नेत्र खुले, पवित्र अधरों में से मंद-मंद श्रुति मधुर ध्वनि निकली—

ठाढ भयो मै जोरि कर बचन कहा सिर निआइ॥
पंथ चलै तब जगत मै जब तुम करहु सहाइ॥

(विचित्र नाटक ६, ३०)

समस्त संगत ने नमस्कार की, बाहर से आई संगत ने अपनी-अपनी भेंटें अर्पित कीं। हजूर ने सबकी कुशल-क्षेम पूछी। अपने सेवकों को आज्ञा दी, देश-प्रदेश की समस्त संगत को यह आज्ञा दे दो कि वैशाखी वाले दिन केशगढ़ में उस कालातीत प्रभु के आदेशानुसार बड़ा भारी समागम हो रहा है। उसमें समीप और दूर की समस्त संगत उपस्थित होकर गुरुनानक की खुशियाँ प्राप्त करे। आज्ञानुसार समस्त संगत को लिखित सूचना दे दी गई। श्री केशगढ़ वाले स्थान पर पंडाल आदि लगाकर, व्यापक पैमाने पर तैयारियाँ आरम्भ हो गईं। वैशाखी को समीप आते समझ देश के कोने-कोने से संगत आनंदपुर साहिब पहुँचनी आरम्भ हो गई। लाखों की संख्या में संगत आनंदपुर साहिब पहुँच गई। निश्चित दिन पर अर्थात् वैशाखी वाले दिन श्री केशगढ़ वाले स्थान पर दीवान का आयोजन हुआ जिसमें बड़ी भारी संख्या में संगत की उपस्थिति थी। दीवान में साथ ही एक शामियाना लगा हुआ है। सब एकटक दृष्टि से उसे देख रहे हैं। एकाएक दशमेश पिता चमचमाती तलवार लेकर मंच पर उपस्थित हुए, आज्ञा की—कि हमें एक शीश की आवश्यकता है, कोई आगे आए। हजूर के पवित्र चेहरे का तेज देखकर और शीश की माँग सुनकर स्तब्धता छा गई। मृत्यु का वरण कौन करे? हजूर ने एक बार फिर ओजस्वी आवाज़ में श्री गुरुनानक देव महाराज जी की यह पंक्ति उच्चारण की—

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै॥ सिरु दीजै काणि न कीजै।

(वारां ते वधीक, पृष्ठ १४१२)

हजूर के पवित्र मुख से ऐसे वचन सुनकर लाहौर निवासी भाई दया राम ने मन में सोचा—

जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ॥

(आसा महला ४, पृष्ठ ४४९)

इस पंक्ति का भाव समझते ही, उठकर शीश पेश कर दिया। गुरु साहब उसे बाजू से पकड़कर शामियाना (तम्बू) में ले गए। ज़ोरदार तलवार चली, जो बाहर भयभीत संगत को सुनाई दी। थोड़ी देर पश्चात् हजूर शामियाना (तम्बू) में से बाहर आए, उनके हाथ में रक्त से सराबोर नंगी तलवार है, फिर वही वचन दोहराया कि एक और शीश की आवश्यकता है। सुनते ही भाई धर्मदास उठ खड़े हुए। पवित्र मुख से यह पंक्ति उच्चारण कर रहे हैं—

तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै॥
सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै॥

(वडहंस महला १, पृष्ठ ५५८)

बस अपना शीश भेंट कर दिया। पहले की भाँति गुरु साहिब जी भाई धर्मदास को शामियाने में ले गए, उसी प्रकार तलवार चली, बाहर सबको सुनाई दी। थोड़ी देर पश्चात्, फिर रक्त रंजित तलवार लेकर बाहर आए, और फिर शीश की मांग की, इस प्रकार एक-एक करके भाई हिम्मत चन्द जी, भाई मोहकम चन्द जी और भाई साहिब चन्द जी ने गुरु की अमानत जानकर अपने शीश भेंट कर दिये। पाँचों को महाराज ने अमृत पान करवाने के पश्चात् 'सिंह' नाम की पदवी प्रदान की। थोड़े समय पश्चात् पाँचों को मंच पर लाकर संगत के सम्मुख 'प्यारे' की पदवी से विभूषित करके उन्हें नवाजा और अनेक वरदान दिये—

खालसा मेरो रूप है खास॥ खालसे में हउं करउं निवास॥
हौं खालसे को खालसा मेरो। ओत पोत सागर बूंदेरो॥

(दशम ग्रन्थ)

ऐसे अनेकों वरदान दिये—आप से आगे अनेक सम्प्रदाय चलेंगे जिनके सत्संग द्वारा अनेक जीव मनुष्य-जन्म की सफलता अर्थात् सद्गति को प्राप्त होंगे और प्रसन्न होकर ब्रह्मज्ञान का अनुपम वरदान दिया। जितनी बड़ी कुर्बानी उतनी बड़ी प्राप्ति। जिस वस्तु को प्राप्त करने के लिए सिद्ध, मुनि, योगी लालायित रहते हैं, वह अवस्था अपने पाँचों प्यारों को एक क्षण में प्रदान कर दी।

जो गति कउ जोगीसर बाछत सो गति छिनु महि पाई॥

शिष्यों का काशी से विद्याध्ययन के पश्चात् वापिस लौटना

आनंदपुर साहिब में खूब चहल-पहल रही, लाखों श्रद्धालुओं का आना-जाना आरम्भ हो गया। समय के हालात के परिप्रेक्ष्य में युद्ध-अभ्यास और तैयारी आरम्भ हो गई। प्रात:-सायं सभायें सुसज्जित होतीं, गुरुवाणी का कीर्तन, कथा और विचार होते। श्रद्धालुओं की संख्या को देखकर हजूर ने आदेश दिया कि एक लंगर (प्रीति भोज) में सारी संगत को कठिनाई आती है अत: स्थान-स्थान पर लंगर का प्रबन्ध किया जाये। मुख्य शिष्यों की देख-रेख में लंगर आरम्भ कर दिये गए। आदेश किया कि लंगर दिन-रात अनवरत चलता रहे, क्योंकि सुदूर से पदयात्रा करके आए श्रद्धालु देर रात तक थक हार कर पहुँचते हैं। उनके आते ही उन्हें लंगर छकाना, उनके निवास का प्रबन्ध करना ताकि सबको विश्राम मिल सके। आज्ञा का अनुपालन किया गया, स्थान-स्थान पर लंगर आरम्भ कर दिये गए।

एक दिन तीसरे पहर की सभा में संगत सुसज्जित है और हजूर भी अपने स्वर्णिम सिंहासन पर सुशोभित हैं।

इतने में संन्यासियों वाले भगवे वेश में पाँच शिष्य सभा में पहुँचे। हजूर के चरणों में नमस्कार करके, गले में पल्ला डालकर इस प्रकार उच्चारण किया—

चिरी विछुंने मेलिअनु सतगुर पंनै पाइ॥
आपे कार कराइसी अवरु न करणा लाइ॥

(सिरीरागु महला ३, पृष्ठ ३२)

सतिगुर विचि वडी वडिआई॥ चिरी विछुंने मेलि मिलाई॥

(आसा महला ३, पृष्ठ ३६१)

हजूर ने गण्डा सिंह को हृदय से लगाकर उच्चारण किया—निहाल! निहाल! निहाल!! तुम सबने काशी में रहकर गुरुनानक के नाम को ऊँचा किया है, इसलिए गुरुनानक घर का प्रसाद रस का सेवन करो। लोहे के पारस के साथ स्पर्श करने की देर थी, लोहा दिखाई नहीं दिया, स्वर्ण ही स्वर्ण हो गया। अब रोम-रोम में से 'तू ही' तू ही' की आवाज़ आ रही है। शेष चार शिष्यों को भी आज्ञा दी कि तुमने भी आज्ञा में रहकर कई वर्ष कठिन तपस्या की है, अब गुरुनानक के चरणों का प्रेम-रस का पान करो। बस, ऐसा कहते ही उन्हें कृपा-दृष्टि से उपकृत कर दिया। आज्ञा दी कि शिष्यों एवं अन्य जरूरतमंदों का शिक्षण आरम्भ कर दो और संस्कृत-रचित 'महाभारत' आदि ग्रन्थों का भाषा में अनुवाद करो। गुरु आज्ञा में रहकर जो विद्या-निधि आपने प्राप्त की है, उसका व्यापक प्रचार-प्रसार करो और माया-मोह में ग्रसित जीवों के अहं-पाश को ज्ञान-खड्ग से काटकर, मोक्ष रूपी स्वतन्त्रता प्रदान करो। गुरुनानक ने अति प्रसन्न होकर ज्ञान रूपी निधि की चाबियाँ तुम्हें प्रदान की हैं, इनको अन्य जरूरतमंदों में वितरित करो।

इस प्रकार पाँच शिष्यों को अनेक वरदान देकर हर्षित किया। सायं की सभा भी समाप्त हुई।

हजूर का भगवा वेश धारण कर लंगर-व्यवस्था का निरीक्षण करना

एक दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह महाराज जी आनंदपुरी में चल रहे लंगर-व्यवस्था का निरीक्षण हेतु अपना राजसी शूरवीरों वाला वेश बदलकर, भगवा वेश अर्थात् विरक्त साधुओं वाला भगवा वेश धारण कर, हाथ में चिप्पी लेकर, किले में से निकले। अर्ध-रात्रि का समय है, एक लंगर पंडाल में पहुँचकर लंगर करने की याचना की। लंगर-व्यवस्थापक ने कहा कि यह समय लंगर करने का नहीं है, आधी रात में तुम्हें लंगर कहाँ से दें? वहाँ से चलकर दूसरे लंगर पंडाल में गए। आगे लंगर के सेवादार दूसरे लंगर वालों की निंदा कर रहे थे। अन्दर प्रवेश करके 'नारायण हरि' कहा। आगे से वही उत्तर मिला जो पहले लंगर पंडाल में से मिला था। यहाँ से चलकर तीसरे लंगर पंडाल में गए, देखते हैं कि सेवादार आपस में हँसी-मज़ाक कर रहे हैं, भोजन की इच्छा प्रकट की लेकिन उत्तर में 'न' सुनाई दी। फिर आगे एक और लंगर पंडाल में गए। वहाँ क्या देखते हैं कि सारे सेवादार सोये हुए हैं, वहाँ से बिना कुछ कहे वापिस आ गए। आगे एक और लंगर पंडाल है, जिसकी सेवा प्यारा भाई धर्म सिंह ने ले रखी है। हजूर विरक्त वेश में जिस समय उस लंगर के द्वार पर पहुँचे तो क्या देखते हैं कि भाई धर्म सिंह जी सारे सेवादारों को 'जपुजी' साहिब का पाठ करवा रहे हैं, जब पाठ की समाप्ति हुई, हजूर ने चुपचाप अन्दर प्रवेश किया, तो सब सेवादारों ने साधु समझकर, नमस्कार कर, लंगर लाने के लिए प्रार्थना की। हजूर ने तुरन्त अपना वेश बदलकर धर्म सिंह को हृदय से लगा लिया। अपने पवित्र मुख से उच्चारण किया—भाई धर्म सिंह तुम धन्य हो, तेरी सेवा भी धन्य है, तेरी विनम्रता धन्य है, तुम आज अपनी दूसरी परीक्षा में पूरे शत प्रतिशत अंक लेकर उत्तीर्ण हुए हो। तुम हर प्रकार से आदर-मान की मल से रहित, निर्मल-पद में स्थित हो, तुम्हारे नाम से निर्मल सम्प्रदाय चलेगा—उसमें बड़े-बड़े तेजस्वी महापुरुष होते

रहेंगे, बड़े-बड़े चक्रवर्ती राजा-महाराजा उनके श्री चरणों में झुकेंगे। अपने आपको उच्च कुल से सम्बन्धित मानने वाले विद्या-ग्रहण करने के लिए उनके पास आया करेंगे। मोक्ष के इच्छुक उनकी शरण में आकर आत्म-पद की प्राप्ति किया करेंगे। निर्धनों, अनाथों, जरूरतमंदों के लिए अन्न-क्षेत्र चलाएंगे। सांसारिक इच्छाओं की भूख वाले उनके चरणों में आकर सांसारिक पदार्थ अर्थात् पुत्र आदि के वरदान आदि प्राप्त किया करेंगे। संसार का कोई पदार्थ उनके लिए अदेय नहीं होगा। समस्त पदार्थों के खज़ानों की चाबियाँ उनके पास होंगी। ऐसे अनेक वरदानों के साथ भाई धर्म सिंह को प्रसन्न करके अपना भगवा वेश चिप्पी समेत भाई धर्म सिंह के आँचल में डाल दिया। भाई धर्म सिंह यह जानते थे कि यह किसी की अमानत है।

(नोट—ज्ञानी ज्ञान सिंह जी रचित—'निर्मल पंथ प्रदीपिका' में से उद्धृत)

साधुओं की शंका का उत्तर

शरद् ऋतु है। एक दिन कलगीधर पातशाह धूप में आराम कुर्सी पर सुशोभित हैं, उस समय कुछ संत-जन दर्शनार्थ आए। नमस्कार करने के पश्चात् चरणों में बैठ गए। हजूर ने सबकी कुशल-क्षेम पूछी। लंगर में जाकर लंगर करने के लिए कहा। महात्मा लोग आज्ञा का पालन करके लंगर में गए। इच्छानुसार जल-पान ग्रहण करके फिर हजूर के चरणों में आ गए। प्रार्थना की कि ग़रीब निवाज! आपने खालसे को बहुत वरदान दिये हैं, बल्कि 'खालसा मेरो रूप है खास' ऐसे वचनों से उपकृत किया है, ऐसे खालसे की भीतरी अवस्था कैसी है? क्योंकि गुरु तो भीतरी अवस्था पर रीझता है न कि बाह्य वेश मात्र पर। हजूर मुस्कराकर कहने लगे, 'खालसा' शब्द का अर्थ है शुद्ध, निर्मल, 'खालस' अर्थात् द्वैत और अहंकार रूपी हर प्रकार के मल से रहित, केवल परमेश्वरवादी, जिसके सम्बन्ध में कबीर साहिब ने फरमाया है—

कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी॥

(पृष्ठ ६५५)

जिसके हृदय में पूर्ण रूपेण प्रेमाभक्ति प्रवेश कर चुकी है—उसे कहते हैं 'खालसा'।

यथा— **पूरन जोति जगै घटि महि खालस ताहि निखालस जानो॥**

जिसके हृदय में अज्ञान रूपी आवरण भंग हो जाये, पूर्ण परमेश्वर की ज्योति का प्रकाश हो जाये, उसे 'खालसा' जानो। ऐसा जो खालसा है—

आतम रस जिह जाणई सोई खालसा देव॥
प्रभ महि मोह महि तास महि रंचक नाहि भेद॥

जिसने सांसारिक रसों से वृत्ति उठाकर आत्म-रस को जान-पहचान लिया—

यथा— **रारा रसु निरस करि जानिआ॥ होइ निरस सु रसु पहिचानिआ॥**
इह रस छाडे उह रसु आवा॥ उह रसु पीआ इह रसु नही भावा॥

(पृष्ठ ६५५)

यथा— **रसु सुइना रसु रूपा कामणि रसु परमल की वासु॥**
रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु॥
एते रसु सरीर के कै घटि नाम निवासु॥

(सिरीरागु महला १, पृष्ठ १५)

उपरोक्त सारे रसों से जिस पुरुष ने वृत्ति उठाकर आत्म-रस में स्थिति को प्राप्त किया है वही खालसा देव है।

ऐसा जो खालसा है, उसमें मेरे में और परमेश्वर में किंचित मात्र भी भेद नहीं, इसलिए मैंने कहा है—

खालसा, मेरो रूप है खास॥ खालसे महि हउं करउं निवास॥

ऐसा उत्तर सुनकर साधुओं ने एक और शंका की कि महाराज! आप जी के पावन श्री मुख से विवेकयुक्त वचन सुनकर, हमने समझ लिया है कि आप उस १ ओंकार के उपासक हो, जिसके गुरुनानक देव जी उपासक थे। आप उसी गद्दी पर ही सुशोभित हो, लेकिन आप जी ने 'गुरु स्तोत्र' में जो श्लोक (पौड़ी) उच्चारण किया है, उसमें सबसे पहले 'भगौती' शक्ति को नमस्कार की है। आपने लिखा है—**प्रथम भगउती सिमर कै गुरुनानक लई धियाइ**। यहाँ से शंका पैदा होती हे कि आप भगवती (देवी) के उपासक हो?

साधुओं की शंका सुनकर, हजूर मुस्कराकर बोले, संत जनो! आपने यह तो पढ़ लिया—**प्रथम भगउती सिमर कै गुरुनानक लई धियाइ** लेकिन यह क्यों नहीं पढ़ा—

बिनु करतार न क्रितम मानो॥

संत जनो! स्मरण रहे—गुरुनानक के घर का सिद्धान्त—'करतार' (कर्त्ता) की पूजा है, 'किरत' की नहीं। किरत मिथ्या है, करतार (कर्त्ता) सदैव सत्य है, जिसको गुरुनानक देव महाराज ने '**आदि सचु जुगादि सचु है भी सचु नानक होसी भी सचु**' कहा है।

जिस 'भगउती' को तुम देवी कहते हो, मैं उस 'भगउती' को नमस्कार नहीं करता, क्योंकि वह कर्त्ता पुरुष की क्रिया है। जिस 'भगउती' को मैंने सबसे पहले स्मरण किया है, उसके अर्थ तीसरे पातशाह गुरु अमरदास महाराज इस प्रकार करते हैं—

सो भगउती जो भगवंतै जाणै॥ गुर परसादी आपु पछाणै॥
धावतु राखै इकतु घरि आणै। जीवतु मरै हरि नामु वखाणै॥
ऐसा भगउती उतमु होइ॥ नानक सचि समावै सोइ॥

(सिरीराग वार, पृष्ठ ८८)

और पाँचवें गुरुनानक (अर्जुन देव) ने इस प्रकार व्याख्या की है—

भगउती भगवंत भगति का रंगु॥ सगल तिआगै दुसट का संगु॥
मन ते बिनसै सगला भरमु॥ करि पूजै सगल पारब्रहमु॥
साधसंगि पापा मलु खोवै॥ तिसु भगउती की मति ऊत्तम होवै॥
भगवंत की टहल करै नित नीति॥ मनु तनु अरपै बिसन परीति॥
हरि के चरन हिरदै बसावै॥ नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै॥

(ग: सुखमनी, पृष्ठ २७४)

हजूर के पावन मुख से ऐसा विवेकयुक्त उत्तर सुनकर संत-जन गद्-गद् हो गए। बोले महाराज! हमने अब भली भाँति समझ लिया है कि जिसको आदिगुरु साहिबान ने 'भगवती' कहा है उसको ही आप 'खालसा' तथा 'निर्मला' कह रहे हो अर्थात् एक ही वस्तु के तीन नाम हैं। भाव जिसने वाहिगुरु को जान लिया है, वही खालसा, निर्मला तथा 'भगउती' है। गुरुवाणी में भी हम पढ़ते हैं—

निरमल भेख अपार तासु बिनु अवरु न कोई॥
मन बच जिनि जाणिअउ भयउ तिह समसरि सोई॥

(सवईए, पृष्ठ १४०९)

इस प्रकार संत-जन शंका की निवृत्ति करके हजूर के पवित्र चरणों में नमस्कार कर, आज्ञा लेकर चले गए।

भाई गण्डा सिंह को सम्प्रदाय सौंपना

गुरु गोबिन्द सिंह महाराज जी की राज-सज्जा, युद्ध-कौशल, संगत की चहल-पहल और युद्ध-अभ्यास को देखकर, तत्कालीन सरकार बौखलाकर, व्यापक स्तर पर युद्ध आरम्भ करने की तैयारी करने लगी।

समय की नज़ाकत को समझकर कलगीधर पातशाह ने मुख्य शिष्यों को आज्ञा दी कि अपने-अपने कर्त्तव्यों को योग्य शिष्यों को सौंपकर शत्रु का मुकाबला करने के लिए युद्ध की तैयारी आरम्भ कर दो।

हजूर की ईश्वरीय आज्ञा को मानते हुए प्यारा भाई धर्म सिंह जी ने, गण्डा सिंह को बुलाकर वचन दिया, हे गुरुमुख! कलगीधर पिता की ओर से प्रदान की गई तुम्हारी अमानत मेरे पास संभाल कर रखी है, इसे वापिस करने का अब समय आ गया है, इस प्रकार कहकर भाई धर्म सिंह जी ने लंगर का उत्तरदायित्व और दशम पिता की ओर से प्रदान निर्मल भगवा वेश सहित, चिप्पी भाई गण्डा सिंह के आँचल में डाल दी। वचन किया कि हे गुरुमुख! जहाँ पहले विद्या-दान का क्षेत्र चला रहे थे आज से अन्न क्षेत्र की चाबियाँ भी संभालो। समीप खड़ा कोई शिष्य भाई गुरदास जी की पंक्ति पढ़ रहा है—

दिचै पूरब देवणा जिस की वसत तिसै घर आवै॥

भाई गण्डा सिंह जी ने सेवा, परोपकार, विद्या-शिक्षण और गूढ़ ग्रन्थों को भाषा में अनुवाद करने आदि की जो सेवा कलगीधर महाराज की ओर से सौंपी गई थी, अंतिम समय तक निभाई। अंततः शरीर का अंतिम समय जानकर सेवा का सारा उत्तरदायित्व भाई दरबारा सिंह जी को सौंप दिया। उसके बाद पीढ़ी दर पीढ़ी यह सम्प्रदाय चलता आ रहा है जिसका रेखाचित्र आगे दिया जा रहा है।

इस प्रकार कालातीत पुरुष वाहिगुरु ने, संसार के मोह-माया जनित दुःखों से सताये जीवों पर द्रवित होकर, गुरुनानक देव महाराज जी के रूप में आकर, मोह-माया तथा राजनीति की गंध से निर्लिप्त, केवल गुरुवाणी की महक से भरपूर, जिस निर्मल वृक्ष का रोपन किया था, जिसका मुख्य ध्येय मात्र ईश्वरीय गुरुवाणी के द्वारा मनुष्य जन्म को सार्थक और दूसरों को इसका मार्ग दिखाना है। ऐसे पवित्र वृक्ष को हरा-भरा और प्रफुल्लित रखने के लिए नौ शरीर धारण कर, समय-समय पर उसको पानी एवं खाद देकर सींचा और दसवें शरीर में सम्पूर्णता की कृपा की। वह निर्मल वृक्ष कालातीत पुरुष और श्री गुरु नानक देव महाराज और गुरु गोबिन्द सिंह जी की अपार कृपा के फलस्वरूप, आज भी समस्त संसार को परमेश्वर का रूप समझकर अपनी शीतल छाया, अमृत के समान मीठे फल और ईश्वरीय सुगंधि प्रदान कर रहा है, जिसका कार्य-क्षेत्र, भूखों को भोजन, जरूरतमंदों को वस्त्र, रोगियों को औषधि, अनपढ़ों को विद्या और मुमुक्षों को परमेश्वर के साथ ऐसे जोड़ देते हैं जैसे सागर से बिछड़ा जल, हज़ारों मीलों पर जा गिरता है फिर किसी सरिता की शरण लेकर सागर में इस प्रकार मिलता है—

जिउ जल महि जलु आइ खटाना॥
तिउ जोती संगि जोत समाना॥
मिटि गए गवन पाए बिस्राम॥
नानक प्रभ कै सद कुरबान॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २७८)

निर्मल सम्प्रदाय का उत्स

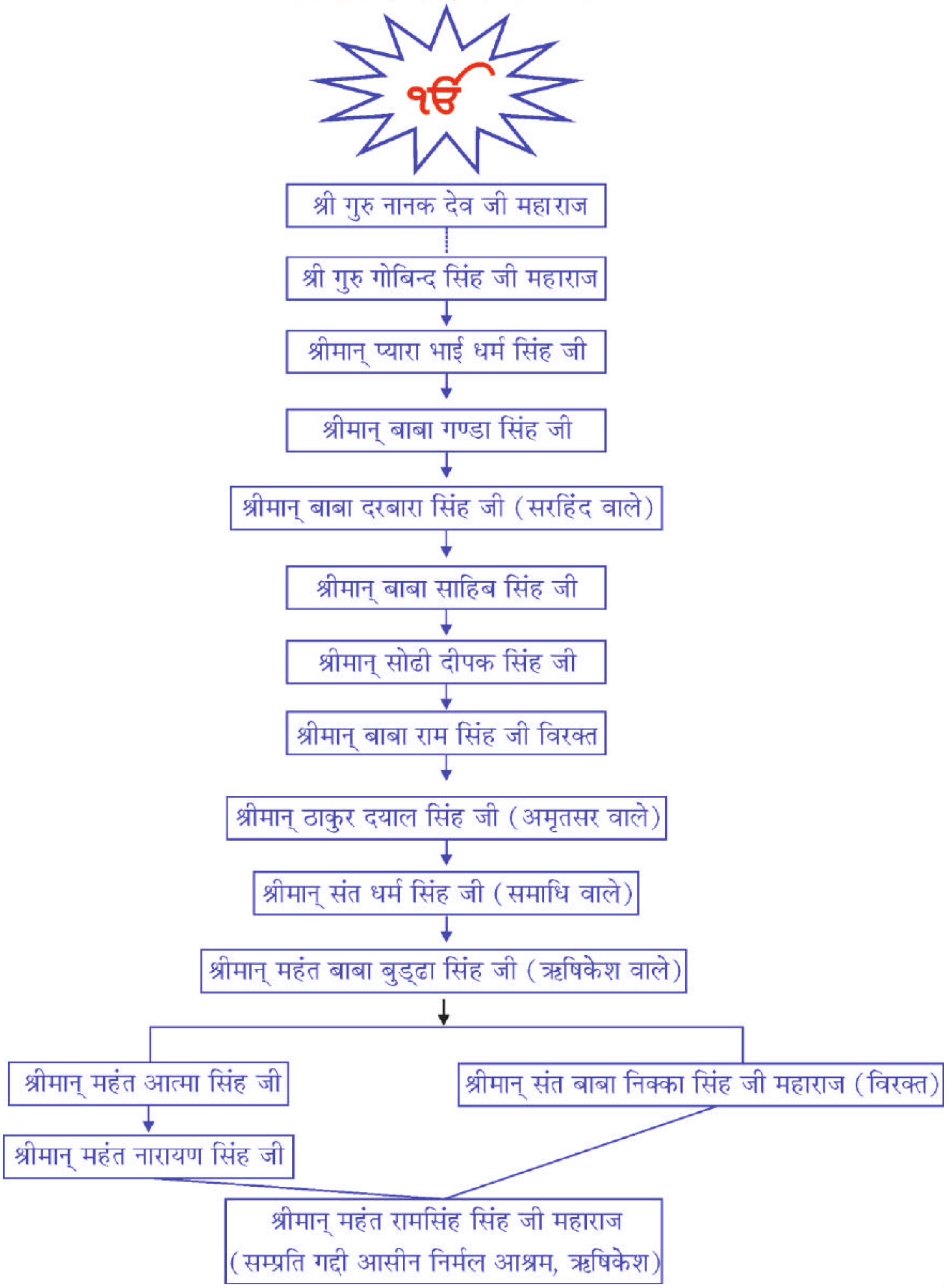

महन्त

बुड्ढा सिंह जी

महाराज

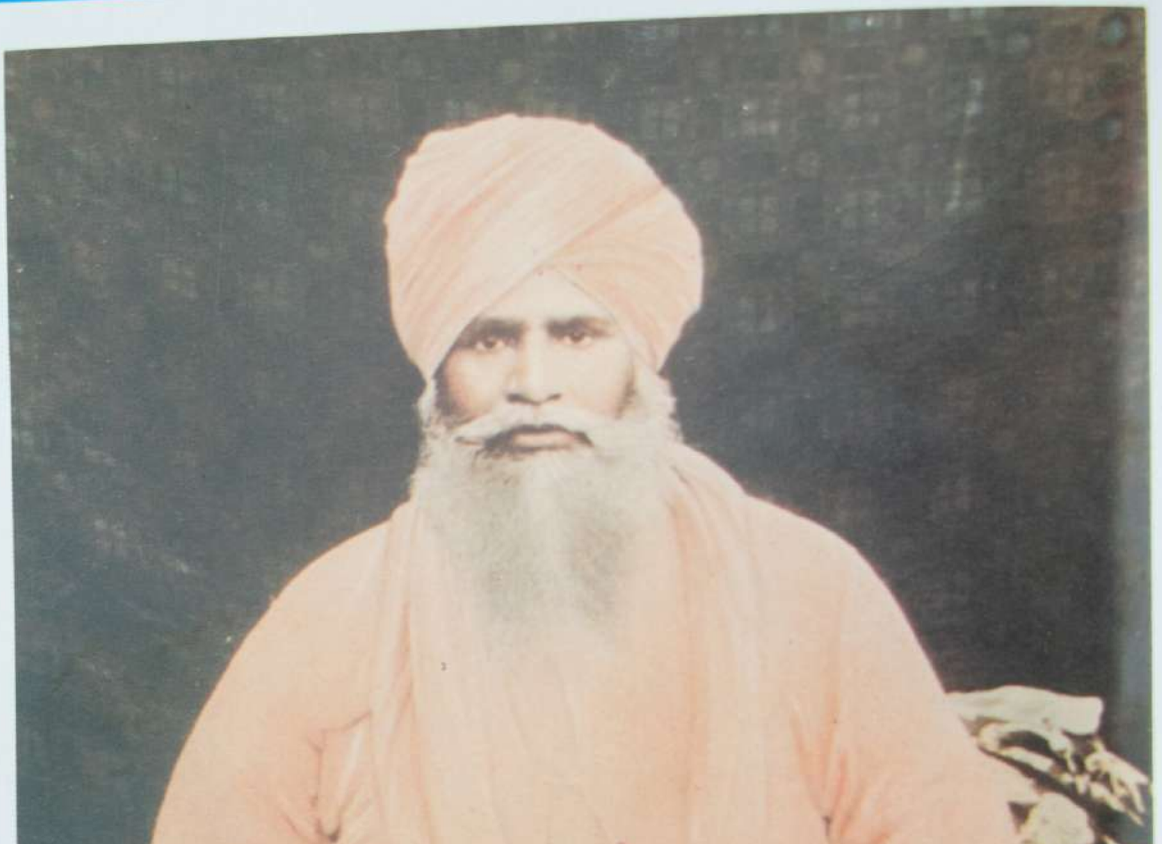

श्रीमान् महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज
(संस्थापक निर्मल आश्रम ऋषिकेश)

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि॥

2 अध्याय महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज

जीवन चरित्र श्रीमान् १०८ महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज

हरे-भरे लहलहाते सम्पन्न पंजाब की पाँच नदियों के मध्य; मतवाली रावी, बल खाती, लेकिन निरंतर दिन-रात अपने स्वामी ऐरावत की ओर प्रवाहमान है, चाहे उछलती, कूदती अथवा धीरे-धीरे चलती, लेकिन प्रत्येक क्षण, प्रत्येक पल, अपने स्वामी के साथ अभेद होने के लिए प्रयत्नशील है, जैसे कोई संसार से विरक्त योगी, कभी वियोग के दु:ख में दु:खी होता, कभी इसमें मग्न होकर हँसता, अपने आपको गँवाकर भी, अपने प्रीतम के देश पहुँचने के लिए तत्पर हो।

इस भाग्यशाली रावी नदी के पार पश्चिम की ओर ऐतिहासिक नगर सियालकोट से पूर्व दिशा की ओर एक अत्यन्त भाग्यशाली नगर आबाद है—'हल्लोवाल'। यहाँ के निवासियों का मुख्य पेशा खेतीबाड़ी है। इनकी सम्पन्नता का मुख्य कारण धरती का सम और उपजाऊ होना है। सियालकोट नगर एवं ज़िला समीप होने के कारण, प्राय: लोग कामकाज हेतु इसी नगर में जाते थे। गुरदासपुर थोड़ा दूर होने के कारण, किसी विशेष कार्य के लिए ही जाते। इस घनी आबादी वाले गाँव में सरदार हरि सिंह नामक एक सज्जन व्यक्ति निवास करते हैं। यह व्यक्ति गुरुवाणी प्रेमी, संयमी, विचारवान्, संत-सेवी और उच्च आचरण वाला होने के कारण सारे क्षेत्र में प्रसिद्ध है। इस सज्जन व्यक्ति के शुभ-गुणों की सुगंधि केवल गाँव अथवा क्षेत्र में ही सीमित नहीं रही अपितु राज दरबार लाहौर तक भी पहुँच गई। महाराजा रणजीत सिंह के राजकुमार महाराजा शेर सिंह ने उस सज्जन व्यक्ति के शुभ-गुणों से प्रभावित होकर 'मटोआ-के-कोट' ग्राम में भारी जागीर प्रदान की।

सरदार हरि सिंह के एक होनहार सुपुत्र हैं जिसका नाम है प्रताप सिंह। प्रताप सिंह बाल्यकाल से ही धार्मिक विचारों को धारण करने वाले, संत-सेवी और बंधनों से मुक्त रहने के लिए चेष्टारत हैं। जब आप युवक हुए, पिता सरदार हरि सिंह जी गुरुपुरी प्रयाण कर गए अर्थात् उनका देहावसान हो गया। अब समस्त सांसारिक जिम्मेवारी प्रताप सिंह जी पर आ पड़ी। आप जी ने अपने त्यागी स्वभाव के अनुरूप 'मटोआ-के-कोट' वाली ज़मीन में साधुओं के निवास हेतु एक कुटिया का निर्माण किया और वहाँ की आय के साथ यात्री साधु महात्माओं के लिए लंगर का प्रबन्ध भी कर दिया। आप अपना जीवन-यापन हल्लोवाल वाली ज़मीन से ही करते रहे। इस प्रकार समय गुज़रता गया। एक दिन माता जी ने प्रताप सिंह को समीप बिठाकर कहा कि हे पुत्र! मैं अब वृद्धा हो गई हूँ, घर का काम धंधा, खान-पान आदि भी कठिन होता जा रहा है, इसलिए तुम मेरा वचन मानकर विवाह कर लो। कोई योग्य लड़की आ गई तो वह साथ ही घर का काम-काज भी देखेगी, मुझे भी कुछ आराम हो जाएगा साथ में तुम्हारा पितृवंश भी आगे बढ़ेगा। प्रताप सिंह ने माँ की बात बड़े ध्यानपूर्वक सुनी। कहने लगा हे माँ! मैं गृहस्थ के बंधनों में नहीं पड़ना चाहता, लेकिन तुम्हारा वचन भी मोड़ नहीं सकता। यदि तुम चाहती हो कि मैं गृहस्थी बनूँ तो मैं इन्कार भी नहीं कर सकता। पुत्र का वचन सुनकर माँ बहुत प्रसन्न हुई। माँ ने अपने सगे-सम्बन्धियों को कहला भेजा कि प्रताप सिंह विवाह के लिए मान गया है। यदि किसी भले परिवार की लड़की मिल सके, तो विवाह सम्पन्न करवा दें।

सैणा सिंह जी

एक दिन का वृत्तान्त है कि श्री गुरु रामदास महाराज जी ने अपने छोटे राजकुमार को पास बिठाकर यह वचन कहा अर्जुन देव! गुरु अमरदास महाराज जी ने हमें जो आयु प्रदान की थी, वह अब पूरी हो गई है। गुरुनानक देव जी महाराज की गुरुआई की भारी गठरी, ईश्वरीय आदेशानुसार अब तुम्हारे शीश पर रखी जानी है, इसलिए तुम्हें जहाँ गुरुनानक देव महाराज के प्रेमाभक्ति के निर्मल मार्ग को आगे ले जाना है, वहाँ चार अन्य कार्य भी करने हैं।

ये चार कार्य कौन से हैं?

1. अमृत सरोवर में हरि मंदिर की स्थापना।
2. दिल्ली-लाहौर राजमार्ग पर दीन-दु:खियों के कष्ट निवारण हेतु तरनतारन नगर का निर्माण।
3. दुआबे में करतारपुर नगर का निर्माण।
4. चतुर्थ जो अत्यन्त आवश्यक कार्य है, वह है पूर्व गुरुओं की वाणी को एकत्रित करके ग्रन्थ के रूप में स्थापित करना, क्योंकि संसार की कोई वस्तु स्थिर नहीं है, सिवाये साधु-वचनों के।

अत: समय आने पर श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी ने गुरु-पिता की आज्ञानुसार श्री अमृतसर से दक्षिण दिशा की ओर कुछ मीलों की दूरी पर 'तरनतारन' नगर की स्थापना की। समय आने पर इस पवित्र नगर में धर्मशाला की स्थापना हो गई। प्रतिदिन कीर्तन, कथा और सत्संग में ईश्वरीय वाणी की अमृत-वर्षा होने लगी। बहुत प्रेमी प्रात:-सायं दरबार साहिब पहुँचकर, गुरुवाणी के अमूल्य विचारों द्वारा अपना जीवन सफल करने लगे।

एक प्रेमी जिसका शुभ नाम सरदार सैणा सिंह है, वह प्रतिदिन कथा कीर्तन सत्संग में पहुँचकर लाभ उठाता है। सैणा सिंह परिवार से समृद्ध एक शक्तिशाली ज़मींदार है। दैवयोग से एक दिन गुरुद्वारे गया, वहाँ कथा हो रही थी—

कबीर धरती साध की तसकर बैसहि गाहि॥
धरती भारि बिआपई उन कउ लाहू लाहि॥

(श्लोक कबीर जी, पृष्ठ १३७५)

इस शब्द की व्याख्या ध्यानमग्न होकर सुनी, सुनकर मन में विचार किया, समस्त गुरुवाणी साधुओं की महिमागान कर रही है। मैं अहंकार में इस ज़मीन को निजी समझता रहा, लेकिन आज पता चला कि यह तो भगवद् भजन करने वालों की है, परमेश्वर कृपा करे कि कोई ऐसा सिद्धपुरुष मिल जाए, जो इसमें बैठकर अपने पवित्र मुख से अमृत-वचनों द्वारा प्रवाह चलाता रहे, फलस्वरूप यह धरती भी सफल हो जाए और सपरिवार सहित मुझे सेवा करने का समय मिलता रहे। ऐसा करके मैं अपने को सौभाग्यशाली समझूँगा।

इन दिनों ठाकुर दयाल सिंह जी अमृतसर वाले किसी श्रद्धालु की प्रार्थना स्वीकार करके तरनतारन आए। उनके आने का समाचार सैणा सिंह को भी मिला। दर्शनार्थ गया, आध्यात्मिक विचार सुने, मन को शीतलता मिली। सत्संग की समाप्ति पर प्रार्थना की, महाराज! आपके पवित्र चरण कमलों में एक प्रार्थना करनी है, यदि आज्ञा हो तो करूँ? महाराज ने आज्ञा दी कि हर्षपूर्वक करो। आज्ञा होने पर सैणा सिंह ने करबद्ध प्रार्थना की, महाराज! आपकी कृपा से मन में एक शुभ संकल्प उठा है कि आप द्वारा प्रदत्त ज़मीन में आपके लिए एक कुटिया का निर्माण किया जाए। समय-समय पर उसमें आपके पवित्र चरण पड़ते रहेंगे और नगर एवं क्षेत्र की संगत दर्शन उपदेश का लाभ उठाती रहेगी और आए अतिथि साधुओं के लिए लंगर आदि का प्रबन्ध हो जाएगा। आप कृपा करके प्रार्थना स्वीकार करो। सैणा सिंह की प्रार्थना को महापुरुषों ने बहुत ध्यानपूर्वक सुना,

सुनकर नेत्र बंद कर लिए—ऐसा लग रहा था जैसे किसी गहन विचार में मग्न हो भविष्य को देख रहे हों। थोड़े समय पश्चात् कमल-नेत्र खोले, मन्द-मन्द मुस्कान के साथ फ़रमाया—हे प्रेमी—जैसी तुम्हारी इच्छा।

महापुरुषों के पवित्र मुख से निकले 'स्वीकार के वचन' सुनकर सैणा सिंह अत्यन्त हर्षित हुआ। घर जाकर प्रसन्नतापूर्वक परिवार के अन्य सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया। समस्त परिवार बहुत प्रसन्न हुआ। कुछ समय पश्चात् सैणा सिंह श्री अमृतसर महापुरुषों के दर्शनार्थ गया। कुछ पत्र आदि श्री चरणों में रखकर नमस्कार की। महापुरुषों ने पूछा कि यह क्या है? सैणा सिंह ने दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि ग़रीब निवाज़! आप द्वारा प्रदत्त ज़मीन में से 35 बीघे ज़मीन, दो कूएँ और बाज़ार में 6 दुकानें आप जी के नाम लगवाई हैं।

महापुरुष—किस लिए?

सैणा सिंह—महाराज, आप जी की आज्ञानुसार कुटिया के लिए।

महापुरुष—कुटिया के लिए तो कुछ मरले ही पर्याप्त थे।

सैणा सिंह—महाराज! शेष ज़मीन एवं दुकानों की आमदनी से लंगर चलता रहेगा, आप कृपा करके तरनतारन की संगत को दर्शन देने की कृपा करें।

साथ ही कुछ योग्य-स्थल को चुनकर, अपने पवित्र कर-कमलों से कुटिया की नींव रखें। महापुरुष सैणा सिंह की प्रार्थना स्वीकार करके तरनतारन पहुँचे। ज़मीन देखकर आज्ञा दी कि इस स्थल पर कुटिया बनाओ। आप कुछ दिन तरनतारन ठहरकर संगत को सत् उपदेश करते हुए वापिस श्री अमृतसर आ गए। उधर सैणा सिंह और समस्त संगत ने मिलकर कुटिया की सेवा की।

कुटिया तैयार होने के पश्चात् संगत की प्रार्थना स्वीकार करके महापुरुष तरनतारन जाकर कुटिया में ठहरते, गुरुवाणी द्वारा सत्संग का प्रवाह चलता रहता। नगर और क्षेत्र की संगत खूब लाभान्वित होती। गुरु का लंगर सदैव चलता रहता जिसमें अधिक योगदान सपरिवार सैणा सिंह करते। सैणा सिंह की एक युवती पुत्री जिसका नाम शान्ति देवी (सन्तो) था बहुत प्रेम के साथ सेवा करती। झाड़ू देना, जूठे बर्तन मांजना, लंगर तैयार करना और समय मिलने पर सत्संग का लाभ भी उठाती। जितना समय महापुरुष तरनतारन ठहरते, सन्तो नियम के साथ सेवा करती रहती। कभी-कभी पिता के साथ श्री अमृतसर जाकर दर्शन-लाभ और सेवा-लाभ प्राप्त होता रहता। महापुरुषों ने भी इस परिवार पर असीम कृपा की वर्षा की।

एक दिन सैणा सिंह ने महापुरुषों के श्री चरणों में प्रार्थना की कि महाराज! सन्तो के लिए एक युवक देखा है, परिवार भी खानदानी है, यदि आपकी आज्ञा हो तो रिश्ता पक्का कर दें।

महापुरुष—कहाँ है?

सैणा सिंह—जी सियालकोट ज़िले में गाँव है—हल्लोवाल, संत-सेवी परिवार है, युवक भी कुछ साधु-विचारों वाला प्रतीत होता है।

महापुरुष कुछ समय के मौन के अनन्तर बोले, ठीक है। समय आने पर संयोग अपने आप जाकर मिल जाते हैं। सैणा सिंह ने लड़के वाले परिवार के साथ बात चलाई—रिश्ता पक्का हो गया। कुछ समय पश्चात् प्रताप सिंह और शान्ति देवी का विवाह कर दिया गया।

---

* *इस ज़मीन में ठाकुर दयाल सिंह के बाद गद्दी नशीन हुए ठाकुर गुलाब सिंह और संत कर्म सिंह जी समाधि वालों की समाधि बनी हुई हैं। उनके बिल्कुल समीप ही सैणा सिंह की समाधि बनी हुई है।*

प्रताप सिंह हल्लोवाल

विवाह के पश्चात् प्रताप सिंह और शान्ति देवी सुखपूर्वक रहने लगे। वृद्धा माँ की सेवा करते, नियम के साथ 'नितनेम' (नित्य-नियम) चलता और प्रत्येक मास में एक बार अमृतसर अवश्य जाते। श्री हरिमंदिर साहिब के दर्शन और स्नान के पश्चात् ठाकुर संत दयाल सिंह जी के डेरे चले जाते। महापुरुषों से पावन उपदेश रूपी अमृत का पान करते, लंगर में सेवा करते। कभी उसी दिन, कभी एक रात्रि विश्राम के अनन्तर घर वापिस आ जाते। इस प्रकार गुरुवाणी का पाठ, सत्संग, सेवा द्वारा जीवन व्यतीत करते-करते समय व्यतीत होता गया, लेकिन घर में कोई सन्तान न हुई।

माताओं की पुत्र-लालसा बनी रहती है, इसलिए एक दिन शान्ति देवी ने प्रताप सिंह को कहा—कि मेरे मन में एक संकल्प बार-बार उठ रहा है कि घर में दीपक प्रज्वलित हो। यदि आप सहमत हों तो ठाकुर जी के श्री चरणों में पुत्र के लिए प्रार्थना करें। प्रताप सिंह ने कहा कि महापुरुषों के पास जाकर विनाशी पदार्थों की माँग उचित नहीं है। यदि माँगना ही है तो नाम जैसी अविनाशी वस्तु की माँग करें जिसको पाकर दोनों लोक-परलोक सफल हो जाए, परन्तु शान्ति देवी की प्रबल पुत्र-भावना देखकर प्रताप सिंह कहने लगे—यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो चलो ठाकुर जी के श्री चरणों में प्रार्थना करें। अमृत-समय दोनों श्री अमृतसर को चल पड़े। दरबार साहिब श्री हरिमंदिर साहब के दर्शन स्नान करके डेरा ठाकुरां पहुँचे। आगे ठाकुर संत दयाल सिंह जी अपने आसन पर विराजमान समीप बैठी संगत को इस शब्द द्वारा उपदेश कर रहे थे।

जिह कुलि पूतु न गिआन बीचारी॥ बिधवा कस न भई महतारी॥

(ग: कबीर जी, पृष्ठ ३२८)

जिस कुल में कोई ज्ञान-विचार वाला पुत्र पैदा नहीं हुआ, वह माँ पहले ही विधवा क्यों न हो गई।

जिह नर राम भगति नहि साधी॥ जनमत कस न मुउ अपराधी॥

(ग: कबीर जी, पृष्ठ ३२८)

जिसने मनुष्य शरीर धारण करके परमेश्वर की भक्ति साधना नहीं की, वह जन्म लेते ही क्यों न मर गया, उसने बड़ा अपराध किया है। इस प्रकार परमेश्वर से विमुख जीवों को कबीर जी ताड़ना देते हुए कह रहे हैं। दूसरी ओर जिन माताओं ने अपने पुत्र को भक्ति की ओर लगाया, गुरुवाणी उनका यशगान कर रही है। वे माताएँ धन्य हैं—देखो बाबा फ़रीद जी किस प्रकार यशगान कर रहे हैं—

आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से॥
तिन धंनु जणेदी माउ आए सफलु से॥

(आसा शेख फ़रीद जी, पृष्ठ ४८८)

अत: हे प्रेमी जनो! मनुष्य शरीर हरि यशगान के लिए प्राप्त हुआ है। माताओं को चाहिए कि अपना कार्य करती हुई, खाना-पकाना आदि काम करते हुए हरि को कभी मन से न भुलाएँ और अपने पुत्रों को भी यही शिक्षा दें, तभी लोक-परलोक दोनों में यश की प्राप्ति होगी। संगत में बैठे प्रताप सिंह और शान्ति देवी भी इन विचारों को बहुत ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। उपदेश से दोनों अत्यन्त प्रभावित हुए। सोचने लगे कि पुत्र हो तो ऐसा, जिसके मुख से ठाकुर जी के समान अमृत की वर्षा हो, हमारे कुल को रोशन करे, आप मुक्त हो और साथ ही कुल का भी उद्धार करे।

सत्संग की समाप्ति पर महापुरुषों के चरणों में नमस्कार की। ठाकुर जी ने भी कुशल क्षेम पूछी और आज्ञा दी—जाओ लंगर में से कुछ ग्रहण कर लो। आज्ञानुसार लंगर में गए, इच्छानुसार जलपान ग्रहण किया और बर्तन-माँजने आदि की कुछ सेवा की। फिर महापुरुषों के चरणों में करबद्ध खड़े हो गए। प्रार्थना की, जीव हैं, अत: कामनाओं से भरपूर हैं—आपकी कृपा हो जाए तो मन में नाम बस जाए तो सभी कामनाओं का नाश हो। जीवन सफल हो जाए। आज भी एक कामना को लेकर आपके चरणों मे आए हैं, पर्याप्त समय से पुत्र-प्राप्ति का संकल्प मन में बार-बार उठ रहा है। यत्न करने के बावजूद भी शान्त नहीं हो रहा। आप कृपा करें, यह संकल्प पूर्ण हो। महापुरुष सुनकर मुस्कराते हुए बोले—जैसे पुत्र की आप इच्छा रखते हो ऐसे पुत्रों के खज़ाने की चाबियाँ तो गुरु अर्जुन देव महाराज, बाबा बुड्ढा सिंह जी को सौंप गए हैं। इतना संकेत देकर आप भीतर चले गए।

महापुरुषों के भीतर चले जाने के पश्चात् प्रताप सिंह और शान्ति देवी पुत्र-प्राप्ति का स्पष्ट वरदान न समझकर चिंता में डूब गए। सोच रहे हैं कि दोबारा प्रार्थना करें या फिर किसी दिन आएँ। यह सोच ही रहे थे कि इतने में संत गुलाब सिंह जी आ गए। उनको नमस्कार करने के उपरांत संत जी ने उदासी का कारण पूछा। प्रताप सिंह ने सारी बातचीत सुनाई। सुनकर संत गुलाब सिंह जी बोले—महाराज तो आपको स्पष्ट वरदान दे गए हैं वे सत्यवादी हैं, उनका वचन व्यर्थ नहीं जाता। साधु संकेत करता है, भेद नहीं देता। साधु के वचनों को समझना बड़ा कठिन है, महाराज जी का संकेत समझो, श्री दरबार साहिब, बाबा बुड्ढा जी की बेरी के नीचे खड़े होकर गुरुनानक के चरणों का ध्यान करके अरदास करो, परमेश्वर भली करेंगे।

संत गुलाब सिंह जी के मुख से स्पष्ट संकेत सुनकर कुछ आशा की किरण दिखाई दी। नमस्कार करके दोनों हरिमंदिर साहिब पहुँच गए। अमृत-सरोवर में स्नान कर बाबे बुड्ढे की बेरी के नीचे खड़े होकर दोनों ने एक मन से अरदास की—हे बाबा बुड्ढा जी! ऐसे पुत्र की कृपा करो, जो कुल का उद्धार करे। आपकी प्रदत्त दात स्वयं ठाकुर जी के चरणों में अर्पण कर देंगे। इसके पश्चात् कड़ाह प्रसाद लेकर हरिमंदिर साहिब नमस्कार करके घर वापिस आ गए।

जन्म

गुरुनानक ने कृपा की, कुछ समय व्यतीत होने के पश्चात् बालक की आशा हुई। माता जी ने कभी सत्संग में ठाकुर जी के पवित्र मुख से सुना था कि जिस समय बच्चा माँ के गर्भ में हो, तो माँ को चाहिए—अपना अधिक समय भगवद्भजन में व्यतीत करे। यदि माँ बच्चे को संत बनाना चाहती है तो गुरुवाणी का पठन-भजन करती रहे, संत महापुरुषों की शिक्षाप्रद कहानियाँ (साखियाँ) सुनती-पढ़ती रहे और महापुरुषों के चित्रों के एकाग्र होकर दर्शन करती रहे। यदि माँ बच्चे को दानवीर बनाना चाहती है तो राजा हरिचंद जैसे अथवा दानवीर कर्ण जैसे व्यक्तियों की कहानियाँ सुने और दान करती रहे, लेकिन यदि वह चाहती है कि वह धर्मवीर बने, तो शूरवीरों की कहानियाँ सुने, शूरवीरों के चित्रों के दर्शन करे। गर्भ के समय माँ के विचारों का बच्चे पर बहुत प्रभाव पड़ता है। यदि माँ सत्संग से दूर है और झूठ, ईर्ष्या, निंदा-चुगली, काम-क्रोध आदि अशुभ गुणों में व्यतीत करती है तो अवश्य ही नरक के कृमि को जन्म देगी, इसमें कोई संशय नहीं है।

इन विचारों का माता शान्ति देवी के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा था इसलिए वह सदैव अपने मन को गुरुवाणी के पाठ-विचार और गुरु-भक्तों के चित्रों में स्थिर रखती थी। इस प्रकार समय व्यतीत होता गया, अन्ततः प्रतीक्षा के उपरांत, वह शुभ क्षण आ गया, जब एक पर-उपकारी और भाग्यशाली महापुरुष ने एक बालक के रूप में इस नश्वर-संसार में पहला शुभ कदम (अर्थात् जन्म) रखा। यह बात लगभग 1861 ई० * की है।

जब बालक कुछ दिनों का हुआ तो माता-पिता बालक को लेकर अमृतसर श्री हरिमंदिर साहिब पहुँचे। कड़ाह प्रसाद भेंट लेकर दरबार साहिब नमस्कार कर, बाबा बुड्ढा जी का धन्यवाद करके ठाकुरां के डेरे पहुँच गए।

उस समय गद्दी नशीन ठाकुर संत गुलाब सिंह जी के चरणों में नमस्कार की और बालक को उनके चरणों में लिटाया। संत महाराज जी ने बच्चे को आशीर्वाद दिया और बहुत गहन दृष्टि से देखा। माता-पिता ने प्रार्थना की महाराज कृपा करो और अपनी पवित्र वाणी से बालक का नामकरण करो। महापुरुष कहने लगे कि हे भाई? बाबा बुड्ढा जी की कृपा है इसलिए नाम बुड्ढा ही उपयुक्त है। माता-पिता बहुत प्रसन्न हुए, अन्ततः महापुरुषों से आशीर्वाद प्राप्त करके आ गए।

बड़े प्रेम के साथ बालक का लालन-पालन आरम्भ हुआ। कभी अमृतसर, कभी तरनतारन, महापुरुषों के श्री चरणों में पहुँचते, एक-दो दिन ठहरकर सेवा-सत्संग करते, फिर वापिस घर आ जाते। इस प्रकार सुखपूर्वक समय व्यतीत होता गया। माता-पिता एक दिन विचार करने लगे कि हमने बाबा बुड्ढा जी के चरणों में प्रार्थना की थी यदि पुत्र-प्राप्ति का वरदान हो तो उसे ठाकुर जी के चरणों में सौंप देंगे। अतः बुड्ढा सिंह की आयु भी अब पाँच वर्ष हो गई है, इसलिए जिसकी थाती (अमानत) है उसको सौंप दी जाए। यह सोचकर एक दिन शिशु बुड्ढा सिंह को साथ लेकर अमृतसर पहुँचे। महापुरुषों को नमस्कार करके प्रार्थना की कि हे महाराज! बुड्ढा सिंह आप जी की ही अमानत है—इसे स्वीकार करो। संत गुलाब सिंह जी ने मुस्कराकर बालक बुड्ढा सिंह को प्रेम सहित अपने पास बिठाया। इतनी देर में संत धर्म सिंह जी समाधि वाले आ गए। ठाकुर गुलाब सिंह जी कहने लगे यह योग्य बालक गुरुओं की अमानत है, इसको आप अपना संरक्षण दो, अपना शिष्य बनाओ, परमेश्वर की आज्ञा कुछ ऐसी ही लग रही है। संत धर्म सिंह जी ने प्रताप सिंह को कहा कि इसकी आयु अभी छोटी है, आप इसको घर ले जाओ, हमारी अमानत समझकर, प्रेम सहित पालन-पोषण करते रहो। जब यह दस वर्ष का हो जाए फिर इसे यहाँ ले आना। वचन मानकर माता-पिता बुड्ढा सिंह को साथ लेकर घर आ गए। उस योग्य बालक को ईश्वरीय थाती (अमानत) समझकर बहुत प्रेम के साथ पालन-पोषण करने लगे।

संत धर्म जी समाधि वाले

संत ठाकुर दयाल सिंह जी के अनेक शिष्यों में एक परम-शिष्य संत धर्म सिंह जी समाधि वाले हुए हैं। आप बीस वर्ष की आयु में ठाकुर जी की शरण में आए। महापुरुषों की ऊँची अवस्था देखकर ऐसे प्रसन्न हुए कि स्वयं को उनके श्री चरणों में समर्पित कर दिया। ठाकुर जी की सेवा को एक ईश्वरीय सेवा मानकर सेवा में इस प्रकार लीन हुए कि अपने आपको भी भुला दिया। भावना के साथ की सेवा पर प्रसन्न होकर ठाकुर जी ने भी कृपा के ख़ज़ाने खोल दिए, हृदय में नाम निवसित हुआ, संसार से विरक्त हुए, चौबीस घंटे उन्मनी अवस्था में विचरण करने लगे। ऐसी अवस्था देखकर ठाकुर जी ने प्रेम सहित

* *कई स्थानों पर जन्म-तिथि सम्बन्धी मतभेद हैं, लेकिन गहन शोध के आधार पर 1861 ई० ही सही लगता है। इस समय ठाकुर दयाल सिंह जी ब्रह्मलीन हो गये थे और अपनी गद्दी पर संत गुलाब सिंह को स्थापित कर गए थे।*

'समाधि वाले' नाम रख दिया। इस प्रकार अपने गुरुओं की सेवा और सिमरन ही जीवन का आधार बन गया। गुरु नानक के घर में ध्येय प्राप्ति का यही एक सरल और गतिशील उपाय है, 'टू टायर स्लीपर' अर्थात् सेवा और सिमरन, लेकिन यह किसी भाग्यशाली पुरुष को ही प्राप्त होता है। मनुष्य शरीर प्राप्ति का यह एक लक्ष्य है।

गुर सेवा ते भगति कमाई॥ तब इह मानस देही पाई॥
इस देही कउ सिमरहि देव॥ सो देही भजु हरि की सेव॥
भजहु गोबिंद भूलि मत जाहु॥ मानस जनम का एही लाहु॥

(भैरउ कबीर जी, पृष्ठ ११५९)

बाबा बुड्ढा सिंह जी

जिस समय इस योग्य बालक की आयु दस वर्ष की हुई तो माता-पिता अपने वचनानुसार बालक बुड्ढा सिंह जी को संत धर्म सिंह समाधि वाले के चरणों में ले गए। प्रार्थना की, अपनी अमानत संभालो। बाबा जी ने बालक को प्यार देकर, सिर पर हाथ फेरा, थोड़ी बहुत सेवा-सौंपकर अध्ययनार्थ बिठा दिया। आपकी आयु चाहे छोटी थी, लेकिन पूर्व भक्ति के संस्कार इतने प्रबल थे कि बुद्धि परमार्थ के प्रत्येक रहस्य को समझने के योग्य थी। इस प्रकार आपने पूरे लगन के साथ पढ़ना आरम्भ कर दिया। 'गुरुमुखी' लिपि शिक्षण के पश्चात् गुरु घर की विद्या अर्थात् गुरुवाणी और गुरु-इतिहास का अध्ययन आरम्भ किया। समय-समय पर लंगर की अथवा अपने गुरुदेव की सेवा का लाभ लेते रहते। इस प्रकार सेवा और विद्या रूपी दो पहियों वाली गाड़ी पर सवार होकर, आत्म देश पहुँचने के लिए यात्रा आरम्भ कर दी। यह दुपहिया गाड़ी समय-समय पर यात्रा करती, बाल्यकाल एवं किशोर अवस्था के छोटे-छोटे स्टेशनों से गुज़रती यौवन के जंक्शन पर जा पहुँची अर्थात् सेवा-सिमरन और गुरु घर की विद्या का अध्ययन करते बारह वर्ष की हो गई। यौवन की आयु का जंक्शन एक ऐसा पड़ाव है जहाँ से अनेक टेढ़ी-मेढ़ी लाइनें निकलती हैं, लेकिन आप आम यात्रियों की भाँति बुद्धिहीन नहीं, आप जानते हैं 'बेगमपुरे' नगर पहुँचने के लिए कितने नश्वर प्लेटफार्म से गाड़ी चलती है। अब आपके मन में इच्छा उत्पन्न हुई—**मन समझावन कारने कछूअक पड़ीऐ गिआन** के महावाक् अनुसार संस्कृत-विद्या का ज्ञान प्राप्त किया जाए। अत: एक दिन उचित अवसर जानकर, अपना संकल्प, अपने गुरुदेव बाबा धर्म सिंह जी के सम्मुख रखा। बाबा जी पहले ही जानते थे कि जितनी बड़ी दुकान खोलनी है, उसमें सामान भी उतना ही चाहिए, ताकि दुकान पर आया कोई ग्राहक खाली न जाए।

अत: बाबा धर्म सिंह जी ने भविष्य को ध्यान में रखकर आपको काशी जाकर विद्या प्राप्त करने हेतु आज्ञा दे दी। आप आज्ञा और आशीर्वाद प्राप्त करके काशी पहुँच गए। यहाँ पहुँचकर आपने विद्या अध्ययन आरम्भ कर दिया। यहीं आपका पंडित उद्धव सिंह जी से पहला मिलाप भी हुआ।*

अब आपने पूरे लगन से संस्कृत का अध्ययन आरम्भ किया। समय मिलने पर कभी-कभी पंडित उद्धव सिंह जी से मिलकर आत्म-चर्चा करते रहते। इस प्रकार समय का लाभ उठाते हुए दो वर्ष व्यतीत हो गए। इस थोड़े समय में आपने संस्कृत का अच्छा-खासा ज्ञान प्राप्त कर लिया। अब शरीर की प्रारब्ध ने अन्य खेल खेलना आरम्भ किया। काशी का

---

* *पंडित उद्धव सिंह जी उस समय के महान् विद्वान पंडित थे जो बाद में निर्मल पंचायती अखाड़ा कनखल (हरिद्वार) के श्री महंत बने। आपने ही बाबा बुड्ढा सिंह जी को 1897 ई० में दल (रंमत) का अध्यक्ष मनोनीत किया।*

जल अनुकूल न आने के कारण शरीर कुछ अस्वस्थ रहने लगा। आप समझ गए कि कालातीत पुरुष (अकाल पुरखु) ने अब कोई अन्य कार्य करवाना है। इस बात को समझते हुए आप वापिस श्री अमृतसर आकर महापुरुषों की सेवा में तत्पर हो गए। दिन-रात कई वर्ष महापुरुषों की इतनी सेवा की कि मन दर्पण की भाँति निर्मल हो गया। बस समस्त प्रयत्न उस मन को निर्मल करने के लिए ही तो हैं? अन्यथा परमेश्वर तो अपने हाथ-पाँवों से भी निकट है। परमेश्वर-प्राप्ति के लिए मन की निर्मलता के अतिरिक्त अन्य कोई कर्म सहायक भी नहीं होता। प्राचीन समय में साधक, मन को निर्मल बनाने हेतु प्राणायाम जैसी कठोर साधना करते-करते हज़ारों वर्ष व्यतीत कर देते थे, लेकिन फिर भी कहीं न कहीं कोई कमी रह जाया करती थी। वर्तमान समय में जबकि आयु थोड़ी, मन-मस्तिष्क निर्बल और मन्द बुद्धि होने के कारण शरीर ऐसी कठोर साधना करने में समर्थ नहीं है। इस समय तो गुरुनानक के घर में—

गुर पूरे की चाकरी बिरथा जाइ न कोइ॥ रहाउ॥
मन कीआ इछां पूरीआ पाइआ नामु निधानु॥
अंतरजामी सदा संगि करणैहार पछानु॥

(सिरीरागु महला ५, पृष्ठ ४६)

यथा— **गुर पूरे की चाकरी थिरु कंधु सबाइआ॥**
नानक बखसि मिलाइअनु हरि नामि समाइआ॥

(पृष्ठ १२५०)

यथा— **गुर पीरां की चाकरी महां करड़ी सुख सारु॥**
नदरि करे जिसु आपणी तिसु लाए हेत पिआरु॥
सतगुर की सेवै लगिआ भउजलु तरै संसारु॥
मान चिंदिआ फलु पाइसी अंतरि बिबेक बीचारु॥
नानक सतिगुरि मिलिऐ प्रभु पाईऐ सभु दूख निवारणहारु॥

(वारां ते वधीक, पृष्ठ १४२२)

गुरु-पीरों की सेवा में बड़ी से बड़ी साधना दो अक्षरों (भ) का दृढ़ बोध ही है। जिनको इन दो अक्षरों का रहस्य समझ आ गया—

भ = भला जी,

भ = भूला जी।

यथा— **आगिआ सम नहीं साहिब सेवा॥**

जिस सौभाग्यशाली पुरुष को परमार्थ का यह गहन रहस्य समझ में आ गया उससे उद्देश्य दूर नहीं है, मानों वह सौभाग्य पुरुष 'कर्म खण्ड' के कर्त्तव्य पर पहुँच गया, उसकी फाइल बड़े साहिब की मेज़ पर पहुँच गई और किसी भी समय मोहर लग सकती है।

एक दिन महाराज ने आज्ञा दी कि बुड्ढा सिंह! प्रात:-सायं दोनों समय दरबार में कथा किया करो। आपने महाराज जी की आज्ञानुसार जहाँ अन्य सेवा करते थे, वहाँ दोनों समय कथा करनी भी आरम्भ कर दी। इस प्रकार प्रात:-सायं कथा-प्रवचन द्वारा दरबार में उपस्थिति, दिन में और जितनी सेवा संभव हो सके करते रहते, लेकिन अधिक समय अब अन्तर्मुखी रहते और हरि सिमरन में लीन रहने लगे। इस प्रकार सेवा करते-करते आज वह शुभ क्षण आ गया जब परमेश्वर की ओर से सब काम फलीभूत हुए। एक रोज़ आप ब्रह्म मुहूर्त (अमृतवेला) उठे, बाबा धर्म सिंह जी को स्नान

करवाया, वस्त्र पहनाए, इसके उपरांत बाबा जी ने स्थूल, सूक्ष्म, कारण आदि तीनों शरीरों से मनोवृत्ति को समेट करके आत्मा में लीन कर दिया अर्थात् समाधि स्थित हो गए। ध्यान आत्म रस में इतना लीन हुआ कि कितना समय व्यतीत होने पर भी स्थिति अटूट रही। ऐसी आत्ममयी आनंददायक अवस्था में से बाहर कौन आए? और अन्य कोई जाने भी कैसे? ऐसी अवस्था के लिए ही तो गुरुदेव का फ़रमान है—

सभे सुख भए प्रभ तुठे॥ गुर पूरे के चरण मनि वुठे॥
सहज समाधि लगी लिव अंतरि सो रसु सोई जाणै जीउ॥

(माझ महला ५, पृष्ठ १०६)

उधर बुड्ढा सिंह जी का एकटक ध्यान बाबा जी के चेहरे की ओर लगा हुआ है कि कब नेत्र खुलें और दूध आदि लेकर आएँ। दो ढ़ाई घंटे व्यतीत होने के पश्चात् बाबा धर्म सिंह जी के कमल-नेत्र खुले, फिर बंद हो गए। इस प्रकार प्रतीत हो रहा है कि मानों रस-मग्नता वृत्ति को टूटने नहीं देती। बाबा जी कुछ भी करें अथवा प्रकट करने की अवस्था से परे, अक्रिया और अगोचर पद में स्थित हैं, लेकिन शरीर ने प्रारब्ध वश पर-उपकार आदि क्रिया तो करनी ही है। अत: अब नेत्र खुले, प्रथम अमृतमयी दृष्टि सन्मुख बैठे बुड्ढ़ा सिंह जी पर पड़ी जो कि करबद्ध सन्मुख बैठे दूध पीने के लिए प्रार्थना कर रहे थे। आप जी के पवित्र मुख से काँपती आवाज़ के साथ पहला वचन उच्चरित हुआ, हाँ पिएँगे, लेकिन पिलाने के पश्चात्। बस, इतना कहकर कृपालु हाथ ऊपर उठाकर बुड्ढा सिंह जी के शीश पर रख दिया—बस फिर क्या था—

समरथ गुरु सिरि हथु धरयउ॥
गुरि कीनी क्रिपा हरि नामु दीअउ जिसु देखि चरंन अघंन हरयउ॥

(सवैये, पृष्ठ १४००)

यथा— **कचहु कंचनु भइअउ सबदु गुर स्त्रवणहि सुणिओ॥**
बिखु ते अंम्रितु हुयउ नामु सतिगुर मुखि भणिअउ॥
लोहउ होयउ लालु नदरि सतिगुर जदि धारै॥
पाहण माणक करै गिआनु गुर कहिअउ बीचारै॥
काठहु स्त्रीखंड सतिगुरि कीअउ दुख दरिद्र तिन के गइअ॥
सतिगुरु चरन जिन्ह परसिआ से पसु परेत सुनि नर भइअ॥

(सवैये, पृष्ठ १३९९)

बाबा धर्म सिंह ने सेवा पर प्रसन्न होकर बुड्ढा सिंह को अलौकिक दृष्टि से सम्पन्न कर दिया। मन, बुद्धि में से 'अहं' रूपी मैल इस प्रकार खींच ली, जैसे अचानक लगा बिजली का झटका, शरीर में से एक बूँद रक्त भी रहने नहीं देता। शरीर के रोम-रोम में से अमृत-वर्षा इस प्रकार हो रही है जैसे पानी की भरी मश्क में से हज़ारों सुराख होकर चारों ओर फुहारें पड़ रही हों। नेत्र, अमृतरस से भरपूर कभी बंद हो जाते हैं, कभी खुल जाते हैं—ऐसे प्रतीत हो रहा है जैसे मानों गुरदेव की अपार कृपाओं का आभार प्रकट कर रहे हों। अन्तत: नाम रस में निमग्न महापुरुषों के पवित्र चरणों से शीश उठाया और दोनों हाथ जोड़कर पवित्र मुख से इस प्रकार उच्चारण किया—

संत जना मिलि भाईआ कटिअड़ा जमकालु॥
सचा साहिबु मनि वुठा होआ खसमु दइआलु॥
पूरा सतिगुरु भेटिआ बिनसिआ सभु जंजालु॥

मेरे सतिगुरा हउ तुधु विटहु कुरबाणु॥
तेरे दरसन कउ बलिहारणै तुसि दिता अंम्रित नामु॥ रहाउ॥
जिन तूं सेविआ भाउ करि सेई पुरख सुजान॥
तिना पिछै छुटीऐ जिन अंदरि नामु निधानु॥
गुर जेवडु दाता को नही जिनि दिता आतम दानु॥

यथा— गुरु समरथु अपारु गुरु वडभागी दरसनु होइ॥
गुरु अगोचरु निरमला गुरु जेवडु अवरु न कोइ॥
गुरु करता गुरु करणहारु गुरमुखि सची सोइ॥
गुरु ते बाहरि किछु नही गुरु कीता लोड़े सु होइ॥
गुरु तीरथु गुरु पारजातु गुरु मनसा पूरणहारु॥
गुरु दाता हरि नामु देइ उधरै सभु संसारु॥
गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊचा अगम अपारु॥
गुरु की महिमा अगम है किआ कथे कथनहारु॥
जितड़े फल मनि बाछीअहि तितड़े सतिगुर पासि॥
पूरब लिखे पावणे साचु नामु दे रासि॥
सतिगुर सरणी आइआ बाहुड़ि नही बिनासु॥
हरि नानक कदे न बिसरउ एहु जीउ पिंडु तेरा सासु॥

(सिरीरागु महला ५, पृष्ठ ५२)

यथा— परगटि पाहारै जापदा॥ सभु नावै नो परतापदा॥
सतिगुर बाझु न पाइओ सभ मोही माइआ जालि जीउ॥
सतिगुर कउ बलि जाईऐ॥ जितु मिलिऐ परम गति पाईऐ॥
सुरि नर मुनि जन लोचदे सो सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ॥

(सिरीरागु महला १, पृष्ठ ७१)

पीछे खड़ा एक संत महापुरुष मौलाना रूमी का यह शेअर पढ़ रहा था—

दामने उगीर ए यारे दिलेर।
जो मुनजतरा बाशद् अज बाला ओ ज़ेर।

भाव—हे साहसी पुरुष! किसी ऐसे पुरुष का पल्लू पकड़, जो अलौकिक संसार से परिचित हो। अत: आज साहसी पुरुष धर्म सिंह जी समाधि वालों ने, संत बुड्ढा सिंह जी को उस महान् पद पर प्रतिष्ठित कर दिया जिसके सम्बन्ध में ईश्वरीय फरमान है—

भगवत भीरि सकति सिमरन की कटी काल भै फासी॥
दासु कबीर चड़िओ गढ़ ऊपरि राजु लीओ अबिनासी॥

(कबीर जी, पृष्ठ ११६२)

आप सब सदैव हिमालय पर्वत की भाँति अचल-शांत, सागर के समान गम्भीर, पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान खिला मुख, पूर्णता से भरपूर, नत-नयन, मन्द आवाज़ लेकिन अत्यन्त मधुर, अन्तर्मुख हुए आन्तरिक नाद में इस प्रकार लीन रहते थे जिसके सम्बन्ध में कहा गया है—

मोरी रुण झुण लाइआ भैणे सावणु आइआ॥

(राग वडहँस म० १, पृष्ठ ५५७)

इस प्रकार इस मग्नता में समय व्यतीत होने लगा। एक दिन बाबा धर्म सिंह ने आज्ञा की—हे भद्र! गुरुनानक देव महाराज ने प्रसन्न होकर जो अखण्ड निधि प्रदान की है उसको जरूरतमंदों में बाँटने का कार्य आरम्भ करो। आपने संकेत समझकर बाबा जी के चरणों में नमस्कार किया।

संत बाबा बुड्ढा सिंह जी द्वारा कटासराज तीर्थ की यात्रा करना

इन दिनों में कटासराज का वार्षिक उत्सव आ गया। आपके मन में यात्रा का संकल्प उत्पन्न हुआ। आपने बाबा धर्म सिंह जी को बताया। बाबा जी तो पहले संकेत कर चुके थे कि जो ईश्वरीय देन प्राप्त हुई है, उसको लोगों में बाँटो। आज्ञा पाकर आपने कटासराज जाने की तैयारी कर दी। इस बात का पता लगने पर अन्य कई साधु साथ जाने के लिए तैयार हो गए। इस प्रकार सशक्त संत मण्डली बन गई। निश्चित दिन पर श्री हरिमंदिर साहिब नमस्कार करके संत-मण्डली सहित तीर्थ के लिए चल पड़े।

शनैः शनैः यात्रा करते श्री कटासराज जा पहुँचे। मेले में सब मत-मतांतरों के साधु-महात्मा और सहस्रों की संख्या में यात्री पहुँचे हुए थे। प्रतिदिन खुला सत्संग होता, जिसमें सहस्रों लोग भाग लेते। साधु महात्मा अपने-अपने मत अनुसार मनुष्य जन्म की सफलता की विभिन्न प्रणालियों पर प्रकाश डालते थे। एक दिन प्रबन्धकों ने संत बाबा बुड्ढा सिंह जी को प्रवचन करने के लिए प्रार्थना की। आप जी ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के इस पावन शब्द द्वारा उपदेश दिया—

कलि कलेस मिटे हरि नाइ॥ दुख बिनसे सुख कीनो ठाउ॥
जपि जपि अंम्रित नामु अघाए। संत प्रसादि सगल फल पाए॥
राम जपत जन पारि परे॥ जनम जनम के पाप हरे॥ रहाउ॥
गुर के चरन रिदै उरि धारे॥ अगनि सागर ते उतरे पारे॥
जनम मरण सभ मिटी उपाधि। प्रभ सिउ लागी सहजि समाधि॥
थान थनंतरि एको सुआमी॥ सगल घटा का अंतरजामी॥
करि किरपा जा कउ मति देइ॥ आठ पहर प्रभ का नाउ लेइ॥
जा कै अंतरि वसै प्रभु आपि॥ ता कै हिरदै होइ प्रगासु॥
भगति भाइ हरि कीरतनु करीऐ॥ जपि पारब्रहमु नानक निसतरीऐ॥

(पृष्ठ ८६५)

हे प्रेमी जनो! आप सब कई दिनों से इस पवित्र तीर्थ स्थान पर पहुँचकर सत्संग द्वारा आध्यात्मिक विचारों का लाभ उठा रहे हो। इस 'कटासराज' तीर्थ को बुद्धिमान पुरुषों ने 'नेत्र' की संज्ञा दी है। इस पवित्र स्थान से एक आख्यान है जो हम कलियुगी जीवों के लिए बड़ा शिक्षाप्रद है—जो इस प्रकार है—

जब पाँडवों पर विपत्ति के पहाड़ टूट पड़े, उस समय दुःख-सुख को सहते, पाँचों पाँडव द्रौपदी सहित इधर आये। धर्मराज युधिष्ठिर थोड़े पीछे रह गए, लेकिन चारों छोटे भ्राता और द्रौपदी इस स्थान पर पहुँच गए। भूख-प्यास के लिए इस सरोवर में से जल ग्रहण करने लगे। आवाज़ आई कि जल ग्रहण मत करो। पानी में विष मिला है, बेहोश हो जाओगे, लेकिन प्यास से वे व्याकुल हो रहे थे, अतः उन्होंने आवाज़ की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। जल्दी जल ग्रहण करने लगे। बस फिर क्या देरी थी, पानी का एक घूँट पीते ही तत्क्षण बेहोश हो गए। कुछ समय पश्चात् धर्मराज युधिष्ठिर जब वहाँ पहुंचे तो क्या देखते हैं कि चारों भाई द्रौपदी सहित बेसुध हुए पड़े हैं। सोचा पहले जल ग्रहण कर प्यास बुझानी चाहिए, फिर इनके सम्बन्ध में सोचेंगे।

धर्मराज जब जल ग्रहण करने लगे, फिर वही आवाज़ आई, जल मत ग्रहण करो, बेसुध हो जाओगे। पहले आपके भाई बेहोश हो गए हैं। आवाज़ सुनकर राजा युधिष्ठिर रुक गए, इधर-उधर देखा, फिर आवाज़ आई, पहले मेरे चार प्रश्नों का उत्तर दो, तत्पश्चात् जल ग्रहण करना। यह सुनकर युधिष्ठिर बोले कि तुम कौन हो? तुम्हारे चार प्रश्न कौन से हैं? आवाज़ आई कि प्राचीन समय में मैं एक राजा था। मेरा नाम नहुष था। उस समय स्वर्ग के राज्य की इच्छा मन में रखकर, मैंने बहुत से यज्ञ किये, फलस्वरूप मुझे इन्द्र पद प्राप्त हुआ, लेकिन इतनी बड़ी पदवी प्राप्त करने के पश्चात् भी मेरी भोग-इच्छा रूपी अग्नि शान्त नहीं हुई। इन्द्राणी 'शची' को देखकर मेरा मन लालायित हो गया। उसको रानी बनाने के लिए मैंने अनेक प्रकार के यत्न किये। अन्ततः उसने तंग आकर कहा-यदि तुम मुझे रानी बनाना ही चाहते हो तो पालकी में बैठकर मेरे महलों में आओ। मगर एक शर्त है, तेरी पालकी ऋषियों द्वारा उठाई जानी चाहिए। मैंने प्रसन्न होकर ऋषियों को आज्ञा दे दी, मेरी पालकी उठाकर रानी 'शची' के महलों में ले चलो। आज्ञा मानकर ऋषि पालकी उठाकर चल पड़े। कामाग्नि में अंधा हुआ मैं ऋषियों को बार-बार डाँट रहा था। जल्दी चलो! जल्दी चलो!!।

अन्ततः ऋषियों ने तंग आकर पालकी नीचे फैंक दी और मुझे शाप दे दिया कि तुम दुष्ट हो, 'इन्द्र' पदवी के योग्य नहीं। पृथ्वी पर जाकर 'अजगर' का शरीर धारण करो। ऋषियों के मुख से श्राप का वचन सुनकर, मैं बहुत भयभीत हो गया। ऋषियों के चरणों पर गिरकर मैंने बहुत विनय की कि महाराज! मुझे क्षमा करो, मेरी भूल क्षमा कर दो। ऋषियों ने कहा कि देख! पृथ्वी पर तुम राजा थे, उनके पास साधारण लोगों से कहीं अधिक शारीरिक भोगों के सुख हुआ करते हैं। इतने भोग भोगकर भी तुम्हारी तृप्ति न हुई, अपितु अतृप्ति की अग्नि और बढ़ गई। उसको पूर्ण करने के लिए तुझे स्वर्ग-सुख की इच्छा हुई। वहाँ के सुखों को भोगने के लिए तुमने सकाम पुण्य अर्थात् यज्ञ आदि आरम्भ किये। पृथ्वी पर किये पुण्यों के फलस्वरूप तुझे स्वर्ग का राज्य और इन्द्र पदवी प्राप्त हुई, लेकिन तुम फिर भी संतुष्ट न हुए। भोगों ने तुम्हारी बुद्धि इस प्रकार ग्रसित कर दी कि तुम अपने-पराये की पहचान भी गँवा बैठे। अब अपने किये का फल भोगो।

मैं दीन होकर बार-बार प्रार्थना कर रहा था। अन्ततः करुणावश ऋषियों ने वचन किया, जो वचन हो गया वह तो अमिट है। 'अजगर' की योनि में तो जाना ही पड़ेगा, हाँ इतना अवश्य है कि तुम्हारे उद्धार का मार्ग बता देते हैं। द्वापर युग के अंत में धर्मराज युधिष्ठिर अपने भाइयों और द्रौपदी सहित यहाँ आयेगा। वह तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देगा। उसके मुख से उत्तर सुनकर तेरा सर्प योनि से छुटकारा होगा। फिर अमूल्य शरीर प्राप्त करेगा, निष्काम कर्म एवं परमेश्वर की भक्ति द्वारा मोक्ष को प्राप्त हो जाना। उसी समय से मैं इस 'कटासराज' तीर्थ के सरोवर में अजगर का शरीर धारण करके रह रहा हूँ। अब मेरे उद्धार का समय आ गया है, इसलिए आप कृपा करके मेरे चार प्रश्नों का उत्तर दो ताकि मेरा यह 'सर्प' शरीर से मुक्ति हो जाये।

राजा युधिष्ठिर ने आन्तरिक अवस्था बहुत ध्यानपूर्वक सुनी और आखिर में बोले, हाँ! बता तेरे प्रश्न क्या हैं?

1. संसार में पूर्ण रूपेण सुखी और प्रसन्न कौन रह सकता है?
2. संसार में सबसे आश्चर्य बात क्या है?
3. संसार में सहस्त्रों मार्ग हैं, लेकिन वास्तविक सुखमय मार्ग कौन सा है?
4. संसार क्या वस्तु है?

उत्तर—आरम्भ—

1. संसार में पूर्ण रूपेण प्रसन्न एवं सुखी वही व्यक्ति रह सकता है जिसने अपनी सभी इच्छायें और वासनाओं

को कम कर लिया है, जो किसी से कुछ नहीं चाहता, जो अपनी प्रारब्ध पर पूर्ण रूप से निर्भर है और संतुष्ट है। जो मात्र शरीर रूपी गाड़ी को चलता रखने से अधिक कुछ कामना नहीं करता।

यथा— **पराधीन सुपनेहुँ सुख नाही।**

(रामचरितमानस १.१०२.५)

2. संसार के जीव प्रतिदिन तेज़ वायु की भाँति, संसार से मृत्यु होने पर, संसार से ऐसे भागे जा रहे हैं जिस प्रकार बसंत ऋतु के पूर्व वृक्षों के सूखे पत्ते। सबके सम्मुख ऐसा प्रतिदिन हो रहा है, लेकिन फिर भी जो जीवित हैं समझते हैं कि हम अमर हैं, अजर हैं, इसलिए संसार के पदार्थों को दिन-रात अपने हृदय से लगाकर रखते हैं, इतना ही नहीं अपितु मरने वाले की सम्पदा, धन-पदार्थ को अनुचित ढंग से उस पर कब्ज़ा करने का यत्न करते हैं। इससे बढ़कर और क्या आश्चर्य हो सकता है?

3. वेद शास्त्रों में अनेक विधि-निषेधों का वर्णन है। साधारण लोगों के लिए इतनी खोज कठिन है, इसलिए संत महापुरुष जिस धर्म के मार्ग पर चलते हैं, वही मार्ग श्रेष्ठ एवं सुखदायी है, क्योंकि उन्होंने समस्त शास्त्र सम्मत सिद्धांतों को अपने हृदय में धारण कर लिया है।

4. मोह तो मानो 'कड़ाही' है, सूर्य और चन्द्रमा अग्नि के समान हैं, रात-दिन लकड़ियों के समान हैं, आयु मानों कड़छी है और जीवन रूपी जो चावल हैं उसको काल सदैव पका रहा है अर्थात् मोह रूपी कड़ाही जो विषयों रूपी अग्नि पर रखी हुई है इसमें संसारी जीव दिन-रात इस प्रकार जल रहे हैं, जैसे कड़ाही में चावल। बस! इससे बढ़कर संसार और कोई वस्तु नहीं।

नहुष राजा ने अजगर के रूप में जब इन चार प्रश्नों के उत्तर राजा युधिष्ठिर से सुने, उसी समय उसकी सर्प रूपी शरीर से मुक्ति हो गई। उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि सकाम कर्म दु:खों का कारण बन जाते हैं। अत: प्रेमी जनो! इस कलियुग के समय में समस्त दु:खों के विनाशक और समस्त सुखों को देने वाली उत्तम औषधि केवल हरि का नाम है। इसलिए गुरु बाबा जी ने आदेश दिया है—

अब कलू आइओ रे॥ इकु नामु बोवहु बोवहु॥ अन रूति नाही नाही॥
मतु भरमि भूलहु भूलहु॥ गुर मिले हरि पाए॥

(बसंतु महला ४, पृष्ठ ११८५)

यथा— **कलि महि एहो पुंनु गुण गोविंद गाहि॥**

(रामकली की वार, पृष्ठ ९६२)

यथा— **कलियुग की सुण साधनां करम किरति की चलै न काई॥**
बिनां भजन भगवान के भाउ भगति बिनु ठउड़ि न काई॥
कलियुग नावै की वडिआई॥

(भाई गुरदास)

वैसे तो चारों युगों में, गौरव 'नाम' का ही है लेकिन कलियुग में विशेष है। इस समय में नाम के बिना कोई कर्म-धर्म साथ नहीं देगा—

यथा— **करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै॥**
निरबाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै॥

(सूही महला ५, पृष्ठ ७४७)

इस प्रकार गुरु बाबा जी, इस पवित्र शब्द में नाम-महिमा का वर्णन कर रहे हैं।

मूल— **कलि कलेस मिटे हरि नाइ॥**

अर्थ— हरि परमेश्वर का नाम जपने से, कलियुग के जितने विघ्न एवं क्लेश हैं, वे समस्त इस प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जैसे अग्नि में गिरा वस्त्र जलकर राख हो जाता है। परमेश्वर का थोड़ा सिमरन जन्म-जन्मांतरों के एकत्रित हुए समस्त पापों अर्थात् छोटे-छोटे ढेरों को जलाकर इस प्रकार राख बना देता है जैसे सहस्त्रों मन लकड़ियों के ढेर को आग की एक चिनगारी।

यथा— **लख मड़िआ करि एकठे एक रती ले भाहि॥**

(आसा महला १, पृष्ठ ३५८)

इस प्रकार नाम जपने से, समस्त बुराइयाँ, जो पापों का मूल मानी जाती हैं सब निवृत्त हो जाती हैं और शुभ गुण जो पुण्यों का बीज माने जाते हैं, हृदय में इस प्रकार आकर निवास करते हैं जैसे राजा के आने से पूर्व दीवान, मंत्री अर्थात् बड़े-बड़े अफ़सर प्रबन्ध करने के लिए, पहले ही आ जाते हैं। इसलिए गुरुनानक देव महाराज जी ने फरमाया है—

वडा साहिबु ऊचा थाउ॥ ऊचे उपरि ऊचा नाउ॥
एवडु ऊचा होवै कोइ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ॥

(जपुजी साहिब, पृष्ठ ५)

त्रेता युग में भगवान् रामचन्द्र जी ने पत्थरों पर राम-नाम लिखकर, सागर के ऊपर पुल का निर्माण किया, इस प्रकार लंका में प्रवेश किया। इस बात से स्पष्ट है कि राम-नाम का कितना महत्त्व है।

एक चितु जिह इक छिन धिआइउ॥
काल फासि के बीच न आइउ॥

(दशम् ग्रन्थ)

एकाग्र मन होकर यदि एक क्षण भी हरि के नाम का सिमरन किया जाये तो मृत्यु को सदैव के लिए जीता जा सकता है। इस प्रकार कलियुग में पापों रूपी मैल को दूर करने के लिए, अपवित्र को पवित्र करने के लिए, सबसे उत्तम नुस्खा राम-नाम ही है, और जिस व्यक्ति को मोक्ष की इच्छा पैदा हो जाये, उस को 'राम' का नाम जपने से विश्वास दिलाने के लिए उत्तम औषधि अर्थात् मंत्ररूप है और महात्मा लोगों का जीवन रूप है, धर्म का तत्त्व है अर्थात् बीज रूप है जैसे तुलसीदास जी ने कहा है—

एक छत्रु एकु मुकुट मणि सब बरननि पर जोउ॥
तुलसी रघुबर नाम के वरन बिराजत दोउ॥

(मानस १.२०)

अर्थ— राम का जो नाम है, वह सब वर्णों, सब अक्षरों से ऊपर छत्र और मुकुट रूप में विराजता है।

मूल— **दुख बिनसे सुख कीनो ठाउ॥**

(पृष्ठ ८६५)

अर्थ— परमात्मा का नाम जपने से समस्त दु:ख नष्ट हो जाते हैं और उनका स्थान सुख ले लेते हैं।

मूल— **जपि जपि अंम्रित नामु अघाए॥**

अर्थ— अमृत रूप नाम जपने से तृप्ति हो जाती है। जो व्यक्ति नाम रूपी अमृत का पान करते हैं, उनको मृत्यु रूपी दु:ख और पदार्थों की भूख रूपी अग्नि नहीं सताती। ऐसा समस्त दु:खों का नाश करने वाला और समस्त सुखों को देने वाला जो अमृत है, वह हरि का नाम है। विद्वान लोगों ने अमृत के प्रति अपने-अपने

विचार प्रकट किये हैं। किसी विद्वान ने अमृत को सागर में माना है, किसी ने चन्द्रमा में बताया, कोई नारी के मुख में वर्णन कर रहा है। कोई पाताल में बता रहा है। किसी ने स्वर्ग में बताया, लेकिन इस बात का उत्तर एक महापुरुष ने इस प्रकार दिया है—सागर खारा है, यदि उसे अमृत मान लिया जाये तो उसका खारापन दूर हो जाये। चन्द्रमा बढ़ता-घटता रहता है, यदि उसमें अमृत मान लिया जाये, तो उसमें यह दोष नहीं रहना चाहिए। यदि स्त्री के मुख में अमृत मान लिया जाये, तो विधवापन, बुढ़ापा, बीमारी, मृत्यु आदि दु:खों का शिकार न हो। यदि पाताल में अमृत मान लिया जाये, तो पाताल में रहने वाले रूप आदि सभी शांत हो जायें, लेकिन वे भी विष आदि से जलते रहते हैं। स्वर्ग जो कि पुण्यों द्वारा प्राप्त होता है वहाँ का राजा इन्द्र भी पुण्य क्षीण होने पर नीचे उतार दिया जाता है, इसलिए यदि उपरोक्त स्थलों पर अमृत हो, तो उसमें ऊपरलिखित विघ्न नहीं होने चाहिए। अत: सच्चा अमृत तो भाई संतों के कंठ में विराजमान है, जो नाम सिमरन से सदैव पीते रहते हैं।

यथा— **अंम्रितु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ॥**

(गः वार, पृष्ठ ३१८)

यथा— **हरि अंम्रित पान करहु साधसंगि ॥**

(थिति गउड़ी महला ५, पृष्ठ २९९)

यथा— **को कहतो सभ बाहरि बाहरि को कहतो सभ महीअउ ॥**
बरनु न दीसै चिहनु न लखीऐ सुहागनि साति बुझहीअउ ॥
सरब निवासी घटि घटि वासी लेपु नही अलपहीअउ ॥
नानकु कहत सुनहु रे लोगा संत रसन को बसहीअउ ॥

(जैतसरी महला ५, पृष्ठ ७००)

ऐसे अमर कर देने वाले नाम-अमृत को, जो-जो महापुरुष पीते हैं, उनको संसार के विनाशी एवं विषाक्त विषयों के सुख अच्छे नहीं लगते। जैसे एक उदाहरण—

एक राजा ने दूसरे राजा पर आक्रमण किया और भयंकर युद्ध के पश्चात् विजयी हो गया। इस घमासान युद्ध में विरोधी राजा की मृत्यु हो गई। विजयी राजा बड़ा नीतिज्ञ था। उसने सोचा कि यहाँ की प्रजा का स्वर्गीय राजा के साथ प्रेम है इसलिए ये लोग मेरे साथ हृदय से प्रेम नहीं करेंगे। अत: अच्छा यही है, स्वर्गीय राजा के किसी सम्बन्धी को, अपने अधीन बनाकर राज-काज सौंप दें, नीति इसी में है। राजा को पता लगा कि स्वर्गीय राजा का एक सम्बन्धी साधु वेश धारण कर वन में तप कर रहा है। विजयी राजा ने अपना मंत्री भेजा कि जाओ उस साधु को साथ लेकर आओ। मंत्री ने जाकर प्रार्थना की कि महाराज! आपके सम्बन्धी राजा की मृत्यु हो गई, इसलिए आप वहाँ का राज्य-भार संभालो। संत कहने लगे कि हे भाई! हमें किसी राजभाग की इच्छा नहीं है। संत महाराज से उत्तर लेकर, मंत्री ने वापिस आकर राजा को सारी बातचीत सुनाई। अब राजा स्वयं चलकर संत जी के पास गया। वही प्रार्थना जो मंत्री ने की थी, दोहराई। संत जी ने वहीं उत्तर दे दिया, भाई! हमें संसार की किसी वस्तु की इच्छा नहीं है। महापुरुषों की ऐसी त्यागमयी वृत्ति देखकर राजा को और अधिक श्रद्धा हो गई। प्रार्थना की कि महाराज! आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करो, यहाँ का समस्त राज-काज संभालो और भी जो आज्ञा करो मैं देने के लिए तत्पर हूँ। हर दृष्टि से मैं आपकी सेवा करूँगा। महापुरुष कहने लगे कि भाई! यदि तुम अति प्रसन्न हो तो तीन चीज़ें

पहले दो, फिर तुम्हारे राज-काज वाली प्रार्थना भी स्वीकार कर लेंगे। राजा बोला कि महाराज! मैं तो पहले ही वचन दे चुका हूँ कि आप जो आज्ञा दो, मैं देने के लिए उपस्थित हूँ। महापुरुष बोले—

1. हमें ऐसा अमृत प्रदान करो जिसका पान कर मृत्यु को सदा के लिए जीत लें अर्थात् दोबारा मृत्यु न हो।
2. हमें ऐसी प्रसन्नता चाहिए जिसमें कभी ग़मी न आये।
3. हमें ऐसा यौवन चाहिए जिसमें कभी वृद्धावस्था न आये।

महापुरुषों के पवित्र मुख से ऐसा वचन सुनकर राजा हतप्रभ होकर बोला कि महाराज! मैं तो संसार की वस्तु दे सकता हूँ, जो आप माँग रहे हैं, यह तो परमेश्वर के अधीन है। संत कहने लगे, फिर परमेश्वर से ही माँग लेंगे भाई! तेरे से कुछ नहीं चाहिए।

तात्पर्य—परमेश्वर के प्यारे, परमेश्वर का नाम जपने से इतने तृप्त हो जाते हैं कि उनको इस संसार के असत्य, अतृप्त, दु:खदायी और जिसका अस्तित्व नहीं है ऐसे पदार्थों की इच्छा नहीं रहती। वे भीतर से भली भाँति जानते हैं कि यह माया का प्रपंच है और कुछ भी नहीं।

मूल— **संत प्रसादि सगल फल पाए॥**

अर्थ— संत महापुरुषों की कृपा द्वारा, समस्त फलों की प्राप्ति हो जाती है अर्थात् समस्त फलों का दाता परमेश्वर के भीतर आ बसता है।

यथा— **संत क्रिपा ते हिरदै वासै दूजा भाउ मिटावना॥**

यथा— **संत बिना मैं थाउ न कोई अवर न सूझै जावना॥**
मोहि निरगुन कउ कोइ न राखै संता संगि समावना॥

(मारू महला ५, पृष्ठ-१०१८)

मूल— **राम जपत जन पारि परे॥ जनम जनम के पाप हरे॥**

अर्थ— नाम का सिमरन करने से, भक्त-जन काल एवं संसार-सागर से पार हो जाते हैं और जन्म-जन्मांतरों के समस्त पाप कर्म नष्ट हो जाते हैं।

मूल— **गुर के चरन रिदै उरि धारे॥ अगनि सागर ते उतरे पारे॥**

अर्थ— गुरु के चरण अर्थात् जब नाम हृदय में धारण किया, उसी समय पदार्थों और विषयों रूपी अग्नि से जल रहे संसार-सागर से पार हो गए।

मूल— **जनम मरण सभ मिटी उपाधि॥ प्रभ सिउ लागी सहजि समाधि॥**

अर्थ— जन्म-मरण रूपी सब उपाधियाँ मिट गईं। परमात्म-स्वरूप में सहज समाधि लग गई अर्थात् अभेद हो गए।

मूल— **थान थनंतरि एको सुआमी॥ सगल घटा का अंतरजामी॥**

अर्थ— अब यह रहस्य समझ में आ गया कि सभी स्थानों पर एक परमात्मा रमा हुआ है और प्रत्येक स्थान पर व्यापक होने के कारण चारों योनियों के हृदयों का अन्तर्यामी अर्थात् जानकार है।

मूल— **करि किरपा जा कउ मति देइ॥ आठ पहर प्रभ का नाउ लेइ॥**

अर्थ— परमेश्वर कृपा करके जिस पुरुष को यह शुद्ध बुद्धि प्रदान करता है, वह पुरुष चौबीस घंटे परमेश्वर का नाम जपता है। समस्त द्वैत नष्ट हो जाती है जो जन्म-मरण की हेतु है।

मूल— **जा कै अंतरि वसै प्रभु आपि॥ ता कै हिरदै होइ प्रगरास॥**

अर्थ— नाम के निरन्तर सिमरन के साथ परमेश्वर जिस जीव के हृदय में बस जाता है, उस सौभाग्यशाली पुरुष

के हृदय में मोह-माया का अंधकार नष्ट होकर ज्ञान का प्रकाश हो जाता है।

मूल— **भगति भाइ हरि कीरतनु करीऐ॥ जपि पारब्रहमु नानक निसतरीऐ॥**

अर्थ— श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी इस पावन शब्द द्वारा हम कलियुगी जीवों को उपदेश करते हैं कि हे भाई! मनुष्य जन्म की सफलता इसमें है कि हृदय में प्रेम धारण कर, हरि भक्ति एवं हरि यश गान करो। इस प्रकार पारब्रह्म परमेश्वर का यशगान करने से, संसार-सागर से मुक्ति अर्थात् पार उतर जाओगे। इस प्रकार उपदेश करते हुए कटासराज की पवित्र धरती पर, गुरुनानक देव के घर की सुगंधि फैलाते कई दिन गुज़र गए। इतने में उत्सव की समाप्ति हो गई।

श्री पंजा साहिब की यात्रा करनी

श्री कटासराज का उत्सव समाप्त होने पर, संत बाबा बुड्ढा सिंह जी ने अपनी संत मण्डली सहित श्री पंजा साहिब की पद यात्रा आरम्भ कर दी। मार्ग में पोठोहार की संगत को गुरवाणी का उपदेश करते, धीरे-धीरे विभिन्न पड़ावों पर विश्राम करते पंजा साहिब पहुँच गए। श्री गुरु नानक के पावन चरणों की पवित्र धूलि मस्तक पर धारण करके नमस्कार की। वहाँ के प्रबन्धकों ने निवास आदि की व्यवस्था कर दी। नित्य नियम के अनसुार गुरुद्वारा साहिब, कथा कीर्तन तो प्रतिदिन होता ही था, वहाँ के प्रबन्धकों की प्रार्थना स्वीकार करके आपने आज के आदेश (हुक्मनामा) पर कथा की। ब्रह्म मुहूर्त में धनासरी राग का यह पवित्र शब्द अवतरित हुआ था—

इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जा कै वसि है कामधेना॥
सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े ता सरब सुख पावहि मेरे मना॥
जपि मन सति नामु सदा सति नामु॥
हलति पलति मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना॥ रहाउ॥
जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी वडभागी हरि जपना॥
जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी जपि हरि भवजलु तरना॥

(धनासरी महला ४, पृष्ठ ६६९)

साधु-संगति कालातीत पुरुष वाहिगुरु (अकाल पुरख वाहिगुरु) संसार के जीवों का, अज्ञान-रूपी अंधकार को दूर करने के लिए, गुरु अवतरित होकर अर्थात् गुरुनानक देव महाराज के रूप में प्रकट हुए। जो लोग परमेश्वर के अस्तित्व से इन्कार कर चुके थे, उनके हृदय में प्रभु का विश्वास उत्पन्न किया। ऐसे भी लोग थे जो परमेश्वर के अस्तित्व को मानकर उसको प्राप्त करने के लिए साधना तो कर रहे थे, लेकिन बिना पूर्ण गुरु की सहायता से भटक कर कहीं न कहीं अटके खड़े थे। उनकी साधना पूर्ण करने के लिए गुरु बाबा उनके समीप गए। ऐसे लोगों को ज्ञान का उपदेश देकर पूर्ण पद पर पहुँचाया। ऐसा ही एक इस्लाम धर्म पर विश्वास करने वाला फकीर जिसका नाम 'वली कंधारी' था, इस स्थान पर तप साधना कर रहा था। बिना गुरु के की गई साधना फलीभूत नहीं हुआ करती। जैसे शाह मुहम्मद ने लिखा है—

बिना मुरशदां राह न हथ औंदे। बिना दुध न रिझदी खीर मीयां।

'*वली कंधारी*' संसार के सब सुखों का त्याग करके इस पर्वत पर जोहद अर्थात् तपस्या कर रहा था, लेकिन शरअ् की फाँसी गले में पड़ी होने के कारण शान्त नहीं हो रहा था। वह समझता था कि इस्लाम धर्म ही एक पवित्र धर्म है, अन्य सब काफ़िर अर्थात् परमेश्वर के अस्तित्व से इन्कार करते हैं। उसका यह भ्रम दूर करने और उसकी साधना को फलीभूत करने के लिए, गुरु बाबा मरदाना सहित इस स्थान पर पहुँचे। पानी खींचने वाला कौतुक करके उसका अहंकार

दूर किया। जब तक 'अहं' विद्यमान है, जीव शरण में नहीं आता। 'अहं' दूर होने पर ही शरण ग्रहण करता है, यह एक नियम है। तुच्छ-मात्र अहंकार भी इस जीव को 'शरणागति' से रोकता है, लेकिन शरणागति के बिना यह जीव पूर्ण सुखी नहीं हो सकता। भगवान् कृष्ण अर्जुन को यही बात समझाते हैं—**सर्वधर्मान परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।** हे अर्जुन! मैं क्षत्रिय हूँ, बड़ा योद्धा हूँ, बुद्धिमान हूँ, युद्ध में मैं विजयी हूँगा, हार होगी, यह समस्त अहंकार का और सब चिन्ताओं का त्याग करके, मेरी शरण में आ जा। शरण ग्रहण करने के पश्चात् शरणागत को कुछ भी करना शेष नहीं रहता। फिर उसकी समस्त लाज उसको है जिसकी शरण ग्रहण की है। गजेन्द्र सहस्रों वर्षों तक अपने बल पर मगर से युद्ध करता रहा, अपने आपको बचाने के लिए, लेकिन असफल। जब थककर भगवान् की शरण में आया—

'जब ही सरनि गही क्रिपा निधि गजु गराह ते छूटा॥'

एक क्षण भी नहीं लगा, ग्राह से मुक्त होने के लिए। द्रौपदी का दुर्योधन की सभा में जब चीर हरण होने को था, उसने अपनी बुद्धिबल से दुर्योधन को समझाने की चेष्टा की कि देख राजन्! राजा प्रजा के पिता के समान होता है, प्रजा का हर प्रकार से रक्षक होता है। यदि बाड़ ही खेत को खाने लग जाये तो खेत का रक्षक कौन? लेकिन दुर्योधन राजमद में अंधा हुआ कोई बात सुनने के लिए तैयार ही नहीं था। बुद्धिबल के निष्फल होने पर द्रौपदी ने अपने पाँचों पतियों की ओर देखा, जो सभा में ही बैठे थे, लेकिन कालचक्र के अधीन हुए, वे भी नतशिर हो गए, क्योंकि राज-भाग सहित द्रौपदी आदि सब कुछ जुए में हार चुके थे। विवश होकर वे सब कुछ सहन कर रहे थे। फिर द्रौपदी ने अपने बाहुबल से दूतों को हटाने का प्रयत्न किया, लेकिन असफल थककर सब प्रयत्न विफल होने पर अब एक ही मार्ग शेष रह गया, जिसके सम्बन्ध में भाई साहिब भाई गुरदास जी लिखते हैं—

अखीं मीट धिआन धर हा हा क्रिशन करे बिललांदी॥

जब वह प्रभु की शरण में गई, शरण का फल क्या हुआ?

कपड़ कोट उसारिआन थक्के दूत न पार वसांदी॥

साड़ियों के ढेर लग गए, साड़ी समाप्त नहीं हो रही, लेकिन उतारने वाले दूत थक गए। दैवी कौतुक होता देखकर दुर्योधन ने दूतों को आज्ञा दी, इसको धक्के मारकर सभा में से बाहर निकाल दो।

घर आई ठाकुर मिले मुखहु बोल कहे सरमांदी॥

जब घर पहुँची, भगवान् श्री कृष्ण जी के दर्शन हुए, चरणों पर गिर कर नमस्कार की। दोनों हाथ जोड़कर झिझककर प्रार्थना की कि महाराज! आपने बहुत कृपा की, सभा में इज्ज़त रख ली, लेकिन इतनी देर क्यों लगाई? भगवान् ने मुस्करा कर कहा, द्रौपदी! मुझे भी एक आदत है, जो शुरू से पड़ी हुई है। द्रौपदी ने पूछा महाराज! क्या आदत है? भगवान बोले, 'नाथ अनाथां बाण धुरां दी॥' द्रौपदी! जब तक तुम अपनी बुद्धि पर, पतियों पर, शारीरिक बल पर आदि आश्रय ढूँढ़ती रही, तब तक मैं मौन रहा, लेकिन जब तुम सभी आश्रयों को त्यागकर, मेरी शरण में आई, तब उसी समय मुझे आना पड़ा। अब बता देर तेरी ओर से हुई अथवा मेरी ओर से? मेरा यह स्वभाव शुरू से ही है जब कोई निराश्रित होकर मेरी शरण में आता है फिर उसकी लाज (चिन्ता) मुझे होती है। जैसे गुरुवाक्—

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा॥

(पृष्ठ ५४४)

यथा— **जिते सरणि आए हैं। तिते राख लए हैं॥**

(गुरु गोबिन्द सिंह जी)

इस प्रकार वली कंधारी की ओर से पानी रोकने का, शिला नीचे की ओर गिराने का, तप द्वारा प्राप्त की रिद्धियाँ-सिद्धियाँ के बल का कोई साधन सफल न हुआ, तब हार-थक कर निर्बल जानकर गुरु बाबा जी की शरण में आया। अलौकिक प्रीतम ने कृपा की दृष्टि डाली, वली का हृदय शुद्ध होकर, उपदेश ग्रहण करने योग्य हो गया। विकारी मन पर उपदेश का प्रभाव नहीं पड़ता, यह एक नियम है। गुरु बाबा जी ने आज्ञा दी हे वली! जिस खुदा के मिलाप के लिए संसार के सुखों को छोड़कर, वन के कष्ट सहे, भूख-प्यास सहन की, वह खुदा तो तुम्हारे भीतर ही था, लेकिन तुम्हारे बुद्धि रूपी नेत्रों पर शरीअत और द्वैत की दो रंगी पट्टी बँधी हुई थी, इसलिए तुम्हें प्रभु के दर्शन नहीं हुए। समस्त संसार उसका नूर है, खुदा के बिना दूसरी वस्तु का अस्तित्व ही नहीं है। यह जो अनंत प्रकार के जीव और धर्म तुझे भिन्न-भिन्न प्रतीत हो रहे हैं, ये तो प्रभु के प्रकाश की किरणें और विलास हैं। सागर की अनंत लहरें उसका विलास और रूप ही होती हैं और क्षण भर में बनती और मिटती रहती हैं। उनमें से किसी एक से प्रेम करना और दूसरी के साथ शत्रुता करना किसी बुद्धिमान का काम नहीं। वली, यदि उस प्रभु के दर्शन की इच्छा है तो आँखों पर शरीअत और द्वैत की पट्टी उतार दे और अपने नेत्रों में अद्वैत का काजल डाल कहो, सतिनाम .... सतिनाम .... सतिनाम .... सतिनाम .... सतिनाम।

वली के हृदय में जो द्वैत की अग्नि प्रज्वलित हो रही थी, सब शान्त होकर, मन हिमवत् ठण्डा हो गया। सागर की मछली के समान जिधर देखता है-खुदा का प्रकाश ही प्रकाश नज़र आ रहा है। अन्य कोई वस्तु नज़र नहीं आती। अन्य कोई हो तो नज़र आये? नयनों से प्रवाहित प्रेम-जल से गुरु बाबा जी के चरण इस प्रकार प्रक्षालन कर रहा है जैसे कमल पुष्प पर ओस की बूँदें पड़ रही हों और तुतलाती ज़बान से उच्चारण कर रहा है कि—

'अयोग्य गुरु की सौ साल संगति से सतगुरु की एक पल की संगति अनंत गुणा अधिक फलदायक है— यह वाणी के वर्णन से बाहर है।'

इस बहाने गुरु बाबा जी ने इस पवित्र स्थान को अपनी पावन चरण धूलि प्रदान करके तीर्थ रूप बनाया। आज हम सब इस पावन स्थल पर गुरु नानक महाराज जी की गोद में बैठकर स्वर्गिक आनन्द मना रहे हैं। अब संक्षेप में शब्द का विचार करेंगे—

मूल— **इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जा कै वसि है कामधेना॥**

अर्थ— स्वर्ग में एक गाय है जिसे कामधेनु कहते हैं, लेकिन परमात्मा अनन्त शक्तियों का स्वामी है। वह लोक-परलोक की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने की समर्था रखता है और समस्त सुखों को देने वाला है, कामधेनु जैसी अनन्त शक्तियाँ उसके चरणों की दासियाँ हैं।

मूल— **सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े ता सरब सुख पावहि मेरे मना॥**

अर्थ— हे मन! ऐसे हरि का सिमरन करने से समस्त सुखों की प्राप्ति हो जाती है।

मूल— **जपि मन सतिनामु सदा सतिनामु॥ हलति पलति मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना॥ रहाउ॥**

अर्थ— हे मन! सदैव नाम सिमरन कर, बार-बार परमेश्वर के साथ नाम का जप कर। ऐसा करने से तेरे पापों रूपी कलंक सब मिट जायेंगे, लोक-परलोक मुख उज्ज्वल होगा, भाव शोभा बढ़ेगी। इसलिए भाई! ऐसा सुख स्वरूप माया-रहित परमेश्वर का नित्य ध्यान करें।

मूल— **जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी वडभागी हरि जपना॥**

अर्थ— जिस हृदय में हरि परमेश्वर का सिमरन आ जाता है, वहाँ जन्म-मरण आदि माया की समस्त उपाधियाँ मिट जाती हैं, परन्तु ऐसे हरि नाम का जाप बड़े भाग्य से प्राप्त होता है।

मूल— **जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी जपि हरि भवजलु तरना॥**

अर्थ— श्री गुरु रामदास जी वर्णन करते हैं कि हमें गुरु अमरदास जी ने यह मार्ग बताया है कि हरि परमेश्वर के नाम का जाप करके संसार-सागर रूपी भवसागर तर जाते हैं। इस प्रकार 'पंजा साहिब' के स्थान पर कई दिन विश्राम करने के पश्चात्, संगत पर सत्य उपदेश की वर्षा करके 'होती मरदान' की ओर चल पड़े।

'होती मरदान' की यात्रा

'पंजा साहिब' से पद यात्रा करते, कई गाँवों एवं नगरों के बीच में से होते 'होती मरदान' पहुँच गए। उस समय इस पवित्र स्थान को बाबा कर्म सिंह जी महाराज शोभायमान कर रहे थे।

'**जो हम सहरी सु मीतु हमारा**' के महावाक् अनुसार दोनों महापुरुष बड़े प्रेम से मिले। एक-दो दिन बाद बाबा कर्म सिंह जी ने फरमाया कि हे महापुरुष! गुरु नानक के घर का 'प्रसादि' यहाँ भी वितरित करो। उनका वचन मानकर आपने प्रात:-सायं कथा आरम्भ कर दी। बाबा कर्म सिंह जी का यश तो पहले ही बहुत फैला हुआ था, लेकिन आप जी की कथा सुनकर दूर-दूर गाँवों नगरों में से और भी बहुत संगत का आना प्रारम्भ हो गया। महापुरुषों के प्रेम-वश, आप दो मास यहाँ रुककर गुरु नानक के घर का ईश्वरीय प्रसाद वितरित करते रहे। होती मरदान डेरे 'कपूरे की गृही', नामक गाँव की संगत भी बहुत आती थी, वहाँ के लोग कथा सुनकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने संत बाबा बुड्ढा सिंह जी को अपने गाँव ले जाने की प्रार्थना की जो महापुरुषों ने स्वीकार कर ली।

'कपूरे की गृही' गाँव जाना

बाबा कर्म सिंह जी महाराज से आज्ञा लेकर, बाबा बुड्ढा सिंह जी संगत की प्रार्थना स्वीकार करके 'कपूरे की गृही' नामक गाँव में पहुँचे। गाँव के समीप एक बहुत बड़ा घना वन था। उस वन में एक गुफ़ा बनी हुई थी, आप उस गुफ़ा में विश्राम करते और प्रात:-सायं गाँव के गुरुद्वारे में कथा करते। आप जी का स्वभाव था कि गुरु ग्रन्थ साहिब में से जो 'आदेश' आता उसकी उदाहरण सहित व्याख्या करते थे। आज गुरु अर्जुन देव महाराज जी का यह शब्द अवतरित हुआ—

पाणी पखा पीसु दासु कै तब होहि निहालु॥
राज मिलख सिकदारीआ अगनी महि जालु॥
संत जना का छोहरा तिसु चरणी लागि॥
माइआ धारी छत्रपति तिन्ह छोडउ तिआगि॥ रहाउ॥
संतन का दाना रूखा सो सरब निधान॥
ग्रिहि साकत छतीह प्रकार ते बिखू समान॥
भगत जना का लूगरा ओढि नगन न होई॥
साकत सिरपाउ रेसमी पहिरत पति खोई॥

साकत सिउ मुखि जोरिऐ अध वीचहु टूटै॥
हरि जन की सेवा जो करे इतु ऊतहि छूटै॥
सभ किछु तुम्ह ही ते होआ आपि बणत बणाई॥
दरसनु भेटत साध का नानक गुण गाई॥

(बिलावलु महला ४, पृष्ठ ८११)

साधु संगत! यह पवित्र शब्द श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी ने 'खारा गाँव' में 'हेमें भगत' को सम्बोधित करते हुए उच्चारण किया था। एक बार का वर्णन है कि गुरु अर्जुन देव महाराज जी, भाई गुरदास जी एवं भाई बुड्ढा जी को साथ लेकर श्री तरन-तारन साहिब से खारा ग्राम पहुँचे। उस गाँव में जो बड़े-बड़े सेठ, अमीर व्यक्ति, महलों में रहते थे, उन्होंने गुरु बाबा जी का आदर-मान न किया और न ही जल-पान आदि पूछा, क्योंकि उनके मन में प्रेम-भाव नहीं था। ऊपर से घमासान वर्षा भी हो रही थी फिर भी गुरु साहिब जी को ठहरने के लिए स्थान न दिया। गुरु जी गाँव से चलकर बाहर खेतों में गए, तो क्या देखते हैं कि एक छप्पर बना हुआ है। उस छप्पर में 'हेमां' नाम का एक हरि भक्त रहता है। ज़मीन कम होने के कारण अपने हाथ से ही खेती करता है। जो अनाज पैदा होता उसके साथ अपना गुज़ारा करता और बाहर से आये साधु भक्त अतिथि की सेवा करता। हाथ से आटा पीसकर रोटी बना कर खिलाता। गुरु बाबा जी जब उस झोंपड़ी में पहुँचे तो हेमां भक्त इस प्रकार प्रसन्न हुआ जिस प्रकार भगवान् राम के घर आने से भीलनी को प्रसन्नता हुई थी। परमेश्वर तो प्रेम का भूखा है न कि पदार्थों का जैसे भाई साहिब भाई गुरदास जी फ़रमाते हैं—

गोविंद भाउ भगत दा भुखा॥

अनादिकाल से ही यह परमेश्वर का 'विरद्' है। द्वापर में भी दम्भी दुर्योधन के राज महलों को छोड़कर ग़रीब बिदुर के घर को मान दिया था। इस प्रकार हेमां भक्त ने बड़े प्रेम के साथ गुरु अर्जुन देव जी के पवित्र चरणों पर शीश रखकर नमस्कार की। अपने हाथ से जो वस्त्र बनाया था, चारपाई पर बड़े प्रेम के साथ बिछाकर गुरु बाबा जी को ऊपर बिठाया। हेमां के मन में प्रेम की बाढ़ आ गई। नेत्रों से जल बरसने लगा, जल लेकर गुरु बाबा जी चरण प्रक्षालन किए और साथ आए भाई गुरदास तथा बाबा बुड्ढा जी के चरण भी धोये। चरण प्रक्षालन करने वाले जल को अमृत समझकर पी लिया। बाद में हाथ से आटा पीसकर लंगर तैयार किया तथा गुरु बाबा जी को बड़े प्रेम के साथ खिलाया (छकाया) और बाद में समस्त संगत को छकाया। अपने हाथों से पंखा आदि की सेवा करके मन गद्गद् हो गया। इस प्रेमी शिष्य का ऐसा प्रेम देखकर गुरु साहिब जी ने यह पावन शब्द उच्चारण किया। श्री गुरु अर्जुन देव महाराज इस पवित्र शब्द में एक पंक्ति में संत महापुरुषों की सेवा, संगत में प्रवृत्ति और दूसरी पंक्ति में मायाधारी मनमुखों की संगत और सुखों से मना कर रहे हैं।

मूल— **पाणी पखा पीसु दासु कै तब होहि निहालु॥**

अर्थ— हरि के प्यारे सत्पुरुषों की इस प्रकार सेवा करने से गृहस्थ आश्रम भी पवित्र हो जाता है और मुक्ति का द्वार खुल जाता है। अमूल्य मनुष्य जन्म धारण किया सफल हो जाता है जैसे गुरुवाक्—

ब्रहमु बिंदे सो सतिगुरु कहीऐ हरि हरि कथा सुणावै॥
तिसु गुर कउ छादन भोजन पाट पटंबर बहु बिधि सति करिमुखि संचहु
तिसु पुंन की फिरि तोटि न आवै॥

(मलार महला ४, पृष्ठ १२६४)

प्राचीन शास्त्रों में भी ऐसा ही उल्लेख है कि घर में आये संत, भक्त, अतिथि का विधिपूर्वक सत्कार करो, मीठे वचन बोलो, बैठने के लिए चारपाई, पीढ़ी अथवा नीचे ही वस्त्र बिछाकर बिठाओ। जो भी आप के पास है, प्रेम से जल-पान कराओ, इस प्रकार गृहस्थ में रहते परमेश्वर की प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है, जैसे गुरुवाक्—

तिन के घर मंदर महल सराई सभि पवितु हहि
जिनी गुरमुखि सेवक सिख अभिआगत जाइ वरसाते॥

(सोरठि की वार, पृष्ठ ६४८)

मूल— **राज मिलख सिकदारीयां अगनी महि जालु॥**

अर्थ— राज-भाग, जायदाद और चौधराहट के भ्रम-मात्र, क्षण जीवी सुखों को मन में से इस प्रकार जला दे जिस प्रकार अग्नि लकड़ियों को जलाकर भस्मसात् कर देती है। इस माया के जो प्रतीति-मात्र सुख हैं, ये सुख नहीं हैं, यह तो माया का जाल है, फ़रेब है। जीव भ्रमवश इस ठगनी द्वारा ठगे जा रहे हैं।

मूल— **संत जना का छोहरा तिसु चरणी लागि॥**

अर्थ— हे जीव! यदि तू मनुष्य जीवन की सफलता अर्थात् किसी शाश्वत सुख की कामना करता है तो किसी ऐसे सत्पुरुष के चरणों में लग जिसको संतजनों का स्पर्श प्राप्त हो गया हो। श्री गुरु रामदास महाराज परमेश्वर से इसी सुख की कामना करते हैं—

जिन साधु चरण साध पग सेवे तिन सफलिओ जनमु सनाथा॥
मो कउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइआ धारि जगंनाथा॥

(जैतसरी महला ४, पृष्ठ ६९६)

यथा— **करि साधू अंजुली पुनु वड़ा हे॥**
करि डंडउत पुनु वड़ा हे॥

मूल— **माइआ धारी छत्रपति तिन्ह छोडउ तिआगि॥ रहाउ॥**

अर्थ— माया के क्षणभंगुर सुखों में ग्रसित मनमुख, चाहे छत्रपति अर्थात् चक्रवर्ती राजा क्यों न हो, हे मन! तुम उसकी संगत त्याग दो।

मूल— **संतन का दाना रूखा सो सरब निधान॥**

अर्थ— संत महापुरुषों की सेवा करते यदि मात्र दाने ही पेट भरने के लिए मिल जायें, समझो कि मानों सब कुछ प्राप्त हो गया, क्योंकि उनमें ही हर प्रकार की निधियाँ छिपी होती हैं। आगे मनमुखों के पदार्थों की हालत बताते हैं—

मूल— **ग्रिहि साकत छतीह प्रकार ते बिखू समान॥**

अर्थ— परमेश्वर को भूलकर पदार्थों को प्यार करने वाले जो मनमुख लोग हैं, उनके घर में छत्तीस प्रकार के भोजन मानों विष के समान हैं। श्री गुरु नानक देव महाराज जी ने एमनाबाद में हक-हलाल का काम करने वाले निर्धन बढ़ई 'भाई लालो' की बाजरे की रोटी में से दूध निकालकर दिखाया, लेकिन जब क्रूरता से एकत्र किये धन से निर्मित मलिक भागो के मालपूड़े को दबाया, उसमें से रक्त की धारा बह निकली। मलिक भागो चरणों में गिर पड़ा। उसके प्रति गुरु बाबा जी ने यह शब्द उच्चारण किया—

किया खाधै किआ पैधै होइ॥ जा मनि नाही सचा सोइ॥
किया मेवा किआ घिउ गुडु मिठा किआ मैदा किआ मासु॥

किया कपड़ु किआ सेज सुखाली कीजहि भोग बिलास॥
किया लसकर किआ नेब खवासी आवै महली वासु॥
नानक सचे नाम विणु सभे टोल विणासु॥

(वार माझ की, पृष्ठ १४२)

अर्थ— हे मलिक भागो! हरि सिमरन के बिना इन पदार्थों के भोग व्यर्थ हैं, बल्कि विष के समान हैं, क्योंकि पदार्थों के भोगों में लिप्त होकर जीव, ईश्वर को भूल जाता है।

मूल— **भगत जना का लूगरा ओढ़ि नगन न होई॥**

अर्थ— संतों भक्तों की सेवा करते उनकी लंगोटी या फटी हुई लुंगी भी मिल जाए, तो उसको ओढ़ लेने से व्यक्ति कभी नग्न नहीं होता, बल्कि लोक-परलोक के सारे पर्दे ढक जाते हैं। परन्तु—

मूल— **साकत सिरपाउ रेसमी पहिरत पति खोई॥**

अर्थ— लेकिन मनुष्यों ने, जो हरि परमेश्वर से विमुख हैं, रेशमी वस्त्र पहनकर भी दोनों संसारों में अपना मान-सम्मान गँवा लिया।

मूल— **साकत सिउ मुखि जोरिऐ अध वीचहु टूटै॥**

अर्थ— मनमुखों से मित्रता जोड़कर उसका अंत तक निर्वाह करना कठिन है, बीच में ही रह जाती है। जैसे गुरुवाक्—

मनमुखा केरी दोसती माइआ का सनबंधु॥
वेखदिआ ही भजि जानि कदे न पाइनि बंधु॥
जिचरु पैननि खावने तिचरु रखनि गंढु॥
जितु दिनि किछु न होवई तितु दिनि बोलनि गंधु॥
जीअ की सार न जाणनी मनमुख अगिआनी अंधु॥
कूड़ा गंढु न चलई चिकड़ि पथर बंधु॥
अंधे आपु न जाणनी फकड़ु पिटनि धंधु॥
झूठै मोहि लपटाइआ हउ हउ करत बिहंधु॥
क्रिपा करे जिसु आपणी धुरि पूरा करमु करेइ॥
जन नानक से जन उबरे जो सतिगुर सरणि परे॥

(रामकली की वार, पृष्ठ ९५९)

मूल— **हरि जन की सेवा जो करे इतु ऊतहि छूटै॥**

अर्थ— हरि परमेश्वर के सेवकों की सेवा करने वाला पुरुष, इस संसार में माया-मोह की चोटें और परलोक में यम आदि के दण्ड से मुक्त हो जाता है। जैसे गुरुवाक्—

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ॥
ओइ जीवंदे विछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोडि॥

(मारू वार, पृष्ठ ११०२)

गुरु बाबा जी आज्ञा करते हैं, हे जीव! मनमुखों की मित्रता त्यागकर तत्त्ववेत्ता महापुरुषों की खोज कर। माया-प्रेमी इस संसार में ही छोड़कर चले जाते हैं, लेकिन हरि के प्यारे महापुरुष, जिनको अभेद अवस्था प्राप्त हो चुकी है—अंत तक सहायता करते हैं।

मूल— **सब किछु तुम ही ते होआ आपि बणत बणाई॥**
दरसनु भेटत साध का नानक गुण गाई॥

अर्थ— हे परमेश्वर! सब कुछ आपका ही पैदा किया हुआ है और समस्त सृष्टि की रचना स्वयं आपने ही की है। गुरु साहिब फ़रमाते हैं—इस जीवन को चाहिए कि मनुष्य शरीर को धारण करके, संतों का सत्संग, दर्शन करे और हरि का गुण-गान करे, क्योंकि मनुष्य शरीर इसलिए प्राप्त हुआ है। जैसे गुरुवाक्—

भई परापति मानुख देहुरीआ॥ गोबिन्द मिलण की इह तेरी बरीआ॥
अवरि काज तैरै कितै न काम॥ मिलु साधसंगति भजु केवल नाम॥

(आसा महला ५, पृष्ठ १२)

जो जीव गुरु साहिब की आज्ञानुसार, ऐसा जीवन व्यतीत करेगा, वह संसार-सागर से मुक्त होकर जीवन-मृत्यु के समस्त दु:खों से मुक्त हो जाएगा। महापुरुषों के अमृत-वचनों का उस क्षेत्र की संगत पर बहुत प्रभाव पड़ा। वहाँ के जितने हिन्दू थे उपदेश ग्रहण करके नाम, वाणी के 'नितनेमी' और संत-सेवी हो गए, लेकिन जो मुसलमान लोग थे उन्होंने अपना दुष्कर्म नहीं छोड़ा, क्योंकि वे हिन्दू फकीर समझकर सत्संग में नहीं आते थे, लेकिन धोबी के समीप आए कपड़े की मैल हर हालत में उतारी जाती है। धोबी भी हो और कपड़े को अधिक मैला जानकर बिना धोए वापिस कर दे, यह तो बात ही असम्भव है, यह तो अनुचित है। सर्वप्रथम साधारण ढंग से अर्थात् पानी, साबुन की सहायता से मैल उतारने का प्रयत्न करता है, यदि फिर भी दाग़ न उतरें तो फिर अंतिम ढंग अर्थात् मोगरी अथवा थापी से कूटकर सफ़ाई करता है। ऐसा ही एक ढंग महापुरुषों को इस गाँव में अपनाना पड़ा।

एक मुसलमान लड़के का दर्द बन्द होना

उस क्षेत्र के मुसलमान बहुत कठोरचित्त थे। दया-रहित होने के कारण हिन्दुओं को अकारण तंग कर के प्रसन्न होते थे। जिस गुफ़ा में बाबा जी रहते थे वहाँ समीप ही वन में एक हिन्दू साधु पर्णकुटी में निवास एवं तप-साधना करता था। दिन में एक बार मधुकरी करके उदरपूर्ति कर लेना और फिर आठों पहर साधना में जुटे रहना। एक दिन कुछ मुसलमान लड़कों ने उसको हिन्दू फकीर जानकर अकारण मारा-पीटा और अपमान किया। बाबा जी को इस बात का पता चला तो मन में बड़ा दु:ख लगा। अचानक परमेश्वर की लीला क्या हुई कि वह ज़मींदार मुसलमान जिसने उस फकीर को मारा-पीटा था, उसके लड़के को खेत में काम करते पेट-दर्द आरम्भ हो गया। दर्द भी ऐसा उठा कि पैरों से धरती खरोंचने लगा। उठाकर ले आए। वैद्य, हकीम बुलाए लेकिन कुछ फ़र्क न पड़ा।

लड़के की हालत को बिगड़ते देखकर घर वाले घबरा गए। सायं का समय होने के कारण महाराज भी प्रतिदिन की भाँति कथा करने के लिए गुरुद्वारा साहिब पहुँचे। उधर लड़के के घर वालों को किसी ने कहा कि कई दिनों से एक . फकीर गुफ़ा में ठहरा हुआ है, उसके चेहरे पर खुदा का नूर दमक रहा है, यदि वह कृपा करे तो लड़का ठीक हो सकता है। अन्तत: कोई अन्य साधन न देखकर कई मुसलमान लोग एकत्रित होकर बाबा जी के पास आए। चरणों पर गिरकर प्रार्थना की, हे अल्ला के प्यारे! हमसे ग़लती हो गई, कृपा करो, मेहर करो, बच्चा बहुत लाचार है। बाबा जी बोले! भाई हमने तो कुछ किया नहीं, खुदा की खुदाई ही जानें, दु:ख-सुख कर्मानुसार आते हैं, अल्लाह जहाँ रहमदिल है, वहाँ न्यायप्रिय भी है। किए कर्मों के अनुसार जीव को फल देना, उसका इलाही कानून है। समस्त संसार अल्लाह का नूर है, उसके बिना

कोई स्थान नहीं। उसको भूलकर, धार्मिक कट्टरता में आकर किसी को मारना-पीटना, अपमानित करना, दु:ख देना, मानों खुदा को ही दु:ख देना है। देखो भाई नंदलाल जी फ़रमान करते हैं—

खलक खुदा दी जाण के खलक दुखाइ नाहि॥
खलक दुखे नंदलाल जी खालक कोपे ताहि॥

खुदा की प्रजा को जब दु:ख पहुँचता है, खुदा सहन नहीं करता। आपने बिना सोचे समझे उस बेगुनाह फ़कीर को तंग किया, बताओ उसका क्या अपराध था? अपने भक्तों का दु:ख तो खुदा कभी सहन नहीं करता। देखो गुरु गोबिन्द सिंह महाराज फ़रमान करते हैं—

संतन दु:ख पाए ते दुखी॥
सुख पाए साधन के सुखी॥

मुसलमान लोग बार-बार प्रार्थना कर रहे हैं कि आप साक्षात् खुदा का नूर हो। हमारी भूल क्षमा करो, कृपा करो, बालक ठीक हो जाए। मुसलमान लोगों ने विनम्र होकर सच्चे दिल से ग़लती का अहसास किया और कृपा की याचना की। जब लौह पूर्ण गर्म हुआ जानकर करुणा-सागर, कृपालु, ईश्वरीय नूर, बाबा जी के कमल-नेत्र बंद हो गए, दोनों हाथ जुड़ गए। पवित्र मुख से इलाही नाद की ध्वनि गूँजी—

सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी॥
नानक दास संत पाछै परिओ राखि लेहु इह बारी॥

(टोडी महला ५, पृष्ठ ७१३)

बस फिर क्या था, कुछ ही क्षणों में लड़के का दर्द बंद हो गया।

दूसरे दिन सब मुसलमान इकट्ठे होकर बाबा जी के चरणों में पहुँचे, ग़लती करने की क्षमा माँगी, पाप का पश्चाताप किया। लड़के के राज़ी होने पर बाबा जी का धन्यवाद किया। महापुरुषों ने कृपा की दृष्टि डाली, क्रूर स्वभाव वाले कठोर मनों में कोमलता आ गई। जिस साधु का अपमान किया था, उससे भी क्षामा माँगी। सब मुसलमानों ने एकत्रित होकर उस वन में एक कुटिया का निर्माण किया ताकि संत-महात्मा अथवा कोई अन्य अतिथि अभ्यागत आकर उसमें विश्राम कर सके। कुटिया में जो भी आकर ठहरता, उसकी प्रेम के साथ, लंगर आदि की सेवा करते और प्रतिदिन धर्मशाला पहुँचकर अमृतमयी कथा का श्रवण करते। इस प्रकार बाबा जी ने उस नगर 'कपूरे की गृही' में अपने ईश्वरीय वचनों द्वारा, एक मास तक अमृतमयी उपदेश करके, राग-द्वेष की अग्नि में जल रहे जीवों के मनों को शान्त किया। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख अर्थात् सब सम्प्रदाय के लोगों को मनुष्य शरीर के महत्त्व का अहसास करवाया।*

दोबारा 'होती मरदान' जाना

बाबा कर्म सिंह जी महाराज, अपने स्थान पर वर्ष में एक बड़ा भारी उत्सव मनाते थे। उत्सव का समय समीप आया समझकर बाबा कर्म सिंह जी ने संत बुड्ढा सिंह जी के पास 'कपूरे की गृही' गाँव में कुछ व्यक्ति भेजकर वचन किया कि महापुरुषों को उत्सव में सम्मिलित होने के लिए हमारी ओर से प्रार्थना करें। संदेश सुनकर महापुरुषों के प्रेमवश

---

* *ऐसा सुनने में आया है कि पाकिस्तान बनने तक वह कुटिया ठीक-ठाक थी, वहाँ आए साधु-महात्मा उस कुटिया में ठहरते थे और दोनों सम्प्रदायों के लोग बहुत प्रेम के साथ सेवा करते थे।*

आप 'होती मरदान' पहुँच गए। इस उत्सव पर हुजरो, पेशावर आदि दूर-दूर से संगत आई हुई थी। महाराज बुड्ढा सिंह जी, उत्सव के मध्य जो ईश्वरीय आदेश अवतरित होता, उसकी प्रतिदिन व्याख्या सहित कथा करते। आपके अमृतमयी वचनों का संगत के ऊपर इतना प्रभाव पड़ा कि संगत अपने-अपने क्षेत्र में ले जाने के लिए प्रार्थना करने लगी। उत्सव समाप्त होने पर, आप जी बाबा कर्म सिंह महाराज से विदा लेकर संगत के प्रेमवश 'हुजरो' नामक स्थान पर पहुँचे। यहाँ कुछ दिन ठहरकर ईश्वरीय वाणी द्वारा सत्य उपदेश करते रहे। अब पेशावर की संगत के प्रेमवश 'अट्टक' होते हुए पेशावर पहुँचे। वहाँ की संगत ने बहुत प्रेम किया। आप प्रतिदिन गुरुद्वारा साहिब जाकर कथा करते। उस क्षेत्र में बहुत कठोर स्वभाव वाले मुसलमान लोग निवास करते थे जो अकारण हिन्दुओं को तंग करना अपना धर्म समझते थे। इस क्षेत्र में आपने कई दिन ठहरकर कई दैवी कौतुकों द्वारा इनका अहंकार निवारण किया। अन्ततः मुसलमान, हिन्दू, सिक्ख आदि सभी सम्प्रदाय के लोगों को इस पवित्र गुरुवाणी द्वारा साँझा उपदेश किया—

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥
लोगा भरमि न भूलहु भाई॥
खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब थाई॥ रहाउ॥
माटी एक अनेक भाँति करि साजी साजनहारै॥
ना कछु पोच माटी के भांडे ना कछु पोच कुंभारै॥
सभ महि सच्चा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई॥
हुकमु पछानै सु एको जानै बंदा कहीऐ सोई॥
अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुड़ु दीना मीठा॥
कहि कबीर मेरी संका नासी सरबु निरंजनु डीठा॥

(प्रभाती कबीर जी, पृष्ठ -१३४९)

इस पूर्ण शब्द की दृष्टांतों सहित व्याख्या की। आपके पवित्र श्रीमुख से ऐसा अमृतमय उपदेश श्रवण कर, साम्प्रदायिक धर्मों के खतरनाक विष से ऊपर उठकर सब सम्प्रदायों के लोग भ्रातृभाव के साथ रहने लगे। इस प्रकार कुछ दिनों पश्चात् पेशावर की संगत से विदा लेकर रावलपिण्डी, गुजरखान और सच्चा सौदा स्थानों से होते हुए 'ननकाना साहिब' जा पहुँचे। ननकाना साहिब की पवित्र भूमि पर कुछ दिन निवास करके संत मण्डली सहित कश्मीर यात्रा की ओर चल पड़े।

अमरनाथ की यात्रा

श्री ननकाना साहिब की पावन-भूमि से चलकर, गुजरांवाला, गुजरात और वज़ीराबाद होते हुए जम्मू नगर पहुँचे। दूसरे दिन जम्मू राज्य के राजा प्रताप सिंह ने गद्दी नशीन होना था। राज दरबार की ओर से आपको विशेष तौर पर प्रार्थना की गई कि राजतिलक के समय आप भी राजसभा में अवश्य सुशोभित हों। शाही परिवार के प्रेमवश आप जी प्रार्थना स्वीकार करके नियत समय पर राज दरबार पहुँचे। राज तिलक का समस्त शाही उत्सव आपकी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस प्रकार महाराजा प्रताप सिंह के प्रेमवश आप कई दिन जम्मू ठहरकर सत्संग उपदेश करते रहे। अब कुछ दिनों पश्चात् संत मण्डली सहित, जम्मू से चलकर वैष्णों देवी होते हुए, पंचाल पर्वत एवं अन्य पर्वतों की शोभा बढ़ाते 'मटन' तीर्थ की यात्रा करके कश्मीर के अन्य स्थानों पर होते हुए अमरनाथ जा पहुँचे। इस पवित्र स्थान अमरनाथ की यात्रा के पश्चात् वापिस

विभिन्न पड़ावों पर ठहरते हुए मुज़्ज़फ़राबाद नगर पहुँचे। यहाँ के सिद्धपुरुष बाबा जोगा सिंह के स्थान पर उस समय के महंत दयाल सिंह जी को आपके आने का पता लगा तो प्रार्थना करके आपको मण्डली सहित अपने स्थान पर ले गए। क्षेत्र का प्रसिद्ध स्थान होने के कारण संगत तो पहले ही एकत्रित हो चुकी थी, लेकिन आपके सत्संग, उपदेश से प्रभावित होकर, संगत बहुत संख्या में आने लगी। दोनों समय कथा सत्संग के समय बहुत संख्या में संगत एकत्रित होती। इस प्रकार कुछ दिन कथा व्याख्यान द्वारा गुरुवाणी का खुला प्रवाह चलता रहा। अब आपने वापिसी की इच्छा प्रकट की, लेकिन महंत दयाल सिंह जी ने प्रार्थना की कि कुछ दिन यहीं ठहरने की कृपा करो। महंत दयाल सिंह जी के प्रेमवश आप ठहर गए। कथा उपदेश तो प्रतिदिन होता ही था, लेकिन किसी को परमार्थ मार्ग पर चलते शंका, रुकावट होती तो सीधे सरल उपदेश के माध्यम से दूर कर देते। एक दिन कुछ सज्जनों ने प्रार्थना की, महाराज! नाम, वाणी में मन एकाग्र नहीं होता। आप कृपा करके कोई ऐसी युक्ति बताओ जिससे मन एकाग्र हो जाए। आप जी ने दूसरे दिन सत्संग में गुरुनानक देव जी के इस शब्द द्वारा उपदेश किया—

बिमल मझारि बससि निरमल जल पदमनि जावल रे॥
पदमनि जावल जल रस संगति संग दोख नही रे॥ १॥
दादर तू कबहि ना जानसि रे॥
भखसि सिबालु बससि निरमल जल अंम्रितु न लखसि रे॥ १॥ रहाउ॥
बसु जल नित न वसत अलीअल मेर चचा गुन रे॥
चंद कुमुदनी दूरहु निवससि अनभउ कारनि रे॥
अंम्रित खंडु दूधि मधु संचसि तू बन चातुर रे॥
अपना आपु तू कबहु ना छोडसि पिसन प्रीति जिउ रे॥
पंडित संगि वसहि जन मूरख आगम सास सुने॥
अपना आपु तू कबहु न छोडसि सुआन पूछि जिउ रे॥
इकि पाखंडी नामि न राचहि इकि हरि हरि चरणी रे॥
पूरबि लिखिआ पावसि नानक रसना नामु जपि रे॥ ५॥ ४॥

(मारू महला १, पृष्ठ ९९०)

सज्जनो! यह पावन शब्द जगत्गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने 'सालस राए जौहरी' नामक व्यक्ति के प्रति उच्चारण किया था, जो कि हीरे जवाहरात आदि अमूल्य वस्तुओं का व्यापारी तो था, लेकिन मनुष्य जन्म के वास्तविक व्यापार से अनभिज्ञ था। एक दिन की बात है कि गुरु बाबा माया की अग्नि में जलते संसार की ख़बर लेते, मरदाने सहित चले जा रहे थे। भूखे प्यासे, पैदल यात्रा करते, बहुत दिन हो गए लेकिन कोई गाँव अथवा नगर दिखाई नहीं दिया, जहाँ से कोई खाने का पदार्थ लेकर पेट की भूख दूर कर ली जाती। मरदाने ने प्रार्थना की कि ग़रीब निवाज़! बहुत भूख लगी है, मेरे लिए अब और चलना कठिन है। सुनकर गुरु बाबा जी ने कहा कि हे मरदाने! ज़रा ध्यान से देख, वहाँ एक नगर दिखाई दे रहा है। वहाँ जाकर कुछ खा-पीकर अपने पेट की भूख दूर कर आ। मरदाना ने प्रार्थना की, ग़रीब निवाज़! मेरे पास कोई पैसा नहीं, बिना पैसे के कौन खाने को देगा? गुरु बाबा जी जिस स्थान पर खड़े थे, अपने पवित्र चरण से थोड़ी मिट्टी को परे हटाया, नीचे एक 'लाल' पड़ा था। मरदाने को आज्ञा की कि इसको उठा ले, नगर में इसको बेचकर कुछ अन्न, चावल आदि लेकर अपनी भूख को दूर करो। आज्ञा मानकर मरदाना, नगर की ओर गया, लेकिन गुरु बाबा वहीं बैठे रहे। मरदाना 'लाल' बेचने के लिए एक-एक दुकान से होता हुआ सारे नगर में घूमा लेकिन किसी एक ने भी उस 'लाल' को न खरीदा। अपितु इतना भी आदर न मिला कि कोई

खाने को दो रोटियाँ ही दे देता। अन्ततः मरदाना सारे नगर में घूम-फिरकर थक-टूटकर गुरु बाबा के पवित्र चरणों में वापिस आया और प्रार्थना की कि ग़रीब निवाज़! इस लाल को किसी ने खरीदना तो क्या था, इसका मूल्य तक नहीं पूछा। गुरु बाबा जी बोले—हे मरदाना! ऐसी मूल्यवान् वस्तुओं के ग्राहक अधिक नहीं हुआ करते। नगर में एक 'सालसराय' नामक जौहरी रहता है, उसके पास जा। मरदाना यद्यपि भूख का मारा, यात्रा की थकान के कारण चलने से लाचार था, लेकिन फिर भी गुरु बाबा जी की आज्ञा मानकर नगर में पहुँचा। पूछता-पूछता 'सालसराय' जौहरी के पास जा पहुँचा। प्रार्थना की, सेठ जी! मुझे भूख बहुत लगी है, यह 'लाल' ले लो और इसके बदले मुझे पेट भरने के लिए रोटी, चावल अथवा खिचड़ी आदि जो आप दे सकते हो, दे दो, ताकि मैं तृप्ति कर सकूँ। 'सालसराय' ने जब लाल को देखा तो वह आश्चर्यचकित हो गया। व्यवसाय तो चाहे वह भी हीरे जवाहरात का ही करता था, लेकिन इतना सुन्दर लाल आज तक उसने जीवन में कभी नहीं देखा था। लाल को देखकर सौ रुपए पेशगी दिए और फिर मरदाने को पूछा कि इतना सुन्दर अमूल्य लाल आपने कहाँ से प्राप्त किया है? मरदाने ने बताया कि त्रिलोकी नाथ मेरे गुरु बाबा जी नगर से बाहर बैठे हैं, यह सुन्दर लाल उनकी कृपा है। 'सालसराय' के मन में श्रद्धाभाव उत्पन्न हुआ, घर से बहुत स्वादिष्ट भोजन तैयार करवाया और फिर मरदाने को साथ लेकर जगत् के स्वामी गुरु बाबा के चरणों में पहुँचकर बहुत श्रद्धा-भाव से गुरु बाबा जी के पवित्र चरण-कमलों में नमस्कार की। सतगुरु ने भी आदर देकर अपने पास बैठाया। सालसराय कहने लगा, आपका लाल देखकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ है और आपके दर्शन करके कुछ विशेष प्रकार का आनन्द अनुभव करता हुआ, आश्चर्यचकित हो रहा हूँ। आपका देश, नाम?

सतगुरु—देश निरंकार-नाम निरंकारी।

सालस—(ध्यानपूर्वक देखता हुआ और कुछ प्रभावित होकर) कुछ हमें भी 'निरंकार' के सम्बन्ध में जानकारी दो।

सतगुरु— **जह देखा तह दीन दइआला॥**
आइ न जाई प्रभु किरपाला॥
जीआ अंदरि जुगति समाई रहिओ निरालमु राइआ॥

(मारू महला १, पृष्ठ १०३८)

सालस—जो आपको जिधर देखो, दिखाई देता है, वह हमें क्यों नहीं दिखाई देता?

सतगुरु—अनुभव की कमी है।

सालस—महाराज! अनुभव क्यों नहीं होता?

सतगुरु—मायावी पदार्थों की क्षुधा ज्ञान नहीं होने देती।

गुरु बाबा जी की कृपा दृष्टि के फलस्वरूप सालस को संसार के समस्त पदार्थों में कड़वापन दृष्टिगोचर हुआ। गुरु बाबा जी के पवित्र श्री चरणों से लिपटकर, अश्रुपूरित नेत्रों से, चरणों को इस प्रकार प्रक्षालित कर रहा है जैसे कोई सोता (चश्मा) प्रवाहित हो रहा हो। बाबा जी ने पकड़कर उठाया, पूछा क्या इच्छा है?

सालस—महाराज! अनुभव।

गुरु बाबा जी ने कृपा दृष्टि की, अपने शीश से डेढ़ गज़ का 'परना' (कपड़ा) उतारकर सालस के सिर पर बाँध दिया और दया-दृष्टि कर, दिव्य दृष्टि प्रदान कर दी।

यथा— **सालस बांधयो सीसु पर सीघर खुले कपाट॥**
गियाना नंद पूरन भयो ठटियो अउर ही ठाट॥

(गुर प्रताप सूरज)

गुरु बाबा जी ने इस शब्द का उच्चारण किया—

मूल— **बिमल मझारि बससि निरमल जल पदमनि जावल रे॥**
पदमनि जावल जल रस संगति संगि दोख नही रे॥

अर्थ— जैसे कमल पुष्प निर्मल जल में रहता है और उसी जल में सेवर (सिवार) अर्थात् हरे रंग वाली काई भी होती है, दोनों वस्तुएँ निर्मल जल से ही उत्पन्न होती हैं और सदैव दोनों को निर्मल जल की संगत भी मिलती है। फिर भी कमल पुष्प संग दोष से रहित है, निर्लेप है। जल में रहता हुआ भी निर्लेपता के कारण, अपनी सुन्दरता एवं सुगंधि नहीं गँवाता लेकिन हरे रंग वाली काई, जिसने जल से जन्म लेकर जल को तो ढक लिया, लेकिन कमल पुष्प पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकती अर्थात् कमल पुष्प सदैव साथ रहता हुआ भी कुसंगी, जो काई है, उससे निर्लेप रहता है।

मूल— **दादर तू कबहि ना जानसि रे॥**
भखसि सिबालु बससि निरमल जल अंम्रितु न लखसि रे॥

अर्थ— हे मनमुख रूपी मेढक तूने कमल पुष्प रूपी संतों के शुभ गुणों रूपी सुगंधि को नहीं जाना। जैसे मेढक जल में रहकर, काई मिट्टी आदि का आहार तो करता है, लेकिन निर्मल जल की वास्तविकता को नहीं जानता अथवा सदैव कमल पुष्प के साथ रहकर, काई मिट्टी खाने में तो व्यस्त है लेकिन कमल के गुणों की वास्तविकता को नहीं जानता। इसी प्रकार ज्ञानी पुरुष संसार में रहते हुए भी कमल पुष्प की भाँति अर्थात् सुखों-दु:खों के बीच पाप-पुण्य से असंग रहते हैं, लेकिन मनमुख जीव सत्संग को छोड़कर, जगत् की विषय-वासना रूपी काई में मग्न रहते हैं।

मूल— **बसु जल नित न वसत अलीअल मेर चचा गुन रे॥**

अर्थ— भ्रमर, जल में नहीं रहता, अर्थात् पानी से बाहर रहने वाला जीव है, परन्तु सदैव जल में रहने वाले कमल पुष्प की वासना निरन्तर लेता रहता है। इसी प्रकार सत्संग रूपी सरोवर है। उसमें कथा कीर्तन रूपी अमृत जल है, संत जन उसमें सदैव स्नान करते हैं और उसी सरोवर में पदार्थ रूपी काई है, उससे कमल पुष्प की भाँति, उपराम, निर्लेप रहते हैं, लेकिन जो विषय वासना में खचित मनमुख रूपी मेढक हैं, वे कमल पुष्प की सुगंधि से रहित, काई रूपी वासना को ही भक्षण करते रहते हैं अर्थात् पदार्थ रूपी मल को ही खाते रहते हैं, शुभ गुणों वाले भाई एवं माताएँ जो भ्रमर के समान हैं, नियमानुसार सत्संग में पहुँचकर, दर्शन और उपदेश रूपी अमृत पीकर वापिस जाते हैं, क्योंकि उनके भीतर प्रेम भावना है। गुरुदेव आगे उदाहरण देकर समझाते हैं।

मूल— **चंद कुमुदनी दूरहु निवससि अनभउ कारनि रे॥**

अर्थ— कुमुदिनी का पुष्प, रात्रि के समय चन्द्रमा को देखकर ही हर्षित होकर खिल उठता है और रात्रिपर्यन्त अपना शीश चन्द्रमा की ओर झुकाकर रखता है, जबकि दोनों में अत्यधिक दूरी है अर्थात् चन्द्रमा लाखों

कोस दूर गगन में है जबकि कुमुदिनी पृथ्वी पर है, फिर भी कुमुदिनी प्रेमवश दूर से दर्शन करके ही प्रसन्न हो जाती है। इस प्रकार सतगुरु के जो प्यारे शिष्य हैं, वे दर्शन करते ही हर्षित हो जाते हैं, लेकिन जो मनमुख हैं उनके मन में विश्वास नहीं आता। गुरु साहिब जी आगे मनमुखों को एक अन्य उदाहरण देकर समझाते हैं—

मूल— **अंम्रित खंडु दूधि मधु संचसि तू बन चातुर रे॥**
अपना आपु तू कबहु न छोडसि पिसन प्रीति जिउ रे॥

अर्थ— हे जीव! तेरी प्रीति 'चिचिड' (एक जीव) जैसी है। जैसे चिचिड गाय के स्तन के साथ सदैव लगा रहता है। उस स्तन में दूध भी है, लेकिन चिचिड दूध की ओर ध्यान नहीं देता, सदैव रक्तपान करता है, इसी प्रकार मनमुख यदि यदा-कदा सत्संग में आ भी जाए, लेकिन गुण-ग्रहण करने की बजाए, उसका ध्यान अवगुणों की ओर ही रहता है। दूसरा उदाहरण गुरुदेव 'तूँबी' (कड़वे कद्दू को खोखला कर बनाया हुआ साधुओं का पात्र) का देते हैं। जैसे 'तूँबी' में अमृत, चीनी, दूध और मधु डालने पर भी 'तूँबी' मीठी नहीं होती, अपितु कड़वी ही रहती है। इसी प्रकार मनमुख रूपी तूँबी में यदि ज्ञान रूपी अमृत, भक्ति रूपी चीनी, निष्काम कर्म रूपी दूध और नाम रूपी मधु भी डाल दिया जाए तब भी वह अपने अवगुण रूपी विष नहीं त्यागती। जैसा कि भगत कबीर ने फरमान किया है—

लउकी अठसठि तीरथ नाई कउरापनु तऊ न जाई॥

(सोरठि कबीर जी, पृष्ठ ६५६)

कबीर जी, मनमुख की तुलना कड़वी तूँबी (कड़वे कद्दू को खोखला कर बनाया हुआ साधुओं का पात्र) के साथ करते हैं। एक दिन की बात है कि कुछ प्रेमियों ने कबीर जी के पास प्रार्थना की, महाराज! हम तीर्थ यात्रा के लिए जा रहे हैं—अच्छा हो यदि आप भी साथ ही चलें। कबीर जी ने कहा—मेरी तीर्थ यात्रा का कोई विचार नही है, लेकिन आप ऐसा करो—हमारी यह 'तूँबी' है, इसको साथ ले जाओ, इसका स्वभाव कड़वा है ताकि यह तीर्थों के पवित्र जल में स्नान करके अपना स्वभाव बदल ले अर्थात् कड़वी से मीठी हो जाए। वचन मानकर उन प्रेमियों ने तूँबी साथ ले ली, जहाँ जाते आप भी स्नान करते, साथ ही तूँबी का भी करवाते। इस प्रकार तीर्थ यात्रा करके जब वापिस कबीर साहिब के पास पहुँचे, तूँबी चरणों में रखकर नमस्कार की। कबीर जी ने पूछा कि तीर्थ यात्रा कर आए? वहाँ हमारी तूँबी का भी स्नान करवाया? हाँ महाराज, जहाँ भी हमने स्नान आदि किया, तूँबी का भी साथ करवाते रहे। कबीर जी ने चाकू के साथ तूँबी का एक टुकड़ा काटकर उनको दिया। आज्ञा की कि इसको चखकर बताओ, कड़वी तो नहीं रही, मीठी हो गई? प्रेमियों ने जब मुँह लगाया, तो खाई न जाए। कहने लगे महाराज! यह तो बहुत कड़वी है, चखी भी नहीं जाती। कबीर जी कहने लगे, अठासठ तीर्थों का स्नान करने पर भी तूँबी का कड़वापन नहीं गया? जैसे गुरुवाक्—

नावण चले तीरथी मनि खोटै तनि चोर।
इकु भाउ लथी नातिआ दुइ भा चड़ीअसु होर॥
बाहरि धोती तूमड़ी अंदरि विसु निकोर॥
साध भले अणनातिआ चोर सि चोरा चोर॥

(सूही वार पृष्ठ ७८९)

मनमुखों का भी यही हाल है। जैसे चिचिड (एक जीव) गाय के स्तन के साथ रहते हुए भी अमृत रूपी दूध की सार नहीं जानते, अपितु इसके विपरीत रक्त का ही पान करते हैं वैसे ही मनमुख लोग सत्संग में जाकर भी शुभ गुणों

से रिक्त रह जाते हैं बल्कि सारा ध्यान दूसरों के अवगुणों की ओर केन्द्रित कर देते हैं। गुरु बाबा जी 'मनमुख' के लिए एक और उदाहरण देते हैं—

मूल— **पंडित संगि वसहि जन मूरख आगम सास सुने॥**
अपना आपु तू कबहु ना छोडसि सुआन पूछि जिउ रे॥

अर्थ— विद्वानों के साथ मूर्ख भी रहते हैं, शास्त्र भी सुनते हैं और निर्विकार होने की कथा भी श्रवण करते हैं, लेकिन फिर भी अपना अहंकार और खोटा स्वभाव नहीं त्यागते। उदाहरणतया कुत्ते की पूँछ टेढ़ी होती है, उसको कितनी भी देर तक पत्थर के नीचे रखो, जब भी पत्थर उठाएँगे, पूँछ टेढ़ी ही रहेगी। जैसे गुरुवाक्—

सुआन पूछ जिउ होइ ना सूधो कहिओ न कान धरै॥

(पृष्ठ ५३६)

मूल— **इकि पाखंडी नामि न राचहि इकि हरि हरि चरणी रे॥**
पूरबि लिखिआ पावसि नानक रसना नामु जपि रे॥

अर्थ— एक पाखंडी बाह्य वेश से ही कृत्य-कृत्य हो रहा है। नाम में एक क्षण भी ध्यान नहीं लगता और लोगों से पूजा भी करवाता है, लेकिन दूसरा जो सच्चा संत है, वह सदैव परमेश्वर के चरणों से प्रीति रखता हुआ नाम सिमरन में मग्न रहता है इसलिए सतगुरु देव फरमाते हैं कि ये दोनों प्रकार के साधु पूर्व-जन्मों के कर्मों का फल पा रहे हैं। इसलिए भाई सदैव जिह्वा से हरि नाम का जाप करो। यदि पाखंडी भी पुरुषार्थ करके परमेश्वर का नाम जपे और सच्चे संत की संगति करे, तो वह भी अपना जन्म सुधार लेगा और सच्चे आखण्ड आनन्द को प्राप्त हो जाएगा। यदि कुसंगी भी सत्संग में जाकर, शिक्षा ग्रहण करके नाम जपेगा तो उसका भी सुधार हो जाएगा। नहीं तो इस मन को जन्म-जन्मांतर की मैल लगी हुई है। मन मैला होने के कारण यह जीव अविनाशी सुख को छोड़कर अवगुणों में इस प्रकार लिप्त है जैसे गाय के स्तन के साथ चिचिड नामक जीव। गुरुदेव फ़रमान करते हैं—

लोकु अवगणा की बंनै गंठड़ी गुण न विहाझै कोइ॥
गुण का गाहकु नानका विरला कोइ होइ॥

(मारू वार, पृष्ठ १०९२)

विकारी मन का चिह्न क्या है?

जब यह दूसरे के गुणों की ओर ध्यान नहीं देता, केवल अवगुण ही देखता है और अपने अवगुण छिपाकर स्वयं को अत्यन्त गुणवान् समझता है, बस विकारी मन का यही चिह्न है। सार-ग्राही मनुष्य दूसरे के अवगुणों की ओर नहीं देखता, जहाँ से भी गुण मिलें ले लेता है और सदैव अपने भीतर देखता रहता है। उदाहरणतया यदि एक पिपीलिका (चींटी) किसी सुन्दर भवन में प्रवेश कर जाए, उसका ध्यान मकान की सुन्दरता की ओर नहीं जाता, अपितु उसका सारा ध्यान भवन में कहीं सुराख ढूँढने में होता है। इस प्रकार विकारी मन वाला मनुष्य यदि किसी संयोग वश सत्संग में चला जाए तो वहाँ शुभ गुण प्राप्त करने की बजाए उसका सारा ध्यान दूसरों के अवगुणों की ओर ही जाता है। ऐसी अवस्था में उसको सत्संग का क्या रस आएगा?

एक दृष्टांत—एक पिपीलिका (चींटी) मिश्री के पर्वत पर रहती थी। उसका भोजन भी मिश्री ही था। एक दिन घूमती-घुमाती अपने निवास से दूर निकल गई। आगे उसको एक और चींटी मिली जो बहुत निर्बल थी। उस निर्बल

चींटी ने पूछा कि बहन! तू इतनी मोटी किस प्रकार हो गई? क्या खाती है? पहली ने बताया, मैं मिश्री के पर्वत पर रहती हूँ, मेरा भोजन भी मिश्री ही है, इसलिए मैं सबल हूँ। दूसरी ने कहा कि मुझे भी साथ ले चल। पहली वाली बोली—क्यों नहीं, अवश्य मेरे साथ चल। दोनों मिलकर मिश्री के पर्वत पर पहुँच गईं। दोनों ने मिलकर मिश्री खाई। पहली वाली चींटी ने निर्बल को पूछा, बहन! मिश्री आनंददायक लगी। दूसरी बोली, नहीं। मुझे तो कोई आनन्ददायक नहीं लगी। पहली वाली ने पूछा कि तेरे मुँह में क्या है? दूसरी बोली, लिद्द है, क्योंकि जहाँ मैं रहती हूँ, वहाँ लिद्द के बिना दूसरा कोई भोजन नहीं है। पहली बोली, पहले अपने मुख से लिद्द बाहर निकालकर अपना मुख साफ़ कर तब मिश्री का स्वाद आ सकेगा। जब ऐसा किया तो मिश्री का पूर्ण आनन्द आया।

इसी प्रकार जिस व्यक्ति का मन विषय-विकारों एवं ईर्ष्या-द्वेष से विकारी हो चुका है, उसको सत्संग में रस नहीं आता, लेकिन जब वह हृदय में से विषय-विकारों एवं ईर्ष्या-द्वेष सभी खोटे स्वभाव को दूर करता है तो उसको भी सत्संग में रस आता है। इसलिए जो मनुष्य सत्संग श्रवण करके भी अपने अवगुणों को नहीं छोड़ता, वह मानों दादुर (मेढक) के समान है और जो व्यक्ति सार-ग्राही है, अपने में गुणों का निधान रखता है, वह मानों भ्रमर के समान है। ऐसा पुरुष नाम सिमरन से अपना हृदय शुद्ध कर लेता है, इसलिए नाम दुःखों-पापों का नाश करने वाला है।

'सालसराय' गुरु बाबा जी के पवित्र मुख से यह उपदेश सुनकर बहुत हर्षित हुआ। इस मार्ग पर चलकर उसने अपने अमूल्य जन्म की सफलता प्राप्त की। इस प्रकार संत बाबा बुड्ढा सिंह जी अपनी पवित्र रसना से कई दिन गुरुवाणी द्वारा अमृत-वर्षा करते रहे। ऐसा उपदेश श्रवण कर बहुत से प्रेमियों ने मुज़्ज़फराबाद में अपने जीवन का प्रवाह गुरुवाणी की ओर मोड़ दिया और अवगुणों को त्याग सारग्राही बने।

थोड़े दिन इस स्थान पर उपदेश रूपी अमृत वर्षा करके अन्य गाँवों की संगत की प्रार्थना स्वीकार करते हुए, संत दयाल सिंह जी, जो उस स्थान के महंत थे, को साथ लेकर अपनी संत मण्डली सहित इस स्थान से विदा ली। मुज़्ज़फराबाद से चलकर गाँव 'बदशता' जो कि एक नदी के किनारे स्थित है, गुरुद्वारा साहिब छठी पातशाही की यात्रा करके गाँव पफ़ा, हरीपुर, सनकारी आदि स्थानों की संगत को उपदेश करते और सत्पुरुषों को मिलते हुए अमृतसर पहुँच गए।

मिस्टर मैकालिफ़ को गुरुवाणी के अर्थों में सहायता करने हेतु सियालकोट जाना

एक दिन महंत बाबा प्रेम सिंह जी (सियालकोट वाले) जो कि श्री गुरुनानक देव जी के गुरुद्वारे की सेवा करवाते थे, ने अमृतसर आकर उच्च कोटि के विद्वान साधुओं को मिलकर प्रार्थना की कि सियालकोट का एक सैशन जज है—मि० मैकालिफ़। वह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का अंग्रेज़ी में अनुवाद कर रहा है, इसलिए कुछ गहन शब्दों के अर्थ समझने के लिए सहायता चाहता है। आप कोई महापुरुष पर-उपकार करने हेतु सियालकोट भेजकर उसकी सहायता करो। बाबा प्रेम सिंह जी की प्रार्थना सुनकर सब संतों ने विचार किया कि इस पावन कार्य हेतु संत बाबा बुड्ढा सिंह जी को प्रार्थना की जाए। इस हेतु कुछ महात्माओं ने संत बुड्ढा सिंह के पास आकर प्रार्थना की, हे महापुरुष! एक अंग्रेज़ जज गुरु ग्रन्थ साहिब जी का टीका कर रहा है। वह कुछ सहायता चाहता है, कठिन शब्दों को समझाने के लिए आप कृपा करो। बाबा प्रेम सिंह और अन्य साधुओं का वचन मानकर बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज संत मण्डली सहित सियालकोट पहुँच गए। मि० मैकालिफ़ को जो सहायता चाहिए थी अर्थात् जिन शब्दों के सम्बन्ध में उसे शंका थी, वह गुरुवाणी के प्रतिपाद्य के अनुसार दूर की। मि० मैकालिफ़ बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि उसको इस पवित्र कार्य हेतु निर्देशन मिल गया। इस प्रकार मि० मैकालिफ़ ने बहुत

प्रेम के साथ उन्हें एक मास तक अपने पास रखा। आप भी चाहे प्रात:-सायं नगर के गुरुद्वारा साहिब में कथा करते, लेकिन निवास प्रेमवश मि० मैकालिफ़ के बंगले में ही रखा।

कुछ समय वहाँ ठहरकर गुरुद्वारा साहिब 'बाबे की बीड़' दर्शन करते हेतु गए। यह वह पवित्र स्थान है जहाँ साक्षात् श्री गुरु नानक देव जी ने सच-झूठ का व्यापार किया था। संत बाबा प्रेम सिंह जी की प्रार्थना स्वीकार करके, यहाँ भी आप जी ने प्रात:-सायं सत्संग आरम्भ किया। इस ऐतिहासिक स्थान पर और आपके कथा करने के सरल ढंग से प्रभावित होकर संगत भारी संख्या में एकत्रित होना आरम्भ हो गई। एक दिन आपने इस पवित्र स्थान की 'साखी' इस प्रकार सुनाई—

एक बार की बात है कि साहिब श्री गुरुनानक देव महाराज पीड़ित संसार का उपकार करते मरदाने सहित सियालकोट नगर से बाहर इस स्थान पर पहुँचे। आज्ञा की मरदानिया! यह ले दो टके (चार पैसे), बाज़ार में जा एक टके का सच और एक टके का झूठ लेकर आ। आज्ञा मानकर मरदाना नगर में गया। एक-एक दुकान से पूछा कि मुझे एक टके का सच और एक टके का झूठ चाहिए, लेकिन किसी ने न दिया। वस्त्र भण्डार वाले ने कहा कि वस्त्र ले जा, सब्ज़ी वाले ने कहा कि सब्ज़ी ले जा, लेकिन सच, झूठ का सामान कहीं से न मिला। एक-एक दुकान पर सारे नगर में घूमा अन्तत: एक जौहरी की दुकान पर गया। उस दुकान पर एक युवक बैठा था, उसको भी वही प्रश्न किया कि मुझे एक टके का सच एवं एक टके का झूठ चाहिए। उस साहूकार युवक ने मरदाने से दोनों टके ले लिए और एक कागज़ के टुकड़े पर लिख दिया—मृत्यु सत्य और जीवन असत्य। मरदाना कागज़ लेकर नगर से बाहर गुरु बाबा जी के चरणों में पहुँचा और साहूकार युवक वाला कागज़ का टुकड़ा गुरु बाबा जी के चरणों में रखकर नमस्कार की। कागज़ पढ़कर गुरु बाबा जी बोले, मरदानियाँ! जिसने यह लिखा है, उसको बुलाकर ला। वचन मानकर मरदाना उस जौहरी युवक के पास जा पहुँचा, वचन किया कि तुझे मेरे गुरु बाबा जी बुलाते हैं। जौहरी युवक जो फ़क़ीरों का सत्संगी तो था ही, दुकान बंद करके मरदाना के साथ चल पड़ा। जाकर गुरु बाबा जी के पवित्र चरणों पर बड़ी श्रद्धा एवं प्रेम के साथ नमस्कार की। गुरु बाबा जी ने पूछा कि हे प्रेमी! तुम्हारा नाम क्या है? जी! मूला है। यह कागज़ तुमने लिखा है? हाँ महाराज! यह जो लिखा है इस बात को कि मृत्यु सत्य, जीवन असत्य-क्या तुमने यह अच्छी प्रकार परख लिया है? हाँ महाराज! यदि जानता था तभी तो लिखा है। हज़ूर बोले—फिर झूठ में क्या रखा है? झूठा व्यापार छोड़, आ उस प्रभु की नौकरी करें। मूला दुकान तो बंद करके ही आया था, वचन मानकर सतगुरु के साथ ही चल पड़ा।

पर्याप्त समय तक गुरु बाबा जी के साथ रहकर देश-देशान्तर की यात्रा की। गुरु बाबा जी द्वारा किए असंख्य कौतुक प्रत्यक्ष देखे। एक बार का ज़िकर है। काफ़ी दिन हो गए, गुरु बाबा जी समाधि में स्थित हैं। अन्तत: कमल-नेत्र खोले, आज्ञा हुई, हे मूला! तुझे घर वाले याद कर रहे हैं। महाराज क्या कहते हैं? तुम्हारी जहाँ सगाई हुई है, उन लड़की वालों ने कहा यदि परसों तक तुम्हारा बेटा न आया तो हम लड़की का विवाह कहीं और कर देंगे। बता अब विवाह करना है कि फ़क़ीरी करनी है? मूला ने पूछा, महाराज! सियालकोट यहाँ से कितनी दूर है? मूला कोई एक सहस्त्र योजन है।

मूला—महाराज! परसों तक तो मैं किसी भी युक्ति से नहीं पहुँच सकता। विवाह वाली बात तो कुछ ठीक नहीं नज़र आती, लगता है कि अब तो फ़क़ीरी ही करनी पड़ेगी।

गुरु बाबा जी बोले, हे मूला! जाने वाली चिंता तो तू प्रभु पर छोड़ दे। यदि तुम्हारी शादी आदि की इच्छा है तो प्रभु तो एक क्षणमात्र में पहुँचा देंगे, लेकिन निर्णय तुमने स्वयं लेना है कि दोनों मार्गों में से किस मार्ग की ओर गमन करना है—गृहस्थ का अथवा त्याग का।

मूला—महाराज! यदि मैं परसों से पूर्व पहुँच सकता हूँ, तो विवाह कर लेता हूँ। साथ ही घर वाले भी प्रसन्न हो जाएँगे। थोड़े दिनों बाद फिर आपके चरणों में हाज़िर हो जाऊँगा। गुरु बाबा जी ने वचन किया कि हे मूला! अपने घर का ध्यान करते हुए नेत्र बंद कर लो। थोड़ी देर बाद मूला ने नेत्र खोले तो क्या देखता है कि सियालकोट अपने घर वालों के मध्य बैठा है। घर वाले बड़े प्रसन्न हुए, लड़की वालों को संदेश भेजा और निश्चित दिन पर विवाह कर दिया। मूला अब गृहस्थ के सुख एवं कारोबार में इतना मग्न हो गया कि गुरु बाबा जी को दिल से भुला दिया।

पर्याप्त समय गुज़र जाने के पश्चात् एक दिन संसार के स्वामी श्री गुरु नानक देव महाराज जी ने आज्ञा दी कि मरदानिया! मूला कितना समय हमारे साथ रहकर सेवा करता रहा है, लेकिन अब उस माया के क्षणभंगुर सुख ने भ्रमित कर दिया है, चल उसका कुशल क्षेम पूछें। नेत्र बंद कर ले और करतार का ध्यान कर। बस ऐसा करने की देरी थी तो सियालकोट उसी बाग़ में आकर विराजमान हो गए। आज्ञा की मरदाना! मूले को बुलाकर ला। आज्ञा मानकर मरदाना चल पड़ा। आगे दुकान पर बैठे मूले ने दूर से मरदाना को देखकर अपनी धर्मपत्नी को बताया कि जो संत मेरे को अपने साथ ले गए थे, वे आज फिर आ रहे हैं, ऐसा न हो कि मुझे फिर साथ चलने के लिए कहें। इससे अच्छा है कि दुकान पर तू स्वयं बैठ जा और मैं भीतर छिप जाता हूँ। यदि मेरे बारे में पूछताछ की तो तुम कह देना कि घर नहीं है।

धर्मपत्नी पहले ही जानती थी कि साधु इसको साथ ले गए थे, कहीं ऐसा न हो कि अब फिर साथ ले जाएँ। इतने में मरदाना दुकान पर पहुँचा। क्या देखता है, दुकान वही लगती है, लेकिन मूला के स्थान पर कोई युवती बैठी है। पूछा ,बीबी! मूले को मिलना है। मेरे गुरु बाबा जी नगर के बाहर बैठे बाग़ में मूले को बुला रहे हैं। युवती ने उत्तर दिया कि वे तो घर नहीं हैं। उत्तर लेकर मरदाना वापिस गुरु चरणों में पहुँचा, प्रार्थना की कि ग़रीब निवाज़! मूला घर नहीं है। गुरु बाबा जी कुछ मुस्कराए, आज्ञा की कि हे मरदाना! एक बार दोबारा जा। उनको कहना कि मूले को मिलने के लिए हम बड़ी दूर से आए हैं। आज्ञा पाकर मरदाना वापिस नगर आया। आगे देखा वही युवती बैठी है। बोला! बीबी! हम मूला को मिलने के लिए बहुत दूर से चलकर आए हैं। जगत्नाथ गुरु बाबा जी हज़ारों कोसों का मार्ग तय करके, भूख प्यास और अनेक कष्ट सहकर अपनों को अर्थात् जिनको अपना बना लिया है जीवन-दान देने के लिए उनके पास जाते हैं। आप इसका आदर करो, मूला जहाँ गया है, वहाँ से उसे बुलाकर मेरे साथ भेजो ताकि गुरु बाबा जी की खुशी मिल सके। युवती बोली कि बाबा! यहाँ है ही नहीं, कहीं दूर गए हैं। मरदाना ने वापस आकर गुरु बाबा जी को सारी कथा फिर सुनाई। गुरु बाबा जी मुस्कराकर बोले, जीवों के भीतर मनमुखता के कारण कितनी चंचलता आ जाती है। माया के क्षणभंगुर सुखों की बदली के साथ सत्य के सूर्य को छिपाना चाहते हैं।

आज्ञा की कि मरदाना! एक बार फिर जा, उसको अपना बनाया है, अपने के भले के लिए फिर कष्ट उठा। मरदाना का मन तो नहीं था, लेकिन आज्ञा का बंधा, फिर उठ चला। पहुँचकर देखा, वही युवती दुकान पर बैठी है। बोला—बेटा? मूला को मेरे साथ भेज दो, गुरु बाबा जी साक्षात् निरंकार का रूप हैं। वे जीवों की भलाई के लिए संसार में आए हैं, इसलिए अपना समझकर ही बार-बार बुला रहे हैं। मूला की पत्नी थोड़ा क्रोध में आकर बोली कि बाबा! तुझे एक

बार कहा है, दो बार कहा है कि वे यहाँ नहीं हैं, तू फिर नहीं हटता, बार-बार आकर वही बात कर रहा है। बेचारा मरदाना शोकाकुल होकर वापिस आ गया। प्रार्थना की, ग़रीब निवाज़! मूला कहीं बाहर गया है, घर नहीं।

मूला की और उसकी पत्नी की कुटिलता देखकर गुरु बाबा जी के सुमेरू पर्वत की भाँति, अचल चेहरे पर आभा छा गई। सहज स्वभाव वचन कर दिया—

नालि किराड़ा दोसती कूड़ै कूड़ी पाइ॥
मरणु न जापै मूलिआ आवै कितै थाइ॥

(श्लोक वारां ते वधीक, १४१२)

अच्छा मरदाना! मूला है ही नहीं। बस, फिर क्या था। साधु के सहज स्वभाव किए वचन के सम्बन्ध में गुरु अर्जुन देव महाराज जी कुछ इस प्रकार वर्णन करते हैं—

माई सति सति सति हरि सति सति सति साधा॥
बचनु गुरु जो पूरै कहिओ मैं छीकि गांठरी बाधा।
निसि बासुर नखिअत्र बिनासी रवि ससीअर बेनाधा॥
गिरि बसुधा जल पवन जाइगो इकि साध वचन अटलाधा॥
अंड बिनासी जेर बिनासी उतभुज सेत बिनाथा॥
चारि बिनासी खटहि बिनासी इकि साध बचन निहचलाधा॥
राज बिनासी ताम बिनासी सातकु भी बेनाधा॥
द्रिसटिमान है सगल बिनासी इकि साध बचन आगाधा॥

(सारंग महला ५, पृष्ठ १२०४)

गुरु अर्जुन देव महाराज फ़रमान करते हैं, रात्रि, दिवस, सूर्य, चन्द्रमा, पर्वत, पृथ्वी, जल, वायु, चारों योनियाँ, चार वेद, छः शास्त्र और तीनों गुण नामधारी हैं। अधिक क्या, जो कुछ नज़र आता है सब नाशवान है, लेकिन साधु का वचन कभी नाश नहीं होता। तीनों काल, चौदह भवनों में सदैव सत्य है। उधर मूला घर के भीतर पाथियों के गुहारे में इसलिए छिपा बैठा था कि मरदाना कहीं आकर देख न ले। गुहारे में बैठे एक सर्प ने डस लिया और उसी समय उसकी मृत्यु हो गई। जब पत्नी ने भीतर आकर मूले को मरा देखा तो रोना-पीटना आरम्भ हो गया। आवाज़ सुनकर पास-पड़ौस के लोग एकत्रित हो गए। अचानक ऐसा हुआ देखकर हा-हाकार मच गई। मूले की पत्नी ने मरदाना के तीन बार घर आने वाली कहानी रो-रो कर सुनाई। बीच में से किसी ने राय दी, महापुरुष दयालु होते हैं, अब भी मूला के मृत शरीर को उनके चरणों में ले चलें, हो सकता है कृपालु कोई भाग्य रेखा में परिवर्तन कर दें। मूला के मृत शरीर को उठाकर गुरु बाबा जी के चरणों में लिटा दिया। घर वाले सब लोग लगे प्रार्थना करने, महाराज! कृपा करो, जीव ग़लती का पुतला है, आप सदा क्षमाशील हो, यह फिर भी आपका ही है, भूल क्षमा करो। गुरु बाबा जी बोले, यदि हमारा था तभी तो मरदाना को तीन बार भेजा इसको बुलाने के लिए, लेकिन इसने अपनी मनमुखता नहीं छोड़ी। अब जो बाण तरकश में से निकल गया, वह वापिस नहीं आ सकता। मूला के घर वाले

फिर प्रार्थनाएँ करें, महाराज यह आपका ही है, अपने की लाज रखो, भूल क्षमा करो। हजूर बोले, हाँ क्षमा करेंगे अब दशम वेश में इसका उद्धार करेंगे। यह उतनी देर तक मनमुखता का परिणाम खाएगा।*

साधु संगत! इस प्रकार महापुरुषों का संसार में आने का अपना कोई प्रयोजन नहीं होता, जीवों के उद्धार के लिए ही आते हैं, लेकिन जीव, लोभ, मोह के वशीभूत हुए पूरा-पूरा लाभ नहीं उठाते। महापुरुषों के पवित्र मुख से मूले की साखी (आख्यान) सुनकर कुछ प्रेमियों ने प्रार्थना की महाराज! मूला गुरु बाबा के साथ रहकर अनेक कौतुक देख चुका था, फिर वह भटक क्यों गया? श्रद्धालुओं का प्रश्न सुनकर महापुरुषों ने वचन किया कि प्रेमियों! तुम्हारे शंका की निवृत्ति कल की जाएगी। दूसरे दिन संत बाबा बुड्ढा सिंह जी ने संगत की शंका निवृत्ति के लिए 'प्रभाती राग' के निम्न शब्द की कथा की—

गोतमु तपा अहिलिआ इसत्री तिसु देखि इंद्रु लुभाइआ॥
सहस सरीर चिहन भग हूए ता मनि पछोताइआ॥
कोई जाणि न भूलै भाई॥
सो भूलै जिसु आपि भुलाए बूझै जिसै बुझाई॥ रहाउ॥
तिनि हरी चंदि प्रिथमी पति राजै कागदि कीम न पाई॥
अउगुणु जाणै त पुंन करे किउ किउ नेखासि बिकाई॥
करउ अढाई धरती मांगी बावन रूपि बहानै॥
किउ पइआलि जाइ किउ छलीऐ जे बलि रूपु पछानै॥
राजा जनमेजा दे मतीं बरजि बिआसि पढ़ाइआ॥
तिन्हि करि जग अठारह घाए किरतु न चलै चलाइआ॥
गणत न गणी हुकमु पछाणा बोली भाइ सुभाई॥
जो किछु वरतै तुधै सलाही सभ तेरी वडिआई॥
गुरमुखि अलिपतु लेपु कदे न लागै सदा रहै सरणाई॥
मनमुखु मुगधु आगै चेतै नाही दुखि लागै पछुताई॥
आपे करे कराए करता जिनि एह रचना रचीऐ॥
हरि अभिमानु न जाई जीअहु अभिमाने पै पचीऐ॥
भुलण विचि कीआ सभु कोई करता आपि न भुलै॥
नानक सचि नामि निसतारा को गुर परसादि अघुलै॥

(प्रभाती महला १ दखणी, पृष्ठ १३४४)

साधु संगत! कुछ प्रेमियों के मन में यह शंका उठी है कि मूला ने यह भूल क्यों की? अकाल पुरख वाहिगुरु (कालातीत पुरुष वाहिगुरु) ने माया की रचना कर अपने विलास के लिए क्रीड़ा-संसार की उत्पत्ति की। माया का सांसारिक नाम ही 'भ्रम' है। संसार एवं भ्रम एक ही वस्तु के दो नाम हैं। इनमें 'भ्रम रहित' सच तो एक परमेश्वर ही है। देखो गुरु साहिब आप ही फ़रमाते हैं—**भुलण विच कीआ सभु कोई करता आप न भुलै॥**

यथा— **भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरु करतारु॥**

(सिरीरागु महला १, पृष्ठ ६१)

---

* *दशम् पातशाह श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने नान्देड़ हजूर साहिब मूले को एक खरगोश के रूप में मारकर उद्धार किया, जहाँ आजकल गोदावरी के तट पर गुरुद्वारा शिकार घाट सुशोभित है।*

भूल से रहित तो एक गुरु ही है। अन्य सब जीव भ्रमशील हैं। क्योंकि जीव अज्ञानता वश प्रत्येक कर्म में कर्त्तापन की कल्पना कर लेते हैं, 'कर्त्तापन' के अधीन किए गए समस्त कार्यों का फल भी फिर भोगना पड़ता है। इस पावन शब्द में श्री गुरु नानक देव जी बड़े-बड़ों का वर्णन कर रहे हैं, जिनको परमेश्वर की माया ने अपनी शक्ति द्वारा भ्रमित कर दिया। जब बड़ों की गिनती की जाए तो वे तो स्वयं ही उसमें आ जाते हैं। गुरु बाबा जी फ़रमान करते हैं—

मूल— **कोई जाणि न भुलै भाई॥ सो भूलै जिसु आपि भुलाए बूझै जिसै बुझाई॥**

अर्थ— हे भाई! जो व्यक्ति भूल करता है, वह अकारण नहीं करता। भूलता वही है जिसको परमात्मा आप विस्मृत करता है क्योंकि उसने जीवों को कर्मानुसार फल देना है अत: जिस व्यक्ति को परमेश्वर सद्‌बुद्धि देता है अर्थात् सुमति देता है, वह भूल से बच जाता है, भाव बुद्धिमान रहता है।

मूल— **गोतमु तपा अहिलिआ इसत्री तिसु देखि इंद्र लुभाइआ॥**
सहस सरीर चिहन भग हूये ता मनि पछोताइआ॥

अर्थ— गुरु बाबा जी स्वर्ग के स्वामी इन्द्र का उदाहरण देकर समझाते हैं। स्वर्ग शारीरिक सुखों की अवधि मानी जाती है, जो कि पुण्यों के फलस्वरूप प्राप्त होता है। लेकिन इतने सुख होने के बावजूद भी स्वर्ग का स्वामी इन्द्र संतुष्ट न हुआ। सतयुग में एक गौतम ऋषि हुआ है, उसकी स्त्री, जिसका नाम अहिल्या था, बहुत रूपवान् अर्थात् सुन्दर थी। उसका रूप देखकर स्वर्ग का राजा इन्द्र लोभायमान अर्थात् मोहित हो गया। उस पाप कर्म का फल इन्द्र के शरीर पर एक सहस्र भग के निशान हो गए। फलस्वरूप इन्द्र को पश्चात्ताप करना पड़ा। जैसे गुरुवाक्—

सहंसर दान दे इन्द्र रोआइआ।

(रामकली वार, पृष्ठ ९५३)

इस प्रकार इन्द्र से भूल हुई। फलस्वरूप उसको रोना पड़ा। दूसरा उदाहरण गुरु बाबा जी राजा हरिचंद जी का देकर समझाते हैं।

मूल— **तिनि हरी चंदि प्रिथमी पति राजै कागदि कीम न पाई॥**
अउगणु जाणै त पुंन करे किउ किउ नेखासि बिकाई॥

अर्थ— महादानी राजा हरिश्चन्द्र पृथ्वी-पति अर्थात् मालिक था। उसने इतने पुण्य किए कि उनका विस्तार कागज़ के ऊपर लिखा नहीं जा सकता। अर्थात् उसने मस्तक रूपी कागज़ पर कर्मों रूपी लेख को न जाना। बड़ा दानी था, यदि पुण्य कर्म में कोई अवगुण देखता तो घर-घर में जाकर क्यों बिकता? अर्थात् पुण्य कर्म श्रेष्ठ माना जाता है, फिर भी मुक्त न हुआ, क्योंकि पुण्य के बदले ही अपना राज-भाग और समस्त परिवार लगा दिया और स्वयं भी श्मशान की रखवाली करने वाले चांडाल के घर नौकरी की। जैसे गुरुवाक्—

हरीचंदु दानु करै जसु लेवै॥
बिनु गुर अंतु न पाइ अभेवै॥
आपि भुलाइ आपे मति देवै॥

(गउड़ी महला १, पृष्ठ २२४)

तीसरा उदाहरण गुरु नानक देव महाराज राजा बलि का देते हैं।

मूल— **करउ अढाई धरती मांगी बावन रूपि बहानै॥**
किउ पइआलि जाइ किउ छलीऐ जे बलि रूपु पछानै।

अर्थ— हरि ने वामन का बहाना बनाकर बलि राजा से ढ़ाई पग भूमि माँगी, यदि राजा बलि, वामन का रूप पहचान लेता, तो क्यों छला जाता और पाताल क्यों जाता?

व्याख्या—सतयुग के समय भक्त प्रह्लाद का पौत्र राजा बलि हुआ है। राजा बलि यज्ञ करके इन्द्र पदवी प्राप्त करना चाहता था। जब इस बात का पता स्वर्ग में लगा तो इन्द्र का सिंहासन डोल गया। पुत्र का राज्य जाते देखकर इन्द्र की माता दिति ने भगवान् विष्णु की आराधना की। दिति की आराधना पर प्रसन्न होकर भगवान् कहने लगे कि बताओ क्या चाहिए? दिति ने कहा कि मेरे पुत्र का राज्य स्थिर रहे। भगवान् ने कहा 'तथास्तु'। भगवान् ने मोहिनी मूर्ति वामन रूप धारण कर बलि राजा के महलों में जाकर भिक्षा माँगी। बलि राजा ने बड़े प्रेम के साथ पूछा, महाराज! बताओ तुम्हें क्या चाहिए। वामन ने कहा कि संतोषी ब्राह्मण हूँ, आपके समीप कुटिया बनाकर रहना चाहता हूँ। मुझे केवल ढ़ाई पग भूमि चाहिए क्योंकि मेरे पास भजन करने के लिए कोई स्थान नहीं है। सुनकर राजा बलि ने बड़ी प्रसन्नता के साथ दान देने का वचन दे दिया लेकिन पुरोहित शुक्राचार्य को वामन पर कुछ शंका हो गई। राजा को बोला—राजन्! यह कोई छलिया प्रतीत हो रहा है, लेकिन राजा यह बात न समझा। शीघ्रता में दान देने का वचन दे दिया। वचन मिलते ही वामन ने अपना रूप बदलकर विराट् रूप धारण कर लिया अर्थात् इतना बड़ा आकार बना दिया कि एक कदम में ही पूर्ण पृथ्वी आ गई और दूसरे कदम में समस्त ब्रह्मलोक आ गया। ब्रह्मलोक में जब भगवान् के चरण पहुँचे तो ब्रह्मा ने भगवान् का चरण प्रक्षालन कर, वह जल कमण्डल में डाल दिया। जिस समय भगीरथ ने अपने पितरों के उद्धार के लिए ब्रह्मा की आराधना की, उसकी तपस्या पर प्रसन्न होकर, ब्रह्मा ने पूछा कि बताओ क्या चाहते हो? ब्रह्मा को प्रसन्न देखकर भगीरथ बोला—गंगा जल जो भगवान् के चरणों का जल है, वह मुझे चाहिए। ब्रह्मा जी बोले, गंगा जल मेरे कमण्डल में है, लेकिन वह मातृ-लोक में नहीं जा सकता, क्योंकि जिस समय उसको छोड़ा वह पाताल में चला जाएगा, इसलिए तुम भगवान् शिव को प्रसन्न करो, यदि वे अपनी जटाओं में गंगा धारण करना स्वीकार कर लें, फिर गंगा मातृ-लोक में जा सकती है। भगीरथ ने ब्रह्मा का वचन मानकर शिव की प्रसन्नता हेतु घोर तपस्या की।

शिव भगीरथ की तपस्या पर प्रसन्न होकर कहने लगे—क्या चाहते हो? शिव को प्रसन्न हुआ जानकर भगीरथ ने प्रार्थना की महाराज! मैं अपने पितरों के उद्धार हेतु गंगा को मातृ-लोक में ले जाना चाहता हूँ, बस यह मेरी इच्छा है।

भगवान् शिव ने प्रसन्न होकर अपनी जटाओं में से गंगा देने का वचन किया। भगीरथ गंगा लेकर सागर तक पहुँचा जहाँ उसके पूर्वज थे। इस प्रकार उसने अपने पूर्वजों का उद्धार किया। उस स्थान को आजकल गंगा-सागर कहते हैं। इस प्रकार गंगा-माँ भगीरथ की तपस्या का फल देने हेतु और संसार के पाप-नष्ट करने के लिए वामन अवतार के चरणों का जल है। इस प्रकार वामन अवतार के दो पग तो पूरे हो गए, लेकिन आधा पग अभी भी शेष रह गया क्योंकि महाराजा बलि से ढ़ाई पग भूमि का वचन लिया था। भगवान् ने कहा कि आपने ढ़ाई पग भूमि का वचन दिया है इसलिए आधा पग अभी शेष है। बलि बोले, महाराज! अब तो मेरी देह ही शेष है, यह ले सकते हो।

भगवान् ने कहा ठीक है, वचन पूरा करो। अपने शरीर का माप दो। आधा पग के बदले जब शरीर का माप करने लगे तो भगवान् ने अपना पग रखकर राजा बलि को पाताल में पहुँचा दिया। अब पैर उठाने लगे तो बलि ने चरण पकड़ लिए, कहने लगे, आपने वचन दिया था मैं तुम्हारे द्वार पर कुटिया बनाकर रहूँगा। अब वचन पूरा करो। भगवान् प्रसन्न होकर कहने लगे—'तथास्तु' अर्थात् स्वीकार है। बलि को वरदान दिया, आप पाताल का राज्य लो और स्वर्ग से भी

अधिक सुख पाओ। यथा गुरुवाक्—

नामा कहै भगति बसि केसव अजहूँ बलि के दुआर खरो॥

(मारू नामदेउ जी, पृष्ठ ११०५)

साधु संगत चतुर्थ उदाहरण गुरु बाबा जी राजा जनमेजय का देकर समझाते हैं—

मूल— **राजा जनमेजा दे मतीं बरजि बिआसि पढ़ाइआ॥**

तिन्हि करि जग अठारह घाए किरतु न चलै चलाइआ॥

अर्थ— राजा जनमेजय को श्री वेदव्यास जी ने शुभ सलाह देकर पढ़ाया और वर्जित किया, परन्तु फिर भी इसने यज्ञ में अठारह कुलों के ब्राह्मणों को मार दिया क्योंकि कर्मों के लेख मिटते नहीं हैं।

व्याख्या—राजा जनमेजय, अर्जुन पाण्डव का प्रपौत्र और राजा परीक्षित का पुत्र था। एक दिन की बात है जिस समय श्री वेदव्यास जी जनमेजय को महाभारत पढ़ा रहे थे जनमेजय ने प्रश्न किया कि मेरे परदादा युधिष्ठिर आदि पाँचों भ्राता बड़े धर्मात्मा थे और उनके शीश पर सदैव भगवान् कृष्ण का कृपा हस्त था, फिर उन्होंने जुआ क्यों खेला? राज-भाग हारकर तेरह वर्ष वनों में कष्ट उठाए, बड़ा भारी युद्ध किया, समस्त कुल का नाश हुआ, बड़े-बड़े विद्वान, बड़े-बड़े महाबली योद्धे युद्ध में मारे गए। उनको जुए जैसे बुरे कर्म से भगवान् श्रीकृष्ण ने क्यों नहीं रोका? वेद व्यास जी बोले, भावी प्रबल है, अमिट है, इसको कोई मिटा नहीं सकता। किसी के वर्जित करने पर भी व्यक्ति नहीं रुकता, जीव वही करता है जो उसके भाल पर लेख लिखा है। वेद व्यास का वचन सुनकर राजा का संशय दूर नहीं हुआ। बोला जब पता चल जाए कि विष पान पर मृत्यु अवश्यंभावी है, यदि फिर भी विषपान करता है, ऐसे व्यक्ति को बुद्धिमान कौन कहेगा? जिस मार्ग का पहले ही पता चल जाए कि खतरनाक है, फिर क्यों न वह मार्ग त्याग दिया जाए? वेद व्यास जी समझ गए कि राजा अहंकार वश अपने आपको बुद्धिमान समझता है और बड़ों को मूर्ख। वेद व्यास जी बोले, हे राजन्! तुम अपने परदादा की तो बात छोड़ो, अपनी चिंता कर। तेरे भाल पर लिखे लेख अनुसार जो भावी तुम्हारे साथ होने वाली है, मैं तुझे बताता हूँ, ज़रा ध्यान देकर सुन।

तू एक दिन श्याम अश्व पर चढ़कर दक्षिण दिशा की ओर शिकार के लिए जाएगा। उस वन में से एक युवती को अपने घर ले आएगा। पहले उसको दासी, फिर रानी और फिर पटरानी बनाएगा। उसके कहने पर फिर एक बड़ा यज्ञ करेगा जिसमें अठारह कुलों के ब्राह्मणों को तेल में जलाकर मारेगा। उस पाप कर्म के फलस्वरूप तुझे कोढ़ का रोग लगेगा। जो तुम्हारे साथ होने वाला है तुझे बता दिया, अब तुम अपना बचाव कर लेना।

वेद व्यास जी के मुख से सुनकर राजा भयभीत हो गया। उसने अनेकों यत्न किए जैसे घोड़े बेच दिए, आखेट करना बंद कर दिया। लेकिन फिर भी हुआ वही जो वेद व्यास जी ने कहा था।

इस प्रकार हे साधु संगत कर्मों का फल अमिट है। ब्राह्मणों को गर्म तेल में क्यों जलाया गया? इसके पीछे भी उनका अपना कर्म ही था। राजा परीक्षित की मृत्यु सर्प के डसने के साथ हुई थी, जनमेजय ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए ब्राह्मणों से सलाह पूछी। ब्राह्मणों ने जनमेजय को सलाह दी कि नाग-यज्ञ किया जाए, तेल के कड़ाहे तपाए जाएँ। यज्ञ एवं मंत्र के बल पर नाग स्वयं आकर तेल में जलेंगे। हुआ भी ऐसा ही। इस प्रकार जीव को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। श्री गुरु नानक देव जी ने हमें चार उदाहरण देकर समझाया है कि

हे भाई! अपने शुभ कार्यों का अहंकार न करो, दूसरों के मंद कर्मों पर ग्लानि न करो, सदैव परमेश्वर के आगे ऐसे प्रार्थना करो—

मूल— **गणत न गंणी हुकमु पछाणा बोली भाइ सुभाई॥**
जो किछु वरतै तुधै सलाही सभ तेरी वडिआई॥

अर्थ— हे परमेश्वर! मैं अपने कर्मों को नहीं गिन सकता। सब कुछ तुम्हारे आदेश के अन्तर्गत हो रहा है और जो मैं बोलता हूँ, वह भी सहज स्वभाव से ही बोलता हूँ। जगत् आपके आदेश के अन्तर्गत चल रहा है। यह जानकर मैं आपका ही गुणगान करता हूँ, यह सब तुम्हारा ही यश है। हे प्रेमी जनो! जो कुछ हो रहा है, सब परमेश्वर का ही आदेश है, इस पर कभी ऐतराज़ न करो। परमेश्वर के सम्मुख सदैव दीन भाव से प्रार्थना करो कि हे प्रभु! कृपा कर, मुझे तुम्हारा आदेश सदैव अनुकूल लगता रहे, जो तुम करते हो वह मुझे बुरा न लगे, क्योंकि सब हृदयों में तुम ही व्याप्त हो। कृपा करो, बजाए बुरा-भला देखने के मैं सदैव आपका गुणगान करता रहूँ।

मूल— **गुरमुखि अलिपतु लेपु कदे न लागै सदा रहै सरणाई॥**
मनमुखु मुगधु आगै चेतै नाही दुखि लागै पछुताई॥

अर्थ— गुरुमुख सदैव परमेश्वर के आदेश में रहते हुए दु:ख-सुख से निर्लिप्त रहते हैं अर्थात् कभी भी लिप्त नहीं होते, सदैव परमेश्वर की शरण में रहते हैं, लेकिन अपने मन के पीछे चलने वाले मनमुख इस बात को नहीं जानते, सदैव अपनी मूर्खतावश आदेश से दूर रहते हैं, जब दु:ख आता है तो पश्चात्ताप करते हैं।

मूल— **आपे करे कराए करता जिनि एह रचना रचीऐ॥**
हरि अभिमानु न जाई जीअहु अभिमाने पै पचीऐ॥

अर्थ— प्रभु आप ही जगत् की रचना करके अनेक प्रकार के जीव पैदा करता है और स्वयं ही जीवों से कर्म करवाता है और कर्मों का फल भी जीवों द्वारा निष्पन्न करवाता है, लेकिन यह जीव अहंकार के वशीभूत होकर समस्त कर्मों का करने वाला स्वयं अपने को मान लेता है, इस कारण अहंकार की अग्नि में सदैव जलता रहता है।

मूल— **भुलण विचि कीआ सभु कोई करता आपि न भुलै॥**
नानक सचि नामि निसतारा को गुर परसादि अघुलै॥

अर्थ— अकाल पुरख (कालातीत पुरुष) वाहिगुरु ने अपनी माया द्वारा सब जीवों को भ्रम में डाला है लेकिन परमेश्वर स्वयं माया-पति होने के कारण कभी भ्रमित नहीं होता। गुरु बाबा जी फ़रमान करते हैं कि जो व्यक्ति सच्चे नाम का आश्रय लेते हैं, वे सब दु:खों से मुक्त होकर सदैव के लिए सुखी हो जाते हैं, लेकिन कोई-कोई गुरमुख गुरु की कृपा द्वारा नाम जपकर दु:ख रूपी माया को पार कर जाता है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के इस पावन शब्द की विस्तारपूर्वक व्याख्या महापुरुषों के पावन-मुख से श्रवण करके सारी संगत का संशय निवृत्त हो गया। महाराज बुड्ढा सिंह जी की कथा श्रवण करने के लिए नगर के अतिरिक्त गाँव की संगत भी आती थी। कुछ गाँवों की संगत ने प्रार्थना की महाराज! हमारे गाँव में भी पदार्पण करो, जो लोग यहाँ नहीं आ सके वे भी लाभ उठा सकें। संगत की प्रार्थना स्वीकार करके बाबा जी ने सियालकोट से चलकर गाँव 'लावेरी रंधावी' और 'फकीर चंद दा

कोटला' में संगत को दर्शन देने की कृपा की। 'रंधावी' गाँव की संगत ने प्रार्थना की कि महाराज! कृपा करके श्री दशम् ग्रन्थ की कथा सुनाओ। बाबा जी ने संगत का प्रेम देखकर 'दशम् ग्रन्थ' की कथा आरम्भ की जिसमें गाँवों की संगत भी प्रतिदिन कथा श्रवण करने हेतु भारी गिनती में आती थी। सम्पूर्ण कथा करते छः मास लग गये। समापन दिवस पर जो सामग्री अर्पण की गई, बाबा जी ने आज्ञा दी कि इसको यज्ञ में लगा दो और जितनी माया एकत्रित हुई है उसको गुरुद्वारे के भवन पर लगा दो। इस प्रकार संगत के प्रेमवश, काफ़ी समय इस क्षेत्र में ठहरने के पश्चात् यहाँ से विदा ली। कई गाँवों, नगरों में से होते हुए संगत को सत् उपदेश करते, कश्मीर की सुन्दर भूमि पर पदार्पण किया। इस बार आप बहुत-से संत-महात्माओं को भी मिले, जो एकांत पाकर साधना में संलग्न थे। कुछ पूर्ण सिद्ध पुरुषों के दर्शन भी हुए। इस दौरान आप जी ने प्राचीन तीर्थ श्री अमरनाथ की भी दूसरी बार यात्रा की। इस प्रकार लगभग साढ़े तीन वर्ष का समय कश्मीर की भाग्यशाली भूमि पर व्यतीत करके पूर्व की यात्रा करने हेतु अयोध्या होते हुए काशी पहुँचे। काशी पंडित सुच्चा सिंह जी मिले (जो बाद में निर्मल पंचायती अखाड़ा के महंत बने)। वे काशी अध्ययन करते समय आपके साथ ही पढ़ते थे। पंडित सुच्चा सिंह जी ने दक्षिण के तीर्थ स्थानों की यात्रा करने की इच्छा प्रकट की। आपके साथ कुछ साधु तो पहले थे, पंडित सुच्चा सिंह जी को साथ लेकर यात्रा के लिए चल पड़े। 'पटना साहिब' के दर्शन दीदार करके मार्ग में गाँवों, नगरों में ठहरते काफ़ी समय पश्चात् जगन्नाथ पहुँचे। जगन्नाथ से रामेश्वरम् आदि पवित्र स्थानों के दर्शन करके द्वारिका पहुँचे। इतने में हरिद्वार के कुम्भ मेले में सम्मिलित होने के लिए वापिस हरिद्वार आ गए।

संवत् १९४७ का हरिद्वार का कुंभ

पूर्व दक्षिण के तीर्थ स्थानों की यात्रा करके बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज ने कुम्भ के मेले पर संत मण्डली सहित दर्शनार्थ हरिद्वार पहुँचकर ऋषिकेश निर्मल पंचायती अखाड़े को अपना निवास स्थान बनाया। कुम्भ के दर्शनार्थ सब सम्प्रदायों के साधु-महात्मा हज़ारों की संख्या में पहुँचे हुए थे। सत्संग के लिए एक बड़ा पण्डाल बनाया हुआ था जिसमें सब मतों के महात्माओं को कथा के लिए समय दिया जाता था। सत्संग का विषय था—'जीवन मुक्त पुरुष के लक्षण' और उसके दर्शन से क्या प्राप्त होता है। सब मतों के साधु अपने-अपने मत के अनुसार इस विषय पर चर्चा करते थे। गुरु नानक मत के निर्मल समाज की ओर से बाबा बुड्ढा सिंह जी को इस विषय पर बोलने के लिए प्रार्थना की गई। बाबा जी ने प्रार्थना स्वीकार करके साहिब श्री गुरु अर्जुन जी के इस पवित्र शब्द द्वारा जीवन मुक्त पुरुष के लक्षण वर्णन किए—

सो मुकता संसारि जि गुरि उपदेसिआ॥
तिस की गई बलाइ मिटे अंदेसिआ॥
तिस का दरसनु देखि जगतु निहालु होइ॥
जन कै संगि निहालु पापा मैलु धोइ॥
अंम्रितु साचा नाउ उथै जापीऐ॥
मन कउ होइ संतोखु भुखा ध्रापीऐ॥
जिसु घटि वसिआ नाउ तिस बंधन काटीऐ॥
गुर परसादि किनै विरलै हरि धनु खाटीऐ॥

(गुजरी वार, पृष्ठ ५१९)

व्याख्या—एक दिन का वर्णन है कि उपकार-सागर श्री गुरु अर्जुन देव महाराज श्री अमृतसर में अपनी मौज में अपने सिंहासन पर सुशोभित थे। उपस्थिति में बैठी संगत इस प्रकार शोभायमान है जैसे चन्द्रमा के आसपास समस्त परिवार एकत्रित हो। हजूर के पवित्र चरणों में एक श्रद्धालु ने प्रार्थना की कि महाराज! संतों की महिमा, लक्षण और उनकी संगत का क्या फल होता है? श्रद्धालु की विनती सुनकर गुरु बाबा जी ने गुजरी राग में एक पउड़ी (श्लोक) उच्चारण की—

मूल— **सो मुकता संसारि जि गुरि उपदेसिआ॥**
तिस की गई बलाइ मिटे अंदेसिआ॥

अर्थ— संसार में वही जीव, जीवन मुक्त अर्थात् जीते जी मुक्त होता है जिसको सतगुरु उपदेश करता है। ऐसा जो महापुरुष है उसकी अविद्या रूपी बला मिट जाती है और समस्त संशय दूर हो जाते हैं। श्रद्धालु ने प्रार्थना की महाराज! यह तो संत की भीतरी अवस्था है, लेकिन ऐसे संत के दर्शन से क्या लाभ प्राप्त होता है?

मूल— **तिस का दरसनु देखि जगतु निहालु होइ।**

अर्थ— ऐसे महापुरुष के दर्शन मात्र से ही जगत् आनन्दित हो जाता है। जैसे गुरुवाक्—
जिन्हा दिसंदड़िआ दुरमति वंञै मित्र असाडड़े सेई॥
हउ ढूंढेदी जगु सबाइआ जन नानक विरले कोई॥

(वार गूजरी, पृष्ठ ५२०)

कबीर संत की गैल न छोडीऐ मारगि लागा जाउ॥
पेखत ही पुंनीत होइ भेटत जपीऐ नाउ॥

(श्लोक कबीर जी, पृष्ठ १३७१)

साध कै संगि नही कछु घाल॥ दरसनु भेटत होत निहाल॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २७२)

बड़े सौभाग्य से जब इस जीव को पूर्ण साधु का संग प्राप्त हो जाता है, उस समय इसके समस्त संघर्ष और श्रम समाप्त हो जाते हैं। उस समय निराकार स्वरूप के दर्शन होते ही जीव आनन्दित हो जाता है और जन्म-जन्म के दु:खों से मुक्त हो जाता है।

मूल— **जन कै संगि निहालु पापा मैलु धोइ॥**

अर्थ— संत का संग करके जीव आनन्दित हो जाता है और माया रूपी मल दूर हो जाती है।

मूल— **अंम्रितु साचा नाउ उथै जापीऐ॥**

अर्थ— संतों का संग प्राप्त होते ही जीव अमृत रूपी नाम का जाप आरम्भ कर देता है।

मूल— **मन कउ होइ संतोखु भुखा ध्रापीऐ॥**

अर्थ— संतों का संग करके जब यह जीव नाम जपता है तो इसके मन को संतोष आ जाता है अर्थात् पदार्थों की भूख मिट जाती है।

मूल— **जिसु घटि वसिआ नाउ तिसु बंधन काटीऐ॥**

अर्थ— जिस पुरुष के हृदय में परमेश्वर का नाम बस जाता है उसके सब बंधन कट जाते हैं और वह सदा-सदा के लिए जन्म-मृत्यु आदि समस्त बंधनों से मुक्त हो जाता है।

मूल— **गुर परसादि किनै विरलै हरि धनु खाटीऐ।**

अर्थ— कोई विशेष पुरुष ही ऐसा होता है जिसने गुरु कृपा द्वारा नाम-धन अर्जित किया है। बाबा बुड्ढा सिंह

महाराज के पवित्र मुख से गुरुवाणी द्वारा संतों की महिमा और उनसे होने वाले लाभ का अमृतमय उपदेश सुनकर सभा में सुशोभित सब संत महात्मा और श्रोते बहुत प्रसन्न हुए। कुछ प्रेमियों ने प्रार्थना की महाराज! आप जी द्वारा संतों की महिमा और दर्शनों से होने वाले लाभ तो भली भाँति सुन लिए हैं, लेकिन ऐसे महापुरुष के बाह्य लक्षण और स्वभाव कैसा होता है यह वर्णन करो। प्रेमियों की प्रार्थना सुनकर बाबा जी बोले प्रेमियों! गुरु नानक भली करेंगे, कल के सत्संग में संतों का स्वभाव किस तरह का होता है इस बात पर ही विचार किया जाएगा।

कुम्भ मेले पर दूसरे दिन की कथा

कल के दिए वचनानुसार महाराज बुड्ढा सिंह जी ने संतों के लक्षण और स्वभाव के सम्बन्ध में श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी की इस अष्टपदी की व्याख्या की—

ससत्रि तीखणि काटि डारिउ मन न कीनो रोसु॥
काजु उआ को ले सवारिउ तिलु न दीनो दोसु॥
मन मेरे राम रउ नित नीति॥
दइआल देव क्रिपाल गोबिंद सुनि संतना की रीति॥ रहाउ॥
चरण तलै उगाहि बैसिओ स्रमु न रहिओ सरीरि॥
महासागर नह विआपै खिनहि उतरिओ तीरि॥
चंदन अगर कपूर लेपन तिसु संगे नही प्रीति॥
बिसटा मूत्र खोदि तिलु तिलु मनि न मनी बिपरीति॥
ऊच नीच बिकार सुक्रित संलगन सभ सुख छत्र॥
मित्र सत्रु न कछू जानै सरब जीअ समत॥
करि प्रगासु प्रचंड प्रगटिओ अंधकार बिनास॥
पवित्र अपवित्रह किरण लागे मनि न भइओ बिखादु॥
सीत मंद सुगंध चलिओ सरब थान समान॥
जहा सा किछु तहा लागिओ तिलु न संका मान॥
सुभाइ अभाइ जु निकटि आवै सीतु ता का जाइ॥
आप पर का कछु न जाणै सदा सहजि सुभाइ॥
चरण सरण अनाथ इहु मनु रंगि राते लाल॥
गोपाल गुण नित गाउ नानक भए प्रभ किरपाल॥

(मारू महला ५, पृष्ठ १०१७)

व्याख्या— अर्थ रहाउ से आरम्भ होगा।

मूल— **मन मेरे राम रउ नित नीति॥**
दइआल देव क्रिपाल गोबिंद सुनि संतना की रीति॥ रहाउ॥

अर्थ— हे मेरे मन! तू सदा-सदा परमेश्वर का नाम जपु, प्रकाश रूप और दयालु, कृपालु वाहिगुरु के जो प्रिय संत जन हैं, उनकी रीति मर्यादा सुन। श्री गुरु अर्जुन देव जी संत के गुणों की तुलना वृक्ष के साथ देते हैं—

मूल— **ससत्रि तीखणि काटि डारिउ मनि न कीनो रोसु॥**
काजु उआ को ले सवारिउ तिलु न दीनो दोसु॥

अर्थ— श्री गुरु अर्जुन देव महाराज इस पावन पंक्ति द्वारा संतों के महान् गुणों की तुलना वृक्ष के साथ करते हैं—
तरवर-सरवर संत जन चौथा बरसे मेंह॥
परउपकार हित कारणे चौहां धारी देह॥

'तरवर' अर्थात् वृक्ष 'सरवर' अर्थात् सरिता, संत जन और वर्षा—इन्होंने शरीर ही दूसरों के लिए धारण किया है। इनका अपना कोई प्रयोजन नहीं। सतगुरु देव जी पहला उदाहरण वृक्ष का देते हैं। मनुष्य वृक्ष को तेज़ कुल्हाड़ी के साथ काटता है, लेकिन वृक्ष क्रोध नहीं करता, अपितु उसके कई कार्य संवारता है—जैसे मकान के दरवाज़े, खिड़कियाँ, मेज़, कुर्सियाँ और मंजूषा आदि जीवन की असंख्य आवश्यक वस्तुएँ बनाते हैं, लेकिन वृक्ष उस व्यक्ति को रंच मात्र भी दोष नहीं देता। सुन्दर फरमान है—

जैसे कुठार कटे तर, चंदन सुगन्ध तिस मुख देत है।

चन्दन के वृक्ष को कुल्हाड़ी के साथ काटो, तो चन्दन क्रोध नहीं करता, अपितु अपने शरीर में से सुगंधि देता है। जैसे एक दृष्टांत—

गर्मी के दिनों में एक व्यक्ति पैदल यात्रा कर रहा था। चलते-चलते उसे कुछ थकान अनुभव हुई, सोचा कुछ आराम कर लेते हैं, लेकिन छाया के बिना आराम कैसे करे? ऊपर तेज़ धूप पड़ रही है, नीचे से गर्म रेत जला रही है। इतने में कुछ समय बाद कुछ दूरी पर एक वृक्ष खड़ा दिखाई दिया। थक टूटकर वह उसके नीचे जाकर ठंडी छाया में बैठ गया। कुछ समय विश्राम करने के पश्चात् शान्ति आई, थकान दूर हो गई, फिर उसका ध्यान वृक्ष की ओर गया। गहराई से देखा वृक्ष नीचे से काफ़ी मोटा है। मन में सोचा कि इसके साथ घर के सब दरवाज़े खिड़कियाँ बन जाएँगी। यह सोचकर, वह घर गया और वहाँ से कुल्हाड़ी आदि लाकर वृक्ष को काटकर घर ले गया।

अपने मनोनुकूल घर का सामान बनाया। अब देखो—वृक्ष का हृदय, जिसे जीते जी ठंडी छाया दी, फल आदि दिए और अपने आपको कटवाकर घर के अन्य काम सँवारे, लेकिन मन में रंचमात्र भी क्रोध नहीं किया। प्रत्येक दृष्टि से सुख ही दिया, क्योंकि उसका स्वभाव ही सुख देना है। इसी प्रकार संत महात्मा भी स्वयं कष्ट उठाकर दूसरों को सुख ही देते हैं किसी को दु:खी देखकर उसका दु:ख दूर करने के लिए प्रयत्न करते हैं। एक दृष्टांत—

कश्मीर में एक सुन्दर बगीचा है, जिसके चारों ओर दीवार बनी हुई है। इसमें सेब आदि के कई वृक्ष लगे हुए हैं जिनको समय-समय पर फल भी लगते हैं। कुछ पौधों का विस्तार इतना बड़ा है कि शाखाएँ दीवार के ऊपर से बाहर तक फैली हुई हैं, जिनसे बाहर के लोग भी फल आदि का लाभ उठाते हैं, क्योंकि कश्मीर में इतना अधिक फल होता था कि दूसरों के खाने पर मालिक बुरा नहीं मानते थे। उस बगीचे के अन्दर एक महात्मा रहते थे जोकि आचरण और वाणी के पूरे, शान्त चित्त, धैर्यवान, अकारण दयालुता के सागर थे। उनका यश दूर-दूर तक फैला हुआ था। क्षेत्र के काफी लोग सत्संग का लाभ उठाते थे, यहाँ तक कि नगर का राजा भी प्राय: आता रहता था।

एक दिन की बात है कि एक व्यक्ति उस बगीचे के समीप जा रहा था। उसने सोचा कि एक-दो सेब तोड़कर खा ले। कुछ शाखाएँ दीवार के ऊपर से बाहर तक फैली हुई थीं लेकिन हाथ की पहुँच से कुछ ऊँची थीं, इसलिए सेब तोड़ने की

इच्छा रखते हुए उस यात्री ने एक पत्थर उठाकर ऊपर सेब की ओर मारा। वह पत्थर सेब को लगने की बजाय बगीचे के अन्दर चला गया। अन्दर वृक्ष के नीचे बैठे महात्मा संगत को उपदेश कर रहे थे—उनके सिर में जा लगा। ज़ोर से लगने के कारण सिर में से रक्त बहने लगा। सत्संग मे काफ़ी लोग बैठे थे, जिनमें नगर का राजा भी बैठा था। वातावरण नितांत शान्त था। सब लोग आध्यात्मिक विचारों का लाभ उठा रहे थे। अचानक ऐसा होने पर सब घबरा गए। बीच में से दो व्यक्ति दीवार के ऊपर चढ़े—क्या देखते हैं कि एक व्यक्ति सेब तोड़ने का प्रयत्न कर रहा है। उसको तुरन्त पकड़ लिया। उस व्यक्ति को बगीचे के भीतर ले गए। क्रोध में उसे कोई गालियाँ दे रहा है, कोई चपत मार रहा है, कुछ क्रोध से भरे अपशब्द बोल रहे हैं। राजा उस अवसर पर उपस्थित ही था—उसके सम्मुख पेश किया। दोषी व्यक्ति अपने मन में पश्चात्ताप करता हुआ सोच रहा है कि कितना बुरा हुआ। पत्थर तो किसी पशु, पक्षी को भी नहीं मारना चाहिए, क्योंकि उसमें भी परमात्मा देव विराजमान है, यह तो और भी अनर्थ हो गया किसी निर्वैर पुरुष को जाकर लगा, राजा के क्रोध का भाजन तो बनूँगा ही, मुझे तो परमेश्वर भी क्षमा नहीं करेगा।

राजा ने साधु को प्रार्थना की महाराज! यह दोषी है, जिसने आप के सिर में पत्थर मारा है। आप जो आज्ञा करो वही सज़ा इसको दी जाएगी। महात्मा ने पूछा हे प्रेमी! तूने पत्थर क्यों मारा? दोषी व्यक्ति भयभीत होकर काँपने लगा। जिह्वा से कोई शब्द नहीं निकल रहा।

महात्मा ने सांत्वना दी, तू भयभीत न हो, तुम चिंता न करो, साँच को आँच नहीं, जो तुम्हारे मन में है—सत्य-सत्य बता दे। महापुरुषों की ओर से सांत्वना मिलने पर दोषी व्यक्ति दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा हे साईं! मैं निर्धन परिवार से सम्बन्ध रखता हूँ, संत सेवी हूँ, एक छोटे से ग्राम में रहता हूँ, कार्यवश कहीं जा रहा था। मुझे भूख लगी, सोचा—दो सेब तोड़कर खा लूँ। मुझे यह विश्वास था कि दो सेब तोड़कर खाने को कोई बुरा नहीं मानेगा, लेकिन शाखा ऊँची होने के कारण मेरा हाथ वहाँ पहुँच नहीं रहा था इसलिए सेब तोड़ने के लिए एक पत्थर ऊपर की ओर फैंका। मुझे यह भी पता नहीं था कि बगीचे के भीतर कोई बैठा है, मेरा दुर्भाग्य, पत्थर सेब को लगने की बजाए आपको आकर लगा मैं आपका गुनहगार हूँ, आप जो चाहो दण्ड दो।

दोषी के मुख से सबने सुना। राजा को संत कहने लगे, राजन्! आप बताओ कि इसका क्या अपराध है? पत्थर इसने जानबूझकर नहीं मारा। इसने तो सेब को पत्थर मारा था, अचानक अन्दर आकर मुझे लगा, इसलिए मेरे विचार में तो यह बेकसूर है। राजा कहने लगा कि महाराज! मैं तो आपका दास हूँ, जो आज्ञा हो—मुझे स्वीकार है। महात्मा बोले, राजन्! बात थोड़ा ध्यान से सोचने की है। इसने पत्थर मारा वृक्ष को जो जड़ वस्तु है, वृक्ष जड़ होते हुए भी पत्थर खाकर अमृत समान मीठा फल देता है, लेकिन मैं तो जड़ नहीं, चेतन हूँ, इसलिए वृक्ष से कुछ अधिक ही देना चाहिए। देखो, वृक्ष कितना पर-उपकारी है, पत्थर खाकर भी, पत्थर मारने वाले को मीठा फल देता है, लेकिन मनुष्य शरीर तो मिलता ही पर-उपकार के लिए है अर्थात् दूसरों के लिए, अन्य इसका कोई प्रयोजन ही नहीं।

महात्मा बोले, मैंने जब होश सम्भाला तो साधुओं की संगत करने का शौक पैदा हुआ। सत्संग करने से पता चला कि यह जीवन तो पर-उपकार करके अपने जन्म सफल करने के लिए है, न कि संसार के क्षणभंगुर, नश्वर और रसहीन सुख

भोगने के लिए है। यह सोचकर मैंने महात्मा की खोज शुरु की। अंततः मुझे एक पूर्ण संत मिले, उन्होंने मुझे नाम का उपदेश देकर हर प्रकार से क्षमा, सहनशीलता, दीनता और पर-उपकार आदि दैवी गुणों की शिक्षा दी। इतना ही नहीं, अपितु अपने चरणों में शरण देकर हर प्रकार से मेरी रक्षा की।

महात्मा जी के श्रीमुख से नम्रता में डूबे शब्द सुनकर राजा का मन एकदम शान्त हो गया। दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना की, महाराज! न केवल इसका अपराध क्षमा किया, अपितु इसके फलस्वरूप मुझे आज सहनशीलता, पर-उपकार आदि शुभ गुणों की शिक्षा मिली है, आप जो आज्ञा करो, इसको पुरस्कार स्वरूप दे दें। महापुरुष बोले, राजन्! यदि तुम समझते हो कि इस कारण कुछ शिक्षा मिली अर्थात् शुभ-गुण मिले हैं, तो वृक्ष जैसे साहस करके इसको पाँच गाँव दे दे, साथ में कुछ धन पदार्थ भी दो। महात्मा जी की आज्ञा मानकर राजा ने उस व्यक्ति को पाँच गाँव दे दिए और कहा हे भाई! तुमने हम पर बहुत उपकार किया, तुम्हारे कारण आज हमें महापुरुषों से शुभ शिक्षा प्राप्त हुई है। वह व्यक्ति महापुरुषों की एक निर्वैर और सहनशीलता सम्पन्न अवस्था देखकर, संत सेवा और पर-उपकार के कामों में बलवती होकर प्रवृत्त हो गया। राजा की ओर से जो धन एवं पाँच गाँव इसको मिले वे सब संत-सेवा और पर-उपकार के कार्यों में लगाने लगा। इस प्रकार उसने स्वयं अपना और परिवार का सुधार किया।

इस प्रकार महात्माओं का जीवन वृक्ष के समान होता है जो दूसरों के पत्थर खाकर भी उनका भला ही चाहते हैं। जैसे पत्थर मारने वाले मनुष्य को बजाय किसी दण्ड के, राजा से पाँच गाँव और धन पदार्थ लेकर दिया—ऐसा दयालु स्वभाव संत महापुरुषों का होता है।

श्री गुरु अर्जुन देव महाराज दूसरा उदाहरण नाव का देते हैं—

मूल— **चरण तलै उगाहि बैसिओ स्रमु न रहिओ सरीरि॥**
महासागर नह विआपै खिनहि उतरिओ तीरि॥

अर्थ— जब व्यक्ति नाव में पैर रखकर बैठ जाता है तो सारी थकान मिट जाती है और जो महान् सागर है, इसका पैर गीला नहीं कर सकता। इसी प्रकार सुखी-सुखी सागर से पार हो जाता है। यह एक उदाहरण है जैसे सागर को पार करना हो तो नाव की आवश्यकता होती है, नाव मिलते ही यात्रा की सारी थकान भूल जाती है। केवल आराम से नाव में बैठना ही है और चलने आदि की श्रम—क्रिया समाप्त हो जाती है। इस प्रकार जब यह जीव जन्म-मृत्यु के अनेक कष्ट उठाता एवं माया की लहरों का पछाड़ा अनंत दुःख भोगकर थक जाता है, तो किसी सुख का किनारा ढूँढ़ता है। सौभाग्य से ऐसा करते-करते किसी संत महापुरुष का मिलाप हो जाने पर एक क्षण में संसार-सागर से पार होकर सदा के लिए सुखी हो जाता है।

जब महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ तो धर्मराज युधिष्ठिर शोक-सागर में डूब गया, क्योंकि युद्ध में बहुत-से सम्बन्धियों की मृत्यु हो गई, जिनकी लाशें रणभूमि में काक्-श्वान खा रहे थे। एक दिन निराश होकर भगवान् श्रीकृष्ण के चरणों में प्रार्थना की कि मुझे मेरा जीवन कटु अनुभव हो रहा है और संसार नीरस प्रतीत होता है, मन करता है कि शरीर त्याग दूँ।

यह सुनकर भगवान् बोले, हे युधिष्ठिर! यह तुम्हारी भूल है, जीवन-मरण तुम्हारे हाथ में नहीं है। जैसे गुरुवाक्—

जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु॥

युधिष्ठिर को शोकातुर देखकर भगवान् बोले, हे युधिष्ठिर, राज्यभार कोई सुखों की खान नहीं, सच्चा सुख तो

आत्मसुख है, इसके बिना जितने सुख जीव को प्रतीत होते हैं, सब नाशवान् हैं। युधिष्ठिर बोला, ऐसा जो अविनाशी सुख है, जिसको आत्मसुख कहते हैं, प्राप्त कैसे हो? भगवान् बोले, सच्चा सुख तो संतों की शरण में प्राप्त होता है। यदि तुम्हारे मन ने संसार की यथार्थता समझ ली है और इसमें सार कुछ नहीं है, तो विवेक का आश्रय लेकर, संतों की शरण में जाकर, अपने आपको मल्लाह बना, इस प्रकार संसार-सागर से पार हो जाएगा और दूसरों को भी पार करेगा। जैसे—

संत बेड़ी नाम मलाह, पार लंघावै वाउ॥

श्रीकृष्ण जी, श्रीमद् भागवत् के ग्यारहवें स्कन्ध में उद्धव को उपदेश करते हैं—उद्धव! मनुष्य शरीर नाव की भाँति है, गुरु मल्लाह है और परमेश्वर की कृपा वायु है जो नाव की सहायता करती है। जैसे नाव में बैठकर नदी को पार कर लेते हैं, वैसे ही संतों का आश्रय लेकर भवसागर से पार हो जाते हैं। संत मल्लाह हैं, वे नाम का उपदेश देकर संसार-सागर से अवश्य पार कर देते हैं। एक दृष्टांत—

प्राचीन समय में एक बड़ा प्रतापी राजा हुआ है जिसका नाम था, भरत। इस देश का नाम 'भारतवर्ष' भी उसके नाम से ही पड़ा है, क्योंकि उस धर्मी राजा के राज्य में लोग सुखमय जीवन व्यतीत करते थे। कोई किसी को दु:ख नहीं देता था। जनसंख्या भी देश में बहुत थी। राजा का नीति एवं धर्म में निपुण होने का कारण जो संत-भक्त थे सब अभय होकर अपनी-अपनी साधना में संलग्न थे। राजा भरत के एक पुत्र था, उसका राजा ने अच्छी प्रकार से पालन-पोषण किया पढ़ाया, हर प्रकार की शिक्षा दी। जहाँ राजनीति में निपुण किया वहाँ धर्म, भक्ति, संत सेवा आदि शुभ गुणों की भी शिक्षा प्रदान की।

उस समय जब किसी राजा का पुत्र युवा होता, तो राजा स्वयं अपना राज्यभार पुत्र को सौंपकर आप वन में जाकर तपस्या करता था। राजा भरत ने भी ऐसा ही किया। अपने पुत्र को राज्यभार सौंपकर आप गंगा के तट पर कुटिया बनाकर भक्ति करने लगा। एक दिन की बात है कि एक मृगी अपने छोटे बच्चे सहित पानी पीने के लिए आई। उस समय सामने से एक सिंह ने मृगी को देखकर गर्जना की। मृगी सिंह को देखकर ही जिधर देखा उधर भागी। भय में अपने बच्चे को वहीं छोड़ गई। बच्चा बेहोश होकर गिर पड़ा। राजा को दया आई, उसने बच्चे को उठाया और उसे अपनी कुटी में ले गया। कभी-कभी ऐसा होता है, दया मोह का रूप धारण कर लेती है। 'मोह' एक कीचड़ है, इसमें से निकलना अत्यंत कठिन है। जब मोह का प्रवेश हो, तब मन सिमरन में नहीं लगता। राजा के साथ भी ऐसा ही हुआ। राजा गंगा में स्नान करने जाता तो बच्चा भी पीछे-पीछे भागता। स्नान करके राजा सिमरन में बैठता तो बच्चा भी समीप बैठ जाता। यदि राजा घूमने-फिरने लगता, तो बच्चा भी साथ-साथ घूमता। राजा सोता तो बच्चा भी सो जाता। इस प्रकार समय व्यतीत हो रहा था। एक दिन मृगों की डार (पंक्ति) इधर निकली, देखकर बच्चा भी उसके साथ जा मिला। थोड़ी दूर पर एक जोहड़ था। शेष हिरण तो उसे पार कर गए लेकिन यह बच्चा उसमें फँस गया। कीचड़ अधिक होने के कारण निकल न सका। थोड़े समय के बाद राजा ने देखा, बच्चा है नहीं। इधर-उधर देखा तो बच्चा जोहड़ में मरा पड़ा दिखाई दिया। राजा को बहुत दु:ख हुआ। दिन-रात बच्चा आँखों के सामने घूमता, नींद न आती, भूख न लगती, कुछ अच्छा नहीं लगता। ऐसी हालत में राजा मोहपाश में जकड़ा, दिन-रात बेचैन रहने लगा। कुछ दिनों के बाद राजा का भी अंतिम समय समीप आ गया, जब प्राण त्यागे, राजा का ध्यान मृग शावक में था, इसलिए राजा को मृग की योनि में जाना पड़ा।

यह ईश्वरीय नियम है, अंत समय में व्यक्ति के भीतर जो चिंतन होगा, वही शरीर धारण करना पड़ेगा—जैसे गुरु भक्त त्रिलोचन ने फरमाया है—

अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै।
सरप जोनि वलि वलि अउतरै॥
अरी बाई गोबिद नामु मति बीसरै॥ रहाउ॥
अंति कालि जो इसत्री सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै॥
बेसवा जोनि वलि वलि अउतरै॥
अंति कालि जो लड़िके सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै॥
सूकर जोनि वलि वलि अउतरै॥
अंति कालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै॥
प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै॥
अंति काल नाराइणु सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै॥
बदति तिलोचनु ते नर मुकता पीतंबरु वा के रिदै बसै॥

(पृष्ठ ५२६)

परमेश्वर का ऐसा ही नियम है कि जीव को अंत समय की वासना के अनुसार शरीर मिलता है। इसलिए राजा भरत को वासना अनुसार मृग-योगि में जाना पड़ा, लेकिन भक्ति के बल पर राजा को विवेक रहा कि यह योनि उसे मोह-वश प्राप्त हुई है। वह बार-बार इस घटना को याद करके पश्चात्ताप करता रहता। अंततः मृग-योनि भोगकर पुनः मनुष्य शरीर में एक कृषक के घर जन्म लिया। खेती-बाड़ी का कार्य करता है, लेकिन बहुत ध्यान नहीं देता, क्योंकि पूर्व जन्म के संस्कार भक्ति सत्संग के थे इसलिए अधिक समय संतों की संगत में व्यतीत करता।

एक समय की बात है कि अयोध्या का राजा रघु संतों की खोज करता-करता चार कहारों को अपनी पालकी उठाकर, उधर से निकला जिधर राजा भरत इस समय के जन्म में खेती का काम करता था। दैव योग से राजा रघु का एक कहार बुखार होने के कारण पालकी उठाने में असमर्थ हो गया। राजा ने आज्ञा दी—शीघ्र ही एक व्यक्ति का प्रबन्ध करो, बहुत जल्दी आगे जाना है। कहार ने देखा कि एक किसान खेत में काम कर रहा है। उसको कहा कि राजा की आज्ञा है—चलकर पालकी उठाओ।

जड़-भरत ने राजा की पालकी को कंधा दिया, लेकिन वह बहुत धीरे चल रहा था। राजा ने कहा कि शीघ्र चलो। थोड़े समय बाद जड़ भरत फिर रुक गया। राजा क्रोध में आकर बोला कितना मोटा है, लेकिन चलता धीरे है। जल्दी चल नहीं तो दण्ड मिलेगा। जड़ भरत बोला—राजन्! दण्ड मन को मिलेगा अथवा इन्द्रियों को? शरीर को मिलेगा या आत्मा को, जो मेरा 'अपना आप' है। हे राजन्! तुम किसको आज्ञा दे रहे हो? मेरे शरीर को या मन को अथवा इन्द्रियों को? जड़ भरत के मुख से ऐसा सुनकर राजा रघु को होश आया। सोचने लगा—यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है—यह तो कोई पूर्ण संत है जिसकी मैं खोज में भटक रहा हूँ। वह मिल गया है। राजा रघु ने जड़ भरत को प्रार्थना की कि शरीर क्या है? मन क्या है? इन्द्रियाँ क्या हैं? जड़ भरत ने उत्तर दिया—देह झूठी है। प्रतीति मात्र है। इन्द्रियाँ झूठी हैं, मन भी झूठा है। मन को साधना है, बुद्धि को शुद्ध

करना है; फिर शरीर एवं इन्द्रियाँ वश में हो जाएँगी। इस प्रकार परमात्मा देव प्रकट हो जाते हैं और अपने आपका ज्ञान हो जाता है, फिर इसको अन्य कुछ देखने, भोगने की इच्छा नहीं होती। आत्मज्ञानी पुरुष को मान-अपमान, हर्ष-शोक, दु:ख-सुख, जन्म-मरण समान हो जाते हैं। ऐसे पुरुष का जीवन परोपकारी हो जाता है।

जो दूसरों को सुख प्रदान करे और अपने लिए रंचमात्र भी इच्छा न रखे, ऐसे पुरुष का नाम ही संत है।

इस प्रकार जड़ भरत ने राजा रघु को अपने स्कंध पर उठाकर आत्मज्ञान का उपदेश देकर मुक्त किया। यह है संत का लक्षण। गुरु बाबा जी फ़रमान करते हैं—संत नाव के समान होता है। जैसे नाव व्यक्ति के पैरों के नीचे होती है फिर भी सागर से पार कर देती है। इसी प्रकार संत भी जीव को कंधे पर उठाकर संसार-सागर से पार कर देते हैं। श्री गुरु अर्जुन देव महाराज संत को पृथ्वी के समान दर्शाते हैं—

मूल— **चंदन अगर कपूर लेपन तिसु संगे नही प्रीति॥**
बिसटा मूत्र खोदि तिलु तिलु मनि न मनी बिपरीति॥

अर्थ— भूमि को यदि कोई चंदन, केसर अथवा कपूर के साथ लेप करे तो भूमि उसको कोई विशेष प्यार नहीं देती। इसके विपरीत यदि कोई पृथ्वी पर विष्टा आदि गंद भी करता है अथवा कोई खाई आदि खोदता है, उसका बुरा नहीं मानती अर्थात् दोनों प्रकार के लोगों को समान प्यार करती है और सब भले-बुरे का काम सँवारती है।

दृष्टांत—इसी प्रकार संत-महात्मा की यदि कोई सेवा टहल करता है तो अपनी भावना अनुसार फल प्राप्त करता है, लेकिन महात्मा अपने आत्म आनंद में आरूढ़ रहते हैं। इसके विपरीत यदि कोई संत का बुरा करता है, उस ओर ध्यान नहीं देते, अच्छे और बुरे दोनों को एक समान समझते हुए आप अपने आत्मानंद में से कभी बाहर नहीं आते। जैसे पृथ्वी में सहनशीलता का बड़ा गुण है वैसे ही आत्मज्ञानी पुरुष भी अपनी सहनशीलता नहीं त्यागता। जैसे गुरुवाक्—

झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु॥

(वार सत्ता बलवंडि, पृष्ठ ९६८)

ऐसे पुरुष को आशा, तृष्णा, विषय-विकार, मान-अपमान विचलित नहीं कर सकते, जैसे तीव्र वायु सुमेरू पर्वत को हिला नहीं सकती—

ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक॥
जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप॥

(गउड़ी सुखमनी, पृष्ठ २७२)

चतुर्थ उदाहरण में श्री गुरु अर्जुन देव जी संतों को आकाश के समान निर्वैर, निर्लेप दर्शाते हैं।

मूल— **ऊच नीच बिकार सुक्रित संलगन सभ सुख छत्र॥**
मित्र सत्रु न कछू जानै सरब जीअ समत॥

अर्थ— आकाश मन से कभी नहीं सोचता, यह उच्च जाति का है, यह नीच जाति का है, यह विकारी है, यह शुभ गुणों वाला है आदि गुणों का कभी विचार नहीं करता। सबको समान सुख देता है और सबके ऊपर छत्र रूप है। इसी प्रकार किसी को मित्र, किसी को शत्रु नहीं देखता, आकाश की दृष्टि में दोनों समान हैं। इसी प्रकार संत जन भी सब जीवों को आत्मभाव से देखते हैं अर्थात् सबको अपना आप ही मानते हैं।

आकाश का स्वभाव सम है, किसी उच्च जाति का ब्राह्मण हो अथवा नीच जाति का चाण्डाल हो, गाय हो अथवा गधा अथवा कुत्ता, सब एक समान हैं और आकाश सबको सुख देने वाला है। जैसे कोई आकाश को यज्ञ आदि की सुगंधि दे अथवा इसके विपरीत आकाश की ओर थूके तो आकाश की दृष्टि में दोनों एक समान हैं। यदि कोई आकाश को

दु:ख देना चाहे तो नहीं दे सकेगा। यदि कोई आकाश की ओर बाण का संधान करे, तो क्या आकाश को घाव हो जाएगा? क्योंकि वह तो अगम्य है, उस तक किसी की पहुँच ही नहीं। आकाश की ओर संधान किया बाण आकाश तक नहीं जाएगा उल्टा संधान करने वाले को लगेगा—

सरु संधे आगास कउ किउ पहुचै बाणु॥
अगै ओहु अगंमु है वाहेदड़ु जाणु॥

(माझ दी वार, पृष्ठ १४८)

इसी प्रकार संत जनों को अच्छा-बुरा, सेवा करने वाला, बुरा देखने वाला आदि सब समान हैं, क्योंकि वे सब अपना आप जानते हैं, ऐसे महापुरुष का यदि कोई बुरा करना चाहे तो कैसे कर सकता है। जैसे गुरुवाक्—

सतिगुर सरनि पए से थापे तिन राखन कउ प्रभु आवैगो॥
जे को सरु संधै जन ऊपरि फिरि उलटो तिसै लगावैगो॥

(कानड़ा महला ४, पृष्ठ १३११)

जिस प्रकार आकाश के लिए अच्छे-बुरे एक समान हैं, इसी प्रकार संत महात्मा भी आकाश की तरह निर्लेप रहकर सभी प्राणियों को सुख ही देते हैं। दृष्टांत—

प्राचीन समय में एक शिखिध्वज राजा और चुड़ाला नाम की रानी हुए हैं। इनका 'श्री योगवाशिष्ठ' में विस्तारपूर्वक वर्णन है। राजा शिखिध्वज अपने राज-काज के सुखों में मग्न था। जब उसका विवाह रानी चुड़ाला के साथ हुआ, तो राजा को भी परमार्थ में रुचि उत्पन्न हुई, क्योंकि रानी के संस्कार परमार्थ के थे। इस प्रकार दोनों सत्संग, सत् शास्त्र का विचार करते रहते। कभी-कभार किसी संत महात्मा को राजमहलों में लाकर सत्संग का लाभ उठाते। सत्संग और सत् शास्त्र का विचार करते-करते रानी ज्ञान आरूढ़ हो गई अर्थात् आत्म-ज्ञान में स्थित हो गई। दूसरी ओर राजा को वैराग्य तो उत्पन्न हो गया, लेकिन ज्ञान अवस्था प्राप्त न हुई। रानी ने राजा को ज्ञान प्राप्त करवाने का बहुत प्रयत्न किया, लेकिन सफल न हुई। राजा को ज्ञान अवस्था भले ही प्राप्त न हुई, लेकिन वैराग्य का वेग इतना तीव्र हो गया कि एक रात्रि उठकर समस्त राज-भाग और सांसारिक सुखों को त्यागकर, वन में जाकर तप-साधना करने लगा। रानी जब नींद से जागी तो राजा की शय्या सूनी देखकर अपने योगबल से देखा कि राजा वन में एक कुटी बनाकर तपस्या में लीन है। रानी ने सोचा इस समय राजा के वैराग्य का वेग तीव्र है, अब थोड़ी कसौटी से ही कार्य चल सकता है, क्योंकि वैराग्य के बिना माया जाल नहीं काटा जा सकता, माया का आवरण उतरे बिना अंधकार नहीं मिट सकता। जैसे गुरुवाक्—

बिनु बैराग न छूटसि माइआ॥

(गउड़ी कबीर जी, पृष्ठ ३२९)

अत: माया का आवरण उतारने के लिए, वैराग्य उत्तम औषधि है। इधर रानी चुड़ाला कंभुज मुनि का वेश धारण कर राजा के पास पहुँची। राजा ने मुनि को नमस्कार करके आदर सत्कार से अपने आसन पर बैठाया। मुनि ने राजा से कुशल क्षेम पूछने के पश्चात् कहा राजन्! त्याग के बिना परमपद की प्राप्ति सम्भव नहीं, इसलिए अपने पास जो वस्तु है उसका त्याग कर। राजा बोला—मैं तो राज्य-भार एवं उसके समस्त सुखों को त्यागकर आया हूँ। अब मेरे पास है ही क्या, जिसका मैं त्याग करूँ। घास-फूस की टूटी झोंपड़ी, एक तूँबी और लंगोटी के अतिरिक्त मेरे पास कौन सी ऐसी वस्तु है जो त्यागने योग्य है? मुनि ने कहा—ये सब वस्तुएँ भी तुम्हारी नहीं, अपितु जिस शरीर के लिए यह सामान है, वह

शरीर भी तुम्हारा नहीं। राजा मुनि की बात सुनकर समझ गया कि शरीर में 'मैं और मेरी भी' एक अहंकार है। शरीर से मुक्त होने के लिए राजा पर्वत पर चढ़ गया ताकि पर्वत से गिरकर शरीर त्याग दे।

कंभुज मुनि बोला—राजन्! शरीर त्यागने मात्र से त्याग नहीं हो जाता, मैं इतना बड़ा त्यागी हूँ—राज-भाग के सुख त्याग दिए, झोंपड़ी और यहाँ तक कि तूंबी त्याग दी, लेकिन इसका स्मरण अभी मन में है कि मैं त्यागी हूँ। यह त्याग कहाँ से हुआ है? अहंकार तो अभी भीतर खड़ा है। राजन्! शरीर त्यागने से त्याग नहीं होगा, अहंकार ने अन्य शरीर धारण कर लेना है। हे राजन्! यदि आत्म-ज्ञान चाहता है तो त्याग का भी त्याग कर अर्थात् यह भूल जा कि मैं त्यागी हूँ। इस प्रकार रानी चुड़ाला ने बहुत बार अपने योग बल द्वारा मुनि का वेश धारण करके राजा को उपदेश किया और साथ ही साथ राज्य-भार की देख-रेख भी करती रही, लेकिन भीतर से निर्लिप्त, निष्क्रिय अवस्था में स्थित रहती। ऐसा करते एक दिन राजा को ज्ञान-विज्ञान का विवेक हो गया। रानी ने एक दिन राजा की परीक्षा ली तो राजा शत प्रतिशत खरा उतरा। अब राजा शिखिध्वज सुख-दु:ख, मान-अपमान, हर्ष-शोक में एक रस रहने लगा, इस प्रकार राजा ज्ञान में स्थित होकर वापिस घर आया। राज्यभार की संभाल करने लगा लेकिन निर्लिप्त होकर, जीवन मुक्ति का आनंद लेते हुए शेष बची आयु व्यतीत की। पाँचवें उदाहरण में श्री गुरु अर्जुन देव जी संतों को सूर्य के समान गुणों वाला दर्शाते हुए कहते हैं—

मूल— **करि प्रगासु प्रचंड प्रगटिओ अंधकार बिनास॥**
पवित्र अपवित्रह किरण लागे मनि न भइओ बिखादु॥

अर्थ— जब सूर्य उदय होता है, सबको प्रकाश देता है और समस्त अंधकार नष्ट हो जाता है। उसकी रश्मियाँ पवित्र-अपवित्र, शुभ-अशुभ अर्थात् सब जगह पड़ती हैं, लेकिन मन में क्रोध अथवा द्वेष विषाद आदि नहीं करता। सूर्य सब जीवों की आँखों को प्रकाश देता है। सूर्य से प्रकाश पाकर किसी की आँखें भगवान की मूर्ति का, कोई संत महात्मा का, कोई श्री गुरु ग्रन्थ साहिब और संगत का दर्शन करता है। इसी प्रकार किसी की आँखें बुरा देखती हैं, किसी की दृष्टि अपवित्र स्थानों पर पड़ती है, लेकिन सूर्य पवित्र-अपवित्र सबको एक प्रकार का प्रकाश देता है। आँखों के गुण-दोष के साथ सूर्य का कोई सम्बन्ध नहीं, सदा निर्लिप्त एवं निर्वैर रहता है। इसी प्रकार संत महात्मा सदा निर्लेप रहते हैं, बाहर के विषय, शब्द, स्पर्श आदि का संग नहीं करते। संसार में चार प्रकार के लोग रहते हैं—पापी, धर्मात्मा, सुखी एवं दु:खी। साधु महात्मा चारों प्रकार के लोगों से अपने आपको निर्लिप्त रखते हैं और शुभ गुण जैसे मैत्री, मुदिता, करुणा, अपेक्षा आदि शुभ भाव के साथ व्यवहार करते हैं। योग शास्त्र में वर्णन आता है कि एक बार कुछ ऋषियों ने पतंजलि भगवान् को प्रार्थना की कि संसार में प्रसन्नचित्त रहते हुए जीवन को कैसे व्यतीत किया जाए? भगवान् पतंजलि बोले, दु:खी पर दया करो, दु:खी को दयाभाव के साथ देखकर मन शान्त रहता है और सुखी को देखकर उसके साथ मित्रता करो, इस प्रकार धर्मात्मा को देखकर खुशी अनुभव करो, क्योंकि वह निर्वैर भाव से पर-उपकार के कार्य करता है और पापी को देखकर उपरामता करो अर्थात् उदासीन रहो। उसके दुष्कर्मों में सम्मिलित न हों, न उसके दुष्कर्मों का मन में विचार करो और न ही जिह्वा से कटु वचन बोलो, फिर उसके पाप कर्मों का एक भी फल नहीं भोगना पड़ेगा।

संसार में संत एवं भक्त इस प्रकार विचरण करते हैं। संतों-महात्माओं के उपदेश द्वारा जीव के भीतर का अंधकार नष्ट हो जाता है और ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। संतों की शिक्षा चाहे किसी बुद्धिमान अथवा बुद्धिहीन, शुभ हो अथवा बुरा, पापी हो अथवा पुण्यात्मा हो सबके लिए समान है। जो बुद्धिहीन पुरुष है वह भी उत्तम शिक्षा सुनकर सुखी हो जाता है। सतगुरु नानक देव महाराज जपुजी साहिब में फ़रमान करते हैं—

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु॥ तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु॥

(जपुजी साहिब, पृष्ठ ७)

ज्ञानवान् पुरुष में, ज्ञान का प्रकाश अर्थात् तेज होता है। ऐसे महापुरुष के सत्संग में नाम-श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन का आनंद कोटिश: गुना अधिक है और वह प्रत्येक काम करने के लिए समर्थ होते हैं और फिर भी सूर्य की भाँति निर्लिप्त रहते हैं।

जीव आँखें होते हुए भी सूर्य के बिना नहीं देख सकते। प्रत्येक स्थान पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है। अग्नि में भी सूर्य का ही अंश है। जब सूर्य की प्रकाश शक्ति नेत्रों पर पड़ती है तो नेत्रों में देखने की शक्ति आती है अर्थात् तो ही रूप आदि देख सकती हैं। नेत्रों से हम माता-पिता, संत-महात्मा अथवा अन्य रूप देखते हैं, लेकिन यदि सूर्य न हो तो आँखें अपने आप नहीं देख सकतीं। इसी प्रकार जीव धर्म से विमुख होकर, दुष्कर्मों में प्रवृत्त होता है और फलस्वरूप दु:खी होता है। अत: संत महात्मा धर्म की शिक्षा देकर जीव को दुष्कर्मों से रोकते हैं जिसके फलस्वरूप जीव सुखी हो जाता है। जिस प्रकार सूर्य अपनी प्रकाश शक्ति के माध्यम से अंधकार को नष्ट कर जीवों को मार्ग दिखाता है उसी प्रकार संत महात्मा जीवों का अज्ञान अंधकार मिटाकर जीवों को सदा के लिए सुखी कर देते हैं। सूर्य जिस ओर जाता है, उधर से अंधेरा नष्ट हो जाता है, क्योंकि परमेश्वर का ऐसा ही नियम है अर्थात् सूर्य और अंधकार दोनों इकट्ठे नहीं रह सकते। इसी प्रकार संत महात्मा और अविद्या के अंधकार का दु:ख रूपी अंधकार दोनों इकट्ठे नहीं रह सकते। संत लोग 'अहं' को त्यागकर आनंद-सागर वाहिगुरु से अभेद हो जाते हैं। परमेश्वर सदैव आनंद का सागर, निर्वैर और अपनी निर्मल महिमा में स्थित है। ऐसी उत्तम पदवी संत महापुरुषों को सदैव के लिए प्राप्त हो जाती है। इसलिए गुरु साहिब जी फ़रमान करते हैं—

यथा— **तूँ निरवैरु संत तेरे निरमल॥ जिन देखे सभ उतरहि कलमल॥**

(माझ महला ५, पृष्ठ १०८)

आठवें पातशाह श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी में ऐसा ही तेज था। जब भी कोई श्रद्धा भावना सहित दर्शन करता उसका सारा दु:ख दूर हो जाता।

एक समय श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी संगत की प्रार्थना पर दिल्ली पहुँचे। उन दिनों दिल्ली में बुखार की बीमारी फैली हुई थी, बुखार के कारण अनेक मौतें हो रही थी लेकिन जो भी श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी के दर्शन करता उसका बुखार उतर जाता था, क्योंकि गुरु साहिब जी का फ़रमान है—

हरि आपणी वडिआई भावदी जन का जैकारु कराई॥

(वार सोरठि, पृष्ठ ६५२)

साहिब श्री गुरु नानक देव महाराज जी की गद्दी पर तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी सुशोभित होकर श्री गोइंदवाल ज्योति प्रकाशित कर रहे थे। रात्रि के समय विश्राम कर रहे हैं तो अचानक किसी के रोने की आवाज़ कानों तक पहुँची। सेवादार को बोले कि देखकर आओ कि कौन रो रहा है? सेवादार ने आकर प्रार्थना की, महाराज! एक बूढ़ी स्त्री है, उसके बेटे की मृत्यु हो गई, इसलिए युवा पुत्र की मृत्यु के दुःख के कारण दीवारों से सिर मार रही है। महाराज बोले, उस स्त्री को कहो कि प्रातः पुत्र को लेकर यहाँ आए—गुरु नानक भली करेंगे। सेवादार ने उस स्त्री को कहा, हे माँ रो मत, तेरी आवाज़ दरगाह में सुनी गई है, विश्वास कर तेरा पुत्र ठीक हो जाएगा, तू प्रातः बच्चे को लेकर इस संसार के स्वामी गुरु अमरदास के चरणों में उपस्थित हो जाना। सुनकर माँ को धैर्य हुआ। प्रातः होते ही बच्चे के शव को उठाकर गुरु अमरदास महाराज जी के पवित्र चरणों में पहुँची। गुरु बाबा ने पूछा—हे स्त्री बच्चे को क्या हुआ है? स्त्री ने प्रार्थना की, ग़रीब निवाज़! बच्चे को तेईआ बुखार हुआ था, उसके साथ इसकी मृत्यु हो गई। गुरु बाबा जी ने कृपा दृष्टि की—बच्चा ठीक हो गया। गुरु साहिब बोले—माँ! जब तक हमारा शरीर यहाँ है किसी माँ के जीते जी उसका पुत्र नहीं मरेगा, क्योंकि दो जहान (संसार) के स्वामी श्री गुरु अंगद देव महाराज हमें ये वरदान देकर गए हैं। गुरु साहिब ने बुखार को अपने पास कैद कर लिया, उसके बाद श्री गोइंदवाल साहिब में 'तेईये' बुखार के साथ किसी की मृत्यु नहीं हुई। गुरु साहिब जी का वचन आज भी प्रमाण है। इस प्रकार संत जन सूर्य की भाँति पर-उपकारी स्वभाव वाले होते हैं। जिस प्रकार सूर्य शुद्ध और अशुद्ध अर्थात् सब स्थानों पर अपनी रश्मियों के माध्यम से प्रकाश करता है, इसी प्रकार संत जन प्रत्येक अच्छे-बुरे को एक जैसा उपदेश करते हैं। महापुरुष की शब्द रूपी किरणें जब जीव के हृदय पर पड़ती हैं, उसका समस्त अंधकार नष्ट कर ज्ञान का प्रकाश कर देती हैं। पूर्व किए पापों से जीव मुक्त हो जाता है, जीवन सुखी हो जाता है। छठे उदाहरण में श्री गुरु अर्जुन देव जी संतों को वायु के समान पर-उपकारी दर्शाते हैं—

मूल— **सीत मंद सुगंध चलिओ सरब थान समान॥**
जहा सा किछु तहा लागिओ तिलु न संका मान॥

अर्थ— वस्तु चाहे सुगंधित हो अथवा दुर्गंध युक्त हो। वायु अपने स्वभाव के अनुसार सब स्थानों पर एक समान लगती है और जिधर भी प्रवेश करने के लिए स्थान मिले प्रवेश कर जाती है। इसी प्रकार समान भाव के साथ व्यवहार करके उसको किंचित मात्र भी संकोच नहीं होता अर्थात् पापी हो अथवा धर्मात्मा दोनों को एक समान लगती है। इस प्रकार संत जन भी अच्छे अथवा बुरे अर्थात् सब प्रकार के लोगों के साथ समान व्यवहार करते हैं। जैसे गुरुवाक्—

ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि॥ जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान॥

(ग: सुखमनी, पृष्ठ २७२)

जैसे वायु, चींटी से लेकर हाथी तक सबका जीवन रूप है। यदि वायु न हो, कोई जीव जीवित नहीं रह सकता। वायु श्वास का रूप धारण कर सब जीवों के भीतर प्रवेश करती है। यदि किसी जीव का श्वास रुक जाए—उसी समय मृत्यु हो जाती है, ऐसा पर-उपकार करती हुई वायु न ग़रीब देखती है, न धनी देखती है, न पापी देखती है, न पुण्यात्मा, न चींटी देखती है, न कुंजर देखती है अर्थात् सबके साथ समान भाव से व्यवहार करती है। इसी प्रकार संत लोग भी बिना किसी ऊँच-नीच, पापी-पुण्यात्मा, धनी-निर्धन को देखे पर-उपकार करते चले जाते हैं। सातवें उदाहरण में गुरु अर्जुन देव महाराज जी संत को अग्नि के समान गुणों वाला दर्शाते हैं—

मूल— **सुभाइ अभाइ जु निकटि आवै सीतु ता का जाइ॥**
आप पर का कछु न जाणै सदा सहजि सुभाइ॥

अर्थ— जैसे अग्नि का स्थाई स्वभाव है प्रकाश करना, पास आए की ठंड को दूर करना और सबका भोजन पकाना—ऐसे करते वह अच्छा-बुरा, अपना-पराया नहीं देखती, बस अपने स्वभाव के अनुसार सबको सुख देती है, संतों का भी यही स्वभाव है, ऐसे गुणवान् संत महापुरुष जो परमेश्वर से अभेद हो चुके हैं। अंत में श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी जीव को शिक्षा देते हैं कि उनके चरणों में ऐसी प्रार्थना करो—

मूल— **चरण सरण अनाथ इहु मनु रंगि राते लाल॥**
गोपाल गुण नित गाउ नानक भए प्रभ किरपाल॥

अर्थ— हे संत जनो! आपके ऊपर प्रभु कृपालु हुए हैं, क्योंकि आपने सदैव उनके गुण गाकर अपने मन को परमेश्वर के रंग में रंग लिया है। मैं अनाथ आपकी चरण-शरण हूँ। इस प्रकार नम्रता धारण करके जो भी संतों के पास जाकर प्रार्थना करता है, संत कृपा करते हैं। श्री गुरु अर्जुन देव महाराज ने उपरोक्त सात दृष्टांत देकर बताया है कि संत महापुरुष इस प्रकार निर्लेप रहकर, पर-उपकार द्वारा जीवों का भला करते हैं।

एक दिन का ज़िक्र है कि श्री गुरु अर्जुन देव महाराज श्री हरिमंदिर साहब जी की सेवा करवा रहे थे। बहुत सी संगत सेवा का लाभ उठाने के लिए आई हुई थी। पूरा दिन सेवा में लगी रहती। कोई टोकरी भर रहा है, कोई उठा रहा है, कोई ईंटें पकड़ा रहा है। गुरु बाबा जी भी खड़े संगत को उत्साहित कर रहे हैं। इतने में एक फकीर आ पहुँचा। क्या देखता है? असंख्य संगत सेवा कार्य में संलग्न है और गुरु साहिब जी सबके मध्य खड़े शाबास भाई! शाबास आदि शब्द पावन-मुख से उच्चारण कर रहे हैं। फ़कीर आश्चर्यचकित होकर सोचने लगा। गुरु नानक पूर्ण फकीर हुए हैं, सुना था कि उनकी गद्दी पर कोई पूर्ण पुरुष सुशोभित हैं, लेकिन ये तो संसार से कार्य करवा रहे हैं। न इन्होंने समाधि लगाई है, न पास आए हुओं को उपदेश कर रहे हैं, उलटा प्रवृत्ति में फँसे हैं—जो दु:खों का गहन सागर है। यह शंका लेकर गुरु अर्जुन देव जी के पास आकर अपनी शंका निवारण हेतु प्रार्थना की। फ़कीर की शंका निवृत्ति हेतु गुरु बाबा जी ने 'आसा राग' में यह शब्द उच्चारण किया—

साचि नामि मेरा मनु लागा। लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा॥
बाहरि सूतु सगल सिउ मउला॥ अलिपतु रहउ जैसे जल महि कउला॥ रहाउ॥
मुख की बात सगल सिउ करता॥ जीअ संगि प्रभु अपुना धरता॥
दीसि आवत है बहुतु भीहाला॥ सगल चरन की इहु मनु राला॥
नानक जनि गुरु पूरा पाइआ॥ अंतरि बाहरि एकु दिखाइआ॥

(आसा महला ५, पृष्ठ ६८४)

अर्थ—1. हे फ़कीर! यह जो आपको शंका हुई है कि मैं प्रवृत्ति में निमग्न हूँ, यह तो लीला मात्र है, लेकिन भीतर से मेरा मन सदैव वाहिगुरु के नाम में लीन रहता है।

2. बाहर से तो सब संगत, सांसारिक कामकाज सहित और प्रकृति से सम्बद्ध दृष्टिगोचर हो रहा हूँ जैसे सूत का धागा माला के मनकों आदि के साथ एक प्रतीत होता है, लेकिन भीतर से ऐसे निर्लिप्त रहता है जैसे जल में कमल।

3. हे फ़कीर! मुख से तो मैं सबसे बात करता हूँ, संगत जो सेवा कर रही है उनको उत्साहित करता हूँ, लेकिन मन में प्रभु परमात्मा को बसाया हुआ है।

4. देखने में तो मैं बहुत क्रोधवान भयानक दृष्टिगोचर हो रहा हूँ, लेकिन भीतर से मेरा मन सबकी चरणधूलि बनकर नम्रता में रहता है। सुनकर फ़कीर ने प्रार्थना की ग़रीब निवाज़! आपको ऐसा आचरण कहाँ से प्राप्त हुआ? गुरु अर्जुन देव महाराज बोले—

नानक जनि गुरु पूरा पाइआ॥ अंतरि बाहरि एकु दिखाइआ॥

(आसा महला ४, पृष्ठ ३८४)

गुरु साहिब जी ने फरमाया—यह अवस्था हमें पूर्ण गुरु रामदास जी से प्राप्त हुई है। उन्होंने कृपा करके हमें बाहर-भीतर सर्वत्र विद्यमान वाहिगुरु दिखा दिया है। अब संसार के कार्य करते हुए भी आठों पहर वाहिगुरु के साथ समाधि लगी रहती है। गुरुजनों की कृपा से हमारी भी यह अवस्था होनी चाहिए।

शास्त्रों में अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं जैसे राजा जनक। वे मिथिलापुरी के राजा भी थे, लेकिन भीतर से इस प्रकार निर्लिप्त थे जैसे पानी में मुरग़ाबी। इसी प्रकार राजा शिखिध्वज और रानी चुड़ाला का प्रसंग जो योग वाशिष्ठ में विस्तारपूर्वक वर्णित है। अन्य भी ऐसे बहुत हुए हैं जो माया में रहते हुए भी पकड़ से इस प्रकार निर्लिप्त रहे जैसे जल में कमल।

रानी मदालसा, जिसका पुत्र राज्यभार वहन करता हुआ भी निर्मोही रहकर प्रसिद्ध हुआ। इसी प्रकार गुरुमुखों को संसार में रहकर निर्मोही होना चाहिए, क्योंकि जीव को दु:ख में डालने वाला मोह ही है। उदाहरण के तौर पर जैसे बगीचे में कोई हानि हो जाए, उसका दु:ख जितना मालिक को होता है उतना माली को नहीं होता। इसी प्रकार दाई को उतना दु:ख नहीं होता जितना बच्चे की माँ को होता है। कोषाध्यक्ष को भी उतना दु:ख नहीं होता जितना सेठ को होता है। इसी प्रकार गुरमुखों को भी सब कुछ वाहिगुरु का जानकर सदैव निर्लिप्ता का आनन्द लेना चाहिए।

इस प्रकार कुम्भ के अवसर पर संत बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज कथा-व्याख्यान करके असंख्य संगत को आनन्दित करते रहे। ऐसे निर्लिप्तता के वचन सुनकर बहुत से त्यागी साधुओं ने भी जो त्याग के अहंकार में दु:खी हो रहे थे, गुरुमुखों के वास्तविक मार्ग को अपना कर मन की शान्ति प्राप्त की। इस प्रकार हरिद्वार के कुंभ का समापन हुआ।

1894 ई० में प्रयागराज के अर्धकुंभ पर जाना

कुम्भ का उत्सव समाप्त होने पर महाराज बुड्ढा सिंह जी अपनी संत मण्डली सहित ऋषिकेश पहुँच गए। कुछ समय सत्संग, आत्मचिंतन करते यहीं व्यतीत किया। इतने में प्रयागराज का अर्धकुंभ आ गया। कुछ महात्माओं की प्रेरणा और दिल्ली के गुरु स्थानों की यात्रा करके मथुरा, वृन्दावन और बृज की यात्रा करते हुए आगरा, कानपुर और अन्य नगरों में कथा सत्संग करते प्रयागराज पहुँचकर निर्मल पंचायती अखाड़ा की छावनी में निवास किया। प्रतिदिन श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की पवित्र वाणी से शब्द की व्याख्या करते। जिस समय आप कथा करते, हज़ारों में संगत मन एकाग्र कर सुनती, क्योंकि आप जी का उपदेश गृहस्थी एवं त्यागी सबके लिए समान और सरल होता था। एक दिन आप जी ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के इस पावन शब्द के साथ सत्संग आरम्भ किया—

जो मिलिआ हरि दीबाण सिउ सो सभनी दीबाणी मिलिआ॥
जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु सुरखरू ओस कै मुहि डिठै सभ पापी तरिआ॥

ओसु अंतरि नामु निधानु है नामो परवरिआ॥
नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ नाए किलविख सभ हिरिआ॥
जिनी नाम धिआइआ इक मनि इक चिति से असथिर जग रहिआ॥

(सिरीराग की वार महला ४, पृष्ठ ८७)

अर्थ—जो व्यक्ति हरि दरबार अर्थात् सत्संग के साथ जुड़े हुए हैं, वे मानों सब दरबारों से सम्बद्ध हैं, क्योंकि हरि दरबार, समस्त दरबारों से शिरोमणि दरबार है। जैसे राजा राज-दरबार से रहित अन्य सब कचहरी, न्यायालय, दफ़्तरों में बेझिझक जा सकता है। इतना उत्तम जो हरि दरबार है वह कैसा है? उस दरबार का मानचित्र श्री गुरु अर्जुन देव महाराज ने इन शब्दों के द्वारा दिखाया है—

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि॥

अगम अगाधि सुनहु जन कथा॥ पारब्रहम की अचरज सभा॥ रहाउ॥
सदा सदा सतिगुर नमसकार॥ गुर किरपा ते गुन गाए अपार॥
मन भीतरि होवै परगासु॥ गिआन अंजनु अगिआन बिनासु॥
मिति नाही जा का बिसथारु॥ सोभा ता की अपर अपार॥
अनिक रंग जा के गने न जाहि॥ सोग हरख दुहहू महि नाहि॥
अनिक ब्रहमे जा के बेद धुनि करहि॥ अनिक महेस बैसि धिआन् धरहि॥
अनिक पुरख अंसा अवतार॥ अनिक इंद्र ऊभै दरबार॥
अनिक पवन पावक अरु नीर॥ अनिक रतन सागर दधि खीर॥
अनिक सूर ससीअर नखिआति॥ अनिक देवी देवा बहु भांति॥
अनिक बसुधा अनिक कामधेन॥ अनिक पारजात अनिक मुखि बेन॥
अनिक अकास अनिक पाताल॥ अनिक मुखी जपीऐ गोपाल॥
अनिक सासत्र सिम्रित पुरान॥ अनिक जुगति होवत बखिआन॥
अनिक सरोते सुनहि निधान॥ सरब जीआ पूरन भगवान॥
अनिक धरम अनिक कुमेर॥ अनिक बरन अनिक कनिक सुमेर॥
अनिक सेख नवतन नामु लेहि॥ पारब्रहम का अंतु न तेहि॥
अनिक पुरीआ अनिक तह खंड॥ अनिक रूप रंग ब्रहमंड॥
अनिक बना अनिक फल मूल॥ आपहि सूखम आपहि असथूल॥
अनिक जुगादि दिनस अरु राति॥ अनिक परलउ अनिक उतपाति॥
अनिक जीअ जा के ग्रिह माहि॥ रमत राम पूरन स्रब ठांइ॥
अनिक माइआ जा की लखी न जाइ॥ अनिक कला खेलै हरि राइ॥
अनिक धुनित ललित संगीत। अनिक गुपत प्रगटे तह चीत॥
सभ ते ऊच भगत जा कै संगि॥ आठ पहर गुन गावहि रंगि॥
अनिक अनाहद आनंद झुनकार। उआ रस का कछु अंतु न पार॥
सति पुरखु सति असथानु॥ ऊच ते ऊच निरमल निरबानु॥
अपुना कीआ जानहि आपि॥ आपे घटि घटि रहिओ बिआपि॥
क्रिपा निधान नानक दइआल॥ जिनि जपिआ नानक ते भए निहाल॥

(सारंग महला ५, असटपदी घरु ६, पृष्ठ १२३५)

प्रेमी जनो! जो ऐसे दरबार से सम्बद्ध हो गया उससे कौन सा स्थान रिक्त रह गया?

मूल— **जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु सुरखरू ओस कै मुहि डिठै सभ पापी तरिआ।**

अर्थ— ऐसा महापुरुष जिसको परमेश्वर का दरबार प्राप्त हो गया, जहाँ भी वह जाए, चाहे धर्मराज के दरबार में अथवा स्वर्ग में महाराज इन्द्र के दरबार में अथवा किसी सांसारिक राजा की सभा में अर्थात् सब स्थानों पर उसको आदर मिलेगा। एक बार राजा जनक धर्मराज की सभा में गए-आगे धर्मराज ने अत्यन्त हर्षित होकर गले में पल्ला डालकर मुख से ये शब्द उच्चारण किए—

नामु धिआइनि साजना जनम पदारथु जीति॥
नानक धरम ऐसे चवहि कीतो भवनु पुनीत॥

(वारां ते वधीक, पृष्ठ १४२५)

जो भी पुरुष प्रेम-सहित परमेश्वर का नाम, सिमरन, ध्यान करते हैं, वे अपनी जीवन रूपी शर्त को जीत लेते हैं अर्थात् जीवन सफल कर लेते हैं। इस प्रकार जब राजा जनक धर्मराज की पुरी में गए तो धर्मराज ने कहा, महाराज! आपने पवित्र चरण मेरी पुरी में डालकर इसको पवित्र किया है। इस प्रकार राजा जनक को धर्मराज की पुरी में आदर मिला—जैसे वचन है—

धन धनं राजा जनक है जिन सिमरन कीउ विवेक।
एक घड़ी के सिमरने पापी तरे अनेक।
ऐसा सिमरन जाण के संतां पकड़ी टेक।
नानक सिमरन सार है विसरै घड़ी न एक।

मूल— **ओसु अंतरि नामु निधानु है नामो परवरिआ।**

अर्थ— जिसके भीतर नाम का खज़ाना है उसको सदैव नाम का ही आश्रय है। जैसे संसारी लोग परिवार आदि का आश्रय लेते हैं।

मूल— **नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ नाए किलविख सभ हिरिआ॥**

अर्थ— नामी पुरुषों की पूजा नाम के विश्वास के कारण ही होती है और नाम-जाप से उनके सब पाप नष्ट हो जाते हैं। जिस प्रकार किसी मनुष्य में कोई विशेष गुण हो जो कि साधारण लोगों में नहीं होता, उस एक गुण के कारण ही संसार के लोग उसको आदर देते हैं, लेकिन हरिजनों में तो नाम सिमरन के कारण गुणों का खज़ाना वाहेगुरु प्रकट हो चुका है, वह जहाँ भी जाएगा उसकी पूजा अवश्य होगी। जैसे एक दृष्टांत—

एक बार का जिक्र है—रज्जब (रज्ज़ब अली खां) ने संत दादू जी की शरण में जाकर उपदेश लिया। महापुरुषों की कृपा के फलस्वरूप हृदय में नाम-सिमरन के अंकुर फूटे। बस नाम भीतर बसने की देर थी, संसार के सब पदार्थों से मन उठ गया अर्थात् पूर्ण वैराग्य हो गया। इससे पूर्व माता-पिता ने इसकी (रज्ज़ब) सगाई कर दी थी। कुछ देर पश्चात् विवाह की बात चली तो रज्ज़ब ने इन्कार कर दिया। इसके इन्कार करने से जिस लड़की की सगाई हुई थी उसका विवाह रज्ज़ब के भाई बिखने के साथ कर दिया। रज्ज़ब दिन-रात परमेश्वर के भजन में लीन रहता। वह संसार से बेखबर हो गया। दूर-दूर तक इसका समाचार फैल गया, लोग दर्शनार्थ आने लगे। दर्शन एवं सत्संग हेतु प्रातः से सायं तक लोगों की भीड़ लगी रहती। एक दिन बिखने की स्त्री इधर आई, देखा लोग किस प्रकार रज्ज़ब को नमस्कार करके उसके चरणों की धूलि अपने मस्तक को लगा रहे हैं। रज्ज़ब का इतना आदर होते देखकर बिखने की स्त्री सहन नहीं कर सकी। घर आकर पति को कहने लगी-रज्ज़ब

का इतना आदर हो रहा है, दूर-दूर से लोग उसे नमस्कार करने आते हैं और कितनी भेंटें उसके आगे रखते हैं, लेकिन तुम्हें कोई नहीं पूछता, क्या तुम उसके भाई नहीं हो?

पत्नी की बात सुनकर 'बिखना' कहने लगा-रज्ज़ब की शोभा इसलिए है कि उसने संत दादू जी की शरण में गिरकर प्रभु का नाम-जाप किया और तेरे से दूर रहा। मेरा जो अपमान है, अर्थात् रज्ज़ब जितना सम्मान नहीं, यह इसलिए कि मैं तुम्हारी शरण में रहा—जैसे दोहरा—

जन रजब को संपदा दादू दीनी आप॥
मुझ बिखणे को आपदा तुध चरनों प्रताप॥

मूल— **जिनी नामु धिआइआ इक मनि इक चिति से असथिर जग रहिआ॥**

अर्थ— जिसने भी वाहिगुरु का नाम एकाग्र मन से जपा वह सदा के लिए स्थिर अवस्था को प्राप्त हो गया है, संसार में सदा के लिए उसका नाम रहता है। जैसे ध्रुव, प्रह्लाद, कबीर, सदना, सैण और कितने अन्य भक्त हुए हैं जिनको लोग श्रद्धा प्रेम के साथ स्मरण करते हैं। संसार में बड़े-बड़े महाराजा हुए हैं, लेकिन उनको कोई याद नहीं करता। जैसे गुरुवाक्—

जिसु नीच कउ कोई न जानै॥ नामु जपत उहु चहु कुंट मानै॥

(आसा महला ५, पृष्ठ ३८६)

इस प्रकार संसार के पदार्थों की प्रसिद्धि स्थाई नहीं होती अपितु क्षण-जीवी होती है, लेकिन जिन्होंने गुरु-चरण-शरण प्राप्त करके, परमात्मा का नाम एकाग्र मन से जपा है वे सदा के लिए प्रसिद्ध हो जाते हैं और अमर पदवी को प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार कुम्भ के उत्सव पर बाबा बुड्ढा सिंह जी की पवित्र रसना से सार रूपी वचन सुनकर बहुत लोगों ने लाभ उठाया।

पूर्व के अन्य स्थानों की यात्रा

प्रयागराज की अर्धकुंभी का उत्सव समाप्त होने पर मिर्ज़ापुर वाले महंत रण सिंह जी की प्रार्थना स्वीकार करके मिर्ज़ापुर पहुँचे। महंत रण सिंह जी के प्रेमवश कुछ दिन मिर्ज़ापुर विश्राम करके महंत जी से आज्ञा लेकर विंध्याचल पर्वत देवी भगवती के मंदिर की यात्रा करके काशी पहुँचे। यहाँ पहुँचकर पंडित उद्धव सिंह जी के पास 'बोलानाला' स्थान पर निवास किया। काशी में कई संतों महात्माओं के साथ मेल-मिलाप और सत्संग में समय व्यतीत हुआ। पर्याप्त समय तक काशी निवास करने के पश्चात् चैत्र की राम नवमी के समय अयोध्या पहुँचे। यहाँ भगवान् राम जी के जन्म स्थान आदि पवित्र स्थानों के दर्शन करके 'सीता मड़ी' जो सीता जी का जन्म स्थान है आदि स्थानों पर होते हुए राजा जनक की नगरी जनकपुरी के दर्शन किए। यह सारी यात्रा अति आनन्दमयी रही। यहाँ से चलकर 'शाहमड़ी' गए। यहाँ बिलास राय ने स्टेशन के समीप साधु-महात्माओं के ठहरने के लिए एक बगीचा लगाया हुआ था, वहाँ ठहरे। पहले भी पूर्व की यात्रा के दौरान जिस समय पंडित सुच्चा सिंह जी के साथ थे, आप यहीं ठहरे थे। एक दो दिन विश्राम करके संत मण्डली सहित यहाँ से चलकर 'त्रिरोहत' देश की यात्रा करते मुज्ज़फरपुर कुछ दिन रुके। मुज्ज़फरपुर से चलकर कार्तिक की पूर्णिमा को हरि-हर क्षेत्र पहुँचे। यह वह स्थान है जहाँ गज एवं ग्राह का युद्ध हुआ था और यहीं सरयू गंगा अयोध्या से चलकर और गंडक नदी नेपाल से चलकर भगीरथ गंगा में मिलीं अर्थात् तीनों पवित्र नदियों का यहां संगम है। इस स्थान पर प्रतिवर्ष भारी मेला लगता है। यहाँ पहुँचकर भक्त

बिहारी सिंह खत्री के बगीचे में निवास किया। इस प्रेमी का स्वभाव अत्यन्त संत-सेवी था, क्योंकि प्रथम यात्रा के समय महाराज जी की संगत करके वह बहुत प्रभावित हुआ था। इस उत्सव के दौरान भी इसने महाराज जी के सत्संग और सेवा का अच्छा लाभ उठाया। उत्सव समाप्ति पर गंगानाथ मुकर्जी आदि बंगाली प्रेमियों के प्रेमवश जो कि प्रथम यात्रा के साथी थे, पूर्व के कुछ गुरुस्थानों और बुद्ध गया की यात्रा करके राजगिरी पहुँचे। यह कंस के श्वसुर, राजा जरासंध की राजधानी है। यहाँ पुरुषोत्तम मास में, जो कि तीन वर्ष बाद आता है, बड़ा भारी उत्सव लगता है। यहाँ गर्म जल का सोता बहता है जिसमें सहस्त्रों यात्री स्नान करते हैं और साधु-महात्मा भी बड़ी संख्या में पहुँचते हैं। उत्सव की समाप्ति उपरांत गुरु सहाय सिंह तथा अन्य प्रेमी जो कि 'शसराम' गाँव के रहने वाले थे, प्रार्थना करके आपको अपने गाँव ले गये। यह एक ऐतिहासिक गाँव है। यहाँ पूर्व की यात्रा के समय साहिब श्री गुरु तेग़ बहादुर जी के पवित्र चरण पड़े थे। उनकी स्मृति में यहाँ एक गुरुद्वारा भी है। आप जी के ठहरने का प्रबन्ध इस पवित्र स्थान पर ही किया गया। यहाँ के निवासियों का आपस में बहुत शत्रु-भाव था, क्योंकि उच्च जाति के लोग जाति अभिमान वश स्वयं वेद पाठी होने के कारण निम्न जाति के लोगों को अकारण तंग करते थे। आपने सबको एकत्रित करके उपदेश किया कि भाई! जाति के कारण कोई बड़ा नहीं होता, बड़ा तो परमात्मा है जो सबके हृदयों मे निवास करता है, जिससे कोई स्थान रिक्त नहीं।

देखो! वेदों की रचना और सृष्टि की उत्पत्ति ब्रह्मा जी ने की। विचार कर देखो तो ब्रह्मा जी बड़े हुए, लेकिन जिसने ब्रह्मा को पैदा किया, सबसे बड़ा तो वही हुआ। एक बार ब्रह्मा जी को भी अहंकार हो गया। हरि को अहंकार अच्छा नहीं लगता। जैसे गुरुवाक्—

हरि जीउ अहंकार न भावई वेद कूक सुणावहि॥

इस प्रकार ब्रह्मा का अहंकार दूर करने के लिए हरि ने एक लीला की। ब्रह्मा जी चलकर याज्ञवल्क्य नामक ऋषि के पास गए। आगे ऋषि, ब्रह्मा के सत्कार के लिए खड़े नहीं हुए। ब्रह्मा ने क्रोध किया कि मैं सृष्टि का कर्त्ता हूँ, तुझसे बड़ा हूँ, इसलिए तुझे मेरे सत्कार के लिए उठना चाहिए था।

ऋषि बोले-मैंने तेरे से भी बड़े-बड़े ब्रह्मा देखे हैं, तुम उनकी तुलना में बहुत छोटे हो। ब्रह्मा जी ने घबराकर कहा कि कहाँ देखे हैं? ऋषि बोले चल मेरे साथ दूसरे ब्रह्माण्ड में। अपने योग बल द्वारा वे दूसरे ब्रह्माण्ड में गए। वहाँ अष्टमुखी ब्रह्मा देखा, तब उस चतुर्मुखी ब्रह्मा का अहंकार दूर हो गया। फिर ऋषि के सम्मुख अष्टभुजी ब्रह्मा ने अहंकार किया। उसका अहंकार दूर करने हेतु ऋषि उसको तीसरे ब्रह्माण्ड में ले गया। वहाँ उसने षोडस मुखी ब्रह्मा को देखा, फिर उसका अहंकार दूर करने हेतु बत्तीस मुख वाले ब्रह्मा के पास गए। इस प्रकार दुगने-दुगने मुखों वाले ब्रह्मा के पास पहुँचते-पहुँचते सहस्त्रमुखी ब्रह्मा के पास पहुँचे, जिसे समष्टि सृष्टि का विराट् कहते हैं जिसके सम्बन्ध में लिखा है—

सहस्त्र शीर्षा पुरुषा सहस्त्रासा सहसरपाद॥

तथा गुरुनानक देव जी—

सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोहि॥
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही॥

(पृष्ठ १३)

इस प्रकार परमात्मा ही सबसे बड़ा है। वेद पाठ अथवा अन्य साधन परमेश्वर मिलाप करने के लिए उपयुक्त हैं अन्यथा अहंकार का विषय न बन जाएं। विद्या अपने आप पढ़ने से पूरी तरह समझ नहीं आती, बल्कि अहंकार का विषय बन जाती है। वही विद्या यदि किसी तत्त्ववेत्ता महापुरुष की संगत में पढ़ी जाए तो पूरी तरह समझ लग जाती है। एक दृष्टांत—

यदि सागर के पानी का कोई एक घूँट पी ले तो पेचिश लग जाएगी, क्योंकि उसमें नमक की मात्रा अधिक है। वही जल मेघ का संग कर जब वर्षा के रूप में बरसता है तो कई रोगों को हटाने का कारण बन जाता है। जिस वस्तु ने अंधकार का नाश नहीं किया, वह वस्तु प्रकाश किस प्रकार कहलवा सकती है? जिस विद्या ने अहंकार रूपी अविद्या का नाश नहीं किया, वह विद्या ही क्या हुई? विद्या ने विवेक उत्पन्न करना है फिर पता चलता है कि समस्त दुःखों का मूल कारण अहंकार है। अहंकार की निवृत्ति नाम और नामी पुरुषों की संगत द्वारा होती है इसलिए समस्त कर्मों का शिरोमणि कर्म परमेश्वर का नाम और साधु संगत है। यथा गुरुवाक्—

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि॥

पाठु पड़िओ अरु बेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे॥
पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ अधिक अहंबुधि बाधे॥
पिआरे इन बिधि मिलणु न जाई मैं कीए करम अनेका॥
हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका॥ रहाउ॥
मोनि भइयो करपाती रहिओ नगन फिरिओ बन माही॥
तट तीरथ सभ धरती भ्रमिओ दुबिधा छुटकै नाही॥
मन कामना तीरथ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए॥
मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए॥
कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा॥
अंन बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलिऐ हरि दुआरा॥
पूजा अरचा बंदन डंडउत खटु करमा रतु रहता॥
हउ हउ करत बंधन महि परिआ नह मिलीऐ इह जुगता॥
जोग सिध आसण चउरासीह ए भी करि करि रहिआ॥
वडी आरजा फिरि फिरि जनमै हरि सिउ संगु न गहिआ॥
राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा॥
सेज सोहनी चंदनु चोआ नरक घोर का दुआरा॥
हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा॥
कहु नानक तिसु भइओ परापति जिसु पुरब लिखे का लहना॥
तेरो सेवकु इह रंगि माता॥
भइओ क्रिपालु दीन दुःख भंजनु हरि हरि कीरतिन इहु मनु राता॥ रहाउ दूजा॥ ३॥

(सोरठि महला ५ घरु २ असटपदीआ, पृष्ठ ६४१)

व्याख्या—शास्त्रों के पठन-पाठन और वेदों का मनन-चिंतन और हठयोग अर्थात् नेती-धौती कर्म आदि की क्रिया जो योगी लोग करते हैं जिसमें श्वासों को ऊपर नीचे आदि की क्रिया और मुख से वस्त्र डालकर गुदा के मार्ग से बाहर निकालना, जिसके द्वारा आंतों की मल निवृत्ति हो जाती है और भुजंगम नाड़ी जो सर्प की भाँति है उसको साधने

के लिए प्राणायाम जैसी कठिन साधना करते हैं, फिर भी मन की मैल समाप्त नहीं होती अपितु और भी अहंकार में जकड़े जाते हैं। छान्दोग्य उपनिषद् के सातवें अध्याय में एक कथा है—

नारद ऋषि ने सनत्कुमार आदि ऋषियों के पास जाकर प्रार्थना की कि हे भगवन्! मेरा मन अशान्त रहता है, कोई उपाय बताओ जिसके साथ मेरा मन सदा के लिए शान्त हो जाए। सनत् कुमार मुनि ने पूछा कि तुमने मन को शांत करने का कोई उपाय किया है? नारद बोले, मैंने चारों वेद, छः शास्त्र, अठारह पुराण, सत्तरह स्मृतियां तथा और भी बहुत सी विद्यायें पढ़ी हैं, लेकिन इतना कुछ करने के बावजूद भी मेरा मन शान्त नहीं हुआ। नारद की प्रार्थना सुनकर सनत् कुमार मुनि ने कहा- केवल पढ़ने मात्र से कुछ भी प्राप्त नहीं होता—जब तक उस पर अमल न किया जाए। नाम जाप के बिना मन स्थिर नहीं होता इसलिए यदि मन की शान्ति चाहते हो तो गुरु चरण शरण प्राप्त कर नाम जप। कठोपनिषद् में लिखा है—धैर्यवान् पंडित की दृष्टि में वे पुरुष अंधे हैं जिनकी दृष्टि केवल दृश्यमान अक्षरों तक ही सीमित है और जिनकी आँखें केवल शरीर अथवा चर्म ही रखती हैं। यथा गुरुवाक्—

पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास॥
पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास॥
नानक लेखै इक गल होरु हउमैं झखणा झाख॥

(आसा की वार, पृष्ठ ४६७)

संसार में जितने अक्षर हैं वे दृश्यमान होने के कारण विनाशी हैं, लेकिन वे किसी अविनाशी वस्तु की ओर संकेत कर रहे हैं, इसलिए पूज्य भी हैं। जिस वस्तु को ये स्थूल आँखें देख सकती हैं वह सत्य नहीं है क्योंकि, गुरुवाक् है—

द्रिसटिमान है सगल मिथेना॥

(मारू महला ५, पृष्ठ १०८३)

यथा— **ए अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन महि नाहि॥**

(ग: कबीर जी, पृष्ठ ३४०)

यथा— **द्रिसटिमान अखर है जेता॥ नानक पारब्रहम निरलेपा॥**

(ग: बावन अखरी, पृष्ठ २६१)

एक उदाहरण—तुम दिल्ली जाने के लिए सड़क पर यात्रा कर रहे हो। आगे एक मील पत्थर आ जाता है जिस पर लिखा है कि दिल्ली पचास कोस और तीर का निशान देकर संकेत है कि इस ओर है। 'दिल्ली' ये दो अक्षर पढ़ लेने से दिल्ली पहुँच नहीं गए। अक्षरों का संकेत समझकर जब यात्रा आरम्भ करेंगे तो एक दिन अवश्य पहुँच जाएंगे। इस प्रकार परमार्थ सम्बन्धी जितने भी शास्त्र, ग्रन्थ, पुस्तकें हैं वे सब नाम की महिमा हैं और नाम के सहायक गुणों का वर्णन करते हैं—

सिम्रिति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ॥ नाम बिना सभि कूड़ु गाल्ही होछीआ॥

(सूही महला ५, पृष्ठ ७६१)

यथा— **बहु सासत्र बहु सिम्रिती पेखे सरब ढढोलि॥**
पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल॥

(ग: सुखमनी महला ५, पृष्ठ २६५)

इसलिए परमात्मा सम्बन्धी जितने भी अक्षर हैं उनकी पूजा इसलिए है कि वे निरंकार वाहिगुरु के देश पहुँचने के लिए संकेत रूप में सहायता कर रहे हैं। यदि हमने उनका संकेत समझकर उस पर अमल करना आरम्भ कर दिया

तो एक दिन मंजिल पर पहुँचकर सदा के लिए सुखी हो जाएंगे। लेकिन यदि अक्षरों को ही पकड़कर बैठ गए तो कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं। जैसे एक दृष्टांत—

एक ग्वालिन हमेशा नदी के पार दूध बेचने जाया करती थी। उस नगर में एक विद्वान पंडित प्रतिदिन कथा किया करता था। एक दिन ग्वालिन भी बाहर खड़ी होकर कथा सुनने लगी। कथा में नाम की महिमा का वर्णन हो रहा था कि जो व्यक्ति श्रद्धा प्रेम से भगवान् का नाम जाप करता है वह सहज ही इस संसार-सागर से पार हो जाता है। ग्वालिन ने जब नाम की इतनी महिमा सुनी तो मन में विश्वास दृढ़ हो गया कि जो नाम संसार-सागर से पार उतारने के लिए समर्थ है तो मैं यह छोटी सी नदी क्यों नहीं पार कर सकती। इस विश्वास के साथ नाम जाप करती। प्रतिदिन बिना नाव के ही आर-पार जाने लगी। वह पंडित जिससे उसने कथा सुनी थी, उस पर भी उसका इतना विश्वास दृढ़ हो गया कि एक दिन उसको प्रार्थना की कि महाराज! मेरे घर चल कर भोजन (लंगर) करो। मैं आपको एक सौ रुपया दक्षिणा में दूँगी और अन्य पूजा भी करूँगी। पंडित जी के मन में लोभ जाग गया, जाने के लिए तैयार हो गया। जब दोनों चलकर नदी किनारे पहुँचे, आगे नदी बहुत तेज़ बह रही थी। ग्वालिन प्रतिदिन के समान राम-नाम का जाप करती नदी पार कर गई, लेकिन पंडित जी उसी किनारे खड़े आश्चर्यचकित थे। ग्वालिन ने आवाज़ दी, महाराज! राम नाम जपते आ जाओ। लेकिन पंडित जी स्वयं विश्वासहीन थे—

दोहा— **राम नाम को कहत ही भई गुजरी पार॥**
बहु कथा पंडित करे तऊ न उतरिओ पार॥

श्री गुरु अर्जुन देव जी फ़रमान करते हैं, हे भाई! इस प्रकार परमेश्वर को मिलना सम्भव नहीं। मैंने अनेक कर्म शास्त्रों में पढ़े एवं किए, लेकिन सब निष्फल हैं। अंततः थककर स्वामी गुरु के द्वारे शरण ली, प्रार्थना की, मन में विवेक-बुद्धि की कृपा करो।

1. यदि कोई जिह्वा करके मौन धारण करे, बरतन की बजाए खाना हाथों पर ही खाए, वस्त्र उतारकर जंगलों में नग्न घूमता रहे अथवा तीर्थ के तट पर निवास करे अथवा समस्त पृथ्वी का भ्रमण करे, तो भी मन की दुविधा का त्याग नहीं करता, अज्ञान नहीं मिटता, अर्थात् राग-द्वेष जो दुःखों का कुँआ है, नहीं मिटते।

2. चाहे कोई स्वर्ण, चांदी, स्त्री, घोड़े, हाथी और अनेक भाँति दान भी करे जैसे अन्न, वस्त्र, भूमि आदि चाहे कुछ भी करे तो भी हरि का द्वार प्राप्त नहीं कर सकता।

3. यदि कोई देवताओं आदि की पूजा चंदन केसर आदि लगाकर करे, दण्डवत् आदि प्रणाम भी करे, छः कर्म जो शास्त्रों में लिखे हैं उनमें दिन-रात संलग्न रहे, ये सब करते हुए 'अहं भाव' से मुक्त नहीं हो सकता, अपितु अधिक अहंकार में बंध जाता है। अतः इस ढंग से भी प्रभु प्राप्ति नहीं होती। जैसे गुरुवाक्—

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै घटै गुमानु॥
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु॥

(सलोक म: ९, पृष्ठ १४२८)

जैसे हाथी जल में स्नान करने के पश्चात् अपने ऊपर मिट्टी डालकर और मलिन हो जाता है इसी प्रकार अहंकार धारण करके किए हुए समस्त कर्म नष्ट हो जाते हैं। जैसे कबीर जी—

करम करत बधे अहंमेव॥

(ग: कबीर जी, पृष्ठ ३२४)

चाहे कोई योग साधना के माध्यम से सिद्धियां प्राप्त कर ले, चौरासी आसन भी बार-बार करे और योगबल

द्वारा आयु भी बढ़ा ले तो भी हरि का संग प्राप्त नहीं होगा, अपितु बार-बार जन्म मृत्यु आदि के चक्कर में आना पड़ेगा।

5. सुन्दर महल-माड़ियों की रचना करना राजाओं की लीला होती है, जिनमें बैठकर अनेकों प्रकार के आदेश देते हैं और सुन्दर शय्याएं बनाकर उस पर चंदन केसर आदि छिड़कते हैं, यह सब नरक के द्वार हैं।

6. प्रेमियों ने श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी को प्रार्थना की, आपने सब साधनों को निष्फल दिखा दिया है, यदि ये साधन निष्फल हैं तो क्या कोई ऐसा साधन है, जो वाहिगुरु को मिला दे? प्रेमियों की शंका सुनकर बाबा जी ने ऐसे उच्चारण किया—

हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा॥

कहु नानक तिसु भइओ परापति जिसु पुरब लिखे का लहना॥

हे प्रेमी जनो! यदि वाहिगुरु का यश और साधुजनों की संगत ही कलियुग में समस्त कर्मों का शिरोमणि कर्म है, लेकिन यह उत्तम कर्म उसी मनुष्य को प्राप्त होता है जिसका गत जन्मों में की गई कमाई का फल वाहिगुरु ने मस्तक पर लिखा हो।

तेरो सेवकु इह रंगि माता॥

भइओ क्रिपालु दीन दुःख भंजनु हरि हरि कीरतनि इहु मनु राता॥

हे वाहिगुरु! तुम्हारे जो सेवक हैं, वे सदैव तुम्हारे प्रेम में मस्त रहते हैं। हे दीनों के दुःख भंजन, वाहिगुरु जिस सौभाग्यशाली जीव के ऊपर कृपा दृष्टि करता है, उसका मन सदैव आपकी यश कीर्ति में मग्न रहता है।

इस प्रकार गुरुवाणी की कथा, शास्त्र प्रमाण और अनेक दृष्टांतों को विचारपूर्वक सुनकर 'शसराम' नगर की संगत जो आपस में वैर-भाव रखते थे, प्रेम भाव के साथ रहने लगे और एक दूसरे के दुःख-सुख में सहायक होने लगे। महापुरुषों ने सबको गुरुद्वारे में एकत्रित करके प्रेम-पूर्वक रहने की प्रेरणा की।

पहली बार सिंध जाना

आप जी संवत् 1953 अर्थात् 1896 ई० को पंडित सुच्चा सिंह जी एवं अपनी संत मण्डली सहित दक्षिण के तीर्थ स्थानों की यात्रा करने के लिए चल पड़े। ऋषिकेश से चलकर विशेष स्थलों पर ठहरते, सत् उपदेश करते जगन्नाथ पहुँचे। यहाँ रुककर दो चार दिन दर्शन-दीदार करके रामेश्वरम् और दक्षिण की अन्य तीर्थ स्थानों की यात्रा करते हुए द्वारिकापुरी पहुँचे। उसी समय हैदराबाद, सिंध एवं कराची से कुछ सिंधी संगत यात्रा के लिए द्वारिका आई हुई थी। उन्होंने बाबा बुड्ढा सिंह जी के दर्शन मिलाप एवं वचनों से प्रभावित होकर सिंध आने का निमंत्रण दिया।

आप जी ने सिंधी संगत की प्रार्थना स्वीकार करके, कुछ दिन द्वारिका ठहरकर संगत के साथ समुद्री जहाज़ द्वारा कराची पहुँचे। कराची में सेठ चेला राम दल्लोमल का एक बगीचा था। संगत ने मिलकर आप जी का उस बगीचे में रहने आदि का समस्त प्रबन्ध किया। संगत का आना-जाना आरम्भ होने पर प्रातः-सायं कथा सत्संग आरम्भ हो गया। कथा व्याख्यान आप बहुत अद्भुत ढंग से अर्थात् सरल शब्दों में करते थे, जो साधारण व्यक्ति की समझ में शीघ्र आ जाता था।

इसलिए बहुत सी संगत प्रात:-सायं एकत्रित होती थी। इस प्रकार सत् उपदेश करते कई दिन व्यतीत हो गए तो हैदराबाद के कुछ प्रेमी जो द्वारिका से साथ आए थे, प्रार्थना करके हैदराबाद ले गए। हैदराबाद की संगत ने 'फलेली' नदी के तट पर दीवान दयाराम गिद्दू मल के संत आश्रम में आप जी के निवास का प्रबन्ध किया। दर्शन करने के लिए चाहे सारा दिन संगत आती-जाती रहती, लेकिन सायं के सत्संग में काफी संगत उपस्थित होती। एक दिन कुछ प्रेमियों ने प्रार्थना की, महाराज! भगत बाणी के अर्थ कठिन हैं, आप कृपा करके सारी भगत वाणी के अर्थ सुनाओ। आप जी ने संगत की प्रार्थना स्वीकार करके भगत वाणी के अर्थ आरम्भ किए। जैसे-जैसे पता लगता गया, संगत बढ़ती गई। बड़े-बड़े बुद्धिमान लोग जैसे प्रधान श्री लेखराज सम्पादक 'प्रभात' समाचार-पत्र, श्री खान चन्द, प्रताप राय, हीरा अकादमी के प्राचार्य, भाई मूलचन्द, श्री नवल राय, ईशर दास, भगत आत्मा राम बीठल दास आदि पढ़े-लिखे लोग भी सत्संग में प्रतिदिन सम्मिलित होते।

संगत का असीम प्रेम देखकर आप जी ने तीस मास में भगत वाणी की कथा पूर्ण की।*

इस प्रकार हैदराबाद की संगत ऊपर तीन मास अमृतमय वचनों की वर्षा करके कुछ प्रेमियों की प्रार्थना स्वीकार करते हुए शिकारपुर पहुँचे। जहाँ कुछ दिन ठहरकर सत्संग द्वारा गुरुनानक घर की सुगंधि बिखेरकर अमृतसर होते हुए वापिस ऋषिकेश आ पहुँचे।

दल का प्रमुख नियुक्त

सिंध से वापिस आकर कुछ दिन ऋषिकेश रुके, फिर गंगा सागर की यात्रा करने का संकल्प लेकर कलकत्ता के लिए रवाना हो गए। कलकत्ते पहुँचकर 'छोटी संगत गुरुद्वारा' में पड़ाव डाला। यहाँ कुछ दिन ठहरकर दूर-समीप के ऐतिहासिक स्थानों के दर्शन-दीदार किए। फिर आपने वापसी का विचार प्रकट किया, लेकिन यहाँ मिश्रित संगत थी अर्थात् पंजाबी, सिंधी और मारवाड़ी। सबने मिलकर 'जपुजी साहिब' की सम्पूर्ण कथा करने के लिए प्रार्थना की। गुरुद्वारा साहिब के साथ संगत बहुत जुड़ी हुई थी इसलिए सभी प्रेमियों की प्रार्थना स्वीकार करते हुए आपने एक मास में 'जपुजी साहिब' की कथा सम्पूर्ण की। इस प्रकार कोई सवा मास के करीब कलकत्ता ठहरकर जब वापसी का विचार प्रकट किया तो कुछ मारवाड़ी और सिंधी संगत ने जगन्नाथ की यात्रा करने की प्रार्थना की।

संगत का असीम प्रेम देखकर वचन किया, हम एक बार जगन्नाथ की यात्रा कर आए हैं, लेकिन आपके प्रेम की अनदेखी भी नहीं कर सकते। इस प्रकार संगत के प्रेमवश काफ़ी संगत को साथ लेकर दूसरी बार जगन्नाथ पुरी की यात्रा की। कुछ दिन जगन्नाथ ठहरने के पश्चात् कलकत्ता वाली संगत ने प्रार्थना की, महाराज! कलकत्ता की संगत को बहुत कम समय मिला है, इसलिए कृपा करके वापिस कलकत्ते ही चलो। आप जी के सत्संग का कुछ दिन संगत और लाभ उठा लेगी। सेठ जुगल किशोर सिंधी के अधिक ज़ोर देने पर आप दो बार कलकत्ते गए। कई दिन यहाँ ठहरने के बाद परमार्थ के विचारों द्वारा संगत को उपदेश करके वापसी की। कलकत्ता से काशी होते हुए सहजे-सहजे यात्रा करते प्रयागराज पहुँच गए। निर्मल पंचायती अखाड़ा के श्री महंत, श्रीमान पंडित उद्धव सिंह जी पहले ही यहाँ पहुँचे हुए थे। काशी अध्ययन के दौरान पंडित उद्धव सिंह जी आपकी प्रतिभा और शुभ गुणों से भली भाँति परिचित थे, इसलिए बोले, हे महापुरुष! सेवा तो आप पहले ही परमेश्वर की ही कर रहे हो अर्थात् संत मण्डली के साथ यात्रा करते हुए गुरु नानक के घर का उपदेश कर रहे हो, आज से

* *पूर्ण भगत वाणी के अर्थ संगत ने साथ-साथ लिखकर सिंधी भाषा में पुस्तक प्रकाशित कर ली जो आज भी मौजूद है।*

निर्मल पंथ की सेवा संभालो अर्थात् आपको दल (रंमत) का प्रमुख महन्त नियुक्त किया जाता है, इसलिए आप यह सेवा संभालो। श्री महंत जी की बात सुनकर आप किंचित् मुस्कराकर बोले—

हरि की गति नहि कोऊ जानै॥

(राग बिहागड़ा महला ९, पृष्ठ ५३७)

श्री महंत जी ने आप के श्री मुख से यह पंक्ति सुनकर पूछा, इस कथन का क्या अभिप्राय है? बाबा बुड्ढा सिंह महाराज ने बताया, हम जगन्नाथ की यात्रा से वापिस ऋषिकेश की ओर जा रहे थे, लेकिन कलकत्ता की संगत के अधिक कहने पर दोबारा फिर कलकत्ता गए, क्योंकि गुरु नानक को कुछ और ही स्वीकार था।

गोदावरी के कुंभ पर जाना

प्रयागराज से अखाड़े के प्रचारक दल (रमत*) को साथ लेकर, गोदावरी की ओर प्रस्थान किया, क्योंकि गोदावरी का कुम्भ उत्सव समीप आ गया था, इसलिए विभिन्न पड़ावों पर ठहरते काफ़ी समय में गोदावरी पहुँचे। कुंभ के स्नानार्थ विभिन्न मतावलम्बी, साधु-महात्मा भारी संख्या में वहाँ पहुँचे हुए थे। कथा सत्संग प्रतिदिन होता ही था। इस प्रकार समय का लाभ उठाते संगत के प्रेमवश चार मास यहीं व्यतीत किए। कुम्भ का उत्सव समाप्त होने पर कुछ दिन नासिक व्यतीत कर आगे के लिए प्रस्थान किया। जल गाँव, चालीस गाँव, भोसावल, फैज़पुर से होते हुए बहिराम पुर पहुँचे। इस नगर को दक्षिण की ओर जाते हुए कलगीधर पातशाह श्री गुरु गोबिन्द सिंह महाराज ने अपनी चरणधूलि से सुशोभित किया था। उस स्थान पर आज गुरुद्वारा सुशोभित है।

आज प्रचारक दल सहित उस पवित्र स्थान पर निवास किया। यह स्थान 'तापी गंगा' के तट पर सुशोभित है। इसमें सदैव निर्मल जलधारा प्रवाहित होती रहती है। यहाँ की संगत ने आपका बहुत आदर-मान किया। अखाड़े की ओर से कथा सत्संग तो प्रतिदिन होता ही था, लेकिन दशमेश पिता की स्मृति में अखाड़े की ओर से एक अखण्ड पाठ भी किया गया। इस प्रकार कलगीधर पातशाह की याद में इस पवित्र स्थान पर संगत के प्रेमवश एक मास ठहरकर उज्जैन की ओर प्रस्थान किया।

उज्जैन का कुंभ

उज्जैन के कुम्भ उत्सव का समय समीप जानकर आप जी दल सहित बहिरामपुर से चलकर विभिन्न स्थानों पर ठहर कर यात्रा करते हुए इन्दौर पहुँचे। दैवयोग से वर्षा न होने के कारण उज्जैन में अकाल जैसी स्थिति हो गई। अन्न एवं पीने के जल का अभाव हो गया इसलिए कुम्भ पर जाने वाले महात्मा सीधा उज्जैन जाने की अपेक्षा इन्दौर एकत्रित होना आरम्भ हो गए, क्योंकि इन्दौर नरेश श्री सिया राउ जी धार्मिक, संस्कारी और संत-सेवी थे, इसलिए राज्य की ओर से साधु-महात्माओं के ठहरने के लिए हर प्रकार का प्रबन्ध एवं सुविधाओं की व्यवस्था की गई। एक लिखित के अनुसार कोई तीस हज़ार के करीब महात्मा एकत्रित हुए थे। सब सम्प्रदाय—संन्यासी, बैरागी, उदासी, निर्मले आदि सब मतावलम्बी साधु पहुँचे हुए थे।

* *निर्मल पंचायती अखाड़े की ओर से गुरुनानक देव के घर का प्रचार करने हेतु एक सशक्त संत मण्डली देश-विदेश में विचरण करती रहती थी जिसको 'रमत' कहा जाता था। श्रीमान् संत बुड्ढा सिंह जी महाराज इस रमत मण्डली के कई वर्षों तक प्रमुख महंत रहे और फिर कई वर्षों तक अखाड़े के अन्य पदों पर रहकर भी बहुत सार्थक सेवा करते रहे।*

जहाँ-जहाँ भी साधु ठहरे हुए थे—प्रतिदिन कथा, सत्संग, आत्म-विचार, वेदांत आदि विषयों के प्रवचन होते रहते थे। कभी-कभी महाराजा इन्दौर भी प्रवचन सुनने के लिए आते।

एक दिन बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज प्रवचन कर रहे थे। सहस्रों की संख्या में संत-महात्मा और अन्य यात्री सत्संग का लाभ उठा रहे थे। दैवयोग से इन्दौर के सम्राट श्री सियाराउ भी महात्माओं के दर्शन और सत्संग सुनने के लिए सभा में सुशोभित हो गए, तब महंत बुड्ढा सिंह जी ने व्याख्यान आरम्भ किया। प्यारे प्रेमियो! मानव-जीवन का परम लक्ष्य है—सत्, चित्त, आनंद स्वरूप आत्मा का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना। केवल इतना जान लेना ही पर्याप्त नहीं है कि आनंद स्वरूप परम परमात्मा है और मैं उसकी आज्ञा में रहने वाला जीव हूँ। इतना ज्ञान प्राप्त कर लेने से कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं है जब तक सत्, चित्त, आनंद स्वरूप परमात्मा को अभेद रूप में अर्थात् अपने आप करके नहीं जान लेते। परमेश्वर को अभेद रूप में जान लेना ही ब्रह्म ज्ञान है। सम्यक् ज्ञान अर्थात् यथार्थ ज्ञान है और ऐसा ज्ञान ही मोक्ष का दाता है।

सत्, चित्त, आनंद स्वरूप ब्रह्म है। इस प्रकार के परोक्ष ज्ञान से कोई विशेष लाभ नहीं हो सकता। केवल इतना जान लेना कि पृथ्वी के नीचे जल है, जल प्राप्त नहीं हो जाता अर्थात् तृषा से व्याकुल पुरुष प्यास बुझाकर शांत नहीं हो जाता। हाँ-इतना लाभ अवश्य है कि पृथ्वी के नीचे जल का ज्ञान हो जाने पर, जल प्राप्त करने की इच्छा पैदा हो जाती है। जिस वस्तु की इच्छा उत्पन्न हो जाए उसको प्राप्त करने के लिए यत्न करना सम्भव है। जब मनुष्य उसकी प्राप्ति के साधन अर्थात् कुँआ खोदने के औज़ार लेकर परिश्रम से कुँआ खोद लेता है तो अमृत समान जल प्राप्त करके तृषा शान्त कर लेता है और शान्ति अर्थात् आनंद का अनुभव करता है।

इस प्रकार परमेश्वर के परोक्ष ज्ञान के साथ जिज्ञासु को जब अपरोक्ष ज्ञान अर्थात् प्रत्यक्ष ज्ञान की इच्छा उत्पन्न होती है तो वह जिज्ञासु कहलाता है। ऐसा जिज्ञासु जब मोक्ष के चार साधन जुटा लेता है अर्थात् चतुष्टय साधन सम्पन्न हो जाता है फिर अपरोक्ष ज्ञान का अधिकारी बन जाता है। चार साधन कौन से हैं?

1. विवेक, 2. वैराग्य, 3. षट् सम्पत्ति, 4. मुमुक्षता अर्थात् मोक्ष की इच्छा।

षट् सम्पत्ति में छः साधन माने जाते हैं—शम, दम, श्रद्धा, समाधान, तितिक्षा और उपरति अर्थात् उपरामता।

जब उपरोक्त साधन सम्पन्न जिज्ञासु, ब्रह्म श्रोत्रिय, ब्रह्म निष्ठ गुरु के पास जाकर अपनी इच्छा प्रकट करता है तब परम दयालु गुरु उस साधन सम्पन्न जिज्ञासु को मोक्ष का अधिकारी जानकर 'तत्त्वमसि' आदि महावाक्य का उपदेश देते हैं तो जिज्ञासु श्रवण उपरांत मनन निदिध्यानासन के अभ्यास द्वारा हृदय में बसा लेते हैं, तब जाकर कहीं अपरोक्ष ज्ञान होता है।

प्रश्न उठता है कि इतना झंझट और क्लेश प्राप्त करने की आवश्यकता क्या है?

उत्तर—इसलिए कि बिना ऐसे ज्ञान के अनन्त प्रकार के दु:खों की आत्यनिक (अबाधित) निवृत्ति और परमआनन्द की प्राप्ति रूप मोक्ष सम्भव नहीं है।

प्रश्न—इसलिए कोई प्रमाण है?

उत्तर—हाँ अवश्य है। जगत्गुरु, गुरुनानक देव महाराज का कथन है—

मुकति नही बिदिआ बिगिआनि॥

(रामकली महला १, अष्टपदीआ, पृष्ठ ९०३)

अर्थात् सम्यक् ज्ञान, यानी विशेष ज्ञान भाव अपरोक्ष ज्ञान के बिना मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं। श्रुति का यही कथन है—

'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' अर्थात् ज्ञान के बिना मुक्ति असम्भव है। एक वैदिक ऋषि तो यहाँ तक प्रतिज्ञा करता है कि प्रत्यक्ष ज्ञान के बिना दूसरा कोई अन्य साधन ही नहीं है।

यथा— **वेदाहमतं पुरसं महांत्मादित्य वर्ण तमसः परतात्।**

त्वमेव बिदित वात स्त्रतयुभेति नानयः पंथा विद्धते अयनाय॥

भावार्थ—मैं इस महान् पुरुष आनन्द स्वरूप आत्मा को प्रत्यक्ष रूप में अपना आप करके जानता हूँ। जो अज्ञान रूप अंधकार से अति दूर, सूर्य के समान, स्वयं प्रकाश ज्योति स्वरूप है, उस आत्म तत्त्व का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करके ही मनुष्य, दु:ख और भय आदि के कारण, अज्ञान-रूप मौत पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त कर सकता है।

शाश्वत् आनंद स्वरूप कौवल्य प्राप्त करने अथवा अपरोक्ष आत्म-ज्ञान के बिना कोई अन्य मार्ग ही नहीं। शाश्वत आनन्द स्वरूप अर्थात् परमपद की प्राप्ति के लिए गुरु अर्जुन देव महाराज जी भी प्रत्यक्ष दर्शन को ही कारण मानते हैं।

यथा— **अनदो अनदु घणा मै सो प्रभु डीठा राम॥**

चाखिअड़ा चाखिअड़ा मै हरि रसु मीठा राम॥

(रागु आसा महला ५ छंत घर, पृष्ठ ४५२)

परन्तु यह बात भी स्मरण योग्य है कि यह नित्य सुख स्वरूप, शांत-सागर अर्थात् आनंद सागर वाहिगुरु में डुबकी लगाना तभी सम्भव है, यदि साधक अपने शरीर की इन्द्रियों और चंचल मन पर पूर्ण रूप से नियंत्रण कर सके। यह भी एक अटल सत्य है कि जितना कोई मन वाणी पर नियंत्रण कर ले उतना ही वह सुखी हो जाता है और उतना ही समाज में सम्मानित हो जाता है। उस व्यक्ति के ही हृदय रूपी मंदिर में आत्म-ज्ञान का प्रकाश हो सकता है। गुरु साहिब जी फरमान करते हैं—

दस इंद्री करि राखै वासि॥ ता कै आतमै होइ परगासु॥

(गः मः ५, पृष्ठ २३६)

लेकिन यह कार्य है कठिन **'जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूँ गुरमुखि जाना'** के महावाक् अनुसार कोई विरला अर्थात् करोड़ों में से कोई गुरुमुख ही इस खेल में जीत प्राप्त करता है। यथा गुरु अर्जुन देव जी—

इंद्री जित पंच दोख ते रहत॥ नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २७४)

ऐसा कोई महाबली योद्धा जिसने अपनी मन, बुद्धि और महाप्रबल इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से जीत प्राप्त कर ली और इच्छाओं का दमन कर दिया अर्थात् काम क्रोध को सदा के लिए जीत लिया, वही पुरुष सदा मुक्त और पूर्ण रूप से सुखी है। बाबा जी के मुख से ऐसा उपदेश श्रवण करके सब लोग गद्गद् हो गए। विशेषत: साधु महात्मा जो वेशमात्र से ही धन्य-धन्य हो रहे थे, के विवेक-नेत्र उन्मीलित हो गए।

महाराजा इन्दौर ने तो उस ज्ञान रूपी उपदेश को अपने भीतर इस प्रकार बैठा लिया जैसे भीषण वर्षा के साथ

कोई खाली सरोवर लबालब भर जाए। उपदेश से प्रभावित होकर राजा ने प्रार्थना की कि महाराज मेरे महलों में चरण डालो और लंगर छको (भोजन करो)।

राजा की प्रार्थना स्वीकार कर, बाबा जी काफ़ी साधुओं को साथ लेकर राज महलों में पहुँचे। राजा ने बड़े आदर के साथ महापुरुषों को बिठाकर जल-पान करवाया और उपरान्त कुछ उपदेश के लिए प्रार्थना की। बाबा जी ने जो राजा लोगों के कर्त्तव्य होते हैं जैसे न्यायप्रिय होना, प्रजा को अपने बच्चों के समान समझना आदि उपदेश दिया। रानियों ने भी अपनी-अपनी बुद्धि अनुसार परमार्थ सम्बन्धी प्रश्न किए। उपयुक्त उत्तर सुनकर बड़े प्रसन्न हुए। इतने में भोजन तैयार हो गया, सब संगतों को पंक्ति में बिठाकर रानियों ने भोजन-वितरित करने की सेवा स्वयं की।

इस प्रकार राजा के प्रेमवश एक मास इन्दौर ठहरे। इतने में उज्जैन राज्य की ओर से कुम्भ उत्सव के लिए समस्त प्रबन्ध पूर्ण कर लिए गए। उज्जैन नरेश ने अपने बड़े-बड़े अधिकारियों को पर्याप्त संख्या में हाथी, घोड़े, बैण्ड बाजे आदि देकर संतों को इन्दौर से लेकर आने के लिए भेजा। अधिकारियों से प्रार्थना करने पर संतों ने उज्जैन की ओर प्रस्थान किया।

आगे-आगे बैण्ड बाजे और पीछे संत-महात्मा। इस प्रकार शोभा यात्रा के आकार में उज्जैन पहुँचे। आगे उज्जैन, इन्दौर और ग्वालियर के राजा स्वागतार्थ खड़े थे। इस प्रकार भारी संख्या में साधु महात्मा उज्जैन पहुँच गए। राज्य की ओर से सब सम्प्रदायों के साधुओं के लिए निवास आदि का उपयुक्त प्रबन्ध किया हुआ था। मेले के दौरान राजा उज्जैन, राजा इन्दौर और राजा ग्वालियर की ओर से मिलकर खर्चा वहन किया जा रहा था। इस प्रकार विधिपूर्वक स्नान, कथा, सत्संग करते उत्सव की समाप्ति पर ग्वालियर सम्राट श्री माधव राव ने बाबा जी को अपनी राजधानी ग्वालियर लेकर जाने की प्रार्थना की। आपने कहा, यदि कभी अन्न-जल हुआ तो चलेंगे, क्योंकि इस समय हम सूर्यग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र पहुँचना चाहते हैं।

राजा ने पर्याप्त धन आपके श्री चरणों में अर्पित किया। इस प्रकार उत्सव की समाप्ति पर आप जी ने कुरुक्षेत्र पहुँचने के लिए प्रस्थान किया। अखाड़े को साथ लेकर मार्ग में संगत को सत्य उपदेश करते, कोटा, बूँदी, सेखाबादी, मारवाड़, रामगृह, लक्ष्मण गृह, झुनझुन, हाँसी आदि स्थानों से होते हुए सूर्यग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र पहुँच गए।

यहाँ कुछ दिन सत् उपदेश, कथा सत्संग द्वारा समय व्यतीत करके उत्सव की समाप्ति पर इलाहाबाद को प्रस्थान किया। विभिन्न स्थानों पर ठहरते कई दिनों में इलाहाबाद पहुँचे। यहीं भाई कलाचन्द जी सिंधी अपनी सहयोगियों सहित आकर मिले। इलाहाबाद कुछ दिन ठहरकर सत्संग का लाभ उठाते रहे। एक दिन भाई कलाचन्द जी ने बाबा जी को प्रार्थना की कि आप सिंध चलो, वहाँ संगत आपको बहुत याद कर रही है। बाबा जी ने वचन किया इस समय कुछ साधुओं का विचार बद्रीनाथ की यात्रा करने का है, फिर कभी आएंगे। हैदराबाद आने का वचन लेकर भाई कलाचंद जी तो वापिस सिंध चले गए, लेकिन आप कुछ दिन और इलाहाबाद ही रुके रहे। साधुओं की तीव्र इच्छा देखकर कुछ समय बाद बद्रीनाथ की यात्रा के लिए प्रस्थान किया।

इलाहाबाद से प्रस्थान कर लखनऊ, बरेली, काठगोदाम होते हुए मण्डली सहित बद्रीनाथ पहुँच गए। इस प्राचीन तीर्थ के दर्शन-स्नान आदि करते कई दिन व्यतीत करके वापिसी पर उत्तराखण्ड के कई अन्य स्थानों के दर्शन करते हुए ऋषिकेश पहुँच गए। ऋषिकेश पहुँचकर पर्याप्त समय ठहरे। सत्संग, सत्य उपदेश तो प्रतिदिन होता ही था इसलिए गंगा के तट पर तप

साधना में लीन साधु महात्मा भी कथा श्रवण करने के लिए सत्संग में प्रतिदिन आते। एक दिन आपने साधुओं का जीवन और उनकी चरण धूलि के फल का वर्णन किया।

गंगा और साधु

गंगा ने अपने हिमानी घर को त्यागकर, उत्तंग गिरि शृंगों से टकराती, अनेक सहयोगिनों को साथ लेकर, छोटे-मोटे पत्थरों के साथ खिलवाड़ करती समतल क्षेत्र में अपना पहला कदम रखा। कौन है यह? और कहाँ से आई है?

चरनोदक होइ सुरसरी तजि बैकुंठ धरति विचि आई॥
नउ सै नदी नड़िंनवै अठसठि तीरथि संग समाई॥
तिहु लोई परवाण है महादेव लै सीस चड़ाई॥
देवी देव सरेवदे जै जै कार वडी वडिआई॥

(भाई गुरदास वींहवीं वार, पृष्ठ २३४)

अर्थ—गंगा वामन के चरणों का चरणामृत होने के कारण, बैकुण्ठ को त्याग पृथ्वी पर आई। नौ सौ निन्नानवें सरितायें और 68 तीर्थ तो गंगा में समाहित हो गए। गंगा स्थान का फल सबसे श्रेष्ठ माना जाता है, अत: तीनों लोकों में प्रवाहित हुई अर्थात् उसकी तीन धारायें हो गईं। पाताल धारा का नाम भोगवती, स्वर्ग धारा का नाम अमरावती और मातृलोक धारा का नाम गंगा पड़ा। इसको शिव ने लेकर अपने शीश पर धारण किया। देवी-देवताओं ने उसकी जय-जयकार की, इसलिए आदरणीय है, लेकिन इतने उत्तम गुणों की दात्री और अनंत अवगुणों का हरण करने वाली श्रेष्ठ गंगा भी—

सण गंगा बैकुंठ लख लख बैकुंठ नाथि लिवलाई॥
साधू धूड़ि दुलंभ है साध संगति सतिगुर सरणाई॥
चरण कवल दल कीम न पाई॥

(भाई गुरदास)

अर्थ—गंगा सहित लाखों बैकुण्ठ और लाखों बैकुण्ठों के स्वामी ध्यान लगाकर यह बात कहते हैं कि संतों की चरणधूलि ही बड़ी दुर्लभ है, जो सतगुरु और सत्संग की शरण में आना है। ऐसे चरण कमलों के एक पल्लव का मूल्य किसी ने नहीं पाया।

गंगा एक देव सरिता है। इसको पवित्र माना जाता है, क्योंकि यह विष्णु भगवान् का चरणोदक होने के कारण बैकुण्ठ से अवतरित हुई है। परमेश्वर का ऐसा नियम है कि जहाँ एक चाँद और एक सूर्य है उसको ब्रह्मांड माना जाता है। उस ब्रह्मांड की मर्यादा चलाने के लिए तीन मुख्य देवताओं को कार्य सौंपा गया है— विष्णु, ब्रह्मा और महेश। ये प्रमुख देवता होने के कारण चाहे पूजनीय हैं, लेकिन ये परमेश्वर की सीमा नहीं जान सकते, क्योंकि—

ओह वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु॥

(जपुजी साहिब, पृष्ठ ७)

परमेश्वर इनको सदैव देखता है, लेकिन ये उसको नहीं देख सकते, यह एक बहुत बड़ा आश्चर्य है। क्यों नहीं देख सकते? क्योंकि—

करते की मिति न जानै कीआ॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २८५)

परमेश्वर की सीमा को निर्मित वस्तु नहीं जान सकती। ऐसा परमेश्वर कितना बड़ा है—

कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी सरब जीआ का दाता रे॥

(सोरठि महला ५, पृष्ठ ६१२)

यथा— **काल पुरख की देहि मो कोटिक बिसन महेस॥**
कोट इंदर ब्रह्मा किते रवि ससि क्रोर जलेस॥

(गुरु गोबिन्द सिंह जी)

ऐसे अनन्त ब्रह्मांडों का स्वामी कालातीत पुरुष (अकाल पुरख वाहिगुरु) जिसके शरीर में कोटिश: ब्रह्मांड और उनके स्वामी निवास करते हैं, जिसका अंत आज तक किसी से नहीं पाया, उस परम-पुरुष के भक्तों की चरण धूलि जो अनन्त पापों को दूर करने वाली है, को करोड़ों ब्रह्मांडों के स्वामी भी इच्छा रखते हैं। जैसे भाई गुरदास—

बावन रूपी होइ कै बलि छलि अछलि आपु छलाइआ।
करो अढाई धरति भंगि पिछे दे वड पिंडु वधाइआ।
दुइ करुवां करि तिनि लोअ बलि राजे फिरि मगरु मिणाइआ।
सुरगहु चंगा जानकै राज पताल लोक दा पाइआ।
ब्रह्मा बिशन महेश त्रै भगत वछल दरवान सदाइआ।
बावन लख सुपावना साध संगति रज इछ विछाइआ।
साध संगति गुर चरन धिआइआ॥ ६॥

(भाई गुरदास)

अर्थ—वामन अर्थात् बावन उँगलियों का शरीर धारण करके राजा बलि को छलने आया, लेकिन सफल न होकर आप छला गया। पहले राजा से ढ़ाई कदम भूमि की याचना की, तत्पश्चात् शरीर को बढ़ा लिया। दो कदमों में तीनों लोकों को माप लिया, तत्पश्चात् आधे कदम के बदले राजा के शरीर को नापा, क्योंकि यह दान से बाहर था। अब राजा बलि ने स्वर्ग की अपेक्षा पाताल अर्थात् नम्रता का राज्य अच्छा समझकर ले लिया। जब वामन वापिस जाने को हुआ तब बलि ने कहा कि अब कहाँ जाते हो? अपने वचन स्मरण कर मेरे द्वार बैठा। अब तीनों-ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भक्त वत्सल होने के कारण बारी-बारी से पहरेदार कहलवाना पड़ा। वामन जैसे लाखों पवित्रात्माओं ने साधु संगत की धूलि की इच्छा प्रकट की है कि यह किस प्रकार प्राप्त हो अर्थात् साधु संगत और गुरु के चरणों को स्मरण किया है, ऐसा साधुजन जिनकी चरणधूलि को बैकुण्ठ वासी और तीर्थ भी कामना करते हैं। जैसे—

गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहि उदमु धूरि साधू की ताई॥
किलविख मैलु भरे परे हमरै विचि हमरी मैलु साधू की धूरि गवाई॥
तीरथि अठसठि मजनु नाई॥ सतसंगति की धूरि परी उडि नेत्री सभ दुरमति मैलु गवाई॥
रहाउ॥
जाहरनवी तपै भागीरथि आणी केदारु थापिओ महसाई॥
कांसी क्रिसनु चरावत गाऊ मिलि हरि जन सोभा पाई॥
जितने तीरथ देवी थापे सभि तितने लोचहि धूरि साधु की ताई॥
हरि का संतु मिलै गुरु साधू लै तिस की धूरि मुखि लाई॥
जितनी स्रिसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै धूरि साधू की ताई॥

(मलार महला ४, पृष्ठ १२६३)

अर्थ—ऐसे संतजन जिनकी चरणधूलि तीर्थों को शुद्ध करने वाली और सृष्टि को पापों रूपी मल से दूर करने वाली है, बड़े सौभाग्य से प्राप्त होती है। साधु किसी विशेष प्रकार के वस्त्र पहन लेने का नाम नहीं है और न ही किसी धर्म-सम्प्रदाय का नाम है। संत के सम्बन्ध में भाई साहिब भाई गुरदास जी का वचन है—

नउ दुआरे साध साध सदाइआ॥

मन-बुद्धि को जिसने पूर्ण तौर पर वश में कर लिया है, उसका नाम साधु है।

बुद्धिमान व्यक्तियों ने संतों का विभाजन दो कोटियों में किया है—एक तो वे पुरुष हैं जिन्होंने पूर्ण रूपेण अपने अहंभाव गंवाकर आनंद सागर वाहिगुरु में अभेदता प्राप्त कर ली है। जिनके सम्बन्ध में फ़रमान है—

जिन्हा न विसरै नामु से किनेहिआ॥
भेदु न जाणहु मूलि सांई जेहिआ॥

(आसा महला ४, पृष्ठ ३९७)

ऐसे पुरुषों की महिमा में तो एक भी शब्द नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ऐसे पुरुषों को जो नित्य महिमा प्राप्त है वह तो जिह्वा का विषय ही नहीं। ऐसी नित्य महिमा के सम्बन्ध में ही तो कहा गया है—

न संखं न चक्रं न गदा न सिआमं॥
अस्चरज रूपं रहंत जनमं॥ नेत नेत कथंति बेदा॥
ऊच मूच अपार गोबिंदह॥ बंसति साध रिदयं अचुत बुझंति नानक बडभागीअह॥

(श्लोक सहसक्रिती महला ५, पृष्ठ १३५९)

जिसके सम्बन्ध में वेद भी 'नेति-नेति' कहकर दोनों हाथ जोड़ देते हैं।

दूसरे वे साधक हैं जिनके विवेक रूपी नेत्र खुल चुके हैं और संसार की वास्तविकता को भली भाँति समझकर मातृलोक से लेकर ब्रह्मलोक तक के विनाशी सुखों को काक की बीठ के समान मिथ्या समझकर दिन-रात अन्त:करण में से निकालने के लिए प्रयत्नशील हैं। उनको परमात्मा के दर्शन चाहे नहीं हुए, लेकिन मिलन क्षुधा में दिन-रात मीन की भाँति तड़प रहे हैं। परमेश्वर को मिलने के लिए व्याकुल पुरुष चाहे किसी भी वेश, कर्म या सम्प्रदाय का हो अर्थात् हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, पारसी किसी भी सम्प्रदाय के साथ सम्बन्ध रखता हो, पूजनीय है। गुरु अर्जुन देव महाराज जी ऐसे व्यक्तियों के प्रति ही फ़रमान करते हैं—

कांखी एकै दरस तुहारो॥ नानक उन संगि मोहि उधारो॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २६२)

यथा— **जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा॥ नानक ता कै बलि बलि जासा॥**

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २६६)

अर्थ— यहाँ श्री गुरु अर्जुन देव महाराज 'जो प्राप्त है' उसकी बात नहीं कर रहे, अपितु जो मिलन आकांक्षा लिए हैं, जिनको मिलने की तृषा लग चुकी है, ऐसे पुरुषों से बलिहार जाते हैं।

गुरुनानक देव महाराज जी ने ऐसे पुरुषों को ही 'चूहड़काणा' नामक स्थान पर भोजन खिलाकर पिता जी से चाहे तमाचा खाया और सांसारिक दृष्टिकोण की नज़र में बीस रु. का नुकसान किया, परन्तु इस व्यापार को सच्चा सौदा कहा।

निर्मल आश्रम का आरम्भ

लगभग पंद्रह वर्ष से मण्डली को साथ लेकर और अब गत चार वर्षों से अखाड़े के प्रचारक दल (रमत) सहित देश के कोने-कोने में गुरुनानक देव महाराज के घर का प्रसाद वितरित करते अर्थात् मनुष्य जन्म की सफलता का सरल साधन प्रेमाभक्ति का उपदेश करते पर्याप्त समय तक ऋषिकेश निवास किया। यहाँ निवास करते समय आप प्रतिदिन देखते कि गंगा के तट पर तप साधना कर रहे महात्माओं को काफ़ी कष्टों का सामना करना पड़ता है इसलिए आवश्यक है कि यहाँ गुरुनानक देव के घर का कोई स्थान बने, जिसमें गुरु के गुरु इष्टदेव श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रकाश हो, भोजन आदि की व्यवस्था हो और दूर-समीप से आए यात्री प्रेमियों के लिए निवास का प्रबन्ध हो जाए। यह शुभ संकल्प उन्होंने संत हरि सिंह विरक्त* जी को बताया। उन्होंने कहा कि आपका विचार अत्यन्त श्रेष्ठ है और जितना शीघ्र संभव हो इसको पूर्ण करो, क्योंकि जरूरतमंदों की सहायता और दूसरों के दु:खों का हरण ही संतों का जीवन होता है। इस पवित्र कार्य के लिए स्थान की तलाश करने पर गंगा के तट पर माया कुण्ड में गंगा के किनारे नत्था सिंह के बाड़े के समीप रिक्त पड़ी भूमि खरीदकर सन् 1900 ई० में इस पवित्र निर्मल आश्रम की नींव रखी गई। बाद में संत मंगल सिंह जी ने अपना स्थान बाबा बुड्ढा सिंह जी को दे दिया जो कि निर्मल आश्रम में मिला लिया गया।**

सबसे पहले श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के लिए एक कमरा और निवास के लिए दो कमरे बनाए गए। साथ ही खाली स्थान की चार दीवारी करके महात्माओं के लिए पर्ण कुटिया बना दी गई और भोजन की व्यवस्था भी कर दी गई। इतने में से कुछ सिंधी प्रेमियों ने आकर सिंध चलने की प्रार्थना की। उनके प्रेमवश प्रार्थना स्वीकार करके प्रचारक दल (रमंत) सहित सिंध पहुँचे। वहाँ कुछ समय शिकारपुर, हैदराबाद और कराची ठहरकर वापसी का विचार प्रकट किया। हैदराबादी संगत ने कुछ दिन और ठहरने की प्रार्थना की, लेकिन आपने वचन किया—आपका प्यार तो हमें जाने से रोक रहा है, लेकिन पीछे भी कुछ आवश्यक कार्य हैं। एक तो हरिद्वार का कुम्भ भी समीप आ गया है, दूसरा अति आवश्यक कार्य है—वह है आश्रम की ओर ध्यान देना। सम्प्रति तो गुरुनानक की ऐसी ही प्रेरणा है, फिर जब कभी अवसर हुआ तो अवश्य आएंगे।

इस प्रकार संगत को प्रेम देकर, वापिस हरिद्वार आ गए। इतने में हरिद्वार का कुम्भ उत्सव भी समीप आ गया। इधर आप जी का अधिक ध्यान अब निर्मल आश्रम के विस्तार की ओर लग चुका था इसलिए आप जी ने बंधन रूप जानकर अखाड़े के प्रचारक दल के प्रमुख पद से त्यागपत्र दे दिया। त्यागपत्र में लिखा कि हमारे मन में संकल्प अब आश्रम की ओर अधिक ध्यान देने का है इसलिए अखाड़े के उत्तरदायित्व से हमें मुक्त किया जाए, लेकिन अखाड़े वालों के अधिक आग्रह करने पर आप जी ने त्यागपत्र वापिस ले लिया, लेकिन अब अधिक ध्यान आश्रम की ओर देने लगे।

1904 की सिंध फेरी

आश्रम में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रकाश हो गया, प्रतिदिन कड़ाह प्रसाद की देग सजाकर अरदास की जाने लगी। कुछ अन्य कमरों का भी निर्माण किया गया। कुछ कच्ची झोंपड़ियाँ बनी हुई थीं, इस प्रकार काफ़ी साधु प्रतिदिन

---

* *संत हरि सिंह जी विरक्त, संत ठाकुर दयाल सिंह जी के शिष्य और उस समय के पूर्ण सिद्ध महापुरुष थे। इन्होंने ही 1903 ई० में पंजाब सिंध क्षेत्र की नींव रखी। 1905 ई० में आप शरीर छोड़ गए।*

** *नत्था सिंह एक निर्मल संत थे, वे यहाँ एक कुटी बनाकर रहते थे, इसलिए इस स्थान का नाम नत्था सिंह जी का बाड़ा पड़ गया था। इनके देहावसान के पश्चात् इनके शिष्य संत मंगल सिंह रहते रहे, कुछ समय बाद संत मंगल सिंह जी ने यह स्थान महंत बुड्ढा सिंह को दे दिया— जो आश्रम में मिला लिया गया।*

निर्मल आश्रम, ऋषिकेश

आश्रम में रहने लगे। लंगर के समय घंटी बजती, आश्रम में रहने वाले साधु और बाहर से आए सब महात्मा गुरु के लंगर में प्रसाद ग्रहण करते (छकते)। प्रात:-सायं नित्य-नियम के अतिरिक्त आप दिन में कभी गुरुवाणी, कभी भगवद्गीता, कभी योग वाशिष्ठ आदि ग्रन्थ पढ़ाया करते। इस प्रकार सुखपूर्वक समय व्यतीत हो रहा था। एक दिन भाई कलाचंद सिंधी का पत्र मिला, जिसमें आपको सिंध आने के लिए प्रार्थना की गई थी। आप जी ने प्रार्थना स्वीकार कर तार से सूचित किया कि अमुक तिथि को हम हैदराबाद पहुँच रहे हैं। कुछ दिनों में आश्रम का समस्त प्रबन्ध सुव्यवस्थित करके सिंध को प्रस्थान किया। जिस समय गाड़ी हैदराबाद के स्टेशन पर पहुँची, स्वागतार्थ बहुत संगत आप जी को स्टेशन पर लेने के लिए आई हुई थी।

संगत ने बड़े प्रेम और आदर सहित पुष्पों के स्तबक भेंट किए। उपरान्त बग्घी में बिठाकर ऋषि दयाराम गिद्दू मल के आश्रम ले गए जो कि 'फलेली' नामक नदी के तट पर स्थित था। प्रात:-सायं प्रतिदिन सत्संग आरम्भ हो गया। आप प्रतिदिन किसी एक शब्द की कथा किया करते थे। प्रात:-सायं बहुत संख्या में लोग एकत्रित होते, इस प्रकार दो मास संगत को सत् उपदेश करते यहीं व्यतीत किए। फिर कराची संगत की प्रार्थना स्वीकार करके कराची गए। कुछ दिन वहाँ ठहरने के पश्चात् शिकारपुर होते हुए ऋषिकेश आ गए।

1908 की अर्धकुंभी और महंत आत्मा सिंह जी का शरण में आना

अब अधिक समय आश्रम में ही व्यतीत होने लगा। कभी-कभार प्रचारक दल (रमत) को साथ लेकर तीर्थों के विशेष उत्सवों पर जाते, उत्सव की समाप्ति पर फिर वापिस ऋषिकेश आ जाते। आश्रम ठहरने के दौरान आश्रम में अधिक समय साधुओं को शास्त्र पढ़ाने में व्यतीत करते। साथ में रहने वाले साधुओं को कभी-कभी आत्मा-सम्बन्धी प्रश्न पूछते, उपयुक्त उत्तर न मिलने पर वचन करते कि केवल पठन-पाठन सीढ़ी का पहला डंडा है, जोकि नीचे रहने वाले लागों से अधिक विलक्षण नहीं होता। नीचे की तपश से बचने के लिए आवश्यक है कि मनन, निदिध्यानासन रूपी ऊपरी डंडों को पकड़ कर शिखर रूप ऊपर वाली छत पर चढ़ा जाये, यहाँ दु:ख-सुख रूप, वायु का नामो निशान नहीं है ओर जहां सदा के लिए सुखी हो जाता है।

इस प्रकार ज्ञान उपदेश की वर्षा करते पर्याप्त समय व्यतीत हो गया। इतने में 1908 ई० में हरिद्वार का अर्धकुम्भी का उत्सव आ गया। अब आपने अखाड़े की समस्त जिम्मेदारियों से मुक्त होने का मन में पक्का निर्णय करके त्याग पत्र दे दिया जो कि अधिक जोर डालने पर भी वापिस नहीं लिया।

यहीं पूर्व संयोग वश महंत आत्मा सिंह जी का आप से पहला मिलाप हुआ।* महंत आत्मा सिंह आपकी रहनी-कहनी और अत्यंत उच्च जीवन देखकर और कथा उपदेश से इतने प्रभावित हुए कि फिर कभी वापिस नहीं गए।

कुम्भ उत्सव पर स्नान और आपके दर्शनों के लिए कुछ सिंधी प्रेमी भी आए हुए थे। उत्सव की समाप्ति पर सिंधी संगत और आत्मा सिंह जी को साथ लेकर ऋषिकेश आश्रम पहुँच गए। कुछ दिन ठहरने के पश्चात् सिंधी प्रेमियों ने वापसी पर प्रार्थना की, कि महाराज! हैदराबाद की संगत बहुत याद करती है, अत: आप हमारे साथ ही चलो। आपने वचन किया कि आश्रम का थोड़ा काम है, इसको करने के बाद अवश्य आएंगे। सिंध आने का वचन लेकर प्रेमी संगत बड़ी खुशी-खुशी घर वापस आई।

* *इनका जीवन वृत्तांत विस्तार से आगे दिया जा रहा है।*

1910 ई० में सिंध में पुन: आगमन

सिंधी प्रेमियों के बार-बार प्रार्थना-पत्र आने पर आश्रम का समस्त कार्य संत आत्मा सिंह जी को सौंपकर आप जी हैदराबाद पहुँचे। जीवन के नियमानुसार चाहे आपके भीतर में सत्संग, गुरुवाणी का प्रवाह बहती सरिता की भाँति सदैव चलता रहता था, लेकिन फिर भी दोनों समय, प्रात: एवं सायं विशेषत: निश्चित किए गए थे जिसमें काफ़ी संगत एकत्रित होकर मनुष्य जन्म की सफलता का लाभ उठाती और दिन को नवल राय और कुछ अन्य प्रेमी संस्कृत में भगवद्गीता पढ़ा करते थे।

एक दिन जिस समय गीता पढ़ा रहे थे तो ऊपर से किसी काक ने बीठ कर दी जो बाबा जी की दाढ़ी और छाती पर आ गिरी। नवल राय शीघ्र उठकर बाबा जी की दाढ़ी और वस्त्र स्वच्छ करने लगा, तो आपने रोक दिया-बोले आप पाठ पढ़ो। यह तो ऊपर से राम जी ने वर्षा की है, पाठ के मध्य उठना नहीं चाहिए, पाठ पूर्ण होने पर फिर देखेंगे। नवल राय आपका धैर्य, शान्त स्वभाव और सहन-शीलता देखकर बहुत प्रभावित हुआ। प्रार्थना की, महाराज! मुझे मंत्र दीक्षा देने की कृपा करो। बाबा जी बोले-अभी गुरुवाणी पाठ नित्य नियम से करते रहो, जब फिर आएंगे, तब देंगे। इस प्रकार कोई तीन मास सिंध में प्रचार करके वापिस ऋषिकेश आ गए।

निर्मल बाग़ कनखल की स्थापना

कुंभ आदि बड़े-बड़े उत्सवों पर संगत भारी संख्या में हरिद्वार पहुँचती थी। उनकी सुख-सुविधा को ध्यान में रखकर महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी के शुद्ध एवं दयालु मन में संकल्प पैदा हुआ कि हरिद्वार में भी एक आश्रम स्थापित किया जाए ताकि उत्सवों के अवसर पर संगत ऋषिकेश की बजाय हरिद्वार ठहरकर ही दर्शन स्नान का लाभ उठा सके। इस विचार को ध्यान में रखकर निर्मल विरक्त कुटिया कनखल के बिल्कुल समीप 1911 ई० के आरम्भ में ही महंत निहाल सिंह जी से खाली पड़ी भूमि खरीद ली गई। महंत निहाल सिंह भी निर्मल संत ही थे। रजिस्ट्री करवाकर उसकी चार दीवारी बनवाकर मध्य एक सुन्दर भवन का निर्माण किया और शेष भूमि में बाग़ लगवा दिया।*

1911 ई० में सिंध प्रस्थान

हैदराबाद से श्री नवलराय ने ऋषिकेश आकर प्रार्थना की महाराज! मैंने वस्त्रों की एक नई दुकान खोलनी है, आप कृपा करके अपने पवित्र कर कमलों द्वारा उसका शुभारम्भ करो। महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी ने वचन कर दिया कि तुम जाकर तैयारी करो, हम अमुक तिथि को हैदराबाद पहुँच जाएंगे। आज्ञा लेकर श्री नवल राय ने वापिस आकर समस्त तैयारी पूर्ण की और शेष संगत को भी बता दिया कि इस दिन बाबा जी हैदराबाद पहुँच रहे हैं। निश्चित दिन बाबा जी हैदराबाद पहुँच गए। आगे स्टेशन पर बहुत संगत एकत्रित थी। आप जी को बादशाही बग्घी में बिठा कर निवास स्थल पर पहुँचाया गया। प्रात:-सायं सत्संग आरम्भ हो गया जिसमें भारी संख्या में संगत आने लगी। एक दिन निश्चित करके भाई नवल राय की दुकान के मुहूर्त के लिए श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रकाश करके कथा कीर्तन करवाया। अरदास के उपरांत खुले लंगर का आयोजन किया गया। इस प्रकार तीन मास तक हैदराबाद में कथा, कीर्तन, सत्संग, सत् शास्त्र द्वारा उपदेश करके कुछ संगत की प्रार्थना

---

* *यह स्थान आजकल 'निर्मल बाग' के नाम से प्रसिद्ध है, जोकि अत्यन्त भव्य भवन के साथ शोभायमान है।*

स्वीकार करते हुए हैदराबाद से कराची पहुँचे। यहाँ पहुँचकर सेठ चेलाराम दल्लो मल्ल के बगीचे में विराजमान हुए। इस प्रकार कराची नगर की काफ़ी संगत सत्संग का लाभ उठा रही थी। एक दिन हैदराबाद से सेठ नवलराय, ईशरदास नई खोली दुकान के लिए वस्त्र लेने और आप जी के दर्शन करने के लिए कराची पहुँचे।

अमावस्या का दिन होने के कारण उस दिन बाज़ार बंद था, इसलिए कुछ फल आदि भेंट लेकर बाबा जी के चरणों में आया। उस समय बाबा जी दोपहर का भोजन लेकर बाहर बरामदे में आराम कुर्सी पर बैठे थे। बाबा जी ने नवलराय से कुशल क्षेम पूछने के पश्चात् आज्ञा दी कि यह फल काटकर ले आओ। इतने में एक व्यक्ति जो शिकारपुर का रहने वाला था, दौड़ा-दौड़ा आया, रुदन करता बाबा जी के चरणों में गिर पड़ा। बाबा जी ने बड़ी सांत्वना दी, लेकिन चुप न हुआ, रोता ही जाए, अचानक बाबा जी ने नेत्र बंद कर लिए, कुछ समय पश्चात् नेत्र खोले, उसकी पीठ को थपथपा कर वचन किया, कि तुम रोओ नहीं, गुरुनानक भली करेंगे। इतने में नवलराय फल को काटकर ले आया। बाबा जी ने उस शिकारपुरी को और नवलराय को फल खिलाया और स्वयं भी खाया। फिर नवलराय को आज्ञा की कि आप आज ही हैदराबाद वापिस चले जाओ। नवलराय ने प्रार्थना की, महाराज! मुझे यहाँ से दुकान के लिए कुछ वस्त्र लेकर जाना है, आज अमावस्या के कारण बाज़ार बंद है। कल बाज़ार खुलेगा, इसलिए कल वस्त्र लेकर चला जाऊँगा। बाबा जी बोले, वस्त्र खरीदकर हैदराबाद भेजने की जिम्मेदारी किसी ओर को लगा दो, लेकिन आप आज ही वापिस चले जाओ।

नवलराय तो आज्ञा मानकर वापिस चला गया। कोई दो घंटे पश्चात् उस शिकारपुरी को किसी ने आकर बताया कि असली चोर पकड़ लिया है, इसलिए पुलिस को तेरी आवश्यकता नहीं है, तू चिंता न कर। उस शिकारपुरी ने बाबा जी को बताया कि पुलिस मुझे चोरी के झूठे मुकद्दमे में फँसाना चाहती थी, आपने कृपा की मेरी इज्ज़त बच गई। साथ ही मैं पुलिस की मार से भी बच गया। बाबा जी बोले-प्रेमी! साँच को आँच नहीं इसलिए जीवन में कभी झूठ न बोलना और बुराइयों से सदैव दूर रहना। जिस परमेश्वर ने तुम्हारी आज रक्षा की है उसको कभी मन से न भुलाना। 'जपुजी' साहब का पाठ नित्य नियम से करते रहना। इस प्रकार शिकारपुरी जो दो घंटे पूर्व रुदन करता आया था वह आशीर्वाद लेकर हँसता हुआ घर की ओर गया। उधर नवलराय जब वापिस हैदराबाद अपने घर पहुँचा तो काफ़ी रात हो चुकी थी इसलिए घरवालों ने इसको कोई बात न बताई। प्रात: तैयार होकर जब घर से अपनी दुकान पर जाने लगा तो आस-पास के दुकानदार बधाई देने लगे कि तेरे ऊपर प्रभु ने बड़ी कृपा की है। तुम्हारी हानि होने से बच गई। श्री होतचंद चूहड़ मल्ल बोला-सौभाग्य से मैं दुकान पर ही था। होतचन्द की दुकान नवलराय की दुकान के बिल्कुल सामने ही थी। उसकी दुकान में पोस्ट आफिस होने के कारण वह खुली थी, शेष बाज़ार अमावस्या के कारण बन्द था।

होतचन्द चूहड़ मल्ल की दुकान के ऊपर चौबारे में पंडित लोकराम और पंडित विष्णु शर्मा निवास करते थे जो कि दोनों सगे भाई थे। अमावस्या के विशेष दिन के कारण काफ़ी लोग इनके पास पूजा-पाठ करवाने के लिए आते थे। ऊपर चौबारे में जाने के लिए सीढ़ी होतचन्द चूहड़ मल्ल की दुकान के साथ चढ़ती थी, इसलिए किसी ऊपर जाने वाले को अग्नि में जलते वस्त्र की गंध आई। उसने खड़े होकर इधर-उधर देखो तो नवलराय की दुकान में से धुआँ निकलता दिखाई दिया। उसके शोर करने पर होतचन्द और ऊपर जो पंडित जी के पास व्यक्ति बैठे थे; सुनकर सब आ गए। दुकान का दरवाज़ा तोड़कर देखा भीतर वस्त्रों व मेज़ को आग लगी हुई है। सबने साहस करके इधर-उधर से पानी लेकर आग बुझाई, हानि थोड़ी बहुत ही

हुई, क्योंकि आग अभी लगी ही थी। नवलराय के घर पता करने पर उसका भतीजा और अन्य घर वाले आए, बचाओ हुआ देखकर आग बुझाने वालों का धन्यवाद किया।

सारी बात सुनकर नवल राय ने पूछा, क्या समय था जब घटना हुई? होत चन्द ने बताया-लगभग बारह बजे से बाद की बात है। नवलराय ने मन में सोचा कि उस समय ही बाबा जी ने शरण आए शिकारपुरी की अवस्था देखकर नेत्र बन्द किए थे और आशीर्वाद दिया था कि गुरुनानक भली करेंगे और मुझे आज्ञा दी थी कि आप आज ही हैदराबाद वापिस चले जाओ। यह सारी बात जो बाबा जी ने कराची में की थी—सोचकर नवल राय बहुत चकित हुआ, लेकिन उसने यह बात किसी को बताई नहीं। यह सारी घटना नवल राय ने एक पत्र में लिखकर बाबा जी को कराची भेजी, जिसमें नम्रता से बहुत प्रार्थना की गई थी महाराज! आप जी की असीम कृपा हुई, मेरी हानि होने से बच गई। यदि आपका कृपालु हाथ मेरे सिर पर न होता, तो मेरा कुछ भी शेष न रहता। मैंने बड़ा भारी कर्ज़ा लेकर कार्य आरम्भ किया था जो कि घर बेचकर भी उतारना कठिन था। आपने कृपा की, मेरा रोम-रोम आपका आभारी है। श्री होतचन्द चूहड़ मल्ल बीमा का एजेंट भी था। उसने नवलराय को सलाह दी कि आप दुकान का बीमा करवा लो ताकि भविष्य में ऐसी दुर्घटना से बचा जा सके। नवल राय ने बीमा के सम्बन्ध में बाबा जी से सलाह पूछी तो बाबा जी कहने लगे अब इतना खर्चा करने की आवश्यकता नहीं।

बाबा जी ने अपने पवित्र कर कमलों के साथ गुरु ग्रन्थ साहिब में से एक शब्द लिखकर दिया और आज्ञा की दुकान बन्द करने के पश्चात् इस शब्द का जाप करके फिर घर को जाया करो। गुरुनानक देव महाराज भली करेंगे। आज से तुम्हारी दुकान का बीमा गुरुनानक देव महाराज जी की कम्पनी में खुलवा देते हैं। इस प्रकार कई मास सिंध में नाम वाणी का उपदेश देकर और दुखियों के कार्य पूर्ण कर जब वापसी की तैयारी की तो हैदराबाद एवं कराची की संगत ने एकत्रित होकर प्रार्थना की महाराज! आप कृपा करके प्रतिवर्ष सिंध में दर्शन-दीदार देने की कृपा करें। प्रार्थना सुनकर आप जी ने वचन दिया कि यदि गुरुनानक देव ने चाहा तो अवश्य आया करेंगे। इस प्रकार संगत की मनोभावनाएँ पूर्ण कर वापिस ऋषिकेश आ गए।

मूली बाई

संगत के बहुत से पत्रों के माध्यम से प्रार्थना करने पर और दिए वचनानुसार 1912 में फिर कराची पहुँचे। संगत सत्संग उपदेश के द्वारा तो लाभ उठा ही रही थी परन्तु प्रेमीजन अपने-अपने घरों में चरण डालने के लिए प्रार्थनाएं करने लगे। बाबा जी भी श्रद्धा प्रेम देखकर सेवकों के घर में जाते। प्रेमीजन श्रद्धा से जलपान कराते और अपनी सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति हेतु प्रार्थनाएँ करते। बाबा जी अपनी मस्ती में वचन कर देते थे तो सहज ही सेवकों के कार्य पूर्ण हो जाते। इस प्रकार वे भोग-मोक्ष की मुक्त निधियाँ बाँट रहे थे। एक दिन एक स्त्री, जिसका नाम मूली बाई था, ने अपने पुत्र बूलचन्द को साथ लेकर बाबा जी के चरणों में प्रार्थना की, महाराज हमारे घर में चरण डालो और दोपहर का भोजन करो। स्त्री की श्रद्धा देखकर बाबा जी ने वचन किया अच्छा कल चलेंगे। दूसरे दिन प्रेमियों ने बड़े प्रेम के साथ लंगर (भोजन) तैयार किया। एक नई चारपाई डालकर उस पर एक सुन्दर बिछौना बिछाया। सारी तैयारी करके निवास स्थान से बाबा जी को साथ लेकर आए। बड़े प्रेम के साथ सारे परिवार ने सेवा की। बाबा जी लंगर लेने के पश्चात् कुछ सत्य उपदेश देकर जब वापिस जाने के लिए तैयार हुए

तो श्रीमती मूलीबाई ने बाबा जी के चरण पकड़कर प्रार्थना की, महाराज! मेरे पुत्र बूलचन्द के घर में औलाद नहीं है, आप कृपा करो, इसको पुत्र रत्न का आशीर्वाद दो।

बाबा जी बोले—माई! गुरु भली करेगा।

माई चरणों पर गिरकर—महाराज अपने पवित्र मुख से पुत्र रत्न का वचन कर दो।

बाबा जी—भाई गुरुनानक पर निश्चय रखो।

माई चरण पकड़कर-महाराज हमने गुरुनानक के दर्शन नहीं किए, हमने तो आपको ही देखा है। आप पवित्र मुख से एक बार वचन कर दो। बाबा जी ने थोड़ा मुस्कराकर वचन किया-देना तो गुरुनानक ने ही है, माध्यम चाहे किसी को बना ले। थोड़े उत्साहित होकर वचन किया माई! गुरुनानक एक नहीं तुझे दो-दो पौत्र देगा, लेकिन एक शर्त है दोनों को सिक्ख बनाना, नाम सिंह रखना और कड़ाह प्रसाद लेकर गुरुद्वारा साहिब जाकर प्रार्थना करना और जो आदेश आए उसके पहले अक्षर से नाम रखना।*

जेठ मल मघ्घर मल चैनानी

हैदराबाद मघ्घर मल चैनानी नाम का एक सेठ रहता था। उसके दो विवाह हुए थे। एक से दो बेटियां और दूसरी के एक पुत्र था जिसका नाम जेठ मल था। मघ्घर मल चैनानी ने अपनी समस्त सम्पत्ति की वसीयत दोनों लड़कियों के नाम करवा दी, लेकिन जेठ मल को कुछ नहीं दिया। वसीयत करने के पश्चात् मघ्घर मल का तो देहावसान हो गया और समस्त सम्पत्ति पर दोनों लड़कियों ने कब्ज़ा कर लिया। जेठ मल बेचारा दु:खी होकर इधर-उधर भटकने लगा। उसके पड़ोस में एक शीतल दास चैनानी नाम का सज्जन पुरुष निवास करता था जो गुरुवाणी और अन्य शास्त्रों का अच्छा ज्ञाता था अर्थात् गुरुवाणी के संकेतों को समझता था अर्थात् गुरुवाणी-विचार से संतों की महिमा का जानकार था। वह एक दिन जेठ मल को सत्संग के समय बाबा जी के पास ले गया। सत्संग सुनकर जेठमल के मन में श्रद्धा हो गई। समाप्ति पर बाबा जी के चरणों में नमस्कार करके अपनी सारी व्यथा सुनाई।

प्रार्थना की, महाराज! मेरे पर कृपा करो कोई मार्ग दिखाओ। उसको दु:खी देखकर बाबा जी को दया आ गई। आज्ञा की, न्यायालय में मुकद्दमा कर दो, गुरुनानक कृपा करेंगे। मुकद्दमा तुम्हारे पक्ष में होगा, लेकिन एक कार्य करना, जिस दिन मुकद्दमा करने जाओ प्रात: कड़ाह प्रसाद की देग करके गुरु घर में अरदास करने जाना। जेठमल ने आज्ञानुसार ऐसा ही किया। न्यायालय ने निर्णय जेठमल के पक्ष में दे दिया। उस दिन से जेठमल बाबा जी का अनन्य सेवक बन गया। कोई भी कार्य करना होता, पहले आज्ञा लेकर आरम्भ करता।

---

* *बाबा जी के वचनानुसार 30 जून 1913 को श्री बूलचन्द के घर एक पुत्र ने जन्म लिया जिसका नाम ईशर सिंह मनसुखानी रखा। 14 फरवरी 1920 को दूसरा पुत्र पैदा हुआ जिनका नाम गुरुवाणी पर 'त' अक्षर द्वारा तारा सिंह मनसुखानी रखा। बाबा जी की आज्ञानुसार दोनों को सरदार बनाया और सन् 1932 में बाबा जी ने स्वयं दीवान जेठमल दरबार कराची में दोनों को अमृतपान करवाया। ईशर सिंह उस समय कॉलेज में पढ़ता था और तारा सिंह स्कूल में पढ़ता था। देश के विभाजन के पश्चात् दोनों भाई बम्बई आकर बस गए। ईशर सिंह तो नामी वकील था जो अच्छी आयु भोगकर 4 जून 1992 को प्रभु को प्यारा हुआ। तारा सिंह बम्बई से रिटायर होकर गुरुवाणी मनन चिंतन करता हुआ सुख का जीवन व्यतीत कर रहा है। यह सब वृत्तांत तारा सिंह के माध्यम से सुना जो उसने अपने माता-पिता से सुना था।*

श्री हीरा नंद मीरचंदानी

श्री हीरा नंद मीरचंदानी हैदराबाद सिंध में पुलिस कमिश्नर थे। स्वभाव के अत्यन्त श्रेष्ठ, हक की कमाई करने वाले, रिश्वत से सदैव दूर रहते। उनकी धर्मपत्नी रुकमणि भी बड़े अच्छे स्वभाव की स्त्री थी। परमेश्वर की आज्ञा, इनका विवाह हुए कई वर्ष व्यतीत हो गए, लेकिन कोई संतान न हुई। दैवयोग से बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज हैदराबाद गए हुए थे। प्रात:-सायं काफ़ी संगत सत्संग का लाभ उठा रही थी। एक दिन रुकमणि मीरचंदानी भी सत्संग में पहुँची। बाबा जी के पवित्र मुख से गुरुवाणी की भावपूर्ण व्याख्या सुनकर मन गद्‌गद् हो गया। घर जाकर अपने पति हीरा नंद मीरचंदानी को बताया कि बाबा जी पूर्ण महापुरुष हैं। आप साथ चलो, संतान के लिए प्रार्थना करें। प्रभु कृपा करे, भिक्षा मिल जाए। सुनकर हीरा नंद को भी प्रसन्नता हुई। दूसरे दिन एकांत जानकर बाबा जी के चरणों में पहुँचे। नमस्कार करके अपनी संतान इच्छा प्रकट की। बाबा जी ने वचन किया, भाई! गुरुनानक के घर में किस वस्तु का अभाव है, केवल विश्वास रखने की आवश्यकता है, उसके घर तो लोक-परलोक के पदार्थों के सदैव भण्डारे वितरित होते हैं।

हीरा नंद एवं रुकमणि ने फिर प्रार्थना की—महाराज आप भी साक्षात् परमेश्वर हो। कृपा करो—संतान की कृपा करो। बाबा जी उस समय सैर को जाने लगे थे, उसी समय एक सिंधी कृषक सरसों का बीज लेकर आ गया-प्रार्थना की, महाराज! मैंने कल सरसों को बीजना है आप कृपा करके अपने कर कमल बीज को लगा दो, मेरी खेती सफल हो जाए। दूसरी ओर हीरा नंद और रुकमणि संतान याचना के लिए करबद्ध खड़े थे। प्रेम के सागर बाबा जी ने नेत्र बन्द कर लिए, कुछ क्षणों पश्चात् कमल-नयन खोले, सरसों के बीज में से दानों की चुटकी लेकर माई रुकमणि मीरचंदानी के हाथ में रख दी, आज्ञा की प्रात: प्रतिदिन गुरुद्वारा साहिब जाकर बच्चे के लिए अरदास करना, जो कड़ाह प्रसाद मिले उसमें इनमें से प्रतिदिन एक दाना मिलाकर खा लिया करना, गुरुनानक भली करेंगे।

माई ने आज्ञा के अनुसार छ: दिन ऐसा ही किया, क्योंकि सरसों के छ: दाने थे। समय पाकर माई को बच्चे की आशा हुई। पूरे समय पर पुत्री ने जन्म लिया जिसका नाम 'कला' रखा। समय पाकर फिर एक पुत्री ने जन्म लिया जिसका नाम 'पद्‌मा' रखा। कुछ समय पश्चात् फिर एक पुत्री हुई जिसका नाम 'लीला' रखा। तीनों पुत्रियों को घर में देखकर हीरा नंद और रुकमणि का मन उदास हो गया। एक समय बाबा जी हैदराबाद ही गए हुए थे, तो यह दम्पत्ति भी कुछ निराश जैसे होकर चरणों में पहुँचे। उस समय रुकमणि को पाँच मास का गर्भ था। दोनों ने प्रार्थना की, महाराज! कृपा करो, पुत्रियां तीन हैं, पुत्र रत्न की भी कृपा करो। सुनकर बाब जी बोले-देरी से आये हो। समय काफ़ी गुज़र गया। हीरा नंद ने प्रार्थना की-महाराज आप सर्व-समर्थ हो। समस्त प्रकृति आपके अधीन है। कृपा करो, पुत्र रत्न की कृपा करो।

बाबा जी हँसकर कहने लगे, अच्छा! आपके घर मंगलवार वाले दिन पुत्र जन्म लेगा। उसका नाम मोहन रखना। जन्म वाले दिन गुरुद्वारा साहिब जाकर कड़ाह प्रसाद की देग सजाकर अरदास करवाना। छठी वाले दिन मित्रों-सज्जनों को घर बुलाना, खुला कड़ाह प्रसाद बनाना, अरदास करके सबको छकाना (खिलाना) और लड़के को सरदार बनाना। *

---

* *सिंधी समुदाय में परम्परा है कि बच्चे के जन्म के छ: दिन पश्चात् मित्रों-सम्बन्धियों को जल-पान करवाते हैं और बच्चे का नामकरण करते हैं उसको ''छठी'' कहते हैं।*

समय पाकर ऐसा ही हुआ, मंगलवार वाले दिन लड़के ने जन्म लिया। बाबा जी की आज्ञानुसार हीरा नंद ने गुरुद्वारा साहिब कड़ाह प्रसाद बनाकर धन्यवाद की अरदास कराई और छठी वाले दिन अर्थात् छ: दिन के पश्चात् बच्चे को और जच्चे को गुरुद्वारा साहिब ले जाकर कड़ाह प्रसाद बनाया, भाई साहिब ने अरदास करके गुरुवाक् लिया, तो आदेश आया—

मन रे प्रभ की सरनि बिचारो॥

(सोरठि महला ९, पृष्ठ ६३२)

'म' अक्षर आया। बाबा जी की आज्ञा भी 'मोहन' नाम रखने की थी, इसीलिए बड़े प्रसन्न होकर 'मोहन'* नाम रखा। उधर मित्रों, सम्बन्धियों को पार्टी देने का प्रोग्राम बनाया, क्योंकि हीरा नंद मीरचंदानी पुलिस का बड़ा अफ़सर था, इसलिए बड़े-बड़े अफ़सर पार्टी में आमंत्रित थे। इसलिए भाईचारे में रीति-रिवाज निभाने के लिए शराब-माँस का प्रबन्ध भी किया गया। उधर दैवयोग से बच्चे का पेशाब रुक गया, डॉक्टरों को बुलाया गया, बड़े प्रयत्न किए, लेकिन बंध नहीं खुला। दूसरी ओर पार्टी की तैयारियां हो रही थीं। माँस पक रहा है, शराब की पेटियां आ गईं, लेकिन बच्चे की हालत बिगड़ती जा रही थी। जब बच्चे के बचने की कोई आशा न रही तो बाबा जी के चरणों में पहुँचे। बाबा जी कराची से उस दिन ही हैदराबाद आए थे। सारी घटना सुनकर बाबा जी थोड़े मुस्कराकर कहने लगे, मित्रता एक ओर ही चलेगी, या तो गुरुनानक से अथवा अफ़सरों से। बाबा जी से यह वचन सुनकर बहुत भयभीत हुए, चरण पकड़कर रुदन करने लगे, महाराज क्षमा करो, भूल हो गई। बाबा जी ने आज्ञा दी, माँस शराब सारा गिरा दो, किसी को नहीं खिलाना। कड़ाह प्रसाद और सादा लंगर तैयार करके अरदास करनी फिर सब सबको खिलाना (छकाना), गुरुनानक भली करेंगे। हीरा नंद ने घर जाकर ऐसा ही किया, शराब की बोतलें तोड़ दीं, माँस बाहर फैंक दिया। आज्ञानुसार साधारण लंगर तैयार करके कड़ाह प्रसाद बना कर अरदास की, फिर सबको खिलाया। उधर परमेश्वर ने कृपा की, बालक ठीक हो गया।

श्री लंका प्रस्थान

लगभग सन् 1920 की बात है आप आश्रम की समस्त जिम्मेदारियों को आत्मा सिंह जी को देकर कुछ एकांतवास करना चाहते थे, लेकिन शरीर की प्रारब्ध पर-उपकार की होने के कारण ऐसा नहीं हो सका। एक दिन श्री रामचन्द्र ऊधा राम मीरचन्दानी और श्री नवल राय सिंधी प्रेमियों ने ऋषिकेश आकर आपको हैदराबाद जाने के लिए प्रार्थना की। उस समय पंडित बाबा प्रेम सिंह जी भी समीप ही बैठे थे। उन्होंने वचन दिया कि मेरी इच्छा रामेश्वरम से श्री लंका की यात्रा करने की है, आप भी साथ चलें तो बहुत अच्छा रहेगा। बाबा प्रेम सिंह जी का वचन सुनकर महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी ने सिंधी प्रेमियों को कहा, आप वापिस हैदराबाद पहुँचे। हम श्री लंका होकर बम्बई के मार्ग आपके पास पहुँच जाएंगे। आप जी पंडित बाबा प्रेम सिंह जी, संत आत्मा सिंह जी व दो अन्य साधुओं को लेकर दिल्ली पहुँचे। यहाँ श्री नवल राय, खूब चन्द कृपलानी के बंगले

---

* *मोहन जब बड़ा हुआ, पढ़-लिखकर आयकर विभाग में बड़ा अफ़सर बना। मोहन के पश्चात् रुकमणि मीरचंदानी के घर दो और पुत्रों ने जन्म लिया, एक का नाम किश्न मीरचंदानी और दूसरे का नाम नानक मीरचंदानी रखा। बाबा जी ने छ: दाने सरसों के दिए थे, फलस्वरूप रुकमणि मीरचंदानी के छ: बच्चे पैदा हुए। नानक मीरचंदानी और उसकी बड़ी बहन लीला अभी जीवित हैं, बाकी चार भाई-बहनों का देहावसान हो चुका है। (लीला के मुख से)।*

में निवास किया, फिर यहाँ से चलकर गोवर्धन पर्वत की यात्रा करते हुए गोकुल वृन्दावन की यात्रा करने हेतु मथुरा रुके। यहाँ से चलकर ओंकार आदि तीर्थों से होते हुए, बाला जी तिरुपति के दर्शन किए। यहाँ एक दो दिन विश्राम करने के पश्चात् आगे प्रस्थान किया। यहाँ से त्रिचनापल्ली, बंगलौर, मैसूर श्रीरंग होते हुए मद्रास पहुँच गए।

इस समस्त मार्ग में शिकारपुरी सिंधी प्रेमियों ने बड़े प्रेम से सेवा की। मद्रास कुछ दिन रुकना पड़ा, क्योंकि लंका जाने के लिए पास आदि का प्रबन्ध करना था, जो सिंधी संगत ने किया। मद्रास से चलकर मदुराई होते हुए रामेश्वरम जाकर कुछ दिन विश्राम किया। फिर सागर-मार्ग से श्री लंका में प्रवेश किया। आगे सिंधी संगत स्वागत हेतु आई हुई थी, क्योंकि मद्रास से सिंधी प्रेमियों ने पहले ही संदेश भेज दिया था। सिंधी संगत श्री जीवत राम हिरदेरमानी और भाई परमानन्द गुरु नगर वाला अपने-अपने घर लेकर जाने के लिए ज़ोर डाल रहे थे। बाबा जी ने दोनों का प्रेम देखकर वचन किया कि एक के घर में निवास कर लेते हैं, दूसरे के घर प्रतिदिन सत्संग हो जाया करेगा। दोनों प्रेमियों ने आपस में सलाह की, निवास का प्रबन्ध श्री हिरदेरमानी के घर पर किया और प्रतिदिन का सत्संग भाई परमानंद गुरु नगर के घर में रखा। सत्संग तो प्रातः सायं होता ही था, अच्छी संख्या में सिंधी संगत लाभ उठाती ही थी, लेकिन दिन में भी दूर-समीप से संगत दर्शनार्थ आती ही रहती थी। इस प्रकार यहाँ कोई डेढ़ मास रुके रहे। श्री जीवत राम हिरदेरमानी ने आप के पहले कभी दर्शन नहीं किए थे। वह पहली बार ही दर्शन करके इतना प्रसन्न हो गया कि डेढ़ मास अपनी दुकान पर नहीं गया। पूरा समय आपकी सेवा में उपस्थित रहा।*

सिंधी प्रेमी आप जी को लंका के विशेष स्थलों पर लेकर गए। सब स्थानों पर सिंधी संगत ने श्रद्धाभाव से सेवा की और बहुतों ने अपने घर में चरण प्रवेश कराया। इस प्रकार श्री लंका की यात्रा सम्पूर्ण करके वापसी की। मार्ग के तीर्थों की यात्रा करते हुए, रामेश्वरम, त्रिवर्ग होते हुए गोदावरी के उत्सव पर नासिक पहुँच गए। यहाँ कुछ दिन रुककर उत्सव की समाप्ति पर बम्बई पहुँच गए। बम्बई बालकेश्वर रोड पर एक शिकारपुरी सिंधी श्री भगवान दास जी हुंडियों का दलाल था। उसके बंगले में निवास किया। यह स्थान नगर से तीन मील की दूरी पर था तब भी बहुत लोग दर्शन और सत्संग करने के लिए प्रतिदिन आते थे। इस प्रकार कोई एक मास बम्बई रुक कर समुद्री जहाज़ के मार्ग से कराची पहुँचे। यहाँ सेठ दल्लोमल के बगीचे में निवास रखा। कराची कुछ दिन रुके, फिर नवलराय आदि हैदराबाद की संगत प्रार्थना करके हैदराबाद ले गई, यहाँ भी कुछ दिन ही रुके। क्योंकि ऋषिकेश से आए बहुत समय हो चुका था और संत आत्मा सिंह जी साथ ही थे, इसलिए आश्रम को ध्यान में रखते हुए बाबा प्रेम सिंह जी और दूसरे संतों को साथ लेकर संगत से विदा लेकर फिर कराची पहुँचे। यहाँ से समुद्री मार्ग से बम्बई होते हुए वापिस ऋषिकेश आ गए।

फौजी अफ़सर कर्नल

सन् 1921 की बात है सिंधी प्रेमी श्री नवल राय ने ऋषिकेश आकर प्रार्थना की, महाराज! सब संगत ने आपके पवित्र चरण कमलों में हैदराबाद आने के लिए प्रार्थना की है। आपने आज्ञा की-ठीक है, टिकट ले आओ। पंडित प्रेम सिंह जी भी साथ चलेंगे। नवल राय टिकट लेने के लिए स्टेशन पर गए, लेकिन टिकट बाबू ने इन्कार कर दिया, क्योंकि जलियांवाला बाग का साका होने के पश्चात् अंग्रेज़ सरकार ने कुछ कठोरता कर दी थी। श्री नवल राय ने बाबा जी को आकर सारा वृत्तांत सुनाया, तो आप स्वयं चलकर स्टेशन गए। टिकट बाबू को कहा, भगत जी! ये प्रेमी हमें प्रतिवर्ष सिंध लेकर जाते हैं, इनको टिकटें दे दो। बाबू जी ने बड़ी श्रद्धा के साथ नमस्कार करके टिकटें दे दीं। निश्चित दिन पर नवल राय और बाबा प्रेम सिंह

* *उस समय जीवत राम हिरदेरमानी के पास पाँच छः नौकर काम करते थे। दैवयोग से कुछ समय पश्चात् यही प्रेमी श्री लंका का सबसे बड़ा व्यापारी प्रसिद्ध हुआ।*

जी को साथ लेकर हैदराबाद जाने के लिए हरिद्वार से गाड़ी में सवार हुए। जब गाड़ी सहारनपुर पहुँची तो एक मिन्टगुमरी जाने वाला सरदार सवार हुआ, जो फौज़ में कर्नल पद पर अफ़सर था। वह शराब के नशे में धुत हुआ पंडित प्रेम सिंह जी के पास जाकर कुछ सवाल-जवाब करने लगा। पंडित जी ने उसको बहुत प्रमाण देकर समझाने का प्रयत्न किया, लेकिन असफल।

पंडित बाबा प्रेम सिंह जी यह गुरुवाक् याद करके कि **'मूरखै नाल न लुझिऐ'** चुप हो गए। बाबा प्रेम सिंह को चुप हुआ देखकर कर्नल साहिब का उत्साह और बढ़ गया। मन में सोचा एक संत को तो हरा दिया है, अब दूसरे के साथ भी बात करें। यह सोच अपने स्थान से उठकर, महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी जहाँ बैठे थे, समीप जाकर सवाल-जवाब करने लगा। बाबा जी ने कहा कि तुम अपने स्थान पर जाकर सो जाओ, प्रात: बात करेंगे।

कर्नल प्रात: उठकर चाय नाश्ता के पश्चात् बाबा जी के पास गया। उन्होंने बड़े प्रेम के साथ समीप बैठाकर पूछा-क्या काम करते हो और कहाँ जाना है?

सरदार—जी फौज में अफ़सर हूँ, कर्नल।

बाबा जी—परमेश्वर का भजन करते हो?

सरदार—जी नहीं।

बाबा जी—क्यों नहीं करता?

सरदार—उसका क्या लाभ होगा?

बाबा जी—कृतघ्नता का दोष नहीं लगता।

सरदार—कृतघ्नता से क्या भाव है?

बाबा जी—जो किए हुए उपकार को भुला दे अर्थात् कृतघ्नता।

सरदार—फिर मेरे पर यह दोष नहीं लग सकता, क्योंकि मैं तो माँ-बाप की आज्ञा का पालन करता हूँ। जिन्होंने पालन-पोषण किया, पढ़ाया, फिर नौकरी का कर्त्तव्य भी पूरा निभाता हूँ जिसका वेतन लेता हूँ।

बाबा जी—यह जो करता है अच्छा है, करना भी चाहिए, यह भी एक कर्त्तव्य है, लेकिन यह बता जिस दिन तुम प्राण त्यागोगे उस दिन तुम्हारे माता-पिता, अन्य सम्बन्धी और तुम्हारी नौकरी समस्त मिलाकर क्या तुम्हें एक श्वास खरीद कर दे सकेंगे?

सरदार—जी नहीं, यह सम्भव नहीं।

बाबा जी—फिर बता, जिस परमेश्वर ने तुम्हें कुत्ते बिल्लियों की नीच योनियों में से निकाल कर दुर्लभ शरीर दिया, इस शरीर को जीवित रखने के लिए प्रतिदिन की चौबीस हज़ार की पूँजी, बिना किसी मूल्य के दी, उसको श्वास-श्वास याद न रखना कृतघ्नता नहीं तो और क्या है?

सरदार—जी हाँ, यह तो कृतघ्नता ही हुई।

बाबा जी—बुद्धिमान पुरुषों ने कृतघ्नता के दोष को सब दोषों से बड़ा माना है, शेष सब दोष इससे छोटे हैं। जब कृतघ्नता बढ़ जाती है तो पृथ्वी भी डोलने लगती है। एक बार पृथ्वी ने दु:खी होकर परमेश्वर के आगे प्रार्थना की,

महाराज! मैं अब भार वहन नहीं कर सकती। परमेश्वर ने आकाशवाणी द्वारा पृथ्वी से पूछा कि ये जो पर्वत आकाश को छूते हैं, ये तुम्हें भार स्वरूप लगते हैं? अथवा ये जो किले, महल, माडियां, घर-बार आदि दिखाई देते हैं, ये भार स्वरूप लगते हैं? तुम्हें सागर, नदियां, नाले जो प्रवाहमान हैं—ये भार स्वरूप लगते हैं? अथवा असंख्य वृक्ष, जो फल-फूलों से लदे हैं, क्या ये भार स्वरूप लगते हैं? ये जो असंख्य जीव घूम फिर रहे हैं, कहीं ये तो भार स्वरूप प्रतीत नहीं होते? पृथ्वी ने प्रार्थना की महाराज! इनमें से मुझे कोई भी दु:ख नहीं देता, मैं कृतघ्नता का भार सहन नहीं कर सकती—जो नीच से भी नीच है। यथा भाई गुरदास—

ना तिसु भारे परबतां असमान खहंदे॥
न तिसु भारे कोट गढ़ घर-बार दिसंदे॥
न तिसु भारे साइरां नद वाह वहंदे॥
न तिसु भारे तरुवरां फल सुफल फलंदे॥
न तिसु भारे जीअ जंत अणगणित फिरंदे॥
भारे भुईं अक्रितघण मंदी हू मंदे॥

ऐसे जो प्रभु से विमुख मनुष्य हैं, शास्त्राकारों ने उनका दर्शन मात्र भी बुरा माना है अर्थात् उन्हें देखने से भी मना किया है। देखो भाई साहिब भाई गुरदास जी क्या कहते हैं—

मद विचि रिधा पाइ कै कुत्ते दा मासु॥
धरिआ माणस खोपरी तिसु मंदी वासु॥
रतू भरिआ कपड़ा करि कजणु तासु॥
ढकि लै चली चूहड़ी करि भोग बिलासु॥
आखि सुणाए पुछिआ लाहे विसवासु॥
नदरी पवै अक्रितघण मतु होई विणासु॥

अर्थ—एक जमादारिन ने कुत्ते का माँस शराब में पका कर मनुष्य की खोपड़ी में डाला, फिर उसको रक्त से सने वस्त्र के साथ अच्छी प्रकार ढककर अपने भोजन के लिए ले गई। आगे से किसी ने पूछा कि कौन सी अद्‌भुत वस्तु है जो तुम वस्त्र में ढक कर ले जा रही हो? उस व्यक्ति की शंका दूर करने के लिए कहा, यदि किसी कृतघ्न की दृष्टि पड़ गई तो यह खराब हो जाएगा, हमारे खाने के काम नहीं आएगा, इसलिए इसको गंदे वस्त्र के साथ ढका है ताकि यह माँस बुरी नज़र से बिगड़ ना जाए। भाई साहिब उदाहरण देकर समझाते हैं कि कुत्ते का माँस, मुर्दे की खोपड़ी, सुरा आदि सब अपवित्र वस्तुएँ हैं, फिर भी कृतघ्न की ऐसी कुदृष्टि है जो अपवित्र को भी अपवित्र कर देती है। इसलिए कर्नल साहिब, कृतघ्नता का दोष सब दोषों से बुरा है।

ऐसा उपदेश सुनकर कर्नल बाबा जी के चरणों पर गिर कर लगा क्षमा-याचनाएं करने। बाबा जी बोले चिंता न कर, गलती करना जीव का स्वभाव है। गलती मान लेना वीरता है, लेकिन गलती भी करनी और मानना भी नहीं, यह कायरता है। तू चिंता न कर तुझे तेरी गलती का अहसास हो गया है, गुरु नानक भली करेंगे। कर्नल ने प्रार्थना की, महाराज! अब जाते समय मिन्टगुमरी चार दिन अवश्य रुककर मेरा घर पवित्र करो। बाबा जी ने पूछा, तेरा नाम क्या है? सरदार जी ने अपना नाम बताया,

तो बाबा जी ने कहा तुम्हारे पिता का यह नाम था? कर्नल ने कहा, हाँ जी। फिर वह तो बहुत अच्छे इन्सान थे, संत सेवी भी थे? अपने पिता के सम्बन्ध में सुनकर कर्नल बहुत हैरान हुआ, श्रद्धा और भी बढ़ गई। जब गाड़ी मिन्टगुमरी पहुँचकर स्टेशन पर रुकी, बाबा जी नीचे उतर कर प्लेटफार्म पर इधर-उधर थोड़ा घूमने लगे, तो कर्नल साहिब ने बाबा जी के चरणों पर गिरकर प्रार्थना की, महाराज! कृपा करो, तीन चार दिन मेरे घर अवश्य चलो।

उसका प्रेम देखकर आपने वचन किया, हे प्रेमी! कल हमने लाहौर से हैदराबाद और शिकारपुर पहुँचने के सम्बन्ध में तार दे दी है, इसलिए शिकारपुर आदि स्टेशनों पर रात्रि के समय संगत प्रतीक्षा करेगी, इतनी संगत को निराश करना गुरु घर में बड़ा दोष है, इसलिए हठ न कर, यदि तुम्हारा प्रेम सच्चा और हमारे शरीर की प्रारब्ध हुई तो वापिसी चलने से पूर्व तुझे तार दे देंगे। सरदार जी ने वचन मान लिया। फिर प्रार्थना की आप अपनी एक फोटो मुझे देने की कृपा करो। आपने कहा कि फोटो हम हैदराबाद से भिजवा देंगे, मगर एक शर्त है कि तुम आज से शराब माँस आदि बंद कर दो और वापिस जाते समय हमारे साथ ऋषिकेश चलो। कर्नल साहिब ने वचन दे दिया।

आप जी सिंध में कुछ समय रहने के पश्चात् सत् उपदेश करते रहे, आखिर वापसी पर दिए वचनानुसार मिन्टगुमरी पहुँचे। चार दिन कर्नल के पास रुके। इसी समय दौरान काफी संगत ने दर्शन, सत्संग का लाभ उठाया, क्योंकि कर्नल ने अपने मित्रों सज्जनों को पहले ही बता दिया था। यहाँ ही पंथ के शिरोमणि बाबा करतार सिंह जी बेदी जो क्षेत्र के बड़े जागीरदार थे, बाबा जी को अपने घर ले गए। मिन्टगुमरी से चलकर श्री अमृतसर पहुँचे, तीन चार दिन गुरु स्थानों के दर्शन करके वापिस हरिद्वार पहुँच गए।

मसूरी में

इन दिनों में एक सिंधी प्रेमी दीवान श्री चेतन राम* प्रतिवर्ष ग्रीष्म की ऋतु में लगभग तीन मास के लिए प्रार्थना करके बाबा जी को मसूरी लेकर जाते थे। श्री नवल राय, ईशर दास भी प्राय: साथ होते थे। मसूरी में जितना समय ठहरते, प्रात: नौ बजे से बारह बजे तक योगवाशिष्ठ की कथा होती और सायं को पाँच से छ: बजे तक आत्मपुराण, श्रीमद् भगवद्गीता, सार मुक्तावली, भव रसामृत, विचार माला, भक्त वाणी और विचार सागर आदि ग्रन्थों का प्रतिदिन चिंतन होता रहता। इस प्रकार सारा समय अध्ययन-अध्यापन में सफल होता रहता था।

एक दिन नवल राय ईशर दास के नाम तार आई जिसमें लिखा था आप का छोटा पुत्र जिसकी आयु डेढ़ वर्ष थी, बहुत बीमार है, इसलिए शीघ्र हैदराबाद आ जाओ। नवल राय ने सारी बात बाबा जी को बताई, सुनकर आप जी ने नवल राय को पूछा, तुम्हारा क्या विचार है? नवल राय ने कहा जैसी आपकी आज्ञा। बाबा जी ने कहा नवल राय! आप समय पर पहुँच नहीं पाओगे, इसलिए वापसी तार दे दो कि बच्चे को सुखमनी साहिब का पाठ सुनाओ। तार हैदराबाद पहुँचने पर घर वालों ने बच्चे के समीप सुखमनी साहिब का पाठ आरम्भ किया, जिस समय सुखमनी साहिब का पाठ पूर्ण हुआ, उस समय बच्चे ने प्राण त्याग दिए।

हैदराबाद गुरुसंगत दरबार का शिलान्यास

1922 ई० का जिक्र है जब हैदराबाद से मास्टर फतेहचन्द मेघराज और कुछ अन्य प्रेमियों ने प्रार्थना की कि संगत ने एक गुरुमंदिर बनाने हेतु विचार किया है, इसलिए आप कृपा करके सिंध निवासी संगत को दर्शन दो, साथ ही अपने पवित्र

---

* *यह सिंधी प्रेमी दीवान चेतन राम 1919 से 1923 तक पूरे पाँच साल बाबा बुड्ढा सिंह जी को गर्मी की ऋतु में मसूरी लेकर जाता रहा। वहाँ का सारा खर्चा और सेवा बड़े प्रेम के साथ स्वयं करता था।*

कर कमलों से इस पावन गुरुमदिंर की नींव रखो। संगत का वचन स्वीकार करते हुए, आप जी ने आज्ञा दी, ठीक है टिकटों आदि का प्रबन्ध कर लो। जिस समय चलने की तैयारी हुई, आप जी ने वचन किया कि एक बर्तन में गंगा जल ले आओ। प्रेमी गंगा में से जल ले आए। आज्ञा की कि इसको साथ लेकर जाना है, किसी बंद बर्तन में डाल लो। इस प्रकार तैयारी करके सिंधी प्रेमियों के साथ हैदराबाद पहुँच गए। प्रतिदिन की भाँति सत्संग आरम्भ होने पर संगत का आना-जाना आरम्भ हो गया। एक दिन संगत ने मिलकर गुरुमंदिर की नींव रखने के लिए समय मांगा, तो आप जी ने वचन किया कि कड़ाह प्रसाद सजा लो, यह शुभ कार्य आज ही कर लेते हैं। कड़ाह प्रसाद तैयार करके अरदास उपरांत बाबा जी ने अपने पावन कर कमलों द्वारा पवित्र गुरुमंदिर की नींव रखकर आज्ञा की कि इस गुरुमंदिर के निर्माण के लिए किसी से पैसा नहीं मांगना, कोई धन एकत्रित नहीं करना और तैयार होने पर इसका नाम गुरुसंगत रखना। श्रद्धालुओं ने प्रार्थना की कि आप आशीर्वाद दो कि यह गुरुमंदिर* बहुत सुन्दर बने और बहुत शीघ्र तैयार हो जाए। महाराज बोले—भाई! तुम सब इतनी श्रद्धा और प्रेम के साथ बनाने लगे हो, गुरुनानक कृपा करेंगे?

यह गुरुसंगत मंदिर हैदराबाद 'होम स्टेट' के सम्मुख पाकिस्तान बनने तक शोभायमान था।

बाबा जी को नमूनिया होना

फरवरी मास था। एक दिन बाबा जी केश-स्नान करके केश सुखा रहे थे। आकाश में बादल होने के कारण धूप नहीं थी इसलिए मौसम अधिक ठंडा होने के कारण शरीर को थोड़ी ठंड अनुभव हुई। सर्दी के कारण कुछ बुखार भी हो गया, लेकिन किसी को बताया नहीं। इसी प्रकार दो दिन गुज़र गए, अचानक तीसरे दिन तीव्र बुखार हो गया। संगत को पता लगने पर उस समय हैदराबाद के प्रसिद्ध डॉक्टर, सिविल सर्जन, डॉ. कल्याण दास जेठा नंद शिव दसानी को बुलाया, जोकि नवल राय का मसेर था। डॉक्टर ने देखकर बताया कि इनको डबल नमूनिया हो गया है, मैं औषधि दे देता हूँ, लेकिन ध्यान बहुत रखना पड़ेगा। जब तक बिल्कुल ठीक न हो जाएं, उतने दिन चारपाई ऊपर ही लेटे रहें, शरीर की सारी क्रिया चारपाई पर ही करवाना और बोल-चाल से परहेज़ करना। डॉक्टर ने एक दवाई पीने वाली और एक मालिश करने के लिए दी।

उपचार करके डॉक्टर तो चला गया, लेकिन प्रेमी जब औषधि देने लगे तो आप बोले-भाई औषधि कोई नहीं लेनी, हाँ-मालिश कर लो और जो गंगा जल साथ लेकर आए हैं—वह थोड़ा लाओ-पी लें। श्रद्धालुओं ने प्रार्थना की, महाराज! आपको तेज़ नमूनिया है और गंगा जल ठंडा है, इसके पीने से और बढ़ सकता है, कृपा करके औषधि पान कर लो। आपने संगत को धैर्य बंधाया कि तुम चिंता न करो, वचन मानो। आज्ञा मानकर सेवादार ने गंगा जल का गिलास दे दिया, जो आपने पी लिया। इस प्रकार दिन-रात किसी गर्म वस्तु अथवा औषधि की बजाए गंगा जल का ही पान करते रहे और श्रद्धालुओं को आज्ञा दी-यह बात डॉक्टर को नहीं बतानी। ऐसी हालत कई दिन रही, शरीर अति निर्बल हो गया। डॉक्टर प्रतिदिन दोबारा आता, दवाई बदल कर लिखता, लेकिन कोई अन्तर नहीं आया। एक दिन डॉक्टर ने नवल राय को बताया कि ठीक होने की आशा बहुत कम है। डॉक्टर से ऐसा सुनकर संगत बहुत घबरा गई, प्रेमियों ने आकर प्रार्थना की, महाराज! आपकी आज्ञा हो तो ऋषिकेश तार दे दें। बाबा जी हँसकर बोले-हमारे भीतर किसी प्रकार का कोई संकल्प ही नहीं है। हाँ-यदि कुछ करना ही चाहते हो,

* *यह गुरुमंदिर एक वर्ष में ही बहुत सुन्दर बनकर तैयार हो गया, दूसरे वर्ष 1923 ई० में बाबा बुड्ढा सिंह जी से इसका उद्घाटन करवाया गया।*

तो ऐसा करो, हमारे साथ वाला जो कमरा है, इसको साफ़ और खाली करके इसमें श्री अखण्ड पाठ साहिब करो, लेकिन पाठ शुद्ध होना चाहिए। पाठ प्रातः ग्यारह बजे आरम्भ करना। जो आपके मन में चिंता है हमारे शरीर के सम्बन्ध में, यदि हमने शरीर छोड़ना होगा तो पाठ के मध्य से पूर्व त्याग देंगे। यदि पाठ मारू राग तक पहुँच गया, तो समझना कि शरीर का अन्न-जल अभी बहुत है। आपके मुख से ऐसा सुनकर संगत बहुत भयभीत हो गई कि कुछ होने वाला है। महापुरुषों की आज्ञानुसार संगत ने सारी तैयारी करके दूसरे दिन ग्यारह बजे श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ किया, लेकिन समस्त संगत के मन में बहुत शोक और भय छाया हुआ था। सभी अपने में शारीरिक नीरोगता की प्रार्थना कर रहे थे। इसी प्रकार शोक एवं चिंता में आठ पहर गुज़र गए। दूसरे दिन जिस समय पाठ मध्य के भोग पर पहुँचा, तो संगत का थोड़ा भय दूर हो गया, लेकिन मारू राग अभी भी दूर था। जिस समय दिन के तीन बजे मारू राग आरम्भ हुआ तो संगत में हर्ष की लहर दौड़ गई।

तीसरे दिन प्रातः चार बजे बाबा जी ने रामचन्द ऊधे राम मीरचंदानी, जो कि दिन-रात सेवा में उपस्थित रहता था—को कहा कि आज श्री अखण्ड पाठ साहिब का भोग पड़ना है, भोग के समय महाराज जी की उपस्थिति में जाने का हमारा विचार है, लेकिन हमने कई दिन से स्नान आदि नहीं किया, स्नान किए बग़ैर महाराज जी की उपस्थिति में नहीं जाना, इसलिए हमारा स्नान करायें। वचन सुनकर मीरचंदानी ने प्रार्थना की, महाराज! आप जी को नमूनिये के कारण तेज़ बुखार है, इसलिए डॉक्टर ने स्नान के लिए मना किया है। कुछ देर बाद महाराज ने पुनः पूछा—स्नान में क्या देरी है? आपके मुख से दूसरी बार फिर सुनकर, रामचंद मीरचंदानी ने कमरे से बाहर संगत को बताया। तब सेठ जेठमल भीतर गया। उसको बाबा जी ने स्नान के लिए कहा। आगे से जेठमल ने डॉक्टर वाली बात बताई। थोड़ी देर पश्चात्, चेतन राम ने भी जाकर वहीं प्रार्थना की। बाबा जी कुछ समय चुप रहे, कुछ समय बाद नवल राय को कहा कि अखण्ड पाठ, भोग के श्लोकों पर पहुँचने वाला है, पर हमने अब तक स्नान नहीं किया, लेकिन हमारी इच्छा है कि हम साहिब की उपस्थिति में बैठकर पाठ श्रवण करें। नवल राय ने प्रार्थना की, महाराज! आप कृपा करो, संगत की प्रार्थना स्वीकार करके स्नान का विचार त्याग दो। हाँ-यदि आप पाठ श्रवण ही करना चाहते हैं तो ऐसा करते हैं, दोनों कमरों के बीच वाला दरवाज़ा खोल देते हैं और द्वार में वस्त्र का पर्दा लगा देते हैं। इस प्रकार आप जी को सारा पाठ सुनता रहेगा। इसी प्रकार किया गया। बाबा जी अपने बिस्तर पर लेटे हुए ही सारा पाठ श्रवण करते रहे। भोग के पश्चात् आरती हुई। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की उपस्थिति में धन्यवाद की अरदास करके कड़ाह प्रसाद वितरित किया गया, सब संगत बहुत प्रसन्न हुई। बाबा जी ने आज्ञा दी कि खुला लंगर चलाओ। जितने संत महात्मा पहुँचे हैं, उनको लंगर छकने के बाद एक-एक चादर दो।

सारी समाप्ति के पश्चात् डॉक्टर को बुलाया, उसने अच्छी प्रकार जाँच करके कहा कि छाती की एक ओर थोड़ा ध्यान देने की आवश्यकता है बाकी काफ़ी ठीक हो गया है। कुछ दिन पश्चात् शरीर बिल्कुल स्वस्थ हो गया, तो आपने ऋषिकेश की तैयारी की। वापसी का वचन सुनकर बहुत सी संगत भी साथ जाने के लिए तैयार हो गई। गाड़ी जिस समय शिकारपुरी पहुँची तो वहाँ की संगत पहले ही स्टेशन पर बैठी कीर्तन कर रही थी। वे भी साथ ही सवार हो गई, आगे रोड़ी की संगत ने प्रार्थना की, महाराज आप जी की यदि आज्ञा हो तो हम भी लाहौर तक चलें। बाबा जी ने वचन किया, बहुत अच्छा! गाड़ी में कीर्तन करते हुए चलो। वचन मानकर ऐसा ही किया। सबने तीसरे दर्जे की टिकटें ले ली, गाड़ी चलने पर कीर्तन आरम्भ

कर दिया। इस प्रकार कीर्तन सत्संग करते गाड़ी जब लाहौर पहुँची, तो आगे एक खड़ी गाड़ी से टकरा गई। खड़ी गाड़ी का तो बहुत नुकसान हुआ, लेकिन इस गाड़ी के चालक, परिचालक को मामूली चोटें लगीं, शेष पूरी गाड़ी में किंचित् भी हानि नहीं हुई। जब गाड़ी प्लेटफार्म पर रुकी तो 'सक्खर रोड़ी' की संगत ने वापिस जाने की आज्ञा मांगी। बाबा जी ने आज्ञा की- आप सब संगत ऋषिकेश चलो, एक सप्ताह वहाँ ठहरकर फिर वापिस आना। संगत ने प्रार्थना की, महाराज! घर वाले चिंता करेंगे, क्योंकि हम लाहौर से वापिस आने के लिए कह आए थे।

बाबा जी ने कहा-कोई बात नहीं। ऋषिकेश पहुँचकर तारें दे दो। ऐसा ही किया, ऋषिकेश जाकर सब ने तारों के द्वारा घर संदेश दे दिए। आज्ञानुसार एक सप्ताह ठहरकर फिर आज्ञा ले वापस घर को गए।

महंत नारायण सिंह जी

मार्च के अंतिम दिनों में आप वापिस ऋषिकेश पहुँचे। नमूनिये का आक्रमण तेज़ होने के कारण शरीर काफ़ी निर्बल हो गया था, इसलिए आप अधिक एकांत में रहते, बातचीत बहुत कम करते थे। इन दिनों में ही एक युवक नारायण सिंह का आश्रम में आना-जाना आरम्भ हुआ।* उसकी पारमार्थिक लगन को देखकर आपने संत आत्मा सिंह जी को आज्ञा दी कि इसको गुरुवाणी का पाठ सिखाओ। इस प्रकार कुछ दिन आराम करके सिंधी प्रेमी दीवान चेतन राम के प्रार्थना करने पर मसूरी चले गए। यहाँ लगभग तीन मास ठहरकर शरीर बिल्कुल स्वस्थ हो गया।

गोवर्धन

1923 ई० में संगत की प्रार्थना स्वीकार करके हैदराबाद पधारे। संगत की ओर से निवास की व्यवस्था श्री रेवाचंद वाटूमल के बंगले में की गई थी, जो कि कल्याण मंदिर के अति समीप चढ़ाई ऊपर स्थित है। यहाँ प्रतिदिन बहुत संगत दर्शनार्थ आती, लेकिन सत्संग प्रतिदिन कल्याण मंदिर में ही होता। इसी समय कल्याण मंदिर में नए भवन की नींव रखी और उस समय ही माझ राग की अष्टपदी की कथा की जो कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पृष्ठ 131 पर दर्ज है। इस अष्टपदी में श्री गुरु अर्जुन देव महाराज ने गुरुमुख एवं मनमुख के लक्षणों का वर्णन किया है। इस अष्टपदी की आप जी ने अनेक उदाहरण देकर भावपूर्वक व्याख्या की जो कि चौबीस दिनों में पूरी हुई।**

इस प्रकार कथा व्याख्यान में समय का सद् उपयोग हो रहा था, पर्याप्त संख्या में संगत लाभ उठा रही थी। एक दिन समीप बैठी संगत को पूछा, प्रमुख गोबिन्द राम कई दिनों से नज़र नहीं आया। क्या बात है? सुअवसर जानकर मिस्टर खुशीराम जो कल्याण मंदिर का प्रमुख सेवादार और बाबा जी का प्रेमी सेवक था और गोबिन्द राम का समीप सम्बन्धी था ने प्रार्थना की, महाराज! गोबिन्द राम का पुत्र गोवर्धन बहुत बीमार है, कई दिनों से चारपाई पर ही पड़ा है। औषधि उपचार भी बहुत किए हैं, लेकिन कोई फ़र्क नहीं पड़ रहा। गोबिन्द राम बेचारा चिंता की हालत में चौबीस घंटे उसके पास ही रहता है। आपकी बड़ी कृपा होगी, यदि उनके घर दर्शन-दीदार देने की कृपा करो। आपके जाने से लड़का भी दर्शन कर पाएगा

* *यह युवक महंत आत्मा सिंह जी के बाद निर्मल आश्रम के महंत नारायण सिंह के नाम से प्रसिद्ध हुए, जिनका जीवन चरित्र आगे आएगा।*

** *इस अष्टपदी की सम्पूर्ण व्याख्या जो बाबा बुड्ढा सिंह जी ने हैदराबाद में की थी 'निर्मल उपदेश' नामक पुस्तक में छप चुकी है जो कि श्री निर्मल आश्रम ऋषिकेश से बिना किसी मूल्य के हर समय उपलब्ध है।*

और परिवार को भी कुछ धैर्य आ जाएगा। खुशी राम से सारी बात सुनकर वचन किया कि सायं को जब सैर को जाएँगे, उस समय गोबिन्द राम के घर चलेंगे। सायं के सत्संग की समाप्ति पर जिस समय सैर को निकले तो एक दो प्रेमियों को साथ लेकर पहले गोबिन्द राम के घर पहुँचे। आप जी को घर आए देखकर परिवार बड़ा उत्साहित हुआ, शीघ्रता से कुर्सी रखी। उस पर सुन्दर वस्त्र बिछाकर आप जी को बैठाया फिर सब परिवार ने एकत्रित होकर प्रार्थना की, महाराज! हमारा दुर्भाग्य कि समीप आई गंगा में स्नान नहीं कर सकते। कितने दिनों से लोग आप जी के दर्शन सत्संग का लाभ उठा रहे हैं, लेकिन हम गोवर्धन को ऐसी हालत में छोड़कर कैसे जा सकते हैं, आप कृपा करो यह ठीक हो जाए, हम भी सत्संग का लाभ उठाएँ। परिवार को दु:खी हालत में देखकर बाबा जी ने दया की, वचन किया, कल्याण मंदिर में इसके स्वास्थ्य निमित्त एक सहज पाठ आरम्भ कर दो और जब यह मंदिर जाने की हालत में हो जाए तो मंदिर में ही एक श्री अखंड पाठ साहिब कराओ, उसके भोग वाले दिन खुला लंगर चलाओ। वचन मानकर गोबिन्द राम ने कल्याण मंदिर में सहज पाठ आरम्भ कर दिया। जैसे-जैसे सहज पाठ हो रहा था, वैसे-वैसे ही लड़के की बीमारी कम होनी शुरू हो गई। सहज पाठ पूर्ण होते ही लड़का घूमने फिरने लगा। जब पूरा ठीक हो गया फिर बाबा जी की आज्ञानुसार श्री अखंड पाठ साहिब रखा गया, भोग के उपरांत खुला लंगर वितरित किया गया। कुछ समय पश्चात् परिवार सहित ऋषिकेश जाकर एक अखण्ड पाठ साहिब कराया और बाबा जी को प्रार्थना करके श्री निर्मल आश्रम में दो कमरे बनवाए।*

काशी वाला आश्रम

श्रीमान् पंडित अवतार सिंह जी, शिष्य श्रीमान् संत सौदागर सिंह जी, जो कि संत ठाकुर दयाल सिंह जी के शिष्य थे। पंडित अवतार सिंह जी व्याकरण एवं न्याय-शास्त्र के अद्वितीय पंडित थे। इन्होंने काशी करुण घंटा में सन् 1901 में एक मकान खरीदा था, जिसका नाम 'संगत ज्ञान गुफ़ा' रखा। आप यहाँ रहकर छात्रों को संस्कृत पढ़ाते रहे। अंत समय में अपना कोई शिष्य न होने के कारण अपना आश्रम 'संगत ज्ञान गुफ़ा' सन् 1924 ई० में बाबा बुड्ढा सिंह जी को अर्पण करके आप शरीर त्याग गए। बाबा बुड्ढा सिंह महाराज ने सन् 1929 ई० में समीप वाली दूसरी जगह खरीदकर अच्छी कोठी बनवा दी जो आज तक मौजूद है। इस कोठी में रहकर ही संत अर्जुन सिंह जी भिक्षु, संत महाराज निक्का सिंह जी विरक्त, संत भरत सिंह जी और अन्य कई विद्यार्थियों ने विद्या प्राप्त की।

दुबारा फिर नमूनिया

1924 ई० की बात है महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज संगत की प्रार्थना स्वीकार करके हैदराबाद सिंध पहुँचे। यहाँ श्री टहल राम सिंध वर्की के नए बनाए मकान में जो कल्याण मंदिर के बिल्कुल सामने था, विराजमान हुए। इस क्षेत्र में प्रतिवर्ष जाने के कारण पर्याप्त संगत जुड़ गई थी, इसलिए कथा, व्याख्यान, सत्संग करते संगत के प्रेमवश ढाई मास यही व्यतीत हो गए। इतने में कराची की संगत प्रार्थना करके आप जी को कराची ले गई। यहाँ श्री टेकचन्द, हासा सिंह गिदवानी

---

* *दूसरी छत के ऊपर विरक्त महाराज जी वाला और उसके पीछे वाला दोनों कमरे मुखी गोबिन्द राम ने अपने सुपुत्र गोवर्धन के स्वस्थ होने की खुशी में धन्यवाद के रूप में 1930 ई० में बनवाए थे। इनके फ़र्श में लगी टाइलें भी कराची से ही लेकर आए थे।*

के बंगले में निवास आदि का प्रबन्ध किया गया था, लेकिन आने-जाने और प्रतिदिन व्यय की सेवा श्री चेतन राम ने बाबा जी से माँग कर ली हुई थी। इन दिनों में सोमावती अमावस्या आ गई, क्योंकि कभी-कभी ही ऐसा होता है।

सागर में 'हवा बंदर' नामक एक स्थान है। अमावस्या का शुभ दिवस जानकर लोग वहाँ स्नानार्थ गए। बाबा जी ने भी स्नान किया, वहाँ से आकर घर में स्नान किया, क्योंकि सागर का जल खारा होता है। उस समय सर्दी की ऋतु थी और वायु तेज़ चल रही थी इसलिए बाबा जी के शरीर को कुछ सर्दी का असर हो गया, जिसके कारण शरीर को हल्का बुखार हो गया, लेकिन आपने किसी को बताया नहीं। तीन चार दिन तो ऐसा ही रहा, बाद में अचानक बुखार तेज़ हो गया। संगत को पता लगने पर श्रद्धालुओं ने डॉक्टर चेतराम साहनी को बुलाया, जो बाबा जी का भी अनन्य सेवक था और दिल से अटूट श्रद्धा रखता था। उसने अच्छी प्रकार जाँच करके संगत को बताया कि बुखार बहुत तेज़ है, मुझे नमूनिये का शक है, अच्छा हो डॉक्टर नज़रत को बुला लें।

डॉक्टर नज़रत कराची नगर में बहुत प्रसिद्ध डॉक्टर था, लेकिन सम्प्रति आयु अधिक होने के कारण मरीज़ आदि नहीं देखता था। अपने घर में ही अवकाश प्राप्त जीवन व्यतीत कर रहा था, लेकिन बाबा बुड्ढा सिंह जी के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित था। उसने जाँच करके बताया कि डबल नमूनिया हो गया है। उसने बाबा जी से पूछा, क्या कभी पहले भी ऐसा हुआ? आपने बताया एक बार पहले भी ऐसा हुआ था। डॉक्टर नज़रत ने कहा, आपको पूर्ण आराम की आवश्यकता है। समस्त क्रिया चारपाई पर ही करना और यह औषधि अभी से लेना आरम्भ कर दें। महाराज मुस्कराकर बोले—हमारा तो विचार यहाँ आने का नहीं था लेकिन—**हरि की गति न कोऊ जानै॥**

आप जी ने संगत को वचन किया कि कल श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ कर दो और जिस दिन भोग पड़ेगा, उस दिन शिकारपुर जाने के लिए रेल का पूरा डिब्बा आरक्षित करवा दो। संगत ने प्रार्थना की, महाराज! डॉक्टर ने तो पूर्ण आराम करने के लिए कहा है। यात्रा करने से बीमारी के और बढ़ जाने का भय है, इसलिए आप यहाँ कुछ दिन और विश्राम करने की कृपा करो। बाबा जी बोले, आप चिंता न करो, गुरु नानक सब ठीक करेंगे। संगत ने विवश होकर गाड़ी का एक डिब्बा आरक्षित करवा लिया और दूसरे दिन श्री अखण्ड पाठ साहिब का आरम्भ किया गया। बाबा जी ने आज्ञा दी कि भोग वाले दिन संगत को दिल खोलकर कड़ाह प्रसाद का वितरण करो।

आज्ञानुसार ऐसा ही किया, भोग के समय आप भी हजूरी में उपस्थित हुए। भोग की समाप्ति के पश्चात् दिल खोलकर कड़ाह प्रसाद वितरित किया गया। इसके उपरांत आप कुछ संगत सहित गाड़ी द्वारा शिकारपुर पहुँच गए। यहाँ एक सेठ के बंगले में कुछ दिन विश्राम करने से शरीर बिल्कुल ठीक हो गया। संगत के प्रेमवश एक मास यहाँ ठहरकर वापिस ऋषिकेश आ गए।

संत देवा सिंह का वचन न मानना

दूसरे वर्ष सिंधी प्रेमियों की प्रार्थना स्वीकार कर संत देवा सिंह को साथ लेकर हैदराबाद को चल पड़े। मार्ग में दीवान वसनमल के प्रेमवश लाहौर रुके, क्योंकि दीवान साहिब ने तार देकर प्रार्थना की कि सिंध को जाते समय कुछ दिन लाहौर

की संगत को दर्शन देने की कृपा करें। वसनमल के घर प्रात:-सायं पर्याप्त संगत जुड़कर लाभ उठाती थी। संगत ने एक दिन प्रार्थना की, महाराज! हमारे कुछ बच्चों का पाठ सीखने का विचार है, आप कृपा करके किसी संत को यह कार्य सौंप दो। बाबा जी ने संगत का शुभ विचार देखकर संत देवा सिंह को आज्ञा दी कि पर-उपकार हित आप यहाँ ठहरकर संगत को गुरुवाणी पढ़ाओ।

आगे से देवा सिंह ने उत्तर दिया कि मैं तो आपके साथ ही जाऊँगा। देवा सिंह के वचन न मानने पर बाबा जी के पवित्र मुख से सहज ही ये वचन निकल गए—तुम तो पागल हो गए हो। बस—'साध बचन अटलाधा' के महावाक् अनुसार संत देवा सिंह उसी समय पागल हो गया। दीवान वसनमल ने हस्पताल दाखिल कराया। एक दो दिन पश्चात् बाबा जी हस्पताल मिलने गए, तो देवा सिंह चरणों पर गिरकर रोया—प्रार्थना की, भूल क्षमा करो। मुझे अब कितनी देर हस्पताल रखोगे? आपने वचन दिया, कुछ देर ग़लती का फल चखो, वापिस जाते साथ ले जाएँगे। हैदराबाद दो मास व्यतीत करके वापिस लाहौर दीवान वसनमल के घर ठहरे। उधर हस्पताल में दो पागल आपस में लड़ पड़े, एक ने लकड़ी उठाकर देवा सिंह के सिर पर दे मारी। लकड़ी लगने के कारण सिर में ज़ख्म होने से काफ़ी रक्त निकल गया। दैवयोग से रक्त निकलने के कारण सिर हल्का होकर पागलपन ठीक हो गया।

दूसरे दिन बाबा जी हस्पताल मिलने गए तो पहले दिए वचनानुसार देवा सिंह को साथ ले आए।

सेठ वाधूमल धर्मदास

1927 ई० में सिंधी संगत की प्रार्थना स्वीकार करके आप जी ने हैदराबाद पहुँचकर भाई वाधूमल धर्मदास के बंगले में निवास किया। वाधूमल का समस्त परिवार बड़े प्रेम के साथ सेवा करता रहा। एक दिन वाधूमल ने प्रार्थना की, महाराज! घर में सात कन्याएँ हैं। आप कृपा करो एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हो जाए। बाबा जी समस्त परिवार की सेवा से प्रसन्न तो हुए ही थे, वाधूमल की प्रार्थना सुनकर दयालुतावश आदेश किया। आठ दिन गुरु घर जाकर पुत्र-प्राप्ति की अरदास करना, कड़ाह प्रसाद घर से बनाकर ले जाना, कड़ाह प्रसाद बनाते समय श्री जपुजी साहिब का पाठ अवश्य करना, गुरुनानक भली करेंगे। कुछ समय पश्चात् भाई वाधूमल को गुरुनानक के घर से पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई।

मिस्टर मेघराज मूलजानी

भाई वाधूमल के घर प्रतिदिन सत्संग में एक प्रेमी मेघराज मूलजानी भी नियम से आता था। यह प्रेमी प्रतिदिन बाबा जी के वस्त्र धोने की सेवा भी करता था। इसके घर में संतान नहीं थी। एक दिन इसने एकांत जानकर बाबा जी के चरणों में पुत्र-प्राप्ति की इच्छा प्रकट की। बाबा जी ने आदेश दिया, गुरु घर जाकर पुत्र-प्राप्ति के लिए अरदास करना और प्रतिदिन गुरु घर जाकर गुरु साहिब जी को चौर करके नमस्कार करना और जपुजी साहिब का आजीवन नियम के साथ पाठ करना, गुरुनानक अवश्य कृपा करेंगे। आज्ञा मानकर प्रेमी ने ऐसा ही किया। परमेश्वर की कृपा के फलस्वरूप समय पाकर मेघराज मूलजानी के घर पुत्र ने जन्म लिया। इस प्रकार सिंध में कोई तीन मास भोग-मोक्ष के भण्डार वितरित करके और सत्संग द्वारा सत् उपदेश की वर्षा करके जब वापसी की तो संगत की ओर से आपके चरणों में जो असंख्य उपहार अर्पित किए गए थे, उनकी गठरी

बाँधकर गाड़ी में साथ रख दी। टिकट बाबू ने जब जाँच की तो कहने लगा कि इतना सामान आप साथ नहीं ले जा सकते, सामान की अलग टिकट लगेगी।

आप जी ने पूछा साथ कितना सामान ले जा सकते हैं? टिकट बाबू बोला केवल बीस सेर। आपने कहा फिर यह बीस सेर कहाँ है? टिकट बाबू ने कहा, तोल लेते हैं, जितना बीस सेर से अधिक होगा उसकी अलग टिकट काट देंगे।

आप जी ने कहा कि बहुत खुशी के साथ। बाबू ने सामान तोला, तो बीस सेर से कम निकला। बाबू को शंका हुई कि काँटे में कुछ खराबी है। उसने दूसरे काँटे पर रखकर वज़न किया फिर भी बीस सेर से कम ही निकला। बाबू बहुत हैरान हुआ कि सामान बहुत अधिक है, लेकिन जब तोलते हैं तो बीस सेर भी पूरा नहीं उतरता।

यह सोचकर कि महापुरुषों की कोई लीला है, चरणों में गिरकर प्रार्थना की, महाराज! गल्ती हो गई, क्षमा कर दो। बाबा जी बोले, प्रेमी! यह तो तेरा कर्त्तव्य है, गाड़ी में हर एक चीज़ की जाँच करना, इसलिए कोई ग़लती नहीं। हाँ, एक बात आगे के लिए याद रखना कि गुरुनानक का घर अतुलनीय है। संसार के बाटों से इसे तोलना भूल है। यह सामान हमने कोई खरीदा नहीं है, जो हम तुझे इसका वज़न बता देते। यह तो प्रेमियों की ओर से गुरुनानक के दरबार के लिए बड़ी श्रद्धा प्रेम के साथ भेंट की गई वस्तुएँ हैं, इसलिए हमने तुम्हें न तो अठारह सेर कहा और न पच्चीस सेर कहा। हमने यही कहा था कि यह बीस सेर नहीं है, लेकिन तुझे विश्वास नहीं आया। तुमने एक नहीं दो काँटों पर वज़न किया। दोनों पर ही वज़न का अन्तर रहा। तेरे दो काँटों की तो बात अलग है, संसार में आज तक ऐसा तराजू नहीं बना जो श्रद्धा और प्रेम का वज़न कर सके। श्रद्धा और प्रेम का वज़न तो गुरु करतार स्वयं ही जानता है। इस प्रकार गाड़ी में बाबू को उपदेश करते शनैः शनैः हरिद्वार पहुँच गए।

महाराज निक्का सिंह जी का शरण में आना

सिंध से वापिस आकर फिर कई मास आश्रम में ही टिके रहे। दिन में दो बार आश्रम में निवास करते, संतों को ग्रन्थ पढ़ाते रहते और बाहर से भी संगत दर्शनार्थ आती रहती थी। इन दिनों में ही संत बाबा निक्का सिंह जी आपकी शरण में आए जिनका जीवन वृत्तांत विस्तार में आगे दिया जा रहा है।

गुरु घर की सेवा का फल

1928 ई० में संगत की प्रार्थना स्वीकार करके हैदराबाद पधारे। यहाँ ऋषि दयाराम गिद्दूमॅल का 'फलेली' नदी के तट पर संत आश्रम था, उसमें निवास किया। आप जी का आना सुनकर संगत की भीड़ लग जाती थी। सत्संग द्वारा परमार्थ के न समाप्त होने वाले भण्डार तो वितरित होते ही रहते थे अपितु संसार की कामना करने वाले भी मनचाही कामनाएँ प्राप्त कर रहे थे। यहाँ 'गुरुसंगत दरबार' जिसका शिलान्यास आपने ही किया था, जब बनकर तैयार हो गया तो दो सिंधी बहन-भाई बड़े प्रेम के साथ इसकी सेवा करते थे। दोनों आजीवन अविवाहित रहे। दैवयोग से, उस लड़के को बुखार हो गया। संगत ने डॉक्टर को दिखाया, लेकिन कोई अन्तर न आया। बुखार बढ़ता-बढ़ता इतना तेज़ हो गया कि लड़का बेसुध हो गया। संगत ने फिर और डॉक्टर बुलाया, लेकिन डॉक्टर के प्रयत्न के बावजूद उसके होते ही प्राण त्याग दिए। बहन इस सदमे को सहन न कर सकी। ऊँचा-ऊँचा रोकर दीवारों से टक्करें मारने लगी। संगत काफ़ी एकत्रित हो गई, बीच में से किसी ने महाराज जी

को बताया। आप जी बोले, कई बार तेज़ बुखार बढ़कर सिर को चढ़ जाता है और बेहोश कर देता है इसलिए यह ज़रूरी नहीं कि मृत्यु हो गई हो। आप थोड़ा पुरुषार्थ करो। सारी संगत उसके समीप बैठकर श्री सुखमनी साहिब का पाठ ऊँचे स्वर में करना आरम्भ करो।

यह ईश्वरीय वाणी एक ताप तो क्या, तीनों तापों का निवारण कर सकती है और साथ में ठंडे पानी की पट्टी सिर पर बार-बार रखते रहो। जब तक बुखार उतर न जाए पाठ एवं ठंडे पानी की पट्टी बन्द नहीं करनी। सब संगत ने आज्ञा मानकर लड़के के पास जाकर सुखमनी साहिब का पाठ आरम्भ कर दिया। जब बयालीस पाठ सुखमनी साहिब के पूर्ण हुए, लड़के के पाँव में गति आई, 43वाँ पाठ पूर्ण होते ही लड़का उठकर बैठ गया। सब संगत में ख़ुशी की लहर दौड़ गई। कुछ श्रद्धालुओं ने बाबा जी को जाकर सारी बात बताई। आप जी ने आदेश दिया, कड़ाह प्रसाद सजाकर गुरुनानक देव महाराज का धन्यवाद करो।

जेठमॅल चैनानी

हैदराबाद में जेठमॅल मघर मॅल चैनानी नाम का एक सेठ रहता था। जो बाबा जी पर परमेश्वर भावना के साथ अटूट श्रद्धा रखता था। इन दिनों की बात है, उसकी पीठ पर एक बड़ा फोड़ा निकल आया। कुछ दिन तो घर में ही औषधि आदि करते रहे, लेकिन ठीक होने की बजाए फोड़ा और बढ़ता गया। अंततः हैदराबाद नगर का सबसे प्रसिद्ध डॉक्टर श्री नज़रत था, उसके पास ले गए। डॉक्टर ने दाखिल करके उपचार आरम्भ कर दिया, लेकिन कोई अन्तर न आया। अंततः उसने ऑप्रेशन की सलाह दी। परिवार के लोगों ने घबराकर बाबा बुड्ढा सिंह जी के पास आकर सारी बात सुनाई। दयार्द्र होकर बाबा जी ने वचन किया, ऑप्रेशन की कोई आवश्यकता नहीं। जेठमॅल को बोलो, जपुजी साहिब का पाठ लगातार करता रहे। घर वालों के कहने पर जेठमॅल ने 'जपुजी साहिब' का पाठ शुरू कर दिया। अभी तीन ही पाठ हुए थे, फोड़ा अपने आप फूट गया। सब पीक निकल गई और शान्ति आ गई। डॉक्टर को जाकर बताया, डॉक्टर देखकर बड़ा हैरान हुआ, बोला मैं आधा घंटा पूर्व देखकर गया था, उस समय फूटने की कोई आशा ही नहीं थी। परिवार वालों ने बताया कि हमारे बाबा ऋषिकेश से आए हुए हैं, उन्होंने 'जपुजी साहिब' का पाठ करने के लिए कहा था, इसमें थोड़े समय बाद ही फूट गया। डॉक्टर को और भी आश्चर्य हुआ कि पाठ का फोड़े से क्या सम्बन्ध? यदि पाठ करने से बीमारियाँ दूर होने लगें तो डॉक्टर और औषधियों का क्या मूल्य? यह संशय लेकर डॉक्टर बाबा जी के पास गया। जाकर प्रार्थना की कि मैंने कुछ निवेदन करना है, आज्ञा हो तो करूँ। बाबा जी बोले बड़ी ख़ुशी के साथ करो।

डॉक्टर—मेरे पास एक मरीज़ दाखिल है जेठमॅल। उसकी पीठ पर बहुत बड़ा फोड़ा था। डॉक्टरी दृष्टिकोण से उसका ऑप्रेशन के बिना ठीक होना संभव न था। मुझे पता लगा है कि आपने उसको कोई पाठ करने के लिए कहा था। उसके अनुसार उसने अभी थोड़ा समय ही पाठ किया था, तो फोड़ा फूट गया। यदि इस प्रकार पूजा-पाठ से ही रोग ठीक हो जाएँ, तो डॉक्टर बनने के लिए हज़ारों रुपए खर्च करके कई-कई वर्ष गँवाने की क्या आवश्यकता है और दवाइयों पर व्यय करने की भी क्या आवश्यकता है? इस प्रश्न को समझने के लिए मैं आपके पास आया हूँ।

बाबा जी—इस प्रश्न का उत्तर तो प्रत्यक्ष ही है, जेठमॅल का केस।

डॉक्टर—जी हाँ, लेकिन यह समझ में नहीं आता, ऐसा हुआ किस प्रकार?

बाबा जी—डॉक्टर साहिब, शब्द में बड़ी शक्ति है। शब्द बीमार भी कर सकता है और बीमारी हटा भी देता है।

डॉक्टर—कैसे?

बाबा जी—एक पीतल, ताँबा अथवा कोई अन्य धातु का गिलास पड़ा हो, वह स्वाभाविक न गर्म है न ठण्डा। उसमें यदि उबलता हुआ पानी डाल दें तो वह इतना गर्म हो जाएगा कि हाथ नहीं लगा सकते, ऐसा क्यों?

डॉक्टर—क्योंकि गर्म वस्तु के साथ मिलाप हो गया।

बाबा जी—यदि उसमें बर्फ़ का टुकड़ा डाल दिया जाए?

डॉक्टर—फिर सामान्य हो जाएगा।

बाबा जी—बस इसी प्रकार शरीर का स्वभाव न गर्म है, न ठण्डा है। उसमें एक सूक्ष्म वस्तु निवास करती है, जिसको मन कहते हैं। मन जैसी वस्तु के साथ स्पर्श करता है, वैसा बन जाता है, फिर उसका प्रभाव शरीर पर भी पड़ता है। उदाहरणतया कोई दूसरा व्यक्ति गर्म शब्द बोलकर अपमान कर दे, तो मन में क्रोध उत्पन्न हो जाता है। क्रोध के कारण रक्त की गति तीव्र हो जाती है और रक्त की तीव्रता रक्तचाप आदि कई रोगों का कारण बन जाती है। फिर वही व्यक्ति मधुर शब्दों के द्वारा क्षमा माँग ले तो श्रोता का मन शांत होकर रक्त की गति सामान्य हो जाती है, जो कई रोगों के निदान का कारण बन जाती है। दोनों परिस्थितियों में व्यवहार तो शब्दों का ही हुआ, कोई औषधि तो नहीं दी, एक शब्द ने रोगी बना दिया था और दूसरा शब्द रोग-निदान का कारण बन गया।

डॉक्टर—जी हाँ! अच्छी तरह समझ गया।

बाबा जी—दूसरी बात जो आप कहते हैं, फिर डॉक्टर और औषधि की क्या आवश्यकता है? ऐसा नहीं है, औषधि एवं अनुभवी डॉक्टर की भी शरीर को बहुत आवश्यकता है। देखो! शरीर पाँच तत्त्वों का बना है। आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी। ये सभी तत्त्व पारस्परिक विरोधी हैं। उदाहरणत: अग्नि एवं जल का क्या मेल है? अग्नि तत्त्व का प्रभाव यदि बढ़ जाए, तो शरीर में गर्मी बढ़ जाने के कारण कई रोग उत्पन्न हो जाते हैं। फिर बुद्धिमान डॉक्टर ठण्डी औषधियाँ देकर गर्मी को कम कर देता है, रोग स्वयंमेव ठीक हो जाता है, इसलिए डॉक्टर एवं औषधियों की भी शरीर को आवश्यकता है, लेकिन स्मरण रखने वाली बात यह है कि डॉक्टरी केवल शरीर के रोगों को ही दूर करने की क्षमता रखती है, किन्तु गुरुवाणी तन एवं मन दोनों को स्वस्थता प्रदान करती है, क्योंकि यह महाशान्त सागर परमात्मा से अवतरित हुई है। इसलिए इसके साथ एक-एक अक्षर में शान्ति, स्वस्थता और आनंद-सागर छिपा हुआ है बशर्ते रोगी का मन इसके साथ स्पर्श कर सके। ऐसा यथार्थ और विस्तारपूर्वक उपदेश सुनकर डॉक्टर नज़रत बाबा जी के चरणों में गिर गया। फिर जब भी आप हैदराबाद जाते, बड़ी श्रद्धा के साथ दर्शन करने आता।

इस प्रकार अनेक कौतुक दिखाकर और असंख्य लोगों को सत्य के मार्ग पर चलाकर सिंध से वापसी की। हैदराबाद से चलकर फिरोज़पुर स्टेशन पर पहुँचे, क्योंकि डॉक्टर मथुरा दास मोगे वाले ने प्रार्थना की थी कि सिंध से वापस आते हुए अवश्य दर्शन दो। इसलिए उसके प्रेमवश यहाँ पहुँचे। आगे डॉक्टर मथुरा दास आए हुए थे, जो आप जी को साथ लेकर कार द्वारा मोगा पहुँचे। डॉक्टर के बड़े पुत्र का देहावसान हो गया था। उसके निमित्त बाबा जी से सहज पाठ रखवाया, जो बाबा जी के साथ गए संतों ने ही किया। एक दिन डॉक्टर बाबा जी को स्नान करवा रहा था। उसने देखा कि महापुरुषों की पीठ पर फोड़ा निकला हुआ है। देखकर हैरान हो गया कि इतना बड़ा फोड़ा, लेकिन आप जी ने बताया तक नहीं। बाबा जी मुस्कराकर चुप हो गए। डॉक्टर ने औषधि बूटी की, लेकिन कोई अन्तर न पड़ा। अंतत: प्रार्थना की, महाराज! इसका ऑप्रेशन

करना पड़ेगा। आप आदेश दो, तो तैयारी करें? बाबा जी बोले, जैसा आपको उपयुक्त लगता है। आज्ञा लेकर ऑप्रेशन की तैयारी की। बेहोश करने के लिए क्लोरोफार्म सुंघाने के पश्चात् ऑप्रेशन किया। जब पट्टी करने लगे तो बाबा जी बोले मेरे विचार में ऑप्रेशन अभी ठीक नहीं हुआ, दोबारा करना पड़ेगा। सुनकर डॉक्टर हैरान हुआ कि क्लोरोफार्म ने कोई प्रभाव नहीं डाला और आपने कोई तकलीफ़ भी नहीं मानी। ऑप्रेशन ठीक न होने के कारण दोबारा करना पड़ा। इस प्रकार मोगे कुछ दिन ठहरकर शरीर ठीक होने के बाद ऋषिकेश वापिस आ गए।

मास्टर प्रताप राय टीकम दास वाधवानी

संगत की प्रार्थना स्वीकार करके 1929 ई० में फिर हैदराबाद पधारे। प्रत्येक वर्ष की भाँति संगत सेवा सत्संग का लाभ उठा रही थी। एक प्रेमी मास्टर प्रताप राय टीकम दास वाधवानी दो-तीन वर्ष से, जब आप हैदराबाद जाते, बड़े प्रेम के साथ सत्संग श्रवण करता और समयानुसार सेवा का लाभ उठाता। इस प्रेमी की आयु उन्चास वर्ष हो चुकी थी, लेकिन अभी तक संतान नहीं हुई थी। इसने एक-दो बार बाबा जी के चरणों में पुत्र-प्राप्ति के लिए प्रार्थना की थी। लेकिन बाबा जी आगे से गुरुवाणी की यह पंक्ति उच्चारण कर देते—**जो मागहि ठाकुर अपुने ते सोई सोई देवै॥**

इस बार इसने नवल राय के पास अपना शिकवा प्रकट किया कि महाराज की कृपा से कितने घरों में पुत्र रत्न प्राप्त हुए हैं और कितने लोगों को शारीरिक रोगों से मुक्ति मिली है, कितनों के मुकद्दमे सफल हुए हैं, लेकिन मेरे ऊपर महाराज कृपा क्यों नहीं करते? नवल राय ने पूछा तुम्हारा कौन सा कार्य है जो सफल नहीं हुआ? महाराज तो इतने दयालु हैं कि कोई निराश वापिस नहीं जाता। टीकम दास बोला कि मेरे घर कोई संतान नहीं है। नवल राय ने पूछा कि क्या कोई उपाय भी किया है, पुत्र प्राप्ति के लिए? टीकम दास बोला, प्रयत्न किए, बड़े स्थानों पर गए, लेकिन कहीं से भी सफलता नहीं मिली। नवलराय ने कहा, जगह-जगह की औषधि लेने से रोग समाप्त होने की बजाए अधिक बढ़ जाया करता है।

श्रद्धा विश्वास के साथ एक डॉक्टर से ली औषधि स्वस्थ कर देती है। उदाहरणत: द्रौपदी जितनी देर अपनी बुद्धि और बाहुबल अथवा पतियों का आश्रय ढूँढती रही उतनी देर तक सफलता न मिली, लेकिन जब सारे सहारे छोड़कर एक भगवान् का आश्रय लिया तो कृपा होने में देर नहीं लगी, शील की रक्षा हुई। जब घर पहुँची तो भगवान् के चरणों पर नमस्कार करके प्रार्थना की, महाराज! आपने बड़ी कृपा की, इज़्ज़त बचाई, लेकिन इतनी देर क्यों की? भगवान् मुस्कराकर बोले, द्रौपदी! देर मेरी ओर से हुई या तेरी ओर से? जितनी देर तू अन्य आश्रय ढूँढती रही, तब मैं किस प्रकार आता? जब तुमने समस्त आश्रयों को त्यागकर, सच्चे मन से मेरे परायण हुई, फिर बता कोई देर लगी? यह परमेश्वर की उपाधि है—

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा॥

(बिहागड़ा महला ५, पृष्ठ ५४४)

नवल राय के मुख से ऐसा सुनकर मास्टर प्रताप राय टीकम दास ने श्रद्धा और विश्वास के साथ बाबा जी के चरणों में प्रार्थना की महाराज! आप चरण डालकर मेरा घर पवित्र करो, मेरी श्रद्धा है कल दोपहर का लंगर मेरे घर ही लो। मास्टर की अटूट श्रद्धा देखकर बाबा जी ने वचन दे दिया ठीक है कल चलेंगे। मास्टर दूसरे दिन महाराज जी को अपने घर ले गया, बहुत प्रेम के साथ लंगर करवाकर फिर पुत्र-प्राप्ति के लिए प्रार्थना की। प्रार्थना सुनकर बाबा जी ने नेत्र बंद कर लिए। कुछ क्षणों के बाद पवित्र मुख से सहज स्वाभाविक वचन कर दिया भाई! गुरुनानक कृपा करके तुझे पुत्र वरदान देंगे। कल आप दोनों कड़ाह प्रसाद की देग सजाकर गुरु घर जाकर अरदास करा देना।

परमेश्वर की कृपा हुई, एक वर्ष पश्चात् मास्टर प्रताप राय टीकम दास के घर पुत्र का जन्म हुआ। सब परिवार और संगत में खुशियाँ मनाई गईं, लेकिन मास्टर के मन में तो इतनी श्रद्धा और विश्वास पैदा हो गया कि प्रतिदिन दर्शनार्थ जाता, यथाशक्ति तन-मन के साथ सेवा करता और व्यवहार के सारे कार्य, बाबा जी को पूछकर करता और नियम के साथ प्रतिदिन गुरु घर जाकर झाड़ू (सफाई) आदि की सेवा करता। सन् 1931 ई० में इसकी नौकरी छूट गई और आय का कोई अन्य साधन भी न रहा। फिर बाबा जी के चरणों में प्रार्थना की, महाराज! मेरा सेवाकाल अभी तीन वर्ष शेष है और अब वेतन में भी और वृद्धि होनी थी, उसी अनुपात से पेंशन में भी पर्याप्त लाभ होना ही था, कृपा करो ताकि शेष समय में भी नौकरी मिल जाए। मास्टर को चिंतातुर देखकर बाबा जी बोले, चिंता न करो, तुझे धन एवं मान दोनों मिलेंगे। ऐसा ही हुआ, पुनः फिर नौकरी मिल गई, नौकरी ही नहीं अपितु और वृद्धि भी हुई, पूर्ण आदर के साथ सेवा-निवृत्त हुआ।

सरदार सेवा सिंह और मिस्टर दसूजा

हैदराबाद कैनाल आफ़िस में सरदार सेवा सिंह हैड क्लर्क थे और मिस्टर दसूजा कार्यकारी अभियंता थे। एक दिन मिस्टर दसूजा ने यात्रा पर जाना था, इसलिए सेवा सिंह को आज्ञा दी, मेरे साथ यात्रा पर जाने के लिए तैयारी कर लो। सेवा सिंह ने प्रार्थना की, कृपा करके मुझे अवकाश दे दो, क्योंकि हैदराबाद में ऋषिकेश से मेरे गुरु आए हुए हैं। मैं प्रतिदिन उनकी सेवा में उपस्थित होता हूँ। मिस्टर दसूजा ने यह बात न मानी। सेवा सिंह को आदेश दिया, कल अवश्य जाना है, इसलिए घर से तैयारी करके आना। सेवा सिंह ने सायं को सत्संग की समाप्ति पर बाबा जी को सारी बात बताकर प्रार्थना की, महाराज! मन तो प्रतिदिन आकर सेवा करने का इच्छुक है, लेकिन अफ़सर विवश कर रहा है बाहर जाने के लिए जैसी आपकी आज्ञा हो वैसा करूँ। बाबा जी बोले चिंता न कर, जाकर आराम से सो जा, गुरुनानक देव महाराज भली करेंगे।

दूसरे दिन सरदार सेवा सिंह, जब दफ़्तर पहुँचा तो मिस्टर दसूजा ने अपने पास बुलाकर कहा, सेवा सिंह! आप यहीं रहो, मैं किसी अन्य को साथ ले जाऊँगा। सेवा सिंह को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कल तो यह बड़ा कठोर था, आज इसको क्या हुआ? आश्चर्यचकित होकर कारण पूछा? साहिब कहने लगा, आपके गुरु ने मुझे आदेश दिया है कि जितने दिन हम हैदराबाद में हैं, सेवा सिंह को बाहर न लेकर जाना। साहिब की बात सुनकर, सेवा सिंह का विश्वास और भी दृढ़ हो गया। दोबारा पूछा, मेरे गुरु से आपकी कब भेंट हुई? मिस्टर दसूजा ने बताया, प्रातः चार बजे मेरे स्वप्न में आए थे। मेरे मन में श्रद्धा है कि मेरे बंगले में अवश्य आएँ, सेवा करके मैं भी अपने को सौभाग्यशाली मानूँ। सेवा सिंह ने सायं को सारी बात बाबा जी को बताई और प्रार्थना की, महाराज कृपा करके साहिब के बंगले पर चरण डालो। आप सुनकर बोले, अच्छा जैसे गुरुनानक चाहेंगे। उसी दिन सायं प्रतिदिन की भांति बाहर घूमने जाते हुए सेवा सिंह को भी कार में साथ बिठा लिया* और मिस्टर दसूजा के बंगले पर कार जाकर खड़ी की। सेवा सिंह के बताने पर, साहिब भीतर से दौड़ता हुआ आया। बड़ी श्रद्धा के साथ नमस्कार कर एक बहुत सुन्दर हार गले में डालकर भीतर ले गया। इस प्रकार पूर्ण सत्कार के साथ ड्राईंग रूप में बहुत सुन्दर सोफे पर बिठाकर जलपान कराया। कुछ बातचीत करके जब बाबा जी जाने के लिए तैयार हुए तो फलों का एक पूरा टोकरा भेंट किया जिसे कार में स्वयं ही उठाकर रखा।

---

* *यह घटना 'निर्मल पंथ प्रकाश' नाम सिंधी पुस्तक में दर्ज है, लेकिन महंत दयाल सिंह जी लाहौर वालों ने अपनी पुस्तक 'निर्मल पंथ दर्शन' के दूसरे भाग में 120 पृष्ठ पर लिखा है कि दीवान सेवा सिंह आजकल मौजूद हैं और यह स्वयं बीती घटना बड़े प्रेम के साथ वर्णन करते हैं।*

इस प्रकार काफ़ी दिन हैदराबाद की संगत को सत्य उपदेश द्वारा जीवन-कण प्रदान कर और हर प्रकार से शुभ कामनाओं को पूर्ण कर कराची गए। यहाँ कुछ दिन विश्राम कर शिकारपुर होते हुए श्री अमृतसर आ पहुँचे। यहाँ सिंधी धर्मशाला में विश्राम किया। इस धर्मशाला का प्रबन्धक श्री प्रीतम दास बेलानी सिंधी प्रेमी था, जो आपका अनन्य सेवक था। आप जी जब भी सिंध जाते तो यह प्रेमी आप जी को प्रार्थना करके दो-तीन दिन अवश्य अमृतसर ठहराता और सेवा करके अति प्रसन्न होता। इस प्रेमी के घर में एक पुत्र का जन्म हुआ। उसने अपने श्रद्धा विश्वास द्वारा बाबा जी की कृपा जानकर पुत्र का नाम भी गुरुबख्श रखा। बाबा जी की कृपा से यह प्रेमी गुरुवाणी के पाठ का नित्य नेमी था।

श्री नवल राय

1929 की गर्मियों में श्री टहल राम वस्त्र-व्यापारी की प्रार्थना स्वीकार करके बाबा जी मसूरी पहुँचे। उस समय श्री नवल राय हैदराबाद में बहुत बीमार हो गया था जो कि बाबा जी का अनन्य सेवक था। काफ़ी उपचार भी किया, लेकिन रोग बढ़ता ही गया। फिर कराची के प्रसिद्ध डॉक्टर नज़रत के पास ले गए। उसने भी कुछ दिन उपचार किया, लेकिन कुछ अन्तर न आया। फिर किसी ने बताया कि कराची में देसी हकीम है, उसके पास गए, लेकिन कहीं से सफलता न मिली। अंततः निराश होकर नवल राय ने वापिस हैदराबाद आकर अपनी समस्त सम्पत्ति की वसीयत परिवार के नाम कर दी और मसूरी तार देकर बाबा जी को सब कुछ बताया। बाबा जी ने अपने पवित्र कर कमलों से एक पत्र लिखकर कहा कि कोई चिंता न करो, जो भी उपचार कर रहे हो जारी रखो। कड़ाह प्रसाद बनाकर गुरु महाराज के हजूर अरदास करो। परमेश्वर ने अभी आपसे बहुत सेवा लेनी है। पत्र मिलते ही नवल राय ने एक अखण्ड पाठ हैदराबाद रखवाया और एक पाठ ऋषिकेश रखवाया और आज्ञानुसार कड़ाह प्रसाद की देग बनाकर अरदास करवाई।

जिस दिन अखण्ड पाठ साहिब का भोग पड़ना था, छड़ी का आश्रय लेकर गुरुद्वारा साहिब पहुँचा। आज्ञानुसार देसी हकीम किशनचंद का उपचार जारी रखा। थोड़े दिनों में काफी ठीक हो गया, फिर 'झरकाने' चला गया, क्योंकि वहाँ मौसम अच्छा माना जाता था। इस प्रकार वहाँ दो मास ठहरकर बिल्कुल ठीक हो गया। फिर बाबा जी के दर्शनार्थ मसूरी आया, साथ में वह लिखित भी साथ लेकर आया, जो काफी समय से लिख रहा था।

बाबा जी से शुद्ध करवाने के पश्चात् हैदराबाद पहुँचकर वह पुस्तक सिंधी भाषा में प्रकाशित करवाई। उसका नाम रखा **'गुरुनानक देव अनुभव प्रकाश'**। इस प्रकार बाबा जी कई मास मसूरी व्यतीत करके ऋषिकेश पहुँचते ही इलाहाबाद के कुंभ उत्सव के लिए रवाना हो गए। उधर लखनऊ में उनका सेवक टहलराम सख्त बीमार था, उसके पास पहुँचे। वचन किया, श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी के घर का उपचार करो। इस शब्द का जाप करो—

घोर दुखं अनिक हतं जनम दारिद्रं महा बिखादं॥
मिटंत सगल सिमरंत हरि नाम नानक जैसे पावक कासट भसमं करोति॥

(सलोक सहसक्रिती, पृष्ठ १३५५)

टहल राम आज्ञानुसार इस शब्द का जाप करके कुछ दिनों में बिल्कुल ठीक हो गया। आप फिर वहाँ से चलकर इलाहाबाद पहुँचे। कुछ दिन वहाँ ठहरकर कुंभ का उत्सव समाप्त होने पर, वापस ऋषिकेश आ गए।

भाई टोपन दास

सन् 1930 ई० की गर्मियों में भाई टोपन दास, सतराम दास प्रार्थना करके शिमले लेकर गया। जीवन के नियमानुसार कथा सत्संग आरम्भ होने पर काफ़ी संगत का आना-जाना आरम्भ हो गया। एक दिन की बात-भाई टोपन दास का भतीजा जिसके सिर में एक ओर दर्द होता रहता था, परिवार वाले आपके पास लेकर आए, पवित्र चरणों में नमस्कार करके प्रार्थना की, महाराज! कृपा करो यह लड़का आपकी सेवा के योग्य हो जाए, युवक है, बहुत कष्ट उठा रहा है। बाबा जी बहुत गम्भीरता के साथ बोले, क्या किसी डॉक्टर की राय नहीं ली? सतराम दास बोला—महाराज उपचार तो बहुत किए, लेकिन कोई अन्तर नहीं आया। डॉक्टर कहते हैं इसको इंग्लैंड लेकर जाओ, वहाँ ऑप्रेशन के साथ ठीक हो जाएगा, यहाँ इसका कोई इलाज नहीं है। यदि इंग्लैंड जाए तो कम से कम पचास हज़ार रुपये का खर्चा है। सुनकर बाबा जी ने कहा—फिर गुरुनानक के घर की औषधि प्रयोग करके देखो। साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की वाणी का मर्यादा से संपुट पाठ करवाओ, लेकिन शर्त यह है कि पाठी श्रेष्ठ आचरण वाले होने चाहिए। गुरुनानक कृपा करेंगे। आज्ञा मानकर परिवार वालों ने ऐसा ही किया, लड़का काफ़ी ठीक हो गया। अब दोबारा डॉक्टरों से जाँच करवाई और डॉक्टरों ने कहा है—बाहर जाने की अब आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जो थोड़ा बहुत रोग है वह औषधियों से यहीं ठीक हो जाएगा।

संत आत्मा सिंह जी को महंत बनाना

महंत बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी ने अपनी मौज में आकर 3 फरवरी 1931 ई० को आप जी के बड़े शिष्य संत आत्मा सिंह जी को हर प्रकार के योग्य समझकर श्री निर्मल आश्रम ऋषिकेश, निर्मल बाग़ कनखल (हरिद्वार) और करुण घंटा संगत ज्ञान गुफ़ा काशी आदि सब स्थानों का अपना उत्तराधिकारी बना दिया। इस समय काफ़ी महान्, संत, सिंधी एवं पंजाबी सिक्ख सेवक थे। गुरु घर की पुरातन मर्यादा अनुसार संत आत्मा सिंह जी को महंती की दस्तार दी गई, उपरान्त खुशी में खुला भण्डारा किया गया।

इससे लगभग साढ़े तीन वर्ष पश्चात् अर्थात् 25 सितम्बर, 1934 ई० को महंत आत्मा सिंह जी की महंती के साथ ही एक न्यास की स्थापना की गई। जिसमें महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी ने अपने पाँच योग्य शिष्यों को स्थापित किया—

1. संत बाबा निक्का सिंह जी विरक्त
2. संत मान सिंह जी
3. संत बलवंत सिंह जी
4. संत करतार सिंह जी
5. संत ईश्वर सिंह जी

आदि गुरु भाइयों की समिति बना दी गई, लेकिन महंती पद पर महंत आत्मा सिंह जी को ही स्थापित किया।

मसूरी वाला आश्रम और राधा बाई

सन् 1932 ई० में आप संगत की प्रार्थना स्वीकार करके हैदराबाद पहुँचे हुए थे। एक सिंधी प्रेमी मुखी बग्गोमॅल और उनकी धर्मपत्नी राधाबाई आप जी के बहुत श्रद्धावान् सेवक थे। उन दिनों में राधाबाई के वक्ष:स्थल में एक फोड़ा

निकल आया। उसको खतरनाक समझकर डॉक्टर ऑप्रेशन करने से भी डरते थे। बग्गोमॅल ने उदास होकर बाबा जी के चरणों में प्रार्थना की। आप जी ने आज्ञा की, जो उपचार कर रहे हो, वही जारी रखो। साथ-साथ गुरु गोबिंद सिंह जी की प्रदत्त मलहम भी लगाओ अर्थात् चौपाई साहिब का पाठ करते रहो, गुरु साहिब कृपा करेंगे। आज्ञानुसार ऐसा ही किया गया, थोड़े दिनों में वह पूर्ण तौर पर ठीक हो गई। राधा बाई के ठीक होने की खुशी में परिवार की ओर से बाबा जी को मसूरी वाली कोठी भेंट की गई।

1934 से 1935 की सिंध यात्रा

सन् 1934 में संगत की प्रार्थना स्वीकार करके कराची पधारे। यहाँ श्री नारायण दास लाल चंद पंजाबी के बंगले में निवास किया, जोकि बंदर रोड़ एक्सटेंशन में था। कुछ दिन सत् उपदेश करने के उपरांत वापिस ऋषिकेश आ गए।

फिर 1935 ई० में मार्च मास में शिकारपुरी के कुछ श्रद्धालुओं की प्रार्थना स्वीकार करके शिकारपुर गए। वहाँ भी थोड़े दिन सत्संग द्वारा अमृतवर्षा करके वापिस ऋषिकेश आ गए।

हेमनदास मूलचंद शिवलानी

नवम्बर 1935 ई० में दीवान ताराचंद आदि प्रेमियों की प्रार्थना स्वीकार करके कराची पधारे। यहाँ पहुँचकर श्री पेसू मॅल के बंगले में निवास किया जो कि बंदर रोड एक्सटेंशन में स्थित था। प्रात:-सायं सत्संग का लाभ उठाने के लिए पर्याप्त संख्या में संगत एकत्रित होती थी। आप प्रतिदिन गुरुबाणी के किसी शब्द की व्याख्या करते और मोहिनी जोतू सिंह मनसुखानी प्रतिदिन कीर्तन करती।*

इस प्रकार प्रतिदिन जहाँ पारमार्थिक विचारों की वर्षा हो रही थी, वहाँ सांसारिक पदार्थों की भी वर्षा हो रही थी। इस प्रकार कुछ समय कराची में सत्संग, सत् उपदेश द्वारा ईश्वरीय कार्य करके हैदराबादी संगत की प्रार्थना स्वीकार करते हुए, दिसम्बर मास में कराची से हैदराबाद सिंध आ गए। यहाँ एक प्रेमी मिस्टर हेमनदास मूलचंद शिवलानी जोकि कार्यकारी अभियंता के दफ़्तर में नक्शानवीस था, बड़े प्रेम के साथ सेवा करता रहता। बाबा जी जब भी हैदराबाद जाते यह प्रेमी प्रात:-सायं कुएँ से जल लाने की सेवा करता और कभी-कभी वस्त्र धोने की सेवा भी मिल जाती। एक दिन एकांत देखकर इसने अपने मन की इच्छा प्रकट की, महाराज! मेरा विवाह हुए पच्चीस वर्ष हो गए हैं, अभी तक कोई संतान नहीं हुई, आप कृपा करो कि एक पुत्र प्राप्त हो जाए। आपने पूछा कोई पाठ-पूजा भी करता है? हाँ महाराज, आपने 'जपुजी साहिब' का पाठ करने के लिए कहा था। मैं उसी समय से प्रतिदिन करता हूँ। वचन किया कि पाँच वाणियों का पाठ किया कर और कड़ाह प्रसाद लेकर दरबार साहिब अरदास करवाना, गुरुनानक कृपा करेंगे। हेमनदास मूलचन्द ने ऐसा ही किया, कुछ समय बाद पुत्र ने जन्म लिया।

श्री चूहड़ मॅल सिपाहीमिलानी

इन दिनों की बात है कि एक प्रेमी श्री चूहड़ मॅल सिपाहीमिलानी हैदराबाद में प्रसिद्ध वकील था। उसका एक लड़का जिसका नाम मोती था पानी में डूबकर मर गया। उसकी असामयिक और दु:खदायी मृत्यु पर समस्त परिवार में बहुत शोक

* *यह दीवान रामचंद ऊधा राम की पौत्री और चेतीबाई ताराचंद की बेटी है। आजकल वृद्धावस्था में श्री निर्मल आश्रम में कई-कई मास रहकर कीर्तन करती रहती है। इसका परिवार वार्डन रोड, बम्बई में निवास करता है।*

छा गया। शोक का एक कारण यह भी था कि उसका शव भी नहीं मिला था। मोती के वियोग में सारा परिवार दिन-रात रोता रहता। एक दिन किसी प्रेमी के कहने पर, श्री चूहड़ मॅल और उसकी धर्मपत्नी यशोदीबाई ने बाबा जी के पास सारी व्यथा सुनाई। प्रार्थना की, महाराज! आप जी पूर्ण पुरुष हो, कृपा करो, मोती वापिस आ जाए। परिवार की दु:खदायी हालत देखकर आप जी ने वचन किया भाई! परमेश्वर का आदेश मानने में ही सुख निहित है। आदेश से इधर-उधर होकर आँचल में दु:ख ही पड़ना है। यदि पुन: आ भी जाए, बजाए सुख के दु:ख ही देगा, इसलिए उसे भूल जाने में ही सुख है। प्रत्येक जीव को श्वास गिनकर मिलते हैं, पूर्ण हो जाने पर सबको जाना पड़ता है। श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी फ़रमान करते हैं—

नह बारिक नह जोबनै नह बिरधी कछु बंधु॥
ओह बेरा नह बूझीऐ जउ आइ परै जमु फंधु॥

(गः बावन अखरी, पृष्ठ २५४)

समय आ जाने पर काल के सम्मुख न बालक ठहर सकता है, न बुड्ढ़ा, सबको जाना पड़ता है। इसलिए बुद्धिमान पुरुष वही माना जाता है जो श्वासों के होते हुए मनुष्य जन्म की बाज़ी जीत ले अर्थात् मोक्ष रूपी उच्च पदवी प्राप्त कर ले। इसलिए मोती को दिल से विस्मृत कर अपने जीवन की सफलता की ओर ध्यान दो। ऐसा उपदेश सुनकर यशोदीबाई एवं चूहड़ मॅल कुछ शान्त हुए। प्रार्थना की, महाराज! कोई ऐसी युक्ति बताओ, जिसके साथ मोती की स्मृति न आए और जीवन सफल हो जाए। बाबा जी ने दया करके यशोदीबाई को आज्ञा दी प्रतिदिन नियम के साथ सुखमनी साहिब का पाठ करते रहो और चूहड़मॅल को कहा कि यदि शान्ति चाहते हो तो सिंधी भाषा में गुरु ग्रंथ साहिब लिखो। आज्ञा मानकर यशोदीबाई ने नित्य नियम के साथ श्री सुखमनी साहिब का पाठ आरम्भ किया और चूहड़ मॅल ने सिंधी भाषा में श्री गुरु ग्रंथ साहिब लिखना आरम्भ किया। प्रत्येक श्लोक महला लाल सियाही के साथ और शेष गुरबाणी काली सियाही के साथ लिखता। प्रतिदिन जो लिखा जाता वह संत देवा सिंह से शुद्ध करवाता, क्योंकि संत देवा सिंह जी उस समय निर्मल आश्रम हैदराबाद में रहते थे। लिखने में चूहड़ मॅल का मन इतना रम गया कि संसार विस्मृत हो गया। इस प्रकार तीन स्वरूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सिंधी भाषा में लिखकर सम्पूर्ण किए। इनमें से एक निर्मल आश्रम हैदराबाद में भेंट किया। दूसरा गुरु संगत हैदराबाद और तीसरा अपने घर में प्रकाश किया। इस प्रकार महापुरुषों का वचन मानकर **'हरि जसु लिखहि बेअंतु सोहहि से हथा'** के महावाक् अनुसार अपना जन्म सफल किया।*

इस प्रकार सिंध में तपते मनों को शान्त कर दिसम्बर के मास में वापिस लाहौर आ गए। दो दिन यहाँ ठहरकर सीधे अपने आश्रम बनारस पहुँचे। कुछ दिन बनारस ठहरकर यहाँ के साधु समाज को अच्छा खासा भण्डारा करके

* *श्री चूहड़मॅल सिपाहीमिलानी के दो पुत्र और चार पुत्रियाँ थीं जिनमें से एक पुत्र मोती तो पानी में डूबकर गुज़र गया। दूसरे का नाम गोबिन्द, तीसरी बेटी लक्ष्मी, चौथी सुन्दरी, पाँचवीं देवकी और छठी मोहिनी। पाकिस्तान बनने समय यह परिवार वह हस्तलिखित एक स्वरूप (प्रति) तो स्वयं बम्बई ले आए और दूसरा गुरुसंगत मंदिर वाले भी बम्बई ले आए। उनसे यशोदीबाई ने वापिस ले लिया। उसने एक स्वरूप (प्रति) बेटी देवकी को दिया जो बड़े प्यार के साथ पाठ करती हुई आजकल बम्बई अपना जीवन व्यतीत कर रही है, दूसरा स्वरूप (प्रति) सबसे छोटी पुत्री मोहिनी को दिया। वह प्रतिदिन प्रकाश कर बड़े प्रेम के साथ पाठ करती है। आजकल बम्बई माहिम में निवास करती है। यह समस्त ब्यौरा मोहिनी के द्वारा प्राप्त हुआ।*

वापिस ऋषिकेश आ गए। 1936 में इलाहाबाद अर्धकुंभी उत्सव पर गए। मेला समाप्त होने पर इलाहाबाद से कलकत्ता फिर नासिक होते हुए वापिस ऋषिकेश आ गए।

1936 की सिंध यात्रा

संगत की प्रार्थना स्वीकार करके सन् 1936 ई० के नवम्बर मास में कराची में सेठ कीमत राय आसूमॅल के बंगले में जाकर निवास किया जोकि कुलटेन रोड ऊपर पुराने गुरुद्वारे के पीछे स्थित था। इस यात्रा के दौरान आप जी के साथ संत कृपाल हरि, योगीराज और कुछ अन्य महात्मा भी आए थे। इन दिनों में आप प्रतिदिन प्रात: के समय संत योगीराज जी से वेदांत का ग्रन्थ 'चन्द्रकांत' सुनते और सायं को संत बलवंत सिंह जी से 'कलगीधर चमत्कार' सुनते जो भाई वीर सिंह जी द्वारा लिखित है। सायं को 'कलगीधर चमत्कार' सुनने के लिए बहुत संगत एकत्रित होती थी। इस प्रकार कराची में कुछ दिन व्यतीत करने के पश्चात् हैदराबाद, शिकारपुर होते हुए वापिस ऋषिकेश आ गए।

हैदराबाद—आश्रम का शिलान्यास

जनवरी 1937 ई० में भाई जीवित राम हिरदेरामानी कोलम्बो वाले ने तार के द्वारा प्रार्थना की, महाराज! मार्च में मेरे पुत्र का विवाह है जोकि हैदराबाद में ही करना है, इसलिए आप कृपा करके मार्च के आरम्भ में ही हैदराबाद दर्शन दें। प्रेमी की प्रार्थना स्वीकार करते हुए आप मार्च 1937 ई० में हैदराबाद जाकर श्री सुखराम दास 'गुरबे मॅल' के बंगले में जाकर निवास किया, जोकि मार्किट के अत्यंत निकट था। प्रात:- सायं हरि कथा, हरि कीर्तन के द्वारा अमृत वर्षा होती, लेकिन दर्शन एवं सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति हेतु संगत सारा दिन आती रहती। इतने को भाई जीवित राम के पुत्र के विवाह का दिन आ गया। दोनों धनी परिवार के थे, इसलिए बड़े धूमधाम से विवाह हुआ। आप जी ने लड़की एवं लड़के को शुभ आशीर्वाद देते हुए गृहस्थ आश्रम के धर्म पालन की शिक्षा देते आदेश दिया कि संसार के समस्त कार्य यदि परमेश्वर को व्यापक, सम्मुख जानकर किए जाएँ तो गृहस्थ में रहते ही मनुष्य जन्म को सफल किया जा सकता है। विवाह से पूर्व जीवित राम ने मन में संकल्प किया था कि दहेज में जो धन मिलेगा, मैंने अपने घर नहीं लाना, बाबा बुड्ढा सिंह जी के चरणों में भेंट कर दूँगा। उसने अपने संकल्प के अनुसार जो धन दहेज में मिला आप जी के चरणों में भेंट कर दिया। बाबा जी ने आज्ञा दी की कि धन उठा लो, यहाँ हैदराबाद में गुरु दरबार बनाने के लिए ज़मीन खरीदकर उस पर लगा दो। प्रेमियों ने दो चार दिनों में ज़मीन देखकर खरीद ली। संगत ने एकत्रित होकर बाबा जी को प्रार्थना की कि अपने पवित्र कर कमलों द्वारा इस पावन दरबार की नींव रखो। अरदास के पश्चात् आप जी ने अपने पवित्र कर कमलों द्वारा नींव रखकर आज्ञा दी कि इस गुरु मंदिर को तैयार होने पर इसका नाम 'निर्मल आश्रम' रखना। इस प्रकार कुछ दिन हैदराबाद ठहरने के पश्चात् वैशाखी से पूर्व ऋषिकेश आ गए।

सच्च-खण्ड की तैयारी

सिंधी प्रेमी भाई दौलत राम जेठी माई की प्रार्थना स्वीकार करके 20 मई, 1937 ई० को मसूरी पहुँचे। इस समय आपजी का शरीर कुछ रोगी रहने लग गया इसलिए भाई दौलत राम डॉक्टर को प्रतिदिन घर बुलाकर जाँच करवाता। डॉक्टर बदल-बदलकर दवाई देता लेकिन कोई फ़र्क न पड़ा। एक दिन भाई दौलत राम ने डॉक्टर को पूछा, आखिर

रोग क्या है? जो ठीक नहीं हो रहा? डॉक्टर कहने लगे, रोग तो कोई भी नहीं, बस कमज़ोरी है। मैं औषधि भी ताकत की ही दे रहा हूँ। इस प्रकार कुछ समय मसूरी ठहरे, लेकिन कोई फ़र्क न पड़ा। फिर बोस बाबू आदि अन्य डॉक्टरों ने भी उपचार किया, लेकिन कोई लाभ न हुआ। देसी हकीम वैद्य राम स्वरूप ने भी देसी औषधियों के द्वारा प्रयत्न किया, लेकिन असफल।

स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिर रहा था। इन दिनों आपने अपनी वृत्ति इतनी अन्तर्मुख कर ली कि किसी के साथ जल्दी वचन न करते। कभी उठकर धीरे-धीरे चलने फिरने लग जाते, कभी अपनी मौज में वाणी की पंक्ति बोल देते, लेकिन अन्य किसी के बुलाने से चुप रहते अर्थात् ज्ञान की छठी भूमिका में आरूढ़ हो गए, जिसको अद्वैत दृष्टि कहा जाता है अर्थात् जितना भी सूक्ष्म स्थूल पदार्थ है उसमें एक परमात्मा ही दृष्टिगोचर हो।

एक दिन अपनी मौज में गंगा की ओर निकले, सिंधी सेवक किशन चन्द केशी भी साथ-साथ जा रहा था। आगे एक गधा खड़ा देखकर किशन चन्द को बोले देख परमेश्वर ने कैसा रूप धारण किया है, इसी प्रकार बंदर, कुत्ता जिस पर भी दृष्टि पड़ी—

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २८७)

इस प्रकार अपनी मौज में वचन करते जब वापिस बाग में आए तो कटा हुआ सूखा वृक्ष पड़ा था, उसको लाठी मारकर कहने लगे इसका भी हमारे साथ कुछ पिछला सम्बन्ध था।*

इस प्रकार इन दिनों में अपनी मौज के अनुसार वचन करते, लेकिन किसी के बुलाने पर बोलते नहीं थे। सेवकों ने लंगर की थाली लाकर प्रार्थना की, महाराज लंगर कर (छक) लो, आप कहते और लाओ। सेवादार और लाता, फिर बोल देते कि और लेकर आओ, लेकिन खाते कुछ भी नहीं। एक दिन इसी प्रकार बार-बार मंगा रहे थे, अंततः सेवादार कहने लगा महाराज! और तो गूँथा हुआ आटा भी नहीं है। आप बोले, इतना थोड़ा क्यों गूँथा? गुरुनानक का लंगर हो और गूँथा आटा समाप्त हो जाए? लेकिन आपने खाया एक कौर भी नहीं। बाग में फल खाने के लिए बंदर आ जाते, तो सेवादार उनको दौड़ा देते। बाबा जी कहते, ओ हरि स्वयं फल खाने के लिए आया था, लेकिन तुमने नहीं पहचाना। बाबा जी की ऐसी मौज देखकर सेवादारों को कुछ शंका उत्पन्न हो गई कि आप मानसिक तौर पर ठीक नहीं, किसी डॉक्टर को दिखाएँ।

सारे सेवादार एकत्रित हुए विचार कर ही रहे थे कि इतने में अचानक भाई साहिब वीर सिंह जी आ गए, क्योंकि उनको पता लगा कि बाबा जी का शरीर कुछ ठीक नहीं है। सेवकों ने भाई साहिब को बताया कि बाबा जी कई दिनों से मानसिक तौर से ठीक नहीं हैं, इसलिए किसी मानसिक डॉक्टर के पास लेकर जाने का प्रोग्राम बना रहे हैं। भाई साहिब सेवकों से सुनकर जब बाबा जी के पास गए, आगे से आप जी ने बहुत प्रेम के साथ भाई साहिब को पास बिठाकर बताया भाई साहिब! हमें आप द्वारा लिखा हुआ 'कलगीधर चमत्कार' ग्रन्थ सुनकर बहुत आनंद आया, क्योंकि आपने बड़े प्रेम के साथ गुरु-यश वर्णन किया है। इस प्रकार गुरु-यश वर्णन का सौभाग्य आप जैसे किसी विरले सज्जन को ही प्राप्त होता है।

---

* *बाबा जी के शरीर छोड़ने के पश्चात् उस सूखे वृक्ष की मंजूषा बनाई जिसमें शरीर सजाकर जल प्रवाह किया।*

इस प्रकार कुछ समय तक वार्तालाप करके भाई साहिब जब वापिस जाने लगे तो आपने वचन किया, भाई साहिब! संतरे छको। आगे से महापुरुष बोले, हे महापुरुषों इस समय कोई इच्छा नहीं है, लेकिन आप जी का प्रसाद जानकर सन्तरे साथ ले जाते हैं, देहरादून जाकर छक लेंगे। महाराज ने सेवादार को आज्ञा दी कि भीतर से जूस निकालने वाली मशीन और चांदी का जग, जो सिंधी प्रेमियों ने भेंट किया था, लेकर आओ। सेवादार के लाने पर कहा, भाई साहिब! यह भी साथ ले जाओ। घर जाकर इसके साथ जूस निकाल कर पीना।*

अटल बचन साधू जना सभ महि प्रगटाइआ॥
जिसु जन होआ साध संगु तिसु भेटै हरि राइआ॥

(बिलावलु म० ५, पृष्ठ ८१२)

निसि बासुर नखिअत्र बिनासी रवि ससीअर बेनाधा॥
गिरि बसुधा जल पवन जाइगो इकि साध बचन अटलाधा॥

(सारंग महला ५, पृष्ठ १२०४)

इसके बाद महाराज जी का शरीर अधिक रोगी हो गया। कनखल के डॉक्टर उपचार कर रहे थे, लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। अंततः मंगलवार वाले दिन, आप जी प्रातः स्नान करके चारपाई पर लेट गए। सेवादार को आज्ञा दी 'जपुजी साहिब' का पाठ सुनाओ। सेवादार ने बड़े प्रेम के साथ पाठ किया, पाठ पूर्ण होने पर आप जी ने गुरुबाणी की एक पंक्ति उच्चारण की—

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ॥
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नहीं कोइ॥
जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल॥

(श्लोक महला ९, पृष्ठ १४२९)

इस पंक्ति के उच्चारण के पश्चात् आप जी ने जिह्वा को बंद कर लिया और नेत्र बंद कर लिए। इसी दशा में मंगलवार और बुधवार का दिन व्यतीत हो गया। दो दिन नेत्र न खोले, न जिह्वा से कुछ बोले। ऐसी दशा देखकर सेवकों की ओर से अमृतसर, लाहौर, कराची और हैदराबाद आदि स्थानों पर प्रेमियों को तारें दे दी गईं। पता लगने पर प्रेमी संगत कनखल की ओर चल पड़ी। कुछ प्रेमी बृहस्पतिवार को कनखल पहुँच भी गए, लेकिन महाराज जी ने न तो नेत्र खोले और न ही किसी के साथ बात की। बृहस्पतिवार को सायं 8 बजे श्वासों की गति कुछ तेज़ हो गई तो एक संत जी ने कहा कि मुख में कुछ जल डाल दो। तीन दिन जिह्वा बन्द रखने के पश्चात् अचानक आप जी के पवित्र होंठों में से आवाज़ आई, अभी नहीं। उसके आधा घंटा पश्चात् श्वासों में और तेज़ी आ गई। जब दशा अधिक बिगड़नी आरम्भ हो गई तो उसी संत जी ने फिर कहा कि

* *ज्ञात हुआ कि वह मशीन और जग देहरादून के भाई साहिब के स्थान पर आज भी पड़ा है और भाई साहिब की जीवन-पुस्तिका (गुरुमुख जीवन) में भी इस घटना का वर्णन है।*

मुख में थोड़ा जल डालो ताकि श्वास कुछ टिक जाए। बस जिस समय पवित्र मुख में जल डाला, तो उसी समय प्राणों की गति बंद हो गई। अपने निज स्वरूप देव में तो पहले ही इस प्रकार लीन थे।

जिउ जल महि जलु आइ खटाना। तिउ जोती संगि जोति समाना॥

मिटि गए गवन पाए बिस्राम॥ नानक प्रभ कै सद कुरबान।

(ग: सुखमनी, पृष्ठ २७८)

लेकिन आपको शरीर रूपी उपाधि का त्याग करने के लिए ग्यारह आश्विन, आश्विन, वदी बारह, दिन बृहस्पतिवार, मास सितम्बर 1937 ई० को सायं के आठ बजकर 35 मिनट का समय ही प्रिय लगा।

सेवकों ने शान्त शरीर को स्नान कराकर, नए वस्त्र आदि पहनाकर, दीवार के सहारे एक गद्दी पर सिद्धासन लगाकर ऐसे बिठाया जैसे समाधि में स्थित हों। नेत्र पहले ही बंद थे। सारी रात कीर्तन और सुखमनी साहिब का पाठ होता रहा। प्रेमी संगत को कलकत्ता, कोलम्बो, लाहौर, कराची और हैदराबाद आदि स्थानों पर तारें दे दी गईं। इनमें से कुछ प्रेमी रातों-रात पहुँच भी गए। आप जी के प्रिय शिष्य जैसे-महाराज निक्का सिंह जी विरक्त, संत मान सिंह जी, ज्ञानी बलवंत सिंह जी, संत देवा सिंह जी, संत सीवन सिंह जी, संत करतार सिंह जी, संत ईश्वर सिंह जी, संत लाभ सिंह जी, पंडित अर्जुन सिंह जी भिक्षु और महंत आत्मा सिंह जी आदि संत पहले ही सेवा में उपस्थित थे। बाबा जी के परलोक गवन का समाचार 'सप्त सरोवर' एवं ऋषिकेश तक पहुँच गया। दूसरे दिन एक अक्तूबर 1937 ई० वाले दिन निर्मल पंचायती अखाड़ा, सप्त सरोवर और ऋषिकेश से बड़ी संख्या में साधु महात्मा निर्मल बाग कनखल पहुँच गए। पवित्र शरीर की अंतिम यात्रा के लिए एक बहुत सुन्दर पालकी बनाकर, उसको बहुत श्रेष्ठ वस्त्रों एवं फूलों से सजाकर एक बहुत मूल्यवान सोने के रंग वाला रूमाला डाला गया। उसके पश्चात् निर्मल पंचायती अखाड़ा की ओर से दुशाला पहनाया, फिर डेरों के संतों महंतों और गृहस्थी प्रेमियों की ओर से रूमाले और पुष्प मालाएं अर्पित की गईं। उपरान्त पालकी को दरबार सहिब के सम्मुख रखकर यात्रा आरम्भ करने की अरदास की गई। अरदास एवं हुक्मनामे के पश्चात् संत महात्माओं ने पालकी को कंधा देकर यात्रा आरम्भ की। उस बड़े जलूस के आगे-आगे बैंड बाजे बजते जा रहे थे, बैंड के पीछे विद्यार्थी सोने की 'गुरजां लाठियां' लेकर चल रहे थे। उनके पीछे संत लोग पालकी उठाकर सहजे-सहजे चलते सतिनाम का जाप करते हुए जा रहे थे। मर्यादा अनुसार साधु महात्मा पालकी के ऊपर पुष्प वर्षा कर रहे थे लेकिन कुछ सिंधी प्रेमी पैसों की वर्षा करते जा रहे थे। इस प्रकार जलूस नगर के बाज़ारों आदि से होता हुआ गंगा तट के प्रसिद्ध स्थान नीलधारा पर पहुँच गया। यहाँ पहुँचकर 'कीर्तन सोहिला' के पाठ उपरान्त अरदास करके उस पावन पवित्र शरीर को देवनदी गंगा की गोद में सदा-सदा के लिए अर्पण कर दिया।

गुरु घर की मर्यादा के अनुसार उसी दिन श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की पवित्र वाणी का सहज पाठ आरम्भ किया गया। साधु महात्माओं ने मिलकर बड़े प्रेम के साथ सहजे-सहजे पाठ किया और पन्द्रह दिनों बाद श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ करके 17वें दिन भोग डाले गए। भोग के समय भाई काहन सिंह नाभा, भाई अर्जुन सिंह बागड़िआ आदि बड़े-बड़े विद्वान पहुँचे हुए थे। सबने अपने-अपने विचारों के अनुसार महाराज महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी के पवित्र जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनका यशगान किया। उपरान्त गुरु के लंगर के मुक्त भण्डारे वितरित किए गए।

महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी की स्मृति में सिंधी प्रेमियों की ओर से कुछ श्रद्धा के पुष्प

1. बाबा बुड्ढा सिंह महाराज की स्मृति में सिंधी प्रेमियों की ओर से प्रेम में भीगकर लिखी कुछ पंक्तियाँ—

सतिगुरु सचे पातशाह, सच शाह रखवाले।
सत बचन, सत बाणी, सत मत दे रखवाले।
सत उसका धर्म था, सत उसका कर्म।
सत जगाना असत् मिटाना, लीया पुरुष जन्म।
गुरु की बाणी देश फैलाई, लाखों सेवक बनाये।
अनजानों को समझ देकर, नाम के प्रेमी बनाये।
कहा, रहो गृहस्थ में, करतब की रखो शान।
गृहस्थ भक्ति सदा साथ है, भूल न उनका नाम।
लाखों दु:खी भूले भटके, जो सदा सुख मुहताज।
बाबे के चरणों में, पाइया सुख का ताज।
लाखों ऐसे रोगी थे, हर हकीम आये बाज़।
बाबे के सत वचनों ने, घड़ी में किया ईलाज।
छोटे-बड़े बूढ़े-बच्चे, सिखिया सबको देते।
कैसी तकलीफ़ क्यों न हो, सब के दु:ख दूर करते।
प्रार्थना 'विशी' उसके यह, हमको शक्ति दें।
सदा सच राह पर चलें, सतिनाम न भूलें।

('विशी')

यह 'विशी' नाम का प्रेमी पाकिस्तान बनने के पश्चात् आजकल पूने में निवास करता हुआ अपने जीवन को बाबा बुड्ढा सिंह जी की कृपा समझता है। इसलिए उनकी गद्दी 'निर्मल आश्रम' का हृदय से प्रेमी है।

एक अन्य सिंधी प्रेमी ने प्यार में आकर यह पंक्तियाँ लिखी—

श्रीमान् १०८ श्री स्वामी बुड्ढा सिंह जी महाराज ऋषिकेश निवासी के चरण कमलों में भेंट—

सिफ़त करां की नूरी सितारिया वे,
सिफ़त कर रिहा सारा संसार तेरी।
तेरी माला दा किसे ने कहा मनका,
मन्नी किसे ने नूरी दस्तार तेरी।
तेरी सादगी किन्ने परवान कीती,
लई निम्रता किसे विचार तेरी।
मैं ता कवांगा इह सतिगुर जी,
शोभा जापदी अपर अपार तेरी।
तेरे मत्थे दे नूर विच्च रब्ब चमके,
बरकत बुल्लां दे विच्च पई हसदी ए।
तेरे दिल ते दया मुकाम कीता,

अते लछमी पैरां विच्च वसदी ऐ।
मेरे नैना दे नूरी सितारिआ वे,
एदों वध के कवां मैं होर किन्ना।
दिल ने किहा तूं चंद है चौदहवीं दा,
इनहूँ कवां फिर दस चकोर किन्ना।
दाता दुनियां दा दिल चुरा लिया तूं,
तैनूं कवां फिर दिलां दा चोर किन्ना।
लियाईं दिल ते दिल कोल रखीं,
दिल दिल दे कोलों न दूर कर लईं।
प्रीतम दे लिखे होय प्रेम प्यार दे बंद दाता,
हस के नाले मनजूर कर लईं।
इक नहीं अनेकां तो मैं सुणिया,
हर इक दा करे सवाल पूरा।
करे उसदा तुधदे कोल जिहड़ा,
दस्से दिल दा खोल हवाल पूरा।
तक्कां तकदे नूँ आह दिन आये मैनूं,
बाबा बुड्ढा सिंह जी बेड़ा कर पार पूरा॥

(भेंटा प्रीतम दास बेलानी)

यह सिंधी प्रेमी जिसका नाम प्रीतम दास बेलानी था और संत बुड्ढा सिंह जी का अनन्य सेवक था, स्वयं तो स्वर्गवास हो चुका है, उसका पुत्र गुरुबख्श बेलानी बम्बई वरली में रहता है। यह सज्जन गुरुवाणी का बहुत प्रेमी, आश्रम एवं महापुरुषों से पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ, गृहस्थ में रहकर पारमार्थिक लगन द्वारा जीवन व्यतीत कर रहा है।

महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी की संक्षिप्त जीवन झलकियां

- ❑ आप जी का जन्म 1861 ई० में गाँव हल्लोवाल ज़िला सियालकोट, पिता प्रताप सिंह के घर, माता सन्तों की कोख से हुआ।
- ❑ 1871 ई० में बाबा धर्म सिंह समाधि वालों की शरण में आए।
- ❑ 1883 ई० में काशी पढ़ने गए।
- ❑ 1885 ई० में काशी से वापिस आए।
- ❑ 1890 ई० के लगभग गुरुवाणी के प्रचारार्थ यात्रा आरम्भ की।
- ❑ 1896 ई० में अखाड़े की ओर से चल रही धर्म प्रचार मण्डली (रमत) के मुखिया महंत बने।
- ❑ 1897 ई० में उज्जैन के कुम्भ पर आपके प्रभावशाली व्याख्यान से तीन राज्यों इन्दौर, उज्जैन और ग्वालियर के राजा प्रभावित हुए।
- ❑ 1900 ई० में श्री निर्मल आश्रम ऋषिकेश की नींव रखी।
- ❑ 1907 ई० में महंत आत्मा सिंह जी आपकी शरण में आए।
- ❑ 1908 ई० में रमत के मुखिया पद से त्यागपत्र दे दिया। इस प्रकार 12 वर्ष निर्मल पंथ की नि:स्वार्थ होकर सेवा की।
- ❑ 1911 ई० में निर्मल बाग कनखल स्थापित किया।

पूज्य महंत बुड्ढा सिंह जी कुछ महान् विभूतियों के साथ :
श्री चरन सिंह जी 'शहीद', भाई काहन सिंह 'नाभा'

- 1923 ई० में कनखल वाले बाग में आँवले के वृक्ष लगाए।
- 1924 ई० में काशी में 'संगत ज्ञान गुफ़ा' आश्रम स्थापित किया।
- 1927 ई० में संत बाबा निक्का सिंह जी आपकी शरण में आए।
- 1931 ई० में संत आत्मा सिंह जी को महंती की पगड़ी प्रदान की।
- 1932 ई० में मसूरी आश्रम की स्थापना।
- आप जब सिंध में जाते तो शुरू-शुरू में सिंधी प्रेमी आप जी को स्टेशन से चार-छ: घोड़ों वाली बग्घी में राजाओं की भाँति लेकर जाते थे। 1927-28 के पश्चात् कार में लेकर जाते रहे।
- स्टेशन के प्लेटफार्म से कार तक श्वेत वस्त्र को बिछाते, उसके ऊपर आप चलते। पीछे-पीछे प्रेमी इकट्ठा कर लेते।
- एक सिंधी प्रेमी श्री ठाकुर दास मनसुखानी जो कि सिंध हैदराबाद से आया और वृद्धावस्था में आजकल सपरिवार बम्बई के सत बंगला क्षेत्र में निवास करता है, ने बताया कि एक बार मैं पढ़ने जा रहा था, प्रात: हैदराबाद स्टेशन पर बहुत से लोग हाथों में फल लिए खड़े थे। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि ऋषिकेश से महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज आ रहे हैं, तो मैं भी रुक गया। इतने में गाड़ी स्टेशन पर आ रुकी। डिब्बे में से एक बहुत नूरी चेहरे वाले महापुरुष उतरे तो संगत ने ज़ोर-ज़ोर से जय-जयकार किया और फूलों की वर्षा की, गले में हार डाले, इतने में कोरे लट्ठे का थान रेलवे के डिब्बे से सारे प्लेटफार्म के ऊपर बाहर खड़ी कार तक बिछाया गया। बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज उस वस्त्र पर चलकर कार में सुशोभित हुए। मनसुखानी ने बताया कि मैंने सर्वप्रथम दर्शन किए थे। यह बात लगभग 1935-36 ई० की है।
- 1934 ई० में निर्मल आश्रम की समस्त सम्पत्ति का एक न्यास बनाया।
- 30 सितम्बर, 1937 को सचखण्ड में जाकर विराजमान हुए।
- आप जी कोई बीस बार सिंध गए, 9 बार मसूरी और तीन बार शिमला।

विशेष

महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी का संक्षेप सा जीवन वृत्तांत पढ़-सुनकर कुछ बुद्धिमान व्यक्तियों को यह शंका हो सकती है कि संत जी महाराज शायद चमत्कारी थे। प्रेमियों की यह शंका निर्मूल है, क्योंकि जो नदी अनेक पर्वतों से टकराती हुई थल में रेत के टिब्बों को चीरती हुई अर्थात् अनंत प्रकार के कष्टों को सहन करती हुई अपने प्रिय-सागर में जा मिली, वह वापिस मुड़कर कब देखती है कि मुझ में से जल पीकर कितने जीव प्यास बुझाते हैं और कितने स्नान आदि का लाभ उठाते हैं? वह तो महान् सागर में मिलकर उसका रूप हो जाती है, उसकी दृष्टि में अब सागर और भीतर निवास करने वाला जीव अलग अपना अस्तित्व नहीं रखते हैं। इस प्रकार जिस पुरुष ने पुरुषार्थ और गुरु-कृपा द्वारा अपने 'अहं' का पूर्ण रूपेण त्याग करके अनेक प्रकार की द्वैत मिटा दी है, उसके शुद्ध हुए हृदय रूपी गगन में चमत्कार अर्थात् वरदान-शाप, भला-बुरा, अपना-पराया, राग-द्वेष, हर्ष-शोक, सुख-दुख और जन्म-मरण आदि जो द्वन्द्व हैं यह और इनकी क्रिया अब कहां ठहर सकती है? वह तो अब निष्क्रिय पद में स्थित हो चुका है अर्थात् प्रतीत हो रही प्रत्येक क्रिया में अपने प्रियतम को ही देखता है और अपने प्रियतम में हो रही समस्त क्रियाएं प्रत्यक्ष देख रहा है। ऐसा व्यक्ति कठोर श्रमसाध्य, काम-क्रोध, मान-अपमान, आदि-अनंत पर्वतों से टकराता हुआ अपना आप गँवाकर आनंद-सागर वाहिगुरु में प्रवेश कर जाए फिर उसमें दूसरे को सुख देने का सामर्थ्य स्वाभाविक ही आ जाता है, क्योंकि वह सुख स्वरूप

परमात्मा से अभेद जो हो गया, बशर्ते वह अपने 'अहं' को पूर्ण रूप से त्याग दे, फिर **ब्रहम गिआनी पर उपकार उमाहा** वाली अवस्था प्राप्त हो जाती है। इस अवस्था में पहुँचे पुरुष का नाम ही साधु है। भाई साहिब भाई गुरदास जी अपने कवित्त के माध्यम से ऐसे पुरुष का ही वर्णन कर रहे हैं—

जैसे तिल पीड़ तेल काढीअत कसटु कै,
तां ते होइ दीपक जराए उजियारो जी॥
जैसे रोम रोम कर काटीऐ अजा को तन,
तां की तात बाजै राग रागनी सो पयारो जी॥
जैसे तऊ उटाय दरपन कीजै लोसट सेती,
तां ते कर गहि मुख देखत संसारो जी॥
तैसे दुख भूख सुध साधना कै साध भए,
ताही ते जगत को करत निसतारो जी॥

अर्थ—

1. जैसे कष्ट उठाकर तिल से तेल निकालते हैं, तो उससे दीपक जलाने से प्रकाश मिलता है।
2. जैसे टुकड़े-टुकड़े करके बकरी का शरीर काटते है, फिर उसकी आँतों से ताँत बनाते हैं जिसमें से प्यारे-प्यारे राग-रागनियां निसृत होती हैं।
3. जैसे मिट्टी-रेत को पिघलाकर शीशा बना लेते हैं; फिर समस्त संसार उसको हाथ में पकड़ कर उसमें अपना चेहरा देखता है।
4. इसी प्रकार ही साधक, क्षुधा-पीड़ा और शुद्ध साधना करके साधु बनता है, फिर वह संसार का नि:स्तार करने के लिए समर्थ हो जाता है। भाव साधना से 'अहं' की मल दूर हो जाती है। इस प्रकार साधना करके शुद्ध हुए साधु में संसार की मुक्ति की योग्यता आ जाती है। भाई साहिब भाई गुरदास जी कुछ अन्य उदाहरण देकर भी इसको दृढ़ करते हैं—

1. **जैसे अंनादि आदि अंत परयंत, सगल संसार को आधार भयो तांही सैं॥**
2. **जैसे तऊ कपास त्रास देत न उसास काढै, जगत की कूट भए अंबर दिवाही सैं॥**
3. **जैसे आपा खोए जल मिलै सभि बरन मैं, खरा मिरग मानस त्रिपत गत याही सैं।**
4. **तैसे मन साधि साधि साधना कै साध भए, याही ते शकल को उधार अवगाही सैं॥**

अर्थ—

1. जैसे अन्न आदि पदार्थ आदि से अंत तक पीसे जाते हैं अर्थात् दु:ख उठाते हैं—इसलिए तो समस्त संसार का आधार बन जाते हैं।
2. जैसे कपास को पींजते समय मारते-पीटते हैं और वह कष्ट उठाकर वस्त्र प्रदान करती है और लोगों के पर्दे ढकती है।
3. जैसे जल ने अपनत्व मारने में इतना कमाल किया है कि वह सब रंगों से तद्‌रूप हो जाता है। यह निर्मल दशा देखकर ही पशु-पक्षी और मनुष्यों को तृप्त करने के योग्य हो जाता है।
4. इस प्रकार साधु लोग मन को साधना के द्वारा साध-साधकर साधु बने हैं, इसलिए सबका उद्धार करने को समर्थ हो जाते हैं।

'अवगाही' शब्द का अर्थ मथना अथवा निर्णय करना होता है। भाई साहिब बड़ी दृढ़ता के साथ कह रहे हैं कि यह निर्णायक बात है वैसे ही कोई गप्प नहीं है। जैसे उपरोक्त उदाहरणों द्वारा भाई साहिब ने बताया है कि तिल उस समय दीपक जलाने में समर्थ होगा, जब घानी में पीड़े जाकर अपना आप गँवा देगा। वीणा उस समय ही बजेगी जब बकरी अपना आप गँवाकर ताँत का रूप धारण कर लेगी। अन्न का दाना मिट्टी में अपने आपको गँवा कर ही दूसरे पौधों को जन्म देता है, जिसमें से अनेकों दाने पैदा होकर संसार के जीवन की भूख मिटाते हैं। इसी प्रकार जो व्यक्ति अपने मन को सांसारिक वासनाओं से संकोचकर और हर प्रकार के द्वैत को मिटाकर पूर्ण रूप में 'अहं' रहित कर देता है ऐसे व्यक्ति और परमात्मा में रंचमात्र भी अन्तर नहीं रह जाता। यथा गुरु गोबिन्द सिंह जी—

हरि हरि जनु दुइ एक है बिब बिचार कद नाहि॥
जल ते उपज तरंग जिउं जल ही बिखै समाहि॥

गुरु साहिब उदाहरण देकर समझाते हैं—जैसे जल और जल की लहर एक ही हैं, उसी प्रकार हरि और हरि-जन दोनों एक ही हैं। इसमें अन्य कोई विचार नहीं है। उदाहरणत: आग में डाला लोहा, आग वाले गुणों का ही हो जाता है, बल्कि आग में हाथ डालने से शायद बच भी जाए, लेकिन आग में तपकर लाल हुए लोहे को यदि हाथ स्पर्श कर जाए तो बचना कठिन है। इसलिए परमेश्वर आकाशवाणी द्वारा भक्त नामदेव जी को फ़रमान करते हैं—

मेरी बांधी भगतु छडावै बांधै भगतु न छुटै मोहि॥
एक समै मो कउ गहि बांधै तउ फुनि मो पै जबाबु न होइ॥

(पृष्ठ १२५३)

इस पवित्र शब्द के माध्यम से हरि परमेश्वर अपने भक्तों को मान दे रहे हैं, लेकिन भक्तजन, मान-अपमान दोनों से निर्लिप्त अपने जीवनरूप परमात्मा में सदैव के लिए स्थित हो जाते हैं। इस अवस्था को पहुँचा पुरुष जिधर भी नज़र दौड़ाता है, उसको सागर-मीन की भाँति आगे-पीछे, नीचे-ऊपर और दायें-बायें अपने जीवन रूपी वाहिगुरु ही दृष्टि पड़ता है, क्योंकि गुरु अमरदास महाराज जी का पवित्र वाक् हृदय में पूर्ण रूपेण घटित हो चुका है।

एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूप है हरि रूपु नदरी आइआ॥
गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई॥

(अनंदु साहिब, पृष्ठ ९२२)

ऐसी अवस्था में जहां अपने से भिन्न दूसरा है ही नहीं, फिर कौन किसको वर-श्राप देगा, लेकिन फिर भी ऐसी अभेद अवस्था में परिपक्व हो चुके महापुरुषों के जीवन काल में कुछ अलौकिक घटनाएं घटी दृष्टिगोचर होती हैं, वह सब गोबिन्द प्रभु ही करता है, क्योंकि उस शुद्ध हुए हृदय रूपी शय्या पर अब प्रभु विराजमान है। उस पवित्र मुख में से अब जो शब्द उच्चारित होगा, वह निश्चय ही परमेश्वर की आवाज़ होगी, क्योंकि उस महापुरुष के शरीर रूपी घर में परमेश्वर ने निवास कर लिया है यथा गुरु अर्जुन देव जी—

प्रभ जी बसहि साध की रसना॥ नानक जन का दासनि दसना॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २६३)

यथा— **सरब निवासी घटि घटि वासी लेपु नही अलपहीअउ॥**
नानकु कहत सुनहु रे लोगा संत रसन को बसहीअउ॥

(जैतसरी महला ५, पृष्ठ ७००)

जो परमेश्वर एक क्षण में कोटि-कोटि ब्रह्मांडों की सर्जना करके दूसरे क्षण में प्रलय द्वारा नष्ट करने में समर्थ है उसके लिए किसे 'अहं' रहित शुद्ध हुए हृदय में बैठकर मनुष्य मन की सोच से परे कुछ अनूठे चमत्कार दिखाने की मामूली बात है इसलिए कालातीत पुरुष (अकाल पुरख) वाहिगुरु स्वयं निर्मित सृष्टि में समय-समय पर जो लोग (नास्तिक) अर्थात् परमात्मा के अस्तित्व से इन्कार कर मनुष्य चिंतन को ही तरजीह देते हैं। उनको अपने अद्वितीय अस्तित्व का विश्वास दिलाने हेतु और अपने भक्तों का संसार में यश फैलाने के लिए ऐसे अलौकिक कौतुक की रचना करता है, जिनको देख-सुन के नास्तिक लोग भी आश्चर्यचकित होकर आस्तिकता के मार्ग पर आ जाते हैं और आस्तिकतों के मन में यह विश्वास दृढ़ हो जाता है, क्योंकि हरि परमेश्वर को अपने भक्तों का यश होता अत्यंत प्रिय लगता है। यथा गुरुवाक्—

जो हरि दासन की उसतित है जैसा हरि की वडिआई॥
हरि आपणी वडिआई भावदी जन का जैकारु कराई॥

(श्लोक महला ४, पृष्ठ ६५२)

इस प्रकार कालातीत पुरुष (अकाल पुरख) वाहिगुरु ने संत बुड्ढा सिंह महाराज के पवित्र हृदय में स्थित होकर अपने आदि स्वरूप श्री गुरु नानक देव महाराज की ओर से चलाए सीधे और सरल प्रेमा भक्ति के मार्ग का प्रचार करने के लिए सिंध देश में अनेक चमत्कार किए, जो मानवी चिंतन से परे घटित थे। आप साधारण लोग इसको चमत्कार कहते हैं।

नोट— महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी के पवित्र जीवन का इस ग्रन्थ के रूप में छोटा सा महल निर्मित करने हेतु अधिक सामग्री मिलने का मूल स्रोत तो 'निर्मल पंथ प्रकाश' नामक एक सिंधी पुस्तक है। इसके अतिरिक्त जिन श्रद्धालुओं ने आँखों देखी घटनाएं दर्ज करके सन् 1933 ई० में अर्थात् बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज के सचखंड प्रयाण से चार वर्ष पूर्व सिंधी भाषा में प्रकाशित हुई थी, उसमें से प्राप्त कीं। कुछ घटनाएं बम्बई निवास के दौरान सिंधी बुजुर्गों-जो उन्होंने स्वयं देखी थीं अथवा अपने बुजुर्गों से सुनी थीं, उन प्रेमियों से प्राप्त करके ग्रन्थ रूप में इस पवित्र महल में अंकित की हैं। अपनी ओर से इस जीवन रूपी पवित्र महल में कोई भी कल्पित घटना वर्णन करने से संकोच किया गया है, सिवाए अपने शब्दों में प्रकट करने के।

महन्त आत्मा सिंह जी महाराज

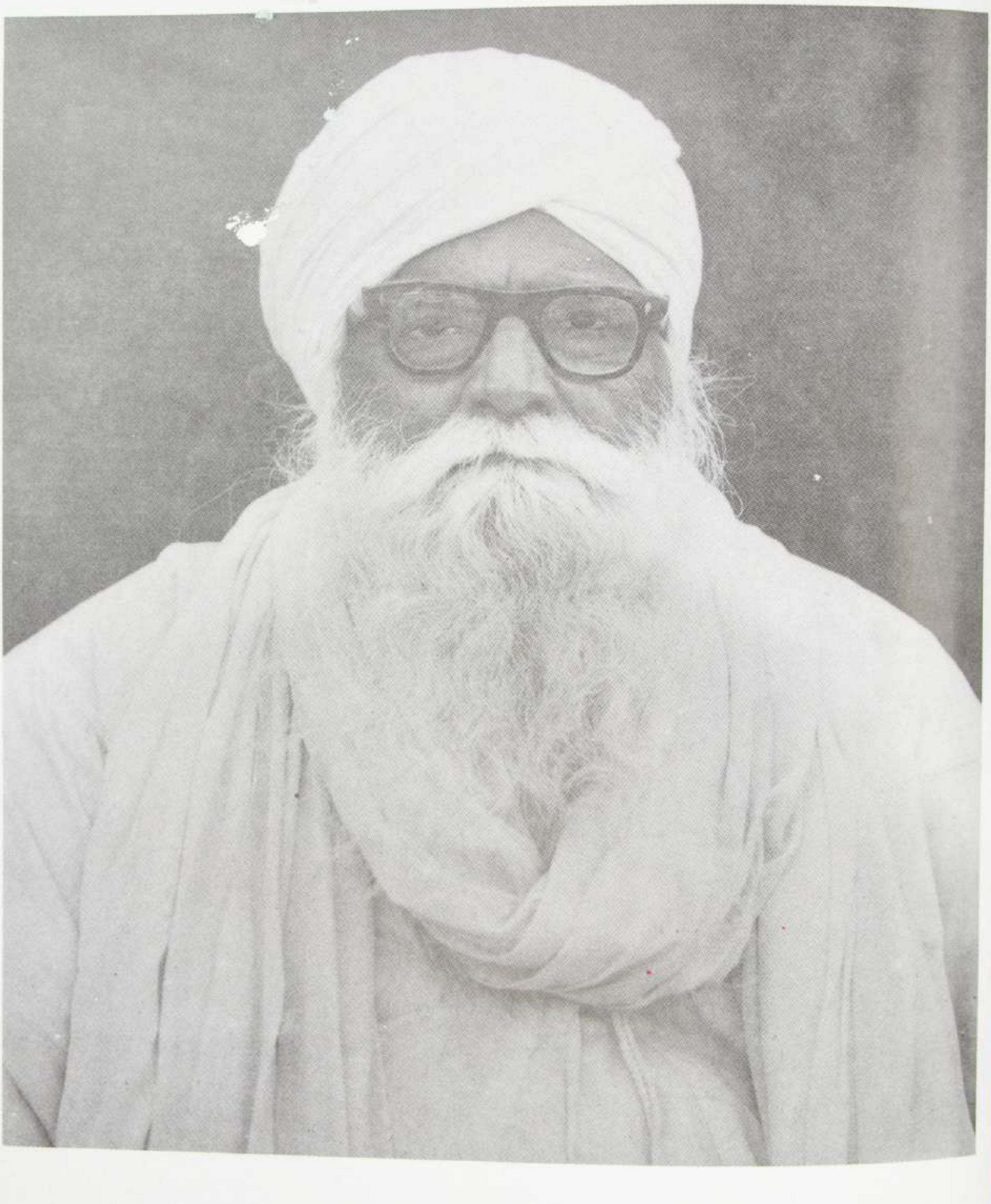

महंत बाबा आत्मा सिंह जी महाराज

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

3 अध्याय

महंत आत्मा सिंह जी महाराज

जीवन चरित्र महंत आत्मा सिंह जी

भारत के समृद्ध राज्य पंजाब के दक्षिण पश्चिमी भाग में एक ज़िला फ़िरोज़पुर है। यहाँ के निवासी आमतौर पर छल-कपट से रहित, खुले स्वभाव वाले माने जाते हैं। इस जनपद में एक प्रसिद्ध गाँव है 'पत्तो हीरा सिंह'। यहाँ के निवासियों के पास अच्छी भूमि होने के कारण इनका मुख्य पेशा खेतीबाड़ी है। इस गाँव में सिद्‌धू बराड़ गोत्र का एक ज़मींदार सरदार जवाहर सिंह नामक भद्र पुरुष निवास करता था, जो गाँव का नंबरदार भी था। जवाहर सिंह की सच्चाई और ईमानदारी का क्षेत्र में इतना प्रभाव था कि इसका सिक्का गाँव वाले लोग तो मानते ही थे बल्कि दूसरे गाँव के लोग भी आकर सलाह-मशवरा लेते थे। इसने अपने खेत में समयानुसार एक कच्चा कमरा बनाया था। उसमें समय-समय पर आकर साधु-महात्मा निवास करते थे। इसलिए इस प्रेमी को सेवा और सत्संग सहज ही सुलभ था। सत्संग के प्रभाव स्वरूप पर्याप्त उदारचित्त और दयावान् वृत्ति वाला स्वभाव था। दानी वृत्ति होने के कारण ज़रूरतमंदों की सहायता, निर्धन लोगों की बेटियों के विवाह और यथा शक्ति सहायता करना आदि शुभ गुणों वाला जीवन व्यतीत कर रहा था। जवाहर सिंह के घर प्रताप सिंह नाम का एक लड़का था जो फौज में सूबेदार पद पर सेवारत था। इस प्रकार शुभ एवं सुख का जीवन व्यतीत करके जवाहर सिंह जी प्रकृति के अटल नियमानुसार 1893 ई० में परलोक सिधार गए। बाद में उनके सुपुत्र प्रताप सिंह जी सूबेदारी पद से पैन्शन लेकर अपने घर की देख-रेख करने लगे।

प्रताप सिंह जी के पाँच पुत्र थे जिनमें से एक का नाम भान सिंह था। भान सिंह का जन्म 1885 ई० में हुआ। वह बाल्यकाल से ही योग्य, शान्त-चित्त और संत-सेवी स्वभाव वाला था। इस प्रकार भान सिंह का बचपन और किशोरावस्था का समय, माँ-बाप की आज्ञा में रहकर घर की देख-रेख करते व्यतीत हुआ। अब युवावस्था में कदम रखते ही पूर्वजन्म के किए निष्काम पुण्य कर्मों के फलस्वरूप किसी महापुरुष को मिलने की तड़प पैदा हुई और घर सम्बन्धी आदि सांसारिक पदार्थों से वैराग्य का भी मन में अंकुर उत्पन्न हो गया। कुछ समय तो वैसे ही उपरामता में घर में ही व्यतीत हो गया, लेकिन एक दिन संसार के सभी मोह-जाल से उपराम होकर सेवा और सत्संग का बहुमूल्य व्यापार करने के लिए श्रद्धा और विश्वास का धन आँचल में बाँध कर घर से निकल पड़े। कच्ची पगडंडियों पर यात्रा करते 'भुच्चो गाँव' में सिद्ध पुरुष संत हरनाम सिंह जी के डेरे में पहुँच गए। यह गाँव भठिंडा से कोई आठ मील की दूरी पर है। यहाँ एक दो दिन ठहरने के पश्चात् श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के पवित्र स्थान श्री दमदमा साहिब जी का दर्शन किया। यहाँ ठहर कर कुछ दिन सेवा का लाभ उठाया। इतने में कुछ संगत हरिद्वार के अर्ध कुंभी पर दर्शन स्नान करने के लिए तैयार हुई तो आप ने भी साथ जाने का विचार बना लिया। इस प्रकार संगत भठिंडा रेलवे स्टेशन से गाड़ी में सवार होकर हरिद्वार पहुँच गई। अर्ध कुंभी के पवित्र पर्व पर सब मत-मतान्तरों के साधु पहुँचे हुए थे और लाखों की संख्या में यात्रियों का इक्ट्ठ था। सत्संग में सब मतों के साधु मनुष्य जन्म की सफलता के विभिन्न तरीकों और अपने-अपने मतानुसार कथा-व्याख्यान कर रहे थे, लेकिन भान सिंह की हृदय रूपी भूमि पर गुरु नानक के घर के संस्कार-रूपी बीज पड़े हुए थे, इसलिए किसी भी महात्मा पर श्रद्धा न बनी। दूसरे दिन की

सभा सत्संग में निर्मल सम्प्रदाय की ओर से महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी को कथा-प्रवचन करने हेतु प्रार्थना की गई। आप जी ने गुरुवाणी के अनेक प्रमाणों के माध्यम से गुरु नानक के घर के प्रेमभक्ति मार्ग की विशेषता का वर्णन किया। बाबा जी के कथा करने की शैली अत्यंत निराली और सुन्दर थी। वे अत्यन्त सरल शब्दों का व्यवहार कर अनेक दृष्टांतों एवं उदाहरणों द्वारा समझाते थे। इसलिए हज़ारों की संख्या में यात्री एवं साधु महात्मा उपदेश सुन कर गद्गद् हो गए। इधर भान सिंह ने तो एक-एक शब्द को अपने हृदय सरोवर में इस प्रकार संजो लिया जिस प्रकार तेज़ वर्षा का जल ऊँचे स्थानों से गिर कर निचले स्थानों को लबालब भर देता है। मन में यह धारणा दृढ़ हो गई कि इस महापुरुष की शरण में जाकर मनुष्य जन्म की सफलता का रहस्य खुल सकता है। सभा की समाप्ति के बाद महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज के निवास स्थान पर जाकर श्रद्धा भाव से नमस्कार कर दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना की—

गुरु दाता दातारु है हउ मागउ दानु गुर पासि॥
चिरी विछुंना मेलि प्रभ मैं मनि तनि वडड़ी आस॥

(मारू मा० ४, पृष्ठ ९९६)

भान सिंह ने कुछ ऐसे भाव मन में लाकर प्रार्थना की, महाराज! दास को अपनी पवित्र शरण देने की कृपा करें। महापुरुषों ने बड़े प्यार के साथ पास बिठाकर नाम पता और आने का कारण पूछा। भान सिंह से सारा हाल सुनकर बोले, बालक! फकीरी बहुत कठिन मार्ग है। 'फकीर' उर्दू का शब्द है जो कि (फे, काफ़, ये, रे) इन चार अक्षरों से बनता है। यदि विचार द्वारा इन अक्षरों के अर्थों पर विचार करें तो 'फे' से संसार को 'फना' रूप जानना, काफ़ से 'कनायित' संतोष धारण करना अर्थात् जो प्रारब्ध अनुसार मिल जाए उस पर पूर्ण तौर से संतुष्ट होना, 'ये' शब्द का अर्थ है परमेश्वर की याद में सदा जुड़े रहना, 'रे' का भाव है उस कालातीत पुरुष (अकाल पुरखु) वाहिगुरु को व्यापक जानना और मान-अपमान, भूख-प्यास, सुख-दुःख गर्मी-सर्दी आदि द्वन्द्वों को सहन करके इनसे ऊपर विचरण करना अर्थात् मुर्दा होकर जीवन व्यतीत करना, यथा—भाई गुरदास—

पैरी पैपाखाक मुरीदै थीवणा॥
गुर मूरति मुसताक मरि मरि जीवणा॥
परहर सभे साक सुरंग रंगीवणा॥
होर न झखन झाक शरन मन सीवणा॥
पिरम पिआला पाक अमिअ रसु पीवणा॥
मसकीनी अउताक असथिर थीवना।
दस अउरात तलाक सहिज अलीवणा॥
सावधान गुर वाक न मन भरमीवणा।
सबद सुरत हुशनाक पारि परीवणा॥

अर्थ—शिष्य को चाहिए गुरु के चरण पड़ कर चरण धूलि बने, गुरु मूर्ति का प्रेमी बने, परमेश्वर के साथ जुड़ा रहे और संसार की ओर से उपराम रहे, समस्त सगे-सम्बन्धियों को छोड़कर एक भक्ति के सुंदर रंग में रंगा रहे, इधर-उधर की

न हाँके, एक हरि की शरण में मन को बाँध कर रखे, प्रेम प्याले के पवित्र रस का पान करता रहे, निर्धनता में रहे, तो चिरंजीवी हो जाएगा। दसों इन्द्रियों को त्याग दे, तो सहज में रमेगा। गुरुवाक् के सम्बन्ध में सावधान रहे, मन से भ्रमित न हो। शब्द की सदैव याद रूपी सावधानता, शिष्य को संसार सागर से पार कर देती है, लेकिन यह कार्य अत्यंत कठिन है, केवल बातों से अथवा देखा-देखी यह घाटी पार करनी अत्यन्त दुष्कर है। देख भाई साहिब भाई गुरदास और सावधान करते हैं—

मुरदा होइ मुरीदु न गली होवणा।
साबरु सिदकि सहीदु भरम भउ खोवणा॥
गोला मुल खरीदु कारे जोवणा॥
ना तिसु भूख न नींद न खाणा सोवणा॥
पीहणि होइ जदीद पाणी ढोवणा॥
पखे दी तागीद पग मलि धोवणा॥
सेवक होई संजीदु न हसण रोवणा॥
दर दरवेस रसीदु पिरम रसु भोवणा॥
चंद मुमारखि ईद पुगि खलोवणा॥

अर्थ—शिष्य संसार से उपराम होकर बनता है, बातों से नहीं होता। संतोष, भ्रम और भय को दूर करके सत्य पर बलिदान होता है। खरीदे गुलाम की भाँति होना चाहिए, ताकि सदैव सेवा में जुड़ा रहे। अपने शरीर के लिए वह न भूख और न नींद की परवाह करे। ताजा आटा पीसकर पानी लाये, गुरु के चरण मल मल कर धोवे और पंखा करे। सेवक गम्भीर ऐसा हो, न हँसे, न रोय अर्थात् गुरु का आदेश माने।

जे गुरु झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई॥

(रागु सूही असटपदीआ म० ४, घर २, पृष्ठ ७५८)

इस प्रकार जो दर का दरवेश होकर पहुँचे, वह प्यारे के प्रेम रस में भीग जाएगा। उस पुरुष को ईद के चन्द्रमा की भाँति बधाइयाँ मिलेंगी और पूर्णिमा के चाँद की भाँति खिलेगा अर्थात् पूर्ण होगा।

हे प्रेमी! संसार की उपरामता के पश्चात् फ़कीरी के द्वार पर पहला कदम रखा जाता है। इसलिए अच्छा है उससे पूर्व पहला कदम अर्थात् घर निवास करते हुए छल कपट से रहित नेक नियत से श्रम करके जो अर्जित करे उसमें से यथा योग्य निर्धनों, ज़रूरतमंदों पर व्यय करता हुआ जीवन व्यतीत करे। इस प्रकार हक, सच की कमाई और निष्काम त्याग कर्म करते जब यह शुद्ध व्यवहार द्वारा जीवन व्यतीत करता है उस समय उसका प्रभाव मन पर भी पड़ता है अर्थात् मन शुद्ध होने लगता है। फिर संसार में उतार-चढ़ाव भी आते रहते हैं, कभी किसी सम्बन्धी की मृत्यु का दुःख, कभी कारोबार में घाटा, कभी मान-आदर को ठोकर अर्थात् अपमान ऐसे हर्ष-शोक के समय, इस शुद्ध हुए मन पर वैराग्य उत्पन्न कर देते हैं। फिर जैसे-तैसे वैराग्य का बल बढ़ता है, मन से माया का पर्दा उतरना आरम्भ हो जाता है।

बिनु बैराग न छूटसि माइआ॥

(गउड़ी कबीर जी पृष्ठ ३२९)

यह परमेश्वर का अटल नियम है, वैराग्य के बिना मन से माया की भ्राँति दूर नहीं होती। माया उतरने के बिना परमेश्वर के दर्शन असम्भव हैं। इसलिए तू अब यह सोच कि फकीरी करनी है अथवा वापिस घर को जाना है। भान सिंह ने प्रार्थना की, महाराज! गत आशा तो मैं घर से चलने से पूर्व ही त्याग चुका था, अब तो आप कृपा करो कि हजूर के पावन चरण कमलों की सेवा करते जन्म सफल हो जाए। महापुरुषों ने गहरी दृष्टि से देखा, कोई पर-उपकारी

आत्मा है। वचन कर दिया ठीक है—तुम्हारे द्वारा गुरु नानक ने अपने घर की सेवा लेनी है—मज़बूत होकर कर। मुक्ति का रहस्य सेवा में ही छिपा है। इस प्रकार कुछ दिन हरिद्वार ठहर कर कुंभी का उत्सव समाप्त होने पर वापिस निर्मल आश्रम ऋषिकेश पहुँच गए। भान सिंह का स्वभाव उद्यमी तो था ही, दो-चार दिन में ही आश्रम के कार्यों का भेद समझकर सेवा में लग गया। महापुरुषों ने आज्ञा की कि सेवा के साथ-साथ गुरुवाणी शिक्षा भी आरम्भ कर दो। आज्ञा मान कर भान सिंह जी ने दोहरा रहट चलाना आरम्भ कर दिया अर्थात् आश्रम की सेवा तो संभाल ही ली, साथ ही साथ बाबा जी से गुरुवाणी का शिक्षण भी आरम्भ कर दिया। इस प्रकार सेवा पाठ करते-करते जब कुछ समय पश्चात् मन पर्याप्त शुद्ध हो गया तो एक दिन महापुरुषों के चरणों में प्रार्थना की, महाराज! कृपा करो, नाम की दात देने की कृपा करो। महापुरुष भान सिंह की अथक सेवा से प्रसन्न होकर हर्षित तो पहले ही थे, इसलिए योग्य समय और अधिकारी जानकर दया की, नाम उपदेश का आशीर्वाद देकर भगवे रंग के वस्त्र पहना दिए और नाम भान सिंह की बजाए आत्मा सिंह रख दिया।

संत आत्मा सिंह जी ने अब धीरे-धीरे आश्रम के भीतरी एवं बाहरी सब कार्य संभाल लिए। नम्रता एवं सहनशीलता जैसे दैवी गुण तो आप में कूट-कूट कर भरे ही थे, इसलिए आश्रम में आए साधु महात्माओं को जलपान कराकर हृदय से आदर करते। इस प्रकार सेवा सिमरन करते गुरुवाणी का शिक्षण भी पूर्ण कर लिया। अब बड़े महापुरुषों ने परमार्थ मार्ग के अन्य शास्त्र जैसे सारमुक्तावली, वैराग्य-शतक, अध्यात्म रामायण, अध्यात्म प्रकाश, तुलसी कृत 'रामचरितमानस' आदि ग्रन्थ पढ़ाने आरम्भ कर दिए। आप आश्रम की सेवा संभाल के साथ-साथ विद्या भी अर्जित करते गए। जब कभी आश्रम में सब कुछ ठीक होता अर्थात् भवन निर्माण का कार्य बंद होता आदि तो बड़े महाराज जी आपको सिंध यात्रा पर साथ ले जाते। इस प्रकार समय व्यतीत होता गया। सन् 1911 में जब कनखल वाली भूमि खरीदी तो वह बहुत ऊँची-नीची थी, जिस प्रकार नदी के किनारे होते हैं। गहरी खाइयां, पानी आदि के स्रोत आदि बंद करके उसको उपजाऊ बनाना बहुत परिश्रम का कार्य था जो कि आपने और आपके गुरु भाई संत जैमल सिंह जी ने बहुत परिश्रम करके समतल बनाया। फिर उसमें कुआँ लगाकर बाग लगाया जो आज तक मौजूद है। बड़े महापुरुष, संत आत्मा सिंह जी की ओर से स्थान की संभाल आदि देखकर, डेरे की ओर से निश्चित होकर गुरुवाणी के प्रचार में अपना समय व्यतीत करने लगे। जब कभी यात्रा से वापिस आ जाते तो स्थान पर रहने वाले साधुओं को कोई ग्रन्थ पढ़ाते रहते थे। इस समय के दौरान ही संत आत्मा सिंह जी ने वेदांत-ग्रंथ 'पंचदशी' और 'गीता' भी आपसे पढ़ी। बड़े महापुरुष संत बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज की ओर से गुरुवाणी के प्रचार के फलस्वरूप अब तक सिंधी संगत भारी संख्या में गुरु घर के साथ जुड़ चुकी थी। इसलिए संगत का बहुत आना-जाना देखकर और स्थान पर रहने वाले साधु महात्माओं की आवश्यकता को ध्यान में रखकर आश्रम के समीप लगते स्थान को लेकर गौशाला का निर्माण किया जिसमें कई गायें खरीदकर दूध की आवश्यकता पूरी की गई।*

संगत के निवास के लिए स्थान का अभाव देखकर और कमरे बनवाए गए। कनखल में एक सुन्दर कोठी और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के लिए मौजूदा दरबार साहिब का निर्माण किया गया। डेरे का यह समस्त कार्य चाहे महंत बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी की कृपा और उनके निर्देशन में हो रहा था, लेकिन इस समस्त कार्य का प्रबन्ध और देख-रेख का भार आज्ञाकारी संत आत्मा सिंह जी के सबल कंधों पर ही था। संत आत्मा सिंह जी शरीर के इतने बलवान थे कि 25 फुट

* *इस गौशाला में समय पाकर अर्थात् 1930 ई० के करीब 55 गायें रखी हुई थीं।*

लम्बे और भारे गार्डर अकेले ही उठाकर छत के ऊपर पहुँचा देते थे। सन् 1922 ई० में संत नारायण सिंह जी जब सोलह-सत्रह वर्ष के थे, पहली बार आश्रम पधारे। मंहत बुड्ढा सिंह महाराज जी ने संत आत्मा सिंह को आज्ञा की कि इस लड़के (महंत नारायण सिंह) को अपनी देख-रेख में सेवा में लगाओ और साथ ही साथ गुरुवाणी का शिक्षण भी देते रहो। 1926 ई० में महाराज बुड्ढा सिंह जी दक्षिण पूर्व के तीर्थ स्थानों की यात्रा के लिए चले तो संत मान सिंह जी और संत नारायण सिंह जी को आश्रम का उत्तरदायित्व सौंपकर संत आत्मा सिंह जी और संत बलवंत सिंह जी को साथ लेकर प्रस्थान किया। ऋषिकेश से चलकर मार्ग के तीर्थ स्थान—उज्जैन, इन्दौर के दर्शन करते हुए सच्च खण्ड श्री हजूर साहिब पहुँचे। कुछ दिन ठहर कर वहाँ के पावन स्थानों के दर्शन करके दशहरा का उत्सव समाप्त होने पर हजूर साहिब से चलकर चित्रकूट होते हुए इलाहाबाद पहुँचे। यहाँ से चलकर गया जी के दर्शन स्नान करके कलकत्ता पहुँच गए। कुछ दिन कलकत्ता रुक कर गुरु साहिब जी के साथ सम्बन्धित बड़ी संगत छोटी संगत आदि स्थानों के दर्शन-दीदार करके जगन्नाथ पुरी पहुँच गए। यहाँ एक दो दिन ठहर कर बैजनाथ आदि स्थानों पर होते हुए पटना साहिब की पावन भूमि पर आ पधारे। यहाँ सात दिन निवास करने के पश्चात् श्री गुरु गोबिन्द सिंह महाराज के समस्त पवित्र स्थानों के दर्शन किए, फिर यहाँ से चलकर बनारस अपने स्थान 'संगत ज्ञान गुफा' आकर विराजमान हुए। यहाँ साधु महात्माओं के लिए खुला भण्डारा किया और संत आत्मा सिंह जी को आज्ञा दी कि आप यहाँ ठहर कर सारे भवन की मुरम्मत और रंग आदि करवाकर फिर वापिस आना। बाबा जी तो आज्ञा करके वापिस ऋषिकेश आ गए, लेकिन संत आत्मा सिंह जी काशी मकान की मुरम्मत और रंग आदि का काम कराकर फिर वापिस आए।

संत आत्मा सिंह जी को महंत बनाना

महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी ने संत आत्मा सिंह जी में हर प्रकार से योग्यता देखकर—जैसे स्थान की देख-रेख, सादा जीवन, उच्च विचार, हृदय में दीनता, मधुरता, मृदुता, संत-संस्कार, गृहस्थी श्रद्धालुओं के साथ प्यार आदि दैवी गुणों—जो एक बड़े स्थान के महंत और साधु के होने चाहिए, जिनसे समस्त सृष्टि को सुख मिले, ऐसे गुणों से संत आत्मा सिंह जी को सम्पन्न देखकर अपना उत्तराधिकारी बनाने के लिए मन में पक्का निश्चय कर लिया। उस विचार को व्यवहार में लाने हेतु तीन फरवरी 1931 ई० को तत्कालीन उच्चकोटि के संत महात्माओं, सिंधी और पंजाबी सिक्खों को इकट्ठा बुलाकर उनके सम्मुख अपने सब स्थानों-जैसे निर्मल आश्रम ऋषिकेश, निर्मल बाग कनखल (हरिद्वार) और संगत ज्ञान गुफ़ा काशी आदि का अपना उत्तराधिकारी महंत बना दिया।

गुरु घर की प्राचीन मर्यादा अनुसार पगड़ी दी गई, इसके उपरान्त खुला भण्डारा चला। जिस प्रकार वृक्ष पर-उपकारी स्वभाव होने के कारण सबको सुख देता है वह स्वयं गर्मी-सर्दी, वर्षा, ओले आदि कष्ट अपने सिर पर सहन कर दूसरों की रक्षा करता है। पक्षी घोंसला बनाकर जीवन व्यतीत करते हैं और अन्य जीवों गर्मी से प्रताड़ित छाया के नीचे बैठकर सुख का अनुभव करते हैं। फिर फल लगकर और पक जाने के पश्चात् तो नीचे की ओर झुक जाता है ताकि फल खाने वाले सरलता से तोड़ सकें। इस प्रकार संत आत्मा सिंह जी का स्वभाव चाहे पहले भी त्याग वृत्ति के कारण दूसरों की सेवा करने के लिए तत्पर रहता था, लेकिन महंती के प्रतिष्ठित पद को पाकर तो मानो फल वाले वृक्ष की भाँति नम्रता में और भी भीग गए।

जब तक बाबा बुड्ढा सिंह जी का शरीर रहा, तब तक उनकी आज्ञा में रहकर स्थानों के प्रबन्ध आदि की सेवा करते रहे, लेकिन जब 1937 ई० में बाबा जी शरीर त्याग कर सच खण्ड में जाकर विराजमान हुए, फिर छोटे विरक्त महंत मान सिंह जी, विरक्त शिरोमणि संत बाबा निक्का सिंह जी, संत बलवंत सिंह जी, संत अर्जुन सिंह जी भिक्षु और संत देवा सिंह जी आदि गुरु भाइयों को अपना अंग समझकर प्रत्येक कार्य इनकी सलाह से करते रहे। इस प्रकार डेरे की प्राचीन मर्यादा भी अनवरत चलती रही। जैसे साधुओं का विद्या-पठन, लगातार लंगर-व्यवस्था का चलते रहना और समय-समय पर आश्रम का भवन निर्माण आदि।

इस प्रकार आश्रम की सेवा संभाल करते समय जीवन सुखपूर्वक व्यतीत हो रहा था। उधर सिंधी संगत आप जी को बाबा बुड्ढा सिंह जी का स्वरूप समझती हुई सिंध जाने के लिए बार-बाद निवेदन करती थी, लेकिन आप आश्रम के कुछ कार्य और अन्य सम्बन्धित स्थानों—कनखल, मसूरी और काशी की देख-रेख के कारण डेढ़ वर्ष कहीं नहीं गए। अंततः कराची, हैदराबाद की संगत बहुत व्याकुल हो गई थी, इसलिए उनके प्रेमवश सिंध जाने का वचन दे दिया।

महंत बनने के उपरान्त पहली बार सिंध जाना

बड़े महापुरुष हैदराबाद में प्लाट खरीद कर निर्मल आश्रम की नींव रख गए थे और उसके प्रबन्ध के लिए विशेष प्रेमियों का न्यास भी बना गए थे। अब आश्रम बनकर तैयार हो गया। उसके मुहूर्त के लिए न्यास के कुछ सदस्यों ने महंत आत्मा सिंह जी को ऋषिकेश आकर प्रार्थना की। आप ने उनकी प्रार्थना स्वीकार करके सिंध जाने की तैयारी कर ली। निश्चित दिन अर्थात् 25 जुलाई 1939 को संत बलवंत सिंह जी, संत नारायण सिंह जी, संत करतार सिंह जी, संत देवा सिंह जी और पंडित सुच्चा सिंह जी को साथ लेकर रेल द्वारा श्री अमृतसर पहुँचे। यहाँ एक दो दिन रुक कर हरिमंदिर साहिब आदि गुरु स्थानों के दर्शन करके हैदराबाद को प्रस्थान किया। हैदराबाद स्टेशन पर भारी संख्या में संगत पहुँची हुई थी। इस प्रकार बड़े आदर-मान के साथ आप जी को निवास स्थान पर ले गए। बड़े महापुरुषों की भाँति प्रातः-सायं सत्संग आरम्भ हुआ। प्रातः ज्ञानी बलवंत सिंह जी गुरु शब्द की कथा करते, सायं को संत नारायण सिंह जी प्रवचन करते थे। प्रेमी जन बड़े महापुरुषों का स्वरूप जान कर अपने घरों में चरण स्पर्श करवाते और पारमार्थिक लगन वालों की शंकाओं का निवारण करते। इस प्रकार सत्संग, पारमार्थिक विचार द्वारा समय सफल करते 11 जुलाई 1939 ई० वाले दिन नए बने निर्मल आश्रम का श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के अखण्ड पाठ के भोग उपरान्त उद्घाटन समारोह किया गया। भोग के उपरान्त कथा कीर्तन के पश्चात् गुरु लंगर के खुले भण्डारे किए गए। इस समागम पर कराची, ठँटे आदि स्थानों से भी संगत पधारी थी, इसलिए दूसरे दिन तारा चंद चेती बाई और ठँटे की संगत गोपाल आदि प्रेमियों की प्रार्थना स्वीकार करके कराची पहुँचे।

यहाँ कुछ दिन संगत की श्रद्धा-भावना पूर्ण करते हुए, गुरुवाणी द्वारा अमृतवाणी वर्षा करके वापिस हैदराबाद आ गए। इधर बड़े महापुरुषों की पुण्य तिथि समीप आ गई। उधर संगत का अधिक प्रेम देखकर ज्ञानी बलवंत सिंह जी, संत देवा सिंह, संत करतार सिंह जी और पंडित सुच्चा सिंह जी को कुछ समय के लिए हैदराबाद रुकने का वचन करके अपने शिष्य नारायण सिंह जी को साथ लेकर वापिस कनखल पहुँच कर पुण्य तिथि की तैयारी की जो कि 14 अक्तूबर 1939 ई० को अखण्ड पाठ साहिब जी के भोग उपरान्त लंगर के खुले भण्डारे वितरित कर बड़ी धूमधाम के साथ मनाई।

सेठ सतरामदास की पुत्रियों का विवाह

सिंधी संगत आपको बाबा बुड्ढा सिंह जी का स्वरूप जानकर ही प्रेम करती थी। प्रेमियों ने कोई भी कार्य करना होता आपसे सलाह अवश्य पूछते। कोई नए बनाए मकान का मुहूर्त अथवा कोई व्यापार आदि आरम्भ करना होता तो मुहूर्त आप जी से ही करवाते थे। बच्चों के विवाह तो प्राय: आपकी उपस्थिति में ही करते इसलिए वर्ष का आधा समय तो सिंध, बम्बई, दिल्ली अथवा लंका आदि स्थानों में ही व्यतीत होता। कभी-कभी भक्तों के प्रेमवश, कोई विवाह आदि विशेष अवसरों पर, एक वर्ष में दो बार भी सिंध आना-जाना हो जाता। इस प्रकार संगत की प्रार्थना स्वीकार करके 15 दिसम्बर 1946 को हैदराबाद पहुँचकर निर्मल आश्रम में निवास किया। यहाँ पंद्रह दिन सत्संग उपदेश करके दीवान सतरामदास चैनानी की प्रार्थना स्वीकार करते हुए 30 दिसम्बर 1946 ई० वाले दिन कराची पहुँचे, क्योंकि इस प्रेमी ने अपनी तीन पुत्रियों के विवाह के लिए प्रार्थना करके पहले ही समय लिया हुआ था। कराची पहुँच कर श्री चैनानी के घर ही निवास किया। सत्संग में संत नारायण सिंह जी प्रतिदिन कथा किया करते थे। इस सत्संग में हैदराबाद, शिकारपुर, कराची और ठँटे की संगत आती रहती थी। इस प्रकार कोई तीन मास कराची रुके रहे, अंतत: अप्रैल 1947 के प्रथम सप्ताह दीवान सतरामदास चैनानी की बेटी सुंदरी का विवाह इन्दरू के साथ, रत्ना का विवाह निहाल के साथ और सावित्री का विवाह आतू के साथ हुआ।*

इस प्रकार चैनानी परिवार की तीन पुत्रियों का विवाह बड़े उत्साह के साथ हुआ। आप सबको शुभ आशीर्वाद देकर अंतत: 24 अप्रैल 1947 ई० को कराची से चल कर 27 अप्रैल 1947 को वापिस कनखल आ गए। यहाँ कुछ दिन ठहरने के पश्चात् बनारस वाले स्थान की देख-रेख करने के लिए बनारस पहुँचे। वहाँ कुछ दिन ठहर कर महात्माओं को भण्डारा करने के पश्चात् वापिस कनखल आ गए। अब बड़े महापुरुषों की पुण्य तिथि भी समीप आ गई थी।

महंत आत्मा सिंह जी की उदारता

दीपावली का त्योहार और अन्य गुरु स्थानों के दर्शनार्थ 1954 ई० में आप श्री अमृतसर साहिब पहुँचे। कुछ दिन यहाँ रुककर दीपावली का उत्सव समाप्त होने पर तरन-तारन, खडूर साहिब और गोइंदवाल दर्शन करके फतहगढ़ साहिब (सरहिंद) आ गए। यहाँ दर्शन-दीदार करके श्री आनंदपुर साहिब और कीरतपुर के पावन स्थानों की यात्रा की। इस प्रकार पंजाब में पवित्र गुरु स्थानों की यात्रा करके कनखल पहुँचे तो दोपहर का भोजन लेने के बाद सेवादारों को पूछा-आज विरक्त कुटिया में लंगर की घंटी नहीं सुनाई दी? किसी ने बताया—कि कई दिन से ऐसा ही है, कभी सुनती है कभी नहीं सुनती। आप चलकर विरक्त कुटिया गए, पता किया कि घंटी क्यों नहीं बजी? संत-महात्माओं ने बताया कि कई दिन से राशन नहीं है, कभी आ जाए तो बना लेते हैं, न हो तो परमेश्वर का धन्यवाद कर देते हैं। इसलिए लंगर बन्द है। साधुओं की ऐसी हालत देखकर मन में करुणा का उदय हुआ, वापिस डेरे आकर समस्त सेवादारों और संतों को साथ लेकर राशन अपने सिर पर उठाकर विरक्त कुटिया पहुँचाया। कुटिया के प्रबन्धकों को बोले, जिस दिन राशन न हो, हमें बताना, लेकिन घंटी प्रतिदिन सुननी चाहिए। गुरु नानक देव महाराज जी का लंगर कभी बन्द नहीं होना चाहिए। वहाँ से कुछ साधुओं को साथ लेकर आश्रम में से और राशन उठाया। इस प्रकार निर्मल विरक्त कुटिया में छ: मास का राशन जमा कर दिया।

* *यह स्त्री सुंदरी वृद्धावस्था में बम्बई के मलाड़ क्षेत्र में अपना आदर्श जीवन व्यतीत कर रही है और दोनों अन्य अर्थात् रत्ना और सावित्री बम्बई के ही मुलंद क्षेत्र में गुरु घर की स्मृति हृदय में बसाकर जीवन व्यतीत कर रही हैं।*

श्रीलंका की यात्रा

कोलम्बो से सेठ भगवानदास हृदयरमानी ने एक पत्र द्वारा प्रार्थना की कि कृपा करके लंका की संगत को दर्शन दीदार दो और पत्र के साथ ही मार्ग-व्यय भी मनीआर्डर के द्वारा भेज दिया। आप ने भक्तों की प्रार्थना स्वीकार करते हुए कोलम्बो जाने का प्रोग्राम बनाकर पत्र द्वारा भगवान दास को सूचित कर दिया। उधर दीवान दीवाने मल का पत्र आ गया जिसमें बम्बई दर्शन देने के लिए प्रार्थना की गई थी। दीवाने मल की प्रार्थना स्वीकार करके पत्र भेज दिया कि श्रीलंका से वापिस आकर तुम्हारे पास रुकेंगे। कुछ दिन आश्रम के काम-काज की देख-रेख करके 17 फरवरी 1954 को लंका प्रस्थान किया। मार्ग में एक दो दिन नागपुर रुक कर एक फरवरी को मद्रास पहुँचे। इस यात्रा के दौरान संत मदन मोहन हरि जी, संत नारायण सिंह जी और संत दर्शन सिंह साथ थे। मद्रास स्टेशन पर सेठ लाल चंद, धर्मदास, परस राम और सुखराम महितानी आदि सेवक स्वागतार्थ पहुँचे हुए थे। सुखराम महितानी अपनी कार में महापुरुषों को बड़े प्रेम के साथ घर लेकर गया। लंका जाने के लिए कागज़ पत्र तैयार होने में कई दिन लग गए, इतने दिन सेठ सुखराम के घर ही सत्संग होता रहा। काफी संगत सत्संग में पहुँच कर लाभ उठाती रही। कागज़ पत्र तैयार होने पर 7 मार्च 1954 वाले दिन वायुयान द्वारा मद्रास से श्रीलंका पहुँचे। आगे बहुत संगत हवाई अड्डे पर पहुँची हुई थी। सेठ भगवान दास तो समस्त परिवार सहित पहुँचा हुआ था। संगत ने हार आदि डालकर आदर किया, उपरान्त कार द्वारा भगवान दास के बंगले पहुँचे। गुरु घर की मर्यादा अनुसार गुरुवाणी विचार, सत्संग आरम्भ हो गया, संगत भी पर्याप्त संख्या में आनी आरम्भ हो गई। सत्संग कबीर जी के इस शब्द द्वारा आरम्भ हुआ।

भूखे भगति न कीजै॥ यह माला अपनी लीजै॥

(सोरठि कबीर जी पृष्ठ ६५६)

इस पवित्र शब्द की दो मास कथा चलती रही। इस प्रकार पर्याप्त संख्या में संगत पहुँच कर लाभ उठाती रही। सेठ भगवान दास हृदयरमानी ने भी दो मास सेवा का पर्याप्त लाभ उठाया। महापुरुषों को अपनी कार में बिठाकर लंका के मुख्य स्थलों और बौद्ध मंदिरों की यात्रा करवाई। उधर बम्बई की संगत को आपने लंका के पश्चात् बम्बई पहुँचने का वचन दिया था, इसलिए लंका की संगत को प्यार, प्रेम और गुरुवाणी रूपी अमृत के मुक्त भण्डार वितरित कर 9 मई 1954 को वायुयान के द्वारा लंका से मद्रास आ गए। मद्रास वाला सेठ द्वारिका दास लंका से साथ ही आ गया था और मद्रास की दूसरी संगत भी हवाई अड्डे पर पहुँची हुई थी। सब संगत आप को बड़े प्रेम सत्कार के साथ मिली, उपरान्त द्वारिका दास के घर जाकर विराजमान हुए। एक सप्ताह यहाँ सत्संग प्रवचन करके 18 मई 1954 को मद्रास से रेल मार्ग द्वारा बम्बई पहुँच गए। आगे सब संगत स्टेशन पर पहुँची हुई थी। सबको मिल मिलाकर दीवान दीवाने मल को दिए वचनानुसार उसके घर निवास किया। प्रतिदिन सत्संग में संत नारायण सिंह जी कथा करते थे। कराची, हैदराबाद, शिकारपुरी और ठॅटे वाली संगत प्रतिदिन वहाँ आती। इस प्रकार लगभग पौने तीन मास यहाँ ठहर कर गुरुवाणी सिद्धान्त के द्वारा सत् उपदेश करते रहे और संगत के मन में परमार्थ का बीज बीजते रहे। अंतत: सब संगत की ओर से प्रेम हर्ष को बटोर कर 12 अगस्त को बम्बई से चलकर 15 अगस्त 1954 को वापिस कनखल आ गए। यहाँ ठहर कर ऋषिकेश, मसूरी आदि स्थानों की कुछ दिन देख-रेख की।

संत मान सिंह जी का परलोक गमन

संत मान सिंह डेरे के छोटे महंत थे। उनका जन्म 1895 ई० को पटियाला राज्य के गाँव 'भैणी' में हुआ था। 32 वर्ष की आयु में अर्थात् 1927 ई० में महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी की शरण में आए। महापुरुषों की आज्ञा में रहकर सेवा करते रहे और साथ ही साथ गुरु घर के ग्रन्थ भी पढ़ते रहे। बड़े महंत साहिब जहाँ जाते थे, वहाँ प्रायः इनको साथ लेकर जाते थे। स्वभाव के आप जन्म से ही विनम्र थे जिसके कारण शीघ्र ही बड़ों के कृपा पात्र बन गए। भजन, पाठ और साधु-अतिथियों की सेवा बड़े प्यार से करते हुए देखकर बड़े महंत साहिब जी ने श्रीमान् महंत आत्मा सिंह जी को महंती की पगड़ी देते समय आपको भी छोटा महंत नियत कर दिया। बड़े महापुरुषों के परलोक गमन के पश्चात् आप ऋषिकेश आश्रम की देख-रेख बड़ी सूझ-बूझ एवं विनम्र भाव से करते रहे। कभी कभार कलकत्ता, बम्बई आदि स्थानों की यात्रा पर भी महंत आत्मा सिंह जी के साथ जाते थे। आप स्वभाव के अत्यन्त विनम्र और विद्वान महात्मा थे। स्वयं अपने हाथ से सेवा करने का शुरू से अभ्यास था। महंत आत्मा सिंह जी तो संगत के प्रेम के आकर्षण के कारण प्रायः यात्रा पर ही रहते थे। उनके पीछे से समस्त स्थानों की देखभाल का भार आप जी के कंधों पर ही रहता था। इस प्रकार सेवा रूपी भारी तपस्या और भजन सिमरन करते समय व्यतीत होता गया। अंततः परमेश्वर के आदेशानुसार 24 जुलाई 1958 वाले दिन आपके शरीर पर पक्षाघात हुआ। महंत आत्मा सिंह जी ने आपजी को कनखल डेरे में रखकर अच्छे-अच्छे डॉक्टरों से इलाज करवाया और शरीर की देखभाल के लिए दो सेवादार रखे गए लेकिन कोई अन्तर न आया। औषधि उपचार करने के बावजूद बहुत लम्बे समय तक शरीर पर भारी कष्ट सहन कर अंततः 17 फरवरी 1960 वाले दिन इस नश्वर संसार को सदा के लिए विदा कर दिया। सारे गुरु भाइयों और संत समाज में आपके वियोग का बहुत शोक हुआ, क्योंकि आप सबको नम्रता भाव से दिल से प्रेम करते थे। शरीर को जल प्रवाह करने के पश्चात् महंत आत्मा सिंह जी ने गुरु भाइयों की सलाह से आपकी स्मृति में सात श्री अखण्ड पाठ साहिब किए। 27 फरवरी वाले दिन पाठों की सम्पूर्ण समाप्ति पर संत महापुरुषों की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलियाँ भेंट की गईं, उपरान्त खुला लंगर चलाया गया।

लखनऊ और बम्बई की यात्रा

लखनऊ से रामचन्द खुशहाल दास ने महंत बाबा आत्मा सिंह जी को अपने पुत्र के विवाह पर पहुँचने के लिए प्रार्थना की जो आप जी ने स्वीकार कर ली। आप तैयारी करके निश्चित दिन पर रेल मार्ग से 9 जनवरी, 1961 ई० को लखनऊ पहुँच गए। निश्चित दिन पर अर्थात् 11 जनवरी को विवाह हुआ। आप जी ने युगल को आशीर्वाद और शुभ शिक्षा दी। दिनांक 15 को एक सेवक मोहन सिंह स्वरूप सिंह अडवानी की पुत्री शकुन्तला का विवाह गुरुद्वारा साहिब में पूर्ण गुरु मर्यादा अनुसार आप की उपस्थिति में हुआ। इस प्रकार कुछ दिन लखनऊ ठहर कर रुक्मा देवी और किशन मलकानी की प्रार्थना स्वीकार करते हुए बम्बई पहुँचे। यहाँ रुक्मा देवी के घर निवास किया। इस बार संत नारायण सिंह और संत दर्शन सिंह आप जी के साथ गए हुए थे। प्रतिदिन सत्संग में संगत एकत्रित होती। संत नारायण सिंह जी प्रतिदिन गुरुवाणी के शब्द की कथा किया

करते थे। इन दिनों ही किशन मलकानी का माया* के साथ विवाह हुआ जिसमें आप जी को प्रार्थना करके विशेष तौर पर बुलाया गया था। इस प्रकार लगभग तीन मास तक बम्बई की संगत को दर्शन उपदेश द्वारा प्रसन्न करके और कई प्रेमियों के सांसारिक कार्य सम्पूर्ण कर 24 अप्रैल 1961 को वापिस कनखल आ गए।

1962 ई० का कुंभ उत्सव

कुंभ के लोक प्रसिद्ध उत्सव पर सब मत मतांतरों के हज़ारों की संख्या में साधु महात्मा और लाखों की गिनती में आम श्रद्धालु पहुँचते हैं। प्रत्येक सम्प्रदाय की ओर से अपनी मर्यादा के अनुसार 'शाही' नगर कीर्तन (जलूस) निकाला जाता है। निर्मल सम्प्रदाय की ओर से श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की अगवाई में नगर कीर्तन (जलूस) निकलता है। इस नगर कीर्तन (जलूस) का सारा प्रबन्ध और खर्चा निर्मल पंचायती अखाड़ा करता है। यह उत्सव कोई एक मास तक चलता रहता है जिसमें निर्मल सम्प्रदाय की ओर से कलगीधर पातशाह की ओर से दिया हुआ केसरी निशान साहिब-(जिसको धर्म ध्वजा कहा जाता है) सुशोभित होता है। जिस दिन से यह निशान साहिब खड़ा किया जाए जो कि उत्सव की समाप्ति से लगभग एक मास पूर्व होता है, उस दिन से निर्मल साधुओं के निवास और लंगर की व्यवस्था निर्मल पंचायती अखाड़ा की ओर से की जाती है जो कि मेले की समाप्ति तक बराबर चलती रहती है। इसमें राजा-महाराजा और बड़े-बड़े व्यक्ति भी अखाड़े की ओर से पहले कोई तिथि लेकर लंगर करते रहते हैं। जिस दिन से धर्म पूजा का निशान खड़ा किया जाता है, उस दिन नगर कीर्तन (जलूस) निकाला जाता है और दूसरा नगर कीर्तन (जलूस) उत्सव की समाप्ति पर अर्थात् बैसाखी वाले दिन निकालते हैं। इस नगर कीर्तन में सबसे आगे गुरु ग्रन्थ साहिब जी की पालकी, उसके पीछे निर्मल अखाड़े के श्री महंत एक सुसज्जित हाथी पर सवार होते हैं। उसके पश्चात् निर्मल समाज में अन्य कोई संत प्रतिष्ठित महात्मा, उनके पीछे नियमानुसार हाथियों और रथों पर साधु महात्मा सजे होते हैं। यह समस्त प्रबन्ध अखाड़ा की देख-रेख में सम्पन्न होता है। इस बार धर्म ध्वजा वाले दिन जो पहले नगर कीर्तन (जूलस) निकला उसमें श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के बाद श्री महंत साहिब श्रीमान सुच्चा सिंह जी एक सुन्दर एवं सुसज्जित हाथी पर सवार थे। उसके पश्चात् महंत आत्मा सिंह जी हाथी की सवारी कर रहे थे। बाद में अन्य संत महात्मा हाथी और रथों पर सवार थे। इस प्रकार शाही जलूस अर्थात् नगर कीर्तन नगर के मुख्य-मुख्य बाज़ारों में से होता हुआ सायं को निर्मल छावनी जाकर समाप्त हुआ। नगर कीर्तन (जलूस) की समाप्ति पर महंत आत्मा सिंह जी ने भी सभा में वचन किया कि जिस दिन अन्य किसी का लंगर न हो तो हमारी ओर से किया जाए और उत्सव के दौरान कड़ाह प्रसाद की अरदास हमारी ओर से हो। उसी समय श्री महंत साहिब जी को पर्याप्त सहायता भी दी और कहा कि और जितना खर्च होगा उत्सव की समाप्ति पर दे दिया जाएगा। बैसाखी वाले दिन उत्सव की सम्पूर्णता पर नगर कीर्तन (जलूस) की तैयारी की गई। पहले की भाँति एक हाथी आप जी के लिए सजाया गया, लेकिन आपने हाथी पर बैठने से इन्कार करते हुए कहा कि आज किसी अन्य महात्मा को आदर दो, आप एक टैक्सी में सवार हुए। इस प्रकार उत्सव की सम्पूर्ण समाप्ति हो गई।

अंतिम शय्या

इस प्रकार समय व्यतीत होता गया। संगत की प्रार्थना पर प्रत्येक वर्ष दिल्ली, बम्बई, पूना, लखनऊ और कलकत्ता

---

* *यह प्रेमी किशन मलकानी और उनकी धर्मपत्नी माया बम्बई वाले आश्रम के अति निकट रहते हैं, जोकि आश्रम को हृदय से प्रेम करते हुए सेवा का हर प्रकार से लाभ उठाते रहते हैं।*

आदि स्थानों पर जाते थे, इसलिए वर्ष का आधे से अधिक समय यात्रा पर ही व्यतीत होता था और शरीर भी काफी वृद्ध हो चुका था। सन् 1967 जनवरी के दिन थे। एक दिन की बात है संत नारायण सिंह जी को बुलाकर आज्ञा दी, कारीगर को बुलाओ, एक मंच बनवाना है। कारीगर बुलाया गया, उसको कहा, दरबार साहिब और गद्दी वाले कमरे के मध्य छः फुट लम्बा और चार फुट चौड़ा एक मंच बनाओ। जब सब सामान तैयार करके कारीगर ने काम आरम्भ किया तो आप कुर्सी डालकर पास बैठे देखते रहे। दूसरे सभी महात्मा आश्रम में एक दूसरे को मंच बनाने का कारण पूछते थे, लेकिन उन्हें समझ में कुछ नहीं आया। अंततः संत करतार सिंह जी ने हौसला करके पूछ ही लिया, महाराज! यह मंच का काम किस लिए किया जा रहा है? आप किंचित मुस्करा कर बोले—करतार सिंह! शरीर जब अधिक थक जाए, इस मंच पर आराम कर लेगा।

उत्तराधिकारी

महंत आत्मा सिंह जी ने अपने शरीर की वृद्ध अवस्था को देखकर और आज्ञाकारी शिष्य संत नारायण सिंह जी की सेवा पर प्रसन्न होकर उनको अपना उत्तराधिकारी स्थापित करने का मन में दृढ़ निश्चय कर लिया। एक दिन 24 अप्रैल 1970 को बिना किसी को बताए चुपचाप संत करतार सिंह जी को साथ लेकर सहारनपुर पहुँचे। डेरे के समस्त कागज़ात तो साथ लेकर ही गए थे। वे समस्त कागज़ात वकील राम गोपाल को दिखाकर कहा कि डेरे की जितनी चल अचल सम्पत्ति है, उस सब की वसीयत संत नारायण सिंह के नाम लिख दो। मैं उसकी सेवा से प्रसन्न होकर और प्रत्येक दृष्टि से योग्य समझ कर बाबा बुड्ढा सिंह जी की धरोहर उसके आँचल में डाल रहा हूँ। वकील ने कहे अनुसार वसीयत लिखकर जज से रजिस्टर्ड करवा दी। वापिस आश्रम पहुँच कर भी किसी से इस बात का जिक्र नहीं किया।

क्षेत्र आरम्भ करना

लगभग 1970 ई० की बात है आप जी ने विरक्त शिरोमणि महाराज निक्का सिंह जी की प्रेरणा से प्रातः का क्षेत्र (गुरु का लंगर) आरम्भ किया। गंगा के तट पर तप साधना करने वाले महात्मा जिनका अपना कोई स्थान नहीं, केवल नीले गगन की छत के नीचे ही प्यारे की खोज में लगे हुए थे और झोंपड़ियों वाले गरीब लोग, सड़कों के किनारे बैठे लूले-लंगड़े, बीमारी एवं अन्य जरूरतमंदों के लिए, प्रातः सात बजे गर्म-गर्म चाय के साथ नाश्ता क्षेत्र आरम्भ किया ताकि सारी रात सर्दी से ठिठुरते लोगों को प्रातः सर्दी एवं पेट की भूख से कुछ राहत मिले। गुरु नानके के घर का मिशन जो कि बिना किसी भेद-भाव और धार्मिक कट्टरता से ऊपर उठकर जरूरतमंदों की सहायता करता है, वह पूरा हो सके। इस शुभ कार्य के लिए बैंक में कुछ रुपया जमा करवा दिया ताकि बिना किसी रुकावट के पर-उपकार रूपी यह पुनीत सरिता अपनी मौज में सदैव प्रवाहमान रहे।

अखाड़े प्रति श्रद्धा और प्रभु का निरंतर स्मरण

आपका पवित्र ध्येय जहाँ निर्धनों, ज़रूरतमंदों और साधु महात्माओं की सेवा के लिए सागर के समान व्यापक था वहाँ निर्मल पंचायती अखाड़ा के प्रति भी श्रद्धा से भरपूर था। आपका जब भी कनखल ऋषिकेश से बाहर यात्रा के लिए जाना होता जो कि वर्ष में एक बार तो पक्का ही था, कभी-कभी दो या तीन बार भी आना होता था, लेकिन जब भी आते पहले अखाड़े अवश्य जाते। दर्शन करने के उपरान्त श्री महंत साहिब जी की 'पूजा भेंट' करते, इसी प्रकार यात्रा के आने के बाद भी अवश्य

करते। इसके अतिरिक्त भी श्री महंत साहिब यदि कहीं भी मिल जाते तो सौ रुपया अवश्य उनको भेंट किया करते थे। आप निर्मल पंचायती अखाड़ा को निर्मल सम्प्रदाय में सब से सर्वोच्च मानते थे इसलिए आपने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के प्रति सत्कार के लिए सोने-चाँदी से जड़ी एक बहुत सुंदर पालकी बनाकर अखाड़े को भेंट की जिसका आज के समय कई लाख रु० मूल्य है। अखाड़े वाले इस पवित्र पालकी को कभी-कभी अर्थात् कुंभी जैसे विशिष्ट अवसरों पर बाहर लाते हैं। इस प्रकार आपजी ने जीवन-दाता महंत बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी की पवित्र स्मृति को अक्षुण रखने के लिए 26 अप्रैल 1971 को निर्मल पंचायती अखाड़ा कनखल द्वारा पंजाब नैशनल बैंक, कनखल के खाते में बत्तीस हजार एक रु० सदा के लिए जमा करवा दिए ताकि उसके ब्याज से बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी की स्मृति में प्रतिमास एक श्री सहज पाठ का भोग और प्रतिदिन सारे वर्ष ही कड़ाह प्रसाद की अरदास होती रहेगी।

मिट गए गवन

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि॥

म्रित मंडल जगु साजिआ जिउ बालू घर बार॥
बिनसत बार न लागई जिउ कागद बूंदार॥ १॥
सुनि मेरी मनसा मनै माहि सति देखु बीचारि॥
सिध साधिक गिरही जोगी तजि गए घर बार॥ रहाउ॥
जैसा सुपना रैनि का तैसा संसार॥
द्रिसटीमान सभु बिनसीऐ किआ लगहि गवार॥ २॥
कहा सु भाई मीत है देखु नैन पसारि॥
इकि चाले इकि चालसहि सभि अपनी वार॥३॥
जिन पूरा सतिगुरु सेविआ से असथिरु हरि दुआरि॥
जनु नानकु हरि का दासु है राखु पैज मुरारि॥

(राग बिलावलु म० ५ घर ५ पृष्ठ ८०८)

कालातीत पुरुष (अकाल पुरखु) वाहिगुरु के अटल नियमानुसार संसार की कोई वस्तु स्थिर नहीं है। इसलिए इसका नाम 'मृत मण्डल' है अर्थात् मृत्यु लोक। प्रत्येक जीवन जन्मते ही मृत्यु के विकराल दु:ख में जाने की यात्रा आरम्भ कर देता है। जितनी भी दृश्यमान् प्रतीति है, सब काल से ही उत्पन्न होती है और काल ही सब का अंत कर देता है। यथा गुरु गोबिन्द सिंह जी फ़रमाते हैं—

काल ही ते होए सभ काल ही चबाए है।
यथा— काल पाइ ब्रह्म बपुधरा॥ काल पाइ सिवजू अवतरा॥
काल पाइ कर बिसन प्रकाश॥ सकल काल का कीया तमासा॥

सृष्टि की उत्पत्ति, पालन-पोषण एवं नाश करने वाले तीनों प्रतिनिधि देवता जन भी काल के अधीन हैं तो उत्पन्न हुए जीवों की क्या गति हो सकती है? इसलिए—

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि॥

(श्लोक महला ९, पृष्ठ १४२९)

यथा— रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु।
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु॥

(श्लोक महला ९, पृष्ठ १४२९)

1950 के कुंभ उत्सव पर शाही जलूस के समय महंत आत्मा सिंह जी महाराज

स्वर्ण जटिल सुन्दर पालकी जो महंत आत्मा सिंह जी महाराज द्वारा निर्मल पंचायती अखाड़ा कनखल को भेंट की गई

संत मान सिंह जी

महन्त
नारायण सिंह जी
महाराज

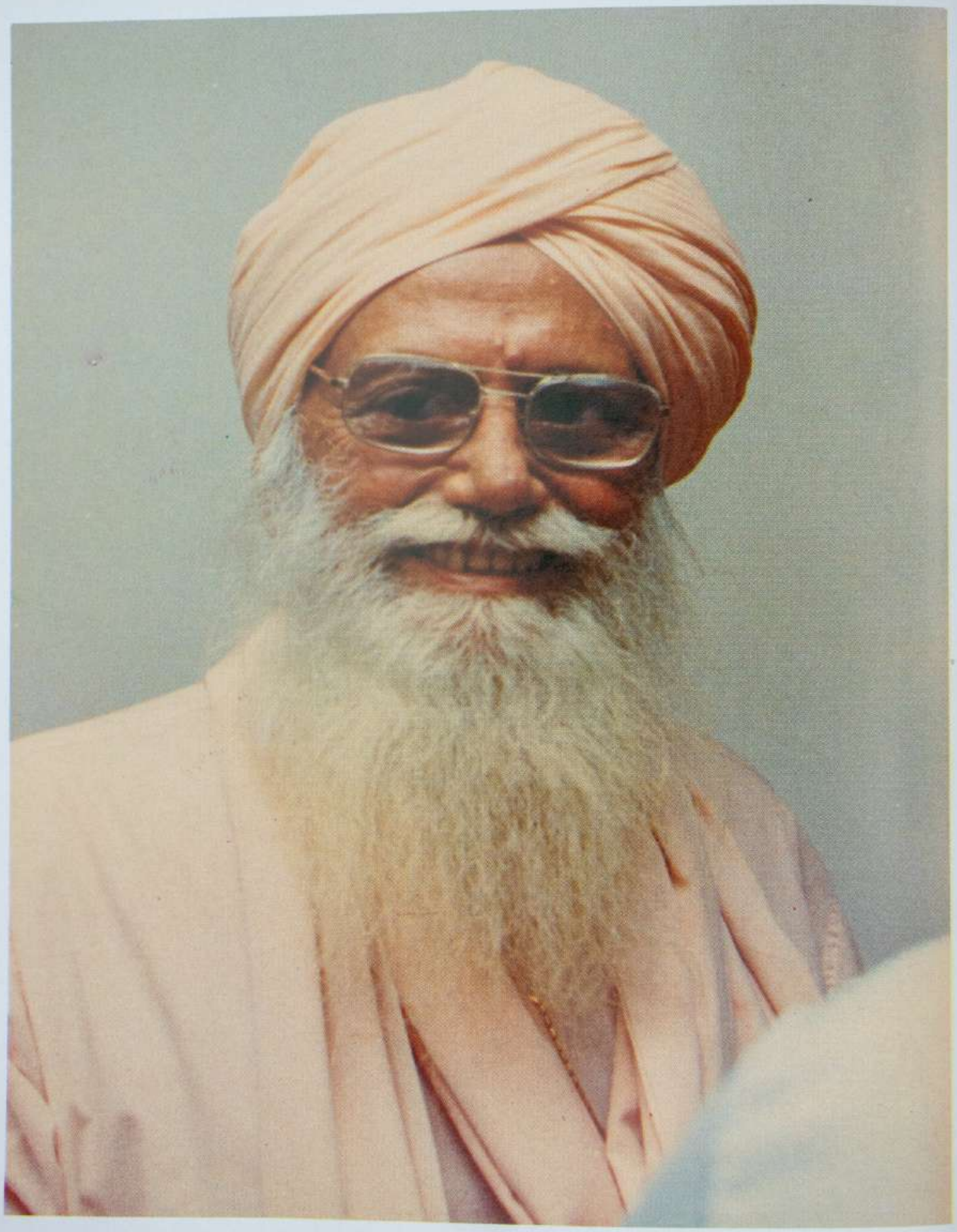

महंत नारायण सिंह जी महाराज

यथा— राणा राउ न को रहै रंगु न तुंगु फ़कीरु॥
वारी आपो आपणी कोइ न बंधै धीर॥

(दखणी ओंकार, पृष्ठ १३६)

अभिप्राय यह है कि जिसने भी शरीर धारण किया है, राणा, राउ, पीर, फ़कीर, अवतार अर्थात् दृश्यमान् जगत की प्रत्येक वस्तु काल के अधीन है। काल रहित तो केवल एक निराकार परमात्मा ही है, जो अकाल, अवस्तु और अदृष्ट है। काल नाम है समय का, जो वस्तु प्रत्येक समय, प्रत्येक स्थान पर व्यापक है उसमें काल का नामो निशान नहीं है। दशम् पातशाह महाराज उस महान् शक्ति को ही नमस्कार कर रहे हैं—

जवन कालु सभ लोक सवारा॥
नमसकार है ताहि हमारा॥

काल की ऐसी विचित्र लीला के अधीन ही महंत बाबा आत्मा सिंह जी का बली शरीर पल-पल, क्षण-क्षण क्षीण होता जा रहा था। बीमारी कोई भी नहीं। आयु अधिक होने के कारण सारी इन्द्रियां, हाथ-पैर आदि शक्तिहीन होते जा रहे थे। संत नारायण सिंह जी डॉक्टरों को बार-बार दिखा रहे थे, लेकिन डॉक्टरों का कहना था, रोग तो कोई है नहीं, निर्बलता है, इसको दूर करने के लिए ताकत की दवाई देते रहे। अंतत: 9 अगस्त 1973 ई० वाले दिन अचानक स्वास्थ्य कुछ खराब हो गया। संत नारायण सिंह जी ने डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर ने एक टीका लगाकर पानी के साथ गोली दी। फिर सिरहाना देकर लिटा दिया गया। आखिर सायं के चार बजे आप स्वयं ही उठकर बाहर बने मंच पर लेट गए। संत नारायण सिंह जी को आज्ञा की, हमारे शरीर के बाद विरक्त महाराज जी को हमारा स्वरूप ही समझना। प्रत्येक कार्य उनकी सलाह से करना, डेरे आए प्रत्येक अतिथि के साथ आदरपूर्वक व्यवहार करना आदि उपदेश करते-करते अचानक पौने पाँच बजे वचन और ज़बान बंद कर ली। शीघ्र ही डॉक्टर को बुलाया गया लेकिन बचाने के सब प्रयत्नों को असफल करके सायं के ठीक पाँच बजे अपने पाँच भौतिक शरीर को ऐसे त्याग गए जैसे सर्प अपनी केंचुली को त्याग देता है। संत करतार सिंह जी को जो उस समय पास ही खड़े थे, सात वर्ष पूर्व किए गए वचन एक दम याद आ गए—करतार सिंह! शरीर जब अधिक थक जाए, इस मंच पर आराम कर लेगा।

अंतिम क्रिया

दूसरे दिन अर्थात् 10 अगस्त 1973 वाले दिन ऋषिकेश और हरिद्वार कनखल से काफी संख्या में संत महात्मा और डेरों के महंत निर्मल आश्रम पहुँच गए। विरक्त महाराज जी को करनाल किसी व्यक्ति को भेजकर संदेश दिया गया। महाराज जी, भगत लॅभामल सहित कार द्वारा ऋषिकेश पहुँच गए।

अरदास करके दिन के दो बजे अंतिम यात्रा आरम्भ हुई। शोकाकुल जलूस नगर के मुख्य बाज़ारों से होता हुआ शाम के 6 बजे गंगा के पवित्र तट पर पहुँचा। अंतत: कीर्तन सोहिला के पाठ के पश्चात् अरदास करके पवित्र शरीर को नाव द्वारा गंगा की पवित्र गोद में सदा की नींद सुला दिया। दूसरे दिन संत नारायण सिंह जी ने कनखल, अमृतसर, काशी, बम्बई और दिल्ली आदि स्थानों पर तारों और पत्रों द्वारा समाचार पहुँचा दिया। 25 अगस्त, 1973 को अखण्ड पाठ साहिब के भोग उपरान्त रस्म दस्तार-बंदी हुई। सबसे पहले निर्मल पंचायती अखाड़ा की ओर से श्री महंत पंडित सुच्चा सिंह जी ने महंत नारायण सिंह जी को पगड़ी बंधाई, उपरान्त अन्य स्थानों, समुदायों और गृहस्थी प्रेमियों की ओर से दस्तारें और उपहार अर्पण किए गए।

कुछ विशेष झलकियाँ

- आप जी का जन्म फ़िरोज़पुर ज़िले के गाँव 'पत्तो हीरा सिंह' में सन् 1885 ई० में हुआ।
- आप 1908 ई० में महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी की शरण में आए।
- 1931 ई० में महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी ने आपको महंती की पगड़ी देकर नवाजा।
- 1966 ई० में आपने निर्मल पंचायती अखाड़ा को सोने की पालकी बनवाकर भेंट की।
- 1967 ई० में आपने वह मंच बनवाया जिस ऊपर अंतिम समय प्राण त्यागे।
- 1970 ई० में आपने संत नारायण सिंह जी को अपना उत्तराधिकारी नियत किया।
- 1970 ई० में ही साधु एवं अन्य निर्धनों के लिए प्रात: जलपान का क्षेत्र आरम्भ किया।,
- 1971 ई० में आपने बाबा बुड्ढा सिंह महाराज के निमित्त प्रतिमास एक सहज पाठ और प्रतिदिन कड़ाह प्रसाद की देग बनवाने के लिए निर्मल पंचायती अखाड़ा के नाम 32001/- रु० बैंक में जमा करवाए।
- 1973 ई० तक आश्रम में जितने भवन बने, उनमें से अधिकांश की सेवा आपके कर कमलों से ही हुई।
- 9 अगस्त, 1973 को सायं पाँच बजे इस संसार से अपनी जीवन-लीला समाप्त की।

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि॥

4
अध्याय

महंत नारायण सिंह जी महाराज

जीवन चरित्र महंत नारायण सिंह जी

आपका जन्म होशियारपुर नगर (पंजाब) में पिता संतोख सिंह के घर माता रली की पवित्र कोख से सन् 1905 ई० में हुआ। सरदार संतोख सिंह जी श्रम करके परिवार का पालन-पोषण करते थे। आपके पाँच बालक थे, सबसे बड़ी पुत्री थी जिसका नाम रामरक्खी था, उससे छोटा पुत्र हरि सिंह था जो बाद में साधु बनकर अधिक समय काशी में रहा और कुछ समय हरिद्वार कनखल भी रहा। तीसरे नम्बर पर नारायण सिंह, इनसे छोटे गुरबख्श सिंह और पांचवां रामसिंह था। पिता संतोख सिंह ने अन्न-जल के वशीभूत हुए काम की खोज में परिवार सहित 'रौड़' जाकर निवास किया जो हिमाचल प्रदेश में है। कुछ समय यहाँ ठहर कर कारोबार करते रहे, फिर अन्न-जल ऋषिकेश ले आया। ऋषिकेश रहकर कारोबार आरम्भ किया, बहुत अच्छा चला। आपका तीसरा पुत्र नारायण सिंह बाल्यकाल से ही धार्मिक संस्कारों वाला होने के कारण साधु महात्माओं की संगत में प्राय: आता-जाता रहता था।

ऋषिकेश धार्मिक नगर होने के कारण सत्संग का तो अभाव था नहीं, लेकिन आपके संस्कार गुरु घर के होने के कारण प्राय: अधिक आना-जाना निर्मल आश्रम ही था। चाहे उस समय गुरु नानक घर के पंजाब सिंध क्षेत्र, डेरा ठाकुरां आदि अन्य भी स्थान थे, लेकिन निर्मल सम्प्रदाय में महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी के तेज-प्रताप का सूर्य उस समय शिखर पर था, इसलिए डेरे की सुन्दर रचना, सुन्दर मर्यादा और महापुरुषों के अत्यन्त ज्ञानमयी जीवन से निसृत किरणों ने नारायण सिंह जी के संस्कारी मन पर बहुत प्रभाव डाला। पहले पहल तो नारायण सिंह जी प्रतिदिन आश्रम आकर सत्संग और सेवा के पश्चात् सायं घर को चले जाते। कुछ समय ऐसा अर्थात् सेवा सत्संग द्वारा मन पर्याप्त शुद्ध हो गया। शुद्ध हुए मन पर अर्थात् माया का पर्दा दूर होने पर सत्संग रूपी सूर्य की उपदेश रूपी रश्मियों का प्रकाश अवश्य पड़ता है। इसलिए आपने गुरु-उपदेश—**मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करि रे** के महावाक् अनुसार इस समय मुक्ति का सीधा और सरल साधन, सेवा, सिमरन और सत्संग में निरंतर जीवन व्यतीत करने का दृढ़ निश्चय धारण कर लिया। निश्चय अनुसार एक दिन महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी के चरणों में प्रार्थना की—महाराज! कृपा करो आपके पवित्र चरणों में निवास हो ताकि सेवा द्वारा मनुष्य जन्म धारण किया सफल हो। महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी ने युवक नारायण का दृढ़ निश्चय और पूर्ण संयोग समझकर महंत आत्मा सिंह जी को आज्ञा की कि इस लड़के को अपनी देखरेख में सेवा में लगा लो और साथ-साथ गुरुवाणी का शिक्षण भी दो। इस प्रकार आप सत्रह वर्ष की आयु में अर्थात् 1922 ई० में घर-बार छोड़कर स्थाई तौर पर आश्रम में आ गए।

महंत आत्मा सिंह जी ने बड़े महापुरुषों की आज्ञानुसार आपको गुरुवाणी पठन-पाठन आरम्भ करवाया और साथ-साथ गायों की सेवा संभाल करते दूध दोहना आदि सेवा भी संभाल दी। आप अपने नम्र स्वभाव और अथक सेवा आदि शुभ गुणों के कारण शीघ्र ही बड़ों की कृपा के पात्र बन गए। सन् 1925 ई० में पटियाला निवासी पंडित राम बसंत सिंह

जी ने 'अनंद भवन' ऋषिकेश में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की कथा आरम्भ की तो महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी ने नारायण सिंह जी को आज्ञा दी कि आप भी पंडित जी से अर्थों सहित सम्पूर्ण वाणी का शिक्षण प्राप्त करो। बड़ों की आज्ञा मानकर आप जी ने पंडित जी के पास पढ़ना आरम्भ किया। पढ़ाई के साथ-साथ विद्या दाता पंडित जी की सेवा भी संभाल ली जैसे—स्नान करवाना, वस्त्र प्रक्षालन, दूध लस्सी आश्रम में से ले जाकर पिलाना आदि सेवा और शुभ गुणों जैसे छल कपट से रहित सरल मन, सादगी, नम्रता, मधुरता और भयसहित गुरु के समान जानकर सेवा करते और साथ ही साथ गुरुवाणी का अर्थों सहित शिक्षण करते रहे। ऐसे शुभ गुणों और भय युक्त की गई सेवा का पंडित जी के ऊपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे आपको शिष्य न होने पर भी पुत्रवत् प्यार करने लगे।

इस प्रकार विद्या ग्रहण करते और सेवा करते छ: मास व्यतीत हो गए। इतने में सन् 1926 ई० का कुंभ उत्सव आ गया। पंडित जी कुंभ उत्सव के स्नानार्थ हरिद्वार निर्मल छावनी चले गए। इधर संत नारायण सिंह जी भी महंत आत्मा सिंह जी से आज्ञा लेकर पंडित जी की सेवा के लिए साथ ही चले गए। इस उत्सव के दौरान ही पंडित राम बसंत सिंह जी को महाराज भूपिंदर सिंह पटियाला की ओर से बुलावा आ गया कि पटियाला निवास रखकर राजकुमारों को विद्या पढ़ाओ। पंडित जी पटियाला नरेश की प्रार्थना पर पटियाला पहुँच गए। उधर संत नारायण सिंह जी वापिस ऋषिकेश चले गए। पंडित जी का आपके साथ इतना प्रेम हो गया कि कभी-कभी पटियाला से किसी व्यक्ति को भेजकर आपको पटियाला बुला लेते थे। इस प्रकार पटियाला आने-जाने के कारण राज घराने के साथ भी समीपता हो गई। यही कारण है कि राज घराने के कुछ सदस्य आज तक आश्रम के साथ जुड़े हुए हैं। पंडित राम बसंत सिंह जी भी सेवा और प्रेम-प्यार पर इतने प्रसन्न हुए कि कुछ समय पश्चात् निर्मल छावनी हरिद्वार वाली अपनी कीमती कोठी संत नारायण सिंह जी के नाम लिखवा दी जिसका नाम आपने अपने जीवन दाता महंत आत्मा सिंह जी के नाम पर 'आत्म निवास' रखा जोकि आज भी निर्मल आश्रम के अधिकार में है।

इस प्रकार गुरुवाणी तो आपने पंडित राम बसंत सिंह जी से अर्थों सहित पढ़ ली और महंत आत्मा सिंह जी ने आपको कुछ संस्कृत के ग्रन्थ भी पढ़ाये। पढ़ी विद्या का मनन निदिध्यानासन और आदेश में रहकर सेवा करते, समय व्यतीत होता गया। बड़े महापुरुषों के परलोक गमन के पश्चात् महात्मा आत्मा सिंह जी जब सिंध की यात्रा अथवा देश-विभाजन के पश्चात् जहां-जहां भी श्रद्धालुओं ने आकर निवास बनाया जैसे बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, लंका और लखनऊ आदि स्थानों पर श्रद्धालुओं की प्रार्थना स्वीकार करके जाते तो संत नारायण सिंह जी को प्राय: साथ ही ले जाते थे, क्योंकि संत नारायण सिंह जी विद्वान थे, इसलिए दोनों समय संगत में कथा प्रवचन किया करते थे। इस प्रकार बड़ों की आज्ञा में रहकर सेवा करते और सहनशीलता, नम्र स्वभाव आदि दैवी गुणों पर प्रसन्न होकर आपको महंत आत्मा सिंह जी ने सन् 1970 ई० में अपना उत्तराधिकारी स्थापित कर दिया।

जिस समय 1973 ई० में महंत जी का परलोक गमन हुआ तो 25 अगस्त 1973 ई० वाले दिन उनकी स्मृति में रखे श्री अखण्ड पाठ साहिब के भोग उपरान्त उनकी की गई वसीयत के अनुसार निर्मल पंचायती अखाड़ा संत समाज और गृहस्थी संगत की ओर से आप जी को महंती के प्रतिष्ठित पद के लिए दस्तारें (पगड़ियाँ) और अनेक प्रकार की भेंटे अर्पण करके सम्मानित किया गया। महंत आत्मा सिंह जी का शरीर जैसे-जैसे वृद्ध होता गया, वैसे-वैसे आश्रम की सेवा संभाल की समस्त जिम्मेदारी तो संभालते ही थे, लेकिन आज से अर्थात् 25 अगस्त 1973 से डेरे की भीतरी

एवं बाहरी समस्त सेवा संभाल भी करने लगे। इसके साथ-साथ सम्मान सहित पारस्परिक व्यवहार और संगत को आत्म भाव के साथ अर्थात् अपना ही स्वरूप समझते हुए प्यार देना आदि महान् गुणों को अपने जीवन का स्थाई अंग ही बना लिया था।

बुद्धिमान पुरुषों ने उत्तराधिकारी के गुणों का विभाजन तीन भागों में किया है—पुत्र, सुपुत्र एवं कुपुत्र। पुत्र उसको कहते हैं जो संसार में सम्मान अर्थात् आदर-मान, धन-सम्पत्ति और राजभोग आदि पदार्थ अर्थात् जो पिता की ओर विरासत में मिले, उसको अपने जीवनपर्यन्त कम न होने देवे, अंत समय में उतना ही छोड़कर जाए।

सुपुत्र उसको कहते हैं जो उपरोक्त पदार्थों में बड़ों की विरासत में मिली सम्पत्ति को अपने परिश्रम द्वारा उसमें वृद्धि करे और कुपुत्र वह होता है जो बुरी संगत में लगकर पूर्वजों की ओर से मिली विरासत को कम कर दे अथवा समाप्त कर दे।

परन्तु यदि सांसारिक दृष्टि से देखें तो इस दृष्टांत का बहुत लाभ नहीं है, क्योंकि सांसारिक धन तो कोई चतुर बुद्धि वाला व्यक्ति, बुद्धि की चतुरता से दग़ा, फ़रेब, ठग्गी, रिश्वत आदि कार्यों द्वारा भी एकत्रित कर सकता है लेकिन यह धन—

पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि ना जाई॥

(आसा महला १, पृष्ठ ४१७)

यह बिना पाप कार्यों के एकत्रित नहीं होता और मरते समय साथ भी नहीं देता। अपितु ऐसा धन एकत्रित करने वाले व्यक्ति को तो गुरु साहिबान बुद्धिहीन की पदवी देते हैं—

काचा धनु संचहि मूरख गावार॥ मनमुख भूले अंध गावार॥
बिखिआ कै धनि सदा दुखु होइ। ना साथ जाइ न परापति होइ॥१॥
साचा धनु गुरमती पाए॥ काचा धनु फुनि आवै जाए॥

(धनासरी म. ३, पृष्ठ ६६५)

बुद्धिमान पुरुषों की दृष्टि में सांसारिक धन का बहुत महत्त्व नहीं होता, क्योंकि इसको एकत्रित करते समय कठोर परिश्रम द्वारा कष्ट उठाना पड़ता है, फिर इसकी रक्षा के लिए यत्न करना पड़ता है। आखिर यह क्षण भंगुर और विनाशी होने के कारण जब समाप्त होता है तो इसके मालिक को दीवारों के साथ टक्कर मारकर रोना पड़ता है। इस विनाशी धन के मार्ग पर चलकर मंजिल पर नहीं पहुँच सकते।

यथा— **सहस खटे लख कउ उठि धावै। त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै॥**

(सुखमनी साहिब पृष्ठ २७९)

इन क्षण भंगुर और नाशवान् पदार्थों के मार्ग पर चलकर, कभी तृप्ति नहीं होती। किसी सुखद मंजिल पर नहीं पहुँच सकता, बल्कि यह तो इस प्रकार मंजिल रहित है जैसे कोल्हू के बैल की प्रतिदिन प्रातः यात्रा आरम्भ हो जाती है। रात्रि घास फूस खाकर बिताई, अगले दिन प्रातः फिर वही यात्रा। इस प्रकार आजीवन यात्रा ही की लेकिन मंजिल के दर्शन नहीं हुए। यही हाल सांसारिक धन का है। इसकी प्राप्ति के लिए जीवों की यात्रा इस प्रकार है जैसे वस्तु पूर्व की ओर हो और यात्रा पश्चिम की ओर कर रहे हों। वस्तु प्राप्त होने की बजाए एक-एक पग के साथ दूरी बढ़ती जाती है। इसी प्रकार यह जीव कल्पित धन के भ्रम में वासनानुसार चौरासी लाख योनियों के चक्कर काटता रहता है, लेकिन कोल्हू के बैल की भाँति किसी नित्य सुख रूप मंजिल पर नहीं पहुँचता, लेकिन बुद्धिमान पुरुष सत्संग और विवेक द्वारा उस धन की प्राप्ति के लिए यत्नशील हो जाता है जिसके सम्बन्ध में साहिब श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी का सुंदर आदेश है—

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ॥ राम नामु संतन घरि पाइआ॥
तजि अभिमानु लेहु मन मोलि॥ राम नामु हिरदे महि तोलि॥
लादि खेप संतह संगि चालु॥ अवर तिआगि बिखिआ जंजाल॥
धंनि धंनि कहै सभु कोइ॥ मुख ऊजल हरि दरगह सोइ॥
इहु वापारु विरला वापारै॥ नानक ता कै सद बलिहारै॥

(सुखमनी साहिब पृष्ठ २८३)

परन्तु कठिनाई यह है कि इस धन का व्यापारी कोई विरला ही होता है। श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी फ़रमाते हैं—मैं ऐसे व्यापारी पर सदा-सदा के लिए कुरबान जाता हूँ। महंत नारायण सिंह जी तो किशोरावस्था से ही इस स्थाई वस्तु का व्यापार करने में लगे हुए थे, इसलिए अब उनके सम्मुख दो ही कार्य थे—एक तो स्थान को बड़े महापुरुषों की अमानत समझकर और उन्नति के मार्ग पर लेकर जाना ताकि जनता को जनार्दन अर्थात् हरि का रूप समझकर सेवा का अधिक अवसर मिलता रहे। दूसरा—बड़े महापुरुषों की ओर से जुड़ी आ रही संगत को हार्दिक प्रेम-प्यार देकर परमार्थ मार्ग की ओर अधिक अग्रसर किया जाए।

इन बातों को ध्यान में रखकर आपने कमरों की कमी अनुभव करते हुए अपने बड़े और परम पूजनीय सिद्ध पुरुष विरक्त महाराज संत बाबा निक्का सिंह जी के पावन पवित्र कर कमलों द्वारा सन् 1974 ई० में वर्तमान बड़ा हाल और साथ में सटे 42 कमरों की नींव रखकर उसे कम से कम समय में तैयार किया ताकि संगत सुखपूर्वक विश्राम कर सके। इस प्रकार बड़ों की ओर से आरम्भ किए क्षेत्र (लंगर) के कार्य को भी आगे बढ़ाया ताकि प्रतिदिन अधिक ज़रूरतमंदों की सेवा का अवसर मिले।

सिंधी संगत आपको बड़ों का ही रूप जानकर बम्बई, कलकत्ता और लंका आदि स्थानों पर प्रति वर्ष निमंत्रित करती थी। आप शारीरिक अवस्था और रोगों के बावजूद भी प्रेमियों की श्रद्धा और प्रेम-वश वहाँ पहुँचते थे।

इस प्रकार महापुरुषों की ओर से प्रसन्न होकर कृपा की, आश्रम की सेवा व्यवस्था और पुरुषार्थ के काम करते, समय व्यतीत होता गया, परन्तु शरीर अब वृद्धावस्था और बीमारी के कारण रोगग्रस्त रहने लगा, इसलिए आप विरक्त महाराज जी के चरणों में बार-बार निवेदन करते, महाराज! मेरा शरीर अब वृद्धावस्था एवं बीमारी के कारण आश्रम की जिम्मेदारियों को संभालने में असमर्थ होता जा रहा है। आप कृपा करो कोई योग्य पुरुष दो जो आश्रम के उत्तरदायित्व संभालने के लिए समर्थ हो। आपकी बात सुनकर महाराज मौन रहते, कोई उत्तर न देते। जब-जब भी विरक्त महाराज जी के दर्शनों के लिए जाते पुनः वही प्रार्थना करते, क्योंकि आपको यह विश्वास था कि महाराज त्रिकालदर्शी हैं। आने वाले समय में आश्रम की ओर से जीवों का जो भला होना है उसके लिए योग्य पुरुष का चुनाव आप ही कर सकते हैं।

इसलिए बार-बार प्रार्थना करते रहते, लेकिन कभी-कभी महाराज जी अपनी मौज में यह कह देते—

यथा— **नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ।**

(श्लोक म: २, पृष्ठ ९५५)

महंत जी, आप चिंता क्यों करते हो?

यथा— **जिस दा कारजु तिन ही कीआ माणसु किआ वेचारा राम॥**

(सूही म: ५, पृष्ठ ७८४)

जिस परमेश्वर ने सेवा का यह कार्य आरम्भ किया है, उसको स्वयं चिंता है। आपसे जितनी सेवा लेनी है, पूर्ण होने पर वह आप किसी न किसी रूप में आकर सेवा संभाल लेगा, इसलिए आप निश्चिंत रहो। महाराज जी के पावन मुख से महंत जी ऐसा सुनकर शान्त हो जाते क्योंकि आप जानते थे कि महाराज जी की इस बात के पीछे कोई बहुत बड़ा रहस्य छिपा है तो समय आने पर स्वयं ही प्रकट हो जाएगा। महापुरुष संकेत करता है, लेकिन रहस्य नहीं बताता, इसलिए उस रहस्य को कोई विशिष्ट व्यक्ति ही जानता है—

यथा— **दॅदा आखे दूर बड़ी, मंज़िल फ़कीर दी ए,**
लोकां नूं पता की जिथे फक्कर बिराजदे।
सुन जो समाध लगी नाल परमात्मा दे
दुनियां की जाणे बई सुत्ते ऐ कि जागदे।
हथ तसबी ना माला,
भेख भगवां न काला कोई,
सुंनत शरीयत कोई कम ना निवाजदे॥
लोक बेगिआत मुल पांवदे पखंडीयां दा,
विरले सरोते कोई फक्करां दे राज़ दे।

आज महंत नारायण सिंह जी की प्रार्थना प्रभु के दरबार में स्वीकृत हो गई। आपको सेवा से निवृत्त करने के लिए परमेश्वर ने समस्त योजना बना ली, क्योंकि वह—

करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि॥
कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि॥

(म: २, पृष्ठ १४८)

असीम शक्तियों का स्वामी प्रभु सब कारणों के कारण को समर्थ है, क्योंकि सारी माया अर्थात् प्रकृति उसके अधीन है इसलिए आज उसने—

सगली बणत बणाई आपे॥ आपे करे कराए थापे॥

(माझ महला ५, पृष्ठ १३१)

योजना क्या बनाई? विरक्त महाराज जी ने अपने चरणों के प्रेम में सरोबार हुए श्रीमान् राम सिंह जी को संत पदवी पर स्थापित कर दिया। परमेश्वर की यह कीर्ति है जिसके हृदय में प्रेमाभक्ति का निवास हो जाए उसको संत बना लेता है। यथा गुरुवाणी—

यथा— **प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिओ है।**

(सवैया श्री मुखबाकम ५, पृष्ठ १३८८)

आज विरक्त महाराज जी ने महंत नारायण सिंह जी को कह दिया कि गुरु नानक के घर के सेवारूपी महंती की भारी गठरी संत राम सिंह के सबल कंधों पर रख दो। महंत जी ने आदेश मानकर 1 जून 1981 वाले दिन शुभ दिवस को देहरादून डेरे के अधीन चल-अचल जो भी सम्पत्ति थी सब की वसीयत संत राम सिंह जी के नाम लिख दी।*

---

* *पूज्य महंत राम सिंह जी का जीवन वृत्तांत विस्तार से आगे वर्णित है।*

परम आदरणीय महंत राम सिंह जी द्वारा स्थान का सारा उत्तरदायित्व संभाल लेने पर महंत नारायण सिंह जी नितांत निश्चिंत और शान्त होकर जीवन का अंतिम समय व्यतीत करने लगे। इस समय शरीर पर वृद्धावस्था ने भी आक्रमण कर दिया था, इसलिए काल गति के अधीन शरीर थोड़ा बहुत रोगी तो पहले ही रहता था, लेकिन आज उसने अपना वीभत्स रूप धारण कर लिया अर्थात् ब्रेन हैमरिज हो गया। आपको बंगाली अस्पताल, कनखल में दाखिल किया गया। अन्तर्मुखी वृत्ति होने के कारण आप शान्त भाव से लेटे रहते। कोई पंद्रह दिन के बाद अर्थात् 25 अक्तूबर 1981 वाले दिन परम पूजनीय विरक्त महाराज जी मिलने के लिए हस्पताल गए तो महंत नारायण सिह जी ने दोनों नेत्र खोलकर नमस्कार किया। नमस्कार करते ही मन प्रसन्न हो गया। प्रसन्नता में नयनों से प्रेमाश्रु बहने लगे। महाराज जी ने शीश पर हाथ फेरा। कृपा दृष्टि से देखा और थोड़ा रुकने के पश्चात् आश्रम वापिस आ गए। उधर महंत नारायण सिंह जी की शायद यही एक अंतिम इच्छा थी जो पूर्ण हुई समझकर उसी दिन 25 अक्तूबर 1981 को अपने पाँच भौतिक पिंजरे से सदा के लिए उडारी मार गए।

दूसरे दिन ऋषिकेश और हरिद्वार (कनखल) से आए असंख्य साधुओं द्वारा आपके पवित्र शरीर को सदा के लिए गंगा की गोद में सुला दिया गया। फिर सत्रहवें दिन अर्थात् 10 नवम्बर 1982 वाले दिन साधु समाज, बम्बई, दिल्ली और पंजाब की संगत आपकी अंतिम अरदास में सम्मिलित हुई जिसमें सहज पाठ और श्री अखण्ड पाठ साहिब के भोग उपरान्त श्रद्धांजलियां अर्पित की गईं, उपरान्त गुरु के लंगर के खुले भण्डारे चलते रहे।

महंत नारायण सिंह जी महाराज के गद्दी नशीन समय का दृश्य

1974 के कुंभ मेले पर शाही जलूस समय महंत नारायण सिंह जी महाराज

सन् 1965 के युद्ध समय महंत नारायण सिंह जी महाराज प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी को एक लाख रूपये का चैक देते हुए.

महंत आत्मा सिंह महाराज जी की पुण्य तिथि पर सरदार गुरचरण सिंह जी टौहड़ा श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए। संत हरचंद सिंह जी लौंगोवाल और महंत नारायण सिंह जी महाराज सुशोभित हैं।

निर्मल आश्रम ऋषिकेश में ज्ञानी ज़ैल सिंह जी, भूतपूर्व राष्ट्रपति, क्षेत्र (गुरू का लंगर) वितरित करते हुए।
महंत नारायण सिंह जी महाराज भी सुशोभित हैं।

निर्मल आश्रम ऋषिकेश में संत हरचंद सिंह जी लौंगोवाल क्षेत्र (गुरू का लंगर) वितरित करते हुए.
महंत नारायण सिंह जी भी सुशोभित हैं

निर्मल आश्रम ऋषिकेश में संत हरचंद सिंह लौंगोवाल, पंजाब मंत्रीमण्डल के सदस्यगण और अन्य महान विभूतियां

श्रीमान महंत नारायण सिंह महाराज जी के देहावासान के पश्चात् महंत राम सिंह जी महाराज चवर करते हुए

विरक्त शिरोमणि संत निक्का सिंह जी महाराज

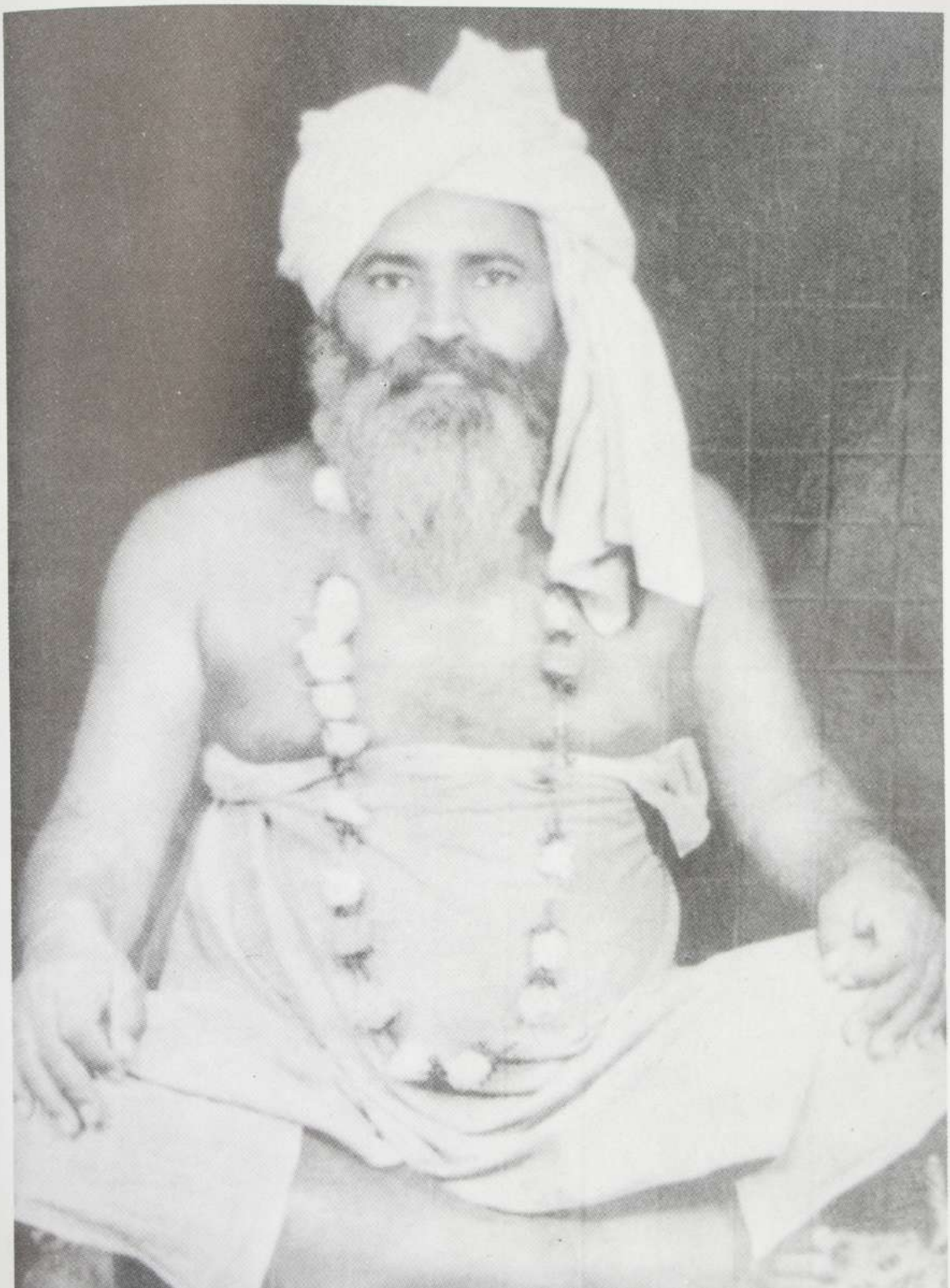

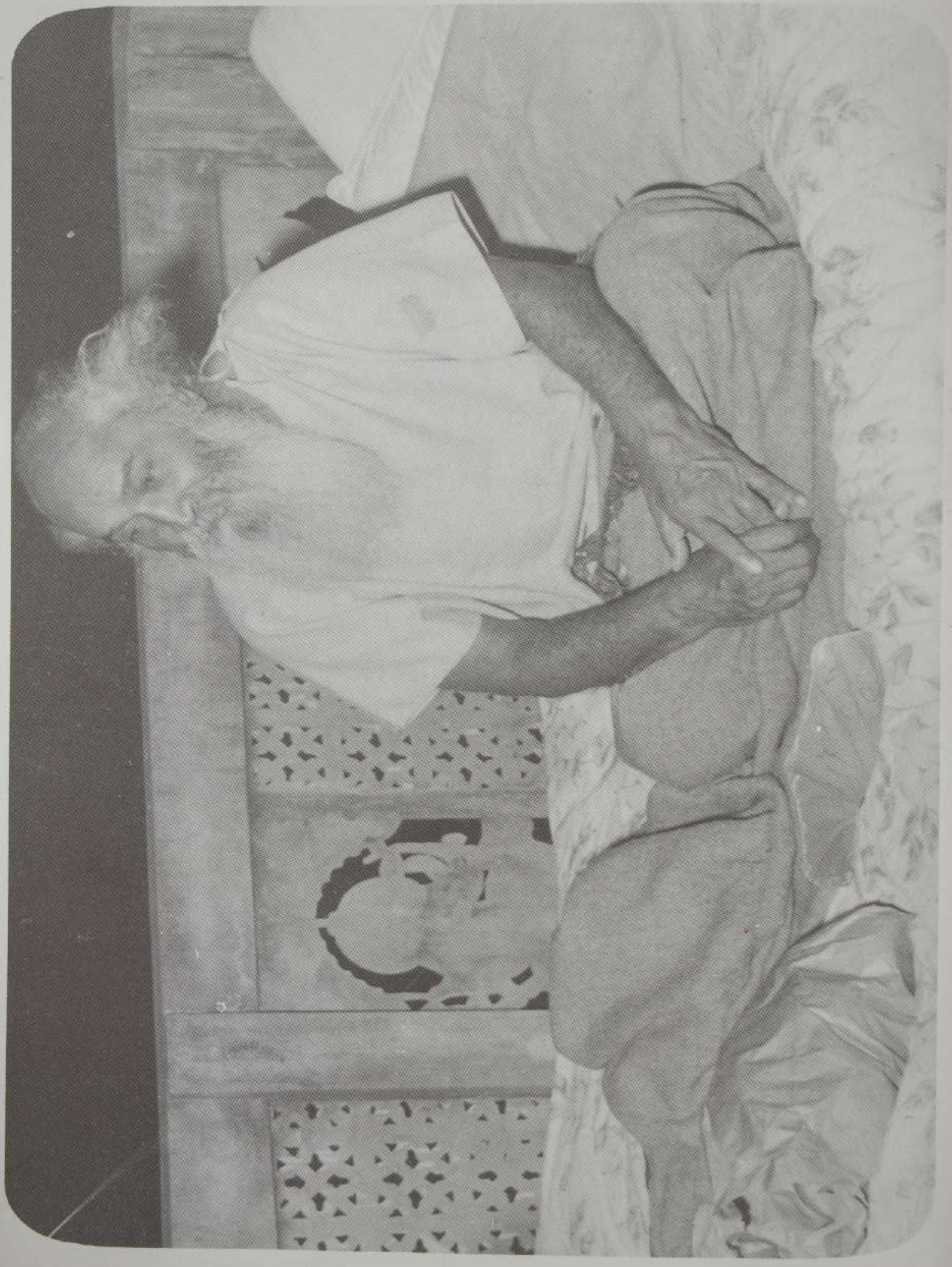

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि॥

5
अध्याय

संत निक्का सिंह जी महाराज

जीवन लीला परम पूजनीय श्रीमान् १०८ महाराज निक्का सिंह जी 'विरक्त'

जंगल से मालवा

कलगीधर पिता—डॅलिया! तेरा देश तो मालवा है न?

डॅला—नहीं महाराज! यह तो जंगल देश है।

कलगीधर पिता—वह देख डॅलिया, आम लगे हुए हैं।

डॅला—नहीं महाराज! ये तो आक को कुक्कड़ लगे हैं।

कलगीधर पिता—वह देख डॅलिया! गेहूँ के लहलहाते कितने सुन्दर खेत हैं।

डॅला—महाराज! यह तो घास और काई दिखाई देती है।

कलगीधर पिता—थोड़ा ध्यानपूर्वक देख डॅलिया! वे, पानी की नहरें चल रही हैं।

डॅला—महाराज! नहरें नहीं, यह तो रेत चमक रही है।

कलगीधर पातशाह—वचन मान लेता तो डॅलिया यह सभी कुछ अभी हो जाता, लेकिन अब कुछ समय पाकर होगा। यहाँ पानी की नहरें चलेंगी, फलदार पौधों के उद्यान लगेंगे, अन्न इतना अधिक उत्पन्न होगा कि समस्त भारत भूख की निवृत्ति करेगा। यहाँ के निवासी प्रत्येक दृष्टि से समृद्ध होंगे और वे आदर के साथ कहा करेंगे कि हम गुरु के मालवे के निवासी हैं। इस प्रकार कलगीधर पिता ने अनन्त वरदान देकर मालवा को समृद्ध एवं सम्पन्न बना दिया।

मातृलोक स्वर्गलोक से उत्तम है

बुद्धिमान पुरुषों ने मनुष्य शरीर को 'अशरफ मखलूकात' अर्थात् समस्त योनियों का बादशाह माना है—

अवर जोनि तेरी पनिहारी॥ इस धरती महि तेरी सिकदारी॥

(आसा महला ५, पृष्ठ ३७४)

शेष चौरासी लाख योनियां इसकी सेवा करती, भाव इसके अधीन हैं जो कि अत्यन्त सौभाग्य से प्राप्त होती है। इससे पूर्व इसने अनेकों नीच योनियों का भ्रमण किया, जैसे गुरुवाक्—

कई जनम भए कीट पतंगा॥
कई जनम गज मीन कुरंगा॥
कई जनम पंखी सरप होइओ॥
कई जनम हैवर बृिख जोइओ॥

(गउड़ी गुआरेरी महला ५, पृष्ठ १७६)

अर्थात् कई जन्मों तक छोटे-छोटे कीट पतंगे हुए, कई जन्म बड़े आकार वाले हाथी, मच्छर आदि और वन के मृग आदि योनियां भोगीं। कई जन्म गगन में उड़ने वाले पक्षी एवं कई जन्म पृथ्वी पर रेंगने वाले सर्प आदि की योनियों

में से निकले और कई जन्म पर्वत, जिनकी आयु लाखों वर्ष होती है और कई जन्म वृक्ष आदि योनियों में भ्रमण किया। इस प्रकार उपरोक्त योनियों में भ्रमण करते बहुत लम्बा समय अर्थात् अनेक युग व्यतीत हो गए। बुद्धिमान पुरुषों ने चारों युगों की कोई 43 लाख वर्ष आयु मानी है, लेकिन इस जीव को तो बहुत युग व्यतीत हो गए, जैसे गुरुवाक्—

फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही॥
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही॥

(सोरठि महला ९, पृष्ठ ६३१)

बहुत युग व्यतीत हो जाने के बाद इस जीव को अमूल्य मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ जिसका मुख्य लक्ष्य केवल और केवल प्रभु प्राप्ति है। जैसे—

मिलु जगदीस मिलन की बरीआ॥
चिंरकाल इह देह संजरीआ॥

(गउड़ी गुआरेरी महला ५, पृष्ठ १७६)

यथा— **भजहु गोबिंद भूलि मत जाहु॥**
मानस जनम का एही लाहु॥

(भैरउ वाणी कबीर जी, पृष्ठ ११५९)

यथा— **मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुक्ति का करु रे॥**

(गउड़ी महला ९, पृष्ठ २२०)

प्रभु के विधानानुसार मनुष्य के बिना शेष चौरासी लाख योनियां, भोग योनियां हैं। उसको नया कर्म करने का अधिकार नहीं अथवा इस प्रकार कहा जा सकता है कि शेष समस्त योनियां मनुष्य जन्म के किए कर्मों का फल हैं अर्थात् मनुष्य देह में किए निषिद्ध अथवा सकाम कर्मों ने ही आकार धारण किए हैं। इसलिए यह मनुष्य शरीर सब योनियों का बीज रूप है। मनुष्य जैसी संगत करता है, उसी प्रकार के उसके विचार हो जाया करते हैं और जैसे विचार हों, वह वैसे ही कर्म करता है। जैसे कर्म करता है वैसा ही फल प्राप्त होता है। अत: यह सिद्ध हुआ कि मनुष्य शरीर कर्मों रूपी बीज बीजने का खेत है, जैसा कोई बीजता है वैसा फल प्राप्त करता है। यथा गुरुवाक्—

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु॥

(बारह माह माझ महला ५ पृष्ठ १३४)

कुसंग के प्रभाव स्वरूप बुरे कर्मों में प्रवृत्त होकर नीच योनियों और नरकों आदि के अनन्त काल तक असह्य दु:ख सहन करता है। इसके विपरीत कुछ पुरुष ऐसे होते हैं जो बुरे कर्मों से तो चाहे बचते हैं, लेकिन नित्यानित्य वस्तु विवेक से रहित होने के कारण शारीरिक सुखों को ही सर्वस्व मान लेते हैं, इसलिए सकाम कर्मों द्वारा स्वर्ग आदि की प्राप्ति के लिए दान-पुण्य आदि कर्म करते हैं जो कि चिरजीवी नहीं होते। जैसे गुरुवाक्—

सिव पुरी ब्रह्म इंद्रपुरी निहचलु को थाउ नाहि॥
बिनु हरि सेवा सुखु नही हो साकत आवहि जाहि॥

(राग गौड़ी मालवा महला ५ पृष्ठ २१४)

इस प्रकार गुरु साहिब जी के संकेतानुसार स्वर्ग, ब्रह्मपुरी और शिवपुरी कोई भी स्थाई नहीं है, अपितु सब काल के आश्रित हैं। तृतीय वे निष्कामी व्यक्ति हैं जिनके सत्संग एवं विवेक द्वारा ज्ञान चक्षु खुल चुके हैं। ऐसे पुरुषों को वाहिगुरु रूपी अविनाशी राज्य की प्राप्ति हो जाती है जिससे पुन: गिरना नहीं होता और जन्म-मरण आदि समस्त दु:खों से

मुक्त होकर काल जैसे बलशाली को सदा के लिए जीत लेते हैं। द्वितीय दर्जे वाले सकामी पुरुषों की सोच पहले दर्जे वाले निषिद्ध कर्मी लोगों से कोई अधिक विशेष नहीं मानी जाती, क्योंकि मनुष्य शरीर में किए सकाम पुण्यों का फल समाप्त होने पर फिर नीचे गिरा दिए जाते हैं। इस प्रकार जन्म-मृत्यु, हर्ष-शोक आदि अनन्त दु:खों की फाँसी सदा गले में पड़ी रहती है। सकाम कर्मों के द्वारा प्राप्त किए स्वर्ग लोक के देवता भी इस मनुष्य देही की कामना करते हैं—

इस देही कउ सिमरहि देव॥
सो देही भजु हरि की सेव॥
भजहु गोबिंद भूलि मत जाहु॥
मानस जनम का एही लाहु॥

(भैरउ वाणी भगत कबीर जी, पृष्ठ ११५९)

देवता लोग इस मनुष्य देही की कामना क्यों करते हैं? जैसे एक दृष्टांत—

एक सेठ जिसके पास बहुत अधिक धन-पदार्थ और ज़मीन-जायदाद थी, इन पदार्थों की अधिकता के कारण लोगों में आदर-मान भी बहुत था। इतना कुछ होने के अतिरिक्त भी मन सदा अशान्त रहता था, क्योंकि संसार के पदार्थ चाहे कितने भी हों फिर भी तृष्णा बनी रहती है। सेठ की अशान्ति का कारण उसके घर में औलाद का न होना था। पुत्र प्राप्ति हेतु सेठ ने औषधि-बूटी, धागे-तावीज़ आदि अनेक यत्न किए, लेकिन सफलता न मिली। दैवयोग से एक दिन कोई सिद्ध पुरुष से भेंट हो गई। सेठ ने उसको अपना दु:ख सुनाया। उस भले पुरुष ने सेठ से पूछा—इस इच्छा की पूर्ति के लिए बच्चा तुम ने आज तक कोई प्रयत्न किया है? सेठ ने बताया कि 'हाँ'। उपचार आदि एवं अन्य भी कई प्रकार के यत्न किए हैं, लेकिन कहीं से भी कुछ प्राप्त नहीं हुआ। सज्जन पुरुष कहने लगा—फिर गुरु नानक के घर का उपचार करके देख लो, जो कि एक पुत्र तो क्या—चारों पदार्थ देने में समर्थ है। देखो गुरु अर्जुन देव ने 'सुखमनी' सहिब में एक लाजवाब नुस्खा बताया है—

चारि पदारथ जे को मागै॥
साध जना की सेवा लागै॥

(श्री सुखमनी साहिब, पृष्ठ २६६)

यह नुस्खा यदि विधिपूर्वक युक्ति-युक्त ढंग से प्रयोग में लाया जाए तो एक पुत्र तो क्या चारों पदार्थ अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जिसमें संसार के समस्त पदार्थ आ जाते हैं आदि की प्राप्ति सहज में ही हो जाया करती है। सेठ को सुनकर कुछ विश्वास हुआ। उसने एक सुन्दर धर्मशाला बनाई, जिसमें प्रतिदिन कथा, सत्संग कीर्तन आदि होने लगा। आते-जाते यात्री अतिथि और साधु महात्मा ठहरने लगे। सेठ एवं सेठानी प्रत्येक आए-गए सज्जन के लिए लंगर प्रसाद बनाकर अपने हाथों से सेवा करते। एक दिन की बात है कि एक कोई वाहिगुरु प्रेम में मग्न, शान्त चित्त महात्मा भ्रमण करते हुए इस धर्मशाला में जा ठहरे। सेठ ने नियम एवं स्वभावानुसार प्रेम के साथ सेवा की। महात्मा जब प्रात: जाने लगे तो सेठ ने बड़े प्रेमपूर्वक नमस्कार की। महात्मा सेठ की सेवा से बहुत प्रसन्न हुए और वचन किया प्रेमिया! तुम इतनी सेवा किसी कामना को लेकर करते हो अथवा निष्काम? सेठ बोला, महाराज! जमीन? जायदाद, धन पदार्थ तो बहुत हैं, इलाके में आदर मान की कमी भी नहीं, लेकिन घर में आगे प्रकाश नहीं है इसलिए औलाद का न होना सब पदार्थों को कटु बना रहा है। आपकी यदि कृपा हो जाए तो घर का दीपक जल उठे। केवल मन में एक यही कामना दिन-रात्रि चैन नहीं आने देती। महापुरुष उसकी अथक सेवा पर प्रसन्न तो हुए ही थे, वचन कर दिया कि अच्छा हे प्रेमी! गुरु नानक भली करेंगे। परमेश्वर के अटल नियमानुसार बस फिर क्या देरी थी—

निसि बासुर नखिअत्र बिनासी रवि ससीअर बेनाधा॥

गिरि बसुधा जल पवन जाइगो इकि साध बचन अटलाधा॥

(सारंग महला ५, पृष्ठ १२०४)

दिन-रात्रि, नक्षत्र, नाशवान् हैं। सूर्य और चन्द्रमा स्थिर नहीं हैं, पर्वत, पृथ्वी, जल एवं वायु भी अविनाशी नहीं हैं लेकिन साधु के वचन का कभी नाश नहीं होता। महापुरुषों के वचनानुसार गुरु नानक ने कृपा की, सेठ के घर में संतान की आशा हुई। सत्य पुरुष तो वचन करके चले गए। उधर सेठानी के मन में खरबूज़ा खाने की इच्छा उत्पन्न हुई। सेठ के पास धन का तो अभाव नहीं था, मंहगी से मंहगी वस्तु को खरीद सकता था, लेकिन ऋतु न होने के कारण 'खरबूज़ा' किसी भी मूल्य पर मिलना असंभव हो गया। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता जाए सेठानी के मन में खरबूज़ा खाने की इच्छा अधिक बलवती होती जाए। सत्संगी होने के कारण दोनों इस बात को भली भाँति जानते थे कि जब माँ के उदर में बच्चा हो उस समय माँ के विचारों का बच्चे के मन पर बहुत प्रभाव होता है। सोचने लगे-मौसम न होने के कारण खरबूज़ा मिल भी नहीं रहा, लेकिन खरबूज़ा खाने की इच्छा मिटने की बजाए प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। ऐसा न हो कि इस इच्छा का प्रभाव बच्चे पर पड़ जाए। बच्चा आजीवन खरबूज़े को ही लोचता रहे। अन्य कोई उपाय न देखकर सोचा, वही महापुरुष यदि कृपा कर दें तो इच्छा पूर्ण हो सकती है, अन्यथा यह असम्भव है। महापुरुषों की खोज आरम्भ हुई। दैव योग से एक दिन मिल ही गए। नमस्कार करके सेठ ने सारी कथा सुनाई। महापुरुष बोले, प्रेमी! ऐसा कर, उत्तर दिशा में थोड़ी दूर जाकर उस पहाड़ी पर एक देवता रहता है—उससे जितने चाहो खरबूज़े ले आओ। वचन मानकर सेठ पहाड़ी पर पहुँचा, क्या देखता है—खरबूज़ों के खेत के खेत खड़े हैं। जहां मातृलोक में एक खरबूज़े के लिए व्याकुल था, वहाँ स्वर्ग में हर प्रकार के पदार्थ मौजूद हैं। आगे गया तो एक दिव्य स्वरूप देवता बैठा है। समीप जाकर सेठ ने बड़े आदर के साथ नमस्कार की। आगे से देवता ने भी खड़े होकर आदर किया और मुख से उच्चारण किया—

धंन मात लोक! धंन मनुखा देही!!

सेठ ने आने का कारण बताया तो देवता कहने लग—एक खरबूज़े की तो बात ही क्या है जितनी इच्छा है ले जाओ। सेठ जितने खरबूज़े उठा सकता था, उठा लिए और नमस्कार की। आगे से देवता ने भी ऐसा ही किया और वही शब्द फिर दोहराया—

धंन मात लोक! धंन मनुखा देही!!

सेठ खरबूज़े लेकर घर पहुँच गया। सेठानी की तो खरबूज़ा खाने की वासना चाहे शान्त हो गई, लेकिन सेठ के मन में एक शंका काँटा बनकर दिन-रात चुभने लगी कि यहाँ के किसी राजा के पास भी इतने सुख नहीं देखे जितने स्वर्ग लोक के एक छोटे से छोटे देवता के पास देखे हैं, लेकिन फिर भी उस देवता ने मातृ लोक एवं मनुष्य देह की इतनी प्रशंसा की, इसमें क्या रहस्य है? यदि प्रत्येक व्यक्ति को स्वर्ग में जाकर निवास करने की स्वतंत्रता हो तो यहां मातृ लोक में एक भी व्यक्ति रहने के लिए तत्पर नहीं होगा। इस शंका ने सेठ को व्याकुल कर दिया। एक दिन संशय निवृत्ति के लिए महात्मा जी के पास गया।

नमस्कार करके पहले तो महापुरुषों का धन्यवाद किया फिर अपनी शंका प्रकट की। महाराज! जहां आपने पुत्र इच्छा में व्याकुल को सांसारिक पदार्थ देने की कृपा की, वहाँ स्वर्ग के दर्शन भी करवा दिए जो कि मेरे लिए अत्यन्त दुर्लभ थे, लेकिन स्वर्ग में जाकर मुझे एक शंका उत्पन्न हो गई। आपकी कृपा से स्वर्ग में पहुँचकर देखा कि जितने पदार्थ देवताओं को प्राप्त हैं इतने मातृ लोक में किसी राजा के पास भी नहीं है, लेकिन फिर भी उस देवता ने मातृलोक व मनुष्य देही की ही प्रशंसा की जबकि मेरी बुद्धि अनुसार मातृलोक पर मनुष्य शरीर स्वर्ग की तुलना में तुच्छ है। इसलिए सांसारिक लोक स्वर्ग के अथाह सुखों की प्राप्ति के लिए दान-पुण्य और अन्य अनेक कार्य करते हैं, इसका क्या कारण है? महात्मा बोले, हे प्रेमी! एक बार फिर स्वर्ग में जा, वह देवता ही तुम्हारा संशय दूर करेगा। सेठ आज्ञा मानकर उस पर्वत पर पहुँचा। देवताओं को नमस्कार की। आगे से देवता ने भी बहुत प्रेम सत्कार के साथ समीप बैठाया। सेठ ने अपना संशय प्रकट किया कि मातृलोक में मैं एक खरबूज़े को तरसता था, लेकिन यहाँ मैं खरबूज़ों के खेत के खेत देख रहा हूँ। इस प्रकार अनेकों प्रकार के अन्य पदार्थ मैं जो यहाँ देख रहा हूँ, इनका मातृलोक में अस्तित्व नहीं है, लेकिन फिर भी आपने मातृलोक और मनुष्य शरीर की ही प्रशंसा की है, इसका क्या कारण है? देवता बोले—हे प्रेमी! यह सब मातृलोक और मनुष्य शरीर की ही कृपा है। यहाँ जो तुम पदार्थ और उनके सुख देख रहे हो ये सब मातृलोक में मनुष्य शरीर के साथ किए कर्मों के फल हैं। तुझे मैं अपनी जीवन कथा सुनाता हूँ। किंचित ध्यानपूर्वक सुनना।

इस देव देह से पूर्व जन्म में मैं एक छोटे से गाँव में रहकर साहूकार का कार्य करता था। कोई बहुत धनवान भी नहीं था, लेकिन धार्मिक संस्कारों के कारण अधिक ब्याज लेने से भी संकोच करता था। पूँजी तो थोड़ी ही थी वह ज़रूरतमंदों को देकर उपयुक्त ब्याज सहित अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। मेरे मन में कुछ संस्कार पैदा हो चुके थे कि स्वर्ग में बहुत सुख हैं। उन सुखों की प्राप्ति दान पुण्य किए ही होती है। मुझे यह भी संस्कार थे कि पाप कर्मों का फल दु:ख होता है, इसलिए दुष्कर्म और पराये हक से सदैव बचता रहता था। अपनी हक की कमाई में से स्वर्ग की कामना मन में रखकर यथाशक्ति दान करता रहता था। खेती करने वाले निर्धन लोग मेरे पास से पैसे ले जाते थे, छ: मास पश्चात् फसल आने पर वापिस कर जाते थे। मेरी ईमानदारी और कम से कम ब्याज लेने के कारण सारे क्षेत्र में प्रेम-प्यार बना हुआ था। एक बार गर्मी के दिन थे। आषाढ़ की फसल काटकर किसान लोग अन्न आदि निकालने का काम कर रहे थे। खरीफ़-रब्बी पर छ: मास पश्चात् हिसाब किया जाता था। मैंने सोचा कि बेचारे कृषक अपना काम-धंधा छोड़कर हिसाब करने के लिए मेरे पास आने का कष्ट करते हैं, क्यों न मैं ही वहाँ जाकर हिसाब कर आऊँ। दिन में गर्मी बहुत पड़ती थी। पैदल जाना था इसलिए किसानों की सुख सुविधा को ध्यान में रखकर और दिन में गर्मी के कष्ट से बचने के लिए बही खाते आदि साथ लेकर प्रात: से पूर्व ही मैं घर से चल पड़ा ताकि धूप चढ़ने से पूर्व वापिस घर आ जाऊँ। अंधेरी रात को मैं पैदल चला जा रहा था। आगे जाकर मेरे कानों में किसी बालक के रोने की आवाज़ पड़ी। मैं और तेज़ी से चला, आगे जाकर क्या देखता हूँ कि किसान एक बच्चे को मार-पीट रहा है। मैंने अपने दयालु स्वभाव के कारण पूछा कि इस बालक को क्यों मार रहे हो? कृषक कहने लगा इसने मेरे खेतों में से खरबूज़ा तोड़ लिया है। मैंने कहा तो कोई बात नहीं, तो क्या हो गया यदि एक खरबूज़ा तोड़ लिया, निर्धन है, बच्चा है। कृषक मेरे साथ भी झगड़ने को हुआ। मैंने कहा मैं यह नहीं कहता कि चोरी अच्छी होती है मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि इस बालक ने अपराध तो छोटा किया है, लेकिन दण्ड अधिक मिल रहा है। मेरे हस्तक्षेप करने पर किसान और

क्रोध में आ गया। मुझे क्रोध से भरकर कहने लगा—तुझे यदि चोरों के साथ सहानुभूति है तो खरबूज़े खरीद कर खिला दे। यदि खाली साहनुभूति ही है तो चलता बन, मुझे अधिक समझाने की आवश्यकता नहीं है। मैंने कृषक से पूछा कि खरबूज़ों के सारे खेत का कितना लोगे? उन दिनों भाव मंदा ही चल रहा था। किसान ने बीस रु. माँगे और मैंने जेब में से निकाल कर दे दिए। समीप ही एक निर्धन लोगों की बस्ती थी और उनको सूचना दे दी कि सारे खरबूज़े तोड़कर खा लो। अतः हे सेठ! यह जो तुम खरबूज़ों के खेत देख रहे हो, ये सब मातृलोक में मनुष्य शरीर के द्वारा बीजे बीस रुपयों का परिणाम है, जो बारह मास इस प्रकार लगे रहते हैं और जो तुम अन्य पदार्थ और उनके सुख देख रहे हो ये भी सब मनुष्य शरीर में किए सकाम कर्मों का ही परिणाम है। स्वर्ग में इतने शारीरिक सुख होने पर भी मन व्याकुल रहता है। जैसे मातृलोक में दर्जा-ब-दर्जा निर्धन धनवान होते हैं, इसी प्रकार पुण्यों के हिसाब से स्वर्ग में भी ऊँचे नीचे होते हैं। अपने दर्जे से छोटों को देखकर मन में अहंकार उत्पन्न होता है और बड़ों को देखकर ईर्ष्या होती है, इसलिए मन हर्ष-शोक में जलता रहता है। दूसरी बात स्वर्ग कोई चिरजीवी विश्राम स्थल नहीं, पुण्य समाप्त होने पर फिर नीचे गिरा दिया जाएगा। मनुष्य शरीर छूटने के पश्चात् मेरे पुण्यों के परिणाम स्वरूप धर्मराज ने जब मुझे स्वर्ग में भेजा तो मेरे गले में पचास फूलों की माला पहना दी गई जिसका भाव था कि स्वर्ग के समय अनुसार मैं पचास वर्ष स्वर्ग में रह सकूँ। एक वर्ष व्यतीत हो जाने पर एक पुष्प मुरझा जाता है। पुष्प के मुरझाने पर मन को ठेस लगती है कि स्वर्ग जीवन का एक और वर्ष कम हो गया। इस युक्ति से स्वर्ग लोक की प्रतीति मात्र सुख चाहे अधिक दिखाई देते हैं, लेकिन मातृ लोक से दुःख किंचित मात्र भी कम नहीं हैं। हे सेठ! मेरा मन अब बार-बार पश्चाताप कर रहा है कि हीरे जैसा मनुष्य जन्म भी मिला, लेकिन उससे कोई लाभ न उठाया बल्कि कौड़ियों के बदले गंवा दिया। हे सेठ! क्या मातृलोक के और क्या स्वर्ग-लोक के सुख मेरी दृष्टि में दोनों समान हैं। गले में ज़ंजीर चाहे लोहे की हो अथवा स्वर्ण की, वज़न एवं बंधन में कोई अन्तर नहीं। अब मेरे मन में बार-बार विचार उठते हैं कि कब मनुष्य जन्म प्राप्त हो तो निष्काम होकर परमेश्वर का भजन करके जन्म-मरण व हर्ष-शोक आदि के समस्त दुःखों से मुक्ति प्राप्त कर लूँ, लेकिन यह नहीं पता कि मातृलोक एवं मनुष्य शरीर को प्राप्त करने वाला सौभाग्यशाली क्षण अब प्राप्त होगा कि नहीं? इसलिए मैंने कहा था धन्य मातृ लोक एवं धन्य मनुष्य देही। सेठ ने पूछा कि क्या यहाँ निष्काम होकर भजन नहीं किया जा सकता? देवता ने कहा—हे सेठ जी! एक स्वर्गलोक क्या, ब्रह्मलोक आदि ऊपर वाले लोग और मनुष्य के बिना चौरासी लाख जीव-जन्तु सब भोग योनियां हैं इसलिए किसी को भी नया कर्म करने का अधिकार नहीं। मातृलोक में एक मनुष्य शरीर ही ऐसा है जो अपने कर्मों के द्वारा नरक आदि और निकृष्ट योनियों के अनेक दुःखों का भागी बनता है और यह मनुष्य ही है जो सकाम कर्मों द्वारा ऊपर वाले लोक स्वर्ग आदि में प्रवेश कर सकता है। हे सेठ! मनुष्य ही है जो सत्संग और विवेक के बल द्वारा पुरुषार्थ करके आनंद सागर वाहिगुरु में सदा के लिए समा सकता है। सेठ ने पूछा कोई प्रमाण है? देवता, हां, देखो गुरु नानक देव जी इस मातृलोक रूपी धर्म खण्ड का ही वर्णन कर रहे हैं—

राती रूती थिती वार॥ पवण पाणी अगनी पाताल॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल॥ तिसु विचि जीअ जुगति के रंग॥
तिन के नाम अनेक अनंत॥ करमी करमी होइ विचारु॥
सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पंच परवाणु॥
नदरी करमि पवै नीसाणु॥ कच पकाई ओथै पाइ॥

नानक गइआ जापै जाइ॥ धरम खंड का एहो धरमु॥

(जपुजी साहिब, पृष्ठ ७)

अर्थ—ऊपर आकाश है, आस-पास वायु, नीचे पाताल है, मध्य में मातृलोक की पृथ्वी है। इसके ऊपर अग्नि और जल हैं। इस पृथ्वी पर रातें, ऋतुएं और तिथियां हैं अर्थात् यहाँ की व्यवस्था बनाए रखने के लिए परमेश्वर ने काल गति की रचना करके इस पृथ्वी को धर्म अर्जित करने का स्थान बना दिया। इस पृथ्वी पर निवास करने वाले जीवों को कर्म सम्पादन करने वाला कहा है। इसलिए धर्मसाल अथवा धर्मखण्ड कहा है। धर्म नाम है ऐसे कर्मों का जो संसार में शुभ होने पर यश का कारण बने और परलोक में सद्गति दे। इस आधी 'पौउड़ी' में बताया है कि जीवों के विचार अर्थात् उनके किए कर्मों की जाँच-पड़ताल अपने-अपने कर्मों के अनुसार होती है। कहाँ होती है? तो अगली आधी 'पउड़ी' (श्लोक) में फरमाते हैं कि शरीर त्याग के पश्चात् **नानक गइआ जापै जाइ॥** जहाँ सच्चा वाहिगुरु स्वयं है और उसका दरबार है **सचा आपि सचा दरबारु॥** वहाँ जीवों द्वारा किए कर्मों और अर्जित कर्मों के अच्छे-बुरे की जाँच पड़ताल होती है। वहाँ शोभायमान कौन होता है? उत्तर है—'**पंच परवाणु॥**' जिन पर कृपा दृष्टि वाले की कृपा का निशान पड़ता है। अब काल चक्र का इस पर प्रभाव नहीं रहता। '**बखशि लीए नाही जमकाणे॥**' देवता से ऐसा उपदेश सुनकर सेठ स्वयं ही बोल उठा—

रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है॥
माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु॥
जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है॥ रहाउ॥
सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु॥
बारू की भीति जैसे बसुधा को राजे है॥

(राग जैजावंती म: ९ पृष्ठ १३५२)

यथा— **घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी॥**
जब ही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेत करि भागी॥
इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ॥
अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ॥

(सोरठि महला ९, पृष्ठ ६३४)

यथा— **पुत्र कलत्र गिरसत का फासा॥**
होनु न पाईऐ राम के दासा॥

(गउड़ी गुआरेरी म: ५ पृष्ठ १८०)

यथा— **मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई॥**
पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई॥
मुकति माल कनिक लाल हीरा मन रंजन की माइआ॥
हा हा करत बिहानी अवधहि ता महि संतोखु न पाइआ॥
हसति रथ अस्व पवन तेज धणी भूमन चतुरांगा॥
संगि न चालिओ इन महि कछुऐ उठि सिधाइओ नांगा॥
हरि के संत प्रिअ प्रीतम प्रभ के ता कै हरि हरि गाईऐ॥
नानक ईहा सुखु आगै मुख ऊजल संगि संतन कै पाईऐ॥

(जैतसरी महला ५ पृष्ठ ७००)

आदि गुरु वाक्यों की विचार ने सेठ के मन पर विद्युत के समान असर किया। सोचने लगा, परमेश्वर की कृपा से संतों का मिलना हुआ लेकिन मेरा दुर्भाग्य मैंने महापुरुषों से असत्य ही मांगा—

यथा— कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ सभु संसारु ॥

(आसा की वार, पृष्ठ ४६८)

सेठ ने वैराग्य युक्त होकर महापुरुषों से उपदेश लेकर अर्जित साधनों द्वारा मनुष्य जन्म को सफल किया।

मातृलोक में भारत-खण्ड की विशेषता

उपरोक्त विचार से यहाँ स्पष्ट है कि स्वर्ग आदि परलोक की बजाए मानों मातृलोक श्रेष्ठ है। फिर मातृलोक में ही बहुत से देश हैं। चाहे परमेश्वर की रचना होने के कारण सब देश और वहाँ के निवासी अपनी-अपनी जगह श्रेष्ठ हैं यथा—

आपि सति कीआ सभु सति ॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २८४)

यथा— बुरा भला कहु किस नो कहीऐ सगले जीअ तुमारे ॥

(आसा म: ५, पृष्ठ ३८३)

लेकिन किसी भी काम की सफलता तभी संभव होती है जब परिस्थितियां अनुकूल हों और वायुमण्डल परागमय और सहायक हो। इसलिए भजन सिमरन द्वारा मनुष्य जन्म की सफलता के लिए समस्त मातृलोक से भारत-खण्ड अधिक श्रेष्ठ है, क्योंकि भारतवर्ष की पवित्र भूमि पर ही चारों युगों के अवतारों ने प्रकट होकर यहाँ के वायुमण्डल को भक्ति एवं ज्ञान के दीपक द्वारा प्रकाशित किया और मनुष्य जन्म की सफलता रूपी सुगंध बिखेरी।

भारत-खण्ड में पंजाब की विशेषता

समूचे मातृलोक से प्रभु-भक्ति के बीज अधिक होने के कारण भारतवर्ष की चाहे अपनी महानता है, लेकिन पंजाब की धरती इससे भी बढ़कर भाग्यशाली है, क्योंकि यहाँ मुलतान के क्षेत्र में सतयुग के साथ बावन अवतार प्रकट हुए और पटियाला ज़िला के 'घड़ाम' नगर को त्रेता युग के अवतार भगवान् रामचन्द्र जी का ननिहाल नगर होने का मान प्राप्त है और त्रेता युग में ही सत्यावती सीता जी ने श्री अमृतसर साहिब से आठ किलोमीटर दूर रामतीर्थ वाले स्थान पर तप साधना की थी और इस पवित्र स्थल पर ही बेदी एवं सोढी दो श्रेष्ठ कुलों के पूर्वज लव और कुश प्रकट हुए।

द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण की ओर से महाभारत की लीला रचकर प्राणी मात्र के उद्धार के लिए गीता के उपदेश का उच्चारण भी इस भाग्यशाली पृथ्वी पर ही हुआ।

कलियुग के समय में अकाल पुरख वाहिगुरु ने अपने आपको श्री गुरु नानक देव महाराज जी के रूप में प्रकट किया। फिर दस शरीर धारण करके जो पराग बिखेरा वह अकथनीय है अर्थात् वाणी का विषय ही नहीं।

पाँचवें शरीर में कलियुगी जीवों के उद्धार हेतु श्री गुरु ग्रन्थ साहिब रूपी जहाज़ की रचना करके और भी बहुत उपकार किया। हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु आपने शीश ही नहीं दिया अपितु सर्वस्व का बलिदान देकर केवल पंजाब ही नहीं, बल्कि समस्त भारत के एक-एक बालक को कृतज्ञ बनाया। इस पृथ्वी को ही राजा बलि और दानवीर कर्ण जैसों की

कर्मभूमि कहलवाने का मान प्राप्त है। भारत के निवासियों की अन्न की ओर से क्षुधा दूर करने के लिए तो मानों पंजाब 'मोदीखाना' है। इसलिए पंजाब की पवित्र भूमि की महानता भारतवर्ष की तुलना में कहीं अधिक है।

पंजाब में मालवा देश की विशेषता

पंजाब की पवित्र एवं सुन्दर उद्यानों और वनों से हरी भरी, नदी नाले और नहरों की सुन्दर रचना वाली समतल एवं उपजाऊ भूमि की धरती पर अन्न की खान मालवा देश है। इस मालवा देश में जहाँ ब्रह्मज्ञानियों, विद्वानों, संतों, महंतों, योगियों, योद्धों, शूरवीरों ने अपनी महक बिखेरी वहाँ सातवें पातशाह और दसवें पातशाह ने हर्ष विभोर होकर मालवा की इस पावन भूमि को अनन्त वरदान देकर मालामाल कर दिया। इस पवित्र देश मालवा के मध्य में स्थित मलेरकोटला राज्य के नवाब शेर मुहम्मद खां ने कलगीधर पातशाह के छोटे साहिबज़ादों के लिए सरहंद में 'हा' का नारा मारकर साहिब श्री गुरु गोबिन्द सिंह महाराज से अपने नगर मलेरकोटला को चिरंजीवी होने का वरदान प्राप्त किया।

मालवे का कुछ प्राचीन इतिहास

महाभारत के युद्ध में अठारह अक्षौहिणी अर्थात् सवा अरब लोग मारे गए। एक प्रकार से प्राचीन वंशों का नाश ही हो गया। समस्त देश अस्त-व्यस्त हो गया। निर्धनता ने घर कर लिया। कोई-कोई व्यक्ति इस देश में जीवित रहा। परमेश्वर के ईश्वरीय कानून के अनुसार जैसे प्रत्येक पतझड़ किसी बसंत ऋतु की सूचक होती है, इसी प्रकार नए वंश की रचना करने के लिए ही शायद परमेश्वर की ओर से यह महाभारत का खेल खेला गया था।

युद्ध समाप्ति के पश्चात् महाराजा युधिष्ठिर ने छत्तीस वर्षों तक बहुत धर्म का राज्य किया। फिर अपने पौत्र परीक्षित को राज-भाग संभालकर स्वयं द्रौपदी और भाइयों सहित हिमालय पर्वत की ओर चले गए जहाँ बर्फ़ों में पिघलकर स्वर्गपुर की ओर चले गए। सोनीपत नगर भी इसी धर्मी राजा ने बसाया था। उसके बाद साठ वर्ष परीक्षित ने धर्म का राज किया और तक्षक नाग के डसने से परलोकगामी हुआ। उसके पश्चात् उसके पुत्र जनमेजय को राजतिलक किया गया जो चौरासी वर्ष राज्य सुखभोग कर शरीर त्याग गया। जनमेजय के पश्चात् उसका पुत्र 'सतानीक असमंध' राजगद्दी पर बैठा। जनमेजय की एक अन्य रानी 'रज़िया' नाम की धोबिन थी। उसके पुत्र अजय सिंह ने अपने सौतेले भाई 'सतानीक असमंध' और असमेधान को मार कर परीक्षितगढ़ ज़िला मेरठ का राज्य संभाल लिया। भट्टों ने उसकी रज़िया पूत कहकर प्रशंसा की। समय पाकर रज़िया पूत नाम बिगड़कर राजपूत नाम प्रसिद्ध हो गया। उसके राज दरबारियों ने भी अपने आप को राजपूत कहलवाना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार समय पाकर पांडव कुल के स्थान पर राजपूत कुल प्रचलित हो गई। वंश-दर-वंश यही कुल 1654 वर्ष तक राज करती रही।

इतने समय में तीस राजाओं ने राज किया। इस कुल के सबसे अंतिम राजा 'खमन' ने सुख सुविधा में राजकाज छोड़ दिया। इसका एक 'बसरबा' नाम का मंत्री था जिसने 'खमन' को मारकर राज-भाग संभाल लिया। उस समय के बाद देश में उथल-पुथल मच गई। तथाकथित राजपूतों ने निकृष्ट काम करने आरम्भ कर दिए। इन परिस्थितियों में प्रजा का दु:खी होना स्वाभाविक ही था। देश में हा-हाकार मची देखकर ब्राह्मणों ने राजस्थान के आबू पर्वत पर हवन करना आरम्भ कर दिया। हवन की समाप्ति पर अग्नि कुण्ड में वशिष्ठ वंशी ब्राह्मण की आहुति देने पर महाबली योद्धा मार-मार करता प्रकट हुआ। इसके कारण वशिष्ठ ने उसका नाम 'परमार' रखा। अंगिका के आहुति देने पर 'परहार'

प्रकट हुआ जो बल खाकर गिर पड़ा। इसलिए उसका उक्त नाम 'परहार' कल्पित किया गया। भारद्वाज की आहुति देने पर सुंदर कमर वाला युवक अग्नि कुण्ड में से निकला, उसका नाम 'सोलंकी' रखा गया। सबके बाद विश्वामित्र की आहुति देने पर विशाल वक्षस्थल वाला महाबलि योद्धा प्रकट हुआ, उसका नाम 'चौहान' रखा। इन चारों अग्रगण्यों को प्राचीन योद्धा जातियों का सेनापति बनाकर भिन्न-भिन्न वंशों के योद्धा और महाबलि युवकों की सेना को सशस्त्र विद्या सिखाकर निकृष्ट राजपूतों की तुलना में महा उदार एवं समर्पित राजपूतों का एक नया वंश तैयार किया गया जिसने उस निकृष्ट श्रेणी का नाश करके विदेशी जातियों को वापिस वहीं भेज दिया, जो 2000 वर्ष तक भारत की ओर देख नहीं सकीं।

ये चारों बहादुर जातियां अग्निकुल राजपूत नाम से प्रसिद्ध हुईं। इन्होंने अपने तेज़ बल के साथ बहुत से इलाके जीतकर अपनी-अपनी राजधानियां बना लीं। परमारों की संतान अधिक होने के कारण और जीत का अंतिम सेहरा चौहानों के सिर होने के कारण भारतवासियों में यह धारणा बन गई—धरती परहारों की और विजय चौहानों की। परमारों की मुख्य राजधानी उस समय 'अचलगढ़' थी जिसमें जयपुर का क्षेत्र था। परमारों की राजधानी 'महसमति' और सोलंकियों की 'बलवीपुर' थी। इस प्रकार इन बहादुर जातियों ने उत्तरी भारत के पर्याप्त क्षेत्रों में कोई पाँच सौ वर्ष राज्य किया।

राज चले जाने पर भूमियों के स्वामी होने के कारण खेती का पेशा करते रहे। स्वतन्त्र ज़मींदार होने के कारण राजपूतों से इनका नाम 'जाट' पड़ गया और कई पर्वतों में रजवाड़े बनाकर अपने आपको अग्निकुल राजपूत अथवा डूंगर देश में बसने के कारण स्वयं को डोगरा राजपूत कहलवाने लगे। यह सब उन अग्निकुल के चार शुद्ध राजपूतों में से हैं। कोई चन्द्रवंशी चंदेल और सूर्यवंशी ठाकुरों के साथ तीस जातियां जाटों की बाहर से आईं। सब मिलाकर छत्तीस जातियां हैं जो सम्प्रति भारतीय राजाओं अथवा बड़ी जातियों के पूर्वज हैं। प्रत्येक जाति इन छत्तीस में ही जाकर मिल जाती है।

चहल वंश

समय पाकर इन बहादुर जातियों में से अन्य शाखाएँ उभरकर सामने आईं। चौहानों की कुल में कोई 500 ई० के समीप एक 'कौल' नाम का पुरुष पैदा हुआ जो बहुत तेज़वान एवं प्रतापी था। उसने अपने बाहुबल से कई इलाके जीतकर 'शिप्रा' नदी के दक्षिणी तट पर उज्जैन को अपनी राजधानी बनाया। उसका तेज़ एवं प्रताप इतना था कि चौहान वंश में उसके नाम पर कौल वंश अथवा कौली नामक शाखा आरम्भ हो गई। उसके वंश का पीढ़ी-दर-पीढ़ी राज चलता रहा। कौल की दसवीं पीढ़ी में एक तेज़ एवं प्रतापी पुरुष उत्पन्न हुआ, जिसका नाम चहल रखा गया। चहल ने अपने समय और अपने पूर्वजों के यश को इतना फैलाया कि उसके उत्तराधिकारी अपने आपको चहलवंशी ही कहलवाने लगे। इस प्रकार चौहान से कौल वंश एवं कौल वंश से चहल वंश प्रचलित हुए। चहल का पौत्र अथवा तीसरे स्थान पर 'कृष्ण राज' पैदा हुआ जिसका उपनाम 'उपेन्द्र' था। वह बड़ा महाबली और प्रभावशाली राजा था जिसका राज्य 'उज्जैन' और 'अचलगढ़' अर्थात् आबू पर्वत के समीप था। उसको आश्चर्यचकित शक्तियों और अनुपम कौतुक के प्रदर्शन के फलस्वरूप 'उपेन्द्र' की उपाधि दी थी। उस महान् योद्धा ने चित्तौड़ के मूरी परमारों की सहायता के लिए भारतवर्ष में आने का मार्ग अवरुद्ध कर दिया। अंतत: सिंध में दौड़ते हुए का पीछा करके नौशेरवां (अजम-पति) खाँ के ईसाई पुत्र 'नौसी याद' की सेना का भी मुँह मोड़कर राजस्थान को तुर्कों से खाली करा लिया था। इस वीरता के कारण उसका सिक्का राजस्थान के राजाओं और अन्य जातियों के योद्धाओं के

दिलों पर बैठ गया था। अन्तत: इस वीर राजा ने ग्यारहवीं सदी के अंत में राज-भार अपने पुत्र 'वैरसी वैरी सिंह' को सौंपकर स्वयं संन्यास ले लिया। वैरी सिंह के दो परिवार थे। एक का पुत्र रल्ला था, जिसने 'जाखल' के समीप 'रल्ला' गाँव बसाया था। रल्ला ने अपने सौतेले भाई को मार दिया तो उसके भतीजे जुगराज ने बड़े होकर अपने ताया रल्ला को जोहड़ के किनारे दातून करते हुए को मारकर अपने पिता की शत्रुता का बदला लिया और उससे भिन्न 'जोगा गाँव' अपने नाम पर बसाया। इस स्थान को हिन्दू लोग बहुत पवित्र समझते हैं, क्योंकि प्राचीन समय में पाँचों पाण्डव और द्रौपदी जिस समय वनवास का तेरहवां गुप्त वर्ष छिपकर व्यतीत कर रहे थे—यहाँ आए थे, तो यहाँ द्रौपदी ने स्नान करके स्नान कुण्ड तीर्थ की स्थापना की थी, जिसकी निशानी कुछ समय पहले तक मौजूद थी।

दूसरे जोगे ने देखा कि प्राचीन 'पलाड़ नगर' के खण्डहर पर एक बकरी और बाघ का युद्ध हो रहा है, जिसमें बकरी बाघ को दौड़ाकर अपने बच्चे को बचाने के लिए सफल हो गई तो जुगराज ने इस पृथ्वी को शक्ति वाली समझकर यहीं अपने नाम 'जोगा गाँव' की स्थापना की। समय पाकर इन जोगा, रल्ला आदि दो गाँवों से इस परगने में भीखी आदि चालीस गाँव चहलों के बस गए। यह ग्यारहवीं सदी के अंत का समय था। यहाँ लगभग दो सौ वर्ष चहलों का स्वतंत्र राज्य रहा। यह सिद्धों का समय था, सिद्धों का ज़ोर होने के कारण चहल सिद्धों का शिष्य हो गया। इनमें से ही एक सिद्ध योगी 'पीर' नामक हुआ है, जिसको सब चहलवंशी पूजते हैं। जहाँ भी चहलों का कोई गाँव है वहाँ योगी पीर की माड़ी (मंदिर) भी है।

चहल गोत्र का एक गाँव तहसील और ज़िला लाहौर, थाना वर्की में है। इस गाँव में गुरु नानक देव जी का गुरुद्वारा है। यहाँ सतगुरु जी का ननिहाल था इसलिए गुरु बाबा जी कई बार यहाँ आए। बीबी नानकी जी का जन्म भी यहीं हुआ था। यह गाँव चहल वंशी जट्टों का होने के कारण यहाँ जोगीपीर की माड़ी (मंदिर) भी है। इस प्रकार 1100 ई० के लगभग बहादुर चौहानों के इस चहल वंश ने इस जंगल (आज का मालवा देश) में सनाम कस्बे से दस मील उत्तर की ओर ये दो गाँव—'जोगा एवं रल्ला' बसाए थे। सोही एवं लक्खी आदि मालवे के अन्य कई गोत्र चहल वंश में से ही उत्पन्न हुए हैं।

इस प्रकार चहल वंश चौहानों की कौल शाखा में से है। चौहानों की मूल चौबीस शाखाएँ हैं। इस प्रकार इस जंगल देश को कलगीधर पातशाह श्री गुरु गोबिन्द सिंह महाराज जी ने अपनी कृपा द्वारा मालामाल करके मालवा देश बना दिया।

सीहां दौद

जिह कुल साधु बैसनौ होइ॥
बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ॥ १॥ रहाउ॥
ब्रहमन बैस सूद अरु खत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ॥
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ॥ १॥
धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ॥
जिन पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ॥ २॥
पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ॥
जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ॥ ३॥

(बाणी रविदास, पृष्ठ ८५८)

ऐसा एक भाग्यशाली एवं सौभाग्यशाली नगर जिसको देखते ही श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है, गुरु-साहिबान द्वारा

बसाए मालवा देश में, ऐतिहासिक नगर मलेरकोटला से आठ किलोमीटर दूर पूर्व को स्थित, पंजाब के औद्योगिक नगर लुधियाना से चालीस कि०मी० दूर पूर्व दक्षिण की ओर है। कलकत्ता से पेशावर तक का शाही मार्ग अथात् जी०टी० रोड पर स्थित नगर खन्ना मंडी से तीस कि०मी० दूर उत्तर की ओर है। प्राचीन कस्बा मलौद से चार कि०मी० दक्षिण की ओर खन्ना मलेरकोटला रोड पर स्थित मण्डियाँ गाँव से दो कि०मी० दूर उत्तर की ओर है अथवा अंग्रेज़ी राज्य के ज़िला लुधियाना में गाँव 'सीहां दौद' स्थित है। इसको एक अलौकिक आत्मा ने प्रकट होकर *'अठि सठि तीरथि जह साध पग धरहि'* के महावाक् अनुसार तीर्थ रूप और सौभाग्यशाली बनाया। यद्यपि पूर्ण ब्यौरा प्राप्त नहीं हो सका, लेकिन फिर भी आज से कई सदियों पूर्व मालवा के प्रसिद्ध गाँव जोगा, रल्ला से चहलवंशी पूर्वज 'सीहां सिंह' ने इस गाँव को बसाकर अपने नाम पर 'सीहाँ दौद' नाम रखा।

सतलुज नदी आज चाहे इस नगर से पचास कि०मी० दूर उत्तर की ओर पीछे हट गई है, लेकिन इतिहास के अनुसार प्राचीन समय में इस स्थान से होती हुई, भटिंडा की ओर बहती थी इसलिए नदी का प्राचीन प्रवाह होने के कारण 'सीहाँ दौद' गाँव कुछ निचले स्थान पर बसा हुआ है। वर्षा ऋतु में तेज़ वर्षा के कारण बाहर से पानी आने का भय बना रहता है, इसलिए कुछ समय पूर्व 'सीहाँ दौद' के कुछ परिवारों ने गाँव से एक कि०मी० दूर उत्तर पश्चिम की ओर ऊँचे स्थान पर जाकर निवास की व्यवस्था की, इसलिए इस गाँव का नाम 'ऊँची दौद' पड़ा।

इस प्रकार 'सीहाँ दौद' गाँव से उत्तर की ओर बिल्कुल समीप ही कुछ परिवार जाकर बस गए। उन्होंने किसी मुखिया व्यक्ति के नाम पर उस बस्ती का नाम 'मालो दौद' रखा। इस प्रकार चहलवंशी जट्ट सिक्खों के समीप-समीप तीन गाँव बस गए, लेकिन तीनों गाँवों में से बड़ा और प्राचीन होने के कारण महानता एवं प्रसिद्धता 'सीहाँ दौद' की ही रही।

'सीहाँ दौद' नगर में लगभग एक हज़ार परिवार रहते हैं, जिसमें पचास प्रतिशत घर चहलवंशी जट्ट सरदारों के हैं। शेष 25% महाजन और 25% अन्य पिछड़ी जातियों के हैं।

इस पावन नगर के संस्थापक बाबा सीहाँ सिंह से पीढ़ी-दर-पीढ़ी नौवीं पीढ़ी में सरदार मँल सिंह जी हुए हैं। वे बाल्यकाल से धार्मिक संस्कारों से युक्त, संत सेवी और शुभ स्वभाव वाले व्यक्ति थे। सरदार मॅल सिंह जी एक बहुत भाग्यशाली, प्रसन्नचित्त और तेज प्रतापी पुत्र हुआ जिसका नाम जस्सा सिंह रखा गया। जस्सा सिंह अपने समय में केवल अपने ग्राम के ही नहीं, अपितु क्षेत्र के समृद्ध एवं सम्पन्न ज़मींदारों में से थे। आपका स्वभाव संत-सेवी, पर-उपकारी, निर्धनों का ध्यान रखने वाला होने के कारण आपका बहुत आदर मान था। उस समय विरक्त महात्मा, विरक्त मण्डलियों के रूप में प्राय: विचरण करते थे। बाबा जस्सा सिंह अपने संत सेवी स्वभाव अनुसार, साधुओं की सेवा दूध, दही, अन्न अथवा वस्त्र आदि वस्तुओं द्वारा बहुत प्रेम से करते। सस्ता ज़माना होने के कारण आम लोगों के पास पैसे की कमी थी, इसलिए आप ग़रीब लोगों की पुत्रियों का विवाह और यथाशक्ति सहायता करते, क्योंकि साधु पुरुषों के सत्संगी होने के कारण आप परमार्थ के इस रहस्य को भली भाँति समझते थे कि लेखा-जोखा करके किसी बड़े से बड़े पुण्य की बजाए सहज स्वभाव की गई किसी जरूरतमंद की सेवा विशेष फलदायक होती है। जैसी भावना वैसा फल प्राप्त हो जाता है। भावना सकाम हो तो सांसारिक सुखों में वृद्धि हो जाती है यदि निष्काम हो तो परमेश्वर प्राप्ति का द्वार खुल जाता है। इस प्रकार प्रत्येक दृष्टि से सुखदायक, पर-उपकार का माधुर्य और सुगंधि सहित जिसको 'केवल पर-उपकारी ही अनुभव करता है' बाबा जस्सा सिंह जीवन व्यतीत कर रहे थे। समय व्यतीत होने पर आप के घर तीन पुत्र-रत्नों ने जन्म लिया—बड़े का नाम मस्तान सिंह, दूसरे का बहाल सिंह और तीसरे का नाम गुलाब सिंह रखा गया।

सांसारिक पदार्थों का परमार्थ में तो चाहे कुछ मूल्य न हो, लेकिन विश्व में तो इतना धन-पदार्थ, पुत्र और आदर मान आदि में से एक का अभाव भी मन को अशांत और व्याकुल और जीवन को रसहीन बना देता है, जैसे दूध से

तैयार हुआ प्रत्येक प्रकार का मिष्ठान चाहे काजू आदि मेवों सहित हो अपने आप मीठा नहीं होता जब तक उसमें मिठास जैसे चीनी, शक्कर आदि न मिला दी जाए। इस प्रकार सांसारिक पदार्थों की बहुलता भी उतनी देर तक सुखदायी नहीं होती जितनी देर जीवन पारमार्थिक न हो, क्योंकि परमेश्वर के बिना संसार की कोई भी वस्तु अपने आप में सुख-स्वरूप नहीं है। इस प्रकार बाबा जस्सा सिंह जी जहाँ सांसारिक पदार्थों में संतुष्ट थे वहाँ पर-उपकार एवं सत्संग के अनूठे माधुर्य रस द्वारा सुखदायी जीवन भी व्यतीत कर रहे थे। समय व्यतीत होता गया। आपके बड़े पुत्र मस्तान सिंह के युवक हो जाने पर उसका विवाह ज़िला लुधियाना के बौंदली गाँव में एक नेक घराने की सुशील बीबी ईशर कौर के साथ किया। (यह गाँव समराला के समीप पड़ता है)

बाबा जस्सा सिंह की पवित्र शुभ कमाई और निष्काम पर-उपकारी जीवन के पुष्पित होने का अब समय आ गया।

जन्म

सन् 1894 ई० के लगभग जस्सा सिंह के बड़े सुपुत्र सरदार मस्तान सिंह के घर माता ईशर कौर की पवित्र कोख से **'आपि तारि तारे कुल दोइ'** के महावाक् अनुसार गुरु नानक महाराज के घर से उपकृत कुलों की उद्धारक रूह (आत्मा) एक बालक के रूप में प्रकट हुई। परिवार की ओर से बड़ी खुशी के साथ उस परमात्मा द्वारा उपकृत आत्मा का नाम सुंदरता एवं पवित्रता का प्रतीक निक्का सिंह रखा गया।

नीके गुण गाउ मिटही रोग॥

(पृष्ठ ७१३)

संतहु रामदास सरोवर नीका॥ जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जीअ का।

(सोरठि महला ५, पृष्ठ ६२३)

उस विशाल मस्तक और हँसमुख चेहरे वाले होनहार बालक निक्का सिंह का बाल्यकाल माता की गोद का आनंद लेता रहा और सम आयु बालकों के साथ खेलते व आनंद से व्यतीत हो रहा था। अचानक छ:ह वर्ष की आयु में माता जी का देहावसान हो गया। 'सीहाँ दौद' गाँव में उदासीन सम्प्रदाय का एक प्राचीन स्थान था, जिसमें सात्विक आचरण युक्त दो महात्मा रहते थे।*

एक का नाम बुद्ध दास और दूसरे का नाम त्रिवेणी दास था। दोनों महात्मा जहाँ पढ़े-लिखे विद्वान अर्थात् गुरुवाणी के श्रेष्ठ ज्ञाता और संस्कृत के जानकार थे, वहाँ जीवन की शुद्धता के कारण लोगों में आदरणीय भी थे। बाबा जस्सा सिंह जी ने अपने धार्मिक संस्कारों के कारण निक्का सिंह जी को पंजाबी पढ़ने एवं गुरुवाणी का पाठ सीखने के लिए उपरोक्त महात्माओं के पास पढ़ने बैठा दिया। उस होनहार और उद्यमी बालक निक्का सिंह ने अपने पूर्व संस्कारों के अनुसार पंजाबी के अक्षर ज्ञान के पश्चात् गुरुवाणी शिक्षण आरम्भ किया। कुछ वर्षों के पश्चात् पिता मस्तान सिंह जी का भी देहावसान हो गया।

पिता जी के देहावसान के पश्चात् आप दोनों चाचों के साथ खेती-बाड़ी के कार्य में सहायता करने लगे। कुछ समय इस प्रकार व्यतीत किया। इतने में प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ हो गया। उस समय सरकार बनतानियां ने युवकों को फौज में भर्ती करने के लिए स्थान-स्थान पर भर्ती आरम्भ कर दी। आप भी अन्न-जल की प्रेरणा और फौज की नौकरी को श्रेष्ठ आजीविका समझकर 'सीहाँ दौद' के सूबेदार सवाई सिंह को साथ लेकर फौज में भर्ती हो गए। भर्ती होकर कुछ

* *यह स्थान गाँव के पूर्व की ओर आज भी विद्यमान है।*

समय भोपाल और कुछ समय 'होती मरदाना' छावनी में रंगरूटी करने के पश्चात् अपनी कम्पनी के साथ इज़राइल पहुँचकर प्रथम विश्व युद्ध में सम्मिलित हुए। कुछ समय वहाँ ठहरने के पश्चात् फौज में एक बग़ावत पैदा हो गई। उस समय युवकों को जो कारतूस दिए जाते थे, उनके ऊपर एक टोपी सी चढ़ी होती थी जो उस युवक को मुँह से खींचकर उतारनी पड़ती थी। उससे फौज में अफ़वाह फैल गई कि यह टोपी गाय और सूअर के चमड़े से बनती है। इस बात से हिंदू, सिक्ख और मुसलमान युवकों में विद्रोह पैदा हो गया कि गोरे (अंग्रेज़) जानबूझ कर हमारा दीन भ्रष्ट करके हमें धर्म से गिरा रहे हैं। इस बात को लेकर फौज के कुछ युवकों ने विद्रोह कर दिया, उनमें आप भी थे। अंग्रेज़ सरकार ने सारी फौज में विद्रोह फैल जाने के भय से कुछ गिने-चुने युवकों को पकड़कर कोर्ट मार्शल के पश्चात् फौज में से निष्कासित कर दिया। नौकरी छोड़ने के पश्चात् आप अन्य युवकों के साथ इज़राइल से पैदल चलकर ईरान के मार्ग से होते हुए भारत वापिस आए।*

घर जाकर आप खेती-बाड़ी का काम करने लगे। दैवयोग से कुछ ऐसा हुआ कि उन दिनों प्लेग जैसी एक भयानक बीमारी फैल गई जिसके साथ मौत ने गाँव के गाँव खाली कर दिए। उस विनाशक रोग ने आपके परिवार पर भी आक्रमण किया जिसमें आपके दोनों चाचे और दो चाचियाँ अर्थात् परिवार के चार व्यक्तियों को मृत्यु ने दबोच लिया। शक्तिशाली काल ने अपने एक ही झपट्टे से इस सुखी परिवार को कमाऊ पुरुषों से मानो रिक्त ही कर दिया। शेष परिवार में थे निक्का सिंह जी स्वयं और स्वर्गीय चाचियों की दो लड़कियाँ (भानों एवं कानों) और लक्ष्मण सिंह जो अभी बच्चा ही था, चौथा बाबा जस्सा सिंह जो कि अत्यंत वृद्ध था और घर में छः युवक पुत्रों और पुत्रवधुओं की मृत्यु के साथ मानसिक पीड़ा से संतप्त जीवन के अन्तिम घड़ियाँ गिनता आश्रय का मोहताज था।

अचानक काल की झपट का शिकार हुए मानसिक पीड़ा से संतप्त-शेष रहे पाँच सदस्यों के परिवार में कमाऊ पुरुष केवल एक निक्का सिंह जी ही थे। पहले माँ फिर पिता की मृत्यु आपके बाल्यकाल से ही हो गई थी, इसलिए उनकी ओर आपने बहुत ध्यान नहीं दिया था। क्योंकि आप स्वभाव के बहुत बेपरवाह थे, लेकिन अब एक ही साथ परिवार के चार सदस्यों, छोटे-छोटे तीन बच्चों एवं वृद्ध पिता को पीछे छोड़कर स्वयं तो मृत्यु के वापिस न आने वाले मार्ग पर सवार होकर अदृश्य देश को चले जाने से आपके संस्कारी मन ऊपर वैराग्य का ज़बरदस्त झटका लगा। आपने शुद्ध मन से संसार की वास्तविकता भली भाँति समझ ली कि यह सारहीन है। इस असार संसार के चराचर जितने भी जीव हैं, सब प्रत्येक घड़ी, प्रत्येक पल और प्रत्येक क्षण काल के मुख में बड़ी तीव्र गति से जा रहे हैं। जो जीव अपने आपको जीवित समझते हैं वे भी प्रत्येक क्षण समाप्त हो रहे हैं। जन्म को बाल्यकाल ने ग्रसित कर लिया, बाल्यकाल को किशोर अवस्था भक्षण कर रही है, किशोरावस्था को जवानी ने खा जाना है और यौवन को वृद्धावस्था निगल जाती है और वृद्धावस्था के अस्तित्व को मृत्यु नष्ट कर देती है। प्रत्येक माँ यह समझती है कि मेरा पुत्र बड़ा हो रहा है, वास्तव में जन्म के बाद प्रत्येक जीव कम होना आरम्भ हो जाता है। फिर यह भी कोई नियम नहीं है कि वृद्धावस्था के बाद ही मृत्यु आएगी। कई तो माँ के उदर में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, कोई बाल्यकाल में, कोई यौवन में और शेष बचे-खुचे वृद्धावस्था के पश्चात् काल के शिकार हो जाते हैं। गुरु साहिब जी का फ़रमान है—

नह बारिक नह जोबनै नह बिरधी कछु बंधु॥
ओह बेरा नह बूझीऐ जउ आइ परै जम फंधु॥

---

* *पहले विश्व युद्ध में इज़राइल जाना एवं वहाँ से ईरान के मार्ग से वापिस भारत आना, हजूर ने किसी समय स्वयं सुनाया था।*

गिआनी धिआनी चतुर पेखि रहनु नही इह ठाइ॥

छाडि छाडि सगली गई मूड़ तहा लपटाहि॥

(गउड़ी बावन अखरी, पृष्ठ २५४)

ऐसे नाशवान् संसार में जीवित रहने की आशा कोई मूर्ख अर्थात् बुद्धिहीन पुरुष ही करता है, लेकिन बुद्धिमान् अथवा समझदार व्यक्ति उसे ही कहते हैं जो इस क्षणभंगुर मनुष्य जीवन में किसी अविनाशी जीवन को प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ सहित यत्नशील हो जाता है। ये विचार आपके निर्मल मन पर बार-बार उत्पन्न होने आरम्भ हो गए, लेकिन घर के हालात, परिस्थितियाँ कुछ ऐसी बन गई थीं कि एकदम इस दृश्यमान् जगत् को पीठ दिखानी भी कठिन थी, लेकिन छोटी आयु के तीन भाई बहन और मृत्यु की प्रतीक्षा करता वृद्ध दादा, जिनका निक्का सिंह के बिना संसार में अन्य कोई आश्रय न था। इस प्रकार भीतर से वैराग्य-युक्त हुए, बाहर के समस्त कार्य कलाप की व्यवस्था करने लगे। समय व्यतीत होता गया। एक दिन बाबा जस्सा सिंह ने समीप बिठाकर कहा कि निक्का सिंह! तुम विवाह कर लो, क्योंकि घर के सुख रूपी बुझ चुके दीपक में कुछ हर्ष रूपी दीपक की किरण जगे, लेकिन आपके मन में संसार की यह चार दिनों की झूठी खुशियाँ और सुखों की नश्वरता दृढ़ हो चुकी थी, इसलिए आपने कहा, बाबा मेरा मन संसार के बंधनों में फँसने का नहीं है, समय आने पर लक्ष्मण सिंह का विवाह कर लेंगे। पूर्व कर्मों द्वारा अर्जित पुण्यों के फलस्वरूप आप जी के पवित्र मन पर विवेक वैराग्य का बल बढ़ता जा रहा था, इसलिए घर के काम-काज की संभाल के साथ-साथ गुरुवाणी विचार और सत्संग की ओर अधिक ध्यान देने लगे। गाँव के डेरे उदासी संत बुद्ध दास, त्रिवेणी दास आदि जिनका वर्णन ऊपर आ चुका है, उनसे गुरुवाणी शिक्षण पूर्ण कर लिया और जहां कहीं पूर्ण महापुरुष का पता चलता उनके दर्शन, सत्संग का लाभ उठाने के लिए अवश्य जाते।

एक बार उस समय के पूर्ण महापुरुष राजयोगी संत बाबा अतर सिंह जी 'मस्तुआने वाले' लुधियाना 'सवद्दी' वालों की कोठी में पधारे तो आप भी दर्शनार्थ पहुँचे। महापुरुषों ने दशम् पातशाह महाराज के इस सवैय्या **जगत जोत जपै निस बासर एक बिना मन नैक न आनै** की बहुत भावपूर्ण और विस्तार सहित व्याख्या की जिसका श्रोताओं के मन पर गहन प्रभाव पड़ा, लेकिन आप तो पहले ही दृश्यमान पदार्थों का मिथ्यात्व निश्चय करके, किसी ऐसी नित्य वस्तु जिसमें स्वप्न सुषुप्ति आदि कल्पित अवस्थाओं का अस्तित्व ही नहीं—की तृष्णा में दिन-रात व्याकुल थे। महापुरुषों के पवित्र मुख से किसी ऐसी परम आनंदमयी अवस्था की महिमा सुनकर आपके मन पर विशेष प्रभाव पड़ा।*

1923 ई० की कार सेवा में बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी के प्रथम दर्शन

अंम्रितसरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै कऊआ हंसु होहै॥

(गुजरी महला ४, पृष्ठ ४९३)

यथा— **धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंम्रित जलु छाइआ राम॥**

(सूही महला ५, पृष्ठ ७८३)

यथा— **पूरन ताल खटाइआ अंम्रितसर विचि जोति जगावै॥**

(भाई गुरदास जी)

---

* *उपरोक्त सत्संग दीवान का वर्णन किसी समय हजूर ने स्वयं वर्णन किया था और सहज कथा की कथा नम्बर— 10 में भी वर्णन है।*

ऐसे उत्तम गुणों और अकथनीय महिमा से पूर्ण अमृत का सोता (निर्झर) जिसमें श्रद्धा भावना के साथ स्नान कर जन्म-जन्मांतरों की पाप रूपी मैल दूर हो जाती है और जिनके कारण काग रूपी भक्ष-अभक्ष से विवेकहीन हुई मलिन बुद्धि उलटकर स्वच्छ अर्थात् सत्य-असत्य विवेकयुक्त विचारशील हँसवत् हो जाती है, ऐसे अमृत सरोवर श्री अमृतसर की कार सेवा 17 जून, 1923 ई० को आरम्भ हुई। इस पवित्र कार्य की कार सेवा में सेवा का अपना-अपना योगदान डालने के लिए देशभर से लाखों की तादाद में संगत श्री अमृतसर पहुँची। एक शासकीय अंदाज़े के अनुसार अपने वाहनों द्वारा आने वालों के अतिरिक्त नौ लाख टिकटें रेलगाड़ी की बिकी थीं। आप भी गाँव के कुछ अन्य व्यक्तियों सहित सेवा के उस महान् पवित्र कुंभ में गोता लगाने के लिए श्री अमृतसर पहुँचे। इस पावन पर्व में योगदान डालने के लिए सब मतों के साधु महात्मा भी पहुँचे हुए थे। हरिद्वार-ऋषिकेश से भी काफी संख्या में साधु महात्मा पहुँचे हुए थे जिनमें महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी भी आए हुए थे। पूर्व जन्म के संयोगवश बाबा बुड्ढा सिंह जी का प्रथम मिलाप आपको इस पावन नगरी के पवित्र पर्व पर ही हुआ। दर्शन करके कुछ विचार श्रवण करने के उपरांत मन में आकर्षण जगा, लेकिन पूर्ण मिलाप के लिए सम्भवत: अभी कुछ समय की देरी थी। इस प्रकार सेवा और गुरु स्थानों के दर्शन दीदार करके, भीतर जाज्वल्यमान विरह अग्नि को महापुरुषों के पहले मिलाप रूपी वायु झौंके के साथ और प्रज्वलित करके घर वापिस आ गए। अब आप शीघ्रताशीघ्र संसार के समस्त बंधनों से मुक्त होकर परमपद रूपी महान् शांत एवं सुखदायी मंजिल पर पहुँचने के लिए गुरु-शरण रूपी जहाज़ पर सवार होना चाहते थे, क्योंकि पूर्व जन्मों के किए निष्काम कर्म और सत्संग के बल के कारण आप इस रहस्य को भली भाँति जानते थे कि संसार के समस्त दु:खों का अत्यन्त अभाव और प्रत्येक परिवार के सुखों का महान् सागर आत्म देश ही है। ऐसे परम सुखदायी आत्म देश में पहुँचने हेतु गुरु-शरण रूपी जहाज़ के बिना अन्य कोई साधन रूपी वाहन समर्थ ही नहीं है, लेकिन बिना संयोग और शुभ निष्काम कर्मों के ऐसे परम सुखदायी जहाज़ मिलता भी नहीं है, इसलिए अब आपने व्यावहारिक कर्त्तव्यों का भार हल्का करने के लिए योग्य स्थान दोनों बहनों का विवाह अर्थात् भानों का विवाह 'धांदरे' और कानों का विवाह 'लौहगढ़' जिला लुधियाना में कर दिया। लक्ष्मण सिंह चाहे आयु का अभी भी छोटा ही था, लेकिन आपने विवाह वाला कर्त्तव्य उसका भी शीघ्र ही पूरा कर दिया। अब आपका एकमात्र कर्त्तव्य रह गया था—बाबा जस्सा सिंह की सेवा का। इतने में 1926 ई० का हरिद्वार का कुंभ मेला आ गया। आप गाँव के अन्य सज्जनों के साथ हरिद्वार पहुँच गए। सबने कुंभ के पवित्र उत्सव पर श्रद्धा, प्रेम के साथ स्नान किया। लेकिन आप मात्र गंगा स्नानार्थ ही नहीं आए थे, अपितु इससे भी कहीं विशेष काम के लिए—

संसारि सफलु गंगा गुर दरसनु परसन परम पवित्र गते॥
जीतहि जम लोकु पतित जे प्राणी हरि जन सिव गुर ग्यानि रते॥

(सवैये म : ४ के., पृष्ठ १४०१)

के महावाक् अनुसार ऐसे महापुरुष के दर्शन करने के लिए आए थे जिसके दर्शन मात्र से ही पतित प्राणी भी यमलोक को जीत जाता है। इस प्रकार आपने गंगा स्नान के पश्चात् महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी के दर्शन किए। दो दिन सत्संग में कथा-प्रवचन सुनने के पश्चात् साथ आई संगत ने वापसी का विचार प्रकट किया, लेकिन आपके मन में* गुरु चरणों के प्रेम की तीव्र इच्छा जागृत हो चुकी थी, लेकिन वृद्ध बाबे की सेवा संभाल का संकल्प वापिस घर ले आया।

* *1923 ई० की अमृतसर कार सेवा के बाद और 1926 ई० के कुंभ मेले के दौरान संभव है कोई दर्शन मिलाप का संयोग बना हो, लेकिन समय अधिक व्यतीत होने के कारण कोई हवाला मालूम नहीं हुआ।*

किसी भी कार्य की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उपयुक्त समय आ जाए और परिस्थितियाँ अनुकूल हो जाएँ, लेकिन यह जीव के वश में नहीं है अपितु इन कारणों की सर्जना स्वयं प्रभु आप करता है, क्योंकि समस्त कार्यों का कारण करतार के बिना कोई अन्य है ही नहीं। जैसे गुरुवाक्—

करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि॥
कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि॥

(महला २, पृष्ठ १४८)

यथा— **नानक जिनि करतै कारणु कीया सो जाणै करतारु॥**

(आसा दी वार, पृष्ठ ४६६)

इसलिए निक्का सिंह जी का आत्मदेश की यात्रा करने का समय अब समीप आता जा रहा था और परिस्थितियाँ अनकूल होती जा रही थीं। अन्न, जल का कुछ खेल बन गया कि लक्ष्मण सिंह जाकर फौज में भर्ती हो गया। पीछे घर में वृद्ध बाबा और आप स्वयं रह गए। कुछ समय आप घर का काम-काज और बाबा की सेवा संभाल करते रहे। अंतत: परमेश्वर के अटल नियमानुसार बाबा को भी प्रभु का बुलावा आ गया। बाबा के अज्ञात देश को चले जाने के पश्चात् उसकी अंतिम क्रिया, समाज के रीति-रिवाज़ के अनुसार आपने सब सम्पूर्ण कर दी। अब कोई भी परिस्थिति ऐसी नहीं थी कि जो आपके मार्ग में रुकावट बन जाती। बाबा की मृत्यु के साथ आपके सब बंधन और संकल्प शान्त हो चुके थे। बस एक ही संकल्प शेष रह गया था—वह था—प्रीतम के देश जाना। अब उस परम सुखदायी देश की यात्रा करने के लिए आप कृतसंकल्प हो गए।

शाह व्यापारी

एक किसान ने अपने खेत की सिंचाई करनी हो तो कुएँ अथवा ट्यूबवैल का सारा पानी क्यारियों तक पहुँचाना आवश्यक है। यदि खेत में घास-फूस के कारण पानी मार्ग में तथा सुराखों में ही टूट जाए तो आगे जाकर खेत की सिंचाई असम्भव है। इसी प्रकार किसी ऊँचे शिखर पर चढ़ना हो तो जितना कम भार अथवा सामान कम होगा, यात्रा उतनी ही सरल होगी। इसी प्रकार आनंद-सागर वाहिगुरु के देश में पहुँचने के लिए मन का एकाग्र और भार रहित होना अत्यंत आवश्यक है। यदि मन विषय वासनाओं में बिखरा और आशा तृष्णा और पदार्थों के भार से युक्त हो जाए तो परमार्थ की ओर एक कदम चलना भी कठिन है।

परमार्थ के मार्ग में प्राय: चार के लगभग वस्तुएँ रुकावट का कारण बनती हैं। परिवार का मोह, व्यावहारिक आसक्ति, राज-भाग की इच्छा और लोक लज्जा। इनके मन से त्याग के बिना परमार्थ के मार्ग पर चलने वाले दोनों ओर के सुख गँवा लेता है। उपरोक्त पदार्थों की इच्छा, परमार्थ में वृत्ति को लीन नहीं होने देती, इसलिए परम सुख से वंचित रह जाता है और पारमार्थिक वृत्ति सांसारिक सुखों की ओर से मना करती है इसलिए सांसारिक सुख भी नहीं ले सकता। वह होता चाहे क्षणभंगुर ही है इसलिए किसी किनारे नहीं लगता। सांसारिक यात्रा जीते जी आरम्भ होती

है, लेकिन परमार्थ के मार्ग जीवन-भाव से विलग होकर।

किसी समय आप जी ने कथा करने के उपरांत समीप बैठी संगत को पूछा कि जो सुना है उस पर अमल करोगे? 'खोख' गाँव से मुख्तियार सिंह नाम का एक प्रेमी बोला, महाराज! प्रयत्न करेंगे। आप बोले, प्रयत्न का क्या काम। कृत संकल्प हो जाओ। तीसरे दिन ही काम पूर्ण हो जाएगा। समीप बैठी संगत में से कुछ प्रेमी सोचने लगे कि कृत संकल्प रूपी ऐसी कौन सी घाटी है जिसके पार करते ही प्रीतम देश पहुँच सकते हैं। देखो! आज स्वयं उस औषधि का प्रयोग करके दिखा रहे हैं जो बाद में अन्य रोगियों को भी बताई अर्थात् कृतसंकल्प रूपी सरिता में अपनी नाव को डाल दो।

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु॥ कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु॥
कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हणहारु॥ कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु रूपु अपारु॥
कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु॥ कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु॥
किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु॥ कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु॥
नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु॥१॥

(श्लोक महला १, पृष्ठ ४६८)

यथा— **राज मिलख सिकदारीआ अगनी महि जालु॥**

(बिलावल महला ५, पृष्ठ ८११)

गुरु साहिब जी के उपरोक्त नुस्खे का आप आज क्या प्रयोग कर रहे हो मानो हमें कृत संकल्प होने का पाठ पढ़ा रहे हैं। 'सीहाँ दौद' गाँव में नैण और संता पंडित दो सगे भाई रहते थे, जो बड़े ही ईमानदार एवं नेक पुरुष थे। दोनों भाइयों का संत निक्का सिंह जी के परिवार के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार था। आपने आज प्रातः ही उनके घर जाकर कुछ सामान दिया जिसमें कुछ कागज़ात जो 'भूमि रहण' के थे, कुछ गहने जो लक्ष्मण सिंह के मुकलावे के लिए बनवाए थे और कुछ नकदी देकर दोनों पंडितों भाइयों को कहा—यह लक्ष्मण सिंह की धरोहर है, जब वह छुट्टी आए उसको दे देना। घर पहुँचकर चौकीदार को कह दिया कि गाँव में मुनादी कर दें कि जिसको जिस वस्तु की इच्छा है—ले जाए। आपने घर का द्वार खोल दिया, थोड़ी देर तो कुछ झिझक रही, लेकिन जब नि:संकोच खुले भण्डारे देखे तो सब टूटकर पड़ गए। किसी ने बैल, किसी ने ऊँट, किसी ने गाय, भैंस, किसी ने चारपाई-बिस्तरे आदि अन्य सामान और किसी ने अन्न आदि अर्थात् थोड़े समय में ही सारा घर खाली कर दिया लेकिन तीन चीजें अभी भी शेष रह गई—एक लोहे का संदूक, जो फौज में से घर आते समय आप साथ लेकर आए थे। दूसरा लोहे का 'डोल', कुएँ में से पानी निकालने वाला और एक हाथों से आटा पीसने वाली चक्की। ये तीन वस्तुएँ किसी ने क्यों न उठाईं? प्रभु जानता है, लेकिन निक्का सिंह जी तो इस पराए देश में से एक शाह व्यापारी की भाँति अपनी वस्तु महंगे दामों पर बेचकर निज देश 'बेगमपुरे' शहर के मार्ग चल पड़े।*

गुरु-शरण

जब लगु दरसु न परसै प्रीतम तब लगु भूख पिआसी॥
दरसनु देखत ही मनु मानिआ जल रसि कमल बिगासी॥

(सारंग महला १, पृष्ठ ११९७)

---

* *यह समस्त घटना सरदार निर्मल सिंह चहल के द्वारा प्राप्त हुई जो उन्होंने अपने पिता लक्ष्मण सिंह से सुनी थी।*

भादों मास समाप्ति पर था अत: ग्रीष्म और वर्षा ऋतु रूपी दोनों सगी बहनों के शीश पर केश श्वेत हो चुके थे मानों वृद्धावस्था के वशीभूत होकर मृत्यु की अंतिम घड़ियाँ गिन रही हों। शरद् का अभी जन्म नहीं हुआ था। आकाश में बादल बनकर अपने पर-उपकारी स्वभाव वश यदा-कदा थोड़े बहुत छींटे डालकर ऋतु को और भी आकर्षित बना जाते हैं। कुछ-कुछ पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण भाँति-भाँति के वृक्ष, पौधे और बैकुंठ से जन्मी-पली यौवन को प्राप्त सत्यवादी पुत्री (जिसको लोग गंगा देवी के नाम से पुकारते हैं) की मनमोहक उर्मियों में बहुत आकर्षक दृश्य उत्पन्न कर रखा है। पवित्र सरिता गंगा के तट पर बसे इस हरिद्वार नगर में कनखल नाम का एक स्थान है, जिसको तीसरे पातशाह साहिब श्री गुरु अमरदास जी ने इक्कीस बार अपने पवित्र चरण धूलि से उपकृत कर तीर्थ रूप प्रदान किया।

इस पवित्र स्थान से एक मील पश्चिम की ओर एक सुन्दर स्थान सुशोभित है, जिसका नाम है 'निर्मल बाग'। यह पावन स्थान केवल नाम के कारण ही निर्मल नहीं है अपितु है ही मल से रहित, क्योंकि मैल-रज, तम, सत्व आदि तीनों गुणों के कारण ही होती है, लेकिन इस पवित्र स्थान को तीन गुणों की तीनों ओर से देव नदी गंगा की बह रही तीन धाराएँ पवित्र कर रही हैं। इस पावन स्थान के चारों ओर दीवार की हुई है जो बहुत ऊँची नहीं, इसलिए बाहर से बड़ी सरलता से भीतर दर्शन हो जाते हैं। यह पवित्र स्थान अपने आस-पास के स्थान से कुछ नीचा है इसलिए मानों हृदय की निर्धनता अथवा नम्रता का सूचक है। इसमें बहुत सुन्दर बगीचा लगा हुआ है जो अपने पर-उपकारी स्वभाव के अनुसार शीतल छाया एवं अमृत समान मीठे फलों के खुले भण्डारे वितरित करता है।

आज अभी सूर्य नहीं निकला, लेकिन अंधेरा भी नहीं है, क्योंकि शक्तिमान सूर्य ने उदय होने से पूर्व ही अपने तेज़ बल की प्रकाश रूपी किरणों के साथ रात्रि के तम को नष्ट कर दिया है। पूर्व के आकाश की ओर सुन्दर लाली बहुत पूर्ण है। एक कोई तीस-पैंतीस की आयु का दैवी चेहरे वाला युवक जिसका भरा हुआ शरीर, गोल चेहरा, कमलवत् सुन्दर नयन और विशाल भाल जो पूर्व की लालिमा के साथ घुलमिल गया है, दीवार के ऊपर के बगीचे के भीतर अपनी मौज में घूम रहे महापुरुष की ओर एकटक देख रहा है। मस्तक पर देदीप्यमान निष्कामना के कारण सरसरी दृष्टि से देखने पर यद्यपि यह साधारण सा अनपढ़ ग्रामीण जट्ट प्रतीत हो रहा है, लेकिन लगता है कि आज 27 भाद्रप्रद 1927 ई० के उदय हो रहे दिन पर 27 स्मृतियों के भावों को मन में बसाकर उनकी पहुँच से परे की वस्तु का व्यापार करने हेतु आया है जिसके सम्बन्ध में कहा गया है—

सिम्रित सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी॥
ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी॥

(आनन्द साहिब, पृष्ठ ९२०)

कैसे हैं वे महापरुष जो बगीचे के भीतर टहल रहे हैं? जिनका देहाभिमान नष्ट हो चुका है। इन्द्रियों रूपी बकरियाँ जिनकी अधीन हो चुकी हैं। काम, क्रोध आदि श्रृगाल जिनसे भयभीत हैं और अहंकार रूपी सिंह पर सवारी करते हैं, ऐसे शूरवीर जिनके सम्बन्ध में फ़रमान है—

सो सूरा वरीआम जिनि विचहु दुसट अहंकरण मारिया॥

बगीचे में घूमते एकाएक दृष्टि ऊपर उठाई तो बाहर दीवार पर एक व्यक्ति को देखा। बाहर से देख रहा व्यक्ति संकेत समझकर भीतर आया और बड़ी श्रद्धा से महापुरुषों के पावन चरणों पर नमस्कार की। मानों सिंध सागर की शरण आया हो अथवा प्रकाश ने सूर्य की शरण ली हो। **जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिउनु** वाली अवस्था हो गई। जब तक चरणों में पड़े रहे, संयोग—इसमें मग्न सजल नेत्र हुए मानों चरणों में लीन हुए पड़े हैं। मन को वह शीतलता प्राप्त हुई जो आगे कभी अनुभव नहीं की थी अथवा मानों बाहर भीतर से सब कुछ महापुरुषों के चरणों में अर्पित कर दिया हो।

यथा— **जो अपनो तन मन हुतो अरपन गुरु आगै॥**
सरबस तज कीनो तबै चरनन अनुरागै॥

इसके उपरांत दोनों हाथ जोड़कर अरदास की जिसका भाव कुछ इस प्रकार से था—

यथा— **हउ आइआ दूरहु चलि कै मै तकी तउ सरणाइ जीउ॥**
मैं आसा रखी चिति महि मेरा सभो दुखु गवाइ जीउ॥

(सूही महला ५, पृष्ठ ७६३)

यथा— **महा पवित्र संत आसनु मिलि संगि गोबिदु धिआइ॥**
सगल तिआगि सरनि आइओ नानक लेहु मिलाइ॥

(कानड़ा महला ५, पृष्ठ १३००)

यथा— **मनसा मानि एक निरंकेरै। सगल तिआगहु भाउ दूजैरै॥**
कवन कहां हउ गुन प्रिअ तेरै॥ बरनि न साकउ एक टुलेरै॥
दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै॥ मिलु नानक देव जगत गुर केरै॥

(कानड़ा महला ५, पृष्ठ १३०४)

यथा— **सगल तिआगि गुर सरणी आइआ॥**
मिटे अंदेसे नानक सुखु पाइआ॥

(गउड़ी महला ५, पृष्ठ १९२)

यथा— **सगल दुआरि कउ छाडि कै गहिउ तुहारे दुआर॥**
बांहि गहे की लाज असि गोबिंद दास तुहार॥

(श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी)

उपरोक्त गुरु वाकों का रहस्य हृदय में बसाकर अत्यंत भावपूर्ण प्रार्थनाएँ कीं। महापुरुषों ने मुस्कान भरे नेत्रों से देखकर पूछा—हे प्रेमी! कहाँ से आए हो? नाम क्या है? प्रार्थना की कि महाराज! ज़िला लुधियाना के एक गाँव 'सीहाँ दौद' में रहता था और लोग निक्का सिंह कहकर पुकारते थे।

महापुरुष—स्थाई तौर पर गाँव अथवा रहने का स्थान कहाँ है?

प्रेमी—महाराज मुझे स्वयं तो पता नहीं लगा, आप जी के पास यही पूछने आया हूँ कि मेरा वास्तविक गाँव कौन-सा है?

महापुरुष—यहाँ स्वयं आया है अथवा किसी ने बुला भेजा है?

प्रेमी—महाराज—स्वयं ही आया हूँ। मुझे किसने बुलाना था?

महापुरुष—बस यही एकमात्र भ्रम है, अपने घर को न जानने का। जब इस भ्रम की निवृत्ति हो गई कि मैं कहाँ स्वयं आया हूँ अथवा किसी अज्ञात ने भीतर से तार हिलाई है, उस समय तुरंत अपने वास्तविक घर की पहचान हो जाती है। जाओ अब लंगर में जाकर दूध आदि का पान करो, यात्रा से थककर आए हो। बस—हँस मानसरोवर पर पहुँच गया, अब मोतियों का क्या अभाव। व्यापारी को थोक की दुकान मिल गई जो हर प्रकार से व्यापार से भरपूर है। वस्तु का मूल्य तो आपने कल ही 'सीहाँ दौद' से ड्राफ्ट बनाकर फर्म के नाम डाक से भिजवा दिया था। अब तो केवल शुद्ध बसन की आवश्यकता थी। वस्तु को उसमें डालने के लिए, क्योंकि जिस दुर्लभ वस्तु के व्यापार के लिए आप आए थे वह अमूल्य वस्तु शुद्ध बर्तन के बिना टिक नहीं सकती—इसलिए आपने बर्तन को मांजना आरम्भ कर दिया।

साधना

गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै॥ गुरु की आगिआ मन महि सहै॥
आपस कउ करि कछु न जनावै॥ हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै॥
मनु बेचै सतिगुर कै पासि॥ तिसु सेवक के कारज रासि॥
सेवा करत होइ निहकामी॥ तिस कउ होत परापति सुआमी॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २८६)

संसार चतुर एवं बुद्धिमान है, अतः अपने मन के अनुसार चलता है, लेकिन प्रेम! दीवाना एवं मस्ताना है। वास्तव में चतुर प्रेम ही है, लेकिन संसार की दृष्टि में प्रेम पागल है, इसलिए संसार के बुद्धिमान, प्रेमियों को पागल, दीवाना अथवा साधारण समझते हैं, लेकिन समय निर्णय कर देता है कि कौन बुद्धिमान था और कौन बुद्धिहीन। इस प्रकार लोगों के अनुसार तो निक्का सिंह घर बर्बाद करके गया है, लेकिन आप तो सच्ची पातशाही की नींव रखकर ताज-तख्त के कारीगर के पास पहुँच गए थे। अब आपने दिन-रात एक करके सेवा आरम्भ कर दी। महापुरुषों को स्नान कराना, वस्त्र धोने, लंगर की सेवा करनी और बर्तन आदि मांजना आदि सेवा करते मन की यह हालत हो गई—

मगनु भइओ प्रिअ प्रेम सिउ सूध न सिमरत अंग॥

(पृष्ठ १३६४)

लेकिन यह सेवा कौन सम्पन्न करा रहा है? हृदय में उत्पन्न हुआ प्रेम। आपके भीतर कोई सकाम अथवा श्रमिकों वाले दीन हालात यह काम नहीं कर रहे थे, मज़दूर की भाँति उदासीन होकर यह सेवा नहीं हो रही, अपितु यह तो उत्साह और प्रेम-रस से भरे काम हैं। यह वह सेवा नहीं, जो रहस्य से अनभिज्ञ हो अथवा जिसे शारीरिक मज़दूरी कहा जाए।

वे क्या जाने कि यह सेवा थी अथवा राजाओं से अधिक ऊँचा दिल करने वाली शहनशाही थी? पातशाह तख्त पर विराजमान हैं, लेकिन निक्का सिंह जी गुरु-शरण में रसलीन हुए, उत्साहपूर्वक प्रगति के पथ पर हैं। मन पवन की ओर तब जाता है जब इसको अपने कल्पित संसार को ठेस लगे, लेकिन यहाँ तो मन का अभाव है। मन की यह दशा हो गई—

मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा॥
गुर की बचनी हाटि बिकाना जितु लाइआ तितु लागा॥
तेरे लाले किआ चतुराई॥ साहिब का हुकमु न करणा जाई॥

(मारू महला १, पृष्ठ ९९१)

यथा— **जि करावै सो करणा॥ नानक दास तेरी सरणा॥**

(सोरठि म: ५, पृष्ठ ६२७)

इस प्रकार प्रेम रंग में सराबोर होकर दिन-रात एक कर दिए। ऐसी चित्त दशा का वर्णन करना असंभव है, परन्तु फिर भी कवि ने उन आन्तरिक भावों का कुछ इस प्रकार वर्णन किया है—

भई प्रीति नहि जाइ वखानी॥ को उपमा कछु देउ ना समानी॥
अलप पतंग म्रिग की जानी॥ तिन ते तूरनता पहिचानी॥
सीस देण की हुइ जि रजाई॥ पलक मात्र कबहि न विलमाई॥

(सूरज प्रकाश)

आपकी ऐसी अथक प्रेमपूरित सेवा को देखकर बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी भी आपको विशेष प्यार देने लगे। चाहे आपके पवित्र मन में प्रेम का दीपक जलाकर उसमें कृपा रूपी घी डालकर उसको प्रकाशमान करने वाले बाबा बुड्ढा सिंह महाराज आप ही थे, लेकिन अब आपके पवित्र मन की दशा ऐसी हो गई—

परम प्रेम जागिउ मन माही॥ रंगियो रंग भगत मान याही॥
इक मन हवै पढहि गुरबाणी॥ सुणह गुणहि कीरत चित्त मानी॥
वाहिगुरू को सिमरन करही॥ उमग उमग मुख सुजस उचरिही॥
चीत प्रीति की रीत नियारी॥ लिव लागी निसदिन सुखकारी॥
करतिउ सेवा समां बितावहि॥ यग कारज को रिदै न आवहि॥

(सूरज प्रकाश)

इस प्रकार शरीर से निष्काम सेवा और मन सदा उच्च भावों में विचरता है, मानों महाराज निक्का सिंह जी का सिक्खी उद्यान दिनों-दिन खिलता जा रहा है। इस प्रकार सेवा में रत पर्याप्त समय व्यतीत हो गया।

काशी अध्ययनार्थ गमन

साधक के मार्ग में परमेश्वर मिलन में दो अड़चनें होती हैं। एक तो हृदय में गहरे बैठा सूक्ष्म अहंकार और दूसरी ओर कोई पूर्व जन्म की वासना-बीज जो साधक से चाहे छिपा हो, लेकिन पूर्ण पुरुष की दृष्टि में हस्तामलक प्रत्यक्ष हुआ करता है। समझदार धोबी अपने पास आए मूल्यवान वस्त्र को रंगने से पूर्व प्रत्येक प्रकार की मैल उतारकर साफ़ करता है, फिर रंग चढ़ता है। इस प्रकार तत्त्वदर्शी पुरुष अन्तरात्मा द्वारा शरणागत के हृदय स्थल को सदैव देखता रहता हे कि इसके हृदय में पूर्व का कोई वासना रूपी बीज तो नहीं पड़ा? क्योंकि ईश्वरीय नियम है कि जितनी देर तक हृदय किसी भी सूक्ष्म से सूक्ष्म वासना अथवा किंचित मात्र भी अहंकार से रहित अथवा शुद्ध न हो जाए उतनी देर तक हरि रूपी पक्का, मजीठा रंग नहीं चढ़ा करता, इसलिए तत्त्ववेता महापुरुष शरणागत के अन्त:करण को सर्वप्रथम प्रत्येक प्रकार के शुभ-अशुभ वासनाओं रूपी बीज से शुद्ध करता है। यह उसकी अपनी मौज है कि उसने साधक को किसी साधना रूपी घाटी तक ले जाना है अथवा कृपा दृष्टि के द्वारा शुद्ध करना है क्योंकि वह हर प्रकार से समर्थ पुरुष है, लेकिन संसार की ओर से थक टूटकर शरण आए को रंगना उसे हर हालत में है। कोई संसार की ओर से पूर्ण तौर पर हाथ खड़े करके किसी समर्थ पुरुष की शरण में गिरा भी हो, आगे से वह बिना हरि के रंग किए वापिस कर दे, यह तो बात ही असंभव है। चुम्बक के दायरे में आया हुआ लोहा बचकर जा कैसे सकता है। पारस से स्पर्श किया ताँबा, ताँबा ही रह जाए यह तो बात ही अनहोनी है। सिंह के पंजे अथवा बाज की झपट में

आया कोई पशु अथवा पक्षी शायद कोई अपने आपको बचाने में सफल हो जाए, लेकिन पूर्ण पुरुष की दृष्टि में आए शरणागत का सूक्ष्म से सूक्ष्म अहंकार अथवा वासना जो जन्म-मरण आदि समस्त दु:खों का मूल कारण है, अपने प्राण बचाने में सफल हो जाए, यह तो बात ही असम्भव है। इस प्रकार महंत बाबा बुड्ढा सिंह रूपी रंगरेज को संत निक्का सिंह जी ने अपना मन रूपी वस्त्र समर्पण तो कर ही दिया था अब तो रंगरेज का काम है, उस मन रूपी वस्त्र को प्रत्येक प्रकार की मैल से शुद्ध करके पक्का रंग चढ़ाना। ज्ञानवान् पुरुष को अपने शिष्य सेवक से यह नहीं पूछना पड़ता कि तुम्हारे में क्या संकल्प है, त्रिकालदर्शी होने के कारण प्रत्येक के हृदय का साक्षी है, क्योंकि गुरु साहिब का फ़रमान है—

तिस कै भाणै कोइ न भूला जिनि सगलो ब्रहमु पछाता॥

(सोरठि महला ५, पृष्ठ ६१०)

यथा— **घटि घटि के अंतर की जानत॥**
भले बुरे की पीर पछानत॥

जिस पुरुष ने चौरासी लाख जीवों के हृदय में रमे हुए व्यापक राम को पहचान लिया है उससे किस हृदय की बात छिपी हुई रह सकती है? ऐसी आश्चर्यमयी अवस्था में स्थित महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी ने अपने अनन्य सेवक संत निक्का सिंह जी के अचेतन हृदय में पड़े विद्या ग्रहण करने के संस्कार रूपी बीज को देखकर वचन किया, हे प्रेमी! यदि इच्छा है तो काशी जाकर संस्कृत पढ़ लो, वहाँ अपना स्थान है 'संगत ज्ञान गुफ़ा' उसमें निवास करना। जब आपका मन न लगे तो वापिस आ जाना। आपने भी देखा कि कभी-कभी संकल्प उठता तो है, लेकिन आज तो अन्तर्यामी ने स्वयं ही आज्ञा दी है, इसलिए अन्तर्यामी दाता पर दृढ़ निश्चय धारण कर काशी पहुँच गए। कुछ दिन निवास करने के पश्चात् अध्ययन आरम्भ किया। जो पढ़ते उसी पर मनन करते रहते, जब समय मिलता विचारवानों अथवा सत्पुरुषों की संगत करते। इस प्रकार कोई दो वर्ष का समय व्यतीत हो गया। अब आपके मन में एक विचार बार-बार उठने लगा कि केवल अध्ययन मात्र से ही तो जीवन का लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता। रोगी डॉक्टर के लिखे पर्चे को यदि बार-बार पढ़ता रहे, लेकिन पर्चे पर जो औषधि लिखी है और पथ्य-परहेज़ बताया गया है—यदि उनका प्रयोग न करे क्या रोग की निवृत्ति होगी? शास्त्रों का पठन-पाठन किसी सीमा तक ही आवश्यक है, क्योंकि ये जीव का मार्ग दर्शन करते हैं, लेकिन शास्त्रों को ही लक्ष्य समझ लेना तो बड़ी भूल है। लक्ष्य पर पहुँचाने के लिए तो शास्त्रों का संकेत समझकर यात्रा करनी पड़ेगी। गुरु साहिब जी सम्भवत: तभी हमें सावधान करते हैं—

पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास॥
नानक लेखे इक गल होरु हउमै झखणा झाख॥

(आसा दी वार, पृष्ठ ४६७)

यहाँ यह सब प्रत्यक्ष देख भी रहे हैं कि पंडित लोग कोई दस वर्ष से यहाँ अध्ययन कर रहा है, कोई बीस वर्ष से, किसी को विद्या की चर्चा करते हुए पूरा जीवन ही व्यतीत हो गया, लेकिन ये लोग बजाए शांतचित्त होने के जो मनुष्य जन्म का वास्तविक कार्य है, अपने-अपने मत और अपनी-अपनी बुद्धि को ऊँचा सिद्ध करने के यत्न में बाँसों की अग्नि के समान जल रहे हैं। जिस विद्या ने अहंकार और अविद्या के अंधकार को मिटाकर शांतचित्त कर देना था वही विद्या उन पर अहंकार का रूप धारण करके भार-स्वरूप हो रही है? शायद इस पर दया करके ही गुरु साहिब जी ने फरमाया था—

पंडित इसु मन का करहु बीचारु॥
अवरु कि बहुता पड़हि उठावहि भारु॥

(मलार म: ३, पृष्ठ १२६१)

ये बेचारे गुरु कृपा से वंचित पुरुष, नाम रसहीन, शास्त्रों के वास्तविक रहस्य से अनभिज्ञ होने के कारण शास्त्रों के वाद-विवाद को ही लक्ष्य समझ बैठे हैं। जबकि गुरु साहिब जी ने स्पष्ट संकेत किया है—

बहु सासत्र बहु सिम्रिती पेखे सरब ढढोलि॥
पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल॥

(सलोक श्री सुखमनी साहिब, पृष्ठ २६५)

यथा— सिम्रिति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ॥
नाम बिना सभि कूड़ु गाल्ही होछीआ॥

(सूही महला ५, पृष्ठ ७६१)

यथा— पड़िऐ नाहीं भेदु बुझिऐ पावणा॥

(माझ की वार पउड़ी, पृष्ठ १४८)

यथा— पड़िऐ मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइ॥
मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमलु होइ॥
मनमुख हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोइ॥

(सिरीराग महला ३, पृष्ठ ३९)

उपरोक्त गुरुवाकों पर मनन ने आपके शुद्ध मन को अब काशी से लौटने के लिए व्याकुल कर दिया अर्थात् विद्या-सार तत्त्व समझ में आ जाने के पश्चात् मानों विद्या अध्ययन रूपी घाटी पार कर ली। एक बार का जिक्र है फ़कीर बुल्ले शाह को किसी प्रेमी ने पूछा, बुल्लिया! तुम मुसलमान होकर न कभी नमाज़ पढ़ता है न कभी रोज़े रखता है, तुम्हारे ऊपर मौला की कृपा दृष्टि किस प्रकार होगी? बुल्ला बोला—

रोजा निवाज ते माउला की॥ गल समझ लई तां रौला की॥

इसलिए आप तो विद्या सार समझने के लिए गए थे, न कि औपचारिकता के लिए। जैसा कि गुरु साहिब की आज्ञा है—

पंडित लोगह कउ बिउहार॥
गिआनवंत कउ ततु बीचार॥

(गउड़ी बावन अखरी कबीर जीउ, पृष्ठ ३४३)

आपने मन के साथ अंतिम निर्णय करके आदेश कर दिया—*

उठ मना परदेसीया मुड़ चल आपणे देस॥
कर कमाई नाम दी धार गरीबी वेस॥

सपना

पीछे वर्णन आ चुका है कि आप जी काशी अध्ययन के दौरान समय-समय पर साधुओं एवं विद्वानों को मिलते रहते थे। एक दिन विचार चला कि गुरुवाणी एवं सत् शास्त्रों में नाम-महिमा का वर्णन है। कलियुग के समय में इसका विशेष महत्त्व है। यथा भाई गुरदास जी—

* *किसी समय हजूर ने अपनी मौज में आप ही फ़रमाया था कि हम बहुत समय काशी नहीं रहे, क्योंकि शीघ्र ही रहस्य हाथ लग गया था फिर वहाँ रहने का मन नहीं किया।*

कलिजुगि की सुण साधना करम किरति की चलै न काई॥
बिना भजन भगवान के भाउ भगति बिनु ठउड़ि न पाई॥
लहे कमाणा एत जुगि पिछली जुगीं करी कमाई॥
पाइया मानस देहि कउ ऐथौं चुकिया ठउर न ठाई॥
कलिजुग के उपकारि सुणि जैसे बेद अथरवण गाई॥
भाउ भगति परवान है जग होम गुरपुरबि पुरब कमाई॥
करिके नीच सदावणा तां प्रभु लेखै अन्दरि पाई॥
कलजुगि नावै की वडिआई॥

(भाई गुरदास जी, वार ५, गउडी १६)

इस प्रकार कलियुग में प्रेमाभक्ति के द्वारा नाम के बिना कोई साधना परमेश्वर मिलाप के लिए समर्थ नहीं। फिर विचार चला कि यह तो ठीक है कि कलियुग में नाम के बिना मोक्ष संभव नहीं, लेकिन नाम तो अनंत है, फिर विशेषता किस नाम की है? सभी विद्वानों ने अपने-अपने विचार प्रकट किए, लेकिन अंतिम निर्णय 'सोऽहं' शब्द पर हुआ। क्योंकि 'सोऽहं' इस शब्द का उच्चारण ही अभेदता का सूचक है, इसलिए सभी ने अपने-अपने गुरुओं की ओर से मिले 'नाम' को छोड़कर 'सोऽहं' शब्द का जाप आरम्भ कर दिया। आपने तो उत्तरकाशी की यात्रा के समय भी कुछ साधुओं से 'सोऽहं' शब्द की महानता के सम्बन्ध में सुना था, लेकिन अब और विश्वास दृढ़ हो चुका था कि 'सोऽहं' शब्द ही मोक्ष देने के लिए ही समर्थ है। यह तो विश्वास दृढ़ हो चुका था कि नाम के बिना सब असत्य है, इसलिए काशी को अलविदा कह कर वापिस ऋषिकेश पहुँचने के लिए 'सोऽहं' शब्द का जाप करते गाड़ी में जाकर सवार हो गए। गाड़ी अपनी गति से चलने लगी, आप नाम-जप में लीन हो गए। गाड़ी छोटे-छोटे स्टेशनों से गुज़रती हुई अपनी मंजिल की ओर तेज़ी से बढ़ने लगी। इधर यात्रा करते संत निक्का सिंह जी को थोड़ा निद्रा ने आ घेरा। हल्की सी नींद में एक स्वप्न आया। क्या देख रहे हैं कि नाव में सवार होकर एक यात्री बड़े विशाल सागर की सैर कर रहा है। उस सागर में अन्य असंख्य नावें भी यात्रियों से भरपूर घूम रही हैं। सागर में ज़ोरदार तूफ़ान एवं बड़ी-बड़ी लहरें उठकर भयानक रूप धारण कर रही हैं। देखते-देखते बहुत सी नावें यात्रियों सहित तूफान की शिकार होकर अपना अस्तित्व मिटा रही हैं। देखने पर पता ही नहीं चलता कि कहाँ गई! कुछ ऐसी हैं कि जो तूफान से प्रभावित होकर अपने मार्ग को भूल इधर-उधर भटक गई हैं। इस प्रकार सागर में घूमते अनेक प्रकारों की शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा अनुभव करते बहुत समय व्यतीत हो गया। इस प्रकार प्रतीत हो रहा है कि मानों अनेक युग व्यतीत हो गए। अंतत: एक दिन नाव टापू के किनारे लगी। इसके चारों ओर पानी ही पानी है, लेकिन थोड़ा स्थान इस टापू का सूखा है। यात्री नाव से उतरकर देख रहा है कि अनेकों नावें खड़ी हैं। चारों ओर अनेक प्रकार के मनमोहक दृश्य हैं। मन उनकी ओर सहज ही आकर्षित हो रहा है। लेकिन यात्री उनकी ओर ध्यान नहीं दे रहे। संभवत: वह उनकी वास्तविकता को जानता है अथवा उसको इस आकर्षण दृश्यों पर शंका है, अनेक लोगों को नावों में सवार होता देखकर यात्री सोचने लगा युगों बाद तो यह थोड़ा-सा सूखा स्थान मिला है, लेकिन ये लोग फिर सागर की दु:खदायी लहरों में भर-भरकर अपनी नावें उद्वेलित कर रहे हैं। इधर-उधर ध्यानपूर्वक देखा-देखते हैं कि थोड़ी दूर एकांत में एक पुरुष बैठा है जिसके चेहरे पर सच्चाई का तेज

झलक रहा है। ध्यानपूर्वक देखा—ऐसा प्रतीत हुआ जैसे हर प्रकार की बाह्य कृत्रिमता से रहित, छल-कपट और प्रदर्शन से दूर-मानों बाहर-भीतर से एक हो। किसी दूसरे की ओर उसका ध्यान नहीं, यदि यदा-कदा अपनी मौज में इधर-उधर दृष्टिपात करता भी है तो ऐसे लगता है कि जैसे प्रत्येक वस्तु को स्वयं ही देखकर आश्चर्यचकित हो रहा हो। यात्री चलकर पास गया, श्रद्धा के साथ नमस्कार करके प्रार्थना की, महाराज! मैं बहुत समय पूर्व नाव पर सवार हुआ था—सागर को पार करने हेतु, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे अनेक युग व्यतीत हो गए—इस दु:खदायी लहरों में भटकते हुए, लेकिन मेरी नाव बजाए किसी तट पर लगने के वहीं घूम फिर कर वापिस आ गई है। आप कोई युक्ति बताओ इसे पार करने की। महापुरुष बोले, प्रेमी! इस स्थान का नाम सकामी घाट है, यहाँ की कोई नाव पार नहीं लग सकती, क्योंकि इनके पास पार जाने का परमिट ही नहीं है, इसलिए इनका पार लग जाना असम्भव है। हाँ सागर की सैर यह बहुत करवा सकती है। यदि तुम्हारी इच्छा पार जाने की है तो इस पर्वत पर चढ़ जा। मार्ग तो थोड़ा दुष्कर ही है, लेकिन यदि पार जाने का दृढ़ निश्चय कर लिया है तो दुष्कर घाटियाँ भी सुखदायी बन जाती हैं। इस पर्वत के ऊपर दूसरी ओर एक सुन्दर घाट है जिसका नाम है निष्काम तट। नावें तो वहाँ भी बहुत खड़ी हैं और पार करने की सामर्थ्य भी उनमें है, लेकिन एक बात ध्यान में रखना कि कोई भी नाव कुशल मल्लाह के बिना पार नहीं लग सकती। नाव चाहें हीरे रत्नों की जड़ी हों, नौसिखिया मल्लाह उसको पार नहीं लगा सकता। इसलिए निष्काम तट पर पहुँचकर उस नाव में सवार होना जिसके मल्लाह का अनुभव पूर्ण हो और दोनों बाँहें बलवती हों, क्योंकि पारदर्शी दृष्टि वाला मल्लाह ही इसको पार लगा सकता है। अत: बलशाही बाँहें ही चप्पू मारकर समुद्र से उठ रहे तूफानों और अनगिनत लहरों को पछाड़कर नाव को पार लगा सकती हैं। ऐसे गुणों वाले मल्लाह के बिना नाव चाहे कितनी भी सुन्दर क्यों न हो पार नहीं लगा सकती, इसलिए निष्काम तट पर पहुँचकर नाव की ओर ध्यान कम देना, कुशल मल्लाह की ओर अधिक। जाओ! अब देरी न करो। उस पर-उपकारी को नमस्कार करके पर्वत शिखर पर चढ़ना आरम्भ किया। सहज ही ऊँची चोटी पार करके निष्काम तट पर पहुँच गया। क्या देखता है कि बहुत शान्त स्थान है, मनुष्यों की भीड़ नहीं, कहीं सुदूर कोई-कोई दिखाई देता है। यात्री देखकर बड़ा आश्चर्यचकित हुआ कि सकाम घाट पर तो लोगों की भीड़ लगी थी, लेकिन उसकी तुलना में यहाँ उजाड़ सी हालत है, लेकिन मन एक विशेष प्रकार का आनंद अनुभव कर रहा है, मन इन विचारों में ही था कि एक मनुष्य दिखाई दिया जिसके नेत्रों में आकर्षण, चेहरे पर विशेष प्रकार की मुस्कान और भीतर-बाहर से प्रसन्नचित्त दृष्टिगोचर हो रहा है। उस पुरुष ने यात्री के पास आकर पूछा, प्रेमी—क्या सागर पार करना है? यात्री ने आश्चर्यचकित होकर पूछा—आपको कैसे पता चला कि मैं सागर पार करने हेतु आया हूँ? दैवी चेहरे वाला व्यक्ति बोला, इस तट पर सागर की सैर करने वाले नहीं आते। वे सब सकाम घाट पर ही घूमते हैं, क्योंकि वहाँ भाँति-भाँति के प्रतीति मात्र-मात्र-रसों की दुकानें हैं इसलिए साधारण लोग तो वहीं प्रसन्न हो जाते हैं। कोई बिरला व्यक्ति ही उनको त्यागकर निष्काम तट पर पहुँचता है। वह निश्चय ही पार हेतु आया है। इसमें आश्चर्यचकित होने की कोई बात नहीं। यात्री ने पूछा—किराया भाड़ा कितना लगेगा पार होने के लिए—यात्रा का। मल्लाह बोला—जिस समय कोई मनुष्य सकाम घाट से इस स्थान पर अर्थात् निष्काम तट के लिए यात्रा आरम्भ करता है, किराया तो उसी समय ले लिया जाता है। बस, अब निश्चिंत होकर इस नाव में सवार हो जा! हाँ, एक बात आवश्यक है कि मार्ग के लिए श्रद्धा एवं विश्वास का भोजन अवश्य अपने पल्लू में बाँध लेना। यात्री मल्लाह पर विश्वास करके नाव में सवार हो गया। नाव धीरे-धीरे गतिमान हुई। इस प्रकार कई दिन प्रसन्नता

से यात्रा करते व्यतीत हो गए। अब वहाँ पहुँच गए जहाँ न तो निष्काम तट दृष्टिगोचर होता है और न ही अगला तट। यात्री ने इधर-उधर देखा, कुछ अन्य नावें दृष्टिगोचर हुईं, जिनकी बाह्य बनावट अत्यंत सुन्दर है। ध्यान से देखा-दिखाई दे रहा है कि ये भी कभी निष्काम तट से ही चली थीं और पार जाने के लिए गतिशील हैं। मन में उत्साह उठा कि यह नाव छोड़कर दूसरी में सवार हो जाएँ, क्योंकि उसका बाह्य आकर्षण भी बहुत है और यात्रा भी सम्भवत: अधिक कर रही है। नाव बदलने की कोशिश कर रहे यात्री की ओर देखकर मल्लाह बोला, सावधान! भ्रमवश अब नाव को बदलना उपयुक्त नहीं, बजाए इधर-उधर झाँकने के आराम के साथ बैठकर श्रद्धा और विश्वास रूपी उस भोजन को करो जो मार्ग के लिए लेकर चला था, शेष समस्त जिम्मेदारी मेरी है। यह सुनकर यात्री कुछ शांत हुआ। इतने में गाड़ी की कूक सुनकर आपकी आँख खुली। स्वप्न टूटा, बाहर की ओर देखा, गाड़ी हरिद्वार के स्टेशन पर खड़ी है। स्थान पर पहुँचकर महंत बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी के पवित्र चरणों पर जाकर नमस्कार की। आगे से बाबा जी प्रसन्नमुख और मुस्कान युक्त नेत्रों के साथ देखकर पावन-मुख से बोले कि जो हमने नाम दिया था, उसका 'जाप' करते हो? अथवा 'सोऽहं' शब्द का? आपको आश्चर्य हुआ कि महाराज तो, **'घट-घट के अन्तर की जानत'** है। थोड़ा झिझककर बोले, महाराज! 'सोऽहं' शब्द का। बाबा बुड्ढा सिंह जी बोले सागर के मध्य यात्रा करते नाव बदलना खतरे से खाली नहीं है। 'नाव' वाली बात बाबा जी के मुख से सुनकर तो आश्चर्य का ठिकाना न रहा। आश्चर्यचकित हो रहे हैं कि महाराज तो हमारे स्वप्न के साक्षी हैं। 'विस्माद' की किसी अकथनीय दशा में आपके दोनों हाथ जुड़ गए, प्रार्थना की, महाराज! भूल हो गई, क्षमा करो। बाबा बुड्ढा सिंह जी कहने लगे—जीव कहो अथवा संसार दोनों भूल के ही दूसरे नाम हैं। यदि भूल निकल जाए तो न ही कहीं संसार दृष्टिगोचर होता है न जीव। पानी का ज्ञान हो जाने पर लहरों के बुलबुले विलास मात्र ही रह जाते हैं, इसलिए इस भूल के देश में से निकलने के लिए ही परमार्थ की यात्रा आरम्भ करनी पड़ती है। परमार्थ की यात्रा भी सकाम घाट से निष्काम तट तक ही थोड़ा कठिन है, क्योंकि यह भयानक वन अकेला ही लाँघना पड़ता है। निष्काम तट पर मल्लाह पहले ही खड़ा प्रतीक्षा कर रहा है कि कोई यात्री आए तो उसे नाव में बिठा लूँ। बस यात्री को देखते ही नाव में बिठाकर मंजिल की ओर प्रस्थान कर देता है। फिर यात्री की यात्रा कष्टदायक नहीं रहती अपितु यात्रा करते मन आनंदित रहता है। हाँ-किंचित सावधानता रूपी भोजन तो पल्ले में रखना पड़ता है, ताकि कोई शंका रूपी तोता विश्वास रूपी फल को चोंच न मार दे। यात्री का नाव में बैठते ही थकान अथवा कष्ट तो दूर हो जाता है बस फिर तो इसका यह ही काम रह जाता है कि किसी प्रकार के शंका रूपी तोते को श्रद्धा रूपी शाखा पर बैठने न दे, यदि बैठ ही जाए तो तुरन्त उड़ा दें, यदि थोड़ी भी असावधानी हुई तो उसके विश्वास रूपी फल को चोंच मारकर दागी कर देता है। श्रद्धा और विश्वास के बिना परमार्थ यात्रा में एक भी पग उठाना कठिन है, इसलिए नाम चाहे सभी 'नामी' के ही हैं और प्रीतम के मिलाप के लिए समर्थ भी हैं, लेकिन साधक को पार उस नाम अथवा उपदेश रूपी नाव ने ही करना है जिसमें गुरु ने बिठा दिया है। जब साधक अपने मन को इधर-उधर की बेकार लहरों से संकोच श्रद्धा और विश्वास से संयुक्त होकर गुरु उपदेश रूपी नाव में सवार हो जाता है फिर संसार सागर का दूसरा तट और प्रीतम का देश दूर नहीं रह जाता। जाओ—अब लंगर आदि छक लो।*

* *बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी की ओर से दिए नाम को छोड़कर* 'सोऽहं' का जाप शुरू करने और बाबा जी की ओर से स्वयं ही पूछना—किसी समय महाराज जी ने स्वयं ही सुनाया था।

कठिन साधना और रस-देश की यात्रा

पहिला बाबे पाया बखसु दरि पिछो दे फिरि घालि कमाई॥
रेतु अकु आहारु करि रोड़ा की गुर कीअ विछाई॥
भारी करी तपसिया वडे भागि हरि सिउ बणि आई॥

(भाई गुरदास जी)

यथा— इह बिध करत तपसया भयो॥
द्वै ते एक रूप होइ गयो॥

(गुरु गोबिन्द सिंह जी)

गुरु नानक देव महाराज जी के घर में परमेश्वर मिलाप के लिए प्रेमाभक्ति ही मुख्य मार्ग है। प्रेमाभक्ति का प्रथम एवं अंतिम तथा अत्यंत आवश्यक अंग है 'गुरु परमेश्वर को एक ही समझो'। यह अवस्था जितनी दृढ़ होती जाएगी, उतनी-उतनी परमेश्वर मिलाप रूपी मंजिल समीप आती जाएगी। अन्य समस्त सेवा पर-उपकार के साधन इसकी शाखाएँ हैं, लेकिन मूल साधन गुरु-परमेश्वर का अभेद निश्चय करना ही है। लेकिन यह निश्चय सिक्ख के लिए कठिन कार्य है जब तक गुरु स्वयं न बताए। एक सोया हुआ पुरुष समीप बैठे किसी जागृत पुरुष को नहीं जगा सकता जितनी देर जागृत पुरुष सोते हुए को जगा न दे। इस प्रकार शिष्य भी अज्ञान, निद्रा में सोया हुआ संसार रूपी स्वप्न में लीन है। जिस समय इसके जन्म-जन्मांतरों के निष्काम शुभ कर्म अपना फल देने के लिए सन्मुख होते हैं, उस समय इसको वाहिगुरु के अटल नियमानुसार—

किरपा करे जिसु पारब्रह्मु होवै साधू संगु॥

(सिरीरागु महला ५, पृष्ठ ७१)

के महावाक् अनुसार मोह निद्रा से जाग चुके किसी तत्त्वदर्शी महापुरुष का मिलाप हो जाता है। फिर जैसे जागृत पुरुष द्वारा—

जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु॥

(सिरीरागु महला ५, पृष्ठ ७१)

वाली अवस्था हो जाती है। ऐसा आत्मदर्शी महापुरुष अपने शिष्य को अपनी सर्वज्ञता और अन्तर्यामिता द्वारा चोट मारकर बार-बार जगाता रहता है। साधक अपने मन के स्फुरण अथवा संकल्पों के मोह को तो प्रत्यक्ष देखता और समझता है, लेकिन हृदय के भीतर अप्रत्यक्ष रूप में पड़े संस्कारों के बीज को नहीं जानता, परन्तु तत्त्वदर्शी महापुरुष साधक के मन के वर्तमान स्फुरण और भविष्य में प्रकट होने वाले छिपे संस्कारों के बीज को ही हस्तामलक वत् जानता है क्योंकि उसने देह इन्द्रियों से निर्लिप्त चारों योनियों के हृदय में परिपूर्ण व्यापक राम को पहचान लिया है। फिर ऐसे महापुरुष से—

तिस के भाणै कोइ न भूला जिनि सगलो ब्रहमु पछाता॥

(सोरठि महला ५, पृष्ठ ६१०)

किस हृदय में संस्कार रूपी बीज छिपे हैं? ऐसी आश्चर्यमयी अवस्था में स्थित बाबा बुड्ढा सिंह जी ने संत निक्का सिंह जी के हृदय में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में संस्कारों के पड़े बीज, मार्ग के संकल्प और 'सोऽहं' शब्द के जाप वाली घटना

को अपनी अन्तरात्मा द्वारा देखकर जबरदस्त चोट मारी। बोले, मंज़िल पर तो उसी नाम ने पहुँचाना है जो गुरु से प्राप्त हो, न कि काल्पनिक अथवा किसी दूसरे से सुने शब्द ने। बाबा जी के पवित्र मुख से सुनते ही आपजी के मन में शक्तिशाली तूफ़ान उठा, भीतर श्रद्धा और विश्वास सीमा तोड़कर फूट पड़े। यह पूर्णता! यह अन्तर्यामिता!! यह सर्वज्ञता!! मन जो अब तक संकल्पों विकल्पों की सड़क पर दौड़ा फिरता था, एक दम शांत और किन्तु परन्तु से रहित होकर निश्चय के घर अचल, स्थिर, खम्भे के समान अडिग हो गया कि ये पूर्ण परमेश्वर हैं। अब तक ये तो जानते थे कि बाबा जी महापुरुष हैं, लेकिन आज के बाण ने मन को पूर्ण रूपेण घायल कर दिया। पूर्ण गुरु द्वारा छाती की ओर पूर्ण शक्ति के साथ किए संधान से मन घायल हो गया और बार-बार उच्चारण करने लगा—

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही॥
निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही॥

(श्री सुखमनी साहिब १८वीं अशाटपदी पृष्ठ २८७)

यथा— **मानुख का करि रूपु न जानु॥**
मानुख का करि रूपु न जानु॥

(रामकली महला ५, पृष्ठ ८९५)

यथा— **भेदु न जाणहु माणस देहा॥**
भेदु न जाणहु माणस देहा॥

(मारू सोलवें महला ५, पृष्ठ १०७६)

मन अब पूर्ण विश्वास में आ गया कि यह पूर्ण परमेश्वर हैं। आज से बाबा बुड्ढा सिंह जी की प्रत्येक क्रिया और प्रत्येक शब्द अगम्य प्रतीत होने लगे। अब मन प्रेम रस में भीग गया—हमेशा सेवा सिमरन में लीन रहता है।

इन दिनों बाबा बुड्ढा सिंह जी ने ज्ञानी बलवंत सिंह जी को विशेष तौर पर अमृतसर भेजकर ज्ञानी सरोवर सिंह को बुलाकर गुरु ग्रन्थ साहिब जी की लड़ीवार कथा आरम्भ की जो कई मास में सम्पूर्ण हुई। संत बाबा निक्का सिंह जी ने भी यह पावन कथा बड़े मनोयोग पूर्वक श्रवण की। कथा की समाप्ति पर बाबा जी ने सरोवर सिंह जी को पर्याप्त धन, वस्त्र आदि अन्य सामग्री अर्पण की। अधिक क्या, ज्ञानी जी का पूर्ण आदर करके प्रार्थना की कि हमने कुछ समय सिंध जाना है, क्योंकि वहाँ के प्रेमी बार-बार प्रार्थनाएँ कर रहे हैं इसलिए हमारे वहाँ से वापस आने पर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की एक सम्पूर्ण कथा निर्मल बाग कनखल में भी करना। बाबा जी जब सिंध जाने लगे तो आप जी ने उत्तराखण्ड के देव स्थानों की यात्रा के लिए आज्ञा माँगी। बाबा जी ने आज्ञा दी कि ठीक है—यात्रा कर आओ। जिस समय कनखल कथा आरम्भ हो उस समय वापिस आ जाना। आप आज्ञा लेकर 'झाड़ी' में से कुछ विरक्त महात्माओं को साथ लेकर यात्रा के लिए चल पड़े। इस यात्रा के दौरान बद्रीनाथ, श्री हेमकुण्ड साहिब, कागभुसुण्ड पुरी आदि कई पवित्र स्थलों के दर्शन किए। इस प्रकार हिमालय की बर्फ़ानी चोटियों पर कई मास पद यात्रा करके वापिस ऋषिकेश आ गए। इतने में बाबा जी भी सिंधी संगत को बड़ी आत्मीयता से वापसी पर अमृतसर से ज्ञानी सरोवर सिंह जी को साथ लेकर कनखल पहुँच गए। ऋषिकेश से संत निक्का सिंह जी और कुछ अन्य महात्मा भी कनखल आ गए। ज्ञानी सरोवर सिंह जी ने निश्चित दिन पर कथा आरम्भ की। कथा में अपने डेरे के साधुओं के अतिरिक्त आस-पास और दूर-समीप स्थानों से भी साधु-महात्मा कथा श्रवण करने के लिए आने लगे। उन दिनों संत

हरिचरण सिंह जी हरि 'अमर वस्तु' वाले निर्मल विरक्त कुटिया में निवास करते थे। वे भी विरक्त कुटिया के अन्य महात्माओं के साथ प्रतिदिन प्रवचन श्रवण करने पधारते। बाबा बुड्ढा सिंह जी की ओर से लंगर के सेवादारों को विशष तौर पर आज्ञा दी कि कथा श्रवण करने हेतु आने वाले सब साधु महात्माओं को लंगर लिए बिना जाने न दिया जाए। इस प्रकार कई मास 'निर्मल बाग' में गुरुवाणी द्वारा ईश्वरीय ज्ञान की अमृत-वर्षा और दूध-लंगर आदि के खुले भण्डारे वितरित होते रहे। ज्ञानी सरोवर सिंह जी स्थूल नेत्रों से तो चाहे सूरदास थे, लेकिन हृदय के ज्ञान-चक्षु खुले होने के कारण बड़ी भावपूर्ण कथा करते थे। कथा करते समय जहाँ सेवा, सिमरन और ज्ञान का समन्वय करते थे, वहाँ स्थान-स्थान पर गुरु-इतिहास की तर्क सहित संदर्भ देकर कथा को बहुत रोचक रूप दे देते थे।*

इस प्रकार 'निर्मल बाग़' में गुरुवाणी और गुरु-इतिहास के विचार का कई मास अच्छा रंग बना रहा। कथा की सम्पूर्ण समाप्ति पर सिंध निवासी कुछ प्रेमी बाबा बुड्ढा सिंह जी को सिंध ले जाने के लिए आए हुए थे। उनकी प्रार्थना स्वीकार करके बाबा बुड्ढा सिंह जी ने सिंध जाने का प्रोग्राम बनाया। इधर आप जी ने पंजाब में गुरु स्थानों के दर्शन-दीदार करने का अपना संकल्प बाबा बुड्ढा सिंह जी के पास प्रकट किया। बाबा जी ने आज्ञा दी, जिस समय हृदय में से मैं और मेरी का विष पूर्ण तौर पर निकल जाए फिर समस्त पृथ्वी पर समस्त संसार अपना ही भासता है। कुछ भी पराया नहीं रह जाता। सब कुछ हरि में अभेद और अपना आप जानकर स्वच्छन्द विचरण करो। **'न काहू सिउ दोस्ती न काहू सिउ बैर'** वाली अवस्था में स्थित रहो। गुरु साहिबान की पावन चरण धूलि से पवित्र हुए गुरु स्थानों के दर्शन करो और हमारे सिंध से वापिस आ जाने तक ऋषिकेश आ जाना।

आपने आज्ञा पाकर पूर्ण विरक्तीय-ठाठ में पैदल प्रस्थान कर दिया। जहाँ भूख लगती, मधुकरी करके लंगर छक लेना और रात्रि पड़ जाने पर बस्ती से दूर किसी कुएँ आदि पर कुछ समय विश्राम कर लेना। इस प्रकार गुरु प्रेम में भीगे और नाम रस में लीन हुए संसार एवं सांसारिक सम्बन्धों से रहित, अकथनीय आनंद-विभोर हुए कुछ समय उपरांत गोइंदवाल साहिब पहुँच गए। गुरु अमरदास महाराज जी की पावन चरण धूलि मस्तक से लगाई, पवित्र स्थान के पहली बार दर्शन दीदार किए। लंगर में से प्रसाद जल ग्रहण करने के उपरांत स्थान से कुछ दूर ब्यास नदी के तट पर एक वृक्ष के नीचे रात्रि व्यतीत की। प्रातः ही स्थान पर पहुँचकर बावली के पवित्र जल में स्नान किया, आवश्यकतानुसार लंगर में से प्रसाद जल ग्रहण कर लेना, फिर सारा समय ब्यास नदी के तट पर वृक्षों की सघन छाया में जाकर अन्तर्मुख हुए नाम रंग में लीन रहना।

इस प्रकार कई दिन व्यतीत हो जाने के उपरांत आपके मन में संकल्प उत्पन्न हुआ कि गुरु अमरदास महाराज जिस स्थान पर अपने पवित्र केश एक खूँटी के साथ बाँधकर सारी रात वर्षों तक सिमरण करते रहे हैं, उस पवित्र स्थान पर सिमरन, भजन के सूक्ष्म तत्त्व आज भी अवश्य मौजूद होंगे, क्यों न वहाँ का लाभ उठाया जाए।** इस कारण आप दिन को तो नदी

---

* *किसी समय संत महाराज निक्का सिंह जी ने ज्ञानी जी से कथा श्रवण करने का जिक्र किया था और फ़रमाया था कि ज्ञानी जी की कथा करने की शैली बहुत विचित्र थी।*

* *गोइंदवाल साहिब की यात्रा, बावली स्नान की साधना और खूँटी वाले स्थान पर कुछ रातें व्यतीत करने आदि ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किसी समय महाराज जी ने असरपुर गाँव में रात के समय आप ही किया था जिसमें एक दो अन्य व्यक्तियों के अतिरिक्त हरदयाल सिंह जी भी थे।*

के तट पर सघन वृक्षों में चले जाते और रात्रि को इस पवित्र स्थान पर आ जाते। फिर समस्त रात्रि उस खूँटे वाले स्थान पर हरि सिमरन में लीन रहते। इस प्रकार कई रातें उस पवित्र स्थान पर ईश्वर की याद में व्यतीत कीं। अब आपके मन में एक संकल्प जागा कि गुरु अमरदास महाराज ने बावड़ी (बावली) के निर्माण समय चौरासी सीढ़ियाँ बनाना ही क्यों उचित समझा? इसके पीछे भी गुरु साहिब का कोई गहन रहस्य छिपा हुआ है। कथा समय ज्ञानी सरोवर सिंह जी ने भी बावली की महिमा का वर्णन करते बताया था कि गुरु अमरदास महाराज ने यह वरदान दिया था कि जो कोई श्रद्धा, विश्वास के साथ बावली की चौरासी सीढ़ियों पर 'जपुजी' साहिब के चौरासी पाठ तथा इतने ही स्नान करेगा वह चौरासी काटकर जन्म-मरण के चक्र से रहित हो जाएगा। वह मर्यादा अनुसार एक सीढ़ी पर बैठकर 'जपुजी' साहिब का पाठ करना, फिर चौरासी सीढ़ियाँ नीचे उतरकर बाबली के पवित्र जल में स्नान करना। फिर उन्हीं गीले वस्त्रों के साथ ऊपर आकर दूसरे सोपान पर बैठकर 'जपुजी साहिब' का पाठ करना, फिर नीचे जाकर स्नान करना। इस प्रकार पूर्ण अनुष्ठान में शारीरिक अर्थात् मल-मूत्र की कोई क्रिया नहीं करनी और न ही गीले वस्त्रों को बदलना है। इस प्रकार चौरासी 'जपुजी' साहिब का पूरा पाठ करना इतने ही बावली के स्नान निरन्तर करने होते हैं। यह साधना कई घंटों में सम्पूर्ण होती है, जो आप जी ने सफलतापूर्वक की। गुरु अमरदास महाराज जी ने किसी समय इस पवित्र धरती को अपनी कठोर साधना से प्रकाशित एवं सुवासित किया है। समय-समय पर श्रद्धावान् मुमुक्षु जन इस पवित्र स्थान से गुरु प्रेम की पहचान, भक्ति की महक एवं ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करते रहते हैं। आप जी ने भी इस स्थान पर कई दिन और कई रात्रियाँ निरंतर निद्रा भूख की परवाह न करते हुए गुरु रामदास जी की प्रेममय गोद में बैठकर गुज़ारीं। आपने आज किसी अकथनीय आनंद में निमग्न होते हुए खंडूर साहिब की ओर प्रस्थान कर दिया जिस मार्ग पर किसी समय दीन-दुनियाँ के बादशाह गुरु अमरदास महाराज गुरु प्रेम में बंधे बारह वर्ष गागरें ढोते रहे थे।

गोइंदवाल साहिब से कोई दो कोस दूर एक स्थान आया जिसको लोग श्रद्धा से नमस्कार करते थे। पूछने पर पता चला कि यह वह पवित्र स्थान है जहाँ गुरु अमरदास महाराज जल की गागर लेकर जाते समय थोड़ी देर विश्राम करते थे, इसलिए इसका नाम दमदमा साहिब पड़ गया।* एक कच्चा मंच बना हुआ है जिसको श्रद्धालु लोग लीप-पोत कर झाड़ू आदि से स्वच्छ रखते हैं। आप समझ गए कि यह वह पवित्र स्थान है जिसके सम्बन्ध में ज्ञानी जी से कथा में सुना था कि जिस दिन गुरु अमरदास महाराज जी की साधना सम्पूर्ण हुई, उस दिन एक हठयोगी की हड्डी आपके पवित्र चरणों को स्पर्श करते ही लाखों वर्षों से भटक रही आत्मा सद्गति को प्राप्त हो गई थी। आप जी के मन में आया कि आज की रात्रि इस पवित्र स्थान पर व्यतीत करके गुरु अमरदास जी के आत्म क्षेत्र में क्रियाशील आश्चर्यजनक कौतुकों के प्रत्यक्ष दर्शन करें। उस पावन स्थान की परम पवित्रता को सामने रखकर आपने किसी कुएँ आदि पर स्नान किया फिर उस पवित्र मंच के पास आकर अरदास की हे गुरु अमरदास महाराज! आपने किसी समय गुरु अंगद देव महाराज जी की कठिन साधना करके अथक सेवा ही नहीं की अपितु अपना आप ही उनके पवित्र चरणों में भेंट कर दिया, जिससे प्रसन्न होकर श्री गुरु अंगद देव महाराज जी ने आपको अनेक वरदान और लोक-परलोक की निधियों की चाबियाँ ही नहीं बख्शी, अपितु अपना आप ही आपके हृदय रूपी आँचल में डाल दिया। उस गुरु-कृपा के फलस्वरूप आप जी से श्रद्धावान् क्षुद्रों को आदर, निराश्रितों को आश्रय प्राप्त हो रहा है। आप

* *दमदमा साहिब रात्रि व्यतीत करने का वर्णन एक कथा के कैसेट में है और यह वर्णन कई बार महाराज जी के पवित्र मुख से सुना था।*

बेसहारों का सहारा बन रहे हो, निर्बलों के आधार एवं निराधारों को आधार प्रदान कर रहे हो। अकबर जैसों को राज-भाग के भंडारे और अपने दयालु, कृपालु स्वभावानुसार लाखों वर्षों से भटक रही हठयोगी की आत्मा को अपनी पवित्र चरणधूलि के स्पर्श से बिना माँगे मुक्ति दे रहे हो। अधिक क्या, सांसारिक इच्छाओं वालों को सांसारिक पदार्थ, राज-भाग की इच्छा वालों को राज सुख और मुक्ति की इच्छा वालों को मुक्ति प्रदान कर रहे हो, लेकिन यह दास आपके चरणों से राज नहीं माँगता, मुक्ति नहीं माँगता, बस केवल और केवल

मनि प्रीति चरन कमलारे॥ मनि प्रीति चरन कमलारे॥ मनि प्रीति चरन कमलारे॥

(देव गंधारी, पृष्ठ ५३४)

अरदास करते-करते मन गुरु अमरदास महाराज के चरणों में लीन हो गया। समस्त रात्रि गुरु अमरदास के निज-देश के अलौकिक रंगों में इस प्रकार व्यतीत हो गई जैसे पल-क्षण ही व्यतीत हुआ हो।

फिर ब्रह्ममुहूर्त में तत्काल खडूर साहिब की ओर प्रस्थान किया जहाँ से निराश्रितों के आलम्बन शहनशाह अपने प्यारे गुरु को स्नानार्थ जल की गागर उठाकर चला करते थे। खंडूर साहिब पहुँचकर गुरु अंगद देव महाराज के पावन स्थान की पवित्र धूलि मस्तक को लगाई। नमस्कार करते ही प्यारे गुरु के अलौकिक कौतुक जो किसी समय यहाँ घटित हुए थे, आँखों के समक्ष फिल्म की तीव्र गति के समान गुज़र गए।

उनको देख-देखकर मन किसी विस्माद अवस्था में निमग्न होता-होता अपने अलग अस्तित्व से नितांत बेखबर हो गया। उस आनंद में कितना समय व्यतीत हो गया, कह नहीं सकते? कुछ समय पश्चात् सुधि आई। गुरु प्रेम के अलौकिक रंग में निमग्न हुए, नेत्र कभी बन्द हो जाते, कभी उन्मीलित होते और फिर पलकें नीचे गिर जाती हैं। ऐसी दशा में रस के गहन सागर में सराबोर हुए अलौकिक मस्ती में झूमते-झूमते जा पहुँचे उस मंजिल पर जहाँ कभी **लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली** के मुक्त भण्डार वितरित होते थे। आवश्यकतानुसार जल-भोजन आदि ग्रहण किया, फिर सभी देव-स्थानों के दर्शन आदि किए। सायंकाल नगर से बाहर खेतों में जाकर एक कुएँ पर स्नान आदि किया, रात्रि वहीं एक शहतूत के वृक्ष के नीचे व्यतीत की।

प्रातः स्नान आदि किया और फिर नगर में 'तपियाणा साहिब' स्थान पर आ गए, जहाँ गुरु अंगद देव महाराज तप किया करते थे। जब जगत् गुरु श्री गुरु नानक देव महाराज ने समस्त परीक्षाओं में पूर्ण उतरे, अपने प्राणों से भी प्यारे सेवक लहणा जी के ऊपर कृपा की वर्षा की जो इस प्रकार थी—

जो उचरहु सो होवहि साची॥ पुन अस करहु न गिरा उबाची॥
आइस मनहु असमत मेरो। तूं सब को गुर है जग चेरो॥
अंगद नाम आज ते होही। निज अंगन ते कीनो तोही॥
सिमरन सत नाम प्रगटावो। जहि तहि सिखी राह चलावो॥

(सूरज प्रकाश)

ऐसे वरदानों से मालामाल करके लहणा जी से गुरु अंगद देव बना कर आज्ञा की कि प्रभु की इच्छा कुछ इस प्रकार है—आप खंडूर चले जाओ। आज्ञा सुनकर गुरु अंगद देव जी ने प्रार्थना की, महाराज! फिर दर्शन करने कब आऊँ? आज्ञा हुई कि तुमने यहाँ नहीं आना, हम स्वयं तुम्हारे पास आएँगे। गुरु अंगद देव महाराज ईश्वरीय आज्ञा

मानकर खंडूर 'माई विराई' के घर आ ठहरे। दिन को तो 'माई विराई' के घर एक कोठे में बैठकर गुरु याद में जुड़े रहते। सायं नगर से बाहर जाते और जहाँ 'तपियाणा' है वहाँ बैठकर आनंद मग्न वाहिगुरु में लीन समाधि में स्थिर रहते। इस प्रकार लगभग आठ मास गुरु अंगद देव ने प्यारे सतगुरु के ध्यान में कठिन वियोग में व्यतीत किए। इस पवित्र स्थान 'तपियाणा' के दर्शन करने के उपरांत महाराज निक्का सिंह जी के मन में प्रेम उत्पन्न हुआ कि गुरु अंगद देव महाराज ने निरन्तर आठ मास गुरु नानक निरंकारी की प्यारी रसभरी याद में इस स्थान पर व्यतीत किए थे। क्यों न इस पवित्र स्थान पर कुछ समय प्यारे की स्मृति में व्यतीत किए जाएँ? इस पावन स्थान के अलौकिक पराग का अनुपम रस का रसास्वादन करने के लिए और गुरु अंगद देव महाराज जी के दर पर अपनी उपस्थिति दज करने के लिए प्यारे की याद में लीन हुए सारी रात्रि इस पवित्र स्थान पर व्यतीत करते। प्रात: नगर से बाहर उसी कुएँ पर चले जाते और भोजन आवश्यकतानुसार 'माता खीवी' के घर से ले लेते।

इस प्रकार कई दिन गुरु अंगद देव महाराज के चरणों में बैठकर प्रभु की प्यारी याद में व्यतीत किए। इतने समय में कुएँ वाले ज़मींदार आपका अलौकिक जीवन देखकर प्रभावित हो चुके थे। बार-बार आप जी को लंगर खाने अथवा वस्त्र आदि की प्रार्थना करते, लेकिन आप अपने त्यागी स्वभावानुसार कुछ भी स्वीकार न करते। इस प्रकार आपने अब तरनतारन साहिब और आस-पास के गुरु-स्थानों और गुरु की नगरी श्री अमृतसर साहिब के दर्शन करने का संकल्प किया। ज़मींदार प्रार्थना करते कि महाराज कुछ देर और यहाँ रहो। उनके प्रेमवश उनको वचन दिया, प्रेमियों! हम ठहर तो जाते, लेकिन एक शर्त है कि आप हमारी मौज में हस्तक्षेप न करो। प्रेमियों ने प्रार्थना की, महाराज! आप जैसे चाहो रहो, लेकिन लंगर की सेवा हमें अवश्य दो। आपने वचन कर दिया कि ठीक है आप एक बार लंगर लाकर इस शहतूत के साथ बाँध जाया करो, जब हमारी इच्छा होगी, खोलकर ले लिया करेंगे, लेकिन आपने हमें बुलाना नहीं। आपने समीप गन्ने के खेत में से गन्ने के पत्ते आदि एकत्रित कर एक कुटीर बना ली। नीचे स्थान को समान करके गन्ने की पत्ती बिछा ली मानों मखमली आसन तैयार कर लिया। खंडूर साहिब जाकर गुरु अंगद देव महाराज के चरणों में अरदास करके उसी कुएँ पर वापस आ गए। उस मखमली शैय्या पर चौकड़ी मार 'जपुजी साहिब' के पाठ आरम्भ कर दिए। प्रेमी परिवार भोजन को शहतूत के साथ बाँध जाते, आप कभी तो खोलकर भोजन ले लेते कभी बँधा ही रह जाता। कभी-कभी कानों में मधुर स्वर के साथ रसयुक्त ध्वनि सुनाई पड़ती—

जिनां नाल सांई दे दोसती तिनां दी गुफतार,
उनां अन्न न खादा रज्ज के ना सुत्ते पैर पसार,
ओह करन लड़ाई नफस नाल लै हथ विच इह हथियार।

ऊपर कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। केवल एक खद्दर की चादर थी जिसे ऊपर ओढ़कर प्रभु के प्रेम में भीगे दिन-रात बैठे रहते। इस प्रकार चालीस दिन व्यतीत हो गए। खेत वालों ने चालीस दिन के पश्चात् बाहर आने पर दर्शन किए, घर से दूध लाकर पिलाया। आपने वचन किया, प्रेमियों! हमने श्री अमृतसर साहिब गुरु रामदास के चरणों में पहुँचना है। वहाँ लोग प्रसाद अथवा अन्य भेंटें अर्पण करते हैं—गुरु साहिब को। हम विरक्त हैं। माया पास नहीं रखते। अन्य कोई सांसारिक वस्तु हमारे पास नहीं है, जो गुरु साहिब के चरणों में भेंट करें। हमारा विचार है कि ये गन्ने जिनके नीचे बैठकर चालीस दिन जिनकी याद में व्यतीत किए हैं, उनके प्रिय चरणों में भेंट कर दें। खेत वाले प्रेमियों को बड़ी प्रसन्नता हुई, दाँती गँडासी आदि

लाकर चारों-पाँचों गन्ने काट लिए, छोटे-छोटे काटकर गठरी बाँध ली और सिर पर उठाकर श्री अमृतसर की ओर प्रस्थान किया। धीरे-धीरे यात्रा करते श्री तरनतारन बाबा बुड्ढा जी की बीड़, सन्न साहिब और छेहरटा साहिब के दर्शन-दीदार करते-करते बाइस मील की यात्रा तय करके श्री गुरु रामदास के पवित्र चरणों में पहुँचे। अमृतसर सरोवर में स्नान करने के पश्चात् जब दर्शनी ड्योढ़ी पहुँचे तो पहरेदार ने रोक लिया, बोला—महापुरुषो! इससे आगे गन्ने लेकर जाने की आज्ञा नहीं। आप बोले, प्रेमी! हमने हरिमंदिर साहिब गुरु रामदास महाराज और गुरु अर्जुन देव महाराज के पवित्र चरणों में यह प्रसाद भेंट करना है।

सेवादार ने कहा, हे महापुरुष! मर्यादा अनुसार यहाँ कड़ाह प्रसाद ही भेंट किया जाता है। सेवादार के रोकने पर आप जी ने समाधिस्थ दरबार साहिब सन्मुख खड़े होकर अरदास की।*

हुणि लावहु भोगु हरि राए॥
हुणि लावहु भोगु हरि राए॥

(पृष्ठ १२६६)

बस, कमल नेत्रों को खोलकर वहीं प्रसाद बाँटना आरम्भ कर दिया। पहला गन्ना उस सेवादार को ही दिया और शेष एक-एक करके समस्त गन्ने परिक्रमा में खड़ी संगत को बाँट दिए। कितने भाग्यशाली होंगे वे लोग जिनको वे अमृतरूपी प्रसाद प्राप्त हुआ होगा? काश! हमारे भाग्य में भी होती एक आध पोरी!!

महाराजा पटियाला

कबीर फल लागे फलनि पाकनि लागे आंब॥
जाइ पहूचहि खसम कउ जउ बीचि न खाही कांब॥

(श्लोक कबीर, पृष्ठ १३७१)

धीरे-धीरे शरद् का गमन हुआ, बसंत पीछे-पीछे आ रही थी, लेकिन बादल दूत का कार्य करके पुन: पुन: शरद् ऋतु के आगमन का प्रयत्न करता रहा। फिर भी बसंत का आगमन हो ही गया। माघ-फाल्गुन व्यतीत हो गए, चैत्र आ गया। बसंत ऋतु आ गई, आ गई बहारें, पुष्प प्रकट हुए और वन भी पुष्पित हुए। ऐसी मादक ऋतु में गुरु कृपा द्वारा सम्पन्न हुई कठोर साधना के साथ संत निक्का सिंह महाराज का मन शुद्ध होकर बारह कैरेट स्वर्ण समान भासमान हो उठा। बसंत ऋतु की वनस्पति के समान प्रकट हुआ। बिना किसी के चखे, ज्यों का त्यों, चमकता और पककर लाल हुआ यह आम स्वामी के घर पहुँच गया। अब आपकी क्रिया यह हो गई—भीतर से तो मन किसी विस्माद अवस्था में निमग्न रहता और बाह्य क्रिया सब सहज में हो रही है। अर्ध उन्मीलित नेत्रों में एक मादकता है और मस्तक इस प्रकार भासमान है जैसे पूर्व से अपने सम्पूर्ण तेज के साथ सूर्य प्रकट हो रहा हो। इस प्रकार ऋषिकेश कनखल में घूमते कई मास हो गए। इधर चैत्र मास से लेकर भादों तक बाबा बुड्ढा सिंह महाराज के पवित्र शरीर की शक्ति जल भरे फूटे घड़े के समान कम होती जा रही थी।

आप चरणों में रहकर निरन्तर दिन-रात सेवा करते रहे। बाबा जी अंतत: 13 आश्विन 1937 ई० वाले दिन सचखण्ड जा विराजे। उनके पवित्र शरीर की अंतिम क्रिया जब सम्पूर्ण हो गई तो आप 'झाड़ी' में चले गए। 'झाड़ी' में गंगा के किनारे

* *खंडूर साहिब और हरिमंदिर साहिब वाले कौतुक आगे के कुछ समकालीन साधुओं से प्राप्त हुए।*

घास-फूस की चौदह झोंपड़ियाँ बनी हुई थीं जिनमें एक-एक महात्मा रहता था। ज्ञान चर्चा के समय सारे महात्मा एक स्थान पर एकत्रित हो जाते, लेकिन शेष समय अपने-अपने स्थान पर सिमरन भजन में लीन रहते। उन दिनों महाराजा भूपिंदर सिंह पटियाला नरेश परिवार सहित और फौज का दस्ता साथ लेकर हरिद्वार ऋषिकेश आया। पूर्ण पुरुषों की खोज में इधर-उधर घूमते उसको पता लगा कि ऋषिकेश गंगा के तट पर झाड़ी में कुछ विरक्त महात्मा निवास करते हैं। दर्शनार्थ झाड़ी में पहुँचा, लेकिन राजा का दुर्भाग्य कि किस महात्मा ने उसको निकट बैठने की आज्ञा न दी। अंततः महाराज निक्का सिंह जी के पास आया, आप ने बड़े सत्कार के साथ चटाई पर बिठाकर कुशल क्षेम पूछी, फिर वचन किया हे राजन्! अपने जीवन का अनुभव सुना। राजा बोला, महाराज! औरंगज़ेब ने जब गुरु तेग़ बहादुर महाराज को शहीद करवा दिया उस दिन के बाद औरंगज़ेब दिल्ली में सुख की नींद नहीं सो सका। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। मैंने अपने जीवन में एक पूर्ण गुरु-सिक्ख देखा है—सरदार सेवा सिंह—ठीकरी वाले लेकिन मेरा दुर्भाग्य कि उसके साथ मेरी शत्रुता हो गई। आज से कुछ समय पूर्व वह जेल में प्राण त्याग गया। उस दिन से मेरे मन की शांति जाती रही। मेरी नींद हराम हो गई। शाही राज-ठाठ और बादशाही के समस्त सुख मुझे असत्य प्रतीत हो रहे हैं। महाराज आपने निष्काम तपस्या की है जिसका फल आप अविनाशी राज्य का चिरंजीवी सुख भोग रहे हो, लेकिन तपस्या मैंने भी की, क्योंकि राज-भाग बिना तप किए तो प्राप्त नहीं होता लेकिन अपने दुर्भाग्य के कारण मैंने कच्ची सरसों का तेल निकालने की कोशिश की है—जैसा कि कबीर साहिब जी का फरमान है—

कबीर जउ तुहि साध पिरंम की पाके सेती खेलु॥
काची सरसउं पेलि कै ना खलि भई न तेलु॥

(श्लोक कबीर जी, पृष्ठ १३७७)

मैं कच्ची सरसों का दलन कर तेल एवं खल दोनों को गँवा बैठा अर्थात् राज-भाग की इच्छा रखकर तप किया जिसके परिणामस्वरूप राज्य-भाग प्राप्त भी हो गया, लेकिन राज्य-भाग के सुखों में डूबकर मैं अच्छे-बुरे विधि निषेध की बुद्धि को गँवा बैठा, फलस्वरूप लोक एवं परलोक दोनों को दागी कर लिया। अब मैं अशांत मन के साथ राजमहलों से आया हूँ—आप जैसे शांत महापुरुषों के दर्शन हेतु जिन्होंने संसार रूपी बाज़ी को जीत लिया है और मन रूपी शत्रु को वश में कर लिया है। आप कृपा करो किसी शुभ मार्ग पर लगाओ।

राजा को दुःखी देखकर हजूर ने वचन किया राजन्! उपदेश से तो शास्त्र भरे पड़े हैं और समस्त उपदेश मनोजन्मा है। जिस व्यक्ति का अपना मन शांत है, उसको समस्त संसार सुखी नज़र आता है, इसके विपरीत जिसका अपना मन अशांत है, उसको समस्त संसार अग्नि में जल रहा प्रतीत होता है। राजन्! समस्त संसार को वश में करना कठिन है। जिस व्यक्ति ने अपने मन को वश में कर लिया मानों उसने जीवन की बाज़ी हमेशा के लिए जीत ली, क्योंकि सबसे बड़ा शत्रु अपना मन ही है, इसलिए भर्तृहरि ने भी कहा है—

मन रिप जीते, सब रिप जीते॥
मन रिप जीते, सब रिप जीते॥

श्री गुरु नानक देव महाराज जी का भी यही उपदेश है—**मन जीते जगि जीत।**

राजन्! पुरुषार्थ एवं गुरु कृपा द्वारा मन जब वश में आ जाता है फिर इस जैसा कोई सच्चा मित्र भी नहीं। गुरु बाबा जी ने एक सूत्र दिया है—समस्त लोगों एवं राजाओं के योग्य। यदि वह सूत्र उपयुक्त ढंग से प्रयोग कर लिया जाए तो संसार में भी समय सुखपूर्वक व्यतीत होता है और परलोक भी सुखमय हो जाता है। कौन सा है वह सूत्र?*

---

* *उपरोक्त घटना कभी महाराज जी ने स्वयं सुनाई थी।*

यथा— राजे चुली निआव की

साच सीलि चालहु सुलतान

जाओ प्रयत्न करो इस सूत्र के प्रयोग की।

पूर्व के संयोगी

सारी शरद् ऋतु आप जी ने 'झाड़ी' में व्यतीत की। इतने में 1938 वाला हरिद्वार का कुंभ उत्सव आ गया। उस कुंभ उत्सव के लिए आप अन्य महात्माओं के साथ कनखल आ गये। कुम्भ उत्सव पर दूर-समीप के सहस्रों की संख्या में साधु-महात्मा आते हैं। इस समय पर्व पर संयोगवश तीन महापुरुषों से आप पहली बार मिले। बाबा बेअन्त सिंह जी अवधूत, संत भगत सिंह जी जो उस समय शेखूपुरा निवास करते थे, तीसरे संत दर्शन सिंह जी विरक्त। तीनों महापुरुषों से आप का प्रथम मिलाप क्या हुआ, मानों सदैव के लिए पूर्ण तौर पर आपके ही हो गये अर्थात् स्थाई सम्बन्ध घटित हुआ।

बाबा बेअंत सिंह जी

आपका जन्म ज़िला लाहौर गांव बघियाना के दर्ज़ी परिवार में हुआ था। जब युवक हुए तो किसी कुसंग के प्रभाव स्वरूप आपको पुलिस पकड़कर ले गई। मुकद्दमा बनाकर जिस समय जज के सम्मुख पेश किया तो दैवयोग से अथवा संयोगवश कि जज के भीतर से एक प्रेरणा प्रस्फुटित हुई। जज ने कहा—हे बालक! यह हीरे जैसा मनुष्य जन्म, यौवन अवस्था, सुन्दर शरीर तुम्हें जेलों के नरक भोगने के लिए प्राप्त हुआ है?

यह तो बड़े भाग्य से प्राप्त होता है-उस प्रभु को मिलने के लिए, लेकिन तुम इसका दुरुपयोग करके मानवीय मूल्यों को भी नीचे गिरा रहे हो-अब बता जेल जाना है अथवा परमेश्वर के भजन से जन्म-मृत्यु आदि समस्त बंधनों से मुक्ति प्राप्त करनी है? आप जज की बात सुनकर बड़े हैरान हुए कि मेरे साथ इतनी संवेदना। यह न्यायाधीश है अथवा कोई महापुरुष। भीतर से एक झटका लगा। जज ने शिक्षा क्या दी मानों भीतर पड़े पूर्व जन्म के भक्ति के संस्कारों को किसी ने प्रस्फुटित होने के लिए आवश्यक पानी दे दिया हो। आज अंतिम दिन था संसार की किसी कचहरी में जाने का। आपने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब यह लोक तो क्या परलोक की कचहरियों के भी दस्तावेज़ फाड़कर फैंक देने हैं। अब प्रभु करे वह अवस्था प्राप्त हो जाए।

रे रे दरगह कहै न कोऊ॥

आउ बैठु आदरु सुभ देऊ॥

(बावन अखरी पृष्ठ २५२)

ऐसा दृढ़ निश्चय उनके मन में हुआ देखकर जज ने हथकड़ी खुलवा दी। आप अब घर आने की बजाए उस मंज़िल की ओर चल पड़े जहां कभी सुना था दरगाह के पदाधिकारी बैठते हैं। उन दिनों लाहौर ज़िले के 'लंमे' गाँव में पूर्ण एवं प्रसिद्ध

महापुरुष रहते थे जिनकी रूहानियत की महक दूर-दूर तक फैली हुई थी। आप लाहौर कचहरी में से 'लंमे' गाँव की ओर चल पड़े। जाकर महापुरुषों के पवित्र चरणों पर नमस्कार की। उन्होंने भी अधिकारी जानकर उपदेश से उपकृत किया। कुछ समय तो डेरे में रहकर सेवा सिमरन करते रहे, फिर महाराज जी से आज्ञा लेकर लाहौर ज़िले के 'चूनिया' तहसील के गाँव जागूवाल, चकॅ नम्बर चार पहुँच गए। गाँव से दूर खेतों में दो जुड़े शीशम के वृक्ष खड़े थे। उनके नीचे घास-फूस की झोंपड़ी बनाकर तपस्या करने लगे। कई वर्ष तक कठोर साधना की कि लोग उन्हें 'टाहलियां वाले संत' के नाम से जानने लगे। उसके पश्चात् विरक्त महाराज जी के साथ आपका ऐसा सम्बन्ध जुड़ा कि जो अंत तक चलता रहा, क्योंकि दोनों एक ही पथ के पथिक थे।

महाराज भगत सिंह जी

आपका जन्म सन् 1880 के आस-पास पिता हरिचन्द के घर माता भगवान् देवी की पवित्र कोख से 'तख्त हज़ारा' में (आजकल पाकिस्तान में) हुआ। दस वर्ष की आयु में चाचा के साथ हरिद्वार गए। वहां किसी आश्रम में निवास कर सेवा और सत्संग का लाभ उठाते रहे। इस प्रकार पर्याप्त समय व्यतीत हो गया। एक दिन किसी महात्मा से प्रार्थना की कि संयासी जीवन धारण करने की मेरी प्रबल इच्छा है। महात्मा मर्यादा में रहकर जीवन व्यतीत करने वाले महापुरुष थे। वचन किया कि पहले घर जाकर माँ से आज्ञा लेकर आओ फिर संन्यासी जीवन के सम्बन्ध में सोचना। आज्ञा मानकर बहुत दिनों के बाद घर आया देखकर माँ अत्यंत हर्षित हुई। आपने संन्यासी होने की इच्छा का विचार माँ को बताया। मोह वश माँ ने सांसारिक जाल फैलाया और एक श्रेष्ठ परिवार की लड़की 'लक्ष्मी देवी' के साथ विवाह कर दिया। अब आजीविका के लिए कोई कार्य करना भी आवश्यक था इसलिए आपने एक व्यापार करना आरम्भ कर दिया। माँ अथवा भाग्य ने चाहे आपको पूर्ण रूप से गृहस्थ रूपी पिंजरे में डाल दिया, लेकिन आपका संस्कारी मन रूपी शुक पिंजरा तोड़कर उड़ने के लिए सदैव तत्पर रहता, क्योंकि आपको महात्माओं की संगति में यह विचार दृढ़ हो चुका था—

पुत्र कलत्र गिरसत के फासा॥ होनु न पाईऐ राम के दासा॥

(ग. म. ५, पृष्ठ १८०)

इस प्रकार गृहस्थ में निवास करते हुए श्रम एवं ईमानदारी से जो चार पैसे कमाते उसके साथ ही परिवार का सादगी वाला जीवन व्यतीत करते और कुछ पैसा बचाकर प्रतिवर्ष एक बार हरिद्वार-ऋषिकेश अवश्य हो आते, क्योंकि यहां रहने वाले विरक्त महात्माओं के त्यागी एवं उच्च एवं पवित्र जीवन देखकर आप पहले ही बहुत प्रभावित हो चुके थे, इसलिए जेब जितनी अनुमति देती वस्त्र आदि आवश्यक वस्तुओं से सेवा आदि कर देते। इस प्रकार गृहस्थ एवं त्याग के द्वन्द्व में जूझते जीवन व्यतीत करते कई वर्ष व्यतीत हो गए। ऐसे समय आपके घर चार बच्चों का जन्म हुआ। कृष्णा एवं रामभेजी दो पुत्रियां, गोपाल सिंह एवं राम सिंह दो पुत्र। इस प्रकार बाह्य रूप से तो आपकी गृहस्थ रूपी गाड़ी यद्यपि ठीक पटरी पर चलती दृष्टिगोचर हो रही थी, लेकिन भीतर से दिन प्रतिदिन रिक्त होती जा रही थी। आप मनुष्य जन्म के महत्त्व को भली भाँति समझते हुए जानते थे कि चाहे कोई राजसी सुखों को भी मांग रहा हो, लेकिन आत्म-धन से रिक्त व्यक्ति कंगाल ही होता है। इसलिये आपका मन सदैव इसी आशा में रहता था कि कब वह समय आए जब हम इस कंगाली के देश से उड़कर किसी

आत्म-धन के सेठ के पास जाकर नौकरी करें, जहां से नाम-धन रूपी हीरे-जवाहरात और ब्रह्म ज्ञान रूपी लाल प्राप्त करके जन्म-मृत्यु आदि बन्धन और हर्ष-शोक रूप आदि कंगाली से सदैव के लिए मुक्ति प्राप्त कर लें।

इस प्रकार भीतर से घुन खाई लकड़ी कितने दिन स्थिर रह सकती थी? अंतत: 1920 ई० के लगभग घर-परिवार एवं सम्बन्धियों को सदा के लिए विदा कहकर किसी पूर्ण पुरुष की तलाश में घर से चल पड़े। पर्याप्त भ्रमण के उपरान्त निर्मले संत नारायण सिंह जी लायलपुर वालों के साथ मिलाप हो गया। कुछ दिन पास रहकर सेवा करते-करते श्रद्धा हो गई। पूर्व संयोगवश उनसे गुरु दीक्षा प्राप्त करके शिष्य-भाव ग्रहण किया। इस प्रकार गुरु उपदेश को अर्जित करते दूर-दूर के प्राचीन तीर्थ स्थानों जैसे दक्षिण में रामेश्वर, द्वारिका और श्री नगर, कश्मीर आदि की पद यात्रा की। इस समय के दौरान जहां आपने भूख-प्यास के कष्ट सहन कर कठिन साधना की, वहां परमार्थ मार्ग के बड़े-बड़े महापुरुषों को भी मिले।

इतनी कठिन साधना के उपरांत और आत्म-धन से सम्पन्न महापुरुषों को मिलने के बावजूद भी आप अभी कहीं भीतर से कुछ रिक्तता अनुभव करते थे। उधर शरीर की वृद्धावस्था भी ऐसी समीप आती जा रही थी जैसे वर्षा ऋतु के पश्चात् शरद् ऋतु।

पद यात्रा, भूख-प्यास के कष्ट और कठोर साधना ने शरीर को और भी कमज़ोर कर दिया था। अधिक क्या! मन और शरीर को और कठिन साधना में डालने का किंचित भी स्थान नहीं था। संसार रूपी तट बहुत पीछे छूट गया था और दूसरे तट का अभी विश्वास नहीं आ रहा था। तुलसी कृत 'रामायण' के प्रेम सम्बन्धी चौपाइयां पढ़-पढ़ कर नेत्र अनवरत बहते रहते। वियोगाग्नि इतनी प्रज्वलित हो चुकी थी कि उसने संसार रूपी कूड़े-कर्कट को जलाकर राख कर दिया था, लेकिन सावन के जल से परिपूर्ण बादल अभी कहीं दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था कि जो विरह अग्नि में तप रही हृदय रूपी भूमि को भिगोकर शांत कर देता। ऐसी असहाय, लेकिन उच्च अवस्था पर रीझकर अकाल पुरुष वाहिगुरु कालातीत पुरुष ने निर्गुण से सगुण अर्थात् महाराज निक्का सिंह जी का रूप धारण करके उपदेश रूपी ऐसी ज़ोरदार वर्षा की कि संत भगत सिंह जी का हृदय प्रेम के साथ सराबोर हो गया और बाहर उछलता हुआ प्रेम इस प्रकार प्रवाहित होने लगा जैसे भरपूर वर्षा के उपरांत छोटे-छोटे नाले और नदियाँ जल में भरकर प्रवाहित होने लगते हैं। हृदय के भीतर एवं बाहर तू-ही-तू की ही ध्वनि इस प्रकार सुनाई देने लगी जैसे सावन मास की प्रथम तीव्र बौछारों के पश्चात् रात्रि को मेंढ़कों की ऊँची आवाज़ों के बीच अन्य ध्वनियां धीमी पड़ जाती हैं। भीतर की रिक्तता जाती रही-**जत देखां तत् तू** वाली अवस्था घटित हो गई। यह एक रहस्य था महाराज निक्का सिंह जी के प्रति मन-तन से बलिहारी जाने का।*

---

* *रात्रि के समय एक बार विरक्त निक्का सिंह जी के पवित्र चरणों में बैठे उनके परम शिष्य महंत राम सिंह जी ने प्रार्थना की कि महाराज! संत भगत सिंह जी को करनाल के कितने लोग मानते-पूजते हैं लेकिन आप जब भी कभी छोटी कुटिया जाते हो तो उनको कुछ सूझता नहीं है। कहाँ बिठायें, कौन-सा वस्त्र बिछाएं, किन शब्दों के साथ आपका स्वागत करें आदि विचार करते प्रेम के वशीभूत वे अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि चींटी के घर में स्वयं नारायण आ पधारे हैं, जब पथिक वे भी उसी पथ के हैं, फिर ऐसा क्यों? विरक्त महाराज निक्का सिंह जी बोले, भाई! उनको हम से कोई रहस्य हाथ लगा है।*

संत दर्शन सिंह जी विरक्त

श्रीमान् संत दर्शन सिंह जी का जन्म सन् 1915 ई० के लगभग पिता सरदार रला सिंह गाँव चक मॅलां ज़िला होशियारपुर में हुआ। यह गाँव चक मॅलां ज़िला होशियारपुर चण्डीगढ़ सड़क से कोई बाहर कि०मी० दूरी पर चण्डीगढ़ की ओर 'मेन रोड' से दो कि०मी० पीछे हटकर स्थित है। सरदार रला सिंह जी चौहान गोत्र के समृद्ध एवं सम्पन्न ज़मींदार थे। इनके दो पुत्र-ज्येष्ठ ज्वाला सिंह एवं छोटे दर्शन सिंह जी थे। दर्शन सिंह बाल्यकाल से ही परमार्थी विचारों के होने के कारण सत्संग, संत सेवा आदि शुभ कार्यों में अधिक रुचि रखते थे। अर्थात् **मिल साध संगत भजु केवल नाम** वाला मूल्यवान् सूत्र मन में बचपन से ही दृढ़ था। आठवीं कक्षा तक विद्याध्ययन अपने गाँव के स्कूल में ही प्राप्त किया। उपरांत आपका मन संसार की ओर से उचाट हो गया। 'चक मॅलां' से कोई तीन कि०मी० दूर गाँव 'छोटी लैहली' एक विरक्त महात्मा श्रीमान् संत वसावा सिंह जी कुटिया में रहते थे। उनके चरणों में पहुँचकर सेवा करने लगे। श्रीमान् संत वसावा सिंह जी पूर्ण पुरुष सिद्ध योगी महात्मा थे।

उनके पवित्र चरणों की सेवा करते जब कुछ समय व्यतीत हुआ तो संत वसावा सिंह जी ने प्रसन्न होकर उपदेश से उपकृत करके आपको परमार्थ के मार्ग पर डाल दिया। संत वसावा सिंह जी तो कुछ समय पश्चात् किसी संयोगवश अथवा अन्न-जल के परिणामस्वरूप अपने विरक्तीय ठाठ में 'लहली' से 'सींगड़ी वाला' जो जालंधर रोड पर होशियारपुर से तीन कि०मी० की दूरी पर स्थित है, वहाँ चले गए। संत वसावा सिंह जी का जन्म-नगर 'डगाणा' भी 'सींगड़ी वाला' से लगभग दो कि०मी० की दूरी पर स्थित है, लेकिन संत दर्शन सिंह जी कुछ समय इसी नगर 'छोटी लैहली' कुटिया ही टिके रहे। भोजन मधुकरी लेकर छकते, कभी-कभी अपनी जन्मभूमि 'चॅक मॅलां' भी मधुकरी करने जाते, वहाँ भी किसी के घर बैठकर न खाते, बल्कि जिस घर से भोजन लेते, उसके सामने गली में खड़े होकर छक लेते।

अब कोई पूर्व संयोग उदय हुआ। 1938 का हरिद्वार कुंभ मेला आ गया। आप अपनी विरक्तीय ठाठ में विचरण करते कुंभ उत्सव के दर्शन करने के लिए हरिद्वार पहुँचे। यहाँ किसी पूर्व जन्म के प्रबल संयोगवश परम पूजनीय श्रीमान् 108 संत बाबा निक्का सिंह विरक्त जी महाराज से पहला मिलन हुआ। मिलाप क्या हुआ फिर तो आजीवन वहीं के होकर रह गए। विरक्त महाराज जी के साथ आजीवन पूर्ण विरक्तीय ठाठ में विचरण और पूर्ण आज्ञानुसार जीवन व्यतीत करना आदि (जिनका वर्णन विरक्त महाराज जी की जीवन- लीला का वर्णन करते यथा स्थान आगे आएगा)

गाँव असरपुर

प्राचीन समय में हमारे देश में आज की भाँति पक्की सड़कें आदि नहीं होती थीं और न ही यातायात आदि का प्रबन्ध होता था। खेतों की खुली-खुली पगडंडियाँ अथवा खुले-खुले कच्चे मार्ग होते थे। प्राय: लोग अधिक पढ़े-लिखे भी नहीं होते थे। भोले-भाले अनपढ़ और छल-कपट रहित सीधे-सादे ग्रामीण लोग इन कच्चे मार्गों से होते अपनी जीवन-यात्रा पूर्ण करते थे। एक नगर से दूसरे नगर तक का छोटा-मोटा व्यापार भी बैलगाड़ियों के द्वारा ही होता था। ऐसा ही एक मार्ग अम्बाला शहर से जो पर्याप्त लम्बा और चौड़ा था पश्चिम की ओर मंजोली, बघौरा, सियालू, भट माजरा, चपड़शील, जोगीपुर, असरपुर और चौरा आदि गाँवों से होते हुआ बीस पच्चीस मील की यात्रा करके पटियाला नगर तक जाता था। पटियाला से अम्बाला

शहर को जोड़ने वाला सबसे सीधा मार्ग यही था। उस क्षेत्र की भूमि अधिक चिकनी होने के कारण वर्षा के दिनों में तीन मास के लिए इस मार्ग पर आना-जाना कुछ कम हो जाता था, लेकिन शेष नौ मास दिन-रात आना जाना रहता था।

यह मार्ग अपने पर-उपकारी स्वभाव के अनुसार जहाँ संसार के लोगों को व्यावहारिक कार्यों की पूर्ति के लिए आने-जाने का पथ प्रदर्शन करता था और व्यापारी लोगों के व्यापारिक कार्यों में भी पूर्ण रूप से सहायक था, वहाँ पूर्वजन्म के पुण्य कर्म उदय हुए। भाग्यवान् लोगों के व्यापार कार्यों में भी बड़ा सहायक हो रहा था। यद्यपि इस बहुमूल्य व्यापार के व्यापारी अधिक नहीं हुआ करते, लेकिन इस मार्ग की ओर से अपना कर्त्तव्य निभाने में कोई और कसर नहीं थी। वह व्यापार कौन-सा है? जिसके व्यापारी अधिक नहीं होते? कहीं वही तो नहीं, जिसके सम्बन्ध में गुरु अर्जुन देव महाराज संकेत करते हैं—

इहु वापारु विरला वापारै॥ नानक ता कै सद बलिहारै॥

(सुखमनी साहिब पृष्ठ २८३)

यथा— **इहु तनु हाटु सराफ को भाई वखरु नामु अपारु॥**
इहु वखरु वापारी सो द्रिड़ै भाई गुरु सबदि करे वीचारु॥
धनु वापारी नानका भाई मेलि करे वापारु॥

(सोरठि महला १, पृष्ठ ६३६)

गुरु बाबा जी फ़रमाते हैं कि व्यापारी धन्य हैं, भाई! जो अपने शरीर रूपी हाट में ही समस्त दु:ख नाशक नाम-धन रूपी व्यापार को प्रकट कर लेता है। ऐसी महान् वस्तु के दुर्लभ व्यापारी इस पटियाला अम्बाला वाले शाही मार्ग पर पंजाब की ओर से हरिद्वार ऋषिकेश जाने के लिए और वापिस पंजाब आने के लिए साधु महात्मा प्राय: पैदल निकलते ही रहते थे। कभी विरक्त महात्माओं की मण्डली के रूप में, कभी अकेले दुकेले। जहाँ रात्रि हो जाती वहीं निवास कर लेना, लंगर समीप के किसी गाँव से मधुकरी करके छक लेना। इस प्रकार इस मार्ग पर सांसारिक और पारमार्थिक धन के व्यापारियों का प्राय: आना-जाना बना रहता था। इस मार्ग पर निवास करने वाले गाँवों के पुण्यवान् लोगों को सेवा सत्संग अर्थात् गुरुमुख पुरुषों के संग का अवसर सहज ही प्राप्त होता रहता था। इसके सम्बन्ध में फ़रमान है—

गुरमुख सउ करि दोसती सतिगुर सउ लाइ चितु॥
जंमण मरण का मूलु कटीऐ तां सुखु होवी मित॥

(पृष्ठ १४२१)

ऐसे गुरुमुख पुरुषों की चरणधूलि इस पटियाला अम्बाला मार्ग को प्राय: प्राप्त होती रहती थी। इस मार्ग पर अम्बाला से पंद्रह मील के लगभग पश्चिम की ओर पटियाला से लगभग 6 मील पूर्व की ओर एक गाँव स्थित है—असरपुर। इस गाँव में आमतौर पर कम्बोज जाति के लोग निवास करते हैं। इस गाँव से कोई एक मील पर उत्तर की ओर पटियाला, अम्बाला मार्ग गुज़रता था। मार्ग के कुछ कदम पीछे हटकर एक कुआँ था जिस पर बड़ा भारी वट वृक्ष लगा हुआ था। इस प्रकार यह स्थान गाँव से मील भर दूर एकांत भी था और छाया एवं जल की जीवन के लिए सहूलियत भी थी इसलिए पथिक महात्मा प्राय: यहाँ ठहर जाया करते थे। यही कारण था कि असरपुर गाँव के निवासियों में संत सेवा और सत्संग के बीज कुछ अधिक प्रबल थे। संयोगवश जब भी कोई महात्मा रात्रि व्यतीत करने के लिए यहाँ रुकता, तो ये लोग बहुत प्रेम से सेवा करते।

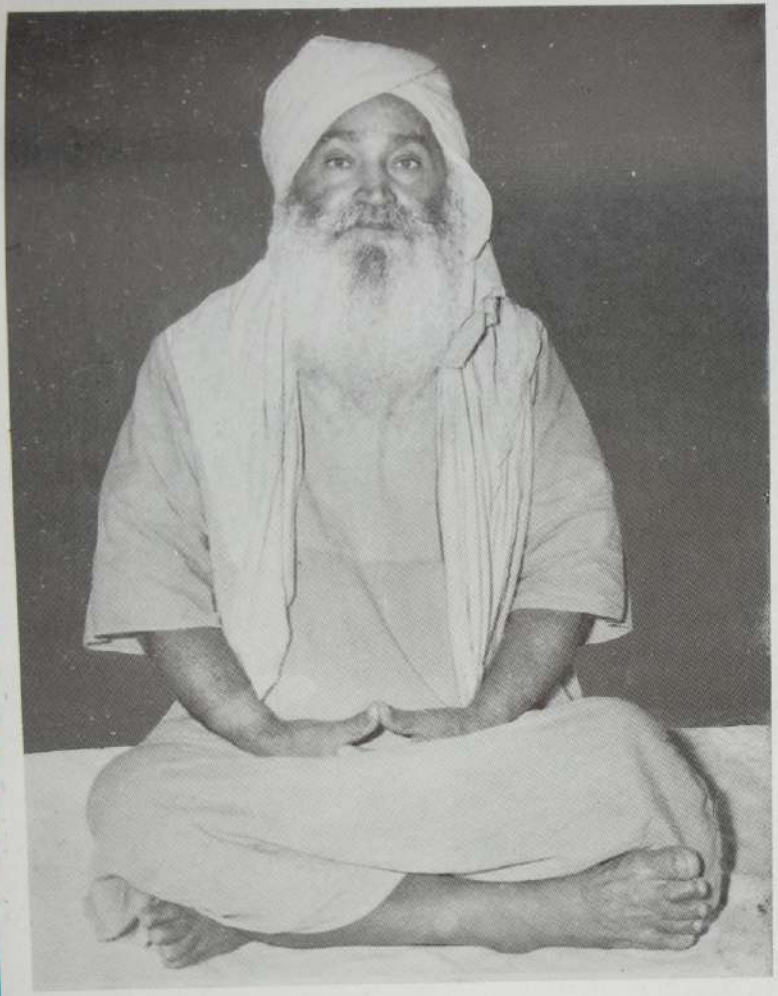

पूज्य संत निक्का सिंह जी महाराज

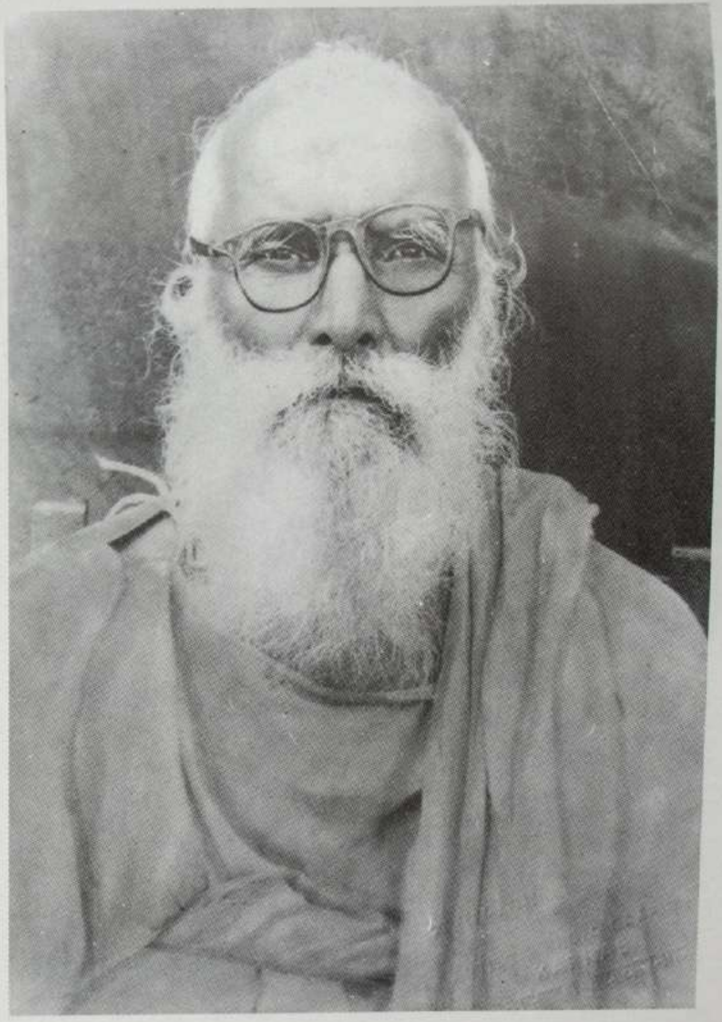

पूज्य संत भगत सिंह जी महाराज

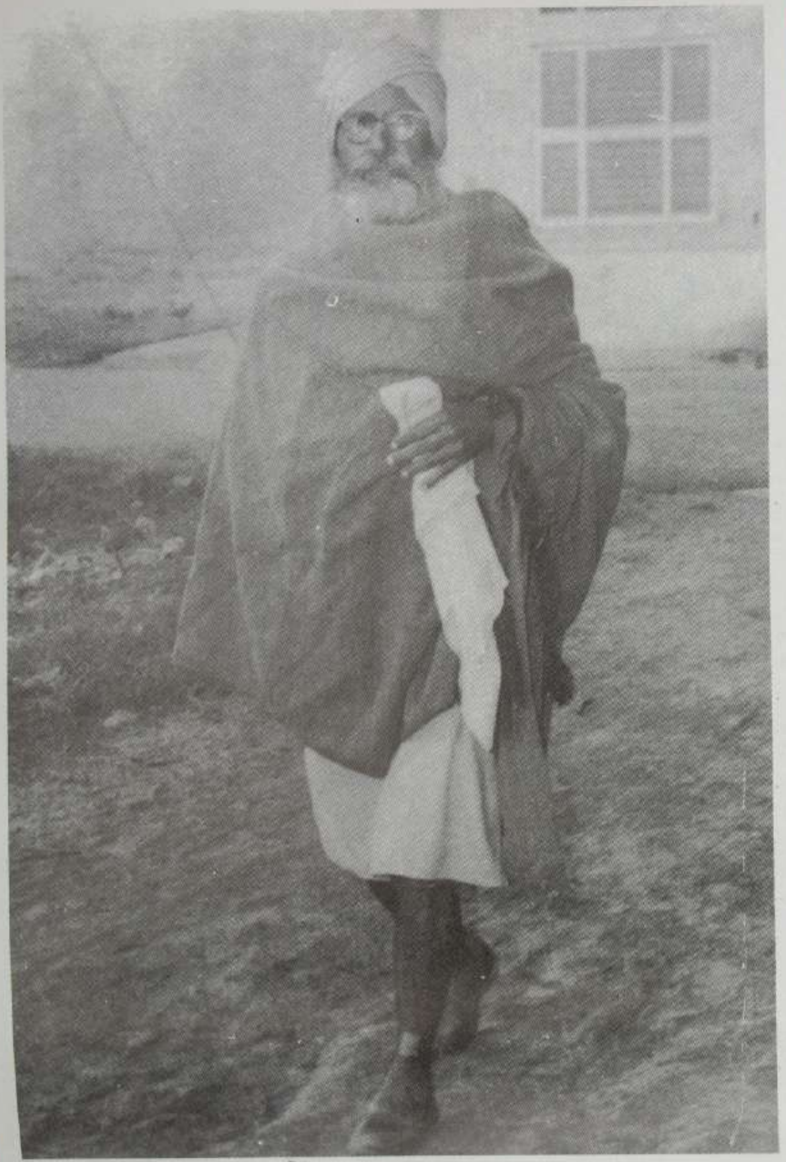

संत दर्शन सिंह जी महाराज

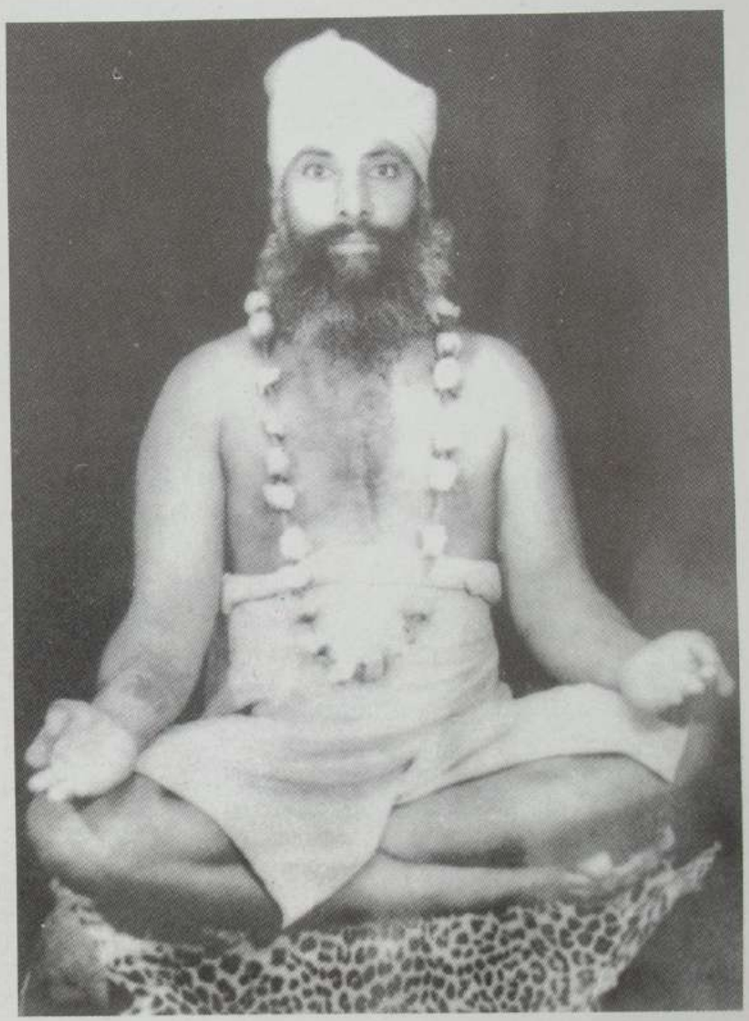

संत गोपाल सिंह जी महाराज

ज़िक्र 1940 ई० के करीब चैत्र मास का है जब इन लोगों के निष्काम पुण्यों और दैवी गुणों की प्रेरणा के फलस्वरूप संत महाराज निक्का सिंह जी विरक्त अम्बाला से पटियाला की ओर जाते हुए उस वट वृक्ष के कुएँ पर ठहर गए। इस गाँव के कुछ व्यक्ति जो कोई वहाँ पशु चरा रहा था, कोई खेत में काम कर रहा था, अपने संत सेवी स्वभावानुसार कोई साधु आया देखकर कुएँ पर पहुँचे, नमस्कार की। कुएँ से जल पिलाया, फिर प्रार्थना की कि महाराज! यहाँ ठहरो हम गाँव में जाकर दूध भोजन की व्यवस्था करते हैं। हजूर बोले प्रेमियों! रात तो यहीं ठहरने का विचार है, लेकिन प्रसाद हम भिक्षा का ही ग्रहण करते हैं। आपने वट वृक्ष के नीचे अपना आसन लगा लिया। लंगर का समय होने पर 'बुड्ढन पुर' गाँव से भोजन आदि ले लिया। रात को 'असरपुर' के कुछ प्रेमी दूध लेकर आए। देर रात तक आप उनको परमार्थ सम्बन्धी विचार सुनाते रहे। वे व्यक्ति कुछ ऐसे प्रभावित हुए कि प्रातः ही दूध लेकर आ गए और प्रार्थना की महाराज! कुछ दिन यहीं विश्राम करो। उनका प्रेम देखकर और नितांत एकांत जानकर आपने वचन कर दिया कि ठीक है, जितने दिन तक ईश्वर की इच्छा उतने दिन रहेंगे। श्रद्धालुओं ने घास-फूस की एक झोंपड़ी सी बना दी। आप एक बार समीप के किसी गाँव से भोजन लेकर खा लेते। तीन चार गाँव समीप ही पड़ते थे जैसे असरपुर, पुनिया, जोगीपुर और बुड्ढन पुर आदि। दो चार दिन एक गाँव से लंगर ले लेते फिर दो चार दिन दूसरे गाँव से—इस प्रकार बारी-बारी जाते थे। दिन को तीसरे पहर गुरुवाणी की किसी पोथी की कथा करते जिसको श्रवण करने के लिए धीरे-धीरे उपरोक्त तीनों-चारों गाँव के लोग आने आरम्भ हो गए। फिर कुछ दिनों पश्चात् 'असरपुर' के दो तीन वृद्ध रात्रि को भी साथ ही रहने लगे। उनको रात्रि को परमेश्वर सम्बन्धी कुछ वचन सुनाते रहते। इस प्रकार उन लोगों के प्रेमवश चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ तीन मास यहीं व्यतीत किए।

अब आपने यहाँ से आगे जाने का संकल्प किया। श्रद्धालुओं ने प्रार्थना की महाराज! अभी यहीं ठहरो। आप बोले, भाई वर्षा ऋतु समीप आ रही है, यह स्थान वर्षा में रहने योग्य नहीं है, इसलिए आप कभी किसी अन्य साधु को भी वर्षा के दिनों में यहाँ ठहरने के लिए न कहना। असरपुर के प्रेमियों ने 'नाम-उपदेश' के लिए प्रार्थना की और आपने कृपा करके भगत सिंह, अतर सिंह, प्रताप सिंह, सम्पूर्ण सिंह, हरदम सिंह और हरदयाल सिंह आदि प्रेमियों को नाम उपदेश की कृपा की। साथ ही अभ्यास का ढंग बताया कि श्वास जब ऊपर को जाए 'सतिनाम' जब बाहर आए तक 'वाहिगुरु' जपना। इस प्रकार उपदेश देकर वचन किया। जब हम कभी दोबारा आएँगे तो किसी अन्य साधु को भी साथ लेकर आएँगे जो तुम्हें गुरुवाणी का शिक्षण देगा। जब प्रस्थान किया तो कुछ प्रेमियों ने प्रार्थना की, महाराज, हमें भी नाम-उपदेश देने की कृपा करो। हजूर बोले, अब समय नहीं है। तुम सब अमृत छक लेना, स्त्रियों को भी छकाना। इस प्रकार अमृत रूपी उपदेश का छींटा लगाकर और दोबारा आने का वचन देकर बहती नदी की भाँति ईश्वरीय मौज में आगे को चल पड़े।

पहली बार दौद जाना

बात सम्भवतः 1940 के अंत की है जब वर्षा ऋतु तो आठ-नौ मास का अवकाश लेकर अपने देश की ओर प्रस्थान कर गई। उसका सिंहासन रिक्त जानकर आश्विन, कार्तिक की सुहावनी ऋतु ने आ घेरा। लेकिन **जो उपजिउ सो बिनस है** के अटल नियमानुसार यह भी अधिक देर तक स्थाई न हो पाई, क्योंकि इससे भी शक्तिशाली शरद् ऋतु ने इसको प्रथम आक्रमण में ही विजित कर लिया। मगहर मास के अंतिम दिन थे जबकि संत दर्शन सिंह जी को साथ लेकर अलौकिक प्रियतम जा पहुँचा गाँव 'सीहाँ दौद' की उन गलियों में, जहाँ व्यतीत किया था कभी बाल्यकाल और जहाँ व्यतीत की थी कभी

किशोरावस्था और किए थे सांसारिक क्रिया कलाप, कभी यौवन में। गाँव के पश्चिम की ओर एक तंग वीथी (गली) से होते हुए 'सतिनाम' बोलकर जा खड़े हुए उस घर के सम्मुख—जहाँ से कभी प्रस्थान किया था अलौकिक व्यापार हेतु। भीतर से लक्ष्मण सिंह की धर्मपत्नी बीबी ज्ञान कौर ने यह जानते हुए कि कोई फ़कीर है, मक्की की रोटी पर साग रखकर आकर हाथों पर रखा, लेकिन जब चेहरे की ओर ध्यानपूर्वक देखा-कि एक बीस-पच्चीस वर्ष का शान्त चेहरे से युक्त कोई साधु है, दूसरा कोई चालीस-पचास के लगभग आयु का महात्मा है जिसका तेजयुक्त चेहरा लाल की भाँति भासमान है। नेत्रों की पलकें किसी अलौकिक मस्ती में झुकी हैं कि पाँवों से ऊपर दृष्टि ही नहीं जाती और न ही ये पहचानते हैं कि सम्मुख खड़ा व्यक्ति पुरुष है या स्त्री। बीबी के भीतर एक झनझनाहट हुई-कभी वही न हो जो सुना था कि हमारे घर के जो साधु बनकर ऋषिकेश रहते हैं। विचार में डूब गई कि प्रार्थना करूँ महाराज! कृपा करो बैठकर भोजन ले लो, लेकिन चेहरे पर सूर्य जैसे तेज को देखकर झिझक एवं ग्रामीण महिलाओं के लज्जालु स्वभाव के अनुरूप शांत ही रही। आप वहीं खड़े भोजन लेकर तंग वीथियों (गलियों) को पार करते गाँव के बाहर पूर्व की ओर जोहड़ के किनारे खड़े, वट वृक्ष के नीचे जा विराजे। आपके गली में से गुज़रते सबसे पहले बनिया परिवार की एक स्त्री ने पहचान लिया कि यह तो वही निक्का सिंह है जो बारह-तेरह वर्ष पूर्व घर का त्याग करके संत बन गया था। उसी बनिया स्त्री ने शीघ्र ही लक्ष्मण सिंह के घर जाकर बताया। ज्ञान कौर तो पहले ही भीतर से पछता रही थी कि कोई भी हो, है तो साधु ही। बीबी के मायके 'बड़ी टिब्बे' गाँव में थे। वहाँ बाल्यकाल में साधु-महात्मा आते-जाते देखे थे और लोगों में आदर होते भी देखा था। उसे साथ में यह भी पता था कि विरक्त महात्मा किसी के घर में भोजन कम ही करते हैं।

लेकिन प्रार्थना करना तो मेरा कर्त्तव्य था। बनिया-स्त्री के बताने पर तो वह चिंता के गहरे सागर में डूब गई। इतने में सर्वत्र गाँव में यह समाचार फैल गया कि निक्का सिंह संत बनने के बाद पहली बार घर आए हैं। हजूर के बचपन के साथी नम्बरदार बचिंत सिंह, ज्वाला सिंह और काकू दर्ज़ी आदि अन्य भी कई व्यक्ति वट वृक्ष के नीचे आपको बहुत प्रेम के साथ आकर मिले। इतने में पता लगने पर लक्ष्मण सिंह भी आ पहुँचा। लगभग अर्ध रात्रि वट-वृक्ष के नीचे बैठे बाल्यकाल की कुछ स्मृतियों को स्मरण कर गाँव के प्रेमी चकित हो रहे थे—**कि होनहार बिखान के होत चिकने पात।** वे उस समय ही यह संकेत दे रहे थे कि यह मान सरोवर का हंस है। संयोगवश ही यहाँ आया है अन्यथा यह निवासी तो किसी अन्य देश का है। हजूर ने भी अपने धनी देश की बातें सुनाकर उन्हें इस निर्धनता के देश से निकल भागने के लिए प्रेरित किया। इतने में रात अधिक हो जाने के कारण सबको कहा कि जाओ अब अपने घरों को। एक-एक करके नमस्कार करते सब सज्जन अपने घर को चले गए, लेकिन लक्ष्मण सिंह मोहवश अभी भी बैठा रहा। सबके जाने के पश्चात् प्रार्थना की-महाराज! घर चलो। हजूर बोले—तुम अपने घर जाओ भाई! हमारे लिए जैसे अन्य वैसे ही तुम। लक्ष्मण सिंह का दोबारा प्रार्थना करने का साहस नहीं हुआ। उसके जाने के पश्चात् आप भी उठकर खेतों की ओर चल पड़े। गाँव के समीप एक कटे हुए गन्नों के खाली खेत में जा बैठे। चाँदनी रात थी, एक नवयुवक गेहूँ को नहर का पानी दे रहा था। चाँद की चाँदनी में उसकी दृष्टि दो साधुओं पर पड़ी तो समीप आकर नमस्कार कर प्रार्थना की, महाराज! घर से भोजन लेकर आऊँ! आप बोले-नहीं भाई-भोजन हमने ले लिया है। महाराज! मैं घर से दो रज़ाइयां ले आता हूँ—रात्रि यहीं व्यतीत कर लो। नहीं भाई हमें रज़ाइयों की भी आवश्यकता नहीं है, यह कहते हजूर के चेहरे पर इतना तेज आ गया कि चन्द्रमा का प्रकाश भी मन्द पड़ गया। किसी दैवी प्रेरणा में आकर पावन अधर हिले, मधुर-मधुर स्वर, लेकिन ऊँची आवाज़ में प्रिय की याद इस प्रकार की—

मित्र पिआरे नूं हालु मुरीदां दा कहणा॥
तुधु बिनु रोग रजाईआं दा ओढण नाग निवासां दे रहणा॥
सूल सुराही खंजर पिआला बिंग कसाईआं दा सहणा॥
यारड़े दा सानूँ सथर चंगा भठ खेड़ियां दा रहणा॥

यह उच्चारण करते हुए हजूर किसी अलौकिक आनन्द में लीन हो गए। प्रेमी ने फिर प्रार्थना की महाराज! सर्दी अधिक है, यह गन्ने का खेत प्रात: कोहरे से श्वेत हो जाता है, आपके पास एक चादर के अतिरिक्त कोई मोटा वस्त्र भी नहीं है, इस प्रकार रात्रि कैसे व्यतीत होगी। हजूर बोले-तेरा नाम क्या है? जी-मुखतियार सिंह है। किसका पुत्र है? महाराज, हरी सिंह का। वह...... जो छोटा सा होता था। हाँ-महाराज! तुमने रज़ाई नहीं ली-तेरी रात्रि किस प्रकार व्यतीत होगी? महाराज मैं तो गेहूँ को पानी दे रहा हूँ इसलिए काम करते को ठंड नहीं लगती। हजूर बोले-हम ही निकम्मे हैं? जाओ अपना पानी संभालो। आप और संत दर्शन सिंह जी वहीं गन्ने के खाली खेत में पत्ती पर बैठ गए। मुखतियार सिंह प्रात: जब जल-पान पूछने के लिए गया तो उसको दर्शन नहीं हुए। हाँ-पत्ती में कोई संकेत अवश्य प्रतीत हो रहा था कि यहाँ दो आत्माएं कुछ समय व्यतीत करके गई हैं।

भगत मिलाप कि भरत मिलाप?

आम कहावत है कि 'प्रेम में नियम' नहीं रहता। अकाल पुरख (कालातीत पुरुष) वाहिगुरु भी अपने भक्त वत्सल स्वभावानुसार प्रेमियों के प्रेम के वशीभूत हुआ, अपने स्व-निर्मित नियमों एवं मर्यादा की परवाह नहीं करता, लेकिन शर्त यह है कि प्रेम सच्चा रहे।

भगवान् राम जिस समय पंचवटी से चले, मार्ग में अनेक बड़े-बड़े मठाधीशों ने अपने-अपने आश्रमों में ले जाने के लिए याचनाएं कीं, लेकिन बिना किसी बड़प्पन की परवाह किए, एक शूद्र जाति की स्त्री शबरी के प्रेम में वशीभूत शीघ्रता से उसकी पर्णकुटी में पहुँचे, क्योंकि उसके हृदय की गहनता में प्रेम का प्रबल आकर्षण था। इसी प्रकार जिस समय चौदह वर्ष का बनवास व्यतीत करके भगवान् अयोध्या पहुँचे तो सब विद्वान, वशिष्ठ आदि गुरु लोक, समस्त परिवार के सदस्य और नगर के समस्त नर-नारी नगर से बाहर दर्शन और स्वागत हेतु पहुँचे हुए थे। भगवान् राम मर्यादा पुरुषोत्तम अवतार माने जाते हैं। मर्यादानुसार सर्वप्रथम वशिष्ठ आदि गुरुओं को मिलना चाहिए था, फिर कौशल्या आदि माताओं को मिलना मर्यादानुकूल था, फिर भ्राताओं और नगर निवासियों को लेकिन हुआ—इसके अत्यन्त विपरीत। भगवान् ने गुरुजनों की ओर भी ध्यान नहीं दिया और माताओं के स्नेह की भी परवाह नहीं की, लेकिन सर्वप्रथम अनुज भरत से भेंट की, प्यार किया, कुशल क्षेम पूछी और मर्यादानुसार अन्य सबको मिले। भगवान् की इस क्रिया पर बुद्धिमान लोगों ने किन्तु परन्तु भी किया।

प्रार्थना की, महाराज! मर्यादा पुरुषोत्तम होते हुए भी आप मर्यादा का हनन कर रहे हो फिर अन्य लोगों का क्या हाल होगा? भगवान् बोले! मर्यादा का हनन नहीं किया। यह तो आदि काल से मेरा विरद चला आ रहा है कि अपने भक्तों की प्रेमपूर्ण याद को मैं एक क्षण भी उपेक्षा नहीं कर सकता। मैं यह नहीं कहता कि आपके भीतर प्रेम नहीं है, अपितु मैं जानता हूँ कि आप सब प्रेम के वशीभूत हुए प्रात:काल से मेरी प्रतीक्षा कर रहे हो। मैं यह भी जानता हूँ कि मर्यादानुसार सर्वप्रथम गुरु लोगों का पूजन करना चाहिए था और माताओं का सत्कार करना चाहिए था, लेकिन भरत ने अपने मन के भीतर यह

प्रतिज्ञा कर रखी थी कि अमुक समय तक यदि दर्शन न हुए तो मैं प्राण त्याग दूँगा। इसके लिए एक क्षण की देरी भी मेरी भक्त वत्सलता को कलंकित कर देती। संभवत: आज भी यही आकर्षण मुझे खींच रहा है।

मुर्गों की बाँग से यह मालूम हो रहा है कि सवा पहर रात्रि शेष रह गई है। सर्दी द्वारा पीड़ित चन्द्रमा भी सम्भवत: अपने बैडरूम में विश्राम करने के लिए विवश हो गया अथवा अपने पर-उपकारी स्वभाव के अनुसार यहाँ से सर्दी की गठरी बाँधकर किसी तप रही धरती पर शीतल किरणों की वर्षा करने के लिए कहीं और चला गया है। बातें जो भी हों, लेकिन यहाँ से वह प्रस्थान कर गया है।

ईश्वरीय आज्ञा हुई—दर्शन सिंह भाई नौकरी क्या और आराम क्या? जिस स्वामी की नौकरी करनी है चौबीस घंटे उसकी अदालत में उपस्थित रहना ही तो जीवन है। नौकर ने तो केवल आज्ञा का पालन करना है—आगे मालिक की इच्छा-वह देश में रखे अथवा विदेश में भेजे। रात्रि से ही कहीं कोई पुकार रहा है। चल-यहाँ से चलें-आगे जहाँ वह ले जाए उसकी इच्छा। हमने तो आज्ञा में ही रहना है शेष करने कराने वाला तो वह स्वयं है। गन्ने के खेत से उठकर नहर के जल में स्नान किया और बस स्वामी की आज्ञा का पालन करने हेतु कहीं दूर वतनों को प्रस्थान कर दिया। जहाँ महसूस होता मधुकरी करके शारीरिक भूख का निवारण कर लेना और जहाँ थकान महसूस होती तो चार घंटे विश्राम कर लेना। विश्राम क्या-मानों प्यारे के प्रेम में ओत-प्रोत हुए इस शरीर रूपी अश्व को थोड़ा विश्राम करवा देना। फिर उठकर वही यात्रा-निरन्तर यात्रा।

इतनी शीघ्रता से यात्रा क्यों कर रहे हैं? पूर्ण तौर पर तो वे स्वयं ही जाने अथवा उनका परमात्मा, लेकिन ऐसा लग रहा है कि जैसे उनके परमेश्वर ने किसी आवश्यक कार्य को शीघ्रातिशीघ्र करने के लिए आज्ञा दी हो। इस प्रकार दिन कहीं एवं रात्रि कहीं अन्य। इस प्रकार विश्राम करते बड़ी तेज़ी से यात्रा करते कुछ दिनों के पश्चात् लाहौर पहुँच गए। पाँचों नदियों की मध्या बहन रावी के तट पर एक वृक्ष के नीचे रात्रि व्यतीत की। ब्रह्ममुहूर्त में रावी में स्नान करके श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी के पावन स्थान की पवित्र धूलि मस्तक को लगाई। गुरु के लंगर में भोजन आदि किया और फिर आगे प्रस्थान कर दिया, क्योंकि कोई अज्ञात शक्ति बड़ी तीव्र गति से आकर्षित कर रही है। इस प्रकार वायु की तीव्र गति के समान यात्रा तय करके शेखूपुरा पहुँच गए।

नगर से बाहर खेतों में एक छोटी सी कुटिया बनी हुई है, लेकिन इस समय उसका द्वार बन्द है। बाहर एक साधारण सा तख्तपोश पड़ा है। अन्य किसी प्रकार की सांसारिक वस्तु दृष्टिगोचर नहीं हो रही। ध्यान से देखा तो ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कोई सीमा से अधिक अत्यन्त त्याग वृत्ति वाला महात्मा यहाँ समय व्यतीत कर रहा हो। आप जिस समय उस कुटिया के समीप पहुँचे तो किसी अलौकिक विस्माद अवस्था के अकथनीय रंग में भीगे अपने पवित्र मुख से बोले-फकीर वही है जो सदैव वर्तमान में रहे, उपरामता की अंतिम सीमा में निवास करे अर्थात् अतीत का किंचित अंश भी मन में न आने दे और भविष्य भी कल्पना से पूर्ण रूपेण अछूता रहे। अतीत की स्मृतियों को बार-बार मन में विचार कर नेत्रों से आँसू बहाते रहना महात्माओं को शोभा नहीं देता। प्रत्येक स्थिति में उस परमेश्वर को याद रखना फकीरी की अंतिम अवस्था है और यही साधु का निज देश है।

इससे नीचे तो संसारी लोग अतीत एवं भविष्य की कल्पना में विचरण करते हैं, महात्मा नहीं। मकान के भीतर एक त्याग मूर्ति-वैराग्य की बाढ़ में नेत्रों से निरंतर जल प्रवाहित कर रहे हैं। संत भगत सिंह बैठे हैं—जब यह परिचित

आवाज़ कानों से सुनाई देकर हृदय में गई तो एकाएक जल्दी में उठे कि सब कुछ भूल गए, कुछ न सूझा कि क्या करूँ, कहाँ बैठाऊँ, कौन-सा वस्त्र नीचे बिछाऊँ, जल्दी-जल्दी में अपनी पगड़ी उतार कर ही बिछाने लगे, लेकिन हज़ूर ने ऐसा करने नहीं दिया। चरणों पर गिरने लगे, लेकिन इससे पूर्व ही छाती से लगा लिया। नेत्रों से तो पहले ही अश्रु प्रवाहित हो रहे थे—वे तो चल ही रहे हैं, लेकिन रंग बदल गया। इसे पूर्व वैराग्य-सरिता प्रवाहित हो रही थी अब प्रेम की नदी ठाठें मारने लगी। ऐसे लग रहा था जैसे कोई गहन रहस्य हाथ में आ गया हो अथवा किसी छोटी-मोटी रुकावट में रुकी हुई गाड़ी, थोड़े धक्के के साथ ही निकलकर किसी उद्देश्य पर पहुँच गई हो। बात जो भी है ये वही जाने, लेकिन नेत्रों से प्रेम-जल उसी प्रकार प्रवाहित हो रहा है, लेकिन चेहरा किसी शान्त रस में डूबा और अलौकिक तेज में इस प्रकार भासमान हो उठा—जैसे बसंत ऋतु में सम्पूर्ण वनस्पति अथवा समस्त ताप सहन करने के पश्चात् स्वर्ण चमक उठता है अथवा लोहा पारस को छूकर शुद्ध स्वर्ण का रूप धारण कर लेता है। समीप खड़े संत दर्शन सिंह जी आश्चर्यचकित हो रहे हैं कि यह भगत मिलाप है अथवा भरत मिलाप?

महाराज ने बड़े प्रेमपूर्वक संत भगत सिंह जी को बराबर तख्तपोश पर बैठा कर वचन किया, आपने कुम्भ के अवसर पर यहाँ आने का वचन लिया था, वह परमेश्वर ने आज पूर्ण कर दिया। इस प्रकार संत भगत सिंह जी के प्रेमवश यहाँ कई दिन व्यतीत किए। संत भगत सिंह जी की यहाँ पर्याप्त संगत थी, सबको महाराज के चरणों में लगाया। लाहौर से श्री जसवंत लाल बत्तरा भी आए हुए थे। उन्होंने प्रार्थना की, महाराज लाहौर चलो! हजूर बोले—अब तो हमारा आगे को जाने का विचार है फिर परमेश्वर ने चाहा तो अवश्य आएंगे। लायलपुर का एक सौ पंद्रह नम्बर चक्क निवासी मुकंद लाल पटवारी भी आया था। उसने प्रार्थना की महाराज! कृपा करके लायलपुर चलो।

आपने कहा-हमारा संकल्प गुरु नानक देव महाराज के पवित्र स्थान चूहड़काने 'सच्चा सौदा' और ननकाना साहिब के दर्शन करने का है-फिर जैसे उसकी इच्छा। पटवारी ने प्रार्थना की महाराज माघ के मास में प्रतिवर्ष अखण्ड पाठ करवाकर जितना हो सके लंगर आदि करता हूँ। इसलिए आप कृपा करो।

माघ मास की कोई तिथि देने की कृपा करो। हज़ूर ने आज्ञा की ठीक है अमुक तिथि को आ जाएंगे। इस प्रकार पर्याप्त दिन संत भगत जी के प्रेमवश शेखूपुरा व्यतीत करके आगे को प्रस्थान किया।

पाकपटन की यात्रा

शेखूपुरा से प्रस्थान कर धीरे-धीरे यात्रा करते चूहड़काने पहुँच गए। श्री गुरु नानक देव महाराज के पवित्र स्थान 'सच्चा सौदा' के दर्शन किए। एक दो दिन यहाँ ठहरकर श्री ननकाना साहिब की पावन भूमि पर पहुँच गए। जगत् गुरु बाबा जी के जन्म स्थान की चरण धूलि मस्तक को लगाई। कई दिन यहाँ निवास करने के पश्चात् सम्बन्धित स्थानों पट्टी साहिब, क्यारा साहिब, जण्ड साहिब अर्थात् जहां-जहां गुरु बाबा जी ने बाल्यकाल में अलौकिक कौतुक किए उपरोक्त सभी गुरु स्थानों के दर्शन करने के पश्चात् पटवारी मुकंद लाल को दिए वचनानुसार लायलपुर एक सौ पंद्रह नम्बर चक्क पहुँचे। पटवारी के खेत में कुएँ पर निवास किया। पटवारी परिवार बहुत प्रेम के साथ सेवा करता। प्रत्येक वर्ष की भाँति इसने अपने घर श्री अखण्ड पाठ साहिब करवाया, भोग उपरान्त गुरु के खुले भण्डारे वितरित हुए। इस प्रकार पटवारी का कार्य सम्पन्न हो जाने पर अब

आपने आगे जाने के लिए प्रस्थान किया, तो एक प्रेमी परिवार ज़ैलदार श्री जगत सिंह चहलवंशी जिसका पूर्व सम्बन्ध तो शेरपुर गारिंड ज़िला होशियारपुर से था, यहां भूमि अलाट होने के कारण अब सपरिवार यहीं रहता था और कई दिनों से वह भी आपके दर्शन एवं सत्संग कर रहा था—प्रार्थना की, महाराज कुछ दिन मेरे बाग में भी निवास करो। हज़ूर ने उसके प्रेम को देखकर उसके उद्यान में जाकर निवास किया। आप दोनों समय गुरुवाणी की किसी पोथी की कथा करते, तो एक सौ पंद्रह नम्बर चक्क के समीप के पर्याप्त लोग सत्संग में सम्मिलित होते। संगत और महाराज जी की ज़ैलदार जगत सिंह एवं पटवारी मुकंदलाल ने मिलकर इतनी सेवा की कि हज़ूर ने इनके प्रेमवश-यहीं तीन मास व्यतीत कर दिए। अब यहाँ से संत दर्शन सिंह जी को साथ लेकर और यहाँ की संगत में प्रेम अंकुर उत्पन्न कर आगे की ओर प्रस्थान किया। अब यात्रा सहज भी हो रही है, जहाँ रात्रि हो गई वहाँ विश्राम कर लिया, जहाँ भूख लगी वहाँ मधुकरी के द्वारा उदरपूर्ति कर ली। शायद उस प्रभु की आज्ञा अब कुछ इस तरह ही है। इस प्रकार उस परमेश्वर की रज़ा में राज़ी रहकर यात्रा करते-करते कुछ दिनों के पश्चात् एक घना जंगल आया। संत दर्शन सिंह जी ने प्रार्थना की, महाराज! बड़ा घना वन है, मनुष्य भी कभी-कभी नज़र आते हैं।

हज़ूर बोले, दर्शन सिंह! सम्भवतः यह वही वन है जहाँ बाबा फ़रीद ने भूख-प्यास के व्रत और सर्दी-गर्मी के कष्ट किए थे—छत्तीस वर्ष तक। भारी तपस्या करते, ऐसे शब्द भी सम्भवतः यहाँ के सम्बन्ध में ही उच्चरित किए हैं—

फ़रीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख॥
जिना खाधी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख॥

(पृष्ठ १३७९)

इतनी कठोर साधना की बाबा फ़रीद ने, लेकिन उस प्रभु के दर्शन न हुए। निराश होकर शरीर से भी इतनी घृणा हो गई कि कौवों, कुत्तों के सम्मुख फैंक दिया और बेपरवाह होकर कह दिया कि आँखों को छोड़कर चाहे समस्त भक्षण कर लो। उस समय का संकेत भी मिलता है—

कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु॥
ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस॥

(श्लोक फ़रीद जी, पृष्ठ १३८२)

दर्शन सिंह! इतनी तड़प थी दीदार की बाबा फ़रीद के मन में। ऐसी अवस्था में ही किसी प्रेमी ने उच्चारण किया है—

असां तलब दीदार दी, बिया तलब ना काई॥

वैसे भी प्रेम की अग्नि साधक के हृदय में जब प्रज्वलित होती है, उस समय शरीर, मन, बुद्धि एवं इन्द्रियों में से 'मैं', 'मेरी' के कबाड़ को जलाकर राख कर देती है—

यथा— **प्रेम अगन जा तन लगै जारे मन बुधि देह॥**
सुलग सुलग कोई काल महि सब इंदरी होई खेह॥

ऐसी अवस्था बाबा फ़रीद की हो गई, लेकिन फिर भी अभी प्रभु के दर्शन न हुए। एक दिन उस प्रभु ने दया की, आकाशवाणी हुई, कि फ़रीद! यदि मन में निश्चय है उस प्रभु को मिलने का, तो उनको मिल जिन्होंने प्रभु के दीदार कर लिए हैं। निगुरे व्यक्ति को आज तक कभी प्रभु की प्राप्ति नहीं हुई। लाठी पीटने से साँप नहीं मर सकता, यह तो किसी गारुड़ी के मंत्र से ही वश में आएगा, इसलिए यदि इच्छा है इस मन रूपी सर्प को वश में करने की तो पहुँच पाकपटन। वहाँ बैठा है इसका गारुड़ी।

फ़रीद संकेत समझकर पहुँचा पाकपटन-पूर्ण गुरु की शरण में। चरणों पर नमस्कार करते ही वह अनुभूति, वह आनन्द, वह शान्ति प्राप्ति हुई जो छत्तीस वर्षों में आज तक अनुभव नहीं हुई थी। इस प्रकार बाबा फ़रीद की कठोर साधना की चर्चा करते, दिन-रात यात्रा करते जा पहुँचे पाकपटन नगर, जो सतलुज के तट पर स्थित है। बाबा फ़रीद के स्थान के दर्शन किए, जहाँ से फ़रीद को अपने गुरु की सेवा करते उसकी असीम खुशी प्राप्त हुई थी जिसके परिणामस्वरूप हृदय के भीतर ही उस प्रभु का दीदार प्राप्त हुआ। फिर फ़रीद ने ऐसा उच्चारण किया—

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि॥
वधी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि॥

(पृष्ठ १३७८)

इस प्रकार यहाँ पर्याप्त समय व्यतीत हुआ। बाबा फ़रीद के वंशज को मिले और गद्दी के मालिकों से ज्ञान-चर्चा की। इस प्रकार पर्याप्त समय पाकपटन और आस-पास के क्षेत्र में व्यतीत करके 'शाह जीवणे' की ओर प्रस्थान किया। धीरे-धीरे यात्रा करते 'शाह जीवणे' जा पहुँचे।

जिस समय गुरु अमरदास जी ने बाईस प्रमुख शिष्यों को ब्रह्मज्ञान की अलौकिक देन देकर गुरु नानक के घर का उपदेश फैलाने के लिए दूर-दूर क्षेत्रों में भेजा था उस समय 'मथो मरारी' को भी एक 'मंजी' देकर यहाँ भेजा था। उस समय से गुरु घर की इस महान् गद्दी पर बड़े-बड़े चमत्कार करने वाले महापुरुष होते हए हैं, इसलिए आप किसी अलौकिक आज्ञा में बंधे इस पवित्र स्थान के दीदार करने के लिए पहुँचे। यहाँ के गद्दी नशीन महापुरुषों ने आप जी का बहुत आदर किया, इसलिए उनके प्रेम के वशीभूत हुए यहाँ कई मास व्यतीत कर दिए। फिर यहाँ से प्रस्थान कर धीरे-धीरे यात्रा करते जसवंत लाल बत्तरा को दिए वचनानुसार लाहौर पहुँच गए। रावी के तट पर बाहर कहीं निवास किया। पता लगने पर जसवंत लाल बत्तरा भी आ पहुँचे। यह प्रेमी परिवार कई दिन बहुत प्रेम के साथ सेवा करता रहा। एक दिन प्रार्थना की कि महाराज! मुझे 'नामदान' देने की कृपा करो। आज्ञा की, अभी गुरुवाणी का पाठ नियम से करता रह, जब कभी आएंगे तो 'नाम' देंगे। जसवंत लाल ने प्रार्थना की अब आपका कहाँ जाने का प्रोग्राम है?

आज्ञा हुई कि ऋषिकेश जाना है, जसवंत लाल ने प्रार्थना करके रेल की टिकटें ले दीं और इस प्रकार वापिस ऋषिकेश आए।

पुनः असरपुर

बात सम्भवत: 1942 के अंत की है जब आप जी बाबा बेअंत सिंह जी और संत दर्शन सिंह जी को साथ लेकर असरपुर गाँव पहुँचे, क्योंकि आप ने दो वर्ष पूर्व उन लोगों को वचन दिया था कि जब दोबारा आएंगे तो किसी संत को साथ लेकर आएंगे जो तुम्हें गुरुवाणी का शिक्षण देगा। आपके ज्ञान-पराग से संगत तो पहले ही बहुत प्रभावित थी, इसलिए पता लगने पर आस-पास की सब संगत आनी आरम्भ हो गई। संत दर्शन सिंह जी के पास कुछ व्यक्ति पंजाबी शिक्षण ग्रहण करने लगे। जो पहले से ही कुछ पंजाबी जानते थे, वे नितनेम की वाणियों, पाँच ग्रन्थी आदि पोथियों का शिक्षण लेने लगे। आप जी ने सायं को तीसरे पहर गुरु-इतिहास अर्थात् 'सूरज प्रकाश' की कथा आरम्भ की। धीरे-धीरे कथा में पर्याप्त लोग आने आरम्भ हो गए। असरपुर के अतिरिक्त अन्य दो-तीन गाँवों के लोग भी आने लगे। 'मठैड़ा' गाँव का तेजा सिंह, मूल पाठ की पंक्ति पढ़ता और आप उसकी भावपूर्वक व्याख्या करते थे।

गुरु इतिहास रोचक होने के कारण दिनों-दिन संगत बढ़ने लगी। पुनिया गाँव के व्यक्तियों के अतिरिक्त सरवन सिंह नम्बरदार और जत्थेदार वज़ीर सिंह निरंतर आ रहे थे। समीप के गाँव बुड्ढ़णपुर में अधिक संख्या मुसलमान भाइयों की थी। वहाँ से भी दो-तीन वृद्ध व्यक्ति प्रतिदिन आते थे, क्योंकि कथा उपदेश अद्वैतवादी होने के कारण किसी के मन को चोट नहीं पहुँचती थी, अपितु रस आने लगा। इस कारण कम्बोह सिक्ख ज़मींदार, ब्राह्मण एवं मुसलमान आदि सब मतों के लोग पहुँचकर बड़े प्रेमपूर्वक कथा श्रवण करते थे। इस प्रकार गुरु नानक प्रकाश से आरम्भ करके पाँचवें पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी के जीवन तक कथा करते पर्याप्त समय व्यतीत हो गया। सब लोग बड़े प्रेम से श्रवण करते रहे। जब छठे पातशाह श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी की जीवन-लीला आरम्भ हुई। उसमें जंगी मश्कों, घुड़सवारी आदि शाही साज-सज्जा की तैयारियां आरम्भ हुईं तो मुसलमान भाई, जो प्रतिदिन कथा श्रवण करने आते थे, उनके मन में कुछ शंकाएं उत्पन्न हो गईं कि कथा श्रवण कर हिन्दू-सिक्खों के मन में मुसलमान के प्रति घृणा उत्पन्न हो जाएंगी। फिर एक दिन कथा में श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी के प्रथम युद्ध का वर्णन आया। युद्ध में खण्डा चलना स्वाभाविक था। सुनकर बुड्ढ़णपुर वाले मुसलमान भाइयों में से एक बुज़ुर्ग बोला, महाराज! आगे तो कथा प्रतिदिन बड़ी सहज और शान्त रस में करते थे, लेकिन आज तो और ही समा बाँध दिया। महाराज बोले, मियां जी! गुरु घर किसी जाति, धर्म अथवा सम्प्रदाय का विरोधी नहीं था। हाँ, अत्याचार के विरोधी अवश्य थे।

ज्ञानवान् पुरुष की दृष्टि सम्प्रदायों, धर्मों के विष से बहुत उदार होती है, वह सब जीवों में एक परमेश्वर को ही देखता है और उसकी दृष्टि में कोई पराया नहीं होता। फिर गुरु साहिब तो जिनके चरित्र सुन रहे हो, वे तो भगवान् के नूर थे। उनकी दृष्टि में तो रंचमात्र भी द्वैत का स्थान नहीं था। आपने पिछले दिनों में गुरु नानक प्रकाश सुना ही है कि एलनाबाद में गुरु बाबा जी ने बाबर के अत्याचारों को देखकर कैसे खरी-खोटी सुनाई और फिर शरण में आए को कई वंशों तक बादशाहत का वरदान भी दे दिया। उसकी कैद में से केवल हिन्दू ही मुक्त नहीं किए, अपितु मुसलमान लड़के-लड़कियों को भी मुक्त किया और अब छठे पातशाह श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी की जीवन-लीला पर विचार चल रहा है। पिछले दिनों में यह जिक्र आया था कि एक लावारिस मुसलमान लड़के 'पैंदेखान' को छठे पातशाह महाराज ने चरण-शरण ही नहीं दी, अपितु पुत्रों के समान पालन-पोषण भी किया। प्रत्येक प्रकार की विद्या देकर उसे निपुण बनाया और एक समृद्ध मुसलमान परिवार में विवाह किया और इतना आदर दिया और साधारण पद की बजाए सेनापति बनाया। अब बताओ गुरु साहिब किसी धर्म के विरोधी थे कि अत्याचार के? हजूर की वाणी से ऐसा अद्वैतवादी उपदेश सुनकर मुस्लिम भाइयों की सब शंकाएं निवृत्त हो गईं। इस प्रकार निरन्तर कई मास यहाँ ठहरकर 'सूरज प्रकाश' की कथा सम्पूर्ण की। संत दर्शन सिंह जी को आज्ञा की कि आप यहाँ ठहरकर इन लोगों को गुरुमुखी अक्षर और गुरुवाणी पढ़ाओ। लेकिन आप इन प्रेमियों को गुरुवाणी एवं गुरु इतिहास द्वारा जीवन का सत्य एवं पावन मार्ग दिखाकर अपने पर-उपकारी स्वभाव के अनुसार सूर्य की भाँति किसी अन्य देश में प्रकाश रूपी किरणें बरसाने के लिए प्रस्थान किया।

कश्मीर यात्रा

''रही वासते घेंत, समें ने इक ना मन्नी,
पल-पल गई विहा, समें खिसकाई कन्नी,
बाजी जांदे जित, कदर जो समें दी करदे,
जो रहिंदे बेपरवाह, निंत निंत जंमदे मरदे।''

महाराज! बसंत साम्राज्ञी अपने यौवन की सुगंधि यद्यपि चारों ओर बिखेर रही है, लेकिन यहाँ जो सौन्दर्य छिटक पड़ा है वह तो विलक्षण ही है। यही कारण है कि संसारी लोग धन लगाकर, शारीरिक कष्ट उठा कर और सम्बन्धियों से अलग होकर कश्मीर की रमणीय वासियों को देखने के लिए आते हैं, लेकिन यहाँ मैं एक अन्य आश्चर्य का अवलोकन कई दिनों से कर रहा हूँ कि यह जेहलम नदी का जल दिन-रात बड़ी तेज़ रफ़्तार से प्रवाहमान है।

एक क्षण के लिए भी इधर-उधर नहीं देखता, क्या इसको दूर-दूर तक फैली सुन्दरता अच्छी नहीं लगती अथवा इसको सन्देह है इसके सौन्दर्य पर? दर्शन सिंह यह बड़ा बुद्धिमान है भई, इसको इस घाटी के दर्शन करते बड़ा लम्बा समय व्यतीत हो गया है। यह भली-भाँति परिचित है कि चार दिन चाँदनी फिर अंधेरी रात। इस बसंत ऋतु के यौवन को नष्ट करने के लिए ग्रीष्म ऋतु रूपी काल ने जन्म ले लिया है। उसने जवान होते ही इस बसंत ऋतु का नामोनिशान मिटा देना है।

फिर यह इसमें छिपे रहस्य को भी भली-भाँति समझता है कि यहाँ की प्रत्येक वस्तु तो बल्ब अथवा ट्यूब के समान है जिसमें प्रकाश रूपी शक्ति तो किसी अन्य शक्ति स्थल से आती है। फिर क्यों न उस अनंत शक्तियों के स्वामी जिसमें सदैव बसन्त खिली रहती है, उसके ही दर्शन किए जाए इसलिए यह यहाँ की प्रत्येक वस्तु को कृत्रिम और कपट रूप जानकर इसकी ओर ध्यान नहीं देता, बल्कि दिन-रात यात्रा कर रहा है, शक्ति स्थल रूप अपने स्वामी-सागर में अभेद होने के लिए। इस प्रकार वार्तालाप ही हो रहा था कि 'प्रात:' अपने जीवन के आखिरी क्षण गुज़ार कर अपनी सेना-लश्कर सहित विलुप्त हो गई और समय रूपी तख्त के ऊपर सूर्य बली ने आकर अधिकार कर लिया। इतने में हजूर की कृपालु दृष्टि नदी के किनारे घूम रहे एक पुरुष पर पड़ी जिसने श्वेत वस्त्र पहने हुए थे। वह इधर-उधर घूम रहा है, लेकिन किसी अन्य पुरुष के पास नहीं जाता, किसी से बात नहीं करता। इधर-उधर देखना तो क्या था, नेत्र पाँव से ऊपर नहीं उठा रहा, लेकिन दाहिना हाथ इस प्रकार चल रहा है कि किसी के साथ मानों वार्तालाप कर रहा हो। थोड़ा ध्यानपूर्वक देखने पर इस प्रकार प्रतीत हो रहा है जैसे मन कोई गहरी चोट खाकर संसार की प्रत्येक वस्तु को छल अथवा प्रपंच समझकर भयभीत हो रहा हो अर्थात् किसी भी वस्तु को स्थिर न देखकर पूर्ण रूपेण निराश हो चुका हो। खैर-आज्ञा की कि दर्शन सिंह! इस पुरुष को बुलाकर ला। आज्ञा मानकर संत दर्शन सिंह जी उस पुरुष के पास गए और वचन किया हे प्रेमी! वे सामने बैठे महाराज आप को बुला रहे हैं। पुरुष बिना कुछ बोले साथ चल पड़ा।

हजूर के चरणों में नमस्कार की और दोनों हाथ जोड़कर खड़ा हो गया, लेकिन बोला अब भी कुछ नहीं। हजूर ने पूछा, हे प्रेमी! हम कई दिनों से तुम्हें नदी के तट पर घूमते देख रहे हैं—तुम किसी से बात भी नहीं करते-नज़र को ऊपर नहीं उठाते, लेकिन हाथों को तू इस प्रकार हिलाता-डुलाता है जैसे किसी से वार्तालाप कर रहा हो। इसमें क्या रहस्य है? वास्तविकता क्या है? महाराज! मैं कोटे नगर का निवासी हूँ। मेरा बड़ा परिवार था, धन आदि की भी कमी नहीं थी अर्थात् प्रत्येक दृष्टि से संसार में सुखी था, लेकिन मेरे देखते-ही-देखते सारा कोटा नगर धरती में समा गया। मेरे समस्त परिवार में से केवल मैं ही बचा हूँ शेष सब परिवार मेरी आँखों के सामने ही समाप्त हो गया। उस दिन से मुझे संसार की कोई भी वस्तु, कोई भी पदार्थ, कोई भी सुख अच्छा नहीं लगता। मुँह से बात करने को तो मेरा मन ही नहीं करता। मेरे हाथ बिना हिलाए अपने आप ही हिलते रहते हैं—कि यहाँ कुछ नहीं! यहाँ कुछ नहीं!! यहाँ कुछ नहीं!!!

पँजा साहिब एवं पठान देश की यात्रा

जेहलम नदी के तट पर कुछ दिन विश्राम करने के पश्चात् श्री अमरनाथ, मटन तीर्थ आदि कश्मीर के अन्य स्थानों के दर्शन-दीदार करके पँजा साहिब की ओर प्रस्थान किया। मार्ग मुज्जफ़राबाद आदि स्थानों पर पड़ाव करते हुए सहजे-सहजे श्री पँजा साहिब पहुँच गए। श्री गुरु नानक देव महाराज के पावन स्थान की धूलि मस्तक को लगाई। कुछ दिन यहाँ व्यतीत करके पवित्र स्थानों और अन्य आस-पास के दर्शन आदि करके आगे की ओर प्रस्थान किया। धीरे-धीरे पड़ाव आदि द्वारा यात्रा करते पठानों के भयभीत क्षेत्र सीमा प्रांत से भी आगे काबिल के क्षेत्र में प्रवेश किया। इस क्षेत्र में कुछ दिन ठहरने के पश्चात् यह पता चला कि यहाँ बड़े-बड़े धनी पठानों के पास बाज रखे हुए हैं—जो शर्तें आदि लगाकर मुकाबला करवाते हैं। मन में आया कि आकाश में उड़ने वाले पक्षियों में बाज़ की विशेष जगह ही नहीं, अपितु इसको पक्षियों का राजा कहा जाता है। फिर बाज का गुरु घर से भी गहरा रिश्ता है।

पहले छठे पातशाह महाराज भी बाज रखते थे फिर दशम् पातशाह को तो बाजों वाला करके ही पुकारा जाता है और ज्ञानवानों के मन के लिए यह एक मुहावरा भी प्रसिद्ध है—

मन पंखी फिरे आकाश विच, उड उड दहि दिस जाए॥
गिआन बाज़ दी झपट महि, जब लग आइया नाहि॥

फिर यह भी सुना है कि बाज़ों की कई कोटियां हैं—जैसे बाज, मूशखोर, बाज ढ़ोका टोपी वाला, लगड़, चरग, बहरी, तुर्मती, ढेती, बासा, उकब, शिकरा, सीचाना, कुही अथवा शाहीन और कुरल आदि कई कोटियों के हैं। कुछ ऐसे विचार से अथवा किसी अन्य कारण से वे आप ही जानते हैं, लेकिन मन में संकल्प पक्का कर लिया कि किसी पठान के घर जाकर बाज अवश्य देखें। पता करके एक पठान के घर पहुँचे, आगे वह चारपाई पर बैठा हुक्का पी रहा था। यह देखकर कि कोई फकीर आया है, जल्दी-जल्दी उठा, शीघ्र ही एक चारपाई डालकर उस पर साफ़ वस्त्र बिछाया। सलाम करके बड़े आदर के साथ आपको ऊपर बिठाकर प्रार्थना की। परमात्मा की कृपा से आप अल्लाह पाक के प्यारे फकीर घर आये हो—बताओ क्या लोगे। हजूर बोले-खान जी, खाना तो कुछ नहीं-प्रभु ने प्रेरणा की है आपके बाज देखने के लिए।

वह भी हो जाएगा। यदि और नहीं तो पहले कुछ दूध ले लो। महाराज जी बोले-अब तो शरीर की कोई इच्छा नहीं है यदि इच्छा हुई तो ले लेंगे। वृद्ध पठान ने उठकर अकेले बाज़ के दर्शन करवाएं और उनके एक-एक के गुण, जाति आदि कोटियों के सम्बन्ध में बताया। बाद में पठान ने खुदा के सम्बन्ध में जानना चाहा। आपने बड़े प्रेम के साथ उत्तर देकर समझाया खान साहिब! आत्म-ज्ञान ही परमात्म ज्ञान है। खान जी! जिसने स्वयं को पहचान लिया-उससे परमेश्वर दूर नहीं। फिर ऐसा आत्म-ज्ञानी इन्सान इस संसार के कण-कण में और प्रत्येक के हृदय में परमेश्वर के ही दर्शन करता है। बस इसी का नाम मंज़िलें मकसूद है। अत: इस अवस्था पर पहुँचने के लिए अर्थात् प्रभु की पहचान करने के लिए ही समस्त साधनाएं हैं।

देखो हमारे गुरु साहिब भी यही संकेत करते हैं—

आपु पछाणहि प्रीतमु मिलै वुठा छहबर लाइ॥

(वारां ते वधीक, पृष्ठ १४२०)

यथा— **आपु पछाणै हरि मिलै बहुड़ि न मरणा होइ॥**

(वारां ते वधीक, पृष्ठ १४१०)

यथा— **आपु पछाणै सोई जनु निरमलु बाणी सबदु सुणाइदा॥**

(मारू म० ३, पृष्ठ १०६५)

यथा— **आपु पछाणहि ता सचु जाणहि साचे सोझी होई॥**

(सूही महला ३, पृष्ठ ७६९)

यथा— **आपु पछाणै हरि पावै सोइ॥ साची बाणी महलु परापति होइ॥**

(आसा महला ३, पृष्ठ ४२३)

यथा— **आपु पछाणै घरि वसै हउमै त्रिसना जाइ॥**

(सिरीरागु महला १, पृष्ठ ५७)

यथा— **प्रणवति नानक गिआनी कैसा होइ॥ आपु पछाणै बूझै सोइ॥**

(सिरीराग म० १, पृष्ठ २५)

यथा— **आपु पछाणै मनु निरमलु होइ॥ जीवन मुकति हरि पावै सोइ॥**

(ग० म० ३, पृष्ठ १६१)

यथा— **आपु पछाणि मिलै प्रभु सोइ॥**

(आसा महला ३, पृष्ठ ३६४)

यथा— **आपु पछाणै आपै आप॥ रोगु न बिआपै तीनौ ताप॥**

(ग. कबीर जी पृष्ठ ३२७)

यथा— **सो बउरा जो आपु न पछानै॥ आपु पछानै त एकै जानै॥**

(बिलावल कबीर, पृष्ठ ८५५)

अत: खान साहिब-यही मनुष्य जन्म की सफलता है, लेकिन मनुष्य लाखों प्रयत्नों के बावजूद भी ऐसी आनंदमयी अवस्था को अपने आप प्राप्त नहीं कर सकता—जब तक उसे पूर्ण गुरु की प्राप्ति नहीं हो जाती, क्योंकि यह जीव मोह-निद्रा की गहरी नींद में सोया हुआ संसार रूपी सपना देख रहा है। स्वप्न में निमग्न व्यक्ति जागृत अवस्था के सम्बन्ध में कल्पना भी नहीं कर सकता। प्रभु कृपा करें इसको किसी जाग्रत पुरुष से मिलाप हो जाए—फिर इसके जागने मे देरी नहीं लगती। देखो हमारे गुरु साहिब संकेत करते हैं—

आपु पछाणै जा सतिगुरु पावै॥

(बिलावलु थिती, पृष्ठ ८४०)

अत: खान साहिब-आत्मा ज्ञानी होने के लिए अर्थात् अपनी पहचान करने के लिए किसी पूर्ण जाग्रत पुरुष की अत्यन्त आवश्यकता है। बस फिर सोये हुए पुरुष को जगाने के लिए अन्य कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता। और इस बुद्धिमान पठान की सब शंकाएं दूर कीं।

इस प्रकार किसी तरह चाहे बाज़ देखने के बहाने अथवा किसी अन्य पठानों के इस भयानक क्षेत्र में भी प्रेम की अलौकिक ज्योति को जगाने के लिए यहाँ कई मास व्यतीत कर दिए। अब 1944 का अर्ध कुंभ समीप आया। जानकर वापिस स्वदेश की ओर प्रस्थान कर दिया। यद्यपि कण-कण में व्याप्त होने के कारण सभी स्थान उसके ही हैं, कोई वस्तु, कोई स्थान, कोई हृदय पराया नहीं, प्रत्येक स्थान पर होते हुए निर्लिप्त भी हैं—**सरब निवासी घटि घटि वासी लेपु नहीं अलपहीअउ**

वाली अवस्था में ही विचरण करते हैं, लेकिन व्यवहार में कहना ही पड़ेगा कि हरिद्वार की ओर प्रस्थान किया। प्रभु रंग में रंगे, पूर्व संयोगी दर्शन सिंह को साथ लेकर स्वदेश की ओर सहजे-सहजे यात्रा कर रहे हैं। जहाँ रात्रि आ गई विश्राम कर लिया और दिन में फिर वही यात्रा। इस प्रकार यात्रा करते जेहलम नदी पर पहुँच गए। नदी के तट पर 'खलोल' गाँव के समीप एक उद्यान में रात्रि व्यतीत की। इस उद्यान का मालिक गुरदित्त सिंह चड्ढा* नाम का एक सरदार था जिसको लोग शाह जी, शाह जी, कहकर बुलाते थे। यह प्रेमी गुरुदित्त सिंह स्वभाव का अत्यन्त शुभ एवं संत सेवी संस्कारों से युक्त था। यह स्थान नावों का घाट होने के कारण आने-जाने वाले प्रत्येक मत के साधु महात्मा यहाँ से प्राय: गुज़रते थे। उन सबके लिए गुरदित्त सिंह की ओर से निवास एवं लंगर की व्यवस्था आदि का अच्छा प्रबन्ध कर दिया गया था। इसका प्रेमपूर्वक व्यवहार देखकर साधु महात्मा प्राय: यहाँ ठहर जाया करते थे। आज इसके प्रेम के वशीभूत महाराज जी भी रात्रि व्यतीत करने के लिए इस प्रेमी के उद्यान में ही ठहर गए। प्रात:काल किसी अन्य प्रेमी के प्रेमवश बहते दरिया की भाँति आगे चल पड़े।

खोख गाँव की प्रथम यात्रा

पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ॥

(ग: म ५, पृष्ठ २०४)

नाभा नगर से लगभग छ: मील की दूरी पर उत्तर की ओर एक गाँव बसा है—खोख। इस गाँव में खहरे गोत्र के जॅट सरदारों की संख्या अधिक है। यद्यपि इस गाँव में अन्य जातियों के लोग भी रहते हैं, लेकिन अधिक संख्या खहरे गोत्र वालों की है। किंचित दूर-दृष्टि से देखने पर पता चलता है कि ये निवासी गुरु-घर से पर्याप्त समय से जुड़े आ रहे हैं। जिस समय की बात चल रही है, उस समय आज की तरह गाँव-गाँव में गुरुद्वारे नहीं बने थे। किसी-किसी गाँव में ही गुरुद्वारा होता था, लेकिन इस गाँव में उस समय भी एक प्राचीन गुरुद्वारा बना था, इसलिए ये लोग गुरु-घर के प्रेमी तो थे, गुरुवाणी पर विश्वास रखते और पूजा भी करते थे, लेकिन गुरुवाणी की अन्तर्रात्मा से परिचित न थे। इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि सरकार ने किसी समय इस गाँव में दवाखाना तो खोल दिया था, जिसमें हर प्रकार की औषधियां मौजूद थीं, लेकिन वहाँ कोई डॉक्टर नहीं भेजा था, जिसके कारण लोगों को पूरा-पूरा लाभ प्राप्त नहीं हो रहा था।

सरकार के पास डॉक्टरों का अभाव था अथवा इन लोगों की सरकार तक पहुँच नहीं थी अथवा तीसरा कोई अन्य कारण था, यह तो सरकार ही जाने। वैसे ये लोग मात्र दवाखाना खुल जाने पर ही सन्तुष्ट थे। सम्भवत: डॉक्टरों की अधिक आवश्यकता को महसूस भी नहीं करते थे, लेकिन आज कुछ इस प्रकार लग रहा है जैसे इन लोगों के कोई पूर्व जन्म के शुभ कर्मों के फलस्वरूप अथवा स्वयं भगवान् ने करुणा करके सरकार द्वारा कोई विशेषज्ञ डॉक्टर भेजने का निर्णय कर लिया है।

दिन के लगभग ग्यारह बजे हैं। भादों के मास के कारण मौसम में अभी गर्मी है। गाँव के पूर्व की ओर गुरुद्वारा साहिब के आँगन में तीस-पैंतीस वर्षों का गुरनाम सिह नाम का एक सज्जन दीवार का आश्रय लेकर एकाग्रचित्त होकर पाठ कर रहा है। इतने में किसी चले आ रहे व्यक्ति के पाँवों की आवाज़ उसके कानों में पड़ी। क्या देखता है कि प्रौढ़

* *कश्मीर एवं काबिल वाली दोनों घटनाएं स्वयं महाराज जी के पवित्र मुख से उच्चरित हुईं। उपरोक्त वर्णित गुरदित्त सिंह नाम का प्रेमी सरदार उजागर सिंह सूरी गोराया वालों का नाना था।*

आयु का अवधूत साधु सम्मुख खड़ा है—जिसका कद लम्बा और चेहरा अत्यन्त सुन्दर है। एक वस्त्र खण्ड के अतिरिक्त उसने कोई अन्य वस्त्र नहीं पहन रखा है। उसके हाथ में लाठी है। सिर पर खप्पर सा रखा है जो बर्तन के समान लकड़ी का प्रतीत होता है।

पाठ कर रहा सज्जन गुरनाम सिंह जो कि आज से पूर्व साधु-महात्मा पर आस्था नहीं रखता था—एक दम उठा और नमस्कार करके प्रार्थना की महाराज! जल छक लो। हे प्रेमी! प्यास तो लगी है। गुरनाम सिंह ने कुएँ से, जो गुरुद्वारे में ही था, ठण्डा जल निकालकर पिलाया और प्रार्थना की महाराज! गर्मी बहुत है, स्नान कर लो। महात्मा ने कहा कि ठीक है स्नान भी करना है। गुरनाम सिंह कुएँ से पानी निकालता गया और महात्मा स्नान करते गए। स्नान करने के पश्चात् गुरनाम सिंह ने प्रार्थना की, महाराज! लंगर का समय हो गया, कृपा करके लंगर छक लो। महात्मा कुछ देर तक मौन खड़े रहे मानों कुछ सोच रहे हों। कुछ देर के पश्चात् बोले-ठीक है भाई छक लेते हैं, घर चले गए। गुरनाम सिंह की माता जी ने नीचे एक वस्त्र बिछा दिया, महात्मा उस पर बैठ गए। माँ ने घी-शक्कर के साथ लंगर छकाया और बाद में खद्दर के चार गज नए वस्त्र पर एक रुपया रखकर माथा टेका। महात्मा जी ने कहा कि माँ यह क्या है? महाराज यह आप जी के लिए भेंट है। महात्मा जी ने कहा कि यह अपना रुपया उठा लो। लेना तो हमने वस्त्र भी नहीं था, लेकिन आज परमेश्वर का कुछ ऐसा ही आदेश है—यह ले लेते हैं। महात्मा जी ने वस्त्र तो अपने शीश पर रख लिया और जब चलने लगे तो गुरनाम सिंह ने प्रार्थना की—महाराज! मेरे कुएँ पर एक कमरा बना हुआ है—साथ में एकांत भी है आप कुछ समय विश्राम कर लो। महात्मा फिर किसी सोच में खो गए। कुछ क्षण के पश्चात् बोले-ठीक है-चल देख लेते हैं। गुरनाम सिंह एक चारपाई सिर पर उठाकर आगे-आगे चल पड़ा और साथ-साथ महात्मा भी चलते-चलते कुएँ पर पहुँच गए।

कुँआ गाँव से पर्याप्त दूरी पर था। एकांत एवं सुन्दर स्थान देखकर बोले—हे प्रेमी! प्रभु आज क्या लीला कर रहा है? हमने आज तक किसी के घर में बैठकर भोजन नहीं किया, भिक्षाटन करके ही भोजन करते हैं, लेकिन आज किसी दैवयोग से अथवा प्रेमवश ऐसा हो रहा है। इस एकांत स्थान को देखकर मन में आता है कि कुछ समय यहीं व्यतीत करें। गुरनाम सिंह ने प्रार्थना की महाराज! मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी यदि आप यहाँ रुक जाएंगे। प्रभु का आदेश समझकर महात्मा आज यहीं ठहर गए। लंगर तो आप मधुकरी करके ही करते थे, लेकिन दूध गुरनाम सिंह प्रतिदिन घर से ले आता। लंगर लेने के लिए गाँव में एक बार जाते, किसी घर के आगे जाकर 'सतिनाम' बोलते। गली में खड़े ही भोजन हाथ में ले लेते और दाल लकड़ी के खप्पर में डाल लेते और उसी खप्पर में ही बाद में लस्सी डलवा कर छक लेते। क्षुधा शान्त होने पर उसी स्थल से लौट आते। यदि शान्त न होती तो किसी अन्य घर के आगे जाकर 'सतिनाम' बोलते। लंगर छकने के पश्चात् वह दाल लस्सी वाला खप्पर धोकर सिर पर उलटा कर रख लेते। जब गाँव के समस्त घर पूरे हो जाते तो कभी कोटली, बिरड़वाल और कभी अगौल आदि गाँव में भी जाते। इस प्रकार समय व्यतीत होते-होते धीरे-धीरे गाँव के अन्य लोग भी आने आरम्भ हो गए। कोटली गाँव से सरदार छज्जा सिंह का परिवार गुरनाम सिंह की ज़मीन बटाई आदि पर लेता था, इसलिए अपने काम के लिए तो इन लोगों ने प्रतिदिन आना ही होता था, लेकिन साथ में दर्शन, सेवा और सत्संग का लाभ भी अन्य लोगों से कुछ अधिक इनको प्राप्त हो जाता। वैसे भी यह परिवार छल-कपट से दूर, संतोषी स्वभाव का होने के कारण महापुरुषों से कुछ अधिक

लाभान्वित हो रहा था। कुछ समय पश्चात् जब गाँव के पर्याप्त लोग आने आरम्भ हो गए तो महापुरुषों की प्रेरणा स्वरूप गाँव के सभी लोगों से एक साँझा यज्ञ करवाया अर्थात् लोगों के मन में दानवृत्ति पैदा करनी आरम्भ कर दी। इस प्रकार कई मास व्यतीत करने के पश्चात् दोबारा फिर आने का वचन देकर आपने आगे को प्रस्थान किया।

कुछ समय पश्चात् आपका पुन: आगमन हुआ। पहले की तरह लोगों से फिर यज्ञ करवाया और प्रेरणा करके अन्य कई पर-उपकार के कार्य जैसे कच्चे मार्गों पर मिट्टी डलवाना, पानी की कठिनाई को देखते हुए मूक पशुओं के लिए जोहड़ का निर्माण आदि शुभ कार्यों के लिए लोगों को प्रेरित किया। इस प्रकार दो-तीन बार यहाँ आकर कई-कई मास ठहरते रहे। इस समय के दौरान खोख, कोटली आदि ग्राम निवासियों को यज्ञ, पुण्यदान, जीव-सेवा, मैत्री-भाव आदि धर्म के कार्यों में इतना दृढ़ कर दिया, मानों एक सफल किसान की भाँति भूमि में हल चलाकर और संवार कर बीज वपन के योग्य बना दिया हो। अब 1944 के अर्ध कुंभ का समय समीप आया जानकर आपने हरिद्वार जाने का संकल्प किया, लेकिन संगत ने बार-बार यहीं रहने के लिए प्रार्थना की। आपने कहा हे प्रेमियों! आप चिंता क्यों करते हो। आपको एक पूर्ण महापुरुष के दर्शन कराएंगे। हम जब दोबारा आएंगे तो उन्हें साथ लाएंगे। गाँव की समस्त संगत को प्यार देकर अपने-अपने घरों को भेज दिया। दूसरे दिन प्रात: ही गुरनाम सिंह जब घर से दूध लेकर आया तो आप प्रस्थान करना ही चाहते थे, सम्भवत: उसकी ही प्रतीक्षा कर रहे थे। दूध पीकर अब आपने पैदल ही प्रस्थान कर दिया, क्योंकि आप किसी गाड़ी, बस आदि में नहीं बैठते थे। गुरनाम सिंह भी उदास मन के साथ चल पड़ा, लेकिन थोड़ी दूर जाकर गुरनाम सिंह को आज्ञा की कि भाई अब वापिस जा। गुरनाम सिंह के नयनों में जल भर आया, कण्ठ अवरुद्ध हो गया और दोनों हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

बाबा जी बोले, तुम रोते क्यों हो? तुम्हें एक पूर्ण महापुरुष से भेंट करवाएंगे। तुम उदास न हो, जाकर अपने काम में लग जा। गुरनाम सिंह उस समय निराशा के दौर से गुज़र रहा था, क्योंकि उसकी पत्नी और दो छोटी-छोटी बालिकाएं स्वर्ग सिधार गई थीं। इसने दूसरा विवाह किया, उससे भी एक पुत्र का जन्म हुआ उसका भी देहावसान हो गया। इसलिए काफ़ी मानसिक चिंता में समय व्यतीत कर रहा था। दूसरी ओर सच्ची सरकार ने इन लोगों के शक्तिशाली पुण्य कर्मों के कारण अथवा प्रजापालक अपने सहज स्वभाव के कारण इनके गाँव में रूहानी डॉक्टरों की एक पूरी टीम भेजने का निर्णय कर लिया। डॉक्टर तो पहले भी प्रत्येक प्रकार की योग्यता से पूर्ण बाबा बेअंत सिंह के रूप में कार्य कर रहा था, जो रोगी की हर प्रकार के रोग का ज्ञाता था और रोग-निवारण के लिए समर्थ भी था, लेकिन फिर भी किसी बड़े पुण्य कर्मों के फलस्वरूप इनके साथ विशेषज्ञों, अधीनस्थों की पूरी टीम भेजने का ईश्वरीय आदेश कर दिया। अर्ध कुंभ पर्व समाप्त होने पर कुछ समय पश्चात् बाबा बेअंत सिंह जी, संत महाराज निक्का सिंह जी विरक्त और संत दर्शन सिंह को साथ लेकर खोख गाँव पहुँच गए। देखते ही गुरनाम सिंह शीघ्र ही बाबा बेअंत सिंह जी के चरणों को स्पर्श करने लगा तो बाबा जी ने उसे रोक कर आदेश किया पहले इधर नमस्कार करो अर्थात् पहले विरक्त महाराज जी को।

गुरनाम सिंह समझ गया कि सम्भवत: ये वही महापुरुष हैं जिसके सम्बन्ध में बाबा जी ने वचन किया था कि तुम रुदन मत करो तुझे एक पूर्ण रूहानी वैद्य के दर्शन कराएंगे। खैर! गुरनाम सिंह ने तीनों महापुरुषों को बड़ी श्रद्धा से नमस्कार किया, दूध आदि लाकर सेवा की। इतने में सब संगत को समाचार मिल गया कि बाबा जी दो अन्य संतों को साथ लेकर आए हैं और सब प्रेमी यह भी समझ गए कि जैसा कि बाबा जी वचन देकर गए थे कि तुम्हें पूर्ण महापुरुषों के दर्शन कराएंगे। सम्भवत: उन्हीं महापुरुषों को साथ लेकर आए हैं।

इस प्रकार जैसे-जैसे पता चलता गया, संगत आकर दर्शन करती रही। लंगर आप प्रतिदिन वहीं करते थे जिसके सम्बन्ध में कबीर साहिब का फरमान है—

कबीर भली मधूकरी नाना बिधि को नाजु॥
दावा काहू को नहीं बडा देसु बड राजु॥

(पृष्ठ १३७३)

विरक्त महापुरुषों का मधुकरी का अन्न ही छत्तीस प्रकार का भोजन हुआ करता है। नदियों का जल ही पान हुआ करता है, भूमि आसन ही मखमली शय्या हुआ करती है, घने जंगल में निवास करना ही नगर-निवास है और उस प्रभु की याद में आठों पहर लीन रहना ही बादशाह का ताज एवं तख्त है। इस प्रकार लंगर के लिए कभी इकट्ठे एक गाँव ही चले जाते, कभी तीनों महापुरुष अलग-अलग गाँव से मधुकरी करके लंगर छकते। इस प्रकार केवल एक बार लंगर लेकर शेष सारा समय उस प्रभु की याद में लीन रहते। संगत भी प्रातः-सायं अथवा अपने-अपने समयानुसार आती रहती। उनको योग्यतानुसार वाणी का उपदेश भी चलता। इस प्रकार आठों पहर एक रस होकर व्यतीत होते। इस प्रकार पर्याप्त समय व्यतीत हो गया। आज इस प्रकार अनुभव हो रहा है जैसे सच्ची सरकार से कोई संदेश आया हो अथवा दयालुता उमड़ आई है अथवा रोगी की कोई पुरानी जान-पहचान निकल आई है। जो भी हो ये तो स्वयं ही जाने, क्योंकि वे बातचीत किसी अन्य देश की भाषा में करते हैं, जो हमारी समझ से परे है। हाँ, उनके कार्यों से ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई हमारी मन-बुद्धि से परे का कोई कार्य करने की तैयारी कर रहे हों।

लीला कहें अथवा पुरुषार्थ-सारी बात तो उन्हें ही ज्ञात है, लेकिन लग ऐसा रहा है जैसे किसी पुराने रोगी के ऑप्रेशन की तैयारी में लगे हो। अनुमान कुछ ऐसा लग रहा है जैसे यह ऑप्रेशन कई घंटों में पूर्ण होगा।

आज प्रातः ही गुरनाम सिंह को आज्ञा दी कि हमने इस कमरे में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की पवित्र वाणी का एक सहज पाठ करना है—इसलिए गुरु साहिब के एक स्वरूप की व्यवस्था करो। आप स्वरूप ले आओ, हम कमरा साफ़ करते हैं। समस्त तैयारी के उपरान्त गुरु महाराज का स्वरूप लाया गया, फिर सहज पाठ आरम्भ कर लिया। सायं जब गुरनाम सिंह घर से दूध लेकर आया तो क्या देखता है कि संत दर्शन सिंह जी गुरु ग्रन्थ साहिब के श्री चरणों में बैठे दोनों हाथों से चौर कर रहे हैं और मुख से ऊँचे स्वर में 'रहिरास' का पाठ कर रहे हैं। दोनों महापुरुष-बाबा बेअंत सिंह एवं बाबा निक्का सिंह जी महाराज एक ओर बैठे पाठ श्रवण कर रहे हैं। गुरनाम सिंह भी नमस्कार करके बैठ गया कि पाठ की समाप्ति पर दूध छकायेंगे। 'रहिरास' का पाठ सम्पूर्ण होने के उपरान्त बाबा बेअंत सिंह जी उठे, एक हाथ में अपनी लाठी ले ली और गुरु ग्रन्थ साहिब के आस-पास परिक्रमा आरम्भ कर दी और मुख से ऊँचे स्वर में सतिनाम वाहिगुरु का जाप आरम्भ कर दिया। उनके साथ ही बाबा निक्का सिंह जी ने भी ऐसा ही करना आरम्भ कर दिया। दोनों महापुरुष परिक्रमा करने के साथ-साथ सतिनाम वाहिगुरु का ऊँचे स्वर में मिलकर जाप करने लगे। कुछ समय तक तो गुरनाम सिंह ने प्रतीक्षा की कि अब रुकते हैं, लेकिन उसे जब लगा कि दोनों महापुरुष तो किसी भीतरी अलौकिक रंग में रंगे बाहर से बेखबर हुए अपनी मौज़ में चले जा रहे हैं तो उसने भी उनका अनुसरण करना आरम्भ कर दिया। घंटा व्यतीत हुआ, फिर दो, फिर चार न तो उनकी आवाज़ में कोई अन्तर आया न गति में कोई कमी। अधिक क्या समस्त रात्रि उस कालातीत, आदेश, अवस्तु में लीन होकर इस प्रकार व्यतीत कर दी मानों कुछ क्षण ही व्यतीत हुए हों। संत दर्शन सिंह जी पूरी रात्रि हजूर साहिब को चौर करते रहे। अब प्रातः होते ही सूर्य देवता के दूतों ने भी अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करते हुए लाल रंग का वितान लगाना आरम्भ कर दिया। इधर आपने भी ऑप्रेशन को सफलतापूर्वक सम्पूर्ण करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब को नमस्कार की। इस एकांत शांत वातावरण में एक मीठी-मीठी ध्वनि कानों में इस प्रकार गूँज रही है—

''वैंदा संदा संगु इकठा होइआ॥
अउखद आए रासि विचि आपि खलोइआ॥
जो जो ओना करम सुकरम होइ पसरिआ॥
हरिहां दूख रोग सभि पाप तन ते खिसरिआ॥*

(फुनहे म ५, पृष्ठ १३६३)

पश्चिमी पंजाब की यात्रा

1944 ई० के अंतिम दिनों में अथवा 1945 ई० के आरम्भ का ज़िक्र है जब आपने अन्य तीन-चार महात्माओं को साथ लेकर पश्चिमी पंजाब की यात्रा के लिए प्रस्थान किया। सर्वप्रथम दौद गाँव गए। यहाँ 'जोगीपीर' में निवास करके दो-तीन दिन विश्राम किया। समय-समय पर लंगर मधुकरी से ग्रहण करते रहे। इस प्रकार कुछ दिन यहाँ रुककर आगे चल पड़े। शनैः-शनैः पद यात्रा दिन कहीं, रात्रि कहीं व्यतीत करते लाहौर पहुँच गए। यहाँ आवास रावी नदी के किनारे ही रखा, लेकिन लंगर की सेवा जसवंत लाल बत्तरा करता रहा।

इन्हीं दिनों इसको (जसवंत लाल बत्तरा) गत यात्रा के समय दिए। वचनानुसार नाम-दान से भी उपकृत किया।

---

* *एक बार खोख कुटिया में विराज़मान संत महाराज निक्का सिंह जी व्याख्या सहित 'बाई वारां' पढ़ा रहे थे। उस समय गोइंदवाल की 'साखी' चली कि वहाँ कुछ गुप्त आत्माएं निवास करती हैं, जो गोंदे नाम के क्षत्री को गाँव बनाने नहीं देती थी। गोंदा किसी बुद्धिमान व्यक्ति की सलाह पर गुरु अंगद देव महाराज जी के चरणों में खंडूर साहिब आया और प्रार्थना की महाराज! मेरे पास धन पदार्थ, ज़मीन-सम्पत्ति बहुत है। मेरी इच्छा है कि ब्यास नदी के तट पर मेरी भूमि में मेरे नाम पर एक गाँव बस जाए ताकि संसार में मेरा नाम रह जाए। मैंने बड़ा प्रयत्न किया कि गाँव बस जाए, लेकिन सब असफल, क्योंकि वहाँ कुछ गुप्त आत्माओं का निवास है जो बसने नहीं देती। मकान बनाने के लिए जो दीवारें मेरे राज-मज़दूर दिन को बनाते हैं वे रात्रि को गिर जाती हैं इसलिए मैं थक हारकर आपके द्वार पर आया हूँ। आप पूर्ण पुरुष हो, ईश्वरीय ज्योति हो, मेरा यह कार्य करने में समर्थ हो, सब दृष्ट-अदृष्ट शक्तियां आपके अधीन हैं, कृपा करो। वहाँ गाँव की स्थापना करके अपने शिष्यों, सेवकों सहित निवास करो, मेरा नाम रह जाएगा। गुरु अंगद देव महाराज ने भविष्य को ध्यान में देखते हुए श्री अमरदास जी को आज्ञा की कि जाओ वहाँ इस प्रेमी के नाम पर गोइंदवाल नगर की स्थापना करो। अमरदास जी ने प्रार्थना की महाराज! वहाँ स्थान बड़ा कठोर है— यह कार्य तो आप की कृपा के द्वारा ही होगा। गुरु अंगद देव महाराज ने अपने हाथों की एक छड़ी देकर आज्ञा की कि छड़ी को जाकर आकाश में घुमा दो। गुप्त आत्माएं जो वहाँ निवास करती हैं सब विलुप्त हो जाएंगी। इसी प्रकार किया गया और गोइंदवाल नगर की स्थापना हुई। यह कथा सुनकर विरक्त महाराज निक्का सिंह जी बोले-ऐसी आत्माएँ होती तो हैं। खोख गाँव की ओर संकेत करके फ़रमाया-इस गाँव में भी थीं।*

यहाँ लड़कों-लड़कियों की मृत्यु हो जाती थी। एक दिन बाबा बेअंत सिंह जी हमको कहने लगे महाराज! रात को यहाँ कुएँ को चलाते दो व्यक्ति बातें कर रहे थे कि गुरनाम सिंह के घर पुत्र नहीं होता-इसकी ज़मीन एवं सम्पत्ति व्यर्थ जाएगी। हमने हँसते हुए कहा-बाबा जी! आज किस रंग में डूब गए? बाबा जी बोले, महाराज! लोग क्या कहेंगे कि तीन साधु कुएँ पर बैठे हैं और कुएँ वाला संतान विहीन जा रहा है। महाराज मुस्कराते हुए बता रहे थे बाबा ने खूँडा (लाठी) पकड़कर एक रात्रि व्यतीत की थी— आप के सम्मुख उद्यान लगा दिया-गुरनाम सिंह के घर में। महाराज जी ने तो इतना ही सुनाया था, लेकिन रात्रि कैसे व्यतीत हुई? यह समस्त वार्त्ता बाद में गुरनाम सिंह ने सुनाई उपरोक्त घटना के बाद जिसका विस्तार से वर्णन ऊपर आ चुका है। एक वर्ष अथवा थोड़े अधिक समय के पश्चात् अर्थात् 1946 ई० के बसंत पंचमी वाले दिन गुरनाम सिंह के घर पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम अजीत सिंह रखा। उसके पश्चात् चार पुत्र एवं एक पुत्री हुए।

इस प्रकार कुछ समय लाहौर ठहरकर आगे को प्रस्थान किया। क्रमानुसार पड़ाव सहित यात्रा करते संत भगत सिंह जी के प्रेम आकर्षण में बंधे शेखूपुरे पहुँच गए। उनके प्रेम के वशीभूत कुछ दिन वहाँ विश्राम करके आगे लायलपुर आकर विश्राम किया। यहाँ 'एक सौ पंद्रह' चक (गाँव) में मुकंद लाल पटवारी और जैलदार जगत सिंह चहल पुराने सेवक रहते थे। उनके पास जाकर विश्राम किया। पटवारी ने महाराज जी से तीन दिन लेकर प्रतिवर्ष की भाँति अखण्ड पाठ करवाया, उपरान्त गुरु नानक की बख्शी कृपाओं में से मुक्तहस्त लंगर किया। यहाँ 'एक सौ पन्द्रह' चॅक (गाँव) में पटवारी मुकंद लाल और जैलदार जगत सिंह आदि प्रेमियों ने इतना प्यार किया कि महाराज जी इनके प्रेमवश हुए अपनी संत मण्डली सहित दो मास यहीं रहे। समय पाकर अन्य दूर-समीप की संगत भी यहाँ पहुँचकर सेवा और सत्संग का अत्यन्त लाभ उठाती रही। अब जब यहाँ से प्रस्थान की तैयारी की तो जैलदार जगत सिंह ने प्रार्थना की कि फिर कब दर्शन होंगे? हजूर ने किंचित मुस्कराते उत्तर दिया—अब इधर नहीं, उधर ही मिलेंगे। भविष्य में होने वाले समय का ऐसा संकेत करके अब आगे को प्रस्थान कर धीरे-धीरे जा पहुँचे 'तख्त हज़ारे'। बस्ती से कुछ दूर दो-तीन मील बाहर निवास किया। पता लगने पर गोपाल सिंह जी भी आ गए और अन्य समीप-दूर की संगत भी आनी आरम्भ हो गई।

लंगर तो आप मधुकरी लेकर ही छकते थे, लेकिन दूध आदि संगत ले आती। गोपाल सिंह* उन दिनों में दर्ज़ी का काम अर्थात् कपड़े सिलने का काम करते थे। बाद में चाहे मन को जोड़ने का काम भी किया। उसी समय सम्भवत: कोई संयोग ही घटित हो रहा था अथवा कोई अन्य कारण यह तो परमेश्वर ही को ज्ञात है, लेकिन आप प्रात: ही श्री चरणों में पहुँच जाते। सारा दिन सत्संग सेवा में व्यतीत करते। शेष संगत तो सायंकाल सत्संग के उपरान्त वापिस घर को चली जाती, लेकिन गोपाल सिंह जी रात्रि के दस-ग्यारह बजे घर पहुँचते-वह भी सम्भवत: महाराज के आदेश पर ही। इस प्रकार कुछ दिन जहाँ व्यतीत करने के पश्चात् किसी प्राचीन पूर्व संयोगवश किसी सुप्त हुए बीज को जल से सींचकर ईश्वरीय नूर ने अपनी संत मण्डली अब आगे 'शाह जीवने' की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में 'चिनाब' नदी पार करने के लिए नाव में सवार हुए तो मल्लाह ने किराया मांगा। आप बोले भाई! हम तो विरक्त साधु हैं, पैसा पास नहीं रखते, इसलिए किराया कहाँ से दें? मल्लाह बोला- बिना पैसों के मैं ले जा नहीं सकता। हजूर ने शेष महात्माओं को नाव में से उतारकर रात्रि व्यतीत करने के लिए नदी के तट पर खड़े एक वृक्ष के नीचे विश्राम किया।

देखा! उस प्रभु की लीला, अब तक यह तो सुना था कि नदी अपने प्रियतम में अभेद होने के लिए दिन-रात यात्रा का कष्ट सहन करती है, लेकिन इसके विपरीत आज महान सागर अपनी मर्यादा छोड़कर किसी गहन प्रेम पाश में बँधा, नदी के तट पर रात्रि व्यतीत कर रहा है। आपने मण्डली के अन्य महात्माओं से पूछा-बताओ किसके पास पैसे हैं? संत नारायण सिंह बोले, महाराज! कुछ पैसे मेरे पास हैं। हजूर बोले, हम भी सोचते हैं कि मल्लाह ने हमारा अपमान क्यों किया। जब से साधु हुए हैं—हमसे तो पैसा किसी ने मांगा ही नहीं। यह आज पहली बार हुआ है। खैर! बात छोड़कर रात्रि प्रभु-भजन में व्यतीत की। दूसरी ओर मल्लाह अत्यंत व्याकुल हो गया।

देख रहा है कि बिना किसी क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष के और बिना कुछ खाए-पिये शान्त-चित्त नदी के किनारे एक वृक्ष के नीचे रात्रि व्यतीत कर दी। सम्भवत: अपने किए पर पछताता मल्लाह पश्चाताप के भयंकर वनों में भटकता सारी रात्रि यह

* *सम्भवत: यहीं गोपाल सिंह जी को आपके पहली बार दर्शन हुए क्योंकि जसवंत लाल बतरा और गोपाल सिंह समीपी सम्बन्धी थे। हो सकता है कि गोपाल सिंह जी यहीं से 'तख़त हज़ारा' आने का वचन लेकर गए हों।*

सोचकर अपने मन को फटकारता रहा कि मूर्ख? ये यात्री नहीं थे, ये कोई तीर्थ थे। पथिक नहीं थे, कोई मंज़िल थे, कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे अपितु नावों के स्वामी थे। ऐसा लगता है पार उतरने के लिए नहीं आए थे, अपितु पार करने आए थे। काश! यह बुद्धि कल आती। खैर! प्रातः उठते ही महापुरुषों के चरणों में पहुँचा—दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना की महाराज! क्षमा करो, मेरे से भूल हो गई। आप कृपा करके नाव में बैठो। मैं पूरी रात्रि सो नहीं सका। हजूर बोले भाई! इसमें तेरा कोई दोष नहीं है, हममें भी अभी पूर्णता नहीं है। जिस गृहस्थी के पास चार पैसे नहीं होते उसका संसार में कौड़ी का मूल्य नहीं होता, इसलिए जिस फ़कीर के पास चार पैसे हों, उसके पास फ़कीरी भी कौड़ी की नहीं होती। इस प्रकार मल्लाह पर प्रसन्न होकर और कुछ सत्य उपदेश करके नाव में बैठ नदी पार कर ली। कुछ आगे जाकर नदी के किनारे 'लुहारे वाल' साधु ईश्वर दास के डेरे पहुँच गए। यह तो श्रेष्ठ वृत्ति वाला साधु था और हृदय से संत-प्रेमी होने के कारण अन्य भी कई महात्मा इसके आश्रम में ठहर जाया करते थे। आप जी इसके प्रेमवश कई दिन यहाँ ठहरे, फिर यहाँ से प्रस्थान कर 'शाह जीवने' पहुँच गए।

इस स्थान पर और आस-पास के क्षेत्र में पर्याप्त समय व्यतीत किया। अपने-अपने देश की ओर वापसी का विचार कर प्रस्थान कर दिया, क्योंकि ईश्वर प्रदत्त नाम पाने का पावन कार्य करते इस क्षेत्र में पर्याप्त समय व्यतीत हो चुका था। यहाँ से चलकर साधु ईशर दास के प्रेम-आकर्षण में खिंचे धीरे-धीरे चिनाब के किनारे उसके आश्रम में फिर आ पहुँचे। महात्मा ने ऐसी प्रेम की डोरी से बाँधा कि कई दिन यहीं व्यतीत कर दिए, क्योंकि महात्मा ईशर दास आपके साथ आत्म-विचार करके कुछ विशेष प्रकार का अनुभव किया करते थे और महाराज जी भी उसकी त्याग वृत्ति, संत-सेवा और शुभ गुणों का आदर करते थे, इसलिए उनके प्रेम में बँधे कई दिन यहाँ व्यतीत करके वापिस चल पड़े। वहाँ से चलकर आप धीरे-धीरे जिस समय लाहौर पहुँचे तो आगे मुसलमान लोग जलूस की शक्ल में एकत्रित हुए नारे लगा रहे थे—'लेकर रहेंगे पाकिस्तान, लेकर रहेंगे-पाकिस्तान' आदि। हजूर बोले-क्या ऐसे पाकिस्तान मिल जाएगा? तख्त हज़ारे गोपाल सिंह को भी पता चला कि महाराज लाहौर पहुँचे हुए हैं। पता लगते ही वे दर्शनार्थ तख्त हज़ारे से साईकल पर ही चालीस पचास मील की यात्रा करके लाहौर पहुँच गए। आकर दो चार दिन चरणों में व्यतीत किए, कुछ सेवा सत्संग का लाभ उठाया। इतने में महाराज जी ने हरिद्वार की ओर प्रस्थान किया। गोपाल सिंह को चाहे दर्शन तो हो गए, लेकिन मिलाप में अभी कुछ देरी थी।*

हरखोवाल

चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ॥
तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ॥
ओथै अंम्रितु वंडीऐ करमी होइ पसाउ॥
कंचन काइआ कसीऐ वंनी चड़ै चड़ाउ॥
जे होवै नदरि सराफ की बहुड़ि न पाई ताउ॥
सती पहरी सतु भला बहीऐ पड़िआ पासि॥

---

* *संत गोपाल सिंह जी का उपरोक्त वर्णन उनके सुपुत्र प्रो. मदन गुलाटी जी द्वार प्राप्त हुआ, जो उस समय आठ-नौ वर्ष के थे।*

ओथे पापु पुंनु बीचारीऐ कूड़ै घटै रासि॥

ओथे खोटे सटीअहि खरे कीचहि साबासि॥

बोलणु फादलु नानका दुखु सुखु खसमै पासि॥

(सलोक म० २, पृष्ठ १४६)

आषाढ़ मास होने के कारण ऋतु में यद्यपि ताप है, लेकिन फिर भी यहाँ गर्मी का प्रकोप कुछ कमज़ोर है क्योंकि दुआबा का क्षेत्र होने के कारण दो-आब दोनों ओर बहते हैं। पश्चिम की ओर ब्यास और पूर्व की ओर सतलुज। फिर दोनों भाइयों की पारस्परिक संधि होने के कारण वायु के ठण्डे झोंकों के द्वारा एक-दूसरे को सुख-दु:ख के संदेश देते ही रहते हैं। इस समृद्ध दुआबे में फगवाड़ा-होशियारपुर रोड पर, होशियारपुर से कोई लगभग बीस कि.मी. फगवाड़े की ओर, सड़क से थोड़ा पीछे हटकर एक गाँव बसा है—हरखोवाल। यहाँ गाँव की आबादी से थोड़ी दूर आम के सघन कुंज में एक सुन्दर स्थान बना है—'संतगढ़'। इस स्थान के संस्थापक एक शान्त-चित्त महात्मा संत महाराज ज्वाला सिंह जी कई वर्षों से अपने निजदेश 'बेगमपुरे' की अगम्य महक द्वारा क्षेत्र को सुवासित कर रहे हैं—

आपके मन रूपी कानों में गुरु बाबा जी की एक पंक्ति सदैव गूँजती रहती है—

संतह चरन हमारो माथा।

यद्यपि आप इसी देश के वासी हैं, लेकिन फिर भी एक इच्छा सदैव बनी रहती है। यही कारण है कि प्रेम के वशीभूत साधु-महात्मा काफ़ी समय यहाँ आकर ठहरते हैं। संत बाबा ज्वाला सिंह जी के प्रेम अथवा किसी पूर्व संयोगवश पूज्य महाराज संत निक्का सिंह जी भी प्राय: यहाँ आते-जाते रहते हैं। अब यहाँ कई दिनों से रुके हुए हैं। स्थान के समीप एक बरसाती नाला है, इसमें जल तो वर्षा के दिनों में ही प्रवाहित होता है, वर्ष के शेष समय में सूखा रहता है। अब भी अभी आषाढ़ के दिन चल रहे हैं, वर्षा अभी आरम्भ नहीं हुई, इसलिए जल तो अभी नहीं है, इसकी रेत रात्रि को ठण्डी हो जाती है। इस भाग्यशाली रेत पर बेगमपुरे नगर के दो निवासी संत महाराज निक्का सिंह जी और महाराज ज्वाला सिंह जी एक-दूसरे से कुछ अन्तर के साथ स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण आदि तीनों शरीरों से वृत्ति को संकोच कर पदार्थाभाव के विशेष आनन्द में स्थित होकर देशकाल वस्तु से नितांत बेखबर सारी रात्रि रसलीन हुए बैठे रहते थे। फिर जिस समय—

चिड़ी चुहकी पहु फुटी वगनि बहुतु तरंग॥

अचरज रूप संतन रचे नानक नामहि रंग॥

(श्लोक म० ५, पृष्ठ ३१९)

समय आता है अर्थात् चिड़ियों की चहचहाने अथवा सूर्य उदय से कुछ पूर्व उठकर एक दूसरे के समीप चले जाते हैं। फिर दोनों बैठकर प्रीतम के निज देश जिसकी सारी रात्रि यात्रा की है, उसकी कुछ विचार चर्चा वहाँ की भाषा में जितना संभव हो सके, करते हैं। सम्भवत: यह भी आनन्द का कोई भाग हो, लेकिन हमारी समझ से परे है। आज तीन पहर रात्रि व्यतीत हो गई, एक पहर अभी शेष है। प्रतिदिन की भाँति संत ज्वाला सिंह जी उठकर महाराज निक्का सिंह जी के पास आकर बोले—महाराज! बेगमपुर के सम्बन्ध में तो प्रतिदिन कुछ न कुछ वर्णन होता है, लेकिन आज किसी ऐसे महात्मा पुरुष की बात सुनाओ जो सदैव उस देश में निवास करता हो—जिसके सम्बन्ध में भाई साहिब भाई गुरदास जी संकेत करते हैं—

गली सादु न आवई जिचरु मुहु खाली॥
मुहु भरिऐ किउं बोलीऐ रस जीभ रसाली॥
सबदु सुरति सिमरण उलंघि नहि नदरि निहाली॥
पंथु कुपंथु न सुझई अलमसत खिआली॥
डगमग चाल सुढाल है गुरमति निराली॥
चड़िया चंदु न लुकई ढकि जोति कुनाली॥

(वार १३, पउड़ी ६)

आपने देश का बहुत भ्रमण किया है—किसी ऐसे मस्तमौला संत के सम्बन्ध में बताओ। महाराज निक्का सिंह जी बोले, महापुरुषो! आपने अलौकिक मस्ती सम्पन्न संतों के अधिक दर्शन किए हैं, अतः आप सुनाओ। संत ज्वाला सिंह जी कहने लगे कि एक बार की बात है कि हमने अपने गुरु स्थान पर जाना था—'होती मरदान'। हमें पता लगा कि लाहौर में एक मस्तमौला फ़कीर रहता है—संसार से नितांत बेखबर। हमने मन में निर्णय कर लिया कि उसके दर्शन अवश्य करके आएंगे। लाहौर उतरकर उसके पास गए। आगे वह बिल्कुल नग्न हालत में एक चौक में लेटा हुआ था। उसके समीप मिट्टी का एक बर्तन पड़ा था। श्रद्धावान् लोग कोई उसमें दूध डाल देता, कोई खाने की किसी वस्तु को। कौवे, कुत्ते भी उसी बर्तन में खाते रहते और स्वयं भी उसी में से खाता। जब हम वहाँ पहुँचे उस बर्तन में किसी प्रेमी ने दूध डाला तो कुत्ता आकर पीने लगा। मस्त फ़कीर ने कुत्ते को हटाया और वही दूध आप पीने लगा। हमारे मन में आया कि यदि यह जूठे दूध का एक घूँट आप बुलाकर हमें दे-फिर समझें कि पूर्ण फ़कीर हैं। मस्त फ़कीर दूध पीता-पीता कहने लगा-ले पी ले। कब का माँग रहा है। मैंने जिस समय उस दूध का एक घूँट पिया ऐसा आनन्द अनुभव हुआ जो पहले कभी अनुभव नहीं किया था। खैर वहाँ से गाड़ी पकड़कर 'होती मरदान' पहुँचे। स्थान पर पहुँचकर जब महाराज आया सिंह जी के चरणों पर नमस्कार की-आगे से बोले-फ़कीरों की सेवा करनी चाहिए, फ़कीरों के दर्शन करने चाहिएं, लेकिन जूठा नहीं खाना चाहिए। तुमने पाँच ककार धारण कर रखे हैं।

मन अत्यन्त आश्चर्यचकित हुआ, हैं! ऐसी सर्वज्ञता! इतनी अन्तर्यामता! खैर कई दिन ठहरकर सेवा सत्संग का लाभ उठाया, फिर वापिस आने की आज्ञा मांगी, जो स्वीकार हो गई। गाड़ी में बैठकर जब लाहौर पहुँचे तो फिर वही संकल्प कि मस्तमौला संत के दर्शन करें। उतरकर जब चौक पर गए तो आगे मस्तमौला लेटा-लेटा ही सेब खा रहा था। मन में फिर वही जूठे दूध के आनन्द रस वाला खिंचाव जागा-यद्यपि अन्तर्यामी गुरु ने रोका था, लेकिन फिर भी मन उस आनन्द को अभी भूला नहीं था। इसलिए मन में संकल्प किया कि मस्तमौला संत जूठा सेब दे। मस्त सेब खाते-खाते बोला—तेरा गुरु तो कहता था कि मस्त की जूठन न खाया कर, तुमने पाँच ककार धारण कर रखे हैं, लेकिन तुम फिर वहीं मांग रहे हो-जा अब मैं नहीं देता। इस प्रकार बातें करते-करते प्रातः हो गई। संत ज्वाला सिंह जी बोले महाराज! यहाँ से पाँच-सात मील की दूरी पर फिल्लौर की ओर एक ऐसा ही मस्त और रहता है, यदि तुम्हारा विचार हो तो आज दर्शन करें? महाराज निक्का सिंह बोले-बहुत अच्छा। डेरे आकर कुछ जल-पान ग्रहण करके दोनों महापुरुष मस्त संत की ओर चल पड़े। जब वहाँ पहुँचे तो मस्त लेटा हुआ था। उसकी एक टाँग घुटनों से नीचे बुरी तरह गली-सड़ी पड़ी थी। उसमें हज़ारों की संख्या में कीड़े घूम रहे थे। दवाई वह लगाने नहीं देता था। कहता था—यह मेरा परिवार है। उस मस्त संत के पास एक सुगठित शरीर वाला सेवादार सेवा करता था-जो दिन-रात पास ही रहता था, उस सेवादार को मस्त कहने लगे कि तुमने इतने पाप किए थे कि तुम्हारी दोनों टाँगें

कट जातीं, तुमने मेरी बहुत सेवा की है इसलिए तुम्हारी एक टाँग तो मैंने ले ली और महाराज निक्का सिंह जी की ओर संकेत करके बोला और दूसरी टाँग इनसे माँग ले। ये मेरे पूर्व जन्म के गुरु भाई हैं। इस बात को ये नहीं जाते, मैं जानता हूँ।*

गाँव लोह सिम्बली

जंमणु मरणहु बाहरे परउपकारी जग विंचि आए॥
भाउ भगति उपदेसु करि साध संगति सचखंडि वसाए॥
मानसरोवर परमहंस गुरमुखि सबद सुरति लिव लाए॥
चंदन वास वणासपति अफल सफल चंदन महकाए॥
भवजल अंदरि बोहथै होइ परवार सधार लंघाए॥
लहरि तरंग न विआपई माइआ विचि उदासु रहाए॥
गुरमुखि सुख फलु सहिज समाए॥

(भाई गुरदास वार १२, पौड़ी १८)

---

* *एक बार का जिक्र है कि बाबा बेअंत सिंह जी की 'खोख' गाँव में पुण्य तिथि थी। महाराज निक्का सिंह जी कथा करने के पश्चात् कुटिया से उठकर कोटली गाँव एक कुएँ पर आ बैठे। प्रताप सिंह नाभा वाला अपने ट्रक में पुण्य तिथि पर नाभा संगत लेकर आया था। कुटिया में लंगर लेकर प्रताप सिंह, मास्टर गुरचरण सिंह और भाग सिंह आदि नाभा की संगत महाराज जी के पास कुएँ पर आई। महाराज अपनी मौज में प्रसन्न बाबा बेअंत सिंह जी की बातें सुन रहे थे। फिर बीच में ही महाराज जी ने संत ज्वाला सिंह की बात चलाई कि वह मस्त फ़कीरों का बहुत प्रेमी था। ऐसे फ़कीरों के दर्शनों के लिए तो वे दूर-दूर तक चले जाते थे। महाराज कहने लगे कि उनके डेरे के पास एक नाला बहता है। हम रात को उसमें बैठे होते थे और संत ज्वाला सिंह जी भी थोड़ी दूरी पर उसमें बैठते थे। प्रात: से पूर्व वहाँ से उठकर हमारे पास आ जाते। फिर यही कहते महाराज किसी मस्त फ़कीर की बात सुनाओ। एक दिन उन्होंने लाहौर वाले अपने गुरु संत आया सिंह वाली घटना सुनाई। प्रताप सिंह और मास्टर गुरचरण सिंह ने सम्भवत: पहले सुन रखी थी। प्रार्थना की, महाराज! वह मस्त आप जी को क्या कहता था— वह सुनाओ। महाराज कुछ देर तो टालते रहे, लेकिन जब उन्होंने अधिक विवश किया तो अपने प्रेम के वशीभूत अथवा भविष्य का ध्यान करके उपरोक्त मस्त संत वाली सारी घटना सुनाई। प्रताप सिंह ने फिर पूछा कि महाराज उस सेवादार का फिर क्या हुआ? हजूर बोले-मस्त ने उसे हमारे पीछे डाल दिया। हमने उसको बहुत समझाया कि ये पूर्ण पुरुष हैं— अपने दूसरी टाँग के सम्बन्ध में इनसे क्षमा करवा लो, लेकिन मस्त उसकी बातों द्वारा हमारी ओर जाने को कहे। महाराज जी ने कहा कि हमने स्वाभाविक ही कह दिया कि फ़कीर की सेवा करता है, करता रह, इनको छोड़कर कहीं न जाना-तुझे कुछ नहीं होगा। यह कहकर हम तो 'हरखोवाल' की ओर चल पड़े। कुछ समय बाद पता कि वह सेवादार गुरदासपुर ज़िले का शक्तिशाली पहलवान और उस क्षेत्र का नामी बदमाश भी था। उसने कत्ल आदि कई बुरे कर्म भी किए थे। जब पुलिस ने पीछा किया तो वह अपना इलाका छोड़कर यहाँ जंगल में छुपकर मस्त की सेवा करने लगा। कुछ समय पश्चात् उसके सम्बन्धियों को पता लग गया। उसकी बहन कहीं उधर ही विवाहित थी। उनका किसी के साथ भूमि का झगड़ा था। उसने आकर भाई को ताना मारा कि तुम अपने को बड़ा बदमाश कहते हो, यहाँ साधुओं के पास छिपा बैठा है और उधर अमुक लोगों ने हमारी भूमि हस्तगत कर ली है। उस पहलवान ने किसी की घोड़ी मांगी और अपनी बहन की भूमि छुड़ाने के लिए गया। आगे दूसरी पार्टी वाले पहले से ही तैयारी किए बैठे थे। उन्होंने इसकी घोड़ी के ऊपर बैठे ही टाँग काट दी।*

अम्बाला नगर से लगभग पाँच किलोमीटर दूर पश्चिम की ओर एक सौभाग्यशाली नगर बसता है 'लोह सिम्बली'। इस गाँव की पवित्र भूमि को समय-समय पर अवतारों एवं पूर्ण पुरुषों का चरण स्पर्श प्राप्त होता रहा है। किसी समय दशम् पातशाह श्री गुरु गोबिन्द सिंह महाराज ने अपनी पवित्र चरण धूलि से इस धरती को पवित्र करने की कृपा की। उनकी पावन स्मृति में गाँव के मध्य में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। फिर बीसवीं शती के आरम्भ में मालवा के प्रसिद्ध महापुरुष संत बाबा अतर सिंह जी मस्तुआने वाले भी इस गाँव में कई बार आए थे। वर्णन सम्भवत: 1948 ई० का है जब कोई पूर्व संयोग बाबा बेअंत सिंह जी को आज लोह सिम्बली ले आया। खेतों में बाहर एक छोटी सी प्राचीन कुटिया बनी हुई है, खाली पड़ी समझकर उसमें ठहर गए और प्रभु के रंग में लीन हुए दो दिन भीतर ही बैठे रहे। समीप के खेत वालों ने देखा कि दो दिन से भूखे-प्यासे एक अवधूत महात्मा भीतर ही बैठे हैं, न तो बाहर आते हैं और न ही किसी से बात करते हैं।

ऐसे कुछ प्रेमी एकत्रित होकर समीप आए, नमस्कार करके प्रार्थना की, बाबा जी! आप जी ने दो दिन से कुछ नहीं खाया। आज्ञा हो तो भोजन ले आएं। बाबा जी ने पूछा, भाई-शराब माँस तो नहीं लेते? नहीं बाबा जी! आज्ञा हुई, तो फिर भोजन ग्रहण कर लेते हैं। प्रेमियों ने गाँव से भोजन लाकर करवाया। बाबा जी ने आज्ञा की कि इसके बाद भोजन यहाँ नहीं लाना। हम स्वयं ही गाँव जाकर छक लिया करेंगे। जब भूख लगती एक बार गाँव जाकर मधुकरी करके लंगर छक लेना, फिर प्यारे प्रभु की याद में चौबीस घंटे लीन रहना। इस प्रकार जब कुछ दिन व्यतीत हो गए तो गाँव की कुछ संगत समीप आना आरम्भ हो गई। बचन सिंह मंढौरिया नाम का एक प्रेमी एक दिन प्रात: चाय लेकर आया। नमस्कार करके चाय पीने के लिए प्रार्थना की। बाबा जी ने पूछा-भाई शराब माँस का सेवन तो नहीं करते? प्रार्थना की-नहीं महाराज! उसकी दाढ़ी बँधी देखकर बाबा जी ने अपने हाथ से खोल दी, आज्ञा की कि आगे से इसे बाँधना नहीं। मढ़ी-मसानी को कभी मत्था नहीं टेकना। उससे वचन लेकर फिर चाय पान कर लिया।

लंगर छकने के लिए जब एक बार गाँव में जाते तो दशमेश पिता की स्मृति में बने गुरुद्वारे साहिब अवश्य नमस्कार करते। आपने देखा कि गुरुद्वारा साहिब की हालत बहुत खस्ता है तो लोगों को प्रेरणा की कि कलगीधर पिता का स्थान हो तो उसकी हालत इतनी खस्ता हो-यह बात आप नगर निवासियों को और हमें गुरु नानक नाम लेने वालों को शोभा नहीं देती। लोगों ने उत्साह युक्त होकर सेवा आरम्भ की। बाबा जी ने स्वयं हाथ में कसी पकड़नी, तसला आदि उठाना और संगत को प्रेरणा देनी कि भाई गुरु की सेवा उस भाग्यशाली व्यक्ति को प्राप्त होती है जिसका भाग्य अत्यन्त उच्च हो अर्थात् सैंकड़ों जन्मों के निष्काम पुण्य सन्मुख हो चुके हों।

गुरु साहिब के सुख-आसन के लिए एक बड़ा पलंग बनाया, आदि आवश्यक कार्य पूर्ण करके गुरुद्वारा साहिब के सुप्रबन्ध के लिए एक पाँच सदस्यों वाली कमेटी बनाई जिसमें अमर सिंह, बलबीर सिंह, बख्शीश सिंह, नराता सिंह और मेहर सिंह आदि सज्जन चुने। बाबा जी ने आज्ञा की कि आज से सबने दाढ़ियां खुली रखनी हैं, शराब माँस का सेवन नहीं करना और न ही किसी मढ़ी-मसानी की पूजा करनी है। प्रत्येक पूर्णिमा एवं संक्राति को देसी घी की खुली देग बनाकर वितरित करनी है, गुरु घर की सेवा-संभाल तन-मन से करनी है, अन्य बुरे कार्यों से बचना है, अब तक के तुम्हारे किए पाप-कर्मों का मैं जिम्मेवार हूँ-हाँ उनकी चिंता छोड़ दो।

प्रेमियों ने गुरुद्वारा साहिब की सेवा ठीक प्रकार से और बड़े प्रेम के साथ संभाल ली। अब बाबा जी का ध्यान गाँव में पीने के जल की ओर गया। लोग जल के लिए बड़ा कष्ट उठाते थे। गाँव में दो कुएँ तो पुराने थे लेकिन रहट ऊपर न होने के कारण खड़ा जल गंदा हो जाता था। लोग मजबूरी में वही पानी पीकर गुज़ारा करते थे। ये दोनों कुएँ एक पट्टी वाला और दूसरा अकालियों वाला के नाम से जाने जाते थे। इन दोनों पर लोगों को प्रेरणा देकर रहट लगवाए-दोनों के चबच्चे और खेलें

बनवाईं ताकि मूक पशु भी जल पी सकें। रहट को प्रतिदिन चलाकर कुएँ से पानी निकालने के लिए प्रति घर की बारी लगा दी कि एक दिन एक घर रहट चलाकर चबच्चे भरे और दूसरे दिन दूसरा घर। इस प्रकार सब लोगों की सेवा भी प्राप्त हो गई और जलपान करने की समस्या भी सुलझ गई। एक स्त्री जगीर कौर को प्रेरणा करके तीसरा कुआँ भी लगवाया।

इस प्रकार गाँवों के लोगों एवं पशुओं के लिए जीवन की एक ज़रूरी आवश्यकता पूरी हो गई, लेकिन गाँव को एक अन्य समस्या ने घेर लिया। पानी खुला मिलने के कारण गाँव की कच्ची गलियाँ, नालियों आदि में कीचड़ हो गया।

लोगों को घर से बाहर निकलने के लिए मुश्किल हो गई। बाबा जी ने पंचायत एवं नगर निवासियों को गलियों एवं नालियों को पक्का करने के लिए प्रेरित किया। प्रभु की कृपा से थोड़े समय में ही गाँव की सब गलियां एवं नालियां पक्की हो गईं। इस प्रकार बाबा जी ने लोगों को सुखमय जीवन की दिशा बताकर लोक-परलोक के मार्ग संवारने की शैली सिखाकर यहाँ से जाने का संकल्प किया, लेकिन लोग ऐसे मसीहा का वियोग किस प्रकार सहन करते जिसने उन्हें नरक से निकालकर स्वर्ग की सैर करवाई थी? सबने मिलकर प्रार्थना की कि बाबा जी यहाँ से मत जाओ। बाबा जी बोले जो उस अकाल पुरुष ने कार्य सौंपा था, वह उसने पूर्ण करवा लिया है-अब जहाँ कोई अन्य कार्य सौंपेगा-वह करवा लेगा, लेकिन संगत अधिक रुदन करने लगी तो बाबा जी ने कहा कि आप चिंता न करें-प्रभु ठीक ही करेगा। इस प्रकार परोपकार के कार्य करते रहे। दसवां भाग निकालकर सारे एकत्रित होकर वर्ष में एक सांझा अखण्ड पाठ साहिब करवाया करो। उस दिन गुरु का लंगर भी लगातार चलाना-हम आप को एक ऐसा महापुरुष मिलाएंगे जो तुम्हें ईश्वरीय वाणी की शैली का शिक्षण देगा जिसको पढ़कर, विचार कर एवं व्यवहार में लाकर लोक-परलोक दोनों संवर जाते हैं।

इस प्रकार संगत को सांत्वना देकर यहाँ से कहीं अन्य स्थान की ओर प्रस्थान किया, लेकिन लगभग दो वर्ष बाद विरक्त महाराज निक्का सिंह जी को साथ लेकर फिर आ गए। संगत को बोले-तुम्हें वचन देकर गए थे कि पूर्ण महापुरुष के दर्शन करवाएंगे। प्रभु ने उस वचन को पूरा कर दिया है। ये साक्षात् परमेश्वर हैं। शरीर की कोई शंका मन में न लाना। गुरु साहिब ने ऐसे महापुरुषों के लिए ही आदेश किया है—

मानुख का करि रूपु न जानु॥

(रामकली म. ५, पृष्ठ ८९५)

इसलिए जो भी व्यक्ति लोक-परलोक को प्राप्त करना चाहता है तो प्राप्त कर ले। लोग विरक्त महाराज जी से तिथियाँ निश्चित करवा कर घरों में अखण्ड पाठ साहिब करवाने लगे। महाराज भोग के उपरान्त गुरु-शब्द की कथा करते। आज एक के घर, कल दूसरे के घर। इस प्रकार ईश्वरीय वाणी की अमृत-वर्षा कई मास तक होती रही। एक दिन विरक्त महाराज जी ने वचन किया, बाबा जी! साधु को एक स्थान पर अधिक नहीं ठहरना चाहिए, क्योंकि उस स्थान और वहाँ के लोगों से मोह हो जाता है, इसलिए चलो अब यहाँ से कहीं और चलें। बाबा बेअंत सिंह जी बोले महाराज! शरीर वृद्ध हो गया है, चलने-फिरने से असमर्थ होता जा रहा है, इसलिए बैठे हैं। विरक्त महाराज जी मुस्कराकर बोले-जब धक्के देकर निकालेंगे तब भी तो निकलेंगे। बाबा बेअंत सिंह जी ने मुस्करा कर कहा, महाराज! आज किस मौज में आकर वरदान दे रहे हो? दोनों महापुरुष बहुत हँसे। हँसने का पूर्ण अभिप्राय तो वे स्वयं ही जाने, लेकिन ध्यानपूर्वक देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि इस वचन से भविष्य में निकलने वाले परिणाम को अनुभव करके और परमेश्वर के रंग देखकर हँस रहे हों। खैर कुछ दिनों के पश्चात् विरक्त महाराज जी ने तो कालातीत पुरुष की मौज में किसी अन्य स्थान की ओर प्रस्थान किया, लेकिन बाबा बेअंत सिंह जी करतार के रंग में यहीं बैठे रहे। कुछ दिनों पश्चात् परमेश्वर की वह लीला जिसके सम्बन्ध में गुरु अर्जुन देव महाराज ने संकेत किया है—

अंड बिनासी जेर बिनासी उतभुज सेत बिनाधा॥
चारि बिनासी खटहि बिनासी इकि साध बचन निहचलाधा।

(सारंग म: ५ पृष्ठ १२०४)

जिस कुटिया में बाबा बेअंत सिंह निवास करते थे, उसके समीप एक वट वृक्ष खड़ा था। खेत वालों ने उसे ऐसे ही बेच दिया। जिन्होंने खरीदा था, वे उसे उखाड़ने के लिए आ गए। बाबा जी बोले, इसको क्यों उखाड़ते हो? वृक्ष का रोपन तो पुण्य कर्म माना जाता है। फिर इतना बड़ा तो सैंकड़ों वर्षों में होता है। देखो उसकी छाया से कितने लोग लाभान्वित होते हैं, कितने पक्षी इसमें नीड़ बनाकर रहते हैं। फलदार एवं छायादार वृक्षों का रोपन शास्त्रों में पुण्य कर्म बताया गया है। कितने जीव इससे सुख लेते हैं—इसे न उखाड़ो। खरीदने वाले व्यक्ति वचन मानकर वापिस चले गए। जाकर मालिक को सारी बात बताई। वह सुनते ही क्रोध में आ गया। खेत में जाकर बाबा जी को अपशब्द बोले। बाबा जी शान्त चित्त सुनते रहे, आगे से कोई शब्द नहीं कहा। दिन तो किसी तरह व्यतीत हो गया, जब रात्रि आई बाबा जी चुपचाप ही बिना किसी को बताए वहाँ से चले गए। प्रतिदिन के सेवक तो प्रात: चाय दूध लेकर जाते थे-जब कुटिया में पहुँचे तो देखा कि कुटिया खाली है। कुछ देर इधर-उधर देखा कि बाहर गए होंगे, अभी आ जाएंगे लेकिन जब काफ़ी समय तक न आए फिर पूछताछ करने पर कल वाली सारी बात का पता चला। कई व्यक्ति उनकी तलाश में कई स्थानों पर गए तो बाबा जी 'थूहे' गाँव में मिल गए।

प्रेमियों ने प्रार्थना की, बाबा जी वापिस चलो। आपका अपमान एक व्यक्ति ने किया है, लेकिन सारा गाँव बेचैन हो रहा है। हमसे यदि कोई भूल हो गई हो तो क्षमा करें। यदि वहाँ नहीं ठहरना और जिस कुएँ पर चाहो वहाँ रहो। समस्त भूमि आपकी है, लेकिन चलो अवश्य। बाबा जी बोले, प्रेमियो! हमें किसी पर क्रोध नहीं, हम तो प्रभु की आज्ञा में बैठे थे और आदेश में ही यहाँ आ गए हैं। यदि कभी प्रभु की आज्ञा हुई तो आ जाएंगे। हमारी समस्त क्रियाएँ उस प्रभु के अधीन हैं—

जि करावै सो करणा॥
नानक दास तेरी सरणा॥

(सो.म.५ पृष्ठ ६२७)

अत: आप सब घर जाओ, चिंता न करो, हमें किंचित मात्र भी किसी से रंजिश नहीं। यदि प्रभु ने चाहा तो अवश्य आएंगे। प्रेमी उस समय तो चले गए लेकिन कुछ समय उपरान्त फिर आकर प्रार्थनाएं करने लगे। दया के सागर बाबा जी प्रार्थना स्वीकार करके चले गए। वहाँ जाकर लाभ सिंह के कुएँ के ऊपर निवास किया, लेकिन उस पुरानी कुटिया में नहीं गए। पूज्य विरक्त महाराज जी भी समय-समय पर 'लोह सिम्बली' जाते रहते। वे भी लाभ सिंह वाले कुएँ पर ही ठहरते, उस पुरानी कुटिया में फिर नहीं गए।

क्या यह परिवार अपनी भूल क्षमा नहीं कराएगा? क्या ये बेचारे गुरु घर से सदा के लिए निकाले गए? ऐसा नहीं है। वह क्षमा भी कराएगा, क्षमा मिलेगी भी, लेकिन किसी दूसरे शरीर में।*

---

* *बाबा बेअंत सिंह महाराज और पूज्य विरक्त महाराज जी जब अपने जीवन काल में इस कुटिया में नहीं गए, फिर इस परिवार ने अपनी भूल पर पश्चाताप करना आरम्भ किया। समय व्यतीत हो जाने के पश्चात् जिस समय गद्दी पर पूज्य महंत राम सिंह जी आए, परिवार पश्चाताप करके चरणों मे बार-बार प्रार्थनाएं करने लगा कि कुटिया में चरण डालो। हम वहाँ कमरा एवं बाथरूम आदि अन्य सहूलतें बना देते हैं। आप कृपा करके वहाँ अवश्य ठहरो। आप जी ने काफ़ी समय तक तो उनकी प्रार्थनाओं पर कोई ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब अन्तर्दृष्टि से देखा कि इन्होंने अपने किए गए पापों को पश्चाताप के जल से धो लिया तो एक दिन कृपा की। उस परिवार की प्रार्थना स्वीकार करके संगत को साथ लेकर उस पुरानी कुटिया में पहुँचे। एक घंटा उस कुटिया में बैठकर सत्संग किया, उपरान्त संगत में प्रसाद वितरित किया और परिवार की भूल क्षमा की।*

गाँव सईआं-खेड़ा बनाम सऊआ कलाणा

सोनीपत नगर से पंद्रह कि.मी. पश्चिम की ओर, कस्बा गन्नौर से दस कि.मी. पश्चिम की ओर एक गाँव है—सईआं खेड़ा (सऊआ कलाणा)। इस गाँव में यद्यपि सभी जातियों के लोग रहते हैं, लेकिन अधिकता पंगाल गोत्र के जाटों की है। हरियाणा प्रांत का यह कोई पाँच सौ वर्ष का प्राचीन गाँव है। इस गाँव में एक निर्मले साधु रहते थे, संत बचित्र सिंह जी, जो बड़े नेक और उच्च जीवन को धारण करने वाले थे। वे बाहर खेतों में कुटिया बनाकर रहते थे। समीप-समीप के एक-दो गाँवों के बालकों एवं ज़रूरतमंदों को गुरुमुखी एवं गुरुवाणी का शिक्षण प्रायः देते रहते थे। 1939-40 की बात है जब देशाटन करते हुए संयोगवश अथवा दैवयोग से विरक्त महाराज संत निक्का सिंह जी इधर से निकले, संत बचित्र सिंह के प्रेमवश यहाँ कुछ दिन ठहर गए। उस समय आप यद्यपि अधिक एकान्त अर्थात् आम संगत से दूर ही रहते थे, लेकिन फिर भी परागयुक्त पुष्प का भ्रमरों से छिपकर रहना कठिन ही है। इन दिनों शाम सिंह नाम का एक सज्जन आपके श्री चरणों की ओर आकर्षित हुआ। वह आपके चरणों में रहकर गुरुवाणी एवं अन्य वेदान्त के ग्रन्थ पढ़ता रहा। इस प्रकार संत बचित्र सिंह जी एवं इस प्रेमी शाम सिंह के प्रेमवश कुछ समय व्यतीत करके आपने आगे को प्रस्थान किया। समय-समय पर फिर यहाँ आते रहे। इस समय गाँव की दूसरी संगत भी उनके चरणों से जुड़ चुकी थी, लेकिन सत्संग एवं सेवा का अधिक लाभ शाम सिंह का परिवार ही उठाता रहा। समय व्यतीत होता गया। इतने में 1950 का हरिद्वार कुंभ पर्व आ गया। अन्य लाखों यात्रियों की भाँति इस गाँव 'सईआं खेड़ा' से भी काफ़ी संगत एकत्रित होकर कुंभ स्नानार्थ हरिद्वार पहुँची। यहाँ रहकर एक-दो दिन दर्शन स्नान किए। अंततः वैशाखी वाले दिन दैवयोग से हर की पौड़ी पर विरक्त महाराज जी के दर्शन हो गए। संगत दर्शन करके बड़ी प्रसन्न हुई। श्रद्धा प्रेम के साथ नमस्कार की और मन से गद्‌गद् होकर प्रार्थना की, महाराज! परमेश्वर की कृपा से आपके दर्शन से हमारी कुंभ यात्रा सफल हुई। आप कृपा करके हमारे साथ 'सईआं खेड़ा' चलो।

हजूर ने वचन किया, हम तो अब ऋषिकेश जा रहे हैं। यदि आपके पास समय है तो आप भी ऋषिकेश के दर्शन करो। संगत वचन मानकर निर्मल आश्रम ऋषिकेश पहुँच गई। रात को आश्रम में ठहरे, लंगर गुरु-घर से ही लिया और महापुरुषों के दर्शन सेवा का लाभ उठाया। प्रातः उठकर जिस समय विरक्त महाराज जी के दर्शन करने गए तो शाम सिंह की माता जी ने महाराज जी के चरण पकड़ लिए-प्रार्थना की, महाराज! पाँच पौत्रियां हैं, पौत्र कोई नहीं। पौत्र की दात की आप कृपा करो। महाराज मुस्करा कर बोले, भाई! गुरु नानक के घर पदार्थों की निधियां भरी पड़ी हैं और वे देने में समर्थ भी हैं इसलिए उनकी शरण जाकर पौत्र तो क्या, जो इच्छा हो ले आओ। माई ने चरण छोड़े नहीं, चरणों में लिपटी प्रार्थना करती जाए कि महाराज! गुरु नानक हमें कहाँ मिलेंगे। आप ही कृपा करो। हजूर बोले महंत जी को बुलाओ। थोड़े समय पश्चात् महंत आत्मा सिंह जी आ गए। महाराज जी ने वचन किया। महंत जी! इस माई ने अखण्ड पाठ साहिब करवाना है-देखो यदि पाठियों का प्रबन्ध हो जाए तो आज ही शुभारम्भ कर दो। पाठ आरम्भ करके भोग उपरान्त महाराज जी ने आज्ञा की कि माई जाओ अब अपने घर को। गुरु नानक के दर से एक क्या जितने मर्जी पौत्र ले जाओ।

सारी संगत गाँव की ओर वापिस चल पड़ी। इस बात की चर्चा सारे गाँव में हो गई कि शाम सिंह पुत्र-प्राप्ति के लिए ऋषिकेश अखण्ड पाठ करवा कर आया है। गाँव में एक नम्बरदार था-घासी राम जो कट्‌टर सनातनी विचारों का था। वह कहने लगा कि देख लेंगे जब कागज़ पुत्र के वरदान देंगे।

दूसरी ओर गुरु नानक ने कृपा की। दस मास के बाद शाम सिंह के घर पुत्र पैदा हुआ। घर में खुशियां मनाई गईं। शाम सिंह के दो विवाह थे। गुरु नानक ने कृपा की। महापुरुषों का वचन फलीभूत हुआ। दोनों विवाहों में से एक-एक करके छः पुत्र उत्पन्न हुए। इस प्रकार शाम सिंह के घर पुत्रों का बगीचा लग गया। कई वर्षों पश्चात् विरक्त महाराज जी 'सईआं खेड़ा' गए तो शाम सिंह का परिवार और अन्य संगत बहुत प्रेम से मिली। प्रार्थना की, महाराज! आपने कृपा की-एक पुत्र के लिए तरसते थे, आपने छः की कृपा की। हजूर बोले, नम्बरदार घासी राम है? नहीं महाराज-उसका तो देहावसान हो गया है। महाराज थोड़ा मुस्करा कर चुप हो गए। एक दो दिन विश्राम करने के पश्चात् हजूर ने किसी अन्य स्थान की ओर प्रस्थान किया। कुछ समय पश्चात् आप ऋषिकेश ठहरे हुए थे। 'सईआं खेड़ा' गाँव से कुछ संगत ऋषिकेश आई। प्रार्थना की, महाराज! आप कृपा करके 'सईआं खेड़ा' चलो। वहाँ की संगत को दर्शन देने की कृपा करो। हजूर बोले-वहाँ अब नहीं जाएंगे। संगत ने प्रार्थना की कि महाराज! हमसे क्या भूल हो गई- आप क्यों नहीं चलते। हजूर बोले नम्बरदार घासी राम तो वहाँ है नहीं, स्वर्ग सिधार गया है—अब किसलिए जाएं? संगत बोली, महाराज, वह तो आपका कट्टर विरोधी था, आप उसके साथ इतना प्रेम क्यों करते हो? हजूर बोले—बात विरोध अथवा प्रेम की नहीं है—अब तो उससे पूछना था कि कागज़ पुत्र दे सकते हैं कि नहीं! इस प्रकार संगत से प्रेमालाप के पश्चात् वापिस भेज दिया।*

प्रथम बार करनाल जाना

संत रहत सुनहु मेरे भाई॥ उआ की महिमा कथनु न जाई॥ रहाउ॥
वरतणि जा कै केवल नाम॥ अनद रूप कीरतनु बिस्राम॥
मित्र सत्रु जा कै एक समानै॥ प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै॥
कोटि कोटि अघ काटनहारा॥ दुख दूरि करन जीअ के दातारा॥
सूरबीर बचन के बली॥ कउला बपुरी संती छली॥
ता का संगु बाछहि सुरदेव॥ अमोघ दरसु सफल जा की सेव॥
कर जोड़ि नानकु करे अरदासि॥ मोहि संतह टहल दीजै गुणतासि॥

(आसा महला ५, पृष्ठ ३९२)

श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी संत महिमा की चर्चा कर रहे हैं। गुरु बाबा जी फ़रमाते हैं कि वैसे तो संत महिमा कथन में नहीं आ सकती, क्योंकि वह वाणी का विषय ही नहीं है। वह तो 'स्वयं संवेद्य' महिमा महापुरुषों के अपने जानने योग्य ही विषय है, क्योंकि—

ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै॥

(सुखमनी साहिब २७३)

अर्थात् ज्ञानवान् स्वयं ही जानता है-दूसरा नहीं। बल्कि लगता है तो कुछ यूँ है कि इस महिमा को जानने में बाधक अथवा रुकावट है ही दूसरा।

---

* *महापुरुषों की कृपा से इस प्रेमी शाम सिंह के घर दो पत्नियों से अर्थात् माता शान्ति देवी और सुन्दर देवी की कोख से छः पुत्र उत्पन्न हुए। बड़े का नाम दया सिंह, चरण सिंह, सतनाम सिंह, राज सिंह, गोपाल सिंह ये पाँच तो अभी जीवित हैं छठे का स्वर्गवास हो गया है। इनके पिता भाई शाम सिंह का स्वास्थ्य अभी अच्छा है।*

किसी बुद्धिमान् ने प्रश्न किया कि महाराज संत की महिमा पूर्ण रूप से कैसे जानी जाती है? उत्तर मिला—

हउ हउ मै मै विचहु खोवै॥ दूजा मेटै एको होवै।

(पृष्ठ ९४३)

महाराज यह कार्य तो अत्यन्त कठिन लग रहा है। महाराज कोई पर संवेध महिमा ही सुना दो जो हमारी ऊस्थूल बुद्धि को भी समझ आ जाए। गुरु अर्जुन देव जी ने दया करके उपरोक्त शब्दों में महापुरुषों के कुछ बाह्य लक्षणों का वर्णन किया है। ऐसे महापुरुषों का व्यवहार चौबीस घंटे केवल नाम के साथ ही होता है, परमेश्वर का यश, कीर्ति अर्थात् गुणगान रूपी आनन्द में ही वे विश्राम करते हैं। शत्रु एवं मित्र उनके लिए एक समान हैं। अपने प्यारे प्रियतम के बिना वे अन्य किसी को जानते ही नहीं अर्थात् उनकी दृष्टि में द्वैत का नामो-निशान नहीं—

यथा— **ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीऐ एकु एकु वखाणीऐ॥**
आतम पसारा करणहारा प्रभ बिना नही जाणीऐ॥

(बिलावलु महला ५, पृष्ठ ८४६)

ऐसे अद्वैत दृष्टि सम्पन्न पुरुष कोटि-कोटि पाप काटने को समर्थ हैं। जीवों के दु:खं-हर्त्ता अथवा जीवन-दान देने वाले दाते हैं। ऐसे महापुरुष का संग करने के लिए स्वर्ग में इन्द्र भी लालायित रहता है। ऐसे पुरुषों के दर्शन पापों को काटने के लिए मानों अमोघ बाण हैं और उनकी सेवा सब फलों को देने वाली है। जिस माया की ठगी से समस्त संसार एवं तैंतीस कोटि देवता ही नहीं अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और महादेव आदि भी नहीं बच सकें—

ब्रहम लोक अरु रुद्र लोक आई इंद्र लोक ते धाइ॥
साधसंगति कउ जोहि न साकै मलि मलि धोवै पाइ॥
अब मोहि आइ परिओ सरनाइ॥
गुहज पावको बहुतु पुजारै मोकउ सतिगुरि दीओ है बताइ॥ रहाउ॥
सिध साधिक अरु जख्य किंनर नर रही कंठि उरझाइ॥
जन नानक अंगु कीआ प्रभि करतै जा कै कोटि ऐसी दासाइ॥

(गुजरी महला ५, पृष्ठ ५००)

इत्यादि माया जैसी करोड़ों दासियां हैं—ऐसे महापुरुषों की, लेकिन श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी ऐसे महापुरुष में उपरोक्त गुणों से भी एक अन्य विशेषता का वर्णन करते हैं—

सूरबीर बचन के बली॥

(आसा म० ५, पृष्ठ ३९२)

जो वचन एक बार मुख से दे दिया, वह अवश्यमेव पूर्ण करना सम्भवत: इनका जन्मजात स्वभाव है। इसके विपरीत माया से भ्रमित संसारी जीव वचन देकर भले ही इधर-उधर हो जाएं, इसीलिए गुरु साहिब जी को लिखना पड़ा—

बचनु करे तै खिसकि जाइ बोले सभु कचा॥

(डखणे म० ५, पृष्ठ १०९९)

प्रकाश करना जैसे अग्नि का स्वभाव है, इसी प्रकार वचन देकर पूर्ण करना सम्भवत: इनका जन्मजात स्वभाव है। गुरु तेग बहादुर महाराज जी ने वचन दिया, कश्मीरी पंडितों को। वचन पालनकर्त्ता ने शीश तो दे दिया, लेकिन सी नहीं की।

रघुकुल रीति सदा चलि आई।

प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई।

(रामचरितमानस २.२८)

वह देखो! इधर भी आज कुछ ऐसा ही प्रतीत हो रहा है कि पूज्य विरक्त महाराज जी सम्भवत: किसी ऐसे पूर्व दिए वचन को पूरा करने के लिए ही मालियों की मण्डली को साथ लेकर कहीं जाने की तैयारी कर रहे हैं।

1950 का आज वैशाखी वाला दिन व्यतीत हो जाने के साथ ही कुंभ का पर्व भी बारह वर्षों का लम्बा अवकाश लेकर अपने वतन को प्रस्थान कर गया। कुंभ के पर्व पर स्नान करने आए लाखों गृहस्थी भक्त एवं सहस्रों साधु महात्मा भी किसी-किसी को छोड़कर शेष सब हरिद्वार को इस प्रकार अलविदा कर रहे हैं जिस प्रकार चैत्र मास आते ही कूँजें मैदानी इलाके को।

किसी समय श्री गुरु नानक देव महाराज ने अपने स्वरूप गुरु अंगद देव जी को कठोर साधना करते देखकर कहा था-कि तुम इतनी कठोर साधना क्यों करते हो? हमने अपनी समस्त सम्पत्ति तुम्हारे आँचल में डाल दी है। ऐसी ही अलौकिक लीला आज दृष्टिगोचर हो रही है।

बाह्य तौर पर चाहे संत भगत सिंह ही कुंभ पर्व पर आपको करनाल आने की प्रार्थना करके गए थे—लेकिन मुख्य कारण शायद कोई और ही है। ऐसे लग रहा है जैसे किसी पूर्व दिए वचन को पूर्ण करने के लिए प्रस्थान किया है। पता लगा कि 'परम पुरख' (परमेश्वर) का एक दास राजकुमार के रूप में कोई तीन मास तक करनाल आ रहा है-जगत तमाशा देखने के लिए। आपने सम्भवत: कुछ समय पहले उसकी किसी विशेष सेवा पर प्रसन्न होकर अपने दयालु स्वभावानुसार वचन दे दिया था कि ठीक है—

गुरमुखि आवै जाइ निसंगु॥*

(दखणी ओंकारु पृष्ठ ९३२)

अपनी मौज में आ जाना, हम तुम्हारे लिए जगत क्रीड़ा देखने के लिए एक सुन्दर उद्यान लगाकर रखेंगे। अब तुम्हें और कठोर साधना करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि शूरवीर बली जो हुए वचन-पालन के, इसलिए दिए वचनानुसार संत बाबा बेअंत सिंह जी, संत दर्शन सिंह जी, संत शोम सिंह जी एवं स्वामी सच्चिदानंद जी ठुलीवाल वाले आदि महापुरुषों की, मानों मालियों की एक मण्डली लेकर आषाढ़ मास में करनाल पहुँच गए-संत भगत सिंह की कुटिया। राजकुमार या सम्राट उसका आगमन तो आश्विन अथवा कार्तिक में था, लेकिन आपने तीन मास पूर्व ही उद्यान का पालन शुरु कर दिया। एक छोटा सा बाग तो संत भगत सिंह महाराज ने पहले ही लगा रखा था जो करनाल पहुँचते ही आपके चरणों में यह कहकर भेंट चढ़ा दिया कि वे दो भुजाओं वाले साक्षात् विष्णु भगवान् हैं। आपकी जो इच्छा हो अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि चारों पदार्थों को देने के लिए हर प्रकार से समर्थ हैं।

अब आपने उस उद्यान की देखभाल के साथ-साथ हर प्रकार के नए पौधे लगाने आरम्भ कर दिए। एक-दो दिन के पश्चात् विरक्त महाराज जी ने रात्रि के समय बाबा बेअंत सिंह जी के साथ स्वाभाविक बात की कि बाबा जी! संगत है तो शुभ संस्कारी पारमार्थिकी विचारों की, लेकिन गुरु नानक की बात बहुत कम देखने में आ रही है। बाबा बेअंत सिंह जी मुस्कराकर बोले महाराज! फिर देर क्यों? गुरु नानक के घर की नींव रख दो। दूसरे दिन से आप जी ने श्री जपुजी साहिब की क्रमिक कथा आरम्भ कर दी। माता विद्यावती एवं ज्ञानी हरबंस सिंह जी, श्री हँसराज जी छाबड़ा, श्री प्यारा लाल और माता भावां रानी, माता वेद कुमारी, माता सीता, माता शान्ति देवी, ज्ञान सिंह जी एवं माता बिमला देवी आदि दो चार सत्संगी

* *इसके कोई तीन मास पश्चात् महंत राम सिंह जी के पवित्र शरीर का इस संसार में आगमन हुआ।*

परिवारों की एक लघु वाटिका तो पहले ही लगी थी। अब जपुजी साहिब की कथा आरम्भ होने के साथ-साथ और काफ़ी संगत आनी प्रारम्भ हो गई, क्योंकि ये लोग देश पर पड़ी विपत्ति में से गुज़र रहे थे। धन-पदार्थ और घर-घाट तो सब उजड़ ही चुके थे, कईयों के सगे-सम्बन्धी भी इस देश के दु:खदायी बंटवारे के शिकार हो चुके थे इसलिए इनके मन गहरी मानसिक चोट खाकर बुरी तरह से क्षत-विक्षत हो चुके थे। इनमें से कुछ ऐसे थे जैसे लॅभामल जी एक मस्जिद में दिन व्यतीत कर रहे थे और माता भावां रानी जैसे अपने छोटे-छोटे बच्चों सहित महिला आश्रम में समय व्यतीत करने के लिए मजबूर थे। ऐसी दु:खों की सघन काली रात्रि में कोई मार्गदर्शक हो-फिर और क्या चाहिए-अंधे को दो आँखें।

अत: सम्भव है कि इन लोगों के भी कुछ निष्काम पुण्य कर्म फलित होने के लिए सामने आ गए हो, क्योंकि बिना बड़े भाग्य के ऐसे सुन्दर उद्यान में निवास भी कहाँ मिलता है। इस प्रकार कोई पंद्रह दिनों के लगभग जपुजी साहिब की कथा सम्पूर्ण हुई और इतने थोड़े समय में उद्यान का भी पर्याप्त विस्तार हो गया। यहाँ नए और पुराने पौधों को खुराक एवं जल से तरो ताज़ा करके संत भगत सिंह जी और शेष संगत को शीघ्र ही दोबारा आने का वचन देकर किसी प्रेम-बिंधी अन्य आत्मा की तपस दूर करने हेतु पर-उपकारी मेघों के समान आगे को चलते बने।

संत गोपाल सिंह जी

कबीर बेड़ा जरजरा फूटे छेंक हज़ार॥
हरूए हरूए तिरि गए डूबे जिन सिर भार॥

(कबीर श्लोक, पृष्ठ १३६६)

कबीर डूबा था पै उबरिओ गुन की लहरि झबकि॥
जब देखिओ बेड़ा जरजरा तब उतरि परिओ हउ फरकि॥

(कबीर, पृष्ठ १३६८)

गोपाल सिंह को फकीरी तो चाहे पूज्य पिता भगत सिंह जी से विरासत में ही मिली थी, क्योंकि जब वे शेखूपुरे रहते थे तो आप तख्त हज़ारा से साईकल से ही यात्रा करके प्राय: शेखूपुरा सत्संग करते रहते थे। संत भगत सिंह रामायण के प्रकाण्ड विद्वान थे, इसलिए उनसे अर्थों सहित रामायण श्रवण कर परमेश्वर के मिलने के लिए भीतर तड़प पैदा हो गई, लेकिन हृदय के भीतर पूर्व संस्कार गुरु नानक घर के कुछ अधिक थे। यही कारण था कि जब 1923-24 में सिक्ख पंथ की ओर से अंग्रेज़ी सरकार के खिलाफ़ गंगसर जैतों का मोर्चा लगाया गया था, आप उसमें सम्मिलित होकर कुछ समय जेल में भी रहे थे। आपके भीतर अन्य धार्मिक ग्रन्थों की अपेक्षा गुरुवाणी के प्रति श्रद्धा सत्कार तो कहीं अधिक थी ही, परन्तु गुरमुखी अक्षरों को भी श्रद्धा से यह जानकर शीश झुकाते थे कि ये पवित्र अक्षर गुरु अंगद देव महाराज जी द्वारा सृजित थे। मार्ग में जाते समय यदि कोई गुरमुखी अक्षरों वाला कागज़ का टुकड़ा भूमि पर पड़ा दृष्टिगोचर हो जाता तो उसको झाड़ पोंछकर पहले मस्तक पर लगाते फिर बाद में किसी नहर आदि में जल प्रवाहित कर देते। इस प्रकार का भावुक जीवन व्यतीत करते-करते दैवयोग से पूज्य विरक्त महाराज जी का मिलाप हो गया। बस पहले मिलाप के साथ ही मन पूर्णरूपेण उनके श्री चरणों में बिंध गया। दूर-समीप जहाँ भी उनके आने का समाचार मिलता, अपने जीवन के आवश्यक कार्य छोड़कर उनके श्री चरणों में पहुँच जाते। वहाँ उनकी सेवा करते और विरक्त महाराज की के पावन मुख से गुरुवाणी उपदेश के वचनामृत भर-भर कर पान करते। इसका परिणाम यह हुआ कि ईश्वरीय-ज्ञान-अमृत पान कर उनके मन के भीतर सांसारिक रसों की, सांसारिक

सम्बन्धों की और सांसारिक पदार्थों की अग्नि तो चाहे मंद पड़ गई, लेकिन एक और अग्नि तीव्र हो उठी जिसके सम्बन्ध में बाबा फ़रीद का कथन है—

बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानू॥
फ़रीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसानु॥

(फ़रीद, पृष्ठ १३७९)

ऐसी विरह-अग्नि का ज़िक्र आप संत पिता महाराज भगत सिंह जी के पास प्राय: करते रहते थे। संत भगत सिंह जी ने जिज्ञासु पुत्र का दृढ़ निश्चय जानकर और इनके हृदय में मौजूद गुरु नानक घर के संस्कार देखकर एक दिन वचन कर दिया—हे पुत्र! यदि प्रेम अग्नि में कूदने की इच्छा है तो विरक्त महाराज जी की नाव में सवार हो जा। वे पूर्ण मल्लाह हैं और नाव को पार ले जाने में समर्थ हैं।

अब गुलाटी परिवार रूपी वृक्ष का गोपाल सिंह रूपी एक अंग भीतर-ही-भीतर टूट रहा था। ऐसे टूट रहे अंग को वायु का एक तीव्र झोंका ही दरकार था। हुआ भी कुछ ऐसे ही। सन् 1947 के भारत-विभाजन ने आ घेरा। घर सम्पत्ति बर्बाद करवाकर प्राण बचाते बड़ी कठिनाई से शाहपुर गाँव (अम्बाला) पहुँचे। कुछ दिन अर्थात् 1950 तक अर्थात् दो-ढ़ाई वर्ष सुख-दु:ख में व्यतीत किए। एक दिन साईकल पर जाते फौजी गाड़ी के साथ टक्कर हो गई। काफ़ी चोटें आईं। अब मन में एक चिंता कहीं गहरे उतर गई कि हे मन! यदि अब प्राण समाप्त हो जाते, तो मनुष्य जन्म तो कौड़ियों के भाव ही बिक जाता। फिर क्या पता कभी सुलभ होता भी कि नहीं। ये सोच रहे थे, इतने में सम्भवत: घर-परिवार में भी कोई प्रतिकूल परिस्थिति घटित हुई जिसके फलस्वरूप मन क्षत-विक्षत हो गया। इन दो घटनाओं के वायु रूपी तीव्र झोंकों ने गोपाल सिंह रूपी शाखा को गृहस्थ रूपी वृक्ष से विलग कर दिया। समय की प्रतीक्षा तो आप कर ही रहे थे, लेकिन आज तो वे गृहस्थ रूपी सहस्त्रों छिद्रों वाला जर्जर नाव से छलांग लगाकर इसको सदैव के लिए विदा कहकर विरक्त महाराज जी की नाव में जाकर सवार हो गए। टिकट का आरक्षण सम्भवत: कहीं पहले ही किया हुआ था।

गाँव बाबरपुर

कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ॥
माखी चंदनु परहरै जह बिगंध तह जाइ॥

(पृष्ठ १३६८)

निरवैरै संगि वैरु रचाए पहुचि न सकै गवारै॥
कहु नानक संतन का राखा पारब्रहमु निरंकारै॥

(सारंग महला ५, पृष्ठ १२०५)

निरवैरै संगि वैरु रचावै हरि दरगाह ओहु हारै॥
आदि जुगादि प्रभ की वडिआई जन की पैज सवारै॥

(सारंग महला ५, पृष्ठ १२१७)

सतिगुर पुरखु निरवैरु है नित हिरदै हरि लिव लाइ॥
निरवैर नालि वैरु रचाइदा अपणै घरि लूकी लाइ॥

(पृष्ठ १४१५)

निरवैरा नालि जि वैरु चलाइदे तिन विचहु तिसटिआ न कोइ॥
सतिगुर सभना दा भला मनाइदा तिस दा बुरा किउ होइ॥

(श्लोक महला ४, पृष्ठ ३०२)

निरवैरै नालि जि वैरु रचाए सभु पापु जगतै का तिनि सिर लइआ॥
ओसु अगै पिछै ढोई नाही जिसु अंदरि निंदा मुहि अंबु पाइआ॥

(महला ४, पृष्ठ ३०७)

वर्षा ऋतु समाप्त हुई, आश्विन-कार्तिक की सुहावनी ऋतु आ गई अर्थात् न अधिक गर्मी न अधिक सर्दी। सन् 1947 के देश-विभाजन से उत्पन्न धर्मान्धता का खतरनाक बवंडर गुज़रे अभी अधिक देर नहीं हुई थी। कुछ शुद्ध हृदयों वाले पुरुष तो उस समय की घटनाओं को देखकर अभी तक भयभीत हो रहे थे कि ऐसी घटनाएँ पुन: न हों, लेकिन मलिन हृदयों वाले पुरुषों ने अभी भी कुछ शिक्षा नहीं ली। पाप होता तो चाहे बुरा ही है, लेकिन मलिन मन वाले व्यक्तियों को प्रीतिकर होता है—

पापु बुरा पापी कउ पिआरा॥

(पृष्ठ ९३५)

बस मलिन अथवा शुद्ध मन को जाँचने का यही एकमात्र मापयंत्र है—दूसरों के गुणों को देखकर जलना, ईर्ष्या, निंदा, चुगली, बुराई, यारी, ठगी, रिश्वत आदि अवगुणों में मन की प्रवृत्ति होना मानों मन अत्यंत मलिन है। इसके विपरीत उपरोक्त अवगुणों से मन को घृणा होनी—यह शुद्ध मन का चिह्न है। करुणा, मैत्री, मुदिता, पर-उपकार, लोक-मंगल, दान-पुण्य, सत्संग एवं सेवा जैसे बहुमूल्य गुणों में मन का पवित्र होना और भी सोने पर सुहागा है।

पीड़ित संसार पर गुरु नानक की शीतल वाणी की वर्षा करते हुए दर्शन सिंह को साथ लेकर आज बाबरपुर गाँव जा पहुँचे जो नाभा नगर से पश्चिम की ओर लगभग आठ कि०मी० की दूरी पर स्थित है। गाँव से लगभग पौना मील से पश्चिम की ओर एक नहरी रजवाहा प्रवाहित होता है, उसके तट पर चनण सिंह के उद्यान में जाकर निवास किया। लंगर के समय गाँव से मुधकरी कर छक लेना, रात्रि बाग के वृक्षों के नीचे व्यतीत करना, प्रात: रजवाहे में स्नान करके दिन में कुछ समय शांकर भाष्य गीता पर मनन करते रहना। एक दिन बाबरपुर का एक पंडित दैवयोग से अथवा किसी के बताने पर इधर निकल आया। गीता के विचार सुनकर मन प्रसन्न हो गया और महापुरुषों के प्रति मन में श्रद्धा उत्पन्न हो गई।

वर्षा ऋतु समाप्त होने पर आश्विन-कार्तिक के मास में पशुओं में 'मुख खुर' की बीमारी फैल जाती है और कई बार वर्षा के कारण पशुओं के चारे पर जीव जंतु आदि उत्पन्न हो जाते हैं, जिनको खाने से पशुओं को बंध अथवा अन्य कई प्रकार से भयानक रोग पैदा हो जाते हैं जिनके साथ पशु एक दो दिन में ही प्राण त्याग जाता है। उस समय आज की तरह गाँव में इलाज आदि की व्यवस्था नहीं होती थी। कई बुद्धिमान् व्यक्ति समाज के भोले-भाले व्यक्तियों को जादू-टोने के भुलावे में डालकर ठगते रहते थे।

इस गाँव में भी बीमारी ने पशुओं पर शक्तिशाली आक्रमण किया हुआ है। गाँव के कई पशु प्रतिदिन मर जाते। लोग अपने स्वभावानुसार जादू-टोने के सम्बन्ध में सोच रहे थे तो उस पंडित ने सलाह दी कि चनण सिंह के बाग़ में दो महापुरुष आए हुए हैं, मैं दो-तीन दिन से उनकी संगति कर रहा हूँ। मुझे लग रहा है कि वे पहुँचे हुए पूर्ण फ़कीर हैं। यदि जादू-टोना करवाना है तो उनसे ही क्यों न करवा लें। पंडित की नेक सलाह सुनकर लोग एकत्रित होकर बाग में आए और जादू-टोने

के सम्बन्ध में अपनी बात की। महाराज शान्त मुद्रा में बोले—भाई जादू टोना तो हम जानते नहीं। हाँ यदि आपका विश्वास बनता हो तो गुरु ग्रन्थ साहिब की पवित्र वाणी का श्री अखण्ड पाठ साहिब करवा दो। अरदास पशुओं को निमित्त हो—गुरु नानक भली करेंगे। लोगों ने पाठियों की व्यवस्था करके आज्ञानुसार अखण्ड पाठ साहिब करवाया। दैवयोग से बीमारी रुक गई। लोगों के मन में महापुरुषों के प्रति श्रद्धाभाव जागृत हो गया। बहुत से लोग दर्शन सत्संग के लिए आने आरम्भ हो गए, लेकिन ईर्ष्यालु पुरुषों के मन जलने लगे।

बाबरपुर गाँव का एक नम्बरदार और नौहरे गाँव के एक व्यक्ति ने पुलिस में रिपोर्ट करवा दी कि बाबरपुर गाँव में साधुओं के रूप में पाकिस्तान के दो एजेंट बैठे हैं। उन्होंने लोगों को उकसाया है और सारे क्षेत्र का भेद ले रहे हैं। थानेदार जगीर सिंह अपनी पुलिस पार्टी लेकर मौके पर बाबरपुर गाँव आया। आकर महापुरुषों से पूछताछ करनी आरम्भ की। इतने में गाँव के अन्य लोग भी एकत्रित हो गए—सबने मिलकर थानेदार को कहा कि ये पूर्ण महापुरुष हैं। इन्होंने हमारे गाँव में अखण्ड पाठ साहिब करवाकर सबके भले का काम करवाया है और फिर हमारी किसी दी हुई चीज़ को स्वीकार भी नहीं करते, किसी के घर बैठकर भोजन करने की बजाय मधुकरी द्वारा हाथों पर ही खा लेते हैं। थानेदार को एक गीता और एक दो गुरुवाणी की पोथियों के बिना अन्य कोई कागज़ अथवा वस्तु दृष्टिगोचर नहीं हुई। देखकर शर्मिंदा हुए। महाराज जी के पवित्र चरणों पर गिरकर भूल को क्षमा करने के लिए कहा।

महाराज बोले—भाई! इलाके में अमन-चैन रखना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है, इसलिए तुमने कोई ग़लती नहीं की। थानेदार शिकायत कर्त्ताओं की झाड़ फूँक करके वापिस चला गया और इधर महाराज तो—

फ़रीदा जो तै मारनि मुकीआं तिना न मारे घुंमि॥

(पृष्ठ १३७८)

फ़रीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ॥

(पृष्ठ १३८२)

वाली ऊँची अवस्था में विराजमान थे। इस प्रकार कुछ दिन करतार के आदेश में कर्त्तव्य करके अर्थात् नाम वाणी द्वारा जीवों को सुमार्ग दिखाकर ईश्वरीय इच्छानुसार आगे को प्रस्थान किया।

दूसरी बार करनाल गमन

तीव्र ग्रीष्म की ऋतु व्यतीत हो गई। वर्षा ऋतु भी समाप्त हुई, आश्विन-कार्तिक की मीठी-मीठी ऋतु भी अपनी आयु भोगकर विलुप्त हो गई। शरद् के दिन अब आरम्भ हो गए हैं। अपनी मौज में एक दिन महाराज जी ने आज्ञा की कि दर्शन सिंह! छः मास व्यतीत हो गए बग़ीचे से आए हुए को। हृदय में रात भर से तार बज रही है प्रेमियों के प्रेम की खींच में। चलकर बग़ीचे की खबर लें कहीं कोई पौधा मुरझा न जाए। प्रभु ने उस बाग की जो सेवा-संभाल का कार्य सौंपा है! फिर वचन भी दिया था प्राणों से प्यारे किसी प्रेमी को, उठ चलें—नौकरी क्या और आराम क्या! प्रभु की याद में खोए धीरे-धीरे यात्रा करते छोटी कुटिया कर्णपुरी पहुँच गए। संत भगत सिंह और अन्य संगत जो वियोग में पहले ही विह्वल हो रही थी, दर्शन करके गद्गद् हो गई। बूँदा बाँदी तो प्रायः संत भगत सिंह रूपी मेघ की ओर से होती ही रहती थी—लेकिन अब आवश्यकता थी भारी वर्षा की।

सागर से जल भरकर ये बादल शायद आए भी जोरदार वर्षा के लिए ही थे।

एक-दो दिन विश्राम करने के पश्चात् विरक्त महाराज जी के पवित्र हृदय में संकल्प उत्पन्न हुआ कि श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी ने सुखमनी साहिब जी की एक ऐसी पवित्र वाणी उच्चारण की है—जिसमें चारों वेद, छः शास्त्र, अठारह पुराण, सत्ताईस स्मृतियाँ, तोरेत, अंजील, बाईबल और कुरान आदि संसार के समस्त ग्रन्थों का निचोड़ है।

इससे सभी नए-पुराने साधक लाभ उठा सकते हैं, इसलिए क्यों न इसकी व्याख्या की जाए। हृदय में उठी इस ईश्वरीय रहस्य को समझकर आप जी ने 'श्री सुखमनी साहिब' की कथा आरम्भ की। जैसे-जैसे पता लगता गया, संगत की संख्या में वृद्धि होती गई। सुखमनी साहिब का पाठ तो चाहे कुछ प्रेमी पहले भी प्रतिदिन करते थे, लेकिन उसके छिपे रहस्यों से अज्ञात थे, क्योंकि श्री गुरु अर्जुन देव महाराज ने परमार्थ के अमूल्य लालों को शब्दों रूपी तालों के भीतर सुरक्षित रखा है। आज इन लोगों के शुभ कर्मों के फलस्वरूप उन्होंने कोई अपना विशेष दूत समस्त निधियों की चाबियाँ देकर भेजा है कि जाओ इनको दर्शन करा दो। अंत: ईश्वरीय आदेशानुसार विरक्त महाराज जी ने दो-तीन मास में सुखमनी साहिब की पवित्र वाणी की ज्ञान रूपी गर्जना के साथ उपदेश की जोरदार वर्षा की कि कुटिया के चारों ओर प्रेमाभक्ति रूपी जल ही जल हो गया। सभी तृप्त हुए। हर प्रकार के तृषितों को निर्मल जल प्राप्त हुआ, जो प्रेमी संसार एवं परमार्थ दोनों चाहते थे उन्हें सुमार्ग का ज्ञान हुआ—

चारि पदारथ जे को मागै॥ साध जना की सेवा लागै॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २६६)

जो केवल सांसारिक सम्बन्धों के मोह-जाल में ग्रसित थे—उनको भी जगाया—

जह मात पिता सुत मीत न भाई॥
मन ऊहा नामु तैरै संगि सहाई॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २६४)

कुछ शारीरिक व्याधियों से पीड़ित थे और कष्ट उठा रहे थे—उनको भी सुमार्ग के दर्शन हुए—

सरब रोग का अउखदु नामु॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २७४)

कुछ ऐसे श्रद्धालु भी थे जिनके सगे-सम्बन्धी सन् 1947 के भारत-विभाजन में मारे जा चुके थे। उनके अशांत मनों को भी इन संकेतों के साथ धैर्य बंधाया—

नह किछु जनमै नह किछु मरै॥ आपन चलितु आप ही करै॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २८१)

कुछ सज्जन ज्ञान-मार्गी थे जो उपरोक्त उपदेश को मध्यम दर्जे का समझते थे और अपने आपको उत्तम जिज्ञासु समझते हुए शान्त नहीं हो रहे थे। उनको संकेत किया—

अबिनासी सुख आपन आसन॥ तह जनम मरन कहु कहा बिनासन॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २९१)

इस प्रकार आपके पवित्र मुख से अत्यंत रोचक एवं अनुभवी वचनों द्वारा सांझा एवं एकतावादी उपदेश श्रवण कर, प्रत्येक प्रकार के उत्तम, मध्यम, साधक एवं गृहस्थी प्रेमी शान्त हो गए।

इतने में शरद् ऋतु ने जाने की तैयारी कर ली और बसंत ऋतु अपनी सेना सहित आ पहुँची, लेकिन अब इधर कुछ मास पूर्व लगाया बगीचा पूर्ण रूप से खिल गया। अब आपके भीतर भी आदेश की तारें सम्भवत: किसी दूसरी ओर की बज रही थीं, इसलिए पुन: आने का वचन देकर आगे को प्रस्थान किया।

कोई ढ़ाई मास तक किसी दूसरी ओर शान्ति एवं प्रकाश की किरणें बरसाकर भयंकर ग्रीष्म ऋतु में फिर करनाल आ गए। प्रतीत हो रहा था कि बाग़ के पौधों की जड़ों को प्रेम का जल और सत्संग की खुराक डालकर और शक्तिशाली करना

चाहते थे। एक दो दिन ठहरने के पश्चात् संत महाराज भगत सिंह को वचन किया कि महापुरुषों रामायण की सम्पूर्ण कथा सुनाओ।

उन्होंने वचन मानकर वट-वृक्ष के नीचे रामायण की कथा आरम्भ की। संगत भी बड़ी संख्या में श्रवण करती थी। रामायण में प्रेमाभक्ति तो कूट-कूट कर भरी हुई है। इधर संत भगत सिंह जी का पवित्र हृदय भी प्रेम से भरपूर है, इसलिए कथावाचक के नेत्र भी प्रेमाश्रुओं से भीगे रहते थे। कभी-कभी तो जैसे सीता हरण, भरत मिलाप आदि जब गहन प्रेम प्रसंग आते तो आपका गला रुद्ध हो जाता, कण्ठ अवरुद्ध हो जाता, वाणी मौन हो जाती और नयनों से अनवरत जल प्रवाहित होने लगता। संत भगत सिंह जी की ऐसी वैराग्यमयी दशा देखकर आप वचन करते, महाराज! यह नौ लाख वर्ष प्राचीन आख्यान है, त्रेता युग की, अब कलियुग व्यतीत हो रहा है, वर्तमान में विचरण करो, सुख इसी में है और फ़कीर का निज देश भी यही है। वचन-सार समझकर संत भगत सिंह फिर कथा आरम्भ करते। इस प्रकार रामायण की सम्पूर्ण कथा की गई। संगत ने भी भरपूर लाभ उठाया। इस प्रकार आपने संगत को प्रेम के मुक्त भण्डार वितरित करके जब आगे को जाने का संकल्प किया तो संगत ने प्रार्थना की, महाराज! भक्त-वाणी कुछ कठिन है—जो साधारण बुद्धि वाले व्यक्ति को समझ नहीं आती, इसलिए आप कृपा करो उसकी कथा व्याख्या द्वारा तात्पर्य समझाओ। आप बोले, इस समय तो हमारा कहीं और जाने का विचार है, परमेश्वर ने चाहा तो फिर किसी समय आकर भक्त-वाणी की सम्पूर्ण कथा करेंगे। इस प्रकार संगत को धैर्य, विश्वास और फिर आने का वचन देकर ईश्वरीय आदेश में किसी अन्य स्थान की ओर प्रस्थान किया।

गाँव थूहा

राजपुरा शहर से चण्डीगढ़ रोड पर लगभग छः कि॰मी॰ दूरी पर थोड़ा पीछे हटकर एक गाँव बसता है—थूहा। यह काफ़ी बड़ा गाँव है। इस गाँव में यद्यपि मिले-जुले सभी जातियों के लोग बसते हैं, लेकिन अधिक संख्या कम्बोज जाति की है।

ज़िक्र 1952 के करीब का है जब दैवयोग से प्रेरित होकर संत बाबा बेअंत सिंह जी इस नगर में आ पहुँचे। लंगर तो आप मधुकरी करके ही करते थे और रात्रि किसी वृक्ष के नीचे ही व्यतीत कर लेते थे, लेकिन आज एक प्रेमी संत सावन सिंह की प्रार्थना कर उसके कुएँ के मकान में ठहर गए। ईश्वरीय आदेश से बंधे यहाँ कुछ दिन रुक गए। आपके उच्च-आदर्श जीवन का प्रभाव लोगों के मनों पर पड़ते ही चुंबक की भाँति लोग आकर्षित होकर आने लगे। एक दिन गाँव का सरपंच मेहर सिंह दैवयोग से महापुरुषों के चरणों में आया। आपने पूछा! सुरा माँस आदि का सेवन तो नहीं करता? महाराज! सब कुछ करता हूँ। फिर तो बहुत बुरा करता है, बिना कोई पाप किए ही पापों की गठरी सिर पर रख रहा है। शास्त्रों में लिखा है कि चाहे देश का राजा हो अथवा गाँव का अग्रणी, उनका जैसा जीवन होगा उसका प्रभाव लोगों पर अवश्य पड़ता है। यदि नेता का जीवन पतित है उसका प्रभाव लोगों पर पड़ने के कारण लोग भी पतित जीवन वाले हो जाते हैं। उसका फल पापों की गठरी बिना किए ही नेता के सिर पर आ जाती है। यदि नेता उच्च जीवन वाला है तो उसके प्रभाव स्वरूप लोग भी उच्च जीवन वाले हो जाते हैं तो नेता को बिना किए ही पुण्य प्राप्ति हो जाती है। अब तू देख कि किस मार्ग का अनुसरण करना है?

सरपंच बोला, महाराज! कृपा करो ताकि सुरा माँस आदि छूट जाए, लेकिन मैं स्वयं अपने प्रयत्न से नहीं छोड़ सकता। वचन किया—घर से कड़ाह प्रसाद बनाकर ले आ। सरपंच मेहर सिंह देसी घी का प्रसाद घर से बनाकर ले आया। बाबा जी

ने आज्ञा की, परमेश्वर के आगे प्रार्थना कर। सरपंच बोला महाराज! मुझे तो अरदास करनी नहीं आती। बाबा जी ने वचन किया ओ भाई! परमेश्वर अक्षर नहीं देखता, वह तो भावना देखता है इसलिए हाथ जोड़कर उससे माँग 'कृपा करो' सुरा त्याग की। सरपंच ने इसी प्रकार किया। बाबा जी बोले, अब प्रसाद बाँट दे भाई। महाराज! यहाँ तो कोई व्यक्ति ही नहीं, किसे बाँटू। आज्ञा हुई—ऊँचे स्थान पर खड़े देख—जो नज़र आए उसको बुला ले।

सरपंच ने दूर तक देखा तो एक व्यक्ति दिखाई दिया। उसको आवाज़ लगाई कि तुझे बाबा जी बुलाते हैं। व्यक्ति आश्चर्यचकित हुआ कि मेरा जीवन कैसा है, लेकिन संत महाराज जी ने मुझे कैसे बुला लिया? खैर—महाराज जी की ओर चल तो पड़ा, लेकिन भीतर के पापों से भयभीत पसीना-पसीना होता जाए। समीप जाकर नमस्कार की। महापुरुषों ने भी कृपा दृष्टि की, लेकिन बात नहीं की। थोड़े समय तक बैठकर बिना कोई बात किए चला गया, लेकिन भीतर एक कसक सी पैदा हो गई। दूसरे दिन इस कसक से खिंचा फिर चरणों में आ पहुँचा। इस प्रकार चार दिन लगातार जाता रहा। नमस्कार करके बिना कोई बातचीत किए वापिस आ जाता। चौथे दिन नमस्कार करके थोड़ा पीछे हटकर बैठ गया। कुछ मिनटों के पश्चात् महापुरुषों ने पूछा—हे प्रेमी क्या काम करता है? महाराज! चोरी, डकैती, शराब निकालकर बेचना आदि और भी जितने बुरे कार्य हैं मैं सब करता हूँ। तेरा नाम क्या है? जी—ब्राह्मण के घर जन्म हुआ है—नाम कश्मीरी है। तेरे गाँव में और कितने कश्मीरी हैं? जी अकेला हूँ। ससुरे अकेला क्यों है? हम तुम्हारे साथ हैं—आ हमारे पास। पीठ पर थपकी दी, तुम चिंता न करो। अतीत विस्मृत कर दे—अब भविष्य की चिंता कर। पंडित की पीठ पर हाथ क्या रखा—मानों विद्युत-शक्ति द्वारा भीतरी विकारों को भस्मसात् कर रहे हैं। पंडित का शरीर पसीना-पसीना हो गया, नयनों से जल प्रवाहित होने लगा। चरणों पर गिर पड़ा, प्रार्थना की, बाबा जी, मुझे अपना शिष्य बना लो। आज्ञा हुई, शिष्य हमने नहीं बनाना। तुम विवाह करके नेक गृहस्थियों वाला जीवन-यापन करो। महाराज जी मेरा विवाह कौन करेगा? मैं सारे इलाके में बदनाम हूँ। मकान मेरा चार सौ रु० में रहन किया हुआ है, छुड़वाने के लिए मेरे पास पैसे हैं नहीं। मैंने पैसा चोरी द्वारा अर्जित करना था—वह अब नहीं करनी। बिना पैसों के मकान छुड़ाना कठिन है, विवाह होना नहीं। आज्ञा हुई—खेती का काम आरम्भ कर—इस नाम का जाप करता रह—तेरा सब कुछ बन जाएगा। पंडित ने समस्त विकारों को त्याग दिया और किसी के साथ मिलकर खेती का काम आरम्भ कर दिया। रहन वाला मकान छूट गया, विवाह हो गया और नेक गृहस्थी का जीवन आरम्भ हो गया।

पंडित के खेत के समीप संन्यासी साधुओं का एक डेरा था। पंडित कभी-कभी खेत में से उनके पास चला जाता। एक दिन संन्यासी महात्मा ने पूछा—कि तेरा गुरु कौन है? पंडित बोला—कि निर्मले संत हैं। संन्यासी ने कहा कि ब्राह्मण का गुरु निर्मला कैसे हो सकता है? ब्राह्मण का गुरु तो संन्यासी होना चाहिए। पंडित जी ने बाबा जी के समीप आकर प्रार्थना की कि संन्यासी ऐसे कहता था। बाबा जी बोले कि संन्यासी को जाकर पूछना कि संन्यासी, उदासी और निर्मले के अर्थ क्या हैं? पंडित ने जाकर पूछा? संन्यासी बोला कि विचार करके देखें तो अर्थ तो सबके एक ही हैं। पंडित ने कहा कि मेरा गुरु इन नामधारी विशेषणों, धर्मों, सम्प्रदायों से बहुत ऊपर विचरण करता है। सुनकर संन्यासी चुप हो गया।

इस प्रकार पतितों को पावन करते बाबा जी ने यहाँ काफी समय व्यतीत किया। इतने में गाँव से काफ़ी संगत आनी आरम्भ हो गई। पशुओं को पीने वाले जल की कठिनाई को देखकर बाबा जी ने गाँव के लोगों को प्रेरणा दी कि बड़ा सा तालाब खोदो जिसमें पूरा वर्ष भर पानी खड़ा रहे ताकि वे बेचारे मूक पशु पूरा वर्ष लाभ उठा सकें। गाँव के लोग बाबा जी

का वचन मानकर तालाब खोदने लगे। कश्मीरी लाल पंडित का भाई सरकारी वन उखाड़ विभाग में करेन का चालक था। उसके द्वारा विभाग से पचास रु० रोज़ पर करेन किराए पर ली गई। उसकी सहायता से तालाब की खुदाई शीघ्र हो गई और आज तक मौजूद है।

इसी प्रकार गाँव के मार्गों में मिट्टी डलवाकर उन्हें ऊँचा करवाया ताकि सब लोग आसानी से आ-जा सकें। फिर गाँव के लोगों को आज्ञा दी कि देसी घी का कड़ाह प्रसाद बनाकर यज्ञ चलाओ। प्रेमियों ने आज्ञा मानकर यज्ञ आरम्भ किया तो सब अमीर-निर्धन छकते रहे, लेकिन दोपहर के पश्चात् संगत को कुछ ऐसे लगा कि यज्ञ समाप्त होता जा रहा है। बाबा जी के समीप आकर प्रार्थना की। बाबा जी बोले! गुरुनानक का यज्ञ कम कैसे हो सकता है। आप डरो नहीं! यज्ञ पर गुरुनानक का कृपा-हस्त है। इतने में नलवी गाँव से बाबा जी के पुराने साथी दो कनस्तर देसी घी लेकर आ गए—देखकर सेवकों के सब संशय दूर हो गए। इतने में किसी ईर्ष्यावादी ने डूमनी मधुमक्खियों को उड़ा दिया तो मक्खियों को देखकर संगत दौड़ने लगी। बाबा जी ने कहा कि भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं—ये तो गुरु नानक के आदेश से लंगर में अमृत सदृश मधु डालने आई हैं—इसके साथ लंगर और भी स्वादिष्ट हो जाएगा। ऐसा ही हुआ। थोड़े समय बाद सब मक्खियाँ भाग गईं। यज्ञ सायंकाल तक लगातार चलता रहा। अब बाबा जी का यहाँ से जाने का संकल्प जानकर संगत ने प्रार्थना की कि महाराज जी आप यहाँ से मत जाओ। कृपा करके यहीं रहो। बाबा जी ने कहा कि अब तो हमारे जाने का संकल्प है—फिर कभी आएँगे और अपने साथ एक पूर्ण पुरुष को लेकर आएँगे जो आपको गुरुवाणी के छिपे रहस्य समझाएगा। इस प्रकार संगत को प्रेम और दोबारा आने का वचन देकर चले गए। कुछ मास पश्चात् अर्थात् 1954 के करीब विरक्त महाराज जी को साथ लेकर थूहे गाँव गाए। इस बार बाबा बेअंत सिंह जी तो पुराने स्थान पर संत सावन सिंह के कुएँ पर ही रहे, लेकिन विरक्त महाराज जी गुरदयाल सिंह के खेत में घास-फूस की एक छोटी कुटिया बनाकर रहे। उसके पश्चात् विरक्त महाराज जितनी बार भी थूहे गए, इसी पर्णकुटी में ठहरते रहे।* इतने समय में गाँव की पर्याप्त संगत भी आपके चरणों से जुड़ गई जो अंत तक लगी रही।

लॅभा मल जी और कुछ अन्य प्रेमियों का शरण में आना

पूर्व वचनानुसार आप 1953 में करनाल पहुँच गए। जैसे-जैसे संगत को पता लगता गया, दर्शनार्थ आनी आरम्भ हो गई। सत्संग तो महाराज भगत सिंह जी प्रतिदिन करते ही थे, इसलिए संगत भी प्रतिदिन आती थी, लेकिन आप जी के आने पर संगत की संख्या में और वृद्धि हो गई। श्रद्धालुओं ने प्रार्थना की कि महाराज आपने! वचन किया था कि जब दोबारा आएँगे, भक्त-वाणी की कथा करेंगे, इसलिए कृपा करो, अब सुनाओ! प्रेमियों की प्रार्थना स्वीकार करके आपने भक्त-वाणी की क्रमानुसार कथा आरम्भ की। मास सम्भवत: कुछ गर्मी का था, इसलिए आंगन में खड़े वट वृक्ष के नीचे बैठे कथा किया करते थे। कथा में आप परमार्थ के सभी विषयों को जैसे—निष्काम कर्म, निष्काम सेवा, नाम की निरंतरता, प्रेमाभक्ति और ज्ञान-मार्ग की पूरी तरह व्याख्या करते, लेकिन अत्यंत सरल शब्दों में, सुनने वाले प्रत्येक व्यक्ति को भली-भाँति समझ लग

---

* *थूहे गाँव में बहुत सुंदर रूप में बनी मौजूद कुटिया ठीक वहीं सुशोभित है जहाँ विरक्त महाराज जी* 'छन' बनाकर जीवों का उद्धार करते रहे।

जाती थी इसलिए प्रतिदिन संगत का आना-जाना बढ़ता गया। माता बिमला एवं गुरबचन सिंह (डायमंड वाले) भी इन दिनों में ही शरण आए। इन लोगों के घर घाट तो पाकिस्तान में रह गए थे, इसलिए इधर अभी बहुत से मस्जिदों अथवा सरकारी कैंपों में दिन गुज़ार रहे थे।

ऐसी ही एक बेघर हुई विधवा माई नाम भावां रानी था—जो एक पुत्री, प्यारा लाल और जगन्नाथ दो पुत्रों का पालन-पोषण लोगों के घरों में मेहनत-मज़दूरी करके करती थी, लेकिन घर न होने के कारण निवास महिला आश्रम में ही रखा हुआ था। इसी स्त्री के धार्मिक एवं संत-सेवी संस्कार अत्यंत प्रबल थे, इसलिए छोटी कुटिया सत्संग कथा प्रवचन सुनने के लिए प्राय: प्रतिदिन आती थी। यह स्त्री लॅभामल नाम के एक सेठ के घर मज़दूरी करती थी, इसलिए लॅभामल की धर्मपत्नी माई करतार कौर को प्रतिदिन प्रेरणा करती रहती थी कि आप कुटिया चलकर देखो—वहाँ प्रतिदिन अमृतवर्षा होती है। एक बहुत उच्चकोटि के महापुरुष कुटिया आए हुए हैं जो प्रतिदिन भक्त-वाणी की कथा करते हैं। माई करतार कौर यद्यपि संत सेवी स्वभाव वाली थी, लेकिन लॅभामल का पूर्व सम्बन्ध चूहड़काने का था जहाँ गुरु नानक साहिब ने सच्चा सौदा किया था, इसलिए उसका निश्चय गुरु नानक साहिब के बिना किसी अन्य साधु-संत पर नहीं था। इसलिए माता करतार कौर भी उसकी आज्ञा के बिना कहीं जा नहीं सकती थी, लेकिन माता भावां रानी अपने स्वभावानुसार प्रेरणा करती रहती थी।

इस प्रकार कथा के कुछ दिन व्यतीत हो गए, अब सम्भवत: संयोग का कोई अवसर आया। श्री हँसराज छाबड़ा का लॅभामल के साथ कुछ प्रेम था। वे एक दिन प्रेरणा करके लॅभामल को कथा सत्संग में ले आया। लॅभामल को कथा सुनकर कुछ शान्ति का अनुभव हुआ। फलस्वरूप प्रतिदिन आना आरम्भ कर दिया, लेकिन महाराज जी के समीप बहुत कम आते थे। सबसे पीछे बैठकर कथा श्रवण करना और वहीं से वापिस चले जाना। एक दिन अन्तर्यामी दाते ने समीप बुलाकर पूछा—तुम्हारे घर में लस्सी होती है? हाँ महाराज दूध तो प्रतिदिन बिलोते हैं, यदि आप की आज्ञा हो तो ले आऊँ। महाराज बोले—हाँ प्रेमी लस्सी पीनी तो है। घर जाकर करतार कौर को सारी बात बताई। वह तो पहले ही प्रतिदिन उनकी शोभा सुनती थी, बस दोनों पति-पत्नी घर से मक्खन एवं लस्सी लेकर कुटिया पहुँचे। सारे महापुरुषों को प्रेम सहित मक्खन लस्सी छकाई। बस आज से यह सेवा प्रतिदिन के लिए आरम्भ हो गई।

फिर एक दिन लॅभामल ने प्रार्थना की—महाराज मेरे घर चलकर लंगर छको। आपजी ने आज्ञा की, कल चलेंगे, लेकिन एक शर्त है कि लंगर में मिस्सी रोटी एवं लस्सी हो और कुछ नहीं बनाना और आएँगे भी पाँच साधु। विरक्त महाराज जी का किसी के घर जाकर भोजन करने का यह पहला अवसर था। इस प्रकार गुरु नानक के घर का उद्यान प्रतिदिन बढ़ने फैलने लगा। कोई ढ़ाई मास भक्त-वाणी की पावन कथा द्वारा अमृतमय वर्षा होती रही अर्थात् ढ़ाई मास में कथा सम्पूर्ण हुई। यह समस्त कथा एक वकील की धर्मपत्नी श्रीमती तेज कौर साथ-साथ लिखती रही। अब आप कहीं और स्थान पर जाना चाहते थे, लेकिन संगत बहुत रुदन किए जा रही थी। बार-बार प्रार्थना करते थे कि महाराज जाओ नहीं। हजूर बोले—अब तो बाबा नानक की आज्ञा कुछ ऐसी ही है—कभी प्रभु ने चाहा तो फिर आएँगे। इस प्रकार संगत को धैर्य बँधाकर ईश्वरीय आदेश में बँधे किसी अन्य पीड़ित का दर्द निवारण हेतु नए स्थान की ओर प्रस्थान किया।*

---

* *हँसराज छाबड़ा और प्यारा लाल के अनुसार।*

पूर्व की यात्रा

वर्णन 1954 के किसी समय का है। एक दिन प्रातः ही आदेश हुआ, दर्शन सिंह! भाई-ईश्वरीय नाद हो रहा है, दर्शन करें उन पवित्र स्थानों के जिन को कभी धन्य किया था दीन-दुनिया के मालिक ने आदि शरीर में और पवित्र किया था अपनी चरण धूलि से नौवें शरीर में—जब हिन्द की चादर कहलाए थे—उस समय। संत दर्शन सिंह जी के मुख से तो शायद 'नहीं जी' शब्द कभी निकला ही नहीं था। वचन सुनकर संत सोम सिंह जी ने भी साथ जाने की आज्ञा माँगी—जो स्वीकार हुई। धीरे-धीरे स्थानों के दर्शन करते हुए पहुँच गए श्री प्रयागराज तीर्थ जहाँ समाती हैं यमुना और सरस्वती गंगा में। शायद यह वही स्थान है जहाँ माया के दो गुण—रजोगुण और तमोगुण, सतोगुण में लीन होते हैं। उपयुक्त ही है रजोगुणी, तमोगुणी आदि निम्न देशों के जीव तो यहाँ आते होंगे अपनी त्रिगुणात्मक मल उतारने के लिए, लेकिन ये तो 'तुरीय' नगर के निवासी लगते हैं। ये यहाँ क्यों आए हैं? आगे से उत्तर मिला ये स्वामी हैं उन स्थानों के—इनके अपने पर-उपकारी स्वभावानुसार जीवों की भलाई के लिए इन मातृ-लोकों के तीर्थों की सर्जना की थी ताकि ये बेचारे जीव यहाँ से सतोगुणी मार्ग का अनुसरण करके तुरीय नगर पहुँच सकें। फिर समय-समय पर आते भी रहे हैं इन स्थानों की संभाल एवं शुद्धता के लिए, क्योंकि इनके स्वामी जो हुए।

ये पर-उपकारी अपने देश से एक औषधि लेकर आते हैं—यहाँ छिड़कने के लिए—जिसको कह सकते हैं 'चरण धूलि'। यदि ऐसा न करें तो यहाँ भी रजोगुण और तमोमुण की दुर्गंध फैल जाए। शंकावादी ने प्रश्न किया—क्या कोई इस बात का लिखित प्रमाण है? उत्तर मिला एक नहीं अनंत हैं, लो—सुनो!

तीरथ नातै पाप जानि पतित उधारण नाउ धराइआ॥
तीरथ होन सकारथे साध जनां दा दरसनु पाईआ॥

फिर शंका हुई कि ऐसे साधु के लक्षण क्या हैं? उत्तर मिला—

साध होइ मन साधिकै चरण कवल गुर चिति वसाइआ॥
उपमा साध अगाधि बोध कोटि मधे को साधु सुणाइआ॥
गुरसिख साध असंख जगि धरमसाल थाइ थाइ सुहाइआ॥
पैरी पै पैर धोवणे चरणोदकु लै पैरु पुजाइआ॥
गुरमुखि सुख फलु अलखु लखाइआ॥

(वार २३ पउड़ी २, भाई गुरदास जी)

यथा— **गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहि उदमु धूरि साधू की ताई॥**
किलविख मैलु भरे परे हमरै विचि हमरी मैलु साधू की धूरि गवाई॥

(मलार महला ४, पृष्ठ १२६३)

यथा— **नानक धूड़ि पुनीत साध लख कोटि पिरागे॥**

(पृष्ठ ३२२)

कुछ समय यहाँ विश्राम करने के पश्चात् आगे को प्रस्थान किया—उस अयोध्यापुरी की ओर जहाँ त्रेता युग में हरि ने कुछ नाटक लीला की थी। फिर यहाँ से काशी की ओर गमन किया जहाँ विद्या ग्रहण करते कुछ समय व्यतीत किया था। यहाँ

कुछ दिन ठहरकर पुराने संगी साथियों को मिले, फिर आगे प्रस्थान किया और धीरे-धीरे मंजिल पर पहुँच गए जहाँ कभी हरि ने की थी बाल लीला—दसवें शरीर को धारण कर पटना साहिब। यहाँ कई दिन गुरुद्वारा भैणी संगत ठहरकर जन्म स्थान और बाल लीला आदि पवित्र स्थानों के दर्शन आदि करके धीरे-धीरे गुरु नानक एवं गुरु तेग बहादुर के पवित्र स्थानों के दर्शन करते, 'गया' जी पहुँच गए। कुछ दिन यहाँ निवास किया, फिर एक निर्मला संत किशन हरि भी आज्ञा लेकर साथ हो लिए। यहाँ से बुद्ध गया के दर्शन करते हुए कलकत्ता की ओर प्रस्थान किया और धीरे-धीरे कलकत्ता पहुँच गए। यहाँ गुरु साहिबान से सम्बन्धित कुछ स्थान हैं जैसे गुरुद्वारा 'बड़ी संगत' 'छोटी संगत' आदि और 'गंगा सागर' की यात्रा करके वापिस तिरोहित देश की ओर उन्मुख हुए। राजगिरी आदि स्थानों के दर्शन करते हुए 'राँची' पहुँच गए। यहाँ नगर से बाहर एक छोटी-सी नदी के किनारे एक स्थान है जिसको लोग 'टूटी झरना' के नाम से जानते हैं। इस स्थान पर एक विशाल वृक्ष के नीचे आसन लगाया। यहाँ नगर का कोई व्यक्ति नहीं आता, क्योंकि समीप ही एक आश्रम है मानसिक रोगियों के लिए, जिसको साधारण बोलचाल की भाषा में पागलखाना कहा जाता है। इन लोगों को नींद आदि कम आती है इसलिए दिन-रात एक दूसरे को गाली-गलौच करते रहते हैं। प्रभु ही जानता है कि राजा जनक के समान आपने इस पुरी को अपना निवास स्थान क्यों बनाया है? यह मानवीय बुद्धि से परे का प्रश्न है। खैर-भूख लगने पर किसी बस्ती से प्रसाद लेकर छक लेना और फिर चौबीस घंटे किसी ईश्वरीय रंग में लीन रहना। इस प्रकार कई दिन व्यतीत हो गए।

एक दिन संत किशन हरि ने प्रार्थना की महाराज! यहाँ से कहीं दूर जाकर निवास कर लें। ये पागल व्यक्ति सारी रात सोने नहीं देते। आप बोले संत जी—नौकरी क्या और नींद क्या? जिसकी नौकरी करनी है उसके आगे नखरा क्या? जहाँ चाहे रखे। डॉक्टर क्या और मरीज़ से दूरी क्या? दैवयोग से प्रभु की आज कुछ ऐसी लीला हुई कि एक प्रेमी इधर आ निकला या वह कुछ दिनों से देख रहा था अथवा किसी अज्ञात शक्ति द्वारा प्रेरित—यह तो गुरु ही जाने। आकर देखा—ये तो पुरियों के स्वामी प्रतीत हो रहे थे, लेकिन बैठे हैं पागलखाने के समीप एक नाले के किनारे-एक वृक्ष के नीचे। फिर मन में क्या—

सगली धरती साध की॥

यह सारी पृथ्वी तो क्या, ब्रह्माण्डों के स्वामी हैं—जहाँ चाहे वहाँ बैठें—इनको कौन रोक सकता है। यहाँ बैठने का भी इनका कोई विशेष प्रयोजन हो सकता है। खैर—प्रार्थना कर लेते हैं—यदि स्वीकार हो गई तो हमारा सौभाग्य। न स्वीकार हुई तो समझेंगे अभी कर्म साथ नहीं दे रहे। समीप जाकर बड़ी श्रद्धा से नमस्कार की। फिर प्रार्थना की कि महाराज! नगर के समीप मेरा एक उद्यान है, आप कृपा करके वहाँ निवास करो। हजूर बोले—प्रेमी! तेरा नाम क्या है और क्या काम करता है? महाराज—मेरा नाम करतार सिंह है। वस्त्र का व्यापार करता हूँ। उसका प्रेम देखकर साथ चल पड़े और उद्यान में जाकर निवास किया।

करतार सिंह ने प्रार्थना की, महाराज! लंगर प्रतिदिन हमारे घर से आ जाएगा—इसलिए आप मधुकरी करने न जाना—इस सेवा के लिए मुझ पर कृपा करो। हजूर उसके प्रेम पर रीझकर बोले—हे प्रेमी! यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो ऐसा ही कर। बजाए घर से लंगर भेजने के यही सूखा राशन भेज दे—हम स्वयं ही पकाकर खा लिया करेंगे। करतार सिंह ने प्रार्थना की, महाराज! फिर यहाँ मैं एक नौकर छोड़ देता हूँ—वह पकाकर छका दिया करेगा। हजूर ने स्वीकृति दे दी। इस प्रकार प्रभु के

प्रेम में भीगे समय व्यतीत हो रहा था। अब परमेश्वर की ओर से अचानक एक घटना घटी, करतार सिंह पर एक जबरदस्त खर्चा आ पड़ा।

उसने अपनी बेटी की सगाई पटना तय की हुई थी। उसका विवाह निश्चित हो गया। घर सब सामान एकत्रित करके विवाह की तैयारी पूरी कर ली। बारात आने में केवल दो दिन शेष रह गए। घर में हलवाई पकवान बना रहे हैं। स्वयं खुशी-खुशी प्रात: ही घर से दूध ले जाकर हजूर के दर्शन करने गया—आगे क्या देखा कि महापुरुष ऊँचे स्वर में पढ़ रहे थे—

दुखु विच सूख मनाई, पियारे, दुख विच सूख मनाई॥
दुखु विच सूख मनाई, पियारे, दुख विच सूख मनाई॥
सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना॥
हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना॥
उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना।।
जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना॥

(ग: म ९, पृष्ठ २१९)

शब्द को पूर्ण कर महाराज किसी गम्भीर मुद्रा में मौन हो गए। करतार सिंह घर आकर अपने कारोबार में निमग्न हो गया। उसी दिन सायं को एक घटना घटी। उसका कोई दस वर्ष का बेटा खेल रहा था। उसके पाँव में एक काँच का टुकड़ा काफ़ी अंदर चला गया। शीघ्रता में डॉक्टरों के पास पहुँचा सारी रात डॉक्टर इलाज करते रहे, लेकिन बच्चे की हालत बिगड़ती गई और अंतत: प्रात: बच्चे ने प्राण त्याग दिए। घर में हाय-तोबा मच गई, विवाह का रंग दु:ख में बदल गया। कुछ लोग कहने लगे-बारात कल आऐगी उसे आज ही रोक देना चाहिए और विवाह कुछ दिन आगे निश्चित कर दिया जाए आदि।

करतार सिंह के कानों में महाराज के वे शब्द गूँजने लगे-दु:ख में सुख मनाना। हैरान हो रहा है कि महाराज पहले ही जानते थे कि यह घटना घटित होगी। जब भीतर दृढ़ विश्वास पैदा हो गया-सब को कह दिया कि बारात को रोकना नहीं है जो कुछ होना था हो गया। यह पहले ही निश्चित था। तब महाराज जी ने कल प्रात: ही संकेत कर दिया था, लेकिन मैं समझा नहीं। उद्यान में जाकर महाराज जी के पवित्र चरणों में नमस्कार करके सारी घटना सुनाई। हजूर ने धैर्य बंधाया कि भाई! यही गुरुमुख जीवन है, प्रत्येक दु:ख सुख में उस प्रभु के आदेश को देखना। आदेश हमारे कर्मानुसार होता है, वह प्रभु तो सदैव अलिप्त है—

सुखु दुखु पुरब जनम के कीए॥ सो जाणै जिनि दातै दीए॥

(पृष्ठ १०३०)

दु:ख-सुख हमारे ही पूर्व किए कर्मों का फल होता है, लेकिन फलदाता परमेश्वर सदैव देख रहा है, इसलिए उसकी रज़ा में रहना ही उसके साथ सच्चा प्रेम है। खैर! जैसे-तैसे विवाह का कार्य सम्पन्न हो गया। अब करतार सिंह की श्रद्धा-निष्ठा महाराज पर चट्टान के समान दृढ़ हो गई।

इन दिनों धर्म सिंह सेठी नाम का एक श्रद्धालु महाराज के चरणों में आने लगा। यह श्रद्धालु राँची में कोई ठेकेदारी का काम करता था। काम भी अच्छा चल रहा था, लेकिन किसी काम के कारण पिछले कुछ समय से कारोबार मंदा रहा। मन ने गहरी चोट खाकर परमार्थ की ओर रुख किया। लंगर के समय महाराज को लंगर छकाना, बर्तन आदि साफ़ करने, फिर

सारा दिन गुरुवाणी का पाठ करना अथवा किस ग्रन्थ का विचार करते रहना। एक दिन महाराज अपनी मौज में आम के वृक्ष के नीचे बैठे थे, यह सेठी प्रेमी लंगर लेकर आया। जब हजूर लंगर छकने लगे तो एक कुत्ता समीप आया। महाराज बोले— कि इसको एक डंडा मार। सेठी समीप होकर कहने लगे कि महाराज! **बलिहारी कुदरत वसिया।** हजूर बोले तेरा ज्ञान फिर देखेंगे इसको दूर हटा।

लंगर छककर कहने लगे, वास्तविक ब्रह्म-ज्ञान का पता तब चलता है जब कोई चोट लगती है। चार अक्षर पढ़-सुन लेने से ब्रह्मज्ञान नहीं होता। वह तो किसी स्थिति का नाम है—**घट-घट मै हरि जू वसै।** केवल जल का ग्रंथ पढ़ लेने से प्यास शान्त नहीं होती जब तक वास्तविक जल ग्रहण न कर लिया जाए।

इस प्रकार किसी अलौकिक रंग की खुमारी में कई मास व्यतीत हो गए। इधर करनाल की संगत को लगभग डेढ़ वर्ष व्यतीत हो गया—दर्शन किए। इतना प्रेम उँडेल देना और फिर डेढ़ वर्ष तक दर्शन न देना। इतना लम्बा अन्तराल असहनीय था। संगत व्याकुल हो उठी। हृदय में ऐसे शब्द बार-बार गूँज रहे थे—

जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ॥
ध्रिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा॥

(म० २, पृष्ठ ८३)

अपने-अपने ढंग से मंदिरों, गुरुद्वारों में प्रार्थना करने लगे—

माधो साधू जन देहु मिलाइ॥
देखत दरसु पाप सभि नासहि पवित्र परम पदु पाइ॥

(बसंतु हिंडोल म० ४, पृष्ठ ११७८)

लेकिन कहीं से पता न चला। एक दिन संगत ने एकत्रित होकर विचार किया—यहाँ, वहाँ, कहाँ से पता करें आदि। अंततः निर्णय हुआ कि समाचार-पत्र में खबर दी जाए ताकि कोई प्रेमी समाचार-पत्र में खबर पढ़कर पत्र आदि लिख दें। निर्णयानुसार खबर दे दी गई कि यदि किसी को महाराज के सम्बन्ध में पता लगे तो इस पते पर पत्र डाल दें, समस्त संगत उसकी कृतज्ञ होगी। कुछ दिनों पश्चात् डायमंड सोडा वाटर फर्म के नाम एक पत्र मिला जिसमें दोनों ओर ओम सतिनाम, फिर ओम सतिनाम लिखा हुआ था। इसके बिना न तो किसी का नाम था न पता।

सारा पत्र संगत को सुनाया। सबने पत्र को नमस्कार किया। कुछ धैर्य बंधा, लेकिन पता था नहीं, कहाँ जाया जाए और कहाँ से पता किया जाए? अंततः गुरबचन सिंह (डायमंड वाले) एक लड़के प्यारा लाल को साथ लेकर डाकखाना पहुँचा। डाकखाना वालों ने पत्र देखकर बताया कि पत्र रांची से आया है, क्योंकि मोहर राँची की लगी है। बस कुछ अनुमान सा लग गया। हरबंस सिंह ज्ञानी, गुरबचन सिंह डायमंड और लॅभामल जी आदि तीन सज्जन राँची की ओर चल पड़े। मार्ग में एक स्थान पर लॅभामल जी की तबीयत खराब हो गई इसलिए वह तो वापिस आ गए, शेष दोनों राँची पहुँच गए। एक-दो दिन ढूँढने पर पता चल गया, तो जाकर महाराज के चरणों में नमस्कार की। महाराज ने भी मुस्कराते हुए अत्यंत करुणामयी दृष्टि से देखा। दोनों ने महाराज को सारा हाल सुनाया कि समस्त संगत आपके दर्शनों के लिए मछली की भाँति व्याकुल है। कृपा करो करनाल चलकर संगत को दर्शन दो। कृपा-सागर दाता का भक्त वत्सल हृदय द्रवित हो गया और उसी समय करनाल की ओर प्रस्थान किया।*

---

* *संत किशन हरि के द्वारा जो उस यात्रा में साथ थे एवं करनाल सम्बन्धित समस्त हाल प्यारा लाल के माध्यम से प्राप्त हुआ।*

लॅभामल

1957 के किसी समय का वर्णन है जब लॅभामल जी कुछ मानसिक दृष्टि से परेशान से थे। इसके स्पष्ट कारण तो दो ही थे—एक तो कारोबार में मंदापन-क्योंकि देश के बँटवारे से पूर्व आप ज़िला शेख़ूपुरा के गाँव में रहते थे। वहाँ कुछ भूमि भी थी और कुछ दुकान आदि का काम भी था इसलिए इलाके के श्रेष्ठ साहूकारों जैसा जीवन व्यतीत कर रहे थे। परमेश्वर की लीला कि देश में बँटवारे वाली घटना घट गई। सब कुछ लुटाकर छोटे-छोटे बच्चों को साथ लेकर अपने प्राण बचाकर बड़ी मुश्किल से करनाल पहुँचे। यहाँ एक मस्जिद में निवास किया। कुछ समय पश्चात् सरकार ने पाकिस्तानी जायदाद के बदले आबंटन आरम्भ किया, तो इनको करनाल में एक छोटा-सा मकान मिल गया और कोई 3½ एकड़ भूमि करनाल के समीप डॅबरी गाँव में एलाट हो गई। आरम्भिक अवस्था समृद्ध एवं सम्पन्न घर में व्यतीत हुई थी, लेकिन अब श्रम-मज़दूरी करके दिन काटने वाली बात थी। पाँच बच्चे और दो स्वयं अर्थात् सात सदस्यों वाले परिवार की आजीविका अब कठिन हो गई थी। बड़े दोनों पुत्र—बनारसी लाल और अमरीक चन्द कनस्तरों को ढक्कन लगाने और ट्रंकों आदि की मुरम्मत करके कंजूसी से खर्च के साथ घर की आजीविका चला रहे थे। शेष तीनों अर्थात् दो पुत्री एवं एक पुत्र अभी छोटे थे।

एक तो लॅभामल की चिंता का मुख्य कारण यह था अर्थात् साहूकारी से मज़दूरों वाला जीवन व्यतीत करने का और दूसरा कारण था दु:ख-सुख में सहायता करने वाले विरक्त महाराज जी के प्रति अत्यंत प्रेम, जो चूहड़काणे में 'सच्चा सौदा' के सृजक जगत गुरु श्री नानक देव महाराज जी की पवित्र स्मृति पुन: पुन: ताज़ी करता था। चूहड़काणे निवास समय श्री गुरु नानक देव महाराज जी के पवित्र स्थल 'सच्चा सौदा' के प्रतिदिन दर्शन करते, मानों गुरु साहिब के दर्शन हो जाते थे। उस गुरु-स्मरण के वियोग को विरक्त महाराज जी के मिलाप ने बहुत सीमा तक पूर्ण कर दिया था, लेकिन अब विरक्त महाराज जी के वियोग में भी डेढ़ वर्ष का लम्बा समय व्यतीत हो चुका था और उस पर उनका कोई पता भी नहीं लग रहा था। इस प्रकार वे कुछ विक्षिप्त से हो गए थे। अचानक उनका राँची में होने का पता चला और उत्साह सहित लाने के लिए तैयार भी हुए, लेकिन भाग्य अभी साथ नहीं दे रहा था, क्योंकि शारीरिक व्याधि के कारण मार्ग में से ही लौटना पड़ा। अब तो दिल टूट गया कि हे प्रभु! मैं इतना अभागा हूँ—मेरे साथी तो दर्शन करें और मुझ भाग्यहीन को लौटना पड़ा। अब मन टूट गया, सारा दिन घर के भीतर पड़े रहना, किसी से बात न करनी। अंतत: परिवार के सदस्यों ने डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने बताया कि कोई बीमारी तो है नहीं, इनको कोई मानसिक चिंता सता रही है। इस प्रकार समय व्यतीत हो रहा था। इस बीच निराश्रितों के सहारे, रोगियों के वैद्य, कृपा-सागर विरक्त महाराज जी करनाल कुटिया में आकर ठहरे। उस समय आप जी के साथ दोनों त्याग मूर्तियाँ—संत दर्शन सिंह और संत सोम सिंह जी भी थे। एक-दो दिन ठहरने के पश्चात् देखा कि वर्षा के कारण छोटी कुटिया के आस-पास पानी एकत्रित हो गया जिसके परिणामस्वरूप दुर्गन्ध फैल गई। आपने वहाँ से उठकर बाई पास की ओर नगर से कुछ दूर बिजलीघर के पास बाबू अहूजा के उद्यान में जाकर निवास किया। उस उद्यान में एक कमरा भी बना हुआ था, वर्षा के समय उसमें आराम कर लेते। अब संगत का आना-जाना भी इस ओर हो गया। दोनों समय गुरुवाणी की किसी पुस्तक में से कथा-सत्संग का बड़ा सुन्दर आयोजन होने लगा। इधर लॅभामल के परिवार को भी समाचार मिल गया कि महाराज जी आ गए हैं। माता करतार कौर एक बर्तन में लस्सी डालकर लॅभामल जी को साथ लेकर बाबू अहूजा जी के उद्यान में जा पहुँची। आगे जाकर क्या देखते हैं **घट घट के अंतर की जानत** चिप्पी के साथ पौधों में पानी डाल रहे हैं। बाहरी रूप

से देखने पर तो वे पौधों में जल डाल रहे थे, लेकिन थोड़ा गहराई से देखा तो प्रतीत हुआ कि जैसे किसी संयोग रूप पौधे की जड़ सींच रहे हैं। खैर-लॅभामल ने नमस्कार की, हजूर मुस्कराकर बोले लॅभामल! केवल अध्ययन मात्र से रोग की निवृत्ति नहीं होती—

गुरु मैरै संगि सदा है नाले॥

(आसा घर ७ म० ५, पृष्ठ ३९४)

औषधि पान से रोग मुक्त हो सकते हैं। यह औषधि कौन सी है?

सिमरि सिमरि तिसु सदा समाले॥

(पृष्ठ ३९४)

माता करतार कौर को हजूर ने कहा, इसको शर्बत आदि पिलाओ ताकि सिर की गर्मी, खुश्की दूर हो जाए। लॅभामल कुछ दिनों में ठीक हो गया।* इधर रूहानी वैद्य लोक-परलोक के मुक्त भण्डार बाँट रहा है और संगत भी भारी संख्या में लाभ उठा रही है। कुटिया के आस-पास बसे लोग जैसे वज़ीर चन्द कॉलोनी, मॉडल टाऊन आदि स्थानों से बिजलीघर कुछ दूर होने के कारण यहाँ की संगत को दर्शन सत्संग की रूहानी खुराक में कुछ कमी हो गई है। यह जानकर संत भगत सिंह एवं संगत ने मिलकर प्रार्थना की महाराज! दिन में किसी समय कुटिया में एक बार दर्शन अवश्य दिया करो क्योंकि आप जी की इस फुलवाड़ी में कुछ वृद्ध हैं जो बिजलीघर नहीं पहुँच सकते। कृपा के सागर ने स्वीकार करते हुए कहा कि ठीक है तीसरे पहर का सत्संग कुटिया में ही किया करेंगे। संभवत: कुछ ऐसे कौतुकों के कारण ही बुद्धिमान् लोगों ने आपके दयालु, कृपालु आदि सहस्रों नाम कल्पित किए कि प्रतिदिन प्यास को बुझाने के लिए कुआँ स्वयं प्यासों के पास चल कर आता है।**

नगर शेरपुर ग्रिंड और संत ज्वाला सिंह जी का गुरुपुरी प्रयाण

सन् 1957 के आश्विन मास की बात है जब पूज्य विरक्त महाराज जी दुआबा में भ्रमण कर रहे थे। आप भ्रमण करते हुए शेरपुर ग्रिंड नगर जा पहुँचे। यह नगर होशियारपुर से आठ कि०मी० पश्चिम की ओर टांडा रोड पर स्थित है। इस नगर में देश के बँटवारे के समय पाकिस्तान से आए ज़मींदार भाई आकर बसे थे। आपने भी किसी अज्ञात शक्ति की प्रेरणा स्वरूप एवं किसी पूर्व संयोगवश आज इस नगर में निवास किया। लंगर के समय गाँव में से मधुकरी करके लंगर छक लिया। उपरांत बाहर खेतों में जाकर एक कुएँ पर वृक्ष के नीचे आसन लगाकर बैठ गए। दिन समाप्त हुआ, रात्रि का आगमन हुआ लेकिन आप किसी अगम्य अवस्था में स्थित हुए। अब न तो भोजन लेने जा रहे हैं, न ही पास में कोई वस्त्र है, बस कौपीन (लंगोट) एवं शीश पर बंधा एक छोटा वस्त्र है। सम्भवत: इन वस्त्रों की ओर भी आपका ध्यान नहीं जाता। हो सकता है कि ये भी शरीर के प्रालब्ध वश साए के समान इनके साथ-साथ रहते हों। खैर कुछ भी हो, ये तो वहीं जानते हैं, लेकिन रात्रि आज किसी विशेष अवस्था में व्यतीत की। अब रात्रि समाप्त होने को आई। सांसारिक लोग सूर्योदय की प्रतीक्षा में हैं ताकि दैनिक कार्य

---

* *इसके बाद लॅभामल जी हर के चरणों में इतने विश्वास से लगे कि हजूर ने प्रसन्न होकर* 'भगत' की पदवी दे दी। इसके बाद साधारण लोग 'भगत लॅभामल' करके जानने लगे।

** *हँसराज छाबड़ा, प्यारा लाल और जगन्नाथ के द्वारा।*

आरम्भ हो सकें, लेकिन आप सूर्योदय की प्रतीक्षा नहीं कर रहे। आप तो अमृत जल से परिपूर्ण होकर बादल का रूप धारण कर किसी की सूखी मुरझाई खेती को हरा-भरा करने के लिए आए हैं। कैलाश के समान स्थिर तथा अचल और सागर के समान गम्भीर, लेकिन प्रसन्न मुद्रा में वृक्ष के नीचे सुशोभित हैं। इतने में खेत वाला प्रेमी जिसका नाम ज़ैलदार जगत सिंह है, यहाँ आ पहुँचा। दूर से देखा कोई महात्मा बैठे हैं। जैसे-जैसे समीप आ रहा है, मन में विश्वास दृढ़ होता जा रहा है कि ये तो महाराज जी हैं। आकर चरणों पर गिर पड़ा—महाराज! बहुत कृपा की आपने, कितने वर्षों के पश्चात् दर्शन देने की कृपा की। महाराज! आपको तो पता था कि पाकिस्तान बनने वाला है, तब ही आप जी ने वचन किया था कि अब इधर नहीं, वहाँ मिलेंगे।

यदि हमें स्पष्ट संकेत मिल जाता, हम भी उसी समय ही आ जाते, बाद में जो कष्ट सहन करने पड़े, उनसे बच जाते। हज़ूर बोले भाई—

हरि की गति नहि कोऊ जानै॥
जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने॥ रहाउ॥
छिन महि राउ रंग कउ करई राउ रंक करि डारे॥
रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे॥

(रागु बिहागड़ा महला ९, पृष्ठ ५३७)

भाई-हरि की गति वही जानता है। हम जिस समय तुम्हारे पास से चलकर लाहौर पहुँचे, वहाँ मुसलमान एकत्रित होकर नारे लगा रहे थे—लेकर रहेंगे पाकिस्तान। हमने कहा कि ऐसे पाकिस्तान मिल जाएगा क्या? यदि हमें पता होता तो हम इस प्रकार क्यों कहते? ज़ैलदार जगह सिंह हज़ूर के चरणों ऊपर लेटा यह कह रहा था—महाराज! आपकी बात आप ही जानो, हम जीव नहीं जान सकते। ज़ैलदार दौड़कर घर से दूध लेकर आया। सारे परिवार को बताया कि महाराज कुएँ पर आए हैं। समस्त परिवार दर्शन हेतु पधारा। वर्षों पश्चात् महाराज जी के दर्शन करके परिवार के समस्त सदस्यों को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। खैर—यहाँ कई दिनों तक निवास किया। गाँव के अन्य लोग भी आने आरम्भ हो गए। हज़ूर ने ज़ैलदार को आज्ञा दी कि गुरुद्वारा साहिब बनाओ। स्वयं सेवा में प्रवृत्त होना, आते-जाते अतिथि को लंगर छकाना। रात्रि ठहरने का प्रबन्ध करना और गुरुवाणी से सदैव जुड़े रहना। ऐसा उपदेश अर्थात् परिवार को पर-उपकार के मार्ग पर डालकर आगे को प्रस्थान किया। धीरे-धीरे चलते हुए जा पहुँचे 'भुंगरनी' नगर जो होशियारपुर फगवाड़ा रोड पर स्थित है। गाँव से बाहर ठहर गए। लंगर के समय मधुकरी करके छक लेना, शेष समय उस प्रभु की याद में मग्न रहना। इस प्रकार कुछ दिन व्यतीत हुए तो गाँव की संगत पूर्ण फ़कीर जानकर समीप आना आरम्भ हो गई। आप भी गुरुवाणी के माध्यम से आई संगत को यथार्थ उपदेश देते रहते। कुछ दिनों बाद लोगों के मन के भीतर गुरुवाणी का प्रेम जागृत कर वचन किया—आप गुरु घर के सेवक तो हो, लेकिन गुरु घर तो है नहीं। लोगों ने प्रार्थना की महाराज! कृपा करो गाँव में गुरुद्वारा बन जाए। आपने आज्ञा की, कड़ाह प्रसाद सजाकर गुरु नानक के चरणों में अरदास करके गुरुद्वारा बनाना आरम्भ कर दो। बनाना तो गुरु साहिब जी ने स्वयं ही है, दूसरा कौन उसका घर निर्मित कर सकता है। क्योंकि वह तो **थापिया न जाइ कीता न होइ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ॥** है। उसने तो तुम्हें तुम्हारे भले के लिए सेवा करने की कृपा है। संगत ने प्रार्थना की, महाराज! गुरुद्वारा साहिब की नींव आप स्वयं रखो। हज़ूर ने अरदास कराकर नींव रख दी। कुछ दिन यहाँ निर्मले संत जोता सिंह विरक्त जी भी कुटिया ठहरकर संगत को सेवा के लिए प्रेरणा देते रहे। फिर आप जी को पता लगा कि संत ज्वाला सिंह जी का शरीर स्वस्थ नहीं है, इसलिए संगत को सेवा में प्रवृत्त करके आप जी ने संत ज्वाला सिंह जी को मिलने के लिए 'हरखोवाल' की ओर प्रस्थान कर दिया। वहाँ जाकर पता लगा कि

संत तो 'डुमेली' नामक स्थान पर हैं। आप बजाए 'हरखोवाल' के डुमेली पहुँच गए। संत महाराज जी का शरीर वृद्धावस्था के कारण कृश हो गया था। दोनों महापुरुष बड़े प्रेम के साथ मिले। मिलते तो समय-समय पर पहले भी थे और संत ज्वाला सिंह जी के प्रेमवश लगातार तीन-तीन मास पास रहकर कथा भी करते रहे, लेकिन आज का मिलन कुछ विलक्षण है। थोड़ा गहराई से देखने पर ऐसा लग रहा है जैसे यह मिलन प्रथम अथवा अंतिम है।

खैर जो भी हो, लेकिन यह मिलन गहरे प्रेम का सूचक था।

विरक्त महाराज जी ने वचन किया, हे महापुरुषो! समीप बैठी संगत आपकी श्रद्धालु है, शरीर का संयोग सदैव तो बना नहीं रहता, लेकिन सत्पुरुषों के वचन सदैव सत्य एवं चिरंजीवी होते हैं इसलिए कोई ऐसा वचन सुनाओ जो परमार्थ का सार अर्थात् तत्त्व रूप हो। संत ज्वाला सिंह जी बोले कि महाराज! आप साक्षात् सार रूप ही तो खड़े हो इससे अधिक हम और क्या कहें। महाराज बोले! महापुरुषो! ये सब संगत आपके पवित्र मुख से सुनने के लिए आई है, इसलिए इनको शब्द रूपी प्रकाश देने की कृपा करो। संत ज्वाला सिंह जी बोले, महाराज! हमें तो यही लग रहा है कि—

जो तुधु भावै साई भली कार॥
तू सदा सलामति निरंकार॥

(जपुजी साहिब, पृष्ठ ३)

संत ज्वाला सिंह बोले, महाराज! आप भी कुछ सुनाओ। महाराज बोले, जो आपने सुनाया है, इससे अधिक क्या कहें? नहीं महाराज! इस संगत को आप भी कुछ 'प्रसाद' देने की कृपा करो। विरक्त महाराज बोले—हमें भी कुछ इसी प्रकार लग रहा है—

नानक एको रवि रहिआ दूसर होआ न होगु॥

(बावन अखरी, पृष्ठ २५०)

इस प्रकार दोनों महापुरुषों ने कुछ परमार्थ के वचन किए। उपरांत विरक्त महाराज जी ने तो किसी अन्य स्थान के लिए प्रस्थान किया। उधर संत ज्वाला सिंह जी महाराज एक दो दिन पश्चात् अर्थात् 28 कार्तिक 1957 वाले दिन गुरुपुरी प्रयाण कर गए।

गाँव बख़तगढ़ और भोतने

बरनाला—मोगा रोड पर बरनाले से तेरह कि०मी० पश्चिम की ओर और मोगा से कोई तीस कि०मी० बरनाले की ओर दो गाँव बसते हैं—भोतने और बख़तगढ़। भोतने गाँव तो मुख्य सड़क के ऊपर ही स्थित है, लेकिन बख़तगढ़ थोड़ा पीछे हटकर है। दोनों गाँवों की संख्या पर्याप्त है और लोग भी मालवा क्षेत्र होने के कारण मुक्त स्वभाव के हैं। गाँव बख़तगढ़ में एक खालसा हाई स्कूल स्थापित है। इस स्कूल का मुख्याध्यापक सरदार जसवंत सिंह धालीवाल एक दिन किसी कार्यवश राजगढ़ गाँव गया। वहाँ जाकर पता चला कि यहाँ साधुओं के डेरे में एक विरक्त महात्मा आए हैं जो गुरुवाणी के श्रेष्ठ विद्वान हैं। मुख्याध्यापक ने डेरे पहुँचकर जब कुछ गुरुवाणी का विचार-विमर्श महापुरुषों के साथ किया तो मन में श्रद्धा जाग गई कि इनके समीप रुककर कुछ पारमार्थिक लाभ उठाएँ। प्रार्थना की कि बाबा जी किसी समय बख़तगढ़ दर्शन देने की कृपा करो। संत गोपाल सिंह जी बोले यदि कभी हरि इच्छा हुई और अन्न जल का समय संयोग बना तो आ जाएँगे। कुछ समय पश्चात् परमेश्वर ने ऐसा संयोग बना दिया अथवा यूँ कहो कि बना हुआ तो पहले का ही था—केवल समय की प्रतीक्षा में था।

संत गोपाल सिह जी किसी दैवी प्रेरणा द्वारा प्रेरित जब गाँव बख़तगढ़ पहुँचे तो गाँव से दूर बिशन सिंह नामक किसान का एक कच्चा कोठा था, उसमें जाकर ठहर गए। शरद् ऋतु का मौसम था। आठ पहर पश्चात् गाँव में से एक बार मधुकरी करके भोजन लेना और शेष समय उस प्रभु की याद में व्यतीत करते। एक-दो दिन व्यतीत होने के पश्चात् जब आपके उच्च जीवन का प्रभाव गाँव की कुछ संगत पर पड़ना आरम्भ हो गया तो दर्शन एवं सत्संग के लिए आनी आरम्भ हो गई। आपने भी संगत की श्रद्धा को देखकर सायं के समय कथा करनी आरम्भ कर दी। फिर और संगत भी आने लगी। कुछ समय पश्चात् संगत को प्रेरणा देकर कोठे में अखण्ड पाठ साहिब करवाया और आप स्वयं दो दिन कथा करते रहे। इतने में कोई गुरु-पर्व आ गया। उस समय पर खालसा स्कूल की प्रबन्ध समिति ने स्टाफ और बच्चों की तरफ से गाँव में नगर कीर्तन का प्रोग्राम बनाया। इसकी अगवाई करने के लिए प्रबन्ध समिति ने आपको प्रार्थना की जो आपने स्वीकार कर ली। इस प्रकार यह गाँव गुरु घर का सेवक तो पहले से ही था, लेकिन संत गोपाल सिंह जी ने बच्चों, बूढ़ों और आम लोगों के मनों में गुरुवाणी का बीज वपन कर दिया था। इस प्रकार गाँव और इलाके की संगत को गुरुवाणी पठन एवं विचार से संस्कार उत्पन्न करके अन्न जल वश आप अब यहाँ से किसी अन्य स्थल के लिए रवाना हो गए। लगभग एक वर्ष पश्चात् दोबारा फिर इस गाँव में बंता सिंह के कुएँ पर आ गए। संगत को फिर वही गुरुवाणी शिक्षण वाला कार्य आरम्भ हो गया। जोरा सिंह, सरबन सिंह और कुंढ़ा सिंह आदि भोतने गाँव के प्रेमियों ने आप जी से गुरुवाणी का शिक्षण लेना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार गुरु नानक के घर का कार्य करते अभी कोई डेढ़ मास ही व्यतीत हुआ था जब परमेश्वर ने इन लोगों की किसी प्रार्थना पर यहाँ बड़ी सरकार के आने का समस्त संयोग बना दिया। संत गोपाल सिंह जी को पता चला कि 'ठीकरी वाला' किसी साधु स्थान पर ठहरकर हजूर विरक्त महाराज जी कई दिनों से सत् उपदेश की वर्षा करके संगत को कृतार्थ कर रहे हैं। संत गोपाल सिंह जी कुछ प्रेमियों को साथ लेकर ठीकरी वाले हजूर के चरणों में उपस्थित हुए। दर्शन करके प्रार्थना की, दीनबन्धु कृपा करो, भोतने नगर की संगत को दर्शन दीदार दो। हम समस्त संगत को यह कहकर आए हैं कि तुम्हें शरीरधारी भगवान् के दर्शन कराएँगे। हजूर ने प्रभु प्रेरणा समझकर स्वीकृति दे दी। उपरांत संत दर्शन सिंह जी और संत हरबंस सिंह जी को साथ लेकर बख़तगढ़ और भोतने पहुँच गए। बंता सिंह के कुएँ पर घास-फूस की एक पर्णकुटी बनाकर हजूर विरक्त महाराज अपने शिष्यों सहित भोग-मोक्ष के वरदान बाँटने लगे। यह स्थान दोनों गाँवों के मध्य में होने के कारण सत्संग का लाभ उठाने के लिए दोनों गाँवों की संगत का आना-जाना बढ़ गया। अब हजूर ने भी सबके भले के लिए श्री सुखमनी साहिब जी की कथा आरम्भ की ताकि उत्तम, मध्यम सब प्रकार के जिज्ञासु लाभ उठा सकें। संत गोपाल सिंह जी मूल पंक्ति का पाठ पढ़ते और हजूर उसकी भावपूर्ण व्याख्या करते। इस प्रकार समस्त सुखमनी साहिब की कथा सम्पूर्ण की गई। संगत का प्रेम भी अब तक पर्याप्त बढ़ चुका था, लेकिन हजूर ने अब यहाँ से किसी अन्य तप्त भूमि पर बरसने के लिए जाने का संकल्प किया, लेकिन संगत में अब प्रेम इस प्रकार बढ़ चुका था कि वे नहीं चाहते थे कि वे कहीं अन्य स्थान पर जाएँ। इसलिए बार-बार प्रार्थना करते, महाराज! कृपा करो यहीं दर्शन-दीदार देने की कृपा करते रहो। हजूर कहने लगे कि अब आप गोपाल सिंह से गुरुवाणी के शिक्षण को प्राप्त करो। हम कुछ समय पश्चात् फिर आएँगे। इस प्रकार संगत को दोबारा आने का वचन देकर प्रभु आदेशानुसार अब किसी अन्य स्थान की ओर प्रस्थान कर दिया। उपरांत संत गोपाल सिंह जी ने जो पाठ-शिक्षण चलता था उसको पूर्ण करवा दिया।

लगभग एक वर्ष पश्चात् विरक्त महाराज जी अपने देवगणों सहित फिर यहाँ आ पहुँचे, जिनमें संत गोपाल सिंह जी, संत दर्शन सिंह और संत हरबंस सिंह जी थे। निवास तो आकर बंता सिंह के कुएँ पर ही किया, लेकिन कुछ दिन पश्चात् कुंढ़ा सिंह जी ने प्रार्थना की कि महाराज! कुछ दिन मेरे कुएँ पर भी ठहरने की कृपा करो। उसका प्रेम देखकर हज़ूर ने अपनी मौज में अब उसके कुएँ को अपना निवास बनाया। यह स्थान कुछ गाँव के समीप भी था, इसलिए संगत को आने-जाने की सुविधा भी थी। संगत में कुछ विचारवान व्यक्तियों को देखकर महापुरुषों ने यहाँ 'विचार-सागर' की कथा आरम्भ की जिसकी पंक्ति का पाठ सरवन सिंह करता और महाराज जी उसकी सरल व्याख्या करते। इस प्रकार यहाँ दो बार 'विचार सागर' की कथा सम्पूर्ण की और खूब आनंद रहा। वेदांत की प्रक्रिया यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति के लिए समझने का विषय नहीं है, लेकिन हज़ूर ने इतने सरल ढंग से समझाया कि संगत प्रतिदिन ध्यानपूर्वक श्रवण करती। यद्यपि संगत तो पर्याप्त आती थी, लेकिन भाई प्यारा सिंह, हीरा सिंह, जमादार कौर सिंह, ईशर सिंह, बखतौर सिंह, बहादर सिंह, बंता सिंह, झण्डा सिंह, प्रीतम सिंह, जीता सिंह, सरवन सिंह, जोरा सिंह और फज़ल आदि प्रेमी तो निरंतर आने वाले थे। विचार-सागर की कथा सम्पूर्ण होने पर हज़ूर ने यहाँ श्री अखण्ड पाठ साहिब करवाया। अब आपके मन में कहीं अन्य स्थान पर जाने का संकल्प उत्पन्न हुआ। यह सुनकर कई नगरों की संगत ने अपने-अपने गाँव ले जाने के लिए प्रार्थना की। महाराज बोले, हमारा अपना तो कोई विशेष संकल्प नहीं है—किसी विशेष स्थान का। आप यूँ करें कि गुरु ग्रन्थ साहिब के सम्मुख पर्चियाँ डाल लो। जिस स्थान की पर्ची निकल आएगी, वहीं चल पड़ेंगे। कई गाँवों की संगत ने पर्चियाँ डालीं, लेकिन भाग्य 'अठूर' की संगत के खुले। भोतने, बख़तगढ़ की संगत ने वहीं ठहरने की प्रार्थना की, लेकिन हज़ूर बोले अब जगत् गुरु ने निर्णय कर दिया है इसलिए अब तो 'अठूर' ही जाएँगे, फिर कभी यहाँ भी आएँगे। इस प्रकार भोतने, बख़तगढ़ की संगत को सांत्वना देकर अठूर की ओर प्रस्थान किया।

दोराहा और आस-पास के गाँवों में आगमन

सन् 1958 की बात है जब संत गोपाल सिंह जी अपनी मौज में विचरण करते दोराहा मण्डी पहुँचे, जो जी०टी० रोड पर लुधियाना और खन्ना मण्डी के मध्य एक नहर के तट पर स्थित है। यहाँ नगर के तट पर ही एक बड़े वृक्ष के नीचे आसन लगा लिया। जब लंगर का समय होता तो किसी समीप के गाँव अथवा दोराहा शहर से मधुकरी करके छक लेना, फिर दिन भर गुरुवाणी की किसी पोथी का मंथन करते रहना। इस प्रकार की कठोर साधना करते जब कुछ दिन व्यतीत हुए तो पास के कुछ लोग प्रभावित होकर समीप आने आरम्भ हो गए। आप जी बजाए इधर-उधर की बात करने के केवल गुरुवाणी का सत् उपदेश करते रहते। एक दिन नगर के कुछ प्रेमियों ने प्रार्थना की बाबा जी—आप कृपा करो, गुरुद्वारा सिंह सभा ठहरकर कुछ समय कथा एवं विचार की कृपा करो। वहाँ पर्याप्त संगत आती है, सब लोग लाभ उठाएँगे। आपने इसे ईश्वरीय संकेत समझकर वचन कर दिया कि ठीक है—ब्रह्म मुहूर्त में कथा किया करेंगे।

दूसरे दिन आप ने 'आदिवाणी' श्री जपुजी साहिब की क्रमानुसार कथा आरम्भ की। एक पौड़ी (श्लोक) की कथा प्रतिदिन करते थे। संगत में सहजधारी और सिक्ख दोनों आते थे। वह सब गुरुवाणी की तर्कयुक्त व्याख्या सुनकर कभी-कभी प्रशंसा करते कि बाबा जी! साधु संगति बिना गुरुवाणी समझ में नहीं आती। अब तक 'जपुजी' साहिब का पाठ तो प्रतिदिन करते थे, लेकिन प्राप्त कुछ नहीं होता था। अब आपकी कृपा से कुछ समझ में आया है, आप कृपा करो यहाँ स्थाई-निवास

ही बना लो। संत बोले, भाई! साधु तो अभी आपने देखा ही नहीं है। परमेश्वर कृपा करें तो तुम्हें दर्शन कराएँगे, अपने गुरुदेव संत बाबा निक्का सिंह जी महाराज के, वे हैं संत! संत क्या हैं, हाथ पाँव सहित चलते फिरते भगवान् हैं, साक्षात् परमेश्वर हैं। संगत सुनकर बड़ी हैरान हुई कि कितनी अच्छी गुरुवाणी की कथा करते हैं, कितना त्यागी जीवन है, पैसों को हाथ नहीं लगाते, मकानों की बजाए उजाड़ में निवास करते हैं, वृक्षों के नीचे अथवा पर्णकुटियों में सोते हैं, थाली में परोसकर खाने की बजाय मधुकरी करके बिना किसी बर्तन के हाथों पर रखकर ही छक लेते हैं और चौबीस घंटे गुरुवाणी के अतिरिक्त बातचीत नहीं करते। गर्म रेत पर बैठकर सारा-सारा दिन तपस्या करते व्यतीत कर देते हैं, कितना उच्च जीवन है, लेकिन फिर भी अपने गुरुदेव संत महापुरुषों की कितनी स्तुति करते हैं, परमेश्वर करे-शीघ्र दर्शन हों ऐसे अगम्य महापुरुषों के।

इस प्रकार संत गोपाल सिंह जी के उच्च जीवन और कठोर साधना और गुरुवाणी का प्रेम सत्कार और उसकी विचार का संगत के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। मास से अधिक समय व्यतीत हो गया 'जपुजी' साहिब की कथा होने को, लेकिन दो-तीन पौड़ियों (श्लोकों) की कथा अभी शेष थी। एक दिन एक सहजधारी प्रेमी ने आकर बताया कि संत महाराज निक्का सिंह जी विरक्त आज गाड़ी में लुधियाना की ओर गए हैं। प्रेमी ने बताया कि उसी गाड़ी में मैं यात्रा कर रहा था—मुझे दर्शन करते ही मन में विचार आया कि ये कहीं वही महापुरुष न हों जिनके सम्बन्ध में बाबा जी प्रायः बात करते रहते हैं। साथ में यात्रा कर रहे प्रेमी ने मेरे पूछने पर बताया कि ये महाराज निक्का सिंह जी विरक्त हैं। मैं इन्हें अपने गाँव 'खटकड़ कलां' लेकर जा रहा हूँ। पूर्ण सिंह मेरा नाम है। संत गोपाल सिंह जी के सुनते ही चेहरे पर उदासी छा गई, निराशा में बोले! ओ! हो! परमेश्वर पास से होकर निकल गया। खैर-सब संगत को बताकर वचन किया कि गुरु महाराज के सम्मुख अरदास करके कथा आरम्भ की थी-'जपुजी साहिब' की। इसलिए यह तो अब पूर्ण करनी ही है, जोकि दो दिन में सम्पूर्ण हो जाएगी। इसके पश्चात् हम महाराज जी के पीछे चलकर उनकी खोज करेंगे। संगत ने प्रार्थना की-हम भी साथ चलकर महाराज के चरणों में प्रार्थना करेंगे कि यहाँ दर्शन देना। संत बोले-यह शुभ विचार है। दो दिनों में कथा सम्पूर्ण करके धर्म सिंह एवं तेजा सिंह आदि व्यक्तियों को साथ लेकर 'खटकड़ कलां' स्थान पर पहुँचे। यह गाँव जालंधर नगर के समीप पड़ता है। वहाँ पहुँचकर जब पता किया तो महाराज यहाँ से अगले गाँव चले गए थे। खोज करते वहाँ पहुँचे तो पता चला कि महाराज तो अमुक कुएँ पर रुके हुए हैं। कुएँ पर पहुँचकर जब हजूर के दर्शन किए, मन गद्गद् हो गया, आगे से महाराज जी ने कुशल मंगल पूछी। फिर प्रार्थना की कि महाराज ये प्रेमी दोराहा से आए हैं—आपके चरणों में प्रार्थना करने के लिए कि आप जी दोराहा दर्शन दो। दोराहे से चलते समय हम गुरु ग्रन्थ साहिब के सम्मुख दो पर्चियाँ डालकर आज्ञा ली थी कि हजूर को दोराहे लाने के लिए प्रार्थना करें कि नहीं! पर्ची के द्वारा उस सच्ची दरगाह से आदेश हुआ कि दोराहा जाने के लिए प्रार्थना करें इसलिए हम श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से आज्ञा लेकर आप जी के पवित्र चरणों में पहुँचे हैं। हमारी प्रार्थना स्वीकार करो। पूज्य विरक्त महाराज जी मुस्कराकर बोले—हमारा विचार तो दरबार साहिब अमृतसर जाने का था, लेकिन अब जैसे ईश्वर की मौज। आपने निर्णय जो गुरु ग्रन्थ साहिब जी से करवा लिया है—लेकिन भविष्य में ऐसा न करना।

दूसरे दिन गाड़ी के द्वारा दोराहे पहुँच गए। आप जी की अलौकिक महिमा तो संगत एक मास पूर्व से ही सुन रही थी, इसलिए जैसे-जैसे पता लगता गया संगत गुरुद्वारा सिंह सभा पहुँचती गई। इस प्रकार काफ़ी संगत ने दर्शन दीदार किए। कुछ देर यहाँ रुकने के पश्चात् महाराज जी ने आज्ञा की कि हम ठहरेंगे तो शहर के बाहर किसी कुएँ पर ही।

नगर के पूर्व की ओर एक गाँव बसता है 'अडैचाँ', वहाँ महंत जी के कुएँ पर संगत ने रहने का प्रबन्ध कर दिया। नगर की संगत मिली-जुली अर्थात् हिन्दू-सिक्ख आदि सभी जातियों के लोग थे—जो दर्शन का लाभ उठा रहे थे। एक दिन संगत ने प्रार्थना की कि महाराज नगर में किसी ऐसे स्थान पर कथा करने का समय निश्चित किया जाए जहाँ सब संगत स्त्री-पुरुष मिलकर कथा का लाभ उठा सकें। हजूर ने हाँ कह दी कि जिस स्थान पर नगर निवासी संगत को एकत्रित होने में सुविधा हो, वहीं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रकाश कर लिया जाए, वहीं हम भी आ जाएँगे। संगत ने आज्ञा पाकर टण्डन मिल में सारा प्रबन्ध कर लिया, जहाँ हजूर ने दो दिन कथा की। इस कथा समागम में हिन्दू भाइयों की संख्या दूसरी जातियों अर्थात् सिक्ख आदि संगत से कहीं अधिक थी। हजूर ने उपदेश किया जिन पत्थरों को आप नमस्कार करते हो, उनसे कुछ प्राप्त होने वाला नहीं है, क्योंकि वे जड़ होने के कारण आपकी संशय निवृत्त नहीं कर सकते। परमेश्वर ने द्वापर युग में अवतार धारण करके जीवों के भले के लिए गीता का महान् उपदेश उच्चारण किया, उसको पढ़ो, विचारो, फिर व्यवहार में लाओ, ऐसा करने से जन्म सफल कर सकते हो। फिर परमेश्वर ने और कृपा की, कलियुग के जीवों की मन-बुद्धि अत्यंत छोटी और निर्बल जानकर संस्कृत को समझने से असमर्थ जानकर गुरु नानक का रूप धारण कर सरल एवं समयानुकूल गुरुवाणी उच्चारण की ताकि सब लोग लाभ उठा सकें, लेकिन तुम सब केवल सिक्खों की समझकर इसके समीप नहीं गए, इसलिए ज्ञान के महान् सागर जो गुणों का असीम भंडार हैं, उससे वंचित रह गए। परमेश्वर ने वाणी अथवा गीता किसी एक जाति विशेष के लिए उच्चारण नहीं की, अपितु उपदेश चारों वर्णों के लिए एक है। इसलिए कट्टरता से ऊपर उठकर मनुष्य जीवन की सफलता के सम्बन्ध में विचार करो, न कि धार्मिक दायरों की जकड़ में फँसकर जन्म बर्बाद करो। हमारी तो इच्छा है कि चौबीस घंटे हमारे कानों में गुरुवाणी सुनाई देती रहे, लेकिन तुम इसको सिक्खों की समझ करके दूर रहे हो। दूर क्या मानों जन्म-मृत्यु से रहित करने वाले अमृत से वंचित रह गए। कथा सुनकर उस दिन के पश्चात् कई हिन्दू परिवारों में वाणी पठन-पाठन की रुचि उत्पन्न हुई जो आज तक जारी है।

फिर संगत ने मिलकर गुरुद्वारा सिंह सभा में कुछ दिन कथा करने के लिए प्रार्थना की, जो आपने स्वीकार कर ली। कई दिन गुरुद्वारा साहिब में गुरुवाणी द्वारा परमार्थ के गम्भीर भावों की व्याख्या करके अमृत-वर्षा की। इन दिनों में ही एक दिन 'कनेच' गाँव की कुछ संगत ने अपने गाँव के गुरुद्वारा साहिब में कथा करने के लिए प्रार्थना की। इस गाँव को भी श्री गुरु गोबिन्द सिंह महाराज जी के पावन चरणों ने स्पर्श किया था। उनकी पावन स्मृति में यहाँ एक अत्यंत रमणीय स्थान सुशोभित है। हजूर बोले, यह गुरुओं का स्मृति स्थल है। इसलिए वहाँ ऐतिहासिक दिन पर ही दर्शन करेंगे। एक-दो दिन पश्चात् श्री गुरु अमरदास महाराज की पुण्य तिथि का पर्व दिवस था, उस दिन वहाँ कथा करने का वचन दे दिया। निश्चित समय पर धर्म सिंह अपने ट्रक में आकर ले गया। हजूर ने कलगीधर महाराज जी की पावन स्मृति में गुरु स्थान पर गुरुवाणी एवं गुरु इतिहास द्वारा पूर्ण व्याख्या की। इस शुभ समागम पर संगत भी पर्याप्त एकत्रित हुई थी। कथा की समाप्ति के पश्चात् कुछ प्रेमियों ने अपने-अपने घरों में चरण डालने के लिए प्रार्थनाएँ कीं जो आपने स्वीकार करके कई घरों में जाकर सत् उपदेश किया। जब धर्म सिंह के घर में गए, उससे प्रार्थना की कि महाराज! मेरी पत्नी कई वर्षों से बीमार रहती है। इस पर कुछ कृपा करो। हजूर बोले कि यह गोपाल सिंह कई औषधियों का ज्ञान रखता है। इससे कोई औषधि दिलवा दो। संत गोपाल सिंह जी तुरंत बोले—

धर्म सिंह! बीबी तो समझो ठीक हो गई, क्योंकि वास्तविक औषधि तो महाराज जी ने दे दी है शेष तो अब औषधि का बहाना रह गया है वह दो गोलियाँ देकर पूरा कर देते हैं।*

हजूर रात्रि ठहरने के लिए बाहर किसी कुएँ पर चले गए। प्रात: आपने धर्म सिंह से कहा कि इस मार्ग से श्री गुरु गोबिन्द सिंह महाराज आनंदपुर साहिब से चलकर गए थे—मालवे देश को 'साबों की तलवंडी' की ओर। इसलिए हमारा भी विचार है कि यहाँ से इसी मार्ग पर चलकर आनंदपुर साहिब की ओर के माछीवाड़ा, झाड़ साहिब आदि पवित्र स्थानों के दर्शन करें। धर्म सिंह कहने लगा, महाराज! मेरा ट्रक ले चलते हैं, इसमें चलो। हजूर बोले—हमने कौन सा किसी को कोई निश्चित दिन दिया हुआ है कि शीघ्र पहुँचना है। धीरे-धीरे पैदल ही चलेंगे। धर्म सिंह ने प्रार्थना की, महाराज! दोराहे तो मेरा ट्रक जाना ही है इसलिए 'रेरू साहिब' तक तो इसमें चलो। प्रार्थना स्वीकार करके हजूर रेरू साहिब ट्रक में आए। यहाँ से धर्म सिंह आदि प्रेमियों को वापिस भेज दिया। आप माछीवाड़े के अत्यंत भाग्यशाली जंगलों और उस खुशनसीब स्थलों के रास्ते की ओर चल पड़े जिनको कभी प्राप्ति हुई थी, पवित्र चरण धूलि दशमेश पिता के पावन चरणों की।

बाबा बेअंत सिंह जी का गुरुपुरी प्रयाण

गुरमुखि जनमु सवारि दरगह चलिआ॥
सची दरगह जाइ पिडु मलिआ॥
गुरमुखि भोजनु भाउ चाउ अललिआ॥
गुरमुखि निहचलु चितु न हलै हलिआ॥
गुरमुखि सचु अलाउ भली हूँ भलिआ॥
गुरमुखि सदे जानि आवनि घलिआ॥

(वार १९ पउड़ी १४, भाई गुरदास)

बात 1958 के आषाढ़ मास की है जब बाबा बेअंत सिंह जी 'थूहे' गाँव में ठहरे हुए थे। उन दिनों में रोग ने तो शरीर पर पूर्ण नियंत्रण किया हुआ था, लेकिन फिर भी आप निर्लिप्त, असंग एवं सदैव एक रस रहने वाली आत्मा में स्थित हुए **गुरमुखि बुढे कदे नाहीं** वाली अवस्था में विचरण करते पर-उपकारी कार्यों में समय व्यतीत कर रहे थे।

एक दिन 'खोख' गाँव के तीन श्रद्धालु—गुरनाम सिंह, गंडा सिंह और दिलीप सिंह थूहे पहुँचे। एक-दो दिन श्री चरणों में निवास कर प्रार्थना की कि बाबा जी खोख चलो। प्रेमियों की प्रार्थना सुनकर बाबा जी बिल्कुल मौन हो गए। गौर से देखा कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे भविष्य का मानचित्र देख रहे हों। कुछ समय पश्चात् बोले, ठीक है, चलते हैं। थूहे से पैदल ही चल पड़े, क्योंकि आप किसी सवारी में बैठते नहीं थे।

एक बार पहले 'लोह सिम्बली' गाँव से 'खोख' की संगत लेने आई। उस समय आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था इसलिए संगत ने प्रार्थना की बाबा जी! अम्बाला से रेलमार्ग से नाभा चलेंगे, क्योंकि आपका शरीर स्वस्थ नहीं है, इसलिए पैदल चलना कठिन होगा। आप बोले—भाई! हमारे भाग्य में किसी सवारी पर यात्रा करना लिखा ही नहीं है। जब संगत ने अधिक प्रार्थना

* *औषधि खाकर बीबी ठीक हो गई और शेष सारा जीवन स्वस्थ ही रही।*

की तो आप बोले—यदि आपको हमारे वचन पर विश्वास नहीं है तो गुरु ग्रन्थ साहिब के सम्मुख पर्चियाँ डाल लो। यदि पर्ची गाड़ी की निकल आई, तो चढ़ चलेंगे। पर्चियाँ डालकर अरदास की—जब उठाई तो पैदल वाली निकली। इस प्रकार ही आज 'थूहे' गाँव से 'खोख' नगर के तीन प्रेमियों के साथ चल पड़े, वहाँ जहाँ पहुँचकर शरीर का स्थूल, सूक्ष्म सब व्यवहार-व्यापार सीमित कर देना है। तेज़ गर्मी की ऋतु होने के कारण सड़क की तारकोल पिघली हुई है और चरणों में आपने जूता कभी डाला ही नहीं इसलिए पिघली तारकोल पर चलने से चरणों पर छाले हो गए। थोड़ी दूर जाने पर पैरों ने जवाब दिया अर्थात् अपनी 'चल्' रूप क्रिया से नितांत असमर्थ हो गए इसलिए रात्रि फिर वहीं विश्राम किया। अगले दिन प्रात: फिर यात्रा आरम्भ की और उसी प्रकार उन परिस्थितियों में ही पटियाला नगर पहुँच गए, लेकिन अब आगे चलने की सम्भावना न रही, क्योंकि गरम तारकोल ने पैरों की निचली त्वचा को पूर्ण रूप से अलग कर दिया था। पैर चलने में असमर्थ थे। किसी सवारी पर बैठना नहीं और 'खोख' पहुँचना भी आवश्यक है, क्योंकि निश्चित किए किसी विशेष कार्य का समय समीप आ रहा है जो सम्भवत: 'खोख' गाँव में ही पूर्ण करना है। इसलिए अब निश्चित स्थान पर पहुँचने के लिए एक युक्ति सूझी कि दो व्यक्ति आपस में बाजू पकड़कर जैसे किसान गेहूँ की बोरी उठाते हैं, इसी प्रकार बाबा जी को बाजुओं पर बैठाकर चलें। इस प्रकार यात्रा पूर्ण की जाए। इस प्रकार जैसे-जैसे तीन व्यक्ति बाबा जी को साथ लेकर 'खोख' गाँव पहुँच गए। जब 'खोख' पहुँचे इतनी भारी वर्षा हुई कि जिस स्थान पर बाबा जी ठहरते थे अर्थात् गुरनाम सिंह के कुएँ पर, वहाँ भूमि नीचे होने के कारण पानी-ही-पानी हो गया। फिर गाँव में सबसे ऊँचा स्थान समझकर अलौहरियाँ के कुएँ पर जो वर्तमान कुटिया के बिल्कुल समीप ही है, उस कमरे में बाबा जी के निवास का प्रबंध किया। कुछ दिन यहाँ ठहरने के पश्चात् बाबा जी के पैर तो बिल्कुल ठीक हो गए, लेकिन पीठ पर एक छोटी-सी फुन्सी निकल आई। फुन्सी क्या निकली मानों कोई ऊपर से संदेश-पत्र आया है। बाबा जी खेतों में से बूटी उखाड़कर उसके ऊपर लगा लेते, लेकिन औषधि कोई न करने देते। ज्यों-ज्यों दिन व्यतीत होते गए, फुन्सी ने भयानक रूप धारण कर लिया अर्थात् वह 'फोड़ा' में परिवर्तित हो गई। फिर संगत ने प्रार्थना करके नाभा से आशता कुमार डॉक्टर को बुलाया। वह भी कुछ दिन मरहम पट्टी करता रहा, लेकिन फोड़ा बढ़ता ही गया। अंतत: डॉक्टर ने संगत को बताया कि ऑप्रेशन के बिना फोड़ा ठीक नहीं होगा इसलिए इस अवस्था में ऑप्रेशन करना आवश्यक है, लेकिन बाबा जी ने ऑप्रेशन से न कर दी। संगत इकट्ठी होकर प्रार्थना करने लगी और बार-बार करती रही तो एक दिन बाबा जी ने सहमति दे दी। अगले दिन डॉक्टर ऑप्रेशन करने का सामान लेकर आ गया। इस प्रकार पूरी तैयारी करने के पश्चात् बाबा जी को क्लोरोफार्म सुंघाने के लिए प्रार्थना की, लेकिन आपने इससे इनकार कर दिया। आप चौकड़ी मारकर बैठ गए और गुरनाम सिंह आदि प्रेमियों को आज्ञा कर दी कि 'जपुजी' साहिब का पाठ आरम्भ कर दो। दूसरी ओर डॉक्टर को बोल दिया जो करना है—करो। डॉक्टर ने तो बहुत ध्यानपूर्वक ऑप्रेशन किया, जिस कारण गंदा-गंदा माँस तो चाहे उतार दिया, लेकिन पीठ पर बहुत बड़ा ज़ख्म हो गया। खैर-उपरांत पट्टी कर दी। इस प्रकार नाभा से डॉक्टर प्रतिदिन पट्टी करने आता और बाबा जी चौकड़ी मारकर बैठ जाते और गुरनाम सिंह अथवा किसी अन्य प्रेमी को 'जपुजी' साहिब का पाठ करने के लिए कह देते। पीठ पर घाव इतना बड़ा हो गया कि पट्टी करते समय डॉक्टर का पूरा हाथ उसमें आ जाता, लेकिन आप 'जपुजी' साहिब के पाठ से तद्रूप होकर अडिग बैठे रहते। इस प्रकार प्रतिदिन मरहम पट्टी करते, कुछ दिनों में घाव काफी ठीक हो गया। आप जी की सेवा में उस समय संत दर्शन सिंह जी, छज्जा सिंह जी कोटली और प्रीतम सिंह जी भौड़ियाँ वाले जो बाद में संत मौनी जी के नाम से प्रसिद्ध हुए आदि तीनों व्यक्ति बहुत प्रेम के साथ सेवा करते। इस प्रकार फोड़े का घाव तो चाहे ठीक होता प्रतीत हो रहा था, लेकिन जीवन-सत्ता प्रतिदिन अपने अंत की ओर अग्रसर हो रही थी। अंतत: एक दिन बाबा जी ने छज्जा सिंह कोटली वाले को पूछा—आज क्या दिन है? बाबा जी—शुक्रवार है। भाई पूर्णिमा कब है? छज्जा सिंह ने प्रार्थना की—बाबा

जी परसों है। अंतत: वह परसों अथवा पूर्णिमा आ गई जिसके सम्बन्ध में पूछा था। आज प्रात: नौ बजे आश्विन की पूर्णिमा को पूर्ण होते हुए भी पूर्ण में समा गए। संगत ने एकत्रित होकर विरक्त महाराज जी की खोज आरम्भ की। कहीं से पता चला कि दोराहा में निवास कर रहे हैं। संगत वहाँ पहुँची, लेकिन वहाँ से पता चला कि महाराज जी ने माछीवाड़े की ओर प्रस्थान किया है। प्रेमी सभी ठहरने के स्थानों की खोज करते-करते जब आगे गए तो पूज्य विरक्त महाराज जी 'झाड़ साहिब' मिल गए। संगत ने सारा वृत्तांत सुनाया। सुनकर महाराज जी भी साथ चल पड़े। इस प्रकार समराला से टैक्सी द्वारा खोख गाँव पहुँच गए। महाराज जी की आज्ञानुसार खोख, कोटली, गाँव की सीमा पर अर्थात् दोनों गाँवों का थोड़ा-थोड़ा स्थान लेकर पूज्य बाबा बेअंत सिंह जी के पवित्र शरीर का संस्कार कर दिया। तीसरे दिन पूज्य विरक्त महाराज निक्का सिंह जी की आज्ञानुसार अस्थियाँ एकत्रित की गईं। उसके पश्चात् पूज्य विरक्त महाराज जी ने स्वयं और संगत को साथ लेकर कनखल 'सती घाटी' के पवित्र स्थान पर गुरु अमरदास जी के पावन चरणों में गंगा प्रवाह कर दी। फिर वापिस 'खोख' पहुँच कर पूज्य बाबा जी के निमित्त इलाही वाणी का सहज पाठ आरम्भ किया जो दशहरा वाले दिन भोग-उपरांत गुरु के लंगर के खुले भंडारे बाँटकर समस्त संस्कार पूर्ण किए।

दक्षिण की यात्रा

बात 1958 के नवम्बर मास की है जब आप जी ने किसी ईश्वरीय प्रेरणा के फलस्वरूप दक्षिण के पावन स्थानों के दर्शनार्थ प्रस्थान किया। प्रस्थान भी कैसे किया?

प्रभु नेड़ै हरि दूरि न जाणहु एको स्रिसटि सबाई॥
एकंकारु अवरु नही दूजा नानक एकु समाई॥

(अखणी ओंकारु, पृष्ठ ९३०)

इस महावाक् अनुसार प्रत्येक प्रकार की द्वैत अर्थात् स्थूल सूक्ष्म रूपी उपाधियों से रहित नितांत अकेले ही, दिल्ली से रेलगाड़ी में सवार होकर ग्वालियर पहुँचे, जहाँ कभी आए थे मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरि गोबिन्द साहिब जी जिन्होंने जहाँगीर की जेल में सड़ रहे पहाड़ी राजाओं को मुक्त कराकर स्वयं कहलाया था—'बंदी छोड़'। यह स्थान ऊँचे पर्वत पर स्थित होने के कारण बहुत मनमोहक है और गुरु साहिब जी की पावन स्मृति में सुंदर स्थान सुशोभित है। इसके दर्शन दीदार करके आगे को प्रस्थान किया और धीरे-धीरे यात्रा करते जा पहुँचे सच्च-खण्ड हजूर साहिब नांदेड़, जहाँ कभी हरि ने मनुष्य वेश धारण कर अलौकिक लीला की थी कलगीधर के रूप में आज से कुछ समय पूर्व। यहाँ पहुँचकर हजूर की स्मृति में बने पवित्र स्थानों की पावन चरण धूलि मस्तक को लगाई। गुरु के लंगर से प्रसाद ग्रहण किया और उसके उपरांत प्रबन्धकों ने कोई विरक्त महात्मा समझकर ठहरने के लिए कमरा खोल दिया।

आप जी रात्रि को तो उसी कमरे में विश्राम करते, दिन को अन्य स्थानों के दर्शन दीदार करते। समय मिलने पर 'सूरज प्रकाश' ग्रन्थ में से कुछ प्रकरणों पर विचार-विमर्श करते। ऐसा करते कुछ समय व्यतीत हो गया तो कुछ पंजाबी यात्री अथवा उन प्रबन्धकों में से भी संगत आप जी के पास आनी आरम्भ हो गई। आप बजाए और बातें करने सुनने के 'सूरज प्रकाश' की कथा सुना देते।

धीरे-धीरे यह बात 'सच्च-खण्ड' के प्रबन्धकों के पास भी पहुँच गई कि पंजाब से एक विरक्त महात्मा का आगमन हुआ है। वे बहुत सुन्दर कथा भी करते हैं। प्रबन्धकों में से एक-दो श्रद्धालुओं ने एक दिन महाराज जी के पास जाकर कथा सुनी। संयोगवश उस दिन कलगीधर की ओर से 'सच्च-खण्ड' में की गई लीलाओं का ही वर्णन हो रहा था। कथा की

समाप्ति पर प्रबन्धकों ने प्रार्थना की, महाराज! आप जी की कथा करने की शैली बहुत सरल एवं सुंदर है, कितना अच्छा हो कि आप यही कथा 'तखत साहिब' पर करो, लेकिन वहाँ एक मर्यादा का पालन आवश्यक है कि 'तखत साहिब' पर बैठकर अमृतधारी ही कथा कर सकता है, लेकिन आप विरक्त हो, त्यागी महापुरुष हो, आप कथा तो यहाँ भी प्रतिदिन करते ही हो, यदि तखत साहिब के साथ आपका आसन लगा दिया जाए, यही कथा आप वहाँ बैठकर करो तो अधिक संगत लाभ उठाए। महाराज बोले, भाई! हम कोई मर्यादा भंग करने के लिए नहीं आए, हम तो गुरु कलगीधर पातशाह के श्री चरणों में उपस्थिति लगवाने हेतु आए हैं। बस हमारा इससे अधिक बढ़कर और कोई प्रयोजन नहीं और न ही कोई कथा सुनाने के लिए आए हैं व न ही हमारा कोई संकल्प है कि हमारे पास अधिक संगत आए। हाँ, यदि आप यह समझते हैं कि हमारे कथा करने से किसी को लाभ पहुँचता है तो हम तखत साहिब के नीचे बैठकर कथा कर दिया करेंगे। हमारे लिए कुछ फर्क नहीं है, हमने तो वही करना है जो प्रभु की आज्ञा है। प्रबंधकों ने बड़ी प्रसन्नता के साथ 'तखत साहिब' के नीचे आसन लगा दिया। महाराज उस पर बैठकर प्रतिदिन कथा करने लगे और संगत भी अधिक संख्या में आने लगी। एक अठारह-उन्नीस वर्ष का पंजाबी लड़का इस कथा से इतना प्रभावित हुआ कि हमेशा महाराज जी के पास रहने लगा। लंगर के समय लंगर में से लंगर लाकर छका देता और वस्त्र आदि धो देता। इस प्रकार सेवा करते जब दो-चार दिन हो गए तो एक दिन प्रार्थना की महाराज! मैं विद्या ग्रहण करना चाहता हूँ आप कृपा करो और मुझे पढ़ा दो। हजूर ने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? कहाँ का रहने वाला है? महाराज मेरा नाम इन्द्रजीत सिंह है। मेरा गाँव पंजाब में लुधियाना के समीप 'रकबा' है। सुनकर हजूर उसके मस्तक की ओर ध्यानपूर्वक इस प्रकार देख रहे हैं जैसे कोई पूर्व का लिखा भाग्य पढ़ रहे हों। फिर कुछ देर चुप रहकर बोले! कि हे बालक! यदि तुम्हारी इच्छा विद्या ग्रहण करने की है तो ऐसा कर पंजाब में संत गुरबचन सिंह भिंडरा वाले पढ़ाते हैं उनके पास हर समय काफ़ी विद्यार्थी पढ़ते रहते हैं। तुम उनके साथ सम्मिलित हो जाओ। हम तो विरक्त हैं, आज कहाँ कल कहाँ, करतार ने नौकरी ही ऐसी दी है। इन्द्रजीत सिंह बोला, महाराज आप जितने दिन यहाँ हो उतने दिन तो मुझे अपने चरणों में रखो। आज्ञा हुई ठीक है—रहो। इस प्रकार लगभग एक मास कलगीधर पातशाह की पावन गोद में रहकर उन द्वारा किए अनूठे कौतुकों के अमृतजल की वर्षा से संगत को भिगोते रहे। अब आपने 'नानक झीरे' (बिदर) दर्शन करने का संकल्प किया। इन्द्रजीत सिंह ने साथ जाने की आज्ञा माँगी जो स्वीकार हो गई। जैसे-तैसे पहुँचे, श्री गुरु नानक देव महाराज के पवित्र स्थान पर 'नानक झीरा'। यह वह पवित्र स्थान है जहाँ कभी जगत गुरु श्री गुरु नानक देव महाराज जी ने यहाँ के जीवों पर करुणा कर पानी का सोता (चश्मा) प्रकट किया था अपने पावन चरणों से पर्वत से स्पर्श करके। क्योंकि ये जीव पीने के पानी की कठिनाई से परेशान थे। इस चश्मे में चौबीस घंटे पानी बहता रहता है। जहाँ से यह पानी निकलता है उसके आगे एक छोटा-सा सरोवर है उसमें श्रद्धावान् यात्री गुरु बाबा जी की कृपा समझकर स्नान आदि करते हैं। महाराज विरक्त जी भी जब यहाँ पहुँचे पहले पवित्र सरोवर में केश स्नान किया। सरोवर में खड़े अभी स्नान कर ही रहे थे तो पानी से भीगे केशों को हाथों की उँगुलियों से सीधे करने लगे। इन्द्रजीत सिंह ने प्रार्थना की कि ये मेरे कंघे से केश सँवार लो। महाराज बोले, भाई! आज तो तेरे कंघे से केश सँवार लेंगे कल किससे माँगेंगे? इस प्रकार उस पवित्र स्थान की चरण धूलि मस्तक से लगाकर दूसरे दिन वहाँ से बम्बई की ओर प्रस्थान किया।*

---

* *इन्द्रजीत सिंह वचन मानकर पंजाब की ओर आ गया। आज्ञानुसार संत गुरबचन सिंह भिण्डरां वाले के जत्थे में सम्मिलित होकर विद्या ग्रहण की। फलस्वरूप श्रेष्ठ विद्वान होकर काफी समय तो भादसों के समीप 'रायमल माजरी' गाँव के गुरुद्वारा साहिब में ठहरकर गुरु घर का प्रचार करते रहे। पता लगा कि आजकल कैनेडा चले गए हैं। श्रेष्ठ विद्वान होने पर भी आप 'अहं' से काफी दूर विनम्र स्वभाव और सरल जीवन व्यतीत कर रहे हैं अर्थात् बहुत-से संस्कार विरक्त साधुओं वाले हैं।*

'बिदर' से प्रस्थान कर धीरे-धीरे बम्बई पहुँच गए। उन दिनों महंत आत्मा सिंह जी भी अपने दो शिष्यों संत नारायण सिंह और संत दर्शन सिंह कनखल वालों को साथ लेकर बम्बई पहुँचे हुए थे जोकि सेठ लक्ष्मण दास ज्ञानचंद के घर ठहरे हुए थे। पता लगने पर महंत जी विरक्त महाराज जी को अपने निवास स्थान पर ले गए। एक दो दिन ठहरने के पश्चात् महाराज यहाँ से प्रस्थान के सम्बन्ध में कह चुके थे कि इतने में निर्मल पंचायती अखाड़ा के श्री महंत साहिब पंडित सुच्चा सिंह जी पहुँच गए। वे बोले-हम तो आप को लेने आए हैं क्योंकि 'त्रियंभक' में अखाड़े की ओर से एक नया भवन निर्माण किया है, उसके मुहूर्त निमित तीन फरवरी को श्री अखण्ड पाठ साहिब का भोग उस नए भवन में ही पड़ेगा, इसलिए अन्य साधु महात्माओं को भी निमंत्रण-पत्र प्रेषित किए हैं, आप भी चलो। महाराज बोले-हमारा विचार तो दक्षिण की तीर्थ यात्रा का है, इसलिए हमारा 'त्रियंभक' जाने का कोई विचार नहीं। महंत आत्मा सिंह जी ने कहा-महाराज हम यहाँ से कार में ही चलेंगे-भोग के उपरांत उसी दिन वापिस आ जाएँगे। इसलिए आप जी यहाँ आकर आगे की यात्रा के लिए चले जाना। आपने वचन कर दिया कि ठीक है—वापिस आकर चले जाएँगे।

31 जनवरी, 1959 वाले दिन पूज्य विरक्त महाराज जी, महंत आत्मा सिंह जी, संत नारायण सिंह जी और संत दर्शन सिंह जी कनखल वाले कार द्वारा 'त्रियंभक' पहुँचे। तीन फरवरी वाले दिन भोग पड़ने के पश्चात् लंगर छककर वापिस बम्बई आ गए। दूसरे दिन अपने संकल्प अनुसार पूज्य विरक्त महाराज जी ने दक्षिण के तीर्थ स्थानों की ओर जाने की तैयारी की तो सेठ लक्ष्मण दास ने एक हज़ार रुपए आपके चरणों में भेंट किए कि महाराज यह पैसे यात्रा के दौरान सफ़र में खर्च लेना। हजूर अपनी मौज में मुस्करा कर बोले—जो यहाँ तक लेकर आया है, वह आगे भी ले जाएगा भाई। तुम अपने पैसे उठा लो। महंत आत्मा सिंह जी बोले, महाराज! इनकी श्रद्धा है आप स्वीकार करो। हाँ—यूँ करते हैं कि दर्शन सिंह जी को आपके साथ भेज देते हैं, जहाँ आवश्यकता होगी यह खर्च करेगा—इसके साथ-साथ यात्रा के दौरान इसको भी आपकी सेवा का अवसर मिलेगा। हजूर बोले ठीक है ऐसा कर लेते हैं लेकिन इतना पैसा फिर भी नहीं चाहिए। सेठ लक्ष्मण दास को आज्ञा की कि अच्छा प्रेमी! यदि तुम अधिक कहते हो तो ऐसे कर इसमें से आधा पैसा उठा ले और शेष अर्थात् पाँच सौ रुपए दर्शन सिंह को दे दे। यहाँ से हजूर ने दर्शन सिंह कनखल वाले को साथ लेकर पाँच फरवरी 1959 को जगन्नाथ की ओर प्रस्थान किया। जगन्नाथ, रामेश्वरम् और पंचवटी आदि दक्षिण के अन्य प्रसिद्ध-प्रसिद्ध तीर्थों के दर्शन दीदार करते हुए कोई एक मास पश्चात् कलकत्ता पहुँच गए और यहाँ लक्ष्मण दास के पुत्र अम्बू के घर निवास किया। कुछ दिन यहाँ निवास कर गुरु-स्थानों के दर्शन किए। इस समय दौरान यह सज्जन अब्बू बड़े प्रेम के साथ सेवा करता रहा। फिर यहाँ से चलकर पटना साहिब पहुँचे और यहाँ एक-दो दिन ठहरकर* दर्शन सिंह तो वापिस बम्बई रवाना हो गए, लेकिन आपने कुछ दिन यहीं ठहरकर कलगीधर पातशाह की वात्सल्यपूर्ण गोद का आनंद उठाया। अब सम्भवत: किसी अन्य देश में जाने के लिए भीतरी तारें बज उठीं इसलिए चल पड़े प्रभु के आदेशानुसार प्रेम के सराबोर किसी अन्य स्थान की ओर।

---

* *उपरोक्त वर्णन-संत दर्शन सिंह कनखल वाले थे जिन्होंने बाद में कनखल निर्मल बाग पर कब्जा किया था न कि संत दर्शन सिंह विरक्त जी जो हजूर के साथ आजीवन विचरण करते रहे।*

बड़ी कुटिया का निर्माण

सागर अंदरि बोहिथा विचि मुहाणा परउपकारी॥
भार अथरबण लदीऐ लै वापारु चढनि वापारी॥
साइर लहर न विआपई अति असगाह अथाह अपारी॥
बहले पूर लघाइदा सही सलामति पारि उतारी॥
दूणे चउणे दम होन लाहा लै लै काज सवारी॥
गुरमुख सुख फलु साध संगि भवजल अंदर दुतरु तारी॥
जीवन मुकति जुगति निरंकारी॥

(वार १६वीं, पौड़ी ५)

अर्थ—सागर में जहाज़ है, उसमें पर-उपकारी मल्लाह बैठा है। भार भी जहाज़ में बहुत लदा हुआ है अर्थात् व्यापारी लोग अनेक वस्तुओं को लेकर सवार हुए हैं, लेकिन सागर की लहर किसी को दु:ख नहीं देती। यद्यपि सागर अत्यंत गम्भीर और अथाह है, क्योंकि मल्लाह जो कुशल है इसलिए प्रत्येक प्रकार की दु:ख रूपी लहरों से बचाकर पूरा का पूरा पार करा रहा है। व्यापारी लोग भी दुगने चौगुने रुपए अर्जित कर अपना कार्य पूर्ण कर रहे हैं। इस प्रकार गुरुमुख संत महापुरुषों की संगत भी संसार रूपी सागर से बोइथा अर्थात् जहाज रूप होकर संसारी जीवों को दुष्कर मार्ग के सुख-फल अर्थात् स्वरूप को प्राप्त करा देती है। गुरुमुख जीवन-मुक्ति में निमग्न रहते हैं। निरंकार की बताई अपनी युक्ति के साथ अर्थात् वाहिगुरु के तत्त्व ज्ञान की समझ से जीवन मुक्त हुए हैं किसी कल्पित साधनों द्वारा नहीं।

इस प्रकार करनाल नगर में मुक्त भंडार वितरित हो रहे हैं, फैक्टरी वालों को फैक्टरी, कोठी की इच्छा वालों को कोठी, धन पदार्थ की कामना वालों को धन पदार्थ के मुक्त भण्डार, पुत्रों की कामना वालों को पुत्रों के वरदान, बीमारों को स्वस्थता के उपहार, केवल अध्ययन की इच्छा वालों को चौबीस घंटे विद्या अर्जन के मुक्त भण्डार, आचरण-युक्त जीवन की इच्छा वालों को दैवी गुणों के मुक्त वरदान, सेवा की अभिलाषा को सेवा और मुक्ति की कामना वालों को मुक्त पदार्थ। अधिक क्या—

जो मागहि सोई सोई पावहि वाले प्रत्यक्ष भण्डार वितरित हो रहे हैं। अपनी-अपनी इच्छा अनुसार सबको वरदान प्राप्त हो रहे हैं।

1959-60 ई० की बात चल रही है जब विरक्त महाराज जी रात्रि को तो विद्युत गृह के समीप श्री अहूजा के उद्यान में ही ठहरते हैं और प्रात:-सायं सत्संग-लाभ भी हो रहा है, लेकिन दिन के तीसरे पहर संत भगत सिंह जी और अन्य संगत के प्रेम में बंधे छोटी कुटिया भी दर्शन एवं सत्संग की कृपा करते हैं। इन दिनों राम प्यारी नाम की एक पंडिताइन जो गठिया के रोग से पीड़ित है, अपने नौकर हँसा सिंह को साथ लेकर छोटी कुटिया प्रतिदिन दर्शन के लिए आती है। पंडिताइन के मायके किसी समय मालवा से उठकर लायलपुर चले गए थे। वहाँ जमीन का फार्म खरीद कर खेती की आजीविका द्वारा जीवन व्यतीत कर रहे थे। इतने में 1947 का विभाजन हुआ तो लायलपुर से उठकर करनाल आ गए। लायलपुर वाली ज़मीन के बदले तीन कुएँ एवं जमीन करनाल मिल गई। इस माता राम प्यारी का विवाह अमरनाथ बख्शी के साथ हुआ। यह माता राम प्यारी अपने मायके के घर में इकलौती पुत्री थी इसलिए मायके की समस्त सम्पत्ति अर्थात् तीन कुओं वाली भूमि और

अन्य वस्तुएँ जो मायके की थीं उसके पास आ गईं। माता का मायका मालवा होने के कारण छल-कपट रहित, मुक्त स्वभाव, बाँटकर खाना और दान-वृत्ति के संस्कारों वाला मन तो विरासत में ही मिला हुआ था और साथ में भौतिक पदार्थों की भी न्यूनता नहीं थी, इसलिए यह माता प्रतिदिन विरक्त महाराज जी के चरणों में आती तो भेंट स्वरूप बादामों की गिरियाँ, काजू आदि सूखे मेवों का महाराज जी के चरणों के ढेर लगा देती। इस प्रकार सत्संग में समय व्यतीत कर रही थी तो माता के मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई। एक दिन अनुकूल समय जानकर दाता के चरणों में प्रार्थना की, महाराज! आप एकांत जानकर प्रतिदिन विद्युतगृह श्री अहूजा के उद्यान में जाते हो, इसलिए आपको भी जाने-आने का कष्ट होता है और संगत जो नगर से दर्शनार्थ प्राय: जाती है उनको भी दूर पड़ता है, इसलिए मेरी एक प्रार्थना है कि यदि स्वीकार करें तो? हज़ूर की ओर से हाँ का संकेत समझकर माता बोली, महाराज! यहाँ से थोड़ी दूर पर मेरी ज़मीन है और बीच में बाग़ु भी लगा हुआ है जो कि नगर से दूर भी है और समीप भी। इस कुटिया में आने-जाने के लिए समीप भी पड़ेगा और संगत भी आप जी के दर्शन सत्संग का अधिक लाभ उठा सकेगी, इसलिए आप कृपा करो वहाँ ठहरो। हज़ूर बोले, माता! जैसे प्रभु की इच्छा। इससे अधिक उन्होंने कुछ नहीं कहा। खैर—संगत घरों को चली गई। दूसरे दिन माता ने फिर प्रार्थना की—जिस पर हज़ूर बोले कि अच्छा माता आज देख लेंगे। सायं को किसी समय वहाँ पहुँचे, देखा स्थान तो सुन्दर है, एकांत भी है। ध्यानपूर्वक देखा—ऐस प्रतीत हो रहा था कि कोई सुगंध ले रहे हैं, लेकिन यह नहीं पता कि सुगंधि उद्यान के किसी पुष्प की ले रहे हैं अथवा भूमि के सम्बन्धों की—ये तो वही जानें!

खैर दूसरे दिन माता को कह दिया कि माता ठीक है—जब प्रभु की इच्छा होगी ठहर जाया करेंगे। माता ने प्रार्थना की महाराज! वहाँ एक कमरा बना देते हैं, इसलिए आप निशान लगा दो। न न माता अभी वहाँ कमरे की आवश्यकता नहीं—हमें आवश्यकता हुई तो पर्णकुटी आदि बनवा लेंगे। सायं को महाराज अपनी मौज में उधर से निकल गए, साथ में एक-दो प्रेमी सेवक भी थे। प्रेमियों ने बाग़ मे घास-फूस खुर्च कुछ जगह साफ़ की और मुख्य मार्ग तक एक पगडण्डी का निर्माण कर दिया और खुर्चा हुआ घास-फूस एक ओर फैंक दिया। दूसरे दिन माता का पति भी अमरनाथ बख़्शी उस उद्यान की ओर आया। उसने खुर्चे हुए घास-फूस को देखकर पूछा कि यह किसने खुर्चा है? किसी ने बताया कि यहाँ कोई साधु निवास करेंगे-उन्होंने साफ़ किया है। बख़्शी थोड़ा क्रोध में बोला—यहाँ कोई साधुओं का डेरा है? किसी प्रेमी ने महाराज के पास बात की कि बख़्शी ऐसे कह रहा था। हज़ूर अपनी सहज अवस्था में बोले कि भाई इनको यह बाग़ हरा-भरा अच्छा नहीं लगता। माता को जब इस बात का पता चला तो अपने पति को बोली—मैंने तुम्हारी जायदाद में से तो कुछ नहीं दिया। यह भूमि तो मेरे मायके की है, मैं इसको दान दूँ अथवा अपने पास रखूँ यह मेरी इच्छा है, फिर इसमें हस्तक्षेप क्यों करते हो? माता ने हज़ूर के चरणों में प्रार्थना करके अपने पति की ओर से बोले शब्दों के लिए क्षमा मांगी। हज़ूर बोले—माता! तुम हमारे लिए अपने घर में झगड़ा न करो। झगड़े के कारण गृहस्थ जीवन नरक बन जाता है। फिर हमें स्थान की कोई आवश्यकता भी नहीं है। हम तो बाबू अहूजा वाले बाग में बड़े सुखी बैठे हैं। जहाँ प्रभु की और इच्छा हुई, वहाँ ले जाएगा। तुम इस बात को अपने मन से निकाल दो। माता फिर कुछ रुदन करती रही, लेकिन हज़ूर ने फिर भी यही कहा, माँ! तू चिंता न कर, प्रभु घट-घट के अन्तर को जानने वाला है। वह तेरी सारी भावना को जानता है। फिर भावानुसार फल देना भी उसका सदैव का स्वभाव है, इसलिए यह अच्छा ही करेगा, फिर तू चिंता क्यों करती है? खैर महाराज तो उस कालातीत पुरुष (कर्त्ता पुरखु) में एकाग्र हुए भोग-मोक्ष के मुक्त भण्डारे वितरित कर ही रहे थे, लेकिन उधर प्रभु की आज्ञा कुछ ऐसी हुई कि माँ का वह उद्यान सूखना

आरम्भ हो गया। बख्शी ने हर प्रकार का यत्न किया कि इसको सूखने से बचा लिया जाए, लेकिन प्रत्येक प्रयत्न असफल ही रहा। माँ ने सुअवसर जानकर एक दिन अपने पति को कहा 'संतन दु:ख पाये ते दु:खी', बख्शी जी आज तो एक बाग को ही रो रहे हो। हो सकता है कल इससे अधिक रोना पड़े। बख्शी जी बोले क्यों? इसलिए कि—**'दाति पिआरी विसरिआ दातारा॥'**

अर्थात् दाता को भूलकर 'दात' को प्यारा समझ लिया। वह देकर उसे वापिस भी ले सकता है—देख गुरु अर्जुन देव महाराज आदेश करते हैं—

दस बसतू ले पाछै पावै॥ एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै॥
एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ॥ तउ मूड़ा कहु कहा करेइ॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २६८)

बख्शी जी बोले—फिर क्या किया जाए? माता ने कहा—किया क्या जाए—बस वही गुरु अर्जुन देव वाली औषधि—

जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा॥
ता कउ कीजै सद नमसकारा॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २३८)

बख्शी जी कहने लगे-नमस्कार तो सदैव करते ही हैं और किस प्रकार करें? माता बोली—

सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि॥

(श्लोक म० १, पृष्ठ ४७०)

बख़्शी जी! यदि परमेश्वर की प्रसन्नता चाहते हो तो फिर ऐसा करो—

जिस की बसतु तिसु आगै राखै॥ प्रभ की अगिआ मानै माथै॥
उस ते चउगुन करै निहालु॥ नानक साहिबु सदा दइआलु॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २६८)

बख़्शी परिवार ने हजूर के चरणों में पहुँचकर प्रार्थना की, महाराज, हम से भूल हो गई आप कृपा करके बाग़ में ठहरो। हमारी भूल के कारण बाग़ सूखना आरम्भ हो गया है। आपके श्री चरण पड़ते ही संगत का आना-जाना आरम्भ हो जाएगा-फिर यहाँ चहल-पहल होगी। कृपा करो वहां निवास करो। हजूर बोले, भाई!

नहि किसहूं के करि विखे सब करतार अधीन॥

करने वाला तो वह स्वयं प्रभु है, भाई! हमारा अपना कोई संकल्प नहीं, जहाँ वह रखे उसी में आनंद है। हम उसकी व्यवस्था में दख़ल नहीं देना चाहते। परिवार ने फिर प्रार्थना की कि महाराज हम ग़लतियों के पुतले हैं, आप क्षमाशील हो, हमारी हार्दिक इच्छा है कि आप वहां रहो। परिवार की कुछ दु:खी हालत पर द्रवित होकर कृपा सागर ने कहा कि चलो भाई देख लेते हैं। उसी बगीचे वाले स्थान को ध्यानपूर्वक देखकर आज्ञा की-यहाँ दो पौधे अमरूदों के लगा दो। माता ने प्रार्थना की, महाराज! आपके लिए कुटिया कहां बनाएँ? वहाँ भी अपने चरण स्पर्श कर दो। आज्ञा की, कुटिया बनाने की आवश्यकता नहीं, हम यहाँ कोई पर्णकुटी डाल लेंगे। परिवार ने बहुत प्रार्थनाएँ कीं, लेकिन आप ने स्वीकृति नहीं दी। माता राम प्यारी अपने नौकर हँसा सिंह के साथ प्रतिदिन छोटी कुटिया आकर दर्शन करती और कुटिया बनाने वाली प्रार्थना दोहराती, लेकिन

स्वीकार न हुई। इतने में महाराज सम्भवत: अपनी मौज में करनाल से कहीं बाहर चले गए-उधर माता राम प्यारी चिंता ग्रस्त थी कि महाराज कुटिया बनाने की आज्ञा प्रदान नहीं कर रहे। इधर शरीर फूटे घट से सिमते पानी की भाँति क्षण-क्षण व्यतीत हो रहा है, कहीं ऐसा न हो कि संसार से व्यर्थ ही न चले जाएँ। परमेश्वर कृपा करे यह अधिकार-पत्र फाड़ दे। यह सोचते-सोचते माता को कुछ प्रकाश दिखाई दिया कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पावन स्वरूप के सम्मुख दो पर्चियाँ डाली जाएँ-यदि प्रभु ने दया की तो कुटिया निर्मित करने वाली पर्ची निकल जाए। माता की सच्चे दिल की करबद्ध प्रार्थना स्वीकार हुई। कुटिया बनाने वाली पर्ची निकल आई। प्रभु आज्ञा को शिरोधार्य कर परिवार ने खुशी-खुशी कुटिया बनानी आरम्भ की और वह कुछ ही दिनों में बनकर तैयार हो गई। उधर परमेश्वर के आदेश में बिंधे घट-घट के जानने वाले दाते भी कुछ समय बाद करनाल छोटी कुटिया पहुँच गए। उसी प्रकार दिन में छोटी कुटिया सत्संग करना और रात्रि को अहूजा के उद्यान में विद्युतगृह में ठहरना। माता राम प्यारी प्रतिदिन दर्शनार्थ आती, कुटिया में चरण डालने के लिए प्रार्थना करती, लेकिन स्वामी मुस्कराकर मौन हो जाएँ। हाँ अथवा न कोई उत्तर न दें। इस प्रकार कुछ दिन व्यतीत हो गए। फिर एक दिन माता के पति अमरनाथ बख्शी ने महाराज के चरणों में प्रार्थना की। आज हजूर ने भी दया की, प्रार्थना स्वीकार हुई, आज्ञा की, आप चिंता न करें, घर जाएँ। हम वहाँ स्वयं चले जाएँगे। आज उस स्थान का भाग्योदय हुआ। एक-दो सेवादारों को साथ लेकर महाराज वहाँ पहुँच गए। घास-फूस की एक पर्णकुटी बनाकर वहाँ रहना आरम्भ कर दिया। विद्युत गृह श्री अहूजा के उद्यान में जाना बंद कर दिया। चौबीस घंटे यहीं निवास करते, सत्संग होता, संगत एकत्रित होती, मानों बैकुण्ठ नगर बन गया। माता राम प्यारी एवं समस्त बख्शी परिवार चाहे इस बात से प्रसन्न हैं कि हजूर ने अब बाग में रहना आरम्भ कर दिया, लेकिन एक चिंता अभी भी भीतर ही भीतर घुन की तरह खा रही है कि हजूर कुटिया में प्रवेश क्यों नहीं करते, जो बनाई ही इनके लिए है। प्रार्थना तो वे प्रतिदिन करते ही थे। आज समस्त परिवार ने एकत्रित होकर प्रार्थना की महाराज! हम आप द्वारा प्रदत्त पक्के मकानों के भीतर रहते हैं—आप घास-फूस की बनी कुटी में रहो यह हम पर कलंक है। हजूर बोले—भाई! उस प्रभु की आज्ञा में रहना जीवन है, आज्ञा से विमुख होकर जीने से मृत्यु अच्छी।

इस प्रकार कई मास व्यतीत हो गए। उसी तरह सत्संग के अखाड़े और उसी प्रकार जीवों के उद्धार के कार्य, उसी प्रकार भौतिकता एवं मोक्ष की दातों के खुले भण्डार, लेकिन फिर भी विरक्तीय ठाठ-बाट। इस प्रकार शाही दरबार की शानो-शौकत के साथ समय व्यतीत हो रहा है। सब संगत स्वर्गीय आनंद मना रही है, लेकिन माता राम प्यारी उदास है। ज्यों-ज्यों समय व्यतीत हो रहा है, माता की उदासीनता बढ़ती जा रही है। आज माता राम प्यारी ने बहुत निराश-चित्त से प्रार्थना की—महाराज! ऐस लग रहा है कि इस जन्म में आपके चरणों की खुशी भाग्य में नहीं रही। प्रार्थना करते समय माता का रोम-रोम मानों रुदन कर रहा है। आज ऐसा प्रतीत हुआ कि माता ने हृदय की किसी गहरी तीव्र वेदना से प्रार्थना की जो स्वीकार हो गई। प्रार्थना क्या स्वीकार हुई, माता राम प्यारी मानों आज सही अर्थों में राम की प्यारी हो गई, मानों राम के दर में स्वीकार हो गई। ईश्वरीय आदेश हुआ, माता! सर्वप्रथम गुरुओं के गुरु, कलियुग के जहाज़ साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पावन चरण डलवाओ, कुटिया पवित्र करो फिर गुरुओं की चरण धूलि का हम भी आनंद मनाएँगे। हजूर के पवित्र मुख से स्वीकृति के आदेश सुनकर माता अति प्रसन्न हुई, मानों युगों से होती आ रही प्रार्थनाएँ स्वीकार हो गई हों। परिवार एवं संगत की ओर समस्त तैयारी कर ली गई, उपरांत श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ हुआ। इतने में किसी अन्य प्रेमी ने आकर प्रार्थना की महाराज! मैंने एक अखण्ड पाठ साहिब करना है आप कृपा करो यहीं इसी कुटिया में ही करा दो। प्रेमी की प्रार्थना स्वीकार हुई, आज्ञा दी कि ठीक है इसके बाद आपकी ओर से पाठ हो जाएगा। फिर और प्रेमी आते गए और इस प्रकार एक-एक

करके निरंतर सात अखण्ड पाठ साहिब पूर्ण हुए। अब हजूर ने उस कुटिया में निवास बना लिया, निवास क्या किया— सतिनाम जाप का जो कार्य आज से पूर्व एक छप्परी में हो रहा था वह मानों आज से इस कुटिया में आरम्भ हो गया।

माता राम प्यारी का शरीर तो चाहे रोगों का शिकार था, लेकिन अब समय शान्तिपूर्वक व्यतीत हो रहा है। सम्भवत: माता की अंतिम इच्छा भी यही थी जो उसने जीते जी अपने स्थूल नेत्रों से पूरी होती प्रत्यक्ष देख ली। अब माता का अंतिम समय समीप आ गया। शारीरिक व्याधि ने कुछ अधिक ज़ोर पकड़ लिया। देखकर परिवार ने अस्पताल में दाखिल करवा दिया। उधर कृपा के सागर दाता ने संगत को आज्ञा दी कि माता के पास अस्पताल में तीन-चार व्यक्ति संगत के बीच में से वहीं रहें। हर समय माता को गुरुवाणी, ज्ञान-चर्चा सुनाते रहो। संसार की कोई बात उसके समीप नहीं करनी। हजूर की आज्ञानुसार संगत ने ऐसा ही किया। माता के समीप गुरुवाणी अथवा ज्ञान-चर्चा निरंतर आरम्भ कर दी। उधर ईश्वरीय कृपा हुई, माता का मन गुरुवाणी श्रवण करता-करता गुरुवाणी में इस प्रकार लीन हो गया जैसे महाराज परीक्षित का मन अपने अंत समय में श्रीमद् भागवत् सुनते-सुनते ज्ञान में आरूढ़ हो गया था। माता जी का पति अमरनाथ बख्शी जब समीप आया, माता ने अपने हाथ की सोने की मुद्रिका उतारकर पति को पकड़ाते हुए कहा, तुम्हारे पारिवारिक सम्बन्धों की मेरे पास एकमात्र अमानत मुद्रिका ही थी—इसे संभाल लो। इसके बाद मेरा और आपका कोई सम्बन्ध नहीं। यह कहती हुई माता कुछ क्षण के लिए मौन हो गई। नेत्रों की पलकें नीचे गिरीं, दो हाथ जुड़ गए और अधरों से धीमी-धीमी आवाज़ आ रही है जो इस प्रकार सुनाई दे रही है—

टूटे बंधन जासु के होआ साधू संगु॥
जो राते रंग एक कै नानक गूड़ा रंगु॥

(बावन अखरी, पृष्ठ २५२)

और आवाज़ कुछ और धीमे हो गई, अधरों का हिलना कम हो गया, लेकिन ध्यानपूर्वक सुनने से इस प्रकार सुनाई दे रहा था—

टूटे बंधन जनम मरन साध सेव सुखु पाइ॥
नानक मनहु न बीसरै गुण निधि गोबिद राइ॥

(बावन अखरी, पृष्ठ २५५)

बस अब अधरों का हिलना बंद हो गया। शरीर शान्त होकर इस प्रकार शिथिल पड़ा है जैसे सर्प ने जरूरत न रहने पर अपनी केंचुली त्याग दी हो। सारा वातावरण शान्त था और एकमात्र आवाज़ आ रही थी—

गुरमखि जनम सवारि दरगहि चलिआ॥
सच्ची दरगह जाइ सचा पिड़ मलिआ॥

(भाई गुरदास)

संत भगत सिंह जी का सच्चखंड प्रयाण

नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम॥
जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम॥

(आसा महला १, पृष्ठ ४३९)

* *श्री हंसराज छाबड़ा की जानकारी पर आधारित।*

कार्तिक का मास आरम्भ हो चुका है। वर्षा ने दो-ढ़ाई मास अपने बल से धरती का ताप दूर कर दिया है। किसान लोग खुशी-खुशी गेहूँ बीजने की तैयारी में संलग्न हैं। आकाश में जल के बिना श्वेत बादल कहीं-कहीं नज़र आते हैं, जैसे वृद्ध आयु वाला बल से रहित शरीर। वर्षा की ऋतु में उत्पन्न हुए जीव इस प्रकार छिप गए हैं जैसे ब्रह्मवेत्ता पुरुष की वासनाएँ लुप्त हो जाती हैं। वर्षा का जल सूख जाने का मार्ग साफ हो गए हैं और यात्रियों ने अपने-अपने स्थान पर जाने के लिए यात्रा आरम्भ कर दी है।

ऐसे लग रहा है कि यह मातृ-लोक का शहर सरकार ने व्यापार के लिए बनाया हो अर्थात् व्यापार-स्थल है।

इस व्यापार-स्थल में कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जिन्होंने अभी व्यापार आरम्भ ही नहीं किया, लेकिन नगर की मात्र सैर ही कर रहे हैं। कुछ ऐसे हैं जिन्होंने थोड़ा बहुत व्यापार किया है और कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने पूर्ण कार्य समाप्त कर लिया है अर्थात् जो वस्तु बेचने के लिए आए थे, बेच दी और जो खरीदने वाली थी, खरीद ली। बस, मात्र वीज़ा की तिथि की प्रतीक्षा कर रहे हैं, वापिस अपने देश जाने के लिए। यहाँ की सरकार के नियम इतने कठोर हैं कि कोई निश्चित की गई तिथि में एक पल की वृद्धि भी नहीं कर सकता। यदि कोई प्रार्थना-पत्र दे कि मुझे अभी और सैर करनी है अथवा मेरा व्यापार अधूरा है, मेरे वीज़े की निश्चित तिथि बढ़ा दी जाए, उसकी कोई सुनवाई नहीं। इस सरकार की पुलिस इतनी ईमानदार है कि वह रिश्वत नहीं लेती, किसी की सिफ़ारिश नहीं मानती, निश्चित समय पर यात्री को पकड़कर अपने नगर की सीमा से बाहर कर देती है, बिना किसी छोटे-बड़े का लिहाज़ किए। लेकिन इस नगर में कुछ बुद्धिमान ऐसे भी आते हैं जो यहाँ के नियमों से पूरी तरह से परिचित हैं, वे इस नगर में प्रवेश करते ही अपना व्यापार आरम्भ कर देते हैं और वीज़े की निश्चित तिथि के भीतर ही अपना कार्य समाप्त कर लेते हैं अर्थात् बेचने वाला सामान बेचकर और खरीदने वाला सामान खरीदकर वापसी की पूर्ण तैयारी करके बैठे हैं, बस तिथि आई और नगर को अलविदा कही।

ऐसे ही संत महाराज भगत सिंह जी नाम के एक सफल व्यापारी आज से कोई लगभग अस्सी वर्ष पूर्व इस नगर में आए थे व्यापार हेतु। वस्तुओं का क्रय-विक्रय तो शायद इन्होंने काफ़ी समय पूर्व ही कर लिया था, लेकिन आज 1962 ई० कार्तिक अमावस्या को ऐसे लग रहा था जैसे वापिस अपने वतन जाने के लिए वस्तुओं की पैकिंग कर रहे हों।

अभी काफ़ी अंधेरा ही है। श्री हँसराज छाबड़ा जी को आज्ञा दी, पुत्र! आज अमावस्या का दिन है, चल नहर पर स्नान करें। दोनों ने नहर पर जाकर स्नान किया। वहीं उस प्रभु की याद में जुड़ गए। जुड़े भी इतने कि यहाँ से देशकाल वस्तु को नितांत विस्मृत कर पूरा दिन व्यतीत कर दिया। सायं को कुटिया जाने का संकेत किया। हँसराज जी ने आपकी अन्तर्मुखता देखकर सोचा कि बाबा जी का इस हालत में चलकर जाना असम्भव है, इसलिए रिक्शा का प्रबन्ध करके आप जी को उस पर बैठाकर कुटिया पहुँच गए। सायं को थोड़ा बहुत लंगर लिया और अन्तर्ध्यान हो गए। मानों सब सामान की पैकिंग पूर्ण हो गई। प्रातः हुई। संगत आई और कहा, महाराज! चाय छक लो, महाराज! दूध ले लो आदि अपनी-अपनी श्रद्धानुसार प्रार्थना कर रहे हैं, लेकिन आपके न अधर हिलते हैं, न उनमें कोई हरकत है। शरीर चारपाई पर इस प्रकार शांत पड़ा है जैसे कई रातों से न सोया व्यक्ति गहन निद्रा में सो रहा है। डॉक्टर बुलाया गया, उसने नब्ज, बी०पी० आदि देखकर बताया कि इनके शरीर की गति जितनी शान्त और सही है उतनी किसी स्वस्थ व्यक्ति की भी नहीं होती। रात्रि व्यतीत हो गई, दिन व्यतीत हुआ, अगली रात्रि आ गई, लेकिन महापुरुषों के पवित्र शरीर की वही हालत, न आँख खोली न अधरों से कुछ बोले। संगत ने

विचार कर उनके समीप गुरुवाणी का पाठ आरम्भ कर दिया। पाठ करने वाले से यदि कोई उच्चारण मात्रा आदि की अशुद्धि हो जाती, उसी समय महापुरुषों के बिना अधरों के हिले पवित्र मुख से आवाज़ आती ऊं-हूँ। प्रेमी फिर पूछते, महाराज! दूध ले लो। लेकिन वही मौन! न कोई उत्तर न संकेत। पाठ करने वाले से फिर पाठ का ग़लत उच्चारण होता फिर वही आवाज़ ऊं-हूँ। तीन-चार दिन इसी प्रकार होता रहा, लेकिन अब ऊं-हूँ वाली आवाज़ भी बंद हो गई अर्थात् स्थूल, सूक्ष्म और कारण आदि तीनों स्वरूप से बिल्कुल बेसुध होकर तुरीया अवस्था में लीन हो गए। इस प्रकार चौदह दिन हो गए। महापुरुषों ने अपनी अवस्था में कोई अन्तर न पाया और संगत ने भी पाठ बन्द नहीं किया। आज चौदहवें दिन संगत में से कुछ प्रेमी विरक्त महाराज जी के चरणों में बड़ी कुटिया पहुँचे। प्रार्थना की, गरीब निवाज़! छोटी कुटिया दर्शन देने की कृपा करो ताकि संगत को कुछ सांत्वना मिले। हजूर अपनी मौज में उसी समय चल पड़े। सायं का समय था और पहुँच गए छोटी कुटिया। महापुरुषों को गहरी दृष्टि से देखा, संगत को सांत्वना दी और फिर बड़ी कुटिया वापिस आ गए। संगत पहले की भाँति महापुरुषों के समीप बैठी पाठ कर रही है। अर्ध रात्रि व्यतीत हुई, ब्रह्म मुहूर्त का समय आ गया। आज कार्तिक की पूर्णिमा है अर्थात् जगत गुरु श्री गुरु नानक देव महाराज के प्रकट होने का समय हो गया। ठीक उसी शुभ समय विरक्त महाराज जी छोटी कुटिया पहुँच गए। वृद्ध महाराज के समीप बैठी और अनवरत पाठ कर रही संगत को आज्ञा दी कि आज हमारे आदिगुरु श्री गुरु नानक देव महाराज जी का प्रकाशोत्सव है। उनके आगमन की खुशी में एक सौ एक रु. का कड़ाह प्रसाद बनाओ। संगत ने आज्ञा मानकर बनाना आरम्भ किया। आप ईश्वरीय संकेत देकर वापिस बड़ी कुटिया चले गए। वृद्ध महाराज जी के समीप बैठी संगत पाठ तो निरंतर कर ही रही थी और उनके बीच में से कुछ प्रेमी प्रसाद बनाने लगे। अभी आधे पैसों का ही प्रसाद बना था कि वृद्ध महाराज भगत सिंह जी प्रातः छः बजे स्वर्ण विमान में बैठकर अपने निज देश के लिए प्रयाण कर गए। संगत अशांत हो गई, कइयों ने रुदन आरम्भ कर दिया। कड़ाह प्रसाद जो बन गया सो बन गया, शेष बनाना बन्द कर दिया। कुछ प्रेमियों ने बड़ी कुटिया पहुँचकर विरक्त महाराज जी को बताया तो अलौकिक प्रीतम सुनते ही साथ ही चल पड़े। छोटी कुटिया जाकर पूछा-प्रसाद सारा बन गया? प्रेमी बोले, महाराज! आधा बनाकर बन्द कर दिया है। हजूर बोले, क्यों? प्रार्थना की, महाराज! संगत रुदन कर रही है, इस हालत में प्रसाद किसने खाना है? हजूर बोले-तुम्हें प्रसन्नता नहीं हुई इस पवित्र दिन पर महापुरुष अपने घर गए हैं। देखो श्री गुरु अमरदास जी ने क्या आदेश किया है—

सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवार सदाइआ॥
मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ॥
मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए॥
तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरु पैनावए॥
सतिगुरू परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइआ॥

(रामकली सद्, पृष्ठ ९२३)

आदि वचन गुरु साहिब ने हम सबके लिए ही तो उच्चारण किए हैं। हमें तो बहुत प्रसन्नता हुई है, हमारा परम-मित्र अपने घर गया है इसलिए लाओ सबसे पहले प्रसाद हम छकेंगे। इस प्रकार पहले हजूर ने प्रसाद छका फिर अन्य संगत ने छका। फिर भी अभी काफ़ी शेष था। हजूर ने आज्ञा दी, अस्पताल में जाकर बाँट दो। आज्ञानुसार शेष प्रसाद अस्पताल में बाँट

दिया गया। संगत ने एकत्रित होकर विरक्त महाराज जी के पवित्र चरणों में प्रार्थना की, महाराज! वृद्ध महाराज जी की गंगा में बहुत श्रद्धा थी। जब भी गंगा जाते स्नान करने से पूर्व दण्डवत प्रणाम करते थे, इसलिए यदि आपकी आज्ञा हो तो उनके पवित्र शरीर को हरिद्वार ले जाकर गंगा में प्रवाहित किया जाए। सुनकर हजूर कुछ देर चुप रहे, फिर बोले-भाई! संगत बहुत अधिक है, ये सब फिर वहाँ किस प्रकार जाएंगे? प्रेमियों ने प्रार्थना की, महाराज श्रद्धावान् स्वयं ही पहुँच जाएंगे, आपके आदेश की प्रतीक्षा है। आज्ञा हुई-ऐसा करो भाई! गुरु साहिब से स्वीकृति ले लो-गंगा अथवा यमुना की। जैसे आज्ञा होगी वैसे ही कर लेना। दो पर्चियां लिखकर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की उपस्थिति में डाली गई। अरदास करके जब उठाई तो यमुना वाली पर्ची निकल आई। ईश्वरीय आदेश समझकर स्नान कराने के पश्चात् पवित्र शरीर को जब यमुना की ओर ले जाने की तैयारी की तो सात ट्रक संगत के साथ हो लिए। विरक्त महाराज जी की अगवाई में पवित्र शरीर की अंतिम-यात्रा यमुना के किनारे पहुँच गई। लकड़ी की एक सुन्दर पालकी बनाकर शरीर को उस पर सुशोभित किया गया। उपरान्त मर्यादा के अनुसार अरदास करके जल प्रवाहित कर दिया। सब संगत वापिस आ गई। विरक्त महाराज जी की आज्ञानुसार दिन निश्चित करके पाठ साहिब के भोग डाले गए। उपरान्त गुरु के लंगर के खुले भण्डारे वितरित किए गए।

वृद्ध महाराज भगत सिंह जी ने शरीर रहते ही समस्त संगत विरक्त महाराज जी के आँचल में डाल दी थी, इसलिए सब संगत आपके सामीप्य का आनन्द उठा रही है।

लगभग दो-ढ़ाई मास पश्चात् अचानक किसी ने आकर बताया कि वृद्ध महाराज जी का पवित्र शरीर यमुना में जहाँ जल से प्रवाहित किया था, वहीं समाधि में उसी प्रकार स्थिर बैठा है। संगत ने जाकर देखा कि यमुना का जल काफ़ी उतर चुका है। शरीर को जहाँ जल में प्रवाहित किया था, वहीं ज्यों का त्यों लकड़ी की पेटी में समाधि स्थित योगी के समान बैठा है। दो-ढ़ाई मास पश्चात् भी शरीर की हालत ऐसी है जैसे आज ही बैठे हों। वस्त्र अवश्य कुछ जल के साथ गल-सड़ गए हैं लेकिन शरीर का कुछ नहीं बिगड़ा। उनके शीश पर एक कछुआ बैठा है, लेकिन शेष शरीर के पास कोई पशु आदि नहीं है। ऐसा देखकर संगत बहुत हैरान हुई। एक दूध बेचने वाले ने बताया कि मैं कई दिनों से देख रहा हूँ कि कोई संत महात्मा पानी में बैठकर साधना कर रहा है। खैर-संगत ने पानी में कुछ गहरी खाई खोदकर शरीर को सदा के लिए यमुना को सौंप दिया।*

खोख गाँव को गुरुवाणी की देन

रतना रतन पदारथ बहु सागरु भरिआ राम॥
बाणी गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ राम॥
गुरबाणी लागे तिन हथि चड़िआ निरमोलकु रतनु अपारा॥
हरि हरि नामु अमोलकु पाइआ तेरी भगति भरे भंडारा॥
समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इक वसतु अनूप दिखाई॥
गुर गोविंदु गोविंदु गुरू है नानक भेदु न भाई॥

(आसा छंत महला ४, पृष्ठ ४४२)

* *श्री हंसराज एवं माता विमला जी के द्वारा प्राप्त।*

बाबा बेअंत सिंह जी अपने सेवकों को कहा करते थे कि पाठ कराने के लिए पाठी रहत-मर्यादा और आचरण युक्त होना चाहिए। उनके परलोक गमन के पश्चात् खोख गाँव में उनकी वार्षिक याद आश्विन की पूर्णिमा को बहुत श्रद्धा एवं प्रेम के साथ मनाई जाती थी और पूज्य विरक्त महाराज जी प्रत्येक वर्ष उस पुण्य तिथि पर पहुँचते थे। महाराज जी आज्ञा किया करते थे कि बाबा जी की पुण्य तिथि पर पाठी ऐसे होने चाहिएँ जो शराब, माँस आदि विकारों से रहित हों। उस समय गाँव में पाठी बहुत कम होते थे, अत: शहरों में से लाने पड़ते थे। तीन-चार पुण्य तिथियाँ तो यहाँ इसी तरह मनाई गईं, लेकिन इस बार 1962 की पुण्य तिथि पर विरक्त महाराज जी ने संगत को आज्ञा दी कि आप संत गोपाल सिंह से गुरुवाणी का शिक्षण प्राप्त करो और संत गोपाल सिंह को आज्ञा दी कि आप यहाँ रहकर संगत को गुरुवाणी पढ़ाओ। आज्ञानुसार शिक्षण आरम्भ हुआ और सर्दी के महीनों में पठन-पाठन चलता रहा, लेकिन शिक्षण पूर्ण न हुआ। बाबा बेअंत सिंह जी की 1963 वाली पुण्य तिथि के पश्चात् गुरुवाणी का पठन-पाठन का पवित्र कार्य फिर आरम्भ किया। फिर सन् 1964 के आरम्भ में ही अर्थात् मार्च मास तक मास्टर बलदेव सिंह, मास्टर भजन सिंह, नम्बरदार सुखदेव सिंह, फोरमैन अमर सिंह और कमर सिंह आदि पाठी तैयार हो गए। विरक्त महाराज जी ने फिर संत दर्शन सिंह को आज्ञा दी कि इनको पाठ एक बार और पक्का करा दो ताकि गाँव वालों को कभी पाठी बाहर से लाने की आवश्यकता न पड़े। इसलिए गाँव में किसी ने भी पाठ कराना हो, ये लोग किया करेंगे और भेंट की गई सभी माया गुरुद्वारा साहिब खर्च कर बिना भेंट से निष्काम सेवा किया करेंगे। संत दर्शन सिंह ने आज्ञा मानकर दोबारा क्रमानुसार बीड़ पर शिक्षण आरम्भ किया जिसमें जरनैल सिंह, जोगिंदर सिंह और राम सिंह कोटली आदि अन्य विद्यार्थी भी सम्मिलित हो गए। धीरे-धीरे डेढ़ वर्ष में अर्थात् 1965 तक उपरोक्त सभी सज्जन श्रेष्ठ पाठी तैयार हो गए। महाराज जी की आज्ञानुसार फिर इन प्रेमियों ने अपने गाँव में तो पाठों की निष्काम सेवा आरम्भ कर ही दी बल्कि दूर-समीप अर्थात् अपने गाँव में से बाहर दूसरे गाँवों में भी पाठ करने जाते और एकत्रित भेंट उसी गुरुद्वारा में दे देते। इस प्रकार पूज्य विरक्त महाराज जी ने भव्य उपकार द्वारा खोख गाँव में गुरुवाणी का बीज वपन करके, उसके उगे हुए बीज का इलाके में छींटा दे दिया, इसलिए ही इलाके के रोम-रोम में से आवाज़ आ रही है—

धंनु धंनु धंनु जनु आइआ॥ जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ॥
जन आवन का इहै सुआउ॥ जन कै संगि चिति आवै नाउ॥
आपि मुकतु मुकतु करै संसारु॥ नानक तिसु जन कउ सदा नमसकार॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २९४)

गुरुद्वारा साहिब बिशनपुरा (लोपे)

होइ निमाणी ढहि पई मिलिआ सहजि सुभाइ॥
पूरबि लिखिआ पाइआ नानक संत सहाइ॥

(राग सूही म० ५, पृष्ठ ७६१)

वर्णन 1966 जनवरी मास के अंत का है जब दीनों के मसीहा, ज्ञान के महान् सागर, दृश्य-अदृश्य अर्थात् लोक-परलोक पदार्थों के दाता संत महाराज निक्का सिंह जी विरक्त सौभाग्यशाली गाँव 'खोख' बैठकर अपने प्रीतम की याद में अभेद हुए, पर-उपकार की वर्षा कर रहे थे। प्रेमीजन निश्चित तिथियाँ लेकर अपने घरों में अखण्ड पाठ करा रहे हैं। हजूर

भोग उपरान्त शब्द की कथा द्वारा अलौकिक वाणी के ईश्वरीय ज्ञान की ज़ोरदार वर्षा कर रहे हैं। ऐसा लगभग प्रतिदिन हो रहा है। पाठी किसी ने भी बाहर से तलाशने नहीं हैं, क्योंकि महापुरुषों की कृपा द्वारा तैयार हुए गाँव के नए पाठी, गाँव क्या, क्षेत्र के निर्धन-धनी अर्थात् छोटे-बड़े बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक ज़रूरतमंद के घर निष्काम होकर पाठ कर रहे हैं। निर्धन ज़रूरतमंदों के लिए खुले भण्डारे भी प्रतिदिन वितरित हो रहे हैं।

आज अभी सूर्य उदय नहीं हुआ। ठण्ड बहुत पड़ रही है। कोहरे के कारण खेत श्वेत हुए पड़े हैं। तेज़ सर्दी के कारण लोग घर में बैठे रजाइयों का सुख भोग रहे हैं, लेकिन फिर भी कोई-कोई, प्रभु द्वारा प्रेरित अथवा किसी संयोगवश अपने-अपने कार्यों के लिए जा रहे हैं। पूर्व की ओर देखने पर ऐसा लगा मानों धनी तेज़ लाली ने वितान तान रखा हो, लेकिन अभी पूरी जानकारी नहीं मिली कि यह लालिमा पूर्व में उदय हो रहे सूर्य की है अथवा किसी अन्य संयोगवश।

गुरनाम सिंह घर से चाय लेकर कुटिया पहुँच गया। हज़ूर के चरणों में नमस्कार कर चाय डाल कर दी। अन्तर्यामी दाता ने पूछा-गुरनाम सिंह! यह लड़का कहाँ का है? महाराज यह लोपे से अमुक का लड़का है। हज़ूर ने पूछा कि यह रात्रि को आया था कि प्रात: ही आया है? महाराज अभी आया है। इनके घर में लड़की का विवाह है। विवाह का कुछ सामान खरीदने के लिए पटियाला जाना है इसलिए मुझे साथ लेकर जाने के लिए आया है। अब आपके दर्शन करके पटियाला जाएंगे। संयोग के सृजनकर्त्ता मालिक ने पूछा-भाई! आपके गाँव में गुरुद्वारा है? न महाराज! है नहीं। गाँव सिक्खों का हो और गुरुद्वारा साहिब गाँव में हो न, फिर सिक्खी क्या हुई? गुरनाम सिंह बोला-महाराज! भूमि तो चार बीघे मिलती है, लेकिन ज़मीन देने वाले की गाँव के लोगों के साथ मेल-मिलाप नहीं है, इसलिए लोग सहयोग नहीं देते-अत: गुरुद्वारा नहीं बना। हज़ूर बोले-लोग सहयोग नहीं देते तो तुम ही बनाओ। बुलाओ जत्थेदार को! कुटिया के साथ लगते खेत में एक व्यक्ति गेहूँ को पानी दे रहा है। गुरनाम सिंह ने कहा कि जत्थेदार को बुलाकर ला। वह व्यक्ति जत्थेदार को बुलाने के लिए चला गया। बाद में उस लोपे वाले ने प्रार्थना की, महाराज, लड़की के 'आनन्द कारज' पर दर्शन देने की कृपा करो। अलौकिक प्रीतम ने टाल-मटोल की, लकिन प्रेमी भी बार-बार प्रार्थना कर रहा है। महाराज कृपा करो, अवश्य दर्शन दो। आपके शुभ-चरण पड़ने से कार्य सफल हो जाएगा। हज़ूर बोले-विवाह किस दिन का है? महाराज, अमुक तिथि को है। आज से दस दिन रहते हैं। हज़ूर का दिव्य मस्तक किसी पारलौकिक प्रकाश के साथ दमक उठा। पावन अधर हिले-आज्ञा हुई-अवश्य चलेंगे। उस दिन तक तो गुरुद्वारा में भी लैंटर पड़ जाएगा। विवाह चाहे गुरुद्वारा ही कर लेना। इतने में जत्थेदार भी आ गए। हज़ूर बोले जत्थेदार! चार बीघा भूमि मिलती है—गुरुद्वारा के लिए। वहाँ गुरुद्वारा साहिब बनाओ। कल से ही आरम्भ कर दो। पहले गाँव जाकर लोगों को एकत्रित करके उनका सहयोग प्राप्त करो। संत दर्शन सिंह को आपके साथ भेजेंगे, नींव रखने के लिए। कड़ाह प्रसाद सजाकर अरदास के उपरान्त नींव रखना। आज से दस दिन के बाद इनके घर लड़की का विवाह है। उस समय तक तो गुरुद्वारा साहिब बन जाएगा। इनके घर में तुम अखण्ड पाठ करो। पाठी यहाँ से ले जाओ। पाठी अपने पाठ की बारी के पश्चात् गुरुद्वारा साहिब जाकर सेवा करेंगे। भोग पर जो भेंट मिलेगी, गुरुद्वारा साहिब के नए भवन पर लग जाएगी। 'आनन्द कारज' वाले दिन हम भी आएंगे। उस दिन गुरुद्वारा साहिब के दर्शन करेंगे।

प्रेमी ने पूछा, महाराज! आपके लोपे आने के लिए मैं नाभा से टैक्सी का प्रबन्ध कर लेता हूँ इसलिए आप जी जिस समय चलना चाहो टैक्सी उसी समय पहुँच जाएगी। हज़ूर बोले, तुम हमारी चिंता न करो, भाई! हमारी अपनी गाड़ी अभी शक्तिशाली है। तुम हमें 'आनन्द कारज' का समय बता दो। उस अवसर पर हम स्वयं पहुँच जाएंगे। हमारी ओर से बिल्कुल निश्चिन्त होकर तुम विवाह सम्बन्धी कार्य करते रहो। हज़ूर से आज्ञा लेकर, नमस्कार करके चले गए। दूसरे दिन प्रातः ही गुरनाम सिंह के ट्रैक्टर में ईंटें, लोहा, कुछ सीमेंट के थैले लादकर प्रताप सिंह मिस्त्री को खोख से लेकर जत्थेदार नछत्तर सिंह जी प्रातः ही लोपे गाँव पहुँच गए। गाँव के लोगों को एकत्रित करके महापुरुषों का हुक्म सुनाया। लोग ईश्वरीय आज्ञा सुनकर सेवा में साथ लगने के लिए सहमत हो गए। महापुरुषों की आज्ञानुसार बारह-बारह फुट के कमरों की नींव खोदी गई और उसके उपरान्त कड़ाह प्रसाद सजाकर गुरु नानक देव महाराज के चरणों मे अरदास करने के पश्चात् संत बाबा दर्शन सिंह जी ने अपने पावन कर कमलों से 'गुरुघर' की नींव रखी। इस प्रकार सेवा का कार्य आरम्भ होने पर 'खोख' और 'लोपे' की संगत सेवा करती रही और ईंटें आदि शेष सामान ढोने की सेवा गुरनाम सिंह खोखे जत्थेदार उद्यम सिंह अगौल और ज्ञानी विक्रम सिंह पालियाँ अपने ट्रैक्टरों के साथ करते रहे। इस प्रकार सेवा कार्य चलता रहा। इतने में विवाह भी समीप आ गया। दो दिन पूर्व खोख से आकर पाठियों ने अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ किया। पाठी सिंह अपने पाठ की ड्यूटी के पश्चात् गुरुद्वारा की सेवा में लग जाते। इस प्रकार पाठ के मध्य वाले दिन अर्थात् विवाह से एक दिन पूर्व दरबार साहिब पर लैंटर पड़ गया। इस प्रकार अलौकिक प्रीतम का वचन भी प्रत्यक्ष हो गया कि विवाह तक गुरुद्वारा साहिब बन जाएगा। दूसरे दिन महाराज जी गुरनाम सिंह को साथ लेकर जंगल में से होते हुए पैदल ही लोपे पहुँच गए। पहले गुरुद्वारा साहिब जाकर दर्शन किए। अपनी मौज में आए बड़े ध्यानपूर्वक किसी गहन भाव में डूबे खड़े देख रहे हैं, लेकिन चेहरे की मुस्कान, मस्तक की प्रफुल्लता और प्रसन्न मुद्रा से कुछ ऐसे भाव प्रकट हो रहे हैं जैसे अपने आपको देखकर अथवा किसी पूर्व के सम्बन्ध समझकर मुस्करा रहे हों, लेकिन पूर्ण तो वे स्वयं जी जानते हैं—दूसरे जानने के लिए समर्थ नहीं। खैर-इतने में 'आनन्द कारज' की तैयारी हो गई और दयालु दाता भी आनन्द कारज वाले स्थान पर पहुँच गए। 'आनन्द कारज' की अरदास के पश्चात् आप जी ने ईश्वरीय हुक्मनामें की व्याख्या सहित कथा की। उपरान्त सेवकों के कार्य पूर्ण करके गुरुद्वारा साहिब सजाकर, सूखी भूमि में पड़े किसी पुराने बीज को थोड़ा हिलाकर उसको पानी का छींटा देकर, गुरनाम सिंह को साथ लेकर जंगल से होते हुए 'खोख' पहुँच गए।

विरह की पीड़ा और अरदास की शक्ति

वर्णन 1966 ई० के किसी समय का है जब पूज्य विरक्त महाराज जी कई मास करनाल न गए। ज्येष्ठ-आषाढ़ की ज़ोरदार गर्मी की ऋतु व्यतीत हो गई। वर्षा आरम्भ हो जाने से सारी वनस्पति बसंत ऋतु की भाँति यौवन पर आ गई। किसान लोग बहुत खुश हैं। इनकी फसलें हरी-भरी हो गई। साधारण लोग वर्षा होने से ज्येष्ठ-आषाढ़ के ताप से मुक्ति प्राप्त कर चुके हैं। मयूर काली घटाओं को देख-देखकर नृत्य कर रहे हैं, लेकिन पपीहों की ध्वनि से ऐसा भासित होता है कि ये अधिक अशांत हो गए हैं। दस मास पूर्व इनकी ध्वनि कभी सुनाई नहीं दी। अब जिस दिन से वर्षा आरम्भ हुई है, वर्षा की कामना के लिए इनकी हृदय विदारक करुणामयी पुकार दिन-रात कानों में गूँज रही है कि क्या इनके लिए वर्षा नहीं हुई? समस्त

प्रकृति अर्थात् वनस्पति के तप रहे हृदय शान्त हो चुके हैं। फिर ये पपीहे बेचारे क्यों तड़प रहे हैं? इसका वर्षा से क्या सम्बन्ध, यह तो चाहे प्रतिदिन बरसती रहे। ये पपीहे तो बेचारे किसी ओर बूँद के प्यासे हैं, जो सम्भवत: अभी तक नहीं बरसे। उस स्वांति बूँद के बिना, लगातार वर्षा भी इनकी प्यास बुझाने के लिए समर्थ नहीं, प्रभु करे इनकी प्रार्थना स्वीकार हो। अन्य सृष्टि की भाँति ये भी बेचारे शान्त हो जाएं। बस इससे बिल्कुल मिलती-जुलती हालत करनाल की संगत की हो गई। कई मास व्यतीत हो गए, दर्शन नहीं हुए। दर्शन की तो बात एक तरफ, यह भी पता नहीं लगा कि वे कहाँ हैं। कोई थोड़ी बहुत जानकारी लगे, तो उनकी तलाश की जाए। अंतत: कुछ थोड़ा पता लगा कि पूज्य विरक्त महाराज जी होशियारपुर के क्षेत्र में जगत् उद्धार का कार्य कर रहे हैं। श्री अमरीक चन्द जी चावला, सतीश चावला और सरदार गुरबचन सिंह जी डायमंड आदि तीन सज्जन कार में सवार होकर श्री कृष्ण गोपाल के पास होशियारपुर पहुँच गए। सारी बात सुनकर श्रीकृष्ण गोपाल ने बताया कि मैंने सुना है कि एक संत शेरपुर गरिण्ड लगभग एक मास से ठहरे हुए हैं। तुम सब आराम कर लो मैं प्रात: वहाँ से पता लगा दूँगा। श्री कृष्ण गोपाल प्रात: ही शेरपुर गरिण्ड पहुँचा। पता करने पर ज़ैलदार जगत सिंह, मोहन सिंह और सोहन सिंह आदि प्रेमियों ने बताया कि महाराज जी यहाँ काफ़ी समय गुरुवाणी की अमृत-वर्षा करते रहे हैं, लेकिन अब एक मास हो गया, गाँव चक्कोवाल के एक प्रेमी उजागर सिंह के पास ठहरे हुए हैं। कृष्ण गोपाल घर जाकर चावला आदि तीनों सज्जनों को साथ लेकर चक्कोवाल गाँव पहुँचा। उजागर सिंह ने बताया कि हजूर यहाँ कुछ दिन ठहरकर 'भुंगरनी' चले गए थे। वहाँ से चारों सज्जन कार लेकर भुंगरनी पहुँचे। यहाँ पहुँचकर निर्मले संत जोता सिंह की कुटिया का पता किया तो उन्होंने बताया कि महाराज जी तो पंद्रह दिन हुए, फिल्लौर के समीप 'नगरनावे' गाँव के पास एक छोटा सा गाँव है वहाँ चले गए हैं। दुआबा की कल्लरी भूमि, कच्चे मार्ग, वर्षा की ऋतु-वहाँ कार भी चलने से असमर्थ हो गई, लेकिन फिर भी किसी वियोग की प्यास, किसी प्रेम की खिंची जा पहुँची उस छोटे से नगर जहाँ कुछ दिन उस अलौकिक प्रीतम ने सौभाग्य प्रदान किया था। उस गाँव से पता करने पर एक सज्जन ने बताया, हाँ आए हैं, मेरे साथ चलो-सब बताता हूँ। कार लेकर उसके घर पहुँच गए। प्रेमी ने एक चारपाई पर बैठाया, लेकिन बता अभी कुछ नहीं रहा। ये सज्जन उतावले होकर महाराज जी के बारे में पूछ रहे हैं, लेकिन वह सज्जन हाँ, हूँ करके देर कर रहा है। इतने में कुछ मिनटों के पश्चात् पीतल की थालियाँ आगे लेकर रख दी। जिनमें प्रेम से भरपूर अमृत समान लंगर परोसा, जो कभी जगत माता गंगा ने छकाया था गुरु घर के महान् वृद्ध बाबा बुड्ढा जी को। तीनों सज्जनों ने शायद पहली बार यह प्रसाद छका। मिस्सी रोटियाँ, साथ प्याज और उस पर मक्खन और लस्सी लंगर ले रहे हैं और साथ में सोच रहे हैं कि इस जीवत परिवार को दाता ने प्रेम के अतुलनीय भण्डार प्रदान किए हैं। लंगर छकने के पश्चात् प्रेमी ने बताया कि महाराज आज प्रात: ही गए हैं। वे पैदल ही जाना चाहते थे, लेकिन मैं बार-बार प्रार्थना करके बस में चढ़ाकर आया हूँ लुधियाना के लिए। उस प्रेमी का प्रेम, सहज स्वभाव और धैर्य देखकर तीनों सज्जन आश्चर्यचकित हो रहे हैं। खैर लुधियाना की ओर कार दौड़ाई और आकर पता किया। किसी ने बताया कि थोड़ी देर हुए दोराहे की ओर दो साधु पैदल जाते हुए देखे हैं, लेकिन हमें यह नहीं पता कि वह कहाँ जाएंगे। चावला प्रेमी वहाँ से चलकर इधर-उधर पूछते ढूँढते खन्ना पहुँच गए; लेकिन अलौकिक प्रेमी का कोई अता-पता न लगा। खन्ना भी कई स्थानों पर उनका पता किया। एक कुटिया में गए, लेकिन आगे कई साधु बैठे तम्बाकू और चिलमें पी रहे थे। देखकर चावला प्रेमियों ने सोचा, महाराज यहाँ नहीं आ सकते। वहाँ से बिना पूछे ही वापिस जी.टी. रोड़ पर आ गए। आगे एक नवयुवक साधु से भेंट हुई।

पूछने पर उसने बताया कि पूज्य विरक्त जी मेरे गुरुदेव हैं। मैंने बहुत प्रार्थना की टिकट लेकर देने की, लेकिन स्वीकार नहीं हुई इसलिए अपनी मौज में पैदल ही आगे चले गए। चावला प्रेमी जन कार लेकर आगे चलने लगे तो वह साधु बोला, मुझे भी साथ ले चलो, शायद दर्शन हो जाएं। चावला ने उसको भी कार में बिठा लिया। थोड़ी दूर पर एक पैट्रोल पम्प आया। साधु बोला कि एक मिनट कार रोको। मैंने महाराज जी की सेवा के लिए इन पैट्रोल पम्प वालों से सौ रुपया लिया था, लेकिन हजूर ने तो एक पैसा भी खर्चने नहीं दिया। वह सौ रुपया इनका वापिस कर दूँ। साधु पैट्रोल पम्प वालों को पैसे वापिस करके आ गया। अब चारों सज्जन सरहिंद पहुँच गए लेकिन महाराज जी का कुछ पता नहीं। अंततः थक टूटकर और निराश होकर रात्रि को सरहिंद ही व्यतीत करने का निर्णय कर लिया। रात्रि व्यतीत हुई-प्रातः फिर खोज आरम्भ हुई और ढूँढ़ते-ढूँढ़ते फतहगढ़ साहिब जा पहुँचे। वहाँ भी कुछ पता न चला। अंततः चारों ने सलाह की कि अब और कोई चारा नहीं है। कल के तलाशते हम को बजाए दर्शन होने के निराशा ही होने लगी है। अब तो एक ही मार्ग है जगत् गुरु श्री गुरुनानक देव महाराज जी के चरणों में अरदास प्रार्थना करें। इस प्रकार प्रत्येक दृष्टि से जब कोई सफलता प्राप्त न हुई यानी न तो हजूर के दर्शन हुए और न ही अता-पता लगा, तो छोटे साहिब की पावन याद में सुशोभित गुरुद्वारा साहिब के भीतर जाकर प्रार्थना की कि हे जगत गुरु नानक देव महाराज जी, हे बाबा ज़ोरावर सिंह और फतेह सिंह जी कृपा करो, मेहर करो-'साधु जन देहु मिलाये'। बुद्धि एवं धन के सभी मार्ग असफल हो जाने पर की गई अरदास स्वीकृत हुई। अरदास की समाप्ति पर जिस समय बाहर देखा तो गुरबचन सिंह ने शोर मचा दिया कि ओह! महाराज आ गए। दौड़ कर चरणों पर नमस्कार की। हजूर भी अपनी मौज में मुस्कराये। खैर-गाड़ी में बैठकर करनाल पहुँच गए।*

गाँव धनौला

बरनाला संगरूर रोड पर मालवा का एक प्रसिद्ध गाँव बसता है 'धनौला मण्डी'। यह गाँव बरनाला नगर से 12 कि.मी. पूर्व की ओर और संगरूर नगर से 28 कि.मी. पश्चिम की ओर मुख्य सड़क पर स्थित है। सन् 1960 से पूर्व की बात है जब संत बाबा गोपाल सिंह अन्न जल के अधीन इस गाँव में पधारे। आपने गाँव से बाहर एक कुएँ पर ठहरकर अपने विरक्तभाव में आठ पहर पश्चात् गाँव से मधुकरी करके एक बार प्रसाद ग्रहण कर लेना और फिर चौबीस घंटे उस प्रीतम की याद में सम्बद्ध रहना। आपका ऐसा तपस्वी और त्यागी जीवन देखकर गाँव के लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ा, लेकिन एक प्रेमी मिस्त्री जोध सिंह तो कुछ अधिक ही प्रभावित हुआ। मिस्त्री जोध सिंह प्रातः-सायं चाय आदि लेकर जाता ही था और उस समय महापुरुषों से कुछ न कुछ परमार्थ की बात भी सुनता रहता। इस प्रकार लगभग एक सप्ताह यहाँ ठहरकर संत अपनी मौज में रात्रि को किसी अन्य ओर चले जाते।

प्रभु द्वारा प्रेरित लगभग तीन वर्ष बाद वे फिर यहाँ आए तो गाँव के पूर्व की ओर एक स्थान है 'भैणी वेहड़ा' यहाँ श्री चूहड़ सिंह कानूनगो की ज़मीन में एक छोटा सा कमरा था, उसमें ठहरे। दिनचर्या आपकी वही पुरानी अर्थात् दिन में एक बार गाँव से मधुकरी लेकर लंगर छक लेना फिर उस प्रभु की स्मृति में खोए रहना।

भाई जोध सिंह मिस्त्री और कानूनगो का परिवार तो सेवा सत्संग का लाभ उठा ही रहा था, लेकिन अब गाँव की अन्य संगत ने भी आना आरम्भ कर दिया। आप भी संगत को पावन गुरुवाणी के किसी शब्द द्वारा सत् उपदेश करते रहते। गुरुवाणी

* *श्री अमरीक चन्द चावला जी द्वारा प्राप्त।*

पढ़ने के जिज्ञासुओं को 'जपुजी' 'रहिरास' आदि नित्य नियम की वाणियों का शिक्षण भी देते रहते। इस प्रकार कुछ दिन यहाँ ठहरकर संगत के मन में वाणी के प्रति रुचि जाग्रत करके फिर अपनी सहजता में किसी अन्य स्थान की ओर चले गए। फिर काफ़ी समय व्यतीत हो गया, आप यहाँ नहीं आए और न ही संगत को पता लगा कि कहाँ हैं। कई वर्षों बाद भाई जोध सिंह को पता लगा कि संत 'भोतने' गाँव आए हुए हैं। वहाँ दर्शनार्थ गया और प्रार्थना करके महाराज जी को साथ ही 'धनौले' ले आया। निवास पहले की भाँति सरदार चूहड़ सिंह कानूनगो के कुएँ पर ही रखा और कार्य भी वही-संगत को गुरुवाणी शिक्षण। इस प्रकार ईश्वरीय कार्य करते आप प्रात: छ: से आठ बजे तक 'जपुजी साहिब' की एक पउड़ी (श्लोक) की कथा करनी और फिर दिन में कुछ प्रेमियों को गुरुवाणी पढ़ाते रहना। इस प्रकार काफ़ी समय यहाँ ठहरकर मालवा की सूखी धरती पर गुरुवाणी का प्रवाह चलाते रहे। अब आपने यहाँ से किसी और स्थान पर जाने का संकल्प किया, लेकिन संगत में प्रेम इतना बढ़ गया था कि वे नहीं चाहते थे कि महापुरुष यहाँ से किसी अन्य स्थान पर जाएं। आपने संगत को कहा-आप कार्तिक की पूर्णिमा को करनाल आना। हम आपको अपने गुरुदेव पूज्य विरक्त महाराज जी के दर्शन कराएंगे-जो साक्षात् परमेश्वर स्वरूप हैं। इस प्रकार संकेत करके आप तो अपनी मौज में किसी अन्य स्थान पर चले गए। उधर पूर्णिमा का समय समीप आने पर चूहड़ सिंह कानूनगो करनाल पहुँच गया। संत गोपाल सिंह जी ने अपने पूज्य गुरुदेव विरक्त महाराज जी के दर्शन कराए। कानूनगो ने प्रार्थना की, महाराज! कृपा करो-कभी 'धनौला' दर्शन देने की कृपा करो। हजूर बोले-कभी समय संयोग बना तो अवश्य आएंगे। उसके पश्चात् काफ़ी समय तक हजूर का धनौला आने का कोई प्रोग्राम नहीं बना। कानूनगो ने फिर दौद गाँव जाकर प्रार्थना की, महाराज! कृपा करो। मेरे साथ ही धनौला गाँव चलकर संगत को दर्शन-दीदार देने की कृपा करो। हजूर बोले-भाई तुम जाओ-हम स्वयं ही आएंगे। कानूनगो महापुरुषों से वचन लेकर वापिस चला गया। कुछ समय पश्चात् हजूर अपने वचनानुसार भगत लॅभामल की कार में धनौला पहुँच गए। उपरान्त कानूनगो की कुटिया में निवास कर जगत् उद्धार के कार्य-सतिनाम जाप का प्रवाह प्रवाहित कर दिया। गाँव की पर्याप्त संगत ईश्वरीय वचनों का लाभ उठाने के लिए आनी आरम्भ हो गई। उन दिनों में राम सिंह जी पंजाब एंड सिंध बैंक बरनाला में कार्यरत थे। वे भी ड्यूटी के पश्चात् प्रतिदिन हजूर के चरणों में धनौला पहुँच जाते। रात-भर सेवा का लाभ उठाकर प्रात: फिर अपनी ड्यूटी पर जाकर हाज़िर हो जाते। इस प्रकार धनौला गाँव में हरि-यश, हरि-कीर्ति का अच्छा वातावरण बन गया। इन दिनों में ही भाई अमरीक सिंह आदि कुछ प्रेमियों को हजूर ने दरगाही टिकट अर्थात् नाम की ईश्वरीय दात की कृपा की। कुछ प्रेमियों ने गुरुवाणी के शिक्षण प्राप्त करने हेतु महाराज जी के श्री चरणों में प्रार्थना की। आपने संत गोपाल सिंह जी को आज्ञा दे दी कि यहाँ ठहरकर जिज्ञासुओं को गुरुवाणी पढ़ाओ। महाराज जी ने आप तो गुरुवाणी शिक्षण की आज्ञा देकर यहाँ से करनाल की ओर प्रस्थान कर दिया। इधर संत गोपाल सिंह जी ने कानूनगो की पुत्री मनजीत कौर और बलविंदर कौर आदि कुछ संगत को गुरुवाणी का शिक्षण दिया। पूज्य विरक्त महाराज जी का पंच भौतिक शरीर जब तक इस असार संसार में रहा-समय-समय पर इस सौभाग्यशाली संगत को दर्शन-उपेदश की कृपा करते रहे। आप जी के सच्च-खण्ड प्रयाण के पश्चात् यहाँ की संगत पूज्य महंत राम सिंह महाराज जी को उनका स्वरूप समझकर समय-समय पर प्रार्थना करके धनौला ले जाती है और आप भी पूज्य विरक्त महाराज जी की संगत समझकर अपने पर-उपकारी स्वभावानुसार समय-समय धनौला पहुँचकर ईश्वरीय प्रसाद गुरुवाणी का प्रवाह चलाते रहते हैं।

उच्ची दौद और आस-पास के गाँव में आगमन

संत गोपाल सिंह जी दो अन्य साधुओं को साथ लेकर गुरुदेव महाराज निक्का सिंह जी के जन्म-स्थान 'सीहाँ दौद' के दर्शन करने के लिए आए। महाराज जी के घर के सम्मुख जाकर दण्डवत् प्रणाम की। तीर्थ रूप समझकर उसकी धूलि मस्तक को लगाई। सहयोगी साधुओं को कहने लगे, धन्य है यह भूमि जहाँ प्रभु का भक्त प्रकट हुआ। धन्य है यह वंश जो हरि की दरगाह में स्वीकार हुआ है। यह गाँव भी धन्य है जिसको हजूर ने दरगाह से आकर सुवासित किया और यहाँ के लोग भी धन्य हैं कि इनको प्रभु ने नवाजा। यथा—

होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ॥
धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुंटब सभ लोइ॥

(बिलावलु बाणी रविदास जी, पृष्ठ ८५८)

इस प्रकार संत गोपाल सिंह जी ने गाँव के लोगों, गाँव की भूमि और हजूर के पवित्र गृह को अन्तर्निहित भावों सहित दण्डवत् प्रणाम की। उपरान्त तीनों साधुओं ने मधुकरी करके भोजन लिया। इतने में गाँव के लोगों को पता चला कि ये महात्मा महाराज निक्का सिंह जी के शिष्य हैं। ज्वाला सिंह नाम का एक सज्जन जो कि विरक्त महाराज जी का बाल्यकाल का मित्र था, इनको प्रार्थना करके अपने कुएँ पर ले गया। तीनों साधु वहाँ ठहर गए। लंगर के समय मधुकरी करके लंगर छक लेते, कभी-कभी उच्ची दौद, सीहाँ दौद, मालो दौद, दलनवाल और नारोमाजरा आदि गाँवों में लंगर छकने के लिए चले जाते। रात्रि ज्वाला सिंह के कुएँ पर मक्की के खेतों में व्यतीत कर लेते। इस प्रकार का त्यागमय जीवन देखकर आस-पास के कई गाँवों के ऊपर पर्याप्त प्रभाव पड़ गया। उन दिनों परमेश्वर की ऐसी कृपा हुई कि गाँव नारोमाजरा पशुओं में 'मुँह-खुर' की बीमारी फैल गई। कुछ लोग संतों के पास आए कि आप कोई जादू-टोना कर दो ताकि पशुओं की बीमारी रुक जाए। संत बोले-हम जादू-टोना तो नहीं जानते, लेकिन आपको औषधि बता देते हैं—गुरु नानक के घर की। यदि उसका प्रयोग कर सकते हो तो कर लो। आप गुरुवाणी का अखण्ड पाठ रख दो, गुरु नानक कृपा करेंगे। लोगों ने प्रार्थना की, बाबा जी, अखण्ड पाठ के समय आप हमारे गाँव में ही निवास करो। संगत की प्रार्थना स्वीकार करके संत गाँव 'नारो माजरा' पहुँच गए। गाँव की धर्मशाला में मर्यादा अनुसार अखण्ड पाठ रखा। भोग वाले दिन खुला लंगर चलाया गया। परमेश्वर ने कृपा की, बीमारी रुक गई। लोगों के मन में साधुओं के प्रति एवं गुरु-घर में श्रद्धा बढ़ गई। फिर लोगों ने प्रार्थना की-बाबा जी हमारे गाँव में गुरुद्वारा साहिब का निर्माण कराओ। नारोमाजरा गाँव के लोगों की यह शुभ भावना देखकर संत गोपाल सिंह जी ने मन में कुछ सोचा, लेकिन संगत को कुछ नहीं बताया। दूसरे दिन तीनों साधु भोतने, बख़तगढ़ को चले गए। इधर नारोमाजरा गाँव के लोगों में काफ़ी श्रद्धा पैदा हो गई थी, इसलिए एकत्रित होकर भोतने पहुँचे। वहाँ जाकर गुरुद्वारा वाली प्रार्थना पुनः दोहराई। सुनकर संत गोपाल सिंह जी बोले-यदि आपने गुरुद्वारा साहिब बनाना ही है तो हमारे गुरुदेव संत बाबा निक्का सिंह जी को प्रार्थना करो, वे समर्थ पुरुष हैं। यदि आपका विचार है तो हरिद्वार जाकर मिल सकते हो, क्योंकि बाबा बुड्ढा सिंह जी की पुण्य तिथि पर वे हरिद्वार अवश्य पहुँचेंगे। संगत वचनानुसार हरिद्वार पहुँची। विरक्त महाराज जी के चरणों में अपनी गुरुद्वारा साहिब बनाने वाली भावना प्रकट की। प्रार्थना की, महाराज! आप संत गोपाल सिंह जी को आज्ञा दो, हमारे गाँव में गुरुद्वारा साहिब बना दे। हजूर बोले-भाई गोपाल सिंह बना सकता है तो बना ले, पर उसको कह दो कि आरम्भ करके बीच में न छोड़े। आज्ञा

पाकर संत गोपाल सिंह जी ने गुरुद्वारे का कार्य आरम्भ कर दिया। संगत भी प्रेम के साथ सेवा में जुट गई, लेकिन आप स्वयं बाहर किसी कुएँ पर ठहरते, लेकिन संगत को प्रेरित करने के लिए एक बार गुरुद्वारा साहिब अवश्य आते।

एक दिन की बात है—सूर्यास्त के समय आप गाँव से बाहर अपनी मौज में बाहर बैठे थे। एक सज्जन अपने खेत में काम करता हुआ आया। मूँगफली की गाँठे भूनकर अपने घर को ले जा रहा था। दैव संयोग से अचानक संत गोपाल सिंह के पास से निकला। नमस्कार की और प्रार्थना की, महाराज! मूँगफलियाँ छको।

महात्मा—कहाँ से लेकर आए हो?

सज्जन—महाराज अपने ही खेत में से भूनकर ले आया हूँ।

महात्मा—कोई बुरा निंदा-योग्य कार्य तो नहीं करता?

सज्जन—सब करता हूँ, कुछ नहीं छोड़ता।

महात्मा—कोई नशा भी करता है?

सज्जन—महाराज नशे भी सब करता हूँ।

महात्मा—इस समय भी कोई नशीली वस्तु तुम्हारे पास है?

सज्जन—हाँ महाराज-सिगरेट और अफीम है। सुरा रात्रि को पान करता हूँ।

महात्मा—नहीं, फिर नहीं-भाई-तेरी मूँगफली नहीं खाते तुम ले जाओ।

सज्जन—महाराज यदि छोड़ दूँ, फिर तो खा लोगे?

महात्मा—हाँ-फिर खा सकते हैं।

सज्जन—लो महाराज! छोड़ दी-अब प्रयोग नहीं करूँगा।

महात्मा—हे प्रेमी! तेरा नाम क्या है?

सज्जन—महाराज! हवलदार अमर सिंह है।

महात्मा—हवलदार! फिर तू ऐसा कर-अफ़ीम तो इतनी शीघ्र छुटेगी नहीं, लेकिन सुरापान एवं सिगरेट छोड़ने का वायदा कर।

हवलदार सिगरेट की डिब्बी निकालकर समीप बैठे एक मुसलमान भाई को देने लगा तो संत महाराज जी ने रोक दिया। कहने लगे-तुझे पता नहीं कि दान आगे जाकर कितने गुणा फलता है। तुम विष देने लगे हो। इसे तोड़कर परे फैंक दे। हवलदार ने सिगरेट की डिब्बी तोड़कर फैंक दी और वचन दिया कि आज से सभी बुरे काम त्याग दिए और सुरापान भी नहीं करूँगा। संत बोले-तुम्हारे गाँव गुरुद्वारा साहिब बन रहा है, वहाँ जाकर सेवा किया कर, इस प्रकार मूँगफली चबाकर हवलदार को प्रेम के घर में भेज दिया। हवलदार अब प्रतिदिन आने लगा। सेवा करता, वस्त्र धोता और फिर प्रार्थना करके अपने कुएँ पर ले गया। संत जी ने भी उसका प्रेम और एकांत देखकर उसके कुएँ पर ही निवास बना लिया। वहाँ बैठकर गुरुद्वारा साहिब की चल रही सेवा की देख-रेख करने लगे। कुछ मास पश्चात् गुरुद्वारा की सेवा अभी अधूरी ही थी तो धन की कमी पड़ गई। हवलदार ने संत जी को आकर बताया। संत बोले! दरवाज़े खोलकर एक ढिंढोरा करवा दें कि जिसने एक पुत्र लेना है—वह एक हज़ार रुपये गुरुद्वारा साहिब को देवे। हवलदार ने गाँव आकर ढिंढोरा फिरवा दिया, लेकिन किसी ने एक पैसा भी नहीं दिया। हवलदार ने प्रातः आकर महाराज जी से पूछा-कि यदि कोई एक हज़ार रुपया गुरुद्वारा साहिब को दे देता तो क्या आप पुत्र दे देते? संत बोले-पुत्र हमें देना था? जिसका घर बनता है पुत्र तो उसने देना था। खैर-डेढ़ वर्ष में गुरुद्वारा साहिब बनकर तैयार हो गया।

इन दिनों 'उच्ची दौद' के बाबा सुंदर सिंह ने अपने घर अखण्ड पाठ साहिब करवाना था। वह महाराज जी को प्रार्थना करके अपने गाँव ले आया। आश्विन-कार्तिक का मास था, इसलिए किसान लोग दिन-रात अपने कार्यों में मग्न थे। संत अकेले ही दोपहर के समय बाहर खेतों में एक कीकर वृक्ष के नीचे बैठे थे। इतने में दलीप सिंह नाम का एक युवक साथ में शिकारी कुत्ते को पकड़ अपने कुएँ से घर की ओर जा रहा था। संत उसे देखकर कीकर वृक्ष के नीचे उठकर मार्ग पर आ गए, जहाँ से उसने निकलना था। समीप आने पर दलीप सिंह को महाराज जी ने पूछा-प्रेमी! इस कुतिया के साथ क्या करते हो?

दलीप सिह—बाबा जी—खरगोश, मृग आदि का शिकार करता हूँ।

संत—क्यों?

दलीप सिंह-जी मारकर माँस खाता हूँ।

संत—तुझे यह नहीं पता, जो करता है इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा। जिनको तू आज मारता है, कल वे तुम्हें मारकर खाएंगे। यह मनुष्य शरीर तो कर्म-भूमि है। इसमें जो जैसा बीजता है, वैसा प्राप्त करता है। तुम किसान हो, तुझे खेती के सम्बन्ध में पता भी है। अब कार्तिक का मास चल रहा है। आप लोग गेहूँ, जौ, चने-जो बीजोगे-आगे जाकर वही काटोगे कि कुछ और?

दलीप सिंह—हाँ-बाबा जी काटेंगे तो वही।

संत—बस इसी प्रकार यह मनुष्य शरीर भी कार्तिक का मास है अर्थात् कर्म-भूमि है। इसमें किए कर्म ही दूसरी योनियों के हेतु हैं। यदि तुमने इस मनुष्य शरीर का महत्त्व न समझा तो आगे जाकर नरक एवं अन्य दु:खदायी योनियाँ तैयार हैं। यदि तुम थोड़ा सा बुद्धि से काम लो-तो भले कार्य करके फिर दोबारा मनुष्य शरीर प्राप्त कर सकते हैं। यदि चाहो तो स्वर्ग राज्य की इन्द्र पदवी भी प्राप्त कर सकता है। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो जन्म-मृत्यु से रहित अविनाशी राज्य प्राप्त करने की तो पुरुषार्थ एवं गुरु कृपा द्वारा वह भी असम्भव नहीं है। यह निर्णय अब तुम्हारे हाथ में है कि कार्तिक के मास में इस मनुष्य शरीर रूपी भूमि में क्या बीजना है-दु:ख अथवा सुख? इस उपदेश ने दलीप सिंह के मन पर गहरा प्रभाव डाला। आज तक उसे तो केवल इतना ही पता था कि खाओ, पीओ और मौज उड़ाओ। बस इससे आगे-पीछे कोई लेखा पूछने वाला नहीं, लेकिन आज कुछ पता लगा कि साफ़-सुथरा और लोक-परलोक में सुखदायी और सुन्दर जीवन भी है। मैं तो आज तक काँटों भरे मार्ग में ही पड़ा रहा। खैर-संत महाराज जी से आज्ञा लेकर घर को चला गया। फिर कभी-कभी दर्शनार्थ आ जाता, लेकिन अभी जीवन का मार्ग नहीं बदला। वही सुरापान, मांस और सिगरेट। हाँ-महाराज जी की एक बात बार-बार ठोकर मार रही है—

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु॥

एक दिन अपने मित्र बाबू सिंह को संत महाराज का सारा वृत्तांत सुनाया। बाबू सिंह एक नेक स्वभाव का व्यक्ति था, लेकिन कभी-कभी कुसंग के प्रभाव स्वरूप मदिरा, माँस अथवा सिगरेट आदि का सेवन कर लेता था, यद्यपि दिल से पसंद नहीं करता था। हृदय से उस समय की प्रतीक्षा में रहता था कि वह समय कब आएगा कि मैं कुसंग का परित्याग कर नाम-वाणी के सुखदायी मार्ग पर चलकर जीवन व्यतीत करूँगा। इतने में दीपावली आ गई। दोनों ने सलाह की आज दीपावली के दिन सारे नशे कर लें और आज के बाद अपने दोनों में से यदि कोई नशा अथवा माँस का सेवन करेगा, उसके सिर में बीस जूते मारेगा। दीपावली के पश्चात् दोनों ने कोई नशा न किया बल्कि बाबू सिंह ने तो संत गोपाल सिंह जी से नाम

लेकर गुरुवाणी का शिक्षण लेना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार बाबू सिंह उस क्षेत्र में संत गोपाल सिंह का पहला शिष्य बना। दूसरी ओर दलीप सिंह ने अभी नाम तो नहीं लिया, परन्तु संत महाराज जी को प्रार्थना करके बाबा सुन्दर सिंह के कुएँ से अपने 'टिब्बा' पर ले गया। महाराज जी ने टिब्बा पर एक छप्पर डालकर वहाँ रहना आरम्भ कर दिया और लंगर अलग-अलग गाँवों से क्रमानुसार मधुकरी करके छक लेते। आम लोगों से जब भी बात करते तो यही कहते-आप इस इलाके के समस्त लोग गंगा किनारे बैठे प्यास से व्याकुल हो रहे हो। तुम्हें यह पता नहीं है कि यहाँ किसी पूर्ण पुरुष ने अवतार धारण किया है। करनाल नगर और आस-पास के सहस्रों लोग उनसे लोक-परलोक के सुख प्राप्त कर रहे हैं और सारे भारत से घूमकर लोगों को सुमार्ग अर्थात् सुखदयी मार्ग की बुद्धि प्रदान कर रहे हैं, लेकिन आप इस बात से नितांत बेखबर हो? संत गोपाल सिह बोले, भाई! दशम् पातशाह महाराज जी ने लिखा है—

साच कहों सुनु लेहु सभै जिनि प्रेम कीउ तिन ही प्रभु पाइउ॥

परमेश्वर किसी पदार्थ का भूखा नहीं है बल्कि वह तो पदार्थों का दाता है। उसके पास छोटे-बड़े, गरीब-अमीर का भी भेदभाव नहीं है। हाँ-यदि भूखा है तो केवल और केवल एक वस्तु का। क्या है वह वस्तु?

गोविंद भाउ भगत दा भुखा।

बस उसको वशीभूत करने का एकमात्र ढंग यही है—प्रेम। प्रेम के बिना उसको प्राप्त करने के समस्त प्रयत्न निष्फल हैं, इसलिए आप आत्मचिन्तन द्वारा देखो कि कहीं प्रेम की कमी तो नहीं है।

इस प्रकार का उपदेश करते इस क्षेत्र में उन्होंने कई वर्ष व्यतीत कर दिए। अब कुछ समय पश्चात् दलीप सिंह ने भी नाम की दात प्राप्त कर ली। कुछ समय के लिए यहाँ से चले जाते, फिर वापिस 'टिब्बा' पर आ विराजमान होते। ऐसे प्रतीत हो रहा था कि इस इलाके की भूमि में हल चलाकर, संवारकर बीजने के लिए उपयुक्त बनाने की ओर अधिक ध्यान दे रहे हैं। अब परमेश्वर की लीला-संत महाराज जी के शरीर पर 'भगंदर' का फोड़ा निकल आया। दलीप सिंह एवं बाबू सिंह आदि प्रेमी इलाज आदि करवाते रहे, लेकिन कोई फर्क नहीं आया। दलीप सिंह ने अपने मन में अरदास करके मनौती मानी कि संत महाराज जी के फोड़ा ठीक हो जाने पर मैं अखण्ड पाठ साहिब करवाऊँगा। इतने में 'चोमो' गाँव का एक देसी वैद्य मिल गया। उसके इलाज करने से थोड़े दिनों में ही ठीक हो गए। फिर दलीप सिंह ने प्रार्थना की, बाबा जी! मैंने आप जी के स्वास्थ्य के निमित्त अखण्ड पाठ साहिब की मनौती मानी थी—बताओ कब करवाएं? संत बोले-यदि तुम्हारा विचार अखण्ड पाठ साहिब करवाने का है तो हमारे गुरुदेव महाराज निक्का सिंह जी से तारीख़ ले लो, वे हरिद्वार बाबा बुड्ढा सिंह जी की पुण्य तिथि पर मिलेंगे। संगत ने प्रार्थना की-आप साथ चलो। संत प्रार्थना स्वीकार करके साथ जाने के लिए तैयार हो गए तो दलीप सिंह, बाबू सिंह, भगत सिंह, फौजी राम रत्न सिंह, संता सिंह आहिमदगढ़ और जोरा सिंह भोतने आदि प्रेमियों ने संत गोपाल सिंह के साथ हरिद्वार जाकर विरक्त महाराज की के चरणों में पहुँचकर अपने आने का निमित्त बताया। भूत-भविष्यत के ज्ञाता ज्ञेय दाता ने अपनी मौज में अखण्ड पाठ की तिथि दे दी और दिए वचनानुसार 'उच्ची दौद' टिब्बा पर पहुँच गए। यह समय कोई 1966 ई० का था। अखण्ड पाठ साहिब किया गया। उपरान्त गुरु के लंगर के खुले भण्डारे वितरित किए गए। इस अखण्ड पाठ साहिब के बहाने इस धरती और क्षेत्र का ऐसा भाग्योदय हुआ कि हजूर के मातृ-लोक में विचरण के अंत समय तक इस सौभाग्यशालिनी धरती को समय-समय पर आप की चरण रज प्राप्त होती रही।

गोराया नगर

एक समय का वर्णन है कि संत गोपाल सिंह जी दोराहे ठहरे हुए गुरु-घर का प्रचार कर रहे थे। आठों पहर चौबीस घंटे की दिनचर्या, लोगों के घर में तारीख़ देकर अखण्ड पाठ साहिब करने, जिज्ञासुओं को गुरुवाणी का शिक्षण, लंगर मधुकरी करके छकना-इस प्रकार जीवन व्यतीत कर रहे थे।

आज करतार सिंह नाम के एक प्रेमी के घर अखण्ड पाठ साहिब का भोग पड़ा। उपरान्त संत गोपाल सिंह जी ने हुक्मनामे की कथा की, जो सब संगत ने बड़े प्रेम के साथ श्रवण की। करतार सिंह के अन्य सम्बन्धी भी निमंत्रित थे, जिनमें से गोराया से उनका साढू सरदार हरदित्त सिंह और उसका मित्र उजागर सिंह सूरी भी आए हुए थे। कथा श्रवण करने के पश्चात् सूरी के मन में कुछ श्रद्धा उत्पन्न हुई। प्रार्थना की-बाबा जी, गोराया चलो। वहाँ भी संगत को गुरुवाणी पढ़ाओ और मैंने भी अखण्ड पाठ साहिब कराना है। आप कोई तिथि दे दो, क्योंकि मेरी हार्दिक इच्छा है कि श्री अखण्ड पाठ साहिब आपकी उपस्थिति में ही करवाऊँ। संत महाराज ने सूरी का प्रेम देखकर वचन दे दिया कि आप चलो-हम स्वयं ही आपके पास आ जाएंगे। थोड़े दिन पश्चात् संत जी करतार सिंह दोराहे वाले को साथ लेकर गोराया नगर पहुँच गए। प्रेमी ने उसके निवास की व्यवस्था फाटक के पार एक कच्चे मकान में कर दी।*

संत महाराज प्रातः नौ बजे लंगर आदि लेकर कच्चे मकान के भीतर बैठ जाते और पानी का एक घड़ा अपने समीप रख लेते और फिर सायं ही बाहर निकलते। सत्संग करके लंगर आदि लेकर फिर भीतर चले जाते। इस प्रकार बहुत दिनों तक चलता रहा।

एक दिन उजागर सिंह ने प्रार्थना की-बाबा जी! अखण्ड पाठ साहिब के लिए कोई तिथि निश्चित कर दो। आपने आज्ञा दे दी कि अमुक दिन आरम्भ कर लेना। निश्चित दिन पर सूरी परिवार ने दुकान के ऊपर अखण्ड पाठ साहिब करवाया। भोग वाले दिन संत जी ने ईश्वरीय हुक्मनामे की कथा की और साथ ही एक और अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ कर लिया। इस प्रकार निरन्तर पाँच अखण्ड पाठ साहिब किए गए और प्रत्येक भोग पर संत ईश्वरीय हुक्मनामे की कथा भी करते रहे। इस प्रकार कोई एक मास संत यहाँ रहे और गुरुवाणी सत्संग का अच्छा वातावरण बना रहा। फिर अन्न-जल के वशीभूत वे यहाँ से कहीं और चले गए, लेकिन कुछ मास पश्चात् ही दोबारा गोराया आ गए। गर्मी के दिन थे। बच्चों को छुट्टियां होने के कारण स्कूल बन्द थे, इसलिए आपको स्कूल के एक कमरे में ठहराया गया। गुरुवाणी द्वारा सत्संग तो प्रतिदिन होता ही था लेकिन अब कुछ गुरुवाणी का शिक्षण लेने के लिए लड़के-लड़कियां आदि भी आने आरम्भ हो गए और कुछ ऐसे सज्जन भी थे जो पहले गुरुवाणी का पाठ तो करते थे, लेकिन अशुद्ध था। उन्होंने भी पढ़ना आरम्भ किया। इन दिनों यद्यपि पर्याप्त संगत का आना आरम्भ हो गया, लेकिन कुछ सज्जन जैसे सूरी परिवार, सरदार हरदित्त सिंह, पुरुषोत्तम सिंह, सतिनाम सिंह, भाई हरनाम दास और भाई रामलाल आदि प्रेमी तो पक्के तौर पर जुड़ गए। ये सभी सज्जन बच्चों सहित गुरुवाणी का पाठ करने लगे। इतने में स्कूल का अवकाश समाप्त हो गया। संत जी भी फिर आने का वचन देकर कहीं और चले गए। कुछ समय पश्चात् इन प्रेमियों का आकर्षण इन्हें फिर यहीं खींच लाया और निवास 'अँटे' स्कूल में किया। यहाँ भी प्रेमी सज्जन गुरुवाणी

* *यह वह स्थान था जहाँ आजकल फैक्टरी और सूरी परिवार का निवास-स्थान है। क्योंकि उस समय वहाँ आबादी बहुत कम थी। उस समय सूरी परिवार का निवास और दुकान व्यापार आदि फाटक के समीप धनवीर सिंह सूरी दुकान, मकान वाले स्थान पर ही था।*

पढ़ने आते रहे। कुछ समय पश्चात् चौथी बार फिर गोराया नगर आए तो बिकर सिंह राड़ा के कुँए पर ठहरे। इस बार संगत में कुछ अन्य भी नए सज्जनों ने आना आरम्भ कर दिया जिसमें श्री टेकचन्द गुलाटी और मेघराज आदि सज्जन तो स्थाई तौर पर जुड़ गए। संगत तो प्रतिदिन सायं को सत्संग के लिए एकत्रित होती ही थी तो आप अपने गुरुदेव विरक्त महाराज निक्का सिंह का वर्णन बार-बार करके संगत को बताते कि हमारे गुरुदेव हाथ-पैरों वाले साक्षात् परमेश्वर हैं। कभी सुअवसर मिला तो तुम्हें दर्शन कराएंगे। इस समय तक गोराया नगर की काफ़ी संगत भी गुरुवाणी से सम्बद्ध हो चुकी थी और संत भी इन प्रेमियों के प्रेमवश हुए नगर में आते रहते थे।

गोराया कुटिया

एक बार संत गोपाल सिंह जी गोराया ठहरे हुए थे तो अपनी मौज में भ्रमण करते 'त्रिनहरे' की ओर निकल गए। वहाँ खेतों में एक निशान साहिब लगा हुआ देखा, लेकिन वहाँ कोई कमरा अथवा भवन नहीं था और न ही वहाँ कोई मनुष्य है जिससे इस स्थान के सम्बन्ध में पूछा जाए, लेकिन स्थान बहुत एकांत है। गोराया 'डॅलेवार' आदि गाँव की भूमि की सीमा है, लेकिन गाँव मील-मील दूर पड़ते हैं। नहर का किनारा है, जी.टी. रोड भी इतना समीप नहीं है कि वहाँ चल रही गाड़ियाँ यहाँ के एकांत में बाधा डालें अर्थात् प्रत्येक दृष्टि से वातावरण शान्त है। मन में सोचा ऐसा एकांत सुन्दर और नहर के किनारे वाला मनमोहक स्थान गुरुदेव विरक्त महाराज जी को बहुत पसंद होता है। कृपा करें-इसको उनके लिए आबाद करें। यदि इन जीवों के भाग्य में है तो यहाँ बैठकर भौतिकता और मोक्ष की दातें वितरित करें।

संत गोपाल सिंह जी ने उजागर सिंह सूरी को जाकर आज्ञा की कि उस स्थान का पता करे-कि किसकी है? सूरी द्वारा खोज करने पर पता चला कि यह स्थान नत्था सिंह नम्बरदार गोराया वालों ने निशान साहब के नाम दान की है। अब से पहले एक निहंग सिंह ने आबाद करने का प्रयत्न किया, परन्तु असफल रहा। अब इसकी एक कमेटी बनी हुई है जिसके प्रधान प्रबन्धक सदस्य नत्था सिंह मलवई और बिकर सिंह राड़ा हैं। उजागर सिंह जी ने उनको मिलकर बताया कि हमारे पास एक निर्मले विरक्त महात्मा रहते हैं, जो गुरुवाणी के महान् विद्वान और प्रेमी हैं। उनको रहने के लिए यह स्थान पसंद है। यदि आपकी कमेटी को कोई ऐतराज़ न हो तो वे वहाँ झोंपड़ी बनाकर रहना चाहते हैं। वे लोग तो पहले ही चाहते थे कि यहाँ कोई साधु महात्मा टिके ताकि स्थान आबाद हो। बस आज से संत गोपाल सिंह जी ने यहाँ एक कच्चा छप्पर बनाया और उसमें रहना आरम्भ कर दिया। गोराया से समस्त प्रेमी परिवार यहाँ आने आरम्भ हो गए। इस प्रकार बच्चे, बूढ़े, लड़के, लड़कियों ने गुरुवाणी का शिक्षण आरम्भ कर दिया। इस प्रकार उस स्थान को कुछ जीवंता मिलनी आरम्भ हो गई।

उजागर सिंह सूरी को महाराज विरक्त जी का प्रथम मिलन

संत गोपाल सिंह जी से गोराया की संगत पूज्य विरक्त महाराज जी की अलौकिक महिमा का वर्णन काफ़ी समय से सुनती आ रही थी, लेकिन महापुरुषों के दर्शन अभी तक किसी ने नहीं किए थे, लेकिन सारे उस सुअवसर की प्रतीक्षा में थे कि कब वह समय आए कि उस शरीरी परमात्मा के दर्शन करें। संत गोपाल सिंह जी से यह भी पता लग चुका था कि आप प्रायः करनाल रहते हैं, लेकिन मिलने का समय अभी सम्भवतः आया नहीं था।

आज 27 नवम्बर 1966 के दिन परमेश्वर की ओर से दर्शन प्राप्त करने का सुअवसर आ गया जब सरदार उजागर सिंह सूरी किसी सम्बन्धी के विवाह में सम्मिलित होने के लिए करनाल गए। पूज्य विरक्त महाराज जी की कुटिया के सम्बन्ध में पूछने पर पता चला कि हजूर किसी प्रेमी के घर अखण्ड पाठ के भोग पर गए हैं। सूरी जी के पास अपनी कार तो थी ही इसलिए पूछते-पूछते उस समागम वाले घर पहुँच गए। उस समय हजूर पावन शब्द की कथा कर रहे थे और संत गोपाल सिंह भी पास ही बैठे थे। कथा सम्पूर्ण होने पर महाराज जी के पावन चरणों में नमस्कार की और शेष संत गोपाल सिंह जी ने पूज्य विरक्त महाराज जी को सूरी के बारे में बताया।

इतने में हजूर ने कुटिया जाने का संकेत किया। आगे कई सज्जन अपनी-अपनी कारें लेकर पंक्तिबद्ध खड़े थे। सबके मन में यही इच्छा थी कि हजूर मेरी कार में बैठें। उन कारों वाले प्रेमियों के उत्साह एवं श्रद्धा देखकर सूरी जी के मन में भी आया कि यह सुअवसर मुझे प्राप्त हो-हजूर को कुटिया तक छोड़कर आने का। इस प्रकार समस्त गाड़ी वाले प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन उस कृपालु की कृपा को कौन जाने कि आज किसका संयोग उदय होगा। अन्तर्यामी दाते ने सूरी को पूछा-तुम्हारी कार कौन सी है? बताने पर उसमें बैठ गए। सूरी जी ने प्रार्थना की महाराज! गोराया दर्शन देने की कृपा करो। हजूर बोले-कभी आएंगे, लेकिन आज नहीं-फिर जब कभी समय बना। आगे कुछ मार्ग खराब होने के कारण कार कुटिया तक पहुँच नहीं सकती थी इसलिए पूज्य महाराज कुटिया से पहले ही कार से उतर गए। सूरी ने नमस्कार करके आशीर्वाद मांगी। हजूर ने अपनी चिप्पी में से एक सेब निकालकर दिया, मानों उदय हो रहे संयोग की प्रसन्नता में ईश्वरीय प्रसाद दिया हो।

विरक्त महाराज जी का गोराया आगमन

वर्णन 1967 गर्मी के महीने का है जब टेकचंद गोराया वाला अपनी निजी टैक्सी चलाता था, इसलिए उसका दिल्ली की ओर प्राय: आना-जाना रहता ही था। आज उसके मन में प्रेरणा हुई कि दिल्ली से वापसी पर करनाल कुटिया पूज्य विरक्त महाराज जी के दर्शन अवश्य करें। इतना तो वह पहले ही सुन चुका था कि महाराज जी शहर से बाहर बाई पास के समीप ही कहीं निवास करते हैं। करनाल नगर पहुँचकर पता करता-करता कुटिया पहुँच गया। हजूर के पवित्र चरणों पर नमस्कार करके दर्शन करते ही मन गद्‌गद्‌ हो गया। महाराज जी ने अपने दयालु स्वभावानुसार आज्ञा की कि लंगर में से पहले लंगर छक लो। टेकचन्द ने चाय-पान किया और फिर गोराया निवासी सारी संगत की हजूर के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की। प्रार्थना की-महाराज कृपा करो-गोराया की संगत को दर्शन दीदार देने की कृपा करो। सब संगत याद करती है। हजूर टेकचन्द की प्रार्थना सुनकर कुछ देर के लिए मौन हो गए, मानों भविष्य का मानचित्र अथवा संयोग को देख रहे हैं। कुछ मिनटों के पश्चात् आज्ञा की-ठीक है इस दिन आ जाना-तुम्हारे साथ गोराया चलेंगे। टेकचन्द निश्चित दिन पर जाकर हजूर को गोराया ले आया। संत गोपाल सिंह जी पहले ही यहाँ आकर 'त्रिनहरे' वाले स्थान पर ठहरे हुए थे। महाराज जिस समय पहुँचे तो इस स्थान को बहुत ध्यानपूर्वक देखा। इधर-उधर किसी आन्तरिक भाव से दृष्टि डाली। उसके उपरान्त किसी गहरी विचार में डूबकर ध्यानमग्न हो गए। इस स्थान पर पावन चरण स्पर्श करते ही ऐसे गहरे भाव में क्यों चले गए, पूरा-पूरा तो वे अन्तर्यामी स्वयं जानते हैं, क्योंकि यह मन बुद्धि का विषय ही नहीं इसलिए इसका निर्णय समय पर ही छोड़ देना उपयुक्त होगा।

पर-उपकारी

परउपकारी सरब सधारी सफल दरसन सहजइआ॥
कहु नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उर धरिआ॥

(देवगंधारी म: ५, पृष्ठ ५३३)

बिना बोले सब कुछ जानने वाला, भले-बुरे की वेदना को जानने वाले, सब में अपना आप देखने वाले, अनायास दया-सागर, करुणा-मेघ आज प्रात: अपनी मौज में भ्रमणार्थ निकले। भ्रमण के लिए निकले हैं अथवा किसी दु:खी का दु:ख बाँटने के लिए चले हैं—यह भी नहीं पता कि किसी ईर्ष्या के साथ जल रही धरती पर अमृतवर्षा करने के लिए चले हैं? जो भी हो, लेकिन यह तो सच है कि उनका एक-एक कदम किसी दूसरे के लिए उठाया जाता है। एक-एक शब्द किसी तप्त हृदय को शान्त करने के लिए उच्चरित होता है। अधिक क्या शरीर की समस्त क्रिया, अपना आप दिख रही चर-अचर सृष्टि के लिए ही तो है इसलिए तो समस्त शास्त्र आपके पर-उपकार आदि अनन्त विशेषणों से महिमा-गान कर रहे हैं। खैर-करनाल कुटिया के समीप ही बाई पास पर स्थित आलुओं के कोल्ड स्टोरेज के बिल्कुल समीप एक मार्ग निकलता है, जो टेढ़ा-मेढ़ा अनेक रूप धारण करके अनेक खेतों को स्पर्श करता 'बुड्ढा खेड़ा' गांव की ओर निकल जाता है। इस मार्ग ने कभी जन्म तो दूसरों के लिए उपकार हेतु ही धारण किया था, लेकिन दूसरों के प्रमाद के कारण आज इसके अपने शरीर पर भी कई व्याधियों ने आक्रमण कर दिया।

यह वाणी हीन विवश अपने शरीर पर ही अनेकों कष्ट सहन किए जा रहा है। सौभाग्य से आज कोई वह दिन उदय हुआ जब हज़ूर की कृपा-दृष्टि इस मार्ग पर पड़ी तो देखा कि मार्ग आम ज़मीनों से काफ़ी नीचा होने के कारण स्थान-स्थान पर पानी ने कीचड़ खड्डे बना दिए हैं अर्थात् जिसने दूसरों के लिए शरीर धारण किया था वह स्वयं आज विवश हुआ रोगग्रस्त होकर कष्ट सहन कर रहा है। खेतों के मालिक स्वयं तो इधर-उधर बनेरे से होकर निकल जाते हैं, लेकिन वाणी हीन बेचारे बैल बनेरों से होकर गड्डे को लेकर कैसे चलें। हज़ूर उनकी हालत की ओर देख ही रहे थे कि इतने में एक निर्धन कृषक बैल-गाड़ी लेकर आता दिखाई दिया। बैल विवश होकर स्थान-स्थान पर रुक जाते थे, किसान मारपीट कर उसको आगे चलाता था, लेकिन बैल बेचारे फिर रुक जाते। आप से वाणीहीन जीवों का दु:ख सहन न हुआ। ज़रा ध्यान से देखों-सब दृश्य, अदृश्य शक्तियों के स्वामी, लक्ष्यहीन नावों को पार उतारने वाले, मानव-लीला करने लगे हैं, क्योंकि शरीर जो धारण किया है। किसान को बोले-भाई! बैलों को मार नहीं। पवित्र चरणों से जूता उतारा, चिप्पी एवं खूण्डा एक ओर रखकर गड्डे को धक्का मारने लगे। धन्य है वह किसान जिसके गड्डे को धक्का लगाकर पार किया। धन्य है वह बेज़बान बैल जिनको परमेश्वर ने सहारा दिया। खैर-गड्डा साफ़ स्थान पर आ गया। हज़ूर ने कुटिया पहुँचकर संगत को आज्ञा दी कि कसियों का प्रबन्ध करो। परमेश्वर की ओर से कुछ सेवा आई है। संगत को साथ लेकर उस स्थान पर पहुँचकर मिट्टी डालनी आरम्भ की। इतने में पता लगने पर और भी संगत पहुँच गई। डबरी गाँव से कुछ संगत आने लगी, जो शायद हज़ूर के दर्शन करने के लिए प्रतिदिन आते थे। इस प्रकार कोई 20-25 प्रेमी सेवा में सम्मिलित हो गए, लेकिन एक अन्य चकित करने वाली परमेश्वर की लीला को देखा कि जिन किसानों के लिए यह मार्ग सीधा एवं सपाट करने लगे हैं—वे खेतों में से मिट्टी देने के लिए तैयार नहीं। साथ लगते एक खेत में बेकार पड़ी भूमि का एक कोना जो हल चलाने के काम में नहीं आता था और

आम भूमि से ऊँचा-नीचा था उसको उठाकर गड्डे में डालना आरम्भ किया। इतने में उसका स्वामी जो कि एक पंडित था क्रोध में आकर बुरा-भला बोलने लगा। हजूर ने इशारा करके कुटिया से एक मिठाई का डिब्बा लाने के लिए कहा। एक प्रेमी उनके संकेत को समझकर तुरन्त जाकर ले आया। हजूर ने अपने पावन कर कमलों से एक पूरा डिब्बा पंडित जी को प्रदान किया। मिठाई का डिब्बा हाथ में आते ही पंडित का क्रोध शान्त हो गया-शेष मिठाई सेवा में लगी संगत में वितरित कर दी।

अब सब संगत सेवा में जुट गई और हजूर भी कड़ी धूप के बावजूद पास खड़े उत्साहित कर रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति पूरी शक्ति लगाकर कसी चला रहा है, लेकिन 17-18 वर्ष की आयु का एक युवक जिसको आम संगत, राम जी, राम जी के नाम से जानती है, वह प्रेमी बिना इधर-उधर देखे ऐसे कसी चला रहा है जिस प्रकार शरीर से बेसुध होकर केवल सेवा का रूप ही बन चुका हो। गर्मी की ऋतु के कारण और थकान का अनुभव करते हुए कुछ प्रेमी इधर-उधर बैठकर समय व्यतीत करने लगे, लेकिन राम जी देशकाल वस्तु से बेसुध हुए, कसी चला रहे हैं। संगत में से एक सज्जन ने डबरी वालों को कहा-तुम खेत का काम करने वाले किसान जिनका पेशा ही कसी चलाना है-बैठकर समय काट रहे हो, लेकिन एक शहरी वातावरण में पालित-पोषित और कॉलेज में पढ़ रहा व्यक्ति राम एक क्षण के लिए भी विश्राम नहीं ले रहा-प्रात:काल का जुटा है। इतने में संगत में से आवाज़ आई-राम तो राम ही है, राम के साथ जीव की क्या तुलना? इस प्रकार अनेक जीवों का लोक-मार्ग सँवारकर और कुछ प्रेमियों का परलोक का मार्ग प्रशस्त कर किसी की व्यर्थ पड़ी भूमि को सपाट एवं उपजाऊ बनाकर किसी तप्त हृदय को प्रेम के अमृत-जल से सिंचित कर, हजूर विरक्त महाराज जी संगत को साथ लेकर कुटिया आ गए।

गाँव डबरी

ऐतिहासिक नगर करनाल से छ: कि.मी. के लगभग पश्चिम की ओर 'डबरी' नाम का एक गाँव बसा है। प्राचीन समय में इस गाँव में मुसलमान भाई निवास करते थे, लेकिन प्रकृति के परिवर्तनशील स्वभाव के अनुसार देश के बंटवारे के पश्चात् ज़िला शेखूपुरा से आकर विरक गोत्र के जट्ट सरदारों ने इस गाँव को अपनी कर्म भूमि बनाया। सौ घरों के इस प्राचीन गाँव में पचास घर के लगभग विरक गोत्र के जट्ट सरदारों के और पचास के लगभग और मिली-जुली पिछड़ी जातियों के हैं।

सन् 1967 के आस-पास का वर्णन है जब इन लोगों के किसी पूर्व शुभ-संयोगवश बिशन सिंह एवं सरपंच सेवा सिंह आदि प्रेमियों को पूज्य विरक्त महाराज जी का करनाल कुटिया में दर्शन-मिलाप और स्नेह प्राप्त हुआ। ये प्रेमी भी शहर की अन्य संगत की भाँति प्रतिदिन दर्शन के लिए आते, क्योंकि महापुरुषों के दर्शन करके संसार की तप्तता से कुछ शान्ति अनुभव हो रही थी। फिर धीरे-धीरे संयोगवश इन प्रेमियों को देखकर गाँव की अन्य संगत भी आनी आरम्भ हो गई। इस प्रकार कुछ समय महापुरुषों के दर्शन सत्संग करते जब व्यतीत हुआ तो यहाँ के प्रेमी लोगों ने महाराज जी से तारीखें लेकर घरों में श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ कराने शुरू कर दिए। फलस्वरूप हजूर के पवित्र मुख से पावन ईश्वरीय वाणी की व्याख्या सहित कथा सुनकर इन प्रेमियों के मनों में गुरु-घर एवं संत सेवा के संस्कार उत्पन्न होने आरम्भ हो गए। समय पाकर कुछ परिवार तो महाराज जी के चरणों से इतने जुड़ गए कि नित्य प्रति छ: सात कि.मी. की यात्रा कर के हजूर के दर्शन करने के लिए करनाल कुटिया जाना आरम्भ किया। फिर समय पाकर अर्थात् 1970 के आस-पास सेवा सिंह सरपंच और बिशन सिंह आदि प्रेमियों के परिवारों की ओर से कुटिया में प्रतिदिन दूध पहुँचाने की सेवा आरम्भ की गई जो कि वर्षा, गर्मी, सर्दी अर्थात्

हर प्रकार से लगातार आज तक चल रही है। शायद दूध पहुँचाने का कार्य इतने लम्बे समय तक कभी नहीं रुका। जितने समय तक पूज्य महाराज जी धर्मखण्ड की इस पृथ्वी पर शरीर धारण कर विचरण करते रहे उतने समय तक इस भाग्यशाली गाँव डबरी को आप जी की पवित्र चरण धूलि समय-समय पर प्राप्त होती रहती। पूज्य विरक्त महाराज की ओर से स्थूल लीला करने के पश्चात् आप जी द्वारा उपकृत आप जी का साक्षात् स्वरूप पूज्य महंत बाबा राम सिंह महाराज जी भी अपने पर-उपकारी स्वभावानुसार आरम्भ से साथ लेकर आए गुरुवाणी के अलौकिक प्रसाद का छींटा देने के लिए प्रेमियों की प्रार्थनाएँ स्वीकार करके समय-समय पर डबरी गाँव जाते रहते हैं और संगत भी आपको बड़े महापुरुषों का साक्षात् स्वरूप समझकर हर प्रकार की सेवा और सत्संग का लाभ उठाती रहती है।

होशियारपुर

वर्णन 1967 ई० का है जब भगत लॅभामल जी की लड़की मुन्नी का विवाह होशियारपुर के कृष्ण गोपाल गुलाटी के छोटे भाई सुशील गुलाटी से हुआ। विवाह में दोनों परिवारों की ओर से सगे-सम्बन्धी काफ़ी संख्या में आए हुए थे। उस विवाह के अवसर पर 'आनन्द कारज' की रस्म के पश्चात् पूज्य विरक्त महाराज जी ने ईश्वरीय हुक्मनामे की पूर्ण रस-युक्त कथा की। कथा प्रवचन और संत विचारों का प्रभाव तो चाहे थोड़ा बहुत सभी हृदयों पर पड़ता ही है, लेकिन किसी-किसी पर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है या इस प्रकार कह सकते हैं कि बरसात होती तो बहुत स्थानों पर है, लेकिन कुछ नीचा स्थान जल अपने में अधिक एकत्रित कर लेता है और ऊँचा स्थान वर्षा से थोड़ी दूरी के पश्चात् ही जल विहीन होकर अर्थात् शुष्क होकर जलना आरम्भ हो जाता है। नीचे स्थान पर जल एकत्रित होने के कारण देर तक ठण्डा एवं शान्त रहता है। मेघ ने तो राग-द्वेष से निर्लिप्त अपने पर-उपकारी स्वभावानुसार समस्त स्थलों पर एक जैसे जल की वर्षा की, लेकिन धरती ने फल अपनी न्यूनता और उच्चता के अनुसार प्राप्त किया। इसी प्रकार सत्पुरुष कथा-व्याख्यान और सत् उपदेश तो सम्मुख बैठी सब संगत को बिना किसी राग-द्वेष अथवा भेदभाव के एक जैसा ही करते हैं, लेकिन फल की प्राप्ति हृदयों की न्यूनता एवं उच्चता के अनुसार ही अलग-अलग होती है। यदि हृदय में लेशमात्र भी अहंकार है तो उपदेश रूपी जल स्थिर नहीं रहता अथवा असर नहीं करता। इसके विपरीत नम्रतापूर्ण हृदय उपदेश की बूँद-बूँद एकत्रित करके अपने में हृदयंगम कर लेता है। गुरु बाबा जी का ईश्वरीय आदेश भी है—

तउ किछु पाईऐ जउ होईऐ रेना॥

(सूही म० ५, पृष्ठ ७३९)

इस प्रकार आज विवाह पर महापुरुषों ने कर्म, उपासना, ज्ञान, विज्ञान के विषयों को बहुत कुशलता से प्रकट किया और सब श्रोताओं ने अपनी-अपनी अवस्था के अनुरूप लाभ भी प्राप्त किया, लेकिन एक सज्जन कृष्ण गोपाल गुलाटी के मन पर कुछ अधिक प्रभाव पड़ा।

कथा की समाप्ति के पश्चात् गुलाटी ने हजूर के चरणों में प्रार्थना की, महाराज कृपा करो होशियारपुर में दर्शन देने की कृपा करो। हजूर बोले, भई होशियारपुर तो हम जाते-आते रहते हैं। महाराज! आपके दर्शन तो कभी हुए नहीं। आप ठहरते कहां हैं? हजूर ने फरमाया—खानपुर के मार्ग पर संत गुरचरण सिंह का डेरा है 'अंगीठा साहिब' वहाँ जाकर रुकते हैं। कृष्ण गोपाल ने प्रार्थना की, महाराज कृपा करो—अब मेरे साथ होशियारपुर चलो। हजूर बोले—अभी तो यहीं हैं फिर यदि कोई संयोग बना तो आयेंगे। जब आएंगे तुम्हें पता दे देंगे।

सन् 1968 ई. में एक समय की बात है जब आप अलौकिक रंग में विचरण करते हुए होशियारपुर 'अंगीठा साहिब' पहुँच गए। दूसरे दिन आपने दिए वचनानुसार कृष्ण गोपाल जी को संदेश भेज दिया। कृष्ण गोपाल ने प्रार्थना की, महाराज मेरा घर में अखण्ड पाठ कराने का विचार है। आप कृपा करके कोई तिथि देने की अनुकंपा करो ताकि समस्त संगत एवं सम्बन्धी आप जी के पवित्र मुख से पवित्र वाणी की कथा व्याख्यान का लाभ उठा सकें। हज़ूर बोले भाई पाठियों की व्यवस्था कर लो। हम भोग वाले दिन आ जाएंगे। कृष्ण गोपाल ने प्रार्थना की—महाराज! आप कृपा करो, निवास मेरे घर ही रखो। हज़ूर बोले—हम किसी के घर में नहीं ठहरते—भोग के समय अवश्य पहुँच जाएंगे। निश्चित दिन पर भोग के समय विरक्त महाराज जी को निवास स्थल से गुलाटी परिवार आकर ले गया। भोग के उपरान्त आप जी ने ईश्वरीय हुक्मनामे की कथा की जिसको श्रवण करके संगत ने मन में ठण्डक एवं शान्ति अनुभव की। समागम की समाप्ति के उपरांत हज़ूर तो अपनी मौज में किसी और तरफ़ चले गए, लेकिन कृष्ण गोपाल ने मन में धारणा दृढ़ कर ली कि जितनी जल्दी हो सके नगर से बाहर एकांत में एक कुटिया बनाएं जिसमें समय-समय पर महाराज आकर ठहरें और हमें उनके श्री चरणों की अधिक से अधिक सेवा करने का सुअवसर प्राप्त हो। यह सोचकर कृष्ण गोपाल ने नगर से तीन कि.मी. दूर टाँडा रोड़ पर 'अखलासपुर' गाँव की सीमा में पाकिस्तान की ज़मीन के एवज़ में अलाट हुई ज़मीन जो कि कृष्ण गोपाल के पिता लाला चूनी लाल के नाम थी—मैं एक कुटिया का निर्माण आरम्भ किया—जो वर्ष भर में बनकर तैयार हो गई। लगभग एक वर्ष के पश्चात् विरक्त महाराज जी अपने दो सेवकों—संत दर्शन सिंह एवं संत गोपाल सिंह जी को साथ लेकर किसी कारणवश होशियारपुर पहुँच गए। पता लगाने पर कृष्ण गोपाल प्रार्थना करके तीनों महापुरुषों को 'अखलासपुर' कुटिया में ले गया। आपने भी कृष्ण गोपाल का प्रेम और एकांत स्थल देखकर कुटिया में विश्राम किया। कृष्ण गोपाल बहुत प्रेम से सेवा करता रहा। हज़ूर भी उसकी सेवा पर प्रभावित होकर प्रेम के वशीभूत हुए अपने अंत समय तक इस स्थान को अपनी चरणधूलि से सुशोभित करते रहे।

गाँव तुरमरी

खन्ना जरग रौणी रोड पर खन्ना से 18 कि०मी० पश्चिम की ओर मुख्य सड़क से डेढ़ कि०मी० पीछे हटकर एक नगर बसता है—'तुरमरी'।

सन् 1970 ई० के आस-पास का वर्णन है जब पूज्य विरक्त महाराज जी ने इस नगर को अपनी चरण धूलि से नवाजा। इस रहस्य को परमेश्वर ही जानता है कि किसी मनुष्य अथवा भूमि से अपना पूर्व संयोग प्रकट करने के लिए, किस समय पर कौन-सा निमित्त कारण बनना है। हुआ ऐसे कि सरदार हरनेक सिंह नम्बरदार 'तुरमरी' अपने किसी राजनीतिक सम्बन्धी के साथ दिल्ली से पंजाब की ओर आ रहा था। जब कार करनाल नगर पहुँची उस समय तक दोपहर का समय हो चुका था। गर्मी की ऋतु होने के कारण दोनों ने सोचा कि यहाँ कुछ समय रुककर आराम कर लें। करनाल बाई पास पर एक पेट्रोल पम्प पर कार खड़ी करके, राजनीतिक सम्बन्धी तो उस पम्प पर आराम करने लगा लेकिन हरनेक सिंह की दृष्टि सड़क से थोड़ी दूर एक घने वृक्षों की सघन छाया की ओर गई जिसके दूर-दूर तक कोई आबादी नहीं, बिल्कुल एकांत है। चारों ओर सब्ज़ी आदि के खेत हैं, इसलिए कुछ समय वहाँ आराम करें। हरनेक सिंह उस स्थान का शान्त वातावरण देखकर उसकी ओर गया, लेकिन आगे जाकर देखा कि किसी साधु की छोटी-सी कुटिया है और एक तेजस्वी चेहरे वाला महात्मा वृक्ष की छाया के नीचे एक कुर्सी पर सुशोभित है। उनके चरणों में दो-तीन सेवादार बैठे हैं और कुछ लंगर की सेवा कर रहे हैं। हरनेक सिंह महापुरुषों के चरणों पर नमस्कार करके बैठ गया। सेवादारों ने किसी प्रेमी को आया देखकर ठण्डा शरबत पिलाया। अब हज़ूर

की हरनेक सिंह पर पवित्र दृष्टि पड़ी, वचन किया—भाई कहाँ से आए हो? महाराज दिल्ली से आया हूँ, पंजाब जाना है। हजूर ने पूछा—पंजाब कहाँ रहता है? महाराज जरग रौणी के समीप गाँव 'तुरमुरी'—वहाँ का रहने वाला हूँ। हजूर ने फिर पूछा, दौद, सरौद कभी सुने हैं? हाँ—महाराज—वे तो समीप ही हैं। भाई—हम वहाँ कभी-कभी जाते रहते हैं। हरनेक सिंह ने प्रार्थना की, महाराज कभी 'तुरमरी' भी आओ। हाँ —आना तो है भाई—लेकिन हम रहते गाँव से बाहर हैं। कोई बात नहीं महाराज—मेरे कुएँ पर एक कमरा है—वहाँ ठहर जाना। ठीक है कभी अवश्य आएंगे। हरनेक सिंह महाराज जी से आने का वचन लेकर, नमस्कार करके चला गया। घर जाकर खेत वाले कमरे ऊपर एक वैसा ही चौबारा बनाया जैसा करनाल हजूर की कुटिया का देखा था। कुछ समय पश्चात् पूज्य महाराज जी भी, **''सूरबीर बचन के बली''** के महावाक् अनुसार दिए वचन को पूर्ण करने के लिए सरदार गुरनाम सिंह खोख वालों की जीप में सवार होकर 'तुरमरी' पहुँच गए। हरनेक सिंह को दर्शन करते ही बड़ी प्रसन्नता हुई, लेकिन महाराज जी के लिए जो चौबारा बन रहा था—वह अभी अधूरा था। इस कारण अपने चाचा सरदार संता सिंह के कुएँ पर हजूर के निवास का प्रबन्ध किया। दैवयोग से किसी समय इस स्थान पर संत गोपाल सिंह जी भी एक से अधिक बार ठहरकर गए थे या यूँ समझो कि किसान हल तो पहले ही चला गया था, लेकिन बीज डालने में अभी देरी थी तो अब ऐसा लग रहा है कि कोई सफल किसान बीज लेकर पहुँच गया है। हरनेक सिंह एवं संता सिंह आदि परिवारों ने हजूर की अत्यंत प्रेम और उत्साह के साथ सेवा की और सायं को कुछ संगत एकत्रित हुई देखकर महाराज जी ने किसी शब्द की कथा की। इसके उपरांत हरनेक सिंह आदि प्रेमियों ने नाम-अमृत की याचना की। ईश्वरीय आज्ञा हुई कि, आश्विन की संक्रान्ति है इसलिए कल प्रातः आना। संक्रान्ति वाले दिन हरनेक सिंह, उसकी धर्मपत्नी और अन्य कई लोग प्रातः ही चरणों में पहुँच गए। हजूर ने प्रसन्न होकर सब को दरगाह का टिकट दे दिया और पवित्र मुख से आज्ञा की इसका सदैव जाप करना है। भूलकर भी कभी इसको भूलना नहीं। टिकट खरीदकर यदि घर ही रख दें तो बिना टिकट यात्रा करने पर टी०टी० कभी भी पकड़ सकता है इसलिए नाम का विस्मृत कर जीवन रूपी गाड़ी में यात्रा करते यम रूपी टी०टी० से बचने के लिए नाम का निरंतर जाप। गुरु साहिब ने इस बात की दृढ़ता से पुष्टि की है—

नामु लैत जमु नेड़ि न आवै॥
नामु लैत दरगह सुखु पावै॥
नामु लैत प्रभु कहै साबासि॥
नामु हमारी साची रासि॥

(पृष्ठ ११४२)

इस प्रकार हजूर तैयार हुई भूमि में नाम रूपी बीज रोपण कर किसी अन्य दुःखी का दुःख दूर करने के लिए आगे को चले गए। इधर यह प्रेमी सांसारिक व्यवहार के साथ-साथ गुरु याद में जीवन व्यतीत करने लगे। कुछ समय पश्चात् हरनेक सिंह ने किसी कुसंग के प्रभाव स्वरूप एक दिन सुरापान कर लिया। परमेश्वर का ऐसा योग हुआ कि हरनेक सिंह को उसी समय जबरदस्त सांसारिक चोट लगी और मन इतना घायल हो गया कि नींद, भूख सब जाती रही। आँखों के सम्मुख दिन-रात वही वचन घूम रहे हैं कि बिना टिकट के यम कभी भी पकड़ सकता है। अब और कोई चारा न देखकर प्रातः ही करनाल के लिए बस में बैठ गया। पहुँचकर हजूर के चरणों पर नमस्कार की। आगे हजूर अपनी अलौकिक मौज में बैठे मुस्करा रहे थे। हरनेक सिंह के जलपान ग्रहण करने के पश्चात् वचन किया कि नाम जपता है? आगे से हरनेक सिंह ने सारी

बात बताकर क्षमा माँगी तो हजूर बोले—कोई बात नहीं भाई, भूल जाना तो जीव का स्वभाव है और चोट खाकर संभल जाना ही समझदारी है।

माता बिमला

वर्णन 1970 के किसी समय का चल रहा है जब हजूर करनाल कुटिया को आधार बनाकर भोग-मोक्ष के वरदान के कभी समाप्त न होने वाले भण्डारे तो वितरित कर ही रहे थे बल्कि मेघ का रूप धारण कर कहीं न कहीं प्रतिदिन बरसते थे। ऐसी वर्षा यद्यपि प्रतिदिन हो रही है, लेकिन आज कुछ विशेष ही लीला नज़र आ रही है अर्थात् उपदेश रूपी वर्षा तो प्रतिदिन होती ही है, लेकिन आज कुछ ऐसा लग रहा है जैसे जल के अतिरिक्त किसी फलदार पौधे में खाद डालने की तैयारी कर रहे हैं। खैर-वज़ीर चन्द नाम की नई बसी कॉलोनी में अरूड़ चन्द नाम का एक सज्जन अपने परिवार सहित रह रहा है। उसके बड़े लड़के सुभाष के विवाह पर परिवार की ओर से उत्सव मनाया जा रहा है इसलिए उसी खुशी में विरक्त महाराज निक्का सिंह जी से कोई तिथि लेकर श्री अखण्ड पाठ साहिब का भोग पड़ चुका है। उपरान्त दरवेश जी ने कीर्तन आरम्भ किया। दरवेश जी प्रेम भावना में भीगे एक-एक पंक्ति पर गुरुवाणी के अनेक प्रमाण देकर हरि भक्ति की महिमा का वर्णन करके अलौकिक समा बाँध रहे हैं। कीर्तन की समाप्ति के पश्चात् अब संत भारती जी ने प्रवचन आरम्भ किया। प्रवचन व्याख्यान करते आप की विद्वता और जीवन रस सहज ही फूट रहा है। काफ़ी समय हो गया आपको वेदांत चर्चा करते। वातावरण शान्त है, लेकिन फिर भी कुछ ऐसा लग रहा है जैसे श्रोतागण इससे भी बढ़कर रस की प्रतीक्षा कर रहे हैं। खैर भारती जी ने व्याख्या की समाप्ति की। अब समय आ गया—जिसकी श्रोतागण प्रतीक्षा कर रहे थे। हजूर महाराज जी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के चरणों में विराजमान हुए और ईश्वरीय हुक्मनामे की कथा आरम्भ की। दैवयोग से शब्द भी कुछ बड़ा था और हजूर भी गुरुवाणी के महान् सागर से असंख्य उदाहरण देकर नाम, नामी और हरिभक्त की महिमा का वर्णन किए जा रहे थे। आप कह रहे हैं भाई हरि को प्राप्त करने का केवल और केवल एक ही मार्ग है उसकी प्रेमाभक्ति। प्रेमाभक्ति के बिना अन्य लाखों यत्न निष्फल हैं—यथा गुरु अर्जुन देव जी—

ना तू आवहि वसि बहुतु घिणावणे॥ ना तू आवहि वसि बेद पड़ावणे॥
ना तू आवहि वसि तीरथि नाईऐ॥ ना तू आवहि वसि धरती धाईऐ॥
ना तू आवहि वसि कितै सिआणपै॥ ना तू आवहि वसि बहुता दानु दे॥
सभु को तैरै वसि अगम अगोचरा॥ तू भगता कै वसि भगता ताणु तेरा॥

(रामकली की वार, पृष्ठ ९६२)

भाई, प्रेम ही एक ऐसी जंजीर है जो हरि को गगन से खींच कर पृथ्वी पर ले आती है। हरि-कृपा करो, प्रेम प्रदान करो, आदि वचनों द्वारा कथा की समाप्ति की। किसी ने प्रार्थना की, महाराज! आज तो पता नहीं किस अवस्था में चले गए। समय बहुत हो गया है—लंगर की भी देरी हो गई है। हजूर बोले भाई—बिमला माँ भक्तिन है भक्तिन! भक्तों के प्रेम में समय का नियम नहीं रहता। प्रेमी सोच रहा है बिमला माता को दो बार भक्तिन कहने पर हजूर का क्या रहस्य है? चन्द्रमा और सूर्य अपनी मर्यादा भंग कर के शायद कभी उदय न हों—यह तो संभव है, लेकिन हजूर का वचन व्यर्थ नहीं जा सकता। हजूर के इस वचन के पीछे कोई गहरा रहस्य है। शायद बुद्धि अभी इसका निर्णय न कर सके—इसलिए इसका निर्णन समय पर छोड़ दें।

गोराया कुटिया का निर्माण

वर्णन 1970 ई० के आस-पास का है जब हजूर विरक्त महाराज गोराया डॅलेवाल के मध्य में दोनों नगरों की सीमा पर 'त्रिनहरे' के बिल्कुल समीप एक अस्थाई छप्पर में सुशोभित हैं। एक दो बार पहले भी यहाँ आकर इस पवित्र भूमि को अपनी चरण धूलि के बीज प्रदान किए थे, लेकिन अब तो ऐसा लग रहा है जैसे उस बीज के प्रस्फुटित होने का समय आ गया हो। सम्भवत: इसीलिए आप कई दिनों से यहाँ ठहरकर उपदेश रूपी ज़ोरदार वर्षा बरसा रहे हैं ताकि वह पुराना बोया हुआ बीज आवश्यक तरलता प्राप्त करके सरलता से उत्पन्न हो सके। संगत का आना-जाना बढ़ गया है। गुरुवाणी-उपदेश की सशक्त वर्षा हो रही है। गुरु नानक का लंगर आरम्भ होकर सब धनी-निर्धनों के लिए मुक्त भण्डारा बाँटे जा रहे हैं। भोग-मोक्ष के वरदान जरूरतमंद सज्जन दोनों हाथों से बटोर रहे हैं, लेकिन परमेश्वर का एक आश्चर्यजनक कौतुक देखो कि वरदान लेने वाले पक्के मकानों में डनलप के गद्दों पर पंखे चलाकर सोते हैं, लेकिन वरदान देने वाला राजसी फ़कीर घास-फूस की टूटे-फूटे छप्पर में भूमि आसन को ही मखमली शय्या समझकर आनंदित हो रहा है। देना सम्भवत: इसका स्वभाव है और इससे संकोच करना शायद इसके स्वभाव में है ही नहीं इसलिए तो कोठी वालों को कोठी, फैक्टरी की इच्छा वालों को फैक्टरी और पुत्रों के अभिलाषियों को पुत्रों के वरदान दोनों हाथों से वितरित कर रहे हैं लेकिन आपका परिवार है अस्थाई छप्पर में दिन-रात निवास करने वाले सर्प एवं बिच्छू। बस, इनको ही अपना परिवार समझकर अथवा अपना आप देख-देखकर किसी अलौकिक आनंद में लीन रहता है। वर्षा की ऋतु है, छप्पर टपक रहा है, चारों ओर खेत पानी से भरे हुए हैं। मार्ग कच्चा होने के कारण वर्षा के कारण खराब हो चुका है, लेकिन फिर भी अपनी मौज में आज राजसी फ़कीर सुशोभित है। संगत के कुछ प्रेमी करबद्ध सम्मुख खड़े हो गए, प्रार्थना की है ग़रीब निवाज़! यदि आप की आज्ञा हो तो यहाँ थोड़ा बहुत मकान बना लें। अलौकिक दाता किसी अत्यंत गहनता में डूब गया, कुछ क्षण पश्चात् अपने कमलवत् नयन से देखा, पवित्र अधर हिले, आज्ञा हुई, वर्षा ने मार्ग खराब कर दिया है। किसान खेतों में जाने से असमर्थ हो रहे हैं, बेजुबान बैल बेचारे कितने कीचड़ में गड्डे खींचते कर्मों को रो रहे हैं। इन पर दया करो। जिस व्यक्ति ने संसार-मार्ग सँवार लिया, उसका परलोक का मार्ग अपने आप ही सँवर जाता है। आज्ञा मानकर गोराया की संगत ने मार्ग में मिट्टी डालने का उपक्रम किया, लेकिन देखो, प्रतिदिन आश्चर्य हो रहा है। डॉक्टर अपने पर-उपकारी स्वभाव अनुसार रोगी को नितांत निरोगी बनाने के लिए मुफ्त औषधि दे रहा है, लेकिन रोगी औषधि पान नहीं कर रहा, लेकिन आज कुछ ऐसे लगता है जैसे डॉक्टर ने भी रोगी को स्वस्थ करने का दृढ़ निश्चय कर लिया है। जब मिट्टी डालनी आरम्भ की तो खेतों वालों ने मिट्टी देने से इन्कार कर दिया। हजूर बोले—सूरी! घी का कनस्तर लेकर आओ। यह लोग बेचारे शुष्क हैं, कड़ाह प्रसाद छकाकर इनकी शुष्कता दूर करो। आज्ञानुसार घी के कनस्तर लाकर कड़ाह प्रसाद वितरित करना आरम्भ किया गया। बस, कड़ाह प्रसाद क्या था, मानों चीनी में लपेटकर कैपसूल दिया जा रहा था। बस-समीप के खेतों वाले सब आ गए। कुछ कड़ाह प्रसाद छकने के लिए और कुछ मिट्टी डालने के लिए। मिट्टी देने से अब कोई इन्कार नहीं कर रहा बल्कि कुछ साथ लगे हुए हैं। इस प्रकार कुछ समय में मिट्टी डालकर रास्ता आस-पास के खेतों से ऊँचा हो गया और यहाँ यात्रा करने वाले धनी-निर्धन, बैल, पशु सब सुखी हो गए। अब गुरुवाणी विचार सत्संग का समय फिर बँध गया। गुरु का लंगर आरम्भ हो गया।

आज अपनी मौज में अलौकिक प्रकाश एक वृक्ष के नीचे कुर्सी पर इस प्रकार सुशोभित है जैसे पूर्णिमा का चन्द्रमा हो और आपके चारों ओर संगत इस प्रकार सुशोभित है जैसे चन्द्रमा का परिवार आया हो। आप जी के सम्मुख खड़े होकर

उजागर सिंह सूरी ने करबद्ध प्रार्थना की, महाराज! आज्ञा दो कि हज़ूर के लिए एक कमरे का निर्माण कर दें। सूरी की प्रार्थना सुनकर, नेत्र बन्द किए हज़ूर शान्त मुद्रा में ऐसे प्रतीत हो रहे थे जैसे भविष्य का मानचित्र देख रहे हों। कुछ समय पश्चात् पवित्र अधरों में गति आई, ईश्वरीय आदेश हुआ—भाई यदि बनाना ही है तो कमरे की बजाए खुला हाल बनाओ, लेकिन एक शर्त है कि किसी से पैसा नहीं माँगना। उजागर सिंह ने प्रार्थना की—महाराज हमें स्वीकार है, लेकिन आपके पवित्र चरणों में प्रार्थना है कि जितने दिन लैंटर न पड़ जाए उतने दिन आप यहीं रहकर दर्शन देने की कृपा करें। हज़ूर मुस्करा कर बोले—बहुत बुद्धिमान है सूरी, हमें यहाँ ठहराने का बहाना बना लिया। आज्ञा दे दी। ठीक है, काम आरम्भ कर दो। हम अभी यहीं हैं, लेकिन पवित्र चेहरे पर गम्भीरता पूर्ण मुस्कान की ओर ध्यानपूर्वक देखने से ऐसे लग रहा था जैसे कह रहे हों—सूरी! हम तो यहाँ सदा रहने के लिए तैयार हैं, लेकिन तुम अपनी कार में बिठाकर करनाल छोड़ आओगे! खैर—दूसरे दिन सेवा आरम्भ हुई। कई प्रेमी करनाल आदि स्थानों से लेने भी आए। लेकिन जब तक लैंटर न पड़ा उतनी देर तक आप यहीं रहे। लैंटर पड़ने के पश्चात् आप किसी अन्य पिपासु की प्यास दूर करने के लिए कहीं और चले गए। वहाँ बारादरी तैयार हो गई अर्थात् वर्षा आदि से बचने का प्रबन्ध तो हो गया, लेकिन चारों ओर से खुला होने के कारण सर्दी से बचने का कोई उपाय नहीं और न ही श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के प्रकाश के लिए कोई स्थान है। लेकिन अब देखो, परमेश्वर ने यह भी उपाय कर दिया। हुआ ऐसे कि एक प्रसिद्ध संत हरिहर जी का यहाँ आकर कुछ दिन ठहरने का प्रोग्राम बन गया, लेकिन दिन सर्दियों के चल रहे थे इसलिए सर्दी से बचने के लिए बारादरी में कोई दीवार आदि नहीं। गोराया वाली संगत में से भाई हरनाम दास और भाई रामलाल ने सलाह दी कि बारादरी की पिछली दीवार बन्द करके एक कमरा बना लें ताकि अब संत हरिहर जी जितने दिन यहाँ हैं—आराम से रह सकें, बाद में जब विरक्त महाराज जी आएं उनके लिए भी उपयुक्त रहेगा। यह बुद्धिमत्ता पूर्ण सलाह सब संगत को पसंद आई इसलिए पिछली ओर दीवार डालकर एक लम्बा कमरा तैयार हो गया और बारादरी को बाहर की ओर से खुला रखा गया ताकि काफ़ी संगत भी समय-समय पर इसमें बैठकर लाभ उठाती रहे। कमरा बन जाने के पश्चात् संगत के ध्यान में आया कि यह कमरा तो दोनों काम दे सकता है क्यों न इसके दो भाग बना लिए जाए—ताकि एक में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रकाश हो जाए और दूसरा विरक्त महाराज जी के लिए बन जाए। अत: इस विचार से उस बने हुए कमरे के मध्य एक दीवार बना दी गई। अब कुछ देर बार हज़ूर यहाँ पहुँचे तो सेवकों ने एक कमरे में महाराज जी के लिए चारपाई लगा दी। दूसरे में पहले ही श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रकाश हो चुका था। हज़ूर के यहाँ पहुँचने से संगत का आना-जाना बढ़ जाने के कारण कुटिया में चहल-पहल हो गई। ईश्वरीय वाणी के अखण्ड पाठों की लड़ी चल पड़ी और गुरु का लंगर भी निरंतर चल पड़ा। महाराज भी प्रत्येक भोग पर ईश्वरीय हुक्मनामे की कथा करते हैं। इस प्रकार संगत पूर्ण आनंद उठा रही है और प्रत्येक दृष्टि से संतुष्ट भी हैं, लेकिन हज़ूर कुछ गहन सोच में हैं। प्रेमियों को जो पाठों की तिथि दे रखी थी उनसे मुक्त होकर सूरी से बोले—अब हम यहाँ से चलते हैं। दोबारा यहाँ तभी आएंगे जब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के लिए ऊँचे मंच वाला अलग कमरा बन जाएगा, क्योंकि यह कमरा बहुत छोटा है। इसमें अरदास करने वाले सज्जन के अतिरिक्त दूसरे व्यक्ति को नमस्कार करने के लिए भी स्थान नहीं है और न ही सामने कोई स्थान है जहाँ संगत बैठकर दर्शन दीदार कर सके। दूसरी बात यह कि गुरु साहिब वाला कमरा पीछे चला गया है। इष्टदेव का स्थान सामने होना चाहिए ताकि हर कोई पहले गुरु साहिब जी का दीदार करे। सूरी ने प्रार्थना की, महाराज! आज्ञा कर दो—गुरु ग्रन्थ साहिब जी के लिए—कहाँ और कैसे

कमरा बनाएँ? हजूर ने निशान साहिब के पास आज्ञा दे दी कि यहाँ बना लो लेकिन एक ध्यान रखना कि मंच ऊँचा बनाना ताकि गुरु ग्रन्थ साहिब ऊँचे स्थान पर सुशोभित हो। दूसरी बात—कमरा बड़ा नहीं बनाना ताकि कोई दूसरा व्यक्ति गुरु साहिब के कमरे में सोता बड़बड़ाता न रहे। इस प्रकार आज्ञा करके हजूर तो अपनी मौज में बहती सरिता की भाँति आगे को चलते बने। इधर प्रेमियों ने बाद में मौजूदा दरबार साहिब का कमरा तैयार कर लिया।

दीन प्रवणता

पूज्य विरक्त महाराज जी का पवित्र हृदय करुणा, मैत्री, मुदिता और उपेक्षा आदि शुभ गुणों से कितना भरपूर था। वह अगले छोटे-छोटे छः सात संकेत मात्र उदाहरणों से स्पष्ट हो जाएगा। चाहे आप अन्तःकरण के समस्त धर्मों से निर्लिप्त, असंग अपने आत्म-स्वरूप में सुमेरु पर्वत के समान स्थित थे, लेकिन फिर भी **'ब्रहम तिदानी परउपकार उमाहा'** के अटल नियमानुसार **'परउपकारु नित चितवते नाही कछु पोच'** वाली अवस्था में विचरण करते हुए जीवन मुक्त अवस्था का आनंद लेते थे। इसका अभिप्राय यह नहीं कि आप किसी संसार में बद्ध थे, अपितु समस्त संस्कारों के बन्धनों से स्वतंत्र ज्ञानवान् का स्थाई स्वभाव है। दूसरे को सुख देना, जरूरतमंद की सहायता करना जैसे अग्नि ने कभी सोचा ही नहीं कि मैं किसी को प्रकाश दूँ, किसी की ठण्ड दूर करूँ अथवा किसी का भोजन पकाऊँ। ये दूसरों को सुख देने वाले समस्त गुण अग्नि का स्वभाव ही है। अग्नि किसी भी देश की हो, उसमें उपरोक्त गुण होंगे ही। इसी प्रकार ज्ञानवान् किसी भी देश, किसी भी जाति, किसी भी धर्म, किसी भी वंश और किसी भी सम्प्रदाय अथवा वर्ग के साथ सम्बन्ध रखता प्रतीत होता हो, लेकिन वह होगा अवश्य ही दैवी गुणों की निधि, अर्थात् दूसरे को अपना आप समझते हुए सुख देना, उसका स्वभाव ही होता है। बस जीव एवं ज्ञानवान् का इतना ही भेद है। जीव का स्वभाव ग्रहण करना होता है और ज्ञानवान् का स्वभाव केवल देना मात्र होता है। देना किसको है? इस बात का भी पूरा निर्णय ज्ञानवान् ही कर सकता है क्योंकि अनुभवी डॉक्टर ही जानता है कि किस मरीज़ को कौन-सी औषधि देनी है। अपने आप अथवा बिना अनुभव से किसी रोग को दूर करने के लिए कोई और ही औषधि ली जाए तो वह रोग में वृद्धि का कारण बन जाती है। तभी तो गुरु साहिब जी ने आदेश दिया है—

खेतु पछाणै बीजै दानु॥
सो खत्री दरगह परवाणु॥

(वारां ते वधीक पृष्ठ १४११)

(१)

एक बार का जिक्र है कि हजूर नाभा के समीप गाँव 'चौधरी माजरा' के बाग में बैठे ज्योति प्रज्वलित कर रहे थे। एक प्रेमी प्रतिदिन आपके चरणों में बैठकर गुरुवाणी विचार की एक पोथी पढ़ा करता था। एक दिन प्रसंग आया कि प्रत्येक 'व्यक्ति को अपनी ईमानदारी और सच की कमाई में से दसवां भाग दान करना चाहिए।' हजूर पवित्र मुख से बोले, ओ भाई! हमने निरंजन सिंह से पूर्ण कुरान सुनी है उसमें वर्णन आया था मुहम्मद साहिब का, जो भी मुसलमान अपनी नेक कमाई में से चालीसवां भाग प्रभु को अर्पण करेगा मैं उसकी सहायता करूँगा, लेकिन अपने गुरुघर में तो दसवां भाग गुरु-अर्पण करने का आदेश है। प्रेमी ने प्रार्थना की, महाराज! यदि कोई दसवें भाग से अधिक गुरु अर्पण करे? हजूर बोले—बहुत ही अच्छा

है, प्रभु की वस्तु प्रभु को देना और इससे बढ़कर क्या बुद्धिमत्ता होगी? हजूर ने उलटा प्रश्न किया—भला दें किसको? प्रेमी बोला? महाराज! सिक्खों को तो यही संस्कार होते हैं, गुरुद्वारा पर खर्च कर देना, लंगर आदि चला देना अथवा अखण्ड पाठ साहिब कराना। हजूर बोले—है तो यह भी बहुत बढ़िया, लेकिन किसी ज़रूरतमंद की सहायता करना और भी सोने पर सुहागा है। वह जो आज़माया हुआ नुस्खा है। हजूर प्रेमी को आज उसकी प्रयोग विधि स्वयं अपने घर करके दिखा रहे हैं।

लगभग 1970 की बात है—आज अपनी मौज में अमरीक चन्द चावला को साथ लेकर ऋषिकेश पहुंच गए—श्री निर्मल आश्रम। दरबार साहिब में नमस्कार करके ऊपर अपने चौबारे में जाकर विराजमान हुए। पता लगने पर महंत आत्मा सिंह जी भी कुशल क्षेम पूछने के लिए ऊपर गए। दोनों महापुरुष आपस में बहुत प्रेम के साथ मिले। दोनों ओर से कुशल क्षेम पूछने के पश्चात् महंत आत्मा सिंह जी ने डेरे की व्यवस्था के सम्बन्ध में बताया कि महाराज! छः लाख रुपये बैंक में जमा करा दिए हैं, इनके ब्याज के साथ आश्रम का खर्च चलता रहेगा। महंत जी के मुख से बैंक वाली बात सुनते ही हजूर उठकर बैठ गए। कठोर वाणी में बोले ओ संत! तुमने बहुत बुरा काम किया। यह पैसा तुम्हें निर्धनों को बाँटना था—तुमने रख दिया बैंक में। यह तुमने अच्छा काम नहीं किया। आपका देदीप्यमान मस्तक को देखकर महंत जी ने कहा—महाराज जैसे आज्ञा हो वैसे ही व्यय कर देते हैं। हजूर बोले—गंगा के तट पर कितने ही गरीब बैठे सर्दी के कारण रात्रि काँप कर व्यतीत करते हैं, उनको प्रातः गर्म चाय के साथ गर्म भोजन मिल जाए ताकि वे बेचारे अपनी ठण्ड एवं भूख को दूर करके भगवान् का गुणगान करें। आगे तुम्हारे पास भगवान् का भेजा पैसा भगवान् के बैंक में ही जमा हो जाए। इस सांसारिक बैंक में पैसा जमा कराकर तो आपने अमानत में ख़यानत (बेईमानी) की है, इसलिए इन पैसों का प्रातः से लंगर आरम्भ कर दो। महंत आत्मा सिंह जी को सही दिशा मिल गई। अगले दिन ही गुरु का लंगर आरम्भ कर दिया जो आज भी अनवरत उसी प्रकार सुचारु रूप से चल रहा है।

(२)

ऐसे ही एक बार खोख गाँव में बाबा बेअंत सिंह की पुण्य तिथि मनाई जा रही थी। संगत दूर-पास से उस समागम में सम्मिलित होने के लिए पहुँच रही थी, क्योंकि यह सब जानते थे कि विरक्त महाराज जी इस पुण्य तिथि पर अवश्य आएंगे, इसलिए आप जी के दर्शन का बहुमूल्य अवसर वे हाथ से गँवाना नहीं चाहते थे। इस समागम में सम्मिलित होने के लिए करनाल से काफ़ी संगत आई जिनमें एक प्रेमी प्यारा लाल भी थे। प्यारा लाल जी ने आपके चरणों में प्रार्थना की—महाराज! मेरे पाई ढ़ाई सौ रु० हैं जो मैं और कुछ संगत ने पुण्य तिथि के लंगर में भाग डालने के लिए एकत्रित किए हैं। आप जी की आज्ञा हो तो लंगर के प्रबन्धकों को दे दूँ? हजूर ने आज्ञा की—भाई! इनको जेब में डाल ले। प्यारा लाल ने आज्ञा मानकर पैसे तो जेब में डाल लिए, लेकिन मन में एक संकल्प बार-बार उठता रहा कि हजूर ने ये पैसे मुझे ही क्यों वापिस कर दिए। खैर-बरसी समाप्त हुई। हजूर भी अपनी मौज में करनाल पहुँच गए।

अब प्रतिदिन किसी न किसी घर में अखण्ड पाठ का भोग पड़ता है तो हजूर के कथा करने से पूर्व जब दरवेश जी कीर्तन करते हैं तो हजूर ने प्यारा लाल को संकेत कर कहा कि दरवेश को पचास रु० कीर्तन भेंट कर दे। इसी प्रकार पाँचों दिन करते रहे। पाँचवें दिन प्यारा लाल से पूछा और कितने पैसे हैं अब तेरे पास। पाँचवें दिन प्यारा लाल ने बताया कि महाराज

ढ़ाई सौ रु० ही थे जो आज समाप्त हो गए। हजूर बोले—इन गाँव वालों को कीर्तन सुनने का कोई प्रेम तो होता नहीं, लेकिन यह निर्धन निष्काम सेवा करता है—प्रत्येक पाठ पर इसलिए तेरे पैसे योग्य स्थान पर लगे हैं।

(३)

इन्हीं दिनों की बात है—प्यारा लाल की माता, माता भावां रानी अपने चार बच्चों सहित किराए के किसी छोटे-मोटे मकान में रह रही थी। उसने मेहनत-मज़दूरी करके बच्चों को पढ़ाने एवं पालन-पोषण का कर्त्तव्य पूरा किया। जब बच्चे पढ़-लिखकर जवान हुए तो जगन्नाथ के विवाह की बात चली। हजूर ने आज्ञा की—भाई आप निर्धन हैं और आप जैसा ही निर्धन परिवार है संत कृष्ण जी के भाई का, जो पानीपत रहता है, संत कृष्ण जी ने इस विषय पर हमसे बात की है। अतः आप उनसे रिश्ता पक्का कर लो। आपकी आज्ञा की अवहेलना किसने करनी थी? वास्तव में प्रत्येक दृष्टि से दोनों का मेल भी था, इस प्रकार ''अंधा क्या चाहे दो आँखें'' वाली बात हो गई। आप जी की ईश्वरीय आज्ञानुसार दोनों पक्षों की ओर से रिश्ता पक्का करके विवाह की तिथि निश्चित कर ली। हजूर ने प्यारा लाल को आज्ञा की कि बारात में ग्यारह व्यक्तियों से अधिक नहीं ले जाने और उधर लड़की वालों को आज्ञा दी कि आपने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को घर ले आना। रागी हम ले आएंगे। निश्चित दिन पर महाराज जी स्वयं, बारात एवं रागी दरवेश जी को साथ लेकर पानीपत पहुँच गए। वहाँ जाकर पता लगा कि बारात में व्यक्ति ग्यारह की बजाए तेरह आ गए हैं। हजूर ने देखा कि बारात में दो लड़के चुस्त-दुरस्त धनी परिवारों के हैं। उनको समीप बुलाकर आज्ञा दी कि अब आप वापिस करनाल चले जाओ। यह निर्धनों की बारात है—आपके लिए नहीं। लड़के वचन मानकर बिना जल-पान किए वापस करनाल चले गए। इतने में 'आनंद कारज' की तैयारी हो गई। आज्ञानुसार दरवेश जी ने कीर्तन द्वारा 'लावां का पाठ' पढ़ा। इस प्रकार पूर्णतः गुरु मर्यादानुसार आनंद कारज की रस्म पूरी कर हजूर वापिस करनाल कुटिया आ गए। यह थी आपकी दीन-प्रवणता।

(४)

ऐसा ही एक वर्णन 'खोख' गाँव का है जब आप खोख कुटिया निवास कर रहे थे। आप जी बहुत बार कथा में वर्णन करते थे कि जो कोई किसान चार एकड़ से कम ज़मीन का मालिक है उस बेचारे का कोई हाल है? उसके बच्चे नंगे घूमते हैं, प्रत्येक दृष्टि से वह तंगी के साथ नरक जैसा जीवन व्यतीत कर रहा है। बड़े किसानों को कहते भाई—आपका बड़प्पन इसमें है कि आप छोटे किसानों की सहायता करें। किसी को चार एकड़ भूमि हल चलाने के लिए दे दो, किसी को कोई अन्य सहायता कर दो, किसी की लड़की के विवाह में मदद कर दो—फिर तो आपका बड़प्पन है श्रेष्ठ। यदि आप अपने सम्बन्ध में ही सोचते रहे—फिर बड़े काहे के हुए?

इन दिनों में ही खोख नगर के एक निर्धन किसान की दो लड़कियों का विवाह आ गया। किसान बेचारा बहुत भला था। महाराज भी उसके सम्बन्ध में भली-भाँति जानते थे। आपने गाँव के कुछ बड़े ज़मींदारों को आज्ञा दी कि आप उसकी पैसे और दूध आदि आवश्यक वस्तुओं के साथ विवाह में हर प्रकार की सहायता करो और विवाह वाले दो दिन उसके घर में रहकर सारे कार्य में सहायता करना। बारात विदा होने तक उसके घर से वापिस नहीं जाना। प्रेमियों ने आज्ञा मानकर ऐसा ही किया। उस निर्धन किसान की लड़कियों का विवाह तो निश्चित समय पर हो ही जाना था, लेकिन अब तो वह परिवार अत्यंत प्रसन्न हुआ।

(५)

अपना सुख दूसरों को अर्पित कर देना, चाहे प्रत्येक ज्ञानवान, का स्वभाव ही होता है लेकिन विरक्त महाराज जी में तो यह स्वभाव कुछ अधिक ही देखा गया था। जैसे आग तो घास-फूस में भी होती है, लेकिन किसी मोटी लकड़ी की आग में दूसरों के कार्य करने की समर्थता अधिक होती है। बस इसी प्रकार ही हजूर के जीवन में पर-उपकार, दीन दयालुता और दूसरों को सुख देने की सामर्थ्य बहुत अधिक थी। एक बार की बात है कि हजूर करनाल कुटिया में टिके हुए थे। संगत भी दर्शन करने के लिए दूर-पास से आती रहती थी। चैत्र मास होने के कारण मच्छर भी बहुत अधिक था। एक दिन की बात है दो प्रेमी हजूर के दर्शनार्थ करनाल पहुँचे। जब रात हुई तो हजूर अपने चौबारे में मच्छरदानी लगाकर आराम कर रहे थे। वे दो प्रेमी एवं गुरनाम सिंह चौबारे के बाहर छत पर पड़ गए। मच्छर तो अपना काम कर ही रहा था अर्थात् बार-बार मलेरिया के टीके लगा रहा था, परन्तु फिर भी वातावरण शान्त था, क्योंकि एकांत स्थान, हजूर के चरणों का प्रेमभरी स्निग्धता, जीव को संसार-सागर की तप्तता से बचने के लिए और क्या चाहिए? अचानक रात्रि के ग्यारह बजे, महाराज जी ने चौबारे से बाहर आकर हुक्म किया—गुरनाम सिंह! इनको मच्छर काट रहे होंगे। तू ऐसा कर, हमारी मच्छरदानी उतारकर इनके ऊपर लगा दे। लोक-परलोक का स्वामी इन दो गरीब प्रेमियों पर सुखों की वर्षा कर रहा है अर्थात् अपना सुख ही इन पर न्यौछावर कर रहा है। बाहर-आदम बू, आदम बू करते फिर रहे मच्छर के आगे अपना शरीर भेंट कर रहा है, लेकिन चाहता है यह प्रेमी रात्रि रूपी जीवन आराम के साथ बसर कर लें। खैर-प्रेमियों ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की—महाराज हम तो आपके चरण रूपी दुर्ग में एक मच्छर क्या हर प्रकार के शत्रुओं से सुरक्षित बहुत आनंद के साथ रात्रि रूपी जीवन व्यतीत कर रहे हैं, आप कृपा करो, मच्छरदानी में सजकर आराम करो। अभिप्राय यह कि आप आराम एवं कष्ट आदि हर प्रकार के द्वन्द्वों से अतीत हो, लेकिन फिर भी शरीर दृष्टि करके ऐसा कहना पड़ता है।

(६)

एक बार आप करनाल कुटिया ठहरे हुए थे। कर्म वही जो ऊपर से साथ लेकर आए थे अर्थात् सहत स्वभाव से हो रहा जगत् उद्धार। ज्येष्ठ मास होने के कारण गर्मी खूब पड़ रही थी। अनेक प्रेमी संसार रूपी तप्त और विषयों रूपी विष से बचने के लिए आपके चंदन समान शीतल चरणों से इस प्रकार लिपटे रहते थे जैसे ज्येष्ठ आषाढ़ के मास में बाहरी तप्तता और आन्तरिक विष के सताए सर्प चंदन से जाकर लिपट जाते हैं। धीरे-धीरे ज्येष्ठ आषाढ़ के मास व्यतीत हो गए। गरमी की अधिकता और ताप आदि उनका परिवार भी बोरिया बिस्तरा बाँधकर साथ ही चला गया। अब वह ऋतु आ गई जिसके सम्बन्ध में गुरु नानक देव जी संकेत कर रहे हैं—

भादउ भरमि भुली भरि जोबनि पछुताणी॥
जल थल नीरि भरे बरस रुते रंगु माणी॥
बरसै निसि काली किउ सुखु बाली दादर मोर लवंते॥
प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा बोले भुइअंगम फिरहि डसंते॥
मछर डंग साइर भर सुभर बिनु हरि किउ सुखु पाईऐ॥
नानक पूछि चलउ गुर अपुने जह प्रभु तह ही जाईऐ॥

(तुखारी बारह माह, पृष्ठ ११०८)

ऐसी ऋतु आ गई। अलौकिक प्रीतम की अपनी ईश्वरीय मौज में किसी प्रेमी का तप्त हृदय शान्त करने हेतु किसी अन्य स्थान पर जाने का रहस्य जानकर संत कृष्ण जी ने प्रार्थना की—महाराज! सावन, भाद्रपद का मास चल रहा है। मौसम कच्चा

है, स्थान-स्थान पर साँप फुँकार रहे हैं फिर पंजाब में कोई ऐसी कुटिया भी नहीं है जिसमें ये दो मास सुख में व्यतीत किए जाएं, परन्तु इस कुटिया में सब सुख-आराम है इसलिए कृपा करके सावन-भादों के मास यहीं व्यतीत करो। अलौकिक दाते के सुनते ही चेहरे पर तेज, नेत्रों में सहस्त्रों सूर्यों के समान आभा प्रकाशित हो उठी। ईश्वरीय नाद हुआ कि संत जी! नौकरी क्या और सुख आराम क्या? महलों के सुख क्या और फ़कीरी क्या? कुटिया से बाहर उस सड़क पर कदम रखते ही यदि कुटिया के सुख याद रह गए, तो त्याग क्या और फ़कीरी की सच्ची बादशाही कहाँ? परमेश्वर के प्रेमी का निवास इन सांसारिक और शारीरिक सुखों-दुखों से बहुत ऊपर अपने निज-देश में होता है। बस, यह कहते ही आपके कमल-नयन बन्द हो गए, हाथ जुड़ गए और पावन-कण्ठ से ईश्वरीय नाद हुआ—

मितर पिआरे नूं हाल मुरीदां दा कहिणा॥
तुधु बिन रोग रजाईआं दे ओढण नाग निवासां दे रहिणा॥
सूल सुराही खंजर पिआला बिंग कसाईआं दे सहिणा॥
यारड़े दा सानूं सथर चंगा भठ खेड़िआ दा रहिणा॥

बस, प्रिय की आवाज़ पूर्ण होने की देर थी, हाथ में चिप्पी खूण्डा (लाठी) उठाकर चल पड़े किसी अदृष्ट निवास की ओर। अपने सब सुखों को त्यागकर, कुटिया की सुविधाएं और करोड़पति सेठों की ओर से भेंट किए गए पदार्थों के ढेरों की उपेक्षा कर चल पड़े किसी ईश्वरीय आदेश में। अपने सुख-सुविधाओं के लिए प्रिय के आदेश में हस्तक्षेप नहीं किया बल्कि प्रसन्नापूर्वक मालिक का हुक्म मानकर महल माड़ियों एवं मखमली सेजों के सुख त्यागकर किसी कच्चे छप्पर में जाकर भूमि आसन लगवाया। अपने सुखों के लिए प्रभु-आदेश में हस्तक्षेप नहीं किया, लेकिन अब थोड़ा उधर ध्यान दो अपने दीन-दयालु स्वभावानुसार किसी निर्धन के सुखों की हानि होते देखकर सहन न करते हुए, प्रभु की मौज में हस्तक्षेप भी कर रहे हैं।

हुआ ऐसे कि गाँव 'उच्ची दौद' के टीले पर दिलीप सिंह के पास ठहरे हुए थे। फसलें पककर काटने के समीप थीं, लेकिन तेज वर्षा के साथ ओले पड़ने आरम्भ हो गए। जब देखा ओले बढ़ते जा रहे हैं तो आप से निर्धन किसानों का दु:ख सहन नहीं हुआ। दिलीप सिंह को बोले, ओ भाई! पहले गाँवों में माताएँ वर्षा और ओले बंद कराने के लिए तवा फैंका करती थीं, थोड़ा वह फैंक कर देख। दिलीप सिंह ने तवा फैंका, लेकिन ओले बन्द न हुए। फिर हजूर ने कहा—शंख बजाकर देख। महाराज यहाँ शंख तो है नहीं, गाँव में ब्राह्मणों के घर है, इतने ओलों में गाँव जाना कठिन है। इतने में ओले और तीव्र गति से पड़ने लगे। उस समय हजूर चारपाई पर बैठे थे और बाहर अंधकार था। शायद हजूर को अब कुछ ऐसे लगा कि अब अधिक देर नहीं करनी चाहिए, क्योंकि अब तो कुछ क्षण की देरी ही गरीब मार करके रख देगी। बड़ी जल्दी अपनी मौज में चारपाई से उठकर हाथ में खूण्डा लेकर दरवाज़े पर आ खड़े हुए और आज्ञा की, दिलीप अब देख बाहर। दिलीप सिंह बाहर निकला—ओले एवं वर्षा बिल्कुल बन्द हो चुके थे। महाराज वापिस चारपाई पर जाकर कपड़े से मुँह ढककर पड़ गए। पूरी रात्रि किसी से बात नहीं की। दूसरे दिन भाई निर्मल सिंह उच्ची दौद वाले के घर अखण्ड पाठ के भोग पर हजूर ने कथा करते वचन किया कि संत को बहते दरिया के समान बहते रहना चाहिए बजाए अधिक देर एक स्थान के रहने पर। अधिक देर तक एक स्थान पर रहने के कारण समीप रहने वाले सेवादारों की लिहाज़ में आकर कभी-कभी भगवान् की मर्ज़ी में हस्तक्षेप करना पड़ जाता है। यह थी आपकी दीन-प्रवणता।

आप जी के पवित्र शरीर के प्रारब्ध में कर्त्ता पुरुष ने पर-उपकार इतना लिखा था कि गरमी हो चाहे सर्दी, वर्षा हो अथवा सूखा, दिन हो अथवा रात, अधिक क्या प्रत्येक पल, प्रत्येक क्षण, जीवों के भले के कार्य सदैव होते ही रहते थे। इस महान् पर-उपकार का कार्य वे चाहे अनेक प्रकार से कर रहे थे, लेकिन इसका मुख्य माध्यम था लोगों के घर में अखण्ड पाठ कराकर मुख्य वाक् की विस्तारपूर्वक नितांत अध्यात्म की वर्षा कर अमृतमयी कथा करना। श्रद्धालु तिथियाँ लेकर अपने घरों में ऐसे समागमों का आयोजन करते और उसके उपरांत लंगर के खुले भण्डार वितरित करते। खाते-पीते धनी वर्ग के प्रेमी तो ऐसा कर सकते थे और कर भी रहे थे लेकिन बेचारे निर्धनों के लिए ऐसे समागमों का आयोजन असम्भव था। घर छोटे, पैसे की तंगी, अन्य कई प्रकार के साधन जुटाने में असमर्थ, लेकिन मन में बड़ी इच्छा है कि हमारे घर में भी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी ईश्वरीय अवतार का पदार्पण हो, हजूर के शुभ चरणों का प्रवेश हो, गुरु नानक की प्रिय संगत बैठकर प्रसाद छके और हम भी अपना सौभाग्य समझें। इन बेचारों के भीतर उठ रही ऐसी प्रेम-तरंग क्या प्रभु जानते नहीं हैं? क्या इनमें उठ रहे प्रेम से भीगे शुभ-संकल्पों को पूरा नहीं करेगा? क्या ये बेचारे धनवान् लोगों की ओर देख-देख कर अपने कर्मों को ऐसे ही कोसते रहेंगे? क्या इनकी अन्य लोगों की भाँति गुरु साहिब का घर में स्वागत करने की इच्छा कभी पूरी नहीं होगी? अवश्य होगी, क्षण से पूर्व पूरी होगी। ईश्वर चाहे तो कुछ पलों में सभी उपाय स्वयं ही सुलभ कर सकता है, बशर्ते इनका हृदय श्रद्धा एवं प्रेम के साथ भीगा हो, हजूर के शुभ चरण-धूलि के लिए तड़प उठे, बस और कुछ नहीं चाहिए। संकल्प सब पूर्ण हुए। अब तिथि की याचना नहीं करनी, कोई तैयारी नहीं करनी, किसी को निमंत्रण नहीं भेजना, किसी हलवाई को बुलाना नहीं, कोई पकवान नहीं बनवाने, किसी बर्तन आदि की व्यवस्था नहीं करनी, कोई वितान नहीं लगाना, किसी को किराये के पैसे नहीं देने—अधिक क्या प्रभु ने आज सभी उपाय सुलभ कर दिए। अनायास ही कलियुग के जहाज़ साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी उनके उपकृत मल्लाह विरक्त महाराज जी अपनी संगत एवं लशकर सहित, पकवान-पदार्थों के लोक-परलोक से थाल परोसकर आ उतरे भाई लालो के बगीचे में—एक निर्धन मिस्त्री भाई जरनैल सिंह के घर, जो भीतर से व्याकुल था ऐसे समागम का आयोजन करने के लिए। हजूर के श्री चरणों का अत्यंत प्रीतिवान यह सज्जन, प्रतिदिन लोगों के घर में अखण्ड पाठ के भोग पड़ते देखता था—और देखता था हजूर के पवित्र मुख से अमृत वर्षा होते और संगत को नक्षत्र मण्डल की भाँति सजकर लंगर छकते। उसके मन में बार-बार यह तड़प उठती—कि वह भी ऐसे समागम का आयोजन करता, लेकिन इस इच्छा पूर्ति का कोई सुअवसर नज़र नहीं आ रहा था। घर छोटा है, अखण्ड पाठ साहिब कहाँ कराएंगे? पाठियों को कहाँ बैठाएंगे? सगे सम्बन्धियों एवं संगत के लिए कोई स्थान नहीं, लंगर कहाँ बनेगा? पैसे की तंगी आदि विवशता प्रेम अग्नि में कूदने के लिए बाधक बन रही थी, लेकिन प्रज्वलित प्रेम-अग्नि भी शान्त नहीं हो रही थी। थोड़ा ध्यानपूर्वक देखो कि प्रेम में बंधा अलौकिक प्रीतम आज समस्त उपाय स्वयं सुलभ करा रहा है।

हुआ ऐसे कि भगवान सिंह मिस्त्री के घर किसी बच्चे के विवाह का संयोग बना। उसके घर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी का श्री अखण्ड पाठ साहिब कराकर हजूर विरक्त महाराज जी की ओर से पावन कथा करने के साथ 'आनंद कारज' की रस्म अदा हुई। उपरांत हजूर ने आज्ञा की कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को किसी एकांत कमरे में सुखासन कर दो और संगत को लंगर-पानी छकाओ। भगवान सिंह ने सोचा कि जरनैल सिंह का घर खाली है जो कि समीप ही है और दोनों भाई

भी हैं, श्री गुरु साहिब जी का उधर सुखासन कर आएं और खाली होकर निवास स्थान पर छोड़कर आएंगे। ऐसा ही किया गया। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी जरनैल सिंह के घर पहुँच गए। उधर भगवान सिंह के परिवार ने विरक्त महाराज जी को प्रार्थना की कि आप जी लंगर छक लो। देखो, अब घट-घट के अन्तर की जानने वाले किसी निर्धन प्रेमी की प्रेम-इच्छा पूरी करने के लिए श्री गुरु ग्रन्थ साहिब रूपी नाव में संगत को बिठाकर मल्लाह की भूमिका निभा रहे हैं। आज्ञा की—जरनैल सिंह चल तेरे घर चलकर लंगर छकेंगे। गुरु ग्रंथ साहिब जी पहले पहुँच गए और आप संगत को साथ लेकर पीछे-पीछे पहुँच गए जरनैल सिंह के घर। घर चाहे अत्यंत छोटा है, स्थान की भी कमी है, लेकिन आपका छोटे-बड़े स्थान से क्या सम्बन्ध, आप तो निर्धन मिस्त्री की प्रेम-भूख को पूरा करने के लिए आए हैं—इसलिए जा विराजमान हुए एक छोटे कमरे में। इतने में लंगर भी पहुँच गया, देखकर आपने आज्ञा की कि संगत इसी प्रकार बैठी रहे, लेकिन एक व्यक्ति बैठी संगत को हाथों पर ही धीरे-धीरे लंगर की एक-एक चीज बाँटता रहे। आज्ञानुसार एक-एक करके विवाह में तैयार किए, सारे पकवान हाथों पर ही छका दिए। उपरांत हजूर ने भी छके। कुछ प्रवचन करके जरनैल सिंह की यह इच्छा कि घर छोटा है, पैसा है नहीं, मैं अखण्ड पाठ नहीं करा सकता, विरक्त महाराज जी को घर आने के लिए निमत्रंण दे नहीं सकता, क्योंकि संगत को लंगर कहाँ से छकाऊँगा, इतना प्रबन्ध कैसे करूँ आदि ये सब बाधाएँ दूर करके जो काम मिस्त्री के लिए असम्भव थे—उनको साक्षात् पूर्ण करके गरीब प्रेमी के हृदय को प्रेम जल से सिंचित करके कुटिया की ओर प्रस्थान किया।

संत कृष्ण जी

एक समय की बात है कि विरक्त महाराज जी कनखल कुएँ की छत पर विराजमान थे। उस समय आप जी का शरीर कुछ स्वस्थ नहीं था इसलिए इन दिनों में आप पवित्र मुख से प्रवचन बहुत कम किया करते थे। आज अपनी किसी ईश्वरीय मौज में दिन के तीसरे पहर अपनी चारपाई पर विराजमान थे। समीप पाँच-सात प्रेमियों के अतिरिक्त भगवे वेश में एक संत कुर्सी पर बैठे थे। पता लगा कि इनको संत कृष्ण जी कहकर बुलाते हैं। इनके बाह्य चक्षु तो देखने से शक्तिहीन थे, लेकिन भीतरी चक्षु काफ़ी उदार दृष्टि वाले प्रतीत हो रहे थे। हजूर ने चारपाई के ऊपर लेटे-लेटे ही पवित्र मुख से आज्ञा की—कृष्ण जी! कुछ सुनाओ संगत को। आज्ञा मानकर संत जी ने प्रवचन आरम्भ किया। प्रवचन आरम्भ क्या किया, मानों गुरुवाणी एवं गीता के पवित्र वचनों की झड़ी लगा दी। एक घंटा शुद्ध अध्यात्म की पारमार्थिक तर्कों द्वारा ऐसी अनवरत वर्षा की कि श्रोतागण गद्‌गद् हो गए। जब कृष्ण जी ने प्रवचनों की समाप्ति की तो हजूर विरक्त महाराज जी उठकर बैठ गए। वचन किया—कृष्ण जी हद कर दी। श्रोताओं की ओर देखकर बोले—ऐसी हद आपने कभी देखी भी नहीं होगी। श्रोताओं में से एक प्रेमी ने आश्चर्यचकित होकर बाद में विरक्त जी की पवित्र चरणों में प्रार्थना की, महाराज! इनके स्थूल नेत्रों को बन्द हुए कितना समय हो गया होगा? हजूर बोले—बाल्यकाल से ही हैं। फिर महाराज इतना ज्ञान कैसे प्राप्त किया? हजूर बोले—श्रवण द्वारा।

ऐसे जीवंत संत कृष्ण जी का जन्म गाँव चन्दरैण तहसील लईया ज़िला मुज्ज़फरगढ़ (आजकल पाकिस्तान) में पिता श्री ताराचंद और माता विरामामाई के घर 1910 ई० के करीब हुआ था। जब कोई छः वर्ष के हुए तो किसी कारण आँखों की ज्योति जाती रही। बाल्यकाल तो फिर यूँ ही व्यतीत किया। जब बड़े हुए तो माता-पिता ने विद्यार्जन के लिए अपने कुल गुरु के पास रोड सुलतान ज़िला झंग में भेज दिया। आप बाह्य नेत्र के बगैर भी तेरह वर्ष तक वहाँ पढ़ते रहे। इस समय में आप

गुरुवाणी के अच्छे ज्ञाता हो गए। उपरान्त वापिस आकर गाँव के गुरुद्वारा साहिब टिक गए। यहाँ ठहरकर गाँव के बच्चों को गुरुवाणी शिक्षण आरम्भ किया और साथ-साथ जब समय मिलता बर्तन आदि की सेवा के अतिरिक्त प्रात:-सांय साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रकाश एवं सुखासन की सेवा भी करते रहे। इतने में देश-विभाजन की घटना घटित हुई। अन्न-जल एवं संयोगवश परिवार और अन्य संगत के साथ पाकिस्तान से उठकर पानीपत आ गए। यहाँ भी गुरुद्वारा साहिब ठहरकर वही काम यानी गुरुवाणी शिक्षण जारी रखा। कुछ समय पश्चात् भीतर से उठ रहे परमार्थ के अन्य ग्रन्थों को पढ़ने-श्रवण करने के संकल्प को शानत करने के लिए अवधूत मण्डल हरिद्वार आ गए। यहाँ ठहरकर काफ़ी समय गीता एवं वेदांत के अन्य ग्रन्थों का अध्ययन करते रहे। दैवयोग से यहाँ ठहरने के दौरान ही निर्मल बाग में विरक्त महाराज जी से पहला परिचय हुआ। परिचय क्या हुआ? मानों जंग रहित लोहे की चुम्बक ने अपनी ओर खींच लिया। अब लोहे की क्या शक्ति है कि चुम्बक से दूर चला जाए। ग्रन्थों शास्त्रों का परोक्ष ज्ञान तो पहले ही पर्याप्त एकत्रित हो गया था, मानों वृक्ष तो पहले ही काफ़ी फला-फूला था, लेकिन अब चंदन के समीप होने कारण सुगंधि से महक उठा। विरक्त महाराज जी की कृपा-वर्षा से भीतर कोई स्वांति बूँद रूपी जीवन-कण प्रवेश कर गया। अब बाह्य नेत्रों की कोई अधिक आवश्यकता भी नहीं रह गई थी—बस अब वे हजूर के चरणों के साथ जुड़ गए। काफ़ी समय पश्चात् करनाल कुटिया रहते हुए हजूर के चरणों का स्नेह प्राप्त करते रहे और पंजाब में भी महाराज जी के साथ गए। अब जहाँ जाते पारमार्थिक प्रवचनों की वर्षा करते। एक-दो को अथवा अधिक को परमार्थ में रुचि रखने वाले श्रद्धालुओं को गुरुवाणी, गीता एवं वेदांत आदि परमार्थ के ग्रन्थ बड़े अच्छे ढंग से पढ़ाते। इसके बाद आजीवन विरक्त महाराज जी के चरणों से जुड़े रहे। इन अक्षरों के लिखने तक आपका शरीर तो चाहे नहीं रहा लेकिन अपनी जीवन-यादें और काफ़ी लोगों के हृदयों पर अपनी पारमार्थिक सुगंधि और पानीपत में आपके नाम पर गुरुद्वारा साहिब कृष्ण धाम और घनश्याम नाम की पाठशाला जो आपने आरम्भ की थी आज भी चल रही है। अकाल पुरुष के आश्चर्यजनक कौतुक देखो—एक नेत्रहीन व्यक्ति नेत्रों वाले सहस्रों व्यक्तियों को मार्गदर्शन करवा गया।

खालसा हाई स्कूल नाभा

सातवें पातशाह श्री गुरु हरि राय साहिब जी द्वारा उपकृत कुल-फूलवंश के बड़े बाबा फूल के बड़े सुपुत्र चौधरी त्रिलोक सिंह के बड़े बेटे सरदार गुरदित्त सिंह से नाभा वंश चला है, इसलिए सिक्खों की आठ रियासतों में से नाभा को '**चौधरियों का घर**' कहते हैं। चौधरी गुरदित्त सिंह ने अपनी शक्ति से कई क्षेत्रों पर अपना दबदबा बनाया और कई गाँवों को आबाद कर अपना राजसी ठाठ बना लिया। गुरदित्त का पुत्र सूरतियाँ सिंह 1752 ई० में स्वर्ग सिधार गया। इसलिए चौधरी गुरदित्त सिंह के 1754 ई० में देहांत होने से इसका पौत्र (सूरतियाँ सिंह का पुत्र) हमीर सिंह सिंहासन का मालिक बना। राजा हमीर सिंह ने दादा का राज्य भली-भाँति संभाल कर और बहुत से इलाके को जीतकर सन् 1755 ई० में नाभा नगर आबाद किया जो पटियाला शहर से चौबीस कि०मी० पश्चिम की ओर स्थित है।

देश के बँटवारे के पश्चात् रियासतों के भंग होने पर यह नाभा नगर ज़िला पटियाला की तहसील बना दी गई। इस नगर में शिक्षण संस्थाएं तो राजकीय भी हैं जैसे—राजकीय कॉलेज, राजकीय उच्चत्तर विद्यालय, राजकीय उच्च विद्यालय अथवा

लड़कियों का स्कूल अलग एवं प्राथमिक स्कूल की शाखाएँ आदि । संस्थाओं के साथ, कुछ निजी संस्थाएँ जैसे आर्य हाई स्कूल, जैन स्कूल, एस०डी० स्कूल आदि संस्थाएँ भी विद्या-ज्ञान में यथाशक्ति योगदान दे रही हैं। सन् 1969 ई० में जब जगत् गुरु श्री गुरु नानक देव महाराज जी का पाँच सौ साला प्रकाश उत्सव विश्व भर में बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा था, उस समय नाभा नगर और क्षेत्र के आदरणीय सज्जनों ने एकत्रित होकर विचार-विमर्श किया कि हमें श्री गुरु बाबा जी की स्मृति में कोई ऐसी यादगार बनानी चाहिए जो पाँच सौ वर्ष प्रकाश उत्सव को चिरकाल तक ताज़ा रखे और गुरु बाबा जी के चलाए परमार्थ मार्ग में अपना योगदान देती रहे। कई मुद्दों पर विचार किया गया और अंत में निर्णय हुआ की गुरु बाबा जी ने अवतार धारण किया था अर्थात् अज्ञान अंधकार को दूर करने के लिए ज्ञान रूपी प्रकाश का यज्ञ वितरित किया था अभिप्राय यह—अविद्या रूपी रात्रि का नाश करने के लिए विद्या रूपी सूर्य उदय किया था। अत: हमें भी जो गुरु नानक मार्ग के अनुयायी हैं—गुरु बाबा जी द्वारा दिए उस ज्ञान के सूर्य की एक लघु किरण का प्रसाद समस्त समाज में वितरित करना चाहिए अर्थात् गुरु बाबा जी के बताए परमार्थ मार्ग पर चलकर उनके शिष्य कहलाने के तभी हकदार हो सकते हैं। सब संगत ने आम सहमति के साथ खालसा हाई स्कूल बनाने का निर्णय करके उस समय के मुख्यमंत्री जस्टिस गुरनाम सिंह से 8 मार्च 1969 तिथि लेकर गुरु बाबा जी की पाँच सौ साला स्मृति में मनाए जा रहे उत्सवों में नींव रखी। इस विद्या-संस्था के लिए ढ़ाई एकड़ भूमि अलौहरां गेट से बाहर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने अपने प्रबन्ध के अधीन चल रहे गुरुद्वारा बाबा अजयपाल सिंह के स्थान से मुफ्त दे दी। इस संस्था को चलाने के लिए नगर एवं क्षेत्र के आदरणीय सज्जनों की एक कमेटी बनाई गई, जिस की देखरेख में इलाके की संगत की भरपूर सहायता के कारण थोड़े समय में ही भवन बनकर तैयार हो गया। भवन के तैयार होते ही कक्षाएँ आरम्भ कर दी गईं। प्रबन्धक कमेटी के सदस्यों ने भी नव-उत्साह के साथ स्कूल की ओर पूर्ण ध्यान दिया जिसका परिणाम यह निकला कि दसवीं कक्षा का बोर्ड का परिणाम शत-प्रतिशत रहा। क्षेत्र के लोगों ने अच्छा परिणाम देखकर धड़ाधड़ बच्चे दाखिल करवा दिए।

दो वर्ष तक तो इस प्रकार बाहर-भीतर से ठीक-ठाक चलता रहा, लेकिन लगभग दो वर्ष के पश्चात् आर्थिक दृष्टि से डाँवा-डोल हो गया, क्योंकि सरकार की ओर से कोई सहायता तो थी नहीं और न ही आमदनी का कोई अन्य साधन था। स्टाफ का वेतन और अन्य खर्चे पूर्ण करने की चिंता आरम्भ हो गई। साल भर कुछ अन्य दानी सज्जनों की सहायता के साथ किसी तरह चलता रहा, लेकिन आर्थिक पक्ष से इस प्रकार लड़खड़ा गया कि कैंसर के रोगी की भाँति मरणासन्न हो गया। कोई और चारा न देखकर एक कमेटी सदस्य नछत्तर सिंह खोख ने सलाह दी कि यदि इसको चलते रखना है तो अब एक ही तरीका है विरक्त महाराज जी का आश्रय लेना। यदि उनकी सहज दृष्टि रोगी पर पड़ जाए तो पुन: जीवित हो सकता है अन्य कोई डॉक्टर इसको बचाने के लिए समर्थ नहीं। सलाह तर्क युक्त थी इसलिए समस्त प्रबन्धक कमेटी के मन में जच गई। फलस्वरूप प्रबन्धक कमेटी के कुछ सज्जन एकत्रित होकर हजूर के पवित्र चरणों मे पहुँचे। प्रार्थना की महाराज! इलाके के सिक्ख सरदारों ने एकत्रित होकर बड़ी कठिनाई से एक स्कूल का निर्माण किया था, वह भी आर्थिक पक्ष की दृष्टि से असफल होता जा रहा है। आप कृपा करो कि वह जीवित रहकर क्षेत्र की सेवा उपकार करता रहे अन्यथा अब उसके अधिक देर तक चलने की कोई आशा नहीं है। हजूर सुनकर मौन हुए कुछ देर सोचते रहे ऐसा लग रहा है जैसे उस स्कूल के रोग गिन रहे हों कि एक यही रोग है जिसकी ये लोग बात कर रहे हैं या यह बेचारा और रोगों से भी ग्रसित है। हजूर इन प्रेमियों

का कोई उत्तर नहीं दे रहे, लेकिन अपनी मौज में चेहरे पर कभी हल्की मुस्कान बिखर जाती है और कभी गम्भीरता जिसको देखकर कुछ ऐसे प्रतीत होता है जैसे हजूर मोन में ही संकेत कर रहे हों कि ये बेचारे भोले हैं भोले! जिस रोग से ये आतंकित हैं वह तो एक पुड़िया में ही काफूर हो जाएगा। क्योंकि वह रोग बड़ा नहीं है। क्षय रोग तो इसकी हड्डियों में एक और रच-पच गया है जो इसको चारपाई पर लिटा देगा फिर इसकी यह हालत हो जाएगी कि **न जिंदा न मुर्दा।** खैर हजूर ने मौन भंग किया और अपने पर-उपकारी स्वभावानुसार **जो सरन आवै तिस कंठि लावै** की उक्ति अनुसार इन बेचारों की माया की छोटी माँग, जो हजूर के चरणों में दिन-रात बड़ी नम्रता से झाड़ू की सेवा करके अपने अहोभाग्य समझती थी को आज्ञा कर दी—इन प्रेमियों का कार्य कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए। इन बेचारों की माँग भी केवल यही थी—माया के दु:ख से मुक्ति। अच्छा होता आज ये दयालु दाते से स्कूल रूपी मरीज़ की सारी बीमारियों का निदान माँग लेते। खैर—जो उस प्रभु को मंजूर इसलिए पावन-मुख से आज्ञा कर दी कि आदिगुरु श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की पवित्र वाणी का श्री अखण्ड पाठ साहिब करो। इलाके की और बाहरी संगत को भोग के निमंत्रण पत्र भेज दो। आपकी माया की आवश्यकता माया-निधियों के स्वामी गुरु नानक पूर्ण कर देंगे। प्रेमी बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि उनके सम्मुख यही एक बड़ा रोग था जिसकी औषधि रोगी को मिल गई।

प्रबन्धक सज्जन और बड़े अधरंग जैसे रोग जिसका आक्रमण अभी रोगी पर नहीं हुआ था—उससे अपरिचित थे। खैर—आज्ञानुसार निश्चित दिन पर श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ हो गया जिसमें महापुरुषों की कृपा से मालामाल हुए। भाग्यशाली गाँव खोख कोटली की ओर से पाठियों की सेवा के साथ-साथ लंगर आदि की 90 प्रतिशत सेवा का योगदान डाला गया। खैर-भोग वाले दिन इलाके की संगत काफ़ी संख्या में आई हुई थी, परन्तु करनाल आदि दूर-दूर स्थानों से वह संगत भी पहुँची जिनका इस स्कूल के साथ दूर का भी सम्बन्ध नहीं था। वे तो इसलिए आई थी कि विरक्त महाराज जी स्कूल में अखण्ड पाठ करवा रहे हैं। भोग उपरांत हजूर ने बहुत दिल को स्पर्श करने वाली कथा कही जिसमें आपने गुरु नानक के घर में सेवा की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए फरमाया कि श्री गुरु नानक देव महाराज जी ने अपने शिष्यों में सेवा के संस्कार तो कूट-कूट कर भर दिए हैं। श्री गुरु रामदास महाराज जी ने इन जीवों के उद्धार के लिए श्री हरमंदिर साहिब की रचना की। उनके सिक्ख सेवकों ने अपने प्यारे गुरु के मंदिर को विश्व के मंदिरों में से स्वर्ण-जड़ित बनाने के लिए अपने शरीर के आभूषण उतारकर गुरु चरणों में न्यौछावर कर दिए। हजूर के मुख से ऐसा सुनते ही करनाल से भगत लॅभामल की धर्मपत्नी माता करतार कौर ने अपने हाथों में पहनी सोने की चूड़ियाँ उतारकर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के चरणों में भेंट कर दी। उसको देखकर करनाल से आई अन्य माताओं ने अपने-अपने आभूषण उतार कर गुरु चरणों में भेंट कर दिए और साधारण संगत ने भी गुरु ग्रन्थ साहिब के श्री चरणों में माया के ढेर लगा दिए। हजूर ने कथा समाप्ति के उपरांत गुरु के लंगर के खुले भण्डारे वितरित किए। इस प्रकार स्कूल के समस्त व्यय पूर्ण करने के लिए लगभग एक वर्ष की माया एकत्रित हो गई। पिछले समस्त कर्जे उतर गए। आगे के लिए हजूर ने आज्ञा की कि स्कूल के लिए किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े इसलिए अलौहरां गेट से सौणी की ओर जा रही मुख्य सड़क पर दुकानें बनाकर किराए पर चढ़ा दो ताकि उस धन से यह बेचारा अपना गुजारा करता हुआ किसी अन्य के अधीन न बने। बस आज्ञा की देर थी कि संगत ने दुकानें बनाने की सेवा आरम्भ कर दी। सबसे पहले महाराज जी की कृपा से 'पूरे' गाँव खोख कोटली ने छ: दुकानों की सेवा की। थूही गाँव से सरदार प्रीतम सिंह जी ने एक, संत स्वरूप सिंह जी थूही वालों ने एक, संगत अलौहरां वालों की ओर से एक और संगत नाभा की ओर से एक, आदि अन्य

संगत ने मिलकर कुल पैंतीस दुकानों की सेवा सम्पूर्ण कर दी अर्थात् स्कूल के पास अब पैंतीस दुकानें तैयार होकर किराए पर दे दी गई। बस-इस स्कूल को अपने प्रतिदिन के व्यय पूर्ण करने के लिए मानों स्थाई पेंशन लग गई अथवा यूँ समझो कि स्कूल अपने शरीर को लगे आर्थिक कंगाली के रोग से पूर्ण रूप से स्वास्थ्य हो गया। इस रोग की निवृत्ति के लिए इसने आध्यात्मिक वैद्य से औषधि की माँग की थी जो अन्तर्यामी ने रोग-निवृत्त करके पूरी कर दी। इसके बाद भी हजूर समय-समय अखण्ड पाठ साहिब कराकर इस बेचारे को खाद-खुराक देते रहे।

माया का अभाव तो सम्भवत: इसको कभी हुआ नहीं। हजूर के इस संसार-नाटक में विचरण करते यह हरा-भरा खुशहाल जीवन व्यतीत करता रहा, लेकिन हजूर की शरीर-लीला समाप्त करते ही इसकी देह पर भीतरी रोग ने आक्रमण बोल दिया जिसके साथ यह बेचारा अधरंग का रोगी होकर आजकल चारपाई पर पड़ा अपने कर्मों को रो रहा है। न इसके प्राण निकलते हैं, न रोग मुक्त होता है। काश! उसी समय आध्यात्मिक वैद्य से सारे रोगों की औषधि मांग ली जाती।

हरि दाता है, भिखारी नहीं

हरि परमात्मा में जहाँ दयालुता, कृपालुता, प्रासादिकता आदि अनेक गुण हैं, वहाँ एक अन्य गुण भी हैं—दातापन अर्थात् केवल देना। यह गुण जीव में कदापि नहीं होता। जीव में इसके विपरीत गुण होता है, केवल लेना। बस जीव एवं हरि में इतना ही अन्तर है।

यदि किसी जीव में दान-वृत्ति होने के कारण स्वभाव में देनापन हो भी तब भी उसके पीछे कुछ लेने की इच्छा और सूक्ष्म अहंकार छिपा होता है जो समय-समय पर प्रकट भी होता रहता है। यदि गुरु-कृपा द्वारा जीव के भीतर केवल देने का स्वभाव बन ताए तब जीव-जीव नहीं रह जाता। अपितु **हरि हरि जनु दुइ एकु है** की अवस्था घटित हो जाती है। इसको लक्ष्य रखकर ही गुरु-घर में दसवां भाग निकालने का सिद्धान्त बनाया गया है ताकि परमार्थ के प्रथम सोपान पर ही सिक्ख को यह सिखाया जाए कि केवल देना इसका स्वभाव है। फिर यह धीरे-धीरे **जीउ पिंड सब तेरी रासि** वाले सिद्धान्त को समझता हुआ आपा समर्पित कर दे। बस फिर जीवपन का अलग अस्तित्व मिट जाता है और इसके मिटते ही जन्म-मृत्यु आदि काल्पनिक दु:ख अपना बोरिया-बिस्तरा बाँधकर चले जाते हैं और मनुष्य शरीर धारण किया सफल हो जाता है। लेकिन यह कार्य है कठिन, क्योंकि जीव अहंकार का पुतला होने के कारण अपने अहं को नहीं त्यागता, बल्कि जीव और अहंकार एक ही वस्तु के दो नाम हैं। यदि अहंकार पूर्ण तौर पर नष्ट हो जाए तो जीव का अस्तित्व ही नहीं रहेगा, शेष एक अद्वैत वस्तु ही स्थिर रह जाएगी, हर प्रकार की द्वैत मिट जाएगी। इस आनंदमयी अवस्था में स्थित करने के लिए ही जीवों को सत्पुरुष बार-बार जाग्रत करते रहते हैं। कई विधियों, कौतुक दिखाकर जीवों को यह दृढ़ता कराते रहते हैं कि हरि अपने दातापन स्वभाव में सदैव स्थिर रहता है। कभी रंचमात्र भी अपने दातापन की स्थिति का त्यागकर जीवों वाली भिखारी वृत्ति अंगीकार नहीं करता। लेकिन जीव की अपनी वृत्ति भ्राँत होने के कारण सत्पुरुषों के जीवन पर भी कई बार शंका कर बैठता है कि सम्भवत: इनका भी कोई स्वार्थ है हमारे धन-पदार्थों से। बस यही जीवपन है और जन्म-मृत्यु आदि अनंत दु:खों में झोंकने वाली यही इसकी भूल है। प्रकाश को अंधकार मानना, जाग्रत को सोया हुआ समझना, राजा को रंक देखना, दाते को मंगता समझ लेना, स्वतंत्र मौजी को बंधन वाला समझ लेना आदि।

देखो—आज ऐसे ही किसी जीव की शंका निवृत्ति कर रहे हैं। हुआ यूँ कि महंत आत्मा सिंह जी की 1974 में ऋषिकेश में प्रथम पुण्य तिथि मनाई जा रही थी।

इस पुण्य तिथि पर विरक्त महाराज भी पहुँचे हुए थे और काफ़ी संख्या में सिंधी, पंजाबी संगत भी आई हुई थी। पुण्य तिथि की समाप्ति पर विरक्त महाराज जी का विचार होशियारपुर जाने का था। जब माता करतार कौर को इस बात का पता चला तो उसने अपने सुपुत्र अमरीक चन्द चावला को कहा कि हे पुत्र! तुम महाराज जी को अपनी कार में होशियारपुर छोड़कर आ। अमरीक चन्द बोला—माँ! मैं जो पैसे साथ लेकर आया था कुछ क्षेत्र (लंगर) और कुछ इधर-उधर सब खर्च कर दिए हैं और यात्रा में पैसा बहुत आवश्यक है।

माता ने अपनी ज़ेब में से नोटों की गट्ठी निकाली और बिना गिने ही अमरीक चन्द को दे दिए। अमरीक चन्द जी ने पैसे जेब में डालकर हज़ूर के चरणों में प्रार्थना की—महाराज! होशियारपुर आप जी को मैं छोड़कर आऊँगा—जब जाना हो आदेश दे देना। हज़ूर सुनकर थोड़ा मुस्कुराए मानो कह रहे हैं—हमें तुम छोड़कर आओगे? लोक-परलोक के स्वामी ने आज्ञा दी—हमारा सायं के पाँच बजे चलने का विचार है। तुम अपना देख लो। अमरीक चन्द जी बोले महाराज! पाँच बजे चल पड़ेंगे। जब होशियारपुर को चलने के लिए सायं को पाँच बजे हज़ूर गाड़ी मे सवार हुए—तो किसी प्रेमी ने आपके चरणों में मिठाई का डिब्बा भेंट किया। अमरीक चन्द ने चरणों में से डिब्बा उठाकर गाड़ी में आगे रख लिया। हज़ूर ने हुक्म किया—भाई पाउँटा साहिब की ओर चल—आज रात्रि दशमेश पिता के चरणों में वहीं व्यतीत करेंगे। जब चलने लगे तो एक संत हज़ूर ने और बैठा लिया। थोड़ा अंधेरा होते ही पाउंटा साहिब पहुँच गए। दरबार साहिब नमस्कार करने के उपरान्त महाराज जी ने हुक्म किया, चलो लंगर में से प्रसाद छकते हैं। तीन व्यक्ति जब लंगर में जाकर प्रसाद छकने लगे, तो दाल में मिर्च बहुत अधिक थी। हज़ूर ने दाल वाला बर्तन चिप्पी के जल के साथ भर लिया और उँगुली के साथ हिलाकर सारा पी लिया। उधर दूसरे संत एवं चावला जी ने भी जैसे-तैसे दाल खा तो ली लेकिन मुख एवं पेट से मिर्च सहन नहीं हो रही थी। सी-सी करते बाहर गाड़ी में आ गए। हज़ूर एक चारपाई पर बैठ गए और चावला जी ने प्रार्थना की—महाराज दाल में मिर्च बहुत अधिक थी जिसके कारण मुख एवं पेट में जलन हो रही है। आप जी का आदेश हो तो मैं बाहर दुकान से अच्छा मीठा डलवाकर गर्म-गर्म दूध ले आऊँ। दूध पीने से मिर्च का प्रभाव थोड़ा कम हो जाएगा। हज़ूर बोले—जो प्रारब्ध में लिखा था, मिल गया अब दूध वाला विचार छोड़ दे। थोड़ी देर पश्चात् चावला ने फिर प्रार्थना की—महाराज यदि आज्ञा हो जाए तो दूध ले आऊँ। हज़ूर बोले—तुम शरीर से अपना ध्यान हटाकर कलगीधर पातशाह के चरणों में मन को जोड़कर देख—यहाँ बैठकर उन्होंने कौन-कौन से कौतुक किए हैं। चावला जी थोड़ी देर तो रुके फिर मुख एवं पेट में मिर्चों ने युद्ध मचा रखा था इसलिए फिर प्रार्थना की कि महाराज कृपा करो—थोड़ा-थोड़ा दूध छक लें। आपकी आज्ञा हो जाए तो मैं बाहर दुकान से ले आऊँ? हज़ूर बोले—भाई जैसी तेरी इच्छा। चावला जी प्रसन्न होकर बाहर दूध लेने के लिए गए तो एक-एक दुकान पर पूछा—लेकिन किसी के पास दूध न मिला। नज़दीक के बाज़ार में खोजकर अंततः मुरझाया हुआ—रिक्त हस्त—महाराज जी के चरणों में पहुँच गया। प्रार्थना की—महाराज! क्या कौतुक किया कोई एक छटांक दूध देने के लिए तैयार नहीं हुआ। हज़ूर बोले—गाड़ी में जो डिब्बा पड़ा था—उसमें देख क्या है? चावला ने खोलकर देखा, महाराज! मिठाई है। हज़ूर बोले—डाल चिप्पी में इसको। सारा डिब्बा चिप्पी वाले पानी में घोलकर चावला को पूछा—बता यह क्या बन गया? चावला बोला—महाराज—दूध! हज़ूर ने आज्ञा की—ला गिलास फिर पिएँ। तीनों ने तीन गिलास में डालकर पी लिया।

इस प्रकार रात्रि कलगीधर पातशाह के चरणों में व्यतीत करके प्रात: पंजाब की ओर प्रस्थान कर दिया। वर्षा ऋतु होने के कारण सारे नदी नाले चढ़ाव पर थे। पाउँटा साहिब से जगाधरी के मध्य में एक दो नदियाँ सड़क के ऊपर से निकलती हैं। पहाड़ में अधिक वर्षा होने के कारण इसमें भी पानी बहुत तेज़ी से बह रहा है। यह होता तो एक दो घण्टे के लिए ही है। चावला जी ने ध्यान नहीं दिया, गाड़ी बिना देखे तेज़ी से बह रही नदी में डाल दी। सामने नदी के दूसरे किनारे खड़ा एक ट्रक वाला, कार को रोकने के लिए हाथ से संकेत किए जा रहा है, लेकिन चावला ने उधर ध्यान न किया। जब सामने देखा तो ट्रक वाले को संकेत करते देखा, लेकिन अब क्या हो सकता है। गाड़ी में खिड़कियों से पानी आना आरम्भ हो गया। अब एक सैकण्ड गाड़ी का रुकना खतरे से खाली नहीं। पानी की धार इतनी तेज़ थी कि कार तो क्या ट्रक वाले भी देखकर भयभीत हो रहे हैं। अभी कल ही तो उन्होंने एक फौज़ी ट्रक को इसी नदी के मार का शिकार होते देखा था, जिसका एक भी व्यक्ति जीवित नहीं मिला और ट्रक भी कहीं उलटा हुआ विभाग की रेती में फँसा हुआ मिला था। अब कार नदी के बिल्कुल मंझधार में पहुँच चुकी है। जितना पानी पीछे रह गया है, उतना आगे भी है। देखो! प्रभु का हुक्म, कार बन्द हो गई। चावला भी अपनी लापरवाही और पानी का भयानक रूप देख-देखकर भयभीत हो रहा है। विचार-विमर्श के अब समस्त साधन समाप्त हो गए, बुद्धि ने हाथ खड़े कर दिए। गाड़ी मंझधार में बंद हुई खड़ी है। पानी की तेज़ लहरें गाड़ी के टायर उठाने के लिए जोर लगा रही हैं, लेकिन कोई ऐसी शक्ति ऐसा करने से उसे बार-बार रोक रही है, क्योंकि कार में वह लोक-परलोक का मालिक बैठा हुआ है जिसके बारे में फरमान है—

जलि नही डूबै तसकरु नही लेवै भाहि व साकै जाले॥

(धनासरी म० ५, पृष्ठ ६७९)

देखो अब लोक-परलोक का स्वामी क्या कौतुक कर रहा है। जिनको कभी भ्रम था हजूर को हम अपनी गाड़ी में होशियारपुर छोड़कर आएँगे, लोक-परलोक के स्वामी उनकी गाड़ी को धक्का लगाकर प्रत्यक्ष दिखाई दे रही मृत्यु रूपी नदी की मंझधार में से बाहर निकाल रहा है। महाराज नीचे उतरे दूसरे संत को भी उतार लिया और चावला को बोले—तुम अपना नियंत्रक (Steering) पकड़कर बीच में ही बैठे रहो। दोनों महापुरुषों ने धक्का लगाकर गाड़ी बाहर कर दी। ट्रक वाले देखकर हैरान हुए। कल की फौजी ट्रक वाली घटना सुनाई। तीनों ने अब अपने वस्त्र निकालकर सुखाए। चावला को अब एक चिंता ने घेर लिया कि गाड़ी के कार्बोरेटर में पानी चला गया और करंट क्रम फेल हो गया। समीप कोई कार्यशाला नहीं है—अब क्या किया जाए। इस चिंता में बुद्धि में कोई प्रकाश नहीं। चाहे मृत्यु के मुख से बचते प्रत्यक्ष देखा है कुछ मिनट पहले लेकिन फिर भी मन में विश्वास नहीं आ रहा है। अचानक आज्ञा हुई—अमरीक! चल गाड़ी चला चलें। चावला ने बैठकर चलाई और गाड़ी चल पड़ी। अब सारे बैठकर आगे को चल पड़े। जगाधरी, अम्बाला, राजपुरा और सरहिंद आदि कई नगर निकल गए। इतने में दोपहर का समय आ गया और प्रात: के चले थे अत: भूख ने भी संकेत देना आरम्भ कर दिया, लेकिन हजूर ने कहीं रुकने अथवा लंगर आदि लेने का कोई संकेत नहीं किया। अंतत: सरहिंद से आगे भाखड़ा नहर आ गई। नहर की ढलान में चावला ने गाड़ी रोककर प्रार्थना की—महाराज! वह एक छोटा-सा ढाबा है, यह है तो चाहे छोटा ही, लेकिन भोजन बहुत बढ़िया बनाता है, क्योंकि मैं कई बार यहाँ से भोजन खाकर निकला हूँ। आपका हुक्म हो तो लंगर छक लें। हजूर बोले—क्या छकना है? चल होशियारपुर पहुँचें। चावला ने प्रार्थना की, महाराज प्रात: के चले हैं, भूख लगी है कृपा

करो लंगर छक लें। हजूर के तीसरी बार मना करने पर चावला सोच में पड़ गया कि मैंने तो माता से पैसे माँगकर लिए थे कि मार्ग में व्यय की आवश्यकता पड़ेगी, लेकिन कल के महाराज जी एक पैसा भी मेरी जेब में से व्यय नहीं करने दे रहे। फिर नदी के जल वाली लीला देखी। ऐसी लीला दिखाकर कहीं कोई मेरे अहंकार सहित किए संकल्प को उत्तर तो नहीं दे रहे? अब उसको एक तरीका सूझा—हजूर से लंगर छकने के लिए 'हाँ' कराने का, क्योंकि वह जानता था कि महाराज जी सदैव निर्धन की सहायता में तत्पर रहते हैं इसलिए प्रार्थना की महाराज! यह ढाबा वाला व्यक्ति अत्यंत निर्धन है लेकिन है बड़ा ईमानदार। इसलिए लंगर बहुत बढ़िया बनाता है। इस प्रकार दो कार्य हो जाएँगे। हम लंगर छक लेंगे और इस गरीब के चार पैसे बन जाएँगे। अब हजूर अपनी मौज में बोले—अच्छा भाई तेरी इच्छा! चावला बड़े उत्साह के साथ उतरकर गया ढाबे वाले के पास और कहा कि तीन व्यक्तियों का भोजन शीघ्र ही तैयार कर। ढाबा वाला बोला—रोटी नहीं बन सकती, क्योंकि मेरे पास आटा नहीं है। चावला ने कहा ले ये पैसे जा दौड़कर समीप के गाँव से आटा ले आ। लड़का बोला, मैं ढाबा अकेला छोड़कर नहीं जा सकता। चावला ने पूछा यहाँ पहले एक बड़ी आयु का व्यक्ति होता था, मैंने उसके पास कई बार खाना खाया है—वह कहाँ गया? लड़के ने बताया कि मेरे पिता जी हैं, लेकिन आज वे कहीं बाहर गए हैं—मुझे यहाँ छोड़कर। उधर महाराज कार में से उतरकर इधर-उधर घूमते फिरते चावला की हालत देख रहे हैं। चावला ने सोचा कि यह बात तो रात्रि के दूध वाली हो गई। शायद कोई परीक्षा है जिसमें मैं कल का ही असफल हो रहा हूँ। इन संकल्पों विकल्पों में डूबा चावला जी का मन अब कोई अन्य विकल्प न देखकर हजूर के चरणों में वापिस आ गया और समस्त निराशा वाली बात बताई। हजूर बोले कोई नहीं—यह हमारा संत समीप के गाँव से मधुकरी करके लंगर ले आएगा, वह छक लेंगे। संत को उस गाँव की ओर भेज दिया। इतने में सड़क और नहर के कोने वाले खेत में से हजूर को भ्रमण करते देख एक लड़का दौड़ा आया। चरणों में नमस्कार करके प्रार्थना की—महाराज आप एक बार हमारे कुएँ पर रात्रि विश्राम करके गए थे। उस दिन से हमारी फसल दुगुनी होती है। आप कृपा करो, अपने पवित्र चरण हमारे घर में डालकर लंगर छक लो। इतने में उस लड़के का पिता भी खेत में से आ गया। चरणों पर गिरकर वही बात उसने की—महाराज! जब आप हमारे कुएँ पर रात्रि भर ठहरकर गए थे उसके पश्चात् हमारे ऊपर आपकी बहुत कृपा हुई है। फसल बहुत होती है, प्रत्येक दृष्टि से सुखी हैं, आप कृपा करो, घर चलकर लंगर छको। हजूर बोले—लंगर तो हमारा एक संत मधुकरी करने गया है—इसलिए घर तो हम नहीं चलेंगे। हाँ—तुम्हारे कुएँ पर चलते हैं—वहाँ बैठकर लंगर छक लेंगे। ज़मींदार ने अपने लड़के को संकेत करके घर की ओर दौड़ाया कि जल्दी से लंगर ले आ। हजूर चावला को साथ लेकर सड़क के नीचे कुएँ पर आ गए जो सड़क के समीप ही था।* थोड़े समय पश्चात् संत मधुकरी लेकर आ गया। उधर उस ज़मींदार का लड़का भी घर से लंगर लेकर आ गया। हजूर ने आज्ञा की कि दोनों ओर से आए लंगर को इकट्ठा करके मिला लो। प्रेमियों ने आज्ञा मानकर लंगर को मिला दिया और फिर सभी ने बैठकर छका। उपरांत होशियारपुर की ओर प्रस्थान किया। अब चावला जी कार भी चला रहे हैं—साथ ही हजूर के दिव्य कौतुक देख-देखकर मन में ख्याल उठ रहे हैं कि यह मेरा भ्रम था कि मैं इन पर कोई खर्च कर सकता हूँ—ये तो त्रिलोकी नाथ हैं—इनका स्वभाव केवल देना है, लेना नहीं। जहाँ एक रात्रि विश्राम कर गए—बिना माँगे वारे-न्यारे कर गए। एक मैं क्या, संसार की कोई भी

* *एक बार का जिक्र है कि जब चावला जी आदि प्रेमियों को ढूँढने के पश्चात् फतेहगढ़ अरदास करने के उपरान्त महाराज जी मिले थे— उस समय इस कुएँ पर ही रात काटकर गए थे।*

शक्ति नहीं जो इनको कुछ दे सके। ये शहनशाह हैं, भिखारी नहीं। ये दाता, मंगते नहीं। यह सोचते ही सारी यात्रा समाप्त हो गई—और होशियारपुर पहुँच गए।

संत गोपाल सिंह जी का सच्चखण्ड प्रयाण

मई 1976 ई० में जब संत गोपाल सिंह जी करनाल कुटिया ठहरे हुए थे। आज से लगभग एक वर्ष पूर्व आपका अधरंग का हल्का सा आक्रमण होने के कारण शरीर कुछ निर्बल तो हो गया था, लेकिन आप हठपूर्वक संगत में विचरण करते रहते थे। एक दिन ठेकेदार कुंदन सिंह शेरपुर गरिंड (होशियारपुर) वाले अपने गाँव साथ ले जाने के लिए आए। आप उनकी प्रार्थना स्वीकार करके जाने के लिए तैयार हो गए। करनाल की संगत ने प्रार्थना की, महाराज! आपका शरीर निरोगी नहीं है—यहाँ उपचार ठीक हो रहा है इसलिए आप कहीं और न जाओ। आप कहने लगे कि शरीर तो कई वर्षों से ऐसा ही चल रहा है, अपने आप ठीक हो जाएगा, इसलिए हमने शेरपुर गरिंड जाने का संकल्प कर लिया है। बस अरदास करके ठेकेदार कुंदन सिंह के साथ शेरपुर गरिंड पहुँच गए। वहाँ जाकर लगभग बीस दिनों के पश्चात् कृष्ण गोपाल जी गुलाटी प्रार्थना करके होशियारपुर ले गए। यहाँ आकर दो या तीन दिनों पश्चात् अधरंग का आक्रमण फिर हुआ। कृष्ण गोपाल ने करनाल टेलीफोन किया—आगे से संगत ने कहा कि जल्दी से जल्दी करनाल ले आओ। कृष्ण गोपाल ने होशियारपुर के एक प्रसिद्ध डॉक्टर मोहन सिंह से जाँच कराई, लेकिन उसने जवाब दे दिया। फिर अन्य कोई विकल्प न देखकर कृष्ण गोपाल शीघ्रातिशीघ्र महाराज जी को करनाल ले आया। संगत ने आते ही सरकारी अस्पताल में दाखिल करवा दिया।

हँसराज जी छाबड़ा आदि संगत हर समय आपके पास रहकर सेवा करती रही और कुछ संगत समीप बैठकर लगातार सुखमनी साहिब का पाठ करती रही, लेकिन शरीर की हालत दिनों-दिन फूटे घड़े से जल रिसने की भाँति क्षीण होती गई। स्वयं संत नीम बेहोशी में चारपाई पर पड़े रहते, लेकिन कभी-कभी उसी तरह नेत्र बन्द कर गुरुदेव-गुरुदेव की धीमी आवाज़ मुख से सुनाई देती, क्योंकि अधरंग के कारण पूरा शब्द तो कोई भी उच्चरित नहीं होता था, परन्तु फिर भी संगत के वृद्ध लोग यह समझते थे कि आपका ध्यान पूज्य विरक्त महाराज जी के चरणों में जुड़ा हुआ है इसलिए जब भी कुछ बोलने का प्रयत्न करते तो सहज ही जिह्वा से गुरुदेव-गुरुदेव शब्द ही उच्चरित होता है।

सरदार सतपाल सिंह गुलाटी एक दिन अपने किसी कार्य से ऋषिकेश गया। उसने पूज्य विरक्त महाराज जी को बताया, महाराज! संत गोपाल सिंह जी का शरीर अत्यंत रोगग्रस्त है। कई दिनों से अस्पताल नीम बेहोशी की हालत में पड़े हैं, लेकिन कभी-कभी जब बोलने का प्रयत्न करते हैं तो मंद आवाज़ में कुछ इस प्रकार सुनाई देता है कि जैसे आप जी को स्मरण कर रहे हों। हज़ूर दूसरे दिन ही ऋषिकेश से चलकर करनाल सीधे अस्पताल पहुँचे। जब संत गोपाल सिंह जी को बताया गया कि महाराज जी आ गए हैं तो आपने नेत्र खोलकर दर्शन करने की चेष्टा की, लेकिन अधरंग का आक्रमण तीव होने के कारण नेत्र पूरी तरह खोल नहीं पा रहे। थोड़े बहुत खोलकर जब हज़ूर के पवित्र चेहरे पर दृष्टि डाली तो नयनों में जल भर आया। हज़ूर थोड़ी देर रुकने के पश्चात् वापिस कुटिया आ गए। संगत ने अस्पताल में उसी प्रकार सेवा और पाठ का प्रवाह जारी रखा, लेकिन संत गोपाल सिंह अब शान्त हो गए थे जैसे कोई व्याकुल कर रही पिपासा शान्त हो गई हो। पवित्र मुख से अब कोई शब्द नहीं बोलते, नयन नहीं खोलते मानों गहरी निद्रा में शयन कर रहे हों। इस प्रकार चार-पाँच दिन व्यतीत हो गए।

आज अलौकिक दाता सम्भवत: आखिरी मोहर अंकित करने चला है इसलिए अपनी मौज में कुटिया से अस्पताल पहुँच गए, लेकिन संत गोपाल सिंह उस दिन से आँख नहीं खोल रहे, जिस दिन से आप पहले आए थे। सम्भवत: नयन अब किसी भी दृश्य को देखने की चाह नहीं रखते अथवा दाता उस दिन कोई ऐसी दवा दे गया जिसकी मस्ती अभी तक नहीं उतर रही। इस रहस्य को वह परमेश्वर ही जानता है। हजूर ने संत गोपाल सिंह जी के पवित्र चेहरे पर हाथ फेरा। उसी समय संत गोपाल सिंह जी की एक आँख थोड़ी खुली और जल की चार बूँदें गिराकर फिर बन्द हो गई। हजूर वहाँ से चलकर वापिस कुटिया पहुँचे ही थे, तत्काल ही संदेश आ गया कि संत गोपाल सिंह जी अपना पाँच भौतिक शरीर त्याग गए हैं। हजूर ने आज्ञा दी— शरीर छोटी कुटिया ले आओ। संगत ने अस्पताल से शरीर छोटी कुटिया लाकर समीप सुखमनी साहिब का पाठ आरम्भ कर दिया। पूज्य विरक्त महाराज जी की आज्ञानुसार समस्त तैयारी करके छोटी कुटिया ही संस्कार कर दिया। महाराज जी ने आज्ञा की कि गोपाल सिंह के सिक्खी संस्कार बहुत दृढ़ थे इसलिए अस्थियाँ चुनकर दिलीप सिंह को दो-यह कीरतपुर साहिब प्रवाहित करेगा। दसवें दिन श्री अखण्ड पाठ साहिब के भोग उपरांत गुरु का लंगर वितरित किया गया।*

रिवालसर मनीकरन की यात्रा

एक समय की बात है कि पूज्य विरक्त महाराज जी दर्शन लाल चावला, भगत लॅभामल और टेक सिंह गुलाटी को साथ लेकर रिवालसर मनीकरन की यात्रा को चले। प्रात: करनाल से चलकर कार द्वारा सायं को लगभग पाँच बजे सुंदर नगर जा पहुँचे। अत्यंत रमणीक और सुहावने मौसम वाला यह सुन्दर नगर कीरतपुर, कुल्लू-मनाली सड़क पर कीरतपुर से लगभग एक सौ कि०मी० पहाड़ में और ऐतिहासिक नगर साकेत मण्डी से लगभग तीस कि०मी० पीछे बड़े रमणीक स्थान पर स्थित है। शायद इसलिए इसका नाम सुन्दर नगर रखा गया है। यहाँ ब्यास, सतलुज का सम्पर्क होता है जो आगे जाकर भाखड़ा बाँध का रूप धारण कर लेता है। इस सुन्दर नगर शहर में हजूर का एक चरण सेवक हरबंस लाल बावा जो वास्तव में तो करनाल शहर का ही है, लेकिन किसी समय इस प्रेमी ने हजूर से आशीर्वाद लेकर यहाँ दाँत चिकित्सक की दुकान आरम्भ की थी, उसकी दुकान पर पहुँच गए। उसी प्रेमी की दुकान का पता शायद करनाल से ही लेकर आए थे, इसलिए आसानी से आ पहुँचे। इधर डॉक्टर हरबंस लाल जी ने कभी सपने में भी नहीं सोचा कि हजूर कभी सुन्दर नगर आएँगे, पर उनकी याद मन में सदैव बनाए रखता था, क्योंकि उसकी दुकान जिस तरह से सफलता के साथ चली थी और इलाके में मान आदर था, यह सब हजूर की कृपा ही समझता था, क्योंकि काम आरम्भ करने से पूर्व इसने हजूर से आज्ञा माँगी थी। आपने आदेश दिया था कि पहली पउड़ी (श्लोक) का पाँच बार पाठ करके काम शुरू कर लेना, गुरु नानक भली करेंगे। प्रेमी ने पूछा किस दिन कार्य आरम्भ करूँ। हुक्म हुआ सारे दिन परमेश्वर के हैं जिस दिन तुम्हारा मन करे आरम्भ कर लेना। उपरोक्त वचन करके प्रसाद बिखरा दिया। बस प्रेमी अपनी सारी सफलता का रहस्य इसमें ही समझता था, इसलिए हजूर का दुकान पर आना देखकर

* *संत गोपाल सिंह का एक प्रेमी सेवक सरदार हरनेक सिंह तुरमरी वाला अपने दफ़्तर में बैठा कार्य कर रहा था। उसको किसी अज्ञात व्यक्ति ने फोन पर बताया कि संत गोपाल सिंह जी का देहावसान हो गया है, अमुक दिन उनकी याद में भोग पड़ेगा। हरनेक सिंह फोन सुनते ही करनाल कुटिया पहुँचा तो पता लगा कि संत जी वास्तव में ही शरीर छोड़ गए हैं और कल उनकी अंतिम याद में भोग पड़ना है, लेकिन फोन किसने किया, यह रहस्य आज तक रहस्य ही है। खोज करने पर भी इसका पता नहीं लगा।*

बड़ा प्रसन्न हुआ। डॉक्टर बावा की राजनीतिक पहुँच बहुत अच्छी थी इसलिए इसने सोचा कि सरकारी मंत्री विश्राम गृह में ठहरते हैं, लेकिन आज तो दरगाह के बसीठ आए हैं क्यों न उन्हें विश्राम गृह में ठहराया जाए। हजूर बोले—भाई! यहाँ समीप में यदि किसी महात्मा की कुटिया है—हम तो वहाँ ठहर जाएँगे। प्रार्थना की—महाराज मेरी श्रद्धा है कि आप विश्राम गृह ठहरो—वहाँ लंगर आदि का सारा प्रबन्ध है। हजूर बोले—लंगर हमारे पास है भाई! हमें और लंगर की आवश्यकता नहीं। खैर रात्रि विश्राम गृह में ही ठहर गए। प्राय: पता लगने पर कि कोई महात्मा विश्राम गृह में रुके हुए हैं—दो सरकारी अफ़सर हजूर के दर्शन करने आए जिनमें से एक कार्यकारी अभियन्ता था और दूसरा सर्कल ड्राफ़्टसमैन। दोनों प्रेमी नमस्कार करके चरणों में बैठ गए। प्रतीत होता है कि ये दोनों प्रेमी परमार्थ में कुछ रुचि रखते थे। कुछ पारमार्थिक विचार-विमर्श करने के पश्चात् प्रार्थना की महाराज! मन नाम में नहीं लगता कोई युक्ति बताओ जिससे मन स्थिर हो जाए। हजूर ने हुक्म किया अपनी आँखें बन्द करके अपने इष्ट का ध्यान करो। अफ़सर ने ऐसा किया। थोड़ी देर बाद हजूर ने पूछा—बता भाई! ध्यान लगा कि नहीं? अफ़सर बोला—महाराज! बड़ा आनंद आया—लेकिन यह तो आप जी की कृपा के कारण था। यह सदैव तो नहीं बना रहता। हजूर बोले—तुम स्कूल में कितने वर्ष पढ़े हो? महाराज काफ़ी वर्ष लगे थे। हजूर ने पूछा—इतने वर्ष पढ़ाई की क्या आवश्यकता थी। तुम सीधे ही क्यों न अभियन्ता बन गए? जैसे पहली से आरम्भ करके कॉलेज तक कितने वर्ष पढ़ाई करनी पड़ी फिर जाकर सुख की नौकरी प्राप्त हुई। इसी तरह इधर भी ध्यान-सिमरन करते-करते मन लगना आरम्भ हो जाता है। यदि कोई कहे कि मैं पहले ही दिन मंजिल पर पहुँच जाऊँ तो उसका यह चिंतन निराधार है। धीरे-धीरे प्रेम और विश्वास के साथ साधना करते मन सहज-अवस्था में आना आरम्भ हो जाता है, बस-सावधान होकर लगे रहो। दोनों अफ़सरों को उपरोक्त उपदेश और कुछ अनुभूति का अनुभव कराकर अब हजूर ने आगे जाने के लिए प्रस्थान की तैयारी की। डॉक्टर ने प्रार्थना की—महाराज हुक्म हो तो मैं भी साथ चलूँ। हजूर बोले—भाई बड़ी खुशी के साथ डॉक्टर दुकान से अपना बैग लाने के लिए गया, लेकिन मन में एक संकल्प उठना आरम्भ हो गया कि कल किसी को दाँतों के लिए समय दिया था। वह काम भी बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिस लड़की के दाँतों का काम करना है, उसका थोड़े दिनों में विवाह है। तभी तो उसके माता-पिता ने कल वचन लिया था कि पैसे जितने मर्ज़ी ले लो, लेकिन अमुक दिन के पश्चात् लड़की ने घर से बाहर नहीं निकलना इसलिए उस दिन से पहले दाँत ठीक कर दो। उनको समय भी आज का दिया हुआ है और इधर गुरुदेव भी रोज़-रोज़ नहीं आएँगे—इसलिए दो दिन उनके साथ रहना भी आवश्यक है। खैर—डॉक्टर ने पड़ोसी दुकान वाले को कह दिया कि अमुक व्यक्ति यहाँ आएँगे। उनको कह देना कि आज तो मैं अपने गुरुदेव के साथ जा रहा हूँ फिर आकर उनका काम करूँगा। यदि उन्होंने दुकान पर नहीं आना होगा तो मैं विवाह से पूर्व उनके घर जाकर काम कर आऊँगा इसलिए कोई चिंता न करें। डॉक्टर बैग लेकर विश्राम गृह पहुँच गया—हजूर के चरणों में। उधर प्रतीक्षा हो रही थी—इसलिए डॉक्टर ने बैग जल्दी-जल्दी कार में रख दिया। हजूर ने हुक्म किया—भाई! अरदास करो। अरदास करने के उपरांत अन्तर्यामी ने हुक्म किया कि संतरों की पेटी जो गाड़ी में पड़ी है उसे नीचे उतार दो—डॉक्टर यहीं बाँट देगा। डॉक्टर ने प्रार्थना की महाराज! मैं तो आपके साथ ही चलूँगा, इसलिए बैग भी कार में रख लिया है। हजूर बोले—न भाई! तुम अपना काम यहीं संभालो—हम वापसी पर तुम्हें फिर मिलकर जाएँगे। डॉक्टर को बहुत आश्चर्य हुआ कि हजूर मेरे संकल्पों के भी साक्षी हैं। खैर अब आगे को प्रस्थान किया। दशमेश पिता की पावन धूलि द्वारा उपकृत हुए रिवालसर एवं साकेत मण्डी आदि स्थानों के दर्शन दीदार

करते सायं को मनीकरन जा पहुँचे। यहाँ रात्रि विश्राम करके दर्शन आदि किए और गरम जल में स्नान किया। उपरान्त ब्रह्ममुहूर्त वापसी की और प्रस्थान कर लगभग दस बजे सुन्दर नगर पहुँच गए जहाँ प्रेमी को कल वचन दिया था कि वापसी पर मिलेंगे। संदेश प्राप्त होते ही डॉक्टर जी घर पहुँच गए, आगे घर वाले प्रेमी चाय आदि छका रहे थे। हजूर ने आज्ञा की—तुम्हें वचन देने के कारण रुकना पड़ा नहीं तो हमने आगे जाना था। इस प्रकार वचन करके हजूर जाने के लिए उठ खड़े हुए। कार की ओर जाते-जाते डॉक्टर ने प्रार्थना की—महाराज! नाम देने की कृपा करो। हजूर ने पूछा जाप करेगा? हाँ—महाराज आपकी कृपा से अवश्य जाप करूँगा। महाराज ऊँचे स्थान से नीचे स्थान की ओर सीढ़ी उतर रहे थे, साथ-साथ डॉक्टर भी आ रहा था। आप जी ने चलते-चलते ही हुक्म किया—कह सतिनाम! सतिनाम!! इस प्रकार पाँच बार कहकर हुक्म किया—इस नाम को कभी छोड़ना नहीं और साथ में ध्यान की युक्ति भी बताई। इस प्रकार प्रेमी डॉक्टर को उपदेश करके हजूर बहती नदी की भाँति मैदानी क्षेत्र की ओर चल पड़े।

यमुना तट पर गुरुद्वारा साहिब

ज़िला करनाल नगर से पैंतीस कि०मी० दूर पूर्व की ओर यमुना के तट पर एक गाँव है—'नबीयाबाद'। इस गाँव में मुसलमान और शिकलीगर भाइयों की आबादी अधिक है। पच्चीस के करीब जट्ट सरदारों के घर हैं जिनमें अधिकतर डबरी और कुराली आदि गाँवों से भूमि खरीदकर बसे हैं। वर्णन 1978 के पास का है जब यहाँ के कुछ निवासी सुच्चा सिंह डबरी, अंग्रेज़ सिंह और जोगिंदर सिंह आदि प्रेमियों ने 'नबीयाबाद' अपने डेरे श्री अखण्ड पाठ साहिब कराने के लिए हजूर के चरणों में प्रार्थना की। आपने प्रार्थना स्वीकार करके तिथि दे दी और निश्चित दिन पर प्रेमियों के साथ उस गाँव पहुँच गए। भोग और कथा की समाप्ति पर और लंगर छकने के उपरान्त प्रेमियों ने एकत्रित होकर प्रार्थना की महाराज! आप कृपा करो कि यहाँ गुरुद्वारा साहिब बन जाए। हजूर बोले—बहुत अच्छा है। यमुना का तट कितना सुन्दर है। इस स्थान पर गुरु साहिब का स्थान बना लो। मिल जुलकर सेवा करो, गुरुवाणी पढ़ो आदि वचन करके आप करनाल कुटिया शोभायमान हुए। बाद में संगत ने विचार-विमर्श करके यमुना तट की बजाए अपने घरों के पास ही कड़ाह प्रसाद बनाकर गुरुद्वारा साहिब की नींव रख ली। आधार शिला समागम के पश्चात् कड़ाह प्रसाद लेकर हजूर के पास करनाल कुटिया पहुँचे। हजूर ने पूछा—भाई किस खुशी में कड़ाह प्रसाद लेकर आए हो? महाराज आपने कृपा की—आज गुरुद्वारा साहिब की आधारशिला रखी है। अरदास करने के लिए कड़ाह प्रसाद बनाया था वह आपके लिए लेकर आए हैं। हजूर ने पूछा—कहाँ रखी है? महाराज! डेरे के समीप। तुम्हें कहा था—यमुना के किनारे बनाने के लिए। महाराज वह कुछ दूर पड़ता था, इसलिए घरों के समीप बनाने का विचार करके कार्य आरम्भ किया है। महाराज सुनकर कुछ समय के लिए चुप हो गए। फिर बोले, अच्छा परमेश्वर का हुक्म। गुरुद्वारा साहिब तो कुछ समय में बनकर तैयार हो गया लेकिन दैवयोग से कुछ वर्षों पश्चात् यमुना ने जब बहना आरम्भ किया जो जमीन के अनेक एकड़ काटती और कई मकानों को गिराती कोई डेढ़ कि०मी० पीछे हटकर गुरुद्वारा साहिब के पास आकर रुकी। शायद इसकी आगे बढ़ने की सामर्थ्य नहीं, क्योंकि अब आगे **साध वचन अटलाधा** वाला शक्तिशाली बाँध बन गया। वर्तमान समय तक यह गुरुद्वारा साहिब के साथ बहती है और आगे बढ़ना रूकी हुई है। प्रेमी सोच रहे हैं कि यदि हजूर का संकेत समझकर गुरुद्वारा साहिब यमुना के किनारे बना देते तो इतनी भूमि की हानि न होती।

गुरुद्वारा साहिब दधाल

वर्णन 1978-79 के आस-पास का है जब आप 'उच्ची दौद' टीले पर सुशोभित हुए गुरु नानक के घर से प्राप्त अमृत जल की असीम निधियाँ बरसा रहे हैं। दूर-पास से प्रेमी संगत आती-जाती रहती है। पूरी-पूरी रात किसी ग्रन्थ का विचार होता रहता है, गुरु का लंगर व मिठाई, फल आदि निरंतर आबंटित होते रहते हैं। उच्ची दौद, सीहाँ दौद, मालो दौद आदि गाँवों के प्रेमी हजूर से तिथियाँ निश्चित कराकर घरों में अखण्ड पाठ साहिब कराते और आप भोग पर पहुँचकर कथा करते हैं। कई-कई घरों में प्रेमियों की प्रार्थनाएँ और उसके अनुरूप वे अपनी चरणधूलि से उपकृत करते हैं जिसकी याचना अठसठ तीर्थ भी प्रायः करते रहते हैं। तीर्थों को तो शायद यह चरणधूलि कई-कई वर्षों के पश्चात् किसी कुंभ आदि समय पर ही प्राप्त होती है, लेकिन इन गाँवों के लोगों को तो लगभग एक मास से यह पवित्र धूलि अनायास ही प्राप्त है, लेकिन ऐसे लग रहा है कि ये बेचारे इस धूलि की महिमा से पूरी तरह से परिचित नहीं हैं। खैर दाता मेघ का रूप धारण करके चौबीस घंटे वर्षा कर रहा है। नीचे खेतों वाले दूर-समीप के भाग्यवान् किसान वर्षा का अमृत जल एकत्रित करके अपनी खेती को हरी-भरी करने में संलग्न हैं। कई वैद्य लोग इस वर्ष को औषधि रूप जानकर सेवन कर रहे हैं। कई कद्रदान बरनाला जैसे दूर-दूर स्थानों से आकर इस पवित्र जल को संभाल कर घरों को ले जाते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि जिस घर में यह जल हो वह घर सदैव पवित्र रहता है। इस प्रकार अमृत वर्षा हमेशा हो रही है और सौभाग्यशाली लोग लाभ भी उठा रहे हैं।

एक दिन दधाल गाँव से कुछ प्रेमी आए जो कि दौद से तीन कि०मी० की दूरी पर स्थित है। प्रार्थना की—महाराज! गाँव की संगत ने गुरुद्वारा साहिब बनाने का विचार किया है। जगह भी गाँव की फिरनी के साथ ही मिल गई है। आप कृपा करो अपने पवित्र कर-कमलों से पवित्र मंदिर की नींव रखो। हजूर बोले—भाई! आपका संकल्प बहुत अच्छा है, लेकिन आप ऐसा करो पहले उस स्थान पर श्री अखण्ड पाठ साहिब करो। भोग वाले दिन आधारशिला रखने का कार्य कर लेना। प्रेमियों ने प्रार्थना की महाराज! आपको कब लेने आएँ? हजूर बोले—हम स्वयं ही आ जाएँगे। हमारी चिंता न करो, बस हमें भोग का समय बता जाओ। प्रेमी तारीख लेकर चले गए। निश्चित समय पर अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ कर लिया, भोग के समय पर भगत लॅभामल की कार में बैठकर हजूर भी पहुँच गए, दुधाल नगर। भोग के उपरान्त आपने कथा की, फिर अरदास करके दरबार साहिब की नींव हजूर ने अपने पवित्र कर कमलों द्वारा रखी। उस समय भगत लॅभामल ने गुरुद्वारा साहिब के लिए काफ़ी धन दिया और आप जी के साथ बाहर से आई संगत ने भी एवं गुरनाम सिंह खोख आदि ने भी यथाशक्ति योगदान दिया। इसके उपरान्त कड़ाह प्रसाद वितरित किए गए। जिस समय हजूर ने लंगर छक लिया तो गाँव के कुछ प्रमुख सज्जन जैसा कि उस समय सरपंच, पूर्व सरपंच और नम्बरदार आदि प्रेमियों ने प्रार्थना की, महाराज! कृपा करो हमारे घरों में चरण डालो। महाराज जी मुस्कुरा कर बोले, ठीक है आपने गुरु घर की सेवा की है, गुरु सर्वव्यापक है, आप यथाशक्ति सेवा करो, चरण गुरु के स्वयं ही पड़ जाएँगे। प्रेमियों ने फिर प्रार्थना की, महाराज! आप अवश्य चलो। हजूर ने पूछा—आप सुरा माँस का प्रयोग तो नहीं करते? महाराज यह तो प्रयोग करते हैं। महाराज बोले—भाई फिर नहीं जाएँगे। प्रेमियों ने प्रार्थना की—छोड़ देंगे आज से ही, अब तो चलो। हजूर बोले—फिर वचन दो कि वैशाखी वाले दिन राड़े साहिब जाकर अमृत छककर आएँगे? प्रेमियों ने हाँ कर दी, फिर कई घरों में चरण धूलि से उपकृत किया और इसके उपरांत 'उच्ची दौद' आ गए। उसी दिन सायं

को संता सिंह मण्डी अहमदगढ़ वाला दर्शनार्थ आया। उसने पाँच सौ रुपए हजूर के चरणों में भेंट किए। हजूर ने पूछा—भाई यह क्या है? महाराज आप द्वारा प्रदत्त माया है, इसको जहाँ चाहो लगा दो। हजूर बोले—हमारे पास आज प्रातः जो कोई भी फँस गया, हमने उसको उठाकर दधाल के गुरुद्वारा साहिब पहुँचा दिया, लेकिन आज प्रातः उसका आधारशिला कार्य सम्पन्न हो गया है, इसलिए हमें वहाँ का कोई संकल्प नहीं। अब इन पैसों को उठा लो—और जहाँ तेरा मन हो—लगा दो। इस प्रकार अपनी मौज में डूबे प्रतिदिन पर-उपकार की वर्षा किए जा रहे हैं।

गुरुद्वारा साहिब अगौल

नाभा नगर से लगभग ग्यारह-बारह कि०मी० दूर उत्तर की ओर खोख के समीप ही एक गाँव बसता है 'अगौल'। इस गाँव में यद्यपि मिली-जुली सभी जातियों के लोग निवास करते हैं, लेकिन अधिक आबादी खहरे गोत्र के जट्ट सरदारों की है। दीन-दुनियां के स्वामी, हिंद की चादर, धर्म रक्षक, श्री गुरु तेग बहादुर महाराज मालवा देश को अपनी पवित्र चरणधूलि से उपकृत करते-करते किसी समय इस नगर में पहुँचे थे। गाँव के पूर्व की ओर लगभग एक कि०मी० की दूरी पर उनकी पवित्र स्मृति में एक सुन्दर स्थान सुशोभित है। इससे पहले इस स्थान पर एक छोटा-सा गुरुद्वारा साहिब बना हुआ था जो अत्यंत प्राचीन होने के कारण जर्जरित हो चुका था, लेकिन समयानुसार अधिक छोटा भी प्रतीत हो रहा था।

लगभग 1978 ई० का वर्णन है जब गाँव के कुछ जिम्मेदार सज्जनों ने गुरुद्वारा साहिब के नए भवन निर्मित करने के विचार से पुराने भवन को गिरा तो दिया, लेकिन नया भवन निर्मित करने को समर्थ न हो सके। गाँव की दलबंदी अथवा समयानुसार सुन्दर भवन निर्मित करने हेतु शक्ति से बाहर होने के कारण कार्य आरम्भ नहीं किया। कई मास पश्चात् किसी सज्जन ने सलाह दी कि आपने गलत काम किया है—नया भवन निर्मित नहीं कर सकते और पुरा गिरा दिया है। अब तुम्हें मार्ग बताता हूँ, गुरुद्वारा साहिब बनाने का। खोख गाँव में विरक्त महाराज निक्का सिंह जी आए हुए हैं। यदि वे सहायता दे दें तो यह कार्य बहुत सुंदर और सरलता से हो सकता है अन्यथा यह कार्य आपसे होने वाला नहीं। अगौल वाले प्रेमियों को सुझाव जँच गया। सब इकट्ठे होकर हजूर के चरणों में पहुँचे-खोख नगर। जाकर अपना संकल्प बताया जो सोचकर आए थे। हजूर ने कुछ समय चुप रहने के पश्चात् हुक्म कर दिया कि ठीक है—धर्मरक्षक सतगुरु की स्मृति में तो बहुत सुन्दर स्थान होना चाहिए। गुरु बाबा जी ने तुम्हें सेवा दी है—शक्तिशाली होकर लाभ उठाओ। गुरु की सेवा बड़े सौभाग्य से प्राप्त हुआ करती है। आप यूँ करें—अमुक तिथि को श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ करके इलाके की संगत को निमंत्रण भेज दो। भोग वाले दिन इस पवित्र मंदिर की आधारशिला का कार्य करेंगे। आज्ञानुसार ऐसा ही किया गया। भोग वाले दिन इलाके की काफ़ी संख्या में संगत पहुँची। करनाल आदि दूर-दूर से भी संगत यह जानकर आई कि विरक्त महाराज जी, नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के स्थान की सेवा आरम्भ कर रहे हैं, इसलिए भोग वाले दिन पर्याप्त लोग एकत्रित हो गए। भोग के उपरांत हजूर ने कथा की, फिर अरदास करके अपने पावन कर कमलों से आधारशिला रखी। उस समय संगत ने ज़ोर-ज़ोर से जयकारे लगाकर माया के ढेर लगा दिए। करनाल से आई संगत ने जहाँ धन-अर्पित किया, वहाँ माताओं ने स्वर्ण आभूषण उतारकर हजूर के चरणों में रख दिया। नाभा से महाराज का एक अनन्य सेवक सरदार बखतौर सिंह ने अपनी बंदूक हजूर के

चरणों में भेंट करते प्रार्थना की—महाराज! आप जैसे चाहो इसको बेचकर गुरुद्वारा साहिब पर लगा दो। इस प्रकार पर्याप्त धन एकत्रित हो गया। भवन का कार्य आरम्भ करने के लिए हजूर ने गाँव के व्यक्तियों की एक समिति बनाकर आज्ञा की कि यह स्थान लाजवाब कुर्बानी वाले गुरु की स्मृति में है इसलिए भवन बहुत सुन्दर और मजबूत होना चाहिए। इस कार्य में जल्दी नहीं करनी चाहिए। धीरे-धीरे सेवा करते रहो। ऐसा कहकर आप तो अपनी मौज में किसी अन्य स्थान पर चले गए, उधर समिति के सदस्य सेवा करवाते रहे। कुछ समय पश्चात् हजूर जब खोख गाँव आए तो पता लगा कि अगौल गुरुद्वारा साहिब का कार्य रुक गया है। एक व्यक्ति भेजकर समिति के सदस्यों को बुलाकर पूछा कि सेवा की क्या स्थिति है, कितना कार्य हुआ है और कितना कुछ शेष है? समिति के सदस्यों ने बताया महाराज! धन जितना भी था व्यय हो गया। इतना कार्य हुआ है, लेकिन अब धन के अभाव के कारण कार्य रुका हुआ है। हजूर बोले—जितना धन था उसके अनुरूप कार्य नहीं हुआ। प्रेमियों ने बताया महाराज! इतना धन तो मज़दूर ही ले गए। हजूर बोले—मज़दूर क्यों ले गए। प्रेमियों ने प्रार्थना की महाराज! मिस्त्रियों के साथ काम करने के लिए। हजूर कठोर शब्दों में बोले—अधिक धन तो बाहर के लोग ही दे गए थे। तुम अपने हाथों से सेवा भी नहीं कर सकते? यह कोई दो नम्बर का धन था जो मज़दूरों को दे दिया। लोग बड़ी श्रद्धा से गुरु तेग बहादुर जी के चरणों में भेंट करके गए थे। तुमने उसे फालतू समझकर लुटा दिया। आप गाँव वालों के लिए करने के लिए केवल मात्र हाथों की सेवा थी। आप उसका भी लाभ नहीं उठा सके?

इतने में सीहाँ दौद से मुखतियार सिंह नाम के एक प्रेमी ने हजूर के चरणों में पहुँचकर प्रार्थना की—महाराज! मैंने अपने पिता की याद में अखण्ड पाठ करवाना है। हजूर ने पूछा कहाँ करवाना चाहता है। महाराज आप जहाँ चाहो—रख दो। हजूर बोले—अगौल के गुरुद्वारा में रख दें। मुखतियार सिंह ने कहा महाराज ठीक है, वहीं रख दो। इतने में थोड़े समय के बाद निर्मल सिंह नाम का एक बुजुर्ग दिल्ली से आ पहुँचा। उसने भी प्रार्थना की महाराज! मैं अखण्ड पाठ साहिब हेतु आपके चरणों मे आया हूँ। हजूर से पूछा—अगौल के गुरुद्वारा में करा दें? महाराज! जहाँ चाहो रख दो। हजूर ने खोख एवं लोपे के पाठियों को आज्ञा दी कि कल को अगौल गुरुद्वारा साहिब दो अखण्ड पाठ का आरम्भ कर दो। समिति वालों को भी आज्ञा दी कि इलाके में भोग के लिए संदेश भेज दो। आज्ञानुसार दूसरे दिन ही अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ हो गया। भोग वाले दिन पर्याप्त संख्या में संगत पहुँची हुई थी। हजूर ने भी गुरु शब्द की व्याख्या करते गुरु तेग बहादुर जी की लाजवाब कुर्बानी पर पूरा प्रकाश डाला जिसमें सेवा की महत्ता, सेवा का फल और पर-उपकार आदि विषयों को बहुत सरल ढंग से समझाया। बाद में मंच सचिव ने दानी सज्जनों की ओर से प्राप्त धन का ब्यौरा बताया। इस प्रकार फिर पर्याप्त धन एकत्रित हो गया जिसके साथ प्रेमियों ने सेवा का महान् कार्य फिर आरम्भ कर दिया। इस प्रकार समय-समय पर आकर धन-वर्षा करते रहे जिसके फलस्वरूप बहुत सुन्दर भवन बनकर तैयार हो गया।

फिर एक बार खोख गाँव में ही टिके हुए थे। एक प्रेमी भाई करतार सिंह जो अगौल गुरुद्वारा साहिब रखकर सेवा करता था, उसने आकर प्रार्थना की महाराज! आपने कृपा की। गुरु बाबा जी की पावन स्मृति में गुरु-स्थान तो सुन्दर सजकर तैयार

हो गया। अब कृपा करो वहाँ सरोवर भी बन जाए। उसकी प्रार्थना सुनकर हजूर चुप रहे—आगे से कुछ नहीं बोले। उस दिन तो करतार सिंह वापिस चला गया, लेकिन कुछ दिनों के पश्चात् रात्रि के समय आकर वहीं सरोवर बनाने वाली प्रार्थना दोहराई। आज भूत-भविष्य के ज्ञाता-ज्ञेय दाता के द्वारा प्रार्थना स्वीकार हो गई। समीप बैठी संगत को आज्ञा दी—चलो अब रात को ही गुरु तेग बहादुर महाराज के पवित्र स्थान पर सरोवर की नींव रखते हैं। संगत को साथ लेकर उस समय अर्थात् रात को ही पहुँच गए—पवित्र स्थान पर। कड़ाह प्रसाद की देग सजाकर अरदास के पश्चात् हजूर ने शुभारम्भ किया। इस तरह कुछ समय सेवा करके संगत समेत हजूर वापिस खोख कुटिया आ गए। उपरांत थोड़े दिनों के पश्चात् ही एक छोटी-सी तलैया बनकर तैयार हो गई। साधारण दृष्टि से देखने पर चाहे वह तलैया छोटी सी दृष्टिगोचर हो रही है, लेकिन वास्तविकता यह है कि हजूर ने इस पवित्र भूमि में किसी सरोवर का बीज बो दिया है जो समय आने पर प्रकट हो जाएगा।

गुरुद्वारा साहिब सिद्धसर अलौहरां

नाभा शहर से लगभग दो कि०मी० उत्तर की ओर एक गाँव बसता है 'अलौहरां'। इस गाँव से थोड़ी दूर व्यर्थ सी पड़ी भूमि के किनारे एक मढ़ी सी बनी हुई है, जिसको ये लोग सिद्ध कहकर पुकारते हैं और समीप-समीप के खोख अगौल आदि बारह गाँवों में बसते खहरे गोत्र के ज़मींदार इस मढ़ी को मानते और पूजा भी करते हैं। लड़के, लड़कियों के विवाह के उपरांत यहाँ माथा टेकने प्रायः आते हैं। अब समय के परिवर्तन के साथ इन लोगों के विचार भी बदलने आरम्भ हो गए। कुछ प्रेमियों ने सोचा कि यदि यहाँ गुरुद्वारा साहिब बन जाए तो बजाए मढ़ी को सिर झुकाने के गुरुवाणी का प्रवाह चले। स्थान एकांत और सड़क के ऊपर है, इसलिए इलाके के साधारण लोग भी लाभ उठाएँ, लेकिन ऐसा चाहने पर भी लोग अपनी दलबंदी के कारण ऐसा करने में असमर्थ हैं। अलौहरां गाँव से एक प्रेमी बाबू सिंह नम्बरदार ने खोख के जत्थेदार नछत्तर सिंह एवं गुरनाम सिंह आदि प्रेमियों से सलाह की कि यदि तुम सहयोग दो तो गुरुद्वारा साहिब बन सकता है। उन प्रेमियों ने सलाह दी आप विरक्त माहराज जी के चरणों में प्रार्थना करो—आधारशिला रखने के लिए, फिर यह कार्य सरल हो सकता है। बाबू सिंह ने इन प्रेमियों को साथ लेकर हजूर के चरणों मे प्रार्थना की महाराज! अलौहरां गाँव एक ऐसा स्थान है जिसको खहरे गोत्र के बारह गाँव मानते-पूजते हैं। आपकी यदि कृपा हो, वहाँ गुरुद्वारा साहिब बन सकता है। तब बजाए मढ़ी पूजने के लोग ज्ञान-पूजा करेंगे। लेकिन लोगों में दलबंदी है—इसलिए इस कार्य में बाधा है। हजूर बोले—बहुत अच्छी बात है—भाई! अवश्य बनाओ। प्रेमियों ने प्रार्थना की, महाराज! कृपा करके शिलान्यास आप करो फिर यह कार्य आसानी से सम्पन्न हो जाएगा। हजूर ने भविष्य को ध्यान में रखते हुए स्वीकृति दे दी। निश्चित किए दिन पर कड़ाह प्रसाद की देग सजाकर अपने कर कमलों द्वारा नींव रख दी। कार्य आरम्भ होने से कुछ समय पश्चात् दीवारें जब लैंटर पर पहुँच गईं तो वह दलबंदी का प्रेत अथवा कोई अन्य कारणवश कार्य रुक गया। कई मास उसी प्रकार दीवारें खड़ी रहीं। विरक्त महाराज जी करनाल रुके हुए थे। उस समय दर्शन करने गए जत्थेदार नछत्तर सिंह और गुरनाम सिंह ने प्रार्थना की, महाराज! आपकी आज्ञा हो तो हम खोख गाँव की ओर से ही अलौहरां वाले गुरुद्वारे की छत डाल दें। हजूर ने आज्ञा कर दी कि ठीक है गुरु नानक का घर सम्पूर्ण लगना चाहिए। खोख की संगत ने आज्ञा मानकर मिलकर लैंटर डाल दिया और फिर धीरे-धीरे लिपाई आदि करके गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रकाश हो गया। इस प्रकार वह स्थान प्रकट हुआ। समय पाकर इन अक्षरों के लिखे जाने तक सिद्धसर अलौहरां एक बड़ा स्थान बन गया।

गुरुद्वारा साहिब बिरड़वाल

यह गाँव भी खोख के समीप ही पड़ता है। 1978-79 की बात है जब इस नगर के प्रमुख व्यक्तियों ने विरक्त महाराज जी के चरणों में खोख गाँव पहुँच कर गुरुद्वारा साहिब की नींव रखने के लिए प्रार्थना की। हजूर ने प्रार्थना स्वीकार करके समय दे दिया। जिस दिन शिलान्यास करना था—संयोगवश उस दिन ही संत हरचंद सिंह लौंगोवाल हजूर के दर्शन करने खोख गाँव पहुँच गए। महाराज जी ने कुशल क्षेम पूछने के उपरांत बताया कि हमने यहाँ समीप के गाँव गुरुद्वारा साहिब की नींव रखने के लिए जाना है आप भी साथ चलो। संत लौंगोवाल चाय आदि लेकर हजूर के साथ गाँव बिरड़वाल पहुँच गए। आगे प्रेमियों की ओर से कड़ाह प्रसाद की देग सजाकर सारी तैयारी की हुई थी। हजूर ने संत लौंगोवाल जी को अरदास करने के लिए कहा। उन्होंने आज्ञा मानकर गुरु नानक देव महाराज के चरणों में कार्य की सम्पन्नता के लिए अरदास की। अरदास के उपरांत पूज्य महाराज जी ने संत लौंगोवाल जी को कहा कि नींव की पहली ईंट आप अपने कर-कमलों से रखो। लौंगोवाल नम्रता के पुँज थे—उन्होंने बड़ी प्रार्थना की—महाराज कृपा करो यह पवित्र कार्य अपने पावन कर कमलों द्वारा स्वयं ही करो। मैं तो आपका दास हूँ। स्वामी के होते दास के हाथों ऐसा कार्य शोभा नहीं देता। हजूर बोले संत जी! आप में दो गुण हैं—आप संत भी हैं और सिक्ख कौम के राजनीतिक अग्रणी भी हो और फिर सिक्ख कौम में आपका आदर भी बहुत है। इसलिए वचन मानकर शिलान्यास का कार्य करो। संत लौंगोवाल जी ने सम्भवत: अब आदेश उल्लंघन के भय से झिझकते हुए नींव पत्थर रख दिया।

हजूर ने संगत को कहा कि ज़ोर-ज़ोर से पाँच जैकारे बुलाओ। आज्ञानुसार संगत के जैकारों के साथ आकाश गूँज उठा। उपरांत काफ़ी संगत से स्पर्श कराकर कुछ ईंटें और रखी गईं। इस प्रकार गुरु नानक के इस मंदिर का शिलान्यास समागम सम्पन्न हुआ। शिलान्यास के उपरांत संत लौंगोवाल जी ने हजूर के चरणों में प्रार्थना की, महाराज! आज्ञा हो तो गुरुद्वारा साहिब में थोड़ी सेवा हम भी कर लें। हजूर बोले—गुरु नानक का घर चारों वर्णों का साँझा है—जो इच्छा हो सेवा करो। संत लौंगोवाल जी ने प्रार्थना की महाराज! खोख, बिरड़वाल के मध्य कच्चा मार्ग है। आपकी आज्ञा हो यहाँ सड़क की स्वीकृति दे दें? हजूर बोले—बहुत अच्छा। संत लौंगोवाल जी ने स्वीकृति मिल जाने पर वहीं खड़े ही ऐलान कर दिया। संगत ने खुशी में ज़ोर-ज़ोर के जैकारे लगाए। इसके उपरांत दोनों महापुरुष खोख कुटिया वापिस आ गए।

गाँव कुराली

करनाल से लगभग सात कि०मी० दूर उत्तर की ओर एक गाँव बसता है 'कुराली'। इस गाँव की जनसंख्या लगभग दो हज़ार है। इसमें विर्क गोत्र के जट्ट सरदारों की अधिकता है, जो सन् 1947 ई० में देश-विभाजन के समय ज़िला शेखूपुरा से आकर बस गए थे। यहाँ के एक सज्जन हरनाम सिंह को किसी पुराने संयोगवश करनाल कुटिया विरक्त महाराज जी के दर्शन हुए। उसके पश्चात् श्रद्धा विश्वास इतना बढ़ गया कि जब भी हजूर के दर्शन करने के लिए करनाल कुटिया जाता तो घर से दूध आदि वस्तु अवश्य साथ लेकर जाना। धीरे-धीरे यह नियम इतना परिपक्व हो गया कि गर्मी-सर्दी, वर्षा अथवा घर का चाहे कितना ही आवश्यक कार्य हो—कैसा ही मौसम हो, एक भैंस का दूध नियम से करनाल कुटिया गुरु के लंगर में

पहुँचाना। यह सेवा तो इस प्रेमी हरनाम सिंह की यह अक्षर लिखने तक निरंतर चल रही है। फिर कुछ समय पश्चात् इसका भाई जोगा सिंह करनाल अध्ययन करने लगा तो वह भी नियम से प्रतिदिन घर से दूध लेकर कुटिया जाता। कॉलेज टाइम के बाद रात हजूर के चरणों में रहकर सेवा करता रहता। उसके पश्चात् नौकरी मिल जाने पर भी काफ़ी समय नियम के साथ ऐसा लाभ उठाता रहा। फिर धीरे-धीरे कुराली गाँव से अनूप सिंह आदि अन्य संगत भी आनी आरम्भ हो गई।

लगभग सन् 1980 का वर्णन है जब कुराली गाँव की संगत की प्रार्थना स्वीकार करके गाँव में गुरुद्वारा साहिब की आधारशिला रखी। मर्यादानुसार कड़ाह प्रसाद की देग और अरदास के उपरांत हजूर तो अपने पवित्र कर-कमलों के साथ आधारशिला रखकर करनाल पहुँच गए, परन्तु बाद में संगत ने गुरुद्वारा साहिब का जो मानचित्र बनाया था, उससे कुछ बड़े माप का दरबार बनाने के लिए नींव खोदकर कार्य आरम्भ कर लिया। बाद में किसी प्रेमी ने हजूर को आकर बताया कि दरबार का साइज संगत ने नक्शा से कुछ बड़ा कर लिया है। हजूर मुस्कुराकर बोले—अच्छा किया। बन तो जाएगा ही थोड़ी देर में सही। प्रभु का हुक्म हजूर का वचन—गुरुद्वारा साहिब का कार्य आरम्भ होने से कुछ समय बाद पंचायत चुनाव आ गया। इस भयानक बीमारी ने गाँव को दो दलों में बाँट दिया। सारा गाँव दलबंदी का शिकार हो गया। गुरुद्वारा की याद भूल गई और एक-दूसरे से बदला लेने की भावना जाग्रत हो गई। फिर कोई दस वर्ष पश्चात् इस बीमारी की शक्ति कम हुई तब जाकर कही गुरुद्वारा साहिब की सेवा आरम्भ हुई। फिर कुछ प्रेमियों को इस पंक्ति की याद आई—

सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु ॥ गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥

(महला ४, पृष्ठ ३०८)

संत दर्शन सिंह जी का गुरुपुरी प्रयाण

पूज्य विरक्त महाराज जी के साथ, सदैव तत्पर और महान् आज्ञाकारी सेवक संत बाबा दर्शन सिंह जी विरक्त जिनका विरक्त महाराज जी के पवित्र जीवन में समय-समय वर्णन आता जा रहा है, जीवन का बहुत समय व्यतीत किया। पूज्य विरक्त महाराज जी करनाल बैठे जगत् उद्धार का कार्य कर रहे हैं और संत बाबा दर्शन सिंह जी उनके पावन चरणें की छाया में बैठे सुखदायी जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

आज 24 दिसम्बर, 1978 को श्री अमरीक चन्द जी चावला ने पूज्य विरक्त महाराज जी के चरणों में दिल्ली जाने के लिए प्रार्थना थी। आप प्रार्थना स्वीकार करके दिल्ली जाने के लिए तैयार हुए तो चावला जी ने संत दर्शन सिंह जी को भी साथ चलने के लिए प्रार्थना की, लेकिन आप तो हजूर के आज्ञाकारी थे। चावला को कहने लगे, हमारे सम्बन्ध में भी महाराज जी से पूछो? चावला ने पूज्य महाराज जी को प्रार्थना की—हजूर की आज्ञा हो तो संत दर्शन सिंह जी को भी साथ ले चलें? हजूर कुछ समय चुप रहकर बोले—नहीं—इनको यहीं रहने दो। संत दर्शन सिंह जी को करनाल रहने की आज्ञा करके हजूर तो दिल्ली पहुँच गए। इधर उसी दिन सायं को संत दर्शन सिंह जी को दिल का दौरा पड़ गया। दिल्ली फोन पर महाराज जी को

बताया गया। हजूर ने आज्ञा दी—अस्पताल दाखिल करवा दो। संगत ने शीघ्रातिशीघ्र अस्पताल में दाखिल करवा दिया। उपचार आरम्भ होने पर डॉक्टर कहने लगे कि महाराज आप बिल्कुल न बोलो, लेकिन आप अपनी मौज में पढ़ते जा रहे हैं—

घरि महि ठाकुरु नदरि न आवै॥ गल महि पाहणु लै लटकावै॥१॥
भरमे भूला साकतु फिरता॥ नीरु बिरोलै खपि खपि मरता॥ रहाउ॥
जिसु पाहण कउ ठाकुरु कहता॥ ओहु पाहणु लै उस कउ डुबता॥
गुनहगार लूण हरामी॥ पाहण नाव न पारगिरामी॥
गुर मिलि नानक ठाकुरु जाता॥ जलि थलि महीअलि पूरन बिधाता॥

(सूही महला ५, पृष्ठ ७३९)

बस-यह शब्द उच्चारण करते ही शरीर ऐसे त्याग दिया जैसे सर्प केंचुली त्याग देता है। संगत ने फोन करके दिल्ली बताया, हजूर ने आज्ञा की कि कुटिया में ही संस्कार कर दो। आज्ञानुसार संस्कार करके दस दिनों पश्चात् श्री अखण्ड पाठ साहिब जी के भोग डालकर गुरु का लंगर वितरित किया।*

केस दान और गुरुमुख जीवन

किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगु॥
जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु॥
दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ॥
सतिगुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ॥

(सिरीरागु महला ५, पृष्ठ ७१)

गुरु अमरदास महाराज गोइंदवाल ज्योति जगा रहे हैं। संगत भारी संख्या में दर्शनार्थ आती रहती है। कुछ दिन ठहरकर, सेवा का लाभ उठा, भोग-मोक्ष के मन वांछित वरदान प्राप्त कर घरों को वापिस लौट आती है। प्रात: एवं तीसरे पहर दीवान सुसज्जित होते हैं जिसमें कथा कीर्तन तो होते ही हैं, लेकिन जिज्ञासु साधक गुरु बाबा जी से अपने पारमार्थिक शंकाएँ निवृत्त करके धन्य-धन्य हो रहे हैं।

एक दिन तीसरे पहर के दीवान में एक प्रेमी ने पूछा—महाराज! आप जी की पवित्र वाणी में गुरुमुख की बहुत महिमा है। इतना महिमाशाली पुरुष जिसकी आप गुरुमुख शब्द के द्वारा प्रशंसा करते हो, उसकी भीतरी अवस्था कैसे होती है? आप कृपा करके थोड़ा समझाने की कृपा करें ताकि हमारा मन भी उत्साह युक्त होकर गुरुमुखों के मार्ग का अनुसरण करें। हजूर

---

* *संत दर्शन सिंह जी के सांसारिक रिश्ते में दो भतीजों बख़शीश सिंह और प्यारा सिंह ने लुधियाना फैक्टरियाँ लगाई हुई हैं। दोनों भाई वर्ष में दो बार गाँव जाकर दर्शन सिंह के नाम पर दो बड़े लंगर करते हैं। संत दर्शन सिंह जी ने किसी समय अपने गाँव 'चॅकमॅला' में स्कूल की आधारशिला रखी थी जो इस समय तक ठीक चल रहा है। आपके भतीजों ने संत दर्शन सिंह जी के नाम पर गाँव में एक गुरुद्वारा साहिब बनाया है जो आप जी की स्मृति दिलाता है। गाँव के लोगों में आपका बहुत सत्कार है। संत महापुरुष बाबा दलेल सिंह जी का जन्म स्थान टू-टू माजरा भी 'चॅकमॅला' से लगभग 5 कि०मी० दूरी पर स्थित है।*

थोड़ा मुस्कुराकर बोले—भाई प्रेमी! गुरुमुख की भीतरी अवस्था के सम्बन्ध में कोई शब्द कहना कठिन है, वह शब्द की पहुँच से बहुत परे विचरण करता है। इसलिए संसार के किसी शब्द की उस तक पहुँच नहीं है। हाँ, शब्दों द्वारा उसकी अवस्था को ओर थोड़ा बहुत संकेत ही किया जा सकता है, शेष पूर्ण तो वह स्वयं ही जानता है। प्रेमी ने प्रार्थना की—महाराज! कुछ संकेत ही कर दो—थोड़ी बहुत दिशा तो मिलेगी। गुरु बाबा जी के कमल-नेत्र बन्द हो गए, चेहरे की आभा चमक उठी। पावन अधर हिले और ईश्वरीय नाद प्रस्फुटित हुआ—

गुरमुखि अंतरि सहजु है मनु चड़िआ दसवै आकासि॥
तिथै ऊंघ न भुख है हरि अम्रित नामु सुख वासु॥
नानक दुखु सुखु विआपत नही जिथै आतम राम प्रगासु॥

(वारां ते वधीक, पृष्ठ १४१४)

शब्द का उच्चारण करते ही हजूर का मन आत्म रस में इस प्रकार लीन हो गया कि बहुत देर तक न तो नयन ही खुले और न अधर ही मिले। बस! शान्त एक रस बैठे रहे। अब कुछ समय के पश्चात् नेत्र खुले। प्रेमी ने प्रार्थना की, महाराज! ऐसी आनंदमयी अवस्था प्राप्त कैसे हो? हजूर ने पावन-मुख से उच्चारण किया—

गुरमुखा हरि धनु खटिआ गुर कै सबदि वीचारि॥
नामु पदारथु पाइआ अतुट भरे भंडार॥

(वारां ते वधीक, पृष्ठ १४१४)

भाई प्रेमी! नाम पदार्थ के अटूट भण्डारे प्रत्येक व्यक्ति के भीतर भरे पड़े हैं, लेकिन उनकी सूझ गुरुमुखों को ही पड़ती है, दूसरों को नहीं। शेष समस्त संसार नदी के किनारे बैठा पिपासा से व्याकुल है। इस नाम रूपी अमूल्य निधि की सूझ गुरु शब्द द्वारा ही होती है अर्थात् गुरु का संकेत समझकर उसको बिना विलम्ब व्यवहार में लाना। देखो! आज एक गुरुमुख उपरोक्त नुस्खे को व्यवहार में लाकर प्रयोग करके दिखा रहा है।

हजूर विरक्त महाराज जी ऋषिकेश से गोराया जाने के लिए कार की अगली सीट पर सवार हो गए। उजागर सिंह सूरी कार चलाने लगा। पिछली सीट पर तीन सज्जन बैठ गए। दोनों तरफ गुरनाम सिंह खोख और सतनाम सिंह गोराया बैठ गए। दोनों के मध्य एक 28-29 वर्ष की आयु का एक सहजधारी सज्जन जिसको राम-जी, कहकर पुकारा जाता है, बैठ गया। यह सज्जन गुरुवाणी का अत्यंत अनुरागी लग रहा है, क्योंकि इसने यात्रा आरम्भ करते ही जपुजी साहिब का पाठ आरम्भ कर दिया। पाठ ऊँची आवाज़ और इतने सहज भाव से शुद्ध उच्चारण कर रहा है—मानों कार में अमृत-वर्षा आरम्भ हो गई।

कार में बैठे बाकी के सज्जन, जपुजी साहिब का अमृत रस श्रवणों द्वारा पान कर भीतर-बाहर से बेखबर ऐसे प्रतीत हो रहे हैं जैसे मरुस्थल की खेती ज़ोरदार वर्षा होने से हरी-भरी हो जाती है। विरक्त महाराज जी इस प्रेमी का गुरुवाणी प्रेम, आन्तरिक एवं बाह्य शुद्धता और छल-कपट से रहित उच्च एवं शुद्ध जीवन देख-देखकर बहुत प्रसन्नचित्त दृष्टिगोचर हो रहे हैं। उनके प्रभामय चेहरे की ओर ध्यानपूर्वक देखते ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे प्रेमी की पदोन्नति के आदेश हाथ में पकड़ाने के लिए व्याकुल हों और प्रेमी को किसी ऊँचे पद पर सुशोभित करने के लिए बड़ी तेजी से समय की प्रतीक्षा कर रहे हों। दूसरी ओर प्रेमी भी भीतर-बाहर से बिल्कुल बेखबर गुरुवाणी का रूप हुआ, जपुजी साहिब का एक पाठ सम्पूर्ण करके दूसरा

फिर आरम्भ कर देता है। कार अपना कार्य करती तेज़ गति से चली जा रही है और श्रोतागण रसमग्न हुए पाठ श्रवण किए जा रहे हैं। इस प्रकार जब जपुजी साहिब के पाँच पाठ सम्पूर्ण हुए तो कार भी अपनी मंजिल पर पहुँच गई। जहाँ किसी समय कौतुकी प्रीतम कलगीधर पातशाह ने किए थे अनेकों ईश्वरीय कौतुक। देखो! आज इतिहास अपने आपको पुनः दोहरा रहा है। पाँवटा साहिब कार पहुँचते ही जपुजी साहिब के पाँच पाठ सम्पूर्ण हो गए। पाँचवें पाठ का भोग पड़ते ही हजूर ने अगली सीट पर बैठते ही थोड़ा पीछे की ओर देखा। प्रेमी की ओर देखकर बोले—वाह! भाई वाह! सिक्ख तो पूरा है, दाढ़ी केश भी रख ले। बस गुरुमुख को तो संकेत की ही आवश्यकता थी। दोनों हाथ जोड़कर हजूर की ओर अपना शीश झुका दिया। सीट पर समीप बैठे गुरनाम सिंह ने पाँच जैकारे छोड़े। गुरुमुख प्रेमी हजूर की दयालुता देखकर चकित हो रहा है कि दशमेश पिता ने तो प्रसन्न होकर पीर बुद्धू शाह को इस पवित्र स्थान पर कंघा और केश दान किए थे, लेकिन मुझे तो आज प्रसन्न होकर दाढ़ी केश के साथ-साथ 'सिंह' नाम भी देकर उपकृत किया है। धन्य है गुरु-पिता, धन्य है उसकी दयालुता। खैर—दशमेश पिता के स्थान पर सभी ने दर्शन-दीदार किए। नमस्कार करके गुरु के लंगर से प्रसाद-जल ग्रहण करके गोराया की ओर कार ने गति पकड़ ली। धीरे-धीरे हरि यश का गान करती कार जा पहुँची गोराया नगर। एक-दो दिन हजूर के चरणों में रहकर सेवा का लाभ उठाया। इतने में अवकाश समाप्त हो गया। हजूर से आज्ञा लेकर बरनाला नगर पहुँच गए अपनी बैंक शाखा में। बैंक में जाकर सबसे पहला कार्य किया अपने नाम बदलने का। प्रबंधक को प्रार्थना-पत्र दे दिया कि मेरा नाम आज से रमेश चन्द्र की बजाए राम सिंह है इसलिए जो आवश्यक कार्रवाई करनी है, मुझे बता दें। समाचार-पत्र में जो देना था, दे दिया। थोड़े दिनों में समस्त पत्र व्यवहार पूर्ण करके सरकारी एवं निजी पत्रों में अपना नाम राम सिंह लिखना आरम्भ कर दिया। अब देखो। घर वंश सारा सहजधारी सनातनी विचारों का, ताया जी में और भी अधिक विचारों की कट्टरता, लेकिन आप अपनी मौज में बल्कि पहले ही गुरुमुखता के किसी उत्तंग शिखर पर पहुँचने के लिए प्रयत्नशील हैं जो गुरुदेव के संकेत मात्र से अमल करने पर ही पूर्ण होनी संभव है, जिस पर पहुँचने के लिए गुरु-आज्ञा को शत प्रतिशत मानने के अतिरिक्त सभी साधन निष्फल हैं। अब काफ़ी समय तक राम सिंह करनाल नहीं गए। कुछ मास पश्चात् जब दाढ़ी (दाड़ा) पूर्ण प्रकाशमान हो गई, सिर पर काले रंग की दस्तार, नीचे श्वेत पट्टी सजाकर पहुँच गए हजूर के पावन चरणों में करनाल। सारी संगत देखकर बहुत प्रसन्न हुई। आपने भी हजूर के चरणों में रहकर दो दिन सेवा का लाभ उठाया। अब छुट्टी पूर्ण होने पर वापिस बरनाला जाना था काम पर। माता जी ने हजूर के चरणों में प्रार्थना की—महाराज राम को कहो घर होकर चला जाए।

हजूर मुस्कुराकर बोले—भाई घर होकर जाना, लेकिन वहाँ तेरे ताया जी मिल गए फिर क्या करेगा? महाराज जी मैं फतह बुला दूँगा। हजूर को नमस्कार कर जब घर पहुँचे तो आगे ताया जी घर आए हुए थे जो देखकर बहुत प्रसन्न हुए। आप भी बहुत आश्चर्यचकित हुए कि ताया जी तो शहर के दूसरी तरफ जुंडला गेट रहते हैं, लेकिन हजूर ने कुटिया में ही संकेत किया था कि तेरे ताया जी आज ही मिलेंगे। धन्य है अन्तर्यामी दाता! गुरु आज्ञानुसार कुछ मिनट घर रुककर कर्त्ता के आश्चर्य कौतुकों को देख-देखकर आश्चर्यचकित हुए जा पहुँचे बरनाला नगर (पंजाब)।

संत हरबंस सिंह जी

पूज्य विरक्त महाराज जी के अनेक शिष्यों में एक प्रसिद्ध महात्मा थे श्रीमान् संत हरबंस सिंह जी। जिस समय आप पूज्य विरक्त महाराज जी की शरण में आए तो हजूर ने आपको अधिकारी जानकर संस्कृत विद्या अध्ययन हेतु काशी भेजा। कुछ समय काशी ठहरकर विद्या अध्ययन करते रहे, लेकिन जलवायु अनुकूल न होने के कारण शीघ्र वापिस आ गए, लेकिन आपने थोड़े समय में ही संस्कृत अक्षरों का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया। फिर अपनी विरक्तीय मौज में कुछ समय तो विरक्त महाराज जी के साथ कई स्थानों में विचरण किया, फिर काफ़ी लम्बे समय में होशियारपुर के समीप 'अखलासपुर' कुटिया में एकांत रहकर ज्ञानार्जन करते रहे। उसके पश्चात् दौद गाँव के समीप दधाल नगर भी एक प्रेमी ग्राम सेवक के कुएँ पर जो कि गाँव से काफ़ी दूर खेतों में स्थित है, ठहरकर अपनी साधना और ज्ञानार्जन करते रहे। उसके पश्चात् करनाल कुटिया में भी कुछ समय व्यतीत किया। अब अन्न जल और संयोगवश करनाल नगर के समीप ही ज़रीफा गाँव ठहरकर पावन गुरुवाणी का प्रचार करते रहे। प्रेमी संगत की ओर से स्थान पर श्री अखण्ड पाठ साहिब होते रहते हैं और गुरु का लंगर अनवरत जारी है। इस प्रकार गुरुवाणी के प्रचार-प्रसार करते हुए जीवन व्यतीत करते रहे।

अचिंत कम करहि प्रभ तिनके

अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै॥
जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै॥
सेवक कउ निकटी होइ दिखावै॥
जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै॥ रहाउ॥
तिस सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै॥
तिस की सोइ सुणी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै॥

(आसा महला ५, पृष्ठ ४०३)

सर्दी दूर करने के लिए कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता, कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता और न ही कोई कष्ट उठाना पड़ता है, बस केवल और केवल अग्नि के सम्मुख होने की आवश्यकता है। फिर सर्दी का दुःख दूर होने में देर नहीं लगती, क्योंकि अग्नि का स्वभाव अथवा धर्म है सम्मुख आए व्यक्ति को गरमी देना। ऐसा करते समय वह यह भी नहीं देखती कि सम्मुख हुआ अथवा समीप आया पुरुष निर्धन है अथवा धनी, पुण्यात्मा है अथवा पापी। बस, सम्मुख चाहिए—अन्य कोई शर्त नहीं। अग्नि अपने इस पर-उपकारी स्थायी धर्म से कभी भी चलायमान अर्थात् बेमुख नहीं होती। अभिप्राय यह अनादि काल से अपने इसी स्वभाव में स्थित है। बिल्कुल ऐसा ही स्वभाव हरि परमेश्वर और उसके साथ अभेद हुए सत्पुरुषों का है। जो पुरुष श्रद्धा विश्वास के साथ ऐसी अभेद अवस्था में स्थित सत्पुरुष की ओर एक पग उठाते हैं, महापुरुष उसकी ओर कोटि-कोटि पग उठाकर उसको संभालते हैं अर्थात् उसके लोक-परलोक के समस्त कार्य सँवारते हैं। यथा—भाई गुरदास जी—

चरन शरन गुरु एक पैंडा जाइ चल॥

सतिगुरु कोट पैंडा आगे होइ लेत है।

फिर ऐसे पुरुष की ओर से श्रद्धा भावना से भेंट की आधी कौड़ी भी स्वीकार करके लोक-परलोक की निधियाँ मिल जाती हैं—

यथा— **भावनी भगत भाइ कउडी अगर भाग राखै॥**

ताहि गुरु सरब निधान दान देत है॥

देखो! आज एक ऐसा कौतुक ही सामने दृष्टिगोचर हो रहा है। लगभग सन् 1979 का जिक्र है जब श्री अमरीक चन्द जी चावला जर्मनी से कोई पाँच लाँख रुपए के लगभग एक यंत्र खरीदकर लाया। चावला ने उस यंत्र की जानकारी हेतु पंद्रह दिन जर्मन रहकर प्रशिक्षण भी लिया, लेकिन जिस समय दिल्ली अपनी कम्पनी में लगाकर चलाने लगे तो यंत्र न चला। चावला जी स्वयं तो पंद्रह दिन प्रशिक्षण लेकर आए ही थे अब और भी बड़े-बड़े अभियन्ता लाकर चैक करवाया लेकिन यंत्र ने 'ढीठ भैंस' की भांति एक बूँद दूध भी न दिया अर्थात् यंत्र बिल्कुल न चला। अनेक प्रयत्न किए लेकिन सब असफल। अंतत: हारकर छोड़ दिया, बल्कि उसकी ओर ध्यान देना भी बन्द कर दिया क्योंकि अब समस्त यत्न असफल हो चुके थे। इस प्रकार छ: मास व्यतीत हो गए।

आज देखो! अलौकिक प्रीतम अपने दयालु स्वभाव अनुसार **जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै** वाला खेल दिखा रहा है। अमरीक चंद की फैक्टरी में बिना बुलाए और बिना प्रार्थना किए अलौकिक प्रीतम अपनी मौज में दिल्ली जा पहुँचे। उधर चावला जी को भी अचानक दर्शन करके बड़ी प्रसन्नता हुई। अलौकिक प्रीतम ने पूछा—अमरीक तेरे काम-काज का क्या हाल है? चावला ने प्रार्थना की महाराज! आपकी बहुत कृपा है। कुछ देर पश्चात् दयालु दाता ने फिर पूछा—अमरीक तेरी फैक्टरियाँ ठीक चल रही हैं? चावला ने प्रार्थना की, महाराज! आपकी असीम कृपा के साथ सब कारोबार ठीक चल रहा है। इतने में नीचे से फैक्टरी प्रबंधक ने आकर बताया कि जर्मन वाली मशीन बहुत ठीक तरह से चल पड़ी है। चावला आश्चर्यचकित होकर हजूर के चरणों में गिर पड़ा। प्रार्थना की, महाराज! छह मास की खड़ी मशीन बिना किसी यत्न के चल पड़ी। पहले सैकड़ों यत्न करने के बावजूद भी नहीं चली। आप धन्य हैं मेरे इस कार्य के लिए आप कष्ट उठाकर यहाँ आए हो। आपकी महिमा असीम है। हजूर ने पूछा—तुमने पहले क्यों नहीं बताया कि नई मशीन बेकार खड़ी है, चल नहीं रही। चावला ने प्रार्थना की, महाराज! आप जी ने सांसारिक पदार्थों के तो बिना माँगे ही न समाप्त होने वाली निधियों से उपकृत किया है इसलिए मन में झिझक थी—किसी व्यावहारिक प्रार्थना करने से। महाराज आप धन्य हैं। आप बेअंत हो। आपकी असीमता को मैं जान नहीं सकता।

नया भवन गुरुद्वारा साहिब बिशनपुरा (लोपे)

वर्णन 1979 फरवरी मास का है जब हजूर दिल्ली चावल की फैक्टरी रुके हुए थे। लोपे से एक सज्जन हजूर के दर्शनार्थ दिल्ली पहुँचा, प्रार्थना की ग़रीब निवाज़ गुरुद्वारा साहिब का नया भवन बनकर तैयार हो गया है, आप कृपा करके

कोई तिथि देने की कृपा करो ताकि अखण्ड पाठ साहिब का भोग डालकर गुरु ग्रन्थ साहिब उसमें सुशोभित हो सकें। हजूर बोले—बसंत पंचमी को हमने खोख आना है, उसके समीप कोई तिथि रख लो। प्रेमी ने कुछ दिन हजूर के चरणों में रहकर वापिस गाँव आकर संगत को सारा प्रोग्राम बता दिया। सबने मिलजुल कर समागम की तैयारी कर ली। इतने में बसंत पंचमी के समीप आ पहुँचे अलौकिक प्रीतम खोख नगर। बसंत पंचमी से चौथे दिन भोग की तिथि निश्चित थी। उस दिन भोग के समय हजूर बिशनपुरा (लोपे) पहुँच गए। भोग के उपरांत कीर्तन हुआ। बाद में हजूर ने ईश्वरीय आदेश की बहुत विस्तारपूर्वक कथा की। परमेश्वर की कृपा से शब्द भी लम्बा था अर्थात् सोरठ राग की अष्टपदी। हजूर ने कोई डेढ़ घंटा उस पावन शब्द की उदाहरण सहित व्याख्या की।*

संगत भी पर्याप्त संख्या में पहुँची हुई थी। सबने कथा का पूर्ण आनंद उठाया। हजूर चाहे सदैव आनंद मग्न रहते थे, लेकिन आज कुछ विशेष आनंद अवस्था में प्रतीत हो रहे थे। आपके भीतर आनंद-सागर ठाठें मार रहा था। मुख की प्रसन्नता से तो प्रतीत हो ही रहा है, लेकिन शब्दों के माध्यम से भी शान्त अमृत की लगातार वर्षा हो रही है। इसके उपरान्त गुरु का लंगर आरम्भ हो गया। प्रेमियों की ओर से स्थानाभाव को जानते हुए हजूर ने बैठकर लंगर छकने के लिए गुरुद्वारा साहिब के पीछे एक वितान (तम्बू) लगाया हुआ है, उसमें सुशोभित हो गए। दूर-समीप के गाँवों से भारी संख्या में निर्धन व्यक्ति गुरु नानक के लंगर से प्रसाद छकने के लिए भी भारी समूह में आ रहे हैं। हजूर उन आ-जा रहे गरीबों की ओर देखकर अत्यंत चकित हो रहे हैं। सेवादारों को वरदानों से उपकृत कथा में ही कर दिया था, लेकिन आज भी किसी भीतर आनंद अवस्था में डूबे वरदानों की झड़ी से उपकृत कर रहे हैं। गुरुद्वारा की ओर संकेत करके मानों यह बता रहे हैं कि जिसने इस मंदिर की सेवा की है—यदि निष्काम होकर की है तो मुक्त हो जाएगा। यदि कोई सांसारिक इच्छा से की है तो वह भी पूर्ण हो जाएगी। गुरुद्वारा साहिब के आस-पास के स्थान की ओर भी कुछ ऐसे गहरे भाव से देख रहे हैं जैसे इस भूमि पर पड़े किसी पुराने बीज को जल से सींच रहे हों। खैर—आप तो अपने पावन-सत्संग की वर्षा करके खोख कुटिया वापिस आ गए, लेकिन वहाँ चल रहे लड्डू जलेबी के लंगर में इतनी बरकत भर गए कि प्रेमियों ने समीप-समीप के गाँव के कई स्कूलों में वितरित किया, लेकिन फिर भी ट्राली लड्डू जलेबी की बच गई जो नाभा शहर जाकर निर्धन बस्तियों में बाँटी गई।

चाहे सारा समागम हजूर की महान् कृपा द्वारा बहुत अच्छी प्रकार से सम्पन्न हो गया, लेकिन फिर भी प्रेमी किसी गहरी चिंता में डूबे सोच रहे हैं—काश! हम यह सेवा निष्काम होकर कर लेते।

रूहानी वैद्य

समय सम्भवत: 1980 के आस-पास शरद् ऋतु का चल रहा है। हजूर 'उच्ची दौद' टीले पर सुशोभित हुए मानसिक रोगियों को ब्रह्म विद्या के चषक पिलाकर आत्म-मस्ती से सम्पन्न कर रहे हैं और शारीरिक रोगियों को सुंदर दृष्टि की उत्तम औषधियों का पान कराकर रोगमुक्त कर रहे हैं। संसार के अन्य पदार्थों की इच्छा करने वालों को भी निराश नहीं कर रहे। अधिक क्या **जो मागहि ठाकुर अपुने ते सोई सोई देवै** के अनुसार प्रत्यक्ष मुक्त भण्डार वितरित कर रहे हैं।

---

* *उपरोक्त पूरी कथा 'सहज कथा' पुस्तक में दसवें नम्बर पर अंकित है।*

एक दिन एक प्रेमी वेदांत की एक पुस्तक 'ईश्वर अमोलक लाल' साथ लेकर आया। हजूर ने पूछा—क्या कोई ग्रन्थ लेकर आए हो—पढ़ने के लिए? हाँ महाराज, यह पुस्तक वेदांत की है। हजूर बोले—पढ़! प्रेमी ने थोड़ी पढ़ी तो आज्ञा हुई—इसको रखकर भीतर से भाई वीर सिंह का ग्रन्थ ले आ। प्रेमी भीतर से भाई वीर सिंह का ग्रन्थ ले आया और प्रेमी ने आज्ञा मानकर भाई वीर सिंह का ग्रन्थ पढ़ना आरम्भ कर दिया और सायं तक पढ़ते रहे। इतने में लंगर तैयार हो गया। पोथी सत्संग बंद करके लंगर ग्रहण किया। उपरांत एक वितान लगाया हुआ था, बाहर से प्रेमी तो उसमें आरामवश हो गए और गुरनाम सिंह हजूर के द्वार पर ही चरणों में सो गया। जब रात्रि के ग्यारह बजे तो गुरनाम सिंह ने वितान में से एक प्रेमी को उठाकर कहा कि महाराज जी याद कर रहे हैं। प्रेमी ने उठकर हजूर के पवित्र चरणों में नमस्कार की। आगे से ईश्वरीय आदेश हुआ कि वही कल वाली वेदांत की पुस्तक ले आओ। गुरनाम सिंह को आज्ञा दी कि शामियाना में जाकर विश्राम कर ले—प्रातः उठकर सुखमनी साहिब का पाठ कर लेना। गुरनाम सिंह आज्ञा मानकर शामियाना में चला गया। हजूर रजाई लपेटकर चारपाई पर सुशोभित हो गए। प्रेमी को आज्ञा की कि यह पोथी साधारण लोगों के सम्मुख पढ़ने वाली नहीं अब आरम्भ करो। प्रेमी ने आज्ञा मानकर पढ़ना आरम्भ किया, लेकिन ऐसे लग रहा है कि जैसे वह वेदांत से अनभिज्ञ है। दूसरी ओर हजूर एक-एक शब्द को ऐसे समझा रहे हैं मानों ज्ञान रूपी औषधि की पुड़ियाँ प्रेम-जल में घोल-घोलकर प्रेमी को पिला रहे हैं। इसी आनंद में कोई पाँच साढ़े पाँच घंटे का समय बीत गया। इतने में सरपंच नारंग सिंह नाम का एक प्रेमी गाँव 'दलण वाल' से गरम-गरम चाय थरमस में डालकर टीले पर हजूर के चरणों में पहुँच गया। सर्दी इतनी ज़ोरदार पड़ रही है कि संसारी लोग रजाईयाँ ओढ़े गहरी नींद सो रहे हैं। यदि किसी की किसी कारण आँख खुल भी गई तो रजाई में से हाथ निकालने को मन नहीं करता और रात्रि भी पूरे एक पहर के करीब रहती है, लेकिन यह प्रेमी किसी दैवयोग से अथवा श्रद्धा विश्वास और प्रेम से आकर्षित अपनी निद्रा-सुख को त्यागकर बर्फ के समान पड़ रही सर्दी का कष्ट सहते हुए, कोई ढाई तीन कि०मी० की यात्रा साईकल पर करके आ पहुँचा सुख-दाता के श्री चरणों में। हजूर ने पूछा—यह क्या ले आया है भाई? महाराज, चाय है। आज्ञा हुई पोथी रख दे—चाय छक ले। नारंग सिंह ने चाय गिलासों में डालकर दी। हजूर ने चाय पीते-पीते ही नारंग सिंह को पूछा—ओ भाई! तेरी पत्नी अब कैसी है? महाराज अब तो बहुत ही काम बढ़ चुका है उसका। पहले तो वह अधिक बोलती ही थी, लेकिन अब तो वस्त्र फाड़कर घर से बाहर दौड़ जाती है। इसलिए अब तो कमरे के भीतर ही बंद रखते हैं। हजूर बोले—उस शामियाना में एक वैद्य सो रहा है—कंवल कलसी। वह इलाज में माहिर है, उसको बुलाओ। नारंग सिंह वैद्य को बुला लाया। हजूर ने आज्ञा दी—कंवल! प्रातः होते नारंग सिंह के साथ जाना इसके घर, इसकी पत्नी मानिसक रोग से पीड़ित है, उसको देखकर कोई औषधि देना। रुहानी वैद्य ने सांसारिक वैद्य को आज्ञा दी मानों रोग को बोरिया बिस्तर बाँधकर जाने के लिए कह दिया। शेष तो अब औपचारिकता थी, वह कँवल ने पूरी कर दी। माई बिल्कुल ठीक होकर अब तक सुखमय जीवन व्यतीत कर रही है। इतने में सवेरा हो गया। आज्ञा हुई—चल भाई! अब सूर्य उदय होने वाला है। चढ़ती धूप में बैठेंगे। आज्ञानुसार प्रेमियों ने बाहर चारपाई डालकर बिस्तर आदि बिछा दिया। हजूर उस पर आकर शोभायमान हुए।

इतने में कोई एक प्रेमी जो देखने से बहुत निर्धन प्रतीत हो रहा है और आया भी शायद पहली बार है, क्योंकि आज से पहले उसे देखा नहीं गया, दोनों हाथ जोड़कर हजूर के सम्मुख खड़ा हो गया—लेकिन बोल कुछ नहीं रहा। अलौकिक दाता को दया आ गई—आज्ञा की कि क्या बात है भाई! वह प्रेमी तुतलाती ज़बान में झिझकता हुआ बोला—महाराज! घर वाले कोई दिन से कह रहे हैं, लेकिन मेरे मन में कुछ झिझक थी। आखिर आज मैं हजूर के चरणों में आ ही गया। महाराज! मेरे घर संतान नहीं है, आपकी कृपा हो जाए मैं भी भाईचारा में सम्मिलित हो जाऊँ। कर दो कृपा। लगा दो कोई रेख में मेख! अलौकिक प्रेमी तो रात्रि के ग्यारह बजे से ही कृपा दृष्टि कर रहे हैं—यह निर्धन लंगर के द्वार पर आया भूखा-प्यासा कैसे वापिस चला जाए? ईश्वरीय नाद की गर्जना हुई, दिलीप! यहाँ से कोई फल ले आ। दिलीप सिंह दौड़कर लंगर में से दो सेब ले आया। हजूर ने दोनों सेब उस निर्धन के आँचल में डाल दिए। दिलीप के अनुसार समय पाकर उसके घर में दो पुत्र उत्पन्न हुए। ऐसे अनेकों अगम्य भण्डारे कई दिन तक उस टीले पर बैठकर वितरित करते रहे। अब ईश्वरीय आदेश में विचरण करते किसी अन्य स्थान की ओर प्रस्थान किया।

श्री कृष्ण जी को पत्थरी रोग

उपरोक्त अगम्य भण्डार चाहे प्रतिदिन ही बाँटे जा रहे थे, लेकिन किसी-किसी समय तो नर-लीला में विशेष लीला ही हो जाती है। एक बार की बात है आप निर्मल बाग कनखल ठहरे हुए थे। असंख्य संगत पंजाब व हरियाणा से दर्शनार्थ आती-जाती रहती थी और अपनी-अपनी श्रद्धानुसार फल भी प्राप्त कर रही थी।

आज आप कुएँ की छत पर विराजमान हैं। अचानक सेवादार को पूछा—संत कृष्ण जी कहाँ हैं? महाराज उनके पेट में रात का दर्द हो रहा है, लेकिन आज प्रात: कुछ अधिक ही बढ़ गया था इसलिए उनको डॉक्टर के पास लेकर गए हैं। सायं को लगभग चार बजे हजूर छत पर ही चारपाई पर विराजमान हैं। इतने में संत कृष्ण जी ने आकर हजूर के चरणों पर नमस्कार की। महाराज जी ने पूछा—कृष्ण जी क्या बात हो गई? महाराज, पेट में दर्द हो रहा है कुछ दिनों से लेकिन रात भर से कुछ अधिक ही हो रहा है। डॉक्टर के पास गए थे, उसने चैक करके बताया कि पेट में पत्थरी है—ऑप्रेशन करना होगा? हजूर ने पूछा—डॉक्टर को कैसे पता है कि पेट में पत्थरी है? महाराज उसने एक्सरे करके देखा है। कृष्ण जी की दीनतापूर्वक प्रार्थना सुनकर हजूर को दया आ गई, चेहरे पर गम्भीरता छा गई। ध्यान से देखा, ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे संत कृष्ण जी की शारीरिक हालत पर दया करके यों कह रहे हों कि यह बेचारा नेत्रों के कारण पहले ही अधीन है, अब बुढ़ापे में ऑप्रेशन कर कष्ट भी सहन करना पड़ेगा और कौन इसकी सेवा करेगा? बस अपनी मौज में चारपाई से उठकर एक हाथ में चिप्पी और दूसरे में खूण्डा पकड़कर संत कृष्ण जी को साथ लेकर नीचे उतर आए। फिर धीरे-धीरे चलते बाहर गंगा नहर पर जाकर नहर में चिप्पी गंगा जल से भर ली। उसमें से थोड़ा जल आप पीकर कृष्ण जी को आज्ञा की—ले जल पी लो। श्री कृष्ण जी ने अपने मुँह को हाथ लगा लिया। ऊपर से हजूर ने चिप्पी से जल डाला। जल क्या डाला मानों बिना किसी चीर-फाड़ के दूरबीन ऑप्रेशन कर दिया। पानी पीने के बाद कृष्ण जी से पूछा—हाथ लगाकर बताओ कि पत्थरी कहाँ है? महाराज अब कहीं दिखाई नहीं दे रही। अच्छा—गा हरि के गुण। उसके पश्चात् संत कृष्ण जी कई वर्ष जिए, लेकिन फिर वह दर्द कभी नहीं हुआ।

यात्रा

1980 के जून मास का ज़िक्र है जब हजूर विरक्त महाराज जी गोराया रुके हुए थे। संत गोपाल सिंह जी की पुण्य तिथि बाईस आषाढ़ को मनाई जा चुकी है लेकिन प्रेमी संगत की ओर से कुटिया में अखण्ड पाठ साहिब निरंतर हो रहे हैं। गुरु का लंगर भी उसी प्रकार प्रवाहित है।

आज करनाल से भगत लॅभामल जी काफ़ी संगत को साथ लेकर दर्शनार्थ गोराया आए। एक कनस्तर बड़ी सुन्दर पंजीरी बनाकर और उसमें बादाम, काजू और किशमिश डलाकर हजूर के चरणों में भेंट किया। आगे से हजूर ने आज्ञा दी—इसको गाड़ी में ही रख ले। सायं को सूरी को कहा कि कल को गुरु चरणों की धूलि मस्तक को लगानी है इसलिए प्रातः पाँच बजे को तैयारी कर लेना। सूरी ने प्रार्थना की महाराज! आज्ञा हो तो लंगर भी तैयार करके साथ ले चलें? आज्ञा हुई कि दाल सब्जी कुछ नहीं बनाना। केवल सादे प्रसादे बना लो और साथ में प्याज़ ले लो। करनाल वालों सहित यात्रा पर जाने के लिए लगभग पंद्रह गाड़ियाँ हो गईं। प्रातः लगभग पाँच बजे गोराया कुटिया से अरदास करके प्रस्थान कर दिया। धीरे-धीरे आठ, साढ़े आठ बजे के लगभग जा पहुँचे श्री गुरु रामदास जी के चरणों में हरिमंदिर साहिब श्री अमृतसर। दिलीप सिंह दौद की ड्यूटी लगाई कि जिस भी गुरु स्थान पर जाएँ एक सौ एक रुपए का कड़ाह प्रसाद सब स्थानों पर कराना है। अमृतसर पहुँचकर पावन सरोवर के अमृत जल में हजूर ने केशी स्नान किया। लगभग सत्तर-अस्सी व्यक्तियों की संगत थी, उनमें से भी अधिक ने ऐसा ही किया। हरिमंदिर साहिब नमस्कार करके श्री गुरु रामदास साहिब और श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी की पावन चरण धूलि मस्तक को लगाई। वहाँ बैठकर कुछ समय ईश्वरीय वाणी का रसास्वादन किया, उपरांत 'छेहरटा साहिब' के लिए प्रस्थान किया। वहाँ जाकर सारी संगत को बिठाकर 'छेरहटा साहिब' का इतिहास हजूर ने सुनाया और उसके उपरान्त आज्ञा की कि श्री हरगोबिन्द महाराज जी के पावन स्थान का जल, प्रसाद स्वरूप हमारी चिप्पी से सारी संगत को छका दो। देखो! अब अलौकिक प्रीतम इस बहाने क्या लीला दिखा रहा है। जल तो गुरु कृपा से पहले ही पवित्र था, लेकिन इसमें दो रंग और भर रहा है। वे दो रंग कौन से हैं? चिप्पी अलौकिक प्रीतम की और वितरित करने वाला उनका राजकुमार राम जी। सबको तृप्त करके अब आगे को प्रस्थान किया। धीरे-धीरे यात्रा करते-करते, श्री सन्न साहिब के दर्शन करते हुए बाबा बुड्ढा जी की बीड़ में पहुँच गए। वहाँ फिर सरोवर में स्नान करके सबको आज्ञा की कि सब संगत बाबा बुड्ढा के चरणों में कुछ देर के लिए बैठ जाओ, क्योंकि जिस स्थान पर जाओ—वहाँ बैठकर उपस्थिति अवश्य लगाओ, बिना बैठे उपस्थिति नहीं लगती। चाहे थोड़े समय के लिए ही सही, लेकिन बैठो अवश्य। फिर वहाँ से प्रस्थान करके तरन-तारन आ पहुँचे। आगे कार सेवा चल रही थी। सबको आज्ञा दी कि मिट्टी की पाँच-पाँच टोकरियाँ सिर पर उठाकर फैंको। तरन-तारन साहिब थोड़ा सेवा में भाग लेकर और पावन सरोवर में स्नान करके अब आगे जा पहुँचे श्री गुरु अंगद देव के चरणों में खडूर साहिब। संगत तो पहले ही सोच रही थी कि शायद बाबा बुड्ढा की बीड़ लंगर छकने की आज्ञा करेंगे, क्योंकि सादे प्रसादे (रूखा भोजन) साथ लेकर आने की सम्भवतः इसलिए ही आज्ञा की थी, लेकिन वहाँ भी कोई आज्ञा नहीं हुई। दिन काफ़ी चढ़ आया था, संगत को भूख भी लग गई थी और गुरु का लंगर भी साथ ही है पर देखो! छकने की आज्ञा नहीं हो रही इसलिए कौन जाने दाता की मौज को। खडूर साहिब से भी आगे प्रस्थान की आज्ञा कर दी। अब वहाँ जा पहुँचे—

लगभग दो मील दूर उस स्थान पर जहाँ निराश्रितों के आश्रय श्री गुरु अमरदास जी गागर लेकर वापिस आते आराम करते थे। जिस समय इस पवित्र स्थान पर पहुँचे तो आगे एक कार सेवा करने वालों का सेवादार टोकरी लेकर बैठा था। उसने देखते ही शोर कर दिया—परमेश्वर आ गया ओए, आओ सब दर्शन कर लो। शायद यह प्रेमी हजूर की महिमा से पहले परिचित था। बहुत प्रेम के साथ चरणों पर गिरकर प्रार्थना की—महाराज! लंगर छक लो। हजूर ने पूछा—लंगर तैयार है? प्रेमी ने प्रार्थना की कि महाराज सब्जी तैयार है। प्रसादे जल्दी से अभी बना लेते हैं। हजूर बोले—प्रसादे बनाने की आवश्यकता नहीं। सब्जी एवं लस्सी ले आओ, प्रसादे हमारे पास हैं। अब संगत साथ में लंगर छक रही है साथ में चकित होकर सोच रही है कि धन्य है दाता। वे पहले ही जानते थे कि सब्जी आगे मिल जाएगी प्रसादे एवं प्याज साथ ले लो।

भगत लॅभामल को आज्ञा की कि कल वाली पंजीरी ले आ—जितनी संगत यहाँ लंगर छक रही है सबको बाँट दे। आज्ञानुसार ऐसा ही किया गया। खैर—सबने तृप्त होकर लंगर छका। हजूर बोले—यहाँ एक रात्रि अवश्य ठहरना चाहिए क्योंकि इस स्थान को बारह वर्ष अपनी कठोर साधना से गुरु अमरदास महाराज ने पवित्र किया है। अब इस पावन-स्थान से प्रस्थान करके श्री गोईदंवाल साहिब जा पहुँचे। पवित्र बावड़ी में नीचे उतरकर दाता ने स्नान किया और संगत को भी कहा। फिर समस्त गुरु स्थानों के दीदार करने के उपरांत सुलतानपुर की ओर प्रस्थान किया। सुलतानपुर पहुँचकर श्री गुरु नानक देव महाराज के पवित्र चरणधूलि से पवित्र हुई रेणु को मस्तक से लगाकर सायं को वापिस गोराया आ पहुँचे। संगत में से कोई सज्जन बड़ी मधुर वाणी में पढ़ रहा है—

सफल सफल भई सफल यात्रा॥
आवण जाण रहे मिले साधा॥

(धनासरी महला ५, अष्टपदी, पृष्ठ ६८७)

रामपुरा फूल

बरनाला भटिंडा मार्ग पर दोनों के मध्य एक बड़ा भारी गाँव है 'रामपुरा फूल'। बरनाला से लगभग तीस कि०मी० पश्चिम की ओर और भटिंडा से लगभग तीस कि०मी० पूर्व की ओर अर्थात् दोनों नगरों के मध्य स्थित है। यहाँ पाकिस्तान से आए संधू गोत्र का एक सम्पन्न नकई सरदार रहता है—बलविंदर सिंह। पूर्व संयोगवश बलविंदर सिंह का विवाह करनाल के समीप रम्बा गाँव के सरदार मधुसूदन सिंह वड़ैच की बेटी वशिंदर कौर के साथ हुआ। रम्बे वाला परिवार विरक्त महाराज जी का चरण सेवक था, इसलिए बलविंदर सिंह को भी इस परिवार के माध्यम से हजूर की चरण धूलि प्राप्त हो गई। बलविंदर सिंह जब भी रम्बा जाता तो करनाल जाकर हजूर के दर्शन अवश्य करता। फिर कुछ समय पश्चात् एक समय ऐसा भी आया जब सारे परिवार ने करनाल जाकर महाराज जी से नाम की ईश्वरीय दात भी प्राप्त कर ली। अब जब भी अथवा जहाँ कहीं भी बलविंदर सिंह महाराज जी के दर्शन करता है तो हजूर को रामपुरा फूल लेकर जाने के लिए प्रार्थना अवश्य करता है। आगे से हजूर भी कह देते हैं कि जब कभी समय संयोग बनेगा फिर अवश्य चलेंगे। अब एक दिन परमेश्वर ने समय संयोग बना दिया। हजूर अपनी मौज में धनौले रुके हुए थे। बलविंदर सिंह ने धनौला पहुँचकर हजूर के चरणों में

रामपुरा जाने के लिए प्रार्थना की। हजूर-बलविंदर सिंह की प्रार्थना स्वीकार कर अपने प्यारे सेवकों-राम जी और छोटू जी को साथ लेकर बलविंदर सिंह की कार में सवार होकर पहुँच गए रामपुरे फूल। कोठी में जलपान करने के पश्चात् हजूर ने आज्ञा की—हम कोठी में नहीं ठहरेंगे, बाहर खेतों में किसी ट्यूबवैल पर रहेंगे। बलविंदर सिंह ने बाहर खेत में बने एक कमरे को साफ किया जिसमें सम्भवत: कोई नौकर रहता था। महाराज जी का आसन उस कमरे में लगवा दिया। दूसरे दिन आपने आज्ञा की कि साबो की तलवंडी (दमदमा साहिब) के दर्शन करने का हमारा विचार है। बलविंदर सिंह ने प्रार्थना की—महाराज आपने बड़ी कृपा की, दास को कार की सेवा मिल गई जब आपकी आज्ञा हो—उस समय चलेंगे। हजूर की आज्ञानुसार उसी दिन चल पड़े। दशमेश पिता की पावन स्मृति में बने पावन स्थानों के दर्शन दीदार करके सायं को वापिस आ गए। दूसरे दिन 'फूल माराज' गुरुसर के पवित्र स्थान के दर्शन किए। यह वह स्थान है जहाँ मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी ने लॅला बेग के साथ भारी युद्ध करके विजय प्राप्त की थी। यह स्थान रामपुरा फूल के समीप ही पड़ता है। इस स्थान पर उस समय कार सेवा चल रही थी इसलिए हजूर के साथ आए प्रेमी राम जी एवं छोटू जी को आज्ञा दी कि कार सेवा में भाग लो। प्रेमियों ने आज्ञा मानकर टोकरियाँ उठा लीं और अगली आज्ञा अर्थात् वापिस चलते समय तक टोकरी उठाने की सेवा करके संगत सहित रामपुरा आ गए। आज जब रात हुई तो महाराज उस खेत के कमरे में आराम कर रहे थे। कुछ रात व्यतीत होने पर रामपुरा गाँव के कुछ प्रेमी यह जानकर कि कोई संत आए हुए हैं रात को दर्शनार्थ आएँ। आगे से सेवादार ने कह दिया कि इस समय तो महाराज आराम कर रहे हैं कल दिन में आना। अगले दिन सेवादारों ने हजूर को बताया कि रात को रामपुरा गाँव में से कुछ संगत दर्शन करने के लिए आई थी, लेकिन हमने यह कहकर वापिस भेज दिया कि महाराज विश्राम कर रहे हैं, कल आना। हजूर बोले, उन्हें वापिस क्यों भेजना था—हमें बता दिया होता। खैर—दूसरे दिन रात वाले प्रेमी फिर दर्शन करने के लिए आए। हजूर ने सबको प्रेम से बैठाया, सेवकों ने जलपान छकाया उपरान्त हजूर ने कुछ पारमार्थिक वचन करते हुए घर में सेवा की महानता पर प्रकाश डाला कि सेवा करके किस प्रकार ऊँचे पद की प्राप्ति की जा सकती है। सेवा की महानता बताकर पूछा, कल हम 'गुरुसर' गए थे, वहाँ जाकर देखा गुरुघर की सेवा चल रही थी। क्या तुम उस सेवा का लाभ उठाने के लिए वहाँ जाते हो? प्रेमी बोले महाराज—हम तो कभी गए नहीं। आज्ञा हुई—क्यों? प्रेमियों ने प्रार्थना की महाराज यह तो 'बाहिये' के लोगों का स्थान है इसलिए वे ही सेवा करते हैं। हजूर बोले—गुरु साहिब जी कोई अकेले बाहिये के गुरु तो नहीं थे। वे तो प्राणी मात्र के गुरु थे। उन्होंने जो युद्ध किए—वे किसी एकेले दुकेले के भले के लिए नहीं किए—अपितु अत्याचार की जड़ें उखाड़कर प्रत्येक प्राणी मात्र के भले के लिए किए सबको सुखदायक धर्म का राज स्थिर करने के लिए किए इसलिए उनकी स्मृति के बन रहे स्थान की सेवा में भाग न लेकर उनसे विमुख होना है इसलिए हम सबका यह कर्त्तव्य है कि वहाँ चल रही सेवा में तन, मन, धन से जुड़कर मनुष्य जन्म की सफलता का रहस्य उद्‌घाटित कर सकते हैं—जो कि गुरु-शरण एवं गुरु के सम्मुख हुए ही सम्भव है। गुरु शरण, गुरु सेवा के बिना मनुष्य जन्म असफल ही नहीं अपितु व्यर्थ है। प्रेमियों में से एक सज्जन के पास राइफल थी। उसने प्रार्थना की—महाराज! अब हम अवश्य जाया करेंगे—सेवा करने के लिए। वे सज्जन तो बातचीत करके वापिस चले गए। हजूर बोले ऐसे झगड़ालु स्वभाव वाले व्यक्तियों में हठ का होना तो स्वाभाविक ही है इसलिए ये रजोगुणी स्वभाव वाले होने के कारण जिस ओर लग जाएँ—वहाँ पूरी शक्ति से लग जाते हैं। अब उजागर सिंह सूरी हजूर को बार-बार प्रार्थनाएँ कर रहा है—गोराया जाने के लिए। हजूर बोले—ये

मालवा के लोग छल कपट से रहित होने के कारण आधे महात्मा तो वैसे ही होते हैं? मन करता है यहाँ दो-चार दिन और रहे, लेकिन अब सूरी रहने नहीं देता। चल भाई—फिर ले चल गोराया।*

श्रद्धा एवं शरण

एक बार हजूर गाँव चौधरी माजरा ठहरे हुए थे सरदार गुरनाम सिंह खोख वाले के ट्यूबवैल पर। साथ ही बखतौर सिंह का बाग था। गरमी की ऋतु होने के कारण पूरा दिन उस बाग में बैठे पोथी पढ़ाते रहते थे। पोथी पढ़ने वाला प्रेमी भी प्रतिदिन प्रात: से सायं तक चरणों में बैठकर पोथी पढ़ता रहता है, लेकिन रात्रि को कभी-कभी ठहरता है। आज जब सायं को पोथी का पढ़ना बंद हुआ तो हजूर चारपाई से उठने लगे। शरीर पर वृद्धावस्था का बल बढ़ जाने के कारण उठते समय शरीर थोड़ा हिल सा गया। महाराज स्वाभाविक बोले—ओह! शरीर ससुरा बूढ़ा हो चला है। समीप खड़ा एक प्रेमी बोला, महाराज! **गुरुमुख बुड्ढे कदे नाहीं** हजूर बोले—यह तो कबीर आदि की बात है—सारे गुरुमुख थोड़े हो जाते हैं? प्रेमी ने प्रार्थना की—महाराज! आप तो कबीर ही लग रहे हो। हजूर बोले—भाई यह तेरी श्रद्धा है, श्रद्धा का फल भी होता है। प्रेमी सोच में पड़ गया कि श्रद्धा की क्या परिभाषा है। श्रद्धावान पुरुष में क्या गुण होते हैं जिसको धारण करने से फल की प्राप्ति हो जाती है।

खैर—कुछ दिनों के पश्चात् हजूर खोख पहुँच गए। वहाँ भी प्रतिदिन वैसे ही पोथी की विचार एवं सत्संग के अखाड़े लग गए। देखो! हजूर आज आप ही प्रेमी को श्रद्धा की परिभाषा समझा रहे हैं। हुआ ऐसे कि लोपे गाँव से भी कुछ प्रेमी सत्संग श्रवण करने के लिए प्रतिदिन आते थे। आज खोख आते मार्ग में वैद्य अमरजीत सिंह नाम का प्रेमी कहने लगा कि एक समय विरक्त महाराज जी ने खोख पुण्य तिथि समागम पर कथा करते कहा था कि ब्रह्मज्ञानी महापुरुष की ओर श्रद्धा से उठाया गया एक पग से एक अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त हो जाता है इसलिए उनके ही बताए नुस्खे अनुसार आज मैं हजूर के चरणों में प्रार्थना करूँगा कि महाराज! मेरा शरीर स्वस्थ नहीं रहता, मैं बड़ी श्रद्धा के साथ आपके चरणों में आया हूँ, इसलिए कृपा करो, मेरे लोपे गाँव तक के कदम गिन लो और मुझे उनका फल आज ही देने की कृपा करो ताकि मेरा शरीर स्वस्थ हो जाए। साथ जा रहे प्रेमियों ने कहा कि ठीक है, प्रार्थना कर लेना! वे तो दयालु कृपालु होते हैं, मन में कृपा का उदय हो गया तो उपकृत कर देंगे—समस्त निधियों से। मार्ग में इस प्रकार बातें करते पहुँच गए—घट घट के जानने वाले दाते के श्री चरणों में। यह प्रेमी वैद्य अमरजीत सिंह साधुओं का संगी होने के कारण कुछ वेदांत शब्दों का भी ज्ञाता था इसलिए कुछ प्रश्न शंकाएँ करने का भी इसका स्वभाव था। खैर—पोथी का अध्ययन आरम्भ हुआ। हजूर भी अपने दयालु स्वभाव के अनुसार प्रत्येक विषय को बड़े सुचारु ढंग से समझा रहे थे। इस वैद्य ने प्रश्न किया महाराज! ज्ञानवान् पुरुष संकल्प शून्य अवस्था में स्थित होता है क्योंकि संकल्प-विकल्प करना अन्त:करण का धर्म है। तत्त्वदर्शी अन्त:करण के धर्मों से अलग आत्मा में स्थित होता है फिर संकल्प उत्पन्न हुए बिना, समीप आए साधकों एवं सांसारिकों द्वारा किए गए प्रश्नों का उत्तर कैसे देता है? वैद्य की शंका सुनकर हजूर थोड़े समय के लिए मौन हो गए? थोड़े समय पश्चात् मुस्कुराते हुए बोले—कोई एक ऊँट के ऊपर लकड़ी लादे जा रहा था। लकड़ियों का भार अधिक होने के कारण ऊँट बैठ गया। ऊँट के स्वामी ने बहुत प्रयत्न

* *रामपुरा फूल वाले वही प्रेमी फिर आज्ञा मानकर प्रति सप्ताह एक दिन* 'गुरुसर मराज़' सेवार्थ जाने के लिए पक्की तौर पर जाने लग गए।

किया उसको उठाने का, लेकिन असफल रहा। वे परेशान हो गया। इधर-उधर देखने लगा। इतने में कोई एक बुद्धिमान पुरुष मार्ग में चलता हुआ वहाँ आ पहुँचा। ऊँट वाले को व्याकुल देखकर पूछा—क्या बात है? ऊँट वाले ने बताया कि मेरा ऊँट बैठ गया है और मेरे समस्त यत्नों के बावजूद यह उठ नहीं रहा। बुद्धिमान यात्री ने उस बेचारे पर दया करके ऊँट ऊपर लादी लकड़ियों में से एक लकड़ी खींच कर ऊँट को मार दी। ऊँट एकाएक उठ खड़ा हुआ और उस सज्जन ने वह लकड़ी भी जिसके साथ ऊँट को उठाया था ऊँट ऊपर लादी लकड़ियों में ही फँसा दी अर्थात् ऊँट वाली लकड़ियों के साथ ही ऊँट को उठा दिया—फिर बता उसने ऊँट को उठाने के लिए क्या किया? ऊँट की लकड़ियों में से एक लकड़ी लेकर उसको उठा दिया। आप तो पीछे से रिक्त हाथ आ रहा था। ऊँट वाले का कार्य करके आगे को रिक्त हाथ ही चला गया। इसी प्रकार सांसारिक सुखों-दु:खों के सताए जीव, शान्तचित्त पुरुषों के पास आते हैं। महापुरुष उनके ही संकल्पों-विकल्पों में से थोड़ा बहुत संकेत लेकर उनकी शंकाएँ निवृत्त कर देते हैं। आप पहले भी शान्त होते हैं और बाद में भी शान्त और जीव के दु:खों सुखों से निर्लेप रहते हैं। ऐसे विचार-विमर्श करते सूर्य अस्त होने को आया। उधर वैद्य जी भी पद-फल माँगने वाली बात भूल गए। हज़ूर ने आज्ञा दी जाओ भाई अब घरों को। प्रेमी बारी-बारी नमस्कार करके पीछे हटते गए। तब यह प्रेमी वैद्य अमरजीत सिंह नमस्कार करने लगा तो इसने प्रार्थना की—महाराज बहुत श्रद्धा से आया हूँ, कृपा करो। हज़ूर ने उनकी प्रार्थना की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वैद्य जी ने समझा कि सम्भवत: महाराज जी ने मेरी बात सुनी नहीं—इसलिए फिर दोबारा वही प्रार्थना की—महाराज कृपा कर दो। बड़ी श्रद्धा से आया हूँ। हज़ूर ने फिर भी उसकी ओर कोई ध्यान न दिया बल्कि समीप खड़े किसी दूसरे व्यक्ति के साथ बातें करते रहे। वैद्य जी ने अब तीसरी बार फिर वही प्रार्थना की महाराज! कृपा करो, बड़ी श्रद्धा से आपकी शरण में चलकर आया हूँ। श्रद्धा एवं शरण के मूल्य के ज्ञाता अब ऊँची आवाज़ में बोले—श्रद्धा के साथ आए थे अमरदास जी, गुरु अंगद देव महाराज जी की शरण में। बारह वर्ष गागरें उठाई थी उलटे पाँव, एक दिन भी गैर-हाज़िरी नहीं हुई। अब तुम बताओ अपनी श्रद्धा का हाल? वैद्य जी चुप होकर पीछे हट गए। मार्ग में साथ में प्रेमियों ने पूछा—पद-फल मांगा कि नहीं—क्या बात हुई? वैद्य जी कहने लगे—मैं तो भूल गया था। उस समय याद ही नहीं आया। प्रेमियों ने कहा तेरे संकल्पों को जानते हुए हज़ूर ने उत्तर तो दे दिया कि श्रद्धा से उठाया कदम का फल तो असीम है, लेकिन श्रद्धा गुरु अमरदास के समान होनी चाहिए।

बाबा जगत सिंह

ऊपर संदर्भ श्रद्धा और शरण का चल रहा है जिसका एक और उदाहरण है—जगत सिंह जी मिस्त्री। जगत सिंह मिस्त्री जो करनाल में राज मिस्त्री का काम करता था वह बार-बार आकर हज़ूर के चरणों में प्रार्थना करता, महाराज! कृपा करो—संसार के कष्टों से त्राण मिल जाए। काम करने को अब मन नहीं करता क्योंकि आयु व्यतीत होकर वृद्धावस्था आ गई है जो शेष है हज़ूर के चरणों में व्यतीत हो जाए। कृपा करो—चरण-शरण से उपकृत करो। हज़ूर कोई उत्तर न देते—मौन रहते। जगत सिंह बार-बार आकर यही प्रार्थना करते रहते, लेकिन हज़ूर सुनकर नज़र अंदाज कर देते। काफ़ी समय से प्रार्थना कर रहे जगत सिंह का प्रार्थना-पत्र शायद आज स्वीकार हो गया—दाते के दरबार में। परमेश्वर ने संयोग बना दिया कि जगत सिंह अरबन एस्टेट में किसी का मकान बना रहा था। प्रभु की लीला कि तीसरे पहर मालिक मकान का सीमेंट समाप्त हो गया।

सीमेंट का अभाव चल रहा था और सरलता से प्राप्त नहीं होता था। ज़रूरतमंद व्यक्ति ब्लैक आदि में इधर-उधर से प्राप्त करते थे वह भी चोरी-छिपे रात-बेरात के समय। मालिक मकान ने राज-मजदूरों की छुट्टी कर दी कि कल तक मैं सीमेंट का कोई प्रबन्ध कर लूँगा, फिर काम आरम्भ करेंगे। जगत सिंह छुट्टी करके हजूर के चरणों में कुटिया पहुँच गया। नमस्कार करके प्रार्थना की—गरीब निवाज़! कृपा करो मैं बड़ी श्रद्धा से आया हूँ आपके चरणों में। संसार-कष्ट से त्राण दिलाओ। हजूर ने आज्ञा कर दी—जाओ लंगर में सेवा संभालो। जगत सिंह ने लंगर में सेवा आरम्भ कर दी। सामर्थ्य के अनुरूप सेवा करता रहता। कुछ समय पश्चात् हजूर पंजाब चले गए। वहाँ भी अन्य संगत की भाँति करनाल की संगत भी दर्शन के लिए आ-जा रही थी। एक दिन जगत सिंह के मन में आया कि अन्य सब संगत हजूर के दर्शन करने जाती रहती है, मैं भी एक दिन जाकर आऊँ। यह सोचकर पंजाब को चल पड़ा। हजूर उस समय नाभा के समीप चौधरी माजरा रुके हुए थे। जगत सिंह गाड़ी द्वारा नाभा जा उतरा, वहाँ लगभग तीन कि०मी० का पैदल सफर करके पहुँच गया चौधरी माजरा। आगे करम सिंह ने बताया कि महाराज तो आज थोड़ा समय पहले 'तुरमरी' चले गए हैं, लेकिन उनका एक जोड़ा यहाँ रह गया है। मैं वह देने के लिए मोटर साइकिल पर जा रहा हूँ। आपने वहाँ जाना है तो मेरे साथ चले चलो। जगत सिंह तो आया ही था दर्शनों के लिए, इसलिए करम सिंह के साथ मोटर साइकिल पर 'तुरमरी' पहुँच गया। हजूर के चरणों में नमस्कार करते ही दाता ने डाँटकर कहा कि तुम क्यों आए हो? महाराज हजूर के दर्शनार्थ। महाराज ने फिर पूछा वहाँ तुम्हें जो सेवा दी थी वह कौन करेगा? महाराज! वहाँ और संगत है वह कर लेंगे। हजूर गरजकर बोले—बारह वर्षों में गुरु अमरदास जी ने यह कभी सोचा था कि आज जल की गागर कोई अन्य ले आएगा? जगत सिंह खड़ा काँपने लगा। हजूर ने हरनेक सिंह को आज्ञा दी—इसे अभी खन्ना से बस में बिठा दो। आज्ञानुसार ऐसा ही किया गया। जगत सिंह को बिना कुछ खाए पिए तुरन्त वापिस भिजवा दिया। जगत सिंह जी को श्रद्धा और शरण की परिभाषा अब पूरी तरह समझ में आ गई। फिर आजीवन सेवा करते अंत में कुर्सी पर बैठे ही प्राण त्याग दिए।

बुद्धि सीमा से परे की क्रीड़ा

समय 1981 के आरम्भ का है जब हजूर विरक्त महाराज जी करनाल कुटिया में ठहरकर प्रेमी सेवकों को मनवांछित पदार्थों के खजाने लुटा रहे थे। नाभा से एक सज्जन सरवण सिंह वड़ैच जो ट्रकों का काम करता है, हजूर के चरणों में करनाल पहुँचा। प्रार्थना की—महाराज! मैंने घर में अखण्ड पाठ साहिब रखना है, आप कृपा करके कोई तिथि देने की कृपा करो। हजूर के शुभ चरण स्पर्श से हमारा कार्य पूर्ण होगा। आप बोले—भाई बहुत अच्छा संकल्प है तुम्हारा। अवश्य पाठ साहिब रखो। सरवण सिंह ने फिर प्रार्थना की—महाराज आप कोई तिथि देने की कृपा करेंगे तभी रखेंगे, क्योंकि आप जी के कथा प्रवचन होने से संगत गुरुवाणी विचार का लाभ भी उठा लेगी। हजूर ने कुछ देर तक कोई उत्तर न दिया। कुछ समय पश्चात् गंभीर मुद्रा में बोले—ठीक है जैसे उस प्रभु की इच्छा होगी। आप माघ की इस तिथि का भोग रख लो। सरवण सिंह तो वापिस अपने समागम की तैयारी में लग गया, उधर हजूर की प्रतिदिन की वही क्रिया किसी न किसी प्रेमी के घर प्रतिदिन अखण्ड पाठ के भोग उपरान्त हजूर की कथा और गुरु के लंगर। फिर कुटिया में आकर किसी पोथी का विचार। इस प्रकार संगत आठों पहर लाभ उठा रही है। आज किसी प्रेमी के घर में अखण्ड पाठ का भोग पड़ा, उसके उपरान्त कथा कर रहे हैं, लेकिन ऐसे

प्रतीत हो रहा है जैसे शरीर एवं संसार से बेखबर हुए किसी उन्मनी अवस्था में व्याख्यान कर रहे हों। समाप्ति पर आप कुटिया पहुँच गए। एक प्रेमी ने प्रार्थना की—महाराज! आज तो ऐसे लग रहा था जैसे आप चौथे पद में स्थित होकर कथा कर रहे थे। प्रेमी की बात सुनकर हज़ूर ने पवित्र मुख से कोई वचन न किया। खैर—कल की दी तिथि के अनुसार सरवण सिंह नाभा के घर अखण्ड पाठ साहिब का भोग पड़ना हे। इसलिए सायं को महाराज जी खोख कुटिया पहुँच गए। आप जी के शरीर की ओर देखा आज ऐसे प्रतीत हो रहा है जैसे आप शरीर का अस्तित्व ही नहीं मान रहे, अपितु शरीर से नितांत असंग हुए किसी अज्ञात अवस्था में लीन हैं। पवित्र मुख से बातचीत चाहे अपनी मौज में करने लग जाते हैं, लेकिन किसी अन्य की बात में ध्यान नहीं देते, खाया-पिया भी कुछ नहीं। राम सिंह जी को पहले ही पता था कि अमुक तिथि को महाराज खोख गाँव आ रहे हैं इसलिए वे भी छुट्टी लेकर बरनाला से खोख पहुँचकर हज़ूर की सेवा में तत्पर हो गए। सारी रात आपने आज ऐसे ही व्यतीत की। शायद आज सोए नहीं। प्रातः नाभा से डॉक्टर राजवंत सिंह को लाया गया। उसने देखकर बताया कि मुझे लगता है कि महाराज जी के दोनों गुर्दे फेल हो गए हैं, लेकिन फिर भी यह टैस्ट कराने पर ही पूरा-पूरा पता लगेगा। डॉक्टर के बताए अनुसार रक्त, मूत्र आदि लेकर पटियाला कमल लैबोरेटरी में टैस्ट कराने पर उनमें गुर्दे की खराबी का ही संकेत मिला। महापुरुषों की ऐसी हालत देखकर करनाल एवं दिल्ली आदि स्थानों पर टेलिफोन के द्वारा संगत को जानकारी दे दी। दिन के कोई एक बजे के करीब हज़ूर ने आज्ञा दी कि गुरु ग्रन्थ साहिब में से देखकर गउड़ी राग का चौथा शब्द लिखकर ले आओ। हरनेक सिंह नाम का एक प्रेमी गुरुद्वारा साहिब जाकर लिखकर ले आया।

शब्द था—

पउणै पाणी अगनी का मेलु॥ चंचल चपल बुधि दा खेलु॥
नउ दरवाजै दसवा दुआरु॥ बुझु रे गिआनी एहु बीचारु ॥
कथता बकता सुनता सोई॥ आपु बीचारे सु गिआनी होई॥ रहाउ॥
देही माटी बोलै पऊणु। बुझु रे गिआनी मूआ है कऊणु॥
मूई सुरति बादु अहंकारु॥ ओहु न मूआ जो देखणहारु॥
जै कारणि तटि तीरथ जाही॥ रतन पदारथ घट ही माही॥
पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै॥ भीतरि होदी वसतु न जाणै॥
हऊ न मूआ मेरी मुई बलाइ॥ ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ॥
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ॥ मरता जाता नदरि न आइआ॥

(गउड़ी महला १, पृष्ठ १५२)

आज्ञा की—गुरनाम सिंह इस कागज़ को जेब में डाल ले। इस शब्द वाला खेल देख—सुनकर संगत में बेचैनी पैदा हो गई कि हज़ूर अवश्य ही शरीर का कोई खेल करने वाले हैं, क्योंकि इस शब्द का विचार शरीर का निषेध करके आत्मा की महत्ता और निर्लिप्तता का भाव उत्पन्न करता था। उधर हज़ूर अपनी मौज में कभी कोई गुरुवाणी की पंक्ति बोलना आरम्भ

कर देते थे कभी किसी पंक्ति के अर्थ। इसी हालत में सायं के लगभग चार बजे का समय हो गया। इतने में सरवण सिंह नाभा अपने घर समस्त भोग का समागम निपटाकर खोख कुटिया पहुँच गया—हजूर के पवित्र चरणों में। उसने कुछ वस्त्र हजूर के चरणों में रखकर नमस्कार की—उसके उपरान्त हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। महाराज उसकी ओर देखकर तुतलाती आवाज़ में बोले—ओ भाई! हम तुम्हारे भोग पर नहीं पहुँच सके। सरवण सिंह ने प्रार्थना की—महाराज! आप शरीर की ऐसी हालत में यहाँ पहुँच गए। मुझे यही बहुत खुशी है, मैं समझता हूँ मेरे घर ही पहुँच गए। आपकी कृपा से मेरा सारा कार्य अच्छी तरह से सम्पन्न हो गया, इसके लिए मेरा रोम-रोम आपके लिए कृतज्ञ है। कृपा करो—आपके चरणों में यह तुच्छ भेंट वस्त्र स्वीकार करो। हजूर बोले—हमारे पास तो आवश्यकतानुसार वस्त्र बहुत हैं। सरवण सिंह ने प्रार्थना की, महाराज मैं जानता हूँ। आप ज्ञान-अज्ञान अर्थात् सब प्रकार की निधियों के स्वामी हो, लेकिन मैं भी बहुत श्रद्धा के साथ लेकर आया हूँ, इसलिए मेरे कारण ही आप इसे स्वीकार कर लो। हजूर बोले—भाई! यदि हम किसी को दे दें तो तुम्हें कोई ऐतराज तो नहीं? महाराज, आपके पवित्र हाथों का स्पर्श जब इनको हो गया, बस मेरी श्रद्धा पूर्ण हो गई, फिर आप चाहें जिसे दो। हजूर ने उसी तरह चारपाई पर लेटे ही एक-एक करके चारपाई के आस-पास चरणों में खड़े सेवकों को प्रदान कर दिए। एक भगवा रंग की सुन्दर शाल और अन्य वस्त्र जिन प्रेमियों को प्राप्त हुए उन्होंने हजूर की कृपा समझकर बड़ी श्रद्धा से मस्तक को लगाया जैसे किसी अज्ञात निधि की प्राप्ति हो गई हो।

इतने में दिन अस्त हो गया। नाभा से डॉक्टर राजवंत सिंह ने आकर टैस्ट-परिणाम देखकर उपचार आरम्भ कर दिया। उससे कुछ समय पश्चात् ही दिल्ली से अमरीक चन्द और उसका भाई दर्शन लाल चावला एक बड़े डॉक्टर को साथ लेकर पहुँच गए। उस डॉक्टर ने भी टैस्ट-रिपोर्ट आदि देखकर यही बताया कि महाराज जी के दोनों गुर्दे निष्क्रिय हो गए हैं। डॉक्टर ने राजवंत वाली पर्ची की औषधि देखकर बताया कि उपचार यही ठीक है, लेकिन इनके साथ बातचीत कम करो, क्योंकि महाराज जितना कम बोलेंगे उतना ही अच्छा होगा। अब सारी संगत को बाहर रोक दिया। हजूर के पास मुख्य सेवक राम जी और एक दो अन्य प्रेमी रहे। शेष सब संगत को प्रार्थना करके घर भेज दिया। हजूर अपनी मौज में रात को कहने लगे, ऊपर जाना है। सेवकों ने प्रार्थना की, महाराज! डॉक्टर बता गया है कि आप जी अधिक हिले-डुले नहीं, इसलिए कृपा करके यहीं रहने की कृपा करो। उस समय ऐसा लग रहा था कि हजूर किसी दूसरे की बात नहीं सुन रहे—अपनी मौज में बार-बार यहीं कहना आरम्भ किया कि ऊपर जाना है। सेवकों ने आज्ञा के उल्लंघन के भय से आपकी चारपाई कंधों पर उठाई फिर धीरे-धीरे ऊपर चौबारे में ले गए। थोड़े समय तक तो हजूर अपनी मौज में तुतलाती आवाज़ में कुछ पारमार्थिक वचन बोलते रहे, लेकिन एकाएक फिर कहना आरम्भ कर दिया कि नीचे चलना है। सेवक डर रहे थे कि अधिक हिलने-जुलने से बीमारी बढ़ न जाए। लेकिन हजूर अपनी मौज में बार-बार कहे जा रहे हैं कि नीचे जाना है। सेवकों ने फिर आज्ञा को प्रिय जानकर डॉक्टर की परवाह न करते हुए चारपाई कंधों पर उठाकर नीचे ले आए। इसी प्रकार सारी रात्रि व्यतीत हो गई। प्रात:काल हो आया, दो दिन से कुछ खाया नहीं, दो रातें व्यतीत हो गईं, लेकिन आप क्षण भर के लिए सोए नहीं, लेकिन मुख पर किसी बीमारी का प्रभाव, अनिद्रा के कारण बेचैनी अथवा भूख आदि का कोई रंचमात्र भी संकेत नहीं। चेहरे पर वही दिव्यता, वही तेज, वही आभा झलक रही है। डॉक्टर तो कह रहे हैं कि हजूर के साथ बात कम करो, लेकिन आप अपनी मौज में लीन हुए

तुतलाती आवाज़ में गुरवाणी की कोई पंक्ति अथवा पारमार्थिक वचनों का उच्चारण कर रहे हैं। दिल्ली के डॉक्टर ने अमरीक चन्द को सलाह दी कि महाराज जी को देहली ले चलो, क्योंकि वहाँ चलकर ही उपयुक्त उपचार हो सकेगा। चावला भाइयों ने हजूर के चरणों में प्रार्थना की—महाराज! आप कृपा करके दिल्ली चलो! आपका शरीर स्वस्थ नहीं है, वहाँ चलकर इलाज कराएँगे। आपने उत्तर दिया कि देहली नहीं जाना। अमरीक चन्द एवं दर्शन लाल दोनों भाइयों ने बहुत प्रार्थनाएँ कीं, लेकिन आपने दिल्ली जाने के लिए हाँ नहीं की। अंततः दोनों भाई डॉक्टर को साथ लेकर दिल्ली वापिस आ गए। अब हजूर ने सेवादारों को आज्ञा की कि ऋषिकेश जाना है। सेवकों की कठिनाई और बढ़ गई। डॉक्टर कहते हैं कि महाराज जी को कम से कम बुलाना है और पूर्ण विश्राम आवश्यक है, लेकिन उधर ईश्वरीय आदेश की घंटी बार-बार बज रही है कि ऋषिकेश जाना है। सेवक डरते हैं कि यात्रा लम्बी है कही मार्ग में शरीर की हालत और न बिगड़ जाए। अब एक विकल्प सूझा कि कल तक समय निकाल लो, शायद हजूर कल अपनी मौज बदल लें और ऋषिकेश जाने का विचार त्याग दें। प्रार्थना की—महाराज! अब देर हो चुकी है, आगे रात्रि की यात्रा थोड़ी कठिन हो जाएगी इसलिए कल प्रातः चलेंगे, लेकिन हजूर तो सुनने अथवा देखने वाले शारीरिक अवस्था से ऊपर किसी अलौकिक मौज में बार-बार दोहरा रहे थे—ऋषिकेश जाना है। आपकी अवस्था को समझना बुद्धि की पहुँच से परे प्रतीत हो रहा है। पूरा-पूरा तो वे स्वयं ही जाने कि यह क्रीड़ा क्यों कर रहे हैं, लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा है कि प्रेमी को परीक्षा की अंतिम घाटी पार करा रहे हैं। उधर प्रेमी भी सेवा, भक्ति, परिश्रम इतनी लगन के साथ कर रहा है कि सेवा का रूप ही हो गया है। वह स्वयं तो भीतर-बाहर से बेसुध हुआ हर प्रकार की सीमाओं से ऊपर सेवा में लीन है, लेकिन देखने वाले अनुभव कर रहे हैं कि यह सज्जन इस परीक्षा में पूरे सौ प्रतिशत नम्बर लेकर पास होगा। खैर—पूरी-पूरी समझ तो समय आने पर ही लगेगी। हजूर को आज तीसरी रात्रि आ गई कुछ खाया नहीं और अपनी मौज मे जागते ही काट दी। इस अवस्था में सोता तो कोई भी नहीं, लेकिन शरीर को थोड़ा आराम तो देना ही होता है, लेकिन आज तो यह भी नहीं हो सका। उधर राम जी ने एक क्षण भी आराम नहीं किया। हर समय हजूर की सेवा में हाथ जोड़कर खड़े नजर आ रहे हैं। अब तीसरी रात्रि भी व्यतीत हुई लेकिन हजूर बार-बार दोहरा रहे हैं कि ऋषिकेश जाना है। इतने में सवेरा हो गया। अब आपने देखा कि ऋषिकेश जाने से टाल-मटोल कर रहे हैं, यह सोचकर आप चारपाई से उठने लगे। राम जी ने प्रार्थना की—महाराज! बाहर जाना है तो हम चारपाई पर ले चलते हैं। डॉक्टर ने कहा है कि आपने चारपाई से नीचे नहीं उतरना। हजूर बोले—आप तो लेकर जाते नहीं हैं—हम पैदल ही ऋषिकेश चले जाएँगे। हजूर का वचन सुनकर प्रेमियों का दिल भर आया। लोक-परलोक का स्वामी ऋषिकेश को पैदल जाए। अब जो भी हो—डॉक्टर कितना ही इनकार करे पर फिर भी ऋषिकेश चलने की तैयारी करो। हजूर के चरणों में प्रार्थना की, महाराज! अभी आधे घंटे में ही चलते हैं। बस घर से कार आ जाए। कार के आने तक वस्त्र आदि बाँधकर सारी तैयारी कर ली। पिछली सीट पर सिरहाने आदि लगाकर सुन्दर बिस्तर लगा लिया। उपरांत बहुत आराम से आप सुशोभित हो गए। चलने की हर प्रकार से तैयारी करके आज्ञा की कि ऋषिकेश की अरदास कर लो। अरदास के उपरांत राम जी भी सेवा के लिए हजूर के चरणों में बैठ गए। अरदास करके ऋषिकेश को प्रस्थान किया। जब रोहटीपुल पहुँचे हजूर ने आज्ञा की—राम! तेरी तो ड्यूटी है भाई तुम अपनी ड्यूटी पर जाओ। राम जी बोले—महाराज! मैंने छुट्टी ली हुई है, इसलिए कृपा करो कि हजूर के साथ ही चलूँ। महाराज बोले—अच्छा।

कार चलती गई। जब अम्बाला पहुँचे तो हजूर ने पूछा कहाँ चले जा रहे हो? महाराज, करनाल। थोड़ी दूर जाकर महाराज ने फिर पूछा? अरदास कहाँ की थी? महाराज अरदास ऋषिकेश की है। फिर ऋषिकेश ही चलो—भाई! दोबारा कार मोड़कर ऋषिकेश वाले मार्ग पर चल पड़े। इधर पीछे रही संगत व्याकुल होकर अपने-अपने ढंग से ऋषिकेश जाने लगी। संगत की व्याकुल मनोदशा देखकर जत्थेदार नछत्तर सिंह ने नाभा से ट्रक का प्रबन्ध कर लिया। इस प्रकार संगत भी ट्रक में सवार होकर जो कि संगत से पूरा भर चुका था, ऋषिकेश को चल पड़ी। हजूर की कार जब ऋषिकेश पहुँची तो आपने वचन किया—राम! तुम तो तंग जगह में बड़ी कठिनाई से आया है? राम जी बोले, महाराज! मैं तो आप जी की पवित्र गोद में बैठकर बैकुण्ठ जैसा आनन्द लेता आया हूँ। कृपा करो इसी प्रकार आप जी की पवित्र गोद का आनन्द सदा प्राप्त होता रहे। हजूर को निचली मंजिल में हाल के साथ लगते नौ नम्बर कमरे में सुशोभित किया गया। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि स्थानों पर संगत को जैसे-जैसे पता लगता गया अपने-अपने ढंग से ऋषिकेश पहुँचने लगे। गोराया से गुरिंदर सिंह छोटू जी भी राम जी के साथ हजूर की सेवा में डट गए। अब दोनों सज्जनों ने हजूर के चरणों में सेवा करते चौथी रात्रि भी गुजार दी, लेकिन हजूर की अपनी वही मौज, न नींद, न भूख, न शरीर का कोई ध्यान, ऐसी अवस्था में आप अपनी मौज में गुरुवाणी की कोई पंक्ति उच्चरित करने लग जाते हैं, कभी उसकी व्याख्या करने लग जाते हैं। रात्रि तो इसी प्रकार व्यतीत हो गई। अब हजूर की चारपाई बाहर निकालकर लाए। आप अपनी मौज में चारपाई पर लेटे हुए ही पंक्ति उच्चरित करने लगे—

गुरु मुखु देखि गुरु सुखु पायउ॥
गुरु मुखु देखि गुरु सुखु पायउ॥

बार-बार दोहरा रहे हैं, लेकिन तुतलाती आवाज़ में, फिर उस पंक्ति के अर्थ करने आरम्भ कर दिए—

गुरु का मुख देखकर बहुत सुख मिलता है। गुरु सम्मुख है। हमारे महाराज ने बहुत सी गायें पाली हैं। दूध बहुत होता था। हमारी ओर संकेत करके सेवादारों को कहते कि यह किसी से माँगता नहीं। इसको दूध पिलाते रहा करो। यह हमारा मौजी है, मौजी! इसकी सेवा का ध्यान रखा करो। अब हमारे महाराज सम्मुख हैं फिर वही पंक्ति दोहरानी आरम्भ कर दी—

गुरु मुखु देखि गुरु सुखु पायउ॥
गुरु मुखु देखि गुरु सुखु पायउ॥

फिर वही अर्थ।

इस प्रकार अपनी मौज में अपने गुरुदेव के पचास वर्ष पूर्व के किए कौतुक को याद करके ऐसे आश्चर्यचकित हो रहे हैं जैसे अभी प्रत्यक्ष होते देख रहे हों। डॉक्टर अपने ज्ञान के अनुसार देख रहे हैं—गुर्दे निष्क्रिय हो गए हैं, हजूर को बोलना नहीं चाहिए, लेकिन इधर लोक-परलोक के स्वामी जिस पर संसार की कोई विद्या लागू नहीं होती—शारीरिक दुःख-सुख से बहुत ऊपर अपनी मौज में उच्चारण कर रहे हैं—

गुरु मुखु देखि गुरु सुखु पायउ॥
गुरु मुखु देखि गुरु सुखु पायउ॥

इतने में अजमेर सिंह मिस्त्री खन्ना वाला कड़ाह प्रसाद की देग कटोरी में डालकर ले आया, प्रार्थना की—महाराज! आपने कृपा की 28 फरवरी की तिथि दी थी यहाँ अखण्ड पाठ साहिब की। उसका आज भोग पड़ चका है। अब संगत को पता चला कि महाराज खोख गाँव में उस रात को क्यों बार-बार कह रहे थे—ऋषिकेश जाने के लिए। इस प्रकार दिन भी व्यतीत हो गया। आगे पाँचवीं रात्रि आरम्भ हो गई, न नींद, न भूख लेकिन मुख पर वहीं आभा। न कोई शरीर को दु:ख और उसका चेहरे पर न कोई प्रभाव। अपनी मौज में उसी प्रकार गुरुवाणी की कोई पंक्ति का उच्चारण कर रहे हैं। दूसरी ओर धुरों साथ आए दरगाही कारक राम जी एवं छोटू जी भी सेवा में एकमात्र भी अन्तर नहीं आने देते। दोनों सज्जनों ने अपनी नींद और भूख गँवा कर संसार रूपी शरीर में बिल्कुल असंग होकर, विद्या का रूप ही बन गए हैं चाहे दोनों की मंजिल का जमीन-आसमान का फर्क हो। विद्यार्थी के आगे तो कोई उद्देश्य होता है—ऊँचे पद आदि का, लेकिन यहाँ कोई उद्देश्य नहीं, बस यदि कुछ है—तो गुरु-प्रेम। इससे बढ़कर न तो और कोई इच्छा है न उद्देश्य। अब अर्जुन को मीन दृष्टिगोचर नहीं हो रही, कुछ और भी नज़र नहीं आ रहा, यदि नज़र कहीं टिकी है तो केवल मछली की आँख पर। बस-इधर भी इसी प्रकार है—केवल गुरु-प्रेम और गुरु-सेवा। वह रात्रि भी आज इसी प्रकार व्यतीत हो गई। प्रात: आपको औषधि पान कराने लगे तो आज्ञा हुई कि औषधि नहीं लेनी है। राम जी ने प्रार्थना की—महाराज! औषधि ले लो। आप जी का शरीर स्वस्थ हो जाए। हजूर तुतलाती आवाज़ में बोले-इसमें शराब है, इसलिए हम नहीं खाएंगे। सेवकों ने डॉक्टर को पूछा, क्या इस औषधि में शराब है? डॉक्टर ने पढ़कर बताया कि इसमें शून्य प्वायंट चार प्रतिशत शराब है जो कि बड़ी न्यून मात्रा है, लेकिन डॉक्टर चकित है कि महापुरुषों की कितनी सूक्ष्म दृष्टि है, इतनी कम मात्रा को भी आप अनुभव कर रहे हैं। खैर इसी प्रकार पूरा दिन और अगली पूरी रात्रि फिर व्यतीत हो गई। प्रात: ही श्री अमरीक चन्द और दर्शन लाल चावला दोनों भाई जोध सिंह को साथ लेकर ऋषिकेश आ पहुँचे। अमरीक चन्द ने पूछा, यहाँ संगत में अमेध सिंह नाम का प्रेमी कौन है? उसने मुझे रात को डेढ़ बजे फोन किया है कि महाराज जी ने दिल्ली जाना है इसलिए अभी आ जाओ। मैंने उससे पूछा कि तुम कौन हो? कहाँ से बोल रहा है? फोन करने वाले ने बताया कि मैं अमेध सिंह ऋषिकेश से बोल रहा हूँ। जब तलाश की गई तो अमेध सिंह नाम का कोई व्यक्ति नहीं मिला। संगत को विश्वास हो गया कि इस नाम का पूरी संगत में कोई व्यक्ति नहीं। यह तो कोई दैवी खेल है। हजूर के चरणों में प्रार्थना की, महाराज दिल्ली चलो? आज्ञा हुई—हाँ! बस तुरंत तैयारी हो गई तो हजूर ने आज्ञा दी कि दरबार साहिब नमस्कार करके चलेंगे। आज्ञानुसार दो व्यक्ति महापुरुषों को कंधा देकर दरबार साहिब की ओर लेकर चले, तो महाराज तुतलाती आवाज़ में पढ़ रहे हैं—

मैं हों परम पुरख को दासा॥
देखन आइउ जगत तमासा॥

नमस्कार करने के उपरान्त दो कारों में दिल्ली चल पड़े। हरिद्वार जाकर हजूर ने आज्ञा दी—निर्मल बाग होकर जाना है। आज्ञानुसार बाग में गए, लेकिन अधिक रुके नहीं, आज्ञा लेकर आगे को चल पड़े। धीरे-धीरे यात्रा करते, सायं तक दिल्ली पहुँच गए—चावला की कोठी। चावला जी ने दिल्ली के प्रसिद्ध विशेषज्ञ डॉक्टरों को घर बुलाकर दिखाया। उन्होंने भी बताया कि ऐसा लगता है कि महापुरुषों के गुर्दे निष्क्रिय हो गए हैं। इनके सम्मुख कोई व्यक्ति नहीं जाना चाहिए, क्योंकि उसको देखते ही कुछ बोलना आरम्भ कर देते हैं। बोलने से दिल-दिमाग पर दबाव पड़ता है इसलिए एक सेवादार के बिना इनके कमरे में कोई दूसरा व्यक्ति नहीं जाना चाहिए।

डॉक्टर अपनी बुद्धि अथवा ज्ञान के बल पर बताते हैं, लेकिन लगता है कि हजूर ने तो यह लीला की ही इसलिए है कि किसी विशेष प्रेमी अथवा पूर्व संयोगी की इस विषमताओं से उबारकर बारहवानी का शुद्ध कंचन बनाकर सुन्दर मुकुट में सुशोभित करना है। हजूर की अलौकिक मौज तो उन्होंने किसी ईश्वरीय हुक्म में एक सप्ताह पूर्व आरम्भ की थी उसमें कोई अन्तर नहीं आ रहा। डॉक्टर अपनी पूर्ण शक्ति लगा रहे हैं, चावला जी वर्षा की भाँति पैसा बहा रहे हैं कि हजूर स्वस्थ हो जाएँ, लेकिन स्वस्थ तो तब हों जब बीमार हुए हों। थोड़ा ध्यानपूर्वक देखने से प्रतीत होता है कि हजूर की इन बातों के साथ कोई दूर का भी रिश्ता नहीं। वह तो शायद किसी प्रेमी का बड़ा कार्य सम्पूर्ण करने के लिए लगे हुए हैं। शरीर की ओर से असंग होकर सम्भवत: उस महान् कार्य की ओर लगे हुए हैं। फिर भी पूरी बात तो वे स्वयं ही जाने, क्योंकि हमारी आपकी बुद्धि में शायद परिणाम के बाद ज्ञात हो। खैर—अब दो ही प्रेमी भीतर सेवा में रहते हैं—राम जी एवं छोटू जी तीसरा कोई भीतर नहीं जाता। इस प्रकार दो-तीन दिन व्यतीत हो गए। आज हजूर ने आज्ञा दी, दौद जाना है, लेकिन चावला प्रेमी डॉक्टरों की बात मानते हुए टाल-मटोल करते रहते हैं कि यात्रा के कारण बीमारी बढ़ न जाए, लेकिन हजूर बार-बार हुक्म किए जा रहे हैं—दौद जाना है। सेवादार बेचारे दोनों ओर से मजबूर हैं। एक ओर तो महापुरुषों के शरीर से इतना गहरा प्रेम है कि हर समय परमेश्वर के सम्मुख प्रार्थनाएँ किए जा रहे हैं कि किसी भी मूल्य पर यह हमसे विलग न हो, हर हालत में स्वास्थ्य आनंद प्रसन्न रहें ताकि प्रत्यक्ष दर्शन सुलभ होते रहें। यह तभी सम्भव है यदि डॉक्टर की राय पर चला जाए, लेकिन डॉक्टर कह रहे हैं—यात्रा तो क्या, बोलने से भी शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है, लेकिन दूसरी ओर अलौकिक दाते को प्रत्यक्ष परमेश्वर मानते हुए आज्ञा उल्लंघन का भी डर है। आज तक प्रयत्न किया गया है कि आज्ञा का उल्लंघन न हो, क्योंकि आज्ञा पालन का अमृत रस देख चुके हैं। फिर भी शरीर से अत्यन्त प्रेम जानकर एक नर-लीला सूझी। हजूर की आज्ञा मानकर कार में बिठा लाए। थोड़ी दूर घूमाकर दर्शन लाल की कोठी में ले आए जोकि अमरीक चन्द की कोठी का ही एक भाग है अर्थात् एक ही प्लाट में दो कोठियाँ हैं। आपस में दोनों कोठियों की पीठ जुड़ी हुई है। थोड़ी दूर घुमाया इसलिए कि शायद हजूर को दौद का भ्रम दिया जा सके, लेकिन तीन लोक और चौदह भवन जिसकी हस्तामलक हों उसको कौन भ्रम में डाल सकता है। दर्शन लाल की कोठी में हजूर को कार से उतारकर जब ले गए तो आपने कठोर शब्दों में कहा, क्या यह दौद है? लेकिन अब आपने दौद जाने वाली बात छोड़ दी। क्यों छोड़ी? ये वे आप ही जाने। उस दिन महाराज अपनी मौज में सारा दिन कथा करते रहे, लेकिन कोई पता न लगा कि आज रविदास जयंती है। सायंकाल फिर अमरीक चन्द की कोठी ले गए, कई दिन इसी प्रकार उपचार होता रहा, क्योंकि अमरीक चन्द एक के बाद दूसरा बड़े से बड़ा डॉक्टर लाता रहा लेकिन कोई अन्तर नहीं आया।

चावला प्रेमी खर्च आदि की परवाह नहीं कर रहा, राम जी एवं छोटू जी अथक सेवा में दिन-रात लगे हैं। उधर हजूर की मौज में कोई अन्तर नहीं आ रहा। प्रेमियों ने जब कोई चारा न देखकर आपको होली फैमिली नर्सिंग होम में दाखिल करवा दिया। डॉक्टर सोबती इस विंग का मुख्य इन्चार्ज था। उसने हर प्रकार के टैस्ट कराए, अपनी समझ के अनुसार उपचार करता रहा, लेकिन कोई अन्तर नहीं आया। भगत लॅभामल जी ने अस्पताल के स्थल के साथ एक पार्क में लंगर आरम्भ कर दिया

जिसमें हर प्रकार के फल, चाय, भोजन आदि पदार्थों के खुले भण्डार बाँटे जा रहे हैं। अस्पताल के कर्मचारी और अन्य जरूरतमंद बिना किसी भेदभाव के छक रहे हैं। पंजाब, हरियाणा से संगत दर्शनार्थ आती रहती है, लेकिन भीतर जाने की किसी को आज्ञा नहीं। यदि भीतर जाते हैं तो केवल और केवल राम जी अथवा छोटू जी। हजूर के शरीर के स्वस्थ होने की अब अधिक आशा नज़र नहीं आ रही। संगत चिंताकुल है। अस्पताल आए भी कई दिन व्यतीत हो गए हैं, लेकिन कोई अन्तर नहीं आ रहा। राम जी एवं छोटू जी ने आपस में सलाह की कि यदि हजूर की कृपा हो गई, शरीर स्वस्थ हो गया तो शेष जीवन उनके श्री चरणों में ही व्यतीत करेंगे, लेकिन यदि प्रभु-इच्छा से ऐसा संभव न हुआ तो हरि स्मरण में कहीं एकांत समय व्यतीत करेंगे, लेकिन अब घर वापस नहीं जाना है और न ही कोई सांसारिक व्यवहार करना है। उस समय जोध सिंह जी भी पास ही खड़े थे। उन्होंने कहा कि मैं भी आपके साथ हूँ, लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे ये शायद इस बात से अनभिज्ञ हैं कि हजूर ने यह बीमारी वाला नाटक आपकी बादशाही की सर्जना हेतु किया है।

एक दिन ऋषिकेश से महंत नारायण सिंह और संत करतार सिंह जी आ गए तो महंत नारायण सिंह जी को भीतर जाने के लिए कुछ समय मिल गया। वे जब हजूर के समीप पहुँचे तो कई यंत्र आदि लगे देखकर आँखों में अश्रु भर आए। हजूर ने तुतलाती ज़बान में कहा—तुम रोते क्यों हो? हम तुम्हारे पास आएँगे—तेरे समस्त कार्य करके जाएँगे, तू चिंता न कर। यह सुनकर महंत जी को बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने बाहर आकर कुछ जिम्मेदार सज्जनों को महापुरुषों का संकेत बताया और जिस-जिस ने सुना कुछ प्रसन्नता भी अनुभव की, लेकिन शरीर की हालत में कुछ अन्तर न पड़ा देखकर फिर समस्त आशाओं पर पानी फिर जाता है।

अंततः एक दिन विभागाध्यक्ष डॉक्टर सोबती ने यह समझकर अपने हाथ खड़े कर दिए कि शरीर अब आखिरी श्वासों पर है। इस शरीर रूपी दीपक में तेल समाप्त हो चुका है, बस किसी समय भी बुझ सकता है। यह सोचकर सब यंत्र आदि उतार दिए, गेट खोल दिए ताकि संगत अपने प्यारे प्रियतम का दीदार कर सके। बस गेट खुलने की देर थी, संगत के भीतर आने के लिए भगदड़ मच गई, क्योंकि बाहर अफ़वाह उड़ गई कि हजूर शरीर त्याग रहे हैं—इसलिए लोग एक-दूसरे से आगे जाने का प्रयत्न करने लगे। भगत लॅभामल जी ने संगत को सम्बोधित किया—

प्रभु भावै बिनु सासु ते राखै॥
प्रभु भावै बिनु सासु ते राखै॥

ऐसा दो तीन बार कहा। जब संगत दर्शन कर चुकी तो सबको धीरे-धीरे बाहर भेज दिया। भीतर केवल दो-तीन सेवादार रह गए। अब हजूर को उठकर बैठे होने की कोशिश में देख राम जी ने प्रार्थना की—महाराज! बिठा दें? हजूर ने 'हाँ' में संकेत किया। राम जी तथा छोटू जी ने पकड़कर धीरे-धीरे सहारा दिया और फिर आस-पास सिरहाने लगाकर पकड़कर बिठा दिया। हजूर ने चाय पान की इच्छा व्यक्त की। सेवकों ने संकेत समझते ही जल्दी से जल्दी चाय बना ली। राम जी ने सोचा—हजूर को चारपाई पर लिटाकर चम्मच से मुख में चाय डालें, क्योंकि शरीर इतना निर्बल हो गया है कि स्वयं खाने-पीने से पूरी तरह असमर्थ हो रहा है, लेकिन प्रभु की लीला देखो—हजूर ने बैठे-बैठे ही पीने का संकेत किया। राम जी ने गिलास मुँह से लगाया तो महाराज ने काँपते हाथों से गिलास स्वयं पकड़ लिया और राम जी को संकेत किया—गिलास छोड़ने

श्रीमान् महंत राम सिंह महाराज जी के गद्दी नशीन समय पूज्य विरक्त महाराज
संत निक्का सिंह जी और निर्मल पंचायती अखाड़ा के श्री महंत साहिब श्रीमान महंत सुच्चा सिंह जी सुशोभित हैं

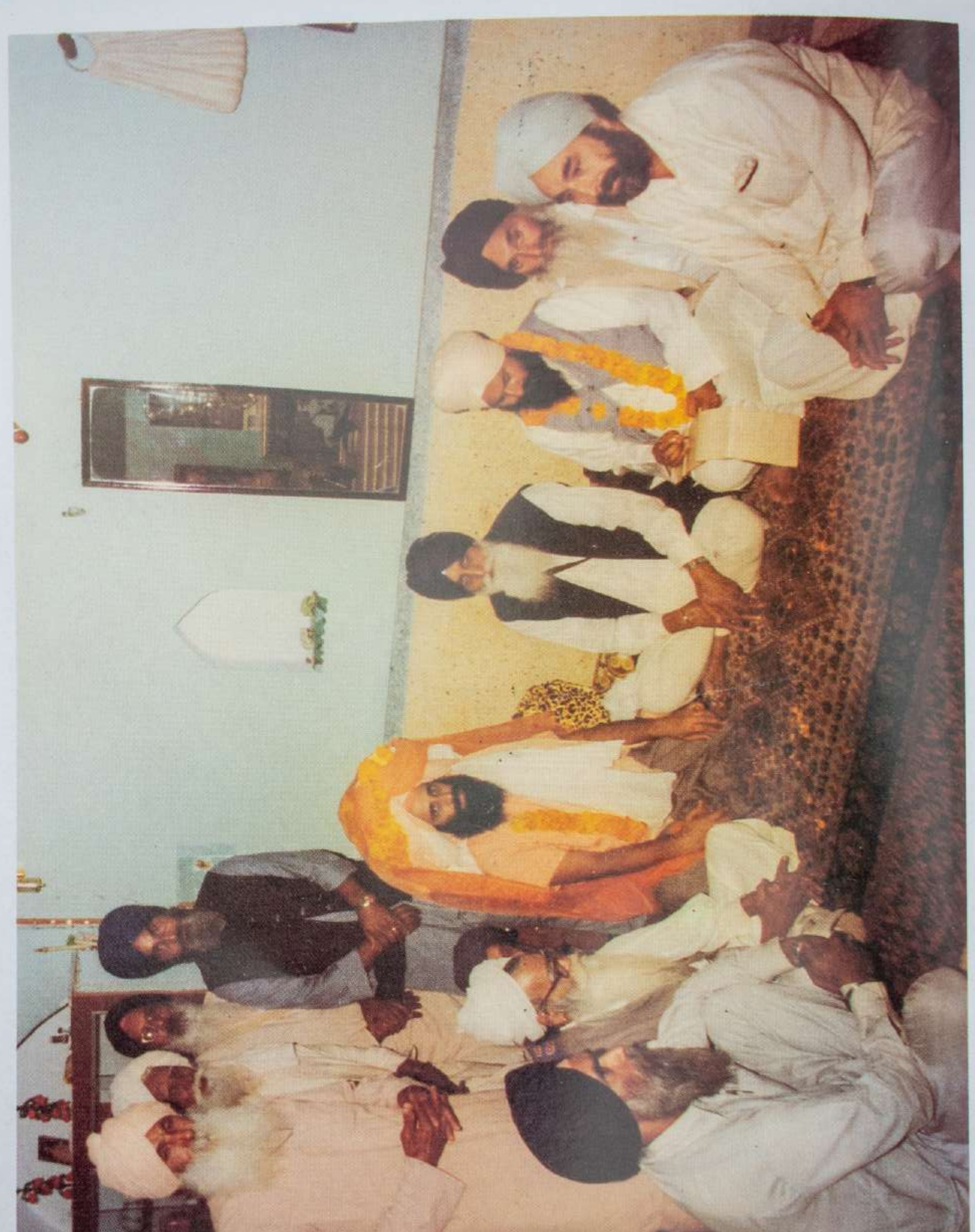

के लिए। उन्होंने संकेत समझकर हाथ गिलास के नीचे कर लिया ताकि गिलास गिरने पर संभाल लिया जाए। धीरे-धीरे आवश्यकतानुसार हजूर ने चाय पी ली। अब देखो—परमेश्वर की लीला। डॉक्टर कह रहा है कि दीपक बुझना ही चाहता है, लेकिन हरि-इच्छा दीपक ऐसे प्रकाशित हो गया जैसे तेल से भरा हो। जो वनस्पति कुछ क्षण पूर्व मुरझाती नज़र आ रही थी वह अब बसंत ऋतु की भाँति उठी। यही तो प्रभु का बड़ा गुण है—

छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे॥
रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे॥

(राग विहागड़ा महला ९, पृष्ठ ५३७)

यह समाचार सुनकर संगत में खुशी की लहर दौड़ गई। डॉक्टर एवं सारा स्टाफ चकित हो रहे हैं कि औषधि विज्ञान ने ऐसा निराला कौतुक पहली बार देखा है। आज पता लगा कि फ़कीर की मौज को विद्या नहीं जान सकती। खैर—दो-तीन दिन इसी रंग में व्यतीत हो गए। अब बैठ भी जाते हैं और चाय-पान भी कर लेते हैं मानों असचर्ज नाटक को धीरे-धीरे समेटना आरम्भ कर दिया। अब आप ने आज्ञा की—अस्पताल नहीं रहना और अस्पताल एवं डॉक्टरों की अब आवश्यकता नहीं रह गई थी, क्योंकि डॉक्टरी ज्ञान के अथवा पैसे खर्च कर शरीर बचाने के समस्त भ्रम समाप्त हो चुके थे। अब अमरीक चन्द की कोठी में जाने की बजाए उसकी फैक्टरी में आ गए। ऊपर कई कमरे बने हुए थे। उनमें से एक कमरे में आकर सुशोभित हो गए। सेवा में वही दो प्रेमी—जो मास, डेढ़ मास से डटे हुए थे—राम जी एवं छोटू जी और एक नर्स भी समय-समय हजूर को औषधि देने के लिए दरवाजे के बाहर कुर्सी पर पूरा दिन बैठी रहती है। धीरे-धीरे अब हजूर ने शरीर को महत्त्व देना आरम्भ कर दिया।

जैसे-जैसे महत्त्व दे रहे हैं वैसे-वैसे शरीर स्वस्थ भी होता जा रहा है। अब राम जी ने असीम सेवा करके पवित्र किए अपने हाथों से भोजन बनाकर छकाना भी आरम्भ कर दिया। दूर-समीप सब संगत को पता लग गया कि हजूर ठीक होकर चावला जी की फैक्टरी आ गए हैं। जैसे-जैसे पता लगता गया संगत भी दर्शनार्थ आनी आरम्भ हो गई। एक दिन चार प्रेमी पंजाब से भी दर्शन करने के लिए आए। जब सूर्यास्त के समय हजूर के चरणों में पहुँचकर नमस्कार की तो आपने बड़े सहज भाव से पूछा—कि भाई! अब तो हमारे शरीर के लिए अखण्ड पाठ नहीं करते हो? नहीं महाराज जी अब तो आप के दर्शनों के लिए आए हैं। अच्छा जाओ लंगर में चाय-पान कर लो। आज्ञा मानकर प्रेमी समीप के कमरे में चले गए। गुरनाम सिंह खोख, दिलीप सिंह दौद, पहले ही उस कमरे में बैठे थे। सब एक स्थान पर बैठकर हजूर की बातें करने लगे। लंगर के समय लंगर छक लिया। फिर उसी प्रकार बातें करनी आरम्भ कर दीं, क्योंकि पूर्ण तौर से प्रत्यक्ष दिखाई दे रही निराशा में आशा की किरण जो दोबारा आ गई! इसलिए सब लोग अत्यंत प्रसन्न थे। इतने में रात को लगभग दस बजे राम जी ने आकर एक प्रेमी को कहा कि हजूर बुला रहे हैं। प्रेमी ने हजूर के चरणों में पहुँचकर नमस्कार की। आगे से हजूर ने बैठ जाने के लिए हाथ का संकेत किया। प्रेमी चरणों में बैठ गया। कुछ मिनटों के पश्चात् महाराज जी ने पूछा—बात कैसे हुई? प्रेमी की समझ में नहीं आया, हजूर क्या पूछ रहे हैं। प्रार्थना की, महाराज! मैं समझा नहीं आप क्या पूछ रहे हो? हजूर बोले—भाई! हमारे शरीर के साथ क्या हुआ? प्रेमी ने बताया, महाराज! आपने सरवण सिंह ट्रक वाले को तिथि दी थी अखण्ड पाठ की, लेकिन खोख जाकर आपका शरीर बीमार हो गया। उसके पश्चात् ऋषिकेश, दिल्ली, अमरीक चन्द की कोठी और अस्पताल आदि स्थानों

का जितना प्रेमी को पता था—बताया। हजूर शान्त चित्त हो सुनते रहे। फिर बोले—तुम तो कहते हो खोख जाकर बीमार हुए, लेकिन हमें तो करनाल के बाद नहीं पता। हम वहाँ थे भी नहीं। प्रेमी सुनकर चकित हुआ, वहाँ थे भी नहीं? और कहाँ थे? इसका अभिप्राय है हजूर बीमार नहीं हुए? क्या कहीं और गए हुए थे? अथवा कोई कार्य कर रहे थे? ऐसे संकल्प प्रेमी के भीतर बड़ी तीव्र गति से घूम गए। खैर—कोई आधा घंटा महाराज अपनी मौज में प्रेमी के साथ उपरोक्त बातें करते रहे। अब आज्ञा की—जाओ अब आराम कर लो। प्रेमी कमरे में चला गया—राम जी फिर सेवा में आ गए। इस प्रकार कुछ दिन व्यतीत करने के पश्चात् शरीर की हालत काफ़ी ठीक हो गई। अब लगता है हजूर ने कहीं और किसी जगह जाने का मन बना लिया है क्योंकि विवाह का दिन समीप आ रहा है, इसलिए सारी तैयारी भी करनी है। यात्रा से पूर्व आप जी ने अब भार घटाना आरम्भ कर दिया। सबसे पहले आज्ञा की—इस नर्स की छुट्टी कर दो। आज्ञा मानकर चावला जी ने उस लड़की को जो हिसाब किताब था—देकर छुट्टी कर दी। फिर एक दो दिनों के पश्चात् छोटू जी को आज्ञा दी कि जा भाई अपना काम-काज देख! प्रार्थना की—महाराज! आपजी के चरणों की सेवा मिली हुई है, कृपा करो साथ ही रखो। आज्ञा हुई—ठीक है। अब घर जाओ। चरणों से विलग होने की यद्यपि मन की इच्छा नहीं थी, लेकिन आज्ञा का उल्लंघन भी कठिन था, इसलिए न चाहते हुए भी कड़वा घूँट भरना ही पड़ा।

अब रह गए राम जी, एक दिन उनको भी आज्ञा कर दी कि जाओ भाई अपनी ड्यूटी संभालो। राम जी के नेत्रों में जल भर आया, कंठ अवरुद्ध हो गया, कोई वचन नहीं बोल पा रहे, बस करबद्ध चरणों में खड़े हैं, नेत्रों में से जल प्रवाहित हो रहा है। कैसे कहें, जाने को मन नहीं करता? यह प्रार्थना तो आज से पहले बहुत बार कर चुके हैं, जिसकी आज तक सुनवाई नहीं हुई—आज कैसे होगी? बस प्लास्टिक की निर्जीव मूर्ति की भाँति अचल और करबद्ध खड़े हैं। भीतर से बार-बार साहस कर रहे हैं कि प्रार्थना करें, लेकिन फिर भीतर से ही आवाज़ आ जाती है—ईश्वरीय आज्ञा है, इसके आगे पेश नहीं चलेगी, लेकिन भीतर प्रेम की यह स्थिति है—

भई प्रीति नाह जाइ बखानी॥ को उपमा कछु दिउ न समानी॥
अलप पतंग मिृग की जानी॥ तिन ते तूरनता पहचानी॥
सीस देण की हुइ जि रजाई॥ पलक मातर कबहि ना बिलमाई॥

(सूरज प्रकाश)

दैवयोग से इतने में माता बिमला जी भीतर आ गए। दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना की—महाराज! कृपा करो, अब राम को अपने चरणों की ही नौकरी देने की कृपा करो। हजूर माता की प्रार्थना पर चुप रहे, कुछ नहीं बोले। थोड़ी देर बाद राम जी की ओर देखकर बोले—भाई बरनाला को तुम्हारी सीधी गाड़ी कब जाती है? राम जी अब समझ गए कि गवाही भी चाहे अपने आप ही पड़ गई है लेकिन फिर भी निर्णय पक्ष में नहीं हुआ। अब तो जाना ही पड़ेगा। हाथ जोड़े खड़े दृष्टि जब हजूर के पवित्र चेहरे की ओर घुमाई तो देखा कि हजूर मुस्कुरा रहे हैं, मानों संकेत कर रहे हैं, ड्यूटी पर चला जा फिर विवाह पर आ जाना। खैर—आज्ञा पाश में बद्ध चल पड़े राम जी बरनाले को। अब इधर मौजी शहनशाह ने भी दिल्ली को सदा-सदा के लिए विदा कहने का निर्णय कर लिया। चावला परिवार ने बहुत प्रार्थनाएँ कीं, महाराज! कृपा करो—कुछ दिन यहाँ और ठहरो, लेकिन अब प्रार्थना स्वीकार होने की कोई आशा नजर नहीं आ रही। अंततः आज्ञा को शिरोधार्य कर हजूर को गाड़ी

में बिठाकर करनाल की ओर चल दिए। आगे करनाल की संगत आपके आने की प्रतीक्षा इस प्रकार कर रही थी जैसे किसी समय अयोध्या निवासी कर रहे थे चौदह वर्षों बाद भगवान् राम की। करनाल बाई पास कुटिया तक झंडियाँ लगाकर बहुत सुन्दर सजाया गया है। संगत पुष्प वर्षा के लिए हाथों में पुष्प एवं स्तब्क लिए कुटिया के आगे ऐसे प्रतीक्षा कर रही है जैसे चकवी चन्द्र का। इतने में अलौकिक प्रीतम की कार उनको लेकर आ पहुँची करनाल कुटिया। आज से कुछ दिन पूर्व संगत जो निराश हो चुकी थी वे आज विशेष आनन्द का अनुभव कर रही है—उनके प्रत्यक्ष दर्शन करके। हजूर की देह—आरोग्यता के लिए यहाँ संगत की ओर से पहले ही अखण्ड पाठों का प्रवाह चल रहा था वह अभी भी उसी प्रकार प्रवाहित है। लंगर तो पहले भी यहाँ चलता ही रहता था, लेकिन अब स्वामी के यहाँ पहुँचने पर और भी विशिष्टताओं के साथ खुला चलने लगा। दर्शन करने के लिए संगत का तांता दिन भर लगा रहता है, लेकिन हजूर बात बहुत कम करते हैं। दूसरी ओर संगत भी अब उनके शारीरिक दर्शन से ही संतुष्ट नजर आ रही है। इस प्रकार कुछ दिन व्यतीत करने के पश्चात् हजूर ने आज्ञा की—कनखल जाना है। भगत लॅभामल जी और अन्य करनाल निवासी संगत यद्यपि यह नहीं चाहती थी कि हजूर करनाल से किसी अन्य स्थान पर जाएँ लेकिन आज्ञा के आगे शिरोधार्य होना ही पड़ा। अरदास करके कनखल को प्रस्थान किया। धीरे-धीरे यात्रा करते करनखल पहुँच गए। अब हजूर यहीं विराजमान हो गए, लेकिन ऐसे लग रहा है जैसे किसी विशेष कार्य के लिए यहाँ ठहरे हैं। पता लगने पर पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि स्थानों से संगत ने अब अपना रुख कनखल की ओर कर लिया। उधर राम जी ने भी सम्भवत: यह दिन कई वर्षों की भाँति ही व्यतीत किए। गुरु अर्जुन देव महाराज जी की विरह-व्याकुलता वाली पंक्ति—**'इक घड़ी न मिलते ता कलियुगु होता'** का बार-बार उच्चारण करते तीन दिन का अवकाश लेकर 16 मई 1981 को आ पहुँचे—अलौकिक प्रीतम के चरणों में कनखल।

सेवक की शंका

प्रेमी सेवक गुरु-सेवा में निमग्न हुआ मानों सेवा का रूप हो गया। सांसारिक व्यवहार थोड़ी बहुत ड्यूटी गुरु-आज्ञा में रहकर करनी पड़ रही है लेकिन ध्यान चौबीस घंटे गुरु-सेवा, गुरु-चरणों में बिंधा रहता है। शायद भाई साहिब भाई गुरदास जी की इस पउड़ी (श्लोक) का भाव समझ में आ गया, तभी बार-बार इसको गुन गुना रहा है—

पैरी पै पा खाक होई छड़ि मणी मनूरी॥ पाणी पखा पीहणा नित करै मजूरी॥
त्रपड़ झाड़ि विछाइंदा चुलि झोकि न झूरी॥ मुरदे वांगि मुरीदु होइ करि सिदक सबूरी॥
चंदनु होवै सिंमलहु फलु वासु हजूरी॥ पीर मुरीदा पिरहड़ी गुरमुखि मति पूरी॥

(भाई गुरदास २७/१९)

न भूख, न प्यास, न नींद है, न आलस्य, बस दिन-रात गुरु-सेवा में निमग्न है। मन और शरीर की यह हालत हो गई है—

किह सों कहै न सुन है बात॥ सेवा करे ततपर दिन रात॥
गुर सेवा को तप अस कीना॥ जग बिवहार छोरि सभ दीना॥

(सूरज प्रकाश)

एक दिन पहर रात रहती-गुरुदेव को स्नान करा रहे के कानों में एक मधुर-मधुर ध्वनि पड़ी तो ध्यान देकर इधर-उधर देखा। कोई प्रेमी अपने कमरे में बैठा भाई गुरदास जी की यह पउड़ी (श्लोक) को ऊँचे स्वर में पढ़ रहा है—

मुरदा होइ मुरीदु न गली होवणा। साबरु सिदकि सहीदु भरम भउ खोवणा।
गोला मुल खरीदु कारे जोवणा॥ ना तिसु भूख न नींद न खाणा सोवणा॥
पीहणि होइ जदीद पाणी ढोवना॥ पखे दी तागीद पग मलि धोवणा॥
सेवक होइ संजीदु न हसण रोवणा॥ दर दरवेस रसीदु पिरम रस भोवणा॥
चंद मुमारखि ईद पुगि खलोवणा॥

(वार ३ पउड़ी १८)

अंतिम पंक्ति बार-बार कानों में गूँज रही हैं—**चंद मुमारखि ईद पुगि खलोवणा**

उपरोक्त सेवा करने वाला ईद के चन्द्रमा की भाँति पूर्ण हो जाता है, लेकिन मुझे तो अभी अपने भीतर अपूर्णता दृष्टिगोचर हो रही है? हे परमेश्वर! तेरी कृपा के बिना इस मन ने मरना नहीं है। इतने में सुखमनी साहिब की पंक्ति कानों में गूँजने लगी **हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु।** क्या मेरी अभी संत के साथ भेंट नहीं हुई? क्योंकि मन में तो अभी प्रकाश हुआ नहीं, अविद्या मिटी नहीं। आप की कृपा से मैं दिन-रात रहता तो चरणों में ही हूँ और भेंट कैसी होती है? फिर आवाज़ आई **संतसंगि अंतिर प्रभू डीठा, नामु प्रभू का लागा मीठा।** क्या मुझे अभी संत-गुरु का सत्संग प्राप्त नहीं हुआ? मैं तो चरणों में रहकर सेवा करने को ही संग समझता था, लेकिन संग का गुरु अर्जुन देव महाराज चिह्न बता रहे हैं कि संत का संग होते ही हरि-दर्शन हो जाते हैं। इतने में गुरुदेव को स्नान कराकर चाय पिलाई, फिर आँगन में झाड़ू की सेवा आरम्भ की। कुछ देर उपरान्त कहीं दूर लाउड स्पीकर में हो रहे पाठ की आवाज़ कानों में गूँजी—

सतगुरि दयालि हरि नामु द्रिडाया, तिसु प्रसादि वसि पंच करे॥

हैं! जिस दिन मुझे गुरु ने नाम की कृपा की थी क्या उस दिन उसे पूरा दृढ़ नहीं किया था? दृढ़ नाम की तो गुरु साहिब निशानी बता रहे हैं कि पाँचों विकार उस समय वश में आ जाते हैं और फिर दृढ़ कैसे होता है? संत से भेंट हो जाना, संत का संग प्राप्त होना, नाम का दृढ़ हो जाना इन तीनों बातों में शायद कोई गहन रहस्य है जो मेरी समझ में नहीं आ रहा। मैं तो आज तक महापुरुषों के दर्शनमात्र को ही भेंट अथवा संग प्राप्त हुआ समझता था और 'नाम' एक बार गुरु से प्राप्त कर लेने को ही 'दृढ़ होना' समझता था, लेकिन आज तो गुरुवाणी की चोट ने मेरे सभी विश्वासों को झकझोर दिया है। इन शंकाओं को शायद मेरी बुद्धि पूरा-पूरा समझ नहीं पाए। चलो गुरुदेव से ही इन शंकाओं की निवृत्ति करवाएँ। यह सोचकर साधक महापुरुषों के चरणों में पहुँचा। अपने भीतर उठ रही शंकाओं की निवृत्ति हेतु। लेकिन फिर भीतर से आवाज़ आ रही है—गुरुदेव मेरे सभी संकल्पों इच्छाओं के साक्षी हैं—मेरा ऐसा कोई संकल्प नहीं जिस को गुरुदेव न जानते हों। सब जानते हुए भी यदि शंकाओं का समाधान नहीं कर रहे तो इसमें भी कोई रहस्य है। शायद इसमें मेरा भला है। जब थोड़ी देर बाद चरणों में बैठे प्रेमी ने महापुरुषों के पावन-मुख की ओर देखा-वे मुस्करा रहे हैं, मानों कह रहे हैं—भाई उतावला क्यों हो रहा है। यह कृपा द्वारा अनुभव का विषय है, बुद्धि का विषय नहीं, इसलिए समय की प्रतीक्षा कर।

अलौकिक विवाह

माहु जेठु भला प्रीतमु किउ बिसरै॥ थल तापहि सर भार सा धन बिनउ करै॥
धन बिनउ करेदी गुण सारेदी गुण सारी प्रभ भावा॥
साचै महिल रहै बैरागी आवण देहि त आवा॥
निमाणी निताणी हरि बिनु किउ पावै सुखु महली॥
नानक जेठि जाणै तिसु जैसी करमि मिलै गुण गहिली॥

(तुखारी बारह माह, पृष्ठ ११०८)

ज्येष्ठ मास होने के कारण भयंकर गरमी पड़ रही है। समस्त पृथ्वी गरमी में इस प्रकार तप रही है जैसे किसी ईर्ष्यालु पुरुष का हृदय, ईर्ष्या में तड़पता जलता रहता है। गरम लू चल रही है और स्त्री-पुरुषों के शरीरों को इस प्रकार तपा रही है जैसे कोई दुर्जन व्यक्ति अपने दुर्वचनों से हृदय को पीड़ा पहुँचाता है। सूर्य की तेज़ किरणों के साथ छोटे तालाबों एवं जोहड़ों का जल उनके जीवों—दादुर, मछलियाँ आदि ऐसे व्याकुल हैं जैसे भक्ति-हीन प्राणी अपने पाप-कर्मों का फल भोगने के लिए कुंभ आदि नरकों में व्याकुल और दु:खी होते हैं। गगन में बवंडर ऐसे उड़ रहे हैं जैसे पूर्ण गुरु की कृपा बिना बुद्धि विषयों की ओर उड़ा करती है। मृग तृष्णा के जल को देखकर (मृग जो प्यास से व्याकुल होते हैं) पानी पीने के लिए दौड़कर जाते हैं लेकिन न वहाँ पिपासा शान्त होती है और न ही सुखी होते हैं। उसी प्रकार मन विषयों की ओर सुख की इच्छा लेकर दौड़ता है, लेकिन न तो मन के अनुकूल विषय प्राप्त होते हैं और न ही तृप्ति मिलती है। पशु एवं मनुष्य वृक्षों के नीचे छाया में बैठकर ऐसे सुख प्राप्त करते हैं जैसे सांसारिक दु:खों से व्याकुल जिज्ञासु व्यक्ति सत्संग में बैठकर सुख प्राप्त करता है, ठंडा जल इस ऋतु में इस प्रकार अच्छा लगता है जैसे भाग्योदय पर गुरुवाणी अच्छी लगती है। इतनी गरमी के बावजूद भी निर्मल बाग शान्त एवं शीतलता वितरित कर रहा है, क्योंकि यहाँ सांसारिक विषयों की तेज़ अग्नि से बहुत दूर शान्तचित्त हरि का प्यारा सुशोभित है। उसके हिमगिरिवत् अचल एवं शान्त हृदय में शीतल एवं शांत लहरें बिखर कर दूर-दूर तक अपना प्रभाव डाल रही हैं। शायद यही कारण है कि पंजाब, हरियाणा आदि दूर-दूर स्थानों से संसार रूपी ज्येष्ठ के ताप से सताए कुछ प्रेमी यहाँ आकर मन्सूरी जैसी ठंडक प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार ही ज्येष्ठ-आषाढ़ जैसी सांसारिक तपस से काफ़ी आगे निकल चुका और पूरी-पूरी ठंड से थोड़ा पीछे आश्विन-कार्तिक के महीनों जैसा जीवन व्यतीत कर रहा एक प्रेमी 'राम जी' भी तीन दिन का अवकाश लेकर 16 मई को सांय यहाँ पहुँचा था जिसका 19 मई को आज अवकाश समाप्त हो रहा है। प्रतिदिन के समान प्रात: पहर-डेढ़ पहर पहले उठकर, गुरुदेव को स्नान आदि कराकर चाय आदि छकाई, वस्त्र धोए आदि-सेवा करते कानों में अत्यंत सूक्ष्म और मधुर-मधुर स्वर में आवाज़ आ रही है—

हम घरि साजन आए॥ साचै मेलि मिलाए॥
सहजि मिलाए हरि मनि भाए, पंच मिले सुखु पाइआ॥
साई वसतु परापति होई जिसु सेती मनु लाइआ॥
अनदिनु मेलु भइआ मनु मानिआ घर मंदर सोहाए॥
पंच सबद धुनि अनहद वाजे हम घरि साजन आए॥

(रागु सूही म०१, पृष्ठ ७६४)

आप सोच रहे हैं कि समीप ही कहीं विवाह आदि का शुभ कार्य होना है, क्योंकि यह शब्द प्राय: विवाह आदि अवसरों पर ही पढ़ा जाता है। खैर-होगा, यह कहकर फिर से सेवा में लीन हो गए, लेकिन कीर्तन की ऐसी रसयुक्त ध्वनि आज तक कभी श्रवण नहीं की। सेवा करते-करते मन सहज ही कीर्तन की ओर आकर्षित हो रहा है। सोच रहे हैं कि कीर्तन तो प्रतिदिन कहीं न कहीं कानों में पड़ता है, लेकिन कीर्तन करने वालों के इतने रसीले गले एवं उच्चारण का निराला ढंग आज तक नहीं सुना। आज अवकाश भी समाप्त हो गया है, इसलिए अब आज्ञा लेकर जाना भी है, लेकिन मन में इस अलौकिक कीर्तन के सुनने की इच्छा बलवती है। इतने में दूसरा शब्द आरम्भ हो गया—

आवहु मीत पिआरे॥ मंगल गावहु नारे॥
सचु मंगलु गावहु ता प्रभ भावहु सोहिलड़ा जुग चारे।।
अपनै घरि आइआ थानि सुहाइआ कारज सबदि सवारे॥
गिआन महा रसु नेत्री अंजनु त्रिभवण रुपु दिखाइआ॥
सखी मिलहु रसि मंगलु गावहु हम घरि साजनु आइआ॥

(राग सूही म०१, पृष्ठ ७६४)

अब राम जी का ध्यान मन-मोहित करने वाली रस युक्त आवाज़ के साथ-साथ शब्द-विचार की ओर भी चला गया। सोच रहे हैं—इस शब्द का सार तो है कि गुरु जिस समय प्रसन्न होकर अपने प्रिय शिष्य के नयनों में ज्ञान-अंजन डालता है उस समय त्रिभुवन-पति का प्रत्यक्ष दीदार हो जाता है। धन्य है वह पुरुष! जिस पर प्रसन्न होकर गुरु यह अवस्था प्रदान कर देता है, परन्तु यह संसारी लोग बेचारे सांसारिक व्यवहारों में ही यह शब्द पढ़ सुनकर संतुष्ट हो जाते हैं। उन्होंने इस शब्द के वास्तविक रहस्य को कभी समझने की कोशिश ही नहीं की, परन्तु फिर भी कोई विवेकयुक्त परिवार दिखाई दे रहा है जो इतने उच्च रागियों को लेकर आया है। मैं भी आज पहली बार सुन रहा हूँ इतना रसयुक्त कीर्तन। अच्छा हो ये विवाह वाले यह सारा ही कीर्तन रिकार्ड कर लें। खैर-अब सवेरा हो गया है। विरक्त महाराज जी भी अठारह नम्बर कमरे में जो कि ऊपर वाली छत पर है—बाहर बरामदे में कुर्सी पर सुशोभित हो गए। राम जी अब बरनाला को वापिस जाने की तैयारी करके हजूर से आज्ञा लेने के लिए ऊपर आए, क्योंकि अवकाश आज का ही है—कल बैंक ड्यूटी है। हजूर के पवित्र चरणों में नमस्कार करके दोनों हाथ जोड़ खड़े हो गए। हजूर अपनी ईश्वरीय मौज में नेत्रों को बन्द किए कुर्सी पर बैठे हैं। थोड़ी देर बाद नेत्र खोले। पहली दृष्टि सम्मुख खड़े राम जी पर पड़ी। आज नेत्रों में दिव्य आभा इतनी है मानों अमृत-धारा गिर रही है। धीमी एवं रसीली आवाज़ में पवित्र अधर हिले—आज्ञा हुई—भाई! क्या बात है? महाराज तीन दिन का अवकाश लेकर आया था जो आज पूरा हो गया। अब आज जी की आज्ञा हो तो वापिस जाऊँ? आगे से कोई उत्तर नहीं मिला, लेकिन राम जी दोनों हाथ जोड़ अचल खड़े हैं। अब थोड़ी देर बाद हजूर ने हाथों से बैठने का संकेत किया। जिसको हरि अपने चरणों में बैठने योग्य स्थान देने की कृपा करे, उसे और क्या चाहिए। राम जी संकेत समझते ही आपके पवित्र चरणों में बैठ गए। बस बैठने की देरी थी—हजूर कुर्सी से उठ बैठे और फिर धीरे-धीरे सीढ़ी द्वारा नीचे उतरना आरम्भ किया। पवित्र मुख से बोले तो कुछ नहीं लेकिन प्रतीत ऐसे हो रहा है जैसे 'आनंद कारज' (भाँवर) का समय हो गया हो। जहाँ कीर्तन हो रहा है अपनी मौज में वहाँ चल पड़े। राम जी उठकर उनके पीछे-पीछे चल पड़े। हजूर सीढ़ी का एक-एक डण्डा बहुत धीरे-धीरे उतर रहे हैं। दूसरी ओर राम जी भी बड़ी सावधानी से पीछे आ रहे हैं ताकि वृद्धावस्था के कारण हजूर का शरीर कहीं ठोकर न खा जाए। यदि

आवश्यकता हो तो, तुरंत सहायता की जा सके। वे हजूर के शरीर को स्पर्श भी नहीं कर रहे और सचेत भी हैं। हजूर एक हाथ में खूँडा और दूसरा हाथ दीवार के साथ लगाकर धीरे-धीरे नीचे उतर आए। नीचे आकर हजूर ने अब अपना रुख उस तरफ किया जिधर से प्रात: से अलौकिक कीर्तन हो रहा है। राम जी भी पीछे-पीछे आ रहे हैं। प्रात: का जो कीर्तन हो रहा है—अब उसकी आवाज़ ऐसे प्रतीत हो रही है जैसे कहीं पास ही हो। रागी वही प्रात: समय वाले ही बहुत अलौकिक रस से परिपूर्ण शब्द पढ़ रहे हैं—

आवहु सजणा हउ देखा दरसनु तेरा राम॥
घरि आपनड़ै खड़ी तका मै मनि चाउ घनेरा राम॥
मनि चाउ घनेरा सुणि प्रभ मेरा मै तेरा भरवासा॥
दरसनु देखि भई निहकेवल जनम मरण दुखु नासा॥
सगली जोति जाता तू सोई मिलिआ भाइ सुभाए।।
नानक साजन कउ बलि जाईऐ साचि मिले घरि आए॥

(राग सूही महला १, पृष्ठ ७६४)

विरक्त महाराज धीरे-धीरे दरबार साहिब जी की पिछली ओर चले गए। यह एक छ: सात फुट चौड़ी, आम धरती से दो-ढ़ाई फुट ऊँची, रोड़ों की सड़क, आमों लीचियों के घने बाग में से जाती है। हजूर अब उस सड़क पर चल पड़े। ओह देखो! थोड़ी दूर चलकर एक छोटा सा चौक आ गया जिसके चारों ओर बहुत घने आमों और लीचियों के वृक्ष खड़े हैं। मध्य में सीमेंट से निर्मित एक गोल आकार का सुन्दर मेज़ पड़ा है, इसके चारों ओर सीमेंट से ही निर्मित लगभग छ: छ: फुट के तीन बैंच पड़े हैं। अलौकिक प्रीतम अब उनमें से एक बैंच पर सुशोभित हो गए। तीनों बैंच क्या हैं? मानों तीन गुण पड़े थे। अब उनसे अलग, गुणातीत, चौथा, तुरीय उन पर सुशोभित हो गया। अब गुण दृष्टिगोचर नहीं हो रहे, केवल 'तुरीय' ही प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। पीछे-पीछे आ रहे राम जी भी हजूर के पवित्र चरणों में नमस्कार करके बैठ गए। उधर कीर्तन की आवाज़ भी अत्यंत स्पष्ट एवं रसीली सुनाई दे रही है। अब लाँवा (भाँवर) का पाठ आरम्भ हो गया। तीन लाँवा का पाठ पूरा हो चुका है। चौथी लाँव (भाँवर की परिक्रमा) रागी बहुत मधुर स्वर में उच्चारण कर रहे हैं—

हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ हरि पाइआ बलि राम जीउ॥
गुरमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि तनि मीठा लाइआ बलि राम जीउ॥
हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिनु हरि लिव लाई॥
मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई॥
हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी॥
जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी॥

(लावां ७७४)

चौथी परिक्रमा के पूर्ण होते ही—वह देखो—अलौकिक प्रीतम क्या अलौकिक क्रीड़ा कर रहा है। अपने पवित्र शीश से पगड़ी उतारकर राम जी के शीश पर सुशोभित कर दी। मानों अपना राजसी मुकुट राम जी के शीश पर सुशोभित कर दिया। राम जी के शीश पर मुकुट रखते ही यह अवस्था हो गई—

किृपा दृश्ट पुंन गुर ने कीनस॥ अंतर ब्रित होइ सुख चीनसि॥
जनम जनम को सुपतु जगायो॥ निज सरुप आतम प्रगटायो॥
बैठे लगी समाध अडोले॥ कितकि देर महिं लोचन खोले॥

(सूरज प्रकाश)

यह देखो! अलौकिक प्रीतम अब कैसे वरदान की अमृत-वर्षा कर रहा है। सामान्य जन को आदर, शक्तिहीनों को शक्ति एवं निराश्रितों के आश्रय आदि अनेक वरदानों की झड़ी लगा दी है। अभी संतोष नहीं हुआ, राम जी को अभी भी वरदान दिए जा रहे हैं, जिनका भाव कुछ इस प्रकार है—

हे पुरखा! तुम हू मम रुप॥ भेद ना जानहु तनक अनूप॥
सद ही रिदे बसत हों मेरे॥ तुझ सों पिआर सदीव वडेरे॥
आतम गियान सदीव बीचारहु॥ ना ना भेद रिदे निरवारहो॥
सुन पुरखा श्री राम पियारे॥ अब तुम बैठहु थान हमारे॥
राज जोग दे बहु सिंघासण॥ तिस पर सोभहु करहु प्रकाशन॥
सगल संगत को नाम जपावहु॥ राज जोग सिंघासण पावहु॥
सतनाम का सिमरन सारे॥ उपदेसहु होइ भगति उदारे॥
नर हजारां की कलिआण॥ करहु आप दे कर उर गियान॥

राम सिंह जी करबद्ध आपके चरणों में अचल खड़े हैं। अब हजूर ने संगत को उपदेश किया—

हुण संगत को कहत सुनाई॥ मम सरुप अब इहै सुहाई॥
मुझ मैं इस महि भेद ना जानहों॥ एक सरुप दोहूं को मानहु॥

फिर संगत को और दृढ़ता के लिए उच्चारण किया—

कहिओ आप संगत समझाए॥ सति उपदेश जपो सति भाए॥
प्रगट रुप राम मम जानो॥ संसा भेद न मन में आनों॥
राम सिंध मम रुप है, या महि नाही भेद॥
जो समझे इस राज़ को नहीं जनम मरन का खेद॥

राम जी निर्विकल्प समाधि में स्थिर, भीतर बाहर से अचेत, शान्त बैठे हैं। कुछ समय पश्चात् नेत्र खोले और सहज ही बन्द हो गए। शरीर और संसार से अचेत हैं बस अब आनंद-सागर ठाठें मारता दृष्टिगोचर हो रहा है। गुरु-कृपा की बातें जो आज तक पढ़ते-सुनते थे आज प्रत्यक्ष देख रहे हैं—

अद्‌भुत भइओ अवर ही थाटा॥ तिह छिन खुल गए बिकट कुपाटा॥
जगियो गियान दुबिधा सभ खोई॥ तीनि लोक की सुध उरि होई॥

भीतर प्रभु के दर्शन हो गए, क्योंकि संत ने संग की जो कृपा कर दी। ज्ञान-अंजन आँखों में पड़ते ही, अज्ञान अन्धकार विनष्ट हो गया, क्योंकि हरि-कृपा द्वारा संत से भेंट जो हो गई। पाँचों विकार विलुप्त हो गए, क्योंकि नाम जो दृढ़ हो गया है। अलौकिक प्रीतम के चरणों पर से शीश नहीं उठा रहे। प्रीतम भी किसी अलौकिक आनंद में रस मग्न हुआ, कृपा द्वारा पावन

किए शरीर पर प्यार भरा हाथ फेर रहा है। पिता-पुत्र दोनों देश-काल-वस्तु से अचेत किसी अनिर्वचनीय आनंद में लीन हुए हैं। इसी आनंद में बैठे हुए को मधुर-मधुर स्वर में कीर्तन उसी प्रकार सुनाई दे रहा है। यह थोड़ा ध्यानपूर्वक देखो—कीर्तन में से एक नयी आवाज़ आ रही है।

नि.... के, पा....ई....ऐसे प्रतीत हो रहा है कि जैसे अब कई रागी जत्थे कीर्तन कर रहे हैं।

इसलिए पूरा-पूरा कोई शब्द भी सुनाई नहीं दे रहा। यह फिर वही आवाज़ कानों में सुनाई दे रही है। ''निकै पाई-ई....ई।'' इससे आगे स्पष्ट सुनाई नहीं दे रहा। रागियों ने अब पढ़ना आरम्भ किया—

धरणि सुवंनी खड़ रतन जड़ावी हरि प्रेम पुरखु मनि वुठा॥
सभे काज सुहेलड़े थीए गुरु नानकु सतिगुरु तुठा॥

(सलोक म० ५, पृष्ठ ३२२)

साचा साहु गुरु सुखदाता हरि मेले भुख गवाए।।
करि किरपा हरि भगति द्रिड़ाए अनदिनु हरि गुण गाए॥
मत भूलहि रे मन चेति हरी॥
बिनु गुर मुकति नाही त्रै लोई गुरमुखि पाईऐ नामु हरी॥ रहाउ॥
बिनु भगती नही सतिगुरु पाईऐ बिनु भागा नही भगति हरी॥
बिनु भागा सतसंगु न पाईऐ करमि मिलै हरि नामु हरी॥
घटि घटि गुपतु उपाए वेखै परगटु गुरमुखि संत जना॥
हरि हरि करहि सु हरि रंगि भीने हरि जलु अंम्रित नामु मना॥
जिन कउ तखति मिलै वडिआई गुरमुखि से परधान कीए॥
पारसु भेटि भए से पारस नानक हरि गुर संगि थीए॥

(बसंत हिंडोल म० १, पृष्ठ ११७१)

ऐसा ईश्वरीय कीर्तन हो रहा है मानों देव लोक से पुष्प वर्षा हो रही है। यह दिव्य कीर्तन श्रवण करने वाले श्रोता चाहे सारे ही आज पहली बार श्रवण करके सराबोर हो रहे हैं लेकिन दोनों-राजा एवं राजकुमार तो इस प्रकार निमग्न हुए श्रवण किए जा रहे हैं जैसे गुरुवाणी का रूप हो चुके हैं। रागी जत्थों की गुँजार में अब कुछ इस प्रकार सुनाई दे रहा है—

हरि दरगह पैनाइआ हरि आपि लइआ गलि लाइ॥
हरि दरगह पैनाइआ हरि आपि लइआ गलि लाइ॥

(करहले पृष्ठ २३४)

रागी बार-बार इस पंक्ति को दोहरा रहे हैं। एक बहुत रसीली आवाज़ में रागी कीर्तन कर रहे हैं। शायद यह रागी जत्था भी और है—

गुरमुखि सखी सहेलीआ से आपि हरि भाईआ॥
हरि दरगह पैनाईआ हरि आपि गलि लाईआ॥

(करहले पृष्ठ ७२६)

अब ऐसे प्रतीत हो रहा है जैसे यह कार्य सम्पन्न होने वाला है। इसलिए मधुर-मधुर आवाज़ में रागी अब ये शब्द उच्चारण कर रहे हैं—

वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइआ॥
अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ॥
बलिया गुर गिआनु अंधेरा बिनसिआ हरि रतनु पदारथु लाधा॥
हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा आपु आपै गुरमति खाधा।
अकाल मूरति वरु पाइआ अबिनासी ना कदे मरै न जाइआ॥
वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइआ॥

(सिरीरागु म० ४, पृष्ठ ७८)

कीर्तन इतना सुन्दर एवं रस-युक्त हो रहा है कि श्रोतागण सब रसमग्न किसी अनिर्वचनीय आनंद में झूम रहे हैं, क्योंकि ऐसा अलौकिक और अनूठा कीर्तन और कीर्तन करने वाले आज तक देखे सुने ही नहीं, इसलिए सभी श्रोता यह चाहते हैं ऐसा आनंददायक कीर्तन देर तक सुनते रहें। लेकिन अब शायद समय आज्ञा नहीं देता, इसलिए इस अलौकिक कीर्तन-समागम में सब जत्थों को विराम दिया, क्योंकि अब स्वयंवर की सम्पूर्ण समाप्ति पर 'आनंद साहिब' का कीर्तन आरम्भ किया—

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरु मैं पाइआ॥
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ॥
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ॥
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ॥

(आनन्द साहिब, पृष्ठ ९१७)

यह पंक्ति बार-बार कानों में गूँजने लगी-क्या परियाँ शब्द गायन के लिए आई हैं? श्रोताओं में जब किसी का ध्यान आकाश की ओर गया देखकर आश्चर्यचकित रह गया। अनेकों परियाँ शब्द-गायन में निमग्न हैं। अब पता लगा कि ब्रह्ममुहूर्त का ऐसा मनोहर-कीर्तन कहाँ हो रहा है? तभी मन आश्चर्यचकित हुआ बार-बार कह रहा था कि दिव्य कीर्तन करने आए किसी अन्य लोक के प्राणी प्रतीत होते हैं, क्योंकि ऐसे रसयुक्त गले, सुन्दर आवाज़ और अनूठे वाद्य इस लोग में तो सुने नहीं। कीर्तन की गुँजार में एक आवाज़ जो प्रात: ही स्पष्ट सुनाई नहीं दे रही थी। नि—के—पा—ई। वह अब 'आनंद साहिब' का कीर्तन समाप्त होते ही एक किसी परी की बहुत सुन्दर आवाज़ के साथ ऐसे स्पष्ट सुनाई दे रही है—

निक्के पाई बुढियों, देणी राम सिंह घर आवै।।
करण पुरी प्रकाश कर, ऋषिकेश विच जोत जगावै॥

शायद यह स्वयंवर का अंतिम शब्द था। अब स्वयंवर सम्पूर्ण होते ही परियाँ कीर्तन द्वारा पुष्प वर्षा करके देवलोक को वापिस चली गईं। श्रोता भी किसी अनिर्वचनीय आनन्द में लीन हुए—अब इस पण्डाल में से उठ खड़े हुए। का....श! यह समस्त प्रोग्राम रिकार्ड कर लिया जाता।

महंती का ताज

विरक्त महाराज जी आनंद अवस्था में स्थित होने के कारण यद्यपि सदैव ही प्रसन्न मुद्रा में विचरण करते थे, लेकिन आज तो मुख विशेष आभा से युक्त है। पवित्र मुख की ओर देखने पर ऐसे प्रतीत हो रहा है जैसे परमेश्वर का आभार प्रकट

कर रहे हों कि हे परमेश्वर! तेरी अमानत अदा हुई। एक सेवक को आवाज़ लगाई कि हमारे वस्त्रों में से एक पगड़ी लेकर आ। देखो लोक-परलोक के स्वामी ने अपना राजसी ताज तो रामसिंह जी के शीश पर टिकाकर तीनों लोकों एवं चौदह भवनों की बादशाही बख्श दी, लेकिन आप ने अन्य पगड़ी मंगवाकर अपने शीश पर बाँधी।

महंत नारायण सिंह जी को जब इस असचरज कौतुक का पता चला तो बहुत प्रसन्नचित्त हुए हजूर के चरणों में पहुँचे। प्रार्थना की—महाराज! आप जी ने कृपा करके रामसिंह जी को भीतर-बाहर से रंगकर लालो लाल बना दिया। हजूर बोले महंत जी—

पूरब जनम पुंन तिस केरे॥ मिल सतसंगत कीन घनेरे॥
दीपक बाती तेल जुत पावक लावन देर॥
होई हैं रौशन तुरत जिम तिउं इस कों तूँ हेर॥

भाई! इस दीपक की तेल-बाती तैयार हो चुकी थी। श्री गुरु नानक देव महाराज जी की आज्ञा हो चुकी थी। बस-जलते दीपक के साथ स्पर्श करने की देरी थी—उसी समय प्रज्वलित हो उठा। अब ऐसा करो—अपनी महंती का ताज भी इनके शीश पर सुशोभित कर दो। यथा—

पुनः महंत महि कहत सुणाई॥ मम सरुप अब इहै सुहाई॥
मुझ मैं इस महि भेद न जानहों॥ एक सरुप दुहहूँ को मानो॥
अगारी इनको देहो महंती॥ तुम समा बतावहो सुख शान्ति॥

महंत नारायण सिंह जी ने महंत गुरबचन सिंह जी बरनाले वाले, संत मनमोहन सिंह जी डुमुण्डे वाले और सरदार गुरनाम सिंह खोख को साथ लेकर हजूर की आज्ञानुसार देहरादून जाकर निर्मल आश्रम और अन्य सब सम्बन्धित स्थानों की महंती रामसिंह जी को लिख दी। कुछ दिनों पश्चात् महंत नारायण सिंह जी ने चरणों में निवेदन किया कि डेरे के कुछ संत महंती स्वयं चाहते थे इसलिए मन में द्वेष करते हैं। हजूर बोले—भाई!

नहि किसहूं के कर विखे, सभ करतार अधीन॥
जिस पर करुणा दृष्टि है, बसतु तिसहि इह लीन॥

गोराया में पुनर् आगमन

महंत नारायण सिंह जी लम्बे समय से विरक्त महाराज जी के चरणों में बार-बार निवेदन करते रहते थे कि महाराज मेरा शरीर बीमार रहता है आप कृपा करके अपने शिष्य सेवकों में से कोई योग्य पुरुष दे दो जो निर्मल आश्रम की महंती का भार ग्रहण करने में समर्थ हो, परन्तु हजूर मुस्करा कर कह देते थे, महंत जी क्यों चिंता करते हो, गुरु नानक भली करेंगे। आज गुरुनानक ने प्रसन्न होकर विरक्त महाराज जी के हृदय में सुशोभित होकर महंती की सेवा रामसिंह जी के शीश पर रख दी। महंत नारायण सिंह जी के हृदय में से बार-बार निकल रही अभिलाषा और होली फैमिली अस्पताल में दिया वचन आज पूर्ण कर दिया। आश्रम के समस्त कार्य ठीक करके अब फिर करनाल जाकर सुशोभित हुए। अब आप कथा नहीं करते, बोलते भी बहुत कम हैं और किसी को अखण्ड पाठ आदि घर के समागम के लिए तिथि आदि भी नहीं देते, लेकिन संगत का आना-जाना अधिक बढ़ गया। करनाल कुटिया में अखण्ड पाठों का प्रवाह चलता रहता है। लंगर भी गुरु के निरन्तर प्रवाहमान हैं, लेकिन हजूर अपने कमरे से बहुत कम नीचे आते हैं। कुछ प्रेमी अपने सत्संग की पिपासा शान्त करने के लिए ऊपर ही हजूर के चरणों में बैठकर किसी ग्रन्थ का विचार करते रहते हैं।

आज उजागर सिंह सूरी गोराया वालों ने गोराया जाने के लिए आपके श्री चरणों में प्रार्थना की जो स्वीकार हो गई। हुक्म कर दिया कि अमुक दिन आ जाना, उस दिन चल पड़ेंगे। सूरी जी ने गोराया जाकर जब संगत को बताया तो सब संगत बहुत प्रसन्न हुई, क्योंकि शरीर की बीमारी के समय किसी को आशा नहीं थी कि अब हम गोराया में आप जी के दर्शन कर सकेंगे। निश्चित दिन पर गोराया कुटिया को विवाह की भाँति सुसज्जित किया गया और रंग बिरंगी झंडियाँ लगाकर दीपावली की भाँति रोशनी के साथ जगमग की गई अर्थात् कुटिया को हर प्रकार से इस प्रकार सजाया गया जैसे संसारी लोग किसी विशेष समागम पर करते हैं। उजागर सिंह सूरी अपनी कार में हजूर को लेकर गोराया कुटिया पहुँच गए। संगत तो पहले ही पुष्प, अतर आदि लेकर प्रतीक्षा में खड़ी थी ज्यों ही कार ने कुटिया में प्रवेश किया तो सारी संगत ने पुष्प वर्षा की। इन्द्र देवता ने भी अपना कर्त्तव्य समझते हुए कुछ छींटों के रूप में पुष्प वर्षा की। जहाँ आप जाते कुबेर भण्डारी भी अपने कर्त्तव्यों का पालन करते। तवे, चूल्हे पहले ही तैयार रखते थे। इसलिए उसने भी चूल्हे तपा लिए, लंगर आरम्भ हो गया। दूर-समीप के सब अमीर-गरीब छक-छककर गुरु नानक का यश-गायन करते घरों को जाते हैं।

कुछ दिनों पश्चात् होशियारपुर से कृष्ण गोपाल ने आकर निवेदन किया कि महाराज होशियारपुर भी संगत को दर्शन देने की कृपा करो। उसकी प्रार्थना को स्वीकार करके सूरी साहिब की कार में होशियारपुर पहुँच गए। वहाँ एक रात्रि विश्राम के उपरान्त जब वापिस आने की तैयारी की तो 'अखलासपुर' गाँवों की माताओं ने प्रार्थना की कि महाराज! हमने तो आज आपको लंगर बनाकर छकाना है इसलिए कृपा करो आज यहीं दर्शन देने की कृपा करो। हजूर अभी चुप ही थे—हाँ अथवा न आदि कुछ नहीं बोले, लेकिन कृष्ण गोपाल ने आपके चेहरे पर मुस्कान देखकर रात्रि वहीं ठहरने का जैकारा बोल दिया। हजूर बोले! यद्यपि इसने बिना पूछे ही जैकारा बुलाया है, आपका प्रेम देखकर हमें ठहरना ही पड़ेगा। प्रेमी संगत के प्रेम में आज की रात्रि भी यहीं विश्राम किया। प्रातः कृष्ण गोपाल ने प्रार्थना की—महाराज! आज सावन की संक्रांति है, आप कृपा करके सावन मास की कथा सुनाओ। हजूर ने संत हरबंस सिंह को हुक्म किया कि सावन मास की कथा आप सुनाओ। संत हरबंस सिंह जी हजूर के समीप बैठे कथा करने से कुछ हिचकिचा रहे थे, लेकिन आज्ञा मानकर सावन मास की कथा की। सब संगतों ने भी बड़े प्रेम के साथ श्रवण की। महाराज बोले—अच्छी कथा की है, वेदांत से दूर नहीं गया। इसके उपरांत गोराया को वापिस आ गए। दो चार दिन गोराया ठहरे। इतने में भगत लॅभामल जी आदि कुछ प्रेमी प्रार्थना करके वापिस करनाल ले गए।

बीमारी, कि लीला?

अब करनाल ठहरे हुए हैं, सेवा में चौबीस घंटे छोटू जी रहते हैं। एक दिन आप जी को कुछ बुखार हो गया लेकिन किसी को बताया नहीं। दूसरे दिन तेज़ बुखार होने के कारण संगत ने अस्पताल से डॉक्टर को बुलाया। उसने थर्मामीटर लगाकर देखा, बुखार एक सौ चार है। टीका आदि लगाया, लेकिन कोई अन्तर न आया। डॉक्टर बदल बदलकर औषधियाँ टीके आदि दे रहे हैं, लेकिन बुखार में कोई अन्तर नहीं आ रहा। इसी हालत में तीन-चार दिवस व्यतीत हो गए। बुखार एक सौ चार पाँच से नीचे नहीं आ रहा और न ही डॉक्टरों को कोई समझ लग रही है। बेचारे डॉक्टर पूरे यत्न एवं शक्ति के साथ लगे हैं लेकिन सब असफल। आज डॉक्टर जिस समय अस्पताल में से आया तो बुखार की हालत वहीं है। जिस समय रक्तचाप देखने लगा उसी समय एक सेवक जगदीश सिंह जो अस्पताल में लेबोटरी में तकनीशियन है वह आया भी शायद डॉक्टर के साथ ही था, हजूर के चरणों पर नमस्कार करने लगा तो ऐसा प्रतीत हुआ जैसे एक चरण बहुत गर्म है और दूसरा बहुत ठण्डा। डॉक्टर भी उसके बताने पर बड़ा चकित हुआ कि ऐसा क्यों है? डॉक्टर ने हजूर की टाँगों से थोड़ा वस्त्र हटाकर

देखा तो एक टाँग पर कोई आधा फुट तक इतनी लाली चढ़ी हुई है जैसे लाल रंग लगा हो। डॉक्टर को अब समझ लगी कि तेज़ बुखार का कारण यही है। डॉक्टर ने निवेदन किया महाराज आपने यह क्यों नहीं बताया। टाँग को बहुत विष चढ़ा हुआ है, आप को बहुत कष्ट हो रहा होगा। हजूर बोले—कष्ट तो होता है लेकिन संत रोता अच्छा नहीं लगता। डॉक्टर ने अब टाँग का उपचार आरम्भ किया, लेकिन तीन चार दिन उपचार करने के बावजूद भी कोई अन्तर नहीं आ रहा है। बुखार में कमी नहीं आ रही, लेकिन टाँग की लालिमा ऊपर की ओर बढ़ती जा रही है। डॉक्टर ने नीचे आकर भगत लॅभामल को बताया कि टाँग पर शायद किसी विषैले जंतु ने काटा है इसलिए विष समाप्त होने की बजाए ऊपर की ओर बढ़ रहा है। यदि यह इसी प्रकार बढ़ता रहा तो सारे शरीर में फैल जाने का डर है। इसलिए शरीर को बचाने के लिए यह आवश्यक है कि आधी टाँग काट दी जाए। भगत ने उदास होकर हजूर के चरणों में आकर सारी बात बताई । भगत की बात सुनकर महाराज उठ कर बैठ गए। कठोर वाणी में बोले—ससुरे टाँग काटेंगे। इनके लिए टाँग का कोई मूल्य नहीं है। बस एक गर्म पट्टी लाली वाले स्थान पर टाँग पर बाँध ली। कुछ आज, कुछ कल अगले दिन टाँग ठीक हो गई। बुखार उतर गया—डॉक्टर भी चकित है और संगत भी चकित। प्रेमी सोच रहे हैं कि क्या किसी बीमारी का आक्रमण था अथवा किसी सेवक की कष्ट निवृत्ति?

नानक दरबार का निर्माण

समय 1982 का चल रहा है। विरक्त महाराज करनाल कुटिया ठहरकर जीवों को मनवांछित वरदानों के खुले भण्डार वितरित कर रहे हैं। आप चाहे प्राय: मौन रहते हैं, लेकिन सत्संग के प्रेमी-भ्रमर किसी न किसी ग्रन्थ का विचार आपके समीप बैठकर करते ही रहते हैं। लंगर की सेवा वाले अपने कर्त्तव्य में सावधान हैं, क्योंकि आप नहीं चाहते कि कोई कुटिया में इधर-उधर खाली बैठकर बेकार गप्पें हाँककर कीमती समय को बर्बाद करे। इसलिए सेवा वालों के लिए सेवा और सत्संग के प्रेमियों के लिए सत्संग का प्रवाह निरंतर चलता रहता है। श्री हँसराज छाबड़ा, श्री प्यारा लाल, सरदार जरनैल सिंह, एस०डी० नारंग और अमरजीत सिंह रम्बा आदि प्रेमी वेदांत के मर्मज्ञ हैं और समय भी सम्भवत: इनके पास आम लोगों से अधिक है। ये हजूर के चरणों में बैठकर वेदांत चर्चा प्राय: करते रहते हैं। इन प्रेमियों की तीव्र बुद्धि को देखकर हजूर इनको वेदांत के काफ़ी ग्रन्थ विशेष तौर पर भी पढ़ाते रहे हैं। करनाल की संगत में ये प्रेमी वेदांत-मर्मज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। इस प्रकार हर प्रकार की अवस्था वाले साधक को खुराक मिल रही है।

एक दिन अपने चौबारे के पिछली ओर लंगर की छत पर कुर्सी पर सुशोभित थे क्योंकि तीसरे पहर वहाँ पीपल की छाया आ जाती है। अपनी मौज में बोले—कितना सुन्दर स्थान है। चारों ओर से हवा आती है, यदि यहाँ गुरु-दरबार बन जाए तो संगत बैठकर श्री सुखमनी साहिब का पाठ करके जन्म सफल करे। उस समय सरदार सतपाल सिंह गुलाटी, जो कि चरणों में बैठा था, ने हजूर का संकेत समझकर संगत की राय से तैयारी करके हजूर को उनके अपने संकल्प अनुसार वह सुंदर स्थान बनाने के लिए नींव रखने की प्रार्थना की। हजूर ने अपनी मौज में आज्ञा की कि श्री गुरु नानक देव महाराज जी ने संसार में अवतार धारण कर मनुष्य जीवन की सफलता के लिए चारों वर्णों को एक प्रेमाभक्ति का उपदेश किया, इसीलिए उस ईश्वरीय अवतार की स्मृति में उनके पवित्र नाम पर एक ऐसा स्थान बनाओ जिसके चारों वर्णों के सम्मिलित उपदेश के प्रतीक चार दरवाज़े हों। उस पवित्र स्थान का माप इतना ही हो जिसमें केवल श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी ही प्रकाशित होकर सुशोभित हों

और संगत के बैठने के लिए चारों ओर बरामदा हो। स्थान इतना ऊँचा हो कि संगत सीढ़ियों से होती हुई ऊपर जाए। सीढ़ियाँ इतनी चौड़ी हों जिसमें दस-पंद्रह व्यक्ति बड़े आराम के साथ आ-जा सकें। सोपान का निर्माण इस ढंग से किया जाए कि नीचे पृथ्वी पर खड़े व्यक्ति को गुरु ग्रन्थ साहिब के दर्शन हों। संगत ने निवेदन किया महाराज! जिस जगह पर यह पवित्र स्थान बनाना है आज्ञा कर दो। आप बोले-चौबारे के पिछली ओर जहाँ हम प्रतिदिन सांय को कुर्सी डालकर बैठते हैं, वह स्थान अच्छा है और चारों ओर से खुली हवा आती है। संगत ने सारी तैयारी करके प्रार्थना की—महाराज! कृपा करो, इस पवित्र स्थान की नींव अपने पवित्र कर कमलों से रखो। आज्ञानुसार कड़ाह प्रसाद की देग सजाकर अरदास के उपरान्त हजूर ने अपने पवित्र हाथों से शिलान्यास कर दिया। सब संगत सेवा में जुट गई। कभी-कभी हजूर अपनी मौज में किसी विशेष कारण अथवा संगत को प्रोत्साहन देने के लिए स्वयं भी प्रवृत्त हो जाते। वैसे तो वास्तविक कारण तो वे स्वयं ही जानें। इस प्रकार करनाल निवासी संगत के लिए सेवा का कुंभ आरम्भ कर दिया।

दरगाही पीठ

कचहु कंचनु भइअउ सबदु गुर स्त्रवणहि सुणिओ॥
बिखु ते अंम्रितु हुयउ नामु सतिगुर मुखि भणिअउ॥
लोहउ होयउ लालु नदरि सतिगुरु जदि धारै॥
पाहण माणक करै गिआनु गुर कहिअउ बीचारै॥
काठहु स्त्रीखंड सतिगुरि कीअउ दुख दरिद्र तिन के गइअ॥
सतिगुरु चरन जिन्ह परसिआ से पसु परेत सुरि नर भइअ॥

(सवईए, पृष्ठ १३९९)

पूज्य विरक्त महाराज जी ने अपने प्रिय शिष्य महंत राम सिंह जी को अपनी कृपा दृष्टि से भीतर-बाहर से पारस रूप बनाकर ऋषिकेश सुशोभित कर दिया। महंत राम सिंह जी गुरु-आज्ञा के गहन रस में डूबे अब कमलवत् निर्लिप्त और असंग रहकर आज्ञा की सेवा अर्जित कर रहे हैं। आपके दो पुराने शिष्य जोध सिंह जी और गुरिंदर सिंह (छोटू जी) मिलने हेतु प्रायः ऋषिकेश आते रहते हैं। यह दोनों प्रेमी चाहे पहले भी प्रेमाग्नि में कूदने के लिए सोचते रहते थे, लेकिन अब महंत राम सिंह जी को प्रेमाग्नि के ताप से लालिमा युक्त हुआ देखकर भीतर विरह अग्नि और तीव्र हो गई। इन प्रेमियों की जिज्ञासा प्रज्वलित हुई देखकर महंत जी ने विरक्त महाराज जी के चरणों में एक-दो बार निवेदन किया—महाराज इनको भी अपनी चरण-शरण देने की कृपा करो। घट-घट को जानने वाले यह जानते थे कि जोध सिंह के भीतर विरहाग्नि प्रज्वलित तो हुई है, लेकिन लड़के को पढ़ाने वाला सूक्ष्म संकल्प का बीज अभी शायद पूरी तरह से दग्ध नहीं हुआ था इसलिए इसको देखते हुए महंत जी का निवेदन अभी स्वीकार नहीं कर रहे थे। एक दो बार महंत जी ने जोध सिंह जी को बताया कि जितनी देर आप स्वयं प्रार्थना नहीं करते, उतनी देर तक हजूर कृपा नहीं करेंगे, क्योंकि महाराज जी मर्यादा का बहुत पालन करते हैं। उधर जोध सिंह को दृढ़ विश्वास था कि—

हरि करता सभ किछु जाणदा किसु आगै कीचै अरदास॥

इस प्रकार कुछ मास व्यतीत हो गए, लेकिन आज कुछ ऐसे लग रहा है कि जोध सिंह के भीतर से अथवा उस लड़के को पढ़ाने वाले संस्कार का बीज दग्ध हो गया अथवा फिर हृदय रूपी भूमि में पड़े किसी और बीज के अंकुरित होने का समय आ गया। यह सारी बात तो परमेश्वर ही जानता है, लेकिन आज सभी सुअवसर एकत्रित हो गए। विरक्त महाराज जी करनाल रुके हुए हैं। अचानक आप जी के शरीर को आज कुछ अधिक रोगी हुआ देखकर सेवकों ने ऋषिकेश, दिल्ली आदि स्थानों पर टेलीफोन से सूचित कर दिया। आज से पहले जोध सिंह जी कई बार अपना पैसा आदि साथ लेकर पूरी तैयारी के साथ आपके चरणों में आते थे कि हजूर के चरणों में तन, मन, धन से समर्पित हो जाएं, लेकिन सम्मुख जाकर न तो आपने प्रार्थना की और न ही दाता ने चरण-शरण की कृपा की। निराश होकर वापस आ जाते। आज टेलीफोन द्वारा सूचना प्राप्त होने के बाद जोध सिंह ने पहले की भाँति कोई तैयारी नहीं की, न ही कोई धन अथवा कामकाज आदि की संभाल और न ही मन में यह कोई विचार था कि आज विवाह हो सकता है। उसी भाँति ही जैसे दफ्तर जाने से पूर्व कुर्त्ता-पाजामा और चप्पल सहित जैसे कमरे में थे उसी प्रकार करनाल को चल पड़े। बस साथ प्लास्टिक के थैले में, कच्छा-तौलिया डालकर उठाया। एक अप्रैल 1983 को जा पहुँचे दाता के द्वार करनाल। दूसरी ओर हजूर के चरणों में दो-दो, तीन-तीन घंटों की ड्यूटी पर सेवादार बारी-बारी रहते हैं। रात्रि के लगभग ग्यारह बजे हजूर की सेवा में कुलवंत सिंह की ड्यूटी थी। आपने उसको कहा कि मैंने हजूर के चरणों में अकेले में कोई प्रार्थना करनी है, इसलिए जब पूर्ण एकांत सुलभ हो मुझे बता देना। कुलवंत सिंह ने रात्रि के ग्यारह बजे जोध सिंह जी को बुला लिया। दाता के चरणों में नमस्कार करके निवेदन किया महाराज! कृपा करके अपने पवित्र चरणों की नौकरी प्रदान करो। हजूर कुछ अन्तर्मुखी हुए अपनी मौज में निमग्न थे। कुछ समय पश्चात् ध्यान-जागृत होने पर समीप खड़े कुलवंत सिंह को पूछा—क्या कहता है? जोध सिंह ने फिर निवेदन किया, महाराज! कृपा करो—चरण सेवा से उपकृत करो। हजूर ने पूछा—ओ भाई तेरे पास गरीब लड़का पढ़ता है—कमल। महाराज उसका अध्ययन पूर्ण होकर नौकरी भी मिल गई है। इसलिए मेरी ओर से उसकी जिम्मेदारी पूर्ण हो गई है। भाई! अपने घर वालों से पूछ लिया। महाराज, कई वर्षों से मैंने अपना हिसाब-किताब कुछ इस तरह से रखा हुआ है कि वे काम में हस्तक्षेप नहीं करते। अच्छा जाओ आराम कर लो। जोध सिंह जब आज्ञा होने पर नीचे आए बिल्कुल उसी समय महंत महाराज जी, छोटू जी को साथ लेकर ऋषिकेश से आ पहुँचे। मिलकर जोध सिंह जी ने बताया कि मैंने हजूर के चरणों में निवेदन कर दिया है, लेकिन अभी कोई उत्तर नहीं दिया। दूसरे दिन तक महाराज जी का शरीर भी कुछ स्वस्थ हो गया। तीन अप्रैल वाले दिन महंत जी ने विरक्त महाराज जी के चरणों में फिर वही प्रार्थना की—महाराज कृपा करो। जोध सिंह एवं छोटू जी के भीतर अब जिज्ञासा अत्यंत प्रज्वलित हो गई है आपके चरण शरण की, इसलिए कृपा करो। हजूर बोले—भाई तेरा उनके साथ निर्वाह हो जाएगा? हाँ महाराज—मुझे तो दोनों प्रिय हैं। हजूर ने आज्ञा की—उनको बुलाकर ला। महंत जी दोनों को साथ लेकर आ गए। जोध सिंह जी ने दोनों हाथ जोड़कर निवेदन किया—महाराज कृपा करो, अब अपने पवित्र चरणों की नौकरी से उपकृत करो। हजूर ने कुछ क्षण मौन रहकर महंत जी को संकेत किया कि इनको साथ ले जाओ—ऋषिकेश जाकर वस्त्र पहना देना। जोधसिंह जी ने प्रार्थना की

महाराज यदि प्रसन्न हुए हो तो आप स्वयं ही कृपा करो। हजूर ने समीप खड़े भगत लॅभामल को संकेत किया कि हमारी वस्त्रों की गठरी में से दो परने निकालो। भगत जी ने गठरी में से दो परने निकाल के दिए। हजूर ने आज तीन अप्रैल 1983 वाले शुभ दिन पर दोनों को एक-एक परना देकर उपकृत किया। गुरु-कृपा समझकर दोनों प्रेमियों ने उन्हें सिर पर सजा लिया। विरक्त महाराज जी ने महंत जी को आज्ञा की कि शेष वस्त्र ऋषिकेश जाकर पहना देना। हजूर ने दोनों को आज्ञा की कि ऋषिकेश जाकर महंत जी की खूब सहायता करो, प्रेम के साथ रहना, आश्रम को गुरु नानक का घर समझकर संभालना, आने वाली संगत को गुरु की संगत समझकर प्यार के साथ आदर देना आदि उपदेश किया।

हजूर भगत जी को बोले—भगत! यह स्थान और ऋषिकेश दोनों एक ही हैं और दोनों स्थानों की संगत भी एक है। क्यों भगत ठीक है? हाँ, महाराज।

अब जोध सिंह जी और छोटू जी को आज्ञा दी कि नीचे जाकर दरबार में नमस्कार करो। आज्ञा मानकर दोनों सज्जन नीचे आ गए, देखकर संगत में बहुत खुशी हुई। अमरीक चन्द चावला जी हँसते हुए कहने लगे, महाराज ने बड़ी कृपा की साधु बना दिए, लेकिन चोले भी अभी चाहिएँ। अमरीक चन्द चावला एवं हरबंस लाल ने वस्त्र लेकर दो कुर्ते सिला लिए जो कि दूसरे दिन दोनों सज्जनों को पहना दिए। दोनों प्रेमी जब चोले पहनकर ऊपर हजूर के चरणों में पहुँचे तो विरक्त महाराज जी देखकर बहुत प्रसन्न हुए। पवित्र मुख से बोले, पक्के संन्यासी! पक्के संन्यासी!! आदि वचन उच्चारण किए। भगत लॅभामल जी ने मिठाई के डिब्बे मंगवाकर संगत में बाँटे। एक आध दिन यहाँ और ठहरकर दोनों सज्जन विरक्त महाराज जी की पावन आज्ञानुसार महंत महाराज जी के साथ ऋषिकेश आ गए।

करनाल से आखिरी बार प्रयाण

13 अप्रैल, 1983 को नानक दरबार का उद्घाटन करने के लिए तिथि निश्चित की गई। इधर ऋषिकेश से संत जोध सिंह जी भी नानक दरबार के उद्घाटन समारोह के लिए ऋषिकेश से सामान लेकर जैसे—पालकी को लगाने के लिए सोने का एक बड़ा छब्बा, एक चाँदी के हाथ वाला चौर साहिब, एक केवड़ा छिड़कने वाली बोतल आदि, सात अप्रैल को लेकर फिर दोबारा करनाल चले गए। समागम की सारी तैयारी करके ग्यारह अप्रैल वाले दिन संगत की ओर से अखण्ड पाठ साहिब रखे गए। तेरह अप्रैल वाले दिन भोग डालकर गुरु के खुले लंगर वितरित हुए और गुरु नानक के पवित्र कार्य की सम्पूर्णता हुई। अब आप व्याकुल हैं कनखल जाने के लिए, क्योंकि करनाल की इस सौभाग्यशाली भूमि पर प्रभु की ओर से आदेश का शायद यह आखिरी ही कार्य था जो सम्पूर्ण हो चुका है। इसलिए अब किसी अन्य कार्य के लिए यहाँ से शीघ्र जाना चाहते हैं, परन्तु प्रेम के वशीभूत हुआ भगत लॅभामल यह नहीं चाहता कि हजूर यहाँ से कहीं अन्य स्थान पर जाएं। क्योंकि 31 मार्च को हुए आक्रमण के साथ हजूर के शरीर में काफ़ी निर्बलता आ गई है। इसलिए भगत आदि प्रेमी डरते हैं कि यात्रा करने से कहीं फिर वैसा न हो जाए। दूसरा कारण—हजूर के पवित्र शरीर के साथ इतना प्रेम पड़ गया है कि मन चाहता है प्रत्येक क्षण,

हर पल और दीदार होता रहे। एक पल के लिए भी आँखों से ओझल न हों। वैसे भी सोचते हैं कि यदि महाराज ने करनाल से जाना ही है तो दिल्ली ले चलें। वहाँ डॉक्टर से चैक भी करवाया जाए—साथ में परिवार को सेवा का अवसर मिलता रहे। इसलिए हजूर जब यहाँ से जाने का इशारा करते हैं—भगत जी आजकल टाल-मटोल करके छोड़ देते हैं। लेकिन आज ऐसे लग रहा है जैसे हजूर ने यहाँ से जाने का दृढ़ निर्णय कर लिया है इसलिए आज 19 अप्रैल को प्रात: ही पैरों में जूता पहनकर चलने लगे। चरणों में खड़े किसी सेवादार ने प्रार्थना की—महाराज! क्या नीचे जाना है?

नहीं भाई कनखल जाना है। भगत कई दिन से चतुराई किए जा रहा है, लेकर नहीं जाना चाहता, इसलिए आज पैदल ही जाते हैं। सेवादार ने शीघ्रता से भगत को बताया। भगत जी ने प्रार्थना की, महाराज! कृपा करो—पैदल न चलो। मैं अभी गाड़ी मँगवाता हूँ। भगत जी के बहुत निवेदन करने पर हजूर रुक गए। भगत ने शीघ्रातिशीघ्र दिल्ली अमरीक चन्द को फोन कर दिया कि महाराज कनखल को जाना चाहते हैं इसलिए जितनी जल्दी हो सके करनाल आ जाओ ताकि महाराज जी को दिल्ली ले जाया जा सके। मैं तैयारी करता हूँ, अब प्रतीक्षा करने का अधिक समय नहीं है, क्योंकि हजूर आज दृढ़ता से कनखल जाने के लिए कह रहे हैं। महाराज बार-बार पूछ रहे हैं कि चलने में क्या देरी है? लेकिन भगत जी कार आ रही है, पेट्रोल डलवाने गए हैं, आदि बहाने बनाकर देरी कर रहे हैं ताकि अमरीक चन्द दिल्ली से आ जाए। हजूर की ओर से और देरी को सहन न करते देख भगत ने कार मंगवाकर सारा सामान बीच में रख लिया। हजूर ने दिल्ली को तो आज से दो वर्ष पूर्व ही अंतिम विदाई दे दी थी, लेकिन आज यह सौभाग्यशाली करनाल नगर जहाँ जीवन का बहुत समय व्यतीत किया था इसको भी पूर्ण तौर पर अलविदा कर दी, लेकिन यहाँ की संगत अथवा भगत लॅभामल आदि प्रेमी हजूर के इस गहन रहस्य को नहीं समझते। भगत जी ने एक व्यक्ति की ड्यूटी लगा दी कि बाई पास पर बैठ जाओ जब अमरीक चन्द की कार दिल्ली से आए उसको कनखल के मार्ग पर डाल देना। हम धीरे-धीरे ही चलेंगे—वह जितनी शीघ्र हो सके हमें मार्ग में मिलें। भगत जी के छोटे पुत्र सतीश की कार थी। भगत जी ने चालक को इशारा कर दिया कि धीरे-धीरे चलना है। हजूर की आज्ञानुसार कनखल की अरदास करके स्वयं धीरे-धीरे कनखल के मार्ग पर चल पड़े। उधर कुछ मिनटों के पश्चात् अमरीक एवं दर्शन दोनों भाई बाई पास से ही पता चलने पर तीव्र गति से कनखल की ओर चल पड़े। थोड़ी दूर पर जाकर ही जा मिले और अपनी गाड़ी हजूर वाली गाड़ी के आगे लगाकर खड़ी कर ली। दोनों भाइयों ने प्रार्थना की, महाराज! कृपा करो दिल्ली चलो ताकि वहाँ डॉक्टरों से आप जी का शरीर चैकअप हो सके। हजूर बोले—भाई अरदास कनखल की है, इसलिए और कहीं नहीं जाना, सीधे कनखल ही पहुँचना है। आज्ञा मानकर चावला भाइयों ने भी कार पीछे लगा दी। धीरे-धीरे जा पहुँचे उस स्थान पर जहाँ से कभी पारमार्थिक जीवन का शुभारम्भ किया था। अब शायद उसे अंतिम नमस्कार करने के लिए आए हैं। इधर ऋषिकेश से महंत महाराज जी, संत जोध सिंह जी और छोटू बाबा जी भी कनखल आ गए। हजूर का सिंहासन सोलह नम्बर कमरे में सुशोभित कर दिया गया। अखण्ड पाठों की लड़ी आरम्भ हो गई, संगत का आना-जाना पर्याप्त बढ़ गया और गुरु के लंगर का प्रवाह और तेज़ हो गया। भगत लॅभामल बार-बार प्रार्थनाएँ करता है करनाल जाने के लिए। अमरीक चन्द एवं दर्शन लाल प्रति रविवार निवेदन करते हैं दिल्ली जाने के लिए, लेकिन आप अब स्वीकार नहीं कर रहे। छोटू बाबा जी दिन-रात सेवा में लगे हैं। हजूर इस समय बहुत कम बोलते हैं, अधिक समय अन्तर्मुख ही रहते हैं। ऐसे लग रहा है जैसे

संसार एवं शरीर से बिल्कुल असंग, ज्ञान की छठी भूमिका अर्थात् पदार्थ—अभाव में स्थित हैं। औषधियाँ सब बंद कर दी, शरीर की क्रिया की ओर से अचेत। लंगर भी कई बार प्रार्थना करने पर ही थोड़ा बहुत ले लेते हैं। संगत का प्रवाह यद्यपि बहुत बढ़ गया है, लेकिन आप बहुत ध्यान नहीं दे रहे। इधर अखण्ड पाठों का प्रवाह उसी दिन से चल रहा है। इस प्रकार समय व्यतीत होता जा रहा है। आज से कुछ समय पूर्व कनखल निर्मल बाग की सेवा के लिए चमन लाल जी को यहाँ भेज दिया था, लेकिन अब पंडित महेश चन्द्र जी को भगवा वेश देकर यहाँ की सेवा में ही पक्के तौर पर लगा दिया। इतने में एक दिन गोराया से उजागर सिंह सूरी और सतनाम आ गए। दोनों प्रेमियों ने एक दो दिन ठहरने के पश्चात् निवेदन किया, महाराज! कृपा करो, गोराया चरण डालो। संगत आप के दर्शन के लिए व्याकुल है। उधर भगत लॅभामल जी करनाल के लिए बार-बार प्रार्थना कर रहे हैं। हजूर ने अपनी मौज में अथवा भविष्य को देखते हुए आज दो जुलाई 1983 वाले दिन गोराया वालों को स्वीकृति दे दी। सूरी एवं सतनाम सिंह बड़े प्रसन्न हुए। शीघ्र ही हजूर के वस्त्रों वाली गठरी एवं आवश्यक सामान गाड़ी में रख लिया। आज्ञानुसार हजूर को ऊपर वाले कमरे से धीरे-धीरे नीचे उतारकर गाड़ी में बिठा लिया। भगत जी ने अब भी करनाल जाने के लिए प्रार्थना की, लेकिन स्वीकार नहीं हुई। हजूर जब गोराया के लिए चले, इन्द्र देवता ने भी अपना कर्त्तव्य समझकर आकाश में से पुष्प वर्षा कर दी जिसकी गोराया तक पहुँचते ही सारे रास्ते बूँदा-बांदी होती रही। गोराया कुटिया पहुँचकर बारादरी के एक कोने में कुर्सी लाकर हजूर को सुशोभित किया गया। कुर्सी पर बैठते ही अलौकिक प्रीतम ने थोड़ा इधर-उधर बड़े ध्यानपूर्वक देखा, फिर पवित्र मुख से बोले—कितना सुन्दर स्थान है। यहाँ जैसा स्थान न करनाल है, न ऋषिकेश, न कनखल। चारों ओर हरी-भरी फसलें और प्रत्येक दृष्टि से शान्त है। प्रेमी प्रसन्न हो रहे हैं कि महाराज इस स्थान की कितनी प्रशंसा कर रहे हैं, लेकिन प्रशंसा में छिपे गहन रहस्य को नहीं समझ रहे। शायद समय आने पर ही रहस्य खुलेगा। खैर-कुटिया में आनंद मंगल छा गया। अखण्ड पाठों का प्रवाह आरम्भ हो गया। दर्शनार्थ दूर-समीप से संगत का आना-जाना आरम्भ हो गया। लेकिन महाराज किसी ओर अधिक ध्यान नहीं दे रहे, अन्तर्मुख हुए अपनी मौज में लीन रहते हैं। दो चार दिनों के पश्चात् भगत जी करनाल से दर्शनार्थ आए, निवेदन किया, महाराज करनाल चलो, संगत अत्यंत व्याकुल है। भगत जी की प्रार्थना सुनकर महाराज कुछ नहीं कह रहे, लेकिन भगत जी बार-बार निवेदन किए जा रहे हैं। आखिर आप जी ने कह दिया—अच्छा। आप ऐसा करो—कुछ थोड़ा बहुत सामान ले चलो। हम कुछ दिनों तक स्वयं ही आ जाएंगे। इस बात का जब सूरी जी को पता लगा तो सतनाम सिंह आदि संगत को साथ लेकर निवेदन किया—महाराज कृपा करो। यहाँ कुछ दिन और रहकर दर्शन देने की कृपा करो। हजूर बोले—अभी तो यही हैं। भगत जी वस्त्रों की एक गठरी लेकर वापिस करनाल चले गए। इस प्रकार दो-चार दिन व्यतीत हो जाने के पश्चात् एक दिन अपनी मौज में कुर्सी पर बैठते हुए वचन किया—यह इलाका शुष्क है। सूरी जी इस रहस्य को समझ गए, उस दिन से लंगर खुला चलाना आरम्भ कर दिया। समीप के गाँव वाले गरीब गुरु के लंगर में प्रतिदिन गरम-गरम जलेबियाँ छककर लगे गुरु नानक का गुणगान करने। दयालु दाता भी शायद यही चाहते थे जो इशारा समझकर आरम्भ कर दिया। हैं तो चाहे अभी भी अन्तर्मुखी ही, लेकिन प्रसन्नचित्त दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इन दिनों में ही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के प्रधान जत्थेदार गुरचरण सिंह टोहरा आप जी के दर्शनार्थ आए। जल-पान करके महाराज के चरणों में बैठे थे तो किसी प्रेमी ने पूछा—आपको कुटिया तलाशने के लिए कोई कठिनाई तो नहीं हुई। जत्थेदार जी बोले—हमने जी०टी० रोड़ पर पूछा था कि इस गोराया नगर में एक निर्मले महात्मा आए हुए हैं, उनके टिकाने का कुछ पता हो? किसी ने बताया कि डलेवार रोड़ पर सुना है कि एक वृद्ध महात्मा आए हुए हैं, वहाँ प्रतिदिन

जलेबियों का यज्ञ चलता रहता है। टोहरा जी कहने लगे—बस मैं समझ गया कि वहीं हैं, क्योंकि जहाँ भी मैं उनके दर्शनों के लिए गया हूँ वहाँ जलेबियाँ अवश्य छकाते हैं। इस प्रकार कुछ श्रद्धा एवं प्रेम भरे वचन करके और महाराज जी के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कुछ चर्चा करके टोहरा साहिब जी चले गए। इसी दिन गोराया संगत को एक पत्र प्राप्त हुआ जो महंत महाराज की ओर से ऋषिकेश से पूज्य विरक्त महाराज जी के चरणों में पोस्ट किया गया था जिसमें लिखा गया था आप कृपा करो इस वर्ष पुण्य तिथियों पर हरिद्वार ऋषिकेश अवश्य दर्शन देने की कृपा करो। जिस समय सेवादारों ने हजूर को यह पत्र पढ़कर सुनाया तो आप मुस्कराते हुए बोले—महंत ने पुण्य तिथि पर तो बुला लिया, लेकिन मार्ग का व्यय तो नहीं भेजा; लेकिन हमारे पास तो कोई खर्चा पूँजी है नहीं फिर ऋषिकेश कैसे जाएंगे। संगत निवेदन कर रही है—महाराज! समस्त प्रकृति आप के अधीन है, संसार की समस्त गाड़ियों के आप स्वामी हो, जिस दिन आज्ञा दोगे—ले चलेंगे। हजूर भी इतना कहकर मौन हो गए, लेकिन तीसरे दिन जब हजूर ने पवित्र शरीर के प्राणों का त्याग किया तो फिर संगत समझी कि महाराज इस श्वासों रूपी पूँजी की बात कह रहे थे जो आज समाप्त हो गई। इस प्रकार अनेक संगत दर्शनार्थ आती रहती है। गुरु लंगर का प्रवाह प्रवाहित है और अखण्ड पाठों द्वारा वाणी का प्रवाह भी निरंतर जारी है, लेकिन हजूर अपनी मौज में उन्मनी अवस्था से बाहर नहीं आ रहे।

बीस जुलाई वाले दिन हजूर ने प्रात: ही गुरनाम सिंह खोख को कहा कि पंडित फकीर चन्द को बुलाकर ले आओ। पंडित जी ने आकर नमस्कार की। हजूर ने गुरनाम सिंह को कहा कि हमारे वस्त्रों वाली गठरी में से कुर्त्ता निकालो। गुरनाम सिंह ने कुर्त्ता निकालकर दिया। हजूर ने अपने पवित्र हाथों से पंडित को प्रदान कर दिया। उधर निरंतर प्रवाहमान अखण्ड पाठ के प्रवाह में आज संता सिंह अहमदगढ़ वाले का अखण्ड पाठ आरम्भ किया गया। दूसरे दिन एक जुलाई को प्रात: ही फिर गुरनाम सिंह को आज्ञा की कि पंडित को बुलाओ। गुरनाम सिंह आज फिर बुलाकर लाया और हजूर ने पंडित को एक कुर्त्ता आज फिर प्रदान किया। पंडित जी बोले महाराज! मेरे पास तो आपकी कृपा से बहुत वस्त्र हैं। हजूर बोले कोई बात नहीं। यह भी ले लो? आज दिन में उजागर सिंह सूरी जी की माता जी ने हजूर के चरणों में दस हज़ार रुपये की गट्ठी अर्पित की। हजूर ने साधु वेश धारण करने के पश्चात् आजीवन धन को स्पर्श नहीं किया, पूर्ण विरक्तीय जीवन व्यतीत किया, लेकिन आज देखो—अलौकिक प्रीतम की लीला। धन की गट्ठी को एक हाथ से दूसरे हाथ में बार-बार इस प्रकार बदल रहे हैं जैसे रबड़ की गेंद। काफ़ी देर तक यूँ ही करते रहे। आखिर सूरी को बुलाकर धन की गट्ठी पकड़ाते हुए आज्ञा की इसको अपने पास रख लो। सूरी जी तो माया लेकर लंगर की ओर आ गए, उधर चरणों में बैठी सूरी जी की माता जी को पूछा, तुम्हारा पहला इलाका कौन-सा है? माता ने बताया महाराज! कॅलर ज़िला रावलपिण्डी था। हजूर ने बताया कि हम भी कॅलर गए थे बाहर घराटों पर रात्रि व्यतीत की थी। माता ने बताया-महाराज! वे घराट हमारे ही थे। हजूर ने फिर पूछा, तुम्हारे मायके कहाँ थे? महाराज! खलोल गाँव (जेहलम के किनारे) थे। मेरे पिता का नाम गुरदित्त सिंह था, लेकिन आम लोग शाह जी, शाह जी, करके जानते थे। हजूर बोले—हमने उनके पास लंगर छका था और फिर दरिया को भी उन्होंने ही पार कराया था।

आज कोई डेढ़ मास के पश्चात् हजूर ने बातचीत की। ऐसा आज क्यों किया? इस रहस्य को तो वे स्वयं ही जानें।

अगले दिन बाईस जुलाई को हजूर ने फिर गुरनाम सिंह को आज्ञा दी—बुला पंडित को। हजूर ने आज फिर एक वस्त्र पंडित जी को देना चाहा, लेकिन पंडित जी ने दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना की—महाराज मेरे पास तो बहुत वस्त्र हो गए। खोख

वाले गुरनाम सिंह ने प्रार्थना की—महाराज! दो वस्त्र आप जी ने पहले प्रदान किए हैं इसलिए पंडित जी के पास वस्त्रों की कमी नहीं रही। हजूर बोले—अच्छा! फिर जा भाई! प्रातः गुरनाम सिंह आज्ञा लेकर घर वापिस चला गया, दिन में हजूर ने उजागर सिंह सूरी को भीतर बुला लिया। उस समय छोटू बाबा जी एवं अशोक चावला जी भी पास ही थे। हजूर बोले—सूरी हमारा विचार ऋषिकेश जाने का है क्या तुम अपनी गाड़ी पर ले चलोगे। सूरी ने प्रार्थना की—महाराज गाड़ियाँ आप की ही तो हैं, मैं तो आपका दास हूँ इसलिए मुझे बहुत खुशी होगी। फिर कुछ अन्य बातें करते हजूर ने फरमाया कि साधु के मृतक शरीर को जल में प्रवाह ही करना चाहिए, क्योंकि जल में रहने वाले जीव-जन्तुओं का एक दिन यज्ञ बन जाता है। इस तरह शरीर काम आ जाता है। फिर हजूर ने पूछा—सूरी तेरे पास कुटिया का कितना धन है? महाराज इतना भर है। हजूर बोले—आधा यहाँ खर्च करना, आधा ऋषिकेश। सत्वचन महाराज! सूरी सायं को लगभग पाँच बजे लड्डू बनाने के लिए हलवाइयों को कुटिया लेकर आया। हजूर ने सूरी को बुलाकर कहा कि भाई—तुम अपने घर जाओ। सूरी का मन घर जाने को न था लेकिन हजूर ने दोबारा फिर कहा। सूरी जी वचन मानकर घर को तो चले गए, लेकिन मन में संशय उठने आरम्भ हो गए, क्योंकि जीवन में आज पहली बार हजूर ने अकारण मुझे घर भेजा है, लेकिन कारण कोई समझ में न आया। घर जाते ही कुछ देर बाद संदेश आ गया कि हजूर की तबीयत खराब हो गई है। सूरी साहिब समाचार सुनते ही डॉक्टर बचित्तर सिंह को साथ लेकर तुरंत कुटिया पहुँच गए। डॉक्टर ने हालत देखकर कहा कि शीघ्र ही अस्पताल ले चलो। जब कार बरामदे में पहुँची, बस उसी समय दीनों का मसीहा, रोगियों का वैद्य, परमार्थ यात्रियों का अवलम्ब, अंधकार का विनाशक और ज्ञान का महान् सूर्य 22 जुलाई, 1983 को सांय 7 बजे अपने प्राणों की पूँजी दीन-ज़रूरतमंदों को वितरित करके अपने निज-देश में अवस्थित हुआ। संगत में सन्नाटा छा गया। अंधेरी रात्रि के समान स्तब्धता छा गई, किसी को कुछ सूझ नहीं रहा, लेकिन आकाश मण्डल में से एक बहुत दिव्य ध्वनि कानों में पड़ रही है जिसको ध्यानपूर्वक सुनने में कुछ ऐसे सुनाई दे रहा है—

धनं जनम तुमरो जग आइयो॥ सतिनाम हर मंतर द्रिड़ाओ॥
धरत मंडल महि जस बिसथारा॥ पाइ परमगत पंथ पधारा॥
चिरंकाल रहै तेरो नाम॥ जानहि गुरु पंथ अभिराम॥

सेवकों ने ऋषिकेश, करनाल, दिल्ली आदि स्थानों पर टेलीफोन कर दिए। सब स्थानों पर बता दिया कि प्रातः हजूर के शरीर को साथ लेकर कनखल चलेंगे। कुछ संगत ने पवित्र शरीर के पास बैठकर सुखमनी साहिब का पाठ आरम्भ कर दिया और जिम्मेदार व्यक्तियों ने कनखल जाने के लिए गाड़ियों आदि की हर प्रकार से तैयारी कर ली। अगले दिन प्रातः से पूर्व सारी तैयारी पूरी करके चलने का विचार किया तो संगत की आज्ञानुसार सेवा सिंह मान ने कनखल जाने की अरदास की। अरदास अभी पूर्ण नहीं हुई थी, इतने में करनाल से भगत लॅभामल जी पहुँच गए। भगत जी ने कहा कि करनाल संगत बहुत अधिक है, सारी संगत का कनखल पहुँचना अत्यंत कठिन है क्योंकि कुछ बीमार है, कुछ वृद्ध हैं और कुछ निर्धन हैं जो किराया खर्च नहीं कर सकते, इसलिए महाराज जी के शरीर को करनाल से होकर ले चलें ताकि सब दर्शन कर लें फिर कनखल ले चलेंगे। भगत जी का वचन मानकर करनाल की ओर प्रस्थान कर दिया। थोड़ी दूर जाकर अमरीक चन्द एवं दर्शन लाल दोनों भाई मिल गए, वे भी साथ हो लिए। इस प्रकार संगत मार्ग में मिलती गई और गाड़ियों का काफ़िला बढ़ता गया,

थोड़ा दिन चढ़ते ही करनाल पहुँच गए। इधर ऋषिकेश से महंत महाराज जी और संत जोध सिंह जी कनखल आकर प्रतीक्षा करने लगे। सवेरा हो गया अभी तक कनखल न तो कोई गाड़ी पहुँची और न ही कोई संदेश। महंत महाराज जी और संत जोध सिंह जी के मन में शंका उत्पन्न हो गई कि महाराज जी के पावन शरीर को कहीं करनाल ही न ले गए हों? संत जोध सिंह जी ने निर्मल अखाड़ा में जाकर करनाल दो-तीन घरों में फोन किए, लेकिन कुछ पता न लगा, क्योंकि किसी भी घर में कोई वयोवृद्ध व्यक्ति फोन पर न मिला, सिवाए बच्चों के। संत जोध सिंह जी समझ गए कि सब संगत कुटिया पहुँची हुई है, इसलिए कोई फोन पर नहीं मिल रहा। आकर महंत महाराज जी को सारी बात बताई। विचार-विमर्श करके दोनों महापुरुष करनाल को चल पड़े। करनाल से अभी पाँच सात कि०मी० पूर्व ही सामने से आते हुए गोराया वाले सूरी आदि मिले। उन्होंने सारी बात बताई। महंत जी ने उनको भी वापिस मोड़ लिया और करनाल कुटिया पहुँच गए। आगे संगत भारी संख्या में एकत्रित हुई थी। गोराया वाले अपना पक्ष बता रहे थे, जो उन्होंने हजूर के संकेत समझे थे। दूसरी ओर करनाल वाले अपने पक्ष पर दृढ़ थे। महंत महाराज जी ने भी तर्क से समझाया, लेकिन कोई असर न हुआ। अंत में करनाल ही संस्कार करने का निर्णय हो गया। थोड़े समय में चिता आदि का प्रबन्ध करके, संगत के सागर के समान ठाठें मार रहे समूह के सम्मुख पर-उपकार का रूप हुए पवित्र शरीर को, अग्नि को भेंट कर दिया। यह वह शरीर था जो दीनों, दु:खियों, निराश्रितों, असहायों और जरूरतमंदों के दु:खों के साथ जल रही हृदय रुपी पृथ्वी पर लगभग आधी शताब्दी मेघ होकर बरसा था। धरती के ताप को दूर करने के लिए सागर में से उठा मेघ मानों ज़ोरदार वर्षा करके सागर में जा मिला हो। यथा—

सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम॥
जोती जोति रली संपूरनु थीआ राम॥

(बिलावलु म० ५, पृष्ठ ८४६)

आकाश से देवता पुष्प वर्षा कर रहे हैं और मधुर-मधुर ध्वनि कानों में प्रवेश करके कहीं गहरे में उतर रही है जिस के अक्षर कुछ इस प्रकार सुनाई दे रहे हैं—

गुरमुखि लंघे से पारि पए सचे सिउ लिव लाइ॥
आवा गउणु निवारिआ जोती जोति मिलाइ॥
आवा गउणु निवारिआ जोती जोति मिलाइ॥
आवा गउणु निवारिआ जोती जोति मिलाइ॥

(मारु म० १, पृष्ठ १००९)

इस प्रकार 22 जुलाई सावन की सप्तवीं अर्थात् आषाढ़ शुदी तेरह को महापुरुषों ने गोराया में पाँच भौतिक शरीर को त्यागा था। उस पवित्र शरीर का आज 23 जुलाई आठ सावन अर्थात् आषाढ़ शुदी चतुर्दशी को करनाल में अंतिम संस्कार किया गया।

उधर गोराया कुटिया में पंडित फ़कीर चन्द जी जिनको हजूर ने दो दिन अपने पवित्र हाथों से चोले प्रदान किए थे, वे भी आज 23 जुलाई को अर्थात् हजूर का शरीर कुटिया में जाने के कुछ घंटों बाद ही दिन के एक बजे लंगर की सेवा करते-करते उसी स्थान पर चादर लेकर लेट गए जिस स्थान कल हजूर ने अपना शरीर त्यागा था।

कुछ समय पश्चात् जब किसी ने देखा तो पंडित फ़कीर चन्द जी का केवल शरीर रूपी पिंजरा पड़ा था और हँस उड़ चुका था। पंडित जी के शायद दो जन्म अभी शेष थे, लेकिन उसकी किसी सेवा पर रीझकर अलौकिक प्रीतम ने आखिरी दो दिन दो चोले प्रदान करके पंडित जी की भाग्य लिपि समाप्त कर दी।

दूसरी ओर करनाल में महापुरुषों के पावन शरीर को अग्नि भेंट करने के पश्चात् महंत महाराज जी और संगत ने बैठकर विचार किया कि चौथे दिन सतीघाट कनखल श्री गुरु अमरदास महाराज जी के पवन चरणों में पवित्र शरीर की अस्थियाँ गंगा-प्रवाह की जाएंगी। दसवें दिन हजूर की पवित्र स्मृति में गोराया कुटिया पर भोग समागम होगा। बारहवें दिन हजूर की पावन स्मृति में कनखल समागम होंगे और सत्रहवें दिन करनाल कुटिया में अंतिम अरदास की जाएगी। इसी प्रकार खोख, लोपे और कई नगरों में उनकी स्मृति में समागमों के लिए महंत महाराज जी ने तिथियाँ देने की कृपा की। सभी स्थानों पर जहाँ-जहाँ हजूर की पावन स्मृति में समागम हुए संत जोध सिंह जी और छोटू जी को साथ लेकर महंत जी महाराज पहुँचे। आप जी के साथ पूज्य विरक्त महाराज जी का एक सिंधी शिष्य श्री हीरानंद जी और माता मोहिनी बाई मनसुखानी बम्बई वाले भी लगभग सब समागमों पर गए। जत्थेदार गुरचरण सिंह जी टोहरा भी गोराया समागम में पहुँचे। उस समागम पर पूज्य महाराज जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते टोहरा जी ने घोषणा की कि विरक्त महाराज जी की स्मृतियों में जहाँ-जहाँ भी समागम होंगे—मैं सब स्थानों पर पहुँचने का प्रयत्न करूँगा। टोहरा जी ने किया भी वैसे ही। एक-दो स्थान शायद किसी व्यस्तता के कारण रह गए हों शेष सभी स्थानों पर पहुँचकर उन्होंने भी हजूर के चरणों में श्रद्धा सुमन चढ़ाए।

विरक्त महाराज जी के जीवन की कुछ विशेष झलकियाँ

- ❑ 1894 ई० — में आप जी का संसार में अवतरण हुआ।
- ❑ 1913-14 ई० — में फौज में भर्ती हुए।
- ❑ 1916 ई० — में फौज से वापसी।
- ❑ 1923 ई० — में श्री हरिमंदिर साहिब के पावन सरोवर की कार सेवा में बाबा बुड्ढा सिंह जी के पहले दर्शन हुए।
- ❑ 1927 ई० — में घर बार का त्याग करके साधु बन गए।
- ❑ 1928-29 ई० — में काशी पढ़ने गए और पौने दो वर्षों बाद वापसी।
- ❑ 1938 ई० — में हरिद्वार कुंभ मेले पर संत भगत जी, बाबा बेअंत सिंह जी और संत दर्शन सिंह जी पहली बार मिले।
- ❑ 1944 ई० — में पहली बार 'खोख' गाँव गए।
- ❑ 1950 ई० — में पहली बार करनाल गए।
- ❑ 1967 ई० — में गोराया नगर पहली बार गए।

'माया' सम्बन्धी विचार

एक बार महंत राम सिंह जी ने, जब बैंक में नौकरी करते थे, सारे पैसे लंगर में डाल दिए तो पूज्य विरक्त महाराज जी ने आज्ञा की कि माया कोई बुरी वस्तु नहीं, माया का मोह बुरा है, क्योंकि यह भी प्रभु की रचना है—यथा गुरुवाक्

आपि सति कीआ सभु सति॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २८४)

इसलिए प्रभु की रचना होने के कारण बुरी नहीं है। प्रयोग के समय इसका ध्यान रखना है कि माया से कहीं मोह न पड़ जाए। ध्यान सदैव प्रभु में रहे और माया से मोह न पड़ जाए। दातार से प्रेम बना रहे इसलिए माया का त्याग नहीं, माया-मोह का त्याग करना है।

गुरु-प्रेम

किसी समय आप जी ने फ़रमान किया था कि हमारे गुरुदेव कलावान् महापुरुष थे। ऐसे महापुरुष संसार में कभी-कभी आते हैं।

गुरु-स्थान से प्रेम

आपने चाहे साधु जीवन का लम्बा समय हर प्रकार के त्याग सहित दृष्टमान वस्तुओं के किसी भी अधिकार से निर्लिप्त, पर्ण कुटियों में व्यतीत किया, लेकिन गुरु-स्थान के साथ इतना घनिष्ठ प्रेम था कि एक बार जब विरक्त कुटिया वाले निर्मल बाग कनखल के उस स्थान पर ज़बरदस्ती दीवार उठाने लगे तो आप जी लाठी पकड़कर खड़े हो गए कि आओ फिर जिसने आगे आना है।

किसी समय आप जी ने कहा था कि जो व्यक्ति निर्मल आश्रम की ईंटों से भी प्रेम करता है वह भी हमें अत्यंत प्यारा लगता है। इस प्रकार कनखल वाले स्थान का झगड़ा भी आपने अपने चमत्कार से ही समाप्त किया। 1973 में महंत आत्मा सिंह जी के शरीर त्यागने के पश्चात् आपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए संत नारायण सिंह जी को योग्य समझकर महंती की पगड़ी प्रदान की जबकि महंती के इच्छुक और भी सज्जन झगड़ा करने पर तुले हुए थे।

सिक्ख पंथ से प्रेम

एक समय की बात है कि महंत गुरबचन सिंह बरनाला वाले ने प्रार्थना की—महाराज! डेरे की भूमि को लोग दबा रहे हैं। बटाई अथवा ठेका देने से भी इन्कार कर गए हैं। आपकी आज्ञा हो तो किसी के नाम लगवाकर झगड़ा समाप्त कर दें। आप जी ने आज्ञा की कि यह सम्पत्ति पंथ की है, इसलिए पंथ के नाम करा दो अर्थात् पंथ की जत्थेबंदी शिरोमणि कमेटी के नाम लगा दो। पंथ की चीज़ किसी अन्य को न देना।

गुरुवाणी और गुरु नानक के घर से प्रेम

आप जी यद्यपि ज्ञान की पूर्ण अवस्था में स्थित होकर समस्त चर-अचर, सूक्ष्म, स्थूल संसार को हरि का रूप समझते हुए '**नानक एको रवि दूसर होआ न होगु**' की परिपक्व ब्रह्म दृष्टि में विचरण करते थे, लेकिन फिर भी जो पुरुष गुरु नानक

के घर का सच्चे दिल से प्रेम-आदर करता था वह आपको बहुत प्रिय लगता था। सन् 1969 ई० में जिस समय संत गुरबचन सिंह जी भिण्डरा वाला का शरीर शान्त हुआ तो उस समय आप खोख में रुके हुए थे। वहाँ की संगत को आज्ञा दी, कि भाई! संत गुरबचन सिंह जी ने गुरुवाणी एवं गुरु नानक के घर का बहुत प्रचार किया है, इसलिए उनके निमित्त श्री गुरु तेग बहादुर जी के ऐतिहासिक स्थान पर गाँव 'अगौल' में अखण्ड पाठ साहिब करो। संगत ने आज्ञानुसार बड़ी श्रद्धा एवं प्रेम के साथ अखण्ड पाठ साहिब किया। उसके उपरान्त आप जी ने कथा भी की।

गुरुद्वारों की सेवा

आप जी ने जहाँ गुरुवाणी का असीम प्रचार किया, वहाँ कई जगहों पर गुरु-स्थानों की सेवा की भी और करवाई भी जैसे कि गाँव दौद, दुधाल, शेरपुर गरिंड और भुंगरनी (होशियारपुर), गोराया, खोख, अगौल, बिरड़वाल, अलौहरां, बिशनपुरा (लोपे) कुराली और नबीआबाद (करनाल)। अगौल गाँव नौवें पातशाह के स्थान पर जहाँ गुरुद्वारा साहिब बनाया, वहाँ सरोवर की नींव भी रखी। गाँव बौड़ां समीप नाभा नौवें पातशाह के स्थान पर गुरुद्वारा साहिब की नींव रखी। खालसा हाई स्कूल नाभा, जो किसी समय आर्थिक दृष्टि से टूट चुका था उसकी आर्थिक स्थिति को शक्ति प्रदान की।

19 मई, 1981 ई० को अपने प्रिय सेवक आदरणीय राम सिंह जी को अपना निज स्वरूप प्रदान कर निर्मल आश्रम का महंत स्थापित किया। 3 अप्रैल, 1983 को संत जोध सिंह जी और संत गुरिंदर सिंह (छोटू बाबा) जी को अपनी कृपा द्वारा निर्मल वेश प्रदान कर निर्मल आश्रम ऋषिकेश भेजा। 22 जुलाई, 1983 ई० को अपना पाँच भौतिक शरीर त्याग कर सचखण्ड जा विराजमान हुए।

---

* *आप जी ने पूरा जीवन गुरुवाणी के रहस्य भावनाओं की व्याख्या कथा द्वारा जो ज़ोरदार अमृतवर्षा की वह एक अलग पोथी 'सहज कथा' के नाम से प्रकाशित हो चुकी है जो कि निर्मल आश्रम ऋषिकेश से बिना किसी मूल्य के हर समय उपलब्ध है।*

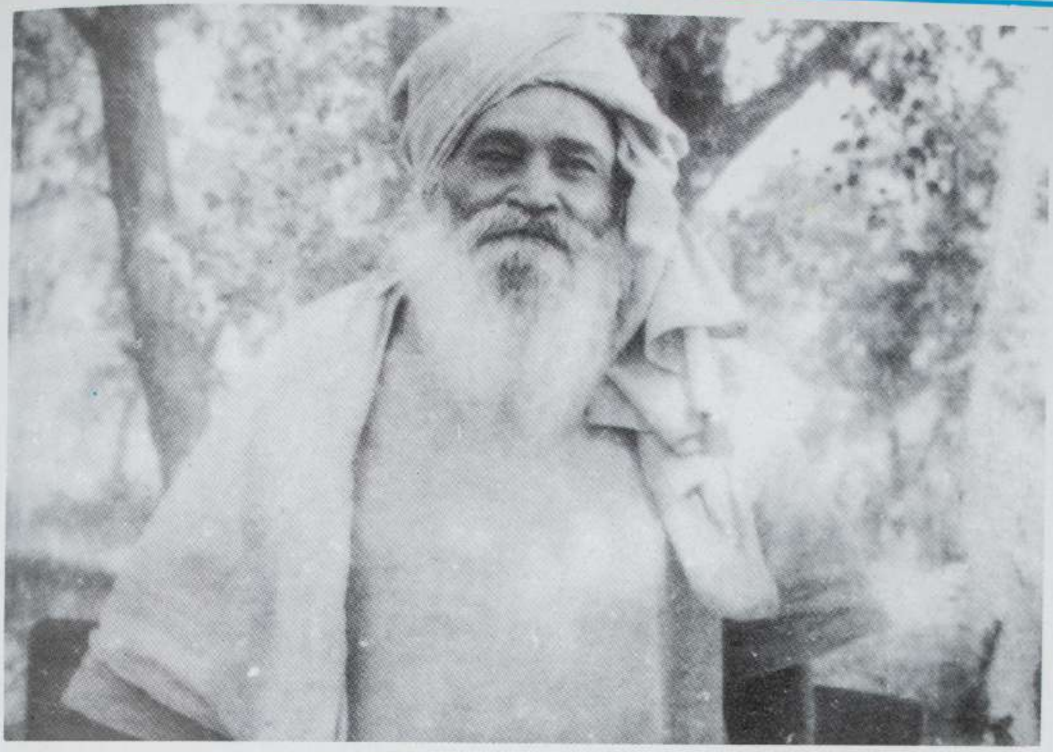

पुज्य विरक्त शिरोमणि श्रीमान् १०८ संत निक्का सिंह जी महाराज

वृद्धावस्था समय सन् 1982 ई० के किसी समय पूज्य विरक्त शिरोमणि श्रीमान १०८ संत निक्का सिंह जी महाराज

श्रीमान १०८ महंत राम सिंह जी महाराज अपने पूज्य गुरूदेव विरक्त शिरामणि श्रीमान् १०८ संत निक्का सिंह जी की पावन अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करते हुए।

पूज्य विरक्त शिरोमणि श्रीमान १०८ संत निक्का सिंह महाराज जी के पवित्र चरणों के दर्शन

पूज्य

महन्त राम सिंह जी

महाराज

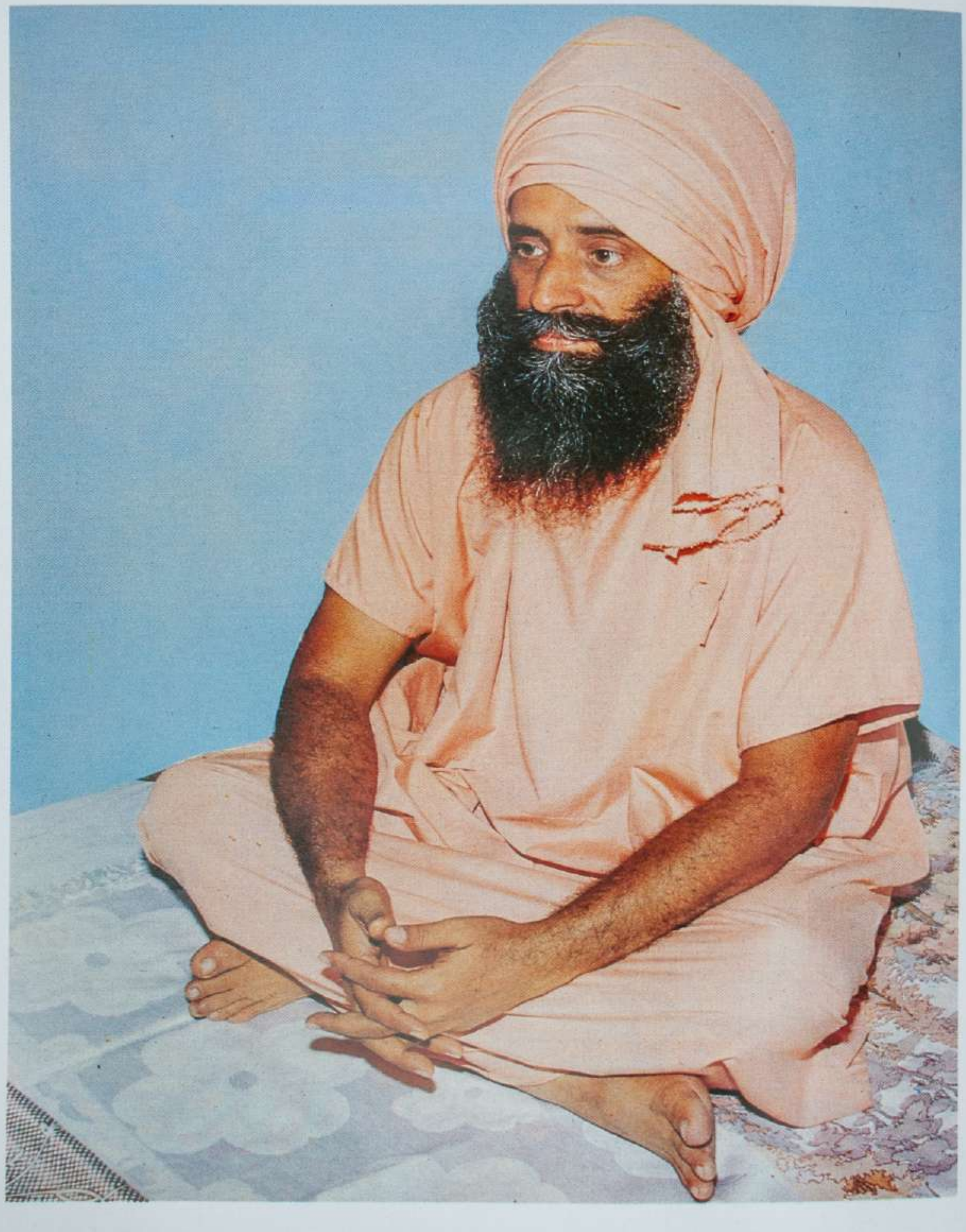

श्रीमान् १०८ महंत राम सिंह जी महाराज

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

6 अध्याय महंत राम सिंह जी महाराज

(प्रथम भाग)

जीवन चरित्र पूज्य महंत राम सिंह जी महाराज निर्मल आश्रम ऋषिकेश

महाभारत का भीषण युद्ध हो रहा है। दोनों महाबली वीर पूरे क्रोध में आ-आ कर बाणों की अंधाधुंध वर्षा कर रहे हैं। बाणों की भीषण आंधी ने धरती से मिट्टी उठाकर आकाश को बादलों की भाँति ढक लिया। धूलि से सूर्य इस प्रकार ढक गया मानों आज उदय ही नहीं हुआ। अंतत: लम्बे समय के भीषण युद्ध के पश्चात् अर्जुन के बाणों ने महादानी कर्ण को मूर्च्छित कर दिया। महाबली वीर कर्ण के मूर्च्छित होने के साथ आज का युद्ध समाप्त हो गया। भगवान् बोले—हे अर्जुन! आज संसार में दान का दिनकर छिप गया। अर्जुन ने पूछा—कौन? भगवान् बोले—कर्ण! कर्ण-सम संसार में कोई दानी नहीं। अर्जुन के मन में ईर्ष्या पैदा हो गई। कहने लगा दिखा सकते हो उस सूर्य की कोई रश्मि? भगवान् कहने लगे ब्राह्मण का रूप धारण कर चल, आज ही दिखा देते हैं। दोनों ब्राह्मण का रूप धारण कर आ पहुँचे उस युद्ध भूमि में जहाँ वह महाबली वीर अर्ध-मूर्च्छित हुआ पड़ा था। भगवान् ने बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण करके कहा—हे कर्ण वीर! तुम्हारे समान समस्त पृथ्वी पर कोई अन्य दानी नहीं है, तुम परमेश्वर के कृपा-पात्र हो, तुम हमें दान देकर मनोवांछित (अभिलाषित) वरदान प्राप्त करो। ब्राह्मण कहने लगा—मैं आधि-व्याधि रोगों के कारण अति पीड़ित हूँ और निर्धन होने के कारण दु:खी हूँ और भिक्षुक बनकर तुम्हारे पास आया हूँ। मुझे दान देकर मन-वांछित फल प्राप्त कर। हे कर्ण वीर! लक्ष्मी विष्णु के पास चली जाएगी और राज्य, युधिष्ठिर के पास चला जाएगा, परन्तु तेरे स्वर्ग जाने के पश्चात् बेचारे भिक्षुक कहाँ जाएंगे? मेरी युवा कन्या विवाह के योग्य है, धन का मेरे पास अभाव है, इसलिए मैं तुम्हारे पास आया हूँ—कुछ स्वर्ण लेने के लिए। मैं भिक्षुक हूँ, परमेश्वर किसी को भिक्षुक कुल में जन्म न दें। भिक्षुक के जन्म से तो वन के पक्षियों का जीवन श्रेष्ठ है, पर्वत के ऊपर का घास बनना श्रेष्ठ है और उसकी माँ का बाँझ रहना श्रेष्ठ है, लेकिन याचक-कुल में जन्म निष्फल है। भिक्षुक का जन्म श्रेष्ठ नहीं, क्योंकि भिक्षुक सब से हल्का होता है। जैसे तिनके से भी आक अथवा सिम्बल की रुई हल्की होती है, परन्तु भिक्षुक रुई से भी हल्का होता है। शंका—रुई वायु के साथ उड़ जाती है, लेकिन भिक्षुक तो उड़ता नहीं देखा? उत्तर-वायु डरती नहीं उड़ाती, कि कहीं मुझ से कुछ माँग न ले। इसलिए भिक्षुक से सब डरते हैं। माँगने वाले की यह हालत होती है कि माँगते समय शरीर संकुचित हो जाता है, वाणी में दीनता आ जाती है अर्थात् अक्षर भी टूटे फूटे निकलते हैं, साफ नहीं बोल सकता, कंठ अवरुद्ध हो जाता है, स्वेद के कारण शरीर पानी-पानी हो जाता है, शरीर शव के समान हो जाता है। हे कर्ण! मैं ऐसा याचक होकर तेरे पास आया हूँ। ऐसे दरिद्र अर्थात् निर्धन को आज तक किसी ने दग्ध नहीं किया। सुना है कि महादेव ने पाँच बाणों वाले कामदेव को दग्ध करके अच्छा नहीं किया। अर्जुन बली ने खाण्डव वन को दग्ध करके अच्छा नहीं किया, क्योंकि अनेकों दिव्य वृक्षों से भूषित था। हनुमान ने रावण के कारण कितनी सुंदर लंका को जला दिया, इसलिए उसने भी अच्छा नहीं किया, लेकिन खेद है कि किसी शूरवीर ने दरिद्र, जो लोगों को कष्ट देने वाला है, को नहीं जलाया। ऐसे वचन सुनकर कर्ण बोला—हे ब्राह्मण श्रेष्ठ!

क्या तुझे पता है कि मैं किस अवस्था में विवश हुआ युद्ध-क्षेत्र में धरती पर लेटा पड़ा हूँ। इस समय न तो मेरे पास धन है और न शारीरिक सामर्थ्य। इस अवस्था में मैं क्या दे सकता हूँ। ब्राह्मण बोला—हे कर्ण! समय-समय पर मेघ वर्षा करते हैं, वृक्ष भी समय-समय पर फलित होते हैं, सदैव नहीं। धरती भी समय-समय पर फल देती है और गायें भी समय-समय पर दूध देती हैं। सारे अपने-अपने समय पर फलते हैं, लेकिन हे कर्ण! तुम सदा बहार हो। तुम्हारी प्रसिद्धि सुनकर तुम्हारे पास आया हूँ। तुम सदैव देने वाले हो और हर समय तुम्हारे पास देने के लिए है, लेकिन मेरा कर्म दुर्बल होने के कारण हे कर्ण! तुम भी कृपण हो गए हो। देखो! तुम्हारे दाँतों में सोना नज़र आ रहा है, लेकिन तुम देने को तैयार नहीं। ब्राह्मण की बात सुनकर कर्ण बोला—हाँ मुझे भी स्मरण हो आया है कि मेरे दाँतों में सोना है। हे ब्राह्मण! मेरे दाँतों में सोने की तार एवं हीरे जड़े हैं। वह तुम बड़ी खुशी से पत्थर के साथ तोड़कर ले सकते हो। ब्राह्मण कहने लगा कि मैं वृद्ध हूँ, तुम्हारे दाँत तोड़कर सोना निकालने की मेरी सामर्थ्य नहीं है। कर्ण बोला हे नाथ! मुझे पत्थर उठाकर दो—मैं स्वयं दाँत तोड़कर तुझे दूँगा। ब्राह्मण बोला—मैं तुझे पत्थर देने के लिए भी सामर्थ्य नहीं रखता। ब्राह्मण की असमर्थता देखकर और अपनी दानवीरता को कलंकित होता देखकर पृथ्वी पर गिरा हुआ कर्ण रेंगता हुआ पत्थर के पास पहुँचा। युद्ध में अर्जुन के बाणों से कर्ण के हाथ की उँगुलियाँ कटी हुई थी, लेकिन फिर भी अपने कटे हाथों में पत्थर पकड़कर धीरे-धीरे दाँतों पर चलाने लगा। देखो! अब भगवान प्रसन्न हुए। अपना वास्तविक रूप बदल कर भगवान् ने कर्ण का हाथ पकड़ लिया। भगवान् पवित्र मुख से बोले—हे कर्ण! हे महाबली वीर! हे दानवीर! तुम्हारे समक्ष पूरी पृथ्वी पर कोई दानी नहीं। यह जो तुमने अपने अंतिम समय में दानवीरता का कर्म किया है दाँत तोड़कर देने वाला इसने मुझे प्रसन्न कर लिया है, इसलिए तुम जो चाहते हो वरदान माँग लो। कर्ण कहने लगा—हे मधुसूदन! यदि मुझ पर प्रसन्न होकर वरदान देने लगे हो तो यह वरदान दो कि मेरा धन ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मणों के ऊपर व्यय हो। मेरे स्वामी के कार्य में मेरे प्राण खर्च हों। सुपात्र को मैं दान देता रहूँ, मेरी वृत्ति हर समय आपके स्वरूप में लगी रहे, मेरी मृत्यु गंगा के तट पर हो, सत्संग में मेरा वास हो, क्षत्रिय कुल में मेरा जन्म हो, मेरा घर साधु-ब्राह्मणों से भरा रहे और मेरा हृदय शास्त्र-सिद्धान्त से पूरित रहे। हे मधुसूदन! यदि प्रसन्न हुआ ही है तो यह वरदान दे भूखों को अन्न देने वाला मैं होऊँ, निर्धनों को सोना देने वाला भी मैं ही होऊँ, दु:ख के समय में भी अभयदान देने वाला मैं ही होऊँ हे कृष्ण! यदि प्रसन्न ही हुए तो ऐसा दान दो कि मैं ऐसा सदाचारी होऊँ, कि पर स्त्रियों में मेरी स्त्री बुद्धि न हो बल्कि माता बुद्धि हो। पर धन में भूलकर भी मेरी बुद्धि न हो अपितु मिट्टी बुद्धि हो। मेरी जिह्वा कभी पर निंदा अर्थात् चुगली वाली न हो, मेरा अन्त:करण दैवी गुणों से पूरित हो अर्थात् सत्यवादी होऊँ। विचार पवित्र हो। आपका अनन्य भक्त होऊँ इन्द्रिय निग्रह वाला होऊँ, और बात समझने में चतुर होऊँ। हे मधुसूदन! यदि प्रसन्न ही हुए हों तो वरदान दें! शरीर रोग रहित हो, मन ताप रहित हो, लक्ष्मी स्थित हो और नित्य आपकी भक्त हो। हे श्री कृष्ण! यदि मुझ पर प्रसन्न हो तो यह वर दो कि आपका ध्यान करते हुए मेरा शरीर छूटे और मेरी दाह-क्रिया आप करें और संस्कार भी ऐसे स्थान पर करना जहाँ आज तक कोई संस्कार न हुआ हो। इस प्रकार कर्ण जो-जो वरदान माँगता गया भगवान् प्रसन्न होकर देते गए। बस अब शायद समय आ गया—देखते-देखते ही कर्ण भगवान् के हाथों में प्राण त्याग गया। भगवान् अब दिए वचनानुसार कर्ण के मृतक शरीर का संस्कार करने के लिए आधा गज भूमि खोज रहे हैं, लेकिन ऐसा स्थान नहीं मिल रहा जहाँ आज तक संस्कार न हुआ हो। अंतत: खोजते-खोजते एक सुंदर भूमि दिखाई दी। भगवान् ने पूछा हे भूमि! तुम सच बताओ आज तक यहाँ किसी शव का दहन तो नहीं किया? भूमि ने आवाज़ दी—यहाँ सैकड़ों बार भीष्म पितामह का शव दहन हो चुका है और क्या सैकड़ों बार द्रोणाचार्य और सहस्त्रों बार दुर्योधन जल चुके हैं। कर्ण की तो बात ही क्या। भगवान् वरदान भी दे चुके हैं और स्थान भी कोई नहीं मिल रहा देखो! अब शूरवीर वचन के बली! अपने बायें हाथ पर महाबली कर्ण का संस्कार कर रहे हैं, क्योंकि दायाँ हाथ सतयुग में राजा बलि से दान लेने के समय सड़

चुका था। अत: ऐसा महाबली योद्धा, दानवीर कर्ण जिसने भगवान् से अनेकों वरदान प्राप्त किए अपने पर-उपकार की इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए शायद दोबारा फिर अपनी बसाई हुई 'कर्ण पुरी' को किसी समय चुनकर प्रकट हो जाए—संभव ही है, असम्भव नहीं।

(महाभारत अध्याय ६९ ब्रह्मणवाच् २३-२४

गुरु बख्शी कुल उप्पल

श्री गुरु नानक देव महाराज पीड़ित—संसार की पीड़ा का निवारण करते ऊपर से साथ लेकर आए नाम रूपी शीतल-जल की वर्षा करते अब आ टिके श्री करतारपुर। दूर-समीप से संगत बहुत संख्या में दर्शनार्थ आ रही है। बड़े-बड़े सिद्ध, यती, योगी और तपस्वी आदि भी जो पूरे गुरु की सहायता के बिना परमार्थ मार्ग में कहीं न कहीं अटके खड़े थे, वे भी आप से प्रकाश प्राप्त करके लक्ष्य की ओर आगे बढ़े। कुछ कृपा प्राप्ति से अंकुरित होकर समस्त बन्धनों से मुक्त हो गए अर्थात् कई नए पौधे लग रहे हैं, कई लगे हुए सहायता लेकर आगे बढ़ रहे हैं, कई अंकुरित हो रहे हैं। इस प्रकार संसार-उद्धार की प्रतिदिन सेवा हो रही है। एक दिन गुरु बाबा जी के चरणों में दो नए सज्जन आए। पवित्र चरणों में नमस्कार करके संगत में बैठ गए। सत्संग की समाप्ति के पश्चात् शेष संगत तो अपने-अपने कार्यों में अथवा घरों को चली गई, लेकिन ये दोनों सज्जन करबद्ध गुरु बाबा जी के चरणों में बैठे रहे। अब हजूर की कृपा-दृष्टि इन भाग्यवानों पर पड़ी। आज्ञा की कि तुम कौन हो भाई! और क्यों आए हो? दोनों में से बड़ा हाथ जोड़कर बोला—दाता गुरु! दोनों चचेरे भाई हैं। आज सौभाग्य से आप के दर्शन के लिए आए हैं। हे क्षमाशील गुरु! भिक्षा लेने हेतु आए हैं, आप के द्वार पर याचक होकर आए हैं। आपकी यदि कृपा हो जाए तो कोई भिक्षा मिल जाए। हे सत् गुरु जी! मेरा नाम सींहा है और इसका नाम गज्जन है। दोनों उप्पल वंश के खत्री हैं। आपके द्वार पर भिक्षुक बन कर आए हैं। गुरुबाबा जी मुस्करा कर बोले बता क्या माँग है? भाई साहिब भाई संतोख सिंह जी ने 'सूरज प्रकाश' में उस समय का चित्र कुछ इस तरह खींचा है—

सींहा गॅजण दोनों भाई॥ सो आये सतिगुर सरणाई॥
दरशन देखिउ श्री सुखकंदा॥ करी बंदना पद अरबिन्दा॥
दोहरा— कर जोरे ठांडे भए अस कीनी अरदास॥
चतर पदारथ देहु प्रभ जनम मरन कट फास॥

(सूरज प्रकाश)

उप्पल भाइयों की प्रार्थना सुनकर गुरु-बाबा जी बोले—

सुणके श्री गुरु गिरा अलाई॥ लोचन कौरन करुना छाई॥
सिमरउ वाहिगुरु लिव लाई॥ देह पदारथ सो तुम ताई॥

(सूरज प्रकाश)

सीहां, गज्जन की दीन होकर की गई प्रार्थना परमेश्वर के द्वार में स्वीकृत हुई। प्रसन्न होकर नाम की दात प्रदान कर दी। आज्ञा की—चारों पदार्थ नाम के अधीन हैं। नाम ही समस्त दु:खों का नाश करने वाला और सब सुखों का दायक है यथा—

चतुर पदारथ नाम अधीना॥ सिमरन करहु होइ दुख छीना॥

(सूरज प्रकाश)

आज्ञा की—हक की कमाई करो, अतिथियों और जरुरतमंदों में बाँटकर छको, नाम एवं नामी को कभी न भूलो, प्रभु भली करेंगे। दोनों भाई गुरु-उपदेश को हृदय में धारण कर घर पहुँच कर आज्ञानुसार काम करने लगे। इस प्रकार गुरु की स्मृति में डूबे अपने व्यापार को पूरी ईमानदारी से करते गृहस्थ जीवन व्यतीत करने लगे। कुछ समय पश्चात् सीहां की लड़की का विवाह आ गया। विवाह के लिए अनेक प्रकार के पदार्थ बनाए गए। बारात आने से एक दिन पूर्व गुरु की संगत अधिक संख्या में आ गई जो गुरु बाबा जी के दर्शन करने के लिए करतारपुर जा रही थी। सींहा को गुरु की संगत देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। जो पदार्थ बारात के लिए बनाए थे बड़े चाव से संगत को छका दिए। कल बारात आने वाली है उसको क्या छकाएँगे? यह सोच-सोच कर सींहा की पत्नी चिंता में डूब गई—यथा—

चिंत करहि सीहें की नारि॥ तनक नकेत न रहियो अहार॥
आवै अब बरात किया खाही॥ तुरन तियार होति कछ नाहि॥
किस प्रकार लाज रहि आवै॥ सगरे जगत निंद प्रगटवाहि॥

(सूरज प्रकाश)

सीहां ने सांत्वना दी—हे शुभे! चिंता क्यों करती है। हमारी इज्ज़त का रक्षक वे स्वयं है, तुम उसका ध्यान करो। जिस समय बारात आई तो बहुत लोगों को देखकर सींहा की पत्नी घबरा गई कि घर में कोई पदार्थ नहीं जो बारात को खिलाया जाए। अब भाईचारा में बदनामी होगी आदि सोच कर लगी सींहा को बुरा-भला कहने। उधर शान्त-चित्त और गुरु-प्रेम के विश्वास में भीगे सीहें ने अब उठकर गुरु नानक देव महाराज के चरणों का ध्यान करके प्रार्थना की—

सीहें उठि कीनी अरदास॥ सतिगुर चरन धिआन करि तास॥
राखीं सिखन पैज अगारी॥ चरन कमल हम शरन तुमारी॥

अरदास करके सीहां ने कमरे का ताला खोला तो पदार्थों के ढेर लगे पड़े हैं। यथा—

अस कहै तिस कोठे को तारा॥ खोलि बिलोक अहार अपारा॥
दोहरा— पांति बरात बिठाइ कै भोजन भले खवाइ॥
अत सुन्दर बहु स्वाद जिहै हरखति रहे अघाइ॥
चौपाई— पंच दिवस कर राखी सोई॥ तोट असम की होइ न कोई॥
बहु बिधि के पकवान जिमाए॥ खाए जिनेती उर हरखाए॥
बिदा करी दे दात बिसाला॥ अचरज भए नर तिय काला॥
सभि मिल कै तबि इस बिधि भाखी॥ गुरु पैज निज सिखँन राखी॥
अधिक नरन कउ श्रद्धा भई॥ भउ भगति जग महि प्रगटई॥

(सूरज प्रकाश)

इस प्रकार पाँच दिन बारात ठहरी, बड़े सुंदर स्वादिष्ट भोजन बारात को छकाते रहे। बाराती भी बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि ऐसे पदार्थ सब जगह नहीं होते। काफ़ी दहेज देकर बारात को विदा किया। गाँव के सब नर-नारी बहुत प्रसन्न हुए। आपस में बातें कर रहे हैं कि गुरु ने अपने निज-शिष्य की इज्जत रखी है। सीहां की प्रेमभक्ति देखकर अनेकों नर-नारियों

के मन में श्रद्धा हो गई। इस प्रकार सीहां, गुरु-प्रेम, गुरु विश्वास में अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। सीहां जी का गुरु नानक देव महाराज के प्रमुख सिक्खों में भाई गुरदास जी ने इस प्रकार ब्यौरा दिया है—

सीहां उपलु जाणीए गॅजणु उपलु सतिगुर भावै॥

(भाई गुरदास)

इतने में श्री गुरु नानक देव महाराज अपने प्रिय सेवक श्री गुरु अंगद देव महाराज के पवित्र हृदय में अपनी ईश्वरीय ज्योति जगाकर जगत-उद्धार कर सेवा सौंप कर समाधिस्थ हो गए। अब श्री गुरु अंगद देव जी—खंडूर में ज्योति जगा रहे हैं। असीम संगत आपको श्री गुरु नानक का स्वरूप समझकर दर्शनार्थ खंडूर आती रहती है। उसी प्रकार भोग-मोक्ष के वरदानों के खुले भण्डारे वितरित हो रहे हैं। सीहां उप्पल भी आपको श्री गुरु नानक का रूप जानकर वही पूर्ववत् श्रद्धा विश्वास के साथ दर्शनार्थ—'खंडूर' आता रहता है। एक समय उस के घर पुत्र उत्पन्न हुआ। सीहां ने उसकी खुशी में बिरादरी के रीति-रिवाज के अनुसार घर में समागम करना था। वह स्वयं तो गुरु आज्ञा से इधर-उधर नहीं जाना चाहता था, लेकिन उसकी पत्नी का स्वभाव कुछ चंचल था। उसने बिरादरी में अपनी इज्ज़त रखने के लिए सीहां को प्रेरणा देकर समागम में माँस आदि का सेवन करने के लिए बकरे खरीद लिए, लेकिन सीहां का मन भीतर से गुरु-भय वाला था, इसलिए उसने गुरु अंगद देव महाराज जी के चरणों में सारी बात बताई। सीहां की बात सुनकर श्री गुरु अंगद देव जी ने सीहां को समझाया कि खाने वाले खा जाएंगे, लेकिन फल तुम्हें भोगना पड़ेगा—यथा—

धरम राइ जब करहि लेखा। लहिं महां दुख रहै ना सेखा॥

(सूरज प्रकाश)

फिर सीहां ने दीन होकर प्रार्थना की महाराज! आप जो आज्ञा करेंगे मैं वही करुँगा। कृपा करके मुझे मार्ग दिखाओ। भाई संतोख सिंह जी लिखते हैं—

इमि बिनती सुनिकै तिसु केरी॥ भए कृपाल भनयों बच फेरी॥
समागम दुआरे हमरे करो॥ उर को भरम सरब कर हरो॥
बिधन जठेरनि को नहि होइ॥ सिमरहु सतनामु दुख जोइ॥
सरब उर ते हुइ रखवारे॥ सभि सुख देहि न काज बिगारे॥
अज सगरे अब दीजहि छोर॥ नरक निहारहि नहि दुख घोर॥

(सूरज प्रकाश)

सीहां ने गुरु की आज्ञा मानकर सब बकरों को छोड़ दिया। घर जाकर सारी तैयारी की। बालक एवं सारे सम्बन्धियों को साथ लेकर गुरुद्वारा पहुँच गया—खंडूर। गुरु चरणों में सारा समागम किया। गुरु घर में जैसा सतोगुणी लंगर वितरित होता था, वितरित किया और सब ने प्रेम के साथ छका। इस प्रकार सीहां ने अपने मन-मुखी बुद्धि एवं भाईचारे का भय दूर करके सतगुरु की आज्ञानुसार कार्य किया। यथा—

सीहां उपल इसी प्रकारिउ॥ भइयो सिख सतिगुर मत धारिउ॥

(सूरज प्रकाश)

इस प्रकार सीहें उप्पल ने दूसरी बार भी श्री गुरु अंगद देव महाराज जी के चरणों के साथ सिक्खी निबाही। कुछ समय पश्चात् श्री गुरु अंगद देव जी भी ज्योति-जोत समा गए। अब तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास महाराज गोइंदवाल ज्योति जगा रहे हैं। सिक्ख संगत ने भी गुरु अमरदास महाराज को आदि गुरुओं का साक्षात् रूप समझकर अब श्री गोइंदवाल की ओर मुख

कर दिया। प्रतिदिन संगत का आना-जाना बढ़ रहा है। गुरुसाहिब की आज्ञा से काफ़ी संगत ने यहीं निवास रख लिया है। नए बने नगर में नदी के किनारे चहल-पहल हो गई। बड़ी रौनक लग गई। सीहां उप्पल ने भी अब शायद यहाँ ही निवास रख लिया। सारा परिवार गुरु सेवा में लगा रहता है। अनेकों दु:खी दर्शन करके दु:खों की निवृत्ति कर रहे हैं। एक कोई सेठ का लड़का बुरी संगत के परिणामस्वरूप अथवा किसी पूर्व जन्म के पाप के फलस्वरूप कोढ़ जैसे भयानक रोग से पीड़ित हो गया। कोढ़ से हाथ-पाँव जाते रहे, चलने फिरने से असमर्थ हो गया, कोई नज़दीक नहीं फटकता और संसार में सम्बन्धी भी कोई नहीं रहा। अब उसे अत्यंत दु:खी हुए को कहीं से पता लगा कि ब्यास नदी के किनारे एक संत फकीर बैठा है—श्री गुरु अमरदास महाराज। यदि उनकी कृपा दृष्टि हो जाए तो मेरा शरीर फिर ठीक हो सकता है अन्यथा नरक भोग ही रहा हूँ। यह सोचकर रेंगता-चलता पहुँच गया श्री गोइंदवाल। भाई संतोख सिंह जी ने उसका हाल कुछ इस प्रकार वर्णन किया है—

इक खतरी था प्रेमा नाम। मात-पिता नहि भ्राता धाम॥
कुश्ट सरीर विखे रुज भयो। अधिक द्रदिरी सो होइ गयो॥
हाथ पाद गरिकै गिर परे। उह नहि निकट होनि देह खरे॥
गल महि बांधियो माटी बासन। ठाडो होइ आए को पासन॥
बैठयो घिसरि घिसरि कर चल है। परि को दया रुप तिह घालहि॥
इस बिधि आपनो समों बितावहि। दिउस जामनी संकट पावहि॥

(सूरज प्रकाश)

ऐसी हालत में किसी भाँति गोइंदवाल साहिब पहुँच गया। सतगुरु के दरबार में धूलि लेकर सिर, मुख अथवा सारे शरीर के ऊपर मली। प्रेमे को आते-आते सिक्खों ने बताया कि कुष्ट रोग वाला सतगुरु के दरबार में नहीं जा सकता इसलिए यदि सतगुरु तुम्हें बुलाएं तो जाना, बिना बुलाए ना जाना। सुनकर प्रेमे के मन में शंका पैदा हो गई कि मुझे दर्शन नहीं होंगे? मेरे जीवन को धिक्कार है, अच्छा होता मेरे प्राण निकल जाते। मैं तो बहुत आशा से आया था चलता-रेंगता अनेकों कष्ट सहता, लेकिन मेरा दुर्भाग्य यहाँ भी साथ ही आ गया।

धिक् जीवन अबि नासों प्राण। गुर के दर मरों सथान॥

(सूरज प्रकाश)

लेकिन फिर भी दृढ़ निश्चय करके बैठ गया गुरुद्वारे—कि अब कोई अन्य स्थान भी नहीं है, कहाँ जाऊँ? अब तो मरना ही है तो हरि के द्वार में ही, अन्य कोई सहारा नहीं है—

मैं निरभाग जहां चलि जाऊँ। निहफल तहां नहीं कुछ पाऊं॥
बिन दरशन गमनों किति नाहीं। कै मरि रहों इसी थल नाहीं॥

(सूरज प्रकाश)

इस प्रकार गुरु के दरबार के सम्मुख बैठा गुरु-गुरु करता रहता है। कभी गुरु बाबा के दर्शन भी हो जाते हैं उनका ध्यान भीतर परिपक्व करता रहता है। सब संगत जहाँ से निकलती है, वहाँ से धूलि उठाकर अपने शरीर पर मलने का प्रयत्न करता है। संगत भी करुणावश अब उसको कुछ छकने के लिए और पहनने के लिए देती रहती है, लेकिन कभी-कभी मन उदास हो जाता है कि सब संगत गुरु का दर्शन करती है, लेकिन मुझ पापी को दर्शन नहीं होते, यथा—

पूरब जनम महां मैं पापी॥ जिस ते आधिर बियाधि संतापी॥
सभि जग दरसति गुर को नीति॥ मोहि न मिलहि सो तरसत चीति॥

इस ते थान न आन॥ कबहूं तों होइ है अघ आन॥
गुर दर को अबि तियागों नांहि॥ जीवत मिरतक कै दुख मांहि॥

(सूरज प्रकाश)

इस प्रकार दृढ़ निश्चय करके प्रेमा अब दिन-रात गुरु दर पर बैठा गुरु-गुरु किए जा रहा है। संगत भी दया करके लंगर-पानी यहीं दे जाती है। कभी-कभी जब शरीर पर रोग का आक्रमण होता है तो प्रेम में आकर और जोर से गुरु-गुरु करने लग जाता है। कभी-कभी ऐसी हालत में आकर, अचेत होकर भूमि पर गिर पड़ता है। प्रेम में ऐसी अवस्था में व्याकुल होकर गिरे को देखकर, संगत का हृदय द्रवित हो जाता है। सतगुरु के चरणों में जाकर उसकी दशा का वर्णन करते हैं कि महाराज वह हमेशा आपके दर्शनों को लालायित रहता है। महाराज! वह गीत भी कुछ ऐसे गाता रहता है जिसको सुनकर सब हँसते हैं लेकिन समझ में कुछ नहीं आता। हजूर बोले—

सुणि सतिगुर ने सभ समझाए। हम जानत हैं जो कुछ गाए॥

(सूरज प्रकाश)

सतगुरु बोले कि हमें पता है जो कुछ गाता है, क्योंकि उसके भीतर दु:खों ने प्रेम—अंकुर उत्पन्न कर दिए हैं जो एक दिन फलित होंगे। उधर प्रेमा भी गुरु का स्मरण करता-करता प्रेम में पागल हो गया। सब बुद्धि मति विस्मृत हो गई। शेष सभी आश्रय मन में से मिट गए। यथा—

इस प्रकार दिन कितिक बिताए॥ ऊचे देरति गुरु सुनाए॥
जबहि प्रेम ने बियाकुल करयो॥ नहि सुध देहि रहयो धर परयो॥
तिस उर की लखि अंतरजामी॥ सरब कला समरथ गुर सवामी॥
जानयो भगत प्रेम तिह जागा॥ अपर आसरो मन कर तियागा॥
थांउ निथावन मान निमाना॥ इस बिधि को निज बिरद पछाना॥

(सूरज प्रकाश)

प्रेमे की ऐसी प्रेम भीनी अवस्था देखकर निराश्रितों के आश्रय ने दया करके सिक्खों को आज्ञा दी कि प्रेमे को उठाकर ले आओ। सिक्ख आज्ञा मानकर प्रेमे को गुरु चरणों में ले आए। अब हजूर ने आज्ञा दी—हमारे स्नान किए जल में इसको स्नान करा दो—यथा—

हमरे मॅजन को जल जंहिवां। संचित टिकियो लिजावहु तंहिवां॥
नीके जाइ सनानहि इही॥ होइ जाइगी सुध सभ देही॥

(सूरज प्रकाश)

सिक्खों ने आज्ञा मानकर सतगुरु के स्नान किए जल में जब प्रेमे को स्नान कराया तो उसका शरीर कंचन के समान शुद्ध हो गया। अब सच्ची सरकार ने आज्ञा की—

रंग मजीठी अम्बर लिआवहु॥ सरब सरीर इसे पहिरावहु॥
नख सिक्ख लौ छादन कर सारे॥ पुन आनहों तुम निकटि हमारे॥

(सूरज प्रकाश)

स्नान के उपरान्त लाल वस्त्र में लपेटकर जब प्रेमे को सतगुरु के सम्मुख किया तो गुरुदेव ने अपने पावन हाथों से प्रेमे का मुख नंगा किया—बस फिर क्या देरी थी—

कचहु कंचनु भइअउ सबदु गुर स्त्रवणहि सुणिओ॥
बिखु ते अंम्रितु हुयउ नामु सतिगुर मुखि भणिअउ॥
लोहउ होयउ लालु नदरि सतिगुरु जदि धारै॥
पाहण माणक करै गिआनु गुर कहिअउ बीचारै॥

(सवईए पृष्ठ १३९९)

यथा **क्रिपा द्रिशट ते देख क्रिपाला॥ निज कर सों मुख वहिर निकाला॥**
द्रिशट परी सतिगुर की जबै॥ तन अरोग भा सुन्दर तबै॥

(सूरज प्रकाश)

अब सतगुरु जी ने अपने पवित्र हाथों से नवीन वस्त्र पहनाए। यथा—

निज करते पुन बसतर दए हैं॥ सभ नवीन पहिराए दए हैं॥
मंतर सुशति नाम को दीनसि॥ भाल बिछाल तिलक तिन कीनसि॥
रज कनि ते गिरि समसर कियो॥ नाम मुरारी उन परि दियो॥

(सूरज प्रकाश)

दयालु दाता ने धूलि के छोटे से कण को पर्वत के समान बना दिया और वचन किया—देखो! अब कृष्ण भगवान् जैसा सुंदर शरीर हो गया इसका—इसलिए इसका नाम मुरारी रख दिया। अब सभा में सतगुरु जी ने आज्ञा की कि-हमने इसका विवाह करना है। जो सिक्ख अपनी कन्या इसके साथ ब्याहेंगे उसको लोक-परलोक के आनंद प्राप्त हो जाएँगे। यथा—

सभा मझार कर रहयो गुर बैन॥ तनजा है जिस सिख के अैन॥
मम आइस ते इस को देवहि॥ लोक परलोक अनंद सो लेवहि॥

(सूरज प्रकाश)

सतगुरु जी की आज्ञा सुनकर सीहां उप्पल ने प्रार्थना की—गरीब निवाज़! मेरे घर में जवान लड़की है आप आज्ञा करो तो विवाह कर दें।

सीहां उपल सिख कुलीन॥ तिन कर जोरे बिनती कीनि॥
वर प्रापति कंनिया घर मेरे॥ हे प्रभू फिरों इसी संग फेरे॥

(सूरज प्रकाश)

सतगुरु जी से आज्ञा लेकर घर आया। अपनी पत्नी को कहा—तुझे गुरु साहिब जी की आज्ञा है कि लंगर में सेवा कर, क्योंकि वह जानता था कि उस का स्वभाव अच्छा नहीं है, इसलिए यह विवाह में बाधा बन सकती है। उसको कोई बात न बताई। इधर-उधर की बातें करके टाल दिया। पत्नी को लंगर की ओर भेजकर उस समय लड़की को सतगुरु के पास ले गया। सतगुरु ने भी उसी समय मुरारी के साथ भाँवर दे दिए। अनेक वरदान देकर उपकृत किया मानों सतगुरु सौभाग्यशाली दम्पत्ति को दहेज दे रहे हैं। वह प्रेमा जो अब तक नरक का जीवन व्यतीत कर रहा था—उसके शारीरिक रोग ही नष्ट नहीं किए, अपितु अपनी कृपा-दृष्टि से गुरुदेव ने जन्म-मृत्यु आदि समस्त दु:खों से एक क्षण में मुक्त कर दिया। भाई साहिब भाई संतोख सिंह जी लिखते हैं—

जीव नारकी सुरग पचावा॥ अदभुत ऐसे रुप बनावा॥
भयो अरोग देह तेहि सुन्दर॥ दई सुन्दरी पुन सुख मंदर॥

देखति सुनति शकल बिसमाए॥ सतिगुर महिमां लखि अधिकाए॥
चहैं सों करैं कला सभि पूरन॥ दास उबारनि दुशटनि चूरन॥
एक घटी महि सभि कुझ पायो॥ तन अरोग पुन बियाह सुहायो॥

(सूरज प्रकाश)

सतगुरु ने प्रेमे की प्रेमाभक्ति पर प्रसन्न होकर एक क्षण में देह—आरोग्यता प्रदान करके विवाह कर दिया। सीहें की पत्नी को लंगर में किसी ने जाकर बताया कि तेरी बेटी का सतगुरु ने उस कोढ़ी के साथ विवाह किया है जो दरबार से बाहर एक झोंपड़ी में रहता था। सुनकर सीहां की पत्नी बहुत दु:खी हुई। सतगुरु के पास आई। क्रोध में बोली—हे सतगुरु! आपने यह क्या अनर्थ कर दिया—एक कोढ़ी जिसका न कोई माँ-बाप है, न उसकी जाति-कुल है, मेरी बेटी उसके साथ विवाह दी है। सीहां की पत्नी की बात सुनकर सतगुरु हँस पड़े, दयापूर्वक बोले—मुरारी मेरा बेटा है जिसके साथ तेरी बेटी का विवाह किया है।

यथा— **सुनि स्री अमरदास तब हसे। कहयो तांहि करुना रंग रसे॥**
जानहु मम सुत इहो जो मुरारी। बियाहओ तनजा संगि तुमारी॥

(सूरज प्रकाश)

हजूर ने पूछा—तुम्हारी लड़की का नाम क्या है? महाराज मत्थो है। हजूर बोले—इसका नाम मत्थो मुरारी रखा। पहले तुम्हारी लड़की का नाम आया करेगा फिर मुरारी का नाम आएगा। यथा—

तव तनजा को नाम मथो है॥ नाम मुरारी याहिं कथो है।
मथो मुरारी सिमरे नाम॥ पूरन होहि नरन के काम।
मथो नाम आगे कहि आछै॥ नाम मुरारी भांखहि पाछै॥
नर पूजहिगे मथो मुरारी॥ चित चिन्ता देण सोक बिसारी॥
इह दोनों होइ वडभागे॥ मेरी प्रेम भगत महि पागे॥

(सूरज प्रकाश)

सीहां की पत्नी जिस प्रेम को प्रतिदिन कोढ़ के साथ लिप्त देखती थी अब कंचन के समान देह देखकर और सतगुरु के पवित्र मुख से उसको मिल रहे वरदान सुनकर खुश हो गई। वह तो शान्त होकर घर चली गई, उधर सतगुरु ने उस भाग्यशाली दम्पत्ति को आज्ञा की—

मथो मुरारी अब तुम जावहु॥ सतिऐ नाम उपदेश द्रिड़ावहु॥
गुरसिखी जग अधिक बिर धावहु। निज गृहि वसहु सदा सुख पावहु॥
तेरे वाक फुरै जिमि कहैं। वर कै सराफ देंहि जिस चहैं॥
तेरी भगति परी अब पूरी। प्रापत भई महां गत रूरी॥
तुझि सिउ मिलें सो भवजल तरै। तउ कहबो इस ते किया परै॥
भगति मुकति नवतन तिस दै कै॥ बिदा करयो गमनयो सुख पै कै॥

(सूरज प्रकाश)

इस प्रकार मत्थो मुरारी को ब्रह्मज्ञान की कृपा करके गुरु नानक के घर का प्रचार करने के लिए एक 'मंजी' प्रदान की। उधर सीहें की सिक्खी का भी निर्वाह हो गया। गुरु घर से तीन पीढ़ियों तक बन आई। ''अंतर आतमैं नाम रंग रता'' परम पद को पहुँच गया। बाहर सांसारिक व्यवहार में उसका उपकार का निर्वाह तो हो ही गया, लेकिन दु:खी संसार में नाम द्वारा

शान्तिदायक महान् कार्य में कन्या का जीवन भी सफल हुआ। अनुमान है कि सीहां उप्पल ने चौथे सतगुरु के समय तक जीवन-यात्रा की। जब गुरु रामदास महाराज ने गुरु अमरदास के हुक्म में श्री अमृतसर नगर बसाया तो अपने निवास का भवन बनाकर बाजार की सर्जना की, जो 'गुरु का बाज़ार' और पासियों के चौक से आगे है। यह बाज़ार आजकल के 'सवूनिया' वाले बाज़ार में सम्मिलित होकर आगे तक गया है। सीहां भी गुरु-आज्ञा में यहीं आ बसे। गुरु के इस बाज़ार में सीहां ने भी एक गली छोड़कर अपना घर बना लिया। इस प्रकार भाई गज्जन और अन्य उप्पल के यहाँ बसने पर उस गली का नाम उप्पलों वाली गली पड़ गया, जो अभी तक विख्यात है। इसके समीप ही उस समय दुग्गल सिक्खों के घर बसने पर दुग्गलों वाली गली और नय्यर खत्रियों, गुरु सिक्खों के बसने पर नय्यरों की गली आबाद हुई। इन नय्यर खत्रियों के परिवार में से ही श्री परम पावन माता गूजरी जी थीं। चौथे सतगुरों तक तो सीहां उप्पल की ही सिक्खी का निर्वाह हुआ। आगे जाकर इस पवित्र कुल में तीर्थ नाम का एक सज्जन पैदा हुआ जो छठे सतगुरु की पूर्ण कृपा से परम पद को प्राप्त हुआ और गुरु साहिब की ओर से रचे धर्म युद्धों में जूझता रहा, जिसका वर्णन भाई साहिब भाई गुरदास जी ने छठे पातशाह के श्रद्धालु सिक्खों में इस प्रकार किया है—

मनसा धारि अथाहु है तीरथ उपल सेवक सारा॥

(वार ग्यारहवीं पौड़ी २९वीं)

समय पाकर गुरु घर की इस उपकृत कुल का जैसे-जैसे विस्तार हुआ तो अन्न-जल के वशीभूत अथवा प्रारब्ध के अनुसार उप्पल वंशी प्रेमी इधर-उधर जा बसे। इसी प्रकार उप्पल वंश का एक परिवार जिला शेखूपुरा के गाँव 'बेगपुरा' में बसकर गुरु आज्ञानुसार हक सच्चाई की शुभ कमाई करके अपना जीवन व्यतीत करने लगा। समय पाकर इस भले परिवार में एक बहुत तेजस्वी और नेक पुरुष पैदा हुआ, जिसका नाम सुन्दरदास उप्पल था। इस पुरुष को परमेश्वर ने जहाँ धन पदार्थ के साथ मालामाल करके श्रेष्ठ साहूकारा प्रदान किया हुआ था, वहाँ दान-पुण्य करने के लिए भी उदार हृदय दिया हुआ था। इन भले पुरुषों ने निर्धनों, ज़रूरतमंदों, अतिथियों और साधुओं के लिए बड़ा हाल बनाकर उसमें एक सौ चारपाइयाँ बिस्तर रखे हुए थे ताकि आते-जाते साधु मण्डलियाँ यहाँ ठहर कर विश्राम कर सकें। निर्धन कृषक अथवा अन्य लोग अपनी लड़कियों के विवाह अथवा अन्य समागमों के लिए बिना किसी किराया अथवा खर्चा के प्रयोग कर सकें। इस हाल में केवल रहने की ही सुविधा नहीं थी, अपितु इस प्रेमी की ओर से प्रतिदिन मिस्से प्रसादे एवं लस्सी का यज्ञ चलता रहता था जिससे आने वाले साधु महात्मा और अन्य जरूरतमंद लाभ उठाकर अपने प्राणों रूपी अग्नि को आहुति प्रदान करते रहते थे। इस भले पुरुष सुंदरदास उप्पल की आढ़त की दुकान थी। वहाँ फसल बेचने आए हर किसान को इसका निवेदन था कि घर से कोई प्रसादा लेकर न आए, बल्कि यहीं गुरु अमरदास के लंगर में छके। इस प्रकार फसल बेचने आए सब किसान लंगर यही छकते। निर्धनों की लड़कियों का विवाह यह प्रेमी सुंदरदास उप्पल अपने पास से धन व्यय करके करता और उनके सामाजिक स्तर के अनुसार खुला दहेज भी देता। इस प्रकार यह प्रेमी गुरु घर के साथ आदि से चले आ रहे अपने संबंध और गुरुओं की ओर से की कई कृपाओं को सदैव याद रखता हुआ बहुत नेक पर-उपकारी, गरीब भलाई एवं दैवी गुणों से संयुक्त जीवन व्यतीत कर रहा था। समय पाकर इस भले पुरुष सुंदरदास उप्पल की गृहस्थ रूपी कुंज में एक बहुत सौभाग्यशाली पुत्र रत्न पैदा हुआ जिसका नाम अरुड़ चंद उप्पल रखा। अरुड़ चंद जी ने गुरु-घर की महान् कृपाओं से परिपूर्ण हुआ उप्पल वंश, समृद्ध परिवार और पर-उपकारी, लोक-सेवा, संत-सेवा की सुगंधि से सुगंधित हुए परिवार में जन्म धारण करके अपनी जीवन यात्रा आरम्भ की। दूसरी ओर ज़िला गुजरांवाला के गाँव 'साधुके' में लैदर गोत्र के खत्री घराने में तारा चन्द नाम का एक सज्जन निवास करता था। श्री ताराचन्द का ठेकेदारी का काम था, इसलिए कारोबार लाहौर में भी करते थे अर्थात्

गुजरांवाला के गाँव 'साधुके' और लाहौर-दोनों स्थान पर रहने का प्रबन्ध था। श्री ताराचन्द जी की धर्म पत्नी माता कौशल्या की पवित्र कोख से एक सौभाग्यवती बेटी ने जन्म लिया जिसका नाम बिमला देवी रखा गया। बिमला का अर्थ होता है, मल रहित अर्थात् शुद्ध देवी। यह सुशील देवी बहुत शुभ चरित्र, देवी गुणों की निधि, परहित संस्कारों का समूह, संत सेवा एवं नम्रता वाले बहुमूल्य गुण जन्म से ही साथ लेकर आई थी। इसलिए इस शुभ चरित्रा बेटी ने अपना बाल्यकाल हँसते खेलते माता-पिता की सेवा में व्यतीत किया। जब युवती हुई तो माता-पिता ने विवाह योग्य समझकर किसी सभ्य परिवार के योग्य लड़के की तलाश आरम्भ की। अंततः 'संयोग-वियोग धुरहों ही हूआ' के महावाक् के अनुसार समय आने पर संयोग उपस्थित हुआ। परमेश्वर की आज्ञानुसार इस सुशील बेटी का विवाह ज़िला शेखूपूरा के गाँव बेगपुरा के निवासी श्री सुंदरदास उप्पल के सुपुत्र श्री अरुड़ चन्द उप्पल के साथ सन् 1942 ई० में हुआ। भक्ति, सत्संग और संत-सेवा के तो यह सौभाग्यवती बेटी पूर्व जन्मों के संस्कार साथ ही लेकर आई थी इसलिए विवाह के बाद शेखूपुरा आते ही संत भगत सिंह जी का मिलाप हो गया। दैवयोग से विरक्त महाराज निक्का सिंह जी भी संत भगत सिंह के प्रेम के वशीभूत हुए अपनी विरक्तीय ठाठ में प्रायः आते-जाते रहते थे इसलिए समय-समय पर उनकी ईश्वरीय सुंगधि भी प्राप्त होती रहती थी। इस प्रकार भाग्यवान् दम्पत्ति को अपने गृहस्थ जीवन के कार्य-व्यवहार आदि करते हुए मनुष्य का वास्तविक लक्ष्य संत सेवा एवं सत्संग का बहुमूल्य लाभ भी समय-समय पर प्राप्त होता रहता था। समय पाकर इनके घर एक लड़की ने जन्म लिया, जिसका नाम शारदा रखा। इतने में परमेश्वर के आदेशानुसार—1947 का देश-विभाजन का समय आ गया। उस समय लाखों लोग बेचारे अपना घर-धाम, सम्पत्ति, धन आदि लुटाकर इधर से उधर चले गए और लाखों ही उधर से इधर आए। बाबा सुंदरदास उप्पल का परिवार शेखूपुरा से अपनी सारी बादशाही लुटाकर अन्न-जल की प्रेरणा पर पानीपत आ बसा। यहाँ आकर थोड़ा बहुत कारोबार आरम्भ किया। फिर तीन वर्ष पश्चात् दानवीर कर्ण की महान् नगरी करनाल आ बसे, क्योंकि अब वह समय समीप आ चुका था जब परमेश्वर ने पुराने दिए वरदान को पूरा करना था।

अवतरण

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ॥
मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माई॥
संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ॥
विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ॥
जिन्ही चाखिआ प्रेम रसु से त्रिपति रहे आधाइ॥
आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ॥
जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ॥
प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ॥
असू सुखी वसंदीदा जिना मइआ हरि राइ॥

(बारहं माहा, पृष्ठ १३५)

ज्येष्ठ, आषाढ़ की तेज़ गरमी के दिन व्यतीत हो गए। सावन भादों के पर-उपकारी महीनों ने अपने स्वभावानुसार मेघ का रूप धारण करके बार-बार ज़ोरदार वर्षा बरसा कर लोगों की तप्तता दूर की। सावन भादों के यह उपकारी महीने बेचारे जितनी सामर्थ्य रखते हैं शायद उस से भी अधिक उन्होंने अपनी सीमा से बाहर होकर लोगों को तप्तता से बचाने का उपक्रम किया। बाहरी ताप दूर करने के लिए ये पर-उपकारी महीने थोड़े बहुत सफल भी हुए, लेकिन भीतरी ताप से बेचारे लोग अब भी तड़प रहे हैं। शायद यह बादल की शक्ति-सीमा से बाहर की बात है, लेकिन इन बेचारों ने जीवों को शान्ति प्रदान करने की कोई कसर उठा नहीं रखी। प्राय: ऐसा ही होता है यदि देश में किसी ओर अशान्ति फैल जाए तो बादशाह लोगों को शान्त करने के लिए अपने किसी मंत्री अथवा दीवान आदि को भेजता है। यदि मंत्री से नियंत्रण न हो पाए तो बादशाह स्वयं अपनी राजधानी को त्याग कर गड़बड़ी वाले उस स्थल पर जाता है। वहाँ प्रत्येक दाँव-पेच का प्रयोग कर लोगों को शान्त करके वापिस आ जाता है। उद्यान को मुरझाते देखकर भी किसी माली का उपेक्षित रहना असंभव ही है। इधर भी अब ऐसा ही लग रहा है जैसे हरि ने बैकुण्ठ का त्याग करके मातृ-लोक में अवतरित होने का मन बना लिया हो। माता बिमला जी अवतरित होने का समय समीप जानकर अपने माता-पिता के पास दिल्ली चले गए जो कि महरौली निवास करते थे। आज 17 अक्तूबर, 1950 ई० दिन मंगलवार दिन के ढ़ाई बजे वह विलक्षण क्षण आ पहुँचा जब हरि ने अपने सगुण रूप श्री गुरु नानक देव जी का यश लोगों के मन में पुन: जागृत करने हेतु और पाँच सौ वर्ष पूर्व उतरी ईश्वरीय वाणी की वर्षा द्वारा तपते हृदयों को शान्त करने के लिए एवं सहस्रों वर्ष पुराने वरदान को पूरा करने के लिए बैकुण्ठ में से आकर अपना पहला सौभाग्शाली चरण किसी महापुरुष के रूप में मातृ-लोक की अशान्त भूमि पर अवस्थित किया। आपके पवित्र चेहरे पर आया नूर इस प्रकार देदीप्यमान है, जैसे पूर्णिमा के चन्द्रमा के आस-पास परिवार हो और मस्तक पर केसर का दरगाही तिलक लगा हो। जन्म के इस सौभाग्यशाली क्षण में आप समाधि स्थित थे। सेवा में आई सौभाग्यशाली माताएँ भी देख-देखकर हैरान हो रही थीं कि ऐसे लक्षणों से युक्त दैवी बालक पहली बार देखा है। वातावरण शान्त है, हरि जी के प्यारे की ओर से मातृ-लोक में आने की प्रसन्नता में गगन गुंजायमान है। अनेक प्रकार के राग रंग और शब्द गाए जा रहे हैं। देखो देवलोक के गंधर्व किस प्रकार महिमा गायन कर रहे हैं—

धंन भई तिनकी जनणी किरतारथ सा जग बेदन भाई॥
कुल पावन ताहि करी सगरी जग धन भए जगमीत सखाईं॥
पग पंकज यास पुनीत धरा रज पावन ते जन पाप मिटाई॥
जे भव मंडल माहि भजे खिन एक इकागर राम सहाई॥

(भावर साम्रित)

अब और भी रसीली एवं सुरीली आवाज़ में वाद्य यंत्रों की अत्यंत धीमी ध्वनि आ रही है। ऐसे लग रहा है जैसे किन्नर वीणा वादन के द्वारा बहुत रस-युक्त आवाज़ में गा रहे हैं—

धन भई तिनकी जनणी कुल पावन ताहि करी जगसारी॥
भूमी सु पुनयवती कर सो सभ ही सुर की अरचा विसथारी॥
ब्रहम सनातन हेर जने उस ते सभ बासन दूर निवारी॥
वेदन की गति जेतक थी तेतक ताहि उदार संभारी॥

(मोक्षपंथ)

अब गंधर्वों ने मृदंग के वाद्य यंत्रों के साथ गुरुवाणी का रस युक्त कीर्तन आरम्भ किया—

धंनु सु वंसु धंनु सो पिता धंनु सु माता जिनि जन जणे॥

(भैरउ म:४, पृ-११३५)

जिह कुल साधु बैसनौ होइ॥
बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ॥ रहाउ॥
ब्रहमन बैस सूद अरु खयत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ॥
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ॥
धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ॥
जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ॥
पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ।
जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ॥

(बिलावलु बाणी रविदास जी की पृष्ठ-८५८)

अब संस्कृत में कुछ श्लोक उच्चारण किए जा रहे हैं—

ब्रहन वित्त मात्रेण ऐकोत्र सन्त कुलं तारयति

(उपनिषद्)

अर्थात् जिस कुल में कोई ईश्वर का भक्त ब्रह्मज्ञानी पैदा हो जाए उसकी एक सौ एक पीढ़ियों का उद्धार हो जाता है—यथा

कुलम् पवित्रम् जननी कृतार्थ: वसुन्धरा पुण्यवती चतेन:॥
अपार सविंतम् सागरे अस्मिन लीने परे ब्रहनणी यस्य चेतन:॥

अर्थ—जो परमेश्वर का नाम जपने वाला पूर्ण महापुरुष है उस तत्त्व ब्रह्मज्ञानी की समूह पीढ़ियाँ पवित्र हो जाती हैं। उसकी जन्म देने वाली माता भी कृत्य-कृत्य अर्थात् धन्य हो जाती है उसकी कोख सफल है, और ऐसे पुरुष का जिस स्थान पर जन्म होता है अथवा जिस स्थान पर वह निवास करता है और भूमि भी अत्यंत पुण्यमयी और भाग्यशाली होती है। अभी भी धीमे-धीमे स्वर में एक आवाज़ आ रही है—

पिता साच चौबीस बीस माता के जानो॥
षोडस तुला महान दुआदस सुता पछानो॥
एकादस कुल भैण दस भूआ के लेखे॥
मात भैण कुल आठ सुती सिम्रती पेखे॥

इस प्रकार आज की खुशियों का समागम पूर्ण हुआ। सब रागी एवं श्रोता आशीर्वाद रूपी प्रसाद देकर अपने-अपने घरों को चले गए।

नामकरण, बाल्यकाल एवं साधना

माता जी कुछ दिन दिल्ली रहने के पश्चात् फिर कमल-नेत्र, सुंदर मुख और मुख पर देदीप्यमान दिव्य आभा आदि दैवी गुणों से युक्त महापुरुष को बालक रूप में करनाल लेकर आ गए। कुल-वर्ण की मर्यादानुसार आपका नाम रमेश चन्द रखा, लेकिन आपकी सुंदरता एवं मनमोहक आकृति ने यह नाम कागज़ों तक ही सीमित रहने दिया। लेकिन घर-परिवार और लोगों में वही नाम प्रचलित हुआ जो आप थे। अन्तर केवल इतना ही पड़ा कि किसी समय आप कौशल्या का पुत्र बनकर आए थे अब दूसरे युग में कौशल्या के दौहित्र बनकर आ गए। बचपन में पालने पर टाँगें ऐसे एकत्रित कर लेते थे जैसे समाधि में स्थित हों। साधारण बच्चों के समान रुदन करना आप नहीं जानते थे। माता जी निश्चिन्त हुए अपने घर के कामकाज में व्यस्त रहती। आप अपनी गम्भीर मुद्रा और शान्त चित्त पालने पर लेटे रहते। बाल्यकाल इस प्रकार व्यतीत हो गया। जब पाँच-छः वर्ष के हुए तो घर के समीप जुण्डला गेट राजकीय स्कूल में पढ़ने के लिए दाखिल करा दिया। प्राथमिक शिक्षा भी शायद अभी पूर्ण नहीं हुई थी जब माता-पिता वज़ीर चन्द नाम की नई कॉलोनी में संत भगत सिंह जी की कुटिया के बिल्कुल साथ नया भवन बनाकर आ बसे, इसलिए आप को भी स्कूल बदलना पड़ा। फिर सातवीं कक्षा तक डी०ए०वी० स्कूल में पढ़े। माता जी के संत-सेवी और सत्संग के संस्कार होने के कारण जुण्डला गेट से भी छोटी कुटिया दर्शनों के लिए प्रायः आते रहते थे, तो आप को भी साथ ले आते। आपके भीतर पूर्वजन्मों के भक्ति संस्कार के बीज विद्यमान थे। छोटी कुटिया का उन पर सत्संग रूपी जल का बार-बार छींटा पड़ता रहा इसलिए वे अंकुरित होने आरम्भ हो गए। जब आप अभी तीसरी कक्षा में ही पढ़ते थे तो स्कूल की छुट्टी होने पर आम बच्चों में खेलने नहीं जाते थे अपितु घर आकर पुस्तकों का थैला घर की दहलीजों से ही खड़े होकर अन्दर फैंककर कुटिया की ओर भाग जाते। वहाँ जाकर विरक्त महाराज जी के दर्शन करते और सत्संग सुनते। श्रद्धा निष्ठा तो चाहे आप जी की संत भगत सिंह जी पर भी बहुत थी, लेकिन विरक्त महाराज जी पर तो मन में यह पूर्ण विश्वास बंध चुका था कि वास्तविक वस्तु इनसे अवश्य प्राप्त होगी।

सातवीं कक्षा के पश्चात् घर के समीप ही मेला राम स्कूल खुल गया, फिर दसवीं कक्षा तक उसमें विद्या ग्रहण की। इन दिनों कलंदरी दरवाजा में एक साधु आए हुए थे। एक दिन बड़ी बहन शारदा के साथ उनके दर्शन करने गए। साधु को आप जी के तेजस्वी मुख पर कुछ विशेषता के चिह्न दृष्टिगोचर हुए, इसलिए पूछा बीबी—यह कौन है? महाराज मेरा भाई है। महात्मा बोले—यह समय आने पर भासित होगा। सांसारिक रिश्तों में आपजी का मौसा जो हस्तरेखा का कुछ ज्ञान रखता था उसने आपजी का एक दिन हाथ देखकर अपने ज्ञान द्वारा बताया कि यह फौज का बड़ा अफसर होगा। यदि साधु बना तो अपने उद्देश्य को प्राप्त करेगा। करोड़पति लोग इनके चरणों पर नमस्कार किया करेंगे। इन दिनों एक बार माता जी आपको साथ लेकर ऋषिकेश गए। वहां स्वर्ग आश्रम में एक मंदिर है 'परमार्थ निकेतन'। उसमें मूर्तिकला बहुत सुन्दर है उसके दर्शनार्थ गए। एक-एक मूर्ति को बड़े ध्यानपूर्वक देखकर आगे चले गए और जहाँ गुरु नानक देव महाराज की मूर्ति आई उसको बड़ी श्रद्धा से नमस्कार किया । माता ने पूछा तुझे दूसरी मूर्तियों में प्रभु दिखाई नहीं दिया? आप चुप रहे-मुख से कुछ नहीं बोले। बचपन में ही आपके जीवन का यह नियम बन गया था कि स्कूल से आकर विरक्त महाराज जी के चरणों में पहुँच जाना, नमस्कार करके लंगर की सेवा में जुट जाना। जब विरक्त महाराज जी करनाल से कहीं बाहर गए होते तो छोटी कुटिया

जाकर जो घर के बिल्कुल समीप ही है—संत भगत सिंह जी की फोटो के सम्मुख तीन-तीन घंटे बैठे रहना। अधिक देर होने पर माता ने कुटिया जाकर पूछना यहाँ क्या करता था? आप ने उत्तर देना कि वृद्ध महाराज जी से बातें करता था। विरक्त महाराज जी ने एक दिन पूछा पाठ करता है? हाँ महाराज जपुजी साहिब का करता हूँ। महाराज जी ने पूछा—नियम से करता है। हाँ महाराज नियम से। विरक्त महाराज बोले—बहुत अच्छा यह ले सेब, सतिनाम का जाप आखिरी दम तक न छोड़ना। आप सेब लेकर जब घर आए तो माता जी को सारी बात बताई, माता जी को बहुत प्रसन्नता हुई। कहा—सारा खा ले और किसी को न देना। महाराज जी ने प्रसन्न होकर प्रसाद प्रदान किया है। इस प्रकार स्कूली विद्या के साथ-साथ आपने संत-सेवा, सत्संग एवं गुरुवाणी परमार्थ के श्रेष्ठ विषय भी पढ़ने आरम्भ कर दिए। अब मैट्रिक की पढ़ाई पूर्ण होने पर आपने उच्च विद्या प्राप्त करने के लिए दयाल सिंह कॉलेज में दाखिला लिया।

पूर्व की भाँति कॉलेज-समय के बाद महाराज के चरणों में कुटिया पहुँच जाना। हजूर के चरणों में बैठकर कुछ प्रेमी कोई न कोई पोथी का विचार एवं सत्संग करते रहते थे, लेकिन आप नमस्कार करते ही नीचे लंगर में आकर सेवा में क्या लगते मानों सेवा का रूप ही हो जाते। यदा-कदा विरक्त महाराज जी अपनी मौज में किसी सज्जन को कह देते कि राम को बुलाओ। आप आज्ञा मानकर आ जाते। आगे से आज्ञा होती बैठकर विचार श्रवण करो, लेकिन ऐसा कभी-कभी होता। प्रायः आप लंगर में ही सेवा करते। विरक्त महाराज जी इस बात को भली भाँति जानते थे कि यह परमार्थ के मल विक्षेप आदि दोषों की निवृत्ति के कर्म, उपासना आदि पहले अति आवश्यक विषय पूर्व जन्म में ही पास करके आया है। इसका दीपक, तेल-बत्ती तो सब तैयार है, लेकिन मर्यादा पुरुषोत्तम होने के कारण इसने संसार को मर्यादा सिखानी है और गुरु-घर में सेवा है भी मूल्यवान् वस्तु। इसलिए यह स्वयं जब इस घाटी को पार करेगा तो पार होने की इच्छा रखने वाली संगत भी इसको देखकर अपनी नावों को इस सेवा रूपी नदी में डालेगी। इस प्रकार सांसारिक विद्या के साथ-साथ आप जी परमार्थ की कक्षाएँ भी पास करते जा रहे हैं।

यह तो घर है प्रेम का!

समय 1970 ई० का चल रहा है, आप चाहे कॉलेज में बी०ए० अंतिम वर्ष की परीक्षा की तैयारी भी कर रहे हैं, लेकिन आपका मन अब विरक्त महाराज जी के चरणों में इतना अधिक आकर्षित हो गया कि जब भी समय मिलता है, कुटिया पहुँच जाते हैं। परमेश्वर की ओर से अब एक सुअवसर आया कि—आपके बड़े भाई सुभाष का विवाह आ गया। जिस दिन विवाह हुआ बस उस दिन से आप घर नहीं सोए। दिन को कॉलेज और रात्रि को हजूर के चरणों में कुटिया। प्रातः घर जाकर वस्त्र बदल कर कॉलेज जाना और कॉलेज के समय के बाद दूसरे वस्त्र पहन कर फिर कुटिया जाकर सेवा संभालना। हजूर के चरणों में पहुँच कर एक बार नमस्कार करके चरण धूलि मस्तक पर लगा कर फिर लंगर की सेवा में लग जाना। बिना बुलाए अथवा बिना किसी कार्य के समीप नहीं जाना। महाराज की पवित्र याद हृदय में अवस्थित करके सेवा-रूप हो जाना। हजूर के पवित्र स्थान पर आए प्रत्येक प्राणी को बिना किसी छोटे-बड़े के भेदभाव के हजूर का ही रूप समझकर सेवा कर रहे हैं। आपके सेवा करके शुद्ध हुए मन में नम्रता, त्याग, दीनता और करुणा इतनी आ चुकी है कि उसको लिखते समय लेखनी भी अपनी असमर्थता प्रकट करती हुई दोनों हाथ खड़े कर देती है मानों कह रही है कि ऐसे महान् पुरुषों का वर्णन करना मेरी सामर्थ्य से बाहर का कार्य है। एक दिन आप लंगर की सेवा कर रहे थे कि एक निर्धन जरूरतमंद सज्जन लंगर लेने के लिए आ गया। उसके वस्त्र फटे हुए थे, सर्दी की ऋतु थी, इसलिए उसने वस्त्रों की याचना की। उसकी हालत देखकर आपका

करुणा परिपूर्ण हृदय इतना द्रवित हो गया कि अपने पहने हुए वस्त्र ही उतार कर उसको दे दिए। आपने एक तौलिया कमर में लपेट लिया और बनियान और तौलिया से फिर सेवा में लीन हो गए। कुछ समय पश्चात् बड़ा भाई सुभाष कुटिया में महाराज जी के दर्शन करने के लिए आया। उसने आपको बिना वस्त्रों से सेवा करते देखकर कारण पूछा? आपने बताया कि हरि कोई अजीब रूप धारण करके आया था इसलिए जिसकी वस्तु थी उसको सौंप दी। साथ ही तुलसीदास को दोहा पढ़कर सुनाया—

तुलसी इस संसार में सब सों मिलिये धाय॥
कै जाणा किस रूप में नारायण मिल है आइ॥

यथा— **एक भाइ देखउ सभ नारी॥**
किआ जानउ सह कउन पिआरी॥

(ग०कबीर जी, पृष्ठ ३२७)

आपके हृदय में इतनी नम्रता, करुणा और दानवृत्ति देखकर विरक्त महाराज जी बहुत प्रसन्न हुए। यह सारा सेवा का कार्य हो तो चाहे पहले भी विरक्त महाराज जी की कृपा से ही रहा था, लेकिन अब प्रसन्नता में आकर हो बरसे—

जब देखी निम्रता उतम घनेरी॥ पल पल क्रिपा सवाई वधेरी॥
जिउं बृिछ टहिण निवै फल पाई॥ तैसी गत राम ठहराई॥

इस प्रकार सेवा करते साथ-साथ सांसारिक विद्या—बी०ए०भी पूर्ण कर ली। 1972 में आपने प्राइवेट एम०ए० में भी एक वर्ष लगाया, लेकिन फिर मन सांसारिक विद्या से उचाट हो गया।

अब कभी-कभी दिन को एकाध बार घर हो आते शेष सारा समय कुटिया में ही हजूर के चरणों में व्यतीत करते हैं। दिन में लंगर की सेवा करना, हजूर को हाथ से भोजन आदि बना कर छकाना, वस्त्र धोना और रात्रि को हजूर के चरणों में ही विश्राम करना। हजूर रात्रि को अपनी मौज में ग्यारह, बारह, एक बजे अथवा कभी भी उठे तो एक दिन भी ऐसा नहीं आया जब उनके चरणों में जूता राम जी ने अपने हाथों से न पहनाया हो। हजूर ने कहना—ओ भाई! तुम तो पड़े रहो—आराम करो। आपने कहना—महाराज! मैं तो सोया ही पड़ा था, यदि मुझे मौके पर जाग आ जाती है तो यह कोई आपकी ही लीला है।

इस प्रकार सेवा करते राग द्वेष से ऊपर जीवन व्यतीत हो रहा है। द्वेष तो आपने किसी के साथ करना ही क्या था, लेकिन राग भी किसी से नहीं कर रहे। बस अपनी मौन मुद्रा में लीन रहते हैं, क्योंकि आप को भली-भाँति ज्ञात है कि—आपके मन की अब यह अवस्था हो गई—

कबीर सूखु न एह जुगि करहि जु बहुतै मीत।
जो चितु राखहि एक सिउ ते सुखु पावहि नीत॥

(पृष्ठ-१३६५)

आपके मन की अवस्था अब यह हो गई—

किह सों कहै न सुनहै बात। सेवा करे ततपर दिन रात॥
गुर सेवा को तप अस कीना॥ जग विवहार छोरि सभि दीना॥
होति भयो उतसाहु बिसाला॥ अन्तरि बृिति टिकगी तिस काला॥
प्रेम प्रवाह बहयो उरमांही॥ चित कसट तृिण ठहिरयो नांही॥
जयों जयों सुख प्रापति भा उरको॥ तयों तयों सेव प्रेम भा गुरको॥

मन महि मूरित अचल टिकाई॥ कबहुँ वहिर पिखहि गुर तांई॥
निसदिन धयान टिकायो कैसे॥ जोगी की समाधि होइ जैसे॥

(सूरज प्रकाश)

आप तो इस प्रकार लीन हैं, लेकिन परिवार के सदस्य कुछ और सोच रहे हैं। एक दिन पिता जी ने कहा राम! अब तुम्हारा अध्ययन समाप्त हो गया है। दुकान का कार्य आरम्भ कर लो। यदि करनाल इच्छा है तो यहाँ शुरू कर देते हैं यदि पानीपत अथवा दिल्ली कहो तो वहाँ आरम्भ कर सकते हो। आपने उत्तर दिया कि दुकान व्यापार आदि मैंने नहीं करना। पिता जी ने पूछा क्यों? राम जी ने उत्तर दिया वैसे ही सारा दिन अकारण झूठ बोलना मुझे अच्छा नहीं लगता। पिता जी ने क्रोध से पूछा—फिर और क्या करेगा? आप जी बोले कोई सच्ची और पवित्र नौकरी भाग्य में हुई तो कर लेंगे, न हुई तो ऐसे ही ठीक है। पिता जी क्रोध के साथ लाल-पीले होकर बोले—तुम्हें कोई घर नौकरी देने तो नहीं आएगा। आप मुस्करा रहे हैं मानों कह रहे हों—नौकरी तो मिली हुई है, लेकिन तुम्हें अभी पता नहीं। उसी दिन सायं को अथवा एकाध दिन आगे पीछे ओरिएन्टल बैंक करनाल का मैनेजर घर आया। वह सम्भवत: घर वालों में से किसी को जानता है अथवा फिर किसी सज्जन मित्र के माध्यम से आया है। कहने लगा कि हमें तदर्थ तौर पर बैंक में लिपिक पद पर एक व्यक्ति चाहिए यदि इच्छा हो तो राम को लगा लें। पिता जी सुनकर प्रसन्न हुए कि मैं तो आज ही कह रहा था कि देखेंगे जब कोई घर नौकरी देने के लिए आएगा। संभवत: प्रभु सुन ही रहा था।

अब आपने बैंक ड्यूटी पर जाना आरम्भ कर दिया। रात की ड्यूटी तो पहले ही पक्की मिली हुई है, इसमें कोई अन्तर नहीं।

दिन 1973 के चल रहे हैं। दोनों नौकरियों की ड्यूटी बहुत ईमानदारी एवं नेक नियत के साथ उचित ढंग से चल रही है। उधर परिवार के सदस्यों ने सोचा कि राम का अध्ययन समाप्त हो गया और नौकरी भी मिल गई है, अब विवाह का कर्त्तव्य भी पूर्ण कर दें। घर तो आप प्रात:—सायं ही आते हैं—वस्त्र बदलने के लिए। उसी समय घर वालों ने विवाह के सम्बन्ध में कहना आरम्भ कर दिया, लेकिन आपने इन्कार कर दिया। इतना समय आप घर रुकते ही नहीं थे कि घर वाले विवाह न कराने का कारण पूछ सकें। इस प्रकार पूछते-पूछते कई मास व्यतीत हो गए, लेकिन परिवार के सदस्यों को सफलता न मिली। अंतत: घर वालों ने सोचा कि ये विरक्त महाराज जी के कहे बिना विवाह नहीं करेंगे, इसलिए उनके चरणों में प्रार्थना करें। माता-पिता ने एक दिन एकांत जानकर हजूर के चरणों में प्रार्थना की, महाराज! राम का अध्ययन पूर्ण हो गया है और नौकरी मिल जाने के कारण आमदन का साधन भी बन गया है। अब हमारा कर्त्तव्य है कि इसका विवाह कर दें। हम कई बार कह चुके हैं, लेकिन उसने इन्कार कर दिया है। यदि आप कहें तो शायद मान जाए और हमारा कर्त्तव्य पूरा हो जाए। निवेदन सुनकर हजूर चुप रहे, मुख से कुछ नहीं बोले। रात्रि को जब राम जी आप के चरणों में एकांत बैठे थे तो हजूर ने कहा—ओ भाई—तेरे माता-पिता तुम्हारे विवाह के सम्बन्ध में कह रहे थे —तुम्हारा जैसा विचार है उनको कह दे। आपने निवेदन किया कि महाराज! मेरा विवाह आप जी के पवित्र चरणों के साथ हो चुका है। कृपा करो—अंत तक निर्वाह हो सके। इसके अतिरिक्त मेरी और कोई शादी कराने की इच्छा नहीं है। विरक्त महाराज जी ने परिवार वालों को तो पता नहीं क्या उत्तर दिया, लेकिन घर वालों ने दोबारा आपको विवाह के लिए नहीं कहा। इस प्रकार कुछ मास ओरिएन्टल बैंक करनाल में ही ड्यूटी करते रहे। घर वालों के साथ प्रात:-सायं कुछ मिनटों का ही सम्बन्ध रह गया। बैंक समय के पश्चात् शेष समय हजूर के

चरणों में कुटिया पहुँच जाना—बस इसके अतिरिक्त अन्य कोई टिकाना नहीं। न कोई रिश्तेदार न सम्बन्धी, न कोई मित्र, न कोई शत्रु न कोई शोक न खुशी, चारों ओर से जीवन संकोच लिया। अब कुटिया में ही महाराज के एक सेवक जिसकी पंजाब एण्ड सिंध बैंक के चेयरमैन के साथ कुछ समीपता थी—ने कहा कि राम जी आप पंजाब एण्ड सिंध बैंक में नौकरी के लिए प्रार्थना पत्र दे दो। उनके कहने पर आपने आवेदन दे दिया। कुछ दिनों पश्चात् साक्षात्कार के लिए बुलाया गया—आप भी जाकर औपचारिकता पूरी कर आए। एक दिन आप कुटिया बैठे, विरक्त महाराज जी के लिए अंगीठी पर भोजन बना रहे थे और एक व्यक्ति साथ-साथ गरम-गरम भोजन हजूर को ऊपर ले जाकर छका रहा है। इतने में डाकिया ने पत्र आपके पास आकर रख दिया जहाँ आप बैठे भोजन बना रहे थे। डाकिया किसी बाहर के व्यक्ति से पूछ कर आया अथवा कैसे आया यह तो राम ही जाने। जब हजूर ने प्रसादा छक लिया, आपने पत्र हजूर के चरणों में रखकर नमस्कार की। महाराज बोले, भाई कहाँ से आई है? आपने कहा महाराज! पत्र वाले को मेरा क्या पता था कि मैं कुटिया रहता हूँ, यदि पत्र मेरा होता तो घर पहुँचता। यह तो आप जी की लीला है। हजूर बोले देख पढ़कर कया है? आपने पत्र खोलकर पढ़ा और हजूर को बताया—महाराज! पंजाब एण्ड सिंध बैंक की है। इन्होंने लिखा है कि अमुक तिथि को पानीपत ब्राँच में ड्यूटी पर उपस्थित हो जाओ। हजूर बोले जिस दिन बुलाया है चले जाना। आप बोले—महाराज! कृपा करो—नौकरी तो आपके पवित्र चरणों की मिली हुई है इसलिए अब और किसी नौकरी पर न भेजो। हजूर बोले परमेश्वर का आदेश इस तरह ही है जिस दिन बुलाया है चले जाना, लेकिन जाना हमें बताकर। जिस दिन जाना था उस दिन प्रात: हजूर को स्नान, जल-पान आदि कराकर निचले कमरे से तैयार होकर हजूर के चरणों में पहुँचे। हजूर ने पूछा कि भाई—आज जाना है। हाँ महाराज—बैंक वालों ने बुलाया तो आज ही है। ठीक है ड्यूटी पर जाओ, लेकिन नौकरी करते समय दो बातों का ध्यान रखना, एक तो यह कि मालिक तुम्हें देश के जिस कोने में भी रखें तुमने बदली के लिए प्रार्थना पत्र नहीं देना। दूसरा यह कि—मालिक यदि सोलह आने वेतन देते हैं तो काम सत्रह आने का करना है। बस जाओ—अपने काम पर उपस्थित हो जाओ, लेकिन यह दो बातें कभी नहीं भूलना। आपकी यद्यपि इच्छा तो नहीं थी चंदन की शीतलता और सुगंधि को छोड़कर कहीं जाएँ, लेकिन आज्ञा के सम्मुख कोई विकल्प भी नहीं था। बस आज्ञा मानकर पानीपत ड्यूटी पर चले गए, लेकिन सायं को कुटिया आकर वही स्थाई नौकरी हजूर के श्री चरणों की। इस प्रकार पानीपत छ: मास प्रशिक्षण के पूर्ण हुए। अब विभाग ने आपकी बदली बरनाला कर दी। आप ने हजूर के चरणों में प्रार्थना की—महाराज! पानीपत से तो प्रतिदिन आपके दर्शन हो जाते थे, रात्रि आपके पवित्र चरणों में व्यतीत होती थी, अब बरनाला से तो आपके दर्शन दुर्लभ हो जाएंगे इसलिए कृपा करो, सांसारिक नौकरी से मुक्त कर अपने पवित्र चरणों की स्थाई नौकरी देने की कृपा करो। हजूर बोले—कभी अवकाश वाले दिन आकर मिल जाया करना, अब ड्यूटी पर जाओ। आज्ञानुसार बरनाले जाकर ड्यूटी पर उपस्थित हो गए।

अब आप का कार्यक्रम यह हो गया कि शनिवार वाले दिन बैंक ड्यूटी करके हजूर के चरणों की ओर प्रस्थान कर देना, महाराज चाहे करनाल, ऋषिकेश, पंजाब अथवा जहाँ भी ठहरे हों—वहीं पहुँच जाते। शनिवार की रात्रि और रविवार को महाराज जी के चरणों में व्यतीत करके सोमवार को ड्यूटी पर दफ्तर पहुँच जाना। शेष दिनों में ड्यूटी के पश्चात् बाबा गांधा सिंह के गुरुद्वारा अथवा किसी अन्य गुरुद्वारा जाकर बर्तन झाड़ू आदि की सेवा करना। ठहरने के लिए एक कमरा किराए पर ले लिया। गुरुवाणी की पोथियाँ समीप रखी थीं। समय मिलने पर पाठ करते रहना। भूख लगने पर स्टोव पर बना कर दो

प्रसादे छक लेते। इस प्रकार समय व्यतीत होता गया। एक दिन विरक्त महाराज जी ने पूछा—लंगर कहाँ से लेते हो? महाराज जब आवश्यकता होती है दो प्रसादे स्टोव पर बनाकर प्याज के साथ छक लेते हैं। हजूर बोले—कोई दाल सब्जी बना लिया करो। अब आज्ञानुसार आपने बैंक जाने से पहले कोई दाल अथवा सब्जी अर्थात् दोनों में से एक बना लेना। बनाते समय लहसुन प्याज उबलती में ही डाल देना—दोबारा कोई तड़का आदि नहीं लगाना। आवश्यकतानुसार प्रातः छक कर सायं के लिए उसमें से ही फ्रिज में रख देनी। फ्रिज भी आपके पास बहुमूल्य स्वचालित ही है। जिसको बिजली आदि की आवश्यकता नहीं पड़ती। बिजली सम्भवत: उसमें कारीगर ने आजीवन भर के लिए पहले ही एकत्रित कर दी है। वह बहुमूल्य फ्रिज कैसा है? आटा गूँथने वाली परात में जल डालकर दाल वाला बर्तन उसमें टिका देना—बस सायं तक दाल ताजी। एक-दो रोटियाँ स्टोव पर बनाकर उसे प्रातः वाली दाल के साथ छक लेना। फिर प्रातः तक गुरु का धन्यवाद करते रात्रि व्यतीत कर देनी। एक बार करनाल से घर वालों ने संदेश दिया कि अमृतसर जाकर आपके पिताजी का आँखों का ऑप्रेशन कराना है—इसलिए आप आ जाओ। आप छुट्टी लेकर करनाल कुटिया आ गए। महाराज जी के चरणों में निवेदन किया कि मैं पिता जी की आँखों के ऑप्रेशन के लिए आया हूँ। आप जी की आज्ञा हो तो प्रातः साथ चला जाँऊ। हजूर कुछ कठोर वाणी में बोले वहाँ से तो अपनी इच्छा से आ गया अब यहाँ हमसे आज्ञा माँगता है? आप ने माता जी को कह दिया कि मैं अमृतसर नहीं जाऊँगा। रात्रि को हजूर ने अगले दिन अमृतसर ऑप्रेशन कराने के लिए जाने को कहा। आपने फिर रात्रि को ही घर संदेश भिजवा दिया कि मैं चार बजे प्रातः आऊँगा आप जाने की सब तैयारी कर रखना। चार बजे प्रातः माता-पिता को साथ लेकर अमृतसर पहुँच गए। दूसरे दिन ऑप्रेशन आदि सब ठीक हो गया लेकिन डॉक्टर ने दो दिन और ठहरने के लिए कहा। छुट्टी दो दिन के पश्चात् करेंगे। उधर आपने तो महाराज जी के चरणों में दो दिन के लिए प्रार्थना की थी, लेकिन चार दिन के लिए रुकना पड़ गया। इस दुविधा का निर्णय कराने के लिए श्री हरिमंदिर साहिब जाकर दो पर्चियाँ डालीं—यदि जाने की निकल आई तो मैं एक क्षण भी नहीं रुकूँगा, लेकिन दैवयोग से पर्ची रुकने वाली निकल आई। फिर छुट्टी पूरी होने पर ही वापिस ड्यूटी पर गया। इस प्रकार दोनों नौकरियों की ड्यूटी का निर्वाह बहुत ही उचित ढंग से हो रहा है। एक दिन आपके मन में आया कि महाराज जी की आज्ञा थी —वेतन यदि सोलह आने है तो काम सत्रह आने करना है, लेकिन मैं तो काम अभी पूरे समय तक ही करता हूँ इसलिए महाराज के ईश्वरीय आज्ञा पर तो अभी तक पूरा नहीं उतर पाया। बैंक का समय पाँच बजे तक था। आज के पश्चात् आपने पाँच बजे के बाद भी बैठना आरम्भ कर दिया। उस समय में कोई अपना शेष रहा काम करते रहना अथवा मैनेजर ने कोई अपना काम सौंप देना—वह करते रहना। फिर मैनेजर ने जब कहना कि उठो-उठो ब्राँच को ताला लगाना है—तब उठना। कभी-कभी मैनेजर 'जमा धन' के लिए इलाके में जाता तो आप को साथ ले जाता। इस प्रकार आपने ईश्वरीय आदेश का पालन करके बैंक के निश्चित समय की बात ही अपने मन से निकाल दी। बैंक ड्यूटी को ही परमार्थ अथवा परमेश्वर का कार्य समझकर मैनेजर की इच्छानुसार समय-समय पर करते रहना। शनिवार वाले दिन-दिन के डेढ़ बजे खाता बन्द करके साथ वाले छुट्टी करके चले जाते, लेकिन आप ईश्वरीय आज्ञा के बंधे सायं तक अपनी सीट पर बैठे रहते। मैनेजर ने कोई काम यदि दे दिया तो करते रहना और यदि कोई बैंक का काम नहीं है तो अपनी सीट पर बैठे गुरुवाणी की किसी पोथी का पाठ करते रहना, लेकिन रविवार वाली छुट्टी विरक्त महाराज जी के चरणों में व्यतीत करनी। विरक्त महाराज जब कभी खोख गाँव सुशोभित होते तो आप बैंक से सवा पाँच बजे छुट्टी करके रेल द्वारा नाभा पहुँच जाते। नाभा से आठ कि०मी० पैदल यात्रा करके हजूर के चरणों में पहुँच जाते। सारी रात हजूर के चरणों में सेवा करके प्रातः चार बजे फिर नाभा

जाकर गाड़ी में बैठ दफ़्तर के समय बरनाला पहुँच जाते। महाराज जितने दिन खोख ठहरते आप प्रतिदिन ऐसा ही करते। एक दिन हजूर ने आज्ञा की—भाई नाभा से पैदल न आया कर। मास्टर गुरुचरण सिंह का घर नाभा के अस्पताल के समीप है उससे साइकिल लेकर आया कर। प्रात: उसी साइकिल से वापिस चला जाया कर, जाती बार उसका साइकिल उसके घर छोड़ दिया कर। फिर हजूर अपनी मौज में कभी—उच्ची दौद होते तो आप उसी तरह सवा पाँच बजे दफ़्तर से उठना, फिर बस पकड़कर मलेरकोटला उतरना। वहाँ से आठ नौ कि०मी० पैदल चलकर पहर रात रहते जा पहुँचना—हजूर के पवित्र चरणों में उच्ची दौद। सारी रात हजूर के चरणों में सेवा करते व्यतीत करनी। प्रात: चार-पाँच बजे आज्ञा लेकर फिर चल पड़ना बरनाला को। ड्यूटी समय पर जा उपस्थित होना दफ़्तर। सायं को फिर उसी प्रकार 'उच्ची दौद' की ओर प्रस्थान। इस प्रकार अपना बहुत सादा जीवन व्यतीत करते हुए जो पैसा बचना सब दाता के चरणों में जहाँ वे रुके होते, लंगर में व्यय कर देना। जीवन इतना सादा कि दाल भी हजूर की आज्ञा करने पर ही बनाने लगे, पहले प्याज के साथ ही जीवन-यापन करते रहे। वस्त्रों के दो-तीन सूटों से अधिक पास नहीं रखना। प्रेस स्वयं तो क्या करनी थी बल्कि कॉलेज के समय अथवा नौकरी आरम्भ करते समय अर्थात् जब घर की ओर जाते उस समय यदि घर वालों ने कभी आपके वस्त्र प्रेस कर दिए तो उनके सम्मुख ही पैंट, कमीज, पायजामा को पकड़कर सिलवटें डाल देना ताकि दो कार्य हो जाएं—एक तो कपड़े पर खड़ी क्रीज टूट जाए—दूसरा घर वाले ऐसा देखकर उसे दोबारा न करें। वस्त्र इतने सादा कि बचपन से लेकर दसवीं कक्षा पास करने तक कुर्ता-पायजामा ही पहना, पैंट कमीज़ नहीं डाली। जब दयाल सिंह कॉलेज में दाखिला लेने के लिए गए तो प्रिंसिपल ने कहा कि पैंट कमीज़ अवश्य पहननी होगी, क्योंकि कॉलेज का नियम है कोई विद्यार्थी कुर्ता-पायजामा के साथ कॉलेज में दाखिल नहीं किया जाता। विवशता में आपने कॉलेज के समय पैंट पहनी और कॉलेज के बाद फिर कुर्ता-पायजामा पहनना आरम्भ कर दिया। जब तक नौकरी की कुर्ता-पायजामा के साथ ही दफ़्तर गए। पैंट कमीज एक दिन भी नहीं पहनी। इस प्रकार दिव्य जीवन व्यतीत हो रहा है। मालिक की इच्छा में राजी रहते हुए दोनों नौकरियाँ एक ही मालिक की समझकर पूरे तन-मन से कर रहे हैं। दोनों नौकरियों में से किसी में भी किंचित मात्र भी अन्तर नहीं आने देते। अन्तर आए भी कैसे—

तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ।

(अनंदु साहिब, पृष्ठ ९१८)

यथा— **मैं नाही प्रभ सभु किछु तेरा॥**
इधै निरगुन ऊधै सरगुन केल करत बिचि सुआमी मेरा॥ रहाउ॥
नगर महि आपि बाहरि फुनि आपन प्रभ मेरे को सगल बसेरा॥
आपे ही राजनु आपे ही राइआ कह कह ठाकुरु कह कह चेरा॥
का कउ दुराउ का सिउ बलबंचा जह जह पेखउ तह तह नेरा॥
साध मूरति गुरु भेटिओ नानक मिलि सागर बूंद नही अन हेरा॥

(रागु बिलावलु महला ५, पृष्ठ ८२७)

उपरोक्त अवस्था मन में इतनी दृढ़ हो चुकी है कि इसमें मैं, मेरी के किसी शंका की ओर से प्रवेश करने के लिए बाल के हज़ारवें भाग की भी गुंजाइश नहीं रही। हजूर के चरणों का प्रेम मन में इतना गहरा उतर चुका है कि क्षण मात्र का वियोग भी सहन नहीं करता। खोख, दौद अथवा कोई अन्य टिकाना जहाँ चार-पाँच घंटे यात्रा करके चरणों में पहुँचा जाए—तो प्रतिदिन ही दर्शन हो जाते हैं। नींद पूरी करने के लिए अथवा विश्राम करने के लिए समय चाहे न मिले, क्योंकि वह समय तो यात्रा में व्यतीत हो जाता है, लेकिन दर्शन रूपी अमृत के साथ पिपासा प्रतिदिन शान्त हो जाती है। जब कभी हजूर करनाल, ऋषिकेश आदि स्थानों पर दूर होते हैं तो शनिवार से सोमवार तक तीन दिनों का समय चरणों में व्यतीत हो ही जाता है, लेकिन मध्य के चार दिन चार युगों के समान का लम्बा समय प्रतीत होते हैं। हजूर दौद ठहरे हुए हैं, आप आज्ञानुसार दोनों स्थानों की ड्यूटी शारीरिक दु:ख-सुख से ऊपर होकर अत्यंत प्रसन्नता से निभा रहे हैं। मन में बलवती इच्छा है कि कृपा करें हजूर दौद ही टिके रहें ताकि प्रतिदिन अमृतरूपी दर्शन होते रहें, लेकिन दाता अभी विरहाग्नि को सम्भवत: और प्रज्वलित करना चाहता है ताकि पूरी तरह प्रज्वलित हुई विरहाग्नि, सांसारिक सुखों एवं सम्बन्धों के बीज को पूरी तरह से भस्म करके राख बना दे और अब शायद समय भी विवाह में अधिक नहीं है इसलिए समस्त ताप सहन करके बारह बानी के स्वर्ण की भाँति शुद्ध होकर भासित हो उठे। बस फिर किसी तख्त ताज पर सुशोभित कर दें। आज हजूर ने संकेत किया कि हमारा अब दौद से कहीं ओर जाने का विचार है। यह सुनकर राम जी के गुरु-प्रेम में द्रवित हुए मन को जबरदस्त झटका लगा। क्या अब चार दिनों का वियोग फिर हुआ करेगा? क्या दर्शन केवल अवकाश वाले दिन ही होंगे? क्या अब बीच के चार दिन **दरशन पिआसी दिनसु रात** वाली तड़प में व्यतीत होंगे। अब एक युक्ति सूझी। यदि वह युक्ति सफल हो जाती है तो कम से कम दो तीन दिन तो और हजूर के दर्शन होते रहेंगे। निवेदन किया—गरीब निवाज़! मैनें अखण्ड पाठ साहिब कराना है आप कृपा करो दो दिन और यहाँ रुक जाओ। उधर देखो घट-घट के अन्तर के ज्ञाता, दो दिन तो क्या एक क्षण का ढील भी नहीं दे रहें सुनकर मुस्करा रहे हैं—मानों प्रेमी के भीतर उत्पन्न प्रेमाकर्षण को समझते हुए कह रहे हो—**नानक चिंता मत करहु चिंता तिस ही हे।** तुम क्यों चिंता करते हो? हमारा अब एक-एक पग आपके लिए ही होता है, हमारे संसार में आने के समस्त कार्य पूर्ण हो गए हैं। यदि अब हमारा कोई कार्य शेष है तो केवल और केवल तुम्हारा विवाह! यह तो बिना बोले मुस्कान से ही कल्पना की जा सकती है, लेकिन अब पवित्र अधर हिले—आज्ञा हुई राम तुम भोजन प्रतिदिन बनाते हो और हम छक लेते हैं। आज एक रोटी अधिक बना लेना तेरा अखंड पाठ हो जाएगा। राम जी की ओर से दो-तीन दिन यहाँ ठहराने का अखण्ड पाठ वाला प्रयत्न भी असफल हो गया। बस हजूर अब अपनी मौज में जा टिके करनाल कुटिया। इधर राम जी बरनाला पहुँच कर अपनी ड्यूटी पर जा उपस्थित हुए।

आप में काम करने की प्रवृत्ति, उच्च जीवन, सब के साथ प्रेम भरा व्यवहार और जीवन में सूर्य के समान भासमान ईमानदारी से मैनेजर सहित समस्त स्टाफ प्रभावित हैं। ऐसे उच्च एवं पावन और दैवी गुणों से युक्त आपके पवित्र जीवन के प्रभाव को स्वीकार करते एक दिन प्रबन्धक ने कहा—आपकी काम करने की लगन को देखते हुए मेरा मन नहीं चाहता कि आप यहाँ से कहीं और जाएं, लेकिन तुम्हारा निच्छल एवं निष्कपट अथवा हर प्रकार से आकांक्षा रहित मन देखकर मेरे मन में कई दिनों से यह विचार बार-बार आ रहा है कि आप कहीं घर के समीप किसी ब्राँच में चले जाओ ताकि तुम्हारा आने-जाने का कष्ट दूर हो जाए, क्योंकि शेष स्टाफ ने भी जो जहाँ जाना चाहता है प्रार्थना-पत्र दे दिए हैं इसलिए आप भी एक प्रार्थना-पत्र दे दो। मैं उसका अनुमोदन करके ऊपर भेज दूँगा। फिर तुम्हारा कार्यकाल भी पर्याप्त हो चुका है अर्थात् यहाँ आठ

वर्ष हो गए हैं। राम जी ने उत्तर दिया—हमें यह भी आज्ञा नहीं है कि हम बदली के लिए किसी के सम्मुख निवेदन करें। हमें उनकी आज्ञा में रहना है जहाँ अन्न जल होगा बिना किसी यत्न के वहाँ ले जाएगा। इसलिए हम उसकी इच्छा में ही संतुष्ट हैं। दूसरे जिन लड़कों ने प्रार्थना-पत्र दिए थे—वे प्रात: आकर प्रतिदिन पता करते कि हमारे हुक्म आए हैं कि नहीं? लेकिन बदली किसी की भी नहीं हुई। इधर राम जी ने तो कोई प्रार्थना-पत्र दिया ही नहीं था जिसका पता करते, क्योंकि आप जानते हैं कि हमारी बदली इस बैंक-विभाग के अधीन नहीं है बल्कि हमारा कार्य तो बड़ी सरकार के पास है। वह जब चाहेगी और जहाँ चाहेगी भेज देगी। इसलिए इन बेचारों से भिक्षा क्या मांगनी है। यह संकेत भी सरकार ने पहले दिन ही कर दिया था। आज शनिवार को दफ्तर का समय पूर्ण होने पर करनाल को चल पड़े, क्योंकि चार दिन हो गए, हजूर के दर्शन किए। गाड़ी में बैठे भाई गुरदास जी की यह 'वार' ऊँचे स्वर में गा रहे हैं—

सउदा इकतु हटि है साहु सतिगुरु पूरा॥
अउगुण लै गुण विकणै वचनै दा सूरा॥
सफलु करै सिमलु बिरखु सोवरनु मनूरा॥
वासि सुवासु निवासु करि काउ हंस न ऊरा॥
घुघू सुझु, सुचाईदा संख मोती चूरा॥
बेद कतेबहु बाहरा गुर सबदि हजूरा॥

(भाई गुरदास १३/२१)

भाई साहिब की इस पउड़ी (श्लोक) द्वारा सत्पुरुष की महिमा का गायन करते हुए जा पहुँचे करनाल अलौकिक प्रीतम के चरणों में। रात्रि सेवा में व्यतीत हो गई। घर गए अब आपको काफ़ी समय हो गया। हजूर के दर्शनार्थ करनाल कुटिया आते तो हैं, लेकिन घर नहीं जाते। घर वालों को तो बाद में ही पता चलता है कि राम आया था और महाराज जी के चरणों में एक दिन ठहर कर वापिस चला गया है। बरनाला पत्र डालते हैं कि मिलकर जाओ, लेकिन आप उत्तर में पूरे पत्र में गुरुवाणी ही लिखकर घर को भेज देते हैं। न तो उसमें कोई सांसारिक बातचीत और न अपनी कुशल क्षेम का ब्यौरा। अब आपकी छोटी बहन किरण का विवाह आ गया, इसलिए परिवार वालों ने पत्र डाला कि अमुक तिथि का विवाह है आप दस दिन पूर्व आ जाओ। आपने उसी प्रकार पूरे पत्र में गुरुवाणी लिखकर भेज दी—न कोई विवाह की चर्चा न आने का जिक्र। विवाह निकल गया, लेकिन आप नहीं आए। आज माता को पता चला कि राम रात को महाराज जी के चरणों में कुटिया आया हुआ है। माता जल्दी-जल्दी कुटिया आई, पुत्र को देखकर प्रसन्न हुई, इच्छा बलवती हुई लेकिन पुत्र ने ध्यान तक नहीं दिया। उसी प्रकार सेवा में रत गुरुवाणी की यह पंक्ति ऊँचे स्वर में बोल रहे हैं—

ना किस का पूतु न किस की माई॥ झूठै मोहि भरमि भुलाई॥
मेरे साहिब हउ कीता तेरा॥ जां तूं देहि जपी नाउ तेरा॥ रहाउ॥
बहुते अउगण कूकै कोई॥ जा तिसु भावै बखसे सोई॥
गुर परसादी दुरमति खोई॥ जह देखा तह एको सोई॥
कहत नानक ऐसी मति आवै।। तां को सचे सचि समावै॥

(आसा म: १पृष्ठ-३५७)

माता जी ने उदास मन से विरक्त महाराज जी के चरणों में प्रार्थना की, जिसका भाव कुछ इस प्रकार था—

मैं पुत्तर पुत्तर करदी मैंडे पुत्तर बड्डा चित्त हां।
मैं रसते उंठ-उंठ तकदी मैं पुछदी ओपरे मित हां।
भाह बले मैं अन्दरे मैं शिक शिक होई चूर हां।
मैं तांधां पुत्तर आंवदा ओह हुन्दा जांदा दूर हां।
कोई सुपने अन्दर आखदा तैं पुत्तर तुरिया आंवदा।
मैं अखां पट पट वेखदी मैनूं पुत्त न नज़री आंवदा।
दुनियां अंध हनेर पुत्त जे अखों ओहले।
धौलर मिट्टी ढेर महल हन सुंझे खोले।
बलदे दिसण बाग विच जे पुत्त न होवे।
काहदे मिठे राग माउ जे हंझू चोवे।
तुर गिया पुत्त विदेस माउं नू सार न घल्ली।
जिऊंदी मोई मांउं हिके ओह हो गई झल्ली।
मां जीवे तद लाग पुत्त विच वेहड़े दिसे।
दिती पुत्त कंड माँ ज्यों छाला फिस्से।
मर जावे ओह मां जो पुत्त ना वरिहां देखे।
तड़फे मच्छी वांग पुत्त दे मिलण भुलेखे।
मैं ना सीगी जोग पुत्त सी नूर इलाही।
नैणां तई विजोग झूरदा रहे सदा ही।

माता ने विरक्त महाराज जी के चरणों में निवेदन किया कि महाराज राम को यह आज्ञा दो—मुझे घर मिल कर जाया करे। दो वर्ष हो गए हैं घर आए। महाराज जी ने आज्ञा दी—भाई! कभी घर जा आया कर, आज भी बरनाला को जाते समय घर होकर जाना। आपने आज्ञा तो शिरोधार्य करनी ही थी अत: जब तैयार होकर हजूर से आज्ञा लेकर बरनाला के लिए प्रस्थान किया तो आज्ञानुसार पहले घर गए, लेकिन दहलीज़ से आगे नहीं गए। दहलीज़ में खड़े होकर थोड़ा सा वार्तालाप करके स्टेशन की ओर चल पड़े।

आदेश का कार्य

इस प्रकार सेवा करते संसार, सांसारिक सम्बन्धों और शारीरिक सुखों से नितान्त बेखबर हो गए। कुटिया हजूर की सेवा करते राम जी भोजन बनाने के लिए अंगीठी पर जुट जाते हैं। साथ ही अन्य कोई कपिल शर्मा जो कि हजूर के चरणों का बहुत बड़ा सेवादार था अथवा कोई अन्य महाराज जी को गरम-गरम परशादे छकाता। और भी जितनी संगत है—सब छकती रहती है, लेकिन राम जी पालथी मारकर अंगीठी पर डटे भोजन बना रहे हैं। कौन आया, कौन गया, इसमें उनका कोई ध्यान नहीं, यदि कहीं ध्यान है तो केवल भोजन बनाने अथवा जपुजी साहिब के पाठ में। जब तक सारी संगत भोजन नहीं कर लेती तब तक न तो उनकी पालथी टूटती है और न ही जपुजी साहिब का पाठ बन्द होता है। भोजन भी क्या आनंददायक और स्वादिष्ट

बनाते हैं उनकी महिमा का वर्णन करने से यह लेखनी तो बिलकुल ही असमर्थ है, लेकिन पूरा-पूरा वर्णन कोई बुद्धि न कर पाए, क्योंकि किसी दैवी प्रेम में भीगकर बल्कि भीतर-बाहर से बेसुध हुए प्रेम का रूप ही होकर जपुजी साहिब के अमृतरस से परिपूर्ण करके बनाए प्रसादों की महिमा करना जिह्वा का विषय ही नहीं है। वह तो **'जिन चाखिया सोई जानै'** वाली बात है। इतना आनंददायक भोजन बनाने की कला आपने कहाँ से सीखी है? पूरा-पूरा तो राम जी स्वयं ही जाने, लेकिन लगता कुछ ऐसे है कि आपने यह विद्या 'बेगमपुरा नगर' के प्रेमपुरी नामक कॉलेज में प्राप्त की है, क्योंकि अन्य किसी कॉलेज अथवा विश्वविद्यालय में यह विषय है ही नहीं सिवाय 'प्रेमपुरी' कॉलेज के। संतोष, आपके भीतर इतना असीम है कि लंगर समाप्ति के पश्चात् जब आप स्वयं लंगर छकने के लिए तत्पर होते तो इतने में कोई बाहर से लंगर छकने का कोई अभिलाषी आ जाता तो अपना लंगर उसको छकाकर स्वयं अपने लिए दो चार आलू अंगीठी में भूनकर नमक लगाकर छक लेना। कभी-कभी हजूर अपनी मौज में कपिल शर्मा, छोटू जी अथवा एक-दो अन्य सेवक, उनका जिक्र करते कि यह लड़के बहुत सेवा करते हैं, लेकिन राम जी का नाम तक न लेते। यह सुनकर एक दिन किसी प्रेमी ने प्रार्थना की, महाराज, सेवा तो सभी लड़के बहुत करते हैं, लेकिन ये कभी न कभी अपने घर में भी आ जाते हैं, लेकिन राम जी चौबीस घंटे आपके चरणों की सेवा में लीन रहता है। आपजी ने कभी इसका जिक्र नहीं किया—शेष सबकी प्रशंसा की है। हजूर बोले—भाई राम तो राम ही है। राम के गुणों का वर्णन जिह्वा का विषय नहीं, इसलिए उसका जिक्र क्या करें। इस प्रकार शत प्रतिशत की गई सेवा का परिणाम फलदायक सिद्ध हुआ। इधर हजूर अब सेवा पर प्रसन्न होकर हर प्रकार के योग्य, विद्वान और आज्ञाकार पुत्र के विवाह का स्वयंवर रचने के लिए जल्दी से जल्दी कनखल पहुँचने के लिए उत्सुक हैं।

ऋषिकेश डेरा और सच्चा आनंद

सबद सुरति लिव लीन होए साधि संगति सचि मेलि मिलाइआ।
हुकम रजाई चलणा आपु गवाइ ना आपु जणाइआ।
गुर उपदेश आवेश करि परउपकारि अचारि लुभाइआ।
पिरम पिआला अपिउ पी सहिज समाई अजरु जराइआ।
मिठा बोलणु निवि चलणु हथहु दे कै भला मनाइया।
इक मनि इकु अराधणा, दुबिधा दूजा भाउ मिटाइया।
गुरमुखि सुख फल निज पदु पाइआ।

(वार ग्यारहवीं, पौड़ी चौकी)

इस प्रकार की अवस्था में स्थित करके तीनों लोकों, चौदह भवनों की सच्ची बादशाही का ताज शीश पर रखकर निर्मल आश्रम की महंती की भारी-गठरी आपके स्कन्धों पर रखकर, गुरु गोबिन्द सिंह की ओर से प्रसन्न होकर प्रदान की गई, दीप से दीप द्वारा प्रज्वलित ज्योति जो आपको बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी की ओर से प्राप्त हुई थी, को राम सिंह के पावन हृदय में स्थापित करके लोक-परलोक की निधियों की चाबियाँ प्रदान कर अर्थात् हर प्रकार से राम सिंह जी को पूर्ण बनाकर विरक्त महाराज जी ने ऋषिकेश को भेज दिया। उस समय किसी प्रेमी ने प्रशंसा में बड़े मधुर स्वर में इस स्वर का उच्चारण किया—

* *इस संदर्भ में देखें—विरक्त महाराज जी की जीवन लीला। उसमें केशदान और गुरुमुख जीवन, अलौकिक विवाह, बुद्धि सीमा से परे की क्रीड़ा और महंती का ताज आदि शीर्षकों को पृ० ३०८, ३३३, ३२१, ३३८पर।*

श्रीमान् संत जोध सिंह जी महाराज (दाईं ओर) तथा श्रीमान् संत गुरिन्द्र सिंह (छोटू बाबा) जी के सन्यास धारण करते समय का दृश्य

श्रीमान् संत जोध सिंह जी महाराज

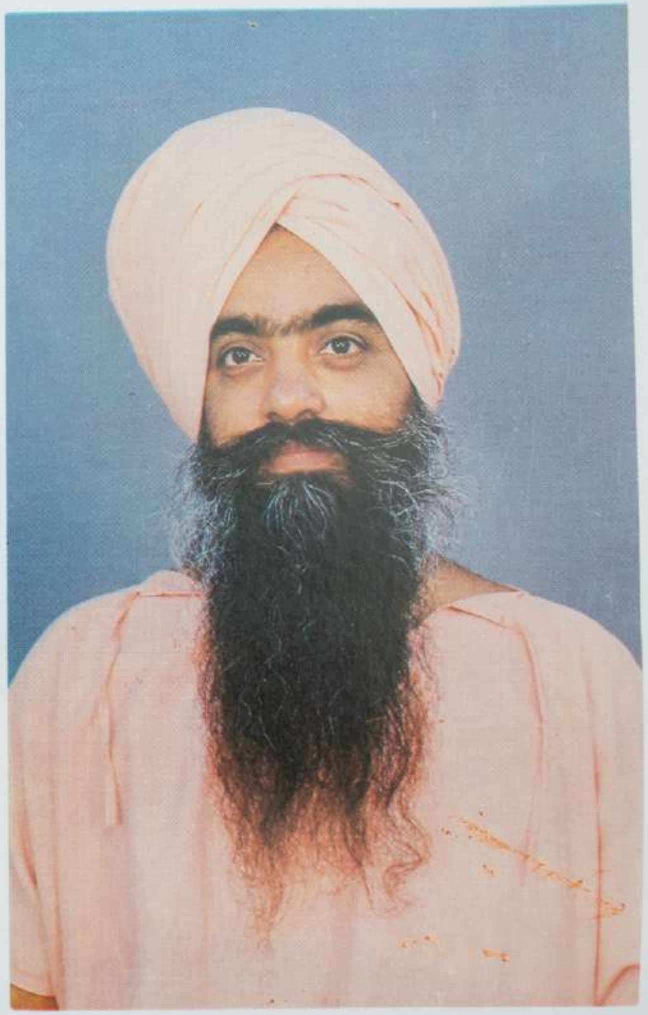

श्रीमान संत गुरिन्द्र सिंह (छोटू बाबा) जी महाराज

संत संग जब वधयो वधेरा। पूरन प्रभू सरब मैं हेरा।
तबि मुख लाल रंग द्रिशटावै। तृप्त होइ मन कितहुँ ना धावै।
शांत मधुरता तबि हुइ आई। अंतरि ब्रिती सथिरता पाई।
दृढ़ अभयास गयान मन लाई। परा भगति उतपति हो आई।
संत संग जब पारस छुहयो। हुतो मनूर जो कंचन भयो।
परमानंद पाइ कर भलो। बिदा होइ राम सिंह चलो।

राम सिंह जी अब सच्चे आनंद में स्थित ऋषिकेश बैठे हैं न कि उस आनंद में जिससे आप और हम परिचित हैं। अपितु उस आनंद में जो आता है आनंद की कामना छोड़ने पर। प्रीतम हो अलौकिक, उसके साथ हो प्यार, प्रसन्न करने की हो मन में लालसा, निष्काम सेवा से उसको कर ले प्रसन्न, फिर प्रसन्न होकर प्रदान कर देता है सच्ची खुशी, बल्कि बना देता है आनंद-स्वरूप। उसी अलौकिक दाता की खुशी में समाहित हुए बैठे हैं महंत राम सिंह जी महाराज निर्मल आश्रम ऋषिकेश। महंत नारायण सिंह जी का शरीर यद्यपि अब रोगी रहने लगा है, लेकिन विरक्त महाराज जी की महत् कृपाओं द्वारा महंत राम सिंह जी जैसे का महान् उत्तराधिकारी बनकर आ जाना—इस ईश्वरीय कृपा ने उनकी चिंता को दूर कर दिया। इस प्रकार पद के उत्तरदायित्वों से मुक्त हर प्रकार से शान्त, सुखी, पुष्प के समान हल्का जीवन और विरक्त महाराज जी की कृतज्ञता ज्ञापित करते लगभग सवा साल पश्चात् अर्थात् 25 अक्तूबर, 1982 को महंत नारायण सिंह जी परलोक सिधार गए। उनके सतारहवें दिन अर्थात् दस नवम्बर 1982 को साधु समाज और बम्बई, दिल्ली, करनाल, पंजाब से आई संगत के भारी समागम में गुरुग्रन्थ साहिब जी के सम्मुख एवं विरक्त महाराज जी ने अपने समक्ष बिठाकर महंत राम सिंह जी को साधु, महात्मा, डेरों के महंतों और दूर-समीप से आई संगत की ओर से दस्तारों से सम्मानित किया गया। अब महंत राम सिंह जी महाराज आश्रम के समस्त बाह्य और भीतरी कार्य—आई संगत को प्यार एवं सम्मान, लंगर की ओर विशेष ध्यान आदि कार्यों को बड़ी कुशलता से निभा रहे हैं। यह व्यवहार करते हुए भी आप राजा जनक की भाँति निर्लिप्त एवं असंग इस प्रकार विचरण करते हैं, जैसे जल पर मुरगाबी। अब तक सिंधी संगत आश्रम के साथ भारी संख्या में जुड़ी हुई थी, लेकिन पंजाबी संगत पर्याप्त न थी। अब विरक्त महाराज जी की कृपा से पंजाबी संगत में भी भारी वृद्धि हुई अथवा आप यूँ भी कह सकते हैं कि कमल पुष्प के विकसित होते ही भ्रमरों ने मंडराना आरम्भ कर दिया, क्योंकि प्रेम की सुंगध से यह कमल पुष्प भरपूर है इसलिए अनायास ही भ्रमर खिंचे चले आ रहे हैं। विरक्त महाराज जी की सेवा में छोटू जी रहते हैं, लेकिन आने वाले समय को ध्यान में रखते हुए अथवा किसी अन्य कारण से जो वह स्वयं ही जानते हैं आप करनाल को जाने के लिए तैयार हुए, लेकिन छोटू जी को आज्ञा दी कि तुम यहाँ रहकर महंत जी की सेवा करो।

कनखल-बाहरी भवन

संगत को भारी संख्या में आते-जाते देखते हुए और निर्मल बाग कनखल में आवास का अभाव महसूस करते हुए महंत जी ने नहर से बाहर एक भवन बनाने के विचार से मौजूदा तैयार हुए नौ कमरों वाले भवन के निर्माण का कार्य आरम्भ किया। जब दीवारें तैयार होकर कार्य छत पर पहुँचा उस समय विरक्त महाराज जी भी कनखल ठहरे हुए थे। उन दिनों आप बहुत कम बोलते थे, प्रायः अन्तर्मुखी ही रहते थे। छत पड़ने से एक दिन पूर्व अपनी मौज में पूछा—पंजाब से संगत नहीं आई?

सेवक ने प्रार्थना की—महाराज कोई नहीं आया। अपनी मौज में चुप कर गए। सायं फिर महंत जी को पूछा—पंजाब से संगत नहीं आई? महंत जी ने प्रार्थना की महाराज! आज तो कोई नहीं आया, हजूर बोले—फिर छत कैसे पड़ेगी? महाराज आपकी कृपा से मज़दूर हैं—वे डाल लेंगे। हजूर फिर चुप हो गए, अब प्राय: मौन रहते ही थे, लेकिन पुन: पूछने का कारण तो सम्भवत: किसी ओर दूरभाष कर रहे हैं। खैर रात्रि व्यतीत हो गई। प्रात: होते ही खोख गाँव से लगभग दस नवयुवक आ पहुँचे रात्रि की गाड़ी से। उधर लैंटर की भी तैयारी थी। अब पता चला कि विरक्त महाराज जी ने दो बार क्यों पूछा—पंजाब की संगत के आने के सम्बन्ध में? लैंटर की सेवा आरम्भ हो गई। लेकिन संगत कम होने के कारण लगातार चौबीस घंटे लग गए। विरक्त महाराज जी के चरणों में संगत ने नमस्कार करके बताया कि महाराज लैंटर की सेवा सम्पूर्ण हो गई। आप बोले—अच्छा हो गया भाई! यह गुरु नानक का घर है यहाँ लैंटर बहुत पड़ेंगे। तुम्हें सेवा उपलब्ध होती रहेगी। हजूर ने संकेत से खोख, कोटली गाँव को लैंटर की सेवा का मानों पट्टा ही लिख दिया था। महंत महाराज जी के महंती समय में यह सबसे पहला भवन है जो 1982 में बना अथवा यों कहें कि आपके जीवनकाल में यह भवनों का मुहूर्त था।

नाम की दात से उपकृत और बाहर संगत में जाने का आदेश

महंत नारायण सिंह का देहावसान हो गया और महंत रामसिंह गद्दी पर सुशोभित हुए। आप तो प्रेम स्वरूप होने के कारण सब संगत को प्रेम की मुक्त सुगंध तो प्रदान कर ही रहे हैं, लेकिन संगत आपको बाबा बुड्ढा सिंह जी का साक्षात् रूप समझकर पूजती है। देश के कोने-कोने से सिंधी संगत का आना-जाना पूर्व की भाँति बना हुआ है। आज भी पुणे से एक सिंधी परिवार आया हुआ है। उनकी एक बेटी जिसका नाम रीटा है उसने महंत महाराज के चरणों में प्रार्थना की महाराज! मुझे नाम की दात देने की कृपा करें। महाराज बोले—भाई! कनखल हजूर विरक्त महाराज जी ठहरे हुए हैं, नाम जैसे बहुमूल्य वस्तु का दान वहीं देने को समर्थ हैं, हम नहीं। इसलिए नाम की दात प्राप्त करनी हो तो कनखल जाओ। इससे पूर्व भी कुछ सिंधी प्रेमियों ने नाम की याचना की थी, लेकिन आपने उनको भी यही उत्तर दिया था।

आज मोहिनी मनसुखानी बम्बई वाली समस्त सिंधी संगत को साथ लेकर विरक्त महाराज जी के चरणों में कनखल पहुँच गई। प्रार्थना की महाराज! इस लड़की को नाम की दात से उपकृत करो। हजूर बोले—भाई—ऋषिकेश महंत जी को प्रार्थना क्यों नहीं की? महाराज उनको तो कई बार निवेदन कर चुके हैं आज भी उन्होंने ही आपके चरणों में भेजा है। हजूर ने आज्ञा दी महंत को बुलाओ! आज्ञानुसार महंत जी महाराज ने कनखल पहुँचकर हजूर के चरणों में नमस्कार की। हजूर बोले—भाई यह संगत प्राचीन गद्दी से जुड़ी हुई है—बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी के समय से। अब श्री गुरु नानक देव महाराज जी के आदेश से इस गद्दी पर तुम सुशोभित हो, इसलिए जहाँ इनको प्यार, सम्मान दे रहे हो वहाँ ईश्वरीय टिकट नाम भी प्रदान किया कर। महंत जी ने चरणों में प्रार्थना की महाराज! आप कृपा करो मैं तो आपका सेवक हूँ। हजूर बोले—आज से हमारी यही आज्ञा है कि प्रत्येक जरूरतमंद को अधिकारी जानकर नाम की दात प्रदान किया कर। इसलिए इनको दरबार साहिब में ले जाकर आज ही नाम प्रदान करो। महंत महाराज सिंधी संगत को साथ लेकर नीचे दरबार साहिब में गए, वहाँ

नाम की इच्छुक सिंधी लड़की रीटा को नाम की दात से उपकृत किया। इस प्रकार इस सिंधी लड़की को आपकी सबसे पहली शिष्या होने का गौरव प्राप्त हुआ। उधर विरक्त महाराज जी ने चरणों में बैठे सिंधी प्रेमी हीरानंद को पूछा—तुमने किससे नाम लिया है? हीरानंद ने प्रार्थना की महाराज! मैंने अभी तक नाम नहीं लिया है। महाराज बोले—कह सतिनाम वाहिगुरु, सतिनाम वाहिगुरु आदि पाँच बार कहलाया फिर आज्ञा की—तुम हमारे पहले और अंतिम सिंधी शिष्य हो। हीरानंद ने चकित होकर प्रार्थना की, महाराज! आप तो घट-घट के अंतर को जानने वाले हो, क्योंकि मेरा यह दृढ़ संकल्प था कि मैं नाम उससे लूँगा जो मुझे स्वयं बुलाकर कृपा करे। आपने मेरे हृदय की बात जानकर दरगाह का टिकट प्रदान कर दिया।

हजूर की आज्ञानुसार इस प्रकार महंत जी ने आज से नाम-दीक्षा आरम्भ कर दी, लेकिन संगत प्रार्थना कर रही है अपने-अपने इलाके में ले जाने के लिए—लेकिन उसे अभी स्वीकार नहीं कर रहे। इन दिनों विरक्त महाराज जी कनखल से ऋषिकेश आ गए। एक दिन अपने रहने वाले चौबारे में बाहर छत पर अपनी मौज में लेटे हुए हैं। चरणों में एक सेवक डॉ० हरबंस लाल बावा भी बैठे हैं। इतने में महंत महाराज जी आ गए। हजूर के चरणों में नमस्कार करके शीश की ओर खड़े होकर पंखा करने लगे। इतने में एक माता आ गई। वह माता विरक्त महाराज जी के चरणों को नमस्कार करने लगी। हजूर बोले—माता! इधर महंतों के चरणों में नमस्कार कर। माता महंत जी की ओर आई, लेकिन महंत जी ने दूर से ही कह दिया माता! महाराज जी साक्षात् परमेश्वर हैं इनके चरणों में हर प्रकार के पदार्थों के खजाने हैं, इसलिए उधर ही नमस्कार करो। माता बेचारी विरक्त महाराज जी के चरणों की ओर गई—प्रार्थना कर रही है महाराज! आशीर्वाद दो। हजूर थोड़ा कठोर वाणी में बोले—माता—तुम्हें एक बार कहा, दो बार कहा कि हमने आशीर्वाद देने वाला बना दिया है—जो हमारे पास था इसके आँचल में डाल दिया है अब जो लेना है इससे माँगो। माता ने दोनों पिता-पुत्र महापुरुषों को नमस्कार करके वापिस आ गई। अब हजूर ने महंत जी को आज्ञा दी कि आपने मोहिनी के साथ बम्बई जाना है, वहाँ जाकर कथा भी करनी है। महंत जी महाराज ने करबद्ध प्रार्थना की महाराज! मेरा मन आपके श्री चरणों से विलग होने को नहीं करता इसलिए आप कृपा करो अपने चरणों से दूर न भेजो। हजूर बोले—ये कितने निर्धन प्रातः चाय नाश्ता करते हैं। इनका काम किस प्रकार चलेगा इसलिए मोहिनी एवं अन्य संगत के साथ बम्बई अवश्य जाना है। महंत जी ने प्रार्थना की—महाराज! आपने कथा करने की आज्ञा दी है, लेकिन मैंने तो स्टेज पर आज तक एक शब्द भी नहीं बोला—कथा कैसे करूँगा? हजूर बोले—गुरु नानक तुम पर कृपा करेंगे। उन्होंने यह कार्य तुमसे ही कराना है जीवों के उद्धार के लिए। हजूर ने मोहिनी मनसुखानी को बुलाकर कहा—महंत जी को बम्बई साथ लेकर जाना है, वहाँ इन्हें सारी संगत से मिलाना है और इनसे वहाँ कथा भी करानी है।

अप्रैल-मई 1983 के दिन चल रहे हैं, इन दिनों हजूर ने संत जोध सिंह जी एवं संत गुरिंदर सिंह जी (छोटू) को संन्यास देकर महंत जी की सहायता के लिए ऋषिकेश भेज दिया। आश्रम के समस्त कार्यों को सुव्यवस्थित करके महंत महाराज जी को हर प्रकार से पूर्ण अर्थात् दृश्य-अदृश्य निधियों के स्वामी बनाकर बल्कि निधियों में से जरूरतमंदों को हर प्रकार के पदार्थ के खुले भण्डारे वितरित करने का ईश्वरीय आदेश करके साथ में दो सहायकों की ड्यूटी लगाकर आखिर गोराया जाकर प्राणों की पूँजी का परित्याग कर दिया जिसका वर्णन पीछे विस्तारपूर्वक किया जा चुका है।

संत जोध सिंह जी

आपका जन्म 14 अगस्त, 1948 ई० को भगवान श्रीकृष्ण जी के पावन जन्म दिवस पर ज़िला लुधियाना के गाँव 'सीहां दौद' में सरदार लक्ष्मण सिंह जी के घर माता ज्ञान कौर की पवित्र कौख से बुधवार वाले दिन हुआ। आप सांसारिक रिश्ते की ओर से विरक्त शिरोमणि संत निक्का सिंह जी के भतीजे लगते हैं। यद्यपि पारमार्थिक संस्कार, अधिकतर पूर्व कर्मों के ही हुआ करते हैं, लेकिन आपका विरक्त महाराज जी की पवित्र कुल में जन्म होने के कारण विरासत में और विशेषत: माता जी का जीवन धार्मिक संस्कारी होने के कारण बाल्यकाल में ही अंकुरित होने आरम्भ हो गए। 1952 के आस-पास का वर्णन है कि जब आप लगभग चार वर्ष के ही थे उस समय विरक्त महाराज ने अपनी मौज में विचरण करते एक बार 'बालेवाल गाँव' रात्रि को विश्राम किया। पता लगने पर पिता लक्ष्मण सिंह जी प्रात: ही दर्शनार्थ गए और जोध सिंह जी को भी कंधों पर बिठाकर साथ ले गए। आगे जाकर देखा विरक्त महाराज जी एक टीले पर ठहरे हुए थे। पैरों में पनही नहीं, पास एक चादर और कुछ नहीं! देखकर चकित हुए कि इतनी ठण्ड में रात्रि कैसे व्यतीत की होगी! खैर—अब सवेरा हो गया, विरक्त महाराज जी ने भी 'मलौद' की ओर प्रस्थान किया। लक्ष्मण सिंह भी जोध सिंह को कंधे पर बिठाकर साथ-साथ चल पड़े। 'उच्ची दौद' के खेतों में महाराज जी ने एक कुएँ पर स्नान किया, फिर लक्ष्मण सिंह को आज्ञा दी कि तुम वापिस जाओ। हम तो अब आगे को जाएँगे। लक्ष्मण सिंह ने प्रार्थना की, महाराज कृपा करो—दौद चलो! लेकिन हजूर अपनी मौज में आगे चल पड़े। पौष माघ मास की कड़ाके की ठण्ड, वस्त्र पास है नहीं, पैरों में पनही नहीं इस दृश्य ने बालक जोध सिंह के मन पर गहरा प्रभाव डाला। मानों हृदय में सुप्त परमार्थ के बीज को कुछ हिला दिया। अब परिवार के सदस्यों ने जोध सिंह को गाँव के ही प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने डाल दिया। चार कक्षाएँ आपने यहीं पास कीं।

लक्ष्मण सिंह का खेत 'उच्ची दौद' हजूर की कुटिया के समीप ही पड़ता था। उन दिनों संत गोपाल सिंह जी इस टीले पर पर्णकुटी बनाकर रहते थे, लेकिन विरक्त महाराज जी का अभी यहाँ आना-जाना नहीं था। इसलिए यह योग्य बालक जब माँ अथवा परिवार के अन्य सदस्य के साथ खेत में जाता तो दौड़कर संत गोपाल सिंह जी के पास चला जाता। अभी प्राइमरी में ही पढ़ते थे कि जब संत गोपा सिंह ने नाम की दात भी प्रदान कर दी। फिर पाँचवीं कक्षा सरौद गाँव में की, क्योंकि दौद गाँव में स्कूल चौथी कक्षा तक ही था। सरौद गाँव भी स्कूल पाँचवीं कक्षा तक ही था इसलिए छठी कक्षा में 'उकशी' गाँव में दाखिल हुए। यह स्कूल भी नया ही आठवीं तक मंजूर हुआ था, इसलिए आठवीं तक तीन कक्षाएँ यहीं की, फिर मैट्रिक राजकीय विद्यालय मलेरकोटला से की। उसके पश्चात् राजकीय कॉलेज में से बी०ए० की। फिर दो वर्ष शिक्षा के क्षेत्र में 'हायर डिप्लोमा' किया। तब तक निवास भी पटियाला ही रखा। परमार्थ की ओर रुचि तो बाल्यकाल से ही थी। जब आप स्कूल में ही पढ़ते थे तो विरक्त महाराज जी 'उच्ची दौद' टीले पर आए हुए थे। आप भी पिता के साथ दर्शनार्थ प्राय: जाते रहते थे। आज हजूर के पास दो-चार व्यक्ति और भी बैठे थे, इसलिए कुछ व्यावहारिक बातचीत चल पड़ी। लेकिन बालक जोध सिंह परमार्थ के कुछ वचन सुनने का अभिलाषी था, इसलिए सांसारिक व्यावहारिक बातों में रुचि न होने के कारण वहाँ से उठकर टीले के दूसरे 'कांही' में जा बैठा। कुछ समय पश्चात् सायं को जब लक्ष्मण सिंह घर जाने लगे तो जोध सिंह कहीं नज़र न आया। इधर-उधर देखने पर दलीप सिंह को टीले के दूसरी ओर 'कांही' में नेत्र बंद किए बैठा दिखाई दिया। दलीप सिंह ने पूछा—क्या करता है? जोध सिंह ने बताया कि नाम जपता था। दलीप सिंह ने आकर महाराज जी को बताया। हजूर बोले गोपाल सिंह ने लगाया है इसे इस ओर।

किसी समय आप माता जी के साथ टीले पर हजूर के दर्शन करने गए तो नमस्कार करके चरणों में बैठ गए। हजूर बोले—छोटे वहाँ से गुटका उठाकर ला। जोध सिंह दौड़कर उठाने गया तो पैर अटककर गिर गया, लेकिन फिर उठकर जल्दी से गुटका उठा लिया। हजूर ने गिरते एवं उठकर दौड़ते देख लिया, फिर बोले—चलेगा तो अवश्य, लेकिन अटककर। जब आपने कॉलेज में पढ़ना आरम्भ किया—लगभग चार वर्ष हजूर के दर्शनार्थ जाते तो रहे, लेकिन कुसंग के प्रभाव स्वरूप उपदेश की ओर से कुछ विमुख हो गए। लगभग चार वर्ष पश्चात् जब हजूर के चरणों का आकर्षण बढ़ा तो पता चला कि चार वर्षों तक हजूर के उपदेशों से दूर रहना—उनका वचन सत्य ही हुआ है कि चलेगा तो अवश्य, लेकिन कुछ अटककर।

हजूर भी शेष परिवार से आपके साथ अधिक हित करते थे। जब दलीप सिंह ने दर्शनार्थ करनाल अथवा ऋषिकेश जाना तो हजूर ने संगत का अथवा परिवार के किसी व्यक्ति की बात नहीं करनी, लेकिन जोध सिंह का कुशल अवश्य पूछना। कॉलेज पढ़ते समय एक बार हजूर के दर्शनों की जिज्ञासा मन में उत्पन्न हुई तो उस समय कॉलेज में आगरा, फतेहपुर सीकरी आदि स्थानों के लिए पर्यटन की तैयारी थी। आपने सुना कि महाराज जी की करनाल वाली कुटिया बाईपास सड़क के समीप ही है, इसलिए परमेश्वर करे किसी भाँति दर्शन हो जाएँ। विद्यार्थियों की बस जब करनाल के समीप पहुँची तो साधारण विद्यार्थियों का ध्यान तो करनाल नगर को देखने की ओर था, लेकिन आप का ध्यान एकमात्र हजूर के दर्शनों की ओर था। बस अपनी गति से चल रही है। विद्यार्थी बस में बैठे कर्णपुरी के दर्शन कर रहे हैं अचानक हजूर हाथ में चिप्पी, खूण्डा पकड़े बाईपास पर सैर को जा रहे हैं तो जोध सिंह का मन दर्शन करके गद्‌गद् हो गया।

सन् 1972-73 ई० में आपने सहकारी विभाग में नौकरी की। 1975 ई० के आरम्भ में संत हरचंद सिंह जी लौंगोवाल ने 'उच्ची दौद' गुरुद्वारा साहिब अमृत संचार किया तो उस समय आपने भी अमृत छक लिया। बस उसी समय हजूर के चरणों के साथ भी पूर्ण रीति से उनके साथ प्रतिबद्ध हो गए। 1975 ई० के मई मास में दर्शन लाल चावला की फैक्टरी दिल्ली में कार्य करना आरम्भ किया। उस समय सुरजीत सिंह सूरी करनाल वाले भी पहले ही वहाँ नौकरी करते थे। दोनों ने एक जगह निवास रख लिया। फैक्टरी समय के पश्चात् दोनों गुरुवाणी का पाठ अथवा किसी पोथी पर विचार करते रहते। छुट्टी वाले दिन करनाल हजूर के दर्शनार्थ चले जाते। इस प्रकार यहाँ लगभग डेढ़ वर्ष कार्य किया। कालान्तर में विरक्त महाराज जी की कृपा से पंजाब एण्ड सिंध बैंक में नौकरी मिल गई। लगभग डेढ़ मास गंगानगर रहकर गुजरांवाला टाऊन ब्राँच दिल्ली की बदली हो गई। हजूर की आज्ञानुसार निवास अमरीक चन्द चावला की फैक्टरी में रख लिया। लंगर वहीं ही था—वहीं छक लेते। श्रद्धानुसार राशन बाज़ार से लाकर उसमें डाल देते। श्री गुरुग्रन्थ साहिब जी का फैक्टरी के एक कमरे में प्रकाश था। प्रातः प्रकाश करने की सेवा और सायं सुखासन करने की सेवा भी ले ली। प्रतिमास आप एक सहज पाठ करके संक्रान्ति को भोग डाल देते। उसी दिन फिर पाठ रख लेते और जब समय मिलता हजूर के दर्शन कर आते। अब धीरे-धीरे सांसारिक व्यवहार सीमित हो गए और शेष रह गए केवल तीन कार्य। बैंक ड्यूटी, गुरुग्रन्थ साहिब जी की सेवा और प्रतिमास होने वाला एक सहज पाठ और हृदय में हजूर का पावन-स्मरण। इसी समय के बीच हजूर इसी फैक्टरी में दिल्ली रुके हुए थे। ग्रीष्म

ऋतु होने के कारण फैक्टरी के ऊपर रात्रि को बाहर ही सुशोभित थे। चरणों में जोध सिंह जी पड़े थे। अचानक हजूर रात्रि को उठे तो जोध सिंह ने जल्दी से कमर में परना लपेटकर नमस्कार की, क्योंकि गर्मी के कारण कमीज उतार कर सोए थे। कमीज के बिना कमर में परना बंधा देखकर हजूर बोले—मालवा के संत इसी प्रकार परना बाँधते हैं। जोध सिंह—महाराज के पवित्र मुख से ऐसा वचन सुनकर वरदान स्वरूप समझते हुए बड़े प्रसन्न हुए। बस अब वह समय भी तीव्र गति से समीप आ रहा था जब उस समय हो रहे तीनों कार्यों को सीमित करके एक ही कार्य शेष रह गया था—केवल उस परमेश्वर की नौकरी। आपको यहाँ आए लगभग सात वर्ष हो गए। सहज पाठ का भोग भी निरंतर प्रवाहित है और हजूर के चरणों के आकर्षण में भी वृद्धि हो रही है। अंततः वह समय आ गया जब सात वर्षों में पड़ने वाले भोगों की गिनती चौरासी हो गई। सम्भवतः यहाँ का पाठ्यक्रम इतना ही था इसलिए हजूर ने पूर्ण हुआ समझकर अपने पवित्र चरणों की स्थायी नौकरी से उपकृत किया। आज तीन अप्रैल 1983 वाले दिन संसार से संन्यास देकर महंत रामसिंह महाराज जी की सहायता के लिए ऋषिकेश के आदेश दे दिए। जिस प्रकार संन्यास-लीला का विधान हुआ उसका विस्तारपूर्वक वर्णन विरक्त महाराज जी के जीवन चरित्र में विस्तारपूर्वक पीछे किया गया है।

संत गुरिंदर सिंह (छोटू बाबा) जी

श्री गुरु अमरदास जी की ओर से गुरु नानक के घर का प्रचार करने के लिए बाइस मंजियाँ (स्थानों) की स्थापना की गई थी, जिनमें से एक बहुत तेज प्रतापी स्थान था 'साह जीवणा'। समय-समय पर इस पवित्र स्थान पर बहुत प्रतापी महापुरुष होते आए हैं, जिनमें एक समय बड़े तेजस्वी महापुरुष हुए—श्री कर्मचन्द्र जी। बहुत दूर तक इन महापुरुषों के सहस्रों सेवक थे। आपका एक सेवक भाई शरण सिंह जी 'मियां चुनू मण्डी' (गंजी बार) तहसील खानेवाला ज़िला मुलतान रहता था जो आजकल पाकिस्तान में है। यह भाई शरण सिंह सात्विक गुणों वाला, बड़े उच्च जीवन वाला, प्रेमी, गुरुद्वारा की सेवा करता था। इसके चार पुत्रों में से एक भाई सतनाम सिंह जी देश-विभाजन के समय जालंधर नगर आकर बस गया। भाई सतनाम सिंह बहुत विनयशील, संतसेवी, विनम्र स्वभाव वाले व्यक्ति हैं। इनकी धर्मपत्नी माता शरणजीत कौर की कोख से 6 मई, 1954 को एक बालक ने जन्म लिया जिसका नाम गुरिंदर सिंह रखा गया, लेकिन प्रेम के वशीभूत छोटू-छोटू कहकर पुकारते थे। अंततः गुरिंदर सिंह नाम कागजों तक ही सीमित रह गया। लेकिन आम नाम छोटू ही प्रचलित हो गया। छोटू जी अभी तीसरी कक्षा में ही पढ़ते थे कि अन्न-जल के प्रेरणा स्वरूप अथवा आजीविका के सिलसिले में सतनाम सिंह जी गोराया नगर आकर बस गए। सतनाम सिंह जी को संत सेवी संस्कार तो पिता जी से विरासत में ही मिले थे, इसलिए गोराया पहुँचते ही किसी पूर्व संयोग वश परिवार को संत गोपाल सिंह जी का संग प्राप्त हो गया। छोटू जी स्कूल में तो पढ़ते थे, लेकिन संत-सेवा के पूर्व संस्कार सशक्त होने के कारण संत गोपाल सिंह जी के पास बाल्यकाल में ही आना-जाना बढ़ गया। इस प्रकार उनके सम्पर्क से गुरुवाणी शिक्षण भी आरम्भ हो गया। इन दिनों में संत गोपाल सिंह की संगति करते संत सेवा एवं परमार्थ की लगन तेज होती गई। इतने में विरक्त महाराज जी के पहली बार गोराया आगमन पर दर्शन करते ही चुंबकीय आकर्षण महसूस हुआ। इतने में आप दसवीं कक्षा पास करके परिवार वालों के साथ दुकान के पेशे में लग गए। दुकान का व्यवहार करते समय विरक्त महाराज जी के दर्शन मिलाप, सत्संग एवं सेवा के अवसर भी आते ही रहते थे।

1976 में किसी समय का जिक्र है जब आप चण्डीगढ़ किसी विवाह-समागम से वापिस गोराया आ रहे थे तो पता लगा कि विरक्त महाराज जी लुधियाना रालसन वालों की कोठी में रुके हुए हैं, इसलिए दर्शनार्थ आप कोठी पहुँच गए। आगे परिवार के सदस्य माता-पिता भी हजूर के दर्शनार्थ गोराया से आए हुए थे। माता ने हजूर के चरणों में प्रार्थना की महाराज! आशीर्वाद दो छोटू का विवाह कर दें। हजूर अपनी मौज में सहज ही बोले—आपके पास दो और बेटे हैं उनका कर लो। माता-पिता को यह विश्वास था कि हजूर का वचन अन्यथा नहीं जाएगा, लेकिन समय-संयोग की अभी भी प्रतीक्षा में रहे कि छोटू का विवाह करके अपना कर्त्तव्य पूरा कर दें। इस प्रकार समय व्यतीत होता गया।

1978 के किसी समय हजूर 'उच्ची दौद' टीले पर विराजमान थे। छोटू जी, राम सिंह जी और त्रिलोचन सिंह नाभा भी आपके चरणों में पहुँचे हुए थे। रात्रि को लंगर छककर हजूर कुटिया में सुशोभित हुए। ये तीनों सज्जन हजूर की आज्ञानुसार रसोई में जाकर सो गए। हजूर ने उठकर आवाज़ दी—छोटू! आपने शीघ्र ही उठकर बिना पगड़ी के खुले केशों से ही हजूर के चरणों में नमस्कार की। महाराज प्रसन्न होकर बोले वाह-भाई-वाह! अच्छा लगता है जटा वाला साधु! आदि संकेत हजूर कभी-कभी कर दिया करते थे। छोटू जी भी अब अकसर कारोबार से समय निकालकर प्राय: सेवा में जाते रहते थे। 1981 में जब हजूर ने शारीरिक बीमारी की लीला की तब छोटू जी भी महंत जी के साथ सेवा में दिन-रात रहे, जिसका वर्णन पीछे आ चुका है। 'होली फैमिली' अस्पताल के पश्चात् अगस्त 1982 में जब हजूर करनाल कुटिया ठहरे हुए थे उस समय छोटू जी स्थायी तौर पर आपकी निजी सेवा में उपस्थित हो गए। एक दिन हजूर ने भगत लॅभामल को बुलाकर छोटू जी की ओर संकेत करते हुए कहा, संत को गुरुमुखों वाले कच्छे सिलवाकर दो। क्योंकि छोटू जी पहले छोटे कच्छे पहनते थे। भगत लॅभामल जी ने आज्ञानुसार कच्छे सिलवा कर दे दिए और छोटू जी ने ईश्वरीय आदेश समझकर पहन लिए। फिर एक दिन हजूर ने आज्ञा की कि साधु को अपना बिस्तर संसारी लोगों से अलग रखना चाहिए, इसलिए दूसरे बिस्तरों के बीच रखने से तो यहीं एक ओर रख लिया कर। महाराज जी ने नीचे बिछाने वाली एक चादर भी अपनी ओर से प्रदान की। कुछ दिनों पश्चात् महाराज ऋषिकेश को चले तो छोटू जी को आज्ञा दी कि अपना बिस्तर भी साथ ही गाड़ी में रख लें। ऋषिकेश पहुँचकर हजूर अपने चौबारे में सुशोभित हो गए और छोटू जी ने चौबारे से बाहर नीचे आसन लगा लिया। हजूर के दर्शनार्थ प्राय: संगत आती रहती थी। एक दिन कुछ संगत महाराज जी के चरणों में बैठी थी। इतने में कुछ माताएँ भी दर्शन के लिए आईं। वे भी नमस्कार करके चौबारे के बाहर छोटू जी की बिछी हुई चादर पर बैठ गईं। महाराज जी की दृष्टि उनकी ओर गई—तो बोले—भाई संत साधु के वस्त्रों पर बैठना नहीं चाहिए। इस प्रकार पर्याप्त समय से कुछ गुप्त संकेतों के द्वारा छोटू जी के भविष्य के सम्बन्ध में संकेत करते आ रहे थे, लेकिन इन संकेतों को समझने के लिए सम्भवत: बुद्धि अभी समर्थ नहीं थी। हजूर ने कुछ समय यहाँ ठहरकर करनाल जाने का संकल्प किया तो छोटू जी को आज्ञा दी कि तुम यहीं ठहरकर सेवा करो। स्वयं करनाल पहुँचकर संगत को सत् उपदेश करते रहे। इतने में छोटू जी के भी किसी पूर्व बीज के अंकुरित होने का समय समीप आ गया। आज तीन अप्रैल, 1983 वाले शुभ दिवस पर हजूर ने अपने पूर्व संकेतों को साकार करते हुए छोटू जी को संसार की ओर से संन्यास देकर स्थायी तौर पर डटकर सहायता करने हेतु निर्मल आश्रम ऋषिकेश के आदेशों पर हस्ताक्षर कर दिए। उस समय जो लीला हुई उस सबका वर्णन विरक्त महाराज जी के जीवन चरित्र में विस्तारपूर्वक किया जा चुका है।

विरक्त महाराज जी की स्मृति में समागम

22 जुलाई, 1983 को विरक्त महाराज जी के सचखण्ड प्रयाण के पश्चात् उनकी पावन स्मृति में उनकी प्रिय संगत की ओर से स्थान-स्थान पर श्री अखण्ड पाठ साहिब, लंगर भण्डारे आदि समागम आयोजित किए गए। पहला समागम 31.7.1983 को गोराया में सम्पन्न हुआ जो कि जालंधर में स्थित है। 2 अगस्त, 1983 को निर्मल आश्रम ऋषिकेश में, 3.8.1983 को निर्मल बाग कनखल, 7.8.1983 को करनाल कुटिया, 8.8.1983 को गाँव खोख, 9.8.1983 को गाँव बिशन पुरा (लोपे), 10.8.1983 को गाँव अगौल गुरुद्वारा पातशाही नौंवी, 15.8.1983 को गाँव अशरपुर। ये चारों गाँव ज़िला पटियाला में स्थित हैं, 18.8.1983 को गाँव डबरी ज़िला करनाल, 19.8.1983 को गाँव कुराली, ज़िला करनाल, 20.8.1983 को रामनगर कालोनी करनाल, 27.8.1983 को गाँव लोह सिमली पटियाला, 28.8.1983 को गाँव उच्ची दौद जिला लुधियाना, 30.8.1983 को सीहां दौद ज़िला लुधियाना और 31.8.1983 को गाँव दयाल जिला लुधियाना आदि स्थानों पर विरक्त महाराज जी की स्मृति में समागम हुए। इन सब स्थानों पर महंत महाराज राम सिंह जी, संत जोध सिंह, संत छोटू बाबा जी और सिंधी प्रेमी हीरानंद और माता मोहिनी आदि प्रेमियों को साथ लेकर पहुँचे। इन सब नगरों की संगत की ओर से महंत राम सिंह जी को विरक्त महाराज जी का साक्षात् रूप जानकर हर प्रकार से सम्मानित किया गया। जिस भी गाँव में जाते समागम की सम्पूर्णता के उपरान्त संगत अपने-अपने घरों में चरण डलवाने के लिए ले जाती और आपके चरणों में आश्रम के लिए बिस्तर तथा अन्य भेंटे यथाशक्ति अर्पण करती। कई गाँवों में शायद ही कोई ऐसा घर होगा जिसमें आपके पवित्र चरण न पड़े हों अर्थात् बहुत संख्या में प्रेमी प्रार्थना करके अपने-अपने घर ले गए। इस प्रकार विरक्त महाराज जी की पवित्र स्मृति में निरंतर सम्बद्ध रहकर प्रेमी संगत के प्रेम के वशीभूत लगभग एक मास यात्रा करके ऋषिकेश वापिस आ गए।

प्रथम बार मुम्बई यात्रा

अपनी आत्मा रूपी बादशाही के सिंहासन पर सुशोभित होकर अब ऋषिकेश विद्यमान हैं। रिद्धि, सिद्धि आदि शक्तियाँ आपके पवित्र चरणों में दिवा-रात्रि करबद्ध खड़ी रहती हैं। सिंधी संगत तो चाहे पहले ही काफी संख्या में आश्रम के साथ जुड़ी हुई थीं, लेकिन आप जी और अनूठे रस से युक्त भरपूर नेत्र और चन्द्रमा के समान शीतल और सूर्य के समान भासमान चेहरे की आकर्षण शक्ति और चुंबकीय शक्ति की खिंची पंजाबी संगत की बहुत संख्या में आ-जा रही है। इस प्रकार सदैव आश्रम में चहल-पहल बनी रहती है।

विरक्त महाराज जानते थे कि सत्ता स्फूर्ति प्रदान करता तुरीय का स्वाभाविक गुण है, लेकिन यह तुरीय है क्रिया रहित। सदैव सहज पद में स्थित रहने का नाम तुरीय है, इसलिए महंत महाराज जी प्रकृति-निवृत्ति पहचान वाली आनंदमयी अवस्था में स्थित रहते हैं, लेकिन जीवों के भले के लिए संत जोध सिंह जी, संत छोटू बाबा जी और निर्मल बाग कनखल में पंडित महेश चन्द्र आदि तीनों सज्जनों की ड्यूटी लगा दी, लेकिन तीनों को सत्ता स्फूर्ति तुरीय रूप महंत महाराज जी प्रदान कर रहे हैं। बस—इस प्रकार की त्रिगुण संसार व्यवहार चला रहे हैं और सत्ता स्फूर्ति चौथा तुरीय दे रहा है।

महंत नारायण सिंह जी बहुत विनम्र स्वभाव के व्यक्ति थे। इसलिए उनकी विनम्रता का अनुचित लाभ उठाते हुए कुछ लोग आश्रम को घुन के समान खा रहे थे, लेकिन महंत नारायण सिंह जी को अपनेपन की भ्राँति दे रहे थे। ऐसे लोगों की चतुर बुद्धि को भाँपकर संत जोध सिंह जी ने धन से सम्बद्ध समस्त कार्यों को अपने हाथों में ले लिया। लंगर से सम्बन्धित

कार्यों को संत छोटू बाबा जी ने बड़ी कुशलता से संभाल लिया। कनखल निर्मल बाग में गायों एवं बाग आदि के प्रबन्ध को संत महेश चन्द्र (पंडित) जी ने बहुत कुशलता से संभालना आरम्भ कर दिया और वहाँ के अन्य कार्यों को संत चमन लाल जी ने बड़ी कुशलता से संभाल लिया। इस प्रकार आश्रम रूपी पवित्र जल के लबालब भरे तालाब के जब समस्त सुराख बन्द हो गए तो धर्म-कार्यों के उन्नति रूपी खेती को पूरा-पूरा जल मिलना आरम्भ हो गया जिसके साथ पर-उपकार और लोक-कल्याण के कार्य रूपी बाग ने बसन्त ऋतु के समान खिलना आरम्भ कर दिया। इतने में सितम्बर में महापुरुषों की पुण्य तिथियों का आगमन हो गया तो सिंधी-पंजाबी समस्त संगत को आश्रम की ओर से पत्रों के माध्यम से सूचित किया गया। संदेश प्राप्त होने पर संगत भी भारी संख्या में पहुँच गई, तो पुण्य तिथियों के महान् समागम श्री गुरु नानक देव महाराज जी की अपार कृपा के फलस्वरूप बड़ी धूमधाम से मनाए गए। दोनों पुण्य तिथियों में तीन-तीन अखण्ड पाठ रखे गए, समय-समय कीर्तन सत्संग के प्रवाह चलते रहे और गुरु के लंगर के खुले भण्डार वितरित होते रहे जिसमें साधु महात्माओं को निमंत्रण पत्र भेजकर जहाँ बड़े प्रेम के साथ गुरु के लंगर से जल-पान कराया वहाँ दक्षिणार्थ धन एवं वस्त्रादि भी भेंट किए गए। इस प्रकार ऋषिकेश एवं हरिद्वार कनखल में आश्रम एवं गुरु घर की खूब जय-जयकार हुई। पुण्य तिथि के उपरान्त सिंधी संगत ने महंत महाराज जी के पवित्र चरणों में बम्बई आने के लिए प्रार्थना की। उधर हजूर को तो बड़ी सरकार कई मास पूर्व ही आदेश दे गई थी, बम्बई जाने के लिए। इसलिए आप जी ने सत्रह नवम्बर को बम्बई पहुँचने का वचन दे दिया। इस प्रकार दिए वचनानुसार देहरादून एक्सप्रेस गाड़ी में यात्रा करने के लिए पंद्रह नवम्बर की टिकटें निश्चित कर लीं। उससे पूर्व आपने लखनऊ एवं बनारस जाने का प्रोग्राम बनाया। उस बनाए प्रोग्राम के अनुसार महंत महाराज जी, संत जोध सिंह जी एवं संत छोटू बाबा जी को साथ लेकर रेलगाड़ी में यात्रा करने के द्वारा सिंधी माता लीला की प्रार्थना पर लखनऊ पहुँचे। यह माता लीला, चन्द्रा मद्रास वाली की बहन हैं। इस माता के घर ही आप जी को पता लगा कि संत देवा सिंह बमबई में शरीर त्याग गए हैं। बम्बई जाने के लिए आपकी पंद्रह तारीख की टिकट बुक ही थी इसलिए जल्दी से बनारस अपने आश्रम ज्ञानगुफा पहुंचकर दो दिन आश्रम की देखभाल की। उसके उपरान्त साधु समाज को पक्का भण्डारा करके वापिस ऋषिकेश आ गए। एक दो दिन आश्रम के कामकाज की देखभाल आदि प्रबन्ध करके संत जोध सिंह जी और संत छोटू बाबा जी को साथ लेकर पंद्रह अक्टूबर वाले दिन बम्बई जाने के लिए देहरादून एक्सप्रेस में सवार होकर सत्रह तारीख को प्रातः ही बम्बई जा पहुँचे। आगे से सिंधी संगत भी पर्याप्त संख्या में पुष्प हार आदि लेकर स्टेशन पर पहुँची हुई थी। सब संगत ने बड़े उत्साह के साथ आपके ऊपर पुष्प वर्षा करके और गले में फूलों के हार डालकर पूर्ण स्वागत के द्वारा अपनी भीतरी प्रसन्नता प्रकट की। उसके उपरान्त कारों द्वारा अपने निवास स्थान पर ले गए। वहाँ जाकर पता लगा कि संत देवा सिंह जी का भोग आज ही पड़ना है। जिस स्थान पर भोग पड़ना था, वहाँ के प्रबंधकों ने आप जी के चरणों में भोग पर पहुँचने के लिए प्रार्थना की। आप स्वीकार करके सेवकों के साथ कार में निश्चित समय पर भोग वाले स्थान पर पहुँच गए। आप जी की आज्ञानुसार भोग की रस्म पूर्ण की गई।

अब मोहिनी मनसुखानी और हीरानंद जी ने समस्त संगत को आपके साथ परिचय कराना आरम्भ किया। प्रेमी बड़े प्रेम के साथ प्रार्थना करके अपने-अपने घर ले जा रहे हैं और आप भी विरक्त महाराज जी की आज्ञानुसार जहाँ प्रत्येक जरूरतमंद को भोग-मोक्ष के वरदान मुक्त हस्त वितरित कर रहे हैं। वहाँ जाकर घर में सत्संग कीर्तन तो होता ही है, लेकिन आप कथा-प्रवचनों द्वारा भी अमृत वर्षा कर रहे हैं।

इस प्रकार समय व्यतीत होते एक दिन संगत ने प्रार्थना की, महाराज! यदि आपकी आज्ञा हो तो दशम पातशाह महाराज के पवित्र स्थान हज़ूर साहिब (नाँदेड़) के दर्शन करें। आपकी आज्ञानुसार संगत ने टिकटें बुक करा लीं। निश्चित दिन पर काफ़ी संगत को साथ लेकर आप सचखण्ड हज़ूर साहिब पहुँचे। कुछ दिन वहाँ ठहरकर सम्बन्धित सब स्थानों के दर्शन किए। फिर एक दिन समस्त संगत के साथ गुरु नानक देव जी के पवित्र स्थान झीरे के भी दर्शन किए। इस पवित्र स्थान नानक झीरे (बिदर) से ही श्री गुल चैनानी की बहन माता सुंदरी की प्रार्थना स्वीकार करके सिकंदराबाद पहुँचे। उस परिवार के प्रेम वश एक दिन सिंकदाबाद ठहरकर वापिस बम्बई आ गए। अब संगत ने शिरड़ी के साईं बाबा के स्थान पर जाने के लिए प्रार्थना की जो आपने संगत का प्रेम देखकर स्वीकार कर ली। शिरड़ी जान के लिए संगत ने प्रसन्न होकर एक स्पैशल बस किराए पर कर ली। समस्त संगत नक्षत्र-मण्डल के समान आपके आस-पास सुशोभित होकर शिरड़ी पहुँच गई। वहाँ रात्रि निवास के पश्चात् दर्शन आदि करके दूसरे दिन वापिस बम्बई में आ गए। श्री गुरु नानक देव महाराज और श्री गुरु गोबिन्द सिंह महाराज जी के जन्मोत्सव भी बड़ी धूमधाम से बम्बई ही मनाए गए। प्रतिदिन किसी न किसी घर में चरण डालते, संगत एकत्रित होती, सत्संग होता, आप कथा द्वारा अमृत वर्षा करके जीवों के सांसारिक पारमार्थिक शंकाओं की निवृत्ति करते, जरूरतमंदों को मनोवांछित वस्तुओं के वरदान प्रदान करते और एकत्रित हुई सभी संगत गुरु के लंगर से प्रसाद ग्रहण करती। इस प्रकार मातृ-लोक में बैकुण्ठ उतर आया है। एक दिन सिंधी माता चन्द्रा की प्रार्थना स्वीकार करके वायुयान द्वारा मद्रास पहुँचे। कुछ दिन वहाँ निवास करने के पश्चात् उसके घर में सत्संग किया। फिर एक दिन कार द्वारा त्रिपुतिबाला जी गए। इस प्रकार दक्षिण के स्थानों के दर्शन करके वायुयान के द्वारा वापिस बम्बई पहुँच गए। इस प्रकार पहली बार ही संगत के प्रेम के वशीभूत लगभग साढ़े तीन मास का समय बम्बई, मद्रास आदि स्थानों पर व्यतीत करके मार्च के आरम्भ में वापिस ऋषिकेश आ गए।

सन् 1984

सिंधी संगत को भरपूर प्रेम देते हुए बम्बई आदि स्थानों पर लगभग साढ़े तीन मास का समय व्यतीत कर सन् 1984 के आरम्भ में ही ऋषिकेश वापिस आ गए। अब पंजाबी संगत को भी प्रेम की सुगंधि प्रदान करनी आरम्भ की। सबसे पहले उजागर सिंह सूरी गोराया वालों की प्रार्थना स्वीकार करके गोराया पहुँचे। यहाँ संगत के प्रेमवश कई दिन कुटिया ठहरकर अखण्ड पाठों के भोग उपरान्त गुरु-शब्द की कथा द्वारा अमृत वर्षा करते रहे। सब संगत पारमार्थिक विचारों का लाभ उठाती रही और ज़रूरतमंद सज्जन गुरु के चल रहे खुले लंगरों में प्रसादे छककर तृप्त होते रहे।

कुछ दिनों पश्चात् आप जब वापिस ऋषिकेश आए तो कुलवंत सिंह (बड़ा) करनाल वालों की प्रार्थना स्वीकार करके शीघ्र ही ऋषिकेश से करनाल पहुँच गए। निवास तो चाहे कुटिया में ही रखा, लेकिन संगत प्रार्थना करके अपने-अपने घर ले जाने लगी। अब घरों में क्या जाते हैं? मानों हल चलाकर तैयार किए खेतों में प्रेम-बीज का छींटा देने जाते हैं। संगत भी विरक्त महाराज जी का साक्षात् रूप समझकर बड़ी श्रद्धा विश्वास के साथ चरणधूलि मस्तक को लगाकर अपना अहोभाग्य समझती है। इस प्रकार कुछ दिन करनाल ठहरकर प्रभु वर्षा करते रहे, फिर वापिस ऋषिकेश आ गए। जुलाई में फिर पुनः विरक्त महाराज जी की प्रथम पुण्य तिथि मनाने के निमित्त उजागर सिंह सूरी और समस्त संगत की प्रार्थना पर छोटू बाबा जी को साथ लेकर गोराया पहुँचे। गोराया निवासी संगत ने मिल-जुलकर बड़े उत्साह के साथ हज़ूर की प्रथम पुण्य तिथि मनाई।

इस समय पर तीन दिवस गुरु के लंगर के अटूट प्रवाह वितरित होते रहे। भोग उपरान्त बारादरी में खुला दीवान सजाया गया। रागियों के रसमयी कीर्तन के पश्चात् हजूर ने भोग के समय आए महावाक् की बहुत रसमयी और भाव-पूर्तित कथा की। उपरान्त गुरु का लंगर सायं तक अटूट प्रवाहित रहा। पुण्य तिथि पर एकत्रित विशेषत:, नाभा, खोख आदि स्थानों की संगत ने महंत महाराज जी को अपने गाँव ले जाने के लिए प्रार्थनाएँ कीं। हजूर बोले—अब तो करनाल जाना है फिर जब समय बना अवश्य आएँगे। संगत ने प्रार्थना की—महाराज! बाबा बेअंत सिंह जी की पुण्य तिथि के समय अधिक समय प्रदान करना। हजूर ने वचन दे दिया—ठीक है, उस समय सब संगत को मिलेंगे। उसके उपरांत करनाल पहुँच गए। वहाँ भी संगत ने बड़े उत्साह के साथ दर्शन आदि किए। कुछ दिन विरक्त महाराज जी की मधुर स्मृति में उनके पवित्र स्थान पर व्यतीत करके सब संगत को महाराज जी की स्मृति को जीवंत बनाकर वापिस ऋषिकेश आ गए। लगभग दो मास स्थानों की सेवा, संभाल की ओर ध्यान दिया। इतने में पुण्य तिथियों का समय समीप आ गया। इसलिए पुण्य तिथियों पर महापुरुषों की मधुर याद हेतु देश-विदेश में संगत को चिट्ठी पत्र द्वारा निमंत्रण भेजे गए। पुण्य तिथि समागम पर महापुरुषों की मधुर स्मृति और आध्यात्मिक लाभ उठाने के लिए स्थान की ओर से आए पत्रों को ईश्वरीय संदेश समझकर संगत बड़े उत्साहपूर्वक कनखल पहुँच गई। प्रथम पुण्य तिथि पर कनखल में श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ हो गए। प्रात:-सायं दीवान सत्संग होते हैं और संगत भी बड़े उत्साहपूर्वक सेवा कर रही है। दैवयोग से बीच वाले दिन सायं को जोरदार वर्षा और आँधी आ गई जिसके कारण पण्डाल गिर गए, संगत को बैठने खड़े होने आदि के लिए स्थान कम पड़ गया। वर्षा आँधी की अधिकता को देखकर ऐसा लग रहा है कि जैसे भोग के उपरान्त कल को होने वाले खुले पण्डाल वाले समागम में कठिनाई होगी, लेकिन परमेश्वर की कृपा हुई कि रात्रि में ही वर्षा होकर प्रात: सब ठीक हो गया। पूरे सजधज के साथ बाहर दीवान सजाए गए जो कि बिना किसी कठिनाई के भली-भाँति सम्पन्न हुए। ऐसे लग रहा है कि यह वर्षा पृथ्वी में पड़े किसी पुरातन बीज को अंकुरित करने के लिए आवश्यक नमी देने के लिए आवश्यक थी, क्योंकि बीज समय आने पर भी नमी के बिना अंकुरित नहीं होता।

दिल्ली, करनाल और पंजाब वाली संगत कनखल वाली पुण्य तिथि मनाकर वापिस चली गई जो कि दस दिनों के पश्चात् मनाई जा रही ऋषिकेश वाली पुण्य तिथि पर पुन: आई, लेकिन बम्बई, मद्रास आदि दूर की सिंधी संगत दोनों पुण्य तिथियों तक यहीं ठहरी रही। दोनों पुण्य तिथियों पर अखण्ड पाठ के साथ सेवा सत्संग के प्रवाह अटूट चलते रहे जिसमें सुखमनी साहिब के पाठ संगत मिलकर करती। फिर कीर्तन के उपरान्त संत समागम में बाहर से आए संत महात्मा, गुणीजन पारमार्थिक विचारों द्वारा कृतार्थ करते रहे। इस प्रकार महापुरुषों की मधुर याद मनाने के माध्यम से हज़ारों की गिनती में संगत ने सम्मिलित होकर मनुष्य जन्म की सफलता हेतु पारमार्थिक लाभ उठाया। उपरान्त सब संगत तन, मन और धन के साथ सेवा का बहुमूल्य लाभ उठाकर महापुरुषों के पावन कर कमलों द्वारा आशीर्वाद रूपी प्रसाद प्राप्त करके घर को लौट आई।

पुण्य तिथियों के समागम के पश्चात् सब संगत के विदा होने के पश्चात् कुछ दिन डेरे का साज सामान आदि संभाल कर कनखल डेरे में स्थान की कमी की ओर ध्यान गया, क्योंकि पुण्य तिथि समागम के बीच वर्षा के कारण संगत को जो कठिनाई हुई, आपके दयालु मन पर उसका गहरा प्रभाव पड़ा। विचार करके निर्णय लिया गया कि लंगर से लेकर दरबार साहिब तक खुला बरामदा बनाया जाए ताकि बड़े समागमों में खुले दीवान भी उसी में ही सजाए जा सकें और संगत लंगर

छकने का लाभ भी उठा सके। इस विचार को ध्यान में रखते हुए मिस्त्रियों को बुलाकर स्तम्भ आदि खोदने का कार्य आरम्भ कराकर अक्टूबर के अंत में संत जोध सिंह को साथ लेकर बनारस गए। वहाँ अपने स्थान के प्रबन्धक संत भरत सिंह जी को पहले ही सूचित किया हुआ था कि हम इस दिन अमुक गाड़ी से आ रहे हैं इसलिए संत भरत सिंह जी पहले ही स्टेशन पर पहुँचे हुए थे। स्थान पर पहुँचकर रात्रि व्यतीत की। प्रातः नगर के विशेष स्थानों के दर्शन आदि किए और संत महापुरुषों को मिलकर भण्डारे के लिए निमंत्रण दिए। सायं को पता लगा कि प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की हत्या हो गई है जिसके कारण दंगे फसाद आरम्भ हो गए और स्थान-स्थान को जलाना आदि आरम्भ हो गया। फलस्वरूप अनेक स्थानों पर कर्फ्यू लग गए। बनारस में भी कर्फ्यू के कारण जन-जीवन ठप्प हो गया और गाड़ियों में भी मार-धाड़, जलाना फूँकना आरम्भ हो गया जिसके कारण सरकार ने देशभर में गाड़ियाँ बंद कर दीं। सरकार ने अपने साधनों के माध्यम से यात्रियों को सूचित किया कि जिन लोगों ने सीटें बुक करवा रखी हैं, वे अपना आरक्षण बदलवा कर आगे करा सकते हैं। इधर आप जी की वापसी टिकटें भी चार नवम्बर की आरक्षित थीं, जो कि संत भरत सिंह जी ने चार नवम्बर की बजाए फिर दस नवम्बर को करा दीं। इस प्रकार अन्न-जल के वशीभूत एक सप्ताह और बनारस ठहरकर साधु महात्माओं को भण्डारा देकर दस नवम्बर को वापिस ऋषिकेश आ गए। जहाँ समस्त देश में जलाने फूँकने से हज़ारों व्यक्तियों के प्राण गए, हज़ारों श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के स्वरूप का अनादर हुआ और अरबों रुपयों की सम्पत्ति को हानि पहुँचाई गई। उधर ऋषिकेश हरिद्वार में अधर्मी लोगों ने गुरुघर से सम्बन्धित स्थानों एवं लोगों को व्यापक स्तर पर जलाया और फूँका, लेकिन श्री गुरु नानक देव महाराज जी की असीम कृपा के फलस्वरूप आपके स्थान निर्मल आश्रम ऋषिकेश और निर्मल बाग कनखल का बाल भी बाँका नहीं हुआ। लोगों के मन में अभी भी भय विद्यमान था। गुरु घर से सम्बद्ध लोग सोच रहे थे कि इधर और सम्पत्ति न खरीदी जाए, मकान आदि किसी भी कार्य पर धन व्यय न किया जाए, लेकिन इधर उसके हुक्म में लीन मौजी प्रीतम ने कनखल चल रहे बरामदे वाले कार्य को तेज़ करा दिया ताकि नवम्बर में ही लैंटर पड़ जाए। ऐसा ही किया गया। थोड़े दिनों में ही स्तम्भ उसार कर लैंटर की तैयारी कर ली। खोख वाली संगत ने पहले ही प्रार्थना करके वचन लिया हुआ था कि आपकी ओर से डाले जाने वाले प्रत्येक लैंटर सेवा हमें प्रदान करो। अतः निश्चित दिन पर खोख, कोटली, नाभा, लोपे आदि स्थानों की लैंटर सेवा में संगत ने पहुँचकर अपना हिस्सा डाला। इस प्रकार नवम्बर मास में लैंटर डालकर दिसम्बर के आरम्भ में बम्बई निवासी संगत की प्रार्थना स्वीकार करके बम्बई पहुँचे।

सन् 1985

लगभग ढाई मास संगत के प्रेम में वशीभूत बम्बई निवास किया। फिर फरवरी में वापिस आकर आश्रम के कार्यों की ओर कुछ ध्यान दिया। आश्रम में प्रयोग आने वाले जल की सुविधा के लिए सराए वाले आँगन में एक बड़ा टैंक बनवाया। क्षेत्र वाले आँगन में ईंटों का पुराना फर्श उखाड़कर मारबॅल लगवाया और दरबार साहिब के स्थान अन्दर-बाहर से मुरम्मत कराकर जाली वाले नए दरवाज़े लगाए गए। उधर बाबा नानक की असीम कृपा हुई, अब लंगर में और निखार आ गया। अब से पूर्व प्रातः के क्षेत्र में साधु एवं निर्धन ज़रूरतमंदों को चाय के साथ ब्रैड दी जाती थी, क्योंकि आश्रम के पूर्वजों की ओर से यह दृढ़ विश्वास चला आ रहा था कि जो राशन अथवा पदार्थ गुरु नानक साहिब भेज रहे हैं, वह ज़रूरतमंदों के साथ बाँटकर छक लेने हैं और एकत्रित नहीं करना है अर्थात् पास आए को रखना नहीं, न आए की आशा नहीं रखनी। उस प्रभु

की रज़ा में राज़ी रहना है। इसलिए रंच मात्र भी किसी वस्तु की किसी दूसरे से माँग नहीं करनी, गुरु नानक का अपना आश्रम है जैसे चाहे चलाएँ। साधु, निर्धन ज़रूरतमंदों की प्रारब्ध अनुसार परमेश्वर छत्तीस प्रकार के पदार्थ भेजे, पकाकर वितरित कर देंगे। न भेजे तो बर्तन उलटे कर देंगे। अब गुरु नानक ने अपने अनुरागियों की संसार में यश कीर्ति का डंका बजाने के लिए निर्धन ज़रूरतमंदों पर दया कर 'खोख' जैसे गुरु कृपा से उपकृत दानी गाँव को आन्तरिक प्रेरणा करके गेहूँ के ट्रक भेजने आरम्भ कर दिए। दूसरी कठिनाई थी भोजन बनाने वालों की, उसका भी परमेश्वर ने समाधान कर दिया, क्योंकि विरक्त महाराज जी की कृपा और महंत महाराज जी के प्रेम से प्रेरित पंजाबी संगत का भी भारी संख्या में आना-जाना आरम्भ हो गया। अब प्रात: बजाए ब्रैड-चाय के गर्म-गर्म चाय और दाल-प्रसादे तो आरम्भ हो ही गए, लेकिन सप्ताह में एक-दो बार कुछ मिष्ठान अथवा नमकीन पदार्थ भी वितरित करने आरम्भ हो गए। कनखल गाँव में गायें तो चाहे पहले भी थीं, लेकिन संगत की संख्या में वृद्धि को देखकर दूध की अधिकता के लिए श्रेष्ठ नस्ल की गायें और खरीद ली गईं। इस प्रकार निर्मल आश्रम रूपी बाग जो पचासी वर्ष पूर्व लगाया गया था सन् 1985 में बसंत ऋतु के समय प्रफुल्लित होना आरम्भ हो गया। गहन दृष्टि से देखने पर इस प्रकार प्रतीत हो रहा है कि नए अलौकिक माली और उसके सहायक मण्डल की सूझ-बूझ के परिणामस्वरूप यह उद्यान शीघ्र ही सुगंधि, पराग, सुंदरता, छाया और मधुर फल मुक्त रूप से वितरित करने आरम्भ कर देगा और जीव रूपी पक्षी, भ्रमर, सांसारिक कष्टों से दु:खी यहाँ आकर शान्ति एवं तृप्ति प्राप्त करेंगे। इस प्रकार अधिक समय इस वर्ष आश्रम में ही व्यतीत किया। कुछ अनुरागियों की प्रार्थना पर थोड़ा बाहर गए, लेकिन अधिक समय यहीं रहे। वर्ष के अन्त में प्रत्येक वर्ष की भाँति बम्बई निवासी संगत की प्रार्थना स्वीकार करके बम्बई पहुँचे।

मनीकरन की यात्रा

सरदार गुरुनाम सिंह खोख काफी समय से अखंड साहिब के पाठ कराकर बसंत पंचमी का वार्षिक समागम अपने घर मनाते आ रहे हैं। पहले विरक्त महाराज जी भी इस अनुरागी परिवार की प्रार्थना स्वीकार करके इस वार्षिक समागम में प्राय: आते रहते थे। अब उनके साक्षात् स्वरूप महंत बाबा राम सिंह महाराज जी भी यदि बम्बई न गए हों तो अनुरागी परिवार का निवेदन स्वीकार करके दर्शन प्रदान करते हैं।

इस वर्ष अर्थात् 1986 ई० में तेरह फरवरी की बसंत पंचमी है और उसी दिन गुरुनाम सिंह के छोटे लड़के गुरचरण सिंह का विवाह सरदार अजैब सिंह बाबरपुर वाले की लड़की से होना निश्चित हुआ है। अनुरागी परिवार ने हजूर के चरणों में प्रार्थना की महाराज कृपा करो—घर में दो समागम हैं आप कृपा करो—आपके चरण स्पर्श से सफल हो जाएँगे। हजूर ने स्वीकृति दे दी। परिवार के सदस्य बारह फरवरी को आपको ऋषिकेश से ले आए और तेरह तारीख बसंत पंचमी के दिन प्रात: गुरनाम सिंह के घर श्री अखंड पाठ साहिब के भोग उपरान्त बारात बाबरपुर पहुँच गई और हजूर भी छोटू बाबा सहित एक कार में जा पधारे। आगे अजैब सिंह ने आप जी के बैठने के लिए एक अलग मकान में प्रबन्ध किया हुआ था, वहाँ सुशोभित किया गया। आनंद कारज की रस्म पूर्ण होने पर आप जी ने हुक्मनामे की व्याख्या सहित कथा की। उसके उपरान्त आप तो तुरंत खोख वापिस आ गए, लेकिन बारात सायं को वापिस आई।

दूसरे दिन अर्थात् चौदह फरवरी को गुरनाम सिंह ने प्रार्थना की महाराज! मनीकरन बहुत सुन्दर स्थान है। उसके प्रबन्धक भी बहुत अच्छे महापुरुष हैं। आपकी आज्ञा हो तो कल वहाँ के दर्शन करें। उस समय उजागर सिंह सूरी और सतनाम सिंह गोराया वाले भी चरणों में बैठे थे। उन्होंने भी निवेदन किया—महाराज कृपा करो। आप मनीकरन चलो तो हम भी आप जी

के साथ दर्शन कर आएँगे। भूत भविष्य के ज्ञाता ज्ञेय दाता ने सम्भवत: यह सोचकर कि किसी एक का भी स्नान हो जाए तो अच्छा ही है—स्वीकृति दे दी। दूसरे दिन पंद्रह फरवरी 1986 वाले दिन प्रात: ही दो कारें तैयार हो गईं। एक कार में महाराज और छोटू जी और एक दो और प्रेमी साथ बैठ गए। दूसरी जत्थेदार नछत्तर सिंह ने आज्ञा लेकर अपनी जीप तैयार कर ली कि हम कीरतपुर से वापिस आ जाएँगे। प्रात: ही चलकर फतेहगढ़ साहिब पहुँचे। यहाँ दर्शन आदि करने के पश्चात् बाबा हरबंस सिंह कार सेवा वालों के डेरे लंगर आदि ग्रहण किया। उस दिन किसी कारणवश बाबा हरबंस जी भी आए हुए थे और उसी समय जत्थेदार गुरचरण सिंह तोहड़ा जी भी आ पहुँचे। तीनों महान् विभूतियाँ लगभग एक घंटे तक बैठकर प्रेमपूर्वक वार्तालाप करती रहीं और फिर आगे को प्रस्थान किया। रोपड़ पहुँचकर गुरुद्वारा भट्ठा साहिब के दर्शन आदि किए। यहाँ मुंशीराम यमुनानगर वालों की बेटी और संत गोपाल सिंह जी की भानजी बीबी स्वर्ण कौर मिली। उसने निवेदन किया महाराज हम यहाँ समीप ही पावन हाऊस कालोनी में रहते हैं, कृपा करो हमारे घर में चरण डालो। हजूर ने आज्ञा की अब तो आगे जाना है वापसी पर आ जाएँगे। इतने में गोराया वाले भी आ गए। इस प्रकार भट्ठा साहिब के दर्शन आदि करके और बीबी स्वर्ण कौर को वापसी पर आने का वचन देकर आगे प्रस्थान किया। अब तीनों गाड़ियाँ धीरे-धीरे यात्रा करती जा पहुँची कीरतपुर साहिब। यहाँ गुरुद्वारा साहिब पातालपुरी के दर्शन करके चाय-पान किया। उसके उपरान्त जत्थेदार नछत्तर सिंह, गुरनाम सिंह आदि जीप वाले सभी सज्जन वापिस आ गए। अब दो कारें आगे को चल पड़ीं—पूज्य महाराज जी, छोटू बाबा जी, करम सिंह खोख, गुरमीत सिंह खोख और शायद एक अनुरागी और भी था। दूसरी कार में उजागर सिंह सूरी और उनके परिवार से माता जी, सरदार सतनाम सिंह और उनके परिवार से माता शरणजीत कौर और पाँचवां ड्राइवर इस प्रकार दोनों गाड़ियाँ अलौकिक प्रीतम सहित पाँच-पाँच व्यक्ति बिठाकर **''पंच परवान पंच परधान''** का ईश्वरीय नाद करते चल पड़ीं कुल्लू की ओर। लगभग ढाई-तीन घंटे की यात्रा के उपरान्त थोड़ा अंधेरा होने तक सुंदर नगर पहुँच गए। वहाँ हजूर का एक सेवक डॉ० हरबंस लाल बावा दन्त चिकित्सक का काम करता था। उसकी दुकान पर पहुँचे। आगे वह प्रेमी दुकान का दरवाज़ा बंद किए भीतर बैठा काम कर रहा था। अचानक आए देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। रात्रि भर पूर्ण प्रेम से सेवा में जुटा रहा। प्रात: वहाँ से चलकर नहर चौक पहुँचे। वहाँ हजूर का एक सेवक सुखदर्शन सिंह धनौला बैंक में नौकरी करता था, उसको मिलकर आगे को चले। आगे दशम् पातशाह महाराज जी की चरणधूलि के साथ पवित्र हुए रिवालसर और सकेत मण्डी आदि पावन स्थानों के दर्शन आदि करते हुए सायं को मनीकरन जा पहुँचे। वहाँ के प्रबंधकों को जब पता लगा कि आप ऋषिकेश से निर्मल आश्रम के महंत हैं तो उन्होंने बहुत प्रसन्न होकर प्रफुल्लित मन से आप जी का सम्मान सत्कार किया। एक साफ कमरे में आप जी और छोटू बाबा जी को सुंदर बिस्तर बिछाकर आसन लगवाए और दो कमरे साथ में आई संगत के लिए खोल दिए। बाहर वर्षा की बूंदा-बांदी हो रही है और स्थान के चारों ओर वृक्षों पर बर्फ इस प्रकार जमी है जैसे वृक्ष श्वेत रुई से लदे पड़े हों। लंगर पानी लेकर हजूर ने अपने कमरे में पोथी पढ़ानी आरम्भ की जो सम्भवत: गुरुवाणी का फरीदकोटी टीका था। रात्रि के लगभग दस बजे तक सत्संग चलता रहा। फिर आज्ञा की—अपने-अपने कमरे में जाकर आराम करें, तो अनुरागी जाकर आराम से सो गए। एक प्रेमी की प्रात: लगभग तीन बजे आँख खुली। अपने बिस्तर में रजाई लपेटे पड़े उसके मन में एक विचार बड़ी तेजी के साथ आना आरम्भ हुआ कि अब मैं उठकर स्नान करके पहले दरबार साहिब में नमस्कार करूँ जो कि ऊपर वाली मंजिल में है अथवा महाराज जी के दर्शन करूँजो कि इसी मंजिल में दो कमरे पीछे विराजमान हैं। फिर मन को आज्ञा देता है कि चल पहले स्नान करें फिर और सोचेंगे, लेकिन मन को सम्भवत: कोई अज्ञात शक्ति बार-बार परीक्षा में डाल रही है

कि स्नान करके पहले किसके दर्शन करें। विरक्त महाराज जी पर इसको पूर्ण निष्ठा थी कि पूर्ण ज्ञानवान् परमेश्वर रूप हैं उनके शरीर छोड़ जाने के पश्चात् यह तो समझता था कि महंत महाराज जी को अपना रूप बना गए हैं, लेकिन फिर भी विश्वास रूपी फल पर कभी-कभी शंका रूपी शुकनि (तोता) चोंच मारकर दागी कर जाता था। आज सम्भवत: दैवयोग से शंकाएँ एवं शंकाओं रूपी तोतों को सदा के लिए उड़ाने का खेल खेला जा रहा है। मन बार-बार स्नान के लिए सशक्त होकर उठने का प्रयत्न करता है, लेकिन फिर वही संकल्प कि पहले किसके दर्शन करें। अंतत: सशक्त होकर निर्णय ले ही लिया कि चल पहले स्नान करें फिर कुछ सोचेंगे। हाथ में कच्छा एवं परना पकड़ा कम्बल लपेटा जब कमरे का द्वार खोला आगे महंत महाराज जी छोटू बाबा जी को साथ लेकर द्वार के सम्मुख आ गए। आज्ञा की—चल स्नान करें। उसी समय अनुरागी चकित होकर सोच रहा है कि आधे घंटे से मन में चल रहा द्वन्द्व क्या तोता उड़ाने के लिए था? हजूर के चरणों पर गिर कर प्रार्थना की कि महाराज भीतरी स्नान तो हो गया बाह्य अब कर लेते हैं। इस प्रकार दो रात उस पवित्र स्थान पर रहकर जिस अज्ञात कार्य के लिए इतनी लम्बी यात्रा करके गए थे उसको पूर्ण करके अर्थात् किसी प्रेमी को तीर्थ स्नान कराकर प्रात: वापसी के लिए प्रस्थान किया। बीबी स्वर्ण कौर नागपाल रोपड़ को दिए वचनानुसार सायं को उसके घर रोपड़ पहुँचे। चाय-पान करने के पश्चात् परिवार को कुछ प्रेम-कण देकर थोड़ा अंधेरा होने से पूर्व खोख वापिस पहुँच गए।

1986 का कुंभ मेला और अस्पताल का शिलान्यास

1986 का कुंभ मेला आरम्भ होने पर दूर समीप लाखों की संख्या में श्रद्धालु यात्री दिन-रात ऋषिकेश को आ रहे हैं। इधर निर्मल आश्रम भी अपना छियासीवां जन्मदिन बड़े सजधज के साथ मनाने की तैयारी कर रहा है। चाहे आज से पच्चासी वर्ष पूर्व इससे शरीर धारण पर-उपकार के लिए ही किया था, लेकिन इस वर्ष इसने अपने जन्मदिन पर ज़रूरतमंदों को और सुख-सुविधाएँ देने का दृढ़ संकल्प किया। पर-उपकारी रूपी दुकान इसने ऐसे स्थान पर खोली है जहाँ हजारों की संख्या में ज़रूरतमंद ग्राहक हैं और तुलना में और दुकानें भी बहुत कम हैं। यदि कुछ दो चार हैं भी तो उनके पास वस्तुएँ बेचने की समर्थता बहुत कम है, इसलिए गर्म-गर्म चाय और लंगर-प्रसादे आदि वस्तुएँ तो यह जरूरतमंदों को प्रतिदिन जुटा रहा है और समय-समय पर ज़रूरतमंदों को वस्त्र, जूते आदि भी वितरित करता रहता है, लेकिन अब छियासीवें जन्मदिवस पर ज़रूरतमंदों को औषधियों का क्षेत्र अर्थात् अस्पताल खोलने का पक्का इरादा कर लिया। यह विवाह कार्य को सम्मुख रखते हुए सम्बद्ध सगे-सम्बन्धियों को पत्र द्वारा सूचित किया गया और अपने शरीके कबीला के भाईचारे को भी निमंत्रण पत्र के द्वारा निवेदन किया गया कि सोलह अप्रैल को निर्मल आश्रम अस्पताल का शिलान्यास है इसलिए आप सब संत महात्मा और गृहस्थी प्रेमियों ने उस समय पहुँच कर दर्शन देने की कृपा करना।

अब कुंभ उत्सव समीप आ गया इसलिए उसमें सम्मिलित होने के लिए पूज्य महंत महाराज जी, संत जोध सिंह जी और संत छोटू बाबा जी आदि सम्बन्धित संगत को साथ लेकर हरिद्वार पहुँच गए। सब सम्प्रदायों की ओर से यथाशक्ति तैयारी की गई और निर्मल पंचायती अखाड़ा की ओर से निर्मल छावनी में धर्म ध्वजा अर्थात् निशान साहिब खड़ा करके उस सम्मुख हर प्रकार की तैयारी की हुई है। निर्मल सम्प्रदाय के साधु-महात्मा देशभर से पहुँचे हुए हैं। वैशाखी वाले दिन प्रत्येक सम्प्रदाय की ओर से बड़े सजधज के साथ अर्थात् जुलूस (नगर कीर्तन) निकाले जाते हैं। वैशाखी से एक दिन पूर्व निर्मल सम्प्रदाय

की ओर से धर्म ध्वजा की पूजा की गई जिसमें सबसे बड़ा योगदान निर्मल आश्रम की ओर से ही डाला गया और अखाड़ा के श्री महंत जी की पूजा में भी आश्रम का हिस्सा सबसे अधिक था। दूसरे दिन निर्मल पंचायती अखाड़ा की ओर से सम्प्रदाय में प्रतिभावान् और प्रतिष्ठित महापुरुषों के लिए पालकियों का प्रबन्ध किया गया था। दूसरे दिन निर्मल पंचायती अखाड़ा की ओर से जुलूस की तैयारी की गई। उस सब तैयारी की जिम्मेदारी अखाड़ा की ओर से ही होती है। श्री महंत साहिब के लिए पालकी बहुत सुन्दर सजाई गई थी। उसके दूसरे नम्बर पर महंत महाराज राम जी के लिए भी बहुत सुन्दर ढंग से पालकी सजाई गई। शेष अन्य भी कई प्रतिष्ठित महात्माओं के लिए पालकियाँ बनाई गई थीं, लेकिन पहली दो की सुन्दरता शेष की तुलना में विलक्षण थी। सबसे आगे साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब महाराज जी स्वर्ण की पालकी में सुशोभित हैं, जो किसी समय निर्मल आश्रम की ओर से ही बनवा के अखाड़ा को भेंट की गई थी। उसके बाद अखाड़ा के पूजनीय श्री महंत साहिब और तीसरे नम्बर पर निर्मल आश्रम के महंत राम सिंह जी महाराज फिर पीछे क्रमानुसार निर्मल सम्प्रदाय के अन्य प्रतिष्ठित महात्मा। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की ताबिया पंडित गुरदीप सिंह जी केसरी बनारस वाले सुशोभित थे। जुलूस प्रातः दस बजे घास मंडी ज्वालापुर से आरम्भ होकर कनखल एवं हरिद्वार के बाज़ारों में होता हुआ रात्रि के दस बजे अर्थात् बारह घंटों में निर्मल छावनी पहुँचकर समाप्त हुआ। कुम्भ का उत्सव आरम्भ होने पर निर्मल छावनी में निर्मल पंचायती अखाड़ा की ओर से प्रतिदिन खुला लंगर चलता रहता है और प्रतिदिन कथा कीर्तन सत्संग के प्रवाह भी चलते रहते हैं। उस लंगर के चल रहे प्रवाह में एक दिन का यज्ञ महंत राम सिंह जी की ओर से किया गया और एक दिन अमरीक चन्द चावला की ओर से भी हुआ।

इस प्रकार 1986 के कुंभ उत्सव की समाप्ति करके परसों को हो रहे निर्मल आश्रम अस्पताल के शिलान्यास के लिए कई साधु महात्माओं को निमंत्रण पत्र देकर वापिस ऋषिकेश आ गए। वैशाखी वाले दिन आश्रम में श्री अखण्ड साहिब पाठ आरम्भ किया गया और तीसरे दिन अर्थात् सोलह अप्रैल वाले दिन अखण्ड पाठ साहिब के भोग उपरान्त श्री गुरु नानक देव महाराज जी के पवित्र चरणों में अरदास करके सैकड़ों सिंधी पंजाबी गृहस्थी भक्तों एवं संत महापुरुषों की उपस्थिति में इस निर्मल आश्रम अस्पताल रूपी पर-उपकारी की नींव रखी गई। इस प्रकार महान् कार्य के लिए सर्वप्रथम निर्मल आश्रम पंचायती अखाड़ा के पूजनीय श्री महंत साहिब, श्रीमान महंत बलवीर सिंह जी शास्त्री, अखाड़ा के सचिव उत्तम सिंह जी और कुठारी सन्त सुरमुख सिंह जी, महंत त्रिलोक सिंह जी हरिद्वार, सन्त बिशन सिंह जी करीट हरिद्वार, पंडित हकीकत सिंह जी अरबिंद, पंडित निहाल सिंह जी हरिद्वार, महंत गुरबचन सिंह जी बरनाला वाले, सन्त महेन्द्र सिंह जी बरनाला वाले, सन्त पूर्ण हरी जी बैलपड़ा, महंत भगत सिंह जी मुरादाबाद, सन्त निरंजन सिंह जी अमृतसर, महंत मंजीत सिंह जी अमृतसर, महंत दर्शन सिंह जी त्यागमूर्ति देवपुरा आश्रम, हरिद्वार आदि महापुरुष सम्मिलित हुए। सब महापुरुषों ने पर-उपकार के महान् कार्य की सफलता के लिए कामना की। उसके उपरांत गुरु के लंगर से पक्का भंडारा वितरित किया गया है। इस प्रकार कुंभ का महान् उत्सव और अस्पताल शिलान्यास समागम पूर्ण हुआ।

सन 1986 ई० के कुंभ उत्सव के समय महंत बाबा राम सिंह जी महाराज अपनी संत मण्डली सहित शाही जलुस में सुशोभित

गाँव कुतबनपुर में गुरुवाणी का बीज

सेवा सिंह सरपंच डबरी वालों की भाई जरनैल सिंह कुतबनपुर वालों के साथ निजी रिश्तेदारी है। यह सज्जन जरनैल सिंह डबरी वालों की प्रेरणा से विरक्त महाराज जी की निष्ठा-भावना से दर्शन करता रहा है। उनके सचखण्ड प्रयाण के उपरांत महंत महाराज राम सिंह जी को उनका साक्षात् रूप समझकर उसी प्रकार श्रद्धा विश्वास रखता है, लेकिन जरनैल सिंह के परिवार के बिना इस गाँव के लोगों में गुरुवाणी का बहुत प्रभाव नहीं है और न ही गुरुवाणी के गहन रहस्यों के ज्ञाता महापुरुषों की महिमा से परिचित हैं।

एक बार का वर्णन है कि जरनैल सिंह ने हजूर से तारीख लेकर अपने घर श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ कराया। भोग से एक दिन पूर्व महाराज जी दिए वचनानुसार सन्त बाबा जोध सिंह जी और सेवादार चरनजीत सिंह को साथ लेकर कुतबनपुर पहुँच गए। दूसरे दिन भोग के उपरान्त बाहर आँगन में खुला पण्डाल लगा कर दीवान सजाने की तैयारी की जा रही थी। इसमें कीर्तन के पश्चात् हजूर ने मुख्य वाक् की कथा करनी थी। अभी देरी जानकर हजूर थोड़ा टहलने के भाव से संत जोध सिंह जी एवं चरनजीत सिंह को साथ लेकर खेतों की ओर चल पड़े। धीरे-धीरे अपनी मौज में गाँव से काफी दूर निकल गए। जब वापिस जाने लगे तो गाँव की ओर से चार-पाँच व्यक्ति समीप आ गए जिसमें एक दर्शन सिंह सरपंच थे। नमस्कार करके हजूर के चरणों में अर्ज़ की महाराज हमारे खेतों के सामने एक ऐसा स्थान है जहाँ कोई गुप्त आत्मा रहती है, उस स्थान पर खड़े वृक्ष को उखाड़ने की बात ही क्या, वहाँ हम एक दातून भी नहीं तोड़ सकते। वहाँ से डर कर हम उस के समीप नहीं जाते, लेकिन फिर भी कभी-कभार ट्रैक्टर उलट गया और कभी कोई अन्य हानि हो जाती है। आप कृपा करो अब समीप ही आए हो, हमें उस आत्मा से मुक्त कराओ। हजूर अपनी मौज में खड़े मुस्करा रहे हैं, लेकिन वे लोग बेचारे खड़े प्रार्थना किए जा रहे हैं। अतंत: निवेदन स्वीकार करके उस डरावने स्थान पर पहुँच गए। खेत के मध्य में आए ज़मीन से थोड़ा ऊँचा एक थड़े के समान बेकार जगह पड़ी है। इस पर कुछ वृक्ष अभी भी खड़े हैं। उन वृक्षों की कुछ शाखाएँ टूट कर नीचे गिरी पड़ी हैं, लेकिन भय के वश कोई हाथ नहीं लगा रहा। न तो समीप कोई व्यक्ति जाता है और न पशुओं को जाने दिया जाता है। प्रेमी बता रहे हैं कि एक आध बार कोई भैंस आदि घास चरने के लालच में समीप गई तो हानि ही हुई। आस-पास खेतों में हल चलाते यदि कभी ट्रैक्टर समीप लगा तो वह भी उलट गया। हम भय के कारण उस स्थान के समीप न पशुओं को जाने देते हैं और न ही स्वयं जाते हैं। आप कृपा करो उस आत्मा से हमारी रक्षा करो। हजूर मुस्कराते हुए संत जोध सिंह को बोले इन बेचारों को कोई मार्ग बताओ। संत जोध सिंह जी बोले आप समर्थ हो जैसे चाहो भला कर सकते हो, लेकिन फिर भी यदि विचार द्वारा देखें तो नाम से बड़ा कल्याणकारी मंत्र जीवों के लिए और कोई नहीं है, इसलिए ये बेचारे आप जी की शरण में आए हैं, इनका दु:ख दूर करो। हजूर बोले-ठीक है, यहाँ शामियाना आदि लगा लो। रात्रि को यहाँ बैठ कर नाम जपो आपका भी भला, जिस से भयभीत हो उसका भी भला। वचन करके वापिस जरनैल सिंह के घर आ गए। बाहर खुले पण्डाल में कीर्तन हो रहा था। उसके उपरान्त हजूर ने मुख्य वाक् की मर्मस्पर्शी कथा की। लंगर के बाद कुछ आराम करके सायं को प्रात: वाले स्थान पर पहुँच गए। आगे से प्रेमियों ने शामियाने आदि लगा कर सारी तैयारी कर रखी थी। आज्ञानुसार देसी घी की ज्योति जगा ली गई। प्रेमियों ने श्री गुरु नानक साहिब तथा विरक्त महाराज जी की ही फोटो सजाकर सामने रख ली। उपरान्त अरदास करके मूल मंत्र का पाठ आरम्भ कर दिया। हजूर उसी स्थान पर शामियाने में शोभायमान हो गए जिस से आज तक ये प्रेमी भय खाते थे। पूरी रात्रि को मूलमंत्र का पाठ निरंतर होता रहा। प्रात: कड़ाह प्रसाद की देग सजाकर अरदास उपरान्त

समाप्ति की गई। इस प्रकार दिसम्बर की ज़ोरदार सर्दी में एक पूरी रात हरि नाम का निरंतर जाप करके प्रेमी परिवार का भय दूर कर दिया।

शंका— यह कार्य तो कृपा दृष्टि के साथ भी किया जा सकता था। चरण स्पर्श मात्र से ही भयदायक सृष्टि लुप्त हो सकती थी फिर पूरी रात उस स्थान पर बैठकर हरि नाम का जाप करना, इसके पीछे क्या रहस्य है?

उत्तर— पूरा-पूरा तो भूत-भविष्य के ज्ञाता दाता स्वयं ही जानते हैं, लेकिन बुद्धि से सोचने पर कुछ इस प्रकार समझ पड़ता है कि कल्लर युक्त भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए सम्भवतः इतना परिश्रम तो आवश्यक था, क्योंकि किसी बेकार पड़ी भूमि को हल चला, सँवार और सिंचाई आदि के पश्चात् उपयुक्त नमी में लाकर कोई बहुमूल्य बीज बीजने के लिए इतना समय और श्रम की शायद आवश्यकता ही थी, परन्तु फिर भी बीज के अंकुरित होने तक समय की प्रतीक्षा करें।

भाग्यशाली बेरियाँ

कड़ाके की ठंड पड़ रही है। ठण्ड और तुषार पड़ने के कारण कमल-उद्यान सब इस प्रकार नष्ट हो गए जैसे कुसंगी पुरुष का सब यश नष्ट हो जाता है। ठंड से बचाव के लिए निर्धन व्यक्ति अग्नि देवता का सेवन इस प्रकार करते हैं जैसे धन की इच्छा वाला पुरुष, राजा अथवा धनी लोगों के पास रहकर उनकी खुशामद करता है। सर्दी के कारण सूर्य का तेज इस प्रकार मंदा पड़ा गया है जैसे आलस्यपूर्ण राजा का तेज कम हो जाता है। सूर्य का तेज मंद पड़ने के कारण ज़ोरदार सर्दी लोगों एवं पशु-पक्षियों को इस प्रकार सताने लगी जैसे किसी राजा का तेज नष्ट होने के कारण अफसर रिश्वतखोर एवं अन्यायी हो जाते हैं। तब चोर, डाकू, ठग आदि लोग प्रजा को दुःख देने लग जाते हैं। कड़ाके की ठंड पड़ रही है इसलिए बड़ी एवं ठंडी रातों में लोग रजाइयाँ लेकर इस प्रकार ठंड दूर कर रहे हैं जैसे सतगुरु की शरण और चरण धूलि प्राप्त करके शिष्य सांसारिक दुःखों को दूर करता है। इस ऋतु में धूप इस प्रकार अच्छी लगती है जैसे विचारवान् पुरुष को सत्संग अच्छा लगता है। निर्धन व्यक्तियों को सर्दी इस प्रकार सता रही है जैसे सतगुरु की रक्षा के बिना जिज्ञासुओं को विकार सताते हैं। इस प्रकार की तेज सर्दी में देखो आज अलौकिक दाता क्या लीला कर रहे हैं। कुतबनपुर की भूमि में गुरुवाणी एवं सेवा का बीज बो करके अपने देवगुणों सहित आज आ पहुँचे अपने स्थान करनाल कुटिया। नानक दरबार में नमस्कार कर स्थान से बाहर बेरी के नीचे आसन लगा लिया, साथ ही संत जोधसिंह और भाई चरनजीत सिंह हैं। बिस्तरे भाई कुलवंत सिंह मिस्त्री ने अपने घर से मंगाकर बिछा दिए। इतने में संगत का आना-जाना आरम्भ हो गया। सायं को वहीं संगत से सुखमनी का पाठ कराकर सत्संग किया। उपरांत गुरु के लंगर का प्रसाद छकाकर संगत को घर को रवाना कर दिया, लेकिन आपने-अपने दोनों सहयोगियों के साथ बर्फ के समान ठंडी रात उस बेरी के नीचे ही व्यतीत कर दी। प्रातः दो ढ़ाई बजे उठकर जी०टी० रोड की ओर भ्रमण करने के लिए गए। उधर खेतों में शौच आदि की क्रिया करके बाई पास ऊपर नगर को मुड़ने वाली सड़क के कोने में लगे हाथ के नलके पर स्नान किया और फिर अपने आसन पर आकर प्यारे की याद में लीन हो गए। प्रातः चाय-पान आदि किया। इतने में संगत का आना-जाना आरम्भ हो गया। थोड़े समय तक फरीदकोटी टीके की पोथी पढ़ाकर सत्संग किया फिर किसी अनुरागी के घर अखण्ड पाठ साहिब के भोग पर पहुँचे। भोग के उपरान्त ईश्वरीय हुक्मनामे की रसयुक्त कथा की, उपरांत फिर कुछ प्रेमियों की प्रार्थना पर उनके घर पदार्पण किया। सायं को फिर अपने वही शाही महल बेरियों के नीचे आ पहुँचे। इतने में संगत भी पहुँचनी आरम्भ हो गई। सुखमनी साहिब का पाठ कीर्तन किसी पोथी की विचार

आदि सत्संग के समागम होने लगे। समाप्ति उपरान्त भगत लॅभामल की धर्मपत्नी माता करतार कौर ने प्रार्थना की महाराज सर्दी बहुत है। आप कृपा करो भीतर किसी बरामदे में आसन लगा लो। माता की बात सुनकर हजूर मुस्कुरा रहे हैं मानों कह रहे हैं माता! हुक्म रूपी दुर्ग के भीतर सर्दी का नामो निशान नहीं। माता—फिर निवेदन कर रही है, महाराज! वह देखो! बेरियों के ऊपर शहद की मक्खियों के दो छत्ते लगे हुए हैं वे भी उठकर हानि कर सकती हैं। अलौकिक प्रीतम फिर मुस्कुरा कर मधुर-मधुर स्वर में पढ़ रहे हैं—**हुक्मै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोई॥**

इस प्रकार संगत को प्रेम-प्यार का प्रसाद वितरित करके घर को विदा कर दिया। आप फिर उसी शीश महल में विराजमान हो गए। प्रातः फिर कल की तरह खेतों की ओर क्रिया, बाई पास वाले पम्प पर स्नान उपरान्त अपने आसन पर प्रीतम की स्मृति में लीन। प्रातः संगत का भारी जमाव, सत्संग-समागम दिन को दो तिथियों के अनुसार किसी न किसी प्रेमी के घर अखण्ड पाठ साहिब के भोग, आपके हृदय में स्थित परमेश्वर की ज्योति में भीग-भीगकर निकले ईश्वरीय वचनों की अमृत वर्षा, रात्रि को हरि रूपी संगत में हरि के पावन देश की बातें, इस प्रकार दस दिन व्यतीत कर दिए बेरियों के नीचे। संगत चकित होकर सोच रही है कि क्या कारण है, लोक-परलोक के स्वामी जिसके एक-एक रोम में कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड छिपे हैं, इतनी कड़ाके की ठण्ड में दस दिवस हो गए बेरियों के नीचे बैठे ही। न किसी के शरीर पर सर्दी का प्रभाव न चेहरे पर उदासी के चिह्न, न किसी के प्रति कोई शिकवा, गिला। चेहरों पर वही दस दिन पूर्व की आभा, वही नूर, मस्तक पर सच्ची खुशी की झलक, प्रत्येक दृष्टि से प्रसन्नचित्त नजर आ रहे हैं, दूसरा अनुरागी बोला—पूरा-पूरा तो वे स्वयं ही जाने, लेकिन प्रतीत कुछ इस प्रकार हो रहा है जैसे फकीरी की शिक्षा दे रहे हों। कोई विशेष प्रकार के वस्त्र धारण कर लेने, शास्त्र पढ़ लेना अथवा पढ़ाना भले ही अपने स्थान पर ठीक हो लेकिन फकीरों के साथ इन बातों का कोई दूर का भी रिश्ता नहीं। फकीरी तो उस अवस्था का नाम है।

जौ राजु देहि त कवन बडाई॥
जौ भीख मंगावहि त किया घटि जाई॥

(गु॰श्री॰नामदेव जी पृष्ठ ५२५)

यदि राज-भोग के सुख अर्थात् महलों माड़ियों में निवास द्वारा उपकृत करें तो यश किस वस्तु का? भाव यश तो देने वाले का है—लेने वाले मंगते का क्या यश। यदि भीख द्वारा उदर पूर्ति कराएँ तो क्या कमी, बल्कि यह भी उसकी कृपा है—

यथा— **केतिआ दूख भूख सद मार॥**
एहि भि दाति तेरी दातार॥

(जपुजी, पृष्ठ ५)

फकीर तो सदैव—

यथा— **सुख दुख दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना॥**
हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना॥

वाली अवस्था में स्थित रहता है फिर देखो कबीर साहिब संकेत कर रहे हैं—

जिह धरु बनु समसरि कीआ ते पूरे संसारि॥

(रा: म: कबीर पृष्ठ ११०३)

जिसने घर–बार, महल–माड़ियों एवं घने जंगलों को समान समझ लिया, वही पुरुष संसार में पूर्ण है। यह कुछ हम दस दिनों से देख रहे हैं कि बर्फ के समान पड़ रही सर्दी में निर्भय, बेपरवाह हुए बेरियों के नीचे प्रसन्नचित्त बैठे गुरुवाणी का प्रवाह चला रहे हैं। दूसरा बोला, क्षय रोग असाध्य रोग माना जाता है, लेकिन यह औषधि उसके लिए भी कारगर साबित हो सकती है, क्योंकि सुख–दु:ख, मान–अपमान को समान जानकर शान्त चित्त रहने का वह बुखार जो क्षय रोग के रोगी को सदैव रहता है, उतरना आरम्भ हो जाता है। आखिर एक दिन ऐसा आता है कि समरस रहने की औषधि लेता लेता क्षय रोग का रोगी पूरा–पूरा बुखार उतर कर स्वस्थ हो जाता है।

तीसरा बोला कुछ भी हो फकीर की गति को जानना बुद्धि के वश की बात नहीं। हम तो यही कह सकते हैं कि धन्य हैं वे बेरियां जिन्होंने दस दिन परमपुरुष के दासों का सान्निध्य प्राप्त किया। ईश्वरीय वाणी का अमृत रस चखा, संगत की धूलि मस्तक को नसीब हुई और धन्य है वह हैंड–पम्प जिसका आज तक पुलिस वाले ही इस्तेमाल करते रहे हैं, लेकिन अब दस दिन से हरि के प्रेमी उसको स्नान की सेवा प्रदान कर रहे हैं। यह सोचते–सोचते प्रेमी घर को चले गए। उधर महंत जी महाराज नक्षत्र मण्डल सहित सेवा सिंह सरपंच के पास डबरी पहुँच गए, क्योंकि आज की तिथि उसको दी हुई थी। सेवा सिंह की प्रार्थना स्वीकार करके उसके कुएँ पर जाकर निवास किया। परिवार ने एक शामियाना लगाया हुआ था, उसके नीचे सुशोभित होकर कुतबनपुर की भाँति पूरी रात निरंतर मूलमंत्र का पाठ करवाया। प्रात: कड़ाह प्रसाद की देग सजाकर अरदास के उपरान्त समाप्ति की। इसी प्रकार एक रात कुराली मूलमंत्र की निरंतर वर्षा की और एक रात हरचरण सिंह घी वाले के फार्म पर भी मूलमंत्र के पाठ करते व्यतीत की। इस प्रकार पौष मास की सख्त सर्दी में आदि वाणी मूलमंत्र का अमृत रस–पान कर तपस्या रूपी कस्तूरी मिलाकर उसको सुखमय एवं माधुर्यपूर्ण बना वापिस ऋषिकेश आ गए।

1987 का पुण्य तिथि समागम

सन् 1987 का जिक्र है जब महंत बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी की पचासवीं पुण्य तिथि और विरक्त शिरोमणि संत बाबा निक्का सिंह जी की चतुर्थ वार्षिक पावन स्मृति मनाने के लिए आपके प्रेम के आकर्षण से खींची असंख्य संगत निर्मल बाग कनखल एकत्रित हुई। दोनों महापुरुषों की पावन–स्मृति में 17 सितम्बर, 1987 वाले दिन पाँच श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ किए गए। प्रात:–सायं खुले पँडाल में दीवान सजाकर श्री सुखमनी साहिब के पाठ और ईश्वरीय वाणी का पाठ होता रहा और महंत महाराज जी पावन विचारों द्वारा प्रवचन सुनाकर अमृतवाणी की वर्षा करते रहे। श्रीमान् संत जोध सिंह जी ने समस्त कार्यक्रम को विधिवत् ढंग से व्यवस्था करते हुए चलाया। लंगर का प्रबन्ध श्रीमान् सन्त छोटू जी बड़े सुचारु ढंग से चलाते रहे। स्थान का अन्य प्रबन्ध सन्त चमन लाल जी और सन्त महेश चन्द्र पंडित जी कुशलता एवं कठोर परिश्रम से करते रहे। 19 सितम्बर, 1987 वाले दिन अमृत वेला में असंख्य संगत की उपस्थिति में चल रहे श्री अखण्ड पाठों के भोग डाले गए। उपरान्त बाहर खुले पंडाल (मंडप) में दीवान सजाकर शब्द कीर्तन द्वारा हरियश गायन किया गया। उसके पश्चात् सन्त समागम में श्रीमान् सन्त विशन सिंह जी करीट, श्रीमान् पंडित निहाल सिंह जी, श्रीमान् सन्त सरवेश्वर सिंह जी शास्त्री, श्रीमान्, सन्त जोगिंदर सिंह जी भजनगढ़, श्रीमान् महन्त तेजा सिंह जी डेरा गुरुसर खुड्डा (पंजाब), श्रीमान् सन्त बाबा सतनाम वाहिगुरु जी, श्रीमान् सन्त बाबा मौनी जी पाँडवा, श्रीमान् सन्त रघुबीर सिंह जी शास्त्री निर्मल संतपुरा कनखल वालों ने कथा

व्याख्यान करते हुए महापुरुषों को श्रद्धांजलियां अर्पित कीं। उपरान्त निर्मल पंचायती अखाड़ा के श्री महंत साहिब महंत बलबीर सिंह जी शास्त्री ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पण करते डेरे की हो रही प्रगति का महंत राम सिंह जी महाराज की ओर संकेत करते कहा कि लक्षणों से पता लग जाता है कि आने वाले समय में डेरे का प्रकाश कहाँ तक फैलने वाला है। जैसे बादलों से अनुमान लगाया जाता है कि निकट भविष्य में वर्षा अधिक होगी। अन्त में महंत राम सिंह जी ने अपनी पवित्र रसना से रुहानी संदेश की ईश्वरीय वर्षा की। इस महान् पुण्य तिथि पर उपरोक्त वर्णन किए महात्माओं के अतिरिक्त महापुरुषों की याद मनाने के लिए और सन्त महात्माओं ने भी दर्शन देकर कृतार्थ किया जिनमें श्रीमान् महंत गुरचरण सिंह जी बरनाला, श्रीमान् महंत उत्तम सिंह जी सचिव और श्रीमान् महंत सरमुख सिंह जी कुठानी निर्मल पंचायती अखाड़ा, श्रीमान् महंत दर्शन सिंह जी त्यागमूर्ति देवपुरा आश्रम हरिद्वार, श्रीमान् महंत पूर्ण हरि जी बैलपड़ाउ, श्रीमान् महंत प्यारा सिंह जी बरनाला, श्रीमान् महंत रघुबीर सिंह जी निर्मल संतपुरा कनखल, श्रीमान् महंत अमर सिंह जी वैद्य, श्रीमान् गुरबचन सिंह जी विरक्त, श्रीमान् महंत जिज्ञासु जी निर्मल विरक्त कुटिया कनखल और श्रीमान् महंत गोपाल सिंह जी आदि थे।

मंच के संचालन की सेवा का निर्वाह भाई तरजीत सिंह जी करनाल वालों ने बड़ी योग्यता से सफलतापूर्वक किया। सन्त समागम के पश्चात् समूह सन्त समाज को प्रेमपूर्वक पक्का भण्डारा छकाया गया। उपरान्त सब संगत ने गुरु के लंगर में प्रसाद छका। इस प्रकार महापुरुषों की मधुर स्मृति में मनाया पुण्य तिथि समागम सम्पन्न हुआ। दूसरे दिन अर्थात् बीस सितम्बर 1987 वाले दिन आश्रम की ओर से बनाए जा रहे अस्पताल की तीसरी छत का लैंटर डालकर बाहर से आई संगत को विदाई दी।

इस प्रकार परम पूजनीय महंत बुड्ढा सिंह जी और उनके परम शिष्य विरक्त शिरोमणि सन्त बाबा निक्का सिंह जी की वार्षिक स्मृति बारहवें श्राद्ध वाले दिन निर्मल बाग कनखल में मनाई गई और उसके लगभग दस दिन बाद परम पूजनीय महंत बाबा आत्मा सिंह जी और महंत बाबा नारायण सिंह जी की पुण्य स्मृति दुर्गा अष्टमी वाले दिन निर्मल आश्रम ऋषिकेश मनाई जाती है, क्योंकि इस दिन महंत बाबा नारायण सिंह जी का शरीर शान्त हुआ था। इस वर्ष भी बीस सितम्बर 1987 को अस्पताल के लैंटर की सेवा करके पंजाब, करनाल एवं दिल्ली आदि स्थानों की संगत तो वापिस चली गई, लेकिन दूर से आई मुंबई, पुणे, मद्रास आदि स्थानों की संगत दूसरी पुण्य तिथि मनाने हेतु अभी यहीं है। 20-9-1987 को आश्रम में अखंड पाठों का प्रवाह आरम्भ हो गया। पहले दो श्री अखण्ड पाठ साहिब रखे गए फिर 22 से 28 तक तीन-तीन श्री अखण्ड पाठ साहिबों का प्रवाह चलता रहा। 29-9-1987 को पाँच श्री अखण्ड पाठ साहिब और साथ में श्री जपुजी साहिब का अखण्ड जाप आरम्भ हुआ। सेवा सिमरन, सत्संग-कथा, व्याख्यान और नाम वाणी का यह प्रवाह दशहरा तक चलता रहा यद्यपि पुण्य तिथि का मुख्य समागम दुर्गा अष्टमी वाले दिन सम्पन्न हो गया था। संगत उत्साहपूर्वक सेवा करती रही। प्रतिदिन प्रातः सुखमनी साहिब के पाठ उपरान्त श्री आसा दी वार का रस युक्त कीर्तन सिंधी प्रेमी बड़े प्रेम के साथ करते रहे। ब्रह्म मुहूर्त की अरदास के पश्चात् दरबार साहिब के बाहर क्षेत्र वाले स्थान पर मास्टर सूरदास जी कीर्तन आरम्भ कर देते हैं। प्रतिदिन के समान क्षेत्र लेने आए साधुओं के ऊपर पुष्प वर्षा करके आरती उपरान्त क्षेत्र (गुरु का लंगर) आरम्भ हो जाता है। सब से पूर्व साधु महात्मा एक-एक करके क्रमानुसार चाय-नाश्ता लेकर जाते हैं। बाद में अन्य बाहर से आए निर्धन व्यक्ति नाश्ता करते हैं। दूसरी ओर

आश्रम में आई संगत चाय-नाश्ता लेती है। इस सारे समय में सतिनाम वाहिगुरु की ध्वनि एवं शब्द कीर्तन होता रहता है। इस प्रकार प्रात: की दिनचर्या पूर्ण हो जाती है।

सायं को फिर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की पवित्र उपस्थिति में बाहर दीवान सुसज्जित होते, संगत मिलकर श्री सुखमनी साहिब जी का पाठ करती, गुरुवाणी का मनोहर कीर्तन संगत मिलकर करती उपरान्त परम पूजनीय महंत राम सिंह महाराज जी अपने रुहानीयत भरे उपदेश सुनाकर आनंदित करते। इस प्रकार दस दिन से वैकुण्ठ के समान अलौकिक दृश्य दृष्टिगोचर होता रहा। 30-9-1987 को महापुरुषों की याद में पाँच श्री अखण्ड पाठ साहिब और जपुजी साहिब के अखण्ड जाप का भोग पूर्ण मर्यादा सहित डाला गया। आरती अरदास उपरान्त श्री कड़ाह प्रसाद की देग वितरित करके बाहर शब्द कीर्तन आरम्भ किया गया जिसमें मुम्बई के प्रसिद्ध कीर्तनकार गुरु घर के सिंधी प्रेमी श्री रेवा चन्द ने शब्द गायन किया। इस अवसर पर पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि स्थानों से महापुरुषों को तन, मन, धन सहित श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिए असख्ंय संगत पहुँच चुकी थी। प्रतिदिन की भाँति साधु-महात्माओं के ऊपर पुष्प वर्षा की गई। इसके उपरान्त साधु-महात्माओं ने स्थानीय निर्धन लोगों ने और बाहर से आई संगत ने चाय-नाश्ता किया, उपरान्त सत्संग हाल में समागम आरम्भ हो गया। समागम के आरम्भ में पहले शब्द कीर्तन आरम्भ हुआ जिसमें मास्टर जी, बीबी हरमिंदर कौर करनाल, बीबी मोहिनी बाई मुम्बई, बीबी देवी अडवानी मुम्बई, श्री सुनील अरोड़ा कनखल, बीबी हरबंस कौर कनखल, भाई जसमेर सिंह करनाल के उपरान्त लक्ष्मण चेलाराम और श्री रेवा चन्द मुम्बई ने भी शब्द गायन किया। बाद में श्री गुरुद्वारा साहिब करनाल के हजूरी रागी भाई दिलबाग सिंह के जत्थे ने कीर्तन द्वारा सन्तों महात्माओं की सुन्दर महिमा का वर्णन किया।

अब संत समागम और श्रद्धांजलि का प्रोग्राम आरम्भ हुआ। इस समय तक काफी साधु महात्मा हरिद्वार और दूर-समीप से पंडाल-दरबार में पहुँच चुके थे। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की पावन उपस्थिति में जिन सन्त महापुरुषों ने श्रद्धांजलियां अर्पण कीं उनमें से श्रीमान् सन्त सरवेश्वर सिंह जी शास्त्री सच्चिदानंद कुटिया हरिद्वार, श्रीमान् महंत ज्ञान सिंह जो दर्शनाचार्य निर्मल संतपुरा दिल्ली, श्रीमान् महंत राम सिंह जी भजनगढ़ आश्रम ऋषिकेश, श्रीमान् संत बाबा सतिनाम वाहिगुरु जी, श्रीमान् सन्त बाबा मौनी जी पाँडवा (पंजाब), श्रीमान् महामण्डलेश्वर महंत रघुवर दयाल शास्त्री जी ऋषिकेश के अतिरिक्त निर्मल साधु समाज के पूज्य श्री महंत साहिब श्रीमान् पंडित बलबीर सिंह जी शास्त्री निर्मल पंचायती अखाड़ा कनखल ने प्रेम भरी मधुर स्मृति में महापुरुषों को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री महंत साहिब जी ने इस आश्रम की सम्पन्नता एवं समृद्धि के लिए शुभ कामना करते हुए कहा—आश्रम की ओर से जहाँ प्रतिदिन सैंकड़ों साधुओं, निर्धनों एवं ज़रूरतमंदों को भाँति-भाँति के पदार्थ लंगर में छकाए जाते हैं, वहाँ उनको नि:शुल्क औषधियां देने के लिए एक बड़ा अस्पताल खोला जा रहा है, जोकि ऋषिकेश के निर्धन समाज की भारी आवश्यकता को पूरा करने के लिए समर्थ होगा। आश्रम के इस अतुलनीय प्रगति का कारण श्रीमान् महंत रघुवर दयाल शास्त्री ने बड़े महापुरुषों की कृपा द्वारा परम पूजनीय महंत बाबा राम सिंह जी के अलौकिक दिव्यमय ऊँचे आदर्श जीवन को बताया। अंत में परम पूज्य महंत बाबा राम सिंह जी महाराज ने अपने बहुमूल्य वचनों द्वारा अमृतमयी रुहानी वर्षा की। उपरान्त हजारों श्रद्धालु प्रेमियों ने अरदास में भावपूर्ण दोनों महापुरुषों को श्रद्धांजलि अर्पित की। अब गुरु के लंगर

आरम्भ हुए। इसमें सैंकड़ों की गिनती में साधु महात्मा और हज़ारों की संख्या में आम संगत ने गुरु के लंगर में प्रसाद छका। उपरान्त संगत हजूर के पवित्र कर कमलों द्वारा प्रसाद प्राप्त करके अपने-अपने घरों के लिए विदा हो गई।

धर्म प्रचार और तीर्थ यात्रा

दोनों पुण्य तिथियों की सम्पन्नता के पश्चात् परम पूज्य महंत बाबा राम सिंह महाराज ने संगत को प्रेम भरी विदा देकर पाँच अक्तूबर से यात्रा आरम्भ की। ऋषिकेश से यात्रा आरम्भ करके सबसे पहले खोख गाँव पधारे। यहाँ आपने सात अक्तूबर आश्विन मास की पूर्णिमा को प्रतिवर्ष मनाए जा रहे समागम में सम्मिलित होना था। यह समागम महान् तेजस्वी सिद्ध पुरुष अवधूत श्रीमान् संत बाबा बेअंत सिंह जी की पावन याद में मनाया जाता है। इस समागम के साथ ही विरक्त महाराज संत बाबा निक्का सिंह जी, श्रीमान् संत बाबा दर्शन सिंह जी विरक्त, श्रीमान् संत बाबा गोपाल सिंह जी विरक्त उपरोक्त चारों महापुरुषों की पावन-स्मृति में चार श्री अखण्ड पाठ साहिब के भोग डाले गए। उपरान्त बाहर पंडाल (मंडप) में शब्द कीर्तन के अतिरिक्त पूज्य महंत बाबा रामसिंह जी ने मूल्यवान् वचनों के द्वारा महापुरुषों को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस समस्त समागम के दौरान गुरु का लंगर तीनों दिन अटूट चलता रहा। यहाँ से आपको गोराया की संगत ले गई। तिथि 7-10-1987 से 18-10-1987 तक गोराया ही निवास किया। यहीं से आप जी गुरुद्वारा संत सागर चाह वाले गाँव जोहल गए। यहाँ बड़े संतों के और सुन्दर स्थान के दर्शन करके गाँव 'डुमुण्डा' में श्रीमान् महंत मनमोहन सिंह के पास पहुँचे। संत बाबा कर्म सिंह जी द्वारा स्थापित इस स्थान पर ही लंगर छक कर आराम किया और दोपहर बाद श्रीमान् महंत मनमोहन सिंह जी से आज्ञा लेकर होशियारपुर में कुछ अनुरागियों को मिलते हुए श्रीमान् पूज्य संत बाबा ज्वाला सिंह जी के डेरे गाँव हरखोवाल पहुँचे। महापुरुषों की तपोभूमि और सेवा सिमरन के केन्द्र इस निर्मल स्थान के दर्शन आदि करके सब का मन गद्‌गद् हो गया। सायं के लंगर प्रसाद के पश्चात् प्रबन्धकों से आज्ञा लेकर वापिस गोराया पहुँच गए। दूसरे दिन गोराया से ही आप जी ने पूज्य गुरुदेव श्रीमान् १०८ संत बाबा निक्का सिंह जी विरक्त महाराज के जन्म स्थान के दर्शन करने का प्रोग्राम बनाया। काफी संगत सहित आप गोराया से चलकर वहाँ पहुँचे। इस गाँव सीहां दौद में, पूज्य महाराज जी के जन्म स्थान पर बन रही अति सुन्दर इमारत के दर्शन किए। जिसकी सेवा अभी चल रही थी। इस पवित्र स्थान की सेवा में श्री अमरीक चन्द चावला दिल्ली और संत प्रकाश पाहवा, रालसन साइकिल लुधियाना वालों ने विशेष भाग लिया। वहाँ से गाँव नारो माजरा, धांदरा, लुधियाना के प्रेमियों को मिलकर वापिस गोराया आ गए। दूसरे दिन श्रीमान् पूज्य संत बाबा मौनी जी की कुटिया जो कि पाँडवा (फगवाड़ा) में है, के दर्शन करने गए। प्रेम के वशीभूत रात्रि वहीं पर ही ठहरे। यहाँ पाँच-पाँच श्री अखण्ड पाठों का प्रवाह चल रहा था। संयोगवश उस दिन संक्रान्ति का पावन दिवस था इसलिए मौनी जी की प्रार्थना स्वीकार करके महंत महाराज जी ने प्रवचनामृत भी किए। गोराया से ही आप जी ने कपूरथला, जालंधर, रोपड़ की संगत की प्रार्थना स्वीकार करके दर्शन दीदार प्रदान किए। आप जहाँ भी जाते हैं संगत आपके पवित्र मुख से रुहानी वचन सुनकर प्रसन्न हो जाती है। अंतत: गोराया के स्थान पर श्री अखण्ड पाठ के भोग के उपरान्त आए ईश्वरीय हुक्मनामे की अलौकिक शब्दों द्वारा बहुत भाव-पूरिन कथा की और कई भाग्यशाली प्रेमियों को **दानों सिर दान**-नामदान प्रदान किया। यहाँ से अब 18-10-1987 को चलकर गाँव असरपुर (पटियाला) और लोह सिंबली की संगत को दर्शन देते हुए करनाल पहुँचे। करनाल में गुरुदेव महाराज विरक्त जी द्वारा की

असीम कृपा के फलस्वरूप प्रतिदिन कीर्तन, कथा, सत्संग का प्रवाह रहा। करनाल नगर के अतिरिक्त गाँव डबरी, जरीफा, कुराली और यमुनानगर आदि संगत को मिलते हुए 25-10-1987 को वापिस ऋषिकेश पहुँच गए। अब 4-11-1987 से पूर्व की यात्रा आरम्भ की। इस यात्रा में गोराया से सरदार उजागर सिंह सूरी कार की सेवा करने के लिए गाड़ी लेकर पहुँच गए। अब दो कारों में यात्रा आरम्भ हुई। सब से पहले कुण्डा चौक, पीरों मदारा (काशीपुर) होते हुए बैल पड़ाव पर पहुँच गए। यहाँ श्रीमान संत बाबा पूरनहरि जी के तपोवन स्थान पर श्री गुरु नानक देव महाराज जी का जन्मोत्सव मनाया। इस पावन दिवस पर सुशोभित संगत के भारी जमाव को आप जी ने रुहानियत भरपूर अमूल्य वचनों द्वारा कृतार्थ किया। 6-11-1987 को यहाँ से चल कर श्री गुरु नानक देव महाराज जी की पावन चरण धूलि के साथ पवित्र हुए स्थान श्री नानक मता के दर्शन करके सायं को निर्मल आश्रम लखीमपुर खीरी पहुँचे। इस अत्यन्त सुन्दर और रमणीक स्थान के दर्शन करके आप अत्यन्त प्रसन्न हुए। संयोगवश यहाँ के पूज्य महंत श्रीमान् अमर सिंह जी और अमृतसर वाले निर्मल उद्देश्य के सम्पादक परम पूज्य श्रीमान् महंत हरि सिंह जी मिले। अगले दिन दोनों महापुरुषों ने पूज्य महंत बाबा राम सिंह जी का आदर सहित स्वागत करते हुए पूर्ण प्रेम सहित विदाई दी। सत्रह तारीख को यहाँ से प्रस्थान करके इलाहाबाद पहुँच कर पीली कोठी कीटगंज ठहरे। यहाँ के महंत श्रीमान् संत संगम सिंह जी ने हार्दिक स्वागत किया। यहीं आदरणीय श्रीमान् महंत गुरदीप सिह जी केसरी मिले। अगले दिन यहाँ श्री गुरु नानक देव जी का जन्मोत्सव समागम था। महंत संगम सिंह जी और केसरी जी के प्रेम भरे निवेदन पर आप जी ने अपने पवित्र मुख से मनोहर वचन सुनाकर संगत को आनंदित किया। गुरुद्वारा साहिब पक्की संगत के दर्शन किए। यहाँ के वर्तमान प्रबन्धक महंत श्रीमान् संत तेजा सिंह जी मिले। केसरी जी के संग में त्रिवेणी संगम के पावन दर्शन स्नान किए। यहीं से आप अपने आश्रम की शाखा संगत ज्ञान गुफा बनारस पहुँचे जहाँ अगले दिन 9-11-1987 को काशी के महापुरुषों को गुरु नानक देव महाराज के पावन लंगर से पक्का भण्डारा छकाया। उस यज्ञ समागम में औरों के अतिरिक्त श्रीमान् महंत इन्द्रजीत सिंह जी चेतनमठ, श्रीमान् महंत गुरदीप सिंह जी केसरी और श्रीमान् महंत रघुबीर सिंह जी शास्त्री संगत लाहौरी टोला ने विशेष तौर पर दर्शन दिए। इस यज्ञ समागम में श्रीमान् संत भरत सिंह जी और श्रीमान् चेतनानन्द जी ने उत्साहपूर्वक सेवा की। आप जी ने सब संगत सहित गुरुद्वारा गुरु बाग, गुरुद्वारा नीची बाग, श्री चेतनमठ, निर्मल संस्कृत विद्यालय और संगत लाहौरी टोला, निर्मल पंचायती अखाड़ा, सती चौक और काशी महादेव जी के मंदिर के दर्शन किए। फिर यहाँ से चलकर दूसरे दिन का पड़ाव आप जी ने पटना साहिब (बिहार) में गुरुद्वारा श्री बाल लीला साहिब मैणी संगत में किया। यहाँ के पूज्य महंत श्रीमान् पंजाब सिंह जी ने प्रेम, सेवा और स्वागत में कोई कसर न छोड़ी। तख्त श्री हरिमंदिर साहिब जी के दर्शन आदि तो दोनों समय प्राप्त होते ही रहे, परन्तु महंत पंजाब सिंह जी ने साथ होकर गुरुबाग गोबिन्द घाट, गऊघाट और हाण्डी साहिब आदि पावन स्थानों के दर्शन भी कराएं। अब आप जी ने इन पावन तीर्थ स्थानों की यात्रा करके वापसी के लिए प्रस्थान किया। एक रात्रि बनारस विश्राम करके दूसरे दिन अयोध्या पहुँचे। यहाँ भगवान श्री रामचन्द्र जी की पावन जन्म भूमि के दर्शन किए। यहां अन्य स्थानों के ऐतिहासिक गुरुद्वारों के दर्शन करते हुए लखनऊ पहुँचे। यहाँ सिंधी संगत को मिले और नवम् पातशाह के पावन स्थान के दर्शन किए। अगले दिन मुरादाबाद निर्मल आश्रम पहुँच गए। यहाँ श्रीमान् महंत भगत सिंह जी ने उत्साहपूर्वक सेवा स्वागत किया। यहीं एक प्रेमी के घर श्रीमान् महंत दर्शन सिंह त्यागमूर्ति और श्रीमान्

गुरदाससिंह जी मिले। इस प्रकार धर्म प्रचार और तीर्थ यात्रा अकाल पुरख (कालातीत पुरुष) की कृपा से निर्विघ्नता पूर्वक सम्पूर्ण करके वापिस ऋषिकेश आ गए।

रमज़

ज़िक्र 1988 की ग्रीष्म ऋतु का है जब भाई अमरीक सिंह धनौला को जो कि आश्रम का निजी सेवादार है, उसके एक निकट का सम्बन्धी भाई अवतार सिंह हरखोवाल लेने आया-दिल्ली के लिए किसी काम के सम्बन्ध में ले जाने के लिए। अमरीक सिंह ने कहा महाराज जी से आज्ञा लेकर चलेंगे, लेकिन हजूर उस दिन निर्मल बाग कनखल गए हुए थे। दोनों व्यक्ति कनखल पहुँचे तो महाराज जी ऊपर अपने कमरे में बैठे चार-पाँच सज्जनों को उपदेश कर रहे थे। अमरीक सिंह अवतार सिंह भी नमस्कार करके चरणों में बैठ गए। हजूर उपदेश कर रहे हैं कि दुख-सुख जीव को कर्मों अनुसार आते हैं। लेकिन यह जीव का स्वभाव है कि जब सुख आता है तो यह फूला नहीं समाता और अहंकार वश समझता है कि यह मेरे कारण सुख आया है मैंने परिश्रम किया, मैंने बुद्धि से काम लिया, मैंने ऐसे किया तो यह प्राप्ति हुई आदि, लेकिन जब दु:ख आता है तो दोष दूसरों को देता है कि इसने ऐसे किया तो मुझे दु:ख हुआ। बल्कि इतना ही नहीं, अपितु परमात्मा को भी कोसना आरम्भ कर देता है कि उसने मेरे साथ अन्याय किया। सब लोग सुखी बैठे हैं, मैं दु:खी हूँ आदि परमात्मा को दोष देने पर भी संकोच नहीं करता। जिसने गंदे पानी के बुलबुले से सुन्दर शरीर की रचना करके उसमें असंख्य श्वासों की पूँजी बिना किसी मूल्य के दे दी, अनेकों सम्बन्धी रिश्तेदार दिए। श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी श्री सुखमनी साहिब की छठी अष्टपदी में परमेश्वर के वरदानों की ओर हमारा ध्यान खींचते हुए कहते हैं—

जिह प्रसादि छतीह अंम्रित खाहि॥ तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि॥
जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि॥ तिस कउ सिमरत परम गति पावहि॥
जिह प्रसादि बसहि सुख मंदिर॥ तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि॥

(पृष्ठ २६९)

जिह प्रसादि आरोग कंचन देही॥ लिव लावहु तिसु राम सनेही॥

(पृष्ठ २७०)

अगनत साहु अपनी दे रासि। खात पीत बरतै अनद उलासि॥

(पृष्ठ २६९)

हमारे मन को समझाने के लिए असंख्य संकेत गुरुवाणी में गुरु बाबा जी कह रहे हैं, लेकिन अहंकार वश यह मन बजाए उपकार मानने के ऐसे दयालु परमात्मा पर भी दोष लगाना आरम्भ कर देता है, क्योंकि उपयुक्त-अनुपयुक्त की समझ इस को प्राप्त होनी थी सत्संग में से, लेकिन इसको माया और अहंकार ने इतना भ्रमित कर दिया कि सत्संग में जाने के लिए इसके पास समय ही नहीं। यदि कभी भूलकर चला भी जाए तो वहाँ जो कुछ सुनाया जा रहा है उसकी ओर ध्यान भी नहीं देता। यदि ध्यान दे भी दे तो उसको जीवन में ढालने का प्रयत्न ही नहीं करता। फिर आप बताएं कि यदि रोगी डॉक्टर के पास जाए ही न तो रोग निवृत्ति किस प्रकार होगी? चलो यदि किसी के कहने-सुनने पर चला भी जाए, लेकिन डॉक्टर की बात पर ध्यान ही न दे, उसके बताएं मुताबिक औषधि का प्रयोग न करे और निदान-परहेज़ पर ध्यान ही न दे तो क्या वह रोगी निरोग हो जाएगा? गलती अपनी, क्रोध डॉक्टर पर करे-यह कोई बुद्धिमत्ता है? इस कारण मनुष्य शरीर धारण करके ज़रुरी

है सत्संग करना, उससे भी आवश्यक है श्रवण किए हुए पर अमल करना। जब यह जीवन को ऐसे बनाने का प्रयत्न करता है तो साथ-साथ जीवन भी सुखमय होना आरम्भ हो जाता है। इस का अभिप्राय यह नहीं कि अब सुख-दु:ख आने बन्द हो जाएंगे, ऐसा नहीं है। दु:ख-सु:ख कर्मों के अनुसार आते ही रहेंगे क्योंकि शरीर बना हुआ ही कर्मों का है। इसलिए जितनी देर शरीर है दु:ख-सुख कर्मों के अनुसार आते रहेंगे, परन्तु गुरु-परमेश्वर की कृपा से यह उसको सूली पर शूल की भाँति सहन कर लेगा। अर्थात् आए दु:ख को यह बजाए किसी को दोष देने के अपने कर्मों का फल और परमेश्वर का हुक्म मानकर शान्त चित्त रहेगा।

उदाहरणत: आप कहीं यात्रा कर रहे हैं—आगे कोई मूर्ख व्यक्ति अथवा किसी नशे में वश हुआ तुम्हें अपशब्द अथवा गाली-गलौच करता है तुम सत्संगी होने के नाते कि

पड़ अखर एहु बूझीऐ॥
मूरखै नाल न लूझीऐ॥

वाले सिद्धान्त को जानते हुए किनारा कर गए। सुखी रहे, लेकिन यदि आप भी सत्संग में सुने हुए सिद्धान्त को भुलाकर क्रोधवश झगड़ा कर बैठे तो आप भी यूँ समझें—कि डॉक्टर के पास भी गए, औषधि लेकर जेब में भी डाल ली, लेकिन समयानुसार उस का प्रयोग नहीं किया। फिर लाभ क्या हुआ डॉक्टर के पास जाने का, औषधि खरीदने का? झगड़ा कर बैठे, दोनों को पकड़कर पुलिस ने अन्दर दे दिया, जितना कष्ट उस बुद्धिहीन पुरुष ने उठाया-जेल के भीतर का उतना ही आपने बुद्धिमान होकर उठाया। फिर भिन्नता क्या रही? इस प्रकार जब सत्संगी पुरुष गुरु-परमेश्वर के आदेश में चलता हुआ जीवन व्यतीत करता है तो परमेश्वर इसके कई बड़े दु:खों को भी सूली से शूल की तरह पार करा देता है और इसका काँटों भरा जीवन फूल की सेज के समान सुखमय हो जाता है। हजूर के मुख से ऐसा उपदेश सुनकर अमरीक सिंह और उसका सहयोगी आज्ञा लेकर दिल्ली को चल पड़े। हरिद्वार स्टेशन पर जब पहुँचे तो दिल्ली को जाने वाली मंसूरी एक्सप्रेस रेल गाड़ी तो खड़ी थी, लेकिन खचाखच भरी पड़ी थी। किसी भी डिब्बे में जाने के लिए स्थान नहीं मिल रहा था। अंतत एक डिब्बे में कुछ जगह नज़र आई—उसमें बैठ गए और इतने में गाड़ी भी चल पड़ी। भीतर जाकर देखा कि वह डिब्बा फौज के लिए आरक्षित है। फौज के कर्नल पद के कुछ अफसर शराब में मदहोश हुए सीटों पर लेटे पड़े थे। इन्होंने सरदारों को देखकर गालियां देना आरम्भ कर दिया। वे सम्भवत: हरियाणा के जाट थे। गालियों के साथ-साथ अपने निम्न पदाधिकारियों को कहने लगे कि इन सरदारों को चलती गाड़ी से धक्का देकर बाहर फैंक दो। फौज का ही एक सिपाही पद का सरदार था उसने कुछ समझाने का प्रयत्न किया, लेकिन उसको भी गालियां देनी आरम्भ कर दीं। वह भी बेचारा चुप हो गया।

गाड़ी अपनी गति से जा रही है, कहीं रुके तो डिब्बा बदलें, लेकिन वह अफसर लोग एक सैकेंड भी इन सरदारों को सहन करने के लिए तैयार नहीं। इसलिए शराब के नशे में गालियों की बौछार किए जा रहा है। सरदार सिपाही ने स्थिति बिगड़ते देखकर अमरीक सिंह को कहा कि आप इनकी आँखों से परे इधर खिड़की में आ कर बैठ जाएं। जहाँ गाड़ी रुके वहाँ उतर जाना। अमरीक सिंह खिड़की से बाहर पैर करके बैठ गया, दूसरा थोड़ा अन्दर बैठ गया—अमरीक के पीछे। इतने मे कोई छोटा सा स्टेशन आया—वहाँ गाड़ी तो नहीं रुकी, लेकिन प्लेट फार्म की दीवार पर और गाड़ी के पायदान के मध्य आकर अमरीक सिह का पैर बूट के बीच ही कट गया और खून बड़ी तेज़ी से चलने लगा। इतने में लक्सर स्टेशन आ गया, वहाँ रिपोर्ट की, इतने में गाड़ी फिर चल पड़ी। अब वे अफसर भी शान्त हो गए। अमरीक सिंह को दो व्यक्तियों ने उठाकर

भीतर एक सीट पर लिटाया और पाँव पर कोई कपड़ा बाँधकर कुछ ऊँचे स्थान पर टिकाया ताकि रक्त की गति कुछ कम हो जाए। लक्सर स्टेशन वालों ने अगले स्टेशन पर फोन कर दिया। जब स्टेशन पर गाड़ी रुकी तो छ: सात व्यक्ति रेलवे के आ गए तो अमरीक को वहाँ से उठाकर गार्ड वाले डिब्बे में ले गए। मरहम पट्टी जो प्राथमिक चिकित्सा में किया जा सकता था वह सब किया गया। जब पट्टी कर रहे थे तो अमरीक सिंह हजूर की ओर से पहले ही किए संकेत को स्मरण कर चकित हो रहा था। इस में बैठी कुछ माताएं यह देखकर आश्चर्यचकित हो रही थीं कि चोट कितनी अधिक है रक्त से वस्त्र लथपथ हुए हैं, लेकिन यह भाई बजाए चोट अनुभव करने के कुछ और ही सोच रहा है, लेकिन अमरीक सिंह का मन हजूर की अन्तर्यामिता के द्वारा किए गए संकेत को याद करके चकित हो रहा था। बाद में ठीक होने के लिए लगभग छ: मास लगे।

बेपरवाही

वेपरवाहु अनंद मै नाउ माणक हीरा॥ रजी धाई सदा सुखु जा का तूं मीरा॥
सखी सहेरी संग की सुमति द्रिड़ावहु॥ सेवहु साधू भाउ करि तउ निधि हरि पावउ॥
सगली दासी ठाकुरै सभ कहती मेरा॥ जिसहि सीगारे नानका तिसु सुखहि बसेरा॥

(आ.म. ५ पृष्ठ ४००)

जिक्र 1988 का ही है जब मौजी दाता गोराया कुटिया ठहर कर अपने मौजी स्वभावानुसार दोनों हाथों से श्रद्धावानों को प्रेम के वरदान वितरित कर रहा है। आज जन्माष्टमी अर्थात् भगवान् कृष्ण जी का जन्मोत्सव है, इसलिए अपनी किसी पुरातन लीला में लीन हुआ प्रात: से ही कुछ ध्यान मग्न है। संगत के साथ बहुत कम बातचीत, सम्मुख कोई आ जाए तो हल्की मुस्कान के साथ एकाध प्रेम-दृष्टि डाली, फिर नेत्र बन्द, बस फिर वही मौज, वही गम्भीरता। इस प्रकार सारा दिन व्यतीत हुआ, लेकिन वृत्ति की अन्तर्मुखता में कुछ अन्तर नहीं आ रहा है। सायं सैर का समय आया, उसी मौज में जी.टी. रोड़ की ओर चल पड़े। बलविंदर सिंह (वैम्पी) और कुकली भी पीछे-पीछे साथ हो लिए। जी.टी. रोड पर जाकर अब रुख फिल्लौर की ओर किया। थोड़ी दूर खहरे गाँव की ओर जाकर वैम्पी तो चप्पल के टूटने के कारण रुक गया, लेकिन दाता उसी प्रकार अपनी अन्तर्मुखता में लीन हुआ बड़ी तीव्र गति से आगे को जा रहा है। ऊपर से अंधकार हो गया, सैर करते-करते पाँच-छ: कि०मी० कुटिया से दूर आ गए, लेकिन वापसी की ओर कोई ध्यान नहीं, वैम्पी तो चप्पल टूटने के कारण वहीं बैठ गया— सोचा कि वापसी पर साथ हो लूँगा, लेकिन कुकली पीछे-पीछे जा रहा है। अधिक समय और ऊपर से अंधेरा हो गया। यह समझकर उजागर सिंह सूरी ने जीत सिंह गोराया को साथ बिठाकर कार पीछे लगाई, लेकिन फिल्लौर तक देखकर वापिस आ गए कि कहीं और मार्ग से वापिस न आ गए हों। जब वापिस मुड़कर खहरे गाँव के बराबर सड़क पर बैठे वैम्पी को मिलकर विचार कर रहे थे कि किधर देखा जाए तो इतने में एक साइकिल वाले ने बताया कि एक महात्मा फिल्लौर से आगे लुधियाना की ओर बहुत तेज़ी से चले जा रहे हैं। कार वापिस करके लुधियाना की ओर दौड़ाई तो सतलुज के पुल पर अपनी मौज में लीन हुए लुधियाना की ओर चले जा रहे हैं। सूरी जी ने कार खड़ी करके चरणों पर नमस्कार की तो बड़ी गम्भीर मुद्रा में देखकर बोले बताओ क्या बात है? सूरी ने प्रार्थना की—महाराज! रात काफी हो गई है। आप सोलह-सत्रह कि०मी० की यात्रा करके फिल्लौर से भी आगे निकल आए हो। कृपा करो वापिस कुटिया चलें-संगत व्याकुल है।

अच्छा! इतना कहकर गाड़ी में बैठ गए, लेकिन और कुछ बोल नहीं रहे। उसी गम्भीरता में गहरे उतरे कुटिया पहुँच

गए। आगे संगत प्रतीक्षा कर रही कि महाराज आएँ तो लंगर छकें, लेकिन मौजी प्रीतम ने जाते ही जपुजी साहिब की पाँच पौड़ियाँ (5 श्लोक) पढ़ने का संकेत किया और स्वयं भी ऊँचे स्वर में पढ़ने लगे। **गुरा इकु देहि बुझाई** वाली पंक्ति जब आए तो संगत ज़ोर से बोले कि अब समाप्त कर दें, लेकिन मौजी की मौज को कौन जाने? आप पुनः फिर आरम्भ कर लेते। यद्यपि रात काफी व्यतीत हो चुकी थी—सब के पेट में चूहे दौड़ने लगे थे, लेकिन साहिब को कौन कहे कि ऐसे नहीं ऐसे कर। पूरा एक घंटा पाँच पौड़ियों तक जाप कराकर फिर हुक्म किया—जाओ भाई लंगर छक लो।

संत करतार सिंह जी

बरनाला नगर में बारह कि०मी० पूर्व की ओर और संगरुर से 28 कि०मी० पश्चिम की ओर मालवा के प्रसिद्ध गाँव धनौला मण्डी से लगभग दो कि०मी० उत्तर की ओर 'दानगढ़' नामक एक गाँव बसा हुआ है। यह गाँव यद्यपि समृद्ध गिल गोत्र के जट्ट सरदारों का है, लेकिन ज़मींदारों से अधिक जनसंख्या ग़ैर-ज़मींदार कामगर लोगों की है। इस गाँव को ही संत करतार सिंह जी का जन्म नगर होने का नाम प्राप्त है। आपका जन्म बीसवीं शती के आरम्भ में एक समृद्ध ज़मींदार घराने में हुआ। बाल्यकाल से ही आप त्याग वृत्ति होने के कारण अपने ही गाँव के गुरुद्वारा में निवास करते और घर नहीं जाया करते थे। संत-महात्मा, गुणी-ज्ञानियों की संगत और सेवा करना आपका जीवन आदर्श था। ऐसा जीवन व्यतीत करते आपको कुछ समय पश्चात् संयोगवश श्रीमान् ज्ञानी चंदा सिंह जी कटू वालों का संग प्राप्त हो गया। उनसे गुरुवाणी का शिक्षण और राग विद्या प्राप्त की और साथ-साथ उनकी हर प्रकार से तन-मन से सेवा करते उनके कृपा पात्र बन गए।

उसके पश्चात् आपने जीवन का अधिकांश समय विरक्त साधुओं के साथ अथवा एकांत में ही व्यतीत किया। उस समय के दौरान भारत के कोने-कोने के प्रत्येक गुरु तीर्थ और अन्य पावन तीर्थों के दर्शन दीदार करते रहे। आप का उच्च जीवन कथनी और करनी की समता पर आधारित था। आप सदैव शम, दम, श्रद्धा, तितिक्षा, उपरति और समाधान आदि साधनों से युक्त जीवन व्यतीत करते थे। आप पूर्ण रूप से त्यागी, जप, तप को धारण करने वाले, सत्य पर स्थिर खड़े रहने वाले, विनम्रता भरपूर विरक्त महात्मा थे। स्पष्टवादी इतने थे कि सब के सम्मुख दूध को दूध और पानी को पानी कह देने का सामर्थ्य रखते थे। इस प्रकार समय व्यतीत करते लगभग 1960 के आस-पास आपका निर्मल आश्रम से सम्बद्ध जुड़ा। उस समय के महंत श्रीमान् संत आत्मा सिंह जी की अथक सेवा करके बहुत आनंद प्राप्त किया। उनके पश्चात् महंत बाबा नारायण सिंह जी का दायाँ बाजू बनकर सेवा करते रहे। आश्रम से सम्बन्धित सिंधी एवं पंजाबी संगत के साथ बहुत प्रेमपर्वूक व्यवहार करते हुए आदर मान देते रहे। इस पवित्र गद्दी पर पूर्ण निष्ठा रखते हुए आश्रम के समय-समय गद्दी-नशीन महंतों एवं संतों के प्रति पूरी वफादारी का प्रमाण कठिन समय में भी दिया। आपजी ने इस संस्था के साथ सम्बन्धित प्रत्येक कार्य को पूरी जिम्मेदारी, वफादारी, ईमानदारी और सहानुभूति के साथ पूर्ण करने के लिए हर संभव प्रयत्न किया। आप इस स्थान के कितने शुभचिंतक एवं वफादार संत थे? इस प्रश्न के उत्तर में पूज्य महाराज संत बाबा निक्का सिंह विरक्त जी का पवित्र कथन कि 'करतार सिंह निर्मल आश्रम का ताला है' अब भी हमारे कानों में गूँजता है। आप जी के पास जब भी बैठें तो संत महापुरुषों के वचन ही सुनाया करते थे। पूज्य महाराज संत निक्का सिंह विरक्त के साथ तो इतना गहन प्रेम था कि अंत समय

तक उनके पवित्र चरण-कमलों की याद में ध्यान जोड़कर रखा। आश्रम में आपने एक बरामदे में आसन लगा कर ही जीवन व्यतीत कर दिया। गुरुवाणी के साथ इतना प्रेम था कि आश्रम में ही समय मिलने पर किसी-किसी ज़रूरतमंद को गुरुवाणी पढ़ाते रहते थे। अंत में कैंसर के भयानक रोग से पीड़ित होकर 16-8-1988 को भाद्रपद संक्रान्ति के पावन दिवस पर प्रात: के सवा सात बजे शरीर त्याग गए। श्री गंगा जी में शरीर जल प्रवाह के पश्चात् सहज पाठ आरम्भ किया गया। भोग एवं भण्डारे के लिए सत्रहवां दिन 1-9-1988 निश्चित किया गया। तिथि 30-8-1988 श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ करके 1-9-1988 को दोनों पाठों के भोग मर्यादानुसार डाले गए। आप जी की आत्मिक शान्ति के लिए कई महात्मा एवं काफी संगत सम्मिलित हुई। अरदास के पश्चात् गुरुवाणी कीर्तन एवं श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में सरदार भगवान् सिंह जी जोहला वाले, सरदार तरजीत सिंह जी नरुला करनाल और परमानंद जी ऋषिकेश वाले थे। बाद में परम पूज्य महाराज महंत राम सिंह जी ने भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। आप जी ने सन्तों के निर्मल, विनम्रतापूर्ण और सच्चे त्याग भरे जीवन की प्रशंसा की। इस अवसर पर जो अन्य परम स्नेही संत महात्मा उपस्थित हुए—उनके नाम इस प्रकार हैं—श्रीमान् महंत भगत सिंह जी (मुरादाबाद), श्रीमान् महंत पूरन हरि जी बैलपड़ाउ (नैनीताल), श्रीमान् संत ध्यानसिंह जी सांदेहाशम (फिरोज़पुर), श्रीमान् बाबा कर्म सिंह जी गुरुद्वारा संत सागर चाह वाले गाँव जोहलां (जालंधर), प्रधान साहिब गुरुद्वारा पाँवटा साहिब जी और संगत। इसके अलावा पंजाब, करनाल आदि स्थानों से भी संगत आई थी। श्रद्धांजलि समागम के पश्चात् श्री गुरु नानक देव महाराज जी के लंगर में अटूट भण्डारे वितरित किए गए। उपरान्त सब संगत ने वापसी की।

संत प्रीतम सिंह जी (मौनी)

आपका जन्म इस शती के आरम्भ में नाभा राज्य के गाँव 'भौड़े' के एक जट्ट परिवार में हुआ। आपके बाल्यकाल एवं युवा अवस्था के सम्बन्ध में अधिक जानकारी तो नहीं मिलती, लेकिन फिर भी मिली जानकारी अनुसार आपका विवाह होने के पश्चात् घर में एक लड़की का जन्म हुआ। बस उससे थोड़ी देर बाद ही आपकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो गया। लड़की के जवान होने पर उसका विवाह 'भौड़े' गाँव से कुछ ही दूर गाँव रैसल में कर दिया। सांसारिक बंधनों की शायद यह आखिरी जिम्मेदारी थी जो पूरी होते ही आपजी ने घर से स्वतंत्र होकर दूर-समीप साधु-महात्माओं की संगत में जाना आरम्भ कर दिया। कुछ दिन तो इस प्रकार संत-स्थानों अथवा मुख्यत: संन्यासी साधुओं के डेरों पर घूमते विचरण करते रहे, परन्तु सन् 1958 ई० में श्रीमान् संत बाबा बेअंत सिंह जी महाराज का शरीर जब कुछ अधिक व्याधिग्रस्त हो गया तो आप दिन-रात उनकी सेवा बड़े प्रेम के साथ करते रहे। बाबा जी तो आश्विन की पूर्णिमा वाले दिन शरीर त्याग गए, लेकिन आपके भीतर जो वैराग्य की चिनगारी मंद-मंद सुलग रही थी उसके ऊपर और सूखा घास डालकर प्रचण्ड कर गए। अब लगभग एक वर्ष इस वैराग्यमयी हालत में विचरण करते रहे, लेकिन 1960 के दिनों में संत मुनि राधा राम लुबाने वालों की प्रेरणा से वस्त्र उतार दिए और वाणी से भी पूर्ण तौर पर मौन धारण कर लिया। खोख गाँव के समीप जंगल में एक घास-फूस की झोंपड़ी बनाकर कठोर साधना आरम्भ कर दी। श्रावण, भादों महीनों में ज़ोरदार वर्षा में मच्छर के तेज़ हमले, भूख-प्यास के व्रत आदि कारण से कई बार शरीर प्राय: रोगी होता ही रहता है। वाणी का मौन, नगर के समीप न जाना, ऐसी हालत में कई बार कठिन क्षणों का सामना करना पड़ा, लेकिन आपने मन का दृढ़ इरादा नहीं छोड़ा। इस अवसर पर खोख गाँव के कई भाग्यवान परिवार चाय-भोजन नियम के साथ लेकर जाते थे। आपने हाथ के संकेत से औषधि आदि की आवश्यकता बताते

जिसे सेवक पूरा कर देते। ऐसी कठोर साधना में आपने लगभग साढ़े चार साल अथवा पाँच वर्ष व्यतीत कर दिए। अब ऐसे लग रहा है कि अकाल पुरख वाहिगुरु ने इनकी साधना पर प्रसन्न होकर अपने दयालु स्वभावानुसार इनको पदोन्नत कर देने का निर्णय कर लिया।

बीउ पूछि न मसलत धरै के महावाक् अनुसार परमेश्वर को कुछ भी करने के लिए किसी दूसरे के साथ विचार-विमर्श नहीं करना पड़ता, इसलिए उसने जो भी करना है उसके समस्त उपाय वह स्वयं ही कर लेता है। संत मौनी जी के सम्बन्ध में यही हुआ कि परम पूज्य विरक्त महाराज निक्का सिंह जी अपने आज्ञाकारी सेवक संत दर्शन सिंह जी को साथ लेकर खोख गाँव ठहरे हुए थे। संत दर्शन सिंह जी सैर करने के लिए सायं को प्रतिदिन जाते ही हैं, लेकिन दैवयोग से आज उस ओर निकल गए जिधर जंगल में संत मौनी जी रहते थे। परमेश्वर की ओर से समय संयोग तो निश्चित ही था इसलिए दोनों महात्मा बड़े प्रेम के साथ मिले, कुशल क्षेम पूछने के उपरांत संत दर्शन सिंह जी ने गुरुवाणी की पंक्तियों का उच्चारण प्रारम्भ किया।

नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु॥ बन का मिरगु मुकति सभु होगु॥
किआ नागे किआ बाधे चाम॥ जब नही चीनसि आतम राम॥

(गउ कबीर जी, पृष्ठ ३२४)

मौनी जी! इस प्रकार शरीर को कष्ट देने से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती—देखो भाई साहिब भाई गुरदास जी स्वयं अपना अनुभव बताते हुए कहते हैं—

मिलै जि तीरथि नातियाँ डडां जल वासी।
वाल वधाड़ियां पाईऐ बड़ जटा पलासी।
नंगे रहिमां जे मिलै वणि मिरग उदासी।
भसम लाइ जे पाईऐ खरु खेह निवासी।
जे पाईऐ चुप कीतिआं पसूआं जड़ हासी।
विणु गुर मुकति न होवई गुर मिलै खलासी।

(वार ३६, पउड़ी १४वीं)

मौनी जी! मुक्त पदार्थ तो गुरु की दुकान पर सुलभ हैं, गुरु के बिना मन मर्जी से किए समस्त साधन निष्फल हैं—देखो गुरु साहिब जी भी इस ओर संकेत करते हैं—

वरमी मारी साप न मरै तिउ निगुरे करम कमाहि॥

वर्मी को पीटने से सर्प नहीं मरता—चाहे कोई वर्षों तक उसको पीटते रहो—यदि सर्प को मारना है तो आवश्यक है उसका सिर कुचलना। इस प्रकार उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि मुक्त पदार्थ मन को वश में करने से प्राप्त होता है और मन ने गुरु उपदेश के साथ वश में होना है, मन-मर्जी के साथ की गई कठोर साधना से नहीं। संत दर्शन सिंह जी के पवित्र मुख से तर्क युक्त उपदेश सुनकर मौनी जी रोने लगे, क्योंकि विद्वान महापुरुषों से गुरुवाणी एवं भाई गुरदास जी की वारों के बाणों का ऐसा संधान किया कि मौनी जी घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। मौनी जी ने काँपते हाथों से धरती पर लिखकर संकेत किया कि बोरी का टाट दे दो मैं कमर में लपेट लूँगा। संत दर्शन सिंह जी ने कहा—आज इतनी जल्दी न करो, मैं पूज्य

विरक्त महाराज जी के पावन चरणों में तुम्हारा निवेदन कर दूँगा। फिर वे जैसा आदेश देंगे मैं कल तुम्हें बता दूँगा। मौनी जी ने संकेत किया कि उनके चरणों में मेरी नमस्कार कर देना।

संत दर्शन सिंह ने कुटिया पहुँचकर सारी बात हजूर के चरणों में रखी। उस समय जत्थेदार नछत्तर सिंह जी भी चरणों में बैठे थे। महाराज जी ने आज्ञा की—जत्थेदार! गुरु ग्रंथ साहिब के ताबे (सम्मुख) पर्चियाँ डाल लो। एक वस्त्र पहनने की दूसरी न पहनने की, जो निकल आए उसे मौनी को बता दो। गाँव में सरदार वीर सिंह के घर श्री अखण्ड पाठ साहिब हो रहा था। जत्थेदार जी ने वहाँ जाकर पर्चियाँ डालीं जो कि वस्त्र पहनने वाली निकल आई। हजूर ने एक चादर संत दर्शन सिंह जी को दे दी कि वन में जाकर मौनी जी को गुरुद्वारा साहिब जी का निर्णय सुना दो। यदि उसके मन में विश्वास हो तो यह चादर लपेटकर उसे यहाँ ले आना। संत दर्शन सिंह जी ने वन में जाकर समस्त बातचीत मौनी जी को बताई। मौनी जी ने ईश्वरीय आदेश समझकर हजूर द्वारा प्रदान की गई चादर अपने ऊपर ओढ़ ली। कुटिया में आकर पावन चरणों में बड़ी श्रद्धा के साथ नमस्कार किया। पवित्र चरणों पर शीश रखते ही मन को इतनी शान्ति, इतनी शीतलता, इतना आनंद अनुभव हुआ जो पाँच वर्ष की कठोर साधना में कभी अनुभव नहीं किया। हजूर ने प्रसन्न होकर हरि मिलाप के लिए वास्तविक उपदेश प्रदान कर अपना वस्त्र और अन्य वस्त्र पहना दिए। मौनी जी अब शान्त चित्त हुए, कुटिया में निवास करते हुए, लगे उपदेश की कमाई करने। हजूर जब भी कुटिया आते आप उनके वस्त्र धोने की सेवा स्वयं माँगकर बड़े प्रेम से करते। संगत के साथ बहुत कम बोलते, चौबीस घंटे गुरु उपदेश की कमाई में ही लीन रहते। ऋषिकेश, निर्मल बाग कनखल, करनाल कुटिया, दौद एवं थूहे आदि स्थानों पर भी आप कुछ देर रहे, लेकिन अधिक समय फिर खोख कुटिया में ही व्यतीत किया। लंगर आप पहले तो मधुकरी करके ही छकते थे, लेकिन बाद में खोख, कोटली गाँव के अनुरागियों ने क्रम से कुटिया ही लाना आरम्भ कर दिया। परम पूज्य संत बाबा निक्का सिंह जी तो 1983 में सचखण्ड जा विराजमान हुए। बाद में उनसे उपकृत परम पूज्य महंत राम सिंह महाराज जी को विरक्त जी का स्वरूप समझकर मिलते रहे। विरक्त महाराज जी की असीम कृपा द्वारा की गई कठोर साधना के परिणामस्वरूप आप पूर्ण ब्रह्मज्ञान में स्थित होकर जीवनमुक्त अवस्था का आनन्द लेते हुए जीवन व्यतीत कर रहे थे। अचानक वरदान दिवस पूर्णिमा का दिन समीप आता जा रहा था।

देखो—आज क्या लीला कर रहे हैं। अपना सामान बेचकर किसी दूर देश जाने की तैयारी कर रहे हैं अथवा किसी की सेवा को सफल कर रहे हैं। यह भी नहीं पता कि कोई पूर्व का दिया वचन अथवा वरदान ही पूर्ण कर रहे हैं।

आप अपनी मौज में लीन हुए खोख कुटिया के आँगन में चारपाई पर विराजमान हैं। इतने में गाँव से सज्जन सिंह सरपंच चाय लेकर आ गया। चाय छककर आपने सरपंच को आज्ञा की कि भीतर कमरे में खूँटी पर एक वस्त्र लटक रहा है—वह उठाकर लाओ। सज्जन सिंह ले आया। महापुरुषों ने आज्ञा की इसको पहन ले। सज्जन सिंह चकित हुआ कि मैं राजनीतिक व्यक्ति प्रतिदिन लोगों के कामकाज के लिए दफ्तरों कचहरियों में घूमने वाला व्यक्ति हूँ। मैं यह साधु वेश कैसे पहन सकता हूँ? महापुरुष बोले—तू चिंता न कर—वचन मानकर पहन ले। सज्जन सिंह ने फिर वही निवेदन किया महाराज—ये साधुओं के वस्त्र मैं गृहस्थी कैसे पहन सकता हूँ? मौनी जी बोले—विरक्त महाराज जी ने अमुक सरपंच को हमारे सम्मुख अपनी भगवे रंग की चादर दी थी। उसने महापुरुषों का वरदान समझकर कई बार मस्तक से लगाई। अब ऊपर भी ओढ़कर रखता

है फिर तुझे क्या अंतर पड़ता है। सज्जन सिंह ने अब देरी नहीं की। पता नहीं क्या रहस्य समझ में आ गया। शीघ्र ही गले में पहन ली। महापुरुषों ने आज्ञा की कि अब इसी तरह पहनकर घर को जाओ। सज्जन सिंह ने वस्त्र पहन लिया और नमस्कार करके घर को चला गया। गाँव के लोग देखकर चकित हो रहे हैं कि सरपंच को आज क्या हो गया, साधु वेश धारण कर रखा है। खैर घर जाकर वस्त्र उतारकर पेटी में रख दिया। दूसरे दिन कोटली गाँव का सरपंच कर्म सिंह दिन के तृतीय पहर आपजी के दर्शन करने आया। उसने निवेदन किया—महाराज कृपा करो। कल के लंगर की सेवा हमें प्रदान करो। आप बोले आपका तो पूर्णिमा का दिन निश्चित है, उस दिन तुम्हारा लंगर छक लिया था—कल तो किसी अन्य की बारी है। कर्म सिंह बोला—महाराज! उस परिवार को मैं कह दूँगा वे कल नहीं लाएँगे। आप स्वीकृति दे दो। मौनी बाबा जी ने संकेत कर दिया—ठीक है कल तुम ले आना। छकने के लिए न तो बाबा जी ने कोई संकेत किया और न कर्म सिंह ने पूछा? केवल लंगर लाने की स्वीकृति दे दी।

प्राय: मर्यादानुसार तो आनंद कारज के पाठ के पश्चात् अरदास करके प्रसाद वितरित किया जाता है, लेकिन फकीर की मौज देखो? आज आप आनंद कारज से पूर्व ही प्रसाद वितरित कर रहे हैं। कर्म सिंह सरपंच को आज्ञा की भीतर से मिठाई का डिब्बा उठाकर ले आ। आज्ञा मानकर सरपंच ले आया। बाबा जी ने आज्ञा की—सारा डिब्बा खा ले। महाराज मैं सारा कैसे खाऊँगा? बाबा जी बोले—तुम जट्ट हो। एक डिब्बा तेरे लिए क्या अधिक है? महाराज सारा नहीं खाया जा सकता—कर्म सिंह ने कहा। बाबा जी बोले, जितना खाना है खा ले, शेष का वह सज्जन सिंह सरपंच की मशीन मुरम्मत कर रहे निर्धनों को खिला दे। कर्म सिंह ने एक आधा टुकड़ा खाकर शेष सब मजदूरों को वितरित कर दिया। मौनी जी ने अब आज्ञा की कि हाथ धोकर—भीतर एक लाल सा वस्त्र खूँटे पर लटक रहा है—वह उठाकर ला। कर्म सिंह कमरे के भीतर देख रहा है, लेकिन लाल सा वस्त्र नज़र नहीं आ रहा। निवेदन किया—महाराज यहाँ तो यह आपका वस्त्र लटक रहा है और तो लाल रंग का कोई वस्त्र नहीं। आज्ञा हुई यही ले आ हमारे पास। कर्म सिंह उस वस्त्र को उतारकर ले आया। आगे बाबा जी ने आज्ञा की कि इसको पहन ले। कर्म सिंह चकित हो गया कि बाबा जी क्या लीला कर रहे हैं? निवेदन किया महाराज! मैं गृहस्थी व्यक्ति हूँ। यह साधु वेश कैसे धारण करूँ? आज्ञा हुई कोई बात नहीं—पहन ले। कर्म सिंह ने निवेदन किया महाराज! मैंने तो प्रतिदिन नगर में कचहरियों आदि में कामकाज के लिए जाना होता है यह साधु वेश तो लज्जा वाली बात है। आज्ञा हुई तुम सोते तो रात को खेत में जाकर ट्यूबवैल पर ही हो, यह पहनकर चला जाया कर। कर्म सिंह ने फिर विवशता प्रकट की, लेकिन स्वीकार नहीं हुई। बाबा जी बोले! कल सज्जन सरपंच यहाँ से पहनकर ही घर को गया है, लेकिन तू स्वीकार नहीं कर रहा। कर्म सिंह ने सुनकर कि कल सज्जन सिंह को भी वस्त्र दिया है, शीघ्र ही पकड़कर सिर पर धारण कर लिया। कल लंगर लाने का वचन लेकर कर्म सिंह सरपंच महापुरुषों का वरदान 'भगवा वस्त्र' शीश पर रखकर घर को चला गया। दूसरे दिन अर्थात् 21 फरवरी 1989 को कर्म सिंह का भाई लंगर लेकर जब कुटिया पहुँचा तो इधर-उधर देखा कि बाबा जी कहीं नज़र नहीं आ रहे। रामसिंह ने सोचा कहीं स्नानगृह में न हों? जब स्नानगृह का दरवाज़ा खोलकर देखा संत अंदर गिरे पड़े हैं, बुलाने एवं उठाने का प्रयत्न किया लेकिन बेकार, क्योंकि अधरंग का दौरा इतना जबरदस्त पड़ा था कि पाँव से लेकर शीश तक शरीर का दायाँ पक्ष बिल्कुल निष्प्राण हो गया। रामसिंह ने इधर-उधर से आवाज़ देकर खेतों में कार्यरत कुछ व्यक्तियों

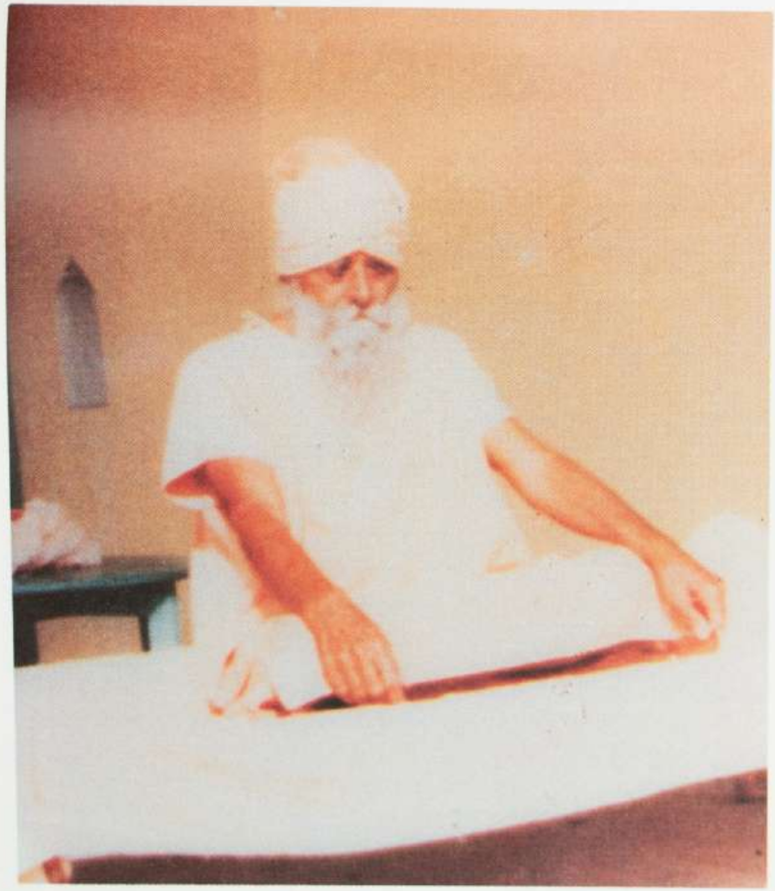

संत प्रीतम सिंह जी 'मोनी'

संत चमन लाल जी

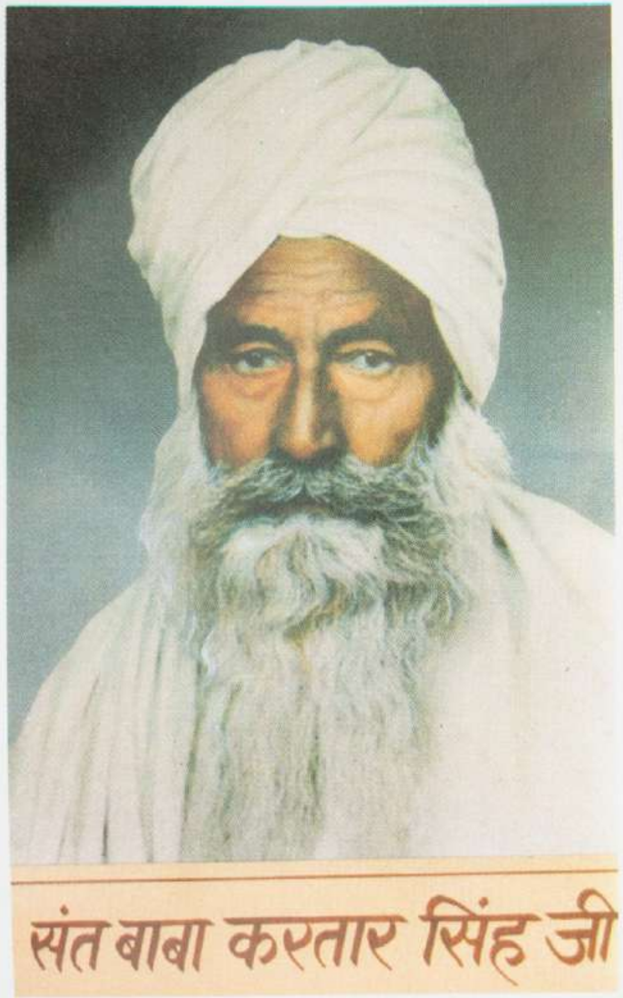

संत करतार सिंह जी

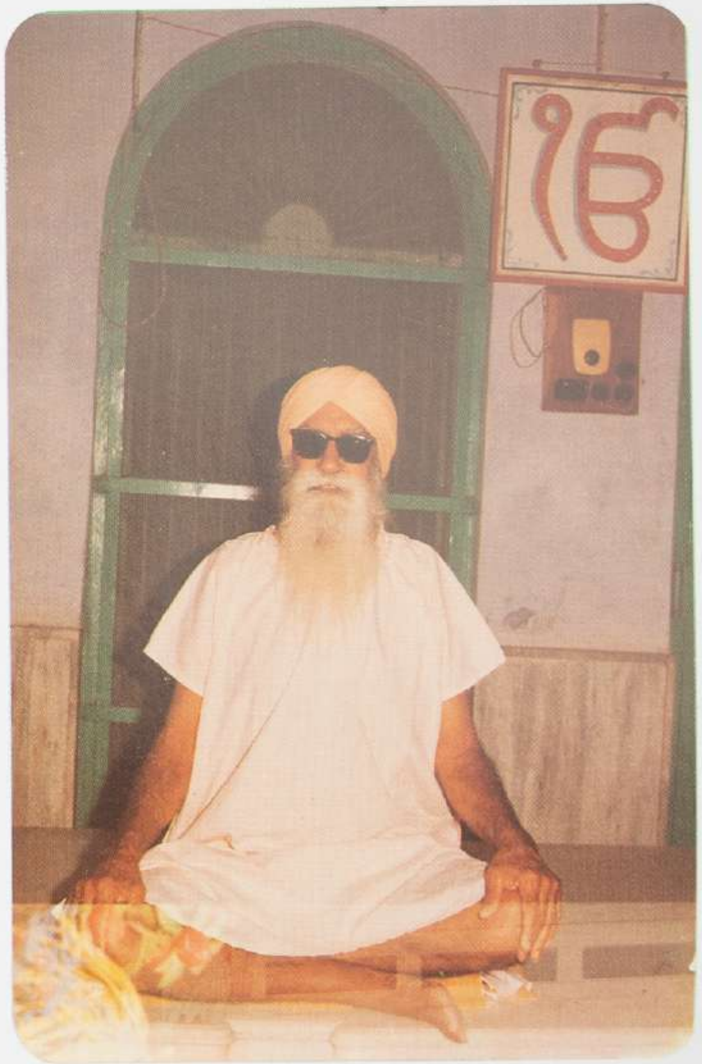

संत धर्म सिंह जी

को बुलाकर महापुरुषों को चारपाई पर डाला। इतने में पता लगने पर संगत एकत्रित होनी आरम्भ हो गई। जल्दी-जल्दी नाभा ले जाकर एक प्राइवेट अस्पताल 'जीवन नर्सिग होम' में दाखिल कराया। सायं को डॉक्टर के जवाब देने पर संगत ने लुधियाना ले जाकर सी०एम०सी० अस्पताल में दाखिल करवा दिया। उपचार आरम्भ हो गया। खोख की संगत प्रतिदिन साथ रहने वालों के लिए गाँव से लंगर प्रसाद बनाकर लुधियाना लेकर आ जाती। इस प्रकार संगत चाहे प्रतिदिन आती-जाती रहती, लेकिन पूर्णतया महापुरुषों की सेवा करने का अवसर सज्जन सिंह सरपंच, हरनेक सिंह, दर्शन सिंह, जरनैल सिंह, करनैल सिंह, कर्म सिंह सरपंच कोटली और त्रिलोचन सिंह नाभा आदि परिवारों को अधिक प्राप्त हुआ। बाद में कुछ दिन संत प्रकाश जी रालसन लुधियाना वाले के घर से भी सेवादारों के लिए लंगर आता रहा। सब संगत जहाँ महापुरुषों का पता करने आती रही, वहाँ ऋषिकेश से परम पूज्य महंत बाबा रामसिंह महाराज भी, आदरणीय संत छोटू बाबा जी को साथ लेकर लुधियाना पहुँचे। महापुरुषों के स्वास्थ्य का पता करके महंत रामसिंह जी उसी दिन सायं को गाँव खोख आ गए, क्योंकि खोख कुटिया के लिए संगत को पहले ही तारीख दी हुई थी। महंत जी महाराज दो दिन खोख ठहरकर अगली निश्चित तारीख अनुसार कर्म सिंह खोख की कार में सवार होकर बोधिनी गाँव पहुँचे। कर्म सिंह जब बोधिनी से वापिस आने लगा तो महंत महाराज जी मुस्कुराकर बोले—कर्म सिंह! यात्रा प्रोग्राम के अनुसार हमारे पास अभी दो दिन खाली हैं। कर्म सिंह ने निवेदन किया, महाराज! कृपा करो खाली दिन दोनों—खोख, कोटली गाँव को प्रदान कर दो। आज्ञा कर दी कि ठीक है—19 मार्च को लोह सिंबली आ जाना—कर्म सिंह ने जब गाँव आकर बताया कि दो दिन और मिल गए हैं तो संगत के कुछ प्रेमी चकित होकर सोचने लगे कि दो दिन जो खोख को मिले थे वह तो अपने दर्शन यहाँ की संगत को प्रदान कर गए, लेकिन जो दो दिन और दिए हैं इसके पीछे कोई विशेष कारण है। खैर-इधर बाबा मौनी जी को पंद्रह दिन हो गए—अस्पताल दाखिल करवाए को, लेकिन स्वास्थ्य में कोई अन्तर नहीं आया, न अधरंग में सुधार, न वाणी में गति। अस्पताल वालों ने पंद्रह दिन रखने के पश्चात् छुट्टी कर दी। आज से पंद्रह दिन के पश्चात् फिर दिखाने के लिए कह दिया। संत मौनी जी को खोख कुटिया ले आए। खोख, कोटली की संगत उसी प्रकार दिन-रात सेवा करती रही। इतने में 19 मार्च का दिन आ गया। दिए प्रोग्राम के अनुसार महंत महाराज जी भी खोख कुटिया पहुँच गए। मौनी जी महाराज के दर्शन किए, जलपान किया, उपरान्त प्रतिदिन के नियमानुसार सत्संग में फरीदकोटी टीके की विचार की गई। सत्संग की समाप्ति पर संगत प्रसाद लेकर घर को चली गई। हजूर सैर के लिए नहर की ओर निकल गए। रात को लंगर पानी के पश्चात् ऊपर चौबारे में विश्राम किया। प्रातः नियमानुसार स्नान के पश्चात् चाय छककर चौबारे में अपनी चारपाई पर सुशोभित हैं। समय भी लगभग चार बजे होने के कारण काफी अंधेरा है। एक प्रेमी आपके चरणों में बैठा है। उसने निवेदन किया, महाराज! इस कुटिया को जो आपने दिन प्रदान किए थे वे तो पूर्ण हो गए थे, लेकिन ये जो दोबारा दो दिन आपने प्रदान किए हैं इनके पीछे कोई विशेष कारण नज़र आता है? हजूर मुस्कुराकर बोले नहीं, कारण वाली कोई बात नहीं—वह तो यही था कि एक तो संगत कुछ अधिक प्रेम करती थी कि दो दिन बहुत थोड़े थे, दूसरा बाबा जी को उसी दिन लुधियाना थोड़ा ही मिला था इसलिए—सोचा कि एक तो बाबा जी कुटिया आ जाएँगे, उनको मिल लेंगे, साथ में संगत का प्रेम भी पूर्ण हो जाएगा। सुनकर प्रेमी अभी शंका रहित नहीं हुआ—सोच रहा है कि महाराज चाहे परदा रख रहे हैं, लेकिन दोबारा आने में कोई रहस्य अवश्य है। खैर—प्रातः हुई—डॉक्टरों की लिखी तारीख के मुताबिक मौनी जी महाराज को जत्थेदार नछत्तर सिंह की कार में लुधियाना की ओर ले गए। कुटिया में संगत सारा दिन महंत महाराज जी के दर्शन आदि करती रही और गुरुवाणी के पाठ विचार का प्रवाह चलता रहा। कर्म सिंह सरपंच कोटली वाले ने सायं के लंगर की सेवा ली हुई थी। उसको बुलाकर हजूर ने आज्ञा की लंगर सायं को थोड़ा शीघ्र लाओ, क्योंकि अंधेरा होने पर रोशनी के

ऊपर मच्छर आदि जीव बहुत आते हैं, इसलिए सूर्यास्त से पूर्व सबको लंगर छका दो। सायं को चार बजे सत्संग पोथी की विचार आरम्भ हुई। उस समय गाँव की काफी संगत एकत्रित हो गई। लगभग पौने पाँच बजे हजूर ने आज्ञा की कि पोथी बंद कर दो और संगत में प्रसाद बाँट दो। महाराज जी आज्ञा करके ऊपर चौबारे में चले गए, इधर संगत के कुछ प्रेमी सोच रहे हैं कि आज कोई विशेष बात है—कि सत्संग इतना जल्दी बंद कर दिया। पहले तो छः बजे तक चलता था, फिर आप सैर को जाते थे, लेकिन आज पाँच से भी पहले बंद कर दिया। क्या अभी सैर को जाएँगे? उधर अन्तर्यामी प्रीतम ने चौबारे में जाकर जंजीर लगा ली, न कोई भीतर जा सके न चाय-पानी पूछ सके। छः बज गए, साढ़े छः हो गए, आज सैर को भी नहीं जा रहे, न नीचे आ रहे हैं। प्रेमियों का शक पक्का होता जा रहा है कि आज कोई विशेष बात है। लंगर शीघ्र लेकर आने की आज्ञा, पोथी की विचार बजाए छः के पौने पाँच ही बंद कर देनी, सायं को प्रतिदिन सैर करने का नियम भी भंग कर देना आदि बातों से कुछ आश्चर्यता सी प्रतीत हो रही थी। खैर लंगर आ गया, हजूर ने आज्ञा कर दी—सबको शीघ्र ही छका दो। संगत का ध्यान लुधियाना की ओर ही है कि प्रातः से बाबा जी को लेकर गए हैं इतना समय तो नहीं लगना चाहिए था, कहीं पुनः दाखिल न कर लें या गाड़ी ही कहीं मार्ग में खराब न हो जाए आदि संकल्पों-विकल्पों में लंगर छके जा रहे हैं। इतने में हजूर छककर जल्दी के साथ भीतर से निकलकर सड़क की ओर चल पड़े। एक प्रेमी भी लंगर छकता-छकता फटाफट हाथ धोकर चिप्पी उठाकर हजूर के पीछे दौड़ा। इतने में खोख गाँव की ओर कार की रोशनी पड़ी। हजूर भी इतनी तेजी से सड़क की ओर जा रहे हैं कि चिप्पी वाला प्रेमी साथ नहीं मिल रहा। महाराज सड़क के उस मोड़ पर पहुँच गए जो कुटिया को मुड़ती है। उधर से कार भी उनके पास आकर रुक गई। कार वालों ने बैठे ही हजूर को भीतर से कार की खिड़की खोलकर कुछ बताया, तो आपने संकेत कर दिया कि कार कुटिया ले चलो और कार के पीछे आप भी कुटिया को वापिस आ गए। कार जब कुएँ पर आकर रुकी तो पता लगा कि मौनी जी महाराज पाँच बजे लुधियाना ही शरीर छोड़ गए। इतने में चिप्पी वाले प्रेमी को बोले! प्रातः पूछता था पुनः आने का कारण, अब समझ गया? प्रेमी के भी हृदय रूपी आँखों में अब कुछ प्रकाश हुआ, यह सारा खेल भी दोबारा आने की तारीख देना, लंगर वालों को जल्दी लाने की आज्ञा करना ताकि महापुरुष के शरीर आने से पूर्व सब लंगर छक लें, पोथी का छः बजे की बजाय पौने पाँच ही बंद कर देना ताकि पंद्रह मिनट पहले खाली होकर ठीक पाँच बजे मौनी जी के अन्तिम विदा वाली अर्थी पर पुष्प वर्षा करनी, बेगमपुरा नगर के सहवासी मित्र की स्मृति में आज सैर को भी न जाना, उस मित्र के ज्ञान अग्नि के ताप से शुद्ध किए पावन-शरीर को पूरे सत्कार के साथ लेने के लिए बड़ी तेजी के साथ आगे सड़क पर पहुँचना आदि फिल्म बड़ी तेज़ गति से प्रेमी की आँखों के आगे से निकल गई। वाणी से सहज ही उच्च स्वर में ये शब्द निकले—

धन्य है अन्तर्यामी दाता, धन्य है अलौकिक प्रीतम, धन्य है प्यारों का कद्रदान। आज्ञा हुई, शरीर को पूर्ण सत्कार के साथ चारपाई पर रख लो, पास ही सुखमनी साहिब का पाठ आरम्भ कर लो जो पूरी तरह संस्कार तक निरंतर करना है। दूसरे दिन अर्थात् 22 मार्च, 1989 को करनाल किसी प्रेमी के घर अखण्ड पाठ के भोग पर पहुँचना था इसलिए कुलवंत सिंह मिस्त्री को रात को ही भेज दिया कि हम प्रातः महापुरुषों के शरीर का संस्कार करके करनाल पहुँचेंगे, इसलिए भोग निश्चित समय

से एक घंटा देर से डालना। महापुरुषों के शरीर के पास संगत ने श्री सुखमनी साहिब का पाठ आरम्भ कर दिया। उधर महाराज जी ने प्रबन्धकों को समझा दिया कि प्रात: छ: बजे यहाँ बाबा बेअंत सिंह जी के पास ही संस्कार करना है इसलिए सब तैयारी कर लो और बाहर की संगत को रातों-रात निमंत्रण भेज दो और साथ ही दस दिनों के बाद भोग की तारीख भी निश्चित कर दी। प्रात: हज़ूर ने स्वयं अरदास करके चिता को अग्नि दी फिर दिया वचन पूरा करने के लिए करनाल की ओर प्रस्थान किया। निश्चित दिन पर अर्थात् भोग से एक दिन पूर्व आप खोख गाँव पहुँच गए। उधर ऋषिकेश से आदरणीय संत जोध सिंह जी भी आ गए। भोग पर श्रद्धांजलि समागम उपरांत हज़ूर ने पावन वाक् की कथा की। सायं को किसी प्रेमी ने प्रार्थना की, महाराज मौनी जी दो सरपंचों को वस्त्र दे गए हैं, इसका क्या अभिप्राय है? हज़ूर बोले—बीजवपन कर गए। मौनी जी के भोग के ऊपर बताए अनुसार संत जोध सिंह जी भी आए हुए थे। रात को लंगर छकने के बाद आम संगत घर को भेज दो। इसके उपरान्त दोनों महापुरुष आराम करने के लिए ऊपर चौबारे में चले गए। आश्रम की एवं प्रबन्ध सम्बन्धी विचार-विमर्श करते रात्रि को साढ़े बारह बजे का समय हो आया तो संत जोध सिंह जी ने निवेदन किया महाराज संत गंगा राम बहुत बीमार है जो कि अस्पताल दाखिल कराया है, उसके शरीर को कष्ट भी बहुत उठ रहा है जो देखा नहीं जाता। उसने आश्रम की बहुत सेवा की है। स्वास्थ्य तो अब क्या होना है, प्राण भी विलग नहीं हो रहे। संत जोध सिंह जी के मुख से सुनकर हज़ूर दो-तीन मिनट मौन बैठे रहे। अंत में आज्ञा की अब आराम कर लो, रात काफ़ी हो गई है। संत जोध सिंह बत्ती बंद करके अपनी चारपाई पर लेट गए, लेकिन जब ध्यान महाराज जी की ओर गया तो वे अपनी चारपाई पर अब भी बैठे थे। संत जोध सिंह जी ने सोचा—हमें विश्राम करने के लिए कह दिया, लेकिन महाराज अभी अपनी किसी गहन-सोच में निमग्न हैं। खैर-अभी प्रात: महाराज जी तो करनाल की ओर चले गए, इधर संत जोध सिंह जी ऋषिकेश को वापिस चले गए। ऋषिकेश पहुँचकर पता चला कि संत गंगा राम जी साढ़े बारह बजे शरीर त्याग गए हैं।

आश्रम में अन्य कमरों का निर्माण

अब पंजाबी संगत की भारी संख्या में आने-जाने के कारण आश्रम में कमरों की कमी महसूस होने लगी। आश्रम, नगर के मध्य होने के कारण कोई रिक्त स्थान भी नहीं जहाँ और कमरे बना लिए जाएँ, लेकिन बनी जगह अब आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए समर्थ भी नहीं, क्योंकि गुरु नानक की कृपा और आपकी फैली कीर्ति के कारण संगत का आना-जाना अधिक रहता है। पुण्य तिथियों के महान् समागमों पर संगत का भारी संख्या में एकत्रित होने के कारण स्थान की अधिक कमी महसूस होने लगी है। कमरों की और आवश्यकता और संगत की सुख-सुविधा को मुख्य रखकर विचार किया गया कि आश्रम के बने मकानों के ऊपर ही और कमरे भी बना लिए जाएँ। इस विचार से छ: कमरे तो पुराने भवन की दूसरी छत पर डाले गए और बाद में आठ कमरे पर्याप्त खुले नए हाल के ऊपर बनाए गए जिनका लैंटर 28 जून, 1989 को डाला गया। इस प्रकार चौदह कमरे नए बन जाने के कारण जगह की काफी हद तक कमी दूर हो गई, लेकिन संगत का प्यार देखते हुए स्थान के सम्बन्ध में सम्भवत: और विचार करना होगा।

बिशनपुरा (लोपे) कुटिया का शिलान्यास

जुलाई 1989 का ज़िक्र है जब हजूर महंत महाराज जी पूज्य विरक्त महाराज जी की पुण्य तिथि मनाने के लिए गोराया पहुँचे हुए थे। यह महान् समागम मनाने के लिए नाभा, खोख आदि कई स्थानों से काफी संख्या में संगत पहुँची हुई थी। महाराज जी के निमित्त श्री अखण्ड पाठ साहिब चल रहे हैं। सायं का सत्संग समाप्त हो गया है। सब संगत लंगर पानी छककर आराम कर रही है। समय रात्रि के लगभग दस बजे हो चला है इसलिए महंत महाराज जी भी अपने कमरे में सुशोभित हैं। इतने में लोपे गाँव से हरबंस सिंह, गुरचरण सिंह, नाहर सिंह और साधु सिंह मिस्त्री आदि छः-सात व्यक्ति हजूर के चरणों में पहुँच कर कोई प्रार्थना करने के लिए खड़े हैं, लेकिन हजूर मन्द-मन्द इस प्रकार मुस्करा रहे हैं जैसे इन प्रेमियों ने जो प्रार्थना करनी है उसको जानते हों, मुस्कान के द्वारा ही मानों पूछे रहे हैं कि रात्रि के दस बजे तुम्हें भीतर से प्रेरणा देने वाला कौन है? खैर-सब इस प्रकार हाथ जोड़े खड़े हैं जैसे अरदास में जुड़े हों। इतने में प्रार्थना की महाराज-कृपा करो, लोपे गाँव में कुटिया बनाओ! आज्ञा हुई-कुटिया किसके लिए निर्मित करनी है। महाराज! आप जी समय-समय पर आकर वहाँ ठहरो, हमें दर्शन, सत्संग और सेवा का समय मिलता रहेगा। हजूर मुस्करा कर बोले हम तो आपके घर भी ठहर जाते हैं—अथवा गुरुद्वारा ठहर जाएंगे। प्रेमियों ने प्रार्थना की महाराज अलग स्थान बन जाए—सामूहिक स्थान जहाँ सब लोग बिना झिझक के आ-जा सकें। हजूर खड़े व्यक्तियों की ओर संकेत करके बोले-ये सब घर खाली ही हैं, जिसमें देखेंगे बैठ जाएँगे। फिर निवेदन किया महाराज! इन खाली घरों को भरने के लिए ही तो निवेदन कर रहे हैं—आप वहाँ बैठोगे तो इन बेचारों की भीतरी रिक्तता भी भर जाएगी। अनुरागियों की प्रार्थना सुनकर हजूर ने नेत्र बंद कर लिए मानों भविष्य को विचार रहे हैं। कुछ क्षणों के पश्चात् कमल नेत्र खोले और ईश्वरीय आदेश किया—ठीक है बना लो! प्रार्थना की—महाराज कृपा करो उसका शिलान्यास अपने पवित्र कर कमलों द्वारा ही रखो। आज्ञा हुई ठीक है, उन्नीस जुलाई को खोख आना ही है और बीस जुलाई को प्रातः यह कार्य कर लेंगे। सत्रह जुलाई को गोराया वाले पुण्य तिथि समागम सम्पूर्ण करके उन्नीस जुलाई को हजूर खोख पहुँच गए। उसी सायंकाल लोपे से भी एक प्रेमी आपके चरणों में खोख पहुँच गया तो दर्शन सत्संग करते रात चरणों में ही व्यतीत की। प्रातः हजूर ने आज्ञा की कि आप चलकर तैयारी कर लो हम आठ बजे पहुँच जाएँगे। प्रेमी ने जाकर संगत को साथ लेकर सारी तैयारी कर ली। इतने में सच्ची सरकार भी पहुँच गई। प्रेमियों ने प्रार्थना की, महाराज पहले बैठकर थोड़ा जल-पान कर लो। आज्ञा हुई पहले काम करें फिर छकेंगे। इतना वचन करके गुरुद्वारा से पीछे की ओर चल पड़े तो एक प्रेमी के कंधे पर हाथ रखकर चलते हुए ही पूछ रहे हैं कुटिया बनाने लगे हैं अब घर नहीं रहना? प्रेमी बेचारा इतने रहस्यमय विचारों को कैसे समझे? खैर-आज्ञा हुई फीता लाओ। मिस्त्री फीता ले आया। हजूर ने सारा माप कराकर आज्ञा दी कि यहाँ नींव रखो। आज्ञानुसार मानकर संगत ने नींव खोद ली, लेकिन आज्ञा हुई अभी और गहरी करो। सही स्थान पर ले जाकर अरदास उपरांत अपने पावन हाथों से नींव रखी। दूसरे दिन खोख गाँव बैठकर अपने पावन कर कमलों द्वारा एक कागज पैंसिल लेकर कुटिया का मानचित्र बनाया। नक्शे के अनुसार आज्ञा की गुरु नानक महाराज का उपदेश चारों वर्णों के लिए सांझा है इसलिए इसके चार गेट बनाने हैं। चारों गेट नक्शे के अनुसार एक दूसरे के सामने बनाने हैं। मिस्त्री ने बाथरुम वाली चौखट छोटी बना ली

कि इसकी इतनी बड़ी की आवश्यकता नहीं है, लेकिन ईश्वरीय आज्ञा हुई इसको उखाड़कर बड़ी बनाओ अर्थात् पूरे माप की लगाओ।

हरिमंदिर साहिब प्रस्थान

वर्णन 1989 के नवम्बर के अंत का है जब आप गोराया कुटिया बैठकर गुरुवाणी का प्रवाह चला रहे थे। आपने प्रातः दरबार साहिब जाकर हुक्मनामा लिया, जो ईश्वरीय वचन आया—

जनम जनम के दूख निवारै सूका मनु साधारै॥
दरसनु भेटत होत निहाला हरि का नामु बीचारै॥
मेरा बैदु गुरु गोविंदा॥
हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा॥ रहाउ॥
समरथ पुरख पूरन बिधाते आपे करणैहारा॥
अपुना दासु हरि आपि उबारिआ नानक नाम अधारा॥

(सो०म० ५, पृष्ठ ६१८)

मुख्य वाक् लेने के उपरान्त मनमोहन सिंह के घर गए, क्योंकि उसने अपने घर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के लिए एक नया कमरा बनाया था। उसमें श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का पहला प्रकाश कराने के लिए आपजी से समय लिया हुआ था। आगे कड़ाह प्रसाद बनाकर सारी तैयारी कर रखी थी। अरदास के उपरान्त हजूर ने वाक् लिया तो वही प्रातः वाला वाक् ही आया। मनमोहन सिंह के घर से जलपान लेकर मास्टर राजेन्द्र सिंह की फैक्टरी पहुँचे, वहाँ बिजली के स्विच के नए शैड का उद्घाटन करना था। कीर्तन उपरान्त अरदास करके जब आप जी ने हुक्मनामा लिया तो यहाँ भी प्रातः वाला ही आया। फिर यहाँ से प्रभजीत सिंह सूरी की फैक्टरी नयी कोठी बनाने के लिए नींव रखनी थी, इसलिए अब यहाँ पहुँचे। कार से उतरते ही वचन किया—आज प्रातः से गुरु अर्जुन देव महाराज एक ही वचन प्रदान करके याद कर रहे हैं। नींव रखने की तैयारी करके अरदास उपरान्त मुख्य वाक् लिया—यहाँ भी ईश्वरीय हुक्म वही प्रातः वाला आया। चरणजीत सिंह ने प्रार्थना की महाराज! क्या लीला कर रहे हो, प्रातः का एक ही हुक्मनामा आ रहा है? आज्ञा की, भाई सहज ही हो रहा है—गुरु अर्जुन देव महाराज बुला रहे हैं, तुम ऐसा करो कुटिया से हमारे वस्त्र ले आओ—हम उजागर सिंह सूरी की बाहर वाली फैक्टरी जा रहे हैं, वहाँ से श्री अमृतसर को चलेंगे। श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी के दर्शन और पवित्र सरोवर के स्नान करने के लिए। फैक्टरी से जब श्री अमृतसर जाने का अपना विचार उजागर सिंह सूरी को बताया तो सूरी ने प्रार्थना की—महाराज! आज चुनाव हो रहा है—पुलिस स्थान-स्थान पर रोक कर तलाशी करेगी—इसलिए आज रद्द कर दो, कल चलेंगे? हजूर ने आज्ञा की—हम तो आज ही जा रहे हैं। आप कल आ जाना। आप जी का आज ही जाने का निश्चय जानकर चार-पाँच गाड़ियाँ तैयार हो गईं। जब चलने लगे तो चरणजीत ने प्रार्थना की—महाराज आप जी का एक वस्त्र कुटिया रह गया है-आज्ञा हो तो मैं ले जाऊँ? आज्ञा की अब एक मिनट भी देरी नहीं करनी —कुटिया की ओर होकर ही निकल चलो। जब कुटिया पहुँचे तो आपने आज्ञा की कि संतरों की तीन बोरियाँ जो निर्मल सिंह कपूरथला वाला लेकर आया था, गाड़ी में रख लो। श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी के पवित्र चरणों में भेंट करेंगे। आज्ञानुसार संतरों की तीनों बोरियाँ गाड़ी में रखकर चल पड़े श्री

अमृतसर की ओर। इस प्रकार यात्रा करते धीरे-धीरे जा पहुँचे श्री गुरु रामदास महाराज के पवित्र चरणों में श्री दरबार साहिब। जब पावन सरोवर में स्नान करने लगे तो मीठी-मीठी फुहार कानों में पड़कर मन को आनंदित कर रही थी। स्नान के पश्चात् दरबार साहिब में हो रहे ईश्वरीय कीर्तन के अलौकिक आनंद का ईश्वरीय रस का रसास्वादन करने के लिए जा सुशोभित हुए गुरु अर्जुन देव महाराज जी की पवित्र गोद में। रागी सिंह भी आपके नेत्रों में नेत्र मिलाकर अलौकिक वाणी के कीर्तन रस में ऐसा लीन हुए कि डेढ़ घंटे से लगभग मंत्र मुग्ध हुए बाहर-भीतर से भीगकर अमृत वर्षा करते रहे। कीर्तन करते-करते अचानक इस प्रकार आरती पढ़नी आरम्भ कर दी जैसे कोई अपने इष्ट देव की आरती उतार रहा हो। महाराज उसी समय उठ खड़े हुए। संगत ने बाहर बोर्ड पर हुक्मनामा लिखा देखा। जो प्रातः आया था—

जनम जनम के दूख निवारै सूका मनु साधारै॥

फिर लंगर की ओर आए, लेकिन लंगर बंद हो चुका था। आज्ञा की कि संतरों की बोरियाँ उठा लाओ जो प्रेमी आज्ञा मानकर उठा लाए। लंगर के नीचे जाकर जहाँ लेकर पकता है वहाँ सफाई करते सेवादारों को बाँट दिए। जब बाहर आए, सेवादार लंगर लेकर आ गया—उस समय आप सीढ़ियाँ उतर रहे थे, तो लंगर के प्रसादे हाथों पर लेकर वहीं खड़ों ने ही छक लिए। यहाँ से चलकर फिर निर्मल सिंह के पास कपूरथले पहुँचे। वहाँ से जलपान लेकर वापिस गोराया आ गए।

दुबई तथा श्रीलंका की यात्रा

सिंधी संगत, जिनको परमेश्वर ने प्रेम की दात अत्यंत प्रसन्न होकर थोक में प्रदान की है इनके प्रेम के वशीभूत हुए और इनकी प्रेमपूर्वक की गई प्रार्थनाओं को स्वीकार करके परम पूज्य महंत रामसिंह जी महाराज प्रति वर्ष दो-ढ़ाई मास बम्बई आदि स्थानों पर इनके पास व्यतीत करते हैं। इस वर्ष अर्थात् 1990 के जनवरी मास इनके प्रेम के वशीभूत हुए बम्बई पहुँच गए। इस समय आपजी के साथ आदरणीय संत जोध सिंह जी भी थे। प्रेमियों की भावना के अनुसार दो-दो चार-चार दिन समयानुसार एक-एक पड़ाव पर प्रदान किए हैं। समय पूरा होने पर दूसरे पड़ाव वाले प्रेमी ले जाते हैं। प्रत्येक पड़ाव के आस-पास संगत की प्रार्थनाएँ स्वीकार करके घरों में भी प्रायः चरण डालने जाते हैं। प्रातः-सायं निश्चित समय पर तो संगत एकत्रित होकर कीर्तन करती ही हैं और आप भी समय-समय कथा प्रवचनों द्वारा अमृतमय वर्षा करते रहते हैं। परन्तु दिन में आई संगत को भी उपदेश रूपी वर्षा होती रहती है। इस प्रकार जो ड्यूटी उस परमेश्वर ने सौंपी है—जगत् उद्धार की—वही चौबीस घंटे निरंतर जारी रहती है।

एक दिन सिंधी प्रेमी हीरानंद अदनानी दुबई वाला हजूर को कई वर्षों से प्रार्थनाएँ कर रहा है दुबई दर्शन देने के लिए, लेकिन अभी तक आपने स्वीकार नहीं की थी। आज कुछ ऐसे भासित हो रहा है कि उसकी प्रार्थना स्वीकार हो गई। आज्ञा कर दी—ठीक है वीज़ा आदि का प्रबन्ध कर लो। आपकी ओर से दुबई जाने का प्रोग्राम सुनकर संगत ने भी प्रार्थना की—साथ में जाने के लिए। आपने सबको आज्ञा दे दी कि ठीक है कि जिसके कागज़ आदि बनते हैं बना लो। वीज़ा आदि कागज़ पत्र तैयार हो जाने पर पूज्य महंत जी महाराज, आदरणीय संत जोध सिंह जी, हीरानंद, गुरबख्श बेलानी, मोहिनी मनसुखानी, प्रमिला संगतानी और मीरां चैनानी आदि संगत को साथ लेकर 26.2.1990 को बम्बई से जहाज़ द्वारा दुबई पहुँचे। आगे हीरानंद अदनानी, अपने परिवार सहित हवाई अड्डे पर पहुँचा हुआ था। वह बड़े आदर के साथ हजूर एवं सारी संगत को कारों

में बिठाकर अपने घर ले गए। दुबई के नियमानुसार इस देश में इस्लाम के बिना किसी अन्य धर्म का प्रचार नहीं किया जा सकता, लेकिन आप तो हैं ही धर्म का स्वरूप। धर्म के बिना रंचमात्र कोई अन्य वस्तु नहीं है फिर कैसे हो सकता है कि धर्म की बात न की जाए? यदि कोई सूर्य को कहे कि हमारे देश में अपनी मर्ज़ी के साथ प्रकाश करना नियम के विरुद्ध है तो क्या वह नियम सूर्य पर लागू हो जाएगा? क्या सूर्य अपना स्वभाव बदल लेगा? कदापि नहीं। यह शरीयत के बंधन तो हमारे आदि गुरु श्री गुरु नानक देव महाराज पाँच सौ वर्ष पहले ही तोड़ गए थे—मक्के, बगदाद की उदासी (लम्बी यात्रा) के समय। आप जितने दिन दुबई ठहरे प्रतिदिन कथा सत्संग करते। सिंधी, पंजाबी संगत प्रतिदिन सुनती। गुरुवाणी की कथा व्याख्या का लाभ उठाती। अपने-अपने घरों में चरण डलवाते। आप जी ने गुरुवाणी के शब्दों की जो व्याख्या दुबई यात्रा के दौरान की, प्रेमियों ने सब रिकॉर्ड कर ली जो आज कैसटों के द्वारा घरों में सुनते हैं। इस प्रकार लगभग बारह दिन इस्लामी देश दुबई में गुरु नानक के घर का प्रचार करके 10.3.1990 को वापिस बम्बई आ गए।

उधर श्रीलंका से माता कमला भगवान दास हिरदेरमानी और उसके पुत्र किशोर हिरदेरमानी और जनक हिरदेरमानी भी काफी समय से आपजी को श्रीलंका आने की प्रार्थना कर रहे थे। दैवयोग से आज वह भी स्वीकार हो गई। श्रीमान् संत जोध सिंह जी और श्री गुरबख्श सिंह बेलानी को साथ ले जाकर 12.3.1990 को वायुयान द्वारा कोलम्बो जा पहुँचे। वहाँ प्राय: सिंधी संगत ही अधिक है। जब उनको पता लगा कि परम पूज्य महंत बाबा बुड्ढा सिंह जी की गद्दी के वारिस आए हैं तो बहुत संगत दर्शन हेतु आई। सत्संग गुरुवाणी का प्रवाह तो आपका स्वभाव ही है—जहाँ जाएँ सहज ही प्रस्फुटित हो जाता है। श्रीलंका की संगत प्रतिदिन लगी इस अमृत के सोते (झरने) में गोते लगाने। प्रेमी संगत सब अपने-अपने घर लेकर गई। श्रद्धावान् और पात्र जानकर कईयों को नाम की दात भी प्रदान की। संगत ने कोलम्बो के विशेष स्थानों के दर्शन आदि भी कराए। अपने चाय के बागों में भी पवित्र चरण डलवाए। किशोर हिरदेरमानी प्रार्थना करके अपनी फैक्टरियों में ले गए। उस स्थान के पास ही एक बड़ा प्लाट खरीदा हुआ था। प्रार्थना की महाराज—कृपा करो ये फैक्टरियाँ शीघ्र तैयार हो जाएँ। इस किशोर हिरदेरमानी ग्रुप ने महाराज जी के पवित्र कर कमलों से अपने एक बंगले की नींव भी रखवाई। उस बंगले का नक्शा जिसकी नींव रखी इतना बड़ा था जिसमें आम धनियों से बड़े तो नौकरों के लिए फ्लैट थे।*

उसमें स्विमिंग पूल के अतिरिक्त बड़े कमरों जितने बाथरुम थे। इस हिरदेरमानी ग्रुप नाम की यह फर्म श्रीलंका के धनी ग्रुपों में एक नम्बर की है। उस समय इस हिरदेरमानी परिवार के पास विदेश की बड़ी-बड़ी 90 कारें थीं, इस प्रकार दस-बारह दिन कोलम्बो नगर में गुरुवाणी की सुगंध बिखेर कर प्रेमी संगत को गुरुवाणी प्रेम की दात का छींटा देकर प्रेमियों की प्रार्थना स्वीकार करते हुए पुन: आने का वचन देकर 24.3.1990 को वापिस बम्बई आ गए। अब निर्मल आश्रम अस्पताल का उद्घाटन समय भी समीप आ गया था। इसलिए बम्बई की संगत को वैशाखी पर आने का निमंत्रण देकर वापिस ऋषिकेश आ गए।

---

* *जब आप 1992 में पुन: श्रीलंका गए तो वह बंगला तैयार हो चुका था। आप जी के निवास का भी इस बंगले में ही प्रबन्ध किया गया और वे दोनों फैक्टरियाँ भी तैयार हो गईं।*

अस्पताल का उद्घाटन समारोह

पर-उपकारी महापुरुषों ने आज से चार वर्ष पूर्व अर्थात् 1986 को वैशाखी के पवित्र दिन पर निर्मल आश्रम अस्पताल रूपी वृक्ष का जो बीज वपन किया था वह चार वर्षों के समय में ज़रूरतमंदों को शीतल छाया एवं मधुर फल देने के योग्य हो गया। उसका तीन-मंजिला भवन तैयार होकर उसमें आवश्यकतानुसार सब सुविधाएँ जुटा दीं और डॉक्टर आदि स्टाफ की भी नियुक्ति कर ली गई अर्थात् हर प्रकार से तैयार होकर सेवा आरम्भ करने के लिए उस पर-उपकारी दिन की प्रतीक्षा करने लगा जिसकी गुरु घर में विशेष महानता है। आज से दो सौ इकानवें वर्ष पूर्व दशमेश पिता ने दीन-दुखियों की रक्षा करने हेतु शस्त्रधारी पंथ की सर्जना करने के लिए वैशाखी के इस पवित्र दिन का चुनाव किया। इसलिए महापुरुषों ने भी इस लोक कल्याण के कार्य को आरम्भ करने के लिए इस शुभ दिवस का ही चुनाव किया। इस समागम के लिए पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, बम्बई और विदेशों में बैठी सब संगत को निमंत्रण पत्र भेज दिए गए कि तेरह अप्रैल 1990 के वैशाखी के पवित्र दिवस पर निर्मल आश्रम अस्पताल के उद्घाटन समारोह हो रहे हैं, इसलिए आप सब संगत उस भले कार्य में सम्मिलित होकर गुरु नानक की खुशियाँ प्राप्त करो। इस समागम को मनाने के लिए दस तारीख वाले दिन ही भारी संख्या में संगत आश्रम पहुँच गई। ग्यारह अप्रैल वाले दिन प्रात: ही श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के स्वरूप को एक भारी जलूस के आकार में अस्पताल को लेकर चले। आगे-आगे शंख, घंटी पीछे-पीछे पंक्ति में गुरु साहिब जी के स्वरूप संगत शीश पर उठाकर ऊँचे स्वर में अखंड सतिनाम वाहिगुरु का जाप करती जा रही है। सारे मार्ग में पुष्प वर्षा होती रही। अस्पताल की तीसरी मंजिल में प्रात: दस बजे ग्यारह श्री अखण्ड पाठ साहिब और एक श्री जपुजी साहिब जी के अखण्ड जाप आरम्भ किए गए। दो दिन सत्संग, कथा, प्रवचन, गुरु के लंगर आदि के खुले प्रवाह चलते रहे। तेरह अप्रैल वैशाखी के पवित्र दिन पर प्रात: नौ बजे ग्यारह अखंड पाठ साहिब जी के मर्यादानुसार भोग डाले गए। ठीक दस बजे अस्पताल के पिछली ओर खुले पंडाल में दीवान सजाए गए। इस समय तक पंजाब, करनाल, दिल्ली एवं बम्बई आदि स्थानों से भारी संख्या में संगत पहुँच चुकी थी और काफी संख्या में साधु महात्मा, डेरों के महंत और निर्मल पंचायती अखाड़ा के श्री महंत साहिब श्रीमान् संत बलबीर सिंह जी शास्त्री और अन्य प्रतिष्ठित महात्मा भी पंडाल (मंडप) में सुशोभित हो गए। इस समय रागियों की ओर से एक घंटा तक रस युक्त कीर्तन करने के उपरान्त संत समागम आरम्भ हुआ। संत समागम में अन्यों के अतिरिक्त संत रघुबीर सिंह जी बनारस वाले, संत रघुबर दयाल जी शास्त्री महामण्डलेश्वर ऋषिकेश वाले और श्री महंत साहिब महंत बलबीर सिंह जी निर्मल पंचायती अखाड़ा कनखल की ओर से परम पूज्य श्रीमान् १०८ महंत राम सिंह जी की पावन देख-रेख में निर्मल आश्रम की ओर से लोक कल्याण के कार्यों की अत्यधिक प्रशंसा की गई। श्री रघुबर दयाल शास्त्री जी ने पूज्य महंत बाबा रामसिंह जी की निर्देशन में, आदरणीय संत जोध सिंह जी की और सम्मान के योग्य संत गुरिंदर सिंह जी छोटू बाबा की भी पूर्ण प्रशंसा की कि बड़ी योग्यता एवं कुशलता के साथ आश्रम के उत्तरदायित्व को संभाल रहे हैं इसलिए आश्रम बड़ी तीव्र गति से प्रगति के मार्ग की ओर अग्रसर है। इसके पश्चात् परम पूज्य महंत राम सिंह महाराज जी ने प्रात: आए मुख्य वाक् की बहुत मर्मस्पर्शी और अर्थों से परिपूर्ण व्याख्या इस प्रकार की—

सोरठि महला ५ ॥

अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सभ मलु खोई॥
गुण निधान भगतन कउ बरतनि बिरला पावै कोई॥

मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई॥
जा की सरणि पइआं सुखु पाईऐ बाहुड़ि दूखु ना होई॥ रहाउ॥
वडभागी साधसंगु परापति तिन भेटत दुरमति खोई॥
तिन की धूरि नानकु दासु बाछै जिन हरि नामु रिदै परोई॥

(पृष्ठ ११७)

एक ओंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि॥
॥ जपु ॥
आदि सचु जुगादि सचु है भी सचु नानक होसी भी सचु॥

(पृष्ठ १)

सतगुरु महाराज जी की अपार कृपा मेहर बखशिश के वरदान स्वरूप सारी संगत श्रद्धा प्रेम के साथ बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

ब्रह्म मुहूर्त के अखण्ड पाठ साहिब के भोग और हुक्मनामा पंचम पातशाह धन्य-धन्य साहिब श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज जी के पवित्र श्री मुख से, पावन रसना से, पवित्र हृदय से, पवित्र अति पवित्र हृदय स्थित परमात्मा की ज्योति से भाई हम उपकृत हैं। इस शब्द के भीतर गुरु साहिबान गुरु अर्जुन देव महाराज जी परमात्मा की भक्ति की दृढ़ता हमें करा रहे हैं। परमात्मा की भक्ति गुरु ही करा सकता है जो कि परमात्मा स्वरूप होता है।

गुरु साक्षात् पारब्रहम॥
गुरु परमेसरु एको जाणु॥
जो तिसु भावै सो परवाणु॥

(गौ०म० ५, पृष्ठ ८६४)

सो पूर्ण पुरुष ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मनिष्ठ विरक्त शिरोमणि संत बाबा निक्का सिंह जी महाराज **ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता** परमात्मा स्वरूप हम सबको भाई मिले, क्योंकि वह किसी से अलग नहीं। जब वह गुरु, जब वह परमात्मा स्वरूप है तो हम उनसे अलग कैसे हो सकते हैं। खिलौने चीनी के, चीनी से अलग कैसे हो सकते हैं। आभूषण सोने के, सोने से अलग कैसे हो सकते हैं, बर्तन मिट्टी के, मिट्टी से अलग कैसे हो सकते हैं?

ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु॥
एकहि आपि नही कछु भरमु॥

(ग: सुखमनी म: ५, पृष्ठ २८७)

आप ही परमात्मा जब उपदेश देता है तो उसको गुरु कहा जाता है, जब सुन रहा है, उसको शिष्य कहा जाता है। सिक्ख, शिष्य कोई परमात्मा अथवा गुरु से अलग वस्तु नहीं।

आपि कथै आपि सुननैहारु॥

(ग: सुखमनी: म: ५, पृष्ठ २९२)

जिस हृदय में बैठकर कथन कर रहा है, उपदेश कर रहा है उसको गुरु कह देते हैं, संत कह देते हैं, महापुरुष कह देते हैं, ब्रह्मज्ञानी कह देते हैं और जिसके हृदय में बैठकर श्रवण कर रहा है, सुन रहा है, अपना ही नाद, अपनी ही वाणी, अपना ही उपदेश उसको हम शिष्य कह देते हैं, सिक्ख कह देते हैं, गुरुमुख कह देते हैं। तो गुरुसिक्ख वह है, जो परमात्मा के नाद

को सुन रहा है और दोनों में आप स्वयं मौजूद हैं, आप हाज़िर हैं, पर दोनों में हाज़िर होते हुए उसकी अपनी असंगता, अपनी निर्लिप्तता स्थिर रहती है। किसी भी उपाधि के साथ स्पर्श नहीं करता, करता हुआ प्रतीत हो रहा है, लेकिन उसके भीतर कोई विकार नहीं आता। आकाश में सूर्य देख रहे हैं, यदि उस सूर्य की किरण एक सरोवर के जल पर पड़ रही है, उस सूर्य की किरण एक नाली के जल पर पड़ रही है तो न सूर्य की किरण सरोवर पर पड़ने के कारण पवित्र हो रही है और न नाली पर पड़ने के कारण अपवित्र हो रही है। उसकी असंगता स्थिर है। इसी प्रकार जो परमात्मा है, जो ज्ञान है, वह शुद्ध है, वह निर्विकार है—

असंगो ही पुरषा असंगो नहीं सजयते॥

(गीता)

सबको सत्ता स्फूर्ति देता हुआ भी आप ज्यों का त्यों है, पर वह ज्यों का त्यों समझ में जब आ जाए—

है तउ सही लखै जउ कोई

(गौ: बावन अखरी: कबीर जी पृष्ठ ३४२)

उस ज्ञान के लिए ही हम गुरु के चरणों में आए हैं, आना है, आते रहना है। यह आत्मज्ञान भाई बिना गुरु से कोई करा नहीं सकता।

एको एकु कहै सभु कोई

(दखणी ओंकार, पृष्ठ ९३०)

कहना आसान है एक, आसान अर्थात् कि मन की रसना का मुख का विषय बना लेना, लेकिन उसने बन नहीं जाना। **अगम अगोचर अलख निरंजन** मन बुद्धि का विषय नहीं है किसी भी इन्द्रिय का विषय नहीं है, बल्कि मन बुद्धि इन्द्रिय जो हैं भाई उस परमात्मा के आत्मा के विषय हैं। आत्मा के सम्मुख हैं, आत्मा दृष्टा है, आत्मा 'पारख' है—

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिया॥

(माझ वार:१ पन्ना १४४)

वह अपना आप है और पहचान, वह आँख, वह श्रद्धा, वह विश्वास, उसकी दृढ़ता वह सतगुरु के संग के साथ है। सतगुरु की कृपा के साथ है, सतगुरु को सर्वव्यापक जानकर है। सतगुरु का उपदेश, सतगुरु का शब्द जिसके हृदय में बस जाता है उस हृदय में शब्दी परमात्मा भाई प्रकट हो जाता है और ऐसे व्यक्ति कम ही हैं—

हैनि विरले नाही घणे फैल फकड़ु संसारु॥

(श्लोक वारां ते वधीक म: १, पृष्ठ १४११)

'कोई हरिआ बूट रहिउ री' कोई विरला-विरला, इसलिए कि अनेकता में एक है। वह आप ही है। वहाँ दूसरे उसका अधिकपन अथवा ज्यादापन नहीं है। जो वस्तु सर्वत्र होती है जो वस्तु सब स्थान पर है—

जिमी जमान कि विखे समसत एक जोत है॥
ना वाध है ना घाट है ना घाट वाध होत है॥

(दशम् ग्रंथ)

लाभ-हानि, घटना-बढ़ना यह संसार है, यह ठीक है कि रजोगुण छोड़ दिया, तमो गुण छोड़ दिया तो संसार सतोगुणी है। यह संसार का ही एक अंग है, जहाँ भी किसी बात में कम अथवा ज्यादा हो रहा है, बन अथवा बिगड़ रहा है, जन्म अथवा

मृत्यु है, द्वन्द्व है—दो सिरे हैं। उसका नाम ही संसार है, उसका नाम ही अनित्यता है और गुरुसाहिब इस शब्द में पहला अक्षर ही अविनाशी ले रहे हैं जो नाश से रहित है जो सर्वव्यापक है, जो परिपूर्ण है, इसमें कभी बढ़ोत्तरी भाई हो नहीं सकती। वह अपना आप है वह सतगुरु की कृपा के साथ ही भाई लखता में आता है। यदि उसको ज्ञान न हो तो मनुष्य जीवन और उसका उद्देश्य क्या हुआ? यह जो मनुष्य जीवन हमें मिला है उसके साक्षात्कार के लिए तो मिला है—

भई परापति मानुख देहुरीआ॥

गोबिंद मिलण की इह बरीआ॥

(आ०म० ५ पृष्ठ १२)

साक्षात्कार के लिए और यदि कहो भाई साक्षात्कार नहीं करना, जानना नहीं कि वह ज्ञान स्वरूप है, वह आप ही आप है, तो फिर मनुष्य जीवन किसके लिए? मनुष्य जीवन में आकर उसको जानना है। गुरु कृपा के साथ वह जो अपना आप है, जो भ्रम के कारण भाई हम कहीं दूर मान रहे हैं और भ्रम के कारण ही फिर सुखों दु:खों में पड़ कर मानते हैं, कभी नहीं मानते, माया के प्रभाव के नीचे आ जाते हैं। यह समस्त आवरण ही अज्ञानता की निवृत्ति के लिए ही यह मनुष्य जीवन जो भाई हमें प्राप्त हुआ है, अज्ञानता की निवृत्ति के लिए और उस प्राप्त की ही प्राप्ति के लिए चाहे नित्य प्राप्त है, लेकिन हाथ खड़ा करके कोई भी बताए कि उसको इस बात का बोध है जो नित्य प्राप्त है? ठीक है मुझे इस बात का बोध हो गया अथवा नहीं हुआ तो फिर संग करना ही है गुरु का। फिर गुरु ही इस भ्रम की निवृत्ति करेगा जो अप्राप्तवत् हमें लग रहा है, हमें तो संसार नित्य भासता है और महाराज वृद्ध संत बाबा भगत सिंह जी, वे कहते थे कि बेटा यदि अंत समय तुम्हारा ध्यान, तुम्हारी सुरति एक खूँटे में ही चली गई तो भी तेरा जन्म होगा ही, अवश्य होगा। हम तो कितने बड़े संसार को सत्य मानकर उसके पीछे अपने हाथ पाँव दौड़ाते हैं, वृत्तियाँ दौड़ाते हैं, कर्म करते हैं, दिन रात एक कर रहे हैं और वे कह रहे हैं कि यदि खूँटे में भी ध्यान चला गया, यदि तुमने उसको भी सत्य मान लिया, अपने आपको भूल गया और उस प्राप्ति का तुम्हें चिंतन रहा—यदि अनुकूल वस्तु हुई, यदि प्रतिकूल हुई तो उसे हटाने की तुम्हारे भीतर वासना बन गई तेरा जन्म अवश्य है।

वासना बधा आवै जाइ॥

वह वासना चाहे किसी भी प्रकार की हो—जन्म-मृत्यु अवश्यंभावी है। इसी आने जाने की मुक्ति के लिए ही भाई हम गुरु की शरण में आए हैं, महापुरुषों की शरण में आना है—

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इह बिरदु सुआमी संदा॥

(बिहागड़ा महला ५, पृष्ठ ५४४)

जब हृदयतल से, सच्चे दिल से गुरु परमेश्वर की शरण में हमारा मन आ जाएगा तो भाई फिर परमेश्वर दूर नहीं, फिर परमेश्वर अनित्य नहीं, फिर परमेश्वर पूर्ण है, फिर परमेश्वर नित्य है, फिर परमेश्वर अपना आप है।

पहिले मनु परबोधहि आपणा पाछै अवरु रीझावै॥

पहले अपने-आपको देखना है, अपने मन को देखना है, अपने भीतर झाँकना है कि मेरी अपनी स्थिति क्या है, फिर दूसरे रीझेंगे, फिर दूसरे प्रसन्न होंगे, फिर दूसरों को आनंद मिलेगा। यदि अपने मन के भीतर पहले आनंद परिपूर्ण होगा तो परिपूर्ण तो परमेश्वर की ओर से है ही।

कहु कबीर इहु राम की अंसु॥

(*गौंड बाणी कबीर, पृष्ठ ८७१*)

आनंद तो है, लेकिन साक्षात्कार नहीं। गुरु कृपा से भाई जब उस आनंद का साक्षात्कार हो जाता है फिर उससे अन्य भी प्रेरित होता है—

आपि मुकतु मुकतु करै संसारु॥
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु॥

(*ग: सुखमनी, म : 5, पृष्ठ २९५*)

ऐसा वह जो मुक्त पुरुष है—परमेश्वर स्वरूप, आत्म वेत्ता, ऐसे व्यक्ति को भाई बारम्बार नमस्कार है और नमस्कार के साथ क्या होता है कि हमारे मन की अहंता जो है भाई वह टूटती है, अहंकार का पर्दा जो है वह टूटता है और वह अहंकार का पर्दा ही तोड़ना है और कुछ शेष करना नहीं है। पूर्ण व्यापक में कर्म की क्रिया तो होती नहीं है, क्रिया तो परिच्छन्न में होती है। जो देशकाल से सम्बन्धित वस्तु हो—उसमें क्रिया होती है। व्यापक में तो—

ना कछु आइबो ना कछु जाइबो राम की दुहाई॥

(*ध० भ० त्रि० पृष्ठ ६९५*)

परमेश्वर की सौगंध है भाई—आने-जाने वाला कुछ नहीं। वह स्वयं ही परिपूर्ण व्यापक परमेश्वर है, वह अविनाशी है। उसका बोध भाई पंचम पातशाह गुरु अर्जुन देव महाराज जी जो करा रहे हैं वह महाराज जी की कृपा के साथ इस मन बुद्धि के माध्यम से करते हैं भाई।

सोरठि महला ५॥

सोरठ राग में पंचम पातशाह गुरु अर्जुन देव जी महाराज भाई कृपा करते हैं—

अबिनासी जीअन को दाता

अबिनासी-नाश रहित परमात्मा भाव सदा सत्य स्वरूप जैसे अभी महापुरुष कह रहे थे कि वह है, वस्तु है या नहीं है, वह नहीं के समय भी है, वस्तु के समय में भी है, केवल वह है।

कई बार पसरिउ पासार॥ सदा सदा इकु ऍकंकार॥

(*गउड़ी सु : म : ५, पृष्ठ २७६*)

जहाँ यह वस्तुएँ नहीं हैं वहाँ भी है और जहाँ वस्तुएँ हैं वहाँ भी है, वहाँ भी यह अधिष्ठान है। वह आप ही इन वस्तुओं का। यह वस्तुओं के नाम रुपद हैं, नाम रूप सारे परिवर्तनशील हैं।

जो सुख नित प्रकाश बिभू नाम रुप आधार॥
मती न लखै जिह मती लखै सो मैं सुध अपार॥

समस्त नाम रूप जितना भी परपंच है, जितना भी यह संसार है दृष्टमान, दृश्य और अदृश्य दोनों ही। दृश्य के समय भी एक वृत्ति है और अदृश्य के समय भी वृत्ति ही है, जब कुछ सामने चीज़ें बनी हैं—उस समय हम कहते हैं हमारी वृत्ति के सम्मुख यह कुछ है, हमारे मन के सामने यह कुछ है उस समय भी एक मन की वृत्ति ही है, जब मन के सम्मुख चीज़ें नहीं हम कहते हैं हमारा मन बिल्कुल रिक्त है, बिल्कुल एकांत है, बहुत स्थिर है—अब तो बहुत आनंद है। जहाँ बहुत

अस्थिरता है—बहुत आनंद है वह भी अन्त:करण की एक वृत्ति ही है जो कह रही कि वहाँ कुछ नहीं है, नहीं न कौन कहता वहाँ? कौन माध्यम बनता यह उस कहने का? वह भी एक वृत्ति है। जहाँ है वस्तु और जहाँ नहीं है वस्तु दोनों का जो अधिष्ठान है, दोनों वृत्तियों का जो अधिष्ठान है, दोनों का प्रकाशन है, वह अपना आप है, क्योंकि जहाँ वृत्ति नहीं है। जहाँ एकांत है, वही जो अपना आप होता है। जब हम कहते हैं वृत्ति है उस समय अपना आप कहाँ चला गया, अपना आप तो उस समय भी है। जहाँ वृत्ति है जहाँ सामान है, अपना आप तो उस समय भी है, क्योंकि वह नित्य है, वह अविनाशी है।

पहला शब्द है गुरु साहिब का—कभी नाश नहीं होता। तुम्हारी वृत्तियाँ आकार के स्वरूप हुई हैं वह अविनाशी उस समय भी है। जो वृत्ति आकार से रहित हो गई है उस समय भी है। दोनों ही वृत्तियों का जो प्रकाशक है, वह अपना आप है।

जहा बोल तह अछर आवा
जहा अबोल तह मनु न रहावा।
बोल अबोल मधि है सोई॥

(गउड़ी पूरबी बावन अखरी कबीर जी, पृष्ठ ३४०)

लेकिन हम बोलने से डर कर अर्थात् कोलाहल से डर कर तंग आकर दु:खी होकर फिर सोचते हैं कि 'मौन' अवस्था आ जाए, एकांत आ जाए, शून्यता आ जाए। बस यह ठीक है और गुरु साहिब कहते हैं कि वह भी तुम थोड़े हो? तुम तो उसके भी प्रकाशक हो, उसका भी ज्ञाता है। दोनों ही अवस्थाओं को जो देखने वाला है, तुम तो वही हो, उससे तुम ऊपर उठो, वह तुम नहीं, जो भी तेरे ज्ञान में आ रहा है वह तुम नहीं। तुम ज्ञान हो, वह ज्ञान ही नित्य है। वृत्तियाँ नित्य नहीं होतीं बदलती रहती हैं। वृत्तियाँ तो—अब हम इस विचार में बैठे हैं—सतोगुण में, अभी हम तमोगुण में चले जाएँगे—रजोगुण में चले जाएँगे। वृत्तियाँ तो बदलती जा रही हैं—प्रवाहित, नित्य प्रवाह, लेकिन इस प्रवाहित संसार को देख कौन रहा है जो अविनाशी है जो कभी प्रवाहित नहीं हुआ। प्रवाह कहाँ-कहाँ जाए, व्यापक वस्तु कहाँ से जाये और कहाँ जाये? न उसमें कहाँ से न उसमें कहीं से।

ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होइ॥

(रामानंद जी, पृष्ठ ११९५)

उसके सम्बन्ध में पंचम पातशाह कहते हैं वह अविनाशी जो है परमेश्वर—वह भाई हम जीवों का दाता है। हम सब का वही दाता है। हम सब की रचना करके केवल सांसारिक सुविधाएँ ही हमें नहीं दीं, केवल सांसारिक सुख ही हमें नहीं दिए केवल माता-पिता भाई बहन आदि। मैं, मेरा यहाँ तक वह सीमित नहीं है परमेश्वर बल्कि वह अविनाशी परमेश्वर ने अपने आप से भाई कुछ भी छिपा कर नहीं रखा। सब कुछ ही उसने हमें दे दिया—

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए॥
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए॥

(सूही महला ५, पृष्ठ ७४९)

हरिजन मिले, भक्ति मिली, जीवित वस्तु मिली, आत्मा ज्ञान मिला, भाव परमात्मा मिला। परमात्मा जब सिक्ख को मिला, उस समय परमात्मा ने अपने पास कुछ नहीं रखा, सब का सब आ गया। हम जितने मर्जी दाता बन जाएँ कुछ न कुछ

बचा लेते हैं, पहले तो बहुत कुछ बचाया—देते ही कम हैं, बहुत कम। **'सेवा थोरी मांगन बहुता'**। और जो कुछ भाई दे भी रहे हैं कितना कुछ देते हैं? विचार करें यदि सब कुछ दे भी देंगे—जो कुछ दिया तो वह तो रख लिया न, कि मैंने समस्त दे दिया, यह वृत्ति तो फिर रख ली न, यह अहंकार तो फिर रख लिया न, परमेश्वर ने इतना भी नहीं रखा कि मैं इस सृष्टि को बनाकर दात दे रहा हूँ, नहीं परमेश्वर आप ही आ गया—लेकिन उसने तो कुछ नहीं रखा।

ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु॥
एकहि आपि नही कछु भरमु॥

(गउड़ी सु: म: ५, पृष्ठ २८७)

उसने तो ही **'ब्रहम महि जनु और जन महि पारब्रहमु'** कहा। पारब्रह्म अब जन से विलग नहीं रहा। हमारे पास तो दातें अलग हैं और हम दाता अलग बने रहते हैं। दातें देकर भी लाख, दो लाख, दस लाख, देकर भी चीज़ें देकर भी-लेकिन बने रहते हैं दाता। वह अब बाद में कुछ नहीं बन रहा, वह सारा का सारा ही उतर गया, सारा का सारा ही प्रवेश कर गया—अपने जीवों में, अपनी सृष्टि में।

कुदरित करि कै वसिआ सोई॥

(सिरीरागु की वार म: ४, पृष्ठ ८३)

अत: जो परिपूर्ण व्यापक परमेश्वर है वह आत्मिक रूप के साथ सब में भाई परिपूर्ण है, वही अविनाशी है। पंचम पातशाह कहते-वही दाता है—**'सिमरत सभ मलु खोई'**॥ और ऐसा जो परमेश्वर है भाई अपने पास कुछ भी बचा कर नहीं रखता। सब कुछ ही हमें दे देता है, आप ही हमारे पास आ जाता है। ऐसा जो दाता परमेश्वर है, स्वामी है, प्रभु है, वाहिगुरु है उसका भाई सिमरन करो। महाराज कहते हैं उसका तुम ध्यान करो उसकी तुम भक्ति करो, तो क्या होगा? **सिमरत सभ मलु खोई।।** सारी जो मैल है—

जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु॥

(सो: वार, पृष्ठ ६५१)

जो मन विक्षिप्त था, चंचल था भाई, वह समस्त ही जब परमेश्वर का सिमरन करेंगे साफ हो जाएगा, फिर कहीं भी मैल नहीं रहेगी मन की, तन में भी मैल नहीं रहेगी। इसका तन और मन सारा ही पवित्र हो जाना है जब उस अविनाशी परमेश्वर का तुम भजन करोगे।

गुण निधान भगतन कउ बरतनि

व्यवहार के लिए—परमेश्वर का नाम स्वयं जपें और दुनिया को जपायें—वहीं भक्त है। परमेश्वर के नाम का रस आप छके और दूसरों को छकाना, इसलिए है परमेश्वर भक्तों के पास। तो यह लक्ष्य की पूर्णता, बिना सतगुरु की कृपा से भाई नहीं होती। परमेश्वर का नाम, रस रूप हो जाए, वह हमारा व्यवहार संसार के बीच ही हो जाए अर्थात् संसार में काम-काज करते हुए हम परमेश्वर के नाम को न भूलें। उठते ही पहला काम जीवन में, दिन में परमेश्वर के नाम जपने का है, लेकिन यह हम अब झाँक कर देखें, प्रात: उठते हैं तो प्रात: होते ही नाम चलता है, नाम सिमरन होता है। जो काम परमेश्वर की ओर से लगाया गया है वह हो रहा है कि नहीं, कि जो कार्य अपनी इच्छा द्वारा हम करना चाहते हैं, संसार में उसी का ही चिंतन चलता रहता है पर शायद मन से जो सृष्टि हमने बनाई है, रची है, रचना करनी चाह रहे हैं उसका ही चिन्तन चल रहा है। तो

गुरु के पास इसलिए आए हैं कि चिंतन उसका चले जो रचयिता है, जो सर्जक है, जो बनाने वाला है, परमात्मा है, जो अविनाशी है।

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै॥

(गु०की०वार०, पृष्ठ ३०५)

गुरु राम दास जी, गुरु अर्जुन देव जी महाराज जी के गुरु देव कह रहे हैं और अर्जुन गुरु तो ही बने जब गुरुदेव के वचन माने हैं, और अगर वचन का पालन किया है तो इसका मतलब प्रातः उठते ही उन्होंने नाम जपा है। वे आप ही तो इसको परिभाषित कर रहे हैं—गुरु सिक्ख को—

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै॥

पहला कार्य परमेश्वर के नाम जपने का है उठते ही, और यदि प्रातः उठते ही परमेश्वर के नाम का ध्यान भाई हमारे बिल्कुल पक्का हो जाता, और दिन भर हम अपना व्यवसाय करेंगे तब उस परमेश्वर का भय मन में रहेगा, परमेश्वर का प्रेम रहेगा और सोते हुए फिर परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए उसी चिंतन में सो जाएँगे, फिर परमेश्वर दूर नहीं हैं, उस व्यक्ति से गुरु दूर नहीं है। उस दिन से फिर गुरु परमेश्वर सदैव उसके साथ हैं, उसके अंग-संग हैं, लेकिन यदि नाम के साथ ध्यान जुड़े तो। ब्रह्म मुहूर्त में उठकर हमने देखना है, निरीक्षण करना है, जो हम सुनते हैं पर अभी शायद इतना अभ्यास हो नहीं रहा इस ओर। श्रवण की रुचि जाग रही है, परन्तु श्रवण के पश्चात् मनन की रुचि जो है वह नहीं जाग्रत की। जब मनन की रुचि जाग्रत हो गई फिर तो '**सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ॥ अंतरगति तीरथि मलि नाउ॥**'

तब तो परमेश्वर स्वरूप ही है, तब तो परमेश्वर हम से अलग है ही नहीं, लेकिन हम तो उसको अभी अलग मानते हैं, कहीं और है, समय असमय उसको पुकारते हैं जब कभी कोई दुःख की घड़ी आती है अथवा सुख के क्षणों में भी पुकारते हैं—वह भी अपने स्वार्थ के लिए कि जो सुख हम अपनी कल्पना के अनुसार उस गति में उस क्रिया में मानते हैं, वह मिल जाए हमें, इसलिए उसको स्मरण करते हैं। समझो आज जैसे विवाह का अवसर है तो वह इसलिए कि वह सफल हो जाए। इसके पीछे भी अपना सुख है फिर या सुख के लिए किया या दुःख के लिए किया, भाव संसार के लिए ही उसको स्मरण किया। इसका अभिप्राय यह है कि संसार को सत्य माना है और जब संसार को ही सत्य माना है तो गुरु की चरण शरण क्या ली? संसार तो महाराज कहते हैं—

इहु जगु धूए का पहार॥ तै साचा मानिआ किह बिचारि॥

(बसंतु मः ९ पृष्ठ ११८६)

लेकिन यह सोच भी तो गलत है कि अब शुभ घड़ी में गुरु महाराज जी के नाम का ओट-आसरा लेते—या दुःख में न लें, सुख-दुःख के समय लेना है, तो फिर यह लेकर के यहाँ से अपने जीवन का लक्ष्य लेना है जो हमारे सुखों में भी सुख रूप आप है और दुःखों में भी दुःख को काटकर सुख आप देने वाला है, उस सुख स्वरूप को हमने भाई जान लेना है, उसको पा लेना है जो सदैव हमारे साथ रहे। समय-असमय उसको केवल क्यों बुलाना है—क्यों न सदा के लिए ही उसको बुला लें जो तैयार है आने के लिए। जब दाता आने को तत्पर फिर क्यों न उस वस्तु को ग्रहण कर लें। अपना लें, धारण कर लें जीवन में, जो भाई स्वयतः सिद्ध सब को दे रहा है।

बिरला पावै कोई॥

पर महाराज कहते हैं यह भक्ति का वरदान जो है कोई विरला ही प्राप्त करता है जिसके बड़े भाग्य हों।

पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी॥

मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी॥

(गउड़ी म: ५, पृष्ठ २०४)

शुभ कर्म, पुण्य कर्म, सेवा, दूसरों को दिया सुख जब इस प्रकार पुण्य कर्म भाई जाग्रत होते हैं परमेश्वर का आदेश होता है वह फिर अंकुर फूटता है—फिर संत गुरु के साथ भाई मिलाप होता है। मिलाप तो अब भी हमारा हो रहा है, लेकिन मिलकर अभी कुछ प्राप्त नहीं किया—जो प्राप्त करना चाहते हैं अथवा चाहते थे। वाणी द्वारा, गीता द्वारा, सत्संग द्वारा, महापुरुषों के द्वारा जो बताया जा रहा है यह अभी प्राप्त नहीं किया, उससे अभी रिक्त हैं, उससे वंचित हैं, उससे अधूरे हैं अपने आपको मान रहे हैं। वह पूर्ण पद की प्राप्ति के लिए यह शुभ कर्म प्रस्फुटित होते हैं तो महापुरुषों का भाई मिलाप होता है—

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा॥

नामु प्रभु का लागा मीठा॥

(गउड़ी सु: म: ५, पृष्ठ २९३)

फिर परमेश्वर का नाम, उसका स्मरण, उसकी भक्ति, उसका ध्यान, उसका रस, उसका रूप हो जाता है वह अपने आप फिर भाई प्रकट होता है।

मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई॥

हे मेरे मन पंचम पातशाह अपने मन द्वारा हमें उपदेश करते हैं, हम पर कृपा करते हैं, हम पर दया करते हैं, लेकिन अपने मन द्वारा, उत्तम पुरुष द्वारा। इस शैली को महान् गिना गया है, श्रेष्ठ गिना गया है किसी को कहना कि तुम ऐसा करो, किसी को कहना तुम जप करो। नहीं, अपने आपको जाप में लगा लेना-दूसरा अपने आप लग जाएगा। महापुरुषों ने अपने आपको गुरु कृपा के साथ, आत्मा के साथ, परमात्मा के साथ जोड़ा है, अभेद हुए, आत्मा परमात्मा की एकता का बोध हुआ, तो उसकी सुगंध, उससे सुख हम सहज ही ले रहे हैं। यही नहीं कि महापुरुषों ने हमें विशेष रूप से दिया, वह देना तो उनका स्वभाव ही हो गया था, और उन्होंने दु:ख थोड़ा ही देना था महापुरुषों ने। न दु:ख देते हैं, वे तो सुख देते हैं सुख रूप हो गए होते हैं। उद्यान में फूले खिले हैं, वे ये नहीं कि सुगंधि दे रहे हैं, वह है हीं सुगंध। सुगंध कोई विशेष करके नहीं दे रहे, यदि विशेष करके सुगंधि पुष्प दे रहा हो तो पहले देखे कि मेरे पास लेने वाला खड़ा भी है कि मैं सुगंधि दे रहा हूँ। परन्तु यदि हम नहीं भी होते तो भी दिए जा रहा है यह सुगंधि। सुगंधि तो उद्यान में भी निरंतर है। इसी प्रकार ब्रह्म ज्ञानी जो है भाई वह तो सुख रूप है। **ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा॥**

वह तो सहज स्वत: ही सुख दे ही रहा है, सुख उससे प्रस्फुटित हो ही रहा है। वह तो झरना है जैसे फूटता है पर्वतों में से—तो दिन-रात वह जल निकलता जा रहा है वहाँ से, लेकिन जहाँ मोटर है अथवा नल है यहाँ दिन-रात नहीं, यहाँ बटन दबेगा अथवा नल चलाएंगे तो जल निकलेगा, वह भी कभी बढ़ेगा, कभी कम होगा, कभी कैसे होगा—तो निरंतर नहीं रहेगा। झरना निरंतर रहेगा, झरना सहज स्वत: अपना आप। इसी प्रकार महापुरुष ब्रह्मज्ञानी जन जो हैं, सहज स्वत: उनकी इन्द्रियाँ उनका जो शरीर है, भाई वे काम करते हैं और भलाई का काम करते हैं और जो भी मनुष्य जिस से भी भले का कार्य हो रहा

है समझे वही महापुरुष है, जो आप सुख भोग रहा है और दूसरा उससे सुखी हो रहा है बस इतनी बात, पुष्प आप सुगंधि से भरा है और दूसरे को दे रहा है। इसी प्रकार ही महापुरुष आप सुख स्वरूप हैं और दूसरे को भी अर्थात् उस प्रकृति को भी सुख प्रदान कर रहा है। इसी प्रकार परमात्मा कुदरत को सुख प्रदान कर रहा है, तुम्हें हमें सुख प्रदान कर रहा है। उस सुख की थोड़ी सी भनक के कारण ही हम चाहते हैं कि हमें सुख मिले, लेकिन अभी युक्ति नहीं आती, तरीका नहीं आता कि वह कैसे मिले, कैसे धारण करें, इसी ओर अभी नहीं चले। सुख अच्छा तो लगता, सुगंधि अच्छी तो लगती है, लेकिन बगीचे में जाना पड़ेगा, उसके पास जाना पड़ेगा बगीचे में, पुष्पों में सुगंधि तो है ही, तो इस संसार में परमात्मा का सुख फैला हुआ है।

सभहू को रस हरि हो॥

हरि परमेश्वर का रस कण-कण में है, सर्वत्र है और सुख-स्वरूप अपना आप है, इसलिए बाह्य सुख भी अच्छा लगता है। वह सुख स्वरूप अपना आप न होता तो बाह्य सुख हमें अच्छा नहीं था लगना, जैसा कि बाह्य दु:ख हमें अच्छा नहीं लगता। दु:ख-सुख सारे बाहर ही हैं—भीतर नहीं। भीतर तो भाई अमृत भरा है, भीतर तो सुख स्वरूप परमेश्वर है, भीतर तो सत् चित्त आनंद है और बाहर भी हमें वही वस्तु ठीक लगती है, वही अच्छी लगती है जो भीतर के भाव के साथ अनुकूल होती है। यदि हमारे भीतर दु:ख रूप होता तो हमारा स्वरूप दु:ख रूप होता। परमेश्वर से अलग कोई अन्य न ही, भाव यदि हम परमेश्वर से अलग कुछ होते तो हमें बाह्य दु:ख अच्छे लगने चाहिएँ थे। अब बाह्य दु:ख अच्छे नहीं लगते, बाहर से हमें सुख अच्छे लगते हैं, भाव हम चाहते हैं, क्योंकि परमात्मा सुख रूप है, आत्मा सुख रूप है, सुख रूप अपना आप है लेकिन इस बात का आज भी निश्चय नहीं हो रहा, तो जब इसकी विचार बिल्कुल ठीक हो जाती है, फिर इसको निश्चय आ जाता है, कि हाँ मेरा तो स्वरूप यही है और जब अपने स्वरूप का ठीक बोध हो गया तो महाराज कहते कि ऐसे व्यक्ति विरले हैं। उस परमेश्वर-गुरु की कृपा से, क्योंकि साक्षात्कार हुआ है और गुरु के चरणों में तो कोई विरले ही आते हैं शेष तो संसार के पास ही जा रहे हैं। यदि गुरु परमेश्वर समीप आ रहे हैं तो भी संसार के लिए ही आ रहे हैं—इस से आगे निकलना भी नहीं चाहते हम। लेकिन इससे आगे कितना कुछ है—यह संसार इतना है क्या? यही इति नहीं, रोज़ पढ़ेंगे।

कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी

(सोरठ म ५: पृष्ठ ६१२)

धरती होरु परै होरु होरु॥

(जपुजी: पृष्ठ ३)

पाताला पाताल लख आगासा आगास॥

(जपुजी : पृष्ठ ५)

लेकिन हम इस संसार में ही हाथ-पैर चलाते रहते हैं—बस भई यह मिल जाए। ऐसे तो कितने संसार, कितनी प्रकृति एक संकल्प मात्र में बनी पड़ी है, लेकिन जिस संकल्प, सत्य संकल्प जिस परमेश्वर के हैं उस परमेश्वर को तू प्राप्त कर। उस अधिष्ठान को तो अर्थात् एक किरण को तू न पकड़, सूर्य को तू पकड़। यदि किरण के साथ तुम प्रसन्न हो रहे हो, तेरी खेतियाँ पक रही हैं, तेरे समस्त सुख तुम्हें यहाँ दे रहा है, ताप दे रहा है, प्रकाश दे रहा है, सर्दी में कितना अच्छा लगता है, गरमी में भी, क्योंकि फसलें पकती हैं इसके साथ, यदि वे रश्मियां अच्छी लगती हैं तो उन रश्मियों तक ही सीमित मत हो

जा, ये रश्मियाँ कहाँ से आ रही हैं? वहाँ कितना सुख होगा? यह तो एक नमूना मात्र है। इस संसार के जो सुख-दु:ख हैं दोनों ही एक नमूना मात्र हैं। इन सुखों में अटक नहीं जाना भाई, इससे आगे एक महान सुख है, वह स्रोत है, हमने तो वहाँ पहुँचना है। वहाँ गुरु पहुँचा सकता है—और कोई नहीं पहुँचा सकता, क्योंकि गुरु वहाँ पहुँचा होता है, गुरु वहाँ खड़ा होता है, गुरु वहाँ अभेद होता है। उसके पास तो दात ही वही है, लेकिन हम उस गुरु की दात को संसार में परिच्छिन्नता में ले आते हैं, भाव उसको प्राप्त नहीं कर रहे, नहीं जान रहे गुरु को, अभी तो गुरु को जानना है भाई, हालांकि जब जानता है जब जानने वाला अलग नहीं रहेगा, जैसे भाई लहणा ने। यदि गुरु नानक को, अपना गुरु जान लिया तो लहणा भिन्न नहीं रहा। लहणा तो वहाँ गुरु अंगद हो गया। इसी प्रकार यदि गुरु को हम कह दें जानना है, तो यह नहीं कि अलग होकर कि हम ने उसको जानना है, उसको अपने साथ, पहले उसका शब्द श्वास-श्वास चले, उसका स्मरण चले, उसका ध्यान चले—

गुर की मूरति मन महि धिआनु॥
गुर कै शबदि मंत्र मनु मान॥

(गो: म: ५, पृष्ठ ८६४)

फिर जानने वाला क्या और जाना गया क्या? एक हो जाएगा। दर्शन क्या, द्रष्टा क्या, दृश्य क्या? एक रूप हो जाएगा—

एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रुप है हरि रुपु नदरी आइआ॥

(अनंदु साहिब म: ३, पृष्ठ ९२२)

चीनी क्या, खिलौने क्या, एक रूप हो जाएँगे। हैं ही एक रूप, भ्रम की निवृत्ति हो जाएगी। अल्प सुख में हम जो अटके हुए हैं, यहाँ से भाई अपने मन को विचार के साथ आगे ले जाना है और जब विचार के साथ मन आगे जाएगा तब मन यह नहीं रहेगा, भाव मैला मन आगे नहीं जा सकता। पवित्र मन ने ही आगे जाना है और मन में पवित्र फिर स्मरण के साथ ही होना है—

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाई॥
अंम्रित नामु रिद माहि समाई॥

(ग: सु: म: ५, पृष्ठ २६३)

और जिनका मन भाई पवित्र हो गया, वह पवित्र अति पवित्र परमात्मा के साथ जा मिले। वे अल्प सुख में नहीं अटके। जिन महापुरुषों का हम तुम ने संग किया है गुरुदेवों के महाराज विरक्त जी के। कुटिया से वर्षा में चले एक बार पंजाब को। और पानीपत बैठे हैं महाराज कृष्ण जी, उस समय पास ही थे इस कुटिया में। वे कहने लगे महाराज आजकल आप चले हैं, वर्षा में पंजाब को चले हो, भाव यहाँ सब सुख सुविधा है, कुटिया में सब व्यवस्था है और आजकल लोग चौमासे में एक स्थान पर ही टिके रहते हैं, जो साधक होते हैं, भाई टिक जाओ एक स्थान पर। वे कहने लगे भाई यदि इस कुटिया से चले तो बाइपास से हमारा कदम चलता गया, फिर जब कुटिया के सुख याद आ गए तो फिर संत काहे के हुए हम। अल्प सुख छोड़ दिए, अल्प सुख में नहीं अटके, लेकिन हम अल्प सुख में अटके हुए हैं। अल्प का अर्थ है 'थोड़ा' अल्प नाम समस्त संसार का ही है। समस्त संसार के स्वामी भी चाहे क्यों न हो जाए। **सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ॥** अल्प यह नहीं कि अपना घर ही, नगर यहाँ-वहाँ सारा संसार जितना भी बनाया हुआ सारा ही अल्प है। किरण सूर्य नहीं, एक दृष्टि से सूर्य भी हो जाएगी। जब उसके अस्तित्व में पहुँच जाएँगे, जब उसकी वास्तविकता पर पहुँच जाएँगे, जब उसके मूल पर पहुँच जाएँगे, फिर तो बूँद भी सागर, सागर भी बूँद, फिर कोई भिन्नता नहीं, लेकिन अभी हम पहुँचे नहीं। बिना पहुँचे व्यक्ति यदि पहुँची जगह की बात करता रहेगा उसके पल्ले कुछ नहीं पड़ना, उसका जीवन व्यर्थ चले जाना है। जीवन तो मिला था प्राप्त करने

के लिए, उस रहस्य को जानने के लिए, उस गुरु की कृपा के साथ ही यह ज्ञान, यह कृपा जो है दृढ़ होती है। अपने आप नहीं हो सकती। यदि अपने आप इस ज्ञान की प्राप्ति हो जाए तो गुरु की तो आवश्यकता ही न पड़े। बिना गुरु के बताओ ज्ञान किस को हुआ? वह गुरु चाहे इस पृथ्वी पर हो, इस मातृलोक में गुरु कृपा से गुरु बना हो, अथवा चाहे ऊपर से परमेश्वर स्वयं आप गुरु रूप धारण करके आया हो। **''जोति रुपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ''** चाहे परमेश्वर स्वयं आए और चाहे अपने स्वरूप सतगुरु के संग के साथ गुरु ज्ञान प्रदान किया हो, जब तक उसका संग नहीं होता तब तक अज्ञान की निवृत्ति तो हो ही नहीं सकती। लेकिन यह उसके संग को ठीक, इसने अभी जाना नहीं अभी, उसको तो मनुष्य जानता है, उसको तो अपने जैसा जान लेता है, उसको तो आने-जाने वाला, खाने-पीने वाला, बात-चीत करने वाला जान लेता है इससे आगे तो बढ़ता ही नहीं कि वह किस स्थान पर खड़ा है, और यदि हम होते तो कुटिया में बैठे रहते—भई ठीक है यहाँ बैठे रहें, वे तो महापुरुष थे जिन्होंने प्रभु को पा लिया था अल्प सुख में नहीं अटके। अल्प सुख परम सुख कहने मात्र में ही हैं, सुख वही है, लेकिन हम तो उपाधियों में अटक गए हैं न! महान् सुख कहेंगे तो भी उसको व्यापक समझकर कह रहे हैं, अल्प सुख कहेंगे तो परिच्छिन्न समझकर कह गए हैं। दोनों में सुख जो है वह वही है और उसका बोध भाई जो है, वह गुरु कृपा के साथ है, तो वह किसी विरले को ही है, लेकिन विरलों में हमारा नम्बर भी लग सकता है। यह नहीं है कि नम्बर नहीं लग सकता—

जा कउ अपुनी करै बखसीस॥ ता का लेखा न गनै जगदीस॥

(गउ सु: म: ५, पृष्ठ २७७)

अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा॥

(सोरठि म: ९, पृष्ठ ६३२)

यदि ऐसे ऐसे पार हो गए हैं भाई! तो हम भी उन जैसे ही हैं। चाहे उन से ज्यादा और भी अधिक हत्यारे होंगे, पापी होंगे, अवगुण भरे होंगे, हैं भी।

जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे॥
दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे॥

(गउ म: १, पृष्ठ १५६)

आप तो दयालु हैं। प्रकाश ने, रोशनी ने यह नहीं देखना कि यह अंधेरा जो है कब का है, नहीं वह अंधेरा, वह अज्ञानता चाहे जन्म-जन्म की हो, चाहे इस जन्म में किसी भूल के कारण हुई हो, उस प्रकाश ने, उस रोशनी ने तुरन्त उस चीज़ को समाप्त कर देना है। आग में जब आप लकड़ी डाल रहे हों तो लकड़ी चाहे नई और चाहे पुरानी वह जल ही जाएगी। चाहे बड़ी, चाहे छोटी वह तो जल ही जानी है। इसी प्रकार प्रकाश ने नहीं देखना कि कितना मलिन है कितना नहीं, वह तो प्रकाश है उसने—

इक छिन जिह इक चित धिआइओ॥
काल फास के बीच न आइओ॥

(दशम् ग्रन्थ)

मन की एकाग्रता होनी चाहिए, चित्त में पूर्ण श्रद्धा होनी चाहिए, उस गुरु को परमेश्वर स्वरुप जानना है और गुरु के शब्द को परमेश्वर स्वरूप जानना, तो गुरु शिष्य के पास शब्द के द्वारा रह सकता है, वैसे नहीं। गुरु, नाम ही शब्द का है और शब्द शब्दी का है, परमेश्वर का है और परमेश्वर सदा है। सदा के साथ ध्यान जब जुड़ गया अविनाशी पद की प्राप्ति हो गई,

हमारा जीवन सुखी हो गया। इस जीवन की छोटी-छोटी इच्छाओं से ही इतने इच्छुक हो जाते हैं कि वास्तविक इच्छा को तो भूल ही गए, जो वास्तविक इच्छा लगनी चाहिए थी—मन में प्यास, तड़प।

राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे॥

(द: ग: ५, पृष्ठ ५३४)

वह तो भूल ही गए और जो चीज़ भाई भुलाने वाली थी उसे याद कर रहे हैं और जो याद करने वाली थी उसको भुला रहे हैं, तो जीवन तो फिर विपरीत दिशा की ओर चला गया। जो याद करने वाली चीज़ है जिस को हम भुला नहीं सकते और जो हमें नहीं भूला रहा कभी भी। हम यदि उसको विस्मृत कर देते हैं, हम यदि गुरुमुख न होकर मनमुख हो जाते हैं, तो उसने तो नहीं हमें भुला देना, वह तो फिर भी याद रखता है, वह तो फिर भी देख रहा है—अच्छे को भी बुरे को भी। यदि वह भुला दे तो बुरे कर्म करेगा ही उसका फल कोन भोगेगा? बुरे कर्म का फल दु:ख वह हमने क्यों भोगना है, जीवन वहाँ पूरा है। जहाँ हमने उसे भुला दिया, क्योंकि हम सुख चाहते हैं तो वह परमेश्वर भाई हमें नहीं भुलाता और हमने भी उसे नहीं भूलना। जीवन अधूरा हो जाएगा। कर्म चक्र चल जाना है, चौरासी का चक्र चल पड़ना है।

इसु पउड़ी ते जो नर चूकै सो आइ जाई दुखु पाइदा॥

(मा: म: ५, पृष्ठ १०७५)

इस मनुष्य जीवन को सफल करना है इसलिए गुरु की चरण-शरण भाई श्रद्धा सहित धारण करनी है। चाहे महाराज पंचम पातशाह कहते-कोई विशेष ही जानता है, लेकिन उन विशेष में हम भी हो सकते हैं—ऐसा कोई बात नहीं। कोई विशेष ही कहा है, ऐसा नहीं कहा कि अमुक जानता है, अमुक नहीं। चिह्न नम्बर नहीं लगाए, उसमें कोई भी हो सकता है।

जो जो जपै तिस की गति होई॥

(गउ: सु: म: ५, पृष्ठ २७४)

जो भी परमेश्वर के नाम को जपेगा गुरु कृपा के साथ उसकी गति, मुक्ति अवश्य हो जाएगी।

जा की सरणि पइयां सुखु पाईऐ

जिस परमेश्वर की शरण पाने पर भाई सुख की प्राप्ति है, जो परमेश्वर परिपूर्ण व्यापक है, उसकी शरण की तुम्हारा ध्यान उस में हो जाए, जब ध्यान परमेश्वर कहो, गुरु कहो, नाम कहो यह ध्यान और नाम जब एक हो गए तो फिर एक ही है। जब ध्यान नाम से बिना है तो सांसारिक दु:ख-सुख हैं आने-जाने वाला सदा के लिए, वह जन नहीं हो सकता जब तक वह नाम के साथ नहीं जुड़ता।

बाहुड़ि दूखु न होई॥ रहाउ॥

और नाम के साथ जुड़े महाराज कहते हैं कि यह फिर दु:खी नहीं होगा। फिर यह परमेश्वर से बिछड़ नहीं सकेगा। भाई यदि यह एक बार नाम के साथ मिल जाए इसका नाम बिल्कुल स्मरण रूप हो जाए वह स्मृति कभी विस्मृति न हो। एक वृत्ति भी ऐसी न उठे जो कि परमेश्वर से भुलाने वाली हो वृत्ति का उठना ही संसार का खड़ा होना है, वृत्ति नाम मन का है।

संकलप विकलप ही मना, जहाँ वृत्ति है वहीं मन है, जहाँ मन है वहीं तन है जो तन है वहीं संसार है। इस से बढ़कर संसार कोई नहीं। यदि संसार से मन हटा लो तो आ गया शरीर, शरीर से मन को हटा लो आ गया मन, अपना संकल्प और

विकल्प। यहाँ से उठकर देखो कि क्या है— वहाँ नाम है। जहाँ संकल्प चलेगा वहाँ नाम सिमरन नहीं होता और जहाँ नाम सिमरन होता है वहाँ संकल्प नहीं होता। संकल्प की गति वहाँ नहीं होती। साँप तो है, लेकिन विष नहीं, संकल्प शुभ तो होगा, भले का तो होगा, लेकिन उसमें आसक्ति कोई नहीं, वह सत्य में स्थित हो चुका होगा, सत्य आरूढ़ हो चुका होगा उस व्यक्ति में।

वडभागी साधसंगु परापति

सौभाग्य से, भाई पुण्य कर्मों के फलस्वरूप, शुभ कर्मों के साथ परमेश्वर के हुक्म में सत्संग की प्राप्ति होती है, गुरुजनों की प्राप्ति होती है, ज्ञान की प्राप्ति होती है और वास्तविक सत्य के साथ भाई संग हो जाता है।

तिन भेटत दुरमति खोई॥

और वह सत्य के साथ संग होते ही दुरमति, खोटी बुद्धि जो है भाई नाश होगी। प्रकाश के साथ जो अंधकार है वह दूर होना है, वह सत्य जो परिपूर्ण है, सत्य जो अपना आप है, जब तक उसको नहीं देखता और भाई इसकी दुरमति जो है, खोटी बुद्धि जो है दूर नहीं हो सकती—अन्य किसी साधन के साथ।

तिन की धूरि नानक दासु बाछै

और जिनकी भाई दुरमति नाश हो गई गुरु की मत के साथ, ज्ञान वृत्ति आरूढ़ चेतन जो है, उसको सत्य व्यापक जिसने जान लिया, ऐसे व्यक्तियों की चरण धूलि गुरु साहिब कहते हैं हमें चाहिए। ऐसे व्यक्ति ही महाराज विरक्त जी ब्रह्मज्ञानी, जन और ऐसे जनों की चरणधूलि के लिए तो भाई गुरु साहिब लालायित हैं और गुरु तो परमेश्वर रूप हैं और जब वे चाहते हैं तो हमारी कैसे मुक्ति हो जाएगी बिना ऐसी इच्छा के। ऐसी इच्छा की बजाए यदि और इच्छाएँ करते रहे, वह इच्छा यदि न की, ऐसा संग यदि न किया, महापुरुषों का, तो भाई जीवन सफल कैसे होगा?

जिन हरि नामु रिदै परोई॥

और गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं कि भाई जिसने हरि परमेश्वर का नाम अपने हृदय में गुरु-कृपा के साथ पिरो लिया, श्वास-श्वास जो परमेश्वर का नाम सिमरन कर रहा है और मन वहाँ उसका उपस्थित है मन की उपस्थिति के साथ, मन तो सदैव है।

तन महि मनूआ मन महि साचा॥ सो साचा मिलि साचे राचा॥

(धनः मः १, पृष्ठ ६८६)

प्रत्येक शरीर में मन है, केवल मनुष्य नहीं कोई भी योनि हो—कोई भी, कीड़े-मकौड़े जितनी भी योनियाँ है सबके शरीर में मन है और उसके मन में महाराज कहते हैं पंचम पातशाह कि उसमें परमेश्वर है, सत्य स्वरूप है, सत्य वहाँ तो रहता है।

अंतर आतमै ब्रहमु न चीनिआ माइया का मुहताजु भइया॥

(अ.म.३, पृष्ठ ४३५)

और अन्तरात्मा सत्य थी, उसको ब्रह्म तुम ने व्यापक न जाना, माया के अधीन हो गया, यदि उसको तू व्यापक जान ले तो महाराज कहते—वैसा हमें चाहिए, वैसा संगता हमें मिले ताकि हमारा भी ध्यान भाव वहाँ लगे—सत्य में लग जाए।

सो साचा मिलि साचे राचा॥

(धनः मः १, पृष्ठ ६८६)

जब तक सत्य में तुम्हारा ध्यान नहीं लगता, जो अन्तर सत्य है, सत्य तो सर्वत्र है, पर लेकिन अन्तर सत्य के साथ तुम्हारा कार्य आरम्भ होगा और गुरु ने कृपा करके जब नाम देना है तो वह अन्तर सत्य का ही देता है। उस हृदयेश्वर का ही गुरु नाम देता है। गुरु कोई जड़ का उपासक नहीं होता और न किसी को बनाता है। गुरु तो नाम ही ज्ञान का है, चेतन का है, और चेतन के साथ ही जोड़ता है और चेतन सब के मन में बैठा है। उसके साथ गुरु साहिब कहते हैं जब तुम्हारा मन मिल जाएगा, जब तुम एकमेक हो जाओगे, सत्य के साथ तादात्म्य हो जाएगा। जब तू एकमेक हो जाएगा तो व्यापक हो जाएगा। गुरु ने नाम दिया और अन्तरात्मा को उस चेतन के साथ जोड़ा, और जैसे ही उस चेतन का फिर उसको बोध हुआ और व्यापक के समय दूसरी वस्तु और नहीं होगी। व्यापक के समय गुरु और शिष्य की एकता हो जाएगी। घट-घट की उपाधियों की वृत्तियों का मिथ्यात्व निश्चय हो चुका होगा। वहाँ तो केवल एक ही होगा।

सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोई॥
ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि करे॥

(धनः मः १, पृष्ठ ६६०)

परमेश्वर कृपा करता है भाई! तो वह सेवा मिलती है। उसकी स्मृति मिलती है, उसकी स्मृति ही सेवा है, उसके उपदेश को तुमने याद रखा है—यही सेवा है, और जो उपदेश को भूल गया वह चाहे जो उसकी इच्छा है करे, वह सेवा नहीं वह कर्म है और कर्म शुभ का फल अच्छा हो सकता है, शुभ हो सकता है और बुरे का दु:ख, लेकिन जो मोक्ष है जन्म-मृत्यु से मुक्ति वह तो उस सत्य की सेवा यही है कि गुरु-उपदेश हर समय याद रहे। गुरु के उपदेश में उपद्रष्टा परमात्मा जो सर्व व्यापक है आत्मरूप में स्थित है और आत्मा का साक्षात्कार होते ही—फिर गुरु एवं शिष्य दोनों ही एक हैं, फिर समस्त सृष्टि ही एक है, फिर समस्त सृष्टि में स्रष्टा भी एक है—समस्त खिलौनों में चीनी स्वयं है—समस्त बर्तनों में मिट्टी है और समस्त सृष्टि में जब स्रष्टा स्वयं है और जब इस स्वयं का बोध ठीक हो गया—गुरु-कृपा के साथ फिर इसके जीवन की यात्रा जो है भाई! सफलता के साथ पूर्ण होती है और इस सफलता के साथ सम्पूर्ण होना ही जीवन का लक्ष्य है।

सम्पूर्ण सब की हो जानी है। जीवन तो चोर ने भी व्यतीत किया, साधु ने भी जीवन व्यतीत किया, जीवन गुरुमुख भी व्यतीत कर गया और जीवन मनमुख भी व्यतीत कर गया, लेकिन सफलता के साथ सम्पूर्ण होना ही इस जीवन का लक्ष्य है। वह सफलता भाई सतगुरु की कृपा के साथ है।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु।

संत चमन लाल जी

आप का जन्म कमालिया बिरादरी में पिता लाला बहादुर चन्द और माता सीता देवी के घर सन् 1919 में हुआ। अध्ययन समाप्त होने के पश्चात् आपको सैंट्रल बैंक आफ इंडिया में नौकरी मिल गई। इतने में देश विभाजन का बवंडर उठ खड़ा हुआ। उस समय आप पाकिस्तान के क्षेत्र में से आकर पानीपत आ बसे। इसी दौरान आप जी को किसी पूर्व संयोगवश परम पूज्य श्रीमान् १०८ संत निक्का सिंह महाराज जी का संग प्राप्त हो गया। उस समय आपके साथ एक बैंक अफसर श्री लाल

चन्द जी मिड्ढा भी थे। दोनों सज्जनों को जब-जब समय मिलता विरक्त महाराज जी के दर्शन सत्संग का लाभ उठाते रहते थे। वास्तव में इन दोनों अनुरागियों को सब से पहले संत महाराज भगत सिंह जी का संग प्राप्त हुआ था। उस वयोवृद्ध महापुरुष की शरण में कुछ समय सेवा सत्संग का लाभ उठाने के उपरान्त उनकी कृपा द्वारा ही करनाल की अन्य सैकड़ों संगत की भाँति आप जी को भी विरक्त महाराज जी मिले थे। अंतत: नौकरी का समय पूर्ण होने पर सन् 1979 में अम्बाला कैंट से श्री चमनलाल जी डिप्टी चीफ़ आफिसर के पद से सेवा निवृत्त हुए। फिर गृहस्थ का व्यवहार करते हुए अधिक समय महाराज जी के साथ व्यतीत करते रहे। इस समय के दौरान आप विरक्त महाराज जी के साथ पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, ऋषिकेश, कनखल आदि स्थानों पर गए। सन् 1983 के किसी समय विरक्त महाराज जी की आज्ञानुसार निर्मल बाग कनखल पक्के तौर पर ठहर कर सेवा करने लगे। उससे कुछ समय पश्चात् विरक्त महाराज जी ने संत महेश चन्द्र (पंडित जी) को निर्मल वेश प्रदान करके आपके साथ ही कनखल सेवा में लगा दिया। संत चमन लाल जी स्वभाव से मिलनसार और वाणी के माधुर्य से सम्पन्न सज्जन थे। आश्रम में आए प्रत्येक यात्री के साथ बिना किसी भेदभाव के प्रेमपूर्वक व्यवहार करते थे। परमपूज्य बाबा राम सिंह जी की आज्ञा में लंगर, अतिथियों की देखभाल, आर्थिक मसलों और अन्य बाहर-भीतर के कार्यों को कुशलतापूर्वक संभालते रहे। अंतत: **राणा राउ न को रहै रंगु न तुंग फकीर** वाले अकाल पुरख के अटल नियमानुसार हृदय गति के रुक जाने से 20-4-1990 को अपना पाँच भौतिक शरीर त्याग गए। उनकी आत्मिक शान्ति के लिए आश्रम की ओर से एक सहज पाठ आरंभ किया गया और 4-5-1990 वाले दिन निर्मल बाग कनखल में श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ किया गया। 6-5-1990 वाले दिन प्रात: छ: बजे श्री अखंड पाठ साहिब और सहज पाठ के भोग डाले गए। साढ़े आठ से साढ़े ग्यारह तक कीर्तन एवं श्रद्धांजलि समागम हुआ। तत्पश्चात् साधु महात्मा और एकत्रित संगत ने गुरु के लंगर से प्रसाद आदि ग्रहण करके और अन्य दीन निर्धनों के लिए खुले भण्डार वितरित किए गए।

कनखल के नवभवन की नींव

वर्णन 1989 वाली पुण्य तिथि का है जब पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और बम्बई आदि स्थानों से भारी संख्या में संगत कनखल पहुँची हुई थी। कमरों के अभाव के कारण पाठी सिंहों के निवास के लिए निर्मल विरक्त कुटिया में प्रबन्ध किया हुआ था। शेष संगत के लिए लंगर के बरामदों से बाहर गौशाला की ओर एक काफी बड़ा शामियाना लगा कर नीचे दरियाँ आदि बिछाई हुई थीं ताकि संगत रात को यहाँ आराम कर सके। एक रात्रि तो इस प्रकार ठीक व्यतीत हो गई, लेकिन दूसरी रात्रि परमेश्वर की लीला हुई—ज़ोरदार वर्षा आ गई। पूरा-पूरा भेद तो परमेश्वर ही जाने लेकिन ऐसा लग रहा है जैसे इस वर्षा की बहुत आवश्यकता थी। सम्भवत: इसलिए ही परमेश्वर ने वर्षा वाले खेल की रचना की, क्योंकि इस भूमि में एक बहुत बड़ा बीज पड़ा था जिसको अंकुरित होने के लिए नमी की आवश्यकता थी और शायद समय भी आ गया था। खैर-संगत ने शामियाना के नीचे से उठकर लंगर वाला बरामदा, दरबार साहिब वाला बरामदा आदि इधर-उधर सो-बैठ कर रात्रि व्यतीत कर ली, लेकिन शामियाना सारा नीचे गिर गया। कौन जाने इस चार घंटे के कष्ट ने किसी बड़े सुख को जन्म देना है। खैर ज्यों-त्यों करके पुण्य तिथि समागम समाप्त हो गया। अधिकतर संगत महापुरुषों के पवित्र कर कमलों से प्रसाद लेकर वापिस घर को चली गई। शेष लंगर और चाय आदि छक रही है। ऐसे लगता है जैसे हरि से संगत की बेआरामी सहन नहीं हुई।

महापुरुष अपने कमरे से बाहर कुएँ पर आकर खड़े गम्भीर दृष्टि से बाग की ओर देख रहे हैं। गम्भीरता सागर के समान इतनी है कि चेहरे पर तनिक भी मुस्कान नहीं, बस एक टक खड़े दरबार साहिब के पीछे बाग की ओर देख रहे हैं। अब पावन अधर कुछ हिले और बहुत धीमी आवाज़ में बोले—भवन छोटा रह गया, लेकिन ध्यान अभी भी बाग की ओर ही है। समीप खड़े एक प्रेमी ने निवेदन किया—महाराज मकान तो पर्याप्त है आप का परिवार ही बड़ा हो गया है।

महापुरुष बोले—तुम्हारी दृष्टि परिवार पर है हमारी दृष्टि मकान पर है। अनुरागी समझ गया कि अब मकान का किला तो कोई निर्मित होने वाला ही है, क्योंकि स्पष्ट ही जो कह दिया कि हमारी दृष्टि मकान पर है। इन की दृष्टि कैसी है? उसकी परिभाषा गुरु अर्जुन देव महाराज जी ने समझा ही दी।

ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी॥

(ग.सु.म. ५, पृष्ठ २७३)

ऐसी दृष्टि यदि सूखे उद्यान पर पड़ जाए तो वह हरा हो जाता है, बंजर धरती पर पड़ जाए तो मोती उगने आरम्भ हो जाते हैं, बीमार पर पड़ जाए तो निरोग हो जाता है, निष्प्राण शरीर पर पड़ जाए तो वह पुन: जीवित हो जाता है, डूबते पर पड़ जाए तो वह औरों को भी पार उतारने वाला हो जाता है, कंगाल पर पड़ जाए तो धनवान् बना देता है, मूर्ख पर पड़ जाए तो पंडित हो जाता है, पंगु पर पड़ जाए पर्वतारोही हो जाता है—यथा

पिंगुल परबत पारि परे खल चतुर बकीता॥
अंधुले त्रिभवण सूझिआ गुर भेटि पुनीता॥
महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता॥
मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भए चीता॥

(बिलावलु म: ५, पृष्ठ ८०९)

नेत्रहीन पुरुष पर पड़ जाए तो उसे तीनों लोकों का ज्ञान हो जाता है। विषयों की भयंकर अग्नि में जल रही हृदय रूपी तप्त भूमि पर पड़ जाए तो शुभ गुणों रूपी हरा-भरा उद्यान लगकर मन हिम समान शीतल हो जाता है। गणिका पर पड़ जाए तो उसे बैकुण्ठ वासी बना देती है—अभिप्राय यह है कि ऐसा कोई कार्य नहीं जो अनहोया रह जाए, यदि कृपा-दृष्टि पड़ जाए।

देखो! आज पड़ गई मकान की कमी, पर इसका परिणाम क्या सामने आता है?

पुण्य-तिथि के समाप्त होने के कुछ दिन पश्चात् बम्बई का एक समृद्ध सम्पन्न परिवार राधा कल्याण दास दरियानानी चैरिटेबल ट्रस्ट का चेयरमैन श्री प्रेम दरियानानी ऋषिकेश आया। एक दो दिन ठहरने के पश्चात् साधु एवं अन्य निर्धन वर्ग को प्रतिदिन भोजन वितरित होता देख एवं अस्पताल की ओर से दीन दुखियों की हो रही सहायता को देखकर मन द्रवित हो गया। महापुरुषों के चरणों में निवेदन किया महाराज! मैं अपने स्वर्गीय माता-पिता के नाम पर कोई भवन आदि बनाना चाहता हूँ। आप कृपा करके कोई सेवा प्रदान करो जिसके साथ मेरे मन का संकल्प पूर्ण हो जाए। महापुरुष मुस्कराते रहे—आगे से कोई उत्तर नहीं दिया। श्री प्रेम दरियानानी ने फिर निवेदन किया कोई संकेत कर दो जिससे मेरे माता-पिता का नाम रह जाए।

महापुरुषों ने प्रेमी के दृढ़ निश्चय को जानकर आज्ञा की—प्रेमी! कनखल वाले आश्रम में कुछ स्थान की कमी है—हमारा विचार वहाँ कोई बड़ा भवन बनाने का बना है—यदि तुम्हारी कोई सेवा करने की इच्छा है तो उसमें कर लेना।

श्री दरियानानी ने निवेदन किया—महाराज! उस भवन की समस्त सेवा फिर मेरे को ही प्रदान करो। आज्ञा हुई भवन काफी बड़ा बनाना है—जितनी सेवा तुम कर लोगे—उतना तुम्हारे नाम का बोर्ड लगा देंगे। यदि समस्त भवन का खर्चा तुम ने कर लिया समस्त का बोर्ड तुम्हारा लगा दिया जाएगा। यह निर्णय समय पर ही छोड़ दो, जितनी सेवा गुरु नानक तुम्हारे से कराएंगे—उतनी कर लेनी। महापुरुषों से सेवा की अनुमति लेकर श्री प्रेम दरियानानी वापिस बम्बई चला गया। उसके कुछ मास पश्चात् अर्थात् 1990 गर्मियों की ऋतु थी जब नींव रखने के लिए वापिस ऋषिकेश आया तो महापुरुषों ने भवन के कार्य की सफलता के लिए सहज पाठ का भोग डालकर अरदास उपरान्त एक सुन्दर भवन की नींव अपने पवित्र कर कमलों द्वारा रखी। उपरान्त कड़ाह प्रसाद की देग वितरित की गई।

बिशनपुरा (लोपे) कुटिया का उद्घाटन

लगभग सवा वर्ष पूर्व आप जी ने अपने पवित्र कर कमलों से जो लोपे कुटिया की नींव रखी थी उस के निर्माण समय में समय-समय पर आकर जड़ में पानी देते रहे और सेवकों को आवश्यक उत्साह प्रदान करते रहे। इस प्रकार आपकी पूर्ण कृपा के फलस्वरूप वह कुटिया अब बनकर तैयार हो गई। उसके उद्घाटनार्थ आप जी ने 16 नवम्बर, 1990 अर्थात् मार्गशीर्ष मास की संक्रान्ति का पवित्र दिन प्रदान कर दिया। तेरह नवम्बर वाले दिन आप चौधरी माजरा निवास कर रहे थे। अनुरागियों को आज्ञा कर दी कि कल प्रात: हम नौहरे गाँव नछतर सिंह के घर सहज पाठ का भोग डालकर लगभग दस बजे लोपे कुटिया पहुँच जाएंगे—आपने सारी तैयारी कर लेनी है। अखण्ड पाठ हम आकर आरम्भ कराएंगे। प्रेमियों ने निवेदन किया—महाराज! अखंड पाठ साहिब गुरुद्वारा साहिब में आरम्भ कर लें—कुटिया में आप ठहर जाना। आज्ञा हुई कितना सुंदर भवन बना है इसलिए उसमें सब से पहले गुरुओं के गुरु श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के पवित्र चरण पड़ें। दो दिन गुरुवाणी का निरंतर प्रवाह चले, फिर हम ठहर जाया करेंगे। अब समागम के दौरान वहाँ किसी कमरे में ठहर जाएंगे अथवा आपके घर चल पड़ेंगे, इसलिए अखंड पाठ साहिब की तैयारी कुटिया में ही करना। आज्ञानुसार 14 नवंबर, 1990 वाले दिन कुटिया में सारी तैयारी करके श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पावन स्वरूप लाए गए। लगभग दस बजे नौहरे गाँव होकर कुटिया के स्वामी भी आ गए। संगत तो पूर्ण तैयारी करके प्रतीक्षा कर ही रही थी। आपने ज्यों ही कार में से उतर कर कुटिया की ओर प्रथम दृष्टि डाली तो उस समय पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान शान्त चेहरे पर सहस्त्रों सूर्य के समान तेज और कोटि चन्द्रमा के समान शान्त आभा दमक उठी। एक-एक पग धीरे-धीरे कुटिया की ओर उठाते कुटिया की बाह्य आकृति को देख देखकर ऐसे चकित हो रहे हैं जैसे कभी हुए थे शबरी की कुटिया में जाकर, त्रेता युग में। पावन अधरों पर मंद-मंद मुस्कान और चेहरे पर प्रफुल्लता की ओर ध्यानपूर्वक देखा तो ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे भीतर आनंद-सागर प्रवाहित हो रहा हो। भीतर जाकर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब को नमस्कार की फिर दूसरा कमरा और बाथरुम को खोलकर बड़े ध्यानपूर्वक देखा। फिर सीढ़ी से छत पर गए। छत पर क्या गए मानों गगन से वर्षा करने के लिए मेघ ने पूर्ण तैयारी कर ली हो। हाथ में खूँडा पकड़े कुटिया की छत पर खड़ा है अलौकिक प्रीतम किसी गहन मौन में। ओह ज़रा ध्यानपूर्वक देखो! कैसे गगन से पुष्प वर्षा आरम्भ हो गई। अब मौन टूटा, पवित्र अधर हिले, अमृत वर्षा आरम्भ हो गई। वर्षा क्या आरम्भ हुई मानों वरदानों की झड़ी लगा दी—जैसे ग्यारह वर्ष पूर्व किसी और रूप में लगाई थी। इस भूमि में नमी तो चाहे पहली वर्षा की भी थोड़ी बहुत अभी मौजूद थी, लेकिन आज की भरपूर वर्षा ने शायद इसको सदा के लिए तृप्त कर दिया। धन्य है आज 14 नवम्बर, 1990 का दिन और धन्य है आज बरसने

वाला मेघ। खैर-अरदास करके श्री अखंड पाठ साहिब और जपुजी साहिब के अखंड जाप आरम्भ किए गए। दूसरी ओर दरबारा सिंह बाबरपुर वालों की लड़की के घर 'साधोहेड़ी' गाँव जाने का समय दिया हुआ था। वे प्रेमी गाड़ी लेकर आ गए। श्री अखंड पाठ साहिब प्रारम्भ करके आवश्यकतानुसार थोड़ा बहुत जलपान ग्रहण करके गाँव साधोहेड़ी पहुँच गए। उस प्रेमी परिवार ने बड़ी भावुकता के साथ सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त किया। कुछ देर वहाँ बैठकर परमार्थ वचनों की मीठी-मीठी फुहार बरसाते रहे, उपरान्त परिवार की मनोकामना पूर्ण करके वापिस बिशनपुरा (लोपे) कुटिया में आ गए। रात्रि के दस बजे तक सत्संग चलता रहा, उपरान्त 'मल्लेवाल' गाँव से भाई दर्शन सिंह और सुखदेव सिंह ने अपने घरों में चरण डालने की प्रार्थना की। आपने स्वीकार करके आज्ञा दे दी कि परसों भोग के पश्चात् तीसरे प्रहर चलेंगे। भौड़े गाँव से बलदेव सिंह प्रधान गुरुद्वारा साहिब और दूसरा बलदेव सिंह राड़ा, जंग सिंह, गुरदयाल सिंह नम्बरदार और सुरजन सिंह आदि आठ-दस व्यक्तियों ने प्रार्थना की कि महाराज आप जी की कृपा से गुरुद्वारा साहिब पर लैंटर पड़ गया है। आप कृपा करो वहाँ संगत को दर्शन-दीदार दो ताकि संगत अधिक उत्साह के साथ सेवा में जुड़ी रहे। उन प्रेमियों के छल-कपट रहित हृदय देखकर आप बहुत प्रसन्न हुए, आज्ञा की कि परसों सायं को लंगर छककर चलेंगे। अब रात अधिक हुई जानकर सब संगत घर को चली गई, परन्तु अखंड पाठ साहिब के पाठी और कुछ अन्य सेवादार ठहर गए। एक अनुरागी ने प्रार्थना की—महाराज! आपके निवास का प्रबन्ध कर दिया है और अब रात्रि भी अधिक हो गई इसलिए कृपा करो घर चलकर आराम करो। आप जी मुस्कराते हुए कहने लगे! आजकल के समय कब्जा प्रमुख समझा जाता है फिर इतनी सुंदर जगह का कब्जा हम भी कैसे छोड़ें? प्रेमी सुनकर वैसे तो चाहे चुप हो गया लेकिन भीतर से प्रार्थना कर रहा हो, महाराज! दिल से तो मैं भी यही चाहता हूँ कि इस स्थान पर आपका पक्का कब्जा हो जाए, एक क्षण के लिए भी आप इस स्थान से अलग न हों। खैर-रात हजूर ने वहीं साथ के छोटे कमरे में व्यतीत की। दूसरे दिन आस-पास के गाँव की संगत का दर्शन करने के लिए ताँता लगा रहा। सायं को तीसरे प्रहर श्रीमान् संत सुखदेव सिंह जी सिद्धसर अलौहरां वाले भी आए। लगभग घंटा पर उन से भी परमार्थ सम्बन्धी चर्चा होती रही। आज की रात्रि आपने फिर उसी छोटे कमरे में व्यतीत की। संगत में भी सेवा का उत्साह बहुत नज़र आ रहा है। कुटिया, गुरुद्वारा साहिब और अन्य आस-पास वृक्षों आदि पर बल्बों आदि की लड़ियों से इतना प्रकाश किया हुआ था मानों राम जी के आने की खुशी में दीपावली एक रात्रि की बजाए दो रातों तक मनाई जा रही है।

आज सोलह नवम्बर 1990 मार्गशीर्ष की संक्रान्ति का पवित्र दिन है। प्रात: नौ बजे के लगभग श्री अखण्ड पाठ साहिब के भोग उपरान्त कुटिया के बरामदों में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रकाश करके दीवान आरम्भ हो गया। भाई साहिब मुख्तियार सिंह नाभा ने एक घंटे तक बहुत रस युक्त कीर्तन किया। उसके पश्चात् दुनिया भर का प्रसिद्ध रागी जत्था भाई हरजिन्दर सिंह श्री नगर वालों ने भी कीर्तन के द्वारा एक घंटा ऐसी अमृतमय वर्षा की कि सारे श्रोतागण आनंदित हो गए। कीर्तन के द्वारा की गई दो घंटे भारी वर्षा के पश्चात् अब हजूर ने मार्गशीर्ष मास की कथा आरम्भ की जो इस प्रकार है—

मघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह॥
तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह॥
तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह॥
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह॥
तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह॥

जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह॥
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह॥
नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह॥
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह॥

(बारह माहा, पृष्ठ १३५)

एक ओंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि॥
॥ जपु॥
आदि सचु जुगादि सचु॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु॥ १॥

(जपुजी, पृष्ठ -१)

सतगुरु महाराज की असीम कृपा मेहर बख्शिश के फलस्वरूप सारी संगत श्रद्धा प्रेम के साथ बोलो—

सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

हम आज मार्गशीर्ष मास की पवित्र संक्रान्ति के पावन दिवस पर गुरुओं के गुरु धन्य-धन्य श्री गुरु ग्रन्थ साहिब महाराज जी की उपस्थिति में एकत्रित हुए—इस पावन स्थान पर-जिसको महापुरुषों, पूर्ण पुरुष धन्य-धन्य ब्रह्मज्ञानी संत बाबा निक्का सिंह महाराज जी का संग प्राप्त हो चुका है। केवल चरण स्पर्श ही नहीं कहा, महापुरुषों का संग कहा है। महापुरुष अपना संग केवल चरणों के साथ ही नहीं बल्कि हर प्रकार से प्रदान करते हैं—**नानक नदरी नदरि निहाल** अर्थात् कृपा दृष्टि के साथ भी।

हउ पंजे बधे महांबली अते
गुर थापी दिती कंड जीउ॥

कृपा दृष्टि से भी, कर्म से भी अर्थात् जैसे उस प्रभु की आज्ञा होती है महापुरुष उसी प्रकार कार्य करते हैं। अभिप्राय मिलन से है, सम्बन्ध से है, मिलाप से है, कैसे भी हो जाए सम्बन्ध। ईश्वरीय मिलाप, रब्बी मिलाप, परमात्मा का मिलाप, परमात्मा स्वरूप वाणी का मिलाप, शब्द का मिलाप, यह सब कुछ प्रेमाभक्ति का मिलाप, सत्संग का मिलाप, शुभ गुणों का मिलाप, शुभ संकल्पों का मिलाप, शुभ कर्मों का मिलाप, यह सब कुछ मिलकर संयोग होने वाला है, लेकिन इसके अतिरिक्त अर्थात् परमात्मा गुरु के अतिरिक्त इस गुरुमत के अतिरिक्त जो कुछ भी मिलता है वह फिर बिछड़ जाता है : **संजोग विजोग धुरों ही हूआ,** जहाँ मन खड़ा है, जहाँ मन में अहं है, वहाँ मिलाप के पश्चात् वियोग भी साथ है। जहाँ मन मिट गया, अहं टूट गया, गुरु की कृपा हो गई, मन को भीतर ही भीतर ज्ञान की प्राप्ति हो गई : **प्रीतम जानि लेहु मन माही,** फिर वहाँ वियोग नहीं। वहाँ ऐसी वस्तु का मिलन हो गया जो कि अभेद है। जो इस अद्वैत अवस्था में पहुँचे हुए, उस निर्द्वन्द्व अवस्था पर पहुँचे हुए, उस अभेद अवस्था पर पहुँचे हुए, महापुरुष, पूर्ण पुरुष धन्य-धन्य महाराज विरक्त जी—ऐसे जन, ऐसे महापुरुष जिनको प्राप्त हुए भाई! वे भी सारे भाग्यशाली हैं। तभी तो पूर्ण गुरु, पूर्ण संत का मिलाप हुआ—

पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी॥
मिटिउ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी॥

(गउ: पू: म: ५, पृष्ठ २०४)

रामायण में स्वामी तुलसीदास जी वर्णन करते हैं **पुण्य पुंज बिनु मिलहि न संता।** बड़े सौभाग्य, पुण्य कर्म हों तो ही परमात्मा की आज्ञा में इन शुभ कर्मों के फल से संत का मिलाप होता है। **सत-संगति संसृति कर अंता** उस संत के मिलाप

से होता क्या है? संस्कारों का अंत हो जाता है, वासनाओं का अंत हो जाता है। इन वासनाओं के कारण ही जन्म-जन्म का चक्र बंधा हुआ है भाई! **वासनां बधा आवै जाइ॥** परन्तु परमेश्वर का स्वरूप संत मिल गया, **संत अनंतहि अंतरि नाही।**

यथा— **जिना न विसरै नामु से किनेहिआ॥**
भेदु न जाणहु मूलि सांई जेहिआ॥

(अ. म. ५, पृष्ठ ३९७)

जब ऐसे जन मिल गए अर्थात् जब ऐसे महापुरुषों का मिलाप हमारे मन में बस गया, फिर भाई! संसार की इच्छाओं, तृष्णा-वासनाओं का हमारे मन में अंत हो जाता है, संसार का नाश हो जाता है और स्वरूप का बोध हो जाता है। जिस स्वरूप के बोध के लिए, ज्ञान के लिए यह मनुष्य जीवन भाई! धारण किया है। यह तो परमात्मा की असीम कृपा हुई है, मनुष्य शरीर हमें मिला और उस मनुष्य पर कृपा हुई कि पूर्ण पुरुष, महापुरुष संत जब मिले और साक्षात् कृपा कि गुरुओं के गुरु श्री गुरु ग्रन्थ साहिब महाराज जी की उपस्थिति में हाजिरी भर रहे हैं—

बाणी गुरु गुरु है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरु निसतारे॥

(नट म: ४, पृष्ठ ९८२)

गुरु उद्धार कब करता है?

जब सेवक गुरु की आज्ञा को मानता है, आदेश को मानता है, फिर सारे ही अमृत, सारे ही लोक-परलोक के सुख, उस व्यक्ति को, उस सिक्ख को प्राप्त हो जाते हैं, क्योंकि वहाँ फिर यह संयोग, उपदेश के माध्यम से, ज्ञान के द्वारा, प्रेमाभक्ति के द्वारा, निष्काम सेवा के द्वारा प्रवेश करता है। बहुत कुछ उस गुरु से मिला। आज से हम संक्रान्ति के पवित्र दिवस पर यहाँ जुड़े हैं, 'बारहमाह' का पाठ किया, सुना, इसका उच्चारण किसने किया?

गुरु अर्जुन देव महाराज जी ने, जो कि साक्षात् परमेश्वर का स्वरूप है—

घरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरुपी रहिओ भरि॥
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख हरि॥

(सवईए, पृष्ठ १४०९)

भाव गुरु अर्जुन देव परमात्मा से अलग नहीं और परमात्मा गुरु अर्जुन देव जी से अलग नहीं। **एकु जोति दोइ मूरती धनु पिरु कहीऐ सोइ॥**

यह तो महापुरुषों की, संतजनों की, गुरुमुखों का गुण है कि परमात्मा स्वरूप होकर भी ब्रह्मज्ञान को प्राप्त होकर भी अपने आपको दास्य भाव में रखना, अहंकार विहीनता में रखना, अकर्त्ता में रखना, **सभ किछु करता तऊ अकरता** वाले भाव में मन का रहना। मन का ही शोधन करना है, ज्ञान तो पहले ही शुद्ध है। प्रकृति, माया, वह तो एक संकल्प मात्र परमात्मा का आदेश है, सिर्फ शोधन यहाँ केवल मन का होना है और प्रत्येक व्यक्ति का प्रश्न भी यही है कि मन स्थिर नहीं होता? वाणी भी पढ़ते हैं, सत्संग भी करते हैं, महापुरुषों के पास भी जाते हैं, लेकिन मन नहीं टिकता?

प्रश्न नितांत उपयुक्त है, टिकाना भी मन को ही है, लेकिन मन स्थिर होगा तब जब किसी स्थिर वस्तु के साथ मिलेगा। यह अब हमें देखना होगा कि हमारा मन किसी स्थिर वस्तु के साथ, किसी अचल वस्तु के साथ जुड़ा है, सदा रहने वाली वस्तु के साथ जुड़ा हुआ है अथवा फिर उसके मिलने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं, प्रार्थना, अरदास, निवेदन कर रहे हैं। अरदास में माँग तो उन वस्तुओं की है जो क्षण भंगुर है। अरदास में माँग उस वस्तु की हो जो अमर हो। जिन महापुरुषों की याद में

बैठे हैं, महाराज विरक्त जी की, वे स्वयं अपने पवित्र श्रीमुख से एक कृपा कर रहे हैं कि कई भाई साहिब तो इतनी बड़ी अरदास करते हैं कि आधा-आधा घंटा लगा देते हैं और उसमें संसार को ही मांगते रहते हैं। यह हो जाए, वह हो जाए, इस प्रकार नहीं, इस प्रकार हो जाए, भाव आप परमात्मा से बुद्धिमान बनते हैं जबकि परमात्मा भाई हम से अधिक बुद्धिमान है। हमारी बुद्धिमत्ता तो उसके अधीन है। हम तो उस द्वारा रचे गए हैं: **करते की मिति न जानै कीआ॥** उसका अन्त कैसे? उस तक पहुँचे कैसे? उस तक पहुँचने के लिए उस अनंत में लीन होने के लिए स्थिर वस्तु के साथ भाई मिलना है, फिर मन ने स्थिर होना है, फिर मन ने लीन होना है। महापुरुष, गुरु नानक साहिब अपनी रसना के साथ कृपा करते हैं—

कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होई॥
गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होई॥

(आसा वार म: १, पृष्ठ ४६९)

मन को स्थिर करना है, हम ने यहाँ, घड़े की तुलना में। कुंभ नाम घड़े का है—**कुंभे बधा जल रहै॥** घड़े में पानी ठहर जाता है और घड़े में जल न हो? घड़े से बाहर हो जाए, तो वह किसी के भी काम नहीं, वह फिर बह जाएगा, गिर जाएगा और यदि घड़े में हुआ तो टिका भी रहेगा, ठंडा भी हो जाएगा, हमारी प्यास भी बुझाएगा। लेकिन घड़ा जो है जल के बिना नहीं बनता—गुरु नानक पातशाह फरमाते हैं—**जल बिनु कुंभु न होई॥**

यही तो कृपा करते हैं चाहे उसका अधिष्ठान मिट्टी ही है, लेकिन मिट्टी में यदि जल मिला, फिर गूंथा गया और फिर आगे कुम्हार ने भी उसको बनाया—फिर उसमें पानी टिका—गुरु साहिब कृपा करते हैं फिर **कुंभे बधा जलु रहै॥**

इसी प्रकार महाराज कहते हैं फिर **ज्ञान का बधा मनु रहै** और यदि तेरे भीतर स्वरूप का ज्ञान सतगुरु की कृपा से स्थिर हो जाए, प्रकट हो जाए फिर तेरा मन भाई टिक जाएगा। भाव मन के ज्ञान में ही लीन होना है, वही जाकर स्थिर होना है जैसे पानी ने घड़े में जाकर स्थिर होना है इसी प्रकार भाई! हमारे मन ने ज्ञान में ही स्थिर होना है, वह फिर जितना भी है—**मन तूं जोति सरुपु है आपणा मूलु पछाणु॥**

ज्योति स्वरूप परमेश्वर है, वह अपना आप स्वरूप है। अवस्था में स्थिरता ही स्थिरता है। वह अवस्था है—**आदि सचु जुगादि सचु॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु॥**

बहुमूल्य, अजर, अमर, अविनाशी, लेकिन साथ ही कह दिया **गुर बिनु गिआनु न होई॥**

जब तक गुरु की कृपा चरण-शरण तुम्हें प्राप्त नहीं हुई, जब तक गुरु-घर तुम आए नहीं, गुरु की शरण में तुम आए नहीं, गुरु के समीप नहीं पहुँचा, तब तक मन नहीं स्थिर रहता। तात्पर्य मन स्थिर करने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है और ज्ञान गुरु से प्राप्त होता है, तो गुरु द्वार में, गुरु घर में आना है। जब गुरु के द्वार में, गुरु के घर में, गुरु शरण में, हमारा मन आएगा तो फिर ज्ञान दूर नहीं, फिर ज्ञान सम्पूर्ण, व्यापक, अर्थात् ज्ञान ही ज्ञान है, फिर अज्ञान है ही नहीं, फिर प्रकाश ही प्रकाश है, अंधेरा तो भाई है ही नहीं, फिर सुख ही सुख है, दु:ख वहाँ है ही नहीं, फिर भी सुख की कभी अपेक्षा नहीं है, निरपेक्ष सुख है। किसी वस्तु, पदार्थ भोग का सुख नहीं स्वत: प्रकाश है और स्वत: सिद्ध है। उसको सिद्ध अथवा प्रकाश भी कोई दूसरा नहीं कर सकता, वह अपने आप से ही प्राप्त है। दूसरे की वहाँ तक पहुँच कहाँ है? अर्थात् दूसरे की पहुँच नहीं। गुरु नानक पातशाह के चरणों में दूसरा आया, आया तो क्या हुआ?

कौन? भाई लहणा! लेकिन जब भाई लहणा गुरु के द्वार पर आ गया, गुरु नानक के सम्मुख हो गया, गुरु के मत को धारण कर लिया फिर लहणा कहाँ गया?

वह गुरु अंगद है, लहणा कहाँ गया? लहणा गुम हो गया, केवल गुरु अंगद है और गुरु अंगद गुरु नानक है और गुरु नानक स्वयं परमेश्वर है।

जोति रुपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ॥

ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ॥

(सवईये, पृष्ठ १४०८)

वहाँ लहणा नहीं रहा, वहाँ आप ही आप है। वह आप निरंकार ही गुरु नानक का स्वरूप, वह आप निरंकार ही गुरु अंगद देव महाराज जी का रूप बन गया। फिर गुरु अंगद देव महाराज जी के चरणों में कौन आया? अमरु आया, अति साधारण, शक्तिहीन आया, लेकिन जब गुरु अंगद देव जी का उपदेश, जब गुरुमत धारण किया, बारह वर्ष गागरें उठाईं, गुरु की सेवा की, वहाँ फिर अमरु अति साधारण, शक्तिहीन के स्थान पर गुरु अमरदास प्रकट हो गया। वहाँ सामान्य जनों का आदर, शक्तिहीनों की शक्ति, निराश्रितों का आश्रय, मुक्तिहीनों की मुक्ति, पतितों का गौरव, निराधारों का आधार, वहाँ प्रकट हो गया। अमरु कहाँ गया?

और जब गुरु अमरदास के चरणों में भाई जेठा आया और जिसने सेवा की गोइंदवाल बाउली साहिब, शीश पर टोकरे उठाकर फिर जब गुरु की पदवी प्राप्त हो गई **नानक गुर से गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाई॥** तो फिर जेठा कहाँ गया? गुरु रामदास प्रकट हो गया, भाव गुरु अमरदास से अलग अब कोई जेठा नहीं रहा। वही गुरु अमरदास का ही साक्षात् स्वरूप गुरु रामदास है। फिर अर्जुन, गुरु रामदास जी के चरणों में आया, वहाँ अब अर्जुन नहीं। वहाँ गुरु अर्जुन साहिब हो गया।

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मैं नाही॥

(सो॰ बाणी रविदास पृष्ठ ६५७)

एक म्यान में एक तलवार रहेगी—दो नहीं रहेंगी। इसी प्रकार ही एक अद्वैत वस्तु ही सर्वत्र व्यापक है, हर स्थान पर है, प्रत्येक घर में है, हर जन में है, वहाँ वह आप ही आप है, दूसरा नहीं, लेकिन उस परमात्मा की इतनी दया है कि जो गुरु का रूप धारण कर गुरुमत प्रदान करके अपने चरण कमल की सेवा प्रदान करके द्वैतभाव को समाप्त कर देता है जैसे **जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा॥**

वहाँ आप ही आप है, दूसरा नहीं, क्योंकि गुरु साहिब का फरमान है—

एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रुपु है हरि रुपु नदरी आइआ॥

(आनंद साहिब, पृष्ठ ९२२)

दूसरा नहीं। तो वह जो दूसरा नहीं, एक ही एक है अद्वितीय है। परमात्मा आप गुरु अर्जुन देव महाराज जी के साक्षात् रूप में प्रकट होकर यह 'बारह माहां' वाणी के द्वारा जो भाई हमें उपदेश करते हैं उसका विचार ब्रह्मज्ञानी महापुरुष संत बाबा निक्का सिंह जी महाराज जी की कृपा के साथ इस मन बुद्धि के द्वारा भाई संक्षेप में ही कहते हैं—

मूल— **मघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह॥**

अर्थ— मार्गशीर्ष मास द्वारा गुरु अर्जुन देव महाराज जी कृपा करते हैं कि वह जीव रूप स्त्रियाँ शोभनीय हैं, सुशोभित हैं, सुखी हैं जो कि भाई हरि परमात्मा, वाहिगुरु जो कि हमारा पति है, भाव जो स्त्री पति के समीप है वह शोभायमान है। जो पति की आज्ञा में है वही शोभायमान है ओर प्रत्येक प्रकार से सुखी है।

इस प्रकार जो जीव रूप स्त्रियाँ पति परमात्मा के पास हैं, आज्ञा में हैं, सेवा में हैं वही भाई शोभायमान हैं और सुखी हैं।

मूल— **तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह॥**

अर्थ— और जिन को भाई, साहिब, स्वामी, वाहिगुरु ने अपने साथ ही मिला लिया जैसे लहणे को मिला लिया, जैसे अमरु को मिला लिया, जैसे जेठे को मिला लिया तो जिसको उस परमात्मा ने, वाहिगुरु ने, सतगुरु का मिलाप कराके, गुरुमत प्रदान करके, अपने साथ मिला लिया है, महाराज पंचम पातशाह कहते हैं उनकी तो बात ही क्या है। उनका क्या वर्णन करें।

ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै॥

उनको क्या वस्तु प्राप्त हुई है? वह भाई कही नहीं जा सकती, मन बुद्धि का यह विषय नहीं।

कहु कबीर गूंगै गुड़ु खाइआ पूछे ते किआ कहीऐ॥

वह अब कहे क्या, और किसको कहे? वह तो भाई अब अपने रंग में रंगा गया। वह तो परमात्मा के रंग में रंगा गया।

मूल— **तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह॥**

अर्थ— जिसको भाई संग मिला है—साध सहेलड़ीआं अर्थात् साधु जनों का, जिन्होंने अपने आपको साध लिया, जिन्होंने अपना मत शोध लिया, जो बिल्कुल परम पवित्र परमात्मा के साथ अभेद हो गए, ऐसे जनों का संग जिसको मिल गया, उसका तो भाई तन, मन प्रेमोन्माद में झूम उठा, स्थिर हो गया, आनंद प्राप्त हो गया, उनको भाई ज्ञान प्राप्त हो गया।

मूल— **साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह॥**

अर्थ— लेकिन जो भाई साधु जन से बाहर, महापुरुषों से बाहर, गुरुजनों से बाहर, गुरुमत से बाहर है, वे भाई अकेले ही हैं, उनके साथ परमात्मा नहीं है—

सुख में आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घैरै॥
बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नैरै॥
घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी॥
जब ही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेत करि भागी॥
इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ॥
अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ॥

(सोरठि म: ९, पृष्ठ ६३४)

रावण को कितना कुछ प्राप्त था—**इकु लखु पूत सवा लखु नाती॥**

यथा— लंका गढ़ु सोने का भइआ॥ मूरखु रावणु किआ ले गइआ॥

कितना कुछ था? सिकंदर बादशाह के पास कितना धन था? अंतत: जब दफनाया, कहता हाथ बाहर निकाल देना ताकि लोगों को पता चले साथ कुछ जाना नहीं है, किसी ने साथ नहीं देना, ऐसा लगता है वह व्यक्ति भाई बहुत आश्चर्य में है, बहुत सम्बन्धियों में है, बहुत सुखों में है, बहुत पदार्थों का स्वामी है, लेकिन महाराज पंचम पातशाह कहते हैं, क्योंकि साधु का संग नहीं, क्योंकि उसको सत्संग नहीं, इसलिए वह अकेला ही है और उत्तर भी उस अकेले को ही देना पड़ेगा भाई!

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु॥ कोई किसी का भाई साथी नहीं बिना परमेश्वर के।

मूल— **तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह॥**

और जिनको भाई सत्संग प्राप्त नहीं हुआ, ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ, परमात्मा के चरणों के साथ अभेद नहीं हुए ऐसे व्यक्ति जो हैं वे कहाँ जाएंगे?

जम कै वसि पड़ीआह॥

उनको भाई यह मृत्यु और मृत्यु के पश्चात्? क्योंकि मृत्यु हुई संस्कारों के साथ और संस्कारों के साथ ही फिर जन्म है, जन्म है तो मृत्यु भी अवश्यंभावी है, इस प्रकार जन्म-मृत्यु के चक्र में फंसा ही रहना है तो '**जनम मरन का दुखु घणौ॥**'

महाराज जी कहते हैं कि जन्म-मृत्यु का दु:ख बहुत है कि जन्म से मृत्यु आने तक भी अनेकों दु:ख कष्ट सहन करने पड़ते हैं।

मूल— **जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह॥**

और जिन जीवों ने, जिन मनुष्यों ने भाई अपने परमेश्वर को याद किया है, सिमरन किया है, रमण किया है और भोगा है, आत्म रंग, आत्म रस, महाराज जी कहते हैं वे प्रतिदिन समीप हैं, सदा उपस्थित हैं, कभी अनुपस्थित नहीं हुए। वह चाहे भगत कबीर हो, चाहे भगत फ़रीद हो, चाहे भगत रविदास हो और चाहे दस पातशाहियाँ। सदा स्थिर हैं, सदा हाज़िर हैं, यदि सदैव उपस्थित हैं तो अरदास, निवेदन, प्रार्थनाएँ करते हैं भाई कि हमारी पुकार सुनो, हमारी फ़रियाद सुनो। यदि वे गैर-हाजिर हो जाए तो हम किसके पास पुकार करें। वे तो भाई सदा हाज़िर हैं, सुनने वाला सदा हाज़िर है, कोई सुनाने वाला चाहिए जो श्रवण करने वाले को सुना सके, लेकिन हम किसे सुना रहे हैं? जो सुनने वाले नहीं **माइआधारी अति अंना बोला॥**

हम उनको सुनाते हैं जो बहरे हैं, हमारी फरियाद बहरों के सामने है, मायाधारी लोगों के सम्मुख है। जब पुकार करनी है परमात्मा के सम्मुख, गुरु के सामने तो मध्य में कोई चीज़ नहीं होनी चाहिए। इस प्रकार की अरदास—

बिरथी कदे न होवई जन की अरदासि॥
नानक जोरु गोविंद का पूरन गुणतासि॥

(बिला: म: ५, पृष्ठ ८१९)

मध्य में जब कोई दूसरा खड़ा नहीं होगा, उस समय में अरदास अवश्य सुनी जाएगी। देखो मक्खन शाह लबाणा, जिसका सागर में जहाज तूफान, आँधी का शिकार होकर डाँवा-डोल होने लगा, डूबने लगा उस समय एक मन होकर पुकार की, किसके सम्मुख?

परमात्मा के सम्मुख। किसके सामने? परमात्मा स्वरूप गुरु नानक के सम्मुख। और फिर उनके सामने की किस प्रकार?

उनको परमात्मा अथवा गुरु समझकर की और गुरु चाहे गुफ़ा (भौरे) में बैठा था। गुरु तेग बहादुर साहिब, वहीं से कंधा देकर जहाज पार कर दिया और मक्खन शाह ने अरदास करते समय मध्य में किसी अन्य को खड़ा नहीं किया, लेकिन हम भाई औरों को मध्य में खड़ा कर लेते हैं। अपना आप तो परमेश्वर आगे रखते ही नहीं, गुरु के सम्मुख रखा ही नहीं, लेकिन अन्य किसी के सम्मुख हाथ फैलाते हैं—

सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की॥
दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुख राम भजन की॥

(आ: म: ९, पृष्ठ ४११)

इस प्रकार द्वार-द्वार पर भिखारी बन फिरते हैं। तभी तो भाई वस्तु प्राप्त नहीं हो रही। जो उस परमेश्वर को अच्छा लगे, जो उसके सम्मुख हो जाए, उसको परमेश्वर स्वयं वरदान दे देता है और ऐसे व्यक्ति को जो उन वरदानों के स्वामी हो चुके हैं, जो उस दात को प्राप्त हो चुके हैं, महाराज पंचम पातशाह कहते हैं कि वे सदैव खड़े हैं भाई, वे सदैव सुनने को तैयार हैं, तुम उनके सामने पुकार करो।

मूल— **रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह॥**

ऐसे व्यक्तियों के पास भाई! रत्न, जवाहर, लाल अर्थात् सत्संग रूपी पदार्थ और विवेक, वैराग्य, ज्ञान, विज्ञान सारे उनके कण्ठ में ही जड़े हुए हैं, भाव उन्होंने हृदय में धारण किए हुए हैं ऐसे व्यक्तियों के—

मूल— **नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह॥**

ऐसे व्यक्तियों के भाई जो कभी गैर-हाज़िर नहीं होते, सदैव हाज़िर हैं, सदा देखते हैं, सदा सुनते हैं, ऐसे व्यक्तियों की धूलि पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी लालायित हैं, कि ऐसे व्यक्तियों की धूलि मिले ताकि जीवन सफल हो जाए।

मूल— **मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह॥**

गुरु बाबा जी मार्गशीर्ष के मास द्वारा उपदेश करते हैं कि पुनः तुम्हारा जन्म नहीं होगा। कब? जब परमेश्वर का ध्यान करेगा, जब एक परमेश्वर के परायण हो जाएगा।

एक ऊपरि जिसुकी आसा॥ तिस की कटीऐ जम की फासा।

एक परमेश्वर के, अकाल पुरख के, निरंकार के, निरंकार ज्योति स्वरूप सतगुरु के भाई, गुरु की वाणी के ऊपर हमें पूर्ण रूप में श्रद्धा विश्वास हो, फिर समस्त कार्य इसके भाई पूर्ण हो जाएंगे। परमेश्वर को प्राप्त हो जाएगा, दुःखों की निवृत्ति हो जाएगी और जीवन सफल हो जाएगा। यह समागम भी भाई तभी सफल है यदि हम उस अवस्था को प्राप्त हो जाए, जो पंचम पातशाह ने आज हमें प्रदान की है, अर्थात स्वरूप में स्थिति हो जाए। इस प्रकार साधु लोगों का संग, महापुरुषों का संग, गुरु को अपने जीवन में लाकर, जीवन को सुखमय बना लो। फिर

इह लोक सुखीए परलोक सुहेले॥ नानक हरि प्रभु आपहि मेले॥

(पृष्ठ २१२-२१३)

इस प्रकार आप जी ने पावन रसना से मार्गशीर्ष मास की अमृतमयी ऐसी रसदायक कथा की मानों श्रोताओं के हृदय में इस प्रकार समा गई जैसे हलकी वर्षा का जल सारा भूमि में समा जाता है, इधर-उधर गिरता नहीं। संगत का एक टक ध्यान आपके पवित्र चेहरे की ओर और कान सुनने में लगे रहे मानों एक-एक शब्द को औषधि रूप समझकर सेवन करते हुए एक बूँद भी व्यर्थ नहीं गंवाना चाहते। अब समाप्ति के पश्चात् गुरु के लंगर के अटूट भण्डारे वितरित किए गए, लेकिन पके हुए पदार्थ फिर भी बहुत बच गए।

तीसरे पहर 'मल्लेवाल' वाले प्रेमियों को वचन दिया हुआ था इसलिए काफ़ी संगत को साथ लेकर पैदल ही सतनाम का जाप करते सुखदेव सिंह के घर गाँव मल्लेवाल पहुँचे। आगे संगत बहुत एकत्रित हुई बैठी थी। आपने सब को जपुजी साहिब की पाँच पौड़ियाँ (श्लोक) का पाठ कराया। उपरान्त अपने पावन कर कमलों द्वारा दर्शनार्थ आई संगत को प्रसाद वितरित करके गाँव की गलियों में से काफी संगत के साथ सतनाम वाहिगुरु का जाप उच्च स्वर में करते भाई साहिब दर्शन सिंह के घर पहुँचे। वहाँ भी पाँच पौड़ियों (श्लोकों) का पाठ कराकर संगत को प्रसाद वितरित करने के उपरान्त पैदल ही

मल्लेवाल के गुरुद्वारा साहिब गए। वहाँ दर्शन आदि करके गुरु साहिब जी से हुक्मनामा लेकर वापिस लोपे कुटिया आ गए। लंगर छकने के पश्चात् रात्रि को काफी संगत के साथ सतनाम का जाप जपते भौड़े गाँव को प्रस्थान कर दिया, क्योंकि आज से दो दिन पूर्व वहाँ की संगत को वचन दिया हुआ था। अत: वचन पूरा करने के लिए रात्रि को पहुँच गए गाँव भौड़े गुरुद्वारा साहिब। आगे लोग इतनी संख्या में एकत्रित थे कि कुछ ही लोग घरों में रहे होंगे। संगत ने माइक आदि तो पहले ही लगा रखा था इसलिए प्रार्थना की कि महाराज! कुछ प्रवचन सुनाओ।

आप कुछ देर तो टालमटोल करते रहे, लेकिन संगत का पूर्ण प्रेम और निष्कपटता देखकर आधा घंटा अमृत वचनों की वर्षा की। आप जी ने आज्ञा की तुम्हें बड़े भाग्य से गुरु घर की सेवा प्राप्त हुई है—अत: शक्तिशाली हो कर करो। परमेश्वर सेवा पर ही प्रसन्न होता है। उसको प्रसन्न करने का तरीका केवल सेवा और प्रेम है। इसलिए प्रेम के साथ शक्तिशाली होकर सेवा करते रहो—हम भी आपके गाँव में पुन: आएंगे। वहाँ से बलदेव सिंह निवेदन करके अपने घर ले गया फिर दूसरा बलदेव सिंह, जो गुरुद्वारा साहिब का प्रधान है उसके घर गए। उन लोगों के निश्च्छल हृदय और सरलता देखकर आप प्रेम के वशीभूत हुए। रात्रि के साढ़े ग्यारह बज गए उनको सेवा की प्रेरणा देकर और की गई सेवा के लिए शाबासी देकर आधी रात पैदल ही कुटिया वापिस आए। इस प्रकार तीन-चार दिन उस कुटिया और इलाके को अपनी पवित्र सुगंधि के साथ सुगंधित करके कुछ पुराने लगे पौधों में खाद डालकर और काफी संख्या में और नए पौधे लगाकर सत्रह नवम्बर 1990 को बहते दरिया की भाँति आगे प्रस्थान किया।

जिन प्रेम कीउ

जिक्र 1990 नवम्बर मास का है जब आप देहली की संगत को दर्शन सत्संग और गुरुवाणी की ईश्वरीय दात द्वारा तृप्त कर रहे थे। आज फैज़ रोड पर माता निर्मला के घर बैठे हैं। यह माता सांसारिक रिश्ते से हजूर की मौसी लगती हैं। यहाँ पर एक माता राजकुमारी मुजफ़्फर नगर की जो माता निर्मला की सगी बहन है ने प्रार्थना की कि महाराज! आप ने कल ऋषिकेश जाना है कृपा करो मुजफ़्फरनगर आराम करके चले जाना। आप ने उत्तर दिया, समय बहुत कम है। फिर कभी संयोग बना तो आ जाएंगे। माता ने प्रार्थना की महाराज! समय और संयोग तो आप के अधीन है, इसलिए कृपया कल ही आ जाना मैं प्रतीक्षा करूँगी। खैर-आज रात का पड़ाव मान सिंह कोहली के घर था। प्रात: का भोजन कोहली के किसी रिश्तेदार के घर से लेकर ऋषिकेश की तैयारी की। गाड़ी की सेवा बलविन्दर सिंह 'वैम्पी' ने ली हुई थी, उसने प्रार्थना की महाराज! दोपहर के लिए लंगर साथ ले चलें? आज्ञा दी—साथ कुछ भी नहीं उठाना, तुम तैयारी करो अभी चलें। फिर उसी समय गुरु नानक के चरणों में अरदास करके ऋषिकेश की ओर प्रस्थान किया। यात्रा करते हुए जब खतौली के पास पहुँचे उससे पीछे ही गाड़ी पैंचर हो गई। स्टैप्नी का टायर बदलना शुरु किया तो साथ के एक ढाबे वाले को वैम्पी ने ठण्डे लेकर आने का संकेत किया। ढाबे वाले का एक गरीब नौकर लड़का ठण्डे लेकर आया। हजूर ने उसे एक सेब दिया। वैम्पी ने प्रार्थना की महाराज! यहाँ जल-पान लेना, इस गरीब लड़के को सेब देना, क्या इसी संयोग ने ही गाड़ी के पैंचर का बहाना बनाया? आज्ञा हुई, संयोग हुक्म के बिना फलीभूत नहीं होता, क्योंकि कर्म और संयोग अपने आप में जड़ हैं, चेतन की सत्ता के साथ ही हरकत में आते हैं। कर्म सारे किरत हैं, हुक्म कर्त्ता का है इसीलिए हुक्म अपनी स्वतन्त्रता में ऊपर चलता है। आगे खतौली पहुँच कर पैंचर लगवाया और आगे की तरफ चलने लगे। मुजफ़्फरनगर के समीप जाकर वैम्पी ने प्रार्थना की बाई पास की तरफ से चलें या

बीच की ओर से? हजूर कुछ भी नहीं बोले। अमरीक सिंह ने कहा कि बीच से ज्यादा भीड़ होगी इसलिए बाई पास ठीक है। जब उस स्थान पर पहुँचे जहाँ से बाई पास के लिए रास्ता निकलता है वहाँ पर गाड़ियों की इतनी भीड़ हो गई कि वैम्पी से घबराहट में गाड़ी बाई पास की अपेक्षा शहर की तरह से चल दी। अब सोचा कि चलो शहर की तरफ से ही चलते हैं यानि थोड़ा समय और लग जाएगा। जब थोड़ा आगे बढ़े तो गाड़ी फिर पैंचर हो गई। वैम्पी ने प्रार्थना की, महाराज गाड़ी भी नई है, टायर भी नए हैं पता नहीं फिर कैसे पैंचर हो गई? हजूर मुस्करा कर बोले, कोई बात नहीं जल्दी से टायर बदलो फिर आगे चलें। थोड़ी दूर जाकर हुक्म किया, गाड़ी दाएँ ओर ले चलो। जा पहुँचे माता राजकुमारी के घर। आगे माता लंगर तैयार करके बर्तन वगैरा टेबल पर सजाकर, हर प्रकार से खिलाने की तैयारी करके बैठी, इन्तजार कर रही थी। दर्शन करके माता का चेहरा खिल गया, चरणों पर नमस्कार करके प्रार्थना की, महाराज हमारे धन्य भाग हजूर के मुबारक चरण पड़े, घर पवित्र हुआ। हजूर बोले, हमने तो आपको आने के बारे में मना किया था, पर आपने हमारी गाड़ी के टायर पैंचर करने शुरू कर दिए। माता बोली, महाराज टायर पैंचर के बारे में तो मुझे कुछ मालूम नहीं, लेकिन मुझे यह विश्वास था कि आप को वश में करने का एक ही ढंग है—'प्रेम' इसलिए मैं लंगर तैयार करके पूरे विश्वास के साथ टेबल पर लगा कर बैठी थी कि आप अवश्य आएँगे। माता ने सप्रेम सब को लंगर खिलाया। आप ने वैम्पी को हुक्म किया, टायर आदि ठीक करवा ले, आराम करे, अब शाम को ही चलेंगे। वैम्पी ने बाज़ार से नया टायर लेकर लगाया और शाम को चलकर ऋषिकेश पहुँच गए।

कुटिया गाँव असरपुर

असरपुर गाँव आपका पुराना सेवक चला आ रहा है। शुरू से यहाँ संत बेअंत सिंह जी महाराज और परम पूजनीय संत निक्का सिंह जी विरक्त महाराज इन लोगों के प्रेम के वशीभूत जिंदगी का काफी समय यहाँ आते रहे। अब आप भी यहाँ की संगत के प्रेम के कारण वर्ष में एक दो बार आ जाते हैं। रुकने के लिए गाँव से एक किलोमीटर दूर एक कमरा है। यह कमरा किसी समय कई घरों के साँझे कुएँ पर था। कुछ समय बाद यह कुआँ भी बंद हो गया तथा मुरब्बेबन्दी के पश्चात् यहाँ ज़मीन भी थोड़े घरों की रह गई। शेष लोगों को दूर नजदीक यहाँ-वहाँ मिल गई, लेकिन संगत पहले की तरह ही जुड़ी रही।

अब 1990 के आस-पास इस कुटिया के नज़दीक किसी ने अपनी ज़मीन में ईंटों का भट्ठा लगा लिया जिस के कारण इस पुरातन कुटिया में न तो पहले जैसा एकान्त रहा, न साफ वातावरण, क्योंकि भट्ठे का कोयला और ईंटों का खोरा उड़ कर दूर तक वातावरण को गंदा करता है। एक प्रेमी भाई बलदेव सिंह जिन की जमीन पर पुरातन कुटिया थी और संगत में मुख्य सेवक है—ने एक दिन हजूर के चरणों में प्रार्थना की, कि महाराज! भट्ठे के कारण यह कुटिया अब रहने के योग्य नहीं रही, इस भट्ठे से दूर गाँव की तरफ काफी ऊँचाई पर मेरी एक जमीन है, आप की आज्ञा हो तो कुटिया वहाँ पर बना लें? यही ठीक है एक दो रात रुकना होता है यहीं रुक जाया करेंगे। पैसा लगाने की क्या जरूरत है? लेकिन बलदेव सिंह बार-बार प्रार्थना करता है। एक दिन उसकी प्रार्थना स्वीकृत हो गई, दयालु दाते ने आज्ञा दी-ठीक है अगर तुम्हारे मन में संकल्प आया ही है तो बना लो।

बलदेव सिंह ने अपने खेत में नक्शे अनुसार हजूर के लिए एक कमरा, आगे बरामदा, एक तरफ रसोई और पीछे की तरफ शौचालय एवं स्नानगृह आदि सुविधाओं सहित सेट बनाना शुरू किया। इस सेवा के कार्य पर चाहे थोड़ी बहुत संगत

गाँव में से भी आई, परन्तु इस सेवा का ज्यादा भाग बलदेव सिंह को ही प्राप्त हुआ। कुछ समय में कुटिया तैयार हो गई। फिर हजूर से तिथि लेकर अखण्ड पाठ साहिब करवाया। उस के बाद हजूर उस कुटिया में जाकर ठहरते हैं। परम पूज्य सन्त बाबा निक्का सिंह जी और पूज्य बाबा बेअंत सिंह जी की वार्षिक पुण्य तिथि भी समस्त संगत मिल कर इसी कुटिया में मनाती है। इस प्रकार आप जी की कृपा द्वारा संगत ने सेवा करके वह नया स्थान तैयार कर लिया।

कुटिया गाँव थूहा

परम पूज्य १०८ संत बाबा निक्का सिंह विरक्त महाराज जी, परमात्मा की आज्ञा से जगत उद्धार करते देश भ्रमण समय इसी भाग्यवान गाँव थूहे भी बहुत समय ठहरते रहे। गाँव के पूर्व की तरफ-पास ही एक प्रेमी गुरदयाल सिंह ने अपनी भूमि में साधारण धरती से दो फुट ऊँचा कच्चा थड़ा बना कर ऊपर घास-फूस की पर्णकुटी बनाई हुई थी। हजूर इन प्रेमियों के प्रेमवश दो-दो, तीन-तीन मास इसी पर्णकुटी में लगातार ठहर जाया करते थे। जब आप यहाँ से कहीं ओर चले जाते तब यह प्रेमी गुरदयाल सिंह, इस पर्णकुटी को 'थान सुहावा' समझ कर पूजता रहता और हर तरफ से संभाल करता। इस छप्परी के बिल्कुल पास ही उसने पानी की सुविधा के लिए नल लगाया। विरक्त महाराज जी ने हुक्म किया इसमें पाँच सरोवर का पानी ला कर डालो। चार तो हरिमन्दिर साहिब, दमदमा साहिब आदि गुरु स्थानों से पाँचवां जो बाबा बेअंत सिंह जी ने इस गाँव में तालाब खुदाया था उसमें से। हुक्म अनुसार गुरदयाल सिंह ने ऐसा ही किया।

प्रश्न—विरक्त महाराज जी ने इस स्थान या नल को इतनी विशेषता क्यों दी?

उत्तर—वह स्वयं ही जानें! क्योंकि '**ब्रह्मगिआनी की गति ब्रहमगिआनी जानै।**'

इस प्रेमी गुरदयाल सिंह की कोई सन्तान नहीं है। किसी समय इसने विरक्त महाराज जी के चरणों में सन्तान के लिए प्रार्थना की थी। हजूर ने हुक्म किया, ज़रूर ही बच्चों की गंदगी उठानी है! परमेश्वर की भक्ति करते रहो! दोनों पति-पत्नी ने ईश्वरीय हुक्म मान कर बच्चे की इच्छा समाप्त कर दी और बड़े प्रेम से हजूर की सेवा करने लगे। कुछ समय पश्चात् सतलुज यमुना लिंक नहर का जब सर्वेक्षण हुआ तो गुरदयाल सिंह की उस कुटिया की तीन बीघे ज़मीन छोड़कर शेष सारी जमीन इसी नहर में आ गई। गुरदयाल सिंह का विश्वास और बढ़ गया कि यह स्थान महाराज जी की कुटिया के कारण ही बचा है नहीं तो यह नहर में ही आनी थी। विरक्त महाराज जी के पाँच भौतिक शरीर त्याग कर सचखण्ड जा विराजने के बाद कुटिया तो घास-फूस की थी इसीलिए टूट गई, लेकिन कुटिया वाले कच्चे थड़े को गुरदयाल सिंह लीप कर बड़ी श्रद्धा विश्वास से पवित्र जानता हुआ विरक्त महाराज जी की अमानत समझकर संभालता रहा। फिर जब विरक्त महाराज जी के अनुसार उन्हीं में अभेद होकर पूज्य महन्त राम सिंह जी संगत में आने जाने लगे, तो थूहा गाँव की संगत की प्रार्थना स्वीकार कर जब इस गाँव जाते तो निवास यहाँ इसी कमरे में रखते, जो उस कच्चे थड़े से दस कदम पीछे लगभग तीन खनों का गुरदयाल सिंह जी ने आप जी के लिए ही बनाया था। गुरदयाल सिंह और गाँव की अन्य संगत के प्रेमवश वर्ष में एक दो बार आप इस गाँव में अवश्य आते थे। अब **जिस की वसतु तिसु आगै राखै** का समय नजदीक आ गया।

गुरदयाल सिंह के मन में बार-बार संकल्प उठने लगा कि विरक्त महाराज जी की यह जगह मेरे पास अमानत है, क्यों न उन्हें वापिस कर दी जाए? पूज्य महन्त महाराज जी को उनका स्वरूप जान कर प्रार्थना की, महाराज! यह तीन बीघे जमीन

आप जी की ही है, इसे संभालें। हजूर बोले, कोई बात नहीं, तुम संभाल करते हो, उसी तरह करते रहो, हम भी जब आते हैं रात यहीं ठहरते हैं। गुरदयाल सिंह बार-बार प्रार्थना करता रहा। अंततः काफी समय बाद एक दिन महाराज जी ने कहा कि अच्छा जैसे तेरा मन है उसी तरह कर लो। गुरदयाल सिंह ने यत्न करके ये तीन बीघे जमीन निर्मल आश्रम ऋषिकेश के नाम करवा दी। महापुरुषों ने अब आश्रम की जिम्मेवारी जान कर 28 मार्च, 1991 के दिन उस स्थान पर समागम करने के लिए पंजाब, हरियाणा की सारी संगत को निमन्त्रण पत्र भेज दिए। इसी तरह एक दिन पहले यानि 25 तारीख को सन्त जोध सिंह जी और सन्त गुरिन्दर सिंह जी (छोटू बाबा जी) ऋषिकेश से थूहाँ पहुँच गए और खोख, लोपे, भौड़े आदि स्थानों से भी काफी संगत आ गई तथा पूज्य महाराज जी भी यात्रा से सीधे यहाँ पहुँचे। संगत द्वारा मिल-जुल कर इस समय तक सारी तैयारी कर ली गई। महापुरुषों के लिए एक तरफ वितान लगाया गया। लंगर के सामान के लिए अलग वितान, पाठियों तथा अन्य सेवादारों के लिए अलग प्रबन्ध किया गया। 26 मार्च, 1991 को सुबह 10 बजे दो श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ किए गए। महापुरुषों ने हुक्म किया कि लंगर चौबीस घण्टे निरन्तर चलता रहे। ढोल पर थाप लगा दो ताकि सारा थूहा गाँव और आस-पास के दूसरे गाँवों के लोग भी गुरु के लंगर से प्रसाद ग्रहण करके गुरु नानक का गुणगान करते जाएं। हुक्म अनुसार लंगर की सेवा शुरु हो गई। गाँव से स्त्रियों ने आकर प्रशादे पकाने की सेवा संभाल ली। महापुरुषों द्वारा करवाया समागम जान कर करनाल आदि स्थानों से काफी गिनती में संगत पहुँच गई। प्रातःकाल आसा दी वार जी का कीर्तन होता, सायंकाल को बाहर काफी बड़े पण्डाल में दीवान सजते। तीसरे दिन श्री अखण्ड पाठों के भोग उपरांत बाहर काफी बड़े पण्डाल में दीवान सजाए गए, जिस में बीबी हरमिन्दर कौर करनाल और भाई दिलबाग सिंह करनाल के रागी जत्थे ने गुरुवाणी का रस युक्त कीर्तन किया। बाद में पूज्य महंत राम सिंह जी ने गुरु शब्द की व्याख्या परिपूर्ण कथा की। गुरु के लंगर तो तीन दिनों से निरन्तर चल ही रहे थे, लेकिन भोग के दिन जलेबियाँ और लड्डू आदि मिष्ठान पदार्थ भी काफी मात्रा में बांटे गए, जिस में लगभग कई हज़ार लोगों ने गुरु के लंगर का प्रसाद लिया। उसी समय जिस स्थान पर विरक्त महाराज जी की पर्ण कुटीर का थड़ा था उस को बीच में लेकर पूज्य महंत महाराज जी ने अरदास के बाद संगत के बहुत बड़े समूह में जैकारों की गूँज से अपने पवित्र कर-कमलों द्वारा कुटिया की नींव रखी। इस महान् यज्ञ में जहाँ थूहा निवासी संगत ने तन, मन, धन से बड़े उत्साहपूर्वक सेवा की, वहाँ बाहर से आई संगत ने भी सेवा में भरपूर सहयोग दिया। जत्थेदार नछतर सिंह और मघर सिंह आदि 'खोख' गाँव की संगत ने सामान एकत्र करने तथा अन्य प्रबन्ध की जिम्मेवारी बहुत कुशलता से निभाई। लंगर में दाल, सब्जियाँ और चावल आदि पदार्थ बनाने की सेवा छोटे कुलवन्त सिंह करनाल ने राजू आदि अपने साथियों के सहयोग से निभाई। पण्डाल में शामियाने और टैण्ट आदि की सेवा वर्मा टैन्ट हाऊस नाभा ने निष्काम भाव से की। इस प्रकार दूर नज़दीक की सारी संगत इस समागम में सेवा का लाभ उठा कर महापुरुषों के पवित्र कर कमलों द्वारा प्रसाद प्राप्त करके घरों को चली गई। इस समय प्रसाद प्राप्त कर रहे एक प्रेमी हरदेव सिंह मंढौर ने प्रार्थना की, महाराज! यह कुटिया तैयार होने पर इस में पहला अखण्ड पाठ मेरी तरफ से हो। मैं पाँच हजार रुपये उस कार्य में योगदान दूँगा। कुछ समय रुक कर कहने लगा, सात हजार रुपये दूँगा, फिर बोला नौ हजार दूँगा, हजूर खड़े मुस्कुरा रहे थे, लेकिन बोल नहीं रहे थे। हरदेव सिंह फिर बोला, महाराज ग्यारह हजार रुपये भेंट करूँगा। हजूर ने अब मौन खोला-हँस कर कहने लगे, चल अब बस कर बहुत है। हरदेव

सिंह प्रसाद लेकर और ग्यारह हज़ार रुपये का वचन देकर जिस समय घर पहुँचा तो पता चला कि आज गेहूँ के पके हुए खेत में आग लग गई थी। परिवार वालों ने बताया कि एक बार तो आग बहुत तेज़ जली, लेकिन फिर धीरे-धीरे लोगों ने काबू कर लिया। हरदेव सिंह ने पूछा कि समय क्या था? घर वालों के बताने पर उस ने समझा यह तो बिलकुल वही समय था जब मैं अखण्ड पाठ के लिए भेंट बार-बार बढ़ा कर कह रहा था। इस प्रकार समागम की समाप्ति तथा सामान की संभाल के पश्चात् और सारी संगत को विदा देकर पूज्य महाराज जी और आदरणीय संत जोध सिंह जी और सन्त गुरिन्दर सिंह जी (छोटू बाबा जी) बैसाखी का शुभ दिवस नजदीक जान कर वापिस ऋषिकेश पहुँचे। बैसाखी को अस्पताल का पहला वार्षिक समागम बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। बैसाखी पर ही मेवा सिंह 'लोह सिम्बली' वाले ने स्वर्गीय लाभ सिंह की याद में घर में श्री अखण्ड पाठ साहिब कराने के लिए तिथि की माँग की। महापुरुषों ने उन्हें 7 मई की तिथि दे दी। साथ ही विचार किया कि आठ मई को थूहे की कुटिया का काम शुरु करवा आएँ। आप द्वारा दी गई तिथि के अनुसार छः मई को सन्त जोध सिंह को साथ लेकर लोह सिम्बली पधारे। सात मई को मेवा सिंह के घर भोग के पश्चात् शाम को थूहे पहुँच गए। रात को हुक्म किया कि प्रातः काल होते ही श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का स्वरूप लाकर, प्रकाश करके कड़ाह प्रसाद की देग सजा लें। उसी स्थान पर रागी दो शब्द पढ़ेंगे, बाद में अरदास करके नींव की जगह पर चूने द्वारा लाइनें लगाकर आठ बजे ऋषिकेश वापिस चले जाएंगे ताकि दोपहर को आश्रम पहुँच जाएं। आज्ञानुसार 8 मई, 1991 के दिन सवेरे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का स्वरूप लाकर कड़ाह प्रसाद की देग सजा ली गई। थूहा गाँव के मेवा सिंह ने आधा घण्टा गुरुवाणी का कीर्तन किया, उपरान्त अरदास करके नक्शे मुताबिक नींव पर त्रिलोचन सिंह ने चूने के निशान लगा दिए। इस कार्य के लिए ठेकेदार काबिल सिंह जी को ऋषिकेश से विशेष रूप से बुलवाया हुआ था और साधू सिंह मिस्त्री को भी पहले कहा हुआ था। काबुल सिंह जी के संकेत अनुसार संगत ने नींव खोदनी शुरु कर दी। महापुरुष भी बीच में खड़े उत्साहित करते रहे। आठ बजे वापिस जाने की अपेक्षा दिन के नौ, अब दस फिर ग्यारह बज गए लेकिन हजूर का वापिस जाने का कोई ध्यान नहीं। गाँव वालों को रात को ही ईंटें, रेत लाने के लिए हुक्म कर दिया था, जो शाम तक लेकर आ गए और शाम तक नींव भी खोद ली गई। अब फिर अलौकिक प्रीतम ने हुक्म किया कि कल सुबह काम शुरु करवा के आठ बजे निकल जाएंगे। दूसरे दिन साधू सिंह और एक उसी स्थान का मिस्त्री नींव भरने लगे तो सुबह ही असरपुर का सरुप सिंह ठेकेदार आ गया। उसने बताया कि मैं रात को यहाँ नजदीक के गाँव रिश्तेदारी में आया हुआ था मुझे ज्ञात हुआ कि यहाँ महाराज जी आए हैं, मैंने सोचा कि दर्शन करके चलेंगे। इस सेवा के शुरु होने का मुझे पता लगा है, आप जी की कृपा द्वारा मैं भवन बनवाने का ही कार्य करता हूँ। मेरे पास भवन बनवाने का मिक्सर और शटरिंग का सारा सामान है और मिस्त्री भी बहुत हैं। आप जी की आज्ञा हो तो इस सेवा में मैं भी योगदान डाल दूँ। हजूर ने मुस्करा कर इशारा कर दिया, जैसे तेरी इच्छा। ठेकेदार तो आज्ञा लेकर चला गया। महाराज जी को संगत ने पूछा, महाराज जाने के बारे में विचार करते थे? हजूर बोले, आए तो नींव की निशानी लगाने ही थे, लेकिन बाबा जाने ही नहीं दे रहा! थोड़ी देर पश्चात् रछपाल सिंह गुलाटी करनाल वाले का लड़का राजपुरे फर्नीचर बनाने की दुकान करता है, दर्शन करने के लिए आया। यहाँ सेवा होती देख उसने प्रार्थना की, महाराज! यहाँ जो चौगाठें लगेंगी उन सब की सेवा मुझे प्रदान कर दो! हजूर ने मुस्करा कर हाथ से संकेत किया जैसे तेरी मर्जी! थूहे गाँव में एक पण्डित परिवार के पास ट्रक था। उन्होंने रेत बजरी लाने

की सेवा ले ली? ईंटें लाने की सेवा गाँव के ट्रैक्टर वालों ने ले ली। और लंगर की सेवा का सारा प्रबन्ध गाँव की संगत ने आप ही कर लिया। तीसरे दिन सुबह ही सरुप सिंह ठेकेदार चार मिस्त्री ले कर आ गया। सेवा अब पूरे ज़ोर से शुरु हो गई। समय की कोई पाबंदी नहीं, सुबह सवेरे ही शुरु हो कर रात देर तक कार्य चलता रहता है। साथ-साथ चाय प्रशादे का लंगर भी गाँव वाले बड़े प्रेम से और खुले दिल से चला रहे हैं। गाँव के चाहे काफी परिवार सेवा में लगे हैं, लेकिन फकीर सिंह, फुमण सिंह, अमरजीत सिंह, सन्तोख सिंह, बाबू सिंह और सरपंच आदि तो दिन-रात ही लगे रहते हैं। खोख, भौड़े, लोपे और असरपुर की भी संगत साथ लगी हुई है। इस प्रकार सेवा के दिन-रात चल रहे तेज प्रवाह से पाँच दिनों में अर्थात् 13-5-91 को दीवारें सम्पूर्ण हो कर शाम तक लैंटर की शटरिंग हो गई। महाराज तो श्री राजपाल सिंह नरुला मोहाली वाले की प्रार्थना स्वीकार करके उसके घर रात रहने के लिए सन्त जोध सिंह जी को साथ लेकर मोहाली चले गए। इधर हुक्म कर गए कि हम सुबह ही आ जाएंगे, आप रात को सरिया बांधकर ईंटें आदि डाल लो। सुबह सवेरे ही लैंटर की सेवा शुरु कर लेंगे। हुक्म अनुसार सरिया ईंटों का कार्य रात के एक डेढ़ बजे तक तैयार हो गया। सुबह ही हजूर मोहाली से आ गए। उस समय पर लैंटर की सारी तैयारी हो चुकी थी, लैंटर सेवा शुरु करने से पहले हजूर कमरों में घूम कर शटरिंग देखते-देखते पिछली तरफ बरामदे में जो आठ फुट का छोटा कमरा बनाया है, उसमें जा खड़े हुए। उसको बड़ी गंभीर मुद्रा से देखकर पवित्र मुख से बोले, हमारे वाला तो यह कमरा बढ़िया है, इसमें एक चारपाई बिछा लेंगे, एक कुर्सी रख लेंगे। पास खड़े प्रेमी ने प्रार्थना की, महाराज! वह सामने जो बड़े-बड़े कमरे बनाए हैं वह फिर किस लिए हैं?

हुक्म हुआ, भाई समय बताएगा। तैयारी तो सारी हो ही चुकी थी, बस हुक्म की देरी थी, अब हुक्म हो गया श्री गुरु नानक देव महाराज जी के चरणों में अरदास करके लैंटर सेवा शुरु हो गई। संगत बड़े उत्साह के साथ लगी रही। दोपहर के लंगर के समय ही लैंटर सम्पूर्ण हो गया। इस प्रकार चौदह सौ वर्ग फुट क्षेत्र की यह वर्तमान कुटिया जिस में एक बड़ा कमरा, साथ खुली रसोई, शौचालय, स्नानगृह, तीन तरफ बरामदा, बरामदे में एक तरफ आठ फुट का छोटा कमरा इत्यादि आकृति वाली छः दिनों में यानि आठ मई 1991 को शुरु करके चौदह मई 1991 की दोपहर तक लैंटर डाल कर सम्पूर्ण हो गई। तब सारी संगत ने स्नान आदि करके गुरु के लंगर से प्रसाद पानी लिया उपरान्त महापुरुषों से आशीर्वाद लेकर घर वापिस चली गई। महाराज अपनी मौज में फरमान करने लगे, छः दिन पहले खाली हाथ आए थे आज खाली हाथ वापिस ऋषिकेश को जा रहे हैं। कुटिया की सारी सेवा गुरु नानक देव महाराज ने आप ही सम्पूर्ण कर ली। प्रेमी ने प्रार्थना की, महाराज छः दिन मच्छर की भिनभिनाहट में जो सख्त तपस्या की? अब हुक्म हुआ—वह तो शरीर की प्रारब्ध थी, इसका कुटिया से क्या सम्बन्ध! प्रेमी सोच रहा है, शायद ऐसी अवस्था के सम्बन्ध में ही उच्चारण किया है—**सभ किछु करता तऊ अकरता॥**

आखणि जोरु चुपै नह जोरु

किसी समय आप जी को परम पूजनीय श्रीमान् १०८ संत बाबा निक्का सिंह महाराज जी ने हुक्म किया था कि भाई कथा किया कर! आप जी का बचपन से ही यद्यपि बहुत कम बोलना, आडम्बरहीन सेवा करना यानि कुछ करते हुए भी पीछे रहना आदि बहुमूल्य और ईश्वरीय गुणों से संयुक्त संकोची स्वभाव था, लेकिन आज्ञा मान कर कथा शुरु कर दी। कथा भी कैसी शुरु की?

कोई पढ़ सुन अथवा शब्द अक्षर याद कर के नहीं, परन्तु अपने आत्म स्वरूप में भीग कर अनुभवी! जिसके बारे में फ़रमान है—

संतन की सुणि साची साखी॥ सो बोलहि जो पेखहि आखी॥

(रामकली म: ५, पृष्ठ ८९४)

चार अक्षर पढ़ सुन कर याद कर लेने, फिर वही लोगों को सुना देने, यह कोई कथा नहीं हो जाती। यह तो स्वयं को और लोगों को भ्रम में डालने की बात है। इससे न तो आप का मन शान्त होता है और न ही सुनने वालों का। कथा शब्द का वास्तविक अर्थ है, सिमरन, प्रभु की निरन्तर याद। जिस समय मन अन्तर्मुख हो कर, साईं की निरन्तर याद में लीन है उसे सिमरन कह देते हैं। वही सिमरन जब साकार रूप धारण करके वाणी पर आ जाए तो उसे कथा कहा जाता है। अर्थात् तत्त्व-दर्शी पुरुष की वाणी से जो शब्द निकलता है वह कथा रूप ही होता है, क्योंकि अब **हरि जी बसहि साध की रसना** की अवस्था परिपक्व हो गई है। जिस रसना पर हरि जी ने वास कर लिया, उस वाणी में से अब जो शब्द निसृत होंगे, अर्थात् **त्रै काल अबाधि** उस का तीनों काल में छेदन नहीं होगा।

यथा— **माई सति सति सति हरि सति सति सति साधा॥**
बचन गुरु जो पूरै कहिओ मै छीकि गांठरी बाधा॥ रहाउ॥
निसि बासुर नखिअत्र बिनासी रवि ससीअर बेनाधा॥
गिरि बसुधा जल पवन जाइगो इकि साध बचन अटलाधा॥
अंड बिनासी जेर बिनासी उतभुज सेत बिनाधा॥
चारि बिनासी पटहि बिनासी इकि साध बचन निहचलाधा॥
राज बिनासी ताम बिनासी सातकु भी बेनाधा॥
द्रिसटिमान है सगल बिनासी इकि साध बचन आगाधा॥
आपे आपि आप ही आपे सभु आपन खेलु दिखाधा॥
पाइओ न जाई कही भांति रे प्रभु नानक गुरु मिलि लाधा॥

(सारंग महला ५, पृष्ठ १२०४)

ऐसी अवस्था में स्थित होकर उच्चारण किया शब्द ही वास्तव में कथा कहा जाता है। गुरु ग्रन्थ साहिब में गुरुओं, भक्तों की जितनी वाणी अंकित है वे सारी पढ़ सुन या अक्षर याद करके निसृत नहीं की गई, परन्तु वह तो जिसकी वाणी है उसी में अन्दर बाहर अभेद होकर उसके प्यार में भीग कर स्वयं सहज अवस्था में निकला प्रवाह है। ऐसी लोक-परलोक के मालिक की सहज में निसृत वाणी को मन बुद्धि का विषय बना कर व्याख्या करनी, यथार्थ कथा नहीं हो सकती। बल्कि ऐसी अमृतमय वाणी की कथा नहीं करनी, उस में लीन होना है। अपना अलग अस्तित्व मिटाकर मन जब उस में लीन होगा, फिर जिह्वा से जो शब्द निकलेंगे, वे सहज में निसृत शब्द अवश्य ही प्यारे की कथा होगी, क्योंकि अब प्यारे प्रीतम के बिना दूसरा रहा ही नहीं, अब ज्ञान ही बोलता है, ज्ञान ही सुनता है, ज्ञान ही देखता है, यानि सागर में रहने वाली मछली की तरह चारों तरफ ज्ञान ही ज्ञान है। ज्ञान के बिना दूसरी वस्तु का मूल से ही अभाव हो गया। ऐसी आनन्दमयी और पाक पवित्र अवस्था के बारे में ही साहिब श्री गुरु अर्जुन देव महाराज अपनी पवित्र रसना से उच्चारण करते हैं।

पूज्य महंत राम सिंह जी महाराज, संत जोध सिंह जी महाराज और संत भरत सिंह जी महाराज अपने आश्रम ज्ञान गुफा काशी में

निर्मल कुटिया गाँव खोख (पंजाब)

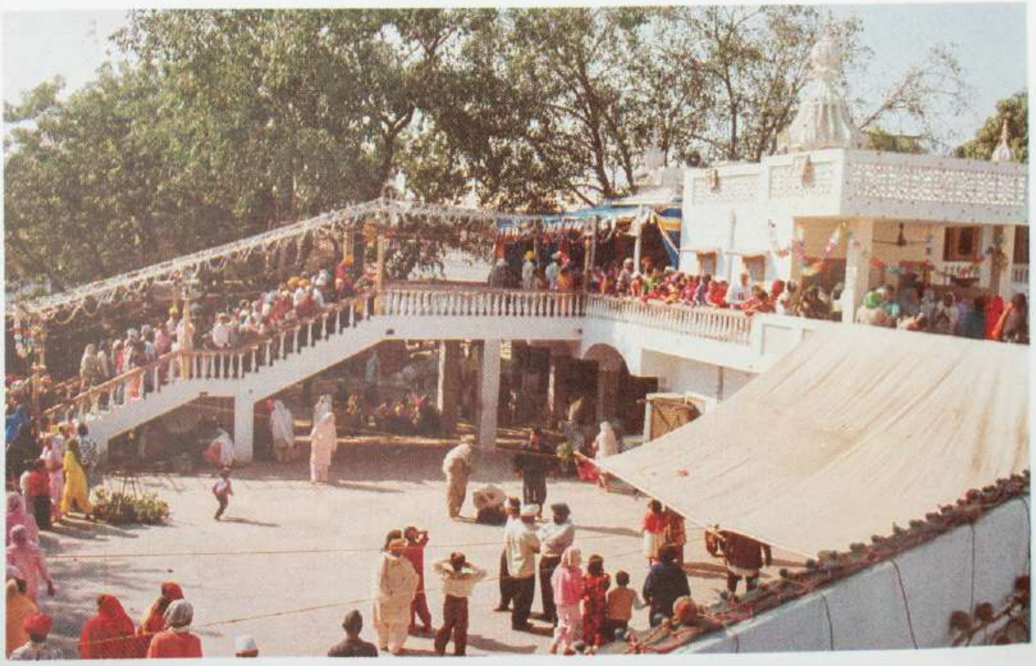

निर्मल कुटिया करनाल

गुरूद्वारा साहिब बिशनपुरा (लोपे) पंजाब

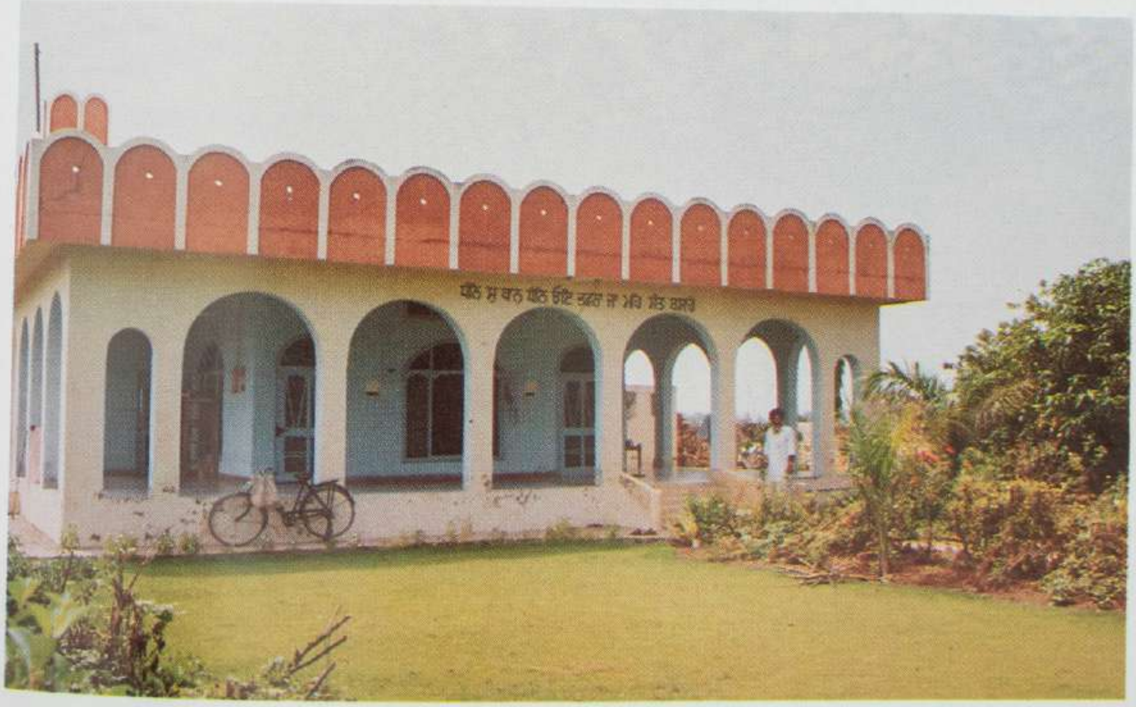

निर्मल कुटिया बिशनपुरा (लोपे) पंजाब

निर्मल कुटिया, गाँव गुराया (पंजाब)

निर्मल कुटिया गाँव लोहसिम्बली (पंजाब)

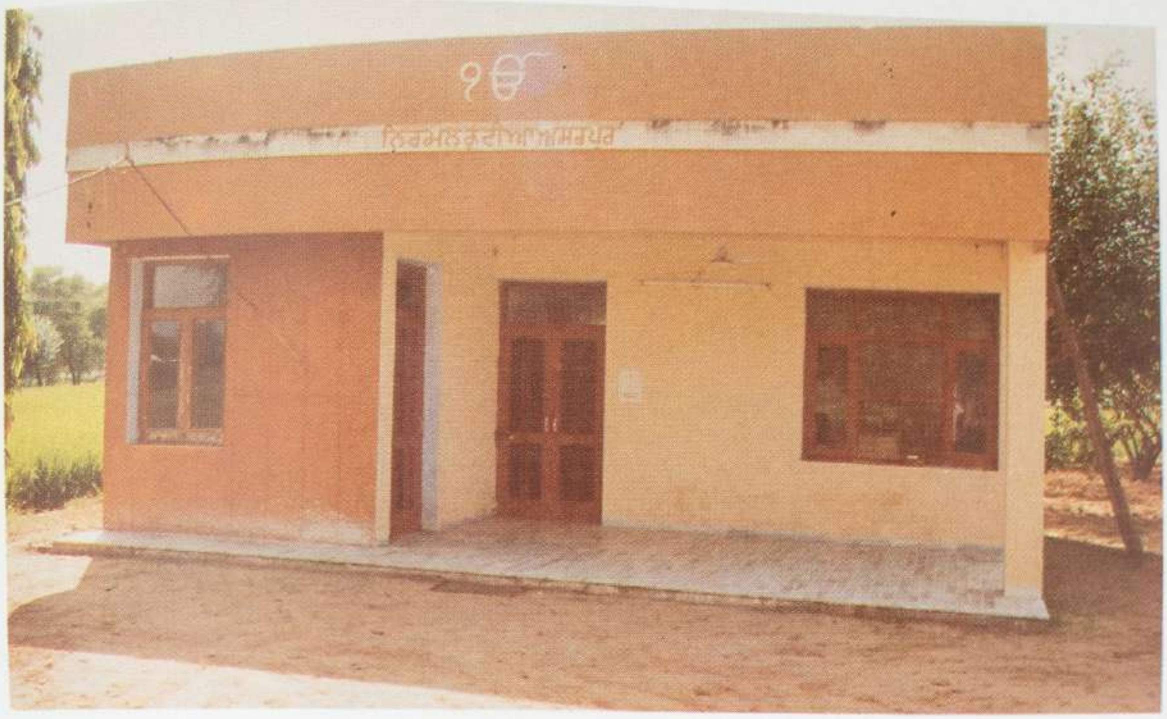

निर्मल कुटिया गाँव असरपुर (पंजाब)

निर्मल कुटिया गाँव थूहा (पंजाब)

निर्मल कुटिया गाँव कुतबनपुर (पंजाब)

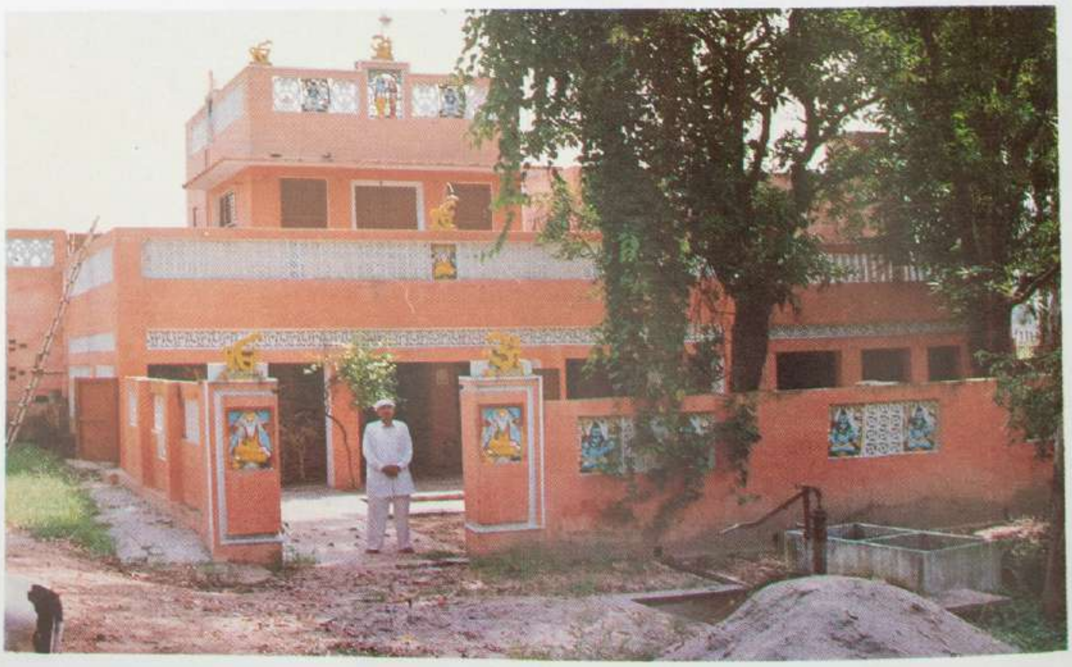

निर्मल कुटिया गाँव अखलासपुर, होशियारपुर (पंजाब)

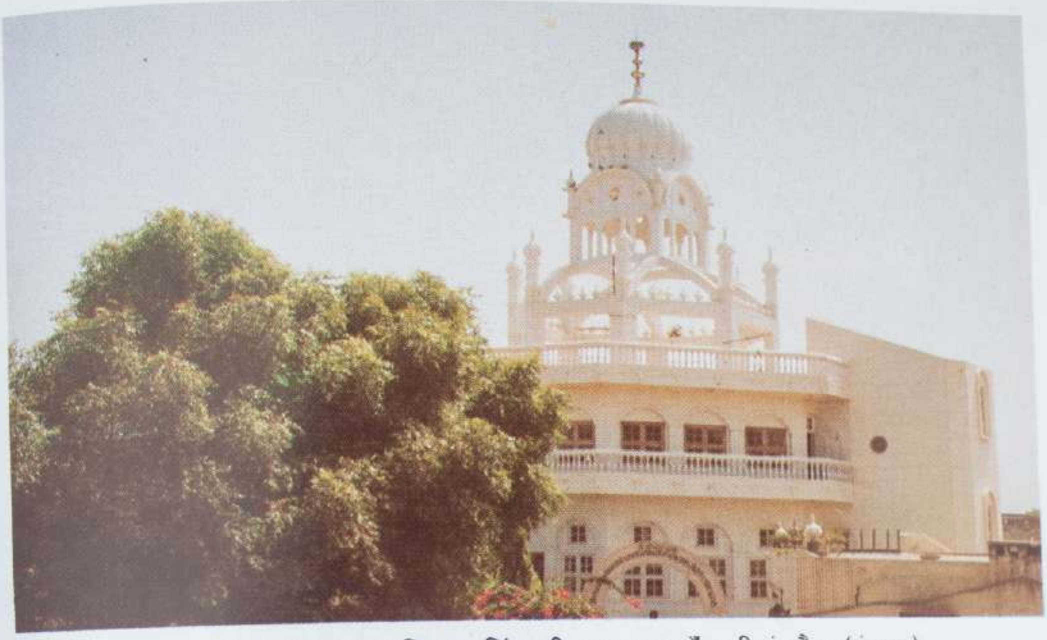

जन्म स्थान संत बाबा निक्का सिंह जी महाराज गाँव सीहां दौद (पंजाब)

निर्मल कुटिया संत बाबा निक्का सिंह जी महाराज गाँव उच्ची दौद (पंजाब)

गुरूद्वारा साहिब एवं सरोवर पातशाही नौंवी गाँव अगोल (पंजाब) जिस की सेवा
विरक्त शिरोमणि संत बाबा निक्का सिंह महाराज जी ने करवाई

निर्मल संत निवास मुम्बई

यथा— गुर का सबदु रिद अंतरि धारै॥ पंच जना सिउ संगु निवारै॥
दस इंद्री करि राखै वासि॥ ता कै आतमै होइ परगासु॥
ऐसी द्रिड़ता ता कै होइ॥ जा कउ दइआ मइआ प्रभ सोइ॥ रहाउ॥
साजनु दुसटु जा कै एक समानै॥ जेता बोलणु तेता गिआनै॥
जेता सुनणा तेता नामु॥ जेता पेखनु तेता धिआनु॥
सहजे जागणु सहजे सोइ॥ सहजे होता जाइ सु होइ॥
सहजि बैरागु सहजे ही हसना॥ सहजे चूप सहजे ही जपना॥
सहजे भोजनु सहजे भाउ॥ सहजे मिटिओ सगल दुराउ॥
सहजे होआ साधू संगु॥ सहजि मिलिओ पारब्रहमु निसंगु॥
सहजे ग्रिह महि सहजि उदासी। सहजे दुबिधा तन की नासी॥
जा कै सहजि मनि भइआ अनंदु॥ ता कउ भेटिआ परमानंदु॥
सहजे अंम्रितु पीओ नामु॥ सहजे कीनो जीअ की दानु॥
सहज कथा महि आतमु रसिआ॥ ता कै संगि अबिनासी वसिआ॥
सहजे आसणु असथिरु भाइआ। सहजे अनहत सबद वजाइया॥
सहजे रुण झुणकार सुहाइआ॥ ता कै घरि पारब्रहमु समाइआ॥
सहजे जा कउ परिओ करमा॥ सहजे गुरु भेटिओ सचु धरमा॥
जा कै सहजु भइआ सो जाणै॥ नानक दास ता कै कुरबाणै॥

(गउ: म: ५, पृष्ठ २३६)

ऐसी अवस्था में स्थित आत्मदर्शी पुरुष यथार्थ वक्ता होता है। अब वह मन बुद्धि में सोच कर बातें नहीं कर रहा, परन्तु सत्य में स्थित होने के कारण भीतर से सत्य का प्रवाह नदी की भाँति सहज प्रवाहित हो रहा है। अब वह चुप है तो भी भीतर सत्य का प्रवाह निरन्तर जारी है। यदि बोलता है तो भीतर का सत्य का प्रवाह सहज ही बाहर को आ जाता है। अब वाणी से भी सत्य निकलता है, आँखों से भी सत्य निकलता है, कानों से भी सत्य सुनता है, बात क्या, सभी इन्द्रियों और शरीर के साढ़े तीन करोड़ रोम में से भी स्वयं सत्य के झरने बहते हैं। अब तो—

जो बोलत है मृग मीन पंखेरु सु बिनु हरि जापत है नही होर॥

(मलार म: ४, पृष्ठ १२६५)

यथा— धरति पातालु आकासु है मेरी जिंदुड़ीए सभ हरि हरि नामु धिआवै रामु॥

(बिहा: म: ४, पृष्ठ ५४०)

वाली अवस्था प्राप्त हो गई, जिधर देखता है—

कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूँ॥
जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू॥

(कबीर, पृष्ठ १३७५)

यथा— ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीऐ एकु एकु वखाणीऐ॥
आतम पसारा करणहारा प्रभ बिना नही जाणीऐ॥

(बिलावल म: ५, पृष्ठ ८४६)

की दृष्टि प्राप्त हो गई। प्रत्येक व्यक्ति वही बात करता है, जो मन बुद्धि के सामने हो। जब गुरु कृपा द्वारा मन बुद्धि के समक्ष द्वैत सारी समाप्त हो गई और एक सत्य वस्तु ही शेष रह गई, बल्कि मन बुद्धि भी सत्य वस्तु का रूप प्रतीत हो, फिर वाणी जो भी शब्द बोलती है, वह निश्चय ही हरि की कृपा ही होगी। वास्तव में यही कथा है। इस अवस्था में स्थित होने से पहले अर्थात् जितनी देर मन बुद्धि के समक्ष किंचित् मात्र भी द्वैत रहती है उसे बुद्धिमान तो कहा जा सकता है, यथार्थ वक्ता नहीं।

परम पूज्य विरक्त महाराज जी ने अपने परम शिष्य श्रीमान् महंत रामसिंह जी को उपरोक्त आत्म दृष्टि में स्थित कर के ही कथा करने का हुक्म दिया था, जो बातें हरि के साथ चौबीस घण्टे अन्दर करता है वे बाहर करनी शुरु कर दे, बस यही कथा है। आप का प्रत्येक श्वास प्रत्येक क्रिया हुक्म में तो थी ही, इसलिए ईश्वरीय आज्ञा में कथा का कार्य सहज अवस्था में शुरु हो गया। इसी प्रकार आज्ञा में कथा का कार्य लगभग आठ साल सहज होता रहा, अब शायद हरि की कोई और मौज थी।

मुम्बई किसी सिन्धी प्रेमी के बच्चे की शादी थी, इसीलिए उसका निवेदन स्वीकार करके आप जी सात जुलाई 1991 को दस दिनों के लिए मुम्बई पहुँचे। शादी वाले प्रेमी परिवार की भावना पूरी करके शादी के बाद आप अन्य सारी संगत को मिले। प्रेमियों के घर पदार्पण किया, कई घरों में कथा प्रवचन भी किए। आज तेरह जुलाई 1991 के दिन श्रीमती प्रमला संगतानी के घर समागम हुआ। कीर्तन के पश्चात् हजूर ने उस मुख्य वाक्य की कथा की जो चौथे पातशाह श्री रामदास महाराज द्वारा उन के पवित्र मुख से ईश्वरीय हुक्मनामा आया—

एक ओंकार सतिगुर प्रसादि॥

आपे आपि वरतदा पिआरा आपे आपि अपाहु॥
वणजारा जगु आपि है पिआरा आपे साचा साहु॥
आपे वणजु वापारीआ पिआरा आपे सचु वेसाहु॥
जपि मन हरि हरि नामु सलाह॥
गुर किरपा ते पाईऐ पिआरा अंम्रितु अगम अथाह॥ रहाउ॥
आपे सुणि सभ वेखदा पिआरा मुखि बोले आपि मुहाहु॥
आपे उझड़ि पाइदा पिआरा आपि विखाले राहु॥
आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे बेपरवाहु॥
आपे आपि उपाइदा पिआरा सिरि आपे धंधड़े लाहु॥
आपि कराए साखती पिआरा आपि मारे मरि जाहु॥
आपे पतणु पातणी पिआरा आपे पारि लंघाहु॥
आपे सागरु बोहिथा पिआरा गुरु खेवटु आपि चलाहु॥
आपे ही चड़ि लंघदा पिआरा करि चोज वेखै पातिसाहु॥
आपे आपि दइआलु है पिआरा जन नानक बखसि मिलाहु॥

(सोरठि म: ४, घर: १, पृष्ठ ६०४)

इस पावन शब्द की कथा करते हुए जिस में द्वैत का नामों निशान नहीं, हजूर का मन इतना लीन होकर ऐसे प्रतीत होने लगा कि जैसे इस शब्द की कथा पूरी नहीं होगी, परन्तु प्रेम के गहरे भाव में डूब कर सहजे-सहजे कथा तो सम्पूर्ण हो गई,

लेकिन मन इतना अ-मन, भाव में चला गया यानि गुरु रामदास के द्वारा भेजा ईश्वरीय पत्र पढ़कर इतना प्रेम में भीग गया मानों पत्र का रूप ही हो गया। यह शब्द-पत्र था कोई ईश्वरीय हुक्म संदेश!

इस प्रकार दस दिन बम्बई निवासी संगत को दर्शन दीदार प्रदान कर और प्रेम के मुक्त भण्डार वितरित करके और हुक्म की दात आदर से स्वीकार करके, या हुक्म में लीन होकर यानि हुक्म का ही रूप हुए, 16 जुलाई को वापिस ऋषिकेश आ गए।

बाईस जुलाई वाले दिन नए बन रहे कनखल वाले भवन पर लैंटर डाला, तेईस जुलाई के दिन लैंटर डालने के लिए आई संगत को सिरोपा प्रदान करके विदाई दी। चौबीस जुलाई को सन्त बाबा जोध सिंह जी को साथ लेकर गोराया पहुँच गए, क्योंकि दूसरे दिन यानि 25 जुलाई को परम पूजनीय ब्रह्मलीन श्रीमान् सन्त बाबा निक्का सिंह विरक्त महाराज जी की पवित्र याद में बरसी समागम मनाया जा रहा था। दूसरे दिन अर्थात् 25 जुलाई 1991 के दिन महापुरुषों की याद में श्री अखण्ड पाठ साहिब के भोग डाले गए, उपरान्त बारादरी में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के प्रकाश करके कीर्तन शुरु हुआ। कीर्तन करने वाले सब रागियों को क्रमानुसार समय बाँट कर दिया हुआ था। प्रत्येक रागी के मंच संचालक मास्टर राजिन्दर सिंह जी बार-बार घोषणा कर रहे थे कि ठीक ग्यारह बजे परम पूजनीय श्रीमान् १०८ महन्त बाबा राम सिंह अपनी पवित्र रसना से गुरुशब्द की कथा करेंगे। शब्द कीर्तन करने वाले अपना समय पूरा होने पर बदलते गए और मास्टर जी भी बार-बार कथा करने की घोषणा करते रहे। आखिर जब ग्यारह बज गए तो आप जी फिर भी पण्डाल में नहीं आए, तो पाँच मिनट किसी को, दस मिनट किसी को देकर इस प्रकार प्रतीक्षा करते रहे। उधर सचिव घोषणा तो बार-बार किए जा रहा है इधर पण्डाल में बैठी संगत का ध्यान अब कीर्तन की तरफ नहीं था, परन्तु महापुरुषों के कमरे के द्वार की तरफ था कि कब खुलता है और कब आ कर कथा शुरु करते हैं। आखिर कई मिनट ऊपर व्यतीत होने पर भी जब द्वार न खुला तो उजागर सिंह सूरी और सतनाम सिंह आदि चार मुख्य सज्जनों ने हजूर के द्वार पर जाकर प्रार्थना की, महाराज! समय हो गया आप पण्डाल में दर्शन दो, संगत बिहाल हो रही है। बिना दरवाज़ा खुले ही अन्दर से आवाज़ आई नियत समय पर अरदास करके, गुरु का लंगर शुरु कर दो! प्रेमी ने बार-बार निवेदन किया, महाराज! संगत आप के पवित्र मुख से प्रवचन सुनने के लिए आई है, कृपया संगत की भावना पूरी करो! हुक्म हुआ गुरुवाणी ही सुननी है वह कीर्तन के द्वारा सुन रहे हैं, जब समय हो जाए अरदास कर दो! गोराया की संगत चिन्तातुर हो गई कि शायद हमसे कोई गलती हो गई है जिसके कारण आज कथा नहीं कर रहे। आज तक कोई भी ऐसा समय समागम नहीं जिसमें आप जी ने कथा प्रवचन न किए हो। आज हमारे समागम पर कथा न करना-अवश्य ही हमसे कोई अनुचित बात हो गई। संगत तो चाहे सारी ही उदास थी, लेकिन गोराया की संगत, खास करके प्रबन्धक सज्जनों की हालत तो बहुत ही दयनीय हो गई। रो तो बेचारे नहीं रहे थे, लेकिन बाकी कोई कसर भी नहीं रही। उधर मंच संचालक मास्टर राजिन्दर सिंह माइक पर खड़ा यह धारणा ऊँची आवाज़ में बार-बार आप पढ़ा रहा है और संगत से पढ़ा रहा है कि क्षमा करो महाराज हम अपराधी! हम अपराधी!! चलो-ज्यों-त्यों करके बारह बजे तक का समय पूरा किया, उपरान्त अरदास करके गुरु का लंगर शुरु हो गया। संगत के लंगर छक लेने के बाद अब द्वार खुला और संगत को प्रसाद बाँटना शुरु हुआ। सारी संगत प्रसाद लेकर अपने-अपने रास्ते चली गई। पर उधर देखो अलौकिक मौज!

संगत के जाने के पश्चात् थोड़ा बहुत लंगर छक कर फिर द्वार बन्द हो गया। इधर कुलवन्त सिंह मिस्त्री भी आप जी को करनाल की बरसी के लिए लेने आया था। उसकी नज़र द्वार की तरफ है कि कब दरवाज़ा खुले और हुक्म हो तो गाड़ी तैयार करके सामान बीच में रखें। चार बज गए, पाँच बज गए, अब छः बजे अर्गला खुली, लेकिन न गाड़ी तैयार करने का हुक्म और न सामान रखने का संकेत। थोड़ा बहुत जल-पान कर के बाहर सैर के लिए चल दिए। कुलवन्त सिंह तथा अन्य संगत ने सोचा कि शायद सुबह सवेरे जाने का कार्यक्रम हो कि पाँच छः बजे चलकर नौ-दस बजे भोग के समय पर पहुँच जाएंगे। सुबह भी आठ-दस बजे का समय व्यतीत होकर दोपहर हो गई, जाने के लिए न कोई हुक्म, न कोई संकेत! कौन जाने साहिब की मौज को, किसमें इतना साहस हो पूछने के लिए?

खैर दूसरे दिन के लिए प्रेमी को अखण्ड पाठ की तारीख दी हुई थी, इसीलिए सायं को चल कर कुराली पहुँचे। भोग के पश्चात् वहाँ भी संगत ने कथा प्रवचन करने के लिए प्रार्थना की, लेकिन स्वीकार नहीं हुई। इसी तरह प्रति दिन लोगों को दी तिथि के अनुसार अखण्ड पाठ के भोग पड़ते और सब प्रेमी अपने-अपने समागमों पर कथा करने के लिए प्रार्थना करते, लेकिन स्वीकृति नहीं मिली।

लगभग दो मास का समय इस प्रकार ही व्यतीत हो गया, परन्तु कहीं भी कथा नहीं की। अब संगत सोचने लगी कि शायद हरिद्वार वाली पुण्य तिथि पर अपने समागम से ही शुरु करें? लेकिन बुद्धिमान पुरुष जानते थे कि सारे घर ही उन्हीं के हैं। सारे समागम उनके अपने ही तो हैं, जीव तो बेचारे काठ की पुतलियाँ हैं, जैसे नचाते हैं वैसे नाचते हैं, ऐसा कौन-सा घर और समागम है जो उन का नहीं?

कनखल वाली बरसी भी आ गई। बड़ी धूम-धाम से सारी तैयारी की गई। पंजाब, हरियाणा, देहली और मुम्बई आदि स्थानों से भारी गिनती में संगत पहुँची। कुछ संगत इस भावना से भी आई कि शायद वहाँ कथा रूपी अमृत का प्रसाद मिले। प्रतिदिन प्रातः श्री आसा जी की वार का कीर्तन और सायं को खुले पण्डाल में दीवान सजते, जिसमें 'सुखमनी साहिब' का पाठ संगत मिल कर करती, बाद में कीर्तन आरती उपरान्त समाप्ति। इस समय दौरान आप जी ने दोनों दिन श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से मुख्य वाक तो लिया, लेकिन कथा प्रवचन कोई नहीं किया, परन्तु संगत को अभी भी आशा है कि शायद भोग के दिन कथा की कृपा करें। सवेरे भोग के बाद बाहर दीवान सजाने के लिए पण्डाल की तैयारी की जा रही है और संगत चाय नाश्ता कर रही है। इतने में सरदार उजागर सिंह सूरी, सतनाम सिंह गोराया, सरदार सुरिन्दर सिंह करनाल और रछपाल सिंह पाली आदि प्रेमियों ने सलाह की कि एकत्र होकर हजूर के चरणों में प्रार्थना की जाए। महाराज! कृपा करो आज बाहर दीवान में संगत को कथा रूपी वचन ज़रुर सुनाओ। यह विचार करके एक प्रेमी को और साथ लेकर ऊपर चौबारे में हजूर के चरणों में जा खड़े हुए। आगे हजूर भी इन को देख कर मुस्कराए जा रहे हैं। प्रेमी नमस्कार करने के बाद हाथ जोड़कर सामने खड़े हो गए। एक प्रेमी ने प्रार्थना की, महाराज! इस वर्ष पुण्य तिथि पर संगत काफी गिनती में आई है, उनमें से कुछ ऐसे सज्जन भी हैं जो केवल और केवल आप जी के पवित्र श्री मुख से कुछ अमृतमयी वचन सुनने के लिए ही आए हैं, इसलिए आप कृपा करो उन प्यासों की आप जी कथा प्रवचन द्वारा प्यास बुझाओ! प्रेमी का निवेदन समाप्त होते ही हजूर ने पवित्र श्री मुख से उच्चारण किया-**आखणि जोरु चुपै नह जोरु॥**

बोले इस पंक्ति को विचारते हुए, नीचे जा कर जो सेवा मिली है, उसी का निर्वाह करो, हमने जो कहना सुनना था कह दिया। बस-यही सार है। प्रेमी बेचारे जो बहुत आशा के साथ एकत्र होकर गए थे, निराश होकर नीचे आ गए।

उड़ मुइआ न जाही छोड़ि

जिक्र 1991 की कनखल की पुण्य तिथि का है। उस पुण्य तिथि का जिक्र यद्यपि पीछे साथ ही आ चुका है, लेकिन इस लेख का विषय कुछ भिन्न होने के कारण अलग दिया जा रहा है। पुण्य तिथि पूरी सज-धज के साथ मनाई जा रही है और संगत की भी काफी गहमा-गहमी है। बीच वाले यानि मध्य वाले इस सुबह के आठ बजे का समय है। हज़ूर अपनी मौज में खूँडे के सहारे खड़े, बलविन्दर सिंह (वैम्पी) गोराया वाले को पूछ रहे हैं—सुना था तेरी बड़ी कार की टक्कर हो गई। वैम्पी ने प्रार्थना की महाराज! चालक बाहर नहर पर धो रहा है, कृपा करो देखो वहाँ चलकर! आप की कृपा से बचाव हो गया! खूँडा हाथ में लेकर वैम्पी के साथ बाहर नहर ही तरफ चल पड़े। डा. बावा जी और एक अन्य प्रेमी भी चिप्पी लेकर उस आशा से चल पड़े कि शायद महाराज जी बाहर सैर को जाएंगे। गाड़ी के पास जा कर वैम्पी से पूछ रहे हैं कि मुरम्मत आदि पर कितना खर्चा आया?

वैम्पी ने बताया महाराज, रुपये तो पैंसठ छियासठ हज़ार के लगभग खर्च हो गया, लेकिन इस का खर्चा बीमा से मिल जाएँगा। पास से तो आठ हज़ार के करीब ही लगेगा। इस तरह बातें तो चाहे वैम्पी से करते नज़र आ रहे हैं, लेकिन ध्यान से देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है जैसे वैम्पी की बातों की तरफ कोई ध्यान नहीं, परन्तु आकर्षण किसी अन्य ओर लगा हुआ प्रतीत हो रहा है। ऐसे बातें करते-करते बहुत तेज़ी से बाईपास की तरफ चल पड़े। डा. बावा जी और दूसरा चिप्पी वाला प्रेमी भी साथ हो लिया। सड़क पार करके बड़ी नहर पर जाकर शंकराचार्य चौक की तरफ मुड़ गए। साथ जा रहे प्रेमी को हुक्म किया कि जपुजी साहिब का पाठ शुरु करो। हुक्म मान कर प्रेमियों ने पाठ शुरु कर लिया, लेकिन तेज़ चलने के कारण पाठ भी तेज़ हो रहा था। हुक्म हुआ थोड़ी धीरे चलते हैं, लेकिन पाठ बड़े प्रेम से धीरे-धीरे करो। शंकराचार्य चौक के पास जाकर जपुजी साहिब का पाठ सम्पूर्ण हो गया। बस पाठ सम्पूर्ण होने की देर थी, अब तो इतनी तेज़ी से चल पड़े जैसे बहुत जल्दी किसी टिकाने पर पहुँचना हो अथवा ऐसे समझो कि अपने दयालु कृपालु स्वभावानुसार एक पल की देरी भी अब सहन नहीं हो रही। चौक से बजाए शहर या नहर की तरफ जाने के बाईपास की ओर जाने लगे। वो देखो अब बाईपास भी छोड़ दिया। इतनी जल्दी क्यों? शायद बाईपास के रास्ते पाँच-सात मिनट ज्यादा लगने का भय था, लेकिन अब तो शायद पल से भी पहले पहुँचना चाहते हैं। रास्ता कोई नहीं। चोला झाड़ियों में फंस रहा है, चरण चप्पलों सहित छोटी मोटी झाड़ी के सिर पर ही टिक जाते हैं, क्योंकि अब चोला, चरण, शरीर या मार्ग की तरफ ध्यान कहाँ है? डा. बावा जी और दूसरा प्रेमी भाग-भाग कर मिलने की कोशिश करते हैं, लेकिन साथ मिलने की अपेक्षा दूरी बढ़ती जा रही है। अलौकिक दाता भी उड़ कर जाने वाली करामात को कहर समझता हुआ शायद संकोच करता है। अब कोई कसर शेष नहीं। चरण चाहे थोड़े बहुत नीचे लग रहे हैं, लेकिन तेज़ी अब पल-पल हवा में उड़ान की होती जा रही है। अब एक काफी ऊँची डंडी आ गई, वे बड़ी तेज़ी से ऊपर जा चढ़े। प्रेमी भी पीछे-पीछे काफी प्रयत्न कर रहा है साथ चलने की, लेकिन असफल! डॉ. जी तो और भी पीछे रह गए, अभी शायद मंजिल नहीं आई जहाँ आप पहुँचना चाहते हैं। पीछे आ रहे प्रेमियों की तरफ भी कोई ध्यान नहीं, आस-पास से बिल्कुल

बेखबर ऊँचे नीचे स्थान से बेपरवाह, केवल चलते ही जा रहे हैं। प्रेमी भी मन में सोच रहा है कि सड़क का रास्ता छोड़कर ऊँचे-नीचे काँटेदार रास्ते पर जाना यह सैर नहीं, यह तो कोई खास कारण है। डंडी पर भी हवा जैसी तेजी से चलते हुए, अब उस स्थान पर पहुँचे, नीलधारा यानि जहाँ मार्ग खत्म होता है। आगे अब कोई रास्ता नहीं, क्योंकि गंगा का किनारा आ गया, शायद वापिस चलें, लेकिन नहीं! वापिस जाने की अपेक्षा उतनी ही तेज़ी से बड़े-बड़े पत्थरों पर छलांगें लगाते हुए नीचे जा खड़े गंगा के किनारे पर। आश्रम से चल कर अब पहली बार पीछे की ओर दृष्टि घुमाई दस कदम पीछे आ रहे प्रेमी को बोले, आओ करो दर्शन! प्रेमी ने सोचा गंगा के दर्शन के बारे में कह रहे हैं। बोला, हाँ महाराज जी आ रहा हूँ। जब पास पहुँच कर देखा तो प्रेमी हैरान हो गया—एक निष्प्राण मनुष्य को गंगा में खड़ा देखकर आश्चर्य की सीमा न रही, मन बुद्धि की सोच से दूर का खेल देख कर। चरणों पर गिर कर प्रार्थना की, महाराज! यह कारण था आप की हवा जैसी तेज़ी का। कितना भाग्यशाली जीव है जिसके प्रेम के आकर्षण के कारण आप सुगम मार्ग को छोड़कर कठिन मार्ग से ऊँची-नीची जगह से बेखबर, झाड़ियों काँटों के बीच चोले का फंसना, चप्पल सहित झाड़ियों के सिर पर चरण रखते हुए, पूरी बेपरवाही से चलते हुए, इसके पास पहुँचे हो?

महाराज यह प्रेमी है कौन? और इसके कौन से कार्य पर प्रसन्न होकर इतने कष्टदायक रास्ते से पार होकर इसकी सांसारिक यात्रा के अन्तिम समय पास पहुँचे हो? महाराज! इसको कोई पुरातन वचन दिया हुआ था या इसकी कोई सेवा आपके मन को अच्छी लगी?

आप धन्य हो! आप की लीला देखी नहीं जा सकती—**तुमरी गति मिति तुमही जानी ॥** प्रेमी नीम बेहोशी की हालत में और आश्चर्य में डूबा उपरोक्त वचन उच्चारण कर रहा है। अब हजूर ने मौन तोड़ा पवित्र होंठ हिले, हुक्म हुआ—

੧ ओंकार के दर्शन करो—प्रार्थना की, महाराज करा दो! वह देखो हाथ पर! प्रेमी ने जब दृष्टि डाली उस भाग्यवान् पुरुष के हाथ पर पीछे की तरफ एक ओंकार खुदा हुआ था! गंगा के तेज़ बह रहे पानी में बिल्कुल सीधे खड़े उस निर्जीव पुरुष के ऊपर को खड़े दोनों हाथ आगे पीछे को हिलते जा रहे हैं। हजूर ने पूछा यह हाथ क्यों हिलाता है? महाराज यह स्वयं तो हिला नहीं सकता क्योंकि निष्प्राण है, इसीलिए यह तो पानी की लहरों से हिल रहे हैं। हजूर बोले, ऐसा नहीं है। यह तो दोनों हाथ खड़े करके कह रहा है, बहुत आनन्द है! बहुत आनन्द है!! बहुत आनन्द है!!!

तभी डॉक्टर जी भी आ गए, बोले महाराज! शास्त्रों में लिखा है कि जीव जो कर्म करता है, उसका फल सूक्ष्म शरीर प्राण के अन्त समय साथ लेकर चला जाता है। उन किए कर्मों के अनुसार ही उसके दूसरे शरीर को दुख-सुख प्राप्त होते हैं। पीछे रहा, मृतक पाँच भौतिक शरीर तो जड़ है, इसने क्या मुक्त और क्या बन्धनमुक्त होना है? क्योंकि मुक्ति और बन्धन सूक्ष्म शरीर के धर्म हैं, इस स्थूल शरीर के नहीं? हजूर बोले, भाई शास्त्र सारे कर्त्ता पुरुष के कर्म हैं। कर्ता सब कुछ करने को समर्थ है, शास्त्र उसकी महिमा को नहीं जान सकते, देख गुरु साहिब जी क्या संकेत कर रहे हैं।

महिमा न जानहि बेद ॥ ब्रहमे नही जानहि भेद ॥
अवतार न जानहि अंतु ॥ परमेसरु पारब्रहम बेअंतु ॥
अपनी गति आपि जानै ॥ सुणि सुणि अवर वखानै ॥ रहाउ ॥
संकरा नहीं जानहि भेद ॥ खोजत हारे देव ॥

देवीआ नही जानै मरम ॥ सभ ऊपरि अलख पारब्रहम।

अपनै रंगि करता केल ॥ आपि बिछोरै आपे मेल ॥

इकि भरमे इकि भगती लाए ॥ अपणा कीआ आपि जणाए ॥

संतन की सुणि साची साखी ॥ सो बोलहि जो पेखहि आखी ॥

नही लेपु तिसु पुंनि न पापि ॥ नानक का प्रभु आपे आपि ॥

(रामकली म: ५, पृष्ठ ८९४)

उसकी पूरी-पूरी महिमा लिखने-पढ़ने में नहीं आ सकती। वह तो स्वयं ही जानता है। ठीक है शास्त्र भी उसके विधान की व्याख्या करते हैं, लेकिन विधान बनाने वाला विधान से ऊपर है, वह चाहे तो विधान की धाराएँ भी बदल सकता है। जैसे किसी एक बड़े दोषी को कानून के मुताबिक जज फाँसी की सज़ा सुना देता है, लेकिन देश का राजा हुक्म कर देता है, इसे छोड़ दो, फाँसी नहीं देनी। फिर कानून और जज कहाँ रह जाते हैं। इसीलिए **हरि की गति न कोऊ जानै ॥** हजूर उस निष्प्राण पुरुष के सिर के बराबर खड़े खूँडे पर ठोडी टिका कर उपरोक्त वचन कहते रहे लेकिन ध्यान एक टक उस पुरुष की तरफ ही लगाए रखा। अब आप अपनी मौज में वापिस मुड़ने लगे, लेकिन प्रेमी के आश्चर्य में अभी तक कोई फर्क नहीं आ रहा, भीतर ऐसे अनुभव करता जा रहा है कि मैं किसी और धरती पर अलौकिक दृश्य देख रहा हूँ। वापिस चलते-चलते प्रार्थना की, महाराज! आज तो आप जी ने ऐसे अलौकिक दर्शन करवाएं जैसे बगदाद में पीर बहिलोल के पुत्र को गुरु नानक देव जी ने लाखों आकाश एवं लाखों पाताल के दर्शन कराए थे। हजूर बोले, गुरु बाबा जी ने तो पीर के लड़के को किसी अन्य पुरी में से प्रसाद का कटोरा भी दिलवाया था कि अपने पिता को छकाना। जब आप यह वचन कर रहे थे, उसे समय शंकराचार्य चौक पर पहुँच चुके थे। उसी समय श्वेत रंग की एक अम्बैसडर कार पास आ कर रुकी, उसमें से पाँच छ: व्यक्तियों ने निकल कर हजूर को नमस्कार की जिसमें देवपुरा आश्रम के महन्त श्रीमान् दर्शन सिंह जी ने पाँच सौ रुपये का नोट आप के चरणों में रखकर नमस्कार की और बताया कि महाराज! यह पाँच सौ रुपये महाराज मृगेन्द्र सिंह पटियाला ने अमेरिका से आप के चरणों में भेजे हैं, स्वीकार करो। प्रेमी ने नोट चरणों से उठाते प्रार्थना की महाराज पीर के लड़के की भाँति प्रसाद भी आ गया सारी संगत के लिए, लेकिन मीठी-मीठी सुर में एक आवाज़ सुनाई दे रही है—

ओइ जीवंदे विछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि ॥

(डखणे म: ५, पृष्ठ ११०२)

जो मागहि ठाकुरु अपुने ते।

गुरुवाणी अनुसार दु:ख औषधि बन जाता है, और सुख रोग, लेकिन किसी सीमा तक। सहन करने की सीमा को पार कर दोनों मनुष्य को गुमराह कर देते हैं। जब मन की सहन शक्ति से बढ़ जाते हैं तो चौबीस घण्टे इन की तरफ लगे रहने करके सेवा, सिमरन, ध्यान, जप, तप आदि ईश्वरीय गुण भूल जाते हैं। ऐसा ही एक जिक्र 1991 ई. के लगभग का है जब उजागर सिंह सूरी परिवार गोराया वाले जो हजूर के अनन्य सेवक हैं को कारोबार में थोड़ा झटका लगा।

हुआ ऐसे कि सूरी फर्म हीरोहाण्डा मोटर साइकिल को स्पीडोमीटर का कोई पार्ट सप्लाई करते थे। कारोबार लाभदायक होने के कारण जहाँ सारा परिवार सुखमय जीवन व्यतीत कर रहा था, वहाँ गुरुवाणी का नित्य, संतसेवी धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर रुचि रखता था। अचानक हीरो हाण्डा फर्म ने पार्ट लेने से इन्कार कर दिया कि यही पार्ट हम जापान की सज़ूकी कम्पनी से प्राप्त करेंगे। सूरी फर्म ने अपने साधनों से पूरी कोशिश की कि सामान की सप्लाई शुरु हो जाए, लेकिन सब असफल। तैयार सामान काफी जमा हो गया, कोई उठा नहीं रहा। उत्पादन बन्द नहीं कर सकते, क्योंकि मज़दूर खाली बैठेंगे। कानून मुताबिक मज़दूरों को हटा भी नहीं सकते। कई दिन ऐसे ही व्यतीत हो गए। कोई समाधान न हुआ। इस के बिना कोई और कार्य भी नहीं जिससे निर्वाह होता रहे। मज़दूर, बिजली आदि फैक्टरी के रोज़ के हज़ारों खर्चे, आय एक आने की भी नहीं, कितने दिन ऐसी अवस्था में गुज़र गए। सारे परिवार का जप, तप, पूजा, पाठ भूल गया व ध्यान सब का चौबीस घण्टे कारोबार की दुखमयी अवस्था की तरफ। न तैयार सामान बिकता है, न लेबर को खाली बिठाया जा सकता है। अब और कोई साधन न चलता देखकर—'**अखीं मीट धियान धर हा हा क्रिशन करे बिललांदी**' वाली युक्ति सूझी। पूज्य महन्त महाराज जी मुम्बई गए हुए थे। रात को वैम्पी ने फोन मिला कर नमस्कार की। अन्तर्यामी दाते ने पूछा, पाठ कितना करते हो प्रतिदिन? वैम्पी समझ गया कि डॉक्टर ने नब्ज पकड़ ली। प्रार्थना की, अब तो सब भूल गया। हुक्म हुआ **सेवा थोरी मांगन बहुता॥** वैम्पी हैरान है कि बिना बताए ही दाते ने मेरे दु:ख को पकड़ लिया। अब भय इतना हो गया कि जिस प्रार्थना के लिए फोन किया था वह वाणी से निकल ही नहीं रही। अन्त में नमस्कार कर के फोन रख दिया। रात व्यतीत होने के बाद प्रात: नौ बजे जब दफ्तर पहुँचे, तो हीरो-हाण्डा कम्पनी का मैनेजर आया बैठा था। मैनेजर ने कहा कि सज़ूकी कम्पनी के साथ हमारी बात नहीं बनी। आपके पास अब जितना सामान तैयार है, बिना किसी देरी के आज ही भेज दो, बाकी जैसे बनेगा वैसे भेजते रहना।

निरभउ निरवैरु

जिक्र 1991 का है जब पंजाब में अशान्ति और मारधाड़ का दौर जोरों पर चल रहा था। पूज्य श्रीमान् १०८ महंत बाबा राम सिंह जी महाराज को उन दिनों में ऋषिकेश निवासी एक प्रतिष्ठित महात्मा और उच्चकोटि के विद्वान महामण्डलेश्वर जो आप जी के साथ अच्छा स्नेह रखते हैं ने बातों-बातों में पूछा कि महाराज धर्म प्रचार के लिए पंजाब आजकल भी जाते हो? महाराज बोले, हाँ शास्त्री जी आज से हमारी पंजाब यात्रा शुरु है। चलो आप को भी साथ ले चलें। शास्त्री जी बोले, महाराज, पंजाब में तो गोलियों की आग बरस रही है। किसी भी व्यक्ति की जान सुरक्षित नहीं, वहाँ कैसे जाएँ? हजूर बोले, संत को तो जाना ही वहीं चाहिए जहाँ अशान्ति हो, ताकि स्वप्न के दु:ख में कष्ट उठा रहे लोगों को जगा दिया जाए। वह दु:खी लोग बेचारे वास्तविकता को समझ कर सुखी हो जाएँ। डॉक्टरी विद्या मरीज़ के बिना किस काम की? केवल विद्या पढ़ लेने से कोई अभय नहीं हो जाता जितनी देर हृदय में मित्रभाव ना आ जाए यानि 'निरवैरु' पुरुष ही अभय हो सकता है। निरवैरु वही हो सकता है जिस की द्वैत जड़ से समाप्त हो जाए यानि जितनी चर, अचर सृष्टि है सब में अपना आप देखे—

ना को बैरी नहीं बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई॥

(का: म: ५, पृष्ठ १२९९)

यथा— **ना को मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के बैराई॥**
ब्रहमु पसारु पसारिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई॥
सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन॥
दूरि पराइओ मन का बिरहा ता मेलु कीओ मैरै राजन॥

(धनासरी म: ५, पृष्ठ ६७१)

यथा— **जोगी कउ कैसा डरू होइ। रुखि बिरखि ग्रिहि बाहरि सोइ॥**

(गउड़ी म: १, पृष्ठ २२३)

ऐसी दृष्टि परिपक्व हो जाए, गुरु कृपा द्वारा द्वैत भ्रम सारा मिट जाए, अकाल पुरख के हुक्म को पहचान कर उस में पूरी तरह स्थित हो जाए और मेरा-तेरा, अपना-पराया आदि मैल से हृदय पूर्ण रूप से शुद्ध हो जाए, फिर यह जीव पूर्ण रूप से निर्भय होकर घूमता है, देखिए गुरु अर्जुन देव महाराज क्या हुक्म करते हैं—

डीगन डोला तऊ लउ जउ मन के भरमा॥
भ्रम काटे गुरि आपणै पाए बिसरामा॥
ओइ बिखादी दोखीआ ते गुर ते हूटे॥
हम छूटे अब उना ते ओइ हम से छूटे॥ रहाउ॥
मेरा तेरा जानता तब ही ते बंधा॥
गुरि काटी अगिआनता तब छटके फंधा॥
जब लगु हुकमु न बूझता तब ही लउ दुखीआ॥
गुर मिलि हुकमु पछाणिआ तब ही ते सुखीआ॥
ना को दुसमनु दोखीआ नाही को मंदा॥
गुर की सेवा सेवको नानक खसमै बंदा॥

(आसा म: ५, पृष्ठ ४००)

आप उपरोक्त ईश्वरीय आज्ञा में स्थित होकर पंजाब में उस समय भी दिन-रात अकेले भ्रमण करते रहे, जब पंजाब में बरसती गोलियों की आग से बड़े-बड़े विद्वान, शास्त्री, आचार्य, महामण्डलेश्वर और लोगों में प्रतिष्ठित महात्मा डरते हुए पंजाब की ओर देखते भी नहीं थे।

पंजाब की सभी कुटियां गाँवों से दूर खेतों में एकान्त, उन में अकेले रहना, सवेरे दो बजे उठ कर बेपरवाही में सैर को चले जाना, सदैव एक ही रंग में प्रसन्नचित्त रहना। वह कौन सी शक्ति है, जिसके बल पर आप निर्भय होकर घूम रहे हैं? हृदय में पूर्ण रूप से 'निरवैरता' और ईश्वरीय आज्ञा में पूर्ण स्थिति।

वह देखो कुमार्ग पर चल रहे बेचारे कुछ जीवों पर दया करके आज कैसे जीवन प्रदान कर रहे हैं। समय 1991 के दिसम्बर मास का चल रहा है, आप भोतने कुटिया में रुके हुए हैं जो बरनाला-मोगा रोड़ पर भोतने बख्तगढ़ गाँवों के बीच दोनों गाँवों से डेढ़-डेढ़ किलोमीटर दूर खेतों में स्थित है। समय भी **नहीं छॅडिआ सन्त ते साध मीयां** का चल रहा है। समीप कोई गाँव नहीं, कोई आबादी बस्ती नहीं, अगर कोई समीप है तो अपना प्रीतम या उस द्वारा प्रदान किया गया जगत उद्धार का कार्य, गुरुवाणी सम्बन्धी विचार। रात्रि के कोई दस बज चुके हैं गाँव के दो-तीन व्यक्ति और गुरमीत सिंह सेवादार के बिना

पास कोई पाँचवां व्यक्ति नहीं। **दिनु राती आराधहु पिआरो निमख न कीजै ढीला** का कार्य करते हुए भाई वीर सिंह जी कृत गुरुवाणी का टीका पढ़ रहे हैं। विचार चल रहा है कि जितनी देर इसका जीवन गुरुवाणी के अनुसार है तब तक यह जीव सुखी है और संसार में उसका यश होता है, लेकिन जब गुरुवाणी का मार्ग छोड़ कर मनमर्ज़ी करता है उसी समय इसके जीवन में दु:खों की उत्पत्ति और संसार में अपयश होना शुरु हो जाता है। अपयश की जिंदगी से मृत्यु हज़ार गुणा अच्छी है। **विनाश काले विपरीत बुद्धि,** जब बुद्धि मलिन हो जाए, यानि विवेक विचार, उचित-अनुचित, जायज़-नाजायज़, अच्छा-बुरा आदि विचारों को खो बैठे, तुलसीदास जी कहते हैं, समझो उस जीव के नाश का समय आ गया। इसीलिए जीव को विनाश से बचने के लिए प्रयत्न करते रहना चाहिए। फरीद साहिब जी इस को सावधान करते हैं—

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवा करि देखु॥

(स.शेख फरीद, पृष्ठ १३७८)

हे जीव! तुम किसी के दोषों की ओर न देख, परन्तु हर समय अपने मन रूपी बालों में कंघी करते रहो, अर्थात् मन में झाँक कर देख कोई बुराई तो नहीं उठ रही, अगर उठ रही है तो उसको आत्मिक बल द्वारा मार क्योंकि—

ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताइऐ॥

(रामकली म: ३, पृष्ठ ९१८)

ऐसा कौन सा काम है, जिस के करने पर बाद में पछताना पड़ता है।

दूखु न देई किसै जीअ पति सिउ घरि जावउ॥

(श्लोक म: ५, पृष्ठ ३२२)

यदि परलोक में आदर मान चाहता है तो किसी जीव के हृदय को दु:ख न देना। बाबा फरीद जी फिर संकेत करते हैं—

मति होदी होइ इआणा॥ ताण होदे होइ निताणा॥
अणहोदे आपु वंडाए॥ को ऐसा भगतु सदाए॥
इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे॥
सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचांगवा॥
जे तउ पिरीआं दी सिक हिआउ ना ठाहे कही दा॥

(पृष्ठ १३८४)

बाबा जी कहते हैं, बुद्धिमान होते हुए भी अपने आप को छोटा समझना, शक्ति होते हुए भी अपने आप को शक्तिहीन समझना, ज़रूरतमन्दों के साथ बाँट कर खाना, ऐसा पुरुष परमेश्वर का भक्त माना जाता है। किसी को कटु वचन न बोलना, क्योंकि हरि परमात्मा सब के हृदय में बैठा है, किसी का हृदय न दुखाना, क्योंकि सब हृदय बहुमूल्य माणिक्य हैं। कैसे हैं बहुमूल्य माणिक्य?

क्योंकि सब के हृदय में माणिक्य रूपी परमेश्वर विद्यमान है इसीलिए किसी के हृदय को दुखाना मूल रूप से बुरा है। इसलिए बाबा फरीद जी कहते हैं, हे जीव! अगर तुम सुखी रहना चाहते हो और मनुष्य जीवन का वास्तविक उद्देश्य, प्यारे

परमेश्वर को प्राप्त करना चाहते हो तो भूल कर भी किसी जीव का हृदय ना दुखाना।

इस प्रकार की जब उपदेश रूपी वर्षा हो रही थी तो उस समय लगभग चार सत्संगियों के बिना चार-पाँच जवान लड़के ऊपर गर्म शाल ओढ़े आ गए। नमस्कार कर के बैठ गए। फिर उपरोक्त सारा उपदेश शान्तचित्त सुनते रहे। उपदेश सत्संग समाप्त होने के बाद महापुरुषों को नमस्कार करके चले गए, क्योंकि अर्द्धरात्रि के करीब हो चुकी थी। कौन थे ये लड़के? कहाँ से आए थे? आने का उद्देश्य क्या था? खुदा जाने बाद में एक श्रद्धालु नछतर सिंह भोतने वाला बोला कि महाराज! ये लड़के अच्छे नहीं थे। हजूर तो अपनी मौज में मुस्कराते रहे, लेकिन नछतर सिंह के कानों में आवाज आ रही है, डॉक्टर के पास हर तरह के मरीज़ आते हैं। डॉक्टर सब के रोग जांचकर रोग अनुसार औषधि देता है। एक मरीज़ का दूसरे के आने के बारे में शंका करना निर्मूल है। स्वस्थ व्यक्ति का डॉक्टर के पास क्या काम? हम सब अहं रोग का शिकार हैं, किसी को ज्यादा है किसी को कम, लेकिन अनुभवी डॉक्टर के बिना है सबको। इसीलिए यह रुहानी वैद्य ही जानते हैं कि किसको कितनी मात्रा में कौन सी औषधि देनी है।

क्योंकि इन्होंने यहाँ कैम्प ही यानि दो दिन से हर प्रकार के मरीजों के लिए लगाया है। अगर मरीज नहीं आते तो कैम्प किस काम का?

रात्रि यहाँ आत्मानंद में व्यतीत की। दूसरे दिन अपना कैम्प यहाँ से ले जाकर धनौले कुटिया में लगाया। दिन को लंगर पानी छक कर आराम किया, शाम को सैर करने के लिए नहर के रास्ते की तरफ चले। साथ नछतर सिंह भोतने वाला भी चल पड़ा। सैर को क्या गए-मानों एक बचपन के बहुत पुराने मरीज़ का ऑप्रेशन करने के लिए जा रहे हैं। साथ ही एक मरहम पट्टी वाला लेकर। गाँव से थोड़ी दूर खेतों में कुछ मकान हैं जिन को ''जैदां पत्ती दुनां शाह'' धनौला के नाम के साथ जाना जाता है। यहाँ जंगीर सिंह नाम का एक व्यक्ति रहता है, जिस का गाँव तो 'मुताबो-के' है, लेकिन यहाँ ननिहाल की भूमि का वारिस है। यह पुरुष बचपन से ही अपने विचारों का है। हजूर सैर को जाते हुए इस की कोठियों के पास से नहर-नहर आगे निकल गए। काफी दूर आगे जा कर जब वापिस आए तो उस समय दिन छिप गया था। जब इसकी कोठियों के बराबर नहर पर आए तो यह जंगीर सिंह शराब के नशे में धुत्त हुआ लाठी ले कर नहर के रास्ते के बीच में आकर खड़ा हुआ। हजूर जब पास आए तो यह ज़ोर से बोला, रुक जाओ। महाराज मुस्कराते हुए बोले, क्या बात है भाई! इतनी देर में नहर पर एक ट्रैक्टर पर बैठे चार-पाँच व्यक्ति आ पहुँचे 'ये शायद जंगीर सिंह के सम्बन्धी हैं।' वे फटा-फट ट्रैक्टर से उतर कर महापुरुषों के चरणों में झुक गए। जंगीर सिंह से बोले, ये तो बाबे कानूनगो के कुएँ पर आए हैं। जंगीर सिंह तो सुनता ही पता नहीं कहाँ चला गया। ट्रैक्टर वाले हजूर से माफी माँगे महाराज! क्षमा करो, यह बचपन से ही ऐसा है इत्यादि। हजूर बोले कोई बात नहीं हमें तो इसने कुछ नहीं कहा! कुटिया वापिस आ गए, लेकिन लगता है उस मरीज को पेट साफ करने की कोई गोली दे आए। अपनी मौज में लीन हुए स्नान कर लंगर छक कर दरवाज़ा बन्द कर लिया। उधर काननूगो को पता लग गया कि जंगीर ने ऐसा किया है। कानूनगो उससे पूछने के लिए कोठी पर गया, लेकिन जंगीर सिंह नहीं मिला। रात व्यतीत हो गई, दूसरा दिन बीत कर सायं के चार बज गए। अब देखो डॉक्टर की उदारता-मरीज़ को स्वयं याद कर रहे हैं। हजूर ने पूछा वह कल वाला व्यक्ति नहीं आया? कानूनगो ने बताया, महाराज आया नहीं। दाता अपनी मौज में इधर-उधर घूम रहे हैं। इतने में जंगीर सिंह आकर चरणों में गिर पड़ा। हाथ जोड़कर प्रार्थना करता जा रहा है, महाराज कृपा करो! मेरे से भूल हो गई। दाता मुस्कराए जा

रहे हैं लेकिन कह कुछ नहीं रहे। अब थोड़ी देर बाद मौन तोड़ा बोले भाई! गलती की तो कोई बात नहीं। देखो! डॉक्टर की उदारता, बचपन के मरीज़ को स्वस्थता का प्रमाण पत्र दे रहे हैं। जंगीर दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता जा रहा है, महाराज! मेरे घर चरण डालो। अलौकिक प्रीतम मुस्कराए जा रहे हैं मानों चैक कर रहे हैं कि मरीज पूरी तरह ठीक हो गया है कि अभी किसी नब्ज़ में कुछ कमी है? खैर, जंगीर के बार-बार किए निवेदन पर हुक्म कर दिया कि तुम चलो घर, हम आ जाते हैं। कुछ देर पश्चात् पहुँच गए, अलौकिक प्रीतम जंगीर सिंह के घर! जल पानी छका कर समस्त परिवार ने प्रार्थना की, महाराज! हमारे घर अखण्ड पाठ करा दो। हजूर बोले अखण्ड पाठ की तिथियां तो ऋषिकेश देते हैं बरसी पर, उससे पहले सभी तिथियां दी हुई हैं। जंगीर ने प्रार्थना की महाराज! मैं बरसी पर ऋषिकेश आ जाऊँगा, फिर कृपा करके कोई तारीख बख्श देना। जंगीर का सफल ऑप्रेशन करके वापिस कुटिया आ गए। जंगीर बरसी पर ऋषिकेश पहुँचा, तारीख लेकर घर श्री अखण्ड पाठ साहिब करवाया, बुरे कामों से किनारा किया, आगे से नेक इन्सान का जीवन जीने का वचन दिया।

गुरुद्वारा साहिब घणीवाल

लोपे गाँव से कोई चार किलोमीटर की दूरी पर पश्चिम की ओर नहर के किनारे एक गाँव घणीवाल बसा हुआ है। इस गाँव की नहर के बिल्कुल पास गुरुद्वारा साहिब तो कोई पच्चीस साल पहले बना हुआ था, लेकिन इसका भवन बहुत छोटा और नीचे था। नीचे होने के कारण थोड़ी हवा से ही अन्दर धूल मिट्टी और कीड़े-मकौड़े आमतौर पर घूमते रहते थे। अब कुछ अच्छा संयोग बना गुरुद्वारा साहिब की प्रबन्धक कमेटी का एक साहसी नौजवान प्रधान बन गया। इस गाँव में एक संत सेवी विचारों का नौजवान रणदीप सिंह जो गुरुवाणी का पाठी भी था और प्रधान जोगिन्दर सिंह आदि ने मिलकर नया भवन बनाने के लिए गाँव के लोगों को प्रेरणा दी। परमेश्वर की कृपा से गाँव के आम लोग सहमत हो गए, जिन में प्रधान जोगिन्दर सिंह, रणदीप सिंह, करतार सिंह, अमर सिंह, उजागर सिंह, नाहर सिंह, बच्चन सिंह नंबरदार और डॉक्टर रणजीत सिंह तथा अन्य कई सज्जन बहुत रुचि से लगे। रणदीप सिंह के सुझाव पर इन्होंने परम पूजनीय श्रीमान् १०८ महंत राम सिंह जी को अपने पवित्र कर कमलों द्वारा नींव पत्थर रखने के लिए प्रार्थना की। आपने इस शुभ कार्य के लिए तिथि दे दी। निश्चित तिथि पर प्रेमियों ने श्री अखण्ड पाठ साहिब का भोग और अरदास करके महापुरुषों को ईंट रखने के लिए प्रार्थना की। महापुरुषों ने आज्ञा दी, नींव और गहरी खोदो।

घणीवाल के प्रेमियों ने दो ढ़ाई फुट नींव खोदी थी, क्योंकि वे डरते थे कि भवन काफी बड़ा है इसलिए ज्यादा गहरी नींव खोदने से ईंट सीमेंट का खर्चा बहुत बढ़ जाएगा। खैर-महापुरुषों के साथ आई लोपे, भोड़े, खोख आदि गाँवों की संगत जी जान से लग गई। एक तरफ से लगभग छः फुट गहरी नींव खुदवाकर महापुरुषों ने अपने पवित्र कर कमलों से उस स्थान की नींव रखी। गाँव की संगत कुछ उदास थी कि पचास हजार ईंट तो नींव में ही लग जाएगी। दूसरे दिन जब गाँवों वालों ने चारों तरफ नींव खोदी तो एक नींव में चार से छः फुट की गहराई के बीच में पुरानी कब्रें निकल आईं। कब्र में रखे मिट्टी के पूरे घड़े निकले। घणीवाल गाँव की संगत अब समझी कि महापुरुषों ने छः फुट गहरी नींव क्यों खुदवाई?

वह अपनी दिव्य दृष्टि से जानते थे कि अगर नींव ऊपर ही रख दी गई तो कब्र के घड़े टूटकर बैठ जाएँगे। समय के साथ अब वहाँ एक भव्य भवन बन गया है।

लालची रूह की मुक्ति

समय 1991 के जुलाई मास प्रात: चार बजे का है। बाहर धीमी-धीमी वर्षा हो रही है। आप अन्दर बैठे चार-पाँच श्रद्धालुओं को 'शब्द हज़ारे' का पाठ करवा रहे हैं। थोड़ी देर बाद आपका एक सिन्धी सेवक नरिआनी अन्दर आ गया। पाठ पूरा होने पर उसने आपके चरणों पर प्रार्थना की महाराज! साँप! हजूर ने पूछा कहाँ है? महाराज बाहर आपके दरवाज़े के बिल्कुल पास। हजूर ने एक प्रेमी से हुक्म किया कि इसे जीवित पकड़ लो, मारना नहीं! हुक्म की देरी थी कि प्रेमी ने पकड़कर बाल्टी में डाल दिया। जब हजूर के सामने लेकर आए वह लालची रुह बाल्टी से निकलने लगी, शायद मन में नमस्कार करने की इच्छा हो। हजूर ने हुक्म किया, दरबार साहिब में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब को नमस्कार करवा के गंगा की तरफ छोड़ आओ। हुक्म अनुसार दोबारा फिर बाल्टी में डालकर दरबार साहिब नमस्कार करवा के जिस समय गंगा की तरफ जाकर बाल्टी से बाहर निकाला तो प्रेमी ने कहा कि साधु होकर भी माया का मोह नहीं छोड़ा, देख लिया फल? धरती पर पेट के बल रेंग रहा है। अब भी शुक्र कर, करतार द्वारा शीघ्र सुनी गई फरियाद।

श्रीलंका की दूसरी यात्रा

सन् 1992 जनवरी में प्रत्येक वर्ष की भाँति संगत का निवेदन मानकर मुम्बई पहुँचे। उस यात्रा के दौरान संत गुरिन्दर सिंह (छोटू बाबा) जी भी साथ थे। श्री अमरीक चन्द जी चावला अँधेरी सात-बंगला, माता रुक्मा हीरा वरसोवा सात बंगला, श्रीमती जानू अडवानी खार, श्रीमती प्रमिला संगतानी चम्बूर, श्री शाम कविता जोगेशिया मूलंद और श्री गुल चैनानी जी, मैरिनड्राइव चर्च-गेट इत्यादि प्रेमियों के निवेदन स्वीकार करते हुए चार-चार, पाँच-पाँच दिन रुक कर सवेरे शाम कीर्तन द्वारा समय सफल होता रहा। दिन में श्रद्धावान् प्रेमी अपने घरों में चरण स्पर्श करवाते, भोग मोक्ष की दातें प्राप्त करते, गुरुवाणी के साथ जुड़ते। इस प्रकार जनवरी का पूरा मास व्यतीत हो गया। अब फरवरी में श्री किशोर हिरदेरमानी और जनक हिरदेरमानी भाइयों की प्रार्थना स्वीकार करके कोलम्बो पहुँचे। श्री किशोर हिरदेरमानी ने दो वर्ष पूर्व 1990 में आप जी की प्रथम यात्रा के समय बंगले की नींव आप जी के पवित्र हस्त कमलों द्वारा रखवाई थी। अब वह तैयार हो चुका था, इसीलिए आप जी का निवास उस बँगले में ही करवाया। कोलम्बो निवासी सारी सिन्धी संगत बड़े प्रेम से मिली। सुबह सायं सत्संग गुरुवाणी विचार होता, दिन के समय प्रेमी अपने घर और फैक्ट्रियों में चरण डलवाते। इस प्रकार दस दिन कोलम्बो की संगत को गुरुवाणी प्रेम का प्रसाद देकर वापिस मुम्बई आ गए। मुम्बई कुछ दिन रुकने के पश्चात् वापिस ऋषिकेश आ गए।

दीपावली! कि गुरुवाणी का बीज?

ओह! तनिक ध्यान से देखें। आज पूर्व में कितनी सुन्दरता है? दूसरा प्रेमी-पूर्व की तरफ देखकर, हाँ! सूर्य निकलने से पूर्व लाली चाहे प्रतिदिन होती है, लेकिन आज तो बहुत ही विशेष प्रकार की है, न गरमी न सर्दी। यह तो चलो मान लेते हैं कि मौसम जो सुहावना हुआ, कार्तिक मास का। दूसरा प्रेमी, ठीक है! मौसम तो सुहावना चल रहा है! लेकिन यह जो

विशेष आनन्द अनुभव हो रहा है, जो बताया भी नहीं जाता, यह तो रोज़ अनुभव नहीं होता? स्थिर और शान्त वातावरण में बहुत सुन्दर आवाज़ सुनाई दे रही है—

गुरुबाणी गावह भाई॥ ओह सफल सदा सुखदाई॥

(सो.म. ५, पृष्ठ ६२८)

यह पंक्ति बार-बार उच्चरित हो रही है। प्रेमी दूसरे को बोला! आज दीपावली का दिन आने वाला है, इसलिए यह जो पूर्व दिशा में सुन्दर वातावरण में विशेष प्रकार का आनन्द, शीतलता और मिठास जैसा रस अनुभव हो रहा है, यह उदय हो रहे दीपावली के विशेष दिन का सूचक है अर्थात् राम जी के वापिस अपनी जन्म-भूमि आने का पवित्र दिवस है, इसीलिए सारी प्रकृति शान्त रस में डूबी हुई अपने स्वामी का यश कर रही है। इतने में पुनः मीठी-मीठी ध्वनि में आवाज़ सुनाई देने लगी।

आइओ सुनन पड़न कउ बाणी॥
नामु विसारि लगहि अन लालचि बिरथा जनमु पराणी॥ रहाउ॥
समझु अचेत चेति मन मेरे कथी संतन अकथ कहाणी॥
लाभु लैहु हरि रिदै अराधहु छुटकै आवण जाणी॥
उदमु सकति सिआणप तुमरी देहि त नामु वखाणी॥
सेई भगत भगति से लागे नानक जो प्रभ भाणी॥

(सांरग म: ५, पृष्ठ १२१९)

प्रेमियों ने इधर-उधर ध्यानपूर्वक देखा कि आवाज़ कहाँ से आ रही है। अब पता चला अलौकिक प्रीतम अपने चौबारे की चिटकनी बन्द करके ऊँची आवाज़ में पढ़ रहे हैं। दिन निकल आया, चिटकनी खुली, संगत ने दर्शन किए, इतने में कुलवन्त सिंह मिस्त्री कार लेकर आ गया, क्योंकि आज 1992 को दीपावली के दिन की तिथि उसको दी हुई थी, इसीलिए उसकी फैक्टरी के अखण्ड पाठ साहिब के भोग पर जाना है। फैक्टरी पहुँचने के पश्चात् नियम समय अनुसार भोग पड़ चुके हैं। कीर्तन की समाप्ति, अरदास उपरान्त गुरु के लंगर वितरित होने आरम्भ हो गए। लंगर ग्रहण करके सरदार तरजीत सिंह नरुला, सरदार सुरिन्दर सिंह सचदेवा और सरदार कंवरजीत सिंह भसीन इत्यादि तीन-चार प्रेमियों ने आपके चरणों में प्रार्थना की, महाराज! आप कृपा करें। आज शाम को दीपावली छोटी कुटिया में मनाएं। साथ ही दीपावली की खुशी में शाम का लंगर सारी संगत वहीं ग्रहण करे। प्रेमियों की प्रार्थना सुनकर आप मुस्करा रहे हैं? मानों मुस्कराते हुए प्रेमियों के भीतर छिपे किसी बड़े कार्य के बीज को अंकुरित होता देख रहे हैं। प्रेमी हाथ जोड़े खड़े हैं मानों आँचल पसारे हों आज सायं दीपावली उत्सव की भिक्षा हेतु। परन्तु अलौकिक प्रीतम आगे से मुस्करा रहे हैं मानों कह रहे हों कि तुम्हारी माँग बहुत छोटी है सिर्फ आज की दीवाली? लेकिन गुरु नानक तो तुम्हारी सेवा, प्रेम और परोपकारी भावना से खुश होकर गुरुवाणी रूपी कोई बड़ा वृक्ष ही तुम्हारे आँचल में डालने के लिए प्रसन्न हुए हैं। जिस का अमृत के समान मीठा फल और शीतल घनी छाया का आप भी आनन्द लो और दूसरे ज़रुरत मन्द प्रेमियों के घरों में खुला बाँटो और जिसकी महक केवल करनाल में ही नहीं, परन्तु पंजाब तक फैलेगी। खैर-हुक्म कर दिया-ठीक है सारी संगत मिलकर शाम को चार बजे श्री सुखमनी साहिब का पाठ शुरु कर दो,

बाद में कीर्तन उपरान्त गुरु का लंगर हो जाएगा। प्रेमियों ने आज्ञा लेकर खुशी-खुशी जाकर तैयारी की। सायं को चार बजे श्री सुखमनी साहिब का पाठ आरम्भ हो गया। ज्ञात होने पर संगत भी काफी संख्या में एकत्र हो गई। लंगर के प्रेमी लंगर की तैयारी करते रहे। उधर सुखमनी साहिब का पाठ सम्पूर्ण होने पर ईश्वरीय वाणी का कीर्तन शुरु हो गया। बीबी हरमिन्दर कौर ने दो घण्टे बहुत ही मधुर कीर्तन किया। संगत भी इतनी एकत्र हो गई कि आँगन सारा भर गया। संगत ने खुशी में आतिशबाज़ी भी बहुत मंगा रखी है। प्रार्थना की, महाराज! दीपावली की खुशी में आतिशबाज़ी चलाओ। आपने प्रार्थना स्वीकार करके पहली फुलझड़ी चलाई फिर एक दो पटाखे आदि चलाकर शेष सारी संगत को बाँट दी। संगत ने भी अपने-अपने ढंग से सारी चला दी। इतनी देर में गुरु का लंगर तैयार हो गया, सारी संगत ने आँगन में पंक्तियाँ लगा लीं। हजूर के लंगर छकने के लिए एक कमरे में पलंग लगाया हुआ था, उस ऊपर सुशोभित होकर लंगर छक लिया। लंगर छकने के पश्चात् सरदार सुरिन्दर सिंह, तरजीत सिंह और रछपाल सिंह गुलाटी आदि आठ-दस व्यक्ति बड़ी खुशी की अवस्था में हजूर का धन्यवाद करने के लिए अन्दर कमरे में गए। प्रार्थना की महाराज! बहुत कृपा की, इतना सुन्दर समागम हो गया। दो तीन घण्टे गुरुवाणी का प्रवाह चला, उपरान्त दीवाली बहुत धूम-धाम से मनाई गई। आपकी कृपा से गुरु के लंगर अटूट चले। अनेक प्रकार के पदार्थ संगत ने छके अभी भी बाहर खुला लंगर चल रहा है। हजूर अभी भी अपनी मौज में मुस्करा रहे हैं। इन प्रेमियों के अन्दर सेवा का कोई बड़ा बीज है जिससे ये अनजान हैं, परन्तु आप की रस भरी मुस्कान मानों उस बीज को थोड़ा हिला रही है। अब पवित्र अधर हिले, बड़ी प्रसन्न मुद्रा में बोले भाई, हम तो आ कर बैठ गए हैं, यत्न साहस सारा तुम्हारा और आशीर्वाद बाबे नानक का! मुस्कराते हुए ही-वह देखो! अब कई हजार वर्ष के रखे पुरातन बीज के ऊपर से कैसे पर्दा हटता जा रहा है। प्रसन्न मुद्रा में कह रहे हैं, यह समागम आज जल्दी ही तैयारी करके कितने अच्छे ढंग से मनाया गया है, लकिन अगर पहले विचार की होती तो पावन वाणी का श्री अखण्ड पाठ साहिब हो जाता फिर तो और भी सोने पर सुहागा होना था। शायद इतने ही सहारे की आवश्यकता थी बीज के अंकुरित होने के लिए, उसी समय सुरिन्दर सिंह ने प्रार्थना की, महाराज! कृपा कीजिए अगले साल की दीपावली यहीं प्रदान कर दो। साथ ही श्री अखण्ड पाठ साहिब हो जाएगा। आप मुस्कराते हुए कह रहे हैं, आगामी वर्ष तो अभी दूर है जैसे गुरु नानक करवाएंगे हो जाएगा। अब कमरे में खड़ी सारी संगत ही प्रार्थना करने लगी, महाराज कृपा कीजिए आगामी वर्ष की दीपावली यहीं निश्चित कर दो। बस अब शायद समय आ गया था; **मेघै नूँ फुरमाण होआ वरसहु क्रिपा धारि** का संकेत कर दिया। ठीक है हम भी आ जाएंगे दीपावली के साथ-साथ पूज्य संत बाबा भगत सिंह जी महाराज और परम पूजनीय संत बाबा निक्का सिंह जी महाराज आदि दोनों महापुरुषों की याद मनाई जाएगी। आप जी के पवित्र श्री मुख से स्पष्ट संकेत सुन कर संगत अति प्रसन्न हो गई। आदरणीया माता बिमला जी ने प्रार्थना की, महाराज! एक अखण्ड पाठ साहिब की सेवा मुझे बख्श दो। हजूर बोले एक तो सारी संगत की तरफ से हो जाएगा दूसरा तुम्हारी तरफ से हो जाए। इतने में रछपाल सिंह गुलाटी ने प्रार्थना की, महाराज एक पाठ साहिब की सेवा मुझे बख्श दो! हजूर मुस्करा रहे हैं। प्रेमियों ने मुस्कराने को ही संकेत समझ कर पाठ साहिब की सेवा प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करनी शुरु कर दी। हजूर ने आज्ञा दी कि एक कागज पर नाम लिख लें, जो-जो प्रेमी पाठ साहिब की सेवा लेना चाहते हैं। प्रेमियों ने शीघ्र ही कागज़ लेकर नाम लिखने शुरु कर दिए-पहला पाठ सारी साध संगत की ओर से।

आदरणीय योग्य माता बिमला देवी जी करनाल, सरदार रछपाल सिंह जी गुलाटी करनाल, श्री स्वर्ण सिंह जी सचदेवा करनाल, श्री कंवरजीत सिंह जी भसीन करनाल, श्री सुरिन्दर सिंह जी सचदेवा करनाल, श्री त्रिलोक सिंह खुराना करनाल, श्री तरजीत सिंह नरुला करनाल, कुलदीप सिंह कालड़ा करनाल, माता प्रकाश कौर करनाल, श्री महिन्दर सिंह जी बब्बर करनाल, श्री बनारसी लाल जी बाबा करनाल, सरदार तिरलोचन सिंह जी करनाल और सरदार रणवीर सिंह ढिल्लों कुड़क इत्यादि चौदह प्रेमियों की तरफ से पाठ साहिब की सेवा के लिए नाम लिखवा दिए। हजूर मुस्करा कर पूछ रहे हैं? इतने पाठ करोगे कहाँ? इस कमरे में तो पाँच पाठ से ज्यादा नहीं होंगे। आप ने तो स्पष्ट संकेत कर दिया कि जो लिस्ट आप बना रहे हो उनमें से पाँच पाठ यहाँ हो जाएंगे। संगत में से आवाज़ आई, महाराज! दोनों कमरों के बीच की दीवार हटा देंगे। तब ये चौदह पाठ अन्दर ही आ जाएंगे। हजूर मुस्करा कर कह रहे हैं, हाँ दीवार ही दूर करनी है दोनों कुटियों की। लेकिन अलौकिक प्रीतम अभी भी मुस्करा रहे हैं, मानों कह रहे हों भाई! करतार जैसे कराएँगे। तभी बाहर की संगत को भी पता लग गया कि आगामी दीपावली भी यहीं मनाई जाएगी, साथ अखण्ड पाठ साहिब भी होंगे, जो अन्दर लिखे जा रहे हैं।

अब से कुछ मिनट पहले संगत में जो खुशी दिखाई दे रही थी आज के दीपावली समागम की वह अब भूलती ही जा रही है, क्यों आगामी वर्ष की दीपावली की ज्यादा खुशी ने मन में अपना प्रभाव डालना शुरु कर दिया है। रात भी अब काफी हो गई इसीलिए सारी संगत किसी अतुलनीय खुशी में मग्न हुई आज्ञा लेकर घर को वापिस हो गई। इधर आप भी किसी बड़े कार्य की नींव रख के वापिस बड़ी कुटिया आ गए। रात्रि व्यतीत होने के बाद सुबह सवेरे ही आदरणीय भगत लॅभामल जी ने आपके चरणों में प्रार्थना की, महाराज मालूम हुआ है कि आगामी वर्ष की दीपावली यहाँ ही मनाने की स्वीकृति दे दी है और कुछ प्रेमियों ने अखण्ड पाठ की सेवा ली है, एक पाठ की सेवा मुझे भी प्रदान कर दो। आप ने मुस्कराते हुए संकेत किया, जैसे आपकी इच्छा। अब जैसे-जैसे दिन निकल रहा है समाचार सारी संगत में फैल रहा है, तभी हजूर ने अर्गला खोली, संगत ने दर्शन दीदार कर और नमस्कार करके प्रार्थना करनी शुरु कर दी-महाराज! एक पाठ की सेवा हमें दो, एक पाठ की सेवा हमें प्रदान करो इत्यादि। हजूर अपनी मस्ती में मुस्कराए जा रहे हैं, लिखने वाला संकेत समझ के लिखता जा रहा है। इस प्रकार सूची अब पैंतीस तक पहुँच गई है। प्रेमी सोच रहे हैं कि पैंतीस पाठों के लिए जगह छोटी कुटिया में आँगन सहित भी नहीं है। फिर ये कहाँ रखे जाएंगे? जैसे-जैसे खबर फैल रही है संगत में उत्साह बढ़ता जा रहा है।

आज तीसरा दिन शुरु हुआ। संगत ने फिर नाम लिखवाने शुरु कर दिए। हजूर फिर अपनी मस्ती में मुस्कराई जा रहे हैं। उधर पाठ लिखने वाला प्रेमी पाठ लिखने के बन्द करने के बारे में कोई स्पष्ट संकेत न मिलने के कारण लिखे जा रहा है। संगत सोच रही है शायद इक्यावन पाठ पर जा के लिखना बंद कर दें, पर कौन जाने अलौकिक प्रीतम की अगम्य मौज को। सायं को इक्यावन का विचार भी संगत का पीछे रह गया। संख्या छप्पन तक जा पहुँची, लेकिन पाठ लिखने अभी भी जारी हैं, अब संगत आपस में विचार करने लगी कि शायद एक सौ एक पर जा कर रुकें, पर यह सोच बौद्धिक सीमा की है, लेकिन व्यवहार बौद्धिक सीमा से ऊपर का हो रहा है।

हजूर ने अब दी गई तिथियों के अनुसार बाहर गाँवों में जाना शुरु कर दिया। पाठ के समाचार फैल ही चुके थे इसीलिए जहाँ कहीं जाते संगत बड़े उत्साह से जो पाठ लिख रही है और लिखने वाला लिखता जा रहा है, लेकिन अलौकिक प्रीतम मौन हैं, यदि कोई प्रार्थना करता है कि महाराज कितने पाठ होंगे? कहाँ किए जाएंगे? इतने पाठियों का प्रबन्ध कैसे होगा? दाता मुस्करा कर हाथ ऊपर की ओर कर देते हैं। जिस को बुद्धि से सोचने पर ऐसे समझ आती है जैसे कह रहे हो-गुरु नानक जाने। प्रेमी बेचारे अभी भी नहीं समझ रहे कि इस महान् यज्ञ की नींव गुरु नानक की वाणी के यश का प्रसार करने के लिए ही रखी गई है। ये बेचारे इन सौ पाठों के बारे में ही चिन्तातुर हैं, परन्तु समय बतायेगा कि इस यज्ञ की सम्पूर्णता से असंख्य घर ऐसे होंगे जिन को दूसरे घरों से पाठी नहीं मंगवाने पड़ेंगे।

वह देखो! आज अलौकिक दाता गुरुवाणी का छींटा देकर निष्काम पाठियों के समूह तैयार करने का बीज उगाना आरम्भ कर रहे हैं। आज किसी प्रेमी को दी गई तिथि अनुसार उसके गाँव पखाणे पहुँचे। अखण्ड पाठ साहिब के भोग डाले गए, कीर्तन समाप्ति उपरान्त चल रहे गुरु के लंगर में से प्रसाद पानी छके। तभी मास्टर गुरवन्त सिंह जी मान उनकी पुत्रियाँ डॉली और रुबी और दो-चार अन्य व्यक्ति एकत्र होकर आप जी के चरणों में पहुँचे। प्रार्थना की महाराज! हमारे गाँव से काफी संगत गुरुवाणी पाठ को सीखने की इच्छुक है। आप कृपा कीजिए ऋषिकेश से कोई पढ़ाने के लिए भेज दो। हजूर मुस्करा के बोले ऋषिकेश से किसको भेजना है। रुबी, डॉली की ओर संकेत करके कि तुम पढ़ाओ। दोनों लड़कियों ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की, महाराज जैसी आपकी आज्ञा। आप ने हुक्म किया जो शिक्षण लेना चाहते हों उनके नाम लिख लो! सूची बनाने पर लगभग साठ व्यक्तियों के नाम आ गए। हजूर ने हुक्म किया कि दो-तीन पारियों में तुम अपने घर ही शिक्षण देना शुरु कर दो। मास्टर गुरवन्त सिंह जी ने प्रार्थना की, महाराज! पढ़ाने की सेवा तो आप ने बच्चों को दे दी, परन्तु हमें भी कोई सेवा प्रदान करो। आज्ञा हुई-सर्दी का महीना है जो संगत सुबह चार बजे पढ़ने के लिए आएगी आप उनको चाय छका देना। मास्टर जी ने प्रार्थना की, साथ बिस्कुट आदि हो जाएं, हुक्म हुआ जैसे आपकी इच्छा। मास्छर जी की धर्म पत्नी माता स्वर्ण कौर ने पंजाबी पढ़ाने की सेवा ले ली। इस प्रकार हरि ने प्रसन्न होकर इस परिवार का आँचल सेवा से भर दिया। अब ज्ञात होने पर सारे गाँव में गुरुवाणी पढ़ने की एक लहर पैदा हो गई। कुछ दिनों के पश्चात् पढ़ने वालों की संख्या सौ के नजदीक जा पहुँची। इस प्रकार इस 'पखाणै' गाँव में **होरिंओ गंग वहाईऐ दुनिआई आखै कि किओनु** का खेल खेल कर, यानि बच्चों से बड़ी आयु वालों को गुरुवाणी की ओर ज्ञान देने का तेज प्रवाह चलाकर श्री गुरु नानक देव जी का अवतार उत्सव और संत बाबा भगत सिंह जी की बरसी मनाने के लिए वापिस करनाल कुटिया पहुँच गए। जैसे-जैसे समय व्यतीत हो रहा है, संगत में मनाए जा रहे दीपावली समागम का उत्साह और बढ़ता जा रहा है। पाठों की संख्या भी नब्बे के करीब पहुँच चुकी है। संगत अपने-अपने विचारानुसार सोच रही है कि गुरु ग्रन्थ साहिब जी के इतने स्वरूप कहाँ से आएंगे? बुद्धि से विचार हो रहा है कि अगर एक सौ एक अखण्ड पाठ साहिब करने हुए तो पचास-पचास दो बार कर लिए जाएँ। इतने गुरु बाबा जी के स्वरूप भी गुरुद्वारों से और इधर-उधर से लाएं जाएंगे, साथ ही इस प्रकार पाठियों का काम भी आसान हो जाएगा। लेकिन

ऐसा लग रहा है कि ये बेचारे अलौकिक प्रतीम की प्रेरक शक्ति से अनभिज्ञ हैं जो सब जीव रुपी गाड़ियों से बैठकर अन्दर चालक का कार्य कर रहा है। शायद ऐसी अदृश्य शक्ति के बारे ही संकेत है—

काठ की पुतरी कहा करै बपुरी खिलावनहारो जानै॥

(गाउ: म. ५, पृष्ठ २०६)

देखो! आज उस अदृश्य शक्ति ने प्रत्यक्ष कार्य शुरु कर दिया। गुरु नानक देव महाराज का उत्सव मनाने के लिए आप आज करनाल कुटिया सुशोभित हैं और काफी संगत भी चरणों में बैठी आपजी के पवित्र चेहरे को देख रही है। अब भाई तरजीत सिंह जी नरुला करनाल निवासी ने दोनों हाथ जोड़ कर आपके समक्ष प्रार्थना की, महाराज! आने वाले वर्ष का दीपावली समागम जो आप ने प्रसन्न होकर करनाल निवासी संगत के आँचल में डाला है उसमें जितने श्री अखण्ड पाठ साहिब होंगे उनके लिए श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के सारे नए स्वरूप लेकर आने की सेवा, दास के आँचल में डाल दो ताकि कहीं माँगने न जाना पड़े। हजूर मुस्करा रहे हैं, मानों संकेत कर रहे हैं, भाई माँगना कार्य जीव का होता है, दाते का नहीं। तभी भाई सुरिन्दर सिंह सचदेवा ने उठकर हजूर के आगे आँचल फैला दी, महाराज! कृपा कीजिए, जितने पाठ साहिब होंगे, सारे पीढ़ा साहिब की सेवा दास की आँचल में डाल दो। फिर सरदार सेवा सिंह जी सरपंच और उनके सपुत्र हरभजन सिंह डबरी वालों ने खड़े होकर प्रार्थना की, महाराज रुमाले जितने लगेंगे उस की सारी सेवा हमें प्रदान कर दो। श्री खज़ान सिंह जी भसीन और कुलदीप सिंह कालड़ा ने प्रार्थना की सारे चँवर साहिब की सेवा हमें प्रदान करो। सरदार स्वर्ण सिंह सचदेवा ने प्रार्थना की महाराज! पीढ़ा साहिब पर जितने गद्दे लगेंगे वे सारी सेवा हमें प्रदान करो। भाई कंवलइन्द्र सिंह जी ने प्रार्थना की, महाराज! अखण्ड पाठ साहिबों पर जितना चन्दोवा लगेगा उस सारे की सेवा मुझे प्रदान कर दो। मलिक जी की लड़कियों बीबी रमेश और बबली मलिक ने प्रार्थना की, महाराज! सारे गुरु ग्रन्थ साहिब पर एक-एक चाँदी का 'झब्बा' लग जाए, यह सारी सेवा हमें प्रदान कर दो। सरदार कंवलइन्द्र सिंह और अमर जीत सिंह गाँव रम्बा वालों ने प्रार्थना की, महाराज! उस समागम के समय लंगर में लगने वाले सारे दूध की सेवा हमें प्रदान कर दो। इस प्रकार किसी ने दस टीन घी की सेवा मांगी, किसी ने दस बोरी चीनी की सेवा माँगी, किसी ने दस बोरी आटे की सेवा माँगी, किसी ने दस बोरी दाल की सेवा माँगी इत्यादि हर प्रकार की सेवा प्राप्त करने वालों पर अलौकिक प्रीतम ने प्रेम भरी दृष्टि से मुस्कुरा कर सब की तरफ देखा, मानों सब की प्रार्थना स्वीकार करके सेवाओं से आँचल भर दिए।

इतने में संगत को ज्ञात हुआ कि पखाणे गाँव महाराज जी पाठ का शिक्षण शुरु करके आए हैं, जिसमें बड़ी संख्या में बच्चे, जवान और माताएं पाठ का शिक्षण ले रही हैं। इससे करनाल की संगत में भी गुरुवाणी पढ़ने का उत्साह पैदा हुआ। काफी संगत ने आप के चरणों में प्रार्थना की, महाराज! यहाँ भी कृपा करो गुरुवाणी का पाठ सिखाने की। हुक्म कर दिया कि जितने माई-भाई, बच्चे, बूढ़े गुरुबाणी शिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं, नाम लिखवा के एक सूची तैयार कर लो। हुक्म अनुसार सूची बनाई गई जिसमें सैकड़ों अभिलाषियों ने नाम दे दिए। हजूर ने पुराने अनुभवी पाठियों की तरफ संकेत किया कि यह सेवा भी सम्भालो। जिन में सरदार तरजीत सिंह नरुला, सरदार सुरजीत सिंह जी सूरी, श्री अशोक कुमार जी चावला, श्री आदर्श कुमार जी और बीबी प्रसिन्नी देवी ने अपने आँचलों में यह सेवा डलवा ली। हजूर ने हुक्म किया छोटी कुटिया

के स्थान पर शिक्षण शुरु कर दो। पढ़ाने वाले सारे सेवादार अपना-अपना समय निश्चित करके पढ़ने वाली सारी संगत को बता दो। इस प्रकार करनाल में भी गुरुवाणी शिक्षण का प्रवाह शुरु हो गया। चार-पाँच समूह हो जाने के कारण सारा दिन छोटी कुटिया में गुरुवाणी का तेज़ प्रवाह चलने लगा। हरियाणा में पंजाबी की पढ़ाई ने होने के कारण कुछ कठिनाई आ रही थी, गुरुवाणी पढ़ने के इच्छुक लोगों को। उसको दूर करने के लिए बीबी प्रसन्नी देवी जहाँ प्रतिदिन एक पीरियड गुरुवाणी पढ़ाने पर लगाती थी वहाँ उसने दूसरा पीरियड पंजाबी पढ़ाने का भी लगाना शुरु कर दिया। बड़ी कुटिया विरक्त महाराज जी के समय से ही बाबा कृपाल सिंह जी गुरुवाणी पढ़ाने की निष्काम सेवा करते आ रहे थे। उन्होंने भी शिक्षण-कार्य अब और तेज़ कर दिया। इस प्रकार करनाल शहर में महापुरुषों की कृपा द्वारा पंजाबी और गुरुवाणी पढ़ाने का मानो दरिया की तरह तेज़ प्रवाह बह चला। करनाल और आस-पास के गाँवों की संगत को गुरुवाणी के तीव्र प्रवाह में प्रवाहित करके अब आप पंजाब की ओर उन्मुख हुए। पंजाब की संगत को पहले ही जानकारी मिल गई थी कि अगले वर्ष की दीपावली करनाल में बड़ी धूमधाम के साथ मनाई जाएगी। पाठ भी सौ के लगभग लिखे जा चुके हैं। शायद एक पूरी माला अखण्ड पाठ साहिब की करें जो कि एक सौ आठ मनकों की होती है, और करनाल, पखाणे आदि स्थानों पर गुरुवाणी का शिक्षण भी बड़े स्तर पर शुरु हो चुका था। ये सारे समाचार सुनकर पंजाब की संगत में ज़ोरदार उत्साह पैदा हो गया-अखण्ड पाठ लिखवाने के लिए और गुरुवाणी का पाठ सीखने के लिए। करनाल से चलकर हजूर लोहसिंबली गाँव पहुँचे जो कि अम्बाला शहर के नज़दीक है जहाँ पूज्य विरक्त महाराज जी की पुण्य तिथि मनाने के लिए तिथि पहले ही प्रदान की हुई थी। पाठ लिखवाने के लिए खाता अब पूरी तरह खुला होने के कारण संगत बड़े उत्साह से पाठ लिखवा रही थी। पुण्य तिथि समागम पूरा होने पर 'लोह सिम्बली' की संगत ने प्रार्थना की, महाराज! हमारे गाँव के कुछ लड़के लड़कियाँ पाठ सीखने के इच्छुक हैं। कृपया कोई पढ़ाने वाले सज्जन भेज दें ताकि कुछ संगत गुरुवाणी के साथ जुड़ जाए। संगत की प्रार्थना सुनकर आप मौन हैं, कोई उत्तर न दिया। संगत कुछ निराश हो कर सोच रही है, शायद हमारी प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई। उनकी निराशा देखकर एक प्रेमी सांत्वना दे रहा है निराश क्यों होते हो? इनका तो अवतरण ही गुरु नानक के घर का यश फैलाने और गुरुवाणी रुपी जीवन-कण घर-घर पहुँचाने के लिए हुआ है। फिर यह जो दीपावली स्वयंवर रचाया जा रहा है, यह तो है ही कलियुग के अवतार, श्री गुरु नानक देव जी महाराज की शीतल मीठी और शान्त महक का प्रसार घर-घर में करने के लिए, ताकि इसकी अनुपम अगम्य और रुहानी महक से, समाज में फैल रही धर्मों एवं साम्प्रदायिक घृणा रूपी दुर्गन्ध का प्रभाव कम हो जाए। प्रत्येक स्थान पर प्रेम, भ्रातृभाव **ऐकु पिता ऐकसु के हम बारिक** के सिद्धांत की सुगन्धि से सारा वातावरण सुगन्धित हो जाए। इस प्रकार इन निराश हुए प्रेमियों को कुछ आशा की किरण मिली।

अब अलौकिक दाते ने यहाँ से चल कर दी गई तिथि के अनुसार 'असरपुर' में डेरे लगाए। यहाँ पर बरसी समागम के अतिरिक्त दो-तीन अन्य प्रेमियों के गृह में भी अखण्ड पाठ साहिब थे, इसीलिए यहाँ कई दिनों का पड़ाव था। यहीं पर एक दिन 'कुतबनपुर' की संगत ने प्रार्थना की, महाराज! संगत ने कुटिया बनाने का विचार किया है, आप कृपा करके अपने पवित्र कर कमलों द्वारा उस की नींव रखें। उनकी प्रार्थना स्वीकार करके आप 'कुतबनपुर' पहुँचे, उस समय संत बाबा जोध सिंह भी साथ थे। आज यहाँ नींव क्या रखने आए हैं मानों कुछ समय पूर्व लगाए एक बीज के ऊपर से पर्दा उतारने आए हैं। आज

से कुछ एक वर्ष पूर्व शरद ऋतु की पूरी रात संगत सहित इस पवित्र स्थान पर मूल मन्त्र का पाठ करके गुरुवाणी का बीज वपन किया था जिसकी आज कोमल पत्तियाँ निकाल कर प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। अरदास उपरान्त आपने अपने पवित्र हाथों से कुटिया की नींव रखी, जिस कुटिया का निर्माण केवल गुरुवाणी पढ़ने और पढ़ाने के लिए ही होना है। नींव समागम के पश्चात् वहाँ की संगत ने प्रार्थना की, महाराज! करनाल क्षेत्र में आप गुरुवाणी का प्रवाह चला कर आए हो। कृपया हमारे गाँव में भी काफी संगत इच्छुक है, कोई पढ़ाने वाले सज्जन भेज दें ताकि गुरु नानक की कृपा का थोड़ा सा प्रसाद हमें भी प्राप्त हो जाए। हजूर शान्त हैं, इन प्रेमियों को भी कोई संकेत नहीं किया, शायद इनकी विरहाग्नि को और भी बढ़ाना चाहते हैं। यहाँ की संगत को संकेत किए बिना वापिस 'असरपुर' आ गए। 'असरपुर' के सारे समागम सम्पूर्ण हो गए, अब यहाँ की संगत ने भी विनय की महाराज! यहाँ पर कुछ लड़के-लड़कियाँ गुरुवाणी पाठ सीखना चाहते हैं। कृपया संत भरत सिंह जी को यहाँ भेज दें, गुरुवाणी पढ़ाने के लिए। निवेदन सुनकर आप थोड़ी देर शान्त रहे। अब आज्ञा दी कि आज से चौथे दिन यानि एक दिसम्बर के दिन आपके गाँव गुरुवाणी शिक्षण का कार्य शुरु हो जाएगा। पढ़ाने के लिए व्यक्ति एक दिन पूर्व, तीस नवम्बर को ही आपके पास पहुँच जाएगा, उस से पूर्व आप अपने पढ़ने वालों को तैयार रखना। 'असरपुर' में वचन देकर गाँव लोह सिम्बली पहुँच गए। वहाँ एक रात्रि रुकने के पश्चात् दूसरे दिन उन्नतीस नवम्बर के दिन सायं को लोपे कुटिया लौट आए। यहाँ भी दो-तीन गाँवों यानि बिशनपुरा (लोपे) और भौड़े आदि कई गाँवों की संगत गुरुवाणी पढ़ने की इच्छुक थी, इसीलिए भाई भूपिन्दर सिंह बिशनपुरा (लोपे) की ड्यूटी यहाँ कुटिया में गुरुवाणी पढ़ाने के लिए लगा दी। अब आप जी का ध्यान 'लोह सिम्बली' की संगत की तरफ गया जिस ने एक सप्ताह पहले प्रार्थना की थी, गुरुवाणी की ईश्वरीय दात प्राप्त करने के लिए। वह देखो! उन पर भी दाता अब प्रसन्न हो रहा है। भाई बलबीर सिंह हल्ले वाले को हुक्म किया कि लोह सिम्बली की संगत को गुरुवाणी पढ़ाओ। बलबीर सिंह ने दोनों हाथ जोड़कर ईश्वरीय हुक्म प्रवान कर लिया। दाते ने पूछा कब जा के काम शुरु करना है? बलबीर सिंह ने प्रार्थना की, महाराज! एक-दो घर के काम हैं वह करके छः दिसम्बर के दिन चला जाऊँगा। हजूर ने हुक्म किया कि ठीक है। हम भी छः तारीख को पहुँच कर तेरा कार्य शुरु कराएंगे। पास खड़ा एक प्रेमी सोच रहा है कि धन्य है यह सज्जन, जिसका कार्य दाता स्वयं जाकर शुरु करा रहा है। खैर-रात लोपे रहकर दूसरे दिन तीस नवम्बर 1992 के दिन 'सल्लार' गाँव सरदार दिलीप सिंह नंबरदार के घर श्री अखण्ड पाठ साहिब की तारीख दी हुई थी इसीलिए वहाँ पहुँचे। श्री अखण्ड पाठ साहिब के भोग के पश्चात् बाहर खुले मैदान में दीवान सुशोभित हुआ। कीर्तन समाप्ति उपरान्त एक कमरे में बैठकर लंगर छका, फिर अजीत सिंह खोख वाले को बुला कर पूछा तुम्हारा लड़का कुलविन्दर सिंह अब क्या करता है? अजीत सिंह ने बताया महाराज! पढ़ाई उसकी पूरी हो गई है, नौकरी अभी नहीं मिली, इसीलिए घर में ही है। हुक्म किया उसको कुतबनपुर गुरुवाणी पढ़ाने के लिए भेज दें? अजीत सिंह ने कहा जैसे आप जी की मौज! महापुरुषों ने गुरमीत सिंह खोख को आज्ञा दे दी कि कुतबनपुर संगत को जाकर बता दो कि तीन दिसम्बर को आपके गाँव में गुरुवाणी पढ़ाने का शिक्षण शुरु हो जाएगा और हम स्वयं भी तीन तारीख को समय पर पहुँच जाएंगे इसीलिए पढ़ने वाली संगत और पोथियां आदि की तैयारी करके रखना।

इस प्रकार एक दिसम्बर असरपुर, तीन दिसम्बर को कुतबनपुर और छः दिसम्बर को गाँव लोह सिम्बली आदि गाँवों में गुरुवाणी पाठ का शिक्षण शुरु करवा दिया। खोख कोटली गाँव जहाँ पहले ही बाबा बलवन्त सिंह जी ने साठ-सत्तर पाठी

तैयार कर दिए थे, वहाँ भी और तेज़ी से पढ़ाई का कार्य शुरु हो गया। ज़िला पटियाला के उपरोक्त क्षेत्र में गुरुवाणी के बीज का गहरा छींटा देकर अब दुआबे की ओर चल पड़े। निश्चित तिथि के अनुसार अब गोराया नगर में पहुँच गए। आने वाली दीपावली की रस भरी सुगन्धि तो यहाँ भी पहुँच चुकी थी, इसीलिए संगत बहुत उत्साह युक्त मिली। उजागर सिंह सूरी ने प्रार्थना की महाराज! उस समागम में हमें भी कोई सेवा प्रदान कर दो। आप अपने सदैव के स्वभावानुसार मुस्कराते हुए बोले, कार्य बाबे नानक का। सेवा सारी संगत की! इसीलिए जो भी करोगे बढ़िया। सूरी जी ने फिर प्रार्थना की, महाराज! जो कराएंगे होगा तो वही, लेकिन फिर भी कोई विशेष रूप से सेवा प्रदान करो। हुक्म हुआ, बड़ी-बड़ी सेवाएँ तो संगत ने उसी समय ही ले ली थीं—शेष कोई अन्य सेवा तुम्हार दृष्टि में है तो देख लो! सूरी जी बोले महाराज! उस पूरे समागम के लंगर की सेवा प्रदान कर दो। महापुरुष बोले, लंगर किसी एक की तरफ से नहीं हो सकता, वह तो गुरु नानक का सारी संगत की तरफ से सामूहिक ही होगा। सूरी जी ने प्रार्थना की, महाराज! फिर पाठी और लंगर आदि के सब सेवादारों को जो सिरोपा देने की कृपा करोगे वह सारी सेवा मुझे प्रदान कर दो। आपने संकेत किया, ठीक है आप कर लें।

गोराया निवासी संगत ने प्रार्थना करके दीपावली समागम पर अपनी-अपनी तरफ से पाठ दर्ज़ करवाए। बाद में सब संगत ने प्रार्थना की, महाराज! गुरुवाणी पाठ के शिक्षण के लिए यहाँ काफी संगत उत्साहित है, इसलिए कृपा करके गुरुवाणी पाठ के शिक्षण देने वाली किसी सज्जन की ड्यूटी लगवा दो। हजूर ने सरदार मनमोहन सिंह और भाई गजिन्दर सिंह (वड़ू) जी आदि दोनों प्रेमियों को कर्त्तव्य सौंप कर यह सेवा शुरु करवा दी। इतने में फतेहगढ़ साहिब का वार्षिक समागम आ गया तो खोख वाली संगत की प्रार्थना स्वीकार कर आप छब्बीस दिसम्बर के दिन फतेहगढ़ साहिब के दर्शन दीदार करते हुए लंगर में पहुँच गए, जो कि खोख, कोटली और उस क्षेत्र के कई अन्य गाँवों की तरफ से मिलकर चलाया जाता है। लंगर में असंख्य संगत बड़े प्रेम से सेवा कर रही है। ब्रैड पकौड़े, कड़ाह प्रसाद, गर्म-गर्म चाय, प्रसादे, दाल सब्जियाँ आदि पदार्थ प्रेम सहित बनाकर संगत को निरंतर वितरित किए जा रहे हैं और साथ-साथ ईश्वरीय वाणी का श्री अखण्ड पाठ साहिब हो रहा है। संगत चाहे सब्जी काट रही है अथवा कोई और सेवा यानि जहाँ भी चार व्यक्ति एकत्र होते हैं, वहाँ बातें आने वाली दीपावली समागम और जगह-जगह शुरु गुरुवाणी शिक्षण के प्रवाह की चल रही हैं।

जब हजूर इस लंगर में पहुँचे तो सलार गाँव की संगत ने प्रार्थना की महाराज! हमारे गाँव में भी गुरुवाणी का प्रवाह चला दो। कोई पढ़ने के लिए सज्जन भेज दो, ताकि इच्छुक संगत शिक्षण प्राप्त कर ले। आप ने सुरजीत सिंह लोपे को आदेश दिया कि सलार गाँव जा कर संगत को गुरुवाणी पढ़ा दो। यहाँ भी कुछ प्रेमियों ने दीपावली समागम की सूची में अपने पाठ दर्ज कराए। पाठों की संख्या अब एक सौ पच्चास से भी ऊपर हो गई है। संगत ने अब सोचना शुरु कर दिया कि शायद अब दो सौ एक पाठ पर बन्द कर देंगे, परन्तु इतने पाठ रखने के लिए जगह कोई पूरे करनाल शहर में नहीं, लेकिन यह तो सुना है कि रखने भी कुटिया में ही हैं। दूसरा बोला, शायद शामियाने लगा लिए जाएं। फिर तीसरा बोला, आंधी वर्षा आदि भी हो सकती है। ज्यादा आंधी में शामियाने सारे उड़ जाते हैं। वर्षा से सारे टपकने लग जाते हैं। अगर इन्द्र देवता ज्यादा ही खुशी में आ जाएं तो शामियाने फाड़कर नीचे गिरा देते हैं। फिर पृथ्वी पर भी पानी ही पानी कर देते हैं, इतनी संख्या में गुरु ग्रन्थ

साहिब जी का आदर सम्भाल करना कठिन हो जाएगा और दीपावली का दिन होने के कारण शामियाने को आग, आतिशबाज़ी का भी खतरा होता है, ऐसे ही मन बुद्धि खड़े कुछ प्रेमी विचार कर रहे हैं। इतने में कानों में बहुत सूक्ष्म आवाज़ आनी शुरु हो जाती है—

भै विचि पवणु वहै सदवाउ॥ भै विचि चलहि लख दरीआउ॥
भै विचि अगनि कढै वेगारि॥ भै विचि धरती दबी भारि॥
भै विचि इंदु फिरै सिर भारि॥ भै विचि राजा धरम दुआरु॥
भै विचि सूरजु भै विचि चंदु॥ कोह करोड़ी चलत न अंतु॥
भै विचि सिध बुध सुर नाथ॥ भै विचि आडाणे आकास॥
भै विचि जोध महाबल सूर॥ भै विचि आवहि जावहि पूर॥
सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु॥ नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु॥

(आसा दी वार, पृष्ठ ४६४)

यथा— **नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ॥**

(श्लोक म. ४, पृष्ठ ९५५)

बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह जी की पवित्र याद में उपस्थिति देकर, लंगर में सेवा कर रही संगत को उत्साह प्रदान कर और कुछ प्रेमियों को गुरुवाणी पढ़ने की दात प्रदान कर सायं को वापिस खोख में आ गए। रात खोख रह कर प्रात: गुरुवाणी पढ़ाने वाले असरपुर, लोह-सिम्बली आदि स्थानों पर पाठ पढ़ने वाली संगत को उत्साहित करते हुए वापिस ऋषिकेश पहुँच गए। श्री अमरीक चन्द चावला जी ने प्रार्थना करके पहले ही मुम्बई लेकर जाने का वचन लिया हुआ था इसीलिए चावला जी तथा अन्य मुम्बई निवासी संगत की प्रार्थना स्वीकार करते हुए जनवरी के प्रथम सप्ताह बम्बई पहुँचे। वहाँ की संगत को भी दीपावली समागम का पहले ही पता लग गया था। आप जी के पहुँचने पर वहाँ की संगत ने भी पाठ लिखवाए। पाठों की संख्या अब दो सौ से भी अधिक हो गई। मुम्बई निवासी संगत को दो अढ़ाई मास गुरुवाणी द्वारा ईश्वरीय उपदेश करके वापिस ऋषिकेश आ गए। तभी बैसाखी का वार्षिक समागम आ गया। भाई तरजीत सिंह नरुला करनाल वालों ने प्रार्थना की, महाराज! दीपावली समागम के लिए श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के स्वरूप शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी श्री अमृतसर से लाने का विचार है। अवसर आने पर शायद उनसे पूरे स्वरूप न मिलें, इसलिए जितनी हमें आवश्यकता है उसका कुछ थोड़ा बहुत अंदाजा हो तो उसी अनुसार उनसे बात कर आएँ। हजूर ने आज्ञा दी, आगे अब समय थोड़ा रह गया है, सारी तैयारी भी करनी है, इसलिए अब 251 पर लिखना समाप्त कर देते हैं। आप अपनी तैयारी कर लीजिए। बैसाखी समागम मनाने के लिए करनाल की सारी संगत ऋषिकेश आई हुई है, जिस में मुख्य सज्जनों ने प्रार्थना की, महाराज! सामान की जो सेवा आपने हमें प्रदान की है, वह तो आप की आज्ञा अनुसार दो सौ इक्यावन पाठ साहिब के हिसाब से तैयारी कर लेते हैं, लेकिन इतने बड़े समागम के लिए स्थान का प्रबन्ध तथा अन्य आवश्यकतानुसार तैयारी करनी है, वह भी सारा प्रबन्ध जैसे इस समागम का आयोजन और जिस स्थान पर आयोजित करना है वह भी संकेत कर दो ताकि समय से पहले सारी तैयारी कर ली जाए। संगत की प्रार्थना सुनकर हुक्म किया कि अब बैशाखी का समागम मनाने के लिए संगत काफी मात्रा में आई हुई है। इस समागम के बारे में विचार करने के लिए उतना समय आज मुश्किल है जितना चाहिए। इसीलिए आप सारे प्रबन्धक सज्जन बैशाखी समागम के पश्चात् किसी दिन आ जाएं, फिर बैठकर विचार कर लेंगे। उसी दिन विचार करके

समागम के प्रबन्ध की सेवाएँ भी संगत को बाँट दी जाएंगी। बैशाखी समागम की सम्पूर्णता होने पर सारी संगत प्रसाद लेकर घर वापिस आ गई। उधर करनाल निवासी सारी संगत को ज्ञात हो गया कि आ रहे दीपावली समागम में दो सौ इक्यावन श्री अखण्ड पाठ साहिब इकट्ठे रखे जाएंगे। उस महान् यज्ञ में पाठ साहिब और लंगर आदि हर प्रकार की सेवाएँ प्राप्त करने के लिए संगत में बहुत उत्साह पैदा हो गया, लेकिन यह किसी को ज्ञात नहीं इतना बड़ा कार्य किस स्थान पर और कैसे आयोजित होगा, क्योंकि दो सौ इक्यावन पाठ साहिब इकट्ठे रखने के लिए पूरे करनाल में कोई स्थान नज़र नहीं आ रहा, लेकिन महापुरुषों का संकेत कुटिया की तरफ ही है। इतना बड़ा कार्य तो दोनों कुटिया को मिला कर भी नहीं हो सकता। जब बुद्धि कोई निर्णय न कर सकी तो आवाज़ आई—

करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि॥
कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि॥

(सहसक्रिती, पृष्ठ १३५३)

भाई आप चिन्ता क्यों करते हो—

नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ॥

(श्लोक म. २, पृष्ठ ९५५)

वह सारे कारणों के करने को समर्थ है, आप प्रतिदिन पढ़ते ही हो—

कीता पसाउ एको कवाउ॥
तिस ते होए लख दरीआउ॥

(जपुजी, पृष्ठ ३)

आँख के एक पलक झपकने से जो करोड़ों ब्रह्मांड का सृजन कर सकता है, उसके लिए अलौकिक पुरी का सृजन करना कौन सी अनोखी बात है। उस कर्त्ता पुरुष की अनन्त शक्तियों से अनजान बेचारे प्रेमी सुनकर कुछ धैर्यवान हुए। उस अनन्त कला के ठाकुर पर श्रद्धा भावना तो रखते ही हैं तभी तो उसकी ईश्वरीय वाणी श्री जपुजी साहिब का प्रतिदिन पाठ करते हैं, लेकिन कुछ समझ में नहीं पड़ता था। आज उस गुरुमुख के संकेत से थोड़ा संकेत मिला—

जे को कहै करै वीचारु॥
करते कै करणै नाही सुमारु॥

(जपुजी, पृष्ठ ३)

आज कुछ समझ में आया कि बुरु अमरदास महाराज जी ने क्यों संकेत किया था **गुरमुख सओ करि दोसती॥** गुरुमुख की क्षण भर की मित्रता से ही आज गुरुवाणी से थोड़ा रास्ता मिला कि कर्त्ता पुरुष के असंख्य कार्य हैं, उनका कोई अन्त नहीं पा सकता। धन्य हैं ऐसे निराले गुरुमुख जिनके बारे में संकेत है—

बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ॥

(द. ओ. पृष्ठ ९३५)

हे परमेश्वर! ऐसे गुरुमुखों की सदैव संगत प्रदान कर! खैर-शान्त चित्त होकर घरों को चले गए।

दीपावली के आने वाले समागम की सेवाओं की भिक्षा आँचल में डलवाने के लिए बड़ी उत्साह युक्त हुई करनाल

की संगत अप्रैल के अन्तिम सप्ताह एक पूरी बस भर कर ऋषिकेश पहुँची। दोपहर का लंगर छकने के पश्चात् करनाल से आई सारी संगत को बुला लिया गया। गद्दी वाला कमरा संगत से खचाखच भर गया। आप भी अपने नक्षत्र मण्डल में चन्द्रमा की भाँति सुशोभित हैं। आपके दोनों तरफ दाएँ-बाएँ सन्त जोध सिंह जी और सन्त गुरिन्दर सिंह (छोटू बाबा) जी विराजमान हैं। हुक्म किया, भाई दीपावली समागम की अब तैयारी करो। तुम ने तो एक अखण्ड पाठ साहिब कहा था लेकिन श्री गुरु नानक देव महाराज से प्रसन्न होकर दो सौ इक्यावन पाठ साहिब आपके आँचल में डाल दिए। संगत ने प्रार्थना की महाराज! इस महान् समागम की नींव छोटी कुटिया में ही रखी थी, लेकिन अब तो आप की कृपा से कार्यक्रम बहुत ही विस्तृत हो गया है, कुटिया में तो अब इतनी जगह नहीं। हजूर बोले, अकाल पुरख वाहिगुरु के एक-एक रोम में करोड़ों ब्रह्मांड समाए हुए हैं। उसमें अभेद हुए महापुरुषों का स्थान कैसे छोटा रह सकता है?

कुटिया के विशाल दायरे में तो इतने पाठ और रख लीजिए, तो भी स्थान की कमी नहीं हो सकती। संगत सुनकर आश्चर्यचकित हो रही है कि दोनों मिला कर भी दो सौ इक्यावन पाठ रखने की जगह नहीं हो सकती, परन्तु संकेत अभी भी कुटिया की ओर ही है। इनकी लीला यही जाने। हजूर अपनी मौज में बैठे मुस्करा रहे हैं। वह देखो अब संगत के आश्चर्य को कैसे दूर कर रहे हैं। ईश्वरीय हुक्म हुआ, परम पूज्यनीय ब्रह्मलीन, संत बाबा निक्का सिंह जी विरक्त महाराज और परम पूजनीय सन्त बाबा भगत सिंह जी महाराज जिनकी स्मृति में इस समागज की रचना हुई है, दोनों पूर्ण पुरुष एक देश के वासी, हम-शहरी, परम मित्र थे। दोनों महापुरुष अन्दर से तो मिले हुए थे, लेकिन बाहर से दोनों में जो अन्तर दिखाई दे रहा है, उसको मिटा कर एक कर दो। फिर बताओ, जगह की कौन सी कमी है? संगत ने प्रार्थना की, महाराज! यह प्रतीति मात्र के अन्तर हटाने के लिए आप ही समर्थ हो कृपा कर दीजिए। आदेश किया दोनों के बीच में जो बारह सैक्टर की जगह खाली है, उस सारी ज़मीन पर शामियाने पण्डाल लगा कर एक पूरा नगर बसा लो। पाठ पण्डाल इतना बड़ा बनाया जाए, जिस में दो सौ इक्तालीस पाठ आ जाएँ और शेष पाँच-पाँच पाठ दोनों कुटियों में रखे जाएं। संचार साधन द्वारा तीनों को एक बना दिया जाए और मुख्य पाठ से उच्चरित हुआ पाठ माइक द्वारा तीनों स्थानों पर प्रत्येक पाठी को सुनाई दे। कीर्तन के लिए अलग पण्डाल बनाया जाए और लंगर आदि के लिए अलग पण्डाल। कीर्तन पण्डाल की शक्ति कम से कम बीस हजार व्यक्तियों के बैठने के लिए हो। बाहर से आई संगत के लिए अलग शामियाने लगाए जाएं। संगत की सुविधा के लिए अस्थाई रूप से सैकड़ों शौचालय, स्नानागृह बनाए जाएं ताकि कोई असुविधा न हो। इस प्रकार दोनों के बीच जो किलोमीटर की दूरी दिखाई दे रही है वह सारी समाप्त करने पर दोनों कुटियें एक हो जाएंगी। सारे समागम के बीच लंगर गुरु नानक का इतना चले कि अरदास पहले दिन ही हो जाए फिर दिन-रात निरन्तर चलता रहे। लंगर छकने के लिए पण्डाल इतना बड़ा हो कि जिस में दस हजार व्यक्ति एक ही बार में बैठकर लंगर छक सकें। इस समागम के शुरु में यानि आठ नवम्बर के दिन छोटी कुटिया में सात श्री अखण्ड पाठ साहिब रखे जाएं। लंगर उसी दिन से निरन्तर शुरु हो जाए। साथ-साथ और भी हर प्रकार की तैयारी होती रहे। दस नवम्बर के दिन भोग डाले जाएंगे। उसी दिन श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की हजूरी में नगर कीर्तन एक जुलूस के रूप में किया जाए। यह नगर कीर्तन बड़ी कुटिया से शुरु होकर शहर के मुख्य बाज़ारों और बस्तियों से होता हुआ सायं को छोटी कुटिया में समाप्त हो। फिर ग्यारह नवम्बर को दो सौ इक्यावन श्री अखण्ड पाठ साहिब प्रारम्भ होंगे जिनके भोग तेरह नवम्बर दीपावली के दिन प्रात: डाले जाएगे। बाद में दीपावली का सम्पूर्ण दिवस और सम्पूर्ण रात्रि जागरण कीर्तन होंगे,

सारे समागम की पूरी समाप्ति दीपावली से दूसरे दिन प्रातः की जाएगी। पूरा एक सप्ताह गुरु नानक की वाणी, कीर्तन सत्संग, सेवा सिमरन और गुरु के लंगर के निरन्तर प्रवाह चलते रहेंगे। तब संगत प्रसादि ग्रहण करके गुरु नानक का यश गायन करते अपने घरों को जाए। इस प्रकार का सारा मानचित्र समक्ष आने पर संगत गद्‌गद् हो गई। सरदार हरजीत सिंह सचदेवा ने प्रार्थना की, महाराज! मेरा विचार है कि समागम की सम्पूर्णता के पश्चात् घर को लौटते समय संगत आप जी के पवित्र हस्त कमलों द्वारा प्रसाद प्राप्त करेगी, उन सब को इस समागम की मधुर स्मृति में एक सुखमनी साहिब का गुटका प्रदान किया जाए, उस पर खर्चे आदि की सारी सेवा दास के आँचल में डाल दो। हजूर ने संकेत किया, जैसे आपकी इच्छा। हरजीत सिंह को स्वीकृति मिली जानकर प्रार्थना की, महाराज! यह मेरा स्वयं प्रकाशित करवाने का विचार है ताकि इस दीपावली समागम की स्मृति में कुछ विवरण मुख्य पृष्ठ पर आ जाए। हजूर ने मुस्कराते हुए संकेत किया, जैसे आपकी इच्छा! हरजीत सिंह ने प्रार्थना की, महाराज! कितने छपवाए जाएँ? आज्ञा हुई कि जितनी तेरी इच्छा है। हरजीत सिंह ने प्रार्थना की पाँच हज़ार बहुत हैं। संगत से आवाज़ आई कीर्तन पण्डाल तो कम से कम बीस हज़ार व्यक्तियों के बैठने के लिए बनवा रहे हैं पाँच हज़ार गुटकों से काम कैसे चल जाएगा? हरजीत सिंह ने प्रार्थना की जितना हुक्म दो-छपा लेते हैं। संगत ने आपस में विचार विमर्श करके बताया कि कम से कम तीस हज़ार छपवाएँ। हरजीत सिंह ने सेवा अपने आँचल में डलवा ली। हजूर ने आज्ञा दी कि पाठ पण्डाल में छः बड़ी फोटो बनवा कर लगाओ। एक हमारे आदि गुरु श्री नानक देव जी, श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी की, क्योंकि वे दीपावली के दिन ग्वालियर से अमृतसर आए थे। उस दिन गुरु घर में दीपावली मनाई गई थी। तीसरी विरक्त महाराज जी की, चौथी संत भगत सिंह जी की, पाँचवीं भगवान रामचन्द्र जी की, क्योंकि दीपावली उन्हीं से ही आरम्भ हुई थी, छठी द्वापर के अवतार भगवान कृष्ण जी की, ये बड़े आकार में छः फुट आकार से कम न हो। रणबीर सिंह ढिल्लों कुड़क वालों ने प्रार्थना की-महाराज! ये फोटो की सेवा हमें प्रदान करो और दूसरा जितने फूल या फूलों के हार लगेंगे, वह सारी सेवा हमें प्रदान करो। दोनों सेवाएँ हजूर ने उनके आँचल में डाल दीं।

अब सारी तैयारी करने के लिए कर्त्तव्यों की सेवा कौन किस काम की ड्यूटी सम्भालेगा, जैसे पण्डाल और शामियाने लगाने की ड्यूटी, श्री अखण्ड पाठ साहिब के पण्डाल में तैयारी करवाना, पाठ पण्डाल की बिछौने की तैयारी, पाठ पण्डाल की सजावट की तैयारी, अखण्ड पाठ साहिब की ड्यूटी लगाने की जिम्मेदारी, हर एक पाठी के पास बैटरी रखनी, कोई एक किलोमीटर के पूरे समागम में बिजली और लाउड स्पीकर की ड्यूटी, बिजली जाने की अवस्था में जनरेटर की ड्यूटी, पानी और सीवरेज शुरु करना और जारी रखने की ड्यूटी, जोड़ा घर बनाने और जोड़े सम्भालने की ड्यूटी, पार्किंग की ड्यूटी, अकाऊँट यानि पैसा सम्भालने की ड्यूटी, रिसैप्शन यानि गाईड पूछताछ की ड्यूटी, सारे जोड़ मेले में तत्काल डॉक्टरी और डिस्पैंसरी चौबीस घंटे चालू रखने की ड्यूटी, लंगर के लिए सूखा राशन लाने और संभालने की ड्यूटी, लंगर पकाने की ड्यूटी, दूध चाय की ड्यूटी, दोनों कुटियों के बीच लगभग एक किलोमीटर लम्बे मैदान को सँवारकर साफ करने की ड्यूटी, समागम में सुरक्षा सम्बन्धी ड्यूटी, लंगर वितरण करने की ड्यूटी, मिठाई बनाने वाले हलवाई का प्रबन्ध करके उनसे काम करवाने की ड्यूटी, ईंटें लाकर पानी के लिए चबच्चे और लकड़ी के चूल्हे बनाने की ड्यूटी, नगर कीर्तन की सारी तैयारी और

प्रबन्ध की ड्यूटी, बाहर से आई संगत संभाल और निवास की ड्यूटी, बाहर से आए संत महापुरुषों के निवास और सेवा संभाल की ड्यूटी, पाठी सिंहों के निवास और पाठ पण्डाल तक लाने पहुँचाने की ड्यूटी, कीर्तन पण्डाल तैयार करवाने और सुसज्जित करवाने की ड्यूटी, परम पूजनीय १०८ महन्त बाबा रामसिंह जी और उनकी सन्त मण्डली के लिए बनाए जाने वाले संत निवास में हर प्रकार की सेवा संभाल आदि प्रबन्ध की ड्यूटी, समस्त समागम की वीडियो फिल्म तैयार करवाने की ड्यूटी, सरकारी दफ्तरों से हर तरह की स्वीकृति लेने की ड्यूटी, समस्त समागम में सजावट के लिए फूल और हार लाने की ड्यूटी, जोड़ मेले का सारे स्थान में जो कि एक किलोमीटर के लगभग है सजावट इत्यादि की ड्यूटी, लंगर में आटा गूँथने की ड्यूटी, बर्तन साफ करने की ड्यूटी, टैंकर द्वारा जगह-जगह पानी का प्रबन्ध करना और हर समय जारी रखना इत्यादि ड्यूटी, गैस सिलेण्डर का प्रबन्ध और हर समय जारी रखने की ड्यूटी, लंगर में आटा छानने की ड्यूटी, मण्डी से सब्जी लाने की ड्यूटी, सब्जी काटने की ड्यूटी, बने हुए लंगर को संभाल के आगे परोसने की ड्यूटी, अब से शुरु करके समागम के लिए जितने विज्ञापन, वस्त्र के झण्डे और बैज, स्टेशनरी का अन्य सारा कार्य करवाने की ड्यूटी, अस्थायी तौर पर शौचालय, स्नानागृह बनवाने और धरती को बोर करके सब पानी सप्लाई करना। स्थान-स्थान पर पानी के टैंक नलके लगाकर यह सारी व्यवस्था बनाकर चौबीस घण्टे जारी रखना इत्यादि सारी ड्यूटी, देशभर के बड़े-बड़े रागियों से सम्पर्क करके उनसे समय निश्चित करना इत्यादि। उपरोक्त सब सेवाएँ प्राप्त करने के लिए संगत ने अपने-अपने आँचल फैलाए जो महापुरुषों ने अपने पवित्र अधरों की मिठास भरी एक मुस्कान से ही लबालब भर दिए। अब सारी संगत, सेवा रूपी धन माल से अपना आँचल लबालब भरवा कर खुशी-खुशी अपने घर को लौट गई।

अस्पताल के नए अनुभाग की नींव

निर्मल आश्रम अस्पताल जो आज से तीन वर्ष पहले शुरू हुआ था गुरु नानक की कृपा और योग्य डॉक्टरों के परिश्रम के कारण बहुत सफलतापूर्वक चला। सैंकड़ों संत महात्मा और गरीब लोग प्रतिदिन मुफ्त लाभ उठाते हैं। लगभग तीन सौ रोगी प्रतिदिन ओ०पी०डी० में देखे जाते हैं। दाखिल करने के लिए 50 रोगियों की व्यवस्था है, लेकिन सौ-सौ रोगी दाखिल हो जाते हैं जिनको बरामदों में अथवा यहाँ-वहाँ स्थान देकर समय व्यतीत करना पड़ता है। महापुरुषों ने स्थान की कमी महसूस करते हुए सेवा के इस परोपकार के महान क्षेत्र का और विस्तार करने के लिए पहले भवन के बिल्कुल पास ही एक पाँच मंजिल का भव्य भवन बनाने के लिए, जिसके तैयार होने पर एक सौ पच्चास रोगी दाखिल करने का सामर्थ्य हो जाएगा, 1993 ई० को वैशाखी के दिन भरे दीवान में अरदास करके अपने पवित्र कर कमलों द्वारा नींव रखी। इस भवन के नक्शे अनुसार एक मंजिल अंडरग्राऊंड, यानि धरती में बनाने के लिए खुदाई शुरू कर दी। इस नींव की खुदाई के कार्य में संगत ने बड़े चाव और उत्साह से सेवा शुरू की, लेकिन भयानक गर्मी और धरती पथरीली होने के कारण संगत का वश नहीं चल रहा। इलाके अनुसार संगत ट्रालियों, ट्रकों में आकर एक-एक सप्ताह या दस-दस दिन सेवा करके लौट जाती। इस प्रकार महापुरुषों के आशीर्वाद से संगत के कठिन परिश्रम द्वारा अंततः डेढ़ मास के समय में बनने वाले भवन का खड्डा खोद लिया। अब खोदे हुए खड्डे पर नींव का लैंटर डाला गया जिसमें बावन टन सरिया और एक हजार बोरी सीमेंट खर्च हुई।

इस सरिए सीमेंट की एक फुट मोटी तह के ऊपर दीवार की जगह साढ़े तीन फुट ऊँचे और दो फुट चौड़े बीम भरे गए जिनके ऊपर वर्तमान दीवारें बनी हैं। जितनी मिट्टी खड्डा खोदते समय बाहर निकाली गई थी अब पुन: दीवार के बीम तक बीच में डाली। इस प्रकार अढ़ाई तीन मास तक संगत ने इस सेवा के कार्य का अच्छा लाभ उठाया।

विदेश यात्रा

सरदार राजपाल सिंह जी नरुला मोहाली वाले जो कि हजूर के चरणों के अनन्य सेवक हैं उनकी बहन डम्पी, सरदार पृथ्वीपाल सिंह गुलाटी देहली निवासी के सपुत्र सरदार सतिन्दर सिंह गुलाटी के साथ उसका विवाह हुआ था इसीलिए यह परिवार भी नरुला की प्रेरणा से ऋषिकेश आने लग गया। आने ही नहीं लगा बल्कि यहाँ की मर्यादा और चल रहे सेवा कार्यों को देखकर और महापुरुषों के अलौकिक जीवन से प्रभावित होकर उनके चरण सेवक बन गए। इस परिवार का विदेशों में व्यापार होने के कारण सरदार सतिन्द्र सिंह गुलाटी अमेरिका रहता है। यह प्रेमी हजूर के अमेरिका चरण डलवाने के लिए काफी समय से प्रार्थना कर रहा था, लेकिन आज अन्न-जल के वश अथवा इस परिवार के प्रेम के आकर्षण ने दाते से स्वीकृति ले ली। उधर श्री लछमन दास पगरानी दुबई वाले इंग्लैण्ड के लिए प्रार्थना करते रहते थे और महन्त बाबा बुड्ढा सिंह महाराज की शिष्या माता यमुना टी मनसुखानी और इस का परिवार जो स्पेन रहता है काफी समय से स्पेन ले जाने के लिए प्रार्थना कर रही थी। आज सब को स्वीकृति दे दी कि एक बार जाकर सब को मिल आयेंगे। 1993 के जून के मास आप ने जाने का कार्यक्रम बनाया। निश्चित की गई तिथि अनुसार मनमोहन सिंह गुलाटी आप जी को लेने के लिए आ गया। हजूर स्वयं और सन्त गुरिन्दर सिंह (छोटू बाबा) जी को साथ लेकर देहली पहुँच गये। उधर मुम्बई से श्री गुरबख्श बेलानी जी आ गए जो सेवादार के रूप में साथ जायेंगे। सरदार पृथ्वीपाल सिंह गुलाटी और मनमोहन सिंह गुलाटी ने तीन-चार दिन महापुरुषों को अपने घर में रख कर सेवा की तथा साथ ही सारे कागज़ पत्र तैयार कर लिए। बीस जून के लगभग देहली से चल कर स्पेन पहुँचे। स्पेन हवाई अड्डे पर माता यमुना टी मनसुखानी और उसके दोनों बेटे मधुकृष्ण टी मनसुखानी और मीरा आर मनसुखानी पहुँचे हुए थे। माता, दोनों भाई और उनके अन्य सम्बन्धी हवाई अड्डे से हजूर को बड़े प्रेम और आदर, सम्मान के साथ घर लेकर गए। इनके प्रेम वश कई दिन इनके पास ही रहे और यहीं पर कई और प्रेमियों ने भी अपने-अपने घर चरण डलवाये, जैसे ममता और अशोक समतानी, पद्मा नारायण दास मलकानी और राम ए उदवानी आदि सिन्धी प्रेमी बड़े चाव से अपने-अपने घरों में ले गए। इन प्रेमियों ने, बी चौतराम के नाम पर एक गुरुद्वारा साहिब बनाया हुआ है। उसमें संगत की प्रार्थना स्वीकार करके हजूर ने एक दिन कुछ प्रवचन भी किए। इस प्रकार इन को कुछ दिन प्रेम का प्रसाद देकर लंदन पहुँचे। यहाँ श्री लछमन दास पगरानी सिन्धी सेवक बड़े प्रेम से अपने बँगले में ले गया। यहीं पर के०एस० गरेवाल बीटले बलजीत सिंह बिलिंग बुलवर हैमटिन सरदार, सतनाम सिंह साऊथ मटन और माई नसीब कौर डलेवाल वाले दर्शन करने के लिए आते रहे। गुरनाम सिंह जी विर्क करनाल वाले के बेटे चरनजीत सिंह आदि दोनों भाई लशटर रहते हैं, ये बड़े प्रेम से अपने घर लेकर गए और यह लड़का चरनजीत सिंह विर्क हजूर के इंग्लैंड से जाने के समय तक साथ रहा यानि हवाई अड्डे से वापिस आया। इसी तरह एक और प्रेमी श्री गुरन्दिर सिंह और बीबी रणधीर कौर की प्रार्थना स्वीकार करके इनके प्रेम वश हँसलो

पहुँचे। इन प्रेमियों ने बड़े प्यार से इनकी सेवा आदर की। सायं को फिर वापिस लंदन आ गए। एक दिन प्रेमी संगत की प्रार्थना स्वीकार करके साऊथाल भी गए। प्रेमी के घर लंगर पानी ग्रहण किया, फिर इनकी प्रार्थना पर साऊथाल के प्रसिद्ध गुरुद्वारे के दर्शन किए। गुरुद्वारे की प्रबन्धक कमेटी ने प्रार्थना की, महाराज! रविवार के दिन कृपा कीजिए संगत को कुछ कथा प्रवचन द्वारा उपदेश दीजिए। आप ने कहा, भाई गुरुवाणी आप पढ़ते ही हो, इससे ऊपर और कौन सा उपदेश है? संगत ने भावुक होकर प्रार्थना की, गुरुवाणी की समझ भी गुरुमुख महापुरुषों के बिना नहीं होती। आपके मुबारक चरण यहाँ डालने संगत के लिए भी मुबारक हैं, इसलिए आप कृपा कीजिए ईश्वरीय प्रसाद जो दरगाह से आप साथ लाए हो यहाँ की संगत को भी थोड़ा बहुत अवश्य छकाओ। जरा ध्यान से देखो गहरे हृदय से पैदा हुआ प्रेम इलाही नूर को कैसे बाँध लेता है। हुक्म कर दिया भाई—आ जायेंगे। साऊथाल के प्रेमियों को दोबारा पहुँचने का और कथा प्रवचन करने का वचन देकर फिर वापिस लंदन आ गए। निश्चित दिन को दोबारा फिर साऊथाल पहुँचे। आगे आप जी की प्रतीक्षा में संगत द्वारा भी दरबार साहिब पूरी तरह भरा हुआ था। आपने गुरुवाणी द्वारा ईश्वरीय उपदेश का लगभग पौना घण्टा अमृत बरसाया, जिसको श्रवण करके संगत भावुक हो गई। सारी संगत ने इकट्ठे होकर दोबारा फिर आने के लिए प्रार्थना की। आप जी ने कहा जैसे गुरु नानक की आज्ञा। ऐसे संगत को प्रेम का छींटा देकर सायं को फिर वापिस लंदन आ गए। अन्तिम दिन श्री लछमन दास पगरानी जी ने अपने घर सत्संग करवाया, शब्द कीर्तन, उपदेश उपरांत घर आई सारी संगत को बड़े प्रेम से प्रसाद पानी छकाया। श्री लछमन दास पगरानी ने हजूर को एक सप्ताह अपने पास रखकर बड़ी ही भावना से सेवा की और परिवार सहित महापुरुषों के रुहानी और अलौकिक जीवन से बेहद प्रभावित हुआ।

एक सप्ताह इंग्लैंड में इन प्रेमियों पर प्रेम की वर्षा करके लंदन से अमेरिका चले गए। आगे न्यूयार्क हवाई अड्डे पर श्री सतिन्द्र सिंह गुलाटी और उसका मित्र ए०पी० सिंह पहुँचे हुए थे। वे बड़े प्रेम से अपने घर लेकर गए। जैसे-जैसे सिंधी, पंजाबी संगत को ज्ञात हुआ तो दर्शन के लिए आनी शुरु हो गई। महाराज मृगेन्द्र सिंह पटियाला जो पहले से ही आपके चरणों का सेवक है प्रार्थना करके न्यूयार्क अपने घर लेकर गया, सारे परिवार ने मिलकर बड़े प्रेम से सेवा की! एक सिंधी सेवक दीपक वजीरानी यह भी न्यूयार्क में रहता है, इसने भी निवेदन करके अपने घर चरण डलवाये। एक अन्य प्रेमी गुरसागर सिंह फलोरिडा रहता था इसने घर ले जाने के लिए प्रार्थना की, लेकिन समय की कमी थी इसलिए यह प्रेमी दर्शन करने के लिए न्यूयार्क ही पहुँचा। चन्द्रा परसराम हाथी रमानी मद्रास वालों का बेटा श्री मोहन बनिता हाथी रमानी कैलीफोर्निया रहता था, उसकी प्रार्थना स्वीकार करके कैलीफोर्निया पहुँचे! मोहन और उसके परिवार ने बहुत भावना से सेवा भक्ति की इसलिए एक रात उसके पास रुक कर दूसरे दिन वापिस न्यूयार्क आ गए। चन्द्रा परसराम हाथी रमानी मद्रास वालों का दूसरा बेटा रमेश हाथी रमानी और एक अन्य सेवक सन्तू सिबदसानी सेंट थॉमस रहते हैं। उनकी प्रार्थना स्वीकार करके सेंट थॉमस के लिए रवाना हुए, लेकिन किसी कारण से उड़ान मार्ग में ही रुक गई। फिर वहीं रुकना पड़ा। प्रेमी सन्तू सिवदसानी सेंट थॉमस से वहीं पर लंगर लेकर आ गया। इसलिए रात्रि को मार्ग में ही एक स्थान पर रुकना पड़ा। प्रातः उड़ान द्वारा 7 बजे सेंट थॉमस

पहुँचे। सन्तू सिदसानी ने बड़े प्रेम से सेवा की, फिर उसी दिन लगभग दो बजे की उड़ान में जिसमें पहले से ही सीट आरक्षित थीं, उसमें वापिस न्यूयार्क आ गए। यहीं पर सरदार दर्शन सिंह ग्रेवाल (कवल) मिला। अमेरिका रुकने के दौरान सरदार सतिन्द्र सिंह गुलाटी और उनके दोस्त ए०पी० सिंह ने बहुत सेवा की। अब तीन सप्ताह विदेश की संगत को प्रसाद बाँट कर और विद्या रुपी किसी बड़े वृक्ष का बीज वपन कर वापिस दिल्ली की उड़ान पकड़ी। विस्तृत आकाश में यात्रा करते हुए जिस समय जहाज दिल्ली हवाई अड्डे पर आया तो कैप्टन ने सिगनल होने पर इसे नीचे उतारना शुरु कर दिया गया, लेकिन अचानक जहाज का हाईड्रोलिक सिस्टम फेल हो गया। कैप्टन ने हवाई अड्डे के प्रबन्धक को सूचित कर दिया और आपने जहाज को दिल्ली के ऊपर ही घुमाना शुरु कर दिया। अब नीचे हवाई अड्डे के स्टाफ को एकदम सावधान कर दिया गया। जहाज की सवारियाँ और हवाई अड्डे वाले भयभीत हो गए कि कोई अनहोनी होने वाली है। अचानक अकाल पुरुष की कृपा हुई, हाईड्रोलिक सिस्टम फिर शुरु हो गया, पाँच-सात चक्कर दिल्ली पर काटने के पश्चात् कैप्टन ने जहाज नीचे उतार लिया, इस प्रकार यात्रा सम्पूर्ण हुई।

कार सेवा

अचिंत कंम करहि प्रभ तिन के जिन हरि का नामु पिआरा॥
गुर परसादि सदा मनि वसिआ सभि काज सवारणहारा॥
ओना की रीस करे सु विगुचै जिन हरि प्रभु है रखवारा॥

(सोरठि म: ३, पृष्ठ ६३८)

विदेश यात्रा सम्पूर्ण करके जुलाई के दूसरे सप्ताह वापिस ऋषिकेश आ गए। इतने में परम पूजनीय विरक्त महाराज जी की याद में गोराया और करनाल आदि की पुण्य तिथियाँ आ गईं। गोराया की पुण्य तिथि सम्पूर्ण होने पर करनाल पहुँच गए। वहाँ की संगत तो पहले से ही प्रतीक्षा में थी कि दीपावली समागम के महान् कार्य के लिए, जो प्रबन्धकों को सेवाएँ प्राप्त हुई हैं उनको शुरु किया जाए ताकि सारी तैयारी ठीक समय पर हो जाए। वह देखो! संगत को साथ लेकर उस सौभाग्यशाली धरती-बारह सैक्टर की तरफ देख रहे हैं, जहाँ मातृ-लोक में बैकुण्ठ नगर रचना है। सारे बारह सैक्टर में पाँच-पाँच, छ:-छ: फुट तक घास फूस खड़ा है। उसको बड़े ध्यान से खड़े ऐसे देख रहे हैं, मानों उसको सांत्वना दे रहे हों कि तुम चिन्ता न करो। तुम्हारा अब उद्‌भिज्ज योनि से छुटकारा होने ही वाला है। संगत को आज्ञा दी कि सितम्बर के अन्त में अमुक तिथि को हम यहाँ आ जाएंगे। उस दिन बड़ी कुटिया में इक्कीस श्री अखण्ड पाठ साहिब रख लें और साथ-साथ ही दो दिन कार सेवा करके बारह सैक्टर की इस धरती को जिस में हमने समागम करना है, ट्रैक्टरों से जोत, सँवार कर घास रहित साफ और समतल बना लें। फिर प्रबन्धक अपनी-अपनी ड्यूटी अनुसार निर्माण का कार्य शुरू कर दें। बरसी समागम सम्पूर्ण होने पर अगस्त और सितम्बर के मास संगत को दी तिथि अनुसार करनाल क्षेत्र, दिल्ली और पंजाब के क्षेत्रों की यात्रा की। यात्रा के दौरान पंजाब आदि की संगत को ज्ञात हुआ कि सितम्बर के अन्तिम सप्ताह जहाँ दीपावली का महान् कुम्भ मनाना है, उस

स्थान पर कार सेवा द्वारा सफाई आदि की सेवा करनी है। कार सेवा के लिए निश्चित की गई तिथि पर आप करनाल कुटिया पहुँच गए। करनाल क्षेत्र की संगत ट्रैक्टर आदि लेकर आ गई। पंजाब से भी कुछ संगत इस सेवा में भाग लेने के लिए आई। बड़ी कुटिया में इक्कीस श्री अखण्ड पाठ साहिब प्रारम्भ करके अरदास उपरान्त कार सेवा शुरू हो गई। ट्रैक्टर वालों ने ट्रैक्टर चला कर जमीन को सम करना शुरू कर दिया। बाकी संगत कसियाँ लेकर ऊँचे नीचे स्थान को साफ करने लग गई। छोटी कुटिया के पास नाला बहता है, उसमें पाइपें दबा कर ऊपर ट्रालियों से मिट्टी डाल कर शानदार पुल बना लिया। यही नाला छोटी कुटिया को बड़ी कुटिया से और समागम स्थान से अलग करता प्रतीत होता था। अब इसकी प्रतीति जड़ से समाप्त हो गई। दो दिन की लगातार कार सेवा ने दोनों कुटियों और बारह सैक्टर की दूरी और भिन्नता को समाप्त कर अति समीपता यानि एक कर दिया। इतने में कनखल ऋषिकेश के समागम आ गए। करनाल की सौभाग्यशाली संगत, जिस ने दीपावली समागम की प्रबन्धकीय और आर्थिक सेवाएँ अपने आँचल में डलवाई थीं, उनको उत्साह और सेवा का बल प्रदान कर ऋषिकेश आ गए।

कनखल : नये भवन का उद्घाटन

श्री निर्मल बाग कनखल बन रहे बड़े भवन जिस की नींव 1900 में रखी गई थी अब पूर्ण रूप से तैयार हो गया। इस भवन में अण्डर ग्राउंड एक बड़े हाल में सैंकड़ों यात्री आराम कर सकते हैं और चार मंजिल भवन में ब्यालीस कमरे और ऊपर की मंजिल पर एक बहुत ही सुन्दर सत्संग हाल (दीवान हाल) जिस में हज़ारों की संख्या में संगत सुशोभित होकर सत्संग का लाभ उठा सकेंगे। इस भवन में महापुरुषों के आशीर्वाद से सेवा चाहे सारी संगत ने मिलजुल कर ही की है और अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार यथाशक्ति हिस्सा भी डाला है, लेकिन ज्यादा सेवा राधा कल्याण दास दरियानानी मैमोरियल ट्रस्ट बम्बई ने की। उसने चौदह कमरों और एक बड़ा हाल जिस का नाम राधा कल्याण दास दरियानानी मुम्बई मैमोरियल सत्संग हाल रखा है—की सेवा की। महापुरुषों ने इस सुसज्जित भवन का उद्घाटन सर्वगुण सम्पन्न पूजनीय श्रीमान् १०८ महन्त बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज की पावन स्मृति में 56वीं पुण्य तिथि और विरक्त शिरोमणि पूज्य श्रीमान् १०८ पण्डित निक्का सिंह महाराज जी की दसवीं पुण्य तिथि के शुभ अवसर पर यानि बारह अक्तूबर, 1993 दिन मंगलवार (आश्विन शुदी एकादश-द्वादश) नियत किया गया। महापुरुषों की पवित्र याद मनाने और नये भवन के उद्घाटन के लिए देश प्रदेश की सब संगत को निमन्त्रण पत्र भेजे गए। निश्चित दिन को यानि रविवार दस अक्तूबर 1993 ई० के शुभ दिन नए बने हाल में सुबह नौ बजे तेरह श्री अखण्ड पाठ साहिब प्रारम्भ किए गए। संगत भी काफी संख्या में पहुँच गई। प्रात: श्री आसा जी की वार का कीर्तन बीबी हरमिन्दर कौर करनाल, मोहिनी बाई मुम्बई और अन्य संगत दरबार साहिब में मिलकर करती। सायं को बाहर खुले पण्डाल में दीवान सजते। पहले श्री सुखमनी साहिब जी के पाठ फिर कीर्तन उपरान्त नौ बजे आरती होकर समाप्ति होती। इस प्रकार संगत सत्संग और सेवा का लाभ उठा रही है। आज बारह अक्तूबर, 1993 के दिन प्रात: छ: बजे श्री अखण्ड पाठ साहिब के भोग शुरू हुए जो सवा सात बजे आरती मर्यादा अनुसार सम्पूर्ण हो गए। अब संगत ने गुरु के चल रहे अटूट लंगर में चाय व नाश्ता किया। उपरान्त नौ बजे सत्संग हाल में कीर्तन आरम्भ हो गया जिस में मोहिनी बाई मनसुखानी बम्बई, बीबी हरमिन्दर कौर करनाल और अन्य संगत ने गुरुवाणी के मधुर रस के कीर्तन द्वारा मीठी-मीठी फुहार

से वर्षा की। बाद में संत समागम शुरु हो गया जिसमें निर्मल पंचायती अखाड़े के श्री महंत साहिब श्रीमान् १०८ महन्त ज्ञान देव सिंह जी अपनी विरक्त मण्डली लेकर पहुँचे हुए थे। संत समागम में संत रघुबीर सिंह शास्त्री कनखल, महंत रतन सिंह जी रतन बाग कनखल, श्री निरंजन देव जी महंत विरक्त मण्डली, श्रीमान् सन्त रघुबीर सिंह जी शास्त्री बनारस वाले इत्यादि महापुरुषों ने पारमार्थिक विचारों द्वारा महापुरुषों को श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं। बाद में श्री महंत साहिब श्री मान् १०८ महन्त ज्ञान देव सिंह जी ने गरुवाणी तथा अन्य शास्त्रों द्वारा बहुत भाव पूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। मंच सचिव की सेवा सरदार तरजीत सिंह जी नरुला करनाल वालों ने बहुत योग्यता और विद्वता पूर्ण सुचारु रूप से निभाई। इस महान् समागम में और भी संत महात्मा जैसे श्रीमान् महंत बाबा गुरबचन सिंह जी बरनाला, श्रीमान् महंत प्यारा सिंह जी बरनाला, श्रीमान् महंत श्याम सुन्दर सिंह जी मिर्जापुर इत्यादि और विरक्त मण्डली सहित सैंकड़ों साधु महात्मा पहुँचे हुए थे। उपरान्त साढ़े बारह बजे अरदास करके गुरु के लंगर शुरु हो गए जिसमें पहले संत महापुरुषों की पंक्ति लगाई गई उपरान्त सारी संगत ने गुरु के लंगर से प्रशाद छके। इस प्रकार महापुरुषों की पवित्र याद में पुण्यतिथि समागम और नये भवन के उद्घाटन समारोह सम्पूर्ण हुए।

सहज कथा की रचना

वर्णन ग्यारह अक्तूबर, 1993 के दिन का है जब कनखल पुण्यतिथि समागम चल रहे थे। परमपूज्य महन्त महाराज जी ने एक प्रेमी को बुलाकर वचन किया कि आ रही दीपावली के महान् समागम पर सरदार हरजीत सिंह सचदेवा करनाल वालों ने आई संगत को श्री सुखमनी साहिब जी का एक-एक गुटका देने की सेवा ली है ताकि संगत के घर दीपावली की याद में गुरुवाणी रूपी दीप से प्रकाशित रहे, परन्तु सुखमनी साहिब जी के गुटके गुरु के श्रद्धालु घरों में पहले ही मौजूद हैं, अगर किसी को आवश्यकता हो तो भी थोड़ी भेंट देकर आम स्थानों से बड़ी आसानी से प्राप्त हो सकते हैं इसीलिए हमारा विचार है कि अपने परम पूज्य श्रीमान् १०८ बाबा निक्का सिंह विरक्त महाराज जी ने कथा द्वारा गुरुवाणी के गहन रहस्य खोले हैं वे कुछ कैसेटों में विद्यमान हैं, उन प्रवचनों को कैसटों में से उतार कर एक पोथी के रूप में संग्रह कर के दीपावली के महान् समागम पर संगत को बिना किसी भेंट के प्रसाद रूप में वितरित किए जाएँ ताकि संगत ईश्वरीय वाणी के गहन रहस्यों को जो महापुरुषों ने अपने अनुभव के द्वारा खोले हैं को पढ़ विचार के लाभ उठाएँ। प्रेमी ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की महाराज! जैसे आप की आज्ञा!

आज्ञा हुई—यह चल रहा समागम कल समाप्त होने पर सायं को ऋषिकेश पहुँच जाएंगे। परसों चौदह अक्तूबर के दिन प्रात: ही कैसेट से उतारना शुरु कर देंगे। जितना जल्दी हो सके दिन-रात करके उतार लें ताकि दीपावली तक पौथी तैयार हो जाये। हुक्म अनुसार संगत में से लड़के-लड़कियों को चौदह अक्तूबर के दिन प्रात: ही अलग-अलग, छ: सात टेपरिकार्डर देकर दो-दो, तीन-तीन कैसेट उतारने करने के लिए दे दी गई। साथ-साथ एक प्रेमी की संशोधन करने में ड्यूटी लगा दी। इस प्रकार दिन-रात बड़ी तेज़ी से काम चलता रहा। इतने में ऋषिकेश वाली पुण्य तिथि आ गई। बीस अक्तूबर के दिन श्री अखण्ड पाठ साहिब प्रारम्भ हुए और बाइस अक्तूबर को पुण्य तिथि समागम सम्पूर्ण होने पर फिर कैसेट से उतारा और संशोधन कार्य शीघ्रता से शुरु हो गया। 24 अक्तूबर सायं तक अठारह कथाओं को उतारकर उसकी कम्पयूटर द्वारा टाईप

सैटिंग के लिए रात की गाड़ी गोराया पहुँच गए। वहाँ उजागर सिंह सूरी की कार द्वारा पच्चीस अक्तूबर को जालन्धर जाकर पोथी की सामग्री प्रेस वालों को दे दी। प्रेस वाले प्रेमी कम्पयूटर द्वारा प्रूफ निकालते रहे और प्रूफ रीडिंग वाले संशोधन करते रहे। इस प्रकार दिन-रात करके पाँच दिनों में प्रूफ और संशोधन करके कम्पोजिंग का सारा कार्य सम्पूर्ण हो गया। इस प्रकार तीस तारीख को प्रूफ लेकर करनाल पहुँच गए। आगे पोथी प्रकाशित करवाने के लिए देहली ले गए जो पोथी तैयार होकर नौ तारीख तक करनाल पहुँच गई। इस प्रकार दीपावली से चार दिन पहले ही पोथी तैयार होकर 'सहज कथा' के रुप में सामने आ गई।

अलौकिक दीपावली

जिस दीपावली के समागम की एक वर्ष पूर्व 1992 दीपावली के दिन ही नींव रखी थी और काफी समय से सैकड़ों व्यक्ति जिस की तैयारी में लगे हुए थे, वह महान् समागम बिल्कुल नजदीक आ गया। परम पूजनीय श्रीमान् १०८ महन्त बाबा राम सिंह जी भी एक नवम्बर को करनाल पहुँच कर चल रहे निर्माण के कार्यों को स्वयं देख-रेख कर रहे हैं। सैकड़ों व्यक्ति कोई एक किलोमीटर क्षेत्र में पूरा नगर बसाने के लिए दिन-रात लगे हुए हैं। बड़े-बड़े पण्डाल बन रहे हैं। किसी ओर निवास के लिए टैण्ट लग रहे हैं। साथ खुले शामियाने भी लगाए जा रहे हैं ताकि संगत बड़ी संख्या में आराम कर सके। ट्रक, ट्रालियाँ, कारें, जीपें, मोटर साइकिल, स्कूटर आदि ट्रैफिक के लिए एक बड़ा पार्किंग बनाया जा रहा है। एक स्वागत कक्ष भी बनाया जा रहा है जिससे सारे समागम और प्रत्येक कार्यक्रम के बारे में पूछताछ की जा सकेगी। पाँच बड़े-बड़े जोड़े घर बनाए जा रहे हैं जिन में संगत के जोड़ों की सुचारु रूप से संभाल की जा सकेगी। प्रत्येक जोड़ा घर में सात हज़ार व्यक्तियों के जोड़े संभालने की व्यवस्था होगी। इस प्रकार पाँच जोड़ा घरों में पैंतीस हज़ार जोड़ा एक ही समय संभाल लिया जाएगा। सैकड़ों शौचालय स्नान गृह नये बना कर बीच में पानी आदि का प्रबन्ध कर दिया, ताकि संगत को कठिनाई न हो और सैकड़ों मकान आरक्षित कर लिए गए। बाहर से आई संगत के रुकने के लिए। माडल टाऊन, अर्बन एस्टेट, वज़ीर चन्द कॉलोनी तथा अन्य नजदीक इलाके मोहल्ले में रहने वाली संगत के मन में इतना उत्साह और सेवा भावना है कि बहुत से परिवार अपने परिवार के लिए एक-एक कमरा रखकर बाकी का सारा मकान बाहर से आई संगत के रुकने के लिए प्रबन्धक सज्जन के पास नोट करवाते जा रहे हैं कि जरूरत होने पर हमारे मकान का प्रयोग हो सके ताकि बाहर से आई गुरु की संगत आराम से रह सके और हमें चार दिन सेवा का अवसर मिले। वह देखो! गुरु हरिकृष्ण पब्लिक स्कूल के प्रेमियों ने कितनी बड़ी सेवा प्राप्त कर ली है। दो सौ इक्यावन अखण्ड पाठों के पाठी सिंहों को जो कि हज़ारों की संख्या में होंगे, सभी को अपने स्कूल में ठहरने और सभी के लिए वस्त्र बिस्तर आदि का प्रबन्ध और सभी को चाय, दूध छकाने की सेवा महापुरुषों से आँचल में डलवा ली! स्कूल में कमरों की तो कोई कमी नहीं, हज़ारों बिस्तर किराये पर लेने कर लिए हैं। शौचालय, स्नानगृह पहले ही सैंकड़ों बच्चों के लिए बने हुए हैं, लेकिन समागम बड़ा होने के कारण और बनाए जा रहे हैं तथा पानी की एक मोटर नई लगाई जा रही है और गैस चूल्हा आदि का प्रबन्ध करके रख लिया है ताकि दो सौ पच्चास पाठी इक्ट्ठे ड्यूटी पर जाते समय गर्म-गर्म चाय स्कूल में छक के जाएँ। स्कूल चाहे समागम स्थान से दूर नहीं, जहाँ चाय, दूध और लंगर आदि गुरु के खुले भण्डारे वितरित होंगे, लेकिन यह स्कूल वालों की श्रद्धा देखो कि पाठी चाय, दूध, स्कूल से ही पीकर ड्यूटी पर जाएँ। वह

निर्मल आश्रम अस्पताल, ऋषिकेश

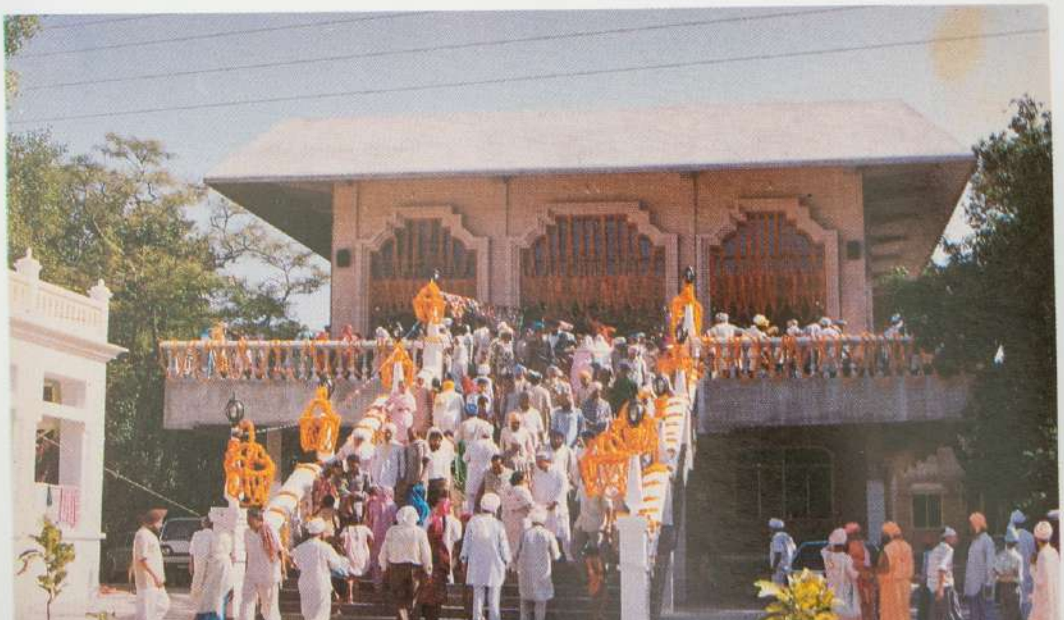

निर्मल बाग कनखल : (ऊपर) पहली बिलडिंग (नीचे) नई बिलडिंग

पूज्य संत बाबा राम सिंह जी महाराज की विदेश यात्रा के दौरान के दृश्य

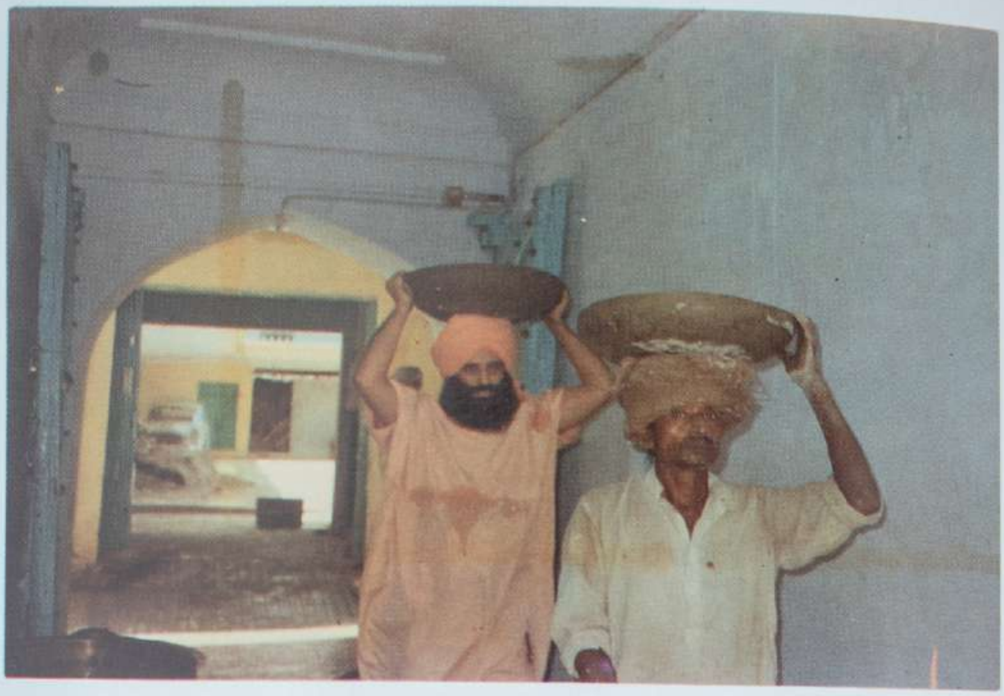

कार सेवा : (ऊपर) महंत बाबा राम सिंह जी महाराज कार सेवा करते हुए। (नीचे) संगते लैंटर की सेवा करती हुई।

देखो! कितना सुन्दर और बड़ा कीर्तन पण्डाल बन गया है। जिस में कोई बीस हजार व्यक्ति बैठ कर कीर्तन का आनन्द ले सकेगा। इधर पाठ पण्डाल कितना बड़ा, कितना सुन्दर और वाटर परुफ बन रहा है ताकि वर्षा आदि की अवस्था में भी एक सुन्दर दुर्ग का कार्य करे। इस में दो सौ इक्यावन श्री अखण्ड पाठ साहिब प्रारम्भ होंगे। यह पाठ पण्डाल चारों ओर जा रहे पण्डालों के बीच ऐसे सुशोभित है जैसे बड़े-बड़े फलदार और सुन्दर पुष्पों के पौधों के मध्य राजसी महल हो या ऐसे समय जैसे अन्य दिव्य पुरियों के बीच विणुपुरी हो और बनाते समय भी साथ के अन्य पण्डाल इससे थोड़ी दूरी पर बनाए गए हैं ताकि पाठ पण्डाल में हर समय पूर्ण एकान्त बनी रहे। वह सन्त-निवास देखो! कितना सुन्दर बन रहा है, जिस में महापुरुष सुशोभित हो कर समागम का निरीक्षण करेंगे। आई संगत को मिलेंगे तथा पाठी सिंहों को सिरोपे प्रदान करेंगे। एक सुन्दर टैण्ट लगाया जा रहा है जहाँ सारे संचार साधन का मुख्य दफ्तर होगा और समय-समय पर यहाँ से कार्यक्रमों की घोषणा होती रहेगी। इधर साथ ही एक सुन्दर शामियाना लगा कर चारों तरफ से बन्द करके एक अस्थाई अस्पताल बनाया जा रहा है जिस में योग्य डॉक्टरों की टीम दिन-रात हर तरह के रोगियों की मुफ्त सहायता करती रहेगी। इधर एक बिजली स्पलाई का मुख्य दफ्तर बनाया जा रहा है जहाँ से मीलों में फैले समागम के लाखों पुआइंट, ट्यूब, बल्ब, सूर्य लाईटें, जगमग और अनेक प्रकार के प्रकाश का प्रबन्ध होगा। चाहे बिजली विभाग के बड़े-बड़े अफ्सरों ने बिजली स्पलाई चौबीस घण्टे निरंतर रखने का भरोसा दिया है फिर भी अगर किसी कारण से बिजली चली जाए या कोई रुकावट होने की अवस्था में बड़े-बड़े यानि 70 किलोवाट के चार जनरेटर फिट किए हैं मानों तैतीस के०वी० का एक छोटा ग्रिड तैयार हो रहा है। इसका सारा प्रबन्ध राज्य के योग्य अधिकारी चौबीस घण्टे उपस्थित रह कर करेंगे। पीने के पानी की आवश्यकता पूरी करने के लिए एक हज़ार लीटर से लेकर पाँच हज़ार लीटर पानी की टैंकियाँ जगह-जगह रखी जा रही हैं जिन में पीने के पानी की स्पलाई चौबीस घण्टे टैंकरों के द्वारा जारी रखी जाएगी। सारे सैक्टर में पानी के बड़े टैंकर पानी छिड़क रहे हैं ताकि हल चला कर सम की हुई मिट्टी पूरी तरह दब जाए। यह भी अपनी सेवा कई दिनों से निरंतर करते जा रहे हैं। सरकारी अधिकारी भी सेवा जैसे महान् कुंभ में भाग लेने में पीछे नहीं रह रहे। वे भी कई नई सड़कें दिन-रात बना रहे हैं। वह देखो! जहाँ संगत ने लंगर छकना है सारी जगह तारकोल बजरी डाली जा रही है। एक प्रेमी महेन्द्र मलिक का रोड रोलर भी गीली मिट्टी को दबाने के लिए दिन-रात चलता जा रहा है। यह एक लोहे की चादरों का कितना सुन्दर मकान बन रहा है जिस में हज़ारों बोरी आटा, चावल, दालें, चीनी और घी आदि लंगर का सूखा राशन रखा जाएगा। साथ ही कितना बड़ा हाल बनाया जा रहा है जिसमें सब्जी के ट्रक उतारे जाएंगे तथा सब्जी काटने वाले बैठ कर सेवा करते रहेंगे। इधर साथ ही सीमेन्ट का एक पक्का फर्श बनाया जा रहा है जहाँ पर काटी हुई सब्जी पानी से धोई जाएगी। इधर शामियाने के नीचे गैस की दस भट्ठियाँ डीजल और लकड़ी वाले पन्द्रह चूल्हे लगाए जा रहे हैं जिन पर दाल, सब्जी, चावल, खीर, कड़ाह प्रसाद, लड्डू, जलेबी तथा अन्य मिठाइयाँ बनाई जाएंगी। इस तरफ बिल्कुल साथ ही देखो! तीन मशीनें आटा गूँथने की फिट हो रही हैं। ये दूसरी तरफ प्रशादे बनाने के लिए आठ चूल्हे गैस के बड़े और छः लकड़ के तैयार हो रहे हैं। दूसरी तरफ थोड़े अन्तर से गैस के कई सौ सिलैण्डर जमा कर रखे हैं। जरा ध्यान से उधर देखो! जिन्दगी में पहली बार एक आश्चर्यजनक कौतुक देख रहे हैं। एक पाइप बिछाई जा रही है जिसके किनारों पर जाकर चौवन टूटियाँ फिट की गई हैं। इनमें से हर समय दिन-रात गर्म-गर्म चाय मिलती रहेगी, किसी भी अमीर, गरीब,

बड़े-छोटे को चाय पीने के लिए पंक्ति में नहीं बैठना होगा और न ही बर्तन लेकर बाँटनी होगी, जब मन करे चाय टूटियों से पी सकेंगे और गर्म रखने के लिए भी इतना सुन्दर प्रबन्ध किया गया है कि हर समय दिन-रात ताज़ी और भट्ठी से उतरी पूरी गर्म मिलेगी। यह साथ ही दूध के टैंकर खड़े करने के लिए जगह बनाई है जहाँ से खाली टैंकर चला जाएगा और भरा हुआ खड़ा रहेगा। इधर दूसरी तरफ एक और भाग बनाया गया है जहाँ पक्का राशन जैसे—दाल, सब्जी, चावल के कड़ाहे और पके हुए प्रसादे रखे जाएंगे। यहीं से बाँटने की जगह पर भेजे जाएंगे। यह थोड़ा आगे जाकर कितना सुन्दर, नीचे से पक्का पण्डाल है जहाँ संगत के लंगर छकने के लिए ऊपर पंक्तियों में सुन्दर टाट बिछाए गए हैं, जिसमें दस हजार व्यक्ति एक ही समय में लंगर छक सकेंगे। इधर कितने बड़े-बड़े चबच्चे बनाए जा रहे हैं जिन में जूठे बर्तन साफ किए जायेंगे। कुछ ऐसे हैं जिनमें साबुन घोला जायेगा वे अलग हैं तथा साफ पानी जिन में होगा वे अलग हैं। इनके बिल्कुल समीप ही बोर कर के एक मोटर फिट कर दी है ताकि चौबीस घण्टे चबच्चे साफ होते रहें मानों हर समीप मोटर के चलते पानी में से बर्तन साफ किए जाएंगे। इधर साथ ही अस्थाई पाइप लाइनें खींच कर जगह-जगह पानी की टूटियाँ फिट कर रहे हैं ताकि संगत को पानी की आवश्यकता पूरी करने के लिए दूर न जाना पड़े। वह देखो! बाईपास पर कितना सुन्दर गेट बनाया जा रहा है। इसकी सुन्दरता बहुत ही आकर्षक है। इसके दोनों तरफ पावन गुरुवाणी की अनुकूल पंक्तियाँ वस्त्र पर लिखकर बैनर्ज़ लगाए गए हैं, जो देहली, पंजाब की तरफ यात्रा कर रहे यात्री गाड़ी में ही बैठ कर अंदाजा लगा सकेंगे कि इस गेट के अन्दर वास्तव में ही बैकुण्ठ नगर बसा होगा। सजावट करने वाली सहारनपुर की एक प्रसिद्ध पार्टी बड़ी कुटिया से छोटी कुटिया तक के सारे क्षेत्र में सड़कों और पण्डालों में झण्डियाँ और फूल पत्तियाँ लगाकर सारे क्षेत्र को आकर्षक बना रही है। बिजली विभाग वालों ने तो अनेक भाँति के रंग-बिरंगें बल्ब, लाइटें और डिपर की लड़ियाँ जगह-जगह फिट करके मानों रात को रंग-बिरंगे दिन में बदल दिया है। बड़ी कुटिया को जो बिजली वालों ने अपनी कला से जो बाहरी रूप से सुन्दर वस्त्र पहनाया है वह बहुत ही अद्‌भुत है और रात्रि को दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे आकाश में ध्रुव की पुरी हो। अलौकिक प्रीतम भी प्रतिदिन एक आध चक्कर दिन या रात को इस नई निर्मित हो रही पुरी में लगाते हैं जिस में सेवा कर रहे प्रेमी दर्शन करके उत्साह से भर जाते हैं और पुरी भी जगमग कर रहे रंग बिरंगे प्रकाश से नक्षत्र मण्डल की तरह चाहे भरपूर है, लेकिन आपके बीच में प्रवेश करने में ऐसे जगमग कर उठती है जैसे चन्द्रमा उदय हो गया हो।

नगर कीर्तन के संक्षेप दर्शन 10 नवम्बर, 1993

आठ नवम्बर को छोटी कुटिया में सात श्री अखण्ड पाठ साहिब प्रारम्भ किए गए। लंगर गुरु के निरन्तर शुरू हो गए। संगत भी दूर नज़दीक से काफी संख्या में पहुँच चुकी है तथा तैयारी कार्य भी सभी सम्पूर्ण हो गए हैं। आज दस नवम्बर के दिन सुबह छः बजे श्री अखण्ड पाठ के भोग शुरू होकर साढ़े सात बजे तक सम्पूर्ण हो गए। अब संगत ने जलपान करके जलूस में शामिल होने के लिए तैयारी कर ली।

वह देखो! बड़ी कुटिया, संगत भारी संख्या में एकत्रित होनी शुरु हो गई है। एक बहुत सुन्दर पालकी सजा ली गई जिस में युगों-युगों से अटॅल साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी सुशोभित हो गए। सबसे आगे केसरी पहरावे पहनकर हाथ में नंगी

तलवारें लिए पाँच प्यारे सुशोभित हैं। पीछे सुन्दर वर्दियों में सकूल के बच्चे, जगह-जगह ट्रालियों, ट्रेक्टरों और टैम्पू में संगत माइक फिट करके शब्द कीर्तन कर रही है। छत्र विहीन एक खुली जीप में अलौकिक नूर सुशोभित है। आपके दोनों तरफ आदरणीय संत जोध सिंह जी और आदरणीय संत गुरिन्दर सिंह (छोटू बाबा) जी सुशोभित हैं और साथ ही निर्मल सम्प्रदाय के महान् व्यक्तित्व और पूजनीय, निर्मल पंचायती अखाड़े के श्री महन्त साहिब श्रीमान् १०८ महन्त ज्ञान देव सिंह जी सुशोभित हैं। अब अरदास उपरान्त श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के नेतृत्व में नगर कीर्तन एक जलूस की शक्ल में शुरू हुआ, जिस में मिली-जुली संगत, धर्मों सम्प्रदायों की दुर्गन्ध से ऊपर बहुत उत्साहजनक दिखाई दे रही है। गुरुवाणी के शब्दों के बिना दूसरी कोई आवाज़ कानों में नहीं आ रही, मानों आकाश और सारे वातावरण के कण-कण से गुरुवाणी ही सुनाई दे रही है। वह देखो! जलूस के आगे-आगे संगत कैसे उत्साह से सड़क को झाड़ू से साफ करके पानी छिटक रही है और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की पालकी के आगे-आगे दूध से सड़क धोई जा रही है। जलूस सहज अवस्था में गुरुवाणी की धुन में बहुत प्रेम से चल रहा है। वह अब आकाश से पुष्प वर्षा शुरु हो गई। विमान बार-बार चक्कर काट कर धीरे-धीरे चल रहे जलूस ऊपर पुष्प वर्षा करके अपना कर्त्तव्य निभा रहा है। वाह! अब अस्पताल चौक आ गया जहाँ जलूस ने कुँजपुरा रोड की तरफ से मुड़ कर सब्जी मण्डी चौक की ओर रुख किया और अब एक बहुत सुन्दर गेट आ गया है जो बेदी गारमैण्ट द्वारा बनाया गया है। ये प्रेमी संगत को ठण्डा-ठण्डा जल छका रहे हैं। साथ ही सेठ ग्लास की तरफ से फल और जल से सेवा हो रही है। यह थोड़ी दूर जाकर एक और सुन्दर गेट आ गया जिस की सेवा कर्ण स्वीटस की तरफ से हुई है। ये प्रेमी भी संगत की जल आदि से सेवा कर रहे हैं। अब जलूस गुरु नानक का यश आकाश मण्डल में बिखेरता हुआ थोड़ा आगे बढ़ा तो यह देखो! श्री सनातम धर्म प्रेमियों की तरफ से कितना सुन्दर गेट बनाया हुआ है और कैसे खुले हाथों से संगत की लड्डू आदि मिठाइयों से सेवा कर रहे हैं। अब जलूस बहुत सहज से धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। ये देखो! शान गारमैण्टस के प्रेमियों ने गेट तो बनाया ही हुआ है साथ ही बड़े चाव से संगत को लड्डू और जल छका रहे हैं। वह देखो! कितना अद्भुत गेट बना हुआ है, शायद जिन्दगी में ऐसा पहली बार ही देखा है, क्योंकि गेट के चारों तरफ हर प्रकार के फल जैसे केले, सन्तरे, सेब और कितनी प्रकार के फल ऐसे लटक रहे हैं जैसे वृक्ष एक हो और प्रत्येक शाखा पर फल अलग-अलग लटक रहे हों। यह इतना सुन्दर गेट सब्जी मण्डी यूनियन की तरफ से बनाया गया है मानों इस गेट के द्वारा जलूस अब सब्जी मण्डी में प्रवेश कर रहा है। यहाँ के प्रबन्धक पहले गेट पर केले छका कर मानों संगत को नाश्ता करा रहे हैं फिर जैसे जलूस गेट से गुज़र कर सब्जी मण्डी में दाखिल हो रहा है ये सब्जी मण्डी वाले प्रेमी आलू पूरियों के खुले भण्डारे वितरित कर रहे हैं और संगत भी आवश्यकतानुसार छकी जा रही है। उधर टैम्पू, ट्रालियों से गुरुवाणी कीर्तन ध्वनि सारे वातावरण को शान्त और मधुर रस में भिगो रही है। इधर देखो! एक प्रेमी दर्शन कुमार जी कैसे प्रेम में भीग कर अपनी सारी दुकान खाली कर दी। इधर देखो! कर्त्तार की कृपा भरी दृष्टि एक गरीब पर पड़ी, शायद कर्त्तार आज इस गरीब हृदय वाले प्रेमी पर प्रसन्न होकर, इस की कंगाली दूर करके, इस को सच्ची बादशाही प्रदान करने लगा है। दो-दो, आने की मूली बेचने वाले प्रेमी मूलियों की भरी रेहड़ी से मूलियाँ कैसे संगत को बाँटता जा रहा है। यह देखते ही देखते सारी रेहड़ी खाली कर दी। संगत के कुछ हृदय सोच रहे हैं कि यह बेचारी गरीब

आज अपना और बच्चों का पेट कैसे भरेगा? ये मूलियों की रेहड़ी बेच कर ही इसने सांझ का आटा लेना था। ये सारी इसने प्रेम में भीग कर गुरु की संगत को छका दी। अब एक बहुत सूक्ष्म पर रस युक्त मीठी-मीठी ध्वनि कानों में सुनाई दे रही हैं—

चरन सरन गुरु एक पैंडा जाइ चल सतिगुरु कोट पैंडा आगे होइ लेत है॥

भावनी भगत भाइ कउडी अग्र भाग राखै ताहि गुरु सरब निधान दान देत है॥

सब्जी मण्डी के प्रेमियों का असीम प्रेम संगत को अगे चलने से रोक रहा है, लेकिन समय की मजबूरी, अब धीरे-धीरे थोड़ा आगे बढ़कर कर्ण गेट चौक में प्रवेश हुए। वह! एक प्रेमी श्री राम लाल जी काले चने का प्रसाद संगत को दोनों हाथों से बाँटते जा रहे हैं और इसके साथ ही थोड़ा आगे बाम्बे सिल्क स्टोर की तरफ से स्वागत द्वार बनाया गया है। यहाँ से निकलते जलूस ने अब जी०टी०रोड़ का मोड़ काटा। यह देखो! आगे श्री हरबन्स लाल जी संगत के लिए मीठे चावलों की देग तैयार करके बैठे हैं। बस जलूस के यहाँ पहुँचने की देर थी, बड़े प्रेम से मीठे चावल बाँटने शुरु कर दिए। संगत बड़े प्रेम से मीठे चावल छक कर गुरु नानक की कीर्तिगान में मग्न हुई थोड़ी आगे बढ़ रही है। यह एक बहुत सुन्दर स्वागत द्वार आ गया, यह गेट शायद होलसेल करियाना मर्चेण्टस के प्रेमियों ने भावना में भीग कर बनाया है। द्वार पार करके संगत कुछ आगे बढ़ी तो साथ ही जी०टी०रोड़ और कमेटी चौंक आ गया। वह देखो! इस चौक में डायमण्ड वाले प्रेमी संगत को चने-भटूरे कितने प्रेमपूर्वक छका रहे हैं। संगत का मन भी शायद कुछ नमकीन खाने का था, क्योंकि अभी पहले ही मीठे चावल छके थे। वह देखो! नगर निवासी संगत में कितनी श्रद्धा, प्रेम और उत्साह है। सड़क के दोनों तरफ संगत जलूस के दर्शन और स्वागत के लिए जुड़ कर खड़ी जलूस के ऊपर फूलों की वर्षा कर रही है। सभी दुकानों के आगे संगत की भीड़ लगी हुई है, लेकिन कोई दुकानदार भी बुरा नहीं मान रहा, परन्तु बड़े बुजुर्गों को बैठने के लिए दुकानों से स्टूल, कुर्सियाँ आदि देकर दरवाज़े आगे बिठाते हैं, आप दुकान के अन्दर खड़े ही जलूस पर फूलों की वर्षा कर रहे हैं। जरा ऊपर की तरफ ध्यान करें, भवनों की ऊपरी मंजिल पर माताएँ, बहनें और बच्चे, बूढ़े गुरु की संगत के दर्शन करते हुए, ऊपर से पुष्पों की वर्षा कर रहे हैं। संगत अब धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है। यह अब एक और सुन्दर स्वागत द्वार आ गया, यह शायद करनाल पेट्रोलियम डीलर्ज़ एसोसिएशन की तरफ से बनाया हुआ है, इसके साथ चार-पाँच प्रेमी श्री गुलशन ग्रोवर, श्री उत्तम सिंह, जरनैल सिंह, जसवन्त सिंह और गुरदयाल सिंह आदि प्रेमी संगत को कितने प्यार से सेब छका कर खुशी अनुभव कर रहे हैं। वह देखो! थोड़ा आगे जाकर एक और स्वागत द्वार आ गया यह शायद होलसेल क्लाथ मर्चेण्टस एसोसिएशन की तरफ से बनाया गया है और यह साथ ही शू पैलेस वाले प्रेमियों की तरफ से स्वागती गेट बनाया गया है, इस गेट के साथ ही सरदार महिन्दर सिंह जी खेड़ा की तरफ से संगत को गर्म-गर्म चाय और ब्रेड पकौड़े छकाए जा रहे हैं। अब संगत थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ रही है। यहाँ श्री जय प्रकाश जी गुप्ता एम०एल०ए० की तरफ से कितना सुन्दर स्वागत द्वार बनाया हुआ है। यह देखो! अलौकिक प्रीतम जीप में खड़े-खड़े ही कैसे फलों की वर्षा किए जा रहे हैं। सेबों की पेटियाँ खाली होती जा रही हैं। अब साथ ही केले आ गए, संगत पर दोनों हाथों से वर्षा होती जा रही है। पेटियों की पेटियाँ खाली होती जा रही हैं और भरी हुई और आ रही हैं। अब सन्तरों की वर्षा होनी शुरु हो गई। वह देखो संगत भी फल की वर्षा होते देख कर ईश्वरीय प्रसाद जानकर ऊपर से ही आँचल में डाली जा रही है। फल की वर्षा दाते के दोनों हाथों द्वारा पूरे जोर-शोर से बरस रही है। संगत भी स्वाँति बूँद समझ कर नीचे नहीं गिरने देती, आश्चर्यजनक लीला हो रही देखकर संगत भी चकित हो रही है। यह देखो! सामने चीनी मिल वाले प्रेमियों ने स्वागत द्वार बनाया हुआ है, वह साथ ही एल० आई०सी० गेट आ गया। वाह! महिन्दर सिंह खेड़ा जी यहाँ ब्रैड

पकौड़े संगत को बाँट कर गुरु की खुशियों द्वारा आँचल भर रहे हैं। इधर ज़रा ध्यान से देखो, सारे वातावरण में गुरुवाणी कैसे समा चुकी है, ऐसे प्रतीत हो रहा है, जैसे कण-कण, पत्ते-पत्ते से गुरुवाणी की आवाज़ आ रही हो। जरा ध्यान से सुनने पर एक मधुर-मधुर ध्वनि कानों को सुनाई दे रही है—

जो बोलत है म्रिग मीन पंखेरु सु बिनु हरि जापत है नही होर॥

(मलार म० ४, पृष्ठ १२६५)

इस प्रकार के आनन्दमय वातावरण में मन डूबता जा रहा है, पर जलूस धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। अब जलूस जेल के पास से माडल टाऊन की तरफ हो गया। आगे पंजाब एण्ड सिंध बैंक की मॉडल टाऊन ब्राँच के प्रेमियों की तरफ से बहुत सुन्दर स्वागत द्वार बनाया गया और साथ ही संगत को सफेद चने छका कर गुरु की खुशियाँ प्राप्त कर रहे हैं। यह अब गुरुद्वारा साहिब माडल टाऊन आ गया। यहाँ भी संगत को जल पानी छकाया जा रहा है। अब अँधेरा भी काफी हो गया इसीलिए संगत बहुत सहज से आगे बढ़ रही है। वह देखो! सामने छोटी कुटिया आ गई, शायद यहीं पर जलूस की यात्रा सम्पूर्ण होनी है। वाह! श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पावन स्वरुप पालकी में से उतार लिए गए और निवास स्थान पर पहुँच कर सत् गुरु नानक देव जी का अरदास द्वारा धन्यवाद करके साढ़े आठ बजे के लगभग समाप्ति हुई।*

11 नवम्बर, 1993

नगर कीर्तन की समाप्ति के पश्चात् अब प्रबन्धकों का ध्यान कल शुरु होने वाले दो सौ इक्यावन श्री अखण्ड पाठ साहिबों की तैयारी की तरफ गया, जो अभी अधूरी थी। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के दो सौ इक्यावन नए स्वरुप भाई तरजीत सिंह जी नरुला, भाई सुरिन्दर सिंह जी सचदेवा और भाई कंवर जीत सिंह जी भसीन आदि तीन प्रेमियों के घरों में विराजमान थे। शायद तीनों प्रेमियों ने हजूर के पावन स्वरुप विराजमान करवाने के लिए अपने-अपने घरों में एक-एक कमरा नया ही तैयार करवाया था और रुमाले, पीढ़े आदि सामान की तैयारी सारी पूर्ण थी, लेकिन पण्डाल में अभी भी बहुत काम करना शेष था। जो पूरी रात में पूर्ण हुआ। कैसा है यह पाठ पण्डाल?

---

* *इस सौभाग्यशाली नगर कीर्तन जलूस में लगभग साढ़े तीन कि०मी० लम्बाई में संगत का सागर जिज्ञासा एवं उत्साह के साथ ठाठें मार रहा है। इस जलूस की विशेषता यह थी कि इस में सभी मतों के लोग सम्मिलित थे और सभी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की उपस्थिति बड़े संयम और गुरु-मर्यादा अनुसार यात्रा कर रहे थे। इस जलूस के स्वागतार्थ नगर के सभी सम्प्रदायों के लोगों ने स्थान-स्थान पर स्वागत द्वार बनाकर अपनी भीतरी श्रद्धा का प्रत्यक्ष प्रमाण दिया और स्थान-स्थान पर अनेकों प्रकार के पदार्थ, गर्म-गर्म चाय, और फल आदि के साथ संगत की सेवा करके 'एकु पिता एकसु के हम बारिक' के महावाक् को प्रकट किया। जलूस बाकी संगत और दर्शकों में शान्ति एवं श्रद्धा भावना इतनी थी कि गुरुवाणी के बिना दूसरी कोई बात कानों में सुनाई नहीं देती थी। जलूस के समस्त मार्ग पर पूरा दिन जल की सेवा हरियाणा डेरी विकास के अपने टैंकरों के द्वारा और मानव सेवा संघ ने गाड़ियों द्वारा साथ-साथ चलकर की। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की पावन पालकी के आगे-आगे सफाई एवं जल आदि छिड़कने की सेवा गुरु नानक जथा करनाल की ओर से पूरा दिन बड़े प्रेम के साथ की गई। पाँच प्यारों की सेवा डेरा कार सेवा की ओर से की गई। इस जलूस का पूर्ण घेरा कोई 10 कि०मी० लम्बा था।*

तीनों ओर से तो पूरी तरह से बंद और चौथी ओर से जिधर से संगत ने दर्शन करने हैं, उधर भी कनात लगा कर अस्थाई रुप से बन्द किया हुआ है। बाहर की सजावट और बिजली के भाँति-भाँति के रंग-बिरंगे बल्बों द्वारा की गई आकर्षक प्रकाश यद्यपि संगत को अपनी तरफ चाहे दूर से आकर्षित कर रहा है, लेकिन भीतरी सौन्दर्य जो कई पार्टियों द्वारा लगकर पूरी रात में पूर्ण किया गया है उस के सम्बन्ध में राजा के महल की तरह बाहर से किसी को कुछ ज्ञात नहीं, सिवाये अन्दर कार्य कर रहे सेवादारों के। पूरे सौन्दर्य के साथ राजा का महल सजा कर तथा प्रत्येक तरह की तैयारी पूरी करके प्रात: पाँच बजे पण्डाल के बाहर जिधर से संगत दर्शन करेगी (अभी कनात से पर्दा किया हुआ है।) अस्थाई रुप से एक छोटी स्टेज बना कर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का पावन, स्वरुप प्रकाश करके 'श्री आसा जी दी वार' का कीर्तन शुरु हो गया।

उधर गुरुओं के गुरु युग-युग अटल श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पवित्र स्वरुप हजूर के लिए सजाए पावन दरबार में लेकर आने के लिए पूर्ण सजावट के साथ लगभग साठ के करीब गाड़ियाँ-सम्बन्धित घरों के आगे जाकर खड़ी हुईं। जिन भाग्यवान् तीन घरों में विराजमान हैं। गुरु नानक साहिब महाराज जी के पवित्र चरणों में अरदास उपरान्त गुरु साहब जी के पावन स्वरुप सेवादारों ने शीश पर उठाने शुरु किए और चँवर सेवक धीरे-धीरे चँवर कर रहे हैं। इस प्रकार मिनटों, पलों में ही सारे स्वरुप शीश पर सुशोभित करके प्रेमी सज्जन कारों में बैठ गए। कितना अलौकिक दृश्य है कोई साठ के लगभग कारों का सुसज्जित काफिला गुरु साहिब के लिए नए बने अलौकिक दरबार, पाठ पण्डाल की तरफ जाकर मिनटों में भी उस बैकुण्ठ नगर में जिस का पिछले कई दिनों से निर्माण हो रहा है, पहुँच गया। सामने की तरफ तो श्री आसा जी दी वार का कीर्तन हो रहा है, पिछली तरफ दो गेट हैं जहाँ से पाठी सिंह प्रवेश करेंगे। गेटों के आगे कारें आकर रुक गईं। घंटों शंखों की ध्वनि से एक-एक करके गुरु साहिब जी के पवित्र स्वरुप उतार कर अन्दर तैयार किए मंच के ऊपर सुन्दर पीढ़ियों पर सजा कर प्रकाश कर दिए गए। इस अनूठे दरबार का भीतरी सौन्दर्य तो पहले ही अलौकिक था, लेकिन श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के प्रकाश होने पर बैकुण्ठ की भांति आभा से दमक उठा। अब पाँच-पाँच स्वरुप दोनों कुटियों में पहुँच चुके हैं और इस दरबार में दो सौ इक्तालीस श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी और दोनों किनारों पर एक-एक आदि वाणी श्री जपुजी साहिब जी की एक बड़ी पोथी प्रकाश की गई है। सारे पण्डाल में सफेद रंग का सुन्दर चँदोवा तना हुआ है और उस चँदोवे में क्रमानुसार दो सौ तिरतालीस चाँदी के सुन्दर झब्बे लटक रहे हैं जो प्रत्येक पावन स्वरुप के ऊपर मानों राजसी ताज की तरह शोभाएमान हो रहे हैं। काँच का बहुत सुन्दर मीनाकारी जड़त चंदोवा साहिब तो ऐसे शोभा दे रहा है जैसे आकाश मण्डल में पूर्णिमा का चाँद और अनेक दिव्य तारे शोभा दे रहे हों। इसमें बिजली के रंग बिरंगे बल्ब जगने से इस का सौन्दर्य बैकुण्ठ के सौन्दर्य को भी मात दे रहा है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पावन स्वरुपों पर एक जैसे भगवे रंग के सुन्दर रुमालों से सम्पूर्ण पण्डाल ऐसे दमक रहा है जैसे सूर्य उदय होने के समय पूरी पूर्व दिशा सहित सूर्य की लाली से लाल हुई होती है। 243 पाठी सफेद रंग के वस्त्र पहन कर हाथ में चँवर पकड़ कर सारे पावन स्वरुपों के साथ ऐसे सुशोभित हैं जैसे बैकुण्ठ लोक में दिव्य आत्माएँ अपने स्वामी के ध्यान में मग्न समाधि में स्थित शोभा दे रही हों। गुरु साहिब जी के पावन स्वरुप प्रकाश करने के लिए अंग्रेजी के यू (U) अक्षर की तरह से मंच इतना सुन्दर और मर्यादा पूर्ण बनाया गया है कि 243 पाठियों में से किसी एक की भी श्री गुरु

ग्रन्थ साहिब की ओर पीठ नहीं है। प्रत्येक पावन स्वरुप के आगे कागज़ की एक बहुत सुन्दर गोल प्लेट लगी हुई है जिसके ऊपर पाठ नम्बर बहुत सुन्दर ढंग से छपा हुआ है। प्रत्येक पाठी को, दल नेता ने एक छपी हुई पर्ची दी हुई है जिसके ऊपर पाठ नम्बर—जिसके समक्ष बैठना है और ड्यूटी का समय लिखा है और अब प्रत्येक पाठी दिए हुए नम्बर और समय के अनुसार अपनी ड्यूटी देता रहेगा। प्रत्येक पाठ के आगे लगी यह नम्बर प्लेट की सुन्दरता दर्शकों के मन को मोह लेती है। पण्डाल में पर्दों की दीवारों पर रैक्सीन और कपड़े के बैनर्ज़ जिन पर गुरुवाणी की उचित पंक्तियाँ लिखी हैं, सुन्दर तरीके से लटकते हुए शोभा दे रहे हैं। पण्डाल के बीचोबीच एक आठ फुट लम्बा और चार फुट चौड़ा बोर्ड लटका हुआ है जिसके ऊपर—

सतजुगि तै माणिओ छलिओ बलि बावन भाइओ॥
त्रेतै तै माणिओ रामु रघुवंसु कहाइओ॥
दुआपुरि क्रिसन मुरारि कंसु किरतारथु कीओ।।
उग्रसैण कउ राजु अभै भगतह जन दीओ॥
कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगदु अमरु कहाइओ॥
श्री गुरु राजु अबिचलु अटलु आदि पुरखि फुरमाइओ॥

(सवैइए, पृष्ठ -१३६०)

यह पावन सवैया सुन्दर अक्षरों में पेंट किया हुआ है जो मानों अकाल पुरुष वाहिगुरु की सर्वव्यापकता और जीवों के उद्धार के लिए समय-समय पर प्रकट होने के बड़प्पन को मूर्तिमान करता है। इस बोर्ड के चारों तरफ पण्डाल के पीछे की दीवार पर बड़े-बड़े आकार की छः फोटो लटक रही हैं। इनका आकार छः फुट लम्बा, सवा चार फुट चौड़ा है। इनमें से एक त्रेता के अवतार श्री रामचन्द्र जी, दूसरी द्वापर के अवतार भगवान श्री कृष्ण जी की और तीसरी कलियुग के अवतार श्री गुरु नानक देव जी की, चौथी उनके छठे स्वरुप श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी की, पांचवीं अभेद हुए पूर्ण पुरुष संत बाबा भगतसिंह जी की और छठी ब्रह्मज्ञानी संत निक्का सिंह विरक्त महाराज जी की फोटो सुशोभित हैं। ये मानों उपरोक्त सवैये के अर्थ मूर्तिमान कर रही हैं यानि इस सवैये की खुली व्याख्या है।

सारे पण्डाल में नीचे हरे रंग का बहुत सुन्दर कालीन बिछा हुआ है जो सरसरी दृष्टि से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे सारी धरती पर बहुत नर्म और सुन्दर घास उगी हो।

सारे पाठ पंडाल के सैंटर के यू में तीन पालकियाँ सुशोभित हैं जिनके बीच में कई लाख रुपये की लागत से तैयार हुई चांदी की एक सुन्दर पालकी सुशोभित है, जिस की नकाशी में सुन्दर मीनाकारी चित्रित है, जो दर्शकों के मन को मोह रही है। इसके दोनों तरफ सफेद चाँदी जैसी सटील की दो पालकियाँ सुशोभित हैं। इन तीन पालकियों में मुख्य पाठ हैं, इसीलिए तीनों पर अलग-अलग माइक फिट कर रखे हैं ताकि तीनों पाठी सिंह पन्द्रह-पन्द्रह मिनट बारी-बारी से पाठ का उच्चारण करते रहें। इन मुख्य पाठों से दिन-रात निरन्तर पाठ उच्चारित होकर पूरे पाठ पण्डाल तथा दोनों कुटियों में पाठ कर रहे दो सौ इक्यावन पाठियों को एक रस सुनाई देता रहेगा।

इधर पण्डाल से बाहर प्रातः से दीवान सजा है। पहले पाँच से सात बजे तक 2 घण्टे श्री आसा जी दी वार का मधुर कीर्तन हुआ। फिर डेढ़ घण्टा यानि सात से साढ़े आठ बजे तक संगत ने श्री सुखमनी साहिब के पाठ किए। फिर साढ़े आठ

से साढ़े ग्यारह तक ईश्वरीय वाणी का कीर्तन किया गया, जिस में औरों के अतिरिक्त श्रीमान् सन्त राम सिंह जी नानकसर सींघड़े वालों के रागी जत्थे ने बहुत मधुर कीर्तन किया। संगत यद्यपि प्रात: के पाँच बजे से दीवान में सजी हरि कीर्तन, हरि यश का आनन्द ले रही है, परन्तु ध्यान सबका पाठ पण्डाल की तरफ है कि कब कनात रुपी पर्दा उठे और कब पाठ पण्डाल रुपी अलौकिक मण्डल के दर्शन हों। अब तक इस ईश्वरीय दरबार के दर्शन अन्दर सेवा कर रहे गिने चुने थोड़े से सज्जनों को ही उपलब्ध हो रहे थे, लेकिन अब समय आ गया, उन हज़ारों की संगत को दीदार करने का जो सुबह के पाँच बजे से कानों द्वारा यद्यपि निर्वाण कीर्तन सुन रही थी, लेकिन नेत्रों का एक टक ध्यान दरबार साहिब की कनात की तरफ लगा हुआ है कि कनात रुपी पर्दा कब उठे और हरि मन्दिर के दर्शन हों।

परम पूजनीय १०८ महन्त बाबा राम सिंह जी महाराज भी अपनी सन्त मण्डली सहित दरबार में पहुँच कर, मुख्य पाठ के बीच में चाँदी की पालकी में सुशोभित कलियुग के अवतार श्री गुरु ग्रन्थ साहिब महाराज जी को अपने पवित्र हाथों से चँवर करते ऐसे शोभाएमान हो रहे हैं जैसे पूर्णिमा के चाँद का नक्षत्र मण्डल प्रकट हो गया हो। आप जी के पहने हुए सुन्दर भगवे वस्त्र श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के सुन्दर रुमालों से मिलकर सुन्दर बाग में खिले लाल-लाल टेसू (किंशकु) के फूलों की तरह शोभा दे रहे हैं। अब ठीक दिन के बारह बज चुके हैं। जिस समय की एक वर्ष से तैयारी और प्रतीक्षा हो रही थी, अब वह दो सौ इक्यावन श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ करने का सुअवसर आ पहुँचा। संगत का ध्यान भी घड़ी की ओर है कि कब बारह बजे कब पर्दा उठे? वह देखो! कनात इक्ट्ठी करनी शुरु कर दी है और संगत भी इस इलाही दरबार के दीदार करने के लिए उत्सुकता से बड़ी तेजी से उठ खड़ी हुई। अलौकिक दरबार में से सहज ही प्रकट हो रही विलक्षण सुन्दरता की पहली जगमगाहट का तेज आँखों को चुँधिया रहा है। इन स्थूल आँखों ने ऐसा तेज, ऐसा प्रकाश, ऐसा अलौकिक दृश्य, यह बैकुण्ठ नगर शायद आज पहली बार देखा है, इसीलिए दीदार करके मन चकित होता जा रहा है, आपा भूलता जा रहा है। मन किसी अगोचर आनन्द में लीन हुआ, अपने आप कह रहा है—

डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ।।
बधोहु पुरखि बिधातै तां तू सोहिआ।।

(फुनहे म: ५ पृष्ठ १३६२)

अब ठीक बारह बजे का समय हो गया है। भाई तरजीत सिंह जी अरदास करने के लिए गले में पल्ला डालकर मुख्य पाठ के आगे, जो पूरे पण्डाल के मध्य में सुशोभित है, खड़े हो गए। अरदास भी बहुत लम्बी है, क्योंकि दो सौ इक्यावन सेवकों के नाम लेने हैं, जिन की तरफ से इस पाठ साहिब की सेवा हो रही है। अरदास सम्पूर्ण होने पर श्रीमान् १०८ महन्त बाबा राम सिंह जी महाराज ने युगो-युग अटल सतिगुरु, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब महाराज जी के पावन स्वरूप से हुक्मनामा लेकर दो सौ इकयावन अखण्ड पाठ साहिब की शुरुआत की। शुभारम्भ के समय हज़ारों संगतों का सागर की भाँति ठाठें मार रहा समूह पाठ पण्डाल की अलौकिक सुन्दरता की तरफ एक टक देखे जा रहा है, मानों दीदार करके अभी पूरी तरह तृप्त नहीं हो रहे। मन सोचता है कि इस बैकुण्ठ के बीच में घूम कर देखूँ, लेकिन सुरक्षा का प्रबन्ध इतना जबरदस्त है कि पाठी के बिना कोई दूसरा व्यक्ति पाठ पण्डाल के गेट के नजदीक नहीं जा सकता। पूरे जोड़ मेले में हर प्रकार की सेवा के सेवादारों के कन्धों पर अपनी-अपनी सेवा अनुसार बिल्ले लगे हुए हैं। जैसे पाठी सिंहों के कन्धों पर पाठ सेवा, पाठ की आन्तरिक संभाल

देख-रेख करने वालों पर पाठ पंडाल सेवा, जोड़ा घरों की संभाल करने वालों की जोड़े सेवा, ट्रैफिक कन्ट्रोल सेवा करने वालों पर ट्रैफिक सेवा, डिस्पैंसरी वालों की डाक्टरी सेवा, पूछताछ सेवा, लाऊड-स्पीकर सेवा, बिजली सेवा, जल सेवा, लंगर सेवा और समागम की दिन-रात निगरानी करने वालों की सुरक्षा सेवा, इत्यादि और भी जितनी सेवाएँ हैं सब के कन्धों पर अपनी-अपनी ड्यूटी अनुसार बिल्ले लगे हुए हैं। पाठ साहिब की आरम्भता अब सम्पूर्ण हो चुकी है। मंच संचालक, भाई तरजीत सिंह जी, अब आज के सारे कार्यक्रमों की घोषणा कर रहे हैं। सर्वप्रथम अब परम पूजनीय श्रीमान् १०८ महन्त बाबा राम सिंह जी महाराज संत निवास में सज कर पाठी सिंहों को जो हज़ारों की संख्या में इस महान् यज्ञ में पाठ सेवा द्वारा भाग लेने आए हैं, उन सब भाग्यवान् सेवादारों को अपने पवित्र कर कमलों द्वारा सिरोपा प्रदान करेंगे। वह देखो! कुछ ही मिनटों पश्चात् अलौकिक प्रीतम संत निवास में सज गए और साथ ही संत बाबा जोध सिंह जी और संत गुरिन्दर सिंह (छोटू बाबा) जी। पाठी सिंह भी अब पंक्ति में खड़े होकर बड़े सहज से सिरोपा ग्रहण कर रहे हैं। वीडियो फिल्म वालों ने भी अपना कैमरा अब पक्के रुप में फिट कर दिया ताकि प्रत्येक पाठी जो हजूर के पवित्र हाथों से सिरोपा ले रहा है टी०वी० पिक्चर में आ जाए। इस प्रकार एक-एक करके पाठी सिंहों को सिरोपे प्रदान कर दिए।

श्री अखण्ड पाठ साहिब प्रारम्भ हो चुके हैं और पाठी सिंहों ने सिरोपे ले लिए हैं। अब इधर कीर्तन पण्डाल भी सज गए जिसमें हजारों की, सगत भी सुशोभित हो गई। इस ईश्वरीय कीर्तन दरबार में कोई डेढ़ घण्टा गुरुवाणी यश गायन करने की मधुर ध्वनि से वर्षा होती रही। घोषित किए गए कार्यक्रम के अनुसार, कीर्तन अब ठीक चार बजे शुरु होगा इसीलिए संगत मीलों में फैले समागम का दर्शन कर रही है। सारा कार्यक्रम ऐसे नियमित हो रहा है कि किसी को भी किसी कार्यक्रम के बारे में पूछना नहीं पड़ता। रिसैप्शन, यानि पूछताछ केन्द्र के बाहर एक बड़ा बोर्ड लगा हुआ है, जिस पर शाम तक के सारे कार्यक्रम, कितने बजे सुखमनी साहिब का पाठ शुरू होगा, कितने बजे कीर्तन शुरू होगा और कौन से रागी का, क्या से क्या समय है, संत समागम कितने बजे शुरू होगा, आरती और समाप्ति की अरदास कितने बजे होगी इत्यादि दिन भर के सारे कार्यक्रम एक बड़े कागज़ पर प्रकाशित करवा के लगवा दिए जाते हैं। इस प्रकार संगत निश्चित समय पर पण्डाल पर सजकर लाभ उठा रही है। कार्यक्रम का प्रवाह इतना विशाल है कि प्रात: पाँच बजे से आरम्भ होकर रात्रि के दस बजे तक कोई ऐसा समय नहीं जब गुरुवाणी का किसी न किसी रूप में प्रवाह न चल रहा हो। पाठ पण्डाल में भी पूरा प्रबन्ध इतना नियमित है कि इतनी भारी संख्या में हो रहे पाठों में से किसी एक का भी पाठ आगे पीछे होने का अवसर नहीं। पहली बात तो मुख्य पाठ, जिनसे माईक द्वारा निरन्तर पाठ उच्चारित होना है, उन माईक पर बड़े योग्य, बुद्धिमान और शुद्ध पाठ उच्चारण करने वाले पाठी सिंहों की ड्यूटी लगाई गई है। दूसरी बात प्रबन्धकों की तरफ से आरम्भ से भोग समय तक की सारी समय-सारणी बनाकर मुख्य पाठ के इंचार्ज को दे दी गई है कि कितने बजे मध्य की अरदास होनी है और कितने बजे भोग साहिब के श्लोक शुरु होंगे, किस पाठी ने कितने अंक (पृष्ठ) करने हैं और ड्यूटी पूरी होने पर किस नम्बर अंक से पाठ आगे देना है। इसीलिए तीनों मुख्य पाठी ड्यूटी पर बैठने से पहले चार्ट देखकर बैठते हैं कि ड्यूटी दौरान कितना पाठ करना है। तीसरी बात, दो सौ

इक्यावन पाठ समूह अनुसार बाँटकर दिए गए हैं। प्रत्येक ग्रुप के एक-एक या दो-दो इंचार्ज हैं जिनकी ज़िम्मेवारी है, अपने समूह के पाठियों को निश्चित समय पर उठाना, दूसरे को बिठाना और जितने पाठों की सेवा प्राप्त हुई है उनकी तरफ पूरा ध्यान रखना ताकि कोई पाठ आगे पीछे न हो जाए। फिर इन सारे इंचार्जों के ऊपर भी एक प्रेमी की ड्यूटी लगाई है जो समय-समय पर सारे प्रबन्ध का निरीक्षण करता रहेगा। इस प्रकार पाठ कार्यक्रम नियमित चलाने के लिए नीचे से ऊपर तक चार तरह का प्रबन्ध किया गया है। समूह अनुसार पाठों की जो बाँट की गई है वह निम्न प्रकार से है—

पाठ न०	संख्या	मुख्य ग्रुप	इंचार्ज का नाम	पाठ का स्थान
2 से 6	5	करनाल ग्रुप 1.	श्री प्यारा लाल जी करनाल	छोटी कुटिया
7 से 30	24	करनाल ग्रुप 2.	आदर्श कुमार जी करनाल	पाठ पंडाल
31 से 54	24	करनाल ग्रुप 3.	स० सुरजीत सिह जी करनाल	पाठ पंडाल
55 से 78	24	करनाल ग्रुप 4.	श्री अशोक चावला जी करनाल	पाठ पंडाल
79 से 108	30	पखाणा ग्रुप	स० तेजवन्त सिंह जी पखाणा	पाठ पंडाल
109 से 125	17	गोराया ग्रुप	स० रजिन्द्र सिंह जी वड्डू गोराया	पाठ पंडाल
126 से 127	3	मेन ग्रुप	भाई अज्ञात सिंह जी ऋषिकेश	पाठ पंडाल
128 से 151	24	खोख ग्रुप	मास्टर बलदेव सिंह जी खोख	पाठ पंडाल
152 से 175	24	लोपे ग्रुप	सरदार भूपिन्द्र सिंह जी लोपे	पाठ पंडाल
176 से 180	5	लोहसिम्बली ग्रुप	भा० जसमेर सिंह लोहसिम्बली	पाठ पंडाल
181 से 185	5	असरपुर ग्रुप	स० बलदेव सिंह जी असरपुर	पाठ पंडाल
186 से 190	5	कुतबनपुर ग्रुप	स० दरबारा सिंह जी कुतबनपुर	पाठ पंडाल
191 से 195	5	दिल्ली ग्रुप	श्री महेश पेसवानी दिल्ली	पाठ पंडाल
196 से 200	5	गु० अतरसर ग्रुप	स० धर्म सिंह दोराहा	पाठ पंडाल
201 से 205	5	ऋषिकेश ग्रुप	स० अपार सिंह जी मलोट	पाठ पंडाल
206 से 208	3	धूरी ग्रुप	स० बदन सिंह जी धूरी	पाठ पंडाल
209 से 210	2	मोहाली ग्रुप	सन्त नारायण सिंह जी मोहाली	पाठ पंडाल
211	1	बनेरां कलां ग्रुप	गि० चेतन सिंह जी बनेरा कलां	पाठ पंडाल
212	1	सिद्धसर अलहोरां ग्रुप	भाई करम सिंह जी खोख	पाठ पंडाल
213	1	नौहरा ग्रुप	स० मेवा सिंह जी नौहरा	पाठ पंडाल
214	1	धनौला ग्रुप	स० सुखदर्शन सिंह जी धनौला	पाठ पंडाल
215	1	पटियाला ग्रुप	स० त्रिलोचन सिंह जी नाभा	पाठ पंडाल
216	1	भौतना ग्रुप	श्री भगवान दास भौतना	पाठ पंडाल

217	1	नाभा ग्रुप	भा० मुख्तयार सिंह जी नाभा	पाठ पंडाल
218	1	चलैला ग्रुप	भा० मघर सिंह जी खोख	पाठ पंडाल
219	1	गु० राड़ा साहिब ग्रुप	स० दरबारा सिंह जी खोख	पाठ पंडाल
220	1	फिरोजपुर ग्रुप	संत ध्यान सिंह जी	पाठ पंडाल
221 से 228	8	करनाल ग्रुप 5	भाई सूरत सिंह प्रेम नगर गुरुद्वारा	पाठ पंडाल
229 से 230	2	करनाल ग्रुप 6	भाई गोला सिंह सदर बाजार, करनाल	पाठ पंडाल
231 से 232	2	निवारसी ग्रुप	भा० हरबंस सिंह निवारसी	पाठ पंडाल
233 से 235	3	राड़ा करनाल ग्रुप	भा० खेम सिंह जी राड़ा	पाठ पंडाल
236 से 238	3	बुढा खेड़ा ग्रुप	स० दिलीप सिंह जी बुढा खेड़ा	पाठ पंडाल
239	1	सुजरा (करनाल) ग्रुप	भा० कमेर सिंह सुजरा	पाठ पंडाल
240 से 241	2	गु० मंजी साहिब करनाल	माता सीता कौर करनाल	पाठ पंडाल
242 से 246	5	करनाल ग्रुप 7	स० महिन्द्र सिंह बिन्द्रा	पाठ पंडाल
247 से 251	5	दौद ग्रुप	गि० दलीप सिंह जी दौद	बड़ी कुटिया

इस प्रकार पाठ साहिब का सारा प्रबन्ध पूर्ण रूप से सहज में और बड़े नियमित ढंग से चल रहा है। गुरु हरिकृष्ण पब्लिक स्कूल में पाठी सिंहों के रहने का प्रबन्ध है, उस स्कूल का मालिक जसबीर सिंह गुलाटी तथा उनकी धर्मपत्नी पाठी सिंहों की कैसे प्रेम से सेवा कर रहे हैं। दो सौ इक्यावन पाठी इकट्ठे ड्यूटी पर जाते हैं। सभी को अपने हाथों से दूध, चाय छकाते हैं और साथ ही बिस्कुट, ब्रेड अथवा कोई खाने की अन्य वस्तु भी बड़े प्रेम से छकाते हैं। इसी प्रकार ड्यूटी से उठकर आए दो सौ इक्यावन पाठियों की सेवा बड़े प्यार से करते हैं। चाय तथा हर तरह के अन्य पदार्थ चाहे पण्डाल के साथ खुले मिल रहे हैं जहाँ हजारों व्यक्ति दिन-रात छक रहे हैं, लेकिन ये स्कूल वाले प्रेमी सेवा का इस महान् कुम्भ से पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहते हैं। इधर गुरु के लंगर की ओर जरा ध्यान दो। कई हजार व्यक्ति हर समय बैठे लंगर छक रहे हैं। लंगर भी कितना स्वादिष्ट बनता है जिसमें दालें, सब्जियों के साथ खीर, मीठे चावल, कड़ाह प्रसाद या कोई अन्य मिष्ठान हर समय बँटता रहता है। इधर देखो बर्तन साफ करने वाले प्रेमी जूठे बर्तनों को पहले साबुन के पानी से जिसके चबच्चे भरे हुए हैं कैसे प्रेम से साफ करके मोटर के चलते पानी से अच्छी तरह धो-धोकर बाहर रखते जा रहे हैं। इधर प्रशादे बनाने वाली माताएँ, जिनकी संख्या डेढ़-दौ सौ के लगभग है, फटाफट प्रशादे बना रही हैं। साथ ही तीन मशीनों से आटा गूँथा जा रहा है। वह थोड़ा पीछे जाकर कोई तीस के लगभग भट्ठियों पर दाल सब्जियों के कड़ाहे रखे हैं। सब पर प्रेमी बड़े-बड़े खुरचने घुमा रहे हैं ताकि दाल सब्जी नीचे न लग जाए। दूसरी ओर कटी हुई सब्जी के ढेर लगे हुए हैं और साथ ही कितनी संगत काटने में लगी हुई है। इसके साथ ही एक ट्रक सब्जी का भरा हुआ खड़ा है। ये थोड़ा सा आगे दस भट्ठियों पर हलवाई लड्डू व जलेबियाँ तैयार कर-करके ट्रालियों में भर रहे हैं, जो कल को खुले बाँटे जाएँगे और भोग के पश्चात् संगत को वापसी में प्रसाद दिया जाएगा। साथ ही एक बहुत बड़ा स्टोर, लोहे की चादरों का बना सूखे राशन से भरा पड़ा है। एक तरफ आटे की सैकड़ों बोरियाँ भरी पड़ी हैं। साथ ही चावलों का ढेर लगा हुआ है, दूसरी तरफ दालें व चीनी की सैकड़ों बोरियाँ पड़ी हुई

हैं, और एक तरफ देसी घी के असंख्य टीन पड़े हैं और साथ ही डालडे के सैकड़ों टीन पड़े हैं और साथ ही कोने में असंख्य नमक के थैले रखे हैं। दाल, सब्जियाँ, खीर, चावल, रोटियाँ आदि पके राशन के कड़ाहे कई व्यक्ति बड़ी हिम्मत से उठा-उठाकर आगे ले जा रहे हैं जहाँ से बाँटने वाले पण्डाल में वितरित कर रहे हैं। यह देखो, कई हजार व्यक्ति पंक्तियों में सजे, बड़े प्रेम से लंगर छक रहे हैं और दायीं तरफ जरा ध्यान से देखो सारी संगत टूटियों से अपने आप चाय लेकर पीछे बैठकर पी रही है। चाय भी कितनी गर्म है, मानो चूल्हे से अभी उतारी है, क्योंकि जहाँ से बनकर पाईप लाइन में चलती है वहाँ से आगे जाकर टूटियों से थोड़ा सा पीछे एक गैस भट्ठी इस प्रकार फिट की गई है जो पाईप लाईन में आ रही है। चाय को स्वयंमेव गर्म कर रही है। वह स्थान जहाँ से चाय बनकर आ रही है वहाँ सैकड़ों ड्रम दूध के पड़े हैं जो संगत उत्साह और उत्साह के साथ अपने-अपने गाँवों से लेकर आ रही है। साथ ही दूध का भरा हुआ टैंकर खड़ा है। जब वह खाली होकर चला जाता है तो दूसरा भरा हुआ यहाँ आ जाता है। यह शायद प्रबन्धकों ने किसी डेरी से सम्बन्ध स्थापित किया हुआ है। वह देखो! थोड़ी-थोड़ी दूरी पर मानव सेवा संघ की तरफ से पानी की रेहड़ियाँ लगी हुई हैं जो चौबीस घण्टे संगत को जल पिलाने की अथक सेवा कर रही हैं। फूलों के हार तथा जहाँ-जहाँ सजावट में ये फूल लगाए जाने हैं और सायं को आरती समय जो पुष्प-वर्षा करनी है यह प्रतिदिन दिल्ली से विशेष टैम्पुओं पर मंगाए जाते हैं। पुराने फूल रोज उतारे जाते हैं और नए लगाए जाते हैं। डिस्पैंसरी कितनी सुन्दर बनी है जहाँ हर प्रकार की प्राथमिक चिकित्सा का प्रबन्ध है। चार-पाँच अधिकारी इस डिस्पैंसरी में दिन-रात ड्यूटी पर रहते हैं। रोगी की संभाल करते हुए यहाँ नहीं देखा जाता कि यह रोगी समागम से सम्बन्धित है अथवा नगर का कोई लंगर खाने आया गरीब। उसका कष्ट ही उसका परिचय पत्र है। यह देखो! सारे समागम की फिल्म बनाने वाले दिन-रात सेवा में लीन हैं और हर दृश्य और सेवा को कैमरे में बन्द कर रहे हैं। बाहर से आई संगत के निवास के लिए स्थान नहीं खोजना पड़ता, बस पूछताछ दफ्तर जो समागम स्थान के शुरु में ही बनाया हुआ है, पहुँचने की आवश्यकता है। वहाँ पर सारे समागम के बारे में कहाँ-कहाँ पर क्या हो रहा है? कौन-सा कार्यक्रम कब है? सब कुछ ज्ञात हो जाता है। साथ ही निवास व्यवस्था वालों का दफ्तर है जो कमरे तक पहुँचाने और बिस्तर का तुरन्त प्रबन्ध कर देते हैं सारा समागम देखते हुए थोड़ी देरी हो गई। उधर कीर्तन पण्डाल में चार बजे से रस युक्त कीर्तन हो रहा है जिसमें गुरुघर के प्रसिद्ध कीर्तन जत्थे गुरुवाणी की अमृतमयी वर्षा कर रहे हैं। अब रात्रि के आठ बज गए हैं, दो घंटे पश्चात् संत समागम शुरु हो रहा है। सारे साधु महात्मा प्रबन्धकों से मिले समयानुसार पारमार्थिक विचारों द्वारा गुरुवाणी की अमृत वर्षा कर रहे हैं। मंच संचालक भाई तरजीत सिंह अपनी तीक्ष्ण बुद्धि, योग्यता और विद्धता द्वारा महापुरुषों के द्वारा किए जा रहे पारमार्थिक संकेतों को सुन्दर रूप देकर रोचक बनाए जा रहे हैं। अब समय भी रात्रि के दस बजे का हो गया है इसीलिए संत समागम समाप्त होकर आरती शुरु हो गई। सारी संगत ने मिलकर आरती द्वारा अपने इष्टदेव श्री गुरुग्रन्थ साहिब जी का मर्यादापूर्वक पूजन किया। अब अरदास उपरान्त आज के दीवान की समाप्ति हो गई है।

12 नवम्बर, 1993

दीपावली के चल रहे इस महान् समागम में आज बारह नवम्बर के दिन जो कार्यक्रम होंगे वे सब मोटे अक्षरों में प्रकाशित करके कल ही स्वागत बोर्ड पर लगा दिए गए थे और रात दीवान की समाप्ति पर मंच संचालक ने घोषणा भी कर दी थी। उसी के अनुसार प्रात: पाँच बजे कीर्तन पण्डाल में श्री आसा जी दी वार का कीर्तन आरम्भ हो गया। बीबी हरमिन्दर कौर करनाल और माता मोहनी बाई मनसुखानी बम्बई वाले मधुर कीर्तन द्वारा यशोगान कर रहे हैं और संगत भी शान्तचित्त

हुई गुरुवाणी का अमृतरस कानों द्वारा पी-पीकर तृप्त हो रही है। इस प्रकार तीन घण्टे से आसा जी दी वार के शब्द कीर्तन द्वारा अमृत वर्षा हो रही है। अब प्रातः के आठ बज चुके हैं इसलिए निश्चित कार्यक्रम अनुसार संत समागम आरम्भ होने लगा है। संत महात्मा गुरुवाणी और शास्त्रों द्वारा अपनी-अपनी अवस्था अनुसार परमेश्वर प्राप्ति, जो मनुष्य शरीर का वास्तविक उद्देश्य है, के साधनों को वर्णन कर रहे हैं। दो घण्टे पारमार्थिक विचारों के पश्चात् यानि प्रातः के दस बजे समागम समाप्ति की अरदास कर दी, ताकि संगत एक घण्टा चाय नाश्ता छक के थोड़ा बहुत घूम फिर कर समागम का अवलोकन कर सके। ठीक ग्यारह बजे इसी पण्डाल में श्री सुखमनी साहिब जी के पाठ आरम्भ होंगे। उधर गुरु महाराज जी के अद्वितीय लंगर में प्रातः से छोले भटूरे, गर्म-गर्म चाय और खीर प्रसाद के अटूट भण्डारे वितरित हो रहे हैं। हजारों की संगत एक बार पंक्ति में बैठकर छक लेती है। ऐसे गुरु नानक देव महाराज जी की अपार कृपा के फलस्वरूप प्रातः से ही रसीले पदार्थों के अटूट प्रवाह जारी हैं। उधर कल जो गुरु चरणों में अरदास करके दो सौ इक्यावन श्री अखण्ड पाठ साहिब प्रारम्भ किए गए थे उनका पाठ अब मध्य में पहुँच गया है। वह देखो! भाई तरजीत सिंह जी मुख्य पाठ के आगे गले में पल्ला डालकर मध्य की अरदास कर रहे हैं। उधर हजारों की संख्या में संगत जुड़ी खड़ी है। अरदास समाप्ति के बाद संगत कड़ाह प्रसाद की देग लेकर फिर कीर्तन पण्डाल में आकर जुड़ गई, क्योंकि ठीक ग्यारह बजे श्री सुखमनी साहिब जी का पाठ शुरु होने वाला है जिसकी सुबह के दीवान की समाप्ति पर घोषणा की गई थी। सब संगत ने मिलकर बड़े प्रेम से धीरे-धीरे डेढ़ घण्टे में श्री सुखमनी साहिब जी के पाठ सम्पूर्ण किए। अब दोपहर के डेढ़ बज चुके हैं इसलिए संगत के लंगर पानी छकने और थोड़ा आराम करने के लिए सायं के चार बजे तक इस पण्डाल में स्टेज बंद रहेगी। सचिव महोदय ने सायं को चार बजे इस पण्डाल में शुरु होने वाले समागम के ब्यौरे की घोषणा की जिसमें भाई चमन लाल आदि कौन-कौन से रागी आज सायं को दीवान में पहुँच रहे हैं और यह भी बताया गया है कि अब परम पूजनीय श्रीमान् १०८ महन्त बाबा रामसिंह जी महाराज सन्त निवास में सुशोभित होकर बाहर से कुछ पत्रकार और दूरदर्शन वालों के प्रश्नों का उत्तर देंगे।

वह देखो! अलौकिक प्रीतम अब अपने नक्षत्र मण्डल सहित संत निवास में सुशोभित हुए और अपने निश्चित समयानुसार समाचार-पत्रों वाले और सरकारी दूरदर्शन केन्द्र वाले आ पहुँचे। पत्रकारों ने अपनी-अपनी बुद्धि अनुसार अब कुछ प्रश्न पूछने शुरु कर दिए। एक पत्रकार ने पूछा, महाराज! इतना बड़ा कार्य रचने के पीछे क्या रहस्य है? हजूर ने उत्तर दिया—

कबीर ना हम कीआ न करहिगे ना करि सकै शरीरु॥
किआ जानउ किछु हरि कीआ भइओ कबीरु कबीरु॥

(श्लोक कबीर, पृष्ठ १३६७)

दूसरे पत्रकार ने प्रश्न पूछा? महाराज! गीता में भगवान् श्रीकृष्ण जी ने कर्म को भी महान् माना है, परन्तु कर्म की पहचान क्या है कि कौन सा अच्छा और कौन सा बुरा है? आपने उत्तर दिया, जिस कार्य के करने से अन्दर से शाबाश मिले, मन में निर्भयता आए और मन, प्रसन्नता अनुभव करे, समझो वह कार्य करने योग्य था और अच्छा था। जिस कार्य के करने से मन, भय और गमी अनुभव करे और समाज भी फटकारे, वह कर्म समझो न करने योग्य और बुरा था। किसी ने प्रार्थना की, महाराज! ये जो दो सौ इक्यावन पाठ साहिब हो रहे हैं, इनकी भेंट क्या है? हुक्म हुआ प्रेम भक्ति का मूल्य नहीं हुआ करता इसीलिए कोई पाँच दे, कोई पच्चास दे, कोई न दे इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं। गुरु नानक के घर में लाख देने वाला

और कुछ न देने वाला समान माने जाते हैं। इस प्रकार पत्रकारों ने अपनी सन्तुष्टि के लिए कई प्रश्न पूछे, जिनके आपने यथार्थ उत्तर देकर पत्रकारों को सन्तुष्ट कर दिया।

इधर अब घड़ी में चार बज चुके हैं इसलिए पण्डाल में कीर्तन शुरू हो गया। संगत भी आज भारी संख्या में पहुँच चुकी है, इसीलिए कीर्तन पण्डाल जो अनुमान के साथ तथा बीस हजार व्यक्तियों के लिए तैयार किया गया था पूर्ण रूपेण खचाखच भरा हुआ है। उधर लंगर में भी हजारों व्यक्ति अभी गुरु के लंगर में प्रसाद पानी छक रहे हैं और इधर चाय के नलों पर जो भी पचास से भी ज्यादा हैं, भारी संख्या में संगत चाय छक रही है। यानि जिधर भी दृष्टि जाती है, जनसमूह का ठाठें मार रहा सागर ही दृष्टिगोचर होता है। उधर कीर्तन पण्डाल में कीर्तन शुरू हो गया है जिसमें स्थानीय रागी जत्थों ने साढ़े पाँच बजे तक मधुर कीर्तन निश्चित किया। निश्चित किए गए समयानुसार अब सन्त महापुरुषों की ओर से संत समागम शुरु हो गया जिसमें सायं के साढ़े सात बजे तक यानि दो घण्टे के लिए महापुरुषों ने अपनी-अपनी अवस्था अनुसार अकाल पुरुष की महिमा का वर्णन किया। अब साढ़े सात बजे दोबारा फिर कीर्तन दरबार शुरु हो गया। कीर्तन दरबार संगत से खचाखच भर गया, क्योंकि संगत को पहले ही ज्ञात है कि आज बड़े-बड़े प्रसिद्ध रागी जत्थे आ रहे हैं। निश्चित समय पर गुरु घर के प्रसिद्ध कीर्तन करने वाले भाई साहिब भाई जसबीर सिंह जी जोशी खन्ने वालों ने रसयुक्त कीर्तन शुरु कर दिया। पण्डाल में अब बैठने के लिए कोई जगह नहीं रह गई थी इसीलिए पण्डाल के बाहर भी संगत काफी मात्रा में इकट्ठी हो गई। पण्डाल के प्रबन्धक सज्जन भी बड़ी सहनशीलता और चातुर्य के साथ नियन्त्रित कर रहे हैं। पण्डाल में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को नमस्कार करके संगत बहुत प्रेम से धीरे-धीरे बाहर जा रही है, क्योंकि पण्डाल में अब और एक व्यक्ति के भी बैठने की गुँजाइश नहीं। पूज्य महन्त महाराज जी भी संत मण्डली सहित चन्द्रमा की तरह मंच पर सुशोभित हैं। भाई जसबीर सिंह जी खन्ने वालों ने प्रेम में मग्न होकर गुरुवाणी के इस पावन शब्द **हरि प्रेम भगत बणि आई संतहु** के साथ अनेक समान पंक्तियाँ लगाकर ऐसा अलौकिक कीर्तन और व्याख्या की कि श्रोताओं के हृदय गुरुवाणी रस में मुग्ध हो गए। अब जैसे-जैसे रात्रि के नौ बज रहे हैं, वैसे ही संगत की रुचि कीर्तन की तरफ और तीव्र होती जा रही है, क्योंकि संगत को ज्ञात है कि ठीक नौ बजे भाई चमन लाल जी दिल्ली वालों का कीर्तन समय है। सचिव साहिब की घोषणा करने पर कि अब भाई चमन लाल जी दिल्ली वाले हरि यश शुरु करने लगे हैं तो पण्डाल के बाहर दूर-दूर तक संगत एकत्र हो गई। भाई साहिब ने गुरु घर में दीपावली के महत्त्व का वर्णन करते हुए छठे पातशाह श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी के ग्वालियर के किले में से श्री अमृतसर आने के इतिहास को गुरुवाणी की समान पंक्तियों द्वारा कीर्तन व्याख्या करके बहुत रोचकता से एक घण्टा गुरु का यशोगान किया। संगत भी पण्डाल से बाहर दूर-दूर तक बैठी एक रस सुन रही है। ध्यान से देखने पर ऐसे दिखाई दे रहा है कि जितनी संगत पण्डाल में बैठी है उतनी ही बाहर बैठी है। अब रात्रि के कोई साढ़े दस बजे का समय हो चुका है इसलिए महापुरुषों की मर्यादा अनुसार आरती शुरु हो गई। सारी संगत ने मिलकर अपने इष्टदेव का पुष्पों की वर्षा द्वारा भावपूर्वक पूजन आदर किया। अब अरदास पश्चात् आज के समागम की सम्पूर्ण समाप्ति हो गई। साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के पावन स्वरूप, संगत निवास स्थान की तरफ लेकर चली गई। इधर पूज्य महाराज जी अपनी सन्त मण्डली और भाई चमन लाल जी को समागम के दर्शन कराने के लिए पाठ पण्डाल की तरफ ले कर चल पड़े। संगत आज इतनी पहुँची है कि पुरे समागम मैदान में यानि एक

किलोमीटर के क्षेत्र में संगत ही संगत दिखाई दे रही है। लाऊड स्पीकर विभाग वाले बार-बार घोषणा कर रहे हैं, यह एक बच्चा है, ऐसी शक्ल और इतनी आयु का है, यह नाम बताता है इसके माता-पिता कहीं सुन रहे हों तो आकर ले जाएँ। यह एक व्यक्ति अपने साथियों को यहाँ पर बैठा प्रतीक्षा कर रहा है इत्यादि। इधर हजूर महाराज, संत मण्डली और भाई चमन लाल जी सहित उस अद्वितीय पाठ पण्डाल में पहुँच गए जिसका मनमोहक सौन्दर्य, आश्चर्यचकित, रसयुक्त शान्ति और गुरुवाणी की अलौकिक सुगंधि से जिसका कण-कण सुगन्धित हुआ मानों बैकुण्ठ को भी मात कर रहा है। बल्कि एक बैकुण्ठ क्या—

कई बैकुंठ नाही लवै लागे॥

(मा: म: ५, पृष्ठ १०७८)

चकित कर देने वाला स्थान है। भाई चमन लाल जी तथा अन्य साधु जन देख-देख विस्मित होते जा रहे हैं। आश्चर्य जनक प्रकाशमयी स्थान से लंगर की तरफ चले गए। लंगर के भी अद्भुत दृश्य थे स्थूल आँखें शायद जीवन में पहली बार देख रही हैं। भाई चमन लाल जी के साथ उनका एक छोटा-सा लड़का है। वह देखो! हजूर उसको बाजुओं में उठाकर लड्डुओं की भरी ट्रालियाँ दिखा रहे हैं, जो दीपावली के शुभ दिन पर कल संगत को वितरित करने हैं। इधर एक आप धन्य हो इतना बड़ा समागम रचा है। आपकी महिमा धन्य है। आप उत्तर दे रहे हैं, माता **'मैं हौं परम पुरख को दासा॥ देखन आइओ जगत तमासा॥'** अब रात के बारह बजे के करीब समय हो गया है इसलिए आज के समागम की समाप्ति हो गई।

13 नवम्बर, 1993, दीपावली का दिन

आज के दिन के लिए निश्चित किए समयानुसार प्रातः पाँच बजे, कीर्तन पण्डाल में 'श्री आसा जी दी वार' का कीर्तन आरम्भ हो गया। बीबी हरमिन्दर कौर करनाल, माता मोहिनी मनसुखानी बम्बई तथा अन्य संगत ने मिलकर सात बजे तक ईश्वरीय वाणी का मधुर कीर्तन किया। कीर्तन की समाप्ति पर सचिव ने घोषणा की कि सारी संगत के प्रति एक आवश्यक प्रार्थना है जो कि सारे सज्जन ध्यान से सुनें। निवेदन यह है कि अब नौ बजे तक संत समागम होगा और सम्पूर्ण समाप्ति के पश्चात् श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के दो सौ इक्यावन पावन स्वरूप जिन पर इस समय श्री अखण्ड पाठ साहिब हो रहे हैं इसी प्रकार ही सजे सजाए यानि पीढ़े, चँवर, रुमाले, गद्दे और चाँदी के झब्बे सहित संगत को बिना किसी भेंट के प्रदान किए जाएँगे। जो संगत हजूर के पावन स्वरूप अपने घर अथवा गुरुद्वारे में प्रकाश करने के लिए प्राप्त करना चाहती है वे अपने-अपने नाम लिखवा दें और भोग की समाप्ति तक अपनी गाड़ी आदि का प्रबन्ध कर लें ताकि गुरुओं के गुरु के पावन स्वरूप बड़े आदर से अपने-अपने स्थानों पर पहुँच जाएँ। अब समयानुसार सन्त समागम आरम्भ हो गया जिसमें दो घण्टे महात्माजनों ने पारमार्थिक विचारों द्वारा जीवन के सफलता के तौर तरीकों के बारे में ज्ञान दिया। अब साढ़े नौ बजे का समय हो गया है इसीलिए परसों से चल रहे, दो सौ इक्यावन श्री अखण्ड पाठ साहिब और सैंकड़े की संख्या में सहज पाठों के भोग शुरु होने वाले हैं। संगत भी कीर्तन पण्डाल, समागम के इधर-उधर से और शहर के काफी संख्या में भोग के समय हाज़री

भरने पाठ पण्डाल की तरफ आ रही है। अब नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर जी की पवित्र रसना से उच्चारण किए भोग साहिब के श्लोक शुरु हो गए। भोग समय नमस्कार करने के लिए प्रबन्धकों की तरफ से आस-पास रस्सियाँ बाँधकर दो पंक्तियाँ बनाई गई हैं। एक-एक पंक्ति में आठ-आठ, दस-दस व्यक्ति एक ही समय नमस्कार कर सकते हैं। इस प्रकार पन्द्रह से बीस व्यक्ति हर समय नमस्कार कर रहे हैं। दोनों तरफ के पण्डाल थोड़े समय में ही भोग समय हाज़िर हो रही संगत से लबालब भर गए। प्रबन्धक नमस्कार करने वाली संगत को बड़े प्रेम से पीछे जाने का संकेत कर रहे हैं ताकि धक्के या भीड़ एकत्र होने का बचाव होता रहे, लेकिन नमस्कार करने वाली संगत की भीड़ पीछे इतनी ज्यादा खड़ी नज़र आ रही है मानों इनको कई घण्टे लगेंगे, नमस्कार स्थान तक पहुँचने के लिए। भोग का पाठ सम्पूर्ण होने के समीप है, लेकिन नमस्कार करने वालों की भीड़ दूर तक जमा हो गई। प्रबन्धक बड़ी सूझबूझ, कुशलता और प्रेम से सम्भाल कर रहे हैं। अब आरती शुरु हुई समझकर संगत अब आरती पूजन के लिए खड़ी हो गई, लेकिन नमस्कार करने वालों का तांता उसी तरह जारी है। आरती सम्पूर्ण होने पर अब अरदास आरम्भ हो गई। अरदास यद्यपि बहुत लम्बी है, क्योंकि दो सौ इक्यावन श्री अखण्ड पाठ साहिब और साथ में सैंकड़ों सहज पाठ के भोग डाले जा रहे हैं और कई सहज पाठ और शुरु करने हैं। इसलिए कई सौ नाम उच्चारण करने हैं, परन्तु अरदास करने वाला सिंह अपनी तीक्षण और सुयोग्य बुद्धि द्वारा मशीन की तरह नाम उच्चारण करता जा रहा है। अरदास उपरान्त सारे पाठी सिंहों ने अपने-अपने हुक्मनामे लिए, लेकिन मुख्य पाठ से श्रीमान् १०८ महंत बाबा राम सिंह महाराज जी ने अपनी पवित्र रसना से दरगाही हुक्मनामा उच्चारण किया। सारे मुख्य वाक्य लिखने के लिए पर्चियाँ छपाकर भोग डालने वाले पाठी सिंहों को पैंसिल सहित दे दी गई हैं। छपी पर्चियों पर पन्ना नम्बर, पाठ नम्बर, महला और शब्द की पहली पंक्ति लिखने के लिए खाने छपे हुए हैं। उन्हीं के अनुसार पाठी सिंहों ने विवरण सहित खाने भर दिए तथा जिन-जिन प्रेमियों के पाठ थे उनको दे दी गई। उधर देखो! भोग साहिब की चाहे सम्पूर्ण समाप्ति हो गई है और श्री कड़ाह प्रसाद की देग वितरित होनी आरम्भ हो गई है, लेकिन नमस्कार करने वालों का तांता अभी भी उसी तरह जारी है, जैसे सुबह से चल रहा है, रंचमात्र भी कम नहीं हुआ। नमस्कार की प्रतीक्षा में खड़ी संगत की तरफ दृष्टि डालने पर ऐसा प्रतीत होता है कि यह कार्य घण्टों भर ऐसा ही चलता रहेगा। उधर लंगर में लड्डू, जलेबी, सब्जी और प्रसादे आदि पदार्थ प्रातः से निरन्तर चल रहे हैं, जिसमें हज़ारों की संगत पंक्तियों में बैठकर लंगर छक के तृप्त हो रही है। आज के इस चल रहे प्रातः के लंगर की सारी सेवा दिल्ली के एक सिंधी प्रेमी श्री महेश पेशवानी की तरफ से हो रही है।

उधर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पावन स्वरूप अपने-अपने घरों में ले जाने के लिए इलाके अनुसार संगत ने इकट्ठे होकर ट्रकों, कारों और गाड़ियों का प्रबन्ध कर लिया। पंजाब की संगत ने भी एक ट्रक को सफेद कपड़ा लगा कर बड़े सुन्दर ढंग से सज़ा लिया। इस प्रकार थोड़े समय में ही श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के सारे स्वरूप संगत बड़े आदर सहित अपने-अपने घर ले गई। नियत समयानुसार यह सारा समागम चाहे कल प्रातः समाप्त होना था, लेकिन संगत आज सायं को दीपावली अपने-अपने घरों में मनाना चाहती है, इसीलिए संगत की भावना को देखते हुए महापुरुष प्रसाद और आशीर्वाद देने के लिए अपने कमरे के बरामदे के आगे सुशोभित हो गए। प्रसाद प्राप्त करने के लिए संगत की बहुत बड़ी पंक्ति लग गई। टी०वी०, कैमरे वालों ने अपने कैमरे फिट कर लिए, जिसमें प्रसाद प्राप्त कर रहे एक-एक व्यक्ति की फिल्म तैयार होती जा रही है। प्रसाद के साथ-साथ महापुरुष एक-एक पोथी 'सहज-कथा' की बख्शिश कर रहे हैं। इस प्रकार प्रसाद प्राप्त करके संगत

1993 की दीपावली के महान् समागम समय नगर कीर्तन के दृश्य

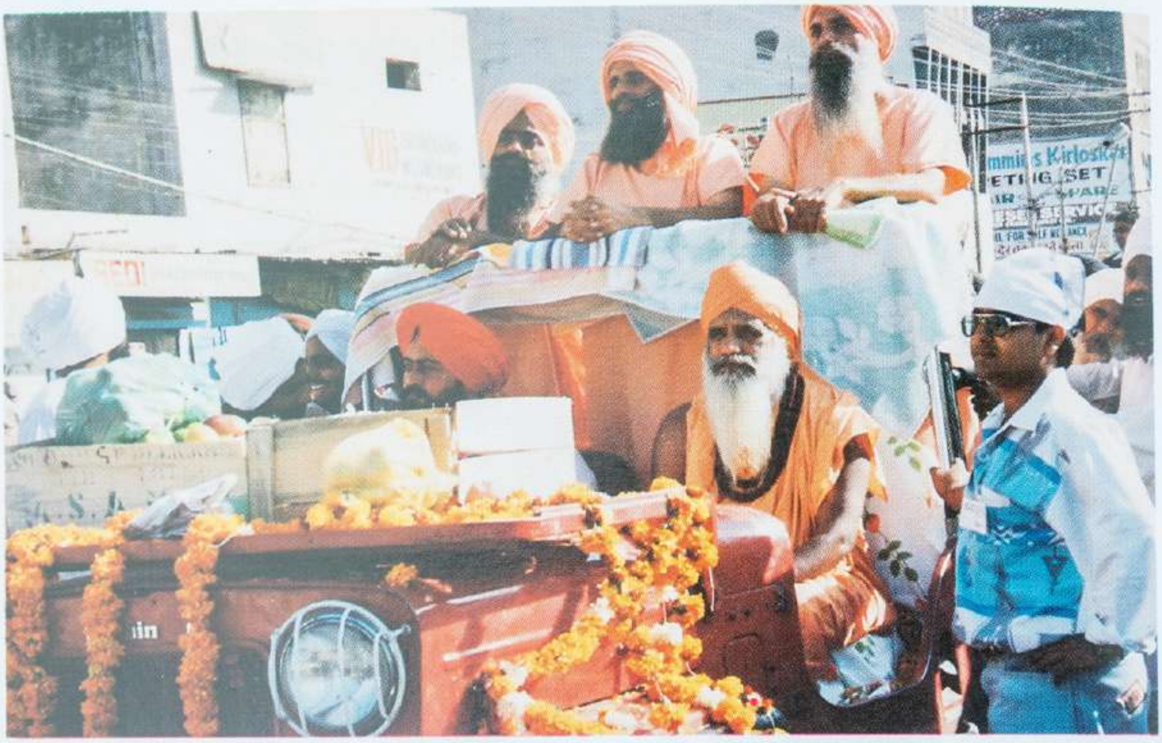

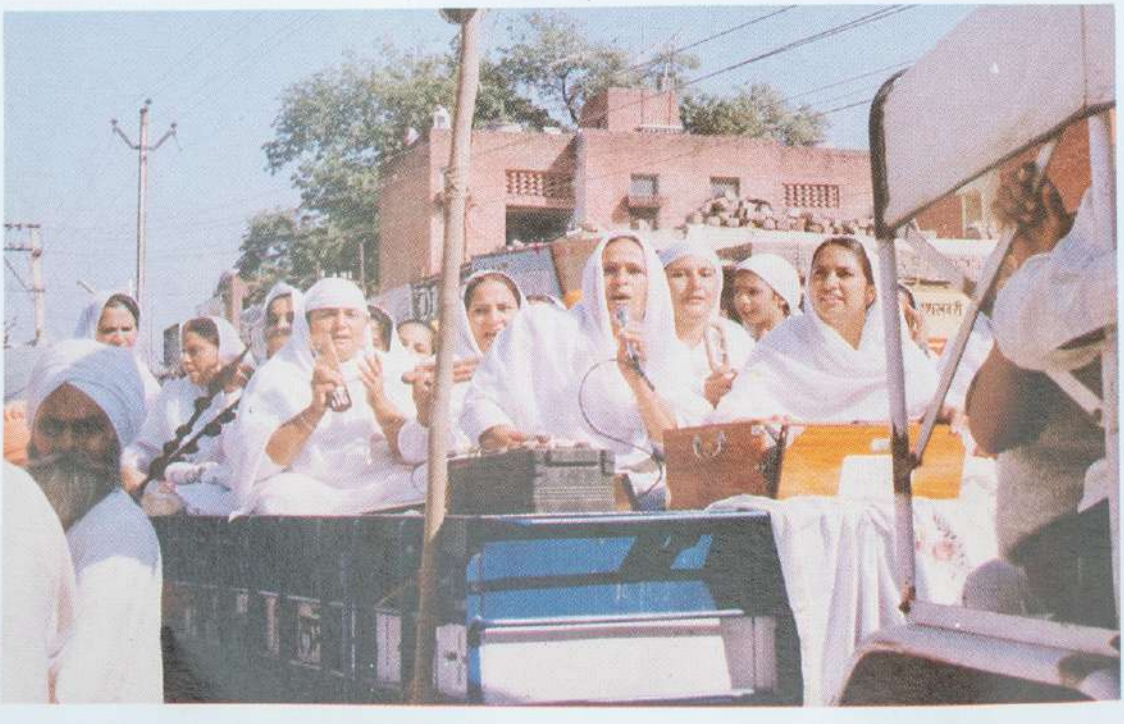

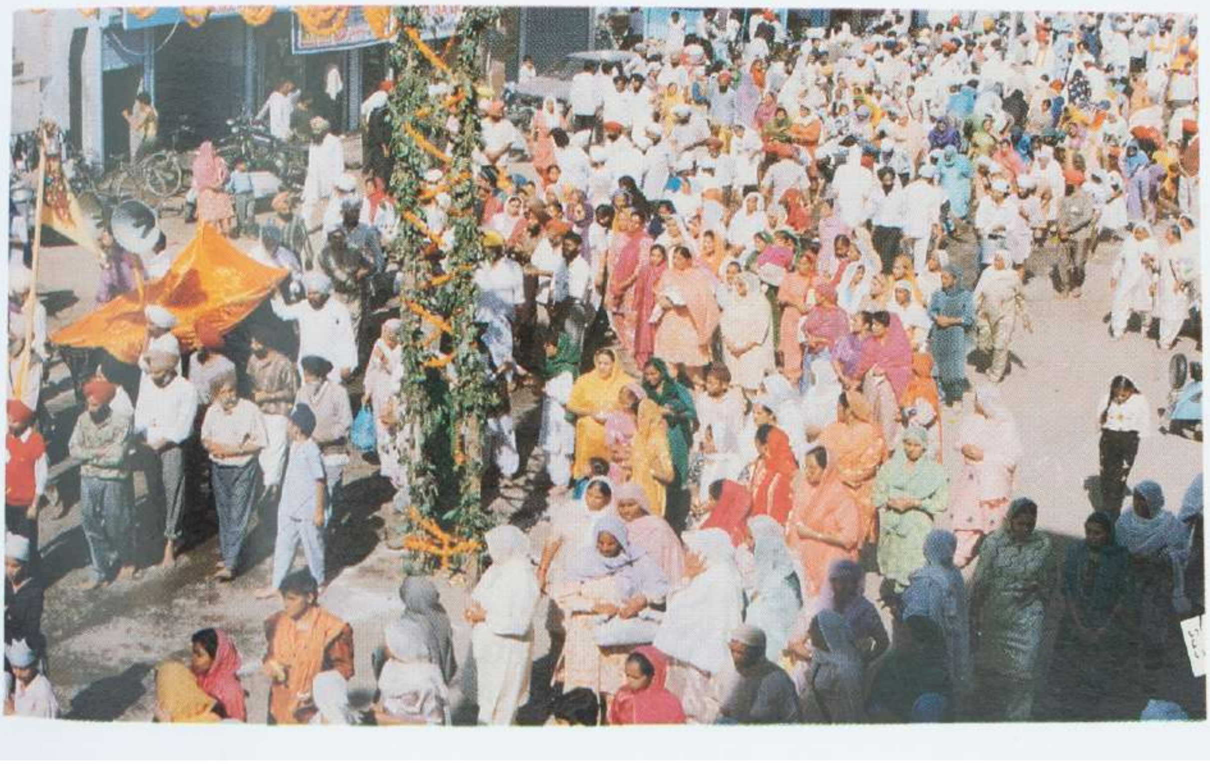

YASH AIRCON

1993 के महान दीपावली समागम समय श्रीमान् महंत राम सिंह जी महाराज 251 श्री अखण्ड पाठ साहिब जी की आरंभता करते हुए

पाठ पण्डाल (251 श्री अंखण्ड पाठ साहिब)

दीपावली के महान् समागम समय गुरू का लंगर ग्रहण करती संगत

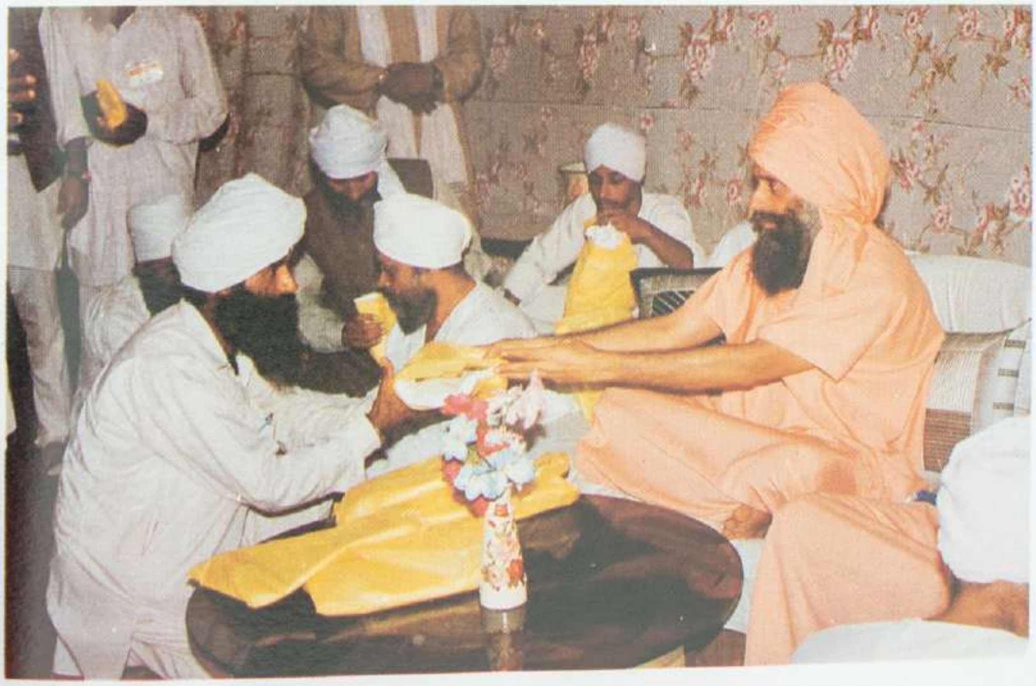

दीपावली के महान समागम समय पूज्य महंत राम सिंह जी महाराज पाठी सिंघों को सिरोपाओ बखशिश करते हुए

1993 के दीपावली के महान् समागम समय महंत राम सिंह जी महाराज संत हरबंस सिंह जी कार सेवा वालों के साथ

दीपावली के महान् समागम समय कीर्तन पण्डाल

घर जा रही है। जिन्होंने आज रैन सबाई कीर्तन का आनन्द लेना है और दीपावली यहीं मनानी है, वे कीर्तन पण्डाल में जाकर कीर्तन श्रवण कर रहे हैं। अब सायं के चार बज चुके हैं इसलिए निश्चित कार्यक्रम अनुसार इस पाठ पण्डाल में श्री सुखमनी साहिब जी के पाठ शुरु हो गए, जो कि साढ़े पाँच बजे सम्पूर्ण होकर, फिर कीर्तन आरम्भ हो गया। आज ईश्वरीय वाणी का रैन सबाई कीर्तन होना है इसीलिए स्थान-स्थान पर टेलीविज़न फिट किए जा रहे हैं ताकि संगत को दूर मंच की तरफ न देखना पड़े। जैसे रागी जत्था दूर मंच पर कीर्त्तन कर रहा है उसके पास ही टी०वी० पर दर्शन होंगे अब सायं के सात बज चुके हैं और रैन सबाई कीर्त्तन भी आरम्भ हो गया। इस कीर्त्तन दरबार में पूरी रात्रि कीर्त्तन का प्रवाह चलाने के लिए कई रागी जत्थे उपस्थित हैं। अपने-अपने समयानुसार रागी जत्थे गुरुवाणी की अमृत वर्षा कर रहे हैं। अब रात के 10 बजे का समय हो चुका है। वह देखो! अलौकिक प्रीतम कैसे दीपावली मनाने की शुरुआत कर रहे हैं वह देखो, हाथ में फुलझड़ी समाप्त होते ही एक रॉकेट आकाश की तरफ उड़ा दिया। अब और संगत ने भी आतिशबाज़ी चलानी शुरु कर दी। पटाखों से आकाश गूंज उठा। इस प्रकार काफी समय दीपावली उत्सव मनाकर कीर्त्तन में आकर सुशोभित हो गए। रागी जत्थे अपने मिले समयानुसार गुरुवाणी की अमृतमयी वर्षा कर रहे हैं। समय भी अब प्रात: 3 बजे का हो चुका है, इसलिए श्री आसा जी दी वार का कीर्तन शुरु हो गया है। श्रोता उसी प्रकार रात के हरि यश और हरि कीर्तन द्वारा आनन्द ले रहे हैं। किसी को भी मंच की तरफ दूर नहीं देखना पड़ता, क्योंकि टी०वी० सैट जगह-जगह फिट किए हुए हैं। संगत चाहे काफी है, लेकिन उतनी नहीं जितनी प्रबन्धकों को आशा थी, क्योंकि घरों में दीपावली मनाने के विचार से ज्यादा संगत भोग के बाद महापुरुष से प्रसाद लेकर वापिस चली गई। इसलिए कल की तुलना में तो चाहे संगत कम है फिर भी हज़ारों की संख्या में अब भी है। अब सुबह के पाँच बज गए हैं इसलिए आसा जी दी वार का कीर्तन सम्पूर्ण होकर एक वर्ष से शुरु किए दीपावली समागम की आज 14 नवम्बर सन् 1993 ई० को प्रात: के ठीक 5 बजे निर्विघ्नता सहित सम्पूर्णता की अरदास और गुरु नानक देव महाराज जी की कोटि-कोटि कृतज्ञता ज्ञापित की गई।

दीपावली के इस महान् समागम में भाग्यवान पुरुषों के द्वारा की गई सेवा का विवरण

1.	सारे समागम को क्रम देने के लिए मानचित्र बनाने की सेवा	एम.के. वाटल, करनाल।
2.	सारे पण्डाल और शामियाने की सेवा।	हरजीत सिंह सचदेवा और सतपाल सिंह गुलाटी करनाल।
3.	पाठ पण्डाल की तैयारी की सेवा।	सतवन्त सिंह सचदेवा करनाल और गजिन्दर सिंह वड्डू गोराया।
4.	पाठ पण्डाल की बिछावन की सेवा।	रछपाल सिंह जी गुलाटी, करनाल।
5.	पाठ पण्डाल की सजावट की सेवा।	बलविन्द्र सिंह जी वैम्पी गोराया, चरनजीत सिंह ऋषिकेश और गुरमीत सिंह खोख।
6.	पाठ पण्डाल के लिए बैट्रियों और घड़ियों की सेवा।	हंस राज जी छाबड़ा, करनाल।

7.	पाठ सिंहों की निवास की सेवा।	गुरु हरिकृष्ण पब्लिक स्कूल, करनाल।
8.	पाठ पण्डाल में आन्तरिक सुरक्षा की सेवा।	मेवा सिंह नौहरा, अजमेर सिंह टिब्बी तथा मनजीत सिंह टिब्बी, पंजाब।
9.	अरदास और मंच सचिव की सेवा।	जत्थेदार नछत्तर सिंह तथा कई अन्य प्रेमी।
10.	पाठ पण्डाल में कड़ाह प्रसाद की सेवा।	भाई तरजीत सिंह जी नरुला, करनाल।
11.	कीर्तन पण्डाल की सेवा।	चरनजीत सिंह ऋषिकेश, गुरमीत सिंह खोख, कुलदीप सिंह दीपा गोराया।
12.	नगर कीर्तन की तैयारी की सेवा।	कँवरजीत सिंह जी भसीन, करनाल।
13.	बाहर से आई संगत के निवास की सेवा।	रछपाल सिंह गुलाटी करनाल, राकेश खन्ना और जसबीर बब्बर, करनाल।
14.	बाहर से आए सन्त महापुरुषों के निवास तथा हर प्रकार की सेवा।	बनारसी दास बाम्बा, कर्म चन्द गाबा, शशीपाल मेहता, डा. हरबंस लाल बावा, प्यारा लाल और जरनैल सिंह आदि करनाल।
15.	सन्त निवास की सेवा।	सुरेश कुमार डावर, करनाल।
16.	वीडियो फिल्म की सेवा।	राजेश चावला, कैथल।
17.	सरकारी दफ्तरों से स्वीकृति लेने की सेवा।	त्रिलोचन सिंह, हरजीत सिंह सचदेवा और जय प्रकाश गुप्ता एम.एल.ए. आदि करनाल।
18.	सामान ढोने के लिए ट्रकों की सेवा	श्री कर्म चन्द जी गाबा, करनाल।
19.	सारे समागम में सुरक्षा की सेवा।	इंचार्ज कैप्टन निर्मल सिंह कपूरथला और डबरी, जरीफा, कुराली आदि गाँवों की संगत।
20.	पण्डाल के मैदान, छोटी कुटिया पुल और सफाई की सेवा।	स. तरजीत सिंह नरुला और डबरी, जरीफा कुराली इत्यादि गाँवों की संगत।
21.	पूछताछ (रिसेप्शन) की सेवा।	श्री शाम कविता जगेशिया मुम्बई, प्रो. मदन लाल जी गुलाटी करनाल, मा. रजिन्दर सिंह जी गोराया।
22.	अकाऊँट सम्भालने की सेवा।	स. महिन्द्र सिंह खेड़ा और स. जसपाल सिंह विर्क, करनाल।
23.	पार्किंग की सेवा।	संगत गोराया, पंजाब।
24.	जोड़ों की सेवा।	श्री गरीश ग्रोवर, हरजीत सिंह तुली, अनिल ग्रोवर, जगमोहन ग्रोवर और इन्द्रसिंह गाँधी इत्यादि करनाल और इनके सहयोगी।

संस्थाएँ—

1. नौजवान सिक्ख सेवा दल डेरा कार सेवा, करनाल।
2. भा. घनइया श्री सुखमनी साहिब सोसाइटी करनाल।
3. प्रेम नगर, करनाल।
4. सुखमनी साहिब सोसाइटी पानीपत। ये सारे 135 सेवादार हैं।

25.	पानी और सीवरेज की सेवा।	कुलवन्त सिंह (वड्डा) और भगवान सिंह, करनाल।
26.	पानी ढोने वाले टैंकरों की सेवा।	नगर पालिका और हुड्डा की ओर से।
27.	कीर्तन पण्डाल में सुरक्षा सेवा।	श्री केवल छाबड़ा और साथी, करनाल।
28.	सारी पाईप लाईन, चाय वाली टूटियाँ, गैस के चूल्हे की सम्भाल और लैटरिन, बाथरूम की सेवा।	कुलवन्त सिंह (वड्डा) और भगवान सिंह, करनाल।
29.	बिजली जनरेटर की सेवा।	श्री अमरीक चन्द चावला, मुम्बई।
30.	बिजली और साऊँड की सेवा।	सुभाष जी, मुसाफिर जी और सुरिन्द्र सिंह बिजली वाला, करनाल।
31.	भट्ठियों चबच्चे आदि बनाने की सेवा।	मि. अंग्रेज़ सिंह, सतनाम सिंह, गुरनाम सिंह और फकीर सिंह इत्यादि मिस्त्री, राम नगर करनाल।
32.	लंगर का राशन लाने की सेवा।	स. हरचरन सिंह सचदेवा, करनाल।
33.	सब्जी खरीद करके लाने की सेवा।	श्री सुदर्शन कुमार जी और मनदीप जी करनाल।
34.	चबच्चे आदि के लिए ईंटों की सेवा।	श्री खज़ान चन्द जी चावला, करनाल।
35.	गैस सिलेण्डर सप्लाई सेवा।	स. हरप्रीत सिंह नरूला, खुशपाल सचदेवा और विपन उप्पल आदि, करनाल।
36.	दूध सप्लाई और चाय बनाने की सेवा।	कँवल इन्द्र सिंह रम्बा और स. अमरजीत सिंह जी रम्बा और महिन्द्र सिंह बब्बर आदि करनाल।
37.	लंगर इंचार्ज और अन्य प्रकार के लंगर की सेवा।	स. कुलवन्त सिंह (छोटा) करनाल, मॅघर सिंह खोख, राजिन्दर सिंह, अशोक क्षेत्रपाल, दीपा चावला, सुरिन्दर पप्पू, बिट्टू शर्मा, मनीश शर्मा, नरिन्द्र सिंह, गुरविन्दर सिंह टीटा, महावीर सिंह असरपुर, बलविन्दर सिंह, अजयन्त सिंह और राजा सिंह विर्क, जसबीर सिंह माडल टाऊन, नबलू, रतनदीप गुलाटी डेराकार सेवा, बाबा हरबन्स सिंह जी कलंदरी गेट वाले उनके जत्थेदार बाबा सुखा सिंह जी और संगत लोह सिम्बली।

38.	जल सेवा।	जन सेवा दल करनाल, मानव सेवा संघ करनाल, अशोक कुमार हरियाणा डेयरी, करनाल।
39.	सब्जी काटने की सेवा	गाँव-थूहा (पंजाब) से अमरजीत सिंह, बाबू सिंह फकीर सिंह और फुम्मण सिंह इत्यादि संगत।
40.	हलवाई सेवा	इंचार्ज लक्ष्मन जी, रघबीर सिंह जी डबरी, अनूप सिंह डबरी, शोभराज राम नगर, दर्शन सिंह राम नगर, सचदेवा स्वीट्स, स. गुरदीप सिंह और स. गुरदेव सिंह इत्यादि सब निष्काम सेवा।
41.	लंगर वितरित करने की सेवा।	खज़ान सिंह भसीन, जोगा सिंह कुराली, प्रो. आहूजा दयाल सिंह कॉलेज करनाल। मनमोहन सिंह बब्बर, नरिन्द्र पाल शर्मा, टीटू सचदेवा, परमन्द्रि सिंह और गोबिन्द कालड़ा, जसबीर सिंह, परमार्थ सहगल, विक्की चावला, राजू शर्मा, राज कुमार सचदेवा करनाल और एकलव्य भाटिया दिल्ली इत्यादि सज्जन।
42.	आटा गूँथने की सेवा।	कुलवन्त सिंह आई.डी.पी.एल. ऋषिकेश और गुरविन्दर सिंह मुसाफिर, करनाल।
43.	पके राशन की सम्भाल और सप्लाई सेवा।	गुरचरण सिंह, गुरपेल सिंह नम्बरदार, मेहर सिंह लाभ सिंह, गुरदेव सिंह ज्ञानी, जीता और जंगीर भक्त आदि बिशनपुरा लोपे की संगत।
44.	आटा छानने की सेवा।	स. दरबारा सिंह और संगत गाँव लसोई।
45.	बर्तन साफ करने की सेवा।	सतीश कुमार, सुशील कुमार, अर्जुन गेट करनाल और संगत बड़ी कुटिया।
46.	चाय की टूटियाँ और संभाल की सेवा।	बलदेव राज चावला, डॉ. जगदीश चावला, सतपाल चावला, दविन्द्र चावला आदि करनाल।
47.	सैनेटरी की सेवा।	कुमार सैनेटरी रेलवे रोड, गुरु नानक सैनेटरी अनाज मण्डी, अमर सिंह हरबन्स सिंह सैनटरी सब्जी मण्डी, करनाल।
48.	गैस सिलेण्डर, डीज़ल भट्ठियों की मुरम्मत सेवा।	स. भगवान सिंह और इन का बेटा बलविन्द्र सिंह टीटा, करनाल।

49. प्रशादे बनाने की सेवा	
ग्रुप–1	सुबह 4 से 8 बजे तक जिसमें पंजाब की माताएँ, खोख, थूहा असरपुर, चलैला, बिशनपुरा, लोपे, भौड़े, बाबरपुर, कोटली और लोह सिम्बली आदि गाँव।
ग्रुप–2	सुबह 8 से 12 बजे तक : बीबी प्रसिन्नी देवी, जुगिंदर कौर, प्रीतम कौर, सुरजीत कौर, करतार कौर, कपूर कौर, भगवन्त कौर इत्यादि रामनगर करनाल। मनजीत कौर, राज कौर जरीफा, स्वर्ण कौर, कुलवन्त कौर डबरी, वचनों, सीता, राम कौर रामनगर इत्यादि संगत।
ग्रुप–3	दोपहर 12 से 4 बजे तक : माडल टाऊन ग्रुप बीबी बलविन्द्र कौर, महिन्द्र कौर, शरणजीत कौर, सुरिन्द्र कौर, जसपाल कौर सुरजीत कौर बब्बर, सुषमा जी जसप्रीत, रमनीत, इस्प्रीत, मंजू, राज मक्कड़ तथा राज छडाना माता आहूजा की कुटिया से।
ग्रुप–4	शाम 4 से 6 बजे तक : अशोका एस०बी० मिशन स्कूल, बीबी रमेश, बबली मलिक और स्कूल का स्टाफ।
50. हलवाइयों के पास हर प्रकार की ड्यटूी जैसे पकवान तैयार करवाने और पके हुए की संभाल करने आदि की सेवा।	गाँव लोहसिम्बली जिसमें स० बन्ता सिंह, मेवा सिंह जगरुप सिंह, कर्म सिंह जटवाडिया, सरवन सिंह, बाबा चरन सिंह, जागर सिंह, बख्शीश सिंह, जसबीर सिंह शाहपुर, अमरजीत सिंह, लाभ सिंह, बलवीर सिंह मंढोरिया और हाकम सिंह जत्थेदार।
51. मुफ्त डिस्पैंसरी में डॉक्टरी सेवा।	डा० रमेश चन्द्र शर्मा, डा० आर०के० भारद्वाज, डॉ० आर के बांसल, डॉ० जोगेश चन्द्र गुवाड़ी, डॉ० यशोधी मीर चंदानी उपरोक्त स्टॉफ सारा निर्मल आश्रम अस्पताल ऋषिकेश से और सहायक डॉ० सुरिन्द्र कौर नरुला,करनाल, डॉ० सतविन्द्र सिंह और डॉ० इन्द्रजीत कौर, करनाल।
52. इस महान् समागम के लिए स्टेशनरी मैटर और हर प्रकार के विज्ञापन बिल्ले और बैनर्ज छपवाई की सेवा।	कुलदीप सिंह कालड़ा, करनाल।

इस महान् यज्ञ समागम में जिन अन्य संस्थाओं, सोसाइटियों और जत्थेबन्दियों ने सहयोग देकर हिस्सा डाला—

1. मानव सेवा संघ, करनाल
2. गुरु नानक सेवक जत्था, करनाल
3. सनातम धर्म मन्दिर, करनाल
4. जन सेवा दल, करनाल
5. स्त्री सत्संग सभा गुरुद्वारा शीशों वाला करनाल
6. स्त्री सत्संग सभा गुरुद्वारा मंजी साहिब करनाल
7. सुखमनी साहिब सेवा सोसाइटी सदर बाज़ार करनाल
8. गुरुद्वारा सिंह सभा, माडल टाउन करनाल।

इस सभा में पहुँचने वाले मुख्य रागी जत्थे

1. भाई साहिब भाई जसबीर सिंह जी जोशी खन्ने वाले।
2. भाई साहिब भाई चमनलाल जी दिल्ली वाले।
3. भाई साहिब भाई लछमण चेला राम जी सिंधी दिल्ली वाले।
4. भाई साहिब भाई सुनील कुमार जी अरोड़ा ज्वालापुर वाले।
5. भाई साहिब भाई मुख्तियार सिंह जी नाभा वाले।
6. भाई साहिब भाई सन्त राम सिंह जी नानकसर सींगडे वाले।
7. भाई साहिब भाई सुनील कुमार जी ढींगड़ा दिल्ली वाले।
8. भाई साहिब भाई सुरजीत सिंह जी दिल्ली वाले।
9. भाई साहिब भाई नंद सिंह जी दिल्ली वाले।
10. भाई साहिब भाई काका सुप्रीत सिंह जी होशियारपुर वाले।
11. बीबी हरमिन्द्र कौर करनाल।
12. माता मोहनी बाई मनसुखानी मुम्बई।
13. भाई साहिब भाई धर्म सिंह जी दिल्ली वाले।

इस समागम में दर्शन देने वाले प्रसिद्ध सन्त महात्मा

1. निर्मल पंचायती अखाड़ा हरिद्वार के श्री महन्त साहिब श्रीमान सन्त ज्ञानदेव सिंह जी।
2. श्रीमान् सन्त बाबा रामसिंह जी सींगड़े वाले।
3. श्रीमान् सन्त बाबा हरबंस सिंह जी कार सेवा वाले।
4. श्रीमान् सन्त बाबा हरनेक सिंह जी राड़ा साहिब वाले।
5. श्रीमान् महन्त बाबा गुरबचन सिंह जी, डेरा बाबा गाँधा सिंह जी बरनाला वाले।
6. श्रीमान् महन्त बाबा प्यारा सिंह जी, डेरा बाबा गाँधा सिंह जी बरनाला वाले।
7. श्रीमान् संत बाबा मलूक सिंह जी मोनी पाँडवे वाले।
8. श्रीमान् संत बाबा करन सिंह जी विरक्त मण्डली सहित भड़ौजीआं वाले।

9. श्रीमान् सन्त ध्यान सिंह जी शांदे हाशम (फिरोज़पुर) वाले।
10. श्रीमान् महन्त भगत सिंह जी मुरादाबाद वाले।
11. श्रीमान् संत रघुबीर सिंह जी शास्त्री बनारस वाले।
12. श्रीमान् महन्त श्याम सुन्दर सिंह जी मिर्ज़ापुर (बिहार) वाले।
13. श्रीमान् संत मनमोहन सिंह जी डुमुन्डा वाले।
14. श्रीमान् सन्त पूर्ण हरी जी डेरा तपोवन बेलपड़ाउ (नैनीताल) वाले।
15. डेरा अतरसर दोराहा सन्त मण्डली कीर्तन और पाठ सेवा।

इस महान् समागम से संगत की संख्या का अनुमान लगाना कठिन है, क्योंकि बाईपास से छोटी कुटिया जो एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जन समूह, सागर की तरह ही ठाठें मारता एक ही नज़र आता है। लंगर के इंचार्ज आदरणीय संत गुरिन्दर सिंह (छोटू बाबा) जी के अनुसार एक दिन में सौ क्विंटल आटा और चावल पकते थे। दाल की बोरियाँ, नमक के थैले, घी के टीन और सब्जी के ट्रक अलग। भोग वाले अर्थात् तेरह नवम्बर 1993 ई० के दिन भोग के समय बीस टीन देसी घी के कड़ाह प्रसाद की देग संगत में वितरित हुई। चौदह नवम्बर के दिन लड्डू जलेबी के निरंतर भण्डारे वितरित करने के बावजूद भी इतना पका हुआ राशन बच गया कि करनाल शहर के बेअन्त गरीब जरूरतमंद अपने घरों को ले गए। सूखा राशन यानि आटा चावल इत्यादि इतना बच गया कि करनाल शहर के नज़दीक के गुरुद्वारे अथवा जहाँ लंगर चलते हैं कोई ऐसा स्थान नहीं छोड़ा जहाँ राशन की कुछ बोरियाँ न भेजी हों, बल्कि कुछ बड़े-बड़े तो ऐसे भी थे जैसे डेरा कार सेवा और एक-दो अन्य जिनमें चालीस-चालीस, पचास-पचास बोरी भेजी गईं। पण्डाल शामियाने का जो एक पूरा नगर बसाया गया था, को बनाने और उतारकर ले जाने में लगभग एक मास से ज्यादा समय लगा जिसमें सैंकड़ों व्यक्ति काम करते रहे। इस महान् समागम की विशेषता का अनुमान इस बात से लगता है कि इतने बड़े समागम में नब्बे फीसदी पाठी निष्काम सेवक थे। केवल दस फीसदी ही ऐसे थे, जिन्होंने भेंट स्वीकार की। इस अलौकिक समागम में महापुरुषों के चरण सेवक सारी संगत का ही चाहे सीमा से बाहरी योगदान था, लेकिन करनाल निवासी संगत का आर्थिक सेवा में योगदान, मन में उत्साह, उमंग, श्रद्धा, भावना, बाहर से आई संगत को सुख देने की इच्छा और शारीरिक सेवा इतनी थी जिसका कलम द्वारा वर्णन लिखना, मुख द्वारा बोलना और मन बुद्धि द्वारा सोचना बहुत कठिन है। करनाल निवासी संगत में उत्साह चाहे किसी में भी कम नहीं था, लेकिन कुछ सज्जन तेरह तारीख के दिन ऐसे देखे गए जैसे स० तरजीत सिंह नरुला, स० सुरिन्द्र सिंह सचदेवा, स० सतवंत सिंह जी सचदेवा, स० कँवर जीत सिंह जी भसीन, स० कुलवन्त सिंह जी (छोटा) लंगर इंचार्ज और उसके साथी शर्मा आदि, स० कंवल इन्द्र सिंह रम्बा, स० सुरजीत सिंह सूरी, श्री अशोक चावला आदि प्रेमियों के गले बैठे हुए थे। अनिद्रा और बेआरामी के कारण आँखें सूज गई थीं, लेकिन फिर भी उत्साह, उमंग और प्रेमी भीतर से छलककर बाहर आ रहा था। जिन महापुरुषों—परम पूज्य महन्त बाबा राम सिंह महाराज जी ने ऐसे अलौकिक और दिव्य समागम की रचना अपने एक संकल्प मात्र से ही रच ली उनकी लीला तो है ही शब्दों के प्रयोग से बहुत ऊपर। लेकिन जिन दो महान् हस्तियों आदरणीय संत जोध सिंह जी ने अपनी अति तीक्ष्ण और सुयोग्य बुद्धि द्वारा समागम में काम कर रहे प्रत्येक अनुभाग के सेवादारों का

मार्गदर्शन और नियन्त्रण किया और आदर योग्य सन्त गुरिन्दर सिंह (छोटू बाबा) जी ने अपनी बुद्धिमत्ता और योग्यता से लंगर के इस महान् कार्य को क्रमबद्ध करके इतने सुन्दर ढंग से चलाया जिसमें अनेक प्रकार के पदार्थ ग्रहण करके लाखों व्यक्ति प्रतिदिन तृप्त होते थे, इन दोनों महापुरुषों के दिन-रात के परिश्रम और काम लेने की कुशलता प्रशंसनीय है।

यह महान् समागम जिसकी रचना शायद गुरुवाणी के प्रचार के लिए ही हुई थी, उसका तो परिणाम प्रत्यक्ष ही है। हज़ारों व्यक्ति इस महान् समागम की पाठ सेवा में भाग लेने के लिए शिक्षण लेकर नए पाठी तैयार हो गए। बाकी इस महान् कार्य का भाई-चारे पर क्या प्रभाव पड़ा? इस विषय पर समाचार-पत्र वालों ने प्रभावित होकर बड़े-बड़े लेख लिखे। एक समाचार-पत्र 'निर्लेप पत्रिका' करनाल ने अपने सम्पादकीय लेख में समागम का प्रभाव बताते हुए लिखा है—''दीपावली के शुभ अवसर पर विश्व शान्ति के लिए और ब्रह्मज्ञानी श्रीमान् १०८ सन्त बाबा निक्का सिंह जी, सन्त बाबा भगत सिंह की स्मृति में, महंत राम सिंह निर्मल आश्रम ऋषिकेश की देख-रेख में निर्मल कुटिया करनाल'' पर आठ नवम्बर से चौदह नवम्बर तक दो सौ इक्यावन श्री अखण्ड पाठ साहिब के भोग डाले गए तथा बड़ा भारी सन्त समागम हुआ। इन दो सौ इक्यावन श्री अखण्ड पाठ साहिब के समागम का प्रभाव बहुत महत्त्व रखता है। इन पाठों का समय, एक जैसी बीड़, पलंग, वस्त्र आदि थे, लगभग पन्द्रह सौ से ऊपर अखण्ड पाठी थे जो निष्काम सेवक थे। सारे पाठी सफेद वस्त्रों में थे और एक ही शामियाने में पाठ हो रहा था। किसी की भी एक दूसरे की तरफ पीठ नहीं थी। इतनी बड़ी में श्री अखण्ड पाठ साहिब भारत के इतिहास में पहली बार हुए हैं। पाठ करते समय पाठों का एक जैसा समय था जिसको बड़े नियन्त्रण में रखा गया था। हर पाठी ने बड़ी श्रद्धा और आदर से पाठ करने की ड्यूटी निभाई। दस नवम्बर को बहुत ही शानदार नगर कीर्तन (जलूस) हुआ जिसमें हर वर्ग के लोग थे। गुरु ग्रन्थ साहिब तथा पाँच प्यारों ने इस जलूस का नेतृत्व किया। जलूस के सारे मार्गों पर बड़े सुन्दर स्वागत द्वार लगाए गए थे। नगर कीर्तन के मार्गों पर संगत की तरफ से बेअन्त चाय, फल प्रसाद और लंगर से भरपूर सेवा की गई। गुरु ग्रन्थ साहिब जी की पालकी के आगे संगत अपने हाथों से झाड़ू के साथ सफाई करके सेवा कर रही थी।

इस समागम दौरान 24 घण्टे गुरु का लंगर निरन्तर जारी रहा। लगभग 50,000 की संख्या में संगत प्रतिदिन लंगर छकती थी। दस हज़ार की संख्या में थालियाँ थीं और सेवादारों की संख्या भी बहुत ज्यादा थी। जब भी कोई लंगर लेने के लिए बैठता उसी समय सेवादार उसके आगे थाली रख देते और लंगर पहुँच जाता। सेवादार लंगर देने के लिए कई-कई बार पूछते थे। लंगर लेते समय किसी वर्ग जाति-पाति का कोई भेदभाव न था। लंगर में हर प्रकार की वस्तु मिलती थी जैसे सब्जी, दाल, खीर, मिठाई आदि। लंगर के राशन की पहुँच का कोई अंदाजा नहीं लगाया जा सकता था, क्योंकि संगत की तरफ से गुप्त राशन और माया पहुँच रही थी। दस लाख संगत के लंगर लेने के बाद भी अत्यधिक राशन बच गया।

चाय के लंगर का प्रबन्ध बहुत ही प्रशंसनीय था। चाय का लंगर इतना अधिक था कि इसको नलों द्वारा वितरित किया गया। जितनी बार, जिस समय कोई भी व्यक्ति चाहे चाय पी सकता था। जूतों के रखने का प्रबन्ध भी बहुत शानदार था।

यह समागम किसी एक वर्ग का प्रतीत नहीं होता था जैसे कि आम समागमों के बारे में कहा जाता है। यहाँ तो केवल एक ही बात दिखाई देती है जैसे कि श्री गुरु नानक देव जी महाराज का फरमान है—

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभी बंदे॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥

(प्रभाती, पृष्ठ १३४९)

यह सारी सृष्टि अकाल पुरुष वाहिगुरु की है और भ्रमण करने वाला प्रत्येक प्राणी भगवान् का रूप है। इस समागम से मनुष्य का भ्रातृत्व भाव झलकता था। प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से बढ़-चढ़कर उत्साह से सेवा करने में लगा हुआ था। प्रत्येक की जिह्वा से सतिनाम श्री वाहिगुरु का नाम सुनाई देता था। प्रत्येक सेवादार प्रसन्नता से मधुर वाणी से स्वागत करता था। इस समागम के प्रभाव से आपसी सहयोग होने की बहुत श्रद्धा बढ़ रही है। जो कट्टरपंथी जनता में विष घोलने की कोशिश कर रहे हैं उस कड़वाहट को दूर करने में शक्ति मिलेगी। सभी धर्मों के मानने वाले एक दूसरे के समीप आने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं। जहाँ लोग एक दूसरे की ईर्ष्या घृणा में जल रहे हैं उनमें शान्ति का वातावरण पैदा होगा। हिन्दू और सिक्खों की एकता दिखाई देती थी इसलिए सभी वर्गों में इस समागम की काफी प्रशंसा हो रही है। (नानक सिंह निर्लेप)

इस अलौकिक समागम को चाहे जितने अक्षर दे दिए जाएँ फिर भी थोड़े रह जाएँगे। बस वह तो—

कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवानु॥

(श्लोक कबीर, पृष्ठ १३७०)

पूर्व की यात्रा

दीपावली के महान् समागम की सम्पूर्णता के पश्चात् आम संगत को दी गई तिथियों के अनुसार यात्रा आरम्भ की गई। हरियाणा, पंजाब के गाँवों शहरों में एक महीना धर्म प्रचार करके चौदह दिसम्बर, 1993 को संत जोध सिंह जी को साथ लेकर पूर्व की यात्रा के लिए चल पड़े। गाड़ियों की सेवा श्री उजागर सिंह सूरी ने ली हुई थी, इसलिए दो कारों के साथ सायं को नैनीताल जिले में डेरा तपोवन बैलपड़ाउ पहुँचे। दूसरे दिन पन्द्रह तारीख को पौष की संक्रान्ति के पवित्र दिन पर श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डाले गए। महंत पूर्णहरि जी के प्रेमवश आज की रात भी यहीं ठहरे। सोलह दिसम्बर के दिन महन्त भगत सिंह जी को दी तिथि के अनुसार सायं को मुरादाबाद पहुँच गए। सत्रह तारीख के दिन श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के बाद कीर्तन शुरू हुआ तो परिवार ने प्रार्थना की, महाराज यह देखो! जो कार्ड इस समागम के लिए हमने छपवाए हैं इन पर आप जी का पवित्र नाम दिया है कि भोग और कीर्तन के पश्चात् श्रीमान् १०८ महन्त राम सिंह जी महाराज गुरु शब्द की कथा करेंगे। यह सुनकर काफी पढ़े-लिखे वर्ग के वयोवृद्ध पुरुष भी पहुँचे हैं, आपजी के पवित्र मुख से कथा सुनने के लिए। इसलिए आप कथा करने की कृपा करें ताकि इस आशा से पहुँची सारी संगत लाभ उठाए। आप मुस्करा कर बोले, कार्ड आपने अपनी इच्छा से छपवाएँ हैं—जो चाहो लिख लो, हमें क्या आपत्ति? गुरविन्द्र सिंह फिर प्रार्थना करता जा रहा है, लेकिन आप कोई उत्तर नहीं दे रहे—मुस्कुराते जा रहे हैं। आपकी मधुर मुस्कुराहट से ही इनकार समझकर कीर्तन समाप्ति के बाद अरदास और समागम की समाप्ति कर दी। बाद में गुरु के लंगर निरन्तर वितरित किए गए जिसमें आई संगत और अनेक गरीबों ने प्रसाद ग्रहण किया। इधर सारे परिवार ने महापुरुषों की और साथ भाई संगत की अनथक सेवा की। आज की रात वहीं ठहरे, क्योंकि आगे लखनऊ बनारस को जाने वाली गाड़ी का समय प्रात: 5 बजे का था। प्रात: 5 बजे आपजी,

संत जोध सिंह जी, डॉ० आहलूवालिया, उजागर सिंह जी सूरी तथा एक अन्य सेवादार को साथ लेकर रेल द्वारा लखनऊ को चल पड़े और कारें यहीं से ऋषिकेश को वापिस भेज दीं। लखनऊ स्टेशन पर गाड़ी रात के समय पहुँची। आगे सुभाष चावला जी कारें लेकर पहुँचे हुए थे। कारों में सवार होकर सुभाष जी के घर पहुँच गए। महापुरुषों को दी गई तिथि के अनुसार इस प्रेमी के घर में श्री अखण्ड पाठ साहिब का प्रवाह चल रहा था जिसके दूसरे दिन भोग डाले गए। यहीं पर स० रणबीर सिंह ढिल्लों कुड़क वाले की बहन, बहनोई तथा बच्चे कानपुर से दर्शन करने के लिए आए। लाला भगवान दास चावला का सारा परिवार सुभाष चावला, मदनलाल चावला, डॉ० अविनाश चावला अजय चावला और ओम प्रकाश चावला, आदि भाइयों ने बड़े प्रेम से प्रार्थना करके अपने-अपने घर में चरण डलवाए और बड़ी भावना से सेवा की। इन चावला परिवारों के प्रेम वश दो दिन लखनऊ ठहरकर रेल द्वारा आगे बनारस चल पड़े। संत भरत सिंह जी आगे बनारस स्टेशन पर पहुँचे हुए थे। वहाँ से कार द्वारा अपने आश्रम ''कर्ण घण्टा ज्ञान गुफा'' पहुँच गए। लंगर पानी छकने के बाद रात्रि को विश्राम किया। उसी दिन संत महेश चन्द्र (पण्डित) जी रात की गाड़ी से पहुँच गए। दूसरे दिन काशी शहर के ऐतिहासिक स्थान जैसे गुरुद्वारा साहिब श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी, गुरुद्वारा श्री नानक देव महाराज जी, कबीर जी का स्थान कबीर चौरा, गंगा तट, पुरातन शिव मंदिर, महात्मा बुद्ध का स्थान सारनाथ, निर्मल पंचायती अखाड़ा और गुरु घर का ऐतिहासिक स्थान चेतन मठ के दर्शन किए एवं साधु महात्माओं को मिलकर भण्डारे के लिए निमन्त्रण दिए। सूरी साहिब और संत भरत सिंह जी ने भण्डारे की हर प्रकार से तैयारी कर ली। तीसरे दिन श्रीमान् संत रघुवीर सिंह जी शास्त्री संचालक निर्मल संस्कृत विद्यालय, महन्त इन्द्रजीत सिंह जी चेतन मठ तथा अन्य संत महात्मा आपके स्थान ज्ञान गुफा पधारे। गुरु नानक देव महाराज जी की अपार कृपा द्वारा भण्डारे में अनेक प्रकार के पदार्थों द्वारा आई संगत और साधु महात्माओं की भरपूर सेवा की गई। नववर्ष का समागम अब समीप आ गया था इसीलिए सन्त भरत सिंह जी ने हुक्म अनुसार वापसी की टिकटें पहले ही आरक्षित करवाई हुई थीं। क्योंकि सन्त भरत सिंह ने भी समागम के दर्शन करने के लिए ऋषिकेश आना था और सन्त महेश चन्द्र (पंडित) जी इत्यादि संत मंडली, उजागर सिंह सूरी, डॉ० आहलूवालिया और सेवादार को लेकर तेईस दिसम्बर के दिन पूर्व की यात्रा सम्पूर्ण करके रेल द्वारा वापिस ऋषिकेश को चल पड़े। पच्चीस दिसम्बर को प्रात: ऋषिकेश पहुँचे।

मुम्बई आश्रम का निर्माण

वर्णन 1993 पाँच अक्तूबर का है, जब पूज्य श्रीमान् १०८ महंत बाबा राम सिंह जी महाराज अगस्त-सितम्बर की धर्म प्रचार यात्रा सम्पूर्ण करके ऋषिकेश पधारे। सारी संगत से मिलने के पश्चात् अपनी गद्दी पर सुशोभित हैं तो एक प्रेमी ने आकर चरणों पर नमस्कार की। अलौकिक प्रीतम मुस्कुराते हुए प्रेमी से पूछ रहे हैं, आजकल कितने विद्यार्थी आपके पास पढ़ते हैं?

प्रार्थना की, महाराज इतने हैं! महापुरुष बोले, अब पुण्य तिथियों का समय समीप आ गया है इसलिए पढ़ाई का काम फिर रुकेगा॥ प्रेमी ने प्रार्थना की, महाराज पुण्य तिथियों के बाद फिर करनाल दीपावली का समागम आने वाला है इसलिए फिर भी काम रुकेगा। ईश्वरीय आज्ञा हुई, दीपावली के बाद आपने नहीं रहना। दीपावली के बाद आपने साफ हो जाना है!! अर्थात् स्थान बदल जाना है!! संगत यही और अन्य!!

1994 का नववर्ष का समागम बड़ी धूमधाम से मनाया गया। समागम मनाने आई समस्त संगत महापुरुषों से प्रसन्नता रूपी प्रसाद लेकर घर को लौट गई। आप जी ने भी मुम्बई संगत की प्रार्थना स्वीकार कर जनवरी 1994 के प्रथम सप्ताह मुम्बई जाने का कार्यक्रम बना लिया। ऋषिकेश से दिल्ली ले जाने की और आगे जहाज़ की टिकट आदि की पूरी सेवा अमरीक चन्द चावला जी ने ली हुई थी। इसलिए तीन जनवरी को चावला जी का परिवार अपनी कार द्वारा हज़ूर को दिल्ली ले गया। रात चावला जी की कोठी ठहरकर दिल्ली निवासी संगत को दर्शन दीदार प्रदान किए। दूसरे दिन सायं पाँच बजे ही उड़ान थी, इसलिए पूरा दिन संगत दर्शन, सत्संग करती रही। सायं तक करनाल की संगत भी काफी संख्या में पहुँच गई। इस प्रकार हवाई अड्डे पर दिल्ली करनाल की असंख्य संगत एकत्र हो गई। अब उड़ान का समय भी हो गया। इस प्रकार प्रिय संगत को अपनी दिव्य मुस्कान द्वारा प्रेम का प्रसाद बाँटकर 4.1.94 को पाँच बजे की उड़ान पर सवार हुए दो घण्टे में सायं के सात बजे मुम्बई जाकर उतर गए। आगे हवाई अड्डे पर मुम्बई निवासी काफी संगत पहुँची हुई थी। सभी को अपना जानकर बहुत प्यार से मिले। संगत ने भी अपनी श्रद्धा से फूलों के गुलदस्ते भेंट कर असीम श्रद्धा दिखाई। सब संगत से कुशल क्षेम पूछने के पश्चात् जपुजी साहिब की पाँच पौड़ियों का पाठ करवाया। तत्पश्चात् प्रसाद वितरित कर श्री अमरीक चन्द चावला की कार में सवार होकर उनके निवास स्थान सत बँगला जा विराजमान हुए। प्रात:-सायं संगत सत्संग में जुड़कर मनुष्य जन्म का लाभ उठाने लगी। कई प्रेमी गुरु रामदास महाराज जी का संकेत समझकर—

ब्रहमु बिंदे सो सतिगुरु कहीऐ हरि हरि कथा सुणावै॥
तिसु गुर कउ छादन भोजन पाट पटंबर बहु बिधि सति करि मुखि संचहु तिसु पुंन की फिरि तोटि न आवै॥

(मलार महला ४, पृष्ठ १२६४)

ऐसा परम पुण्य प्राप्त करने के लिए संगत निवेदन कर-करके अपने घरों में लेकर जाती है। आप जी के पवित्र चरण-स्पर्श कर बड़े प्रेम से लंगर पानी आदि की सेवा करके प्रसन्नता प्राप्त करते हैं। ऐसी सिंधी, पंजाबी संगत प्रतिदिन बेअंत लाभ उठा रही है।

'निर्मल आश्रम ऋषिकेश' के संस्थापक पूज्य श्रीमान् १०८ महन्त बाबा बुड्ढा सिंह जी के समय इन सिंधी सेवकों ने बाबा जी से आज्ञा प्राप्त करके हैदराबाद सिंध में निर्मल आश्रम ऋषिकेश की शाखा खोली। उसमें श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रकाश करके प्रात:-सायं संगत ने एकत्रित होकर सत्संग द्वारा मनुष्य जीवन की सफलता का लाभ उठाना आरम्भ किया, लेकिन कुछ समय बाद ही परमेश्वर का अटल आदेश और प्रकृति के परिवर्तनशील स्वभाव अनुसार देश का बँटवारा होने से और दु:खी व्यक्तियों की भाँति सिन्धी प्रेमी जो अपने घर-बार, कारोबार और धार्मिक स्थान सिन्ध में छोड़कर इधर मुम्बई आदि स्थानों पर आकर बस गए। इनके अपने कठोर परिश्रम तथा अकाल पुरुष की कृपा से कुछ समय घरबार, कारोबार दोबारा फिर बन गए। जीवन सिन्ध की तरह ही एक तरफ से फिर सुखी हो गया और सब कुछ ठीक हो गया, लेकिन निर्मल आश्रम की शाखा, जो हैदराबाद में छोड़कर आए थे उसका अभाव अभी भी मन को विचलित करता था। ये सिंधी प्रेमी अकेले-अकेले तो चाहे सारे ही सोचते रहते थे, लेकिन कभी-कभी इकट्ठे होकर विचार करते रहते कि हैदराबाद की तरह

यहाँ भी महापुरुषों का कोई अपना स्थान हो। उस सामूहिक स्थान पर जुड़कर रोज कीर्तन सत्संग का लाभ प्राप्त होता रहे, साथ ही महापुरुषों की तरफ से मुम्बई निवासी संगत को उस बहाने कुछ समय ज्यादा मिल सकता है। इस पवित्र कार्य के लिए कई फ्लैट और कई रिक्त स्थान देखे भी, लेकिन कोई पसन्द न आया था, ऐसे समझो उस पवित्र कार्य के प्रत्यक्ष प्रकट होने का अभी समय संयोग नहीं बना था, लेकिन प्रयत्न फिर भी जारी रखा परन्तु—

कबीर कारनु बपुरा किआ करै जउ रामु न करै सहाइ॥
जिह जिह डाली पगु धरउ सोई मुरि मुरि जाइ॥

(श्लोक कबीर, पृष्ठ १३६९)

ऐसे मुम्बई निवासी संगत के मन में यद्यपि कारण रूप में निर्मल आश्रम ऋषिकेश की शाखा का बीज तो विद्यमान था, लेकिन राम की कृपा के बिना अंकुरित नहीं हो रहा था। अब कुछ ऐसे प्रतीत हो रहा है कि इस बीज के अंकुरित होने के लिए जरूरत अनुसार सीलन देने के लिए राम मुम्बई पहुँचा है और समय भी शायद पुराने पड़े बीज के अंकुरित होने का है।

कई दिनों से आप श्री चावला जी के घर सुशोभित हैं। संगत सारा दिन दर्शन स्पर्श करती है। लंगर गुरु के निरंतर वितरित होते रहते हैं, प्रात:-सायं हरि यश, हरि कीर्तन सत्संग द्वारा काफी संख्या में संगत पारमार्थिक लाभ उठा रही है। मानों बैकुण्ठ जैसा आनन्द बना हुआ है क्योंकि गुरु साहिब जी का हुक्म है—**बैकुंठ नगर जहा संत वासा॥** ऐसे बैकुण्ठ नगर में न कोई संसार की बात होती है, न राजनीति का जिक्र, बस केवल सत्य का विचार, सत्य की प्राप्ति के साधनों का वर्णन, ऐसे दिव्य सत्संग के बारे में ही तो संकेत है—

सतसंगति कैसी जाणीऐ जिथै एको नामु वखाणीऐ॥
एको नामु हुक्मु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाउ जीउ॥

(सिरीरागु महला १, पृष्ठ ७२)

संसार के प्रत्येक जीव को ऐसा जो ईश्वरीय आदेश है—नाम के जाप सिमरन का उससे एक क्षण के लिए भी उपराम नहीं होते। ऐसे १ ओंकार वादी सत्संग में संगत की भरपूर उपस्थिति से स्थान का अभाव चाहे प्रतिदिन अनुभव हो रहा है, लेकिन यह अभाव आज किसी पुरातन बीज को जन्म देने लगा है। चावला जी आदि प्रेमियों ने श्रीकृष्ण मलकानी जो हजूर का पुराना सेवक है और प्रापर्टी डीलर का काम करता है को कहा कि आश्रम के लिए कोई जगह देखो, श्री मलकानी ने संत बँगला वासवानी रोड पर एक जगह बताई, जो देखकर प्रेमियों को पसंद आ गई। कैसी है वह जगह? मुख्य सड़क से थोड़ा पीछे हटकर एक सौ चालीस फ्लैटों की एक बिल्डिंग है, पुष्पाजंलि। उसमें ग्राउँड फलौर पर दो जुड़वें फ्लैट हैं जिनके बीच कोई दीवार नहीं मानों ये दो फ्लैट नहीं परन्तु एक हाल है। इस हाल की रचना मानों परमेश्वर की तरफ से इसी कार्य के लिए हुई है, क्योंकि इस वासवानी रोड पर आठ भवन हैं। आठों में ही एक सौ चालीस अथवा एक सौ पचास फ्लैट हैं। इन आठ भवनों में ही ऐसे जुड़वें दो फ्लैट का बिना दीवार के खुला हाल नहीं। इस बिल्डिंग के तैयार होने पर जब इसका उद्घाटन समारोह हुआ तो वह भी इस हाल में रामायण का पाठ करके किया गया था। इस प्रकार यह जगह संगत को देखते ही पसन्द आ गई और साथ ही दो कमरों का एक रिहायशी फ्लैट जिस में रसोई, बाथरुम अटैच है देख लिया गया, ताकि हजूर स्वयं या आश्रम के किसी सेवादार की रिहायश, इस फ्लैट में हो जाए और लंगर आदि बनाने का प्रबन्ध दरबार हाल से बाहर इधर

चलता रहे। चावला जी आदि प्रेमियों के जगह पसन्द आ जाने पर पूज्य महाराज जी के चरणों में प्रार्थना की, महाराज आश्रम के लिए एक जगह देखी है आप कृपा करके दृष्टि डाल लें। अगर आप को पसन्द हो तो मालिकों से आगे बात करें। हज़ूर ने अपनी अलौकिक दिव्य मुस्कान से, जो शायद धुर से ही साथ लेकर आए थे आज्ञा की, जो हो रहा है वाहवाह। जो होगा वाहवाह। प्रेमियों ने फिर प्रार्थना की, महाराज! हमारी जीव दृष्टि है बहुत छोटी, आप जी की विशाल दृष्टि है अलौकिक! इसलिए कृपया एक बार ज़रूर चलकर देख लें। हज़ूर के चरणों में सत्संग के लिए जितनी संगत जुड़ी हुई थी सब को हुक्म कर दिया, चलो भाई चलें बाबे नानक के आश्रम के लिए मकान देखने। सारी संगत को साथ लेकर उस ठिकाने पहुँच गए। मुम्बई के हिसाब से वह हॉल और चारों तरफ की प्रकृति सब को पसन्द आ गई। हज़ूर ने हुक्म कर दिया, ठीक है, मानों स्वीकृति का संकेत मिल गया। बड़ी सरकार की स्वीकृति मिलने पर श्री अमरीक चन्द जी चावला तथा अन्य संगत ने मिलकर हॉल की तथा फ्लैट की महाराज जी के नाम पर रजिस्ट्री करवा दी।

मुम्बई निवासी संगत जिस स्थान की बड़ी देर से अभाव अनुभव कर रही थी, वे आज पूरी हुई देखकर बहुत प्रसन्नता अनुभव कर रही है। पूज्य महाराज जी ने फोन द्वारा ऋषिकेश, संत जोध सिंह जी और सन्त छोटू बाबा जी से विचार-विमर्श करके उस आश्रम के उद्‌घाटन समारोह के लिए पच्चीस से सत्ताईस फरवरी, 1994 ई० की तिथि निश्चित कर ली। हरि कीर्तन हरि यशगान द्वारा सत्संग का प्रवाह उसी तरीके से हर रोज चल रहा है और साथ-साथ नए बन रहे आश्रम में रंग-रोगन तथा जो भी करना आवश्यक है उसका कार्य बड़ी तेजी से चल रहा है। इधर संत जोध सिंह जी और सन्त छोटू बाबा जी ने उद्‌घाटन समारोह के कार्ड छपवाकर पंजाब, करनाल, दिल्ली और बम्बई आदि स्थानों पर सब संगत को भेज दिए। पूज्य महाराज जी भी बम्बई में एक मास सत्संग का प्रवाह चलाकर वापस ऋषिकेश आ गए। इधर पंजाब, हरियाणा की संगत ने बड़े उत्साह से बम्बई पहुँचने के लिए टिकटें बुक करवा लीं। अब निश्चित समय पर समागम में शामिल होने के लिए तेईस फरवरी शाम तक पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि स्थानों से सैंकड़ों में संगत बम्बई पहुँच गई। आगे संगत को स्टेशन से सात बंगला लेकर जाने के लिए बम्बई की संगत की तरफ से श्री अशोक जोगेशिया की ड्यूटी लगी हुई थी। उस प्रेमी ने बड़े प्रेम से बसों, टैक्सियों द्वारा संगत को सात बँगला पहुँचाया। पूज्य महाराज जी भी संत जोध सिंह जी और संत गुरिन्दर सिंह (छोटू बाबा) जी को साथ लेकर तेईस तारीख की शाम को बम्बई पहुँच गए। आप जी का निवास साथ ही बने श्री किशन वासवानी के आलीशान बँगले में किया गया और बाहर से पहुँची सब संगत के रहने के लिए पुष्पांजलि बिल्डिंग में आवश्यकतानुसार फ्लैट खोले गए। दूसरे दिन चौबीस तारीख को बाहर से आई संगत ने बम्बई के खास-खास स्थान और सागर आदि के दर्शन किए। उधर सेवादारों की तरफ से हाल की सफाई आदि करके पाँच श्री अखण्ड पाठ साहिब प्रारम्भ करने के लिए शाम तक पूरी तैयारी कर ली। इधर पूज्य महाराज जी भी चौबीस तारीख के दिन अपनी साधु मण्डली और एक सेवादार सहित श्रीमती प्रिमला संगतानी की प्रार्थना स्वीकार करके उसके स्वर्गीय पति श्री इन्द्र संगतानी की वार्षिक याद में पाठ साहिब के भोग में सम्मिलित होने के लिए उनके निवास स्थान चम्बूर पहुँचे। सेवकों के कार्य समाप्त करके सायं तक आप जी भी वापिस सात बँगला आ गए। पच्चीस फरवरी 1994 के शुभ दिन से नए आबाद हो रहे आश्रम के उद्‌घाटन समारोह आरम्भ किए गए। इस समय पर मुम्बई निवासी सिंधी, पंजाबी और हरियाणा-पंजाब से पहुँची असंख्य संगत का जमाव था। बिल्डिंग के ग्राऊंड में शामियाना लगाकर गुरु का लंगर निरंतर प्रवाहित कर दिया गया। बिल्डिंग के एक सौ चालीस फ्लैट में रहने वाले प्रत्येक वर्ग

के लोग जैसे सिंधी, पंजाबी, हिन्दू, सिक्ख, मुस्लिम, ईसाई, पारसी तथा शेष जितने भी मत-मतान्तरों के लोग रहते हैं सबको घर जाकर प्रार्थना की गई कि अब तीन दिन आप सब गुरु के लंगर में प्रसाद ग्रहण करो। प्रतिदिन प्रात: हाल में ही बीबी हरमिन्द्र कौर करनाल, माता मोहनी बाई मनसुखानी बम्बई तथा अन्य संगत मिलकर श्री आसा जी दी वार का कीर्तन करतीं और सायं को साथ ही वासवानी बंगले में जहाँ पूज्य महाराज जी ठहरे हुए थे, बाहर पण्डाल लगाकर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रकाश करके उसके समक्ष दीवान सजता। पहले श्री सुखमनी साहिब जी के पाठ होते फिर कीर्तन करके उपरान्त आरती तथा उसके बाद रात के दस बजे समाप्ति होती। इस प्रकार तीन दिन इलाके में शायद पहली बार गुरुवाणी और गुरु के लंगर के निरंतर प्रवाह चलते रहे जिसमें संगत के बिना सैकड़ों गरीब जरूरतमंद भी अनेक प्रकार के पदार्थ छककर तृप्त होते रहे। तीसरे दिन यानि सत्ताईस फरवरी, 1994 के दिन प्रात: पाँच श्री अखंड पाठ साहिब के भोग उपरान्त बँगले के आँगन में सजे पण्डाल के नीचे दीवान सजाए गए। पहले संगत ने मिलकर गुरुवाणी का मधुर कीर्तन किया। बाद में श्री हीरानंद जी सिंधी प्रेमी ने विस्तारपूर्वक बताया कि पूज्य महन्त बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी ने सिंध प्रान्त के हैदराबाद कराची, रोड़ी सखर और शिकारपुर आदि स्थानों पर जाकर श्री गुरु नानक देव जी महाराज जी के घर का असीम प्रचार किया। परिणामस्वरूप लाखों सिंधी प्रेमी गुरु घर के दीवाने हो गए। बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी की कृपा द्वारा हजारों सिंधी परिवारों में पावन गुरुवाणी के पाठ और कीर्तन किए जाते हैं। दादा हीरानंद जी ने बताया कि हैदराबाद सिंध में हमें जहाँ धन, पदार्थ, मकान, सम्पत्ति और कारोबार मजबूरी में छोड़ने पड़े, वहाँ प्राणों से भी प्यारे गुरु-स्थान भी छोड़ने पड़े, समयानुसार हमें घर-बार, धन पदार्थ दोबारा प्राप्त हो गए, लेकिन पूज्य महन्त बाबा बुड्ढा सिंह जी की याद जो निर्मल आश्रम हम हैदराबाद छोड़कर आए थे वह कई बार प्रयत्न करने के बावजूद जो अभी तक प्राप्त नहीं था, लेकिन श्री गुरु नानक देव महाराज जी की कृपा द्वारा आज वह भी प्राप्त हो गया है। गुरु बाबा जी और महापुरुषों की अपार कृपा द्वारा आज हम हैदराबाद का नक्शा इन स्थूल आँखों से प्रत्यक्ष देख रहे हैं। उसके बाद श्री तारा सिंह जी मनसुखानी ने अपनी आँखों देखे बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज जी के कुछ कौतुक बताए। अन्त में सरदार तरजीत सिंह जी नरुला करनाल ने पावन गुरुवाणी से अनेक उदाहरण देकर संत महापुरुषों की महिमा का वर्णन किया। अब समय हो जाने पर सारे समागम की समाप्ति के बाद श्री गुरु नानक देव जी महाराज जी का धन्यवाद और आश्रम की प्रगति के लिए अरदास प्रार्थना की गई। इस प्रकार निर्मल संत निवास बम्बई का उद्घाटन समारोह सम्पूर्ण हुआ। अब बम्बई निवासी संगत ने पूज्य महाराज जी के चरणों में प्रार्थना की कि आप कृपा करके इस आश्रम को सदैव चलाए रखने के लिए यहाँ एक सेवादार छोड़ जाओ ताकि प्रतिदिन श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रकाश हो ताकि संगत प्रात:-सायं सत्संग कीर्तन का लाभ उठाती रहे। संगत की प्रार्थना सुनकर हजूर शान्त हैं। कोई उत्तर नहीं दे रहे। वापसी टिकट अब संगत की कल-यानि अट्ठाईस फरवरी रात की है इसलिए आज सारी संगत ने आराम किया। अट्ठाईस तारीख को प्रात: ही मुम्बई निवासी संगत ने आश्रम खुला रखने के लिए हजूर के चरणों में अपनी प्रार्थना फिर दोहराई, लेकिन आज भी आपने कोई उत्तर नहीं दिया। अब आप जी की उड़ान का समय भी समीप आ गया था इसीलिए प्रात: नौ बजे कुछ संगत दो-तीन गाड़ियों में सवार होकर हवाई अड्डे की ओर चले। आश्रम से हवाई अड्डे के मार्ग में न जाने किसकी प्रार्थना स्वीकार हो गई इसलिए हवाई अड्डे पर पहुँचते ही हजूर ने ऋषिकेश से साथ आए सेवक श्री दयाल

चन्द जी मलिक को आज्ञा दी कि आप यहाँ रहकर आश्रम की संभाल करो। आश्रम में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रकाश प्रतिदिन हो, प्रतिदिन कड़ाह प्रसाद की देग सजे, आई संगत को गुरु घर का उपदेश हो और सायं को प्रतिदिन आरती के बाद सुखासन सेवा करके सम्पूर्ण समाप्ति की जाए। ऐसी आज्ञा देकर आप तो जहाज़ में बैठकर ऋषिकेश चले गए। उधर प्रेमी सेवक हवाई अड्डे से वापिस आश्रम पहुँचे तथा हुक्म अनुसार श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रकाश किया। इस बात के मालूम होते ही मुम्बई निवासी संगत में खुशी की लहर दौड़ गई। अब शाम का समय हो गया, इसलिए मलिक जी को छोड़कर शेष संगत रात को गाड़ी से ऋषिकेश जाने वाली ऋषिकेश को और पंजाब हरियाणा की अपनी ठिकानों की ओर चल पड़ी।

अब आश्रम में चहल-पहल हो गई। प्रातः-सायं कीर्तन करने की सेवा माता शशि मनसुखानी ने संभाल ली और रविवार छुट्टी के दिन संगत काफी संख्या में एकत्रित होनी शुरु हो गई। सुबह सबने मिलकर दो घंटे कीर्तन करना फिर अरदास उपरान्त कड़ाह प्रसाद वितरित करके बाद में सारी संगत को फल आदि अथवा कोई पका हुआ भोजन खीर पूड़ी आदि वितरित किया जाता जो संगत घर से ही बना कर लाती थी। पूज्य महाराज जी ने मलिक जी को एक मास बाद किसी काम के लिए वापिस बुला लिया। उसके स्थान पर 27.3.94 को निर्मल आश्रम ऋषिकेश से एक और प्रेमी को भेज दिया। उस प्रेमी को एक बहुत सूक्ष्म पर मीठी-मीठी आवाज़ कानों में निरन्तर सुनाई दे रही है—

1. दीपावली के बाद आपने नहीं रहना!
2. दीपावली के बाद आपने साफ हो जाना है!!
3. अर्थात् स्थान बदल जाना है!!!
4. संगत यह भी और और भी!!!

बम्बई निवासी सिंधी और पुरानी संगत की यह हार्दिक इच्छा ही थी इस आश्रम का प्रकट होना लेकिन कुछ समय बाद और नई संगत भी आश्रम में आनी शुरू हो गई। प्रातः-सायं प्रतिदिन कीर्तन होता था, लेकिन रविवार के दिन विशेष रूप से संगत काफी संख्या में एकत्रित होनी शुरु हो गई। संगत की अधिक संख्या और उत्साह देखकर रविवार के दिन विशेष रूप से लंगर शुरू कर दिया गया। पहले-पहले तो चार श्रद्धालु माताएँ जैसे बीबी सतबीर कौर, बीबी हेमा टहिलियानी, बीबी दलजीत कौर, बीबी शरनजीत कौर आदि अपने घर से बनाकर लाती थीं और संगत को वितरित कर दिया जाता था। अप्रैल और मई के दो मास तक तो ऐसे किया, बाद में संगत और छकने वाले और गरीब जरूरतमंदों की संख्या बढ़ जाने के कारण जून में बड़े-बड़े गैस चूल्हे और पतीले लेकर आश्रम में ही बनाना शुरू कर दिया। अब सुबह नौ बजे कीर्तन शुरु होकर बारह बजे समाप्ति की अरदास उपरान्त लंगर बाँटना शुरू हो जाता। गुरु का लंगर बिना किसी जाति-पाति के अथवा भेदभाव वितरित होता रहता है जिसमें आश्रम की संगत के अतिरिक्त सैकड़ों गरीब ज़रूरतमंद छक कर अपने प्राणों की आहुति देते हैं। इसमें गुरु के लंगर और रसदायक पदार्थ बनाकर संगत और जरूरतमंदों को खुले छकाए जाते हैं और एक सिंधी लड़की बीबी हर्षा बनीनी प्रत्येक रविवार सारी संगत को लस्सी बनाकर छकाती है। गुरु कृपा द्वारा इस बीबी की यह 'लस्सी' छकाने की सेवा तीन साल से निरन्तर जारी है। लंगर पकाने की सेवा संगत करती है। श्री अमरीक चन्द चावला का एक नौकर तो

चाहे प्रतिदिन आकर लंगर बनाता है, लेकिन रविवार के दिन बीबी हेमा टहिलियानी ने लंगर पकाने के लिए स्थायी रूप से सेवा ली हुई है। सब्जी काटनी, पूरियाँ बनाना और हर प्रकार की सेवा माता कमला ऋषिकेश स्टोर, माता रानी लालवानी, माता रत्ना बेलानी और उसकी बेटी सोनू, बीबी ममता, बीबी बीना, बीबी गीता सेठी और श्री बाबू मीर चन्दानी जी आदि संगत लंगर की उपरोक्त सेवा हर रविवार सुबह आकर के नियम से करती हैं। प्रात:-सायं कीर्तन की सेवा शशि मनसुखानी और रुकमणी मलकानी करती हैं, परन्तु रविवार को बीबी शरनजीत कौर, बीबी दलजीत कौर, बीबी चरनजीत कौर, अंजलि और बीबी सतबीर कौर कीर्तन की सेवा करती हैं, लेकिन कभी-कभी बीबी सतनाम कौर लोहखण्ड वाले, सरदार दलजीत सिंह और मास्टर जी जोगी भी हिस्सा डालते रहते हैं। प्रति शुक्रवार के दिन सायं को चार से पाँच बजे तक श्री सुखमनी साहिब का पाठ संगत मिलकर करती है जो बीबी मनजीत कौर चार बँगला के प्रयत्न से 26 जून, 1994 को शुरू हुआ था और गुरु कृपा द्वारा आज तक निरन्तर चल रहा है। उस दिन श्री सुखमनी साहिब के पाठ समय काफी संगत जुड़ जाती है जिसमें पाठ की सम्पूर्णता के पश्चात् शब्द कीर्तन होता है। बाद में गुरु चरणों में अरदास करके संगत को चाय के साथ कभी ब्रैड-पकौड़े, कभी-कभी अन्य पदार्थ जो संगत प्राय: घर से ही लेकर आती है वितरित किया जाता है। सहज पाठ तो आश्रम में सदैव चलते रहते हैं। कभी-कभी श्री अखण्ड पाठ साहिब जी भी होते रहते हैं, जिस में पाठ की सेवा बीबी शरनजीत कौर, बीबी सतबीर कौर, श्री मुरली लालवानी और उनकी धर्मपत्नी माता रानी लालवानी निष्काम करते हैं। रविवार के दिन गुरु के चल रहे खुले लंगर में बर्तन साफ करने की सेवा बीबी ज्योति गुरु बख्शानी (मूलन्द) बीबी पूनम और राखी लालवानी और उनकी माता रानी लालवानी हर रविवार निरन्तर करते हैं। आश्रम की सेवा सम्भाल के कार्यों में सहायता श्री अमरीक चन्द जी चावला, श्री कृष्ण मलकानी, श्री ठाकुर मनसुखानी, श्री राजू मदनानी, श्री दलीप टहिलियानी, श्री शाम कविता जोगेशियां (मूलन्द) श्री अशोक जोगेशियां (चम्बूर), श्री बाबू मीर चन्दानी और सरूप सिंह जी गुप्ता आदि सज्जन बड़े प्रेम से घर का कार्य जानकर करते रहते हैं। श्रीमती प्रिमला संगतानी (चम्बूर) और श्रीमती जानू अडवानी (खार) ये माताएँ शारीरिक रूप से बीमार और आश्रम से काफी दूर होने के बावजूद भी मन से सदैव आश्रम से जुड़ी रहती हैं, परन्तु शरीर करके भी समय-समय पर आश्रम आती रहती हैं। इसी प्रकार ही माता रुक्मा हीरा, माता कमल छाबड़ियाँ, श्री हीरु शीलही, मलकानी, श्री बाखरु और माता मोहनी बाखरु इत्यादि प्रेमी शारीरिक बुढ़ापा होने के बावजूद भी आश्रम से जुड़े रहते हैं।

पूज्य महाराज जी भी वर्ष में बम्बई का जहाँ पहले एक चक्कर लगाते थे अब आश्रम बनने के पश्चात् संगत के प्रेमवश वर्ष में दो बार जाकर सत् उपदेश का ईश्वरीय कार्य करते हैं जिसका परिणाम यह हुआ कि बहुत से घरों में गुरुवाणी का पाठ शुरु हो गया। स्कूल, कॉलेजों में पढ़ती और दफ्तरों में नौकरी करती युवा लड़कियाँ बारह-बारह जपुजी साहिब के पाठ प्रतिदिन करती हैं और अवकाश के दिन पूरा-पूरा दिन लंगर के जूठे बर्तन साफ करने जिंदगी का नियम बना लिया है। महापुरुषों की अपार कृपा के द्वारा बम्बई जैसे महानगर में जहाँ पश्चिमी सभ्यता का सारे भारत से अधिक प्रभाव है वहाँ गुरुवाणी की लहर ऐसे चला दी, जैसे पानी की एक-एक बूँद से प्यासी मरुस्थल भूमि में से कोई पानी की नहरें बहा दे।

निर्मल आश्रम दीपमाला पगारानी पब्लिक स्कूल, ऋषिकेश

निर्मल आश्रम दीपमाला पगरानी पब्लिक स्कूल का जन्म

पूज्य महाराज जी कुछ मास पहले जब विदेश यात्रा पर गए तो इंग्लैंड में लछमन दास पगरानी परिवार ने सेवा का सबसे ज्यादा लाभ उठाया। ये प्रेमी परिवार महापुरुषों के अलौकिक, कमल पुष्प की भाँति निर्लेप और त्यागी जीवन से इतना प्रभावित हुआ कि कुछ समय पश्चात् ईश्वरीय सुगंधि से आकर्षित होकर ऋषिकेश दर्शन करने के लिए आया। ऋषिकेश निर्मल आश्रम में महापुरुषों की तरफ से चल रहे परोपकार के कार्य और गरीब जरूरतमंदों को भगवान का रूप समझकर हो रही सेवा से इतने प्रभावित हुए कि इन सेवा कार्यों में अपनी ओर से कोई ज्यादा सा योगदान देने के लिए सोचने लगे। एक-दो दिन रुककर, यहां पर तो कोई प्रार्थना किए बिना वापिस चले गए, लेकिन घर जाकर अपने एक सम्बन्धी श्री गुरबख्श बेलानी मुम्बई को फोन पर अपना संकल्प बताया कि पूज्य महाराज जी अगर कोई शिक्षा संस्था स्कूल आदि का निर्माण करना चाहें तो उस की सेवा में हमारा भी पर्याप्त बड़ा योगदान करने का विचार है। आप हमारी यह प्रार्थना महाराज जी के चरणों तक पहुँचाओ। अगर महाराज जी यह प्रार्थना स्वीकार कर लें तो हमें असीम प्रसन्नता होगी। हजूर उन दिनों मुम्बई गए हुए थे तो बेलानी जी ने लछमन दास जी की प्रार्थना-आप के चरणों में रखी। प्रार्थना सुनकर आप शान्त रहे। पवित्र मुख से कुछ न बोले। श्री गुरबख्श बेलानी जी ने दूसरे दिन फिर प्रार्थना की। हजूर ने आज आज्ञा दी, लछमन दास को कहो कि ऋषिकेश फोन करके सन्त जोध सिंह और संत छोटू बाबा जी से विचार कर लें। बेलानी जी के कहने पर श्री लछमन दास जी ने ऋषिकेश फोन पर सारी बात बता दी। दोनों महापुरुषों ने कहा कि महाराज जी मुम्बई गए हुए हैं, उनसे सलाह करके जो विचार होगा, वह आपको बता देंगे। दोनों महापुरुषों ने टेलीफोन द्वारा महाराज जी से सम्पर्क किया। हजूर ने आज्ञा दी, अगर सम्भाल सकते हो तो लछमन दास को फोन पर बता दो और आप जगह वगैरह की खोज कर लो। लछमन दास जी को बता दिया गया तथा ज़मीन की खोज शुरु कर दी। इतने में पूज्य महाराज जी बम्बई यात्रा से वापिस आ गए। ऋषिकेश से आठ किलोमीटर दूर हरिद्वार रोड पर शामपुर की ज़मीन का एक टुकड़ा पसन्द आ गया जो विचार करके छः एकड़ जमीन का यह टुकड़ा स्कूल के लिए खरीद लिया गया। रजिस्टरी वगैरह कागज़ पत्र का सारा कार्य सम्पूर्ण करके 13 अप्रैल, 1994 वैशाखी के शुभ दिवस पर निर्मल आश्रम दीपमाला पगरानी पब्लिक स्कूल की नींव श्री गुरु नानक देव जी महाराज जी के पवित्र चरणों में अरदास उपरान्त पूज्य महन्त महाराज जी ने अपने पवित्र कर कमलों के द्वारा रखी। इस शुभ अवसर पर काफी संगत के अतिरिक्त संत धर्म सिंह जी और महन्त गुरबचन सिंह जी बरनाले वाले उपस्थित थे।

सन्त धर्म सिंह जी

सन्त धर्म सिंह जी का जन्म तहसील खरड़ ज़िला अम्बाला आजकल रोपड़ 'पंजाब' के गाँव लाँडरां में पिता श्री गुज्जर सिंह जी के घर माता पंजाब कौर की कोख से सन् 1902 ई० में शेरगिल गोत्र के जट सिक्ख घराने में हुआ। पारिवारिक परम्परा एवं पेशे के अनुसार आप बचपन से ही पिता जी के साथ कृषि के कार्यों में हाथ बँटाने लगे। पूर्व जन्म के संस्कार और कुछ सन्त सेवी होने के कारण आप जी को यौवन अवस्था में ही एक विरक्त सन्त महात्मा बाबा बसन्त सिंह जी की संगति प्राप्त हो गई। संत बाबा बसन्त सिंह जी विरक्त यद्यपि गाँव घुडाणी, घलोटी ज़िला लुधियाना के थे, लेकिन अन्न-जल या किसी संयोग वश आप जी लाँडरां गाँव में ही रहते थे। इस प्रकार संत बसन्त सिंह जी के लाँडरां निवास दौरान धर्म सिंह

जी ने बहुत प्रेम से इनकी सेवा की। सेवा दौरान ही महापुरुषों ने आप जी को पंजाबी अक्षर और गुरुवाणी का शिक्षण दिया। समय अपनी गति से व्यतीत होता गया, फिर किसी कारणवश धर्म सिंह जी सन् 1945 के अन्त में घर-बार का त्याग करके ऋषिकेश पहुँच गए। यहाँ आकर संत करतार सिंह से दीक्षा प्राप्त की जो कि महंत बुड्ढा सिंह जी के शिष्य ही थे। उनसे आप ने शिष्य भाव ग्रहण किया, बस फिर निर्मल आश्रम की सेवा में लग गए। काफी समय तो गायों की संभाल जैसा चारा डालना, दूध दोहना, दूध बिलोना आदि सेवा सम्भाल के साथ-साथ लंगर की सेवा भी करते रहे। फिर कुछ समय पूज्य विरक्त महाराज निक्का सिंह जी के साथ यात्रा में भ्रमण करते रहे। इस प्रकार शरीर के अन्तिम समय तक किसी न किसी रूप में निर्मल आश्रम की सेवा में संलग्न रहे। फिर अन्तिम समय जब शरीर काफी बुढ़ापे का शिकार हो गया तो निर्मल आश्रम के ही स्थान खोख कुटिया पहुँच गए। अन्न-जल का संयोग और खोख कोटली गाँवों की संगत के प्रेमवश लगभग दो वर्ष का समय यहाँ व्यतीत करके आखिर-'**राणा रउ न को रहै**' के महावाक् अनुसार 1 जून, 1994 ज्येष्ठ वदी आठ को अपना पाँच भौतिक शरीर खोख कुटिया में त्याग गए। महापुरुषों के अनुसार आप के शरीर को खोख कोटली निवासी संगत ऋषिकेश ले आई जिस की अन्तिम यात्रा गंगा की गोद में सुला कर सम्पूर्ण कर दी गई। आप जी की स्मृति में गुरु मर्यादा अनुसार ईश्वरीय वाणी के पाठ साहिब के भोग उपरान्त गुरु के लंगर के खुले भण्डारे वितरित किए गए।

आदर्श विवाह

वर्णन सन् 1994 ई० का है जब आप जी ने कनखल और ऋषिकेश की पुण्य तिथियों की सम्पूर्णता के पश्चात् धर्म प्रचार के लिए यात्रा शुरु की। बरसियों के पश्चात् प्रथम यात्रा प्रति वर्ष खोख कोटली गाँव से ही शुरु होती है, क्योंकि ऋषिकेश वाली पुण्य तिथि से छः दिनों के बाद आश्विन की पूर्णिमा के दिन खोख कोटली गाँव में बाबा बेअन्त सिंह जी की पुण्य तिथि मनाई जाती है, इसीलिए प्रति वर्ष की तरह आप जी नियत दिन को यानि 18-10-1994 को खोख नगर पहुँच गए, क्योंकि पुण्य तिथि की सम्पूर्णता कल उन्नीस तारीख को होनी है। खोख कोटली गाँवों की संगत ने प्रति वर्ष की भाँति इस बार भी बहुत ही प्रेम और श्रद्धा भावना से महापुरुषों की वार्षिक याद मनाई। प्रेमी गाँवों की संगत की तरफ से जहाँ सात श्री अखण्ड पाठ साहिब के भोग डाले गए वहाँ तीनों दिन गुरु के लंगर निरन्तर चलते रहे।

इसी समागम दौरान श्री हरनेक सिंह खोख ने प्रार्थना की महाराज मैं अपने बेटे का विवाह करना चाहता हूँ, कृपया कोई तिथि देने की कृपा करो ताकि आपके पवित्र चरणों की उपस्थिति में ही विवाह का कार्य किया जाए। प्रेमी की प्रार्थना सुनकर महापुरुष शान्त रहे मानों आपकी प्रेम और मधुर शान्ति ही संकेत द्वारा कह रही है कि तुम चिन्ता क्यों करते हो भाई, जिस परमेश्वर ने सृष्टि की रचना की है उसने जीव के कर्म अनुसार संयोग भी पहले ही लिख दिए हैं, जो समय-समय प्रकट होते रहते हैं। पुण्य तिथि समागम की सम्पूर्णता के पश्चात् सरदार करम सिंह सरपंच कोटली ने प्रार्थना की, महाराज! मेरे भाई अमर सिंह के बेटे का विवाह करना है, कृपया आप किसी तिथि की कृपा कर दो। करम सिंह की प्रार्थना सुन कर हजूर कुछ देर शान्त बैठे रहे मानों विवाहों का रिकार्ड देख रहे हैं। अब कुछ समय पश्चात् करम सिंह को आज्ञा दी कि अगर आपके लड़के का विवाह इस कुटिया में अभी कर दें तो तुम्हें और लड़की वालों को कोई एतराज़ तो नहीं? करम सिंह ने प्रार्थना की महाराज! जैसी आप की आज्ञा। अब आप ने आज्ञा दी कि कल हरनेक सिंह भी प्रार्थना कर रहा था अपने लड़के के विवाह के लिए उसे भी बुलाओ। हजूर ने हरनेक सिंह को हुक्म दिया, अगर आपके लड़के का विवाह अभी कर दें तो तुम्हें और

लड़की वालों को कोई एतराज़ तो नहीं? हरनेक सिंह ने प्रार्थना की, महाराज बहुत प्रसन्नता होगी आपके चरणों में विवाह करके। हजूर ने जत्थेदार नछतर सिंह को बुलाकर हुक्म कर दिया कि इन्होंने अपने बच्चों का विवाह करने हैं, कोई और भी करना चाहे तो सब को बता दो। जितने लोग विवाह करना चाहें कल बाईस तारीख को उतने श्री अखण्ड साहिब प्रारम्भ कर लें। चौबीस तारीख के भोग के दिन यहीं विवाह कर लेंगे। आनन्द कारज कराने के लिए किसी रागी जत्थे को कह दो। उस दिन खुला लंगर तैयार कर दो ताकि लड़के लड़कियों की शादी करने वाले परिवार और उनके सम्बन्धी और भी जितनी गुरु की संगत और जरूरतमंद लोग आएं गुरु के लंगर में प्रसाद छक कर गुरु नानक का यश करते जाएँ।

इस बात का पता जब आम संगत को लगा तो एक-एक करके दस विवाह होने निश्चित हो गए। महापुरुषों के अनुसार दूसरे दिन प्रात: कुटिया में सात श्री अखण्ड पाठ साहिब प्रारम्भ हो गए। तीसरे दिन यानि चौबीस अक्तूबर के दिन काफी संगत की हाज़री में भोग डाले गए। उस समय तक विवाह करने वाले सारे परिवार अपने सगे-सम्बन्धियों को लेकर खोख कुटिया पहुँच गए। भाई साहिब भाई मुख्तियार सिंह जी नाभे वालों ने ईश्वरीय वाणी के कीर्तन द्वारा समयानुसार शब्द पढ़ के ''लावां'' के पाठ द्वारा विवाह के कार्य की रस्म सम्पन्न की। जिन-जिन भाग्यवान् जीवों को उस समय महापुरुषों की पवित्र हजूरी और सिद्ध पुरुषों के पावन स्थान पर विवाह करवाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उनका जिक्र कुछ इस प्रकार है—

1.	काका सुखदेव सिंह	बीबी राजिन्दर कौर
2.	काका सुखपाल सिंह	बीबी गुरप्रीत कौर
3.	काका कुलदीप सिंह	बीबी गुरमीत कौर
4.	काका गुरवन्त सिंह	बीबी परमजीत कौर
5.	काका रणधीर सिंह	बीबी परमजीत कौर
6.	काका राजिन्द्र सिंह	बीबी अमरजीत कौर
7.	काका मलकीत सिंह	बीबी करमजीत कौर
8.	काका मक्खन सिंह	बीबी कुलदीप कौर
9.	काका गुरचरण सिंह	बीबी हरविन्द्र कौर
10.	काका गुरप्रीत सिंह	बीबी कुलवन्त कौर

इस प्रकार विवाह की रस्में सम्पूर्ण होने पर गुरु के लंगर के निरन्तर भण्डारे वितरित हुए जिसमें विवाह वाले घराती एवं बाराती और दूर समीप से आई सारी संगत ने बड़े प्रेम से ग्रहण किए। ऐसे परोपकारी महापुरुषों ने बिना कोई पैसा खर्च किए 20 परिवारों के कार्य सिद्ध कर के तथा अन्य कई लोगों को सुखदायक जीवन जीने का ढंग सिखा कर किसी और तप्त भूमि को तारने के लिए चलते सरिता की भाँति आगे को प्रस्थान किया।

करनाल कुटिया दो इकोतरियाँ

करनाल दीपावली के महान् समागम की सफलता के बाद करनाल निवासी संगत के मन में यह संकल्प सदैव बना रहता है कि कब किसी परोपकार के बड़े समागम की रचना हो और हमें सेवा का बड़ा सुअवसर प्राप्त हो। यह सोच सदैव

ही बनी रहती है। वर्णन 1994 के जुलाई मास का है जब सचखण्ड वासी परम पूज्य श्रीमान् १०८ सन्त बाबा निक्का सिंह विरक्त महाराज जी की वार्षिक याद, उनके अभेद स्वरूप महन्त बाबा राम सिंह जी की परम पवित्र देखरेख में प्रत्येक वर्ष की भाँति निर्मल कुटिया मनाई जा रही है। बरसी समागम के दौरान ही स. तरजीत सिंह जी नरुला, सरदार सुरिन्दर सिंह जी सचदेवा, सरदार कंवरजीत सिंह जी भसीन इत्यादि प्रबन्धक सज्जनों ने पूज्य महन्त राम सिंह महाराज जी के चरणों में प्रार्थना की, महाराज! आगे दो समागम इकट्ठे आ रहे हैं, जगत गुरु श्री गुरु नानक देव जी महाराज जी का पवित्र अवतार दिवस और सन्त महाराज भगत सिंह जी की वार्षिक पुण्यतिथि। उस पवित्र जन्म दिवस पर कितने श्री अखण्ड पाठ साहिब रखने की तैयारी करें?

हज़ूर बोले, भाई जितने आसानी से कर सकते हो उतने रख लो। प्रबन्धकों ने खुला संकेत समझ कर लिखने शुरु किए तो आम संगत को पहले का दृश्य नज़र आने लगा। एक दिन में सौ के करीब पाठ लिखे गए, लेकिन सारी संगत के मन में इतना उत्साह जाग्रत हो गया कि यह समागम पहले से बड़ा होना चाहिए। श्रद्धावान् लोग उत्साह युक्त होकर पाठ लिखवाते रहे। इस प्रकार तीन-चार दिनों में दो सौ पाठ साहिब लिखे गए। महापुरुषों ने आज्ञा की कि अब पाठ लिखने बन्द कर दो, और नहीं लिखने। कुटिया में स्थान को माप लो कि कितने पाठ इकट्ठे रखे जा सकते हैं। पूज्य सन्त बाबा निक्का सिंह महाराज जी की याद में बनी बिल्डिग की दोनों छतें तथा नानक दरबार में अगर एक सौ एक पाठ साहिब आ जाते हैं तो दो कोतरियाँ कर लो। दो सौ पाठ आपने संगत के लिख लिए हैं और दोनों कोतरीयों में एक-एक पाठ सर्व संगत की तरफ से हो जाएगा। प्रेमियों ने स्थान की माप की तो एक सौ एक अखण्ड पाठ साहिब रखने के लिए ज़रूरत अनुसार जगह पूरी हो गई। हज़ूर ने हुक्म किया कि एक कोतरी का भोग डालकर उसी दिन दूसरी शुरु कर ली जाएगी। जिसकी सम्पूर्ण समाप्ति गुरुपूर्व के दिन की जाएगी, इस प्रकार यह समागम निरन्तर पाँच दिन चलेगा। लंगर वितरित करने के लिए गेट के साथ की जगह साफ कर लो। उसमें हज़ारों व्यक्ति बैठ कर लंगर छक लेंगे। लंगर पकाने के लिए कुटिया के अन्दर पिछली तरफ काफी स्थान है और कीर्तन पण्डाल गेट से बाहर-बारह सैक्टर में बना लेना। इस प्रकार कार्यक्रम का सारा नक्शा बना कर आप तो वापिस ऋषिकेश आ गए, उधर संगत अपनी तैयारी में लग गई।

अक्तूबर में हरिद्वार, कनखल तथा ऋषिकेश की दोनों पुण्य तिथियाँ बड़ी श्रद्धा, प्रेम तथा उत्साह से मनाई गईं। इतने में गुरु नानक पर्व का समय निकट आया जानकर करनाल निवासी संगत ने भी उत्साहपूर्वक सारी तैयारी कर ली। लंगर छकाने वाली जगह कुटिया के गेट के नज़दीक सम करके ईंटों को पक्का फर्श बनवा दिया और जहाँ लंगर पकाना है वहाँ भी हर प्रकार की तैयारी कर ली गई। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के लिए एक ही रंग के एक सौ एक रुमालों का सैट तैयार कर लिया गया। उधर बारह सैक्टर में कीर्तन के लिए बहुत ही सुन्दर पण्डाल बनवाया गया। पूज्य महाराज जी संगत को दी तारीख अनुसार, जगत् उद्धार का कार्य करते हुए, समागम से कुछ दिन पूर्व करनाल पहुँच गए। उधर आदरणीय सन्त जोध सिंह जी और छोटू बाबा जी भी प्रबन्ध की देख-रेख करने के लिए ऋषिकेश से करनाल पहुँच गए। पंजाब से भी पाठी सिंह तथा अन्य सेवादार संगत काफी संख्या में तेरह नवम्बर को करनाल कुटिया पहुँच गई। प्रबन्धकों की तरफ से बाहर से आई संगत के

निवास के लिए अपने घरों में बहुत अच्छा प्रबन्ध किया हुआ था। चौदह नवम्बर 1994 के दिन प्रातः कीर्तन पण्डाल में दीवान सजाया गया, जिस में सुबह आठ बजे से साढ़े नौ बजे तक भाई जसविन्द्र सिंह जी टैक्सला टी.वी. वालों ने बहुत मधुर कीर्तन किया। ठीक दस बजे पहली कोतरी यानि एक सौ एक श्री अखण्ड पाठ साहिब प्रारम्भ हुए। कोतरी की आरम्भता पूज्य महाराज जी ने पवित्र हुक्मनामा लेकर स्वयं की। नानक दरबार और विरक्त महाराज जी के स्मृति स्थल पर एक सौ अखण्ड पाठ साहिब-सब के ऊपर एक ही रंग के सुन्दर दर्शनीय रुमालों से सुन्दर मनमोहक दृश्य बना हुआ है, दूसरी ओर गुरु का लंगर निरन्तर चल रहा है और सैकड़ों व्यक्ति लंगर बनाने, सब्जी काटने और बर्तन साफ करने इत्यादि सेवा में लगे हुए हैं। अब सायं के पाँच बजे कीर्तन पण्डाल में दीवान शुरु हुआ जिसमें सर्वप्रथम संगत ने मिलकर श्री सुखमनी साहिब के पाठ किए फिर पौना घण्टा यानि सायं के सात बजे तक बीबी हरमिन्द्र कौर करनाल वालों ने मधुर कीर्तन किया। सात से आठ बजे तक भाई साहिब भाई रणजीत सिंह जी गुरुद्वारा माडल टाऊन करनाल वालों ने शब्द कीर्तन द्वारा संगत को आनंदित किया। अब भाई साहिब भाई सुनील कुमार जी अरोड़ा हरिद्वार वालों ने एक घण्टा ईश्वरीय वाणी के कीर्तन द्वारा अमृतमयी वर्षा की। नौ बजे आरती शुरु करके साढ़े नौ बजे आज के समागम समाप्ति की अरदास की गई। दूसरे दिन पन्द्रह नवम्बर को प्रातः छः से आठ बजे तक श्री आसा जी दी वार का कीर्तन बीबी हरमिन्द्र कौर द्वारा किया गया। उपरान्त ठीक आठ बजे पहली इकोतरी की मध्य की अरदास की गई। साढ़े आठ से दस बजे तक फिर कीर्तन पण्डाल में दीवान सजा, जिसमें भाई रणजीत सिंह मॉडल टाऊन के रागी जत्थे ने ईश्वरीय वाणी के कीर्तन द्वारा यशोगान किया। नियमबद्ध समयानुसार सायं को पाँच बजे फिर दीवान सजाया गया। जिस में सर्वप्रथम प्रतिदिन की भाँति श्री सुखमनी साहिब जी के पाठ और फिर कई रागी जत्थों के द्वारा हरि यश गायन किया गया। बाद में आरती पूजन करके साढ़े नौ बजे आरती की अरदास हो गई। सोलह नवम्बर के दिन प्रातः पाँच बजे से साढ़े छः बजे तक बीबी हरमिन्द्र कौर की तरफ से श्री आसा जी दी वार का आनन्ददायक कीर्तन किया गया। अब सुबह के सात बज चुके हैं इसीलिए पहली कोतरी के भोग शुरु हो गए। इस प्रकार मर्यादा अनुसार आरती करके सवा आठ बजे सम्पूर्ण समाप्ति हो गई।

अब साढ़े आठ से एक घण्टे के लिए फिर कीर्तन शुरु हुआ जिस में भाई संता सिंह गुरुद्वारा राम नगर वालों ने गुरुवाणी द्वारा हरि यश गायन किया, उपरान्त ठीक दस बजे दूसरी कोतरी शुरु की गई।

आज संगत भी पर्याप्त संख्या में एकत्रित हुई। इसीलिए महापुरुषों को मिलने वाली संगत की काफी बड़ी लाइन लगी हुई है और साथ-साथ उधर गुरु के लंगर भी निरन्तर चल रहे हैं। चाय-पानी का ढंग वही दीपावली वाला, पाइपों टूटियों द्वारा चालू है।

सायं को फिर दीवान सजाए गए जिस में प्रतिदिन की तरह पहले श्री सुखमनी साहिब जी के पाठ बाद में रात के नौ बजे तक ईश्वरीय वाणी के कीर्तन। आज के कीर्तन दरबार में बीबी हरमिन्द्र कौर जी करनाल, भाई सुखदेव सिंह जी चड्ढा करनाल और भाई मुख्यितार सिंह जी लुधियाना वालों के रागी जत्थे ने गुरुवाणी के मनोहर कीर्तन द्वारा अमृत वर्षा की। अब आरती के पश्चात् साढ़े नौ बजे आज के समागम की अरदास की गई।

सत्रह नवम्बर के दिन, प्रात: रोज की तरह, छ: से आठ बजे तक बीबी हरमिन्द्र कौर की ओर से आसा जी दी वार का कीर्तन किया गया। उपरान्त ठीक आठ बजे दूसरी कोतरी के मध्य की अरदास की गई। फिर आठ से दस बजे तक भाई धर्म सिंह दिल्ली वालों के रागी जत्थे ने कीर्तन पण्डाल में गुरुवाणी द्वारा हरि यश गायन किया। फिर सायं के पाँच बजे तक संगत लंगर आदि की सेवा करती रही। सायं को प्रतिदिन की भाँति पाँच बजे कीर्तन पण्डाल में फिर दीवान सजे जिसमें सर्वप्रथम महापुरुषों की मर्यादा अनुसार श्री सुखमनी साहिब के पाठ सारी संगत ने मिलकर किए। उपरान्त रात के नौ बजे तक कीर्तन दरबार। आज के कीर्तन दरबार में बीबी हरमिन्द्र कौर, भाई अमरजीत सिंह जी रमता करनाल, श्री गुरु गोबिन्द सिंह स्टडी-सर्कल पटेल नगर, नई दिल्ली सभी जत्थों ने गुरुवाणी के अमृतमयी कीर्तन द्वारा श्री गुरु नानक देव महाराज जी के गुरुपर्व की खुशी में अपनी उपस्थिति लगवाई। ठीक साढ़े नौ बजे आरती उपरान्त आज के दीवान की समाप्ति की गई।

आज अठारह नवम्बर के दिन सुबह पाँच बजे प्रतिदिन की भाँति श्री आसा जी के वार कीर्तन द्वारा बीबी हरमिन्द्र कौर ने अमृतमयी वर्षा की। ठीक सात बजे दूसरी कोतरी साहिब के भोग शुरु हो गए जो पूरी मर्यादा अनुसार आरती पूजन द्वारा सवा आठ बजे सम्पूर्ण हो गए। उपरान्त संगत ने चाय-नाश्ते किए जिस में चने, भठूरे, मिठाई आदि अनेक प्रकार के पदार्थ वितरित हो रहे थे। ठीक साढ़े आठ बजे कीर्तन पण्डाल में कीर्तन शुरु हो गया जहाँ अढ़ाई घण्टे यानि ग्यारह बजे तक हरि यश, हरि कीर्ति की वर्षा होती रही। आज के कीर्तन दरबार में भाई सुनील ढ़ींगडा जी देहली वाले, भाई अमरजीत सिंह जी टैक्सला टी.वी. वालों ने गुरुवाणी के मनोहर कीर्तन द्वारा अमृतमयी वर्षा की। ठीक ग्यारह बजे प्रवचन कार्यक्रम शुरु हआ जिस में तरजीत सिंह जी नरुला, करनाल, प्रो. मदनलाल जी गुलाटी करनाल, श्री हंस राम जी छाबड़ा करनाल और श्री लाल चन्द जी मिड्ढा दिल्ली वालों ने अपने-अपने विचारों अनुसार पारमार्थिक विषयों पर प्रवचन किए। अठारह नवम्बर 1994 के शुभ दिन को ठीक बारह बजे पाँच दिन से चल रहे सम्पूर्ण समागम की समाप्ति कर दी गई। गुरु के लंगर तो पाँच दिन से निरन्तर चल ही रहे थे, लेकिन आज तो प्रबन्धकों की तरफ से गुरु नानक देव महाराज जी के अवतार पर्व की खुशी में विशेष रूप से तैयार किए गए थे। जिस में आवश्यकतानुसार सारी संगत ने प्रसाद छक कर महापुरुषों के पवित्र कर कमलों द्वारा प्रसाद प्राप्त करके घर को वापिस प्रस्थान किया। इस कार्यक्रम की प्रत्येक भाग की वीडियो फिल्म तैयार करने वाली एक योग्य टीम ने बहुत ही सुन्दर ढंग से कैमराबद्ध की।

पितरों का उद्धार

अक्तूबर 1995 की पुण्य तिथियों का समय आ गया। इस पूण्य तिथि समागम पर जहाँ हजारों लोग सेवा सत्संग का लाभ लेने के लिए कनखल बरसी पर पहुँच गए वहाँ पूज्य महाराज जी के माता-पिता जी भी आए हुए थे। पिता अरुड़ चन्द जी उप्पल काफी समय से बीमार रहते हैं, इसीलिए शरीर की देखभाल और सेवा सम्भाल माता बिमला देवी जी बड़े प्रेम से करते रहते हैं। अरुड़ चन्द जी के विचार कुछ व्यापारिक वृत्ति के थे, इसीलिए पूज्य महाराज जी के बचपन, विद्या प्राप्ति के समय, बाद में नौकरी के समय बेपरवाही, धन पदार्थ से अनिच्छा और सांसारिक दौर से निर्लेपता के विचार अच्छे नहीं लगते थे, लेकिन जिस समय पूज्य विरक्त महाराज जी ने अपनी कृपा द्वारा अपना रूप बनाकर निर्मल आश्रम ऋषिकेश के महन्त बना दिए, बड़े-बड़े लखपति लोग चरण स्पर्श करते देखे और इनकी कृपा द्वारा पंजाब, हरियाणा के हज़ारों लोगों को गुरुवाणी

के निरन्तर चल रहे प्रवाह में गोते लगाते देखा तो मन में कुछ हर्ष पैदा हुआ। अब वे खुशी में चाहे नमस्कार भी करते हैं, लेकिन मन में अभी भी पुत्र लालसा विद्यमान है, क्योंकि मोह का पर्दा जल्दी नहीं उठता। आज भाग्य कुछ जागे, कनखल की पुण्यतिथि सम्पूर्ण होने पर ऋषिकेश पहुँच गए। संगत ऋषिकेश की पुण्य तिथि मनाने के लिए पुनः एकत्रित हुई। आज हज़ूर अपनी मौज में गद्दी वाले कमरे में सुशोभित हैं। संगत नमस्कार कर के लौट रही है, क्योंकि कमरा छोटा होने के कारण ज्यादा व्यक्ति नहीं बैठ सकते। माता बिमला जी भी अरुड़ चन्द जी को नमस्कार करवाने के लिए पकड़ कर बहुत धीरे-धीरे कमरे में ले आए। नमस्कार करते समय अरुड़ चन्द जी का पुत्र भावना का झूठा मोह पल भर के लिए कुछ दूर हो गया।

'हरि हरि जनु दुइ एक है' की भावना ने हृदय में प्रवेश किया। नमस्कार करते ही शारीरिक दुःख भूल कर मन शान्त हो गया। सच्चे सुख की झलक मिली जो आज तक कभी नहीं देखी थी। अब पुत्र नहीं, समक्ष कोई ईश्वरीय नूर बैठा प्रतीत हुआ। आगे से हज़ूर अपनी मौज में मुस्कराते जा रहे हैं। अरुड़ चन्द जी दोनों हाथ जोड़कर चरणों में बैठे काँपती आवाज़ से कुछ निवेदन कर रहे हैं जिसको ध्यानपूर्वक सुनते ही कुछ इस प्रकार के भाव प्रकट हो रहे हैं—

बोलिउ करके प्रेम घनेरा॥ मैं जानत रहिआ सुत मेरा॥
तुम महांपुरख हो दीन दइयाला॥ मेरे हिरदे दीजै गिआन बिसाला॥
जिस तों जनम मरन होइ नास॥ उपजै अबिचल अनंद अबिनास॥
मैं हूँ कौन? मोहि सुध नांही॥ रहि हो हरख सोग के मांही॥
इक पल मन थिर होवत नांही॥ हमेशां रहे राग दवैखके मांही॥

इस तरह की ज्ञात और दशा मन की हो गई और वाहिगुरु की कृपा से इस प्रकार की प्यास लग गई और पूज्य महाराज जी बोले—

इस सारे पसारे में एक ज्योति विद्यमान है और सारा पसारा ही एक ज्योति का है जो उस ज्योति के सम्मुख है वही सुखी है। जैसे, अग्नि के जो सम्मुख है वह ताप लेता है और जो विमुख है, दूर है, सो दुखी है। जैसे अग्नि से जो दूर है वह सर्दी के कष्ट में है। आठों पहर एक ज्योति पर रसना का, मन की स्थिरता होनी चाहिए। जब यह निरंकार सर्व व्यापक है, घट-घट में हैं फिर राग, द्वेष, हर्ष, शोक किसलिए? यह ज्योति यहाँ-वहाँ हर जगह है, फिर मन को डर किस बात का। जब हर जगह रक्षक, मालिक, पालनहार, वाहिगुरु आप है तो आप माया के अंधेरे वाला प्यार किस लिए? जब घर बाहर सभी स्थानों पर एक ही पसारा है तो बाप, माँ, बेटी, बहन, भाई और कल्पित अन्य सम्बन्धी कहाँ? अरुड़ चन्द जी ने प्रार्थना की, महाराज! जहाँ सभी जगह एक ज्योति व्यापक है तो नज़र क्यों नहीं आती?

हज़ूर ने उत्तर दिया—जैसे धरती में जल होता है, लेकिन प्रत्यक्ष नहीं इसी प्रकार न जानने वाले के भीतर भी ईश्वरीय ज्योति है लेकिन गुप्त। जैसे कुआँ खोदो तो जल प्रकट हो जाता है इस प्रकार जिज्ञासुओं के प्रेमाभक्ति के प्रयत्न से वाहिगुरु प्रकट हो जाता है। जैसे नदी नाले का पानी अपने आप बह रहा है और बिना यत्न के प्रकट ही रहता है वैसे ही प्रेमाभक्ति वाले चेतन दृष्टि वाले सुरजीत मन को सदैव प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता और भासता है, इसलिए सारे संसार में सभी हृदयों में सर्वत्र हर रंग में निरंकार की ज्योति पूर्ण है, देखो कलगीधर पिता जी फ़रमान करते हैं—

जिमीं जमान के विखे समसत एक जोत है॥
न वाध है न घाट है, न वाध घाट होत है॥

ऐसी दृष्टि वाले पुरुष को हर स्थान पर, हर समय पर परमात्मा प्रत्यक्ष प्रतीत होता है। अन्तर केवल मन की अवस्था का है। मन को मोह निद्रा से जाग्रत करना है।

अरुड़ चन्द जी-महाराज! मन किस तरह जाग्रत हो?

उस निरंकार का सिमरन करो, याद करो, ध्यान करो, उठते-बैठते, चलते-सोते परमात्मा को याद करो, उसको भूलो कभी नहीं। यह याद जिस समय निरंतर हो जाती है, लगातार हो जाती है फिर माया के बंधन काट देती है, सारे पर्दे हटा देती है, अन्तर मिटा देती है। वह निरंकार ज्योति प्रत्यक्ष नज़र आती है। जीवन फूल जैसे हलका, भार रहित और सुखी हो जाता है। जन्म-मरण आदि समस्त कल्पित दु:ख नष्ट हो जाते हैं। मनुष्य तन धारण किया सफल हो जाता है। अरुड़ चन्द जी को परमेश्वर की कृपा से आज कुछ प्रेमाभक्ति की झलक पड़ी। पुण्यतिथि की समाप्ति के दूसरे दिन वापिस करनाल जा कर अपने पाँच भौतिक शरीर को ऐसे त्याग दिया जैसे हाथी फूल माला को उतार देता है।

गोराया की दीपावली

कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु रामु॥
रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु॥

(श्लोक कबीर, पृष्ठ १३७३)

संतों का वास्तविक कार्य होता है, हरि से विमुख हुए जीवों को नाम जपा कर हरि से जोड़ना, यानि जिस कार्य के लिए संसार में आते हैं। पूज्य महंत राम सिंह जी की तरफ से यह ईश्वरीय कार्य बारह मास, आठों पहर दिन-रात जारी है। यानि जो परोपकार का, जगत् उद्धार का कार्य परमात्मा ने प्रदान किया है, उसमें लीन होकर उसका रूप हो गए हैं। हज़ारों जीवों को गुरुवाणी रूपी ईश्वरीय जहाज़ पर सवार करते जा रहे हैं। जीवों को गुरुवाणी से जोड़ने के लिए घर, गुरुद्वारे और सामूहिक स्थानों पर अखण्ड पाठ रखने की तिथि दी जा रही है। शुरु में एक अखण्ड पाठ के लिए दो दिन दिए जाते थे, लेकिन अब प्रेमियों की बढ़ती हुई मांग के कारण और गुरुवाणी के प्रचार-प्रसार में तेज़ी लाने के लिए, एक अखण्ड पाठ साहिब के भोग के लिए अब एक ही दिन दिया जाता है। इस प्रकार आज कहीं, कल कहीं, दिन-रात ईश्वरीय कार्य जारी है। 1995 की दीपावली का पवित्र दिवस मनाने के लिए तिथि गोराया डलेवाल निवासी संगत को प्रदान की हुई है। प्रेमी संगत द्वारा आप जी से आज्ञा लेकर, विरक्त शिरोमणि श्रीमान् सन्त बाबा निक्का सिंह जी की याद में, दीपावली बड़े स्तर पर मनाने की तैयारियाँ की जा रही हैं जिस में इकतीस अखण्ड पाठ साहिब रखे जाएंगे। कीर्तन दरबार बड़े स्तर पर होंगे, जिस में गुरु घर के प्रमुख रागी भाग लेंगे, गुरु के लंगर निरन्तर चलेंगे। बाहर से आई संगत के ठहरने के लिए गोराया, डलेवाल नगर में मकान तो आरक्षित किए हुए ही हैं, लेकिन कुटिया के नज़दीक भी शामियाने टैण्ट आदि लगाकर बहुत ज्यादा प्रबन्ध किया हुआ है। अस्थाई रूप से शौचालय, स्नानगृह काफी संख्या में बना लिए गए हैं। नल आदि लगाकर पानी की सुविधा का हर प्रकार से प्रबन्ध किया गया है। गुरु का लंगर जारी रखने के लिए गैस, डीज़ल की भट्ठी के अतिरिक्त लकड़ के चूल्हे भी काफी संख्या में बना लिए गए हैं। लंगर की सेवा के लिए खोख गाँव के दोनों जत्थेदार और कुलवन्त सिंह (छोटा) करनाल भी अपने साथियों को लेकर पहुँच गए हैं। यानि हर प्रकार की तैयारी हो चुकी है।

बीस अक्तूबर के दिन पूज्य महाराज जी दोपहर को गोराया कुटिया पहुँच गए। उधर ऋषिकेश से आदरणीय संत जोध सिंह जी और आदरणीय संत गुरिन्द्र सिंह (छोटू बाबा) जी भी कुछ संगत सहित पहुँच चुके हैं। खोख, कोटली, लोपे, भौड़े, कुतबनपुर और करनाल आदि से पाठी सिंह पहुँच चुके हैं। बारादरी में चारों तरफ से पर्दा लगाकर अन्दर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के इकतीस स्वरूप और एक जपुजी साहिब की पोथी प्रकाश कर ली है। सजावट करके गुरु दरबार को बहुत सुन्दर सजाया गया है। दिन के साढ़े ग्यारह बज चुके हैं। पूज्य महाराज जी मुख्य पाठ पर साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को चँवर कर रहे हैं। अरदास करने के बाद हजूर ने अपने पवित्र मुख से ईश्वरीय वाणी का हुक्म सुनाने के बाद अखण्ड पाठों का शुभारम्भ किया। इतने समय पर गुरु के लंगर भी सज कर तैयार हो गए जो अरदास उपरान्त वितरित करने शुरु कर दिए। उस क्षेत्र के नज़दीक के गाँवों से भारी संख्या में गरीब, ज़रूरतमन्द लोग लंगर छकने के लिए आ रहे हैं। सायं को चार बजे बाहर कीर्तन पण्डाल में दीवान शुरु हुआ। महापुरुषों की मर्यादा अनुसार सर्वप्रथम संगत ने मिलकर श्री सुखमनी साहिब का सम्पूर्ण पाठ किया, बाद में कीर्तन शुरु हो गया। आज के कीर्तन दरबार में बीबी शरनजीत कौर मुम्बई, बीबी हरमिन्द्र कौर करनाल और गुरु घर के प्रसिद्ध कीर्तन करने वाले भाई मुख्यितार सिंह जी लुधियाना वालों ने बहुत मधुर कीर्तन किया। उपरान्त ठीक नौ बजे रात्रि को आरती शुरु हो गई। साढ़े नौ बजे अरदास के पश्चात् आज के दीवान की समाप्ति हो गई। लंगर-पानी छकने के उपरान्त बाहर से आई संगत को प्रबन्धक अपनी कारों में बिठाकर निवास स्थानों पर पहुँचा रहे हैं।

बाईस अक्तूबर के दिन प्रातः छः बजे पण्डाल में श्री आसा जी दी वार का कीर्तन शुरु हुआ, जिस में बीबी हरमिन्द्र कौर करनाल तथा अन्य संगत ने मिलकर दो घण्टे ईश्वरीय वाणी की अमृत वर्षा की। उपरान्त अरदास करके प्रातः के दीवान की समाप्ति हो गई। गुरु के लंगर जो कल से ही निरंतर चल रहे हैं, संगत आवश्यकतानुसार चाय-नाश्ता छक कर मध्य की अरदास में सम्मिलित हो गई। मध्य के भोग के बाद पूज्य महाराज जी ने अपने पवित्र कर कमलों द्वारा पाठी सेवादारों को सिरोपाओ प्रदान किए। उधर कीर्तन पण्डाल में संगत ने दो घण्टे ईश्वरीय वाणी के कीर्तन द्वारा आनन्द लिया यानि दस बजे से दोपहर के बारह बजे तक बीबी हरमिन्द्र कौर करनाल तथा बीबी शरनजीत कौर मुम्बई वालों ने ईश्वरीय वाणी का मनोहर कीर्तन किया। प्रतिदिन की तरह सायं को पाँच बजे, फिर दीवान शुरु हुआ जिस में महापुरुषों की मर्यादा अनुसार सर्वप्रथम श्री सुखमनी साहिब के पाठ और फिर रात्रि नौ बजे तक हरि कीर्तन! आज दूसरे दिन भी कीर्तन दरबार में भाई मुख्यितार सिंह जी लुधियाना वालों ने ईश्वरीय वाणी के शब्द कीर्तन द्वारा श्रोताओं को निहाल किया। अब आरती शुरु हो गई। साढ़े नौ बजे अपने इष्ट देव के आरती पूजन के बाद आज के दीवान की समाप्ति हो गई। आज तेईस अक्तूबर के दिन प्रातः छः बजे बीबी हरमिन्द्र कौर करनाल ने कीर्तन पण्डाल में श्री आसा जी दी वार का रसदायक कीर्तन किया। ठीक साढ़े नौ बजे परसों से आरम्भ किए 31 श्री अखण्ड पाठ के भोग शुरु हुए जो पूरी मर्यादा अनुसार आरती पूजन के बाद सम्पूर्ण हुए। उपरान्त संत सम्मेलन शुरु हुआ जिस में सन्त कर्ण सिंह जी भड़ौजियाँ वाले, भाई मनजीत सिंह जी हरखोवाल वाले और भाई तरजीत सिंह जी नरुला करनाल वालों ने अपने विचारों द्वारा गुरु महिमा, सन्त सेवा आदि विषयों पर प्रकाश डाला। अब अरदास के बाद पवित्र कड़ाह प्रसाद की देग वितरित की गई, उपरान्त नियमबद्ध कार्यक्रम अनुसार बाहर कीर्तन पण्डाल में फिर दीवान सजाया गया, जिस में आज तीसरे दिन भी भाई मुख्तियार सिंह लुधियाने वालों ने गुरुवाणी के शब्द कीर्तन द्वारा बहुत ही रसयुक्त अमृत वर्षा की। ठीक साढ़े बारह बजे तीन दिन से चल रहे समागम की सम्पूर्णता की खुशी में कृतज्ञता ज्ञापित करने

के लिए श्री गुरु नानक देव जी महाराज के चरणों में अरदास करके समाप्ति की। गुरु के लंगर जो परसों से निरन्तर चल रहे थे संगत तथा अन्य सैंकड़ों गरीब लोग प्रसाद छक रहे हैं जिसमें समागम की सम्पूर्णता और दीपावली की खुशी में मिठाई आदि अनेक प्रकार के रसीले पदार्थों के निरन्तर भण्डारे वितरित किए जा रहे हैं। लंगर छकने के लिए दूर नज़दीक गाँवों से भारी संख्या में गरीब ज़रूरतमंद लंगर छक कर गुरु नानक का यश करते जा रहे हैं।

लंगर छकने के पश्चात् संगत महापुरुषों के पवित्र कर कमलों द्वारा प्रसाद प्राप्त करके घट लौट गई, लेकिन जिन्होंने दीपावली महापुरुषों के चरणों में मनानी है वे आज यहीं हैं, क्योंकि इस महान् समागम में महापुरुषों की सेवक संगत दूर-दूर से आई हुई थी जैसे पंजाब, हरियाणा के अतिरिक्त मुम्बई से श्री अशोक जोगेशिया परिवार सहित और बीबी दलजीत कौर, बीबी शरनजीत कौर भी आई हुई थीं। इस प्रकार संगत के दूर-दूर से आने के बावजूद भी प्रबन्धकों की आशा अनुसार संगत बहुत कम थी, क्योंकि प्रबन्धक सज्जनों ने जिस प्रकार से बाहर की संगत के रहने का तथा अन्य प्रत्येक तरह का प्रबन्ध किया हुआ था उसके अनुसार उपस्थिति बहुत कम थी।

अब सायं को महापुरुषों ने दीपावली मनाने के लिए अपने पवित्र कर कमलों द्वारा फुलझड़ी चला कर आतिशबाज़ी की शुरूआत की। इस महान् समागम की खुशी में दीपावली मनाने के लिए काफी आतिशबाज़ी और उस को ठीक ढंग से चलाने के लिए आतिशबाज़ भी सहारनपुर से विशेष तौर पर बुलाए हुए थे। उन्होंने नए-नए प्रकार की आतिशबाज़ी चला कर लगभग एक घण्टा अपनी कला के जौहर दिखाएं। इस प्रकार तीन दिन गुरुवाणी और गुरु के लंगर निरन्तर चलते रहे। गोराया और डॅलेवाल निवासी प्रबन्धक सज्जनों का प्रत्येक प्रबन्ध बहुत अच्छे ढंग से और उदार ह्रदय से किया हुआ था। तीन दिन से चल रहे इस सारे कार्यक्रम की वीडियों फिल्म भी तैयार की गई।

लैला

आज से पन्द्रह वर्ष पूर्व सन् 1981 का जिक्र है जब इटली से विद्यार्थियों की एक टोली भारत आई। सारे विद्यार्थी घूमते-घूमते ऋषिकेश पहुँच कर नीलम होटल में रुके। होटल के मालिक से पूछा कि यहाँ के देखने योग्य विशेष स्थान बताएँ। होटल का मालिक जो एक सरदार है, ने जहाँ लक्ष्मण झूला आदि स्थानों के बारे में बताया वहाँ निर्मल आश्रम का महिमागान भी किया। आश्रम की प्रशंसा सुनकर विद्यार्थी टोली एक दिन प्रातः निर्मल आश्रम पहुँची। उस समय प्रातः का छेत्र (गुरु का लंगर) चल रहा था जिस में सैंकड़ों साधु महात्मा और गरीग लोग नाश्ता लेने के लिए एकत्रित थे। सेवादारों ने बड़े प्रेम से सब के ऊपर फूलों की वर्षा करके गुरु का लंगर वितरित करना शुरु किया जो कि बिना किसी भेदभाव से सब को हरि रूप समझ कर सेवादार बड़े प्रेम से चाय नाश्ता वितरित कर रहे थे। उधर ज़रूरतमन्द सज्जन चाय प्रसादा लेकर पंक्ति से बाहर जा रहे हैं। ऐसा प्रेमपूर्वक व्यवहार होता देखकर विदेश से आई इटालियन विद्यार्थी टोली बहुत प्रभावित हुई।

एक पन्द्रह साल की आयु की लैला नाम की इथोपियन लड़की जो आजकल इटली में बसे हुए हैं, कुछ ज्यादा ही प्रभावित हुई। उसने पूज्य महाराज जी के पास जा कर बड़ी श्रद्धा से सिर झुकाया, फिर अंग्रेज़ी में कुछ पारमार्थिक वचन पूछे। ये विद्यार्थी टोली तीन-चार दिन ऋषिकेश ठहरी। प्रतिदिन आश्रम आना, हजूर के दर्शन करने और लैला कुछ प्रश्न भी पूछती। इस प्रकार कुछ दिन भारत की यात्रा करके और कुछ नए प्रभाव लेकर वापिस इटली चले गए। उससे दस वर्ष पश्चात् 1991

में लैला फिर भारत आई तो सीधी निर्मल आश्रम ऋषिकेश पहुँची। यहाँ कुछ दिन रुक कर सारा माहौल देखा। संगत को देखकर बर्तन आदि साफ करने की सेवा करती। हजूर से कुछ पारमार्थिक प्रश्न भी पूछती। थोड़े दिन रुक कर फिर वापिस चली गई, लेकिन जनवरी 1996 में तीसरी बार फिर भारत आई। निर्मल आश्रम ऋषिकेश पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि पूज्य महाराज जी मुम्बई गए हुए हैं। दो-तीन दिन आश्रम में रुक कर महाराज जी के दर्शन करने के लिए मुम्बई पहुँची। हजूर उस समय मैरिन ड्राईव चर्च गेट श्री गुल चैनानी जी के घर ठहरे हुए थे। लैला ने बड़ी भावुक होकर नमस्कार की, प्रेमाश्रुओं से हजूर के चरण धो दिए। अलौकिक प्रीतम ने चरणों से उठाया, कुशल क्षेम पूछने के बाद कुछ खाने-पीने के लिए हुक्म किया। एक प्रेमी परिवार मोहनी बाई मनसुखानी को आज्ञा दी कि इस लड़की को अपने घर ले जाओ। जितने दिन यह इधर रहना चाहे, अपने घर रखो। लैला प्रतिदिन माता मोहिनी के साथ हजूर के दर्शन करने के लिए चर्च गेट आती रहती। कितनी-कितनी देर हजूर के आभायुक्त चेहरे की तरफ एक टक ऐसे देखती रहती जैसे चकवी चन्द्रमा की तरफ। देखती की चाहे गर्दन मुड़ जाए, लेकिन दीदार करने से नहीं हटती।

आज अठाईस जनवरी 1996 को शुभ दिन पर कोई पुरातन संयोग प्रकट हुआ। लैला ने हजूर के पवित्र चरणों में दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना की महाराज! सन् 1981 में जब आप जी के पहली बार दर्शन किए थे तो आप के पवित्र मुख से सुना था कि मन की शांति प्राप्त करने के लिए शुद्ध भोजन का प्रयोग आवश्यक है। आप ने फरमाया था '**जैसा अन्न तैसा मन।**' मैंने उस दिन के बाद मदिरा, माँस आदि तामसिक भोजन का प्रयोग बिल्कुल बन्द कर दिया था। प्रत्येक रविवार को चर्च जाना, पूजा आदि करनी, लेकिन इतना करने के बावजूद भी मन शान्त नहीं हुआ। मैं अब आप की शरण में आई हूँ, कृपा कीजिए! मुझे मन की शान्ति प्रदान करें। इटली से मैं यहाँ व्यापार करने नहीं आई, न ही घूमने या कुछ देखने आई हूँ, केवल और केवल मेरे आने का प्रयोजन मन की शान्ति प्राप्त करना है। यह मुझे अटल विश्वास है कि ऐसी अलौकिक वस्तु आपके चरणों से अवश्य मिलेगी। हजूर किसी गहरी सोच में डूबे सुनते जा रहे हैं, किन्तु पवित्र मुख से कुछ न बोले। इतने में सायं के पाँच बजे का समय हो गया और प्रतिदिन की भाँति सत्संग आरम्भ हो गया। कीर्तन की समाप्ति पर छः बजे प्रसाद बाँट दिया गया। सारी संगत प्रसाद लेकर नमस्कार करके अपने घर को लौट गई, लेकिन लैला अभी वहीं बैठी है, क्योंकि लैला जिस प्रसाद के लिए हज़ारों मीलों का रास्ता पार करके, रास्ते के कष्ट उठा कर और हज़ारों रुपये खर्च करके भारत पहुँची थी, वह प्रसाद सम्भवतः अभी नहीं प्राप्त हुआ। कीर्तन सत्संग पंजाबी में हुआ, पर लैला तो पंजाबी, हिन्दी का एक भी अक्षर नहीं समझती, तृप्ति कैसे हो? शान्ति कैसे आए? लैला बहुत उदास है, क्योंकि आज रात्रि दो बजे ही उसकी वापिस इटली जाने के लिए उड़ान है, जिस में कुछ घण्टे का समय ही शेष है, लेकिन जिस बहुमूल्य वस्तु के व्यापार के लिए भारत आई थी, उसका मिलना तो एक तरफ रहा, संकेत भी कोई नहीं। हजूर ने संगत को प्रसाद वितरित करके देखते-देखते ही अपने कमरे में जाकर दरवाज़ा बन्द कर दिया। बस लैला की सारी आशाओं पर पानी फिर गया जो इटली से अपने हृदय में लेकर भारत पहुँची थी। संगत की मुख्य सेविकाओं से बार-बार पूछ रही है, महाराज द्वार कब खोलेंगे। लैला के प्रश्न का उत्तर

किसी के पास भी नहीं, क्योंकि हजूर की मौज को कौन जान सकता है? असीम की मौज को ससीम जीव जान भी कैसे करता है? लैला के लिए अब एक-एक क्षण युगों के समान व्यतीत हो रहा है। उदासी काले बादल की तरह छा रही है। चेहरा अवधि पूर्ण कर चुके पुष्प की भाँति मुरझाता जा रहा है, क्योंकि समय तीव्रता से रात्रि के दो बजे की तरफ बढ़ता जा रहा है। लैला का महाराज जी के द्वार पर एक टक ध्यान ऐसे लगाया हुआ है जैसे द्रौपदी के स्वयंवर के समय महाबली अर्जुन का ध्यान तेल के कड़ाहे के ऊपर घूम रही मछली की आँख की तरफ। अचानक साढ़े सात बजे के करीब हजूर का द्वार खुला। लैला बड़ी तेज़ से होती वर्षा की तरह हजूर के चरणों पर लिपट गई है। लैला की आँखों से पानी की बूँदें हजूर के चरणों पर ऐसे गिर रही हैं जैसे कमल फूल पर ओस पड़ रही हो। हजूर का नूरानी चेहरा भी पूर्णिमा के चन्द्रमा की भाँति हर पक्ष से पूर्ण, शान्त मानों अमृत की किरणें सारे कमरे को अमृत रस से सराबोर कर रही हैं। अब पवित्र ओष्ठ हिले, दिव्य चेहरे पर मीठी-मीठी मुस्कान, धीमी पर रस भरी आवाज़ में गुन-गुना रहे हैं—

सतिनामु प्रभ का सुखदाई॥ बिशवासु सति नानक गुर ते पाई॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २८४)

उधर लैला भी हजूर के पवित्र चरणों में दोनों हाथ जोड़कर ऐसे खड़ी है जैसे कोई अचल, निर्जीव मूर्ति! हजूर मुस्करा कर पूछ रहे हैं, बताओ! देवी क्या बात है? लैला में अब जीवन सत्ता आई, ओष्ठ हिले। महाराज! शान्ति! जीवन की सफलता!! लैला के निष्कपट हृदय से आई आवाज़ सुनते ही नूरानी चेहरे पर जलाल एक दम चमक उठा! बहुत गम्भीर और मीठे स्वर में बोले—'**नानक कै घरि केवल नामु**' गुरु नानक के घर में शान्ति और सुखों का दाता नाम है। संसार के सारे पदार्थों में अगर शान्ति हो तो भर्तृहरि जैसे राजा, राज भाग के सुख त्याग कर वन में क्यों घूमते? बड़े-बड़े चक्रवर्ती राजे नामी पुरुषों के चरणों पर लेटे देखे जाते हैं। संसार के पदार्थ ऊपर से मीठे-मीठे तथा सुखदायक प्रतीत हो रहे हैं, लेकिन अन्दर से खोल कर देखो दु:ख, अशान्ति और अतृप्ति मिलती है। हरिनाम के बिना संसार की कोई भी वस्तु मन को शान्त करने के लिए समर्थ नहीं। जैसे गुरु वाक्य—

चंदन चंदु न सरद रुति मूलि न मिटई घांम॥
सीतलु थीवै नानका जपंदड़ो हरि नामु॥

(वार जैतसरी, पृष्ठ ७०९)

चन्दन, चंद्र, शरद् ऋतु यद्यपि शीतल मानी जाती हैं, लेकिन सांसारिक पदार्थों की तृष्णा रूपी प्यास से तड़पते मन को शान्त करने में समर्थ नहीं। जैसे अग्नि लकड़ी से कभी सन्तुष्ट नहीं होती, परन्तु भड़कती है ऐसे ही मन एक पदार्थ को प्राप्त करके बजाए शान्त होने के अन्य पदार्थों के लिए भटकना आरम्भ कर देता है। जैसे गुरु वाक्य—

सहस खटे लख कउ उठि धावै॥ त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै॥

(सुखमनी साहिब, पृष्ठ २७९)

माया की चंचलता संसार की किसी वस्तु को स्थिर नहीं रहने देती। पल-पल, क्षण-क्षण में हर वस्तु अपना रूप बदल रही है। जन्म को बचपन ने खा लिया, बचपन को किशोर अवस्था निगल गई, किशोरावस्था को जवानी ने चबा लिया, जवानी को बुढ़ापे ने खा जाना है, बुढ़ापे को खाने के लिए मौत मुँह खोल कर सामने खड़ी है। जब आपके शरीर की यह अवस्था

है तो शेष पदार्थ कहाँ स्थिर रहने वाले हैं? बुद्धिमान पुरुष वहीं माना जाता है जो संसार के क्षण भंगुर सुखों को सारहीन समझ कर स्थाई आत्म सुख की ओर पग उठाता है और मंजिल पर पहुँचने के लिए प्रयत्नशील है। हजूर के पवित्र मुख से उच्चारण हुआ वचन रूपी अमृत कानों द्वारा पी-पी कर लैला का मन ऐसे शान्त होता जा रहा है जैसे वायु रहित कमरे में दीपक की लौ। अचानक हजूर के कमल जैसे नयन बन्द हो गए। कुछ समय पश्चात् कमल नयन खोले तो पवित्र मुख से उच्चारण किया, बोले देवी! सतिनाम वाहिगुरु! सतिनाम वाहिगुरु! सतिनाम वाहिगुरु! सतिनाम वाहिगुरु!

लैला जैसे-जैसे वाहिगुरु उच्चारण कर रही है, किसी अकथनीय आनन्द में लीन होती जा रही है। करोड़ों रोम शरीर के जिह्वा बन गई है। लैला का मन किसी अनसुने अनदेखे आनन्द से लीन-मग्न होता जा रहा है। पहले मन की शान्त अवस्था के बारे में सुनती थी, लेकिन आज स्वयं अनुभव कर रही है, रोम-रोम से आवाज़ आ रही है—

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ॥ राम नामु संतन घरि पाइआ॥

(गउड़ी सुखमनी, पृष्ठ २८३)

लैला के मन से संसार की मैल उतर कर तन और मन को ऐसे शान्त कर रही है जैसे ज्येष्ठ मास की अत्यधिक गरमी और गर्म लू से जल रही पृथ्वी पर ज़ोरदार वर्षा हो गई हो। उधर रात्रि के दो बजे, यानि उड़ान के समय की तरफ घड़ी तेज़ी से बढ़ रही है। हजूर की तरफ से लैला को अंग्रेज़ी में किए गए उपदेश का खुला पंजाबी अनुवाद है।

गुरुवाणी का प्रवाह

जिक्र 1995 का है अब आप कनखल और ऋषिकेश की पुण्यतिथियों के समागम मनाकर संगत को दी गई तिथियों अनुसार यात्रा के लिए चल पड़े। सिद्धि पुरुष सन्त बाबा बेअन्त सिंह जी की पुण्यतिथि खोख गाँव में मनाकर करनाल पहुँच गए।

एक दिन श्री सुभाष उप्पल के लड़के विपिन उप्पल ने प्रार्थना की कि मैंने गुरुवाणी शिक्षण लेना है आप आशीर्वाद दीजिए, वाणी का पाठ जल्दी सीख लूँ। आप अपने स्वभावानुसार मुस्कराते हुए बोले बहुत बढ़िया है। भाई तरजीत सिंह नरुला को आज्ञा दी कि संगत गुरुवाणी पढ़ना चाहती है—परोपकार करो। भाई तरजीत सिंह का तो जीवन ही गुरुवाणी है, दुकानदार को क्या चाहिए? ग्राहक! दोनों हाथ जोड़ दिए। महाराज बड़ी कृपा की, सेवा बख्शी। जब संगत को पता चला कि छोटी कुटिया, गुरुवाणी का शिक्षण शुरु होने वाला है तो एक-एक करके सैकड़ों भाग्यशाली जीव गुरुवाणी का शिक्षण प्राप्त करने के लिए तैयार हो गए। हजूर ने विद्यार्थी ज्यादा हुए जानकर भाई सुरजीत सिंह सूरी और अशोक चावला जी को भी पढ़ाने की ड्यूटी में सम्मिलित करके गुरु नानक देव महाराज जी के पवित्र चरणों में अरदास की, हे सतगुरु! कृपा कीजिए ये याचक विद्यार्थी आपके घर का ईश्वरीय प्रसाद प्राप्त करने के लिए तेरे दर पे आए हैं, कृपा करके गुरुवाणी रूपी संजीवनी इनके आँचल में डाल कर इनको नवाजो। अरदास के बाद शिक्षण आरम्भ हो गया। इस महान् प्रवाह के चलाने का पता धीरे-धीरे दूर की संगत को भी लग गया और सुन-सुन कर संगत में लहर पैदा होती गई। आप जब पखाणा गाँव पहुँचे वहाँ

भी संगत ने गुरुवाणी शिक्षण की प्रार्थना की। आपने शिक्षण का उत्तरदायित्व सरदार गुरवन्त सिंह मान परिवार को प्रदान किया। उनकी सुशील बेटियाँ रुबी और डॉली जिन्होंने पहले भी गाँव में गुरुवाणी शिक्षण का परोपकार किया था, की ड्यूटी लगा दी। उनकी माता स्वर्ण कौर ज़रुरत-मन्दों को पंजाबी पढ़ाने की सेवा करती रही। यहाँ से हजूर पंजाब की तरफ गए। पटियाला के पास जहाँ आप गाँव असरपुर पहुँचे तो वहाँ की संगत ने गुरुवाणी शिक्षा लेने की प्रार्थना की। यहाँ भी भाई बलदेव सिंह, भाई भगवान सिंह और भाई मंजीत सिंह आदि प्रेमियों की शिक्षण की ड्यूटी लगाकर पढ़ाना शुरु करवा दिया। गाँव खोख जब पहुँचे तो खोख, कोटली और छन्ना आदि गाँवों के कुछ जिज्ञासुओं की प्रार्थना स्वीकार करके बाबा बलवन्त सिह, चरणजीत सिंह, रणजीत सिंह, कुलविन्द्र सिंह, बलबीर सिंह, मास्टर बलदेव सिंह, अमरीक सिंह और मास्टर सुखदेव सिंह कोटली वाले की वहीं छन्ना गाँव में ड्यूटी लगाकर गुरुवाणी शिक्षण का पवित्र कार्य शुरु करवा दिया। यहाँ से अब हजूर थोड़ा आगे लोपे गाँव पहुँचे। इस गाँव में पहले ही भाई भूपिन्द्र सिंह की ड्यूटी लगी हुई थी। यहीं पर भौड़े, घणीवाल और अगौल आदि गाँवों की संगत ने गुरुवाणी शिक्षण के लिए प्रार्थना की। सब की प्रार्थनाएँ स्वीकार करके दयालु दाते ने अगौल गाँव के सरदार हरबंस सिंह लोपियाँ वाले की ड्यूटी लगाई-शिक्षण करवाने के लिए। भौड़े में सुरजीत सिंह लोपे, जनक सिंह भौड़े और भाई भगवान सिंह को गुरुवाणी का प्रसाद बाँटने की सेवा बख्शी। घणीवाल गाँव में भाई रणदीप सिंह और भाई लखविन्द्र सिंह को कृपा करके गुरुवाणी शिक्षण के लिए लगाया। इस तरह दस दिनों में गुरुवाणी रूपी अमृत जल का छींटा दे दिया। कुछ मास पश्चात् जैसे-जैसे संगत की शिक्षा पूरी होती गई गुरु नानक देव महाराज जी का धन्यवाद करने के लिए उत्साह प्रदान किया। इसी तरह गाँव घणीवाल शिक्षण की सम्पूर्ण अरदास के लिए नौ बजे रात्रि का समय दिया गया। सारा गाँव गुरुद्वारा साहिब में एकत्रित हुआ था। सभी विद्यार्थियों ने एक ही समय में शिक्षण का इकट्ठा भोग डाला। अरदास उपरान्त कृपा रूपी हुक्मनामा हजूर ने स्वयं सुनाया। हुक्मनामा के पश्चात् कड़ाह प्रसाद की देग बाँटते रात्रि के दस बजे का समय हो गया। सारी संगत किसी विशेष आनन्द में बैठी कड़ाह प्रसाद प्राप्त कर रही है ओर उधर स्थिर रात्रि नहर का किनारा, एक मधुर-मधुर ध्वनि कानों में सुनाई दे रही है—

जंमणु मरणहु बाहरे परउपकारी जग विचि आए।
भाउ भगति उपदेसु करि साध संगति सचखंडि वसाए।
मान सरोवरि परमहंस गुरमुखि सबद सुरति लिव लाए।
चंदन वासु वणासपति अफल सफल चंदन महकाए।
भवजल अंदरि बोहथै होइ परवार सधार लंघाए।
लहरि तरंगु न विआपई माइआ विचि उदासु रहाए।
गुरमुखि सुख फलु सहजि समाए।

(भाई गुरदास १२/१८)

आदर्श संयोग और मुम्बई में नाम प्रदान

परोपकारी-संस्था निर्मल आश्रम अस्पताल में जहाँ सैकड़ों रोगी प्रतिदिन औषधि प्राप्त करके निरोग होते हैं, वहाँ सेवा आदि के कार्यों में भी काफी लोग अपना योगदान दे रहे हैं। एक परिवार-बाबू आत्म प्रकाश और उसकी पत्नी माता शशि भी अस्पताल रूपी इस बड़े वृक्ष को किसी न किसी रूप में सींच रहे हैं। सेवा के साथ-साथ यह परिवार आश्रम की सेवा में भी निरन्तर योगदान दे रहा है। सर्दी हो अथवा गरमी, वर्षा हो या कोई अन्य ऋतु, यह प्रेमी अपनी दो बेटियों और एक बेटे को साथ लेकर प्रात: चार बजे लंगर बनाने वाली सेवा में सम्मिलित हो जाते हैं। यह इनका बिना किसी अनुपस्थिति के प्रतिदिन और कई वर्षों का पक्का नियम है। तीनों बच्चे स्कूलों, कॉलेजों में पढ़ते हैं। स्कूल समय के बाद दोनों लड़कियाँ आश्रम में पहुँच कर सेवा आरम्भ कर देती हैं। सेवा चाहे पाठ साहिब की हो या लंगर आदि की या फिर कपड़े वस्त्र आदि संभालने की यानि दोनों लड़कियाँ आश्रम को अपना घर समझ कर सेवा में लगी रहती हैं। एक दिन हजूर की कृपा-दृष्टि इस परिवार की सेवा पर पड़ी तो आत्म प्रकाश को आज्ञा दी कि लड़कियों के विवाह के लिए कोई घर देखो। बाबू जी ने प्रार्थना की, महाराज! हमें क्या चिन्ता है आप ही संयोग बनाने वाले हो और आप ही संयोग के लिखने वाले हो। हजूर शान्त रहे, कुछ ना बोले। समय व्यतीत होता गया और आप जगत उद्धार के कार्य करते हुए मुम्बई शहर पहुँचे। आप की एक अनन्य चरण सेवक माता श्रीमती जानू अडवाणी को एक दिन अपनी मौज में बोले! बच्चे पढ़ लिख कर नौकरियों में लग गए हैं अब इनकी शादी? माई जानू अडवानी ने दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना की, महाराज! मुझे क्या चिन्ता है, करने कराने वाले आप ही हो हम क्या कर सकते हैं? आप जहाँ करोगे, जब करोगे, जैसे करोगे, नहीं करोगे, सो उपयुक्त ही होगा। हम ने कभी सोचा ही नहीं कि यह कार्य हम करेंगे।

अब मई मास चल रहा है, माई जानू का बेटा निरंजन दुबई से वापिस आकर हजूर के दर्शन करने के लिए ऋषिकेश पहुँचा हुआ है। जब काफी दिन सेवा करते हुए हो गए तो एक दिन हजूर ने पूछा, विवाह का क्या विचार है? निरंजन ने प्रार्थना की, महाराज! मेरा क्या विचार है? आप जैसा करोगे उपयुक्त, नहीं करोगे तब भी उपयुक्त! लड़के की बात सुन कर आप कुछ नहीं बोले।

एक दिन सायं को निरंजन कुछ पैंट कमीज आदि नए कपड़े बाज़ार से लेकर आ रहा था। हजूर ने पूछा, कहाँ से आया है? महाराज 28 मई को राजकोट गुजरात मेरी बुआ के बेटे की शादी है। शादी में शामिल होने के लिए नए कपड़े सिला कर लाया हूँ। हजूर बोले, बुआ के लड़के की शादी के लिए या अपनी शादी के लिए? निरंजन हंस कर चुप हो गया। एक दो दिन के बाद बुआ के बेटे की शादी में सम्मिलित होने के लिए मुम्बई पहुँचा, लेकिन आगे जा कर ज्ञात हुआ कि विवाह रद्द हो गया। अपनी माता को लेकर फिर वापिस ऋषिकेश आ गया। उस का मामा श्री प्रेम वासवानी भी हजूर के चरणों में प्रार्थना करने आया कि इस वर्ष आप की मुम्बई जाने की टिकट की सेवा मुझे दीजिए और कृपया मेरे घर ही रुक कर संगत को सत् उपदेश करो ताकि आप जी का और संगत की सेवा करने का सुअवसर मुझे मिले। ऐसे यह प्रेमी परिवार सेवा भावना को मन में लेकर इकतीस मई 1996 के दिन आश्रम पहुँचे। दूसरे दिन यानि एक जून को हजूर ने इनको निरंजन के विवाह के बारे में पूछा? इन प्रेमियों ने पहले वाला ही उत्तर दिया : हम क्या कर सकते हैं? हजूर बोले! आत्म प्रकाश की लड़की से विवाह

कर दें? प्रार्थना की, महाराज जैसे आप जी की मौज! अब हजूर ने आत्म प्रकाश को बुला कर पूछा, जानू के बेटे के साथ पूनम की शादी कर दें? आत्म प्रकाश के परिवार ने भी उन्हीं जैसा उत्तर दिया। हजूर ने दोनों परिवारों को आज्ञा दे दी कि परसों तीन जून को संगत एकत्रित होगी, क्योंकि दरबार साहिब के पीछे की तरफ बन रहे नए भवन का पहला लैण्टर डालना है, इसीलिए अगर तुम दोनों परिवारों का विचार है तो उसी दिन प्रातः श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के समक्ष दरबार साहिब में शादी कर लो। दोनों परिवारों ने प्रार्थना की, महाराज! धन्यवाद के लिए हमारी तरफ से अखण्ड पाठ साहिब शुरु करा दो। हजूर ने सेवादारों को हुक्म कर दिया कि कल इन दोनों परिवारों की तरफ से दो अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ कर लेने और मध्य के दिन इन की शादी है।

तीसरे दिन सारी संगत प्रातः अरदास करके लैंटर सेवा में लग गई। इधर दरबार साहिब में आनन्द कारज शुरु हो गए। वह देखो! प्रभु के खेल! सेवा पर कैसे प्रसन्न हो गए। आप किसी शादी में शामिल नहीं होते, लेकिन आज केवल शामिल ही नहीं हुए अपितु लड़की को आश्रम की बेटी समझ कर लड़के का पल्ला आप पकड़ा रहे हैं। सारी शादी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की हजूरी में आप के समक्ष हुई। लावां के पाठ के बाद अरदास उपरान्त लड़की-लड़के को आज्ञा दी कि चल रही लैंटर सेवा में पाँच-पाँच तसले उठाकर अपना हिस्सा डालो।

अब प्रेम वासवानी जो इस लड़के का मामा है ने वापिस जाने से पहले आप जी को मुम्बई ले जाने की सेवा की प्रार्थना की। दाते ने स्वीकृति दे दी कि सितम्बर के शुरु में आएंगे। उपरोक्त दिए वचन अनुसार आठ सितम्बर को, उत्तम वासवानी जो प्रेम वासवानी का भाई दिल्ली रहता है, उसकी कार में दिल्ली पहुँचे। दिल्ली करनाल की काफी संगत दर्शन के लिए एकत्रित हुई थी, इसीलिए रात के ग्यारह बजे तक सत्संग चलता रहा। वासवानी परिवार ने हजूर और संगत की बड़े प्रेम से सेवा की तथा सब के रहने का प्रबन्ध किया। दूसरे दिन नौ सितम्बर नौ बजे की उड़ान द्वारा मुम्बई पहुँचे। आगे दर्शन करने के लिए हवाई अड्डा पर काफी संगत पहुँची हुई है। सबकी कुशल क्षेम पूछने के उपरान्त प्रसाद बाँट कर श्री प्रेम वासवानी की कार में बैठ कर उसके घर मॅलाड़ विराजमान हुए। तेरह तारीख तक उसके घर ही बैकुण्ठ बना रहा। संगत पूरा दिन दर्शन के लिए आती रही है। सायं को सत्संग में तो काफी संगत जुड़कर लाभ उठाती है। वासवानी परिवार द्वारा संगत की और संगत के स्वामी की बड़े चाव से सेवा की जाती है। तेरह तारीख सायं श्री अमरीक चन्द जी चावला की प्रार्थना स्वीकार करके उसके घर सात बंगला में विराजमान हुए। यहाँ पर कमला और पद्मा आदि माताओं ने नाम की याचना की। आपने हुक्म कर दिया परसों दोपहर आश्रम में होंगे, वहाँ ही गुरु नानक के घर का प्रसाद तुम्हें दिया जाएगा। दूसरे दिन आश्रम में हर रविवार के नियमानुसार कीर्तन अरदास समाप्ति के बाद कमला और पद्मा दोनों माताओं को नाम की ईश्वरीय दात प्रदान की। उपरान्त अन्य काफी संगत जो ढ़ाई साल से यानि जब से आश्रम खुला है बड़े प्रेम से सेवा करती आ रही है ने प्रार्थना की कि महाराज! हमारे पर भी नाम की कृपा कर दो। अलौकिक दाता उन की सेवा पर भी प्रसन्न हो गए और आज्ञा दे दी, उनतीस तारीख को रविवार का सत्संग यहाँ आश्रम में ही होगा। उस दिन आपको भी गुरु नानक के जहाज में सवार कर दिया जाएगा। अब कुछ दिन चावला जी के घर रुक कर उनके घर तथा अपने आश्रम में गुरुवाणी रूपी अमृत की वर्षा होती रही जिस से विशेष रूप से चार बँगला, सात बँगला और लोहखण्ड वालों की संगत लाभ उठाती रही। अब दूसरे क्षेत्र के लोगों का निवेदन स्वीकार करके उधर की यात्रा आरम्भ कर दी। पहले दो दिन श्रीमती जानू अडवानी के घर खार, फिर श्रीमती प्रमिला संगतवानी की

आपे हरि इक रंगु है आपे बहु रंगी।।
(ईश्वरीय नूर अलौकिक मौज में मग्न हुआ अनेकों रूपों में)

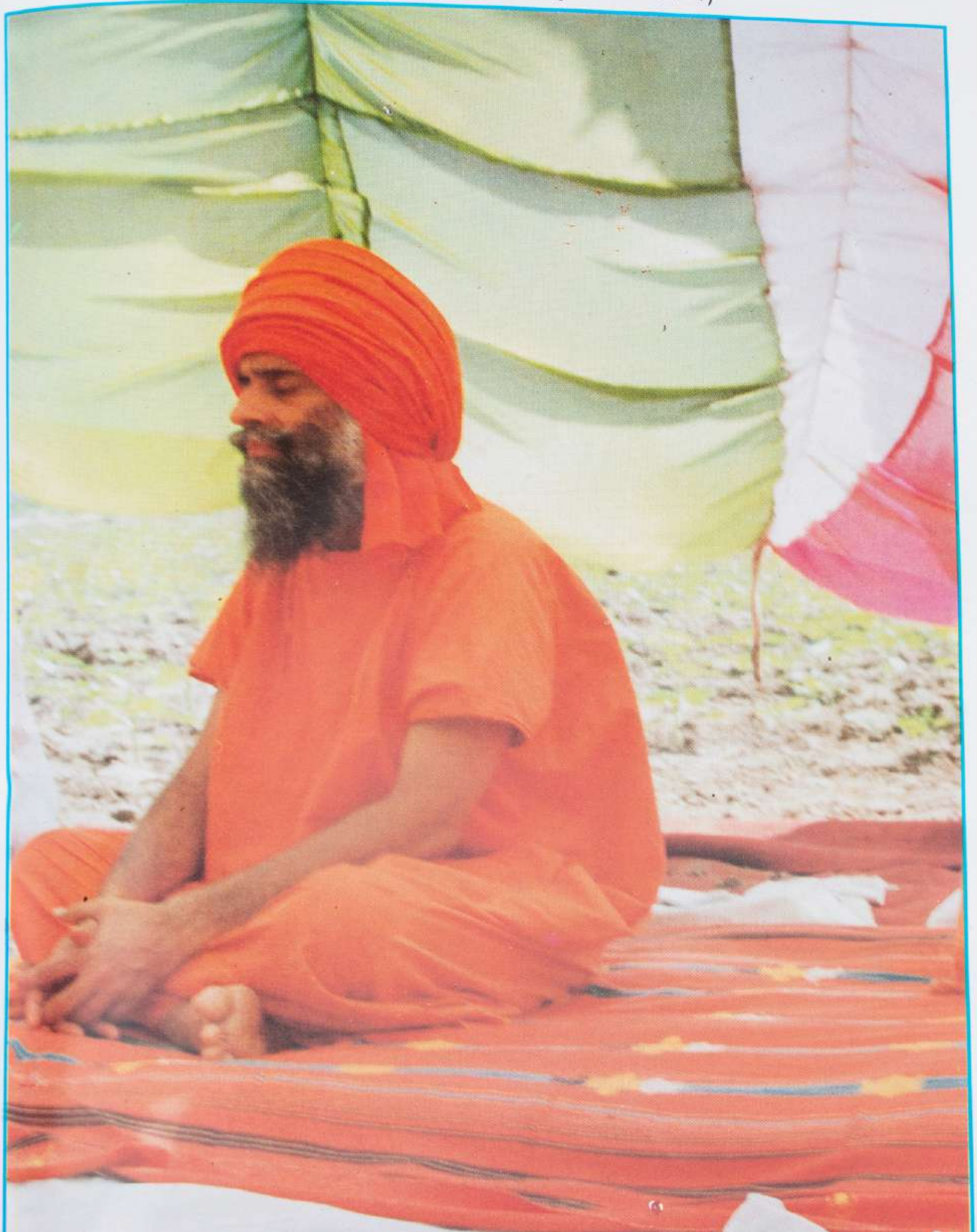

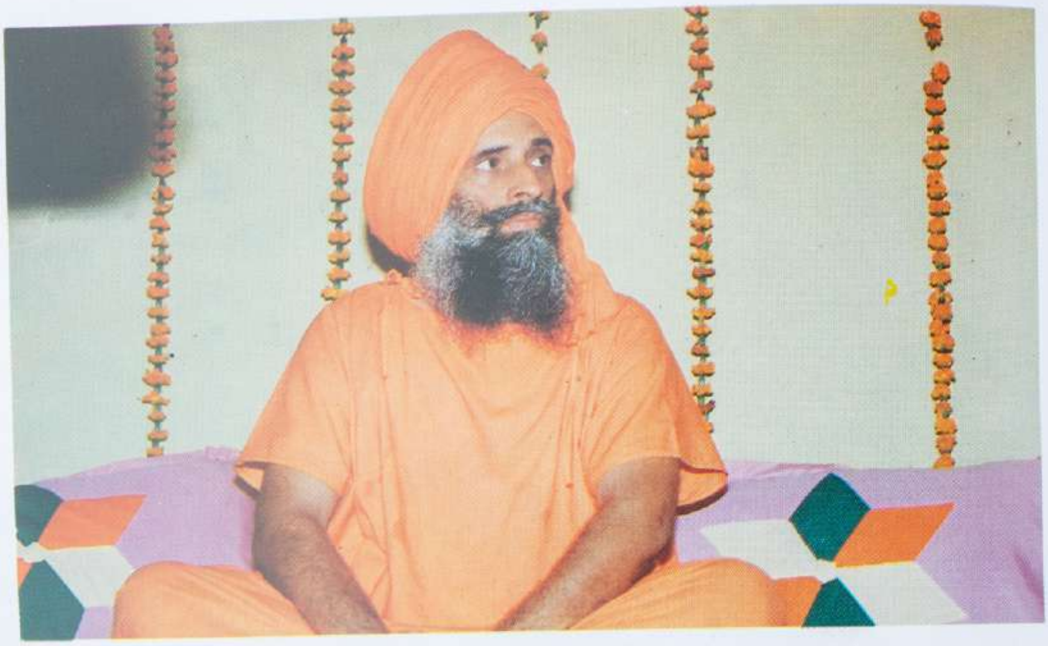

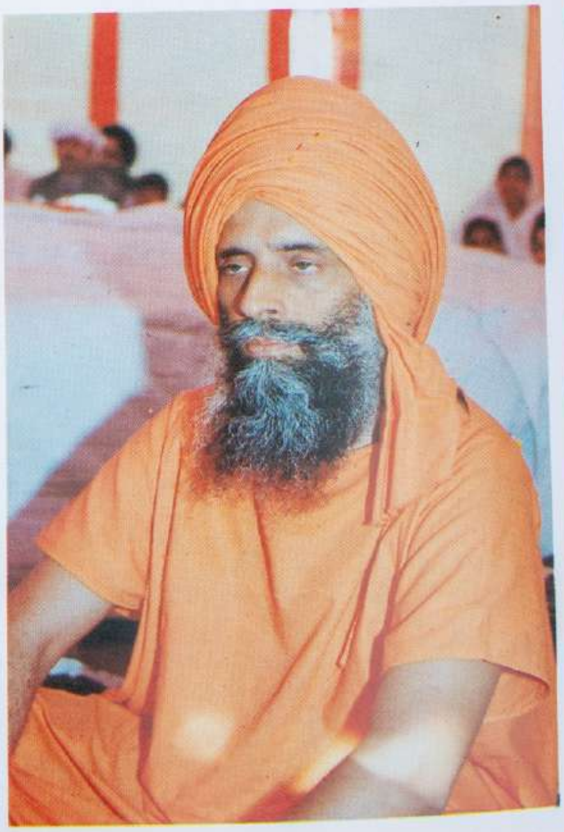

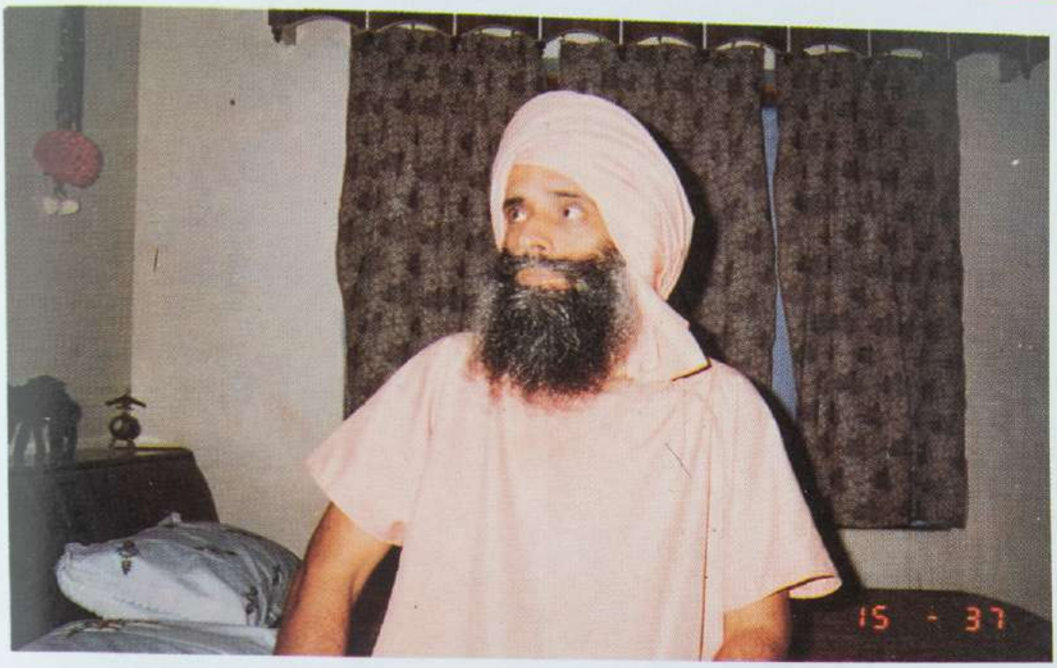
15 - 37

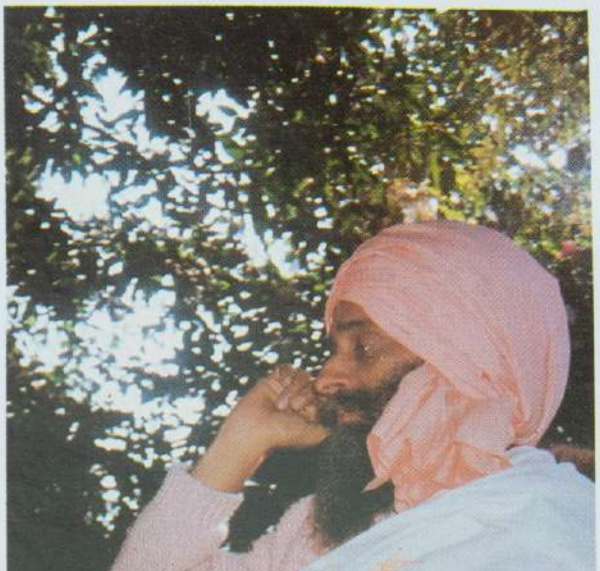

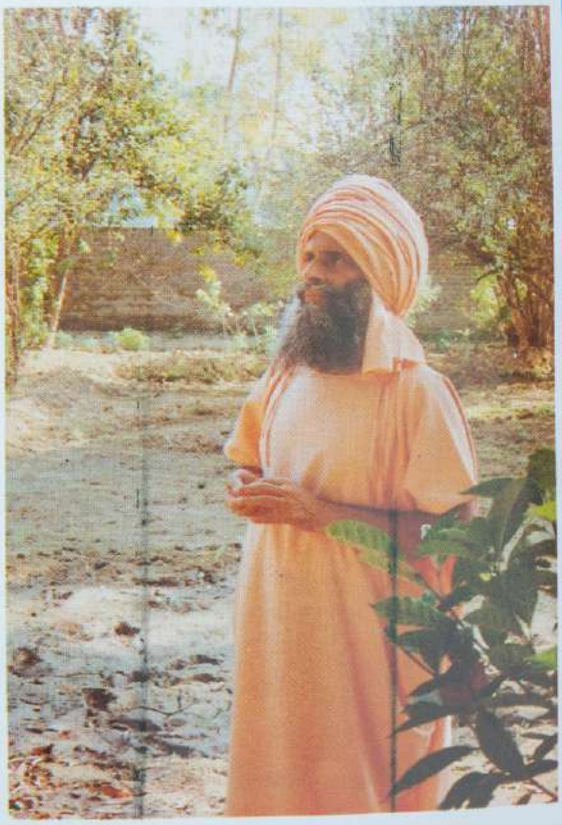

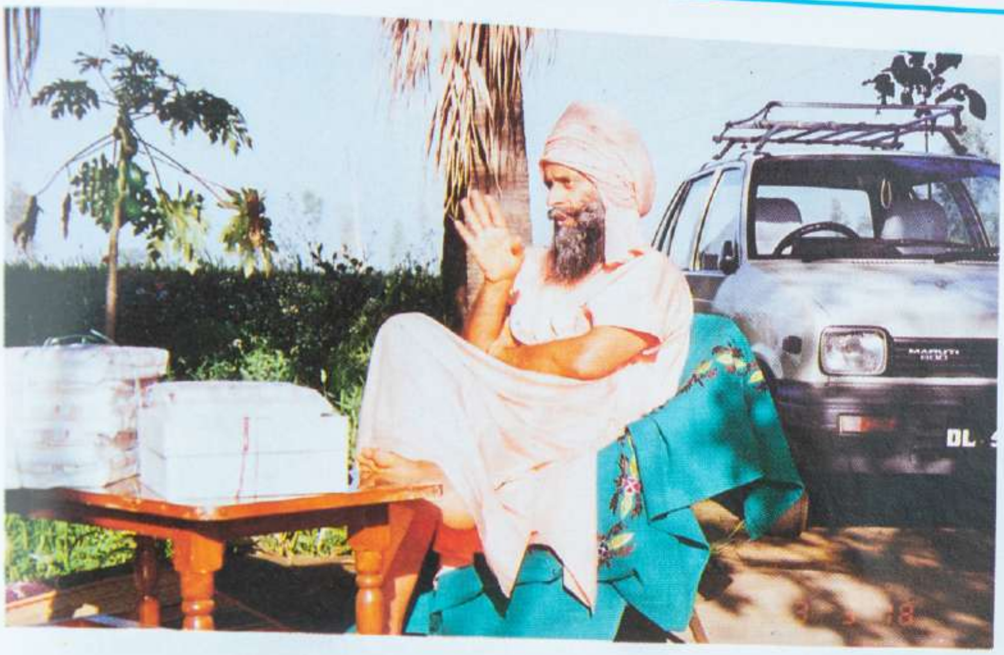

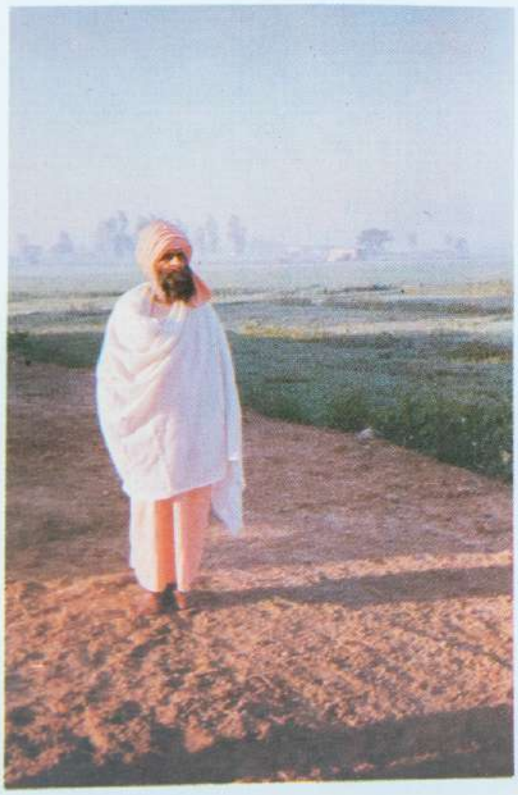

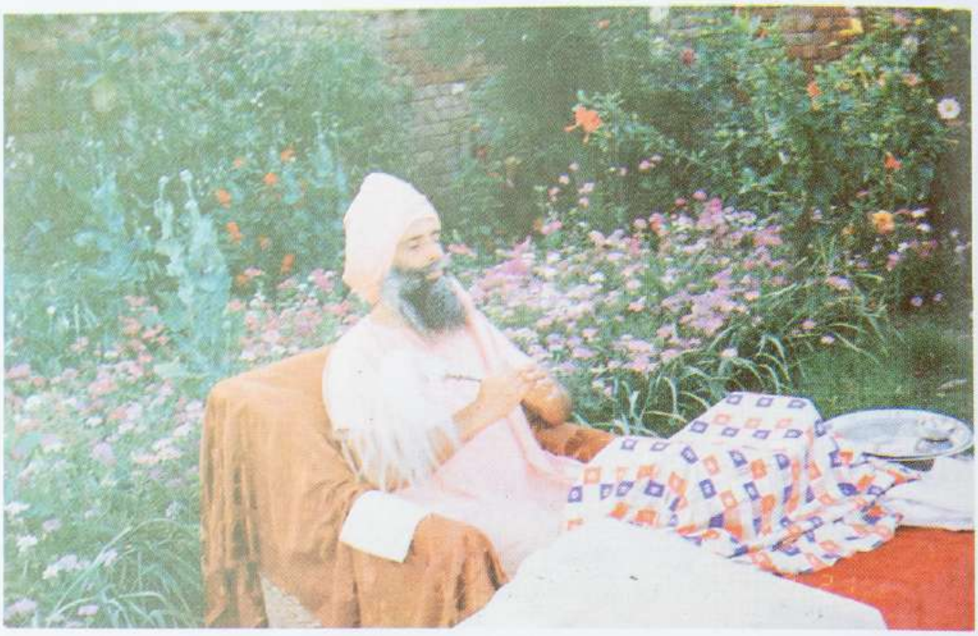

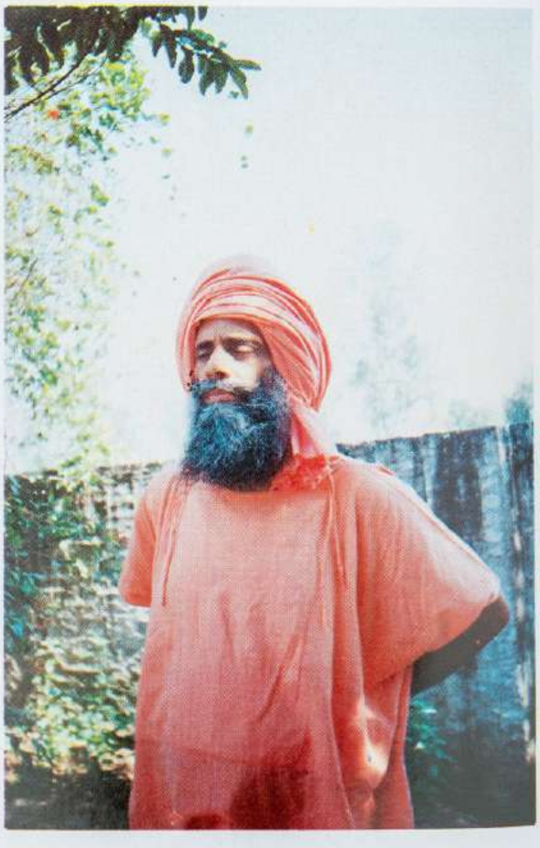

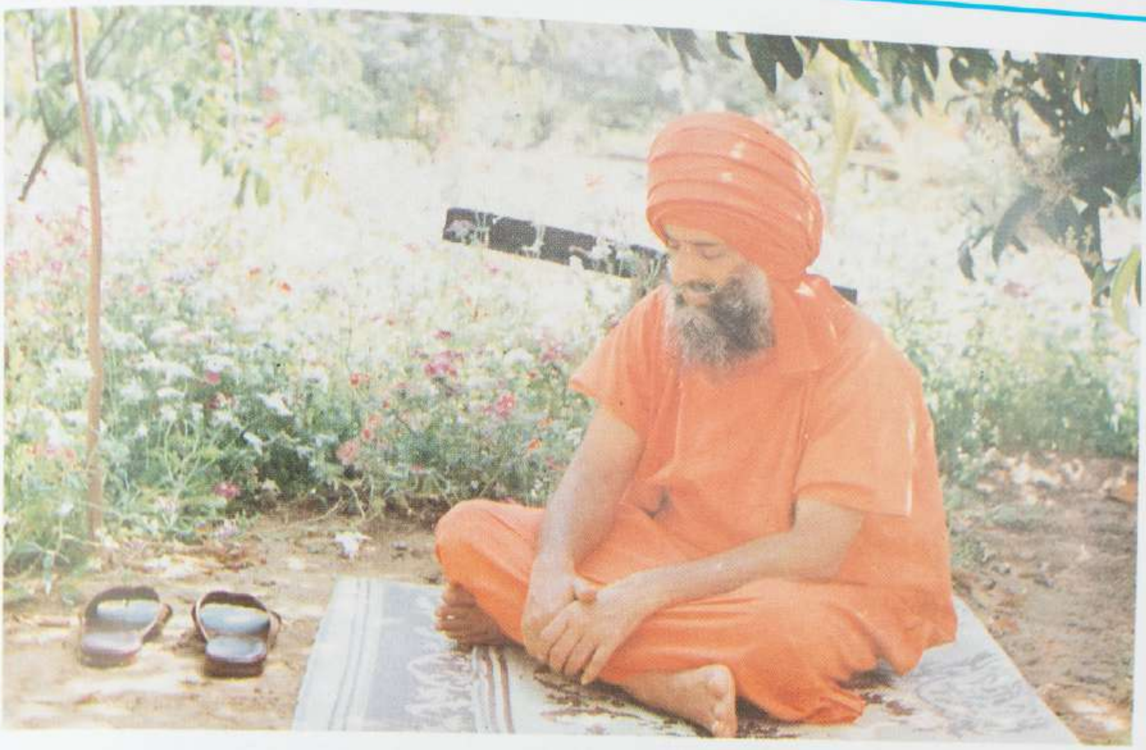
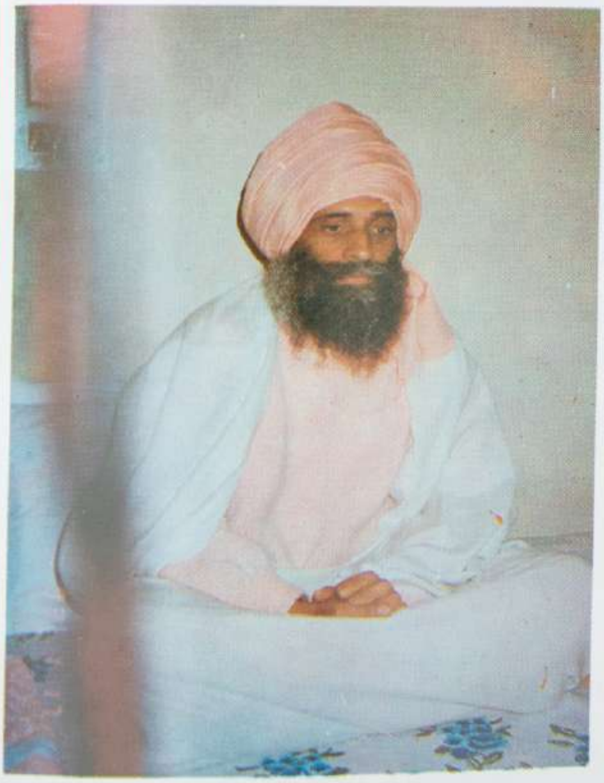

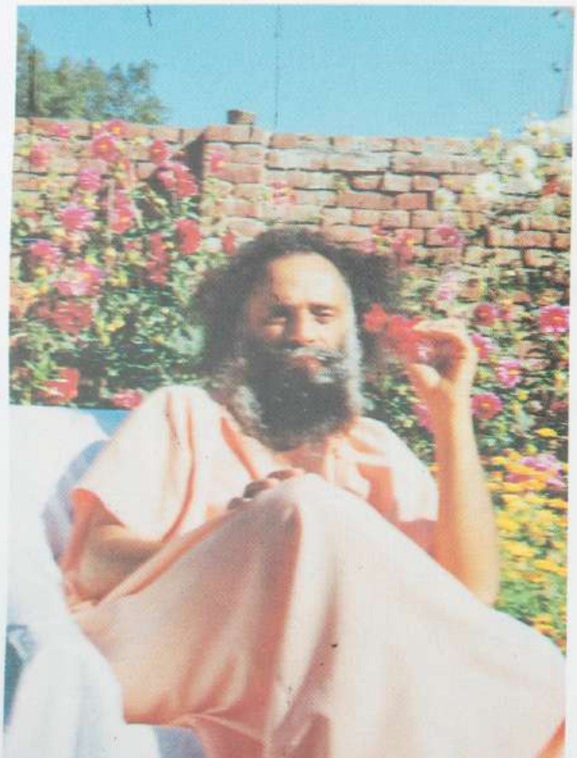

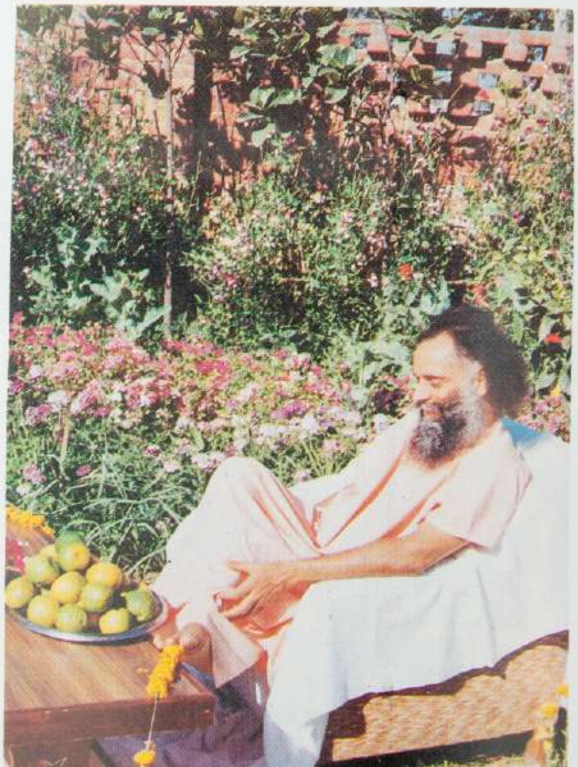

प्रार्थना पर दो दिन उसके घर चम्बूर, फिर श्री गुलचैनानी की प्रार्थना स्वीकार करके तीन दिन चर्च गेट, फिर मूलंद की संगत की प्रार्थना स्वीकार करके श्री शाम कविता जोगेशिया के घर मूलन्द ठहर के ईश्वरीय वाणी के कीर्तन सत्संग का प्रवाह चलता रहा। अब अठाईस सितम्बर फिर श्री अमरीक चन्द चावला जी के घर विराजमान हुए। दूसरे दिन उनतीस तारीख को आश्रम में दीवान की समाप्ति के बाद पन्द्रह दिन पहले दिए वचनानुसार श्री दिलीप और उन की धर्म पत्नी बीबी हेमा तहिलियानी, रतना बेलानी, बीबी ममता और एक अन्य माता को नाम की अमूल्य दात प्रदान कर गुरु नानक के यान में सवार कर दिया। उसी दिन सायं को श्री प्रेम वासवानी के घर मलाड़ पहुँचे। इस प्रकार बीस दिन मुम्बई शहर में ठहर कर गुरुवाणी रूपी अमृत की वर्षा करते रहे तथा कई सौभाग्यशाली लोगों की सेवा को फल लगा कर यानि अधिकारी जानकर नाम की दात का ईश्वरीय प्रसाद प्रदान कर और कई लोगों के पदोन्नति आदेश पर हस्ताक्षर करके तीस सितम्बर 1996 को सुबह नौ बजे की उड़ान पर सवार हो कर देहली वापिस आ गए।

1996 का पुण्यतिथि समागम और भगत लॅभामल जी का सच्चखण्ड प्रयाण

बीस दिन मुम्बई की यात्रा सम्पूर्ण करके और दो दिन दिल्ली की संगत को दर्शन देकर दो अक्तूबर को वापिस ऋषिकेश पहुँच गए। पुण्यतिथि समागम आरम्भ होने वाले हैं, इसीलिए संगत ने भी आना आरम्भ कर दिया। आप जी भी प्रथम पुण्यतिथि मनाने के लिए संगत को साथ लेकर पाँच अक्तूबर के दिन निर्मल बाग कनखल पहुँच गए। सेवा वाली संगत ने तो भवन की सफाई आरम्भ कर दी। इधर दरबार साहिब में ईश्वरीय वाणी के श्री अखण्ड पाठ साहिब प्रारम्भ हो गए। प्रतिदिन प्रातः संगत द्वारा मिलकर ईश्वरीय वाणी के कीर्तन और श्री सुखमनी साहिब के पाठ द्वारा समय का सद् उपयोग किया जा रहा है। सात अक्तूबर के दिन प्रातः अखण्ड पाठों के भोग उपरान्त श्रीमान् संत मदन मोहन हरि जी की याद में संत समाज को गुरु नानक के लंगर में से पक्का भण्डारा वितरित किया गया जिस में काफी संख्या में सन्त महात्माओं ने पहुँच कर गुरु की कृपा समझ कर प्रसाद पानी ग्रहण किया।

आज सात अक्तूबर के दिन परम पूजनीय सचखण्ड वासी श्रीमान् १०८ महन्त बाबा बुड्ढा सिंह महाराज जी की 59वीं बरसी और परम पूजनीय ब्रह्मलीन श्रीमान् १०८ सन्त बाबा निक्का सिंह विरक्त जी की तेरहवीं बरसी मनाने के लिए नए बने हाल में इकतीस श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ किए। इस समय तक संगत भी काफी संख्या में पहुँच चुकी है। बीबी हरमिन्द्र कौर करनाल और माता मोहिनी बाई मुम्बई वाले सुबह आसा जी दी वार का कीर्तन दरबार साहिब में करते हैं और सायं को बाहर खुले पण्डाल में दीवान सजता है जिसमें सर्वप्रथम महापुरुषों की मर्यादा अनुसार श्री सुखमनी साहिब जी के पाठ, फिर ईश्वरीय वाणी के कीर्तन उपरान्त रात्रि नौ बजे आरती करके समाप्ति होती है। उधर गुरु के लंगर निरंतर चल रहे हैं जिसमें काफी संगत सेवा कर रही है। इस प्रकार यहाँ पहुँची सारी संगत सेवा, सत्संग और सिमरन द्वारा समय को सफल कर रही है। आज नौ अक्तूबर के दिन प्रातः इक्कतीस श्री अखंड पाठों के भोग डाले गए, उपरान्त हाल में ही दीवान सत्संग शुरु हुआ। पहले ईश्वरीय वाणी के कीर्तन द्वारा हरि यश गायन किए गए, बाद में संत महापुरुषों की ओर से संत समागम आरम्भ हुआ। सभी महापुरुषों ने अपने-अपने अनुभवों द्वारा पारमार्थिक उपदेश दिए। उपरान्त ठीक साढ़े बारह बजे सम्पूर्णता

की अरदास करके गुरु के लंगर आरम्भ हुए। पहले संत महापुरुषों की पंक्ति लगाई गई, बाद में सारी संगत ने प्रसाद पानी ग्रहण किया। सारी संगत के गुरु के लंगर से लंगर ग्रहण करने के पश्चात् महापुरुषों ने अपने कर कमलों द्वारा प्रसाद वितरित करना आरम्भ किया। जो संगत घर वापिस जाना चाहती है वे प्रसाद लेकर जा रही है तथा जिन्होंने दूसरी पुण्यतिथि तक रुकना है वे ऋषिकेश पहुँच रही है। सायं को पूज्य महंत महाराज जी, सन्त बाबा जोध सिंह जी और सन्त बाबा गुरिन्द्र सिंह (छोटू बाबा) जी सारी संगत को साथ लेकर ऋषिकेश पहुँच गए।

दूसरे दिन अखण्ड पाठों की शृंखला आरम्भ हो गई। यह पाठ सेवा चाहे सारा वर्ष ही चलती रहती है, लेकिन अब महापुरुषों की याद मनाने के लिए विशेष मानी जाती है। अखण्ड पाठों के साथ-साथ श्री सुखमनी साहिब के पाठ और कीर्तन द्वारा गुरुवाणी का अमृत प्रवाह प्रतिदिन प्रवाहित होता रहता है।

आज सत्रह अक्तूबर के दिन आदरणीय भक्त लॅभामल जी जो कि पैंतीस वर्षों से निरन्तर कुटिया की सेवा सम्भाल करते आ रहे हैं, सायं को पाँच बजे दिल का दौरा पड़ने से कुछ ही मिनटों में अपना पाँच भौतिक शरीर त्याग गए। करनाल की संगत द्वारा जहाँ दिल्ली, मुम्बई आदि स्थानों पर फोन किए गए वहाँ पूज्य महन्त महाराज जी को ऋषिकेश टेलीफोन द्वारा निवेदन करके भगत लॅभामल जी के मृतक शरीर का अन्तिम संस्कार करने के लिए समय पूछा गया। आप जी ने हुक्म किया कि पुण्यतिथि समागम के लिए कल इकतीस श्री अखण्ड पाठ आरम्भ होने हैं इसीलिए पाठ आरम्भ होने के बाद सायं के पाँच बजे हम करनाल कुटिया पहुँच रहे हैं। इसलिए उस समय तक संस्कार आदि क्रिया की सब तैयारी कर लेना।

आज 18 अक्तूबर, 1996 को सूर्य उदय होने वाला है, जहाँ आज शुभ दिन पर पूज्य महन्त आत्मा सिंह महाराज जी की तेइसवीं पुण्यतिथि और परम आदरणीय महन्त नारायण सिंह जी की चौदहवीं पुण्यतिथि मनाने के लिए इकतीस श्री अखण्ड पाठ साहिब आरम्भ होने हैं, वहाँ पूज्य महाराज श्रीमान् १०८ महन्त बाबा राम सिंह जी का जन्म दिवस मनाने के लिए बड़े स्तर पर संगत नीचे तैयारी कर रही है। अनेक प्रकार के फूलों के हार गूँथ कर दरबार साहिब को बैकुण्ठ की तरह सजाया जा रहा है। उधर अलौकिक प्रीतम की मौज देखो! प्रात: सवा चार बजे किसी स्वयंवर की रचना कर रहा है, जिसके बारे में दाते के अतिरिक्त सम्भवत: संसार के किसी दूसरे व्यक्ति को ज्ञात नहीं, शायद इसीलिए ही उच्चारण किया है—

बीउ पूछि न मसलति धरै॥ जो किछु करै सु आपहि करै॥

(गो० म० ५, पृष्ठ ८६३)

दाता अपने आनन्द में लीन हुआ, उधर अपने कमरे में कोई कौतुक कर रहे हैं, इधर दरबार साहिब में आपके जन्म की तैयारियाँ हो रही हैं। वहाँ बीबी हरमिन्द्र कौर करनाल ने ईश्वरीय वाणी श्री आसा जी दी वार का कीर्तन आरम्भ कर दिया। समय अनुसार श्री आसा जी दी वार के भोग डाले गए। फिर संगत ने गुरु के लंगर से प्रसाद पानी ग्रहण किया। उपरान्त दस बजे के लगभग संगत हजूर का अवतरण दिवस मनाने के लिए बाहर पण्डाल में एकत्रित हो गई। संगत द्वारा केक वगैरह की तैयारी कर ली गई है, उधर अलौकिक प्रीतम भी स्वयंवर की सारी रस्में पूरी करके और खुले हाथों से दहेज के खुले खज़ाने प्रदान कर अपनी मौज में अर्श से नीचे उतर आए। मोहिनी बाई मनसुखानी ने गुरुवाणी के उचित शब्दों द्वारा बहुत ही रसयुक्त कीर्तन किया। उपरान्त पुष्प वर्षा करके केक काटने की रस्म की गई। इस प्रकार संगत ने बहुत ही उत्साह से यह समागम

मनाया। अब श्री अखण्ड पाठ साहिब शुरु करने का समय हो गया। इसीलिए सेवादार प्रेमियों ने दरबार साहिब में सारी तैयारी कर ली। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के इकतीस पावन स्वरूप और एक जपुजी साहिब की पोथी के प्रकाश कर लिए गए हैं। श्री गुरु नानक देव जी महाराज जी के पवित्र चरणों में अरदास करके पूज्य महाराज जी ने अपने पवित्र मुख से ईश्वरीय वाणी से हुक्मनामा उच्चारित करके श्री अखण्ड पाठों का शुभारम्भ किया।

इस वार्षिक समागम के लिए अखण्ड पाठ आरम्भ करके आप जी तेरह अन्य व्यक्तियों के साथ भगत लॅभामल जी के अन्तिम संस्कार में सम्मिलित होने के लिए करनाल की तरफ रवाना हो गए। आगे संगत के द्वारा संस्कार की क्रिया के लिए हर तरह की तैयारी की हुई थी। आप जी ने अठारह अक्तूबर को सायं के लगभग पाँच बजे अपने पवित्र कर कमलों द्वारा चिता को आग दिखाई। दूसरे दिन उन्नीस अक्तूबर को भगत जी की चिता से अस्थियाँ चुनकर काफी संगत और गाड़ियों के काफिले द्वारा ऋषिकेश पहुँचे। गुरु घर की पुरातन मर्यादा अनुसार कड़ाह प्रसाद की देग सजाकर अरदास उपरान्त संगत के भारी समूह के साथ गंगा के किनारे पर पहुँचे। वहाँ कीर्तन सोहिले के पाठ उपरान्त सैंकड़ों व्यक्तियों की उपस्थिति में पूज्य महन्त महाराज जी ने अपने पवित्र कर कमलों द्वारा भगत जी की अस्थियों को गंगा के पवित्र जल में प्रवाह किया।

उधर अखण्ड पाठों के प्रारम्भ करने के पश्चात् श्री सुखमनी साहिब जी के पाठ, गुरुवाणी के कीर्तन हरि यश द्वारा चल रहे प्रवाह में हज़ारों की संख्या में संगत अपना समय सफल करती रही। तीसरे दिन यानि बीस अक्तूबर, 1996 के दिन प्रातः इकतीस श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डाले गए। बाद में बड़े हॉल में दीवान सजा। कीर्तन, संत समागम समाप्ति की अरदास करके गुरु के लंगर जिसमें अनेक प्रकार के स्वादिष्ट पदार्थ तैयार किए गए थे, संगत में वितरित किए। लंगर छकने के बाद हजूर ने पवित्र कर कमलों द्वारा प्रसाद वितरित करना आरम्भ किया। संगत प्रसाद लेकर घरों को लौट रही है। इस प्रकार महापुरुषों की पवित्र याद में काफी दिन से चल रहे सेवा, सिमरन और सत्संग के प्रवाह जिस में हज़ारों की संगत ने स्नान किया, आज सम्पूर्ण हो गया।

स्कूल का उद्घाटन समारोह

पुण्यतिथि समागम के उपरांत सेवक संगत को दी हुई तिथि अनुसार यात्रा आरम्भ कर दी। नवम्बर का सारा मास और आधे दिसम्बर तक यात्रा सम्पूर्ण करके वापिस ऋषिकेश आ गए, क्योंकि जिस निर्मल आश्रम दीपमाला पगरानी नाम के शिक्षा मन्दिर की लगभग अढ़ाई साल पहले नींव रखी थी अब वह अपना मधुर फल देने के योग्य हो गया है, इसलिए उसका उद्घाटन समारोह मनाने के लिए एक जनवरी 1997 का शुभ दिन नियत कर लिया गया। इस महान् समागम में सम्मिलित होने के लिए देश-विदेश में संगत को निमन्त्रण-पत्र भेजे गए। उनतीस दिसम्बर सायं तक पर्याप्त संख्या में संगत पहुँच गई। तीस दिसम्बर 1996 को विद्यालय के नए बने भवन में इकतीस श्री अखण्ड पाठ साहिब और दो जपुजी साहिब के अखण्ड जाप आरम्भ किए गए। सायं को खुले पण्डाल में दीवान सजाए गए जिसमें श्री सुखमनी साहिब जी के पाठ और हरि कीर्तन द्वारा रात्रि के साढ़े आठ बजे तक गुरुवाणी का प्रवाह चलता रहा। फिर साढ़े आठ से नौ बजे तक आरती द्वारा अर्चना उपासना करके समाप्ति की। इकतीस दिसम्बर के दिन मध्य के भोग बाद पूज्य महाराज जी ने अपने पवित्र कर-कमलों द्वारा पाठी

सेवादारों को सिरोपे प्रदान किए। कल का लंगर आश्रम से ही बन कर आया था, लेकिन आज प्रात: से ही विद्यालय में तैयार हो कर निरन्तर भण्डारे चल रहे हैं। कल की भाँति आज भी सायं को चार बजे फिर पण्डाल में दीवान सजा, जिसमें महापुरुषों के नियमानुसार पहले श्री सुखमनी साहिब जी के पाठ, फिर शब्द कीर्तन द्वारा ईश्वरीय वाणी की रात्रि नौ बजे तक मधुर वर्षा होती रही। उपरान्त आरती करके साढ़े नौ बजे आज के समागम की सम्पूर्णता हुई। तीसरे दिन एक जनवरी 1997 के दिन प्रात: आठ बजे अखण्ड पाठ साहिब के भोग आरम्भ हो गए जो साढ़े नौ बजे तक सम्पूर्ण समाप्ति के पश्चात् बाहर पण्डाल में समागम आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम ईश्वरीय वाणी के कीर्तन द्वारा हरि यश गायन हुए। उसके बाद सन्त महापुरुषों द्वारा पारमार्थिक विचार हुए जिन में औरों के अतिरिक्त निर्मल वेश के सर्वोच्च निर्मल पंचायती अखाड़े के श्री महन्त साहिब श्री ज्ञान देव सिंह जी शास्त्री ने भी प्रवचन किए। बाद में विद्यालय का कार्यक्रम आरम्भ हुआ, जिस में स्कूल के प्रधानाचार्य महोदय श्री एल० के० त्रिवेदी जी, डॉ० श्री जगदीश चावला जी, प्रो० श्री मदन लाल जी गुलाटी आदि विद्वानों ने विद्यालय के भविष्य पर प्रकाश डाला, जिसमें विद्यार्थियों को क्या-क्या सुविधाएँ दी जाएंगी, शिक्षा का स्तर कैसा होगा, छात्रावास में क्या-क्या सुविधाएँ दी जाएंगी, विद्यालय में स्विमिंग पुल आदि की क्या-क्या सुविधाएँ होंगी आदि समस्याओं पर पूर्ण रूपेण व्याख्या की गई। उपरान्त श्री गुरु नानक देव महाराज जी के पावन चरणों में अरदास निवेदन करके सारे समागम की समाप्ति हुई। गुरु के लंगर में यद्यपि परसों से ही निरन्तर भण्डारे जारी हैं, लेकिन आज तो विशेष रूप से प्रबन्ध किया गया है जिसमें क्षेत्र के असंख्य गरीब लोग लंगर छक रहे हैं। इस प्रकार सारी संगत गुरु के लंगर से प्रसाद छक कर, महापुरुषों से आशीर्वाद रूपी प्रसाद लेकर लौट गई।

1997 की मुम्बई यात्रा

श्री अमरीक चन्द चावला जी और मुम्बई निवासी संगत की प्रार्थना स्वीकार करके आप जी ने छब्बीस जनवरी 1997 को मुम्बई जाने का कार्यक्रम बनाया। ऋषिकेश से दिल्ली और दिल्ली से मुम्बई तक जाने की सारी सेवा श्री चावला जी ने ली हुई है। निश्चित किए गए कार्यक्रम अनुसार श्री चावला जी का परिवार अपनी गाड़ी में पच्चीस जनवरी को दिल्ली ले गया। रात्रि का विश्राम चावला जी के घर किया, यहीं पर दिल्ली निवासी संगत को दर्शन प्रदान किए। छब्बीस जनवरी के दिन दिल्ली में गणतन्त्र दिवस मनाए जा रहे थे इसीलिए अधिक भीड़ होने के कारण सायं पाँच बजे की उड़ान द्वारा मुम्बई पहुँचे। आगे हवाई अड्डे पर श्री चावला तथा अन्य काफी संगत पहुँची हुई थी। सबसे कुशल क्षेम पूछने के पश्चात् प्रेम भरी दृष्टि से देखकर खुशियों की वर्षा की। अब चावला जी की कार में सवार होकर सात बंगला उनके गृह में विराजमान हुए। दूसरे दिन सायं का सत्संग आश्रम में हुआ, जिसमें सम्मिलित होकर काफी संगत ने अपना समय सफल किया। इस प्रकार रात्रि को चावला जी के घर में ठहरते हैं, दिन को आश्रम में कीर्तन, हरि यश गायन द्वारा संगत को पारमार्थिक लाभ से उपकृत कर रहे हैं। सेवा और परोपकार से यह निर्मल संत निवास रूपी चन्दन वृक्ष ने जब से शरीर धारण किया है उस समय से काफी संगत इससे सुगन्धि लेकर अपने जीवन को महका रही है। कुछ नियमपूर्वक सेवा कर रहे हैं, कुछ गुरुवाणी के नित्यनियमी हो गए हैं और कुछ अन्य अग्रसर हुए नाम की याचना कर रहे हैं। आज भी कुछ संगत ने पूज्य महाराज जी के पवित्र चरणों

में नाम प्राप्त करने के लिए प्रार्थना की। आपने उनके हृदय को जो सेवा और गुरुवाणी प्रेम द्वारा तैयार हुए मनों को अधिकारी जान कर हुक्म कर दिया कि रविवार के दिन गुरु नानक के घर का प्रसाद आपको प्रदान किया जाएगा।

2 फरवरी,1997 के दिन रविवार को दोपहर के दीवान की समाप्ति के बाद जहाँ गुरु नानक के लंगर से प्रसाद के निरन्तर भण्डारे वितरित होने आरम्भ हो गए, वहाँ बीबी सोनू बेलानी तथा बीबी राखी लालवानी को ईश्वरीय प्रसाद यानि नाम की दात की कृपा की।

एक सप्ताह श्री चावला जी के प्रेमवश उसके घर ही ठहरे। प्रतिदिन आश्रम में गुरुवाणी कीर्तन द्वारा अमृत वर्षा होती रही जिसमें संगत चाहे दूर की भी आती रही, लेकिन ज्यादा लाभ चार बंगला, सात बंगला, वरसोवा तथा लोहखण्ड की संगत ने उठाया। अब दूर की संगत के प्रेमवश उनकी प्रार्थनाएँ स्वीकार करके सात बंगला से चल पड़े। तीन तारीख को जानू अडवानी के गृह खार पहुँचे। तीन से छः तक वहीं ठहरे। फिर सात से ग्यारह तक श्री गुलचैनानी जी के घर चर्च गेट, बारह से पन्द्रह चम्बूर श्री प्रमिला संगतानी के बंगले, सोलह से सत्रह मूलंद शाम कविता जोगेशिया के घर, अठारह की रात्रि को मलाड़ श्री प्रेम वासवानी के घर, उन्नीस से इक्कीस सात बंगला श्री अमरीक चन्द जी चावला के घर ठहरे। इस प्रकार कोई पच्चीस दिन मुम्बई निवासी संगत को गुरुवाणी रूपी अमृत सरोवर में स्नान करवा के 21 फरवरी, 1997 को जहाज द्वारा वापिस दिल्ली आ गए। रात चावला जी के घर रुककर बाईस फरवरी को ऋषिकेश पहुँच गए। दूसरे दिन यानि 23 फरवरी 1997 को स्कूल के एक अनुभाग का लैंटर डाला गया।

संत भरत सिंह जी

श्रीमान् संत भरत सिंह जी का जन्म पिता श्री देवकी नन्दन के घर, माता राजपति देवी की कोख से सन् 1954 के लगभग हुआ। यह भट्ट गोत्र के ब्राह्मण परिवार उत्तर प्रदेश के जिला गोंडा में कस्बा करनैल गंज से दस किलोमीटर दूर गाँव बीवियापुर गोसाई में पड़ता है। इन्टर तक की शिक्षा आप ने गाँव में ही प्राप्त की, फिर माता-पिता ने 1976 में आप का विवाह कर दिया। लेकिन भक्ति मार्ग के संस्कार बचपन से ही प्रबल होने के कारण आप ज्यादा समय घर में नहीं रुक सके। अन्त में 1978 में ऐसा समय आया जब वैराग्यमयी अवस्था में किसी पूर्ण गुरु की तलाश में घर से चल पड़े। पूर्व जन्म के मन में संस्कार गुरु घर के प्रति ज्यादा थे इसीलिए घर से सोच कर ही चल पड़े थे कि गुरु नानक के घर का कोई महापुरुष मिले, उस की शरण में जाकर मनुष्य जीवन सफल कर लें। लगभग एक वर्ष का समय पूर्ण पुरुष की तलाश में इधर-उधर घूमते रहे, लेकिन मन का कहीं पर विश्वास नहीं जमा। अन्त में किसी पूर्व संयोग का समय आया। पूर्ण गुरु की खोज में भ्रमण करते 1979 में हरिद्वार पहुँच गए। एक दो दिन ठहर कर डेरे, आश्रमों के दर्शन करते निर्मल बाग कनखल आ गए। आगे परम पूजनीय श्रीमान् १०८ संत बाबा निक्का सिंह जी विरक्त महाराज सामने कुर्सी पर सुशोभित थे। पहली नज़र से दर्शन करते ही मन में विश्वास हो गया कि ठीक स्थल पहुँच गए हैं। दाते के चरणों में नमस्कार करते ही मन को कुछ शान्ति महसूस हुई। बाद में दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना की महाराज कृपा कीजिए, अपनी चरण शरण प्रदान करो। दाते ने ग्राहक और संयोग जान

कर "**प्रभ मिलने का मारग जाना**" का उपदेश करके सेवा में लगा दिया। हजूर अपनी मौज में सतिनाम का उपदेश करते कहीं ओर चले गए। जब कुछ समय बाद फिर कनखल आए तो भरत सिंह जो को फिर आज्ञा दी कि तपस्या और विद्या साधु का आभूषण यानि गहना होता है इसीलिए काशी जाकर ब्रह्म विद्या प्राप्त करो। सन्त भरत सिंह जी ईश्वरीय आज्ञा मानकर सन् 1980 में काशी पहुँच गए। वहाँ हजूर के आश्रम यानि निर्मल आश्रम ऋषिकेश की ही शाखा 'संगत ज्ञान गुफा' करुण घण्टा स्थान पर ठहर कर संस्कृत विद्या का अध्ययन आरम्भ किया। शिक्षा प्राप्ति के साथ-साथ ही उस स्थान की बहुत अच्छी तरह से सेवा सम्भाल करते रहे। इस तरह चौदह वर्ष इस स्थान पर ठहर कर अद्वैत, वेदांताचार्य तक शिक्षा प्राप्त की। पूज्य विरक्त महाराज जी ने किसी समय महन्त महाराज जी की ओर संकेत करते हुए कहा था कि इन्हें हमारा ही रूप समझना। सन्त भरत सिंह जी महापुरुषों के संकेत को ईश्वरीय आज्ञा मानकर उनके सचखण्ड प्रयाण के बाद पूज्य महाराज महन्त जी को उन्हीं का रूप ही समझकर उनकी हर आज्ञा का पालन करते आ रहे हैं। अब पढ़ाई पूरी होने के बाद महाराज जी की आज्ञा अनुसार सन् 1994 में ऋषिकेश आ गए। कुछ समय निर्मल आश्रम में रहकर सेवा करते रहे, लेकिन संत महेश चन्द्र (पण्डित) जी के अस्वस्थ होने के कारण अब अक्तूबर 1996 से निर्मल बाग कनखल की हर तरह की सेवा सम्भाल की जिम्मेवारी बड़े परिश्रम, कुशलता और बुद्धिमत्ता के साथ निभा रहे हैं। आप स्वभाव के बहुत विनम्र हैं और इतने विनम्र हैं कि उच्च कोटि की विद्या प्राप्ति के बावजूद तनिक भी अहंकार नहीं। आश्रम में आई संगत और यात्रियों को गुरु की संगत ही नहीं, परन्तु गुरु रूप समझ कर ही उनकी सेवा तथा सम्मान करते हैं।

संत महेश चन्द्र (पण्डित) जी

आप का जन्म ज़िला संगरुर (पंजाब) के गाँव बड़ी भट्टीवाल सन् 1922 के लगभग बैरागी साधुओं के घर में हुआ। आपजी के पिता जी का नाम 'जीवन दास' और माता का नाम भागवन्ती था। थोड़ी बहुत शिक्षा, अक्षर ज्ञान, गाँव के डेरे से ही सीखें। फिर पैतृक पेशे कृषि के कार्य में लग गए। सन् 1960 में अन्न-जल के वश नाभा शहर में आकर हारलैक्स फैक्टरी में नौकरी करने लगे और सपरिवार निवास भी नाभा में ही रखा। कुछ वर्ष उपरान्त किसी पूर्व संयोग वश विरक्त शिरोमणि सन्त बाबा निक्का सिंह महाराज जी से मिलन हो गया। विरक्त महाराज जी जब नाभा शहर के समीप गाँव चौधरी माजरे बाग में रुक कर संगत को सत् उपदेश का कार्य करते तो पण्डित जी सायं को फैक्टरी की ड्यूटी के अवकाश के बाद हजूर के चरणों में पहुँच कर सत्संग, संत विचारों का लाभ लेते रहते। इस प्रकार गृहस्थ जीवन व्यतीत करते-करते, साथ ही जीवन का वास्तविक और आवश्यक कार्य पारमार्थिक विषय भी बढ़ना शुरु कर दिया। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, विरक्त महाराज जी के चरणों से आप के मन की लगन बढ़ती गई और सांसारिक व्यवहार संकुचित होता गया। आखिर सोलह जून 1983 को नौकरी से त्याग-पत्र देकर निर्मल बाग कनखल पूज्य विरक्त महाराज जी के चरणों में पहुँच गए। लगभग दस हजार रुपया जो साथ लेकर आए थे, हजूर के चरणों में नमस्कार करके दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना की, महाराज! सांसारिक नौकरी छोड़ आए हैं। कृपा कीजिए और अपने पवित्र चरणों की सेवा प्रदान कीजिए। अतीत, भविष्य के ज्ञाता दाता ने पूर्व संयोग और सेवा का जबरदस्त संस्कार जानकर महन्त महाराज जी को आज्ञा दे दी, ये पैसे उठा लो! इनका एक अखण्ड पाठ कर दो, बाकी क्षेत्र (गुरु के लंगर) में डाल दो! पूज्य विरक्त महाराज जी ने पण्डित जी को फकीरी का चिह्न भगवे वस्त्र

पहना कर गोशाला और कृषि आदि निर्मल बाग कनखल की सेवा बख्श दी। आप हुक्म मान कर सेवा में क्या लगे मानों सेवा का ही रूप हो गए। सन्त चमन लाल जी को पूज्य महाराज जी ने पहले ही यहाँ की सेवा बख्श दी थी। संत चमनलाल जी ने लंगर, दरबार साहिब तथा अतिथियों की सेवा आदि बड़ी योग्यता से सम्भाल ली थी और पण्डित जी ने बाग, कृषि और गायें आदि की जिम्मेवारी कमर कस के संभाल ली। कुछ वर्षों पश्चात् सन्त चमन लाल जी की मृत्यु के पश्चात् पण्डित जी ने अब आश्रम की पूरी जिम्मेवारी सम्भाल ली। बैलों के साथ हल चलाना, स्वयं गायें का दूध दोहना, चारे आदि का हर प्रकार से ध्यान रखना। दोगली नस्ल की गायें प्रतिकूल मौसम में ज्यादा बीमार होती हैं। काफी हद तक उनकी औषधि, बूटी, टीका आदि आप ही लगा लेना, यानि स्थान को हर तरह से सम्भाल कर अपने हाथ से सेवा करनी। उनका जीवन देख कर ऐसे प्रतीत होता था कि पण्डित जी और स्थान की सेवा अब अलग-अलग दो नहीं रह गए परन्तु एक रूप ही आ रहा है, लेकिन सेवा में कोई फर्क नहीं आने देते थे। इस प्रकार से सेवा करते-करते बारह अक्तूबर 1996 को एक दौरा पड़ा तो उसी समय जल्दी-जल्दी अस्पताल ले गए। इलाज तो चाहे शुरु हो गया, लेकिन डॉक्टर किसी परिणाम पर नहीं पहुँच सके। दो-तीन मास इसी प्रकार इलाज जारी रहा पर कोई ज्यादा फर्क नहीं ज्ञात हुआ। काफी खोज के बाद डॉक्टरों को ज्ञात हुआ कि इनके शरीर की तीन नाड़ियाँ क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं। मार्च 1997 के शुरु में दिल्ली के प्रसिद्ध अस्पताल में बाई पास सर्जरी का ऑप्रेशन करवाया गया। दिल के उस ऑप्रेशन से रोग निवृत्ति तो हो गई, लेकिन बुढ़ापा तो ला-इलाज बीमारी है इसीलिए आजकल निर्मल आश्रम ऋषिकेश में रह कर बुढ़ापे का समय व्यतीत कर रहे हैं।

संत गुरभगत सिंह जी

आप का जन्म जिला संगरुर (पंजाब) के गाँव जनाल में पिता श्री छोटा सिंह के घर, माता भगवान कौर की कोख से सन् 1950 ई० में हुआ। प्राइमरी तक की शिक्षा आप ने गाँव से ही प्राप्त की। जब आप यौवनावस्था में थे यानि बाईस वर्ष की आयु में तो किसी पूर्व संयोग वश माता-पिता ने गाँव ताजोके जिला संगरुर में एक निर्मल सन्त पंजाब सिंह के डेरे अर्पित कर दिया। यहाँ पर आपने महाराज जी की आज्ञा में रह कर बारह वर्ष तक लंगर की सेवा की। फिर लगभग डेढ़ वर्ष राड़ा साहिब में रह कर ज्ञानी उजागर सिंह से गुरुवाणी का शिक्षण प्राप्त किया। समय पाकर अन्न-जल के वश लौंगोवाल नगर पहुँच गए। वहाँ सिद्ध समाधां नाम का एक स्थान है। छः साल महन्त रहकर उस स्थान की सेवा की। अब कोई पूर्व जन्म का संयोग अंकुरित हुआ, इसलिए किसी कारणवश आप निर्मल आश्रम ऋषिकेश पहुँच गए। लगभग छः मास आश्रम में रहकर दरबार साहिब की सेवा करते रहे। इस समय आपने पूज्य महाराज जी से दीक्षा प्राप्त करके परमार्थ का मार्ग पकड़ लिया। फिर अन्न-जल के वशीभूत विरक्त मण्डली से मिलकर लगभग सात मास तक देशाटन किया। उसके बाद किसी संयोग वश गाँव घमरौदा (नाभा) में रहकर लोगों को गुरुवाणी पढ़ानी आरम्भ कर दी। आपके परोपकारी और त्यागी जीवन से प्रभावित होकर और समीप के गाँवों से भी गुरुवाणी पढ़ने के लिए लोग आने शुरु हो गए। पहले तो किसी प्रेमी के ट्यूबवैल पर रहते थे फिर साधू सिंह नाम के एक सज्जन ने कुटिया के लिए एक बीघा ज़मीन दे दी। कुटिया की नींव रखने के लिए आप ने कुछ संगत के साथ मिलकर पूज्य महंत महाराज जी के चरणों में प्रार्थना की जो हजूर ने स्वीकार करके

30 मार्च, 1996 को अपने पवित्र कर कमलों द्वारा नींव रखी। संगत के सेवादार भाई साधू सिंह, अमर सिंह (सरंपच), भूपिन्द्र सिंह, नंद सिंह आदि घमरौदा गाँव की संगत और कुछ आस-पास मंढ़ौड़, इच्छेवाल, ललोढा आदि गाँव की संगत ने मिलकर कुटिया की सेवा की। जब कुटिया बनकर तैयार हो गई तो पूज्य महंत महाराज जी से तिथि लेकर नौ दिसम्बर 1996 को श्री अखण्ड पाठ साहिब के भोग डाले गए। उपरान्त कुछ दिन उस कुटिया में ठहर कर गुरुवाणी शिक्षण का कार्य करते रहे, लेकिर आजकल अमलोह कस्बे के नजदीक गाँव भदलथूहा की संगत के प्रेमवश वहाँ ठहर कर गुरुवाणी पढ़ाने की सेवा कर रहे हैं जिस में लगभग पचास लड़के-लड़कियाँ गुरुवाणी शिक्षण की दात प्राप्त कर रहे हैं।

संत कर्म सिंह

आप का जन्म ज़िला मेरठ के सोंटी गाँव में सन् 1922 के नज़दीक पिता श्री भलण के गृह एक जाट घराने में हुआ। यह गाँव मेरठ शहर से पचास कि०मी० दूर पश्चिम की ओर यमुना के किनारे स्थित है। आप बाल्यकाल से ही धार्मिक विचारों वाले थे इसलिए एक समय कनखल हरिद्वार आकर तीसरे पातशाह महाराज जी के पावन स्थान पर सेवा करने लग गए। लगभग तीन वर्ष इस स्थान पर रह कर सेवा की फिर किसी संयोग वश सन् 1965 के आस-पास निर्मल आश्रम ऋषिकेश पहुँच गए। यहाँ महंत आत्मा सिंह से दीक्षा लेकर शिष्यत्व ग्रहण किया। उपरान्त आठ साल आश्रम में रहकर अनथक सेवा करते रहे। स्वतन्त्र वृत्ति के होने के कारण अब काफी समय से विरक्तीय ठाठ में विचरण करते हुए आजकल दलणवाल (पंजाब) रह कर जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आप काफी शान्त और स्थिर वृत्ति के महात्मा है।

आश्रम में स्थाई रूप से रह कर सेवा कर रहे प्रेमी

सेवा-परोपकार का यह निर्मल आश्रम रूपी महान् सूर्य जहाँ गरीबों, अनाथों, ज़रूरतमंदों और साधु महात्माओं को अपनी घनिष्ठ और सुखदायक किरणें सदैव प्रदान कर रहा है वहाँ कई सौभाग्यशाली प्रेमियों को सेवा के कार्य प्रदान करने की कृपा करके लोक-परलोक का मार्गदर्शन भी करा रहा है। कोई तन द्वारा सेवा करके लाभ उठा रहा है, कोई मन द्वारा और कोई धन द्वारा। ऐसे सेवा कार्य यद्यपि निरन्तर चलते रहते हैं, लेकिन कभी-कभी जैसे लैण्टर डालना अथवा ट्रालियों से भरती डालना ऐसे विशेष समय भी आते रहते हैं, लेकिन कुछ ऐसे प्रेमी भी हैं जो काफी लम्बे समय से आश्रम में रहकर सेवा कर रहे हैं।

❑ **जसविन्द्र सिंह (बिन्दर)** गोराया निवासी कई वर्ष निरन्तर आश्रम में रहकर बड़े प्रेम से सेवा करता रहा। इस समय दौरान इस प्रेमी ने सेवा के साथ-साथ गुरुवाणी और परमार्थ के अन्य ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। तन और मन के द्वारा की सेवा का परिणाम और महापुरुषों के आशीर्वाद के फलस्वरूप यह प्रेमी आजकल कैनेडा में रहकर "*गुरमुख माइया विच उदासी*" का जीवन व्यतीत कर रहा है। समय-समय पर भारत आकर महापुरुषों से आशीर्वाद प्राप्त करता रहता है।

❑ **भाई अमरीक सिंह धनौला** निवासी सन् 1985 से स्थाई रूप से आश्रम में रह कर बड़े प्रेम से सेवा करता आ रहा है। महापुरुषों की आज्ञा से कचहरी, कोर्ट और दफ्तरों में आश्रम के कार्यों की बड़ी बुद्धिमत्ता और कुशलता से कर रहा है। कभी-कभी महापुरुष अपनी मौज में धर्म प्रचार के लिए यात्रा पर जाते समय अपने साथ भी लेकर जाते हैं। इस प्रकार तन-मन की सेवा द्वारा अपना जीवन सफल कर रहा है।

❑ **भाई चरनजीत सिंह करनाल** निवासी 1986 से आश्रम में रहकर सेवा का लाभ उठा रहा है। यह प्रेमी बिजली का डिप्लोमा होल्डर है, इसीलिए आश्रम में बिजली के सारे कार्यों की सेवा बड़े प्रेम से करता आ रहा है। आजकल आश्रम के विस्तार यानि अस्पताल और स्कूल आदि बड़े-बड़े कार्य शुरु हो जाने से बिजली का काम काफी बढ़ गया है इसीलिए अन्य कर्मचारी भी यद्यपि रख लिए हैं फिर भी सारे विद्युत विभाग की देख-रेख और प्रबन्ध का कार्य बड़ी बुद्धिमत्ता और कुशलता से कर रहा है। समय-समय पर महापुरुषों के साथ यात्रा पर भी जाता रहता है। ऐसे तन-मन से सेवा करके महापुरुष की प्रसन्नता प्राप्त कर रहा है।

❑ **भाई चन्दू नरियानी** नाम का यह सिन्धी प्रेमी जो कि बम्बई निवासी है सन् 1989 से स्थाई रूप से आश्रम में रह कर सेवा का लाभ उठा रहा है। सर्वप्रथम इस प्रेमी को महापुरुषों द्वारा धर्म प्रचार यात्रा समय व्यक्तिगत सेवादार के रूप में साथ ले जाने का सम्मान भी प्राप्त होता रहा। फिर इस प्रेमी को महापुरुषों ने प्रसन्न होकर विशाल दृष्टि प्रदान की, जिसके कारण सब गरीब ज़रूरतमन्दों में एक हरि को देखता हुआ दिन-रात अनथक सेवा किए जा रहा है। पूरा दिन आश्रम में चाय, प्रसादे और दाल सब्जियाँ आदि पदार्थ बाल्टियों में डालकर गरीब बस्तियों, गंगा तट पर बैठे साधु महात्माओं और अन्य जरूरतमन्दों के पास जाकर वितरित करता रहता है। फिर लावारिस रोगियों को उठाकर अस्पतालों में दाखिल कराना, उनके वस्त्र धोने, लंगर पहुँचाना तथा अन्य गरीब जरूरतमन्दों को वस्त्र तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ देनी। जरूरतमन्दों की उपरोक्त सेवाएँ अपना-पराया और धर्म के भेद-भाव से बिल्कुल ऊपर उठकर सब को हरि रूप समझ कर करता जा रहा है।

❑ **दयाल चन्द जी मलिक** सेवा निवृत्त डी०एस०पी० करनाल निवासी कई वर्ष आश्रम में रह कर तन-मन से निरंतर सेवा करते रहे। दरबार साहिब की सेवा तो बड़े प्रेम से करते ही थे, लेकिन काफी समय तक महापुरुषों के निजी सेवादार के रूप में यात्रा पर भी साथ जाते रहे। महापुरुषों ने जब निर्मल आश्रम की बम्बई में शाखा खोली तो वहाँ का सब से पहला मुख्य सेवादार भी आपको नियुक्त किया गया। इस प्रकार कई वर्षों से तन-मन से निरंतर सेवा करते हुए पारमार्थिक मार्ग पर अग्रसर हैं।

❑ **भाई सतनाम सिंह लोहसिम्बली** सन् 1992 से आश्रम में स्थाई रूप से रहकर तन-मन से सेवा करते आ रहे हैं। इस प्रेमी को महापुरुषों ने पहले लंगर की सेवा प्रदान की फिर दरबार साहिब की सेवा के साथ-साथ अपनी निजी सेवा प्रदान कर यात्रा पर भी काफी समय साथ लेकर जाते रहे। आजकल महापुरुषों की आज्ञा में रहकर बम्बई आश्रम की सेवा सम्भाल कर रहा है।

❑ **भाई जसविन्द्र सिंह (सुखदीप सिंह)** नीलोवाल (नवांशहर) निवासी को 1994 शुरु में महापुरुषों का पहला दर्शन मिलाप हुआ। महापुरुषों की अलौकिक चुम्बकीय शक्ति ने पहले दर्शनों में ही सुखदीप सिंह का मन अपने चरणों की ओर आकर्षित कर लिया। बस उसी समय आश्रम में स्थाई रूप से रह कर सेवा शुरू कर दी। पहले महापुरुषों ने दरबार साहिब की सेवा प्रदान की, लेकिन अब काफी समय से अपनी निजी सेवा की भी कृपा कर दी। इस प्रकार यह प्रेमी तन-मन से सेवा करता हुआ काफी शान्तचित्त रहकर समय और मानव जीवन का पूरा-पूरा लाभ उठा रहा है।

❑ **डॉक्टर हरबंस लाल बावा** करनाल निवासी काफी लम्बे समय से आश्रम में रहकर सेवा का लाभ उठा रहे हैं। काफी समय महापुरुषों के साथ यात्रा पर भी जाते रहे, लेकिन अब अस्पताल के दाँत विभाग में दाँत मकैनिक की निष्काम सेवा करके अपना जन्म सफल कर रहे हैं।

❑ **संत जुगल जी**—लगभग तीस वर्ष के लम्बे समय से आश्रम में रहकर सेवा करते आ रहे हैं। स्वभाव के आप बड़े सरल, सीधे और हर प्रकार के छल-कपट से रहित आश्रम की सेवा में दिन-रात संलग्न हैं।

❑ **भाई चन्दन**—यह प्रेमी भी लगभग सन् 1970 से लंगर बनाने की सेवा बड़े प्रेम से करता आ रहा है।

करनाल कुटिया के मुख्य सेवक

इस प्रकार ही परम पूजनीय संत बाबा निक्का सिंह विरक्त महाराज जी की चरण धूलि से पवित्र हुए स्थान निर्मल कुटिया करनाल में सेवा का प्रवाह दिन-रात चलता रहता है। स्थान का विस्तार होने के कारण अब तो चाहे सैकड़ों व्यक्ति दिन-रात सेवा में लगे रहते हैं, लेकिन पहले विरक्त महाराज जी ने इस पावन स्थान की सेवा सम्भाल के लिए भक्त लॅभामल, सरदार गुरबचन सिंह डायमण्ड वाला, सरदार हरबंस सिंह जी घी वाले, सरदार सतपाल सिंह गुलाटी, हरबंस लाल करनाल वाले और बाबा कृपाल जी आदि छः व्यक्तियों पर आधारित एक न्यास बनाया था। ये सारे प्रेमी महापुरुषों की आज्ञानुसार बड़े प्रेम से सेवा कार्य करते रहे।

❑ **सरदार गुरबचन सिंह जी** कुटिया की सेवा में अपना अत्यधिक योगदान देते हुए 1985 में स्वर्गवास हो गए।

❑ **भक्त लॅभामल जी** ने तो जीवन का बहुत लम्बा समय कुटिया में स्थाई रूप से रह कर तन-मन से बहुत परिश्रम के साथ कुटिया की सेवा सम्भाल की। अंततः परमात्मा के अटल नियमानुसार सत्रह अक्तूबर 1996 को सेवा करते हुए करनाल कुटिया में शरीर त्याग गए।

❑ **बाबा कृपाल सिंह जी** ने काफी लम्बे समय तक कुटिया में रहकर सैकड़ों व्यक्तियों को गुरुवाणी-शिक्षण दिया और साथ-साथ लंगर की सेवा सम्भाल भी करते रहे। अंततः 1996 के शुरु में सेवा करते हुए ही गुरु पुरी प्रयाण कर गए।

❑ **सरदार सतपाल सिंह जी गुलाटी** अपने सांसारिक कार्य व्यवहार के साथ-साथ कुटिया की बड़े तन-मन से सेवा करते रहे। कुटिया में भवन निर्माण की सारी सेवा उन्हीं के निरीक्षण में हुई। अंततः सेवा करते-करते ही 1996 में शरीर त्याग गए।

❑ **सरदार हरबंस सिंह जी घी वाले** भी बहुत लम्बे समय से कुटिया की सेवा तन-मन-धन से करते आ रहे हैं। आप का शरीर अब काफी वृद्ध हो चुका है, लेकिन मन से अभी भी कुटिया के साथ जुड़े हुए हैं।

❑ **श्री हरबंस लाल जी** कुटिया की सेवा के लिए हर समय तत्पर हैं, लेकिन प्रातः का क्षेत्र वितरित करने की सेवा आप लम्बे समय से नियमित करते आ रहे हैं तथा साथ ही अन्य सेवाएँ भी बड़ी कुशलता से निभा रहे हैं।

❑ **श्री हंसराज जी छाबड़ा** कई वर्षों से छोटी कुटिया की सेवा सम्भाल करते आ रहे हैं। आप वेदान्त के प्रसिद्ध विद्वान हैं इसलिए आमतौर पर लोग इनको ब्रह्म के नाम से ही जानते हैं। विद्वान होने के कारण आप प्रतिदिन सायं छोटी कुटिया में सत्संग भी करते हैं जिससे काफी लोग लाभ उठाते हैं।

कुछ विशेष

- पूज्य महंत महाराज राम सिंह जी का जन्म सत्रह अक्तूबर, 1950 ई० को हुआ।
- विरक्त महाराज जी की ओर से 19 मई, 1981 को कृपा के फलस्वरूप श्री निर्मल आश्रम के महंत पदाभिषिक किए गए ।
- 16 अप्रैल, 1986 को हरिद्वार के कुम्भ के अवसर पर निर्मल आश्रम अस्पताल की नींव रखी।
- 13 अप्रैल, 1990 के दिन अस्पताल का उद्घाटन समारोह किया गया।
- जुलाई, 1990 में कनखल के बड़े भवन की नींव रखी।
- 13 अप्रैल, 1993 के दिन अस्पताल के दूसरे अनुभाग की नींव रखी जो दो वर्षों में तैयार हो गई।
- अक्तूबर, 1993 कनखल वाले समागम और बड़े भवन का उद्घाटन समारोह किया।
- तेरह नवम्बर 1993 के दिन करनाल में 251 श्री अखण्ड पाठों के भोग डाले गए, जिसमें गुरुवाणी प्रसार, प्रचार, गुरुघर की प्रशंसा और शोभा का असंख्य प्राणियों पर विशेष प्रभाव पड़ा।
- 27 फरवरी, 1994 के दिन बम्बई वाले आश्रम का उद्घाटन समारोह हुआ।
- 13 अप्रैल, 1994 के वैशाखी के दिन निर्मल आश्रम दीपमाला पगरानी पब्लिक स्कूल की नींव रखी गई।
- एक जनवरी, 1997 वाले दिन निर्मल आश्रम दीपमाला पगरानी पब्लिक स्कूल का उद्घाटन किया गया।

निर्मल आश्रम दीपमाला पगरानी पब्लिक स्कूल

महापुरुषों के द्वारा उपरोक्त नाम का विद्या मन्दिर 1997 में ही शुरू किया गया है जो कि तीन करोड़ की लागत से तैयार होने वाली योजना है। यह स्कूल ऋषिकेश हरिद्वार सड़क पर ऋषिकेश से लगभग आठ किलोमीटर दूर, हरिद्वार की तरफ शामपुर गाँव की सवा छः एकड़ भूमि लेकर बनाया गया है। इसमें माध्यम अंग्रेजी तो है ही, लेकिन यहाँ पढ़ाई का स्तर पूर्ण रूप से आधुनिक है और इस स्कूल का रजिस्ट्रेशन सी०बी०एस०सी० दिल्ली के साथ करवाया जाएगा। इस विद्यालय में बच्चों के लिए सारी आधुनिक सुविधाएँ जैसे योग, ध्यान-भवन, कंम्प्यूटर रूम, पुस्तकालय तथा अन्य प्रत्येक तरह की आन्तरिक बाह्य खेलें इत्यादि सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस स्कूल के पूरा चलने तक 1500 विद्यार्थियों के दाखिल होने का सामर्थ्य होगा तथा बारहवीं कक्षा तक होगा, लेकिन इस वर्ष आरम्भ में सातवीं कक्षा तक शुरू किया गया है फिर प्रत्येक वर्ष एक कक्षा आगे बढ़ जाया करेगी। इसी तरह पाँच वर्षों में बारहवीं कक्षा तक हो जाएगा। इस वर्ष 440 बच्चे प्रविष्ट किए गए हैं जिसमें चालीस बच्चे छात्रावास में हैं। शेष बच्चों के लिए चार बसों की सुविधाएँ दी गई हैं। इस विद्यालय में इस समय चालीस स्टाफ सदस्य कार्य कर रहे हैं फिर समय-समय पर जैसे कक्षाएँ आगे बढ़ेंगी और बच्चों की संख्या बढ़ती जाएगी उसी तरह योग्य स्टाफ की भर्ती भी साथ-साथ होती जाएगी।

निर्मल आश्रम अस्पताल

निर्मल आश्रम अस्पताल जो आज से लगभग सात वर्ष पहले यानि 1990 में आरम्भ किया गया था, आज अपनी यौवन अवस्था में पहुँच कर सैकड़ों व्यक्तियों को प्रतिदिन अपने शीतल मधुर फल प्रदान कर रहा है। इस अस्पताल के ओ०पी०डी०

(O.P.D.) में प्रतिदिन अढ़ाई सौ के लगभग रोगी देखे जाते हैं तथा पचास के लगभग रोगी प्रतिदिन दाखिल होते हैं। वैसे दाखिल करने की सामर्थ्य इस अस्पताल में सौ रोगियों की है। इस अस्पताल में अपनी ओर से व्यक्तियों को देने के लिए काफी सुविधाएँ हैं जैसे अल्टरासाऊँड मशीन, एक्स-रे मशीन 100 एम०ए० और एक्स-रे मशीन 500 एम०ए० दूरबीन द्वारा पत्थरी का ऑप्रेशन, ई०सी०जी० मशीन, लैबोटरी यानि प्रयोगशाला, प्रसूति गृह यानि हर प्रकार से महिला विभाग, दाँत विभाग, हड्डियों का विभाग, प्रत्येक तरह के ऑप्रेशन, दवाइयों का स्टोर तथा अन्य मैडिकल सुविधाएँ। इस अस्पताल में लगभग नब्बे सदस्यों का योग्य स्टाफ काम करता है। साधु-महात्मा किसी भी सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखता हो उसका मुफ्त उपचार किया जाता है और ऐसे रोगियों का खाना भी आश्रम से मुफ्त दिया जाता है। इस सेवा के क्षेत्र में बहुत योग्य-योग्य डॉक्टर सेवा करते रहे हैं। लेकिन तीन-चार डॉक्टर और परिवार तो इसको अपना समझ कर सेवा कर रहे हैं जिसमें श्री कपिल देव जी शर्मा, जो सात सालों से अब तक प्रबन्धक के पद पर रह कर तन-मन से सेवा करते आ रहे हैं और डॉक्टर आर०सी० शर्मा, डॉ० जसोधी मीरचंदानी, श्री जगन नाथ जी कालड़ा, बाबू आत्म प्रकाश जी और माता जेठी भाई। यह प्रेमी बाबू पुराने किसी न किसी रूप में आश्रम से जुड़े आ रहे हैं और अब भी अपनी सीमा से बाहर होकर परोपकार और सेवा का रूप इस अस्पताल की सेवा तन-मन से कर रहे हैं।

निर्मल आश्रम

परम पूजनीय १०८ महन्त बाबा राम सिंह जी महाराज जिस समय से निर्मल-आश्रम के सम्मानित महंती पर सुशोभित हुए हैं उस समय से आश्रम ने असीम उन्नति की है। प्रात: का क्षेत्र (गुरु का लंगर) जिस में भाँति-भाँति के पदार्थ तैयार किए जाते हैं, उसमें प्रतिदिन लगभग छ: सौ साधु महात्मा तथा गरीब लोग भोजन ग्रहण करते हैं जो बारह मास निरंतर चलता है।

आश्रम में संगत के अतिरिक्त यात्रियों का आना-जाना बारह मास लगा रहता है, लेकिन गर्मियों की ऋतु में श्री हेमकुंड की यात्रा समय विशेष हो जाता है। आश्रम में आए प्रत्येक प्राणी को गुरु के लंगर में प्रसादा, रात्रि को ठहरने पर वस्त्र बिस्तर तो अवश्य मिलता ही है, लेकिन रात्रि के लंगर के पश्चात् दूध का गिलास भी छकने के लिए मिलता है, क्योंकि आश्रम की मर्यादा के अनुसार प्रतिदिन सायं को लंगर के पश्चात् दूध के लिए घण्टी बजाई जाती है, उस समय चाहे कोई आश्रम का सेवादार हो चाहे यात्री, मौके पर उपस्थित हर प्राणी को दूध का गिलास मिलता है, लेकिन चाय तो समय अनुसार चलती रहती है। दूध की आवश्यकता पूरी करने के लिए अपनी गोशाला है, परन्तु समय-समय पर आवश्यकता अनुसार मोल भी लिया जाता है।

आश्रम के अपने स्थान जैसे हरिद्वार कनखल, स्कूल अथवा अस्पताल में भवन के निर्माण का कार्य सदैव चलता ही रहता है। इसलिए लगभग साठ मिस्त्री, मजदूर और कर्मचारी बारह मास, कई वर्षों से निरन्तर कार्य कर रहे हैं। इस तरह भवन निर्माण का जितना कार्य हो रहा है उन सब कार्यों का निरीक्षण और मिस्त्री, मजदूरों से काम करवाना इत्यादि की जिम्मेवारी भाई काबल सिंह जी अपनी बुद्धिमत्ता और बड़ी कुशलता से लगभग दस वर्षों से निरंतर करवाते आ रहे हैं इसीलिए इन की सेवा भी प्रशंसनीय है, और लकड़ी का कार्य करवाने की सारी जिम्मेदारी भाई जरनैल सिंह जी मिस्त्री बड़ी

योग्यता से करवाते आ रहे हैं। आश्रम में गुरुवाणी का प्रवाह भी निरंतर चलता रहता है जिस की शृंखला में तीन सौ अखण्ड पाठ साहिब एक वर्ष में हो जाते हैं और साथ-साथ सहज पाठ भी होते रहते हैं। इन पाठों की नब्बे प्रतिशत सेवा निष्काम पाठी सेवादारों की ओर से ही होती है। गुरुवाणी-शिक्षा के इच्छुक व्यक्तियों को शिक्षण देने का ईश्वरीय कार्य भी चलता रहता है। महापुरुषों के द्वारा धर्म प्रचार और गुरुवाणी के प्रचार प्रसार के लिए वर्ष में छः मास यात्रा की जाती है जिसमें संगत को अखण्ड पाठ की तिथि देकर हर पाठ के भोग समय आप स्वयं पहुँचते हैं। ये तिथियाँ वर्ष में एक ही बार अक्तूबर में ऋषिकेश वाले समागम पर दी जाती हैं। आप जी को ईश्वरीय देन के फलस्वरूप आप जी से आशीर्वाद लेकर हजारों पाठियों ने गुरुवाणी की शिक्षा प्राप्त कर ली है, जो अपने-अपने गाँवों, क्षेत्रों, नगर के समीप लोगों के घरों में पाठ की निष्काम सेवा करते रहते हैं। चाहे बेअन्त साधु महात्मा और संस्थाएँ गुरुवाणी के प्रचार-प्रसार के बहुमूल्य कार्य दिन-रात कर रही है, लेकिन जितने पाठी आप जी की संगत में तैयार हो गए हैं इतने शायद ही किसी और संस्था के पास हो।

निर्मल बाग कनखल

सेवा परोपकार के इस महान् स्थान श्री निर्मल आश्रम की अन्य भी काफी शाखाएँ हैं जैसे निर्मल बाग कनखल। यह स्थान गंगा नहर के किनारे बाई पास के बिल्कुल ऊपर कनखल (हरिद्वार) में स्थित है। इस स्थान पर ही आश्रम की तरफ से गोशाला बनी हुई है। जहाँ दूध दोह कर प्रतिदिन ऋषिकेश निर्मल आश्रम पहुँचाया जाता है। इस स्थान पर भी गुरु का लंगर सदैव चलता रहता है तथा यात्रियों का आना-जाना भी बना रहता है, क्योंकि लंगर प्रसादे के साथ-साथ कमरा और वस्त्र, बिस्तर की सारी सुविधा यात्रियों के लिए उपलब्ध हैं।

निर्मल कुटिया संत निक्का सिंह जी करनाल

निर्मल आश्रम की एक शाखा उपरोक्त नाम से करनाल (हरियाणा) में स्थित है। यह भी एक बहुत सुन्दर स्थान करनाल बाई पास के साथ ही सुशोभित है। यहाँ भी गुरु का लंगर सदैव चलता रहता है और जरूरतमन्दों के लिए गुरुवाणी शिक्षण भी हर समय चलता रहता है।

निर्मल सन्त निवास मुम्बई

निर्मल आश्रम का एक स्थान निर्मल सन्त निवास के नाम पर मुम्बई अंधेरी में स्थित है। यह भी गुरु घर की मर्यादा अनुसार भूखों को अनाज और गुरु नानक के घर का ईश्वरीय प्रसाद गुरुवाणी प्रचार का अपना कार्य किए जा रहा है।

ऐसे ही निर्मल आश्रम से सम्बन्धित अन्य भी कई स्थान हैं जो पूज्य महन्त महाराज राम सिंह जी की पवित्र देख-रेख में गुरु नानक के घर का वास्तविक कार्य गुरुवाणी द्वारा प्रेमाभक्ति का प्रचार करते जा रहे हैं जैसे मसूरी, काशी, लोहसिम्बली, असरपुर, थूहा, कुतबनपुर, खोख-कोटली, बिशनपुरा (लोपे) घमरौदा धनौला, भोतने, दौद, गोराया होशियारपुर आदि स्थानों पर भी अखण्ड पाठ साहिब आदि धार्मिक समागम तो आमतौर पर होते ही रहते हैं, लेकिन इन में से काफी स्थानों पर समय-समय पर गुरुवाणी शिक्षण भी चलता रहता है।

यह सारे परोपकार और सेवा के कार्य **जग महि आइया सो परवाणु॥ घटि घटि अपणा सुआमी जाणु॥** के महावाक् अनुसार सारे जीवों को हरि रूप जानकर किए जा रहे हैं, जो मनुष्य जन्म का वास्तविक कार्य है और जिस कार्य के लिए महापुरुष शरीर धारण करते हैं। इस प्रकार सेवा उपासना के कार्य की प्रेरणा कर जीवों का मल, विक्षेप, आवरण-जिन दोषों ने वास्तविकता को छिपाया हुआ है, आदि की निवृत्ति के लिए कर्म, उपासना, ज्ञान की औषधि देकर, मनुष्य जीवन की सफलता के मार्ग की दिशा प्रदान किए जा रहे हैं ताकि अनन्तकाल से भटक रहे जीव को अपने वास्तविक घर की पहचान हो जाए और अपने स्वयं के घर में स्थित होकर जन्म मृत्यु आदि सारे कल्पित दु:खों से निवृत्ति प्राप्त करके पूर्ण रूप से सुखी जो जाए। यह सारा कार्य महापुरुष परमेश्वर के हुक्म में पूर्ण रूप से स्थित हो कर बड़े सहज में करते आ रहे हैं। इस सारे कार्यों को जारी रखने का सहारा, केवल गुरु नानक पर है, इसीलिए कभी भी एक पैसा, एक कण, या एक घूँट दूध की उगाही नहीं की जाती, क्योंकि महापुरुषों का दृढ़ विश्वास है—

करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोई॥

(पृष्ठ २७९)

इसलिए-करणहार की मौज में दखल नहीं देना, उसने यदि कोई कार्य इस शरीर के द्वारा कराना है तो हर प्रकार की सामग्री भेजेगा। अगर उसने नहीं करना तो बर्तन उलटे। लेकिन उगाही आदि कुछ नहीं करनी अर्थात् किसी भी कार्य अथवा क्रिया का कर्त्ता बनना तो एक तरफ रहा, सोचना भी नहीं। बस दृष्टा और साक्षी भाव में स्थित होकर कमल पुष्प की भाँति निर्लिप्त और असंग रहकर जगत् तमाशा अवलोकन करते रहना है।

दोहरा— **होआ हुक्म अकाल दा, रचिउ तबी ग्रंथ॥**
भुलणहार धरम जीव दा, बखशणहार गुरु पंथ॥

दोहरा— **हाड़ मांह इस ग्रंथ की, भई समाप्त आइ॥**
सभ बिघनन ते बच रहे, करतार सहाइ॥

दोहरा— **दो हज़ार चरंजवां, संमत बिकरमी जानि॥**
गुरु क्रिपा ते काज इह, भइआ संपूरन आनि॥

दोहरा— **थिति पूरनमा दिन शुकरवार, छे हाड़ सुख जानि॥**
वीह जून सन् उनीस सौ होर सतानवें मानि॥

दोहरा— **खालसा वाहिगुरु का, फतहि भी उस की होइ॥**
करन कारन सभि वाहिगुरु विघनु बिनासन सोइ॥

❑

☆ सार ☆

साच कहों सुन लेहु सभै
जिन प्रेम कीउ तिन ही प्रभु पाइउ ॥

(गुरु गोबिन्द सिंह जी)